

# देवत-संहिता

प्रथम भाग ।

१ अग्निदेवता ।

२ इंद्रदेवता ।

३ सोमदेवता ।

४ मरुद्देवता ।

UNIVERSAL  
LIBRARY

**OU\_184204**

UNIVERSAL  
LIBRARY

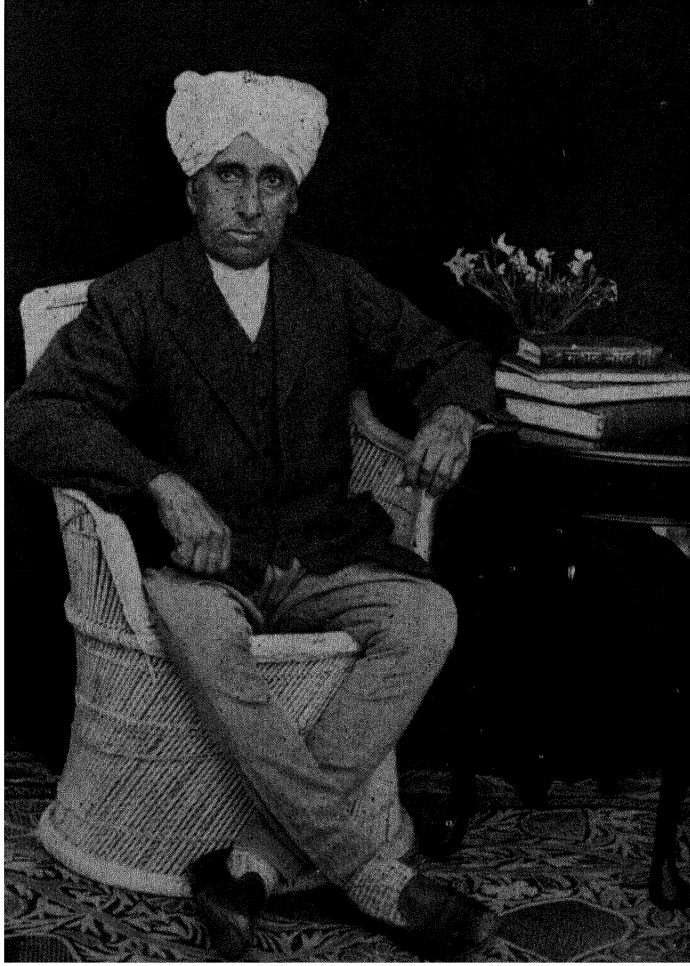












### पं० नाथूलालजी शर्मा जोशी, पेन्शनर, आदर्शनगर-अजमेर

एकसहस्रोत्तरनवशताधिकाष्टादशे विक्रमाब्दे ज्येष्ठस्य गुरुपक्षस्य षष्ठ्यां तिथौ सिंहलग्ने लब्धजन्मना, राजस्थानान्तर्गत-कृष्णगढाधीशस्य [ 'हिज हाईनेस' उपाधिविभूषितस्य ] राष्ट्रकूटा- (राठोडा) न्वयमुक्तामणेर्पुत्रन्दरपुगातिथर्महाराजाधिराज-श्री-शार्दूलसिंहस्य सूताः मदनसिंहदेववर्मणो राजपरिषदि सेवां विधाय सम्मानितेन श्रीनगरवासिनः गुर्जरगौडविप्रांतर्गत-मुद्गलगोत्रोत्पन्नस्य जोशी इत्युपाह्वस्य श्री-पंडित-बदरीनाथस्यात्मजेन नाथूलालशर्मणा, भूतपूर्वेण कृष्णगढराज्यस्य न्यायाधीशेन सम्प्रति सेवानिवृत्तेन अजमेरांतर्गतमादर्शनगरमधिवसता दैवतसंहितामुद्रणार्थं द्विसहस्रमिता मुद्राः प्रदत्तास्तेन धनेन मुद्रितोऽयं दैवतसंहिताग्रन्थः ।

राष्ट्रकूट ( राठोड ) नामसे विख्यात क्षत्रिय कुलके विभूषण, कृष्णगढ ( राजस्थान ) रियासतके नरेश, हिज हाईनेस स्वर्गीय महाराजाधिराज श्री शार्दूल सिंहके सुपुत्र स्व० श्री० महाराजाधिराज हिज हाईनेस वीरश्रेष्ठ श्री महाराजा मदनसिंहजा देववर्माकी सेवाद्वारा सम्मानित हुए और श्रीनगर ( अजमेर ) के निवासी गुर्जर गौड ब्राह्मणजातिके अंतर्गत मुद्गल गोत्रमे उत्पन्न श्री पंडित बदरीनाथके सुपुत्र नाथूलालजी जोशी, जो अब कृष्णगढरियासत के सेवानिवृत्त न्यायाधीश है और आदर्शनगरमें निवास करते है । जन्म विक्रम सवत् १९१८ ज्येष्ठ शुक्ला ६ सिंहलग्न । आपने दैवतसंहिताके मुद्रण के लिये २०००) दो सहस्र ६० का दान किया, जिससे दैवतसंहिता मुद्रित हुई है ।



# दैवत-संहिता

( १ )

## अग्निदेवता



सपादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळकर  
स्वाध्याय-मण्डल, आंध्र ( त्रि० सातारा )



संवत् १९९८, शक १८६३, सन १९४१



मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवलेकर, B A.  
स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, आँध, ( जि० सातारा )

# दैवत-संहिता का परिचय ।

दैवत-संहिताका प्रथम भाग पाठकोंके सामने रखा जाता है, इसका अध्ययन पाठक करें ।

अग्निदेवता के करीब दार्द्व हजार मंत्र संग्रहित हुए हैं और इन्द्रदेवता के करीब साठे-तीन हजार मंत्र संग्रहित हुए हैं । अर्थात् दोनों देवताओं के मिलकर करीब छः हजार अर्थात् आधे ऋग्वेद के जितने मन्त्र हुए हैं । इससे वेदमें इन दोनों देवताओं का महत्त्व कितना है, यह स्पष्ट होता है । वेदों में इन दो देवताओं के जितने मन्त्र हैं, करीब उतने ही अन्य सब देवताओं के मिलकर हैं । वेदों का आधा भाग इन दो देवताओं के लिये समर्पित हुआ है, इससे स्पष्ट हो जाता है कि, इन देवताओं का महत्त्व वेद में अधिकसे अधिक है ।

प्रत्येक देवता के मन्त्र छापनेके बाद ( १ ) पुनरुक्त मंत्र तथा पुनरुक्त मन्त्रभागों की सूची छपी है । इस सूची से कौनसा मन्त्र कहां दुबारा आया है, यह स्पष्ट हो जाता है, जो स्वाध्याय के लिये और निष्प पाठसे अर्थज्ञान होने के लिये अत्यन्त ही आवश्यक है । इस के पश्चात् मंत्रों की ( २ ) वर्णानुक्रमसूची छपी है, जिससे कौनसा मंत्र कहां है, इसका पता लगता है । केवल मन्त्र छापे जाय और सूची न हो, तो कौनसा मन्त्र कहां है, इसका पता नहीं लग सकता । इस कारण से यह सूची आवश्यक है । इसके पश्चात् ( ३ ) ' विशेषणसूची ' छपी है । अग्नि-देवता के स्वरूप का निर्णय उस देवता के विशेषणों से हो सकता है । ये सब विशेषण इस सूची में वर्णानुक्रम से दिये हैं और उनके पते भी दिये हैं । चतुर्थ सूची ( ४ ) ' उपमाओं की सूची ' है । अग्नि को कितनी उपमाएं वेद में दी हैं यह इससे पता लग सकता है । उपमाओं से देवता के स्वरूप की पहचान होती है ।

इस तरह सूचियां प्रत्येक देवता के साथ रहेंगी । पाठक विचार करके देखेंगे, तो उन को पता लग जायगा कि, इन सूचियों के बिना देवताओं का मंत्रसंग्रह विशेष लाभदायक नहीं होगा ।

आज तक किसीने इन सूचियोंका संग्रह नहीं किया था । कोई पाठक अब इन सूचियों के विचार से अर्थात् अग्नि आदि देवताओं के विशेषण, उपमा, पुनरुक्त मन्त्रभाग आदि का मनन करके अग्निदेवता का ठीकठीक स्वरूप जान सकता है । यह सुविधा इस से पूर्व नहीं थी । यह सुविधा दैवत-संहिताद्वारा हो रही है । जैसी अग्नि-देवता की ये सूचियां छपी हैं वैसी ही इन्द्र की भी छपेंगी और अन्यान्य देवताओंकी भी छपेंगी ।

जो पाठक इन के बनानेके कष्टों को जानेंगे और इनका महत्त्व स्वाध्यायमें कितना है, यह समझेंगे, वे इनका उपयोग करके देवताका स्वरूप ठीकठीक जानेंगे ।

## आर्षेय-संहिता ।

सब वेदोंमें जो मन्त्र हैं, वे विभिन्न विभागोंमें बांटे हैं, जैसा ( १ ) ऋग्वेद के प्रथम सात मण्डलों के सब मन्त्र ऋषिवार प्रथित हैं, केवल नवम मण्डल दैवत-संहिता के रूप में है, अर्थात् इसमें ' सोम ' देवताके ही मन्त्र हैं । प्रथम के छः मण्डल ऋषिवार हैं—

२. द्वितीय	मण्डल	गुरुसमद ऋषि	सूक्त ४३	मंत्र ४२०
३. तृतीय	"	विश्वामित्र	" ६२	" ६१७
४. चतुर्थ	"	वामदेव	" ५८	" ५८९
५. पञ्चम	"	अग्नि	" ८७	" ७२७
६. षष्ठ	"	भरद्वाज	" ७५	" ७६५
७. सप्तम	"	वसिष्ठ	" १०४	" ८४१

यदि चतुर्थ और तृतीय आंगीरीछे किये जाय, तो ये मण्डल ' बडती हुई मन्त्रसंख्या ' के दीखते हैं ।

प्रथम मण्डलके सूक्त १९१ हैं, जैसे ही दशम मण्डलके भी १९१ ही सूक्त हैं । पर प्रथम मण्डल की मंत्रसंख्या २००६ है और दशम मण्डलकी १७५४ है । अष्टम मण्डल बहुतांश ' कण्व ' ऋषिवाला दीखता है और प्रथम मण्डल मधुच्छंदा से शुरू है । पर इन दोनों में अन्यान्य ऋषियों के भी मंत्र दीखते हैं, इस का कारण भी है ।



इस ऋग्वेद में केवल नवम मण्डल 'दैवत-संहिता' है, शेष मण्डल प्रायः ' आर्षेय-संहिता ' के रूप में हैं। इस नवम मण्डल के सोमदेवता के मन्त्र देखने से हमें दैवत-संहिताकी कल्पना प्रथम भा गयी। और वह हमने पाठकोंके सामने रख दी, जो प्रायः सब पाठकोंको पसंद भा गयी।

### हार्दिक धन्यवाद ।

इस संहिता की कल्पना पसंद आते ही अजमेरनिवासी श्री० पं० नथूलाल शर्माजी पेन्शनर ने इस के निर्माण और मुद्रण के लिये दो सहस्र रु० का दान किया, जिससे इस का कार्य शुरू हुआ है। इनके सब स्वाध्यायशील सज्जनोंपर उक्त दानके कारण अनन्त उपकार हुए हैं। अतः वे धन्यवाद के लिये पात्र हैं।

दैवत-संहिता के निर्माण करने में प्रथम हमारी इतनी हि इच्छा थी कि, केवल एक एक देवता के मंत्र छाटकर एक स्थानपर छापना और इसमें जैसे ऋषिवार मंत्र हैं वैसे ही रखना। अर्थात् एक देवताके मंत्र एक स्थानपर छापना और उस एक देवताके मंत्रों में एक एक ऋषि के मन्त्र इकट्ठे छापना। इससे नित्य पाठ करनेवालोंके लिये आसानी होगी, और अर्थ का विचार करनेवालों के लिये भी अर्थ का मनन करना सहज हो जायगा।

इस समय एक देवता के मंत्र किसी वेदमें एक स्थानपर नहीं है। इसलिये किस देवता के विषय में कहां क्या लिखा है, इसका किसी को पता नहीं रहता, अनुसन्धान करना कठिन होता है। 'दैवत-संहिता' बननेसे प्रत्येक देवताके मन्त्र इकट्ठे होंगे और स्वाध्याय करना सुगम हो जायगा।

उक्त प्रकार सहायता आते ही हमने अग्निमन्त्रों का मुद्रण करना शुरू किया। इस समय विचार यही था कि, साल दो साल में देवतावार चारों वेदों के मन्त्र छाटकर छाप देना। इससे अधिक विचार इस समय नहीं था। इस कारण इस समय हमने जो विज्ञापन छापे, उसमें इस दैवत-संहिता का मुद्रण दो वर्षोंमें होगा, ऐसा छाप दिया था।

### सूचियाँ ।

अग्नि-मंत्रों का मुद्रण होते होते, यह विचार मन में आया कि यदि इन देवता-मंत्रों के साथ साथ—

- ( १ ) अकारादि मन्त्रसूची ।
- ( २ ) पुनरुक्त मन्त्र-भागोंकी सूची ।
- ( ३ ) विशेषण-सूची ।
- ( ४ ) उपमा-सूची ।

ऐसी सूचियाँ दी जायँगी, तो देवता-निर्णय करना सुगम हो जायगा और स्वाध्याय करनेवालों की बहुत ही सहायता हो जायगी।

ऐसा करनेसे पृष्ठसंख्या डेढ़ गुनी हो जायगी, यह भी ख्याल आया और देड़ गुना व्यय भी बढ़ेगा, इसका भी विचार हुआ। पर स्वाध्याय करनेवाला जो कोई होगा उसकी सहायता होनी चाहिये। एक स्वाध्याय करनेवाले को भी सहायता मिली, तो हमारे श्रम और सब व्यय सफल हुए, ऐसा विचार करके हमने उक्त सूचियाँ छपी हैं।

स्वाध्याय की सहायता निर्माण करना, व्यय का भी विचार करना नहीं, पर जो आवश्यक वेद का भाग है, वह छापना। यह हमारा विचार हुआ है और इस दिशा से कार्य चलाया जा रहा है।

### दैवत-संहिताकी प्राचीनता ।

ऋग्वेद में ही नवम मण्डल दैवत-संहिता ही है, वेदमें इतनाही दैवतसंहिता का नमूना है, ऐसा हमारा पहिले ख्याल था। पर सामवेद का विचार करते करते यह बात स्पष्ट हुई है कि, सामवेद-पूर्वार्ध निःसंदेह दैवत-संहिता है, देखिये—

- पूर्वार्ध में- १. आग्नेय काण्ड ११४ मंत्र
२. ऐन्द्र काण्ड ३५२ मंत्र
३. पावमान काण्ड ११९ मंत्र

इस तरह तीन देवताओंके मंत्र पूर्वार्धमें क्रमपूर्वक हैं। यह दैवत-संहिता ही है। अर्थात् जैसी ऋग्वेद के नवम मण्डल में सोम की दैवत-संहिता है, वैसेही सामवेद-पूर्वार्ध में तीन देवताओंकी 'दैवत-संहिता' ही है। अतः हम अब कह सकते हैं कि, 'दैवत-संहिता' की कल्पना, यद्यपि हमारी कल्पना में उत्पन्न हुई ऐसा हमें प्रथम प्रतीत हुआ, तथापि वह कल्पना निःसंदेह वैदिक है और इस का स्वरूप ऋग्वेद के नवम मण्डल में तथा सामवेद के पूर्वार्ध में आज भी दीख पड़ता है।

## छांदस-संहिता ।

सामवेद-पूर्वार्ध देखने से एक और बात भी स्पष्ट हो गयी कि, यहां गायत्री, अनुष्टुप्, त्रिष्टुप्, बृहती ऐसे छंद वार मंत्र संग्रहित हुए हैं। वेद के अध्ययन की जो पाठ विधि हमने निर्धारित की है, उस में भी हमने अपने अनुभव से छन्द के क्रम से ही पाठविधि निर्धारित की है। यही प्रणाली सामवेद में हमें दीख रही है। अर्थात् यह 'छांदस-संहिता' भी वैदिक ही है।

इस पद्धति को अनुसरते हुए हमें इस दैवत-संहिता में छन्दों के क्रम से ही मन्त्र रखने चाहिये थे। पर हमने ऋषियों के क्रम से ही रखे हैं, जैसे ऋग्वेद में है। छन्द के क्रम से रखने से अध्ययन की सुगमता होती है, यह सत्य है, पर ऋषिक्रम में भी बड़ा लाभ है। दोनों लाभ एक ही ग्रन्थ में शामिल नहीं किये जा सकते। इसलिये हमने ऋग्वेद-क्रम को प्राधान्य देकर देवता के मन्त्र ऋषि-क्रमानुसार रखे हैं और उसकी उक्त सूचियां भी दी हैं।

इस ग्रन्थमें अग्निके मन्त्र सूचियोंसमेत तथा इन्द्रके मन्त्र भी सूचियोंसमेत हैं।

इन दो देवताओं के मन्त्र चारों वेदों के मन्त्र-संग्रह के तीसरे भाग के बराबर हैं। अर्थात् इन दो देवताओं की ही मन्त्र-संख्या अधिक है। इसके आगे के देवता बहुत मन्त्र-वाले नहीं हैं। एक तिहाई मन्त्रसंख्या में ये दो देवता हैं और दो-तिहाई मन्त्रसंख्या में संपूर्ण अन्य देवतागण हैं।

## मंत्रोंके तीन संग्रह ।

सब मंत्रोंके तीन प्रकारके संग्रह हो सकते हैं (१) एक आर्षेय मंत्रसंग्रह, इसी को 'आर्षेय-संहिता' कह सकते हैं। ऋग्वेदका मुख्य भाग इस तरहके संग्रहका है। (२) दूसरी 'दैवत-संहिता'। ऋग्वेदका नवम मंडल तथा सामवेद पूर्वार्धमें इस तरह का संग्रह है। यह दैवत संहिता भी उसी का अनुसरण करके बनायी है। (३) तीसरी 'छांदस-संहिता' जो छन्दानुसार मंत्रसंग्रहसे बनती है। सामवेद पूर्वार्धमें ऐसी ही रचना है। इससे एक छंद के मंत्र इकट्ठे रहते हैं।

ये तीन ही मंत्रसंग्रह बड़े कामके हैं। वास्तवमें देखा जाय, तो सब वेदमंत्र इस तरहकी तीनों प्रकार की

संहिताओं में छापने चाहिये। प्रत्येक के अध्ययन का विभिन्न फल है। इस तरह के मंत्रसंग्रह बननेके पूर्व साधारण मनुष्य नहीं जान सकता कि, इनसे क्या लाभ होगा। पर इस अनुभवसे कह सकते हैं कि, वेदमंत्रों का उत्तम अध्ययन करना है, तो इन तीनों मंत्रसंग्रहों की अत्यंत आवश्यकता है।

आर्षेय-संहिता से ऋषिपरंपरा का इन मंत्रोंके साथ जो संबंध है, वह जाना जा सकता है। ऋषिज्ञान के बिना मंत्रज्ञान नहीं होगा। यह प्राचीन परंपरा से सिद्ध हुई बात है। दैवत-संहितासे देवताओं का ज्ञान उत्तम हो सकता है। और छांदस-संहिता से शीघ्र अध्ययन हो सकता है। ये तीन लाभ इन तीन संहिताओं से स्पष्ट रूपसे होते हैं। अतः जो धन इन संहिताओंपर खर्च होगा, वह वेदमेवामें लगेगा, इसमें बिलकुल संदेह नहीं।

## एक व्यर्थ भय ।

जब हमने 'दैवत-संहिता' की कल्पना प्रगट की, तब कई लोगोंने हमें लिखा कि, यदि यह दैवतसंहिता बन गयी, तो मूल चार वेदोंका संहिताएं कोई देखेगा नहीं। पर यह भय व्यर्थ है। ऊपर हमने तीनों प्रकारकी संहिता-ओंका वर्णन किया है, इसमें से एक दूसरे की मारक नहीं है, परंतु ये सब परस्पर उपकारक ही हैं।

इसलिये ऐसा भय करनेकी कोई भी आवश्यकता नहीं है। अध्ययनोंके मार्ग सुगम करने ही चाहियें। यही हमारा कार्य है, जो इस दैवत-संहिता द्वारा किया गया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि, इससे वेदपाठकों का अत्यंत लाभ होगा और वेद का तत्त्वज्ञान समझने में तथा उसके प्रचार में बड़ी सहायता होगी।

इस ग्रंथमें उपमा और विशेषणसूचियां श्री० पं० अनंत दिनकर रास्ते पननिवासीने बनायीं, इसलिये वे धन्यवाद के लिये योग्य हैं।

इस तरह यह दैवत-संहिता का प्रथम भाग पाठकोंके सामने रखा है। हमें पूर्ण आशा है कि सब वेदानुयायी इसका हार्दिक स्वागत करेंगे।

मार्गशीर्ष शुक्ल ६  
शके १८६३  
संवत् १९१८

संपादक

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,  
अध्यक्ष-स्वाध्याय-मंडल, आंध्र

# अग्निदेवता का परिचय ।



## ( १ ) विषयप्रवेश ।

वेदकी “ अग्नि-विद्या ” ठीक प्रकार समझने आनेके लिये सबसे प्रथम “ अग्निदेवताका परिचय ” होनेकी आवश्यकता है। देवताका परिचय हुए बिना मंत्रका आशय समझना अशक्य है। इस कारण हरएक देवताके विषयमें निश्चित ज्ञान होनेके लिये उस उस देवता के संपूर्ण मंत्रोंका उत्तम अध्ययन करके, प्रत्येक देवताका मंत्रोक्त स्वरूप निश्चित करनेके यत्न की आवश्यकता है। इस लिये अध्ययन करनेवालोंको उचित है कि, वे वेदमंत्रोंके अध्ययनसे वैदिक देवताका वैदिक स्वरूपही जाननेका यत्न करें। तथा जो विद्वान् इन देवताओंका रूपान्तर पुराणोंमें देखना चाहते हैं, वे वेद और पुराणोंका तुलनात्मक अभ्यस करे और दोनों कल्पनाओंमें समानता कहां है और विषमता कहां है, इसका निश्चय करे। ऐसा जिन्होंने किया नहीं है, उनके कथनमें बड़ी अशुद्धियां हुई हैं; इसलिये इस विषयमें पूर्वोक्त प्रकार सावधानता रखनेकी अत्यंत आवश्यकता है।

यहां इस निबंधमें अग्निदेवताका वैदिक स्वरूप निश्चित करनेका यत्न करना है।

## ( २ ) भाषामें अग्नि शब्दका भाव ।

अग्निदेवताके स्वरूपका निश्चय इस लेखमें करना है। पाठक यहां कहेंगे कि, “अग्नि” के स्वरूपके निश्चय का तात्पर्य क्या है? अग्नि शब्द “भाग” का पर्याय है और उसका उपयोग पकानेके समय हर एक दिन हम करते हैं। उसका स्वरूप सभी मनुष्य जानते हैं, इसलिये उसके स्वरूपका तो और क्या निश्चय करना है? इस शंकाके उत्तर में निवेदन है कि, यद्यपि “अग्नि” शब्द “भाग”का वाचक है, तथापि वेदके अग्नि देवताके सब मंत्र “भाग” का ही वर्णन कर रहे हैं, ऐसा मानना बड़ी भारी भूल है। लौकिक संस्कृत भाषामें भी “अग्नि” शब्दके भागके अतिरिक्त बहुतसे अन्य अर्थ हैं। जैसा—“अग्निजार वृक्ष, केशर, स्वर्ण, निंबू, भिलावा, चित्रक, रक्तचित्रक, कपि स्थाष्टक, जठराग्नि, पित्त” आदि अनेक अर्थ लौकिक

संस्कृत भाषामें भी अग्नि शब्दके हैं। इसलिये “अग्नि” शब्द केवल “भाग” का ही वाचक मानना गलती है। इसके अतिरिक्त अग्निवाचक कई ऐसे शब्द हैं कि, जो “भाग” में कदापि सार्थ नहीं हो सकते, इनमेंसे कुछ यहां देखिये—

## ( ३ ) अग्निके पर्याय शब्द ।

- ( १ ) वैश्वानरः=विश्वमें ( नर ) पुरुषशक्ति, विश्वका चालक, ( विश्व ) सब (नर) मनुष्योंके संबंधसे होनेवाला, इत्यादि ।
- ( २ ) धनंजयः= धनकी जीतनेवाला, धन प्राप्त करनेवाला ।
- ( ३ ) जातवेदाः= जिससे वेद उत्पन्न हुए हैं, जिससे धन उत्पन्न होता है, जिससे ज्ञान होता है ।
- ( ४ ) तनूनपात्=(तनू) शरीरोंको(न-पात्)न गिरानेवाला, जिसके कारण शरीरोंका पतन नहीं होता ।
- ( ५ ) रोहिताश्रवः- लाल रंगके घोड़ोंसे युक्त ।
- ( ६ ) हिरण्यरेताः- सुवर्णका वीर्य ।
- ( ७ ) सप्तार्चिः-सात ज्वालाओंसे युक्त ।
- ( ८ ) सप्तजिह्वः-सात जिह्वाओंसे युक्त ।
- ( ९ ) सर्वदेवमुखः- सब देवोंमें प्रमुख, किंवा सब देवोंका मुख ।

इत्यादि शब्द ‘ अग्नि ’ के पर्याय हैं, परंतु ये ‘ भाग ’ में सार्थ नहीं हो सकते। उक्त शब्दोंका भाव ‘ भाग ’ में नहीं दिखाई देता है, कमसे कम उक्त अर्थ भागमें चरितार्थ होनेका अनुभव नहीं है। इस लिये ‘ अग्नि ’ शब्दका आशय भागसे भिन्न मानना आवश्यक ही है। वेदमंत्रोंको देखकर भी यही निश्चय होता है। देखिये—

## ( ४ ) पहला मानव “ अग्नि ” ।

पहला जो मानव प्राणी हुआ था, उसका नाम ‘ अग्नि ’ है, ऐसा वेदमें ही कहा है, देखिये—  
त्वामग्ने प्रथममायुमायवे देवा अकृष्वन्नहुषस्य विश्पति । इळामकृष्वन्नहुषस्य शासनी पितुर्यत् पुत्रो ममकस्य जायते ॥ ( ६० ऋ. १।३।१।१ )

“हे अग्ने! ( नहुषस्य विशपतिं ) मनुष्योंके नरपतिरूप ( त्वां प्रथमं भायुं ) तुझ प्रथम मनुष्य को ( देवाः ) देवोंने (भायवे अकृषवन्) मानवजातिके लिये बनाया है। (इळां) वाणी को (नहुषस्य शासनीं) मानवजातिकी शासनकर्त्री (अकृषवन्) बनाई है। (यत् ममकस्य पितुः) जो ममत्वरूप पिताका पुत्र होता है।” उसके आगे वैसी ही संतति होती जाती है और वंशानुरूप वाणी आदिका प्रचार होता है। इस मंत्रका यह भाव देखनेसे निम्न बातोंका पता निःसंदेह लग जाता है—

(१) देवोंने जो पहला मानवप्राणी बनाया, उसीका नाम “अग्नि” था। मनुष्यजातिकी उत्पत्ति करनेकी इच्छासे देवोंने इस प्रथम मानवप्राणी को बनाया था।

(२) यही पहला मानव मनुष्यों का पिता होनेसे इसी को (विश-पति) नरपति अथवा नरेश कहते हैं।

(३) जिस प्रकार इस मानवप्राणी को प्रारंभ में देवोंने बनाया था, उसी प्रकार उसके साथ वाणी की भी उत्पत्ति की गई थी। इसे उसकी धर्मपत्नी भी मान सकते हैं।

(४) इस मानवमें ममता रखी गई है। इस ममत्व के कारण स्त्रीपुरुष इकट्ठे होते हैं और भागे संतति बढ़ाते हैं, इसलिये सब संतति इस “ममत्व” की ही है और पिता की वाणी इसी कारण संतान बोलते हैं।

निघंटु २।३में मनुष्य नामोंमें ‘आयवः (आयुः), नहुषः विशः’ ये शब्द पठित होनेसे, इनका अर्थ मनुष्यही है। तथा निघंटु १।११ में ‘इळा’ शब्द वाङ्नामों में पठित होनेसे इसका अर्थ वाणी है। देवोंके द्वारा इस प्रकार जो ‘पहला मनुष्य’ बनाया गया, उसका नाम अग्नि है और उसकी पत्नी वाणी है। तात्पर्य, मनुष्योंमें भी अग्नि है, अर्थात् मानवप्राणी अग्नि शब्द से वेदमें लिया जाता है। वेदमंत्रों में अग्नि के अनेक अर्थ होंगे, परंतु उसमें एक अर्थ ‘मानव प्राणी’ है, इसमें कोई शंका नहीं है। क्योंकि जो मानव-प्राणी सबसे प्रारंभ में देवोंने बनाया, उसके वंशजों में भी वही भाव और वही वाणी होने के कारण उसमें उसका ‘अग्निपन’ भी उत्तरा ही है। पिताके गुणधर्म आनुवंशिक होकर पुत्रमें उतरते हैं, इसी रीतिसे पिताका अग्निपन पुत्रों में उतरा है। ‘अग्नि’ का ‘वाणी’ के साथ संबंध इस प्रकार माना गया है। मनुष्य उत्पन्न होनेके पूर्व पञ्चपक्षियों

की अनेक योनियोंमें अनेक प्राणी उत्पन्न हो गये थे, परन्तु जैसी वाणी की पूर्णता इस मनुष्यमें हुई है, वैसी किसी अन्य प्राणीमें नहीं हुई। इसलिये उक्त मन्त्रमें कहा है कि, (१) जिस प्रकार मनुष्यरूप अग्निको मानवजातिके पितृस्थानमें देवोंने उत्पन्न किया, (२) उसी प्रकार वाणीको मानवजातिकी शासनकर्त्री देवोंने बनाई। और मानवका इस वाणीके साथ सम्बन्ध भी कर दिया है। इसलिये वाणी मनुष्य की ही अधांगी है। अन्य प्राणियोंमें और मनुष्योंमें यदि किसी विशेष गुण के कारण भेद है, तो इस वाणीके कारण ही है। मनुष्यने इस वाणीके कारण ही इतनी उन्नति की है। अनादि कालसे जो ज्ञानका संग्रह हो रहा है, वह वाणी के कारण ही है और यह ज्ञानही, जो वाणीद्वारा प्राप्त हो रहा है, वही मानवजातिका शासन कर रहा है। इस प्रकार देखनेसे पता लग सकता है, कि वेदका कथन कितना ठीक है। तात्पर्य (१) पहला मानवप्राणी अग्नि है, (२) और उसकी ‘अग्नायी’ वाणी ही है।

अग्नि	अग्नायी
प्रथम मनुष्य	इळा (वाणी)
यम	यमी
शासक	शासनी
विशपति	विशपत्नी
पिता	माता
आत्मा	अवा (रक्षणशक्ति)
आदम	हवा

‘इळा’ शब्दका दूसरा अर्थ ‘भूमि’ है। भूमि बीज बोनेके लिये होती है। मनुष्य अपना ज्ञानरूप बीज इस वाणी में बोता है और इस प्रकार जो ज्ञानवृक्ष फैलता है, उसके फलही हम आज खा रहे हैं। इसके अतिरिक्त भूमि का अर्थ क्षेत्र है और स्त्रीको भी क्षेत्र कहते हैं। इस अर्थ के लेनेसे यह तात्पर्य होगा कि, देवोंने एक पुरुष और एक स्त्री सबसे प्रथम निर्माण की। इसलिये कि यह पुरुष अपने वीर्यसे इस स्त्रीमें पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न करें। और इस प्रकार ममत्वसे संतति उत्पन्न हो। इसी रीतिसे यह संतति उत्पन्न हो गई है।

(५) वृषभ और धेनु ।

‘इळा’ शब्द का तीसरा अर्थ ‘गाय’ है और गायवाचक ‘गो’ शब्दके संस्कृतमें ‘वाणी, भूमि और गाय’ ऐसे अर्थ

हैं । तात्पर्य ये शब्द परस्परो के बाचक हैं । इस भाव को लेकर निम्न मंत्र देखिये—

असत्त्वं सत्त्वं परमे व्योमन् दक्षस्य जन्मन्नदिते-  
रुपस्थे । अग्निर्ह नः प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं आयुनि  
वृषभश्च धेनुः ॥ (१५१९, ऋ० १०।५।७)

‘(दक्षस्य जन्मन्) दक्ष के जन्म के समय (अदितेः उपस्थे) अदितिके पास (परमे व्योमन्) परम आकाश में असत् और सत् ये दो पदार्थ थे । अग्निही हमारा (ऋतस्य प्रथमजा) ऋत का पहला प्रवर्तक है और पूर्व आयु में वृषभ और धेनु है ।’ पूर्व आयु में अग्नि वृषभ था और उसकी धर्मपत्नी धेनु थी । वृषभ शब्द का अर्थ वीर्यवान् और धेनु शब्द का अर्थ वीर्य का धारण करनेवाली है ; पूर्व कौष्टिकमें निम्न शब्द और मिलाइये—

अग्नि	अग्नायी
वृषभ	धेनु
पुरुषशक्ति	स्त्रीशक्ति
क्षेत्रपति	इळा (क्षेत्र)
वाक्पति, गोपति	गां: (वाक्)

उक्त मन्त्रमें भी कहा है कि “अग्नि पहला प्रवर्तक” अर्थात् शासक है । अग्नि मनुष्यरूपमें अवतीर्ण होनेके पूर्व आयुमें “वृषभ” रूपमें था । अर्थात् पशुरूपमें था, तत्पश्चात् वही मनुष्यरूपमें प्रकट हुआ है । यह कथन ‘उत्क्रांतिवाद’ का सूचक है । वैदिक उत्क्रांतिवादका तत्त्व बतानेके लिये इस निबंधमें स्थान नहीं है, तथापि उक्त बातमें वैदिक उत्क्रांतिवाद की ध्वनि है, इतनाही यहां बताना है । इस प्रकार अग्नि न केवल मनुष्योंमें है, प्रत्युत पशुपक्षियोंमें भी है, यह बात उक्त कथनसे सिद्ध होती है । पशुपक्षियोंमें जो अग्नि होगा, उसका विचार हम किसी अन्य स्थानमें करेंगे, यहाँ मनुष्योंमें जो पहला मानव अग्नि हुआ, उसीका अधिक विचार करना है । इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

### (६) पहला अंगिरा ऋषि ।

त्वमग्ने प्रथमो अंगिरा ऋषिर्देवो देवानामभवः ।  
शिषः सखा । तव व्रते कथयो विद्यानापसोऽ-  
जायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः ॥ (५०; ऋ. १।३।१।१)

‘हे अग्ने ! (त्वं प्रथमः अंगिरा ऋषिः) तू पहला अंगिरा ऋषि है । तू स्वयं (देवः) दिव्य शक्तिसे युक्त है और (देवानां शिवः सखा अभवः) देवोंका शुभ मित्र हुआ है । (तव व्रते) तरे नियम में (विद्यानाऽपसः) ज्ञानयुक्त होकर पुरुषार्थ करनेवाले (मरुतः कवयः) मर्त्य कवि (भ्राज-दृष्टयः) तेजस्वी दृष्टिसे युक्त होते हैं ।’ इस मन्त्रमें कहा है कि, पहला ‘अंगिरा ऋषि’ अग्नि ही है, इसेही पहला मानव समझना उचित है । पहला मानव जो अंगिरा ऋषि था, वही अग्नि नामसे प्रसिद्ध है । तथा और देखिये—

त्वमग्ने प्रथमो अंगिरस्तमः कविर्देवानां परि-  
भूषसि व्रतं । विभुर्विश्वस्मै भुवनाय मेधिरो  
द्विमाता शयुः कतिधा चिदायवे ॥ (५१; ऋ. १।३।१।२)

‘हे अग्ने ! तू (प्रथम अंगिरस्तमः कविः) अंगिरसोंमें पहला कवि है और (देवानां व्रत) देवोंका व्रत सुभूषित करता है । तू (विभू) विशेष प्रकार होनेवाला (विश्वस्मै भुवनाय) सब भुवनों अर्थात् बने हुए प्राणी आदिकोंके लिये (मेधि-रः) बुद्धिसे प्रकाशित करनेवाला, (द्विमाता) दोनों पुरुषार्थोंका निर्माता तथा (आयवे) मनुष्यमात्रके लिये (कतिधा चिन्) कई प्रकारसे (शयुः) आराम देनेवाला है ।’

इस मन्त्रमें कहा है कि, अंगिरसोंमें सबसे पहला कवि अग्नि ही है । यही मनुष्योंमें पहला मानव अग्नि है । वाणी इसके साथ उत्पन्न हुई थी, अतः यह कवि है । यहां प्रश्न उत्पन्न होता है कि, यदि पहला मानवप्राणी ही अग्नि है, तो उसीकी संतति भी अग्निरूप ही होनी चाहिये, अर्थात् जैसा एक मानवप्राणी अग्नि है, उसी प्रकार मानव-जाति भी अग्नि ही होनी चाहिये । जैसी एक व्यक्ति होती है, वैसाही उसका समाज होता है, इस सार्वमानुष अग्नि का वर्णन निम्न मंत्रमें हुआ है । देखिये—

### (७) वैश्वानर अग्नि ।

वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिर्भरद्वाजेषु यजतो  
विभावा । शातधनेये शतिनीभिरग्निः पुरुणीथे  
जरते सूनृतावान् ॥ (१७२९; ऋ० १।५।९।७)

‘वैश्वानर अग्नि अपने महत्त्वसे (विश्व-कृष्टिः) सर्व मनुष्य ही है । (भरत्-वाजेषु) पोषक अर्थात् यज्ञों में (यजतः)

पूजनीय और ( विभावा ) विशेष प्रभावयुक्त है । ( स्मृता वाक् ) सत्य वाणी से युक्त होने के कारण यह ( अग्नि ) सर्व मनुष्यरूप अग्नि ( शात-वनेये ) सैकड़ों द्वारा जहाँ सेवन होता है, ऐसे ( पुरु-नीथे ) बहुतोंके नेतृत्वसे चलने-वाले कार्यों में ( शक्तिनीभि ) सैकड़ों की संख्याओं से ( जरते ) प्रसंसित होता है । '

'विश्व+कृष्टिः' अर्थात् 'सर्व-मनुष्य' रूप ही यह अग्नि है । मनुष्यों का समाजरूप ही यह अग्नि है । इसी का नाम ' वैश्वानर ' अग्नि है । ' विश्व-नर ' शब्द का अर्थ भी ' सर्व मनुष्य ' ही है । सब मनुष्यों का जो एक संघ होता है, उस के अन्दर एक प्रकार का तेज रहता है, यही वैश्वानर अग्नि है । इस को ' राष्ट्रीय जीवनाग्नि ' अथवा ' सामाजिक जीवनाग्नि ' समझिये । इस के छोटे नाम ' राष्ट्रग्नि, सामाजिक अग्नि ' हैं । इस की पूजा उन यज्ञों में होती है, कि जिन में ( भरत-वाज ) अन्न और बल का संवर्धन करना होता है । सघ के कारण बल संवर्धन होना प्रत्यक्ष ही है । इसलिये जिस जाति में अपना बल बढ़ाने की सदिच्छा होती है, उसी में ' वैश्वानर अग्नि की उपासना ' की जाति है । मानवसंघरूप अग्नि की उपासना वे ही करेंगे कि, जो संघशक्ति बढ़ाना चाहते हैं । वैश्वानर में ( विश्व-नर ) सब मनुष्यों की अभेद्य संघशक्ति की निश्चित कल्पना है । वरी भाव ' विश्व-कृष्टि ' में है । इस शब्द का भाव श्रीसायणाचार्य निम्न प्रकार देते हैं—

विश्वकृष्टिः । कृष्टिरिति मनुष्य नाम । विश्वे सर्वे मनुष्याः यस्य स्वभूताः स तथोक्तः ।

( ऋ. सायणभाष्य १-५९ ७ )

वैश्वानरः सर्वनेता । विश्वकृष्टिः विश्वा सर्वाः कृष्टीर्मनुष्यादिकाः प्रजाः ॥

( ऋ. दयानन्दभाष्य १-५९-७ )

सायणभाष्य— कृष्टि मनुष्यवाचक शब्द है । सब मनुष्य जिस के लिये अपने ही निज होते हैं, वह विश्व-कृष्टि है । दयानन्दभाष्य— वैश्वानर सब का नेता है । विश्वकृष्टि सब प्रजाओं का संघ है ।

दोनों भाष्यकारों के उक्त अर्थ देखनेयोग्य हैं । सब प्रजाओं का जो एक अभेद्य संघ होता है, उस का नाम

' विश्व-कृष्टि अग्नि ' है । इसी का वर्णन निम्न लिखित मंत्र में देखिये—

स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्विरस्तु तदृता ॥

विप्रैभिरस्तु सनिता ॥ ( ४६; ऋ. १-२७-९ )

' वह ( विश्व-चर्षणि ) सर्व-मनुष्यरूप अग्नि ( अर्वद्वि ) कृतिवालों के साथ ( वाज ) युद्ध के ( तरुता ) पार होनेवाला और ( विप्रैभि. ) ज्ञातियों के साथ ( सनिता ) पूज्य ( अस्तु ) होवे ।'

यह अग्नि ही मानवों का संघ बनाता है, यही हम का तात्पर्य है ।

### ( ८ ) ब्राह्मण और क्षत्रिय ।

मानवजातिरूप जो समाज है, वह पुरुषार्थियों के प्रयत्नोंद्वारा आपत्ति से पार होता है और ज्ञानियों के उद्योग से पूज्य होता है । ' अर्वन् ' शब्द ' गमन करने-वाला, हलचल करनेवाला, प्रयत्नशील, पुरुषार्थी, घोड़ा जिस के पास है, घुड़मवार ' इन अर्थोंमें प्रयुक्त होता है । इसलिये यह क्षत्रियों का सूचक है, तथा ' विप्र ' शब्द विशेषतः ज्ञानी का भाव बताता है, इसलिये ब्राह्मणों का बोधक है । यह अर्थ लेने से उक्त मंत्र का भाव निम्न प्रकार बनता है— ' सर्व-मनुष्यसंघरूपी जो अग्नि है, वह क्षत्रियों के प्रयत्नों से युद्धों में यशस्वी होता है, और ब्राह्मणों के प्रयत्न से वंदनीय होता है । ' इस प्रकार क्षत्रियों और ब्राह्मणों के द्वारा इस मानवसंघ की उन्नति होती रहती है । ब्राह्मण-क्षत्रियों के सघ का महत्त्व वेद में अन्यत्र बहुत स्थानों पर वर्णन किया है, देखिये—

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यंचौ चरतः सह ॥

तं देशं पुण्यं प्रह्वयं यत्र देवाः सहाग्निना ॥ य. २० २५

' जहाँ ( ब्रह्म क्षत्र च ) ब्राह्मण और क्षत्रिय ( सम्यंचौ सह चरतः ) मिल कर हलचल करते हैं, वही पुण्यदेश है, और ( प्रजा-इष ) बुद्धिसे इच्छा करनेयोग्य है, तथा वहाँही देव अग्निके साथ रहते हैं ।'

ब्राह्मण-क्षत्रियोंकी मिलजुलकर जो हलचल होती है, वही राष्ट्रीय हलचल होती है । क्योंकि येही राष्ट्र के प्रधान अवयव हैं । वास्तव में यह ब्राह्मण-क्षत्रियोंकी हलचल नहीं है, परन्तु ( ब्रह्म क्षत्र ) ज्ञान और पुरुषार्थकी संगठित हलचलही है । जहाँ ज्ञान और कर्मका संगठित कार्य

होता है, वहांही सिद्धि मिलती है। सब मनुष्य जिस अग्निसे संबधित हुए हैं, वह विश्वकृष्टि, वैश्वानर या विश्वचर्षणि अग्नि है। इस प्रकार जो अभेद्य संघ होता है, उसीका नाम “ विश्व कृष्टि ” अग्नि है। इस विषय में निम्न लिखित मन्त्र देखिए—

मंद्रं होतारं शुचिमद्वयाविनं दमूनसमृक्थ्यं  
विश्वचर्षणिम् ॥ रथं न चित्रं वपुषाय दर्शतं मनुर्हितं  
सदमिदू राय ईमह ॥ ( १७४१, ऋ० ३।२।१५ )

‘ ( मद्र ) आनदकारक ( होतारं ) दाता ( शुचि ) पवित्र ( अद्वयाविन ) द्वैत अर्थात् सगढा जिसमें नहीं है, ( दमूनसं ) संयमी, ( उक्थ्यं ) प्रशसनीय, ( मनुः-हितं ) मनुष्यमात्रका हित करनेमें तत्पर ऐसे ( विश्व-चर्षणिं ) सर्व-मनुष्यसंघरूप अग्निकी ( सद इत् ) सदा ( राये ) श्रेष्ठ ऐश्वर्यके लिए ( ईमहे ) हम प्राप्ति करते हैं, जिस प्रकार सुन्दर दर्शनीय आकृतिसे युक्त रथकी प्राप्ति की जाती है ।’

इस मंत्र मे ‘ सार्व-मानुष अग्नि ’ के कई गुण वर्णन किये हे। उनका विचार करने से ‘ राष्ट्राग्नि ’ का स्वरूप ठीक ध्यान में आ सकता है। ‘ अ-द्वयाविन् ’ यह शब्द जाति जाति के आपस के झगडों का निषेध कर रहा है। जिन में आपस के झगडे नहीं हैं, परस्पर कपट और ईर्ष्याद्वेष के भाव नहीं हैं और जो मानवसंघ एकता से अपनी शक्ति बढ़ा रहा है, परस्पर अभेद्य एकता प्रस्थापित कर जो उन्नति प्राप्त कर रहा है और जो निष्कपट भाव के आचरण करने के कारण उन्नत हो रहा है, उस प्रकार का अभेद्य मानवसंघ इस शब्द से बोधित हो रहा है। ‘ मनुः+हितं ’ मनुष्यमात्र का हित करनेवाला, यह भाव इस शब्द मे है। मानवसंघ निष्कपट भाव से जो कार्य करेगा, उस से संपूर्ण मनुष्यों का ही हित होगा, इस मे संदेह ही नहीं हो सकता। ‘ दमू-नसू = जिस का मन स्वाधीन है, अर्थात् जो संयमी है। ताःपर्यं, जो नियमों से बधा है और नियमानुकूल चल रहा है। नियम छोडकर स्वेच्छासे जो स्वैर वर्तन नहीं करता, इस प्रकारका जो मनुष्य तथा मानवसंघ होता है, वही उन्नति प्राप्त कर सकता है। इन शब्दों के विचार से वैदिक राष्ट्रीय अग्नि का पता लग सकता है। इस के संवर्धन का उपाय देखिये ।

## ( ९ ) अग्निसंवर्धन ।

अग्निं घृतेन वावृधुः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम् ॥

स्वाधीभिर्नचस्युभिः ॥ ( ८६५; ऋ० ५-१४-६ )

‘ ( विश्व-चर्षणिं अग्निं ) सार्व-मानुष अग्निको ( घृतेन ) तेजस्वितासे ( स्तोमेभिः ) संघभावसे ( स्वा-धीभिः ) आरम-बुद्धिसे तथा ( वचस्युभिः ) वाणीके योगसे ( वावृधुः ) बढ़ाते हैं ।’ यह मंत्र विशेष अर्थसे प्रयुक्त हुआ है। ‘ घृत ’ शब्दके दो अर्थ हैं, घी और तेजस्विता। ‘ स्तोम ’ शब्द के भी दो अर्थ हैं- यज्ञ और संघभाव ( group, assemblage )। ‘ स्वा-धी ’ शब्द के दो अर्थ हैं- अध्ययन और आत्मबुद्धि । ‘ वचस्+यु ’ के दो अर्थ हैं, प्रशंसाकी इच्छा और मंत्रणा, सुविचार इ०। ये सब अर्थ लेकर सार्वजनिक भावदर्शक उक्त मंत्र का तात्पर्य निम्न प्रकार है। ‘ सर्व-मानव-संघरूप जो अग्नि है, वह तेजस्विता, संघ-भाव, आरम-बुद्धि तथा सुविचारसे बढ़ाया जाता है।’ मनुष्यसंघ का हित इन गुणों से होता है। इसलिये जिस राष्ट्र को अपना उदार करना है, उस को चाहिये कि, वह अपने अन्दर तेजस्विता, संघभाव, एकता, आरमबुद्धि, तथा सुविचार आदि गुण बढ़ावे। यही राष्ट्रीय उन्नति का मूल मंत्र है। अस्तु। उक्त मंत्र में सार्वमानुष अग्निकी उन्नति का मार्ग बताया है। यह सार्वजनिक अग्नि क्या देता है, इसका वर्णन निम्न लिखित मंत्र में देखनेयोग्य है—

अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः ॥

अग्नी राये स्वाभुवं स प्रीतो याति वार्यमिर्षं

स्तोतृभ्य आभर ॥ ( ८०३; ऋ० ५-६-३ )

‘ यह ( विश्व-चर्षणि अग्निः ) सार्वमानुष अग्नि ( विश्वे ) प्रजाओं के लिये ( वाजिनं ) अन्नयुक्त बल देता है। यह अग्नि संतुष्ट ( प्रीतः ) होकर ( राये ) ऐश्वर्य के लिये ( सु+आभुवं वार्यं इत् ) उत्तम प्रभावयुक्त वरणीय अन्न ( याति ) प्राप्त करता है। यह सब याजको को भर दो ।’

मानवसंघरूप यह अग्नि यदि संतुष्ट हुआ, तो सब प्रजाओं को अन्न, बल, संतति, यश, प्रभाव, ऐश्वर्य तथा हरएक प्रकार का इष्ट सुख देता है। इसलिये इस की संतुष्टि सिद्ध करनी चाहिये। संघ, समाज और राष्ट्र की संतुष्टि उस के स्वातन्त्र्य के संरक्षण से होती है। व्यक्ति-

स्वातन्त्र्य और संघ का नियमन योग्य रीति से होने से इस की संतुष्टता होती है । व्यक्तिस्वातन्त्र्य संघभाव का घातक न हो और संघभाव व्यक्ति को परतंत्र न बनावे, यह उपदेश निम्न मंत्रों में कहा है—

( १० ) व्यक्तिभाव और संघभाव ।

- ( १ ) अंधं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ।  
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रता ॥९॥
- ( २ ) अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् ।  
इति शश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचक्षिरे ॥१०॥
- ( ३ ) सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह ।  
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते ॥११॥  
( वा० य० ४०; ईश० उ० १२-१४ )

( १ ) जो ( अ-सं-भूति ) केवल अ-संघभाव अर्थात् व्यक्तिभावकी उपासना करते हैं, वे अंधकार में गिरते हैं, तथा उससे घने अंधकार में वे पहुँचते हैं, कि जो केवल ( सं-भूत्यां ) संघभाव में ही रमते हैं । ( २ ) संघभाव का फल भिन्न है और व्यक्तिभाव का फल भिन्न है, ऐसा धीर लोग कहते आये हैं । ( ३ ) संघभाव और असंघभाव किंवा व्यक्तिभाव को जो साथ साथ उपयोगी समझते हैं, वे व्यक्तिभाव से अपमृत्यु आदि के कष्ट दूर करके संघभाव से अमर होते हैं ।

संघभाव की उपासना करने की वैदिक रीति इसमें दी है । केवल सङ्घभाव बढ़ाया गया, तो व्यक्ति की सत्ता दब जाती है और व्यक्तिस्वातन्त्र्य नष्ट होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति में परतन्त्रता बढ़ने से सब समाज कालांतर से परतन्त्र हो जाता है, यह दोष संघभाव का अतिरेक करने से होता है । तथा जो व्यक्तिस्वातन्त्र्य को हृदय से अधिक बढ़ाते हैं, उनमें संघशक्ति बढ नहीं सकती, क्योंकि हरएक व्यक्ति किसी एक नियंत्रणा में बद्ध नहीं होती । इसलिये उक्त गुण केवल अकेला अकेलाही रहने से लाभदायक नहीं होता । परन्तु संघभाव से बल बढ़ता है और व्यक्तिस्वातन्त्र्य से हरएक की शक्ति विकसित होती है, यह देख कर बुद्धिमान् पुरुष युक्तिसे संघभाव को भी बढाते हैं और सीमित व्यक्तिस्वातन्त्र्यको भी सीमित रखते हैं । इस प्रकार करने से वैयक्तिक शक्तियों की वृद्धि होती है और संघभाव से समाज में बल भी बढ जाता है । यही समविकास

का वैदिक सिद्धांत है और मानवसंघ की सच्ची उन्नति करने का यही उपाय है । इस रीति से जो जनता अपना समविकास करती है, उनका समाज अथवा राष्ट्र प्रसन्न होता है और उन प्रजाजनों में पूर्वमंत्रोक्त आनन्द पाया जाता है । इस सघरूप अग्नि से और एक लाभ होता है, उसे भी यहां देखिये—

( ११ ) संघशक्ति का अद्भुत बल ।

स हि ष्मा विश्वचर्षणिरभिमाति सहो दधे ।  
अग्न एष क्षयेष्वा रेवन्नः शुक्र दीदिहि घुमत् पावक दीदिहि ॥ ( १०६. ऋ० ५।२३।४ )  
' वह ( विश्व-चर्षणिः ) सार्व-मानुष अग्नि ( अभि-माति ) शत्रु का नाश करने का ( सहः ) बल ( दधे ) धारण करता है । हे ( शुक्र अग्ने ) शुद्ध अग्ने ! हमारे ( भयेषु ) स्थानों में ( रेवन् ) धनयुक्त ( दीदिहि ) प्रकाश रखो । हे ( घुमत् पावक ) तेजस्वी शुद्धिकर्ता ! प्रकाश करो । '

सर्व मनुष्यों के संघ का जो एक राष्ट्रअग्नि है, वह शत्रु का नाश करने का बल अपने राष्ट्र में रखता है । इसका तात्पर्य स्पष्ट ही है । संघशक्ति से समाज में जो एकता पाई जाती है, उससे उस समाज में इतना बल बढ जाता है कि, उस के सामने कोई शत्रु डहर नहीं सकता । जो अपनी राष्ट्रीयता का विकास करना चाहते हैं, उन को इस मंत्र से बहुत ही बोध मिल सकता है । जो राष्ट्र अपनी संघशक्ति बढ़ावेगा, उस की शक्ति भी वैसी प्रबल हो जायगी ।

विश्वचर्षणिः= विश्वे चर्षणयो मनुष्या रक्षणीया यस्य ।  
( ऋ० सायणभाष्य ५ ६-२ )

' सब मनुष्य जिस के रक्षणीय हैं, उस का नाम विश्वचर्षणि है ।' यह सार्वमानुष अग्नि है । सब मनुष्योंका संघ ही यह अग्नि है । इसी प्रकार सर्व मनुष्यों के संघ के दर्शक शब्द वेद में बहुत है, देखिये—

विश्व+कृष्टि = सर्व मनुष्य, सब कृषि करनेवाले ।

विश्व+चर्षणिः= ,, ,, ,, ,, ,,

विश्वायुः ( विश्व+आयुः ) = सब मनुष्य ( पूर्णायुषी मानव ) ।

विश्व+जन्त्यः= सब जनों के संबंध से उत्पन्न ।



पांच+जन्यः= पांच जनों के संबन्ध से उत्पन्न ।  
 ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषा-  
 दोंके संघ से बननेवाला एक राष्ट्र ।  
 विश्व+मानवः= सब मनुष्यों से बना हुआ संघ ।  
 त्रिश्वा+नरः } = संपूर्ण मनुष्यों का संघ, अथवा सब  
 वैश्वा+नरः } का नेता ।  
 सर्व+पुरुषः= सब पुरुषों से युक्त ।

इन सब वैदिक शब्दों का भाव अत्यन्त स्पष्ट है । इस लिये इन का अधिक स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता नहीं । तथा अग्निदेवता से भिन्न अन्य देवों के मंत्रों में जो इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग हुआ है, उन का यहां अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं है । जो शब्द अग्निस्मृतियों में आ गये हैं, उन का विचार इस के पूर्व किया ही है । उसमें दिये मंत्रों से 'सर्व-जन-सङ्घ' की वैदिक कल्पना पाठकों के मन में आ चुकी होगी । यही संघात्मक अग्नि है, अथवा इस को राष्ट्रीय अग्नि भी कह सकते हैं । अस्तु । इस प्रकार हमने देखा कि, ( १ ) एक मनुष्य भी अग्नि है और ( २ ) मानवसंघ भी एक प्रकार का अग्नि है । यह स्पष्ट ही है कि, यदि एक मनुष्य अग्निरूप है, तो उस का संघ भी अग्निरूप ही होना चाहिये । तथा जो संघ अग्निरूप होगा, उस का एक अवयव भी अग्निरूप ही होना चाहिये । तात्पर्य, मनुष्य और मानव-संघ ये दोनों अग्निरूप हैं । यही 'वैश्वानर अग्नि' है । देखिये इस का वर्णन—

वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिः ॥ ( ऋ० १-५९-७ )

'वैश्वानर अग्नि अपने महत्त्व से सब-मनुष्य ही है ।'

इस से वैश्वानर अग्नि की उत्तम कल्पना हो सकती है । सब मनुष्यों का जो एक संघ है, वही वैश्वानर है । 'विश्वानर' शब्द का अर्थ 'सब-मनुष्य' ऐसा ही है, वही भाव वैश्वानर शब्दसे व्यक्त होता है । इसका और वर्णन देखिये—

( १२ ) जनता का केंद्र ।

वया इदमे अग्रयस्ते अन्ये त्वे विश्वे अमृता  
 मादयन्ते ॥ वैश्वानर नाभिरसि क्षितीनां स्थूणेव  
 जना उपमिद्यतन्ध ॥ ( १७१७; ऋ० १-५९-१ )

'हे अग्ने ! ( ते अन्ये अग्रयः ) वे दूसरे अग्नि ( त्वे )  
 तेरे अन्दर ( वया इद् ) शाखाओं के समानही हैं । वे

सब अमृत अग्नि तेरेसे ही ( मादयन्ते ) हर्षित होते हैं ।  
 हे वैश्वानर अग्ने ! तू ( क्षितीनां नाभिः ) सब मनुष्यों का  
 केंद्र है । तू ( स्थूणा इव ) स्तंभ के समान ( जनान् ) सब  
 जनता का तू आधार है ।'

अग्नि का अर्थ एक मनुष्य और वैश्वानर का अर्थ मनुष्य-  
 संघ । ये अर्थ पहले बताये ही हैं । ये अर्थ लेकर इस मंत्र  
 का भाव निम्न प्रकार होता है । 'हे मानवसंघ ! ये सब  
 मनुष्य तेरी शाखायें ही हैं । तेरे आधार से ही ये सब  
 मनुष्य अमर बने हैं । तू सब जनताका केंद्र है । जिस  
 प्रकार स्तंभ आधार देता है, उस प्रकार तू ही इन सब का  
 आधार है ।'

( १३ ) समाज का अमरत्व ।

संघ, समाज अथवा राष्ट्र सब मनुष्यों का आधार है,  
 सब का केंद्र है, सब का उपास्य और सब का आधार है ।  
 सब मनुष्य संघभाव से ही अमर होते हैं । यद्यपि एक  
 एक व्यक्ति मरती है, तथापि जानि अमर होती है ।

सम्भृत्याऽमृतमश्नुते ॥ ( वा० य० ४०।११ )

'( स+भृत्या, एकीभूय संस्थित्या ) संघभाव से अमरत्व  
 प्राप्त होता है ।' यही भाव पूर्वोक्त मंत्र में स्पष्ट शब्दों से  
 कहा है, देखिये— ( १ ) सब अन्य मनुष्य राष्ट्र-पुरुष की  
 शाखायें हैं, राष्ट्रपुरुष वृक्ष है और जनता उसकी फैली हुई  
 शाखायें हैं । ( २ ) राष्ट्र के आधार से सब जनता अमर  
 है, यद्यपि एक एक व्यक्ति मरती है, तथापि राष्ट्र अमर है ।  
 ( ३ ) राष्ट्र ही सब जनता का केंद्र है, ( ४ ) राष्ट्र ही सब  
 जनता का आधारस्तंभ है । वैश्वानर का अर्थ ठीक समझने  
 से वेदमंत्रों के अर्थ इस प्रकार सुगम हो जाते हैं । वैश्वानर  
 की उत्पत्ति के विषय में निम्न मंत्र देखिये—

तं त्वा देवासोऽजनयन्त देवं

वैश्वानर ज्योतिरिद्वार्याय ॥ ( १७१८; ऋ० १।५९।२ )

'हे वैश्वानर ! तुम देवों ने देव बनाया है, क्योंकि तू  
 आर्यों के लिये उद्योति है ।' मानवसंघरूपी यह देव  
 देवों के द्वारा इसलिये निर्माण हुआ कि, यह आर्यों के  
 लिये उन्नति का मार्ग बतानेवाला दीप बने । अर्थात्  
 इसके तेज से अपनी उन्नति का मार्ग आर्य देख सकते  
 हैं, और चल कर अभ्युदय प्राप्त कर सकते हैं । इससे  
 स्पष्ट है कि, सब आर्यों को अपने पञ्चजनरूपी राष्ट्र को ही

देव मानना चाहिये और उसके साथ अपनी उन्नति प्राप्त करनी चाहिये । तथा—

आ सूर्ये न रश्मयो ध्रुवासो वैश्वानरे दधिरेऽग्ना वसूनि । या पर्वतेष्वोषधीष्वसु या मानुषे ष्वसि तस्य राजा ॥ ( १७१९; ऋ० १।५९।३ )

‘जिस प्रकार सूर्य में किरणें स्थिर हैं उसी प्रकार इस वैश्वानर अग्नि में धन स्थिर हैं । जो धन पर्वतों औषधियों और मनुष्यों में हैं, उन सब का तू राजा है ।’

( १४ ) सब धन संघका ही है ।

सब धन मानवसंघ का ही है । उस पर किसी व्यक्ति का अधिकार नहीं है । जो धन पर्वतों में, वृक्षों और वनस्पतियों में, तथा मनुष्यों में अथवा भूमि आदि में है, वह सब मानवसंघ का ही है । व्यक्ति के पास जो धन है, वह भी उस व्यक्ति को, प्रसंग आने पर, संघ के चरणों पर न्यौछावर करना आवश्यक है । मनुष्यों के पास तन, मन, धन जो कुछ है, वह सब जाति का ही है, इसलिये योग्य समय आते ही श्रेष्ठ पुरुष अपने सर्वस्वकी आहुति राष्ट्र-पुरुष की पूजा करने के लिये अर्पण कर देते हैं । क्योंकि वही सर्वस्व का सच्चा राजा है । देखिये—

स्वर्वते सत्यशुभ्राय पूर्वीर्वैश्वानराय नृतमाय यद्हीः ॥ ( १७२०; ऋ० १।५९।४ )

‘( सु+भर्वते ) उत्तम हलचल करनेवाले, ( सत्य+शुभ्राय ) सच्चे बलवान् ( नृ+तमाय ) अत्यंत मनुष्यों से युक्त ( वैश्वानराय ) सब मानवसंघ के लिये ( पूर्वाः ) सनातन ( यद्हीः ) बड़ी प्रशंसा होती है ।’ अर्थात् जो पंचजन मानवसंघ किंवा राष्ट्र उत्तम हलचल करता है, सच्चा बल रखता है और सच्चा में अत्यंत अधिक मनुष्यों से युक्त है, वही प्रशंसनीय है । इसलिये राष्ट्रीय उन्नति चाहनेवालों को चाहिये कि, वे ( सु+भर्वत् ) अच्छी हलचल करें, ( सत्य+शुभ्र ) सच्चा बल प्राप्त करें, ( नृ+तमः ) अपने मनुष्यों की संख्या अधिक से अधिक बढ़ावे, ऐसा करने से ही उनकी सर्वत्र प्रशंसा होगी । तथा और देखिये—

दिवश्चित्ते बृहतो जातवेदो वैश्वानर प्ररिचिचे महिष्वम् ॥ राजा कृष्टीनामसि मानुषीणां युधा देवेभ्यो वरिषश्चकर्थ ॥ ( १७२१; ऋ० १।५९।५ )

‘हे जातवेद वैश्वानर ! तेरी महिमा बड़े सुलोक से भी अधिक फैली है । तू ( मानुषीणां कृष्टीनां ) मानवी प्रजाओं का राजा है । युद्ध से तूही देवों के लिये धन देता है ।’

मानवी संघ की महिमा सब से बड़ी है । यही संघ मानवों का राजा अर्थात् सच्चा राजा है । युद्ध में विजय इसी के कारण होता है । राष्ट्रीय भावना से, जातीय महत्वाकांक्षा से प्रेरित हो कर जो युद्ध करते हैं, उनका ही विजय होता है । देश के हित के लिये लड़ने का उपदेश इस मंत्र से सूचित होता है । इस प्रकार इस सूक्त में मानव-संघ का स्वरूप बताया है । यही वैश्वानर अग्नि है । इसका और वर्णन देखिये ।

( १५ ) संघ के विजयमं व्यक्ति का जय ।

अश्माकमग्ने मध्वत्सु धारयानामि क्षत्रमजरं सुवीर्यं । वयं जयेम शतितं सहस्रिणं वैश्वानर वाजमग्ने तवोतिभिः । ( १७८५; ऋ० १।८।६ )

‘हे वैश्वानर अग्ने ! हमारे ( मध+वत्सु ) धनिकों में उत्तम वीर्ययुक्त क्षात्र तेज धारण कर । तेरे संरक्षणों से हम सब सौ अथवा हजारों सैनिकों के साथ हमला करनेवाले शत्रु को भी पराजित करेंगे ।’

मानवसंघ के प्रेमसे लड़नेवालों को इस प्रकार बल प्राप्त होना स्वाभाविक ही है । जो अपने राष्ट्रहितके लिये जागते हैं, उनसे ही राष्ट्री उन्नति होती है, इस विषयमें कहा है—  
वैश्वानरो वावृध्रे जागृवद्भिः ॥ ( १७९४; ऋ० ७।५।१ )

‘मानवसंघरूप अग्नि जागनेवालोंके द्वाराही बढ़ता है ।’ जो लोग अपनी जातीय उन्नतिके लिये जागते हैं, वेही अपनी जातीय अथवा राष्ट्रीय उन्नति सिद्ध करते हैं । अस्तु । इस प्रकार सर्व मनुष्यों के संघरूप अग्नि का वर्णन वेद में है । इतने स्पष्टीकरण से पाठकों को पता लगा ही होगा कि, जिस प्रकार एक मनुष्य-विशेषतः पहिला मनुष्य-अग्नि है, उसी प्रकार मानवसमाज भी अग्नि है । इसीलिये धर्म-कर्मों में एक मनुष्य के साथ अग्नि उपासना का सम्बन्ध आता है; अग्निकार्य, हवन, आदि धार्मिक विधियों में वैयक्तिक अग्नि की उपासना है । तथा सामाजिक, जातीय, राष्ट्रीय अथवा सामुदायिक अग्निपूजा भी सामाजिक अग्नि की शोतक है इस । सामुदायिक पूजा का रूप अग्निहोम

उयोतिष्टोम, अश्वमेध, वाजपेय आदि महान् यज्ञों में दिखाई देता है। व्यक्तिगत अग्नि तथा सामुदायिक अग्नि जो कुडों में जलाया जाता है, वह सब के मनो का केंद्रीकरण करने के लिये ही है। वास्तविक उस का स्वरूप वैयक्तिक और सामुदायिक दृष्टि से जो वेदमंत्रों में है, वह ऊपर बताया ही है। अब वैयक्तिक अग्नि की और अधिक खोज करने की आवश्यकता है, इसलिये निम्न मंत्र देखिये—

### ( १६ ) बुद्धि में पहिला अग्नि ।

अग्निं वो देव यज्ययाग्निं प्रयत्यध्वरे ॥ अग्निं धीषु प्रथममग्निमर्वत्यग्निं क्षेत्राय साधसे । ( १४२०; ऋ. ८-७१-१२ )

‘ ( १ ) ( देव-यज्यया ) देवों के यज्ञ से आप के पास एक अग्नि है । ( २ ) ( अध्वरे प्रयति ) यज्ञ की प्रगति में एक अग्नि है । ( ३ ) ( धीषु प्रथम अग्नि ) बुद्धियों में पहला एक अग्नि है । ( ४ ) ( अर्वति अग्नि ) हलचल करनेवालेमें एक अग्नि है । ( ५ ) ( क्षेत्राय साधसे अग्नि ) भूमिकी प्राप्ति करानेवाला एक अग्नि है । इन सबकी पूजा मैं करता हूँ । ’ इस मंत्र में पांच प्रकार की अग्नियों का वर्णन है । इन में एक अग्नि है, जो यज्ञकुड में प्रदीप्त होता है । दूसरा अग्नि बड़े बड़े अध्वरों में जलता रहता है । तीसरा अग्नि मनुष्यों की बुद्धि में है, जिस की चेतना से मनुष्य धारणाशक्ति के कार्य करता है । चौथा अग्नि सामुदायिक हलचल करनेवालों में होता है । इसलिये इनकी हलचल से जनता में एक प्रकार की आग जलती हुई दिखाई देती है । पांचवां अग्नि क्षत्रियों में जलता है भार उस के कारण वे अपने राज्य का विस्तार करते रहते हैं । इन पांच अग्नियों में पहले तीन अग्नि ब्राह्मण्य के साथ विशेषतः सम्बन्ध रखते हैं और आगे के दो अग्नि क्षत्रियों के साथ विशेष कर सम्बन्ध रखते हैं । जो पाठक इस मंत्र का विचार करे, उन को ‘ अग्नि ’ शब्द के व्यापक भाव का पता लग सकता है । हवनों और यागों में जलनेवाला अग्नि और है, और मानवी बुद्धियों में जलनेवाला ‘ ज्ञानाग्नि ’ उससे भिन्न है । इस ज्ञानाग्नि को प्रदीप्त करने की और उस में ज्ञान के हवन की विधि भी भिन्न ही है । हलचल कर के सामुदायिक जीवन पैदा करनेवालों में तथा राज्य-विस्तार करनेवाले क्षत्रियों के जोश में जो अग्नि होता है, वह और ही है । विचारकी दृष्टिसे इन अग्नियोंकी निश्चित

कल्पना करनी चाहिये । हवनों और यज्ञों में प्रयुक्त होने-वाले अग्नि को सब जानते ही हैं । इसलिये उसका अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं है । बुद्धि में जो अग्नि किंवा ज्ञानाग्नि बसता है, उस का विचार करना चाहिये । इस अग्नि स्वरूप ‘ चित् ’ है । सत्, चित्, आनन्द में यही चित् है, यही आत्मा नाम से प्रसिद्ध है । इस के स्वरूप का वर्णन निम्न प्रकार है—

( १ ) हीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वं मन एष ॥ ( बृ. १-५-३ )

( २ ) धियो यो नः प्रचोदयात् ।

( बृ. ६-३-६ ) ( ऋ. ३-६२-१० )

( ३ ) इंद्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः ।  
मनसस्तु पराबुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः ॥

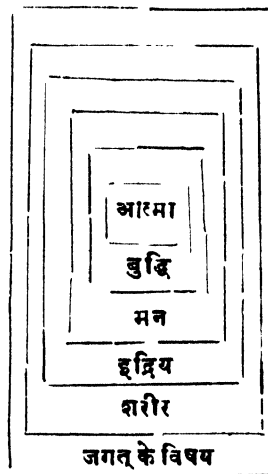
( कठ० ३-१० )

( ४ ) इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।  
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥

भ. गी. ३-४२ )

‘ ( १ ) ( हो ) नम्रता, ( धीः ) बुद्धि, ( भी ) भीति जो अधर्म से उत्पन्न होती है, यह सब मन ही है ।

( २ ) जो हमारी बुद्धियों को प्रेरणा करता है । ( ३ ) इंद्रियोंसे परे अर्थ हैं, अर्थोंसे मन परे है, मन से बुद्धि परे है और बुद्धि से महान् आत्मा परे है । ( ४ ) विषयों से परे इंद्रिय, इंद्रियों से परे मन, मन से परे बुद्धि और बुद्धि से परे वह है । ’ बुद्धि के अन्दर, परान्तु बुद्धि से परे, जो अग्नि है, वह आत्माग्नि ही है । इस की स्थिति साथ-बाएँ चित्र में बताई है ।



यह आत्माग्नि बुद्धि की वेदीमें प्रज्वलित होता है । मन आदि इंद्रियां इसी में विविध ज्ञान-संस्कारों का हवन कर रही हैं और इस प्रकार यह ‘ ज्ञानयज्ञ ’ चल रहा है । बुद्धि के अंदर जो चित्रूप पहिला अग्नि है, वह यही आत्माग्नि है । मनुष्यको इसी आत्माग्नि का प्रज्वलन करना चाहिये । यही आत्मशक्तिका विकास

कहलाता है ।

सामुदायिक हलचल करनेवालों में तथा राज्य बढ़ाने-वालों में जो उसाही क्षात्राग्नि होता है, वह क्षत्रियों के इतिहास में सुप्रसिद्ध है । यह भी क्षात्रबुद्धि में वसता है और क्षत्रियों को सुस्त रहने नहीं देता । अस्तु । ये सब अग्नि केवल ' आग ' के स्वरूप के ही नहीं हैं, प्रत्युत मानवी बुद्धि के ये शक्ति-विशेष हैं । आत्मा बुद्धि के अन्दर बैठा हुआ, बुद्धि मन तथा इंद्रियादिकों में विशेष शक्ति की प्रेरणा करता है । ब्राह्म प्रवृत्ति, क्षात्र-प्रवृत्ति तथा अन्य प्रवृत्तियां इसी से निष्पन्न होती हैं । इस लिये यही आत्माग्नि मुख्य है और अन्य गौण अग्नि बहुत से हैं । इन सब का मूल बुद्धि में जो पहला प्रवर्तक आत्मा है, उसी में है । इस आत्माग्नि का और वर्णन देखिये—

### ( १७ ) पहिला मननकर्ता अग्नि ।

त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोताऽस्या धियो अभवो द्रुम होता । त्वं सीं वृषन्नकृणोर्दुष्टरीत सहा विश्वस्मै सहसे सहध्वै ॥ ( १३९, ऋ० ६।१।१ )

' हे अग्ने ! ( त्वं प्रथम. मनोता ) तू पहिला मनन-कर्ता है । हे ( द्रुम ) दर्शनीय ! ( अस्या. धियः होता अभव. ) इस बुद्धि का हवनकर्ता तूही है । हे ( वृषन् ) बलवान् ! तू ( सीं ) सब प्रकार से ( दुग्न्-तरीतु ) पार होने के लिये कठिन ( सहः ) बल ( विश्वस्मै सहसे ) सब बलवान् शत्रु को ( सहध्वै ) पराजित करने के लिये धारण ( अकृणोः ) करता है । '

इस मंत्र में ' अग्नि ' का विशेषण ' मनोता ' है । श्री सायणाचार्य इस शब्द का अर्थ— देवानां मनः यदा उतं संबद्धं भवति तादृशः ' अर्थात् देवों का मन जिसमें संबन्धित होता है, ' ऐसा करते हैं । देव शब्द का एक अर्थ इंद्रियगण है । इंद्रियों का मन आत्मा में संबन्धित होता है, इसका सचित्र वर्णन इस से पूर्व किया ही है । इससे स्पष्ट होता है, ' मनोता अग्नि ' वही आत्मा है कि, जिस से मन आदि सब इंद्रियां संबन्धित होती हैं । इस विषय में ऐतरेय ब्राह्मण में निम्न प्रकार कहा है—

एव ह्यग्ने प्रथमो मनोतेति । ...तिस्रो वै देवानां मनोतास्तासु हि तेषां मनांस्योतानि । चाग्नै देवानां मनोता, तस्यां हि तेषां मनांस्योतानि ।

गौर्वै देवानां मनोता, तस्यां हि तेषां मनांस्यो-तानि । अग्निर्वै देवानां मनोता, तस्मिन् हि तेषां मनांस्योतान्यग्निः सर्वा मनोता, अग्नी मनोताः संगच्छन्ते ॥ ( ऐ० ब्रा० २।१० )

' देवों के तीन मनोता है । वाणी देवों की मनोता है, क्योंकि उसमें देवों का मन संबन्धित होता है । गौ देवों की मनोता है, क्योंकि उसमें उनके मन संबन्धित होते हैं । अग्नि देवों की मनोता है, क्योंकि उसमें सब देवों के मन संबन्धित होते हैं । अग्नि ही सब मनोता है, क्योंकि अग्नि में ही सब मनोता संगत होते हैं । ' अग्नि, सूर्य आदि देवों का सम्बन्ध जैसा परमात्मा से है, उसी प्रकार वाणी, नेत्र, कर्ण आदि इंद्रियों का सम्बन्ध शरीर में जीवात्मा के साथ है । दोनों का तात्पर्य यही है कि, देवों का आत्माग्नि से नित्य सम्बन्ध है । यही आत्माग्नि अत्यंत बलवान् है और सब शत्रुओं को दूर करने की अनिवार्य शक्ति अपने अन्दर धारण करता है । सब बलवानों से यह अधिक बलवान् है और इसके समान किसी अन्य का बल नहीं है । अपनी आत्मा का यह सामर्थ्य है । यह विश्वास हर एक वैदिकधर्मी मनुष्य के अन्दर स्थिर होना चाहिये, क्योंकि प्रत्येक प्राणी के अन्दर यह शक्ति विद्यमान है ।

### ( १८ ) मनुष्यमं अग्नि ।

अयमिह प्रथमो धायि धातुभिर्होता यजिष्ठो अश्वरेष्वीड्यः ॥ यमपतवानो भृगवो विरुशर्चवनेषु चित्रं विभ्रं विशे विशे ॥ ( ६९३, ऋ० ४।७।१ )

' यह ( प्रथमः ) पहला ( होता ) हवनकर्ता यज्ञ में अत्यन्त पूज्य धाताओं द्वारा यहाँ रखा है । जिस को ( भृगवानो भृगवः ) कर्मकुशल भृगु ( विशे विशे विभ्रं ) प्रत्येक मनुष्य के लिये विशेष प्रभावसंपन्न और ( वनेषु चित्रं ) वंद्नीय पदार्थों में विलक्षण देखकर ( विरुशुः ) विशेष तेजस्वी करते रहें । ' अर्थात् यह अग्नि प्रत्येक मनुष्य में है और विशेष प्रभाव से युक्त है । यद्यपि प्रत्येक मनुष्य छोटासा है, तथापि उस की आकृति के अनुसार यह आत्मा तुच्छ नहीं है । छोटसे छोट प्राणीमें भी यह विशेष प्रभाव-युक्त है और सबसे पहला पूजनीय है । मनुष्य के जीवन में इस आत्मशक्ति का विकास करने का ही मुख्य कर्तव्य है । प्रत्येक मनुष्य में जो आत्माग्नि है, उस का उत्तम आरं स्पष्ट

वर्णन इस मंत्र में हुआ है । मर्त्य मनुष्यों में जो अमर तत्त्व है, वह यही है, यह बात निम्न मंत्र में देखिये—

( १९ ) मर्त्यो मं अमृत अग्नि ।

अयं होता प्रथमः पश्यतेममिदं ज्योतिरमृतं  
मर्त्येषु । अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तोऽमर्त्य-  
स्तन्वा वर्धमानः ॥ ( १७९०. क्र. ६-९-४ )

‘ ( अयं प्रथमः होता ) यह पहिला हवनकर्ता है । ( इमं पश्यत ) इस को देखिये । ( मर्त्येषु इदं अमृतं ज्योति ) मर्त्यों में यह अमर ज्योति है । ( स. अयं ध्रुवः जज्ञे ) यह स्थिर प्रकट हुआ है । ( तन्वा सह वर्धमान अमर्त्यः ) शरीर के साथ बढ़नेवाला अमर ( आनिषत्त. ) प्रकट हुआ है ।’ इस में स्पष्ट शब्दों से कहा है कि, यह ( मर्त्येषु अमृतं ज्योति = He is light immortal in the mortal men ) मर्त्यों से अमर तेज है । मरणधर्मवाले देहों में यह एक न मरनेवाला तेज है, इस का वर्णन गीता में देखिये—

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ॥  
अनाशिनीऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥ ८ ॥  
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो ।  
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥  
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय । नवानि गृह्णाति  
नरोऽपराणि ॥ तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-  
न्यन्यानि सयाति नवानि देही ॥२२॥

देही नित्यमवधोऽयं देहे सर्वस्य भारत ॥३०॥  
( अ. गी. २ )

‘ कहा है, कि जो शरीर का स्वामी ( आत्मा ) नित्य अविनाशी और अचिंत्य है, उसे प्राप्त होनेवाले ये शरीर नाशवान् हैं । अत एव हे भारत ! तू युद्ध कर ॥१८॥ यह आत्मा अज, नित्य, शाश्वत और पुरातन है, एवं शरीर का वध हो जाय, तो वह मारा नहीं जाता ॥२०॥ जिस प्रकार कोई मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये ग्रहण करता है, उसी प्रकार देही अर्थात् शरीर का स्वामी आत्मा पुराने शरीर त्याग कर दूसरे नये शरीर धारण करता है ॥२२॥ सब के शरीर में यह शरीर का स्वामी सर्वदा अवधय अर्थात् कभी वध न किया जानेवाला है ’ ॥३०॥

यह गीता का कथन पूर्वोक्त मंत्र के कथन का ही

विस्तार है । ‘ मर्त्यो मं यह अमर ज्योति है ।’ इस बात की सचाई हरएक मनुष्य के अनुभव में भी है । अनेक शास्त्र यही बात कह रहे हैं । वेद कहता है कि, ( इमं पश्यत ) इस को देखिये । इस आत्मा की ज्योति का साक्षात्कार करना मनुष्य का कर्तव्य है । मनुष्य अपने आप को शरीररूप समझकर मरनेवाला न समझे, परन्तु आत्मरूप से अपने आप को अमर समझे । वेद का यह उपदेश विशेष रीति से देखनेयोग्य है । वेद कहता है कि, यह ‘ ध्रुव ’ है । इमी का वर्णन वेद में अन्यत्र ‘ स्थानु, स्फुम्भ, स्थूण ’ आदि नामों से किया है । इस मंत्र में ‘ अमर्त्ये. तन्वा वर्धमानः ।’ अर्थात् ‘ यह अमर शरीर के साथ बढ़ता है, ऐसा कहा है, ’ इसका तात्पर्य यह है कि, ‘ यह अमर होता हुआ भी मर्त्य शरीर के साथ बढ़ता है ।’ यह बताता है कि, यह आत्मा ही है । अजर, अमर और अजन्मा आत्मा जीर्ण होनेवाले, मरनेवाले और जन्म को प्राप्त होनेवाले शरीर के साथ बढ़ता है, अथवा ऐसा दिखाई देता है कि, यह शरीर के साथ बढ़ रहा है । वास्तविक तत्त्वज्ञान की दृष्टि से देखा जाय, तो न यह शरीर के साथ जन्मता है, न जीर्ण होता है और न मरता है । परन्तु सामान्य दृष्टि से ऐसा भासमान हो रहा है । इस परका सायणभाष्य देखिये—

( २० ) जाठराग्नि ।

मर्त्येषु मरणस्वभावेषु शरीरेषु अमृतं मरणरहितं  
इदं वैश्वानराख्यं ज्योतिः जाठररूपेण वर्तते । अपि  
च सोऽयमग्निः ध्रुवो निश्चल आ समंताभिषण्णः  
सर्वव्यापि अतएवामर्त्यो मरणरहितोऽपि तन्वा  
शरीरेण सम्बन्धाज्जज्ञे ॥ ( क्र. सायणभाष्य ६-९-४ )

‘ मरनेवाले शरीरोंमें मरणधर्मरहित वैश्वानर नामक तेज जाठराग्नि रूप से रहता है । यह ध्रुव सर्वव्यापक अमर होता हुआ भी शरीर के सम्बन्ध से उत्पन्न होता है ।’ अस्तु । यह मंत्र मर्त्यों में जो अमर अग्नि का स्वरूप है, उस का स्पष्टीकरण कर रहा है । यही वेदप्रतिपाद्य मुख्य अग्नि है । श्री सायणाचार्य पूर्व मंत्रोक्त अग्नि को जाठराग्नि कहते हैं, तथा निम्न मंत्र में भी उन के मत से जाठराग्नि का ही वर्णन है—

मथीद्यर्दी विष्टो मातरिश्वा होतारं विश्वाप्सुं  
विश्वदेव्यम् । नि यं दधुर्मनुष्यासु विश्वे स्वणे  
चित्रं वपुषे विभावं ॥ ( ३४८, ऋ. १-१४८-१ )

सायणभाष्य-देवाः मनुष्यासु मनोरपथभूतासु विश्वे  
प्रजासु प्राणिषु वपुषे स्वरूपाय शरीरधारणाय जाठराग्नि-  
रूपेण निदधुः स्थापितवतः ॥

‘ ( होतारं ) हवनकर्ता ( विश्व-अप्सुं ) विश्वरूपी,  
नाना रूप धारण करनेवाले ( विश्व-देव्य ) सब देवों से  
युक्त ( इ-एनं ) इस आत्माग्नि को ( विष्ट मातरिश्वा )  
व्यापक प्राण ( मथीत् ) मंथन से उत्पन्न करता है । ( य )  
जिस को देव ( मनुष्यासु विश्वे ) मानवी प्रजाओं में  
( वपुषे ) शारीरिक स्वरूप के लिये ( निदधुः ) धारण  
करते हैं । ( न ) जिस प्रकार ( चित्रं विभावं स्व. )  
विचित्र प्रभावशाली दीप घर मे रखते हैं । ’

शरीररूपी घरमें यह आत्माका दीप देवोंने जगाया है ।  
देखिये इस दीपको और इसका प्रकाश फैलाइये । यद्यपि  
श्री सायणाचार्यजी के मत से ये दोनों मंत्र जाठराग्निका  
वर्णन कर रहे हैं, तथापि इस विषयमें मतभेद होना संभव  
है । ऋ० ६।१।४ यह मंत्र पहिले दिया ही है । इस का  
अर्थ श्री० स्वा० दयानंद सरस्वतिजीने आत्मा परमात्मापरक  
लगाया है । मंत्रका स्पष्टार्थ निःसंदेह आत्माकाही भाव  
बता रहा है । यहां श्री सायणाचार्यजी का मत देनेका  
उद्देश्य इतनाही है कि, ये भी इसका अर्थ भाग नहीं करते,  
परन्तु ‘मनुष्यकी पाचक शक्ति’ कर रहे हैं । पहलसेही  
हमारा कथन रहा है कि, अग्निका मुख्य भाव मानवी  
शरीरमें दिखना देनेका वेद का मतव्य है और वह वेदमंत्रों  
में विविध प्रकारके वर्णनोंसे बताया गया है ।

मान लीजिये कि, उक्त मंत्रों में पाचक जाठराग्निका  
वर्णन है, परन्तु विचार करनेपर उसके पीछे आत्माका  
अस्तित्व माननाही पड़ेगा, क्योंकि वह आत्माही इस शरीर  
में सब कार्य कर रहा है, वही कानसे सुनता और आंखसे  
देखता है, उसी प्रकार वही पेटमें अन्नका पचन कर रहा है ।  
वही वाणी के मूलमें है और शब्द बोल रहा है, देखिये—

( २१ ) वाणी के स्थानमें अग्नि ।

जोहृत्रो अग्निः प्रथमः पितेवेळस्पदे मनुषा  
यत्समिद्धः । श्रियं वसानो, अमृतो विचेता  
मर्मुजेभ्यः श्रवस्यः स वाजी ॥ ( ४०९, ऋ० २।१०।१ )

‘ ( जोहृत्रः ) उपास्य अग्नि ( प्रथमः पिता इव ) पहला  
पिता जैसा जो है, वह ( इळः पदे ) वाणीके पदोंमें ( मनुषा  
समिद्धः ) मनुष्यने प्रदीप्त किया है । यह ( श्रियं वसानः )  
शोभा देनेवाला अमर ( विचेता ) विशेष चेतन ( मर्मुजेभ्यः )  
छुद्धता करनेवाला ( श्रवस्यः ) प्रसिद्ध है और वही ( वाजी )  
बलवान् है । ’

वाणी के पदोंमें, वाचा के मूलस्थान में यह अमर चेतन  
अग्नि है । यही सबसे बलवान् प्रेरक है । विशेष चेतन,  
विशेष चित्तसे युक्त अथवा चित्स्वरूप यह अग्नि है ।  
चित्स्वरूप होनेसे यही आत्मा है, यह बात सिद्ध होती है ।  
आत्मा चित्स्वरूप अर्थात् ज्ञानस्वरूप है और वही वाणी  
के पदों के मूल में विराजमान होता है । क्योंकि यही  
‘आत्मा बुद्धिके साथ मिलकर मनके द्वारा प्राण  
को संचारित करके नाना प्रकारके शब्द उत्पन्न  
करता है । ’ ( पाणिनी-शिक्षा ) । यह वर्णन यहां देखनेसे  
मंत्र का भाव स्पष्ट हो जाता है । और देखिये—

( २२ ) दिव्य जन्मकर्ता अग्नि ।

दधुष्ट्वा भृगवो मानुषेष्वा रयिं न चारुं सुहवं  
जनेभ्यः ॥ होतारमग्ने अतिथिं वरेण्यं मित्रं  
न शेषं दिव्याय जन्मने ॥ ( ११५, ऋ० १।५८।६ )

‘ हे अग्ने ! भृगु ( दिव्याय जन्मने ) दिव्य जन्मके लिये  
( चारुं रयिं न ) उत्तम धनके समान ( मानुषेषु आ दधुः ) मनु-  
ष्योंमें धारण करते रहे हैं । ऐसा तू ( मित्र शेषं न ) सेतनीय  
मित्र के समान, ( होतारं ) दाता, ( भ-तिथि ) जिसकी  
आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है, ऐसा ( वरेण्य ) श्रेष्ठ है । ’

दिव्य जन्मकी प्राप्तिकी इच्छासे श्रेष्ठ लोग मनुष्योंमें  
इस अग्निकी धारणा करते हैं । इसकी धारणा करनेसे वह  
संतुष्ट होता है और उनका जन्म दिव्य करता है । यह  
अग्नि वैसा धारण किया जाता है कि, जैसा अत्यंत श्रेष्ठ  
धन धारण करते हैं । मनुष्यमें सबसे श्रेष्ठ धन किंवा ( रयि )  
श्रेष्ठ शोभा ‘आत्मा’ ही है । यदि इस मानवी शरीरमें  
आत्मा न रहा, तो अन्य धन और अन्य शोभाएं कुछ भी  
कार्य नहीं कर सकतीं । जिनसे धनका धनपन रहा है और  
जिसकी शोभासे शोभा सुशोभित हो रही है, वही सच्चा  
धन और सच्ची शोभा है । यही धनका धन आत्माही है ।  
सब जानते ही हैं कि, यह आत्मा ‘अतिथि’ है, क्योंकि

इसकी शरीरमें आनेकी और शरीर छोड़कर चले जानेकी तिथि निश्चित नहीं है। यही सेवा करनेयोग्य सत्त्वा मित्र है, क्योंकि यही सबका मान्य कर रहा है। इसलिये इसकी शक्तिकी धारणा सबको करनी चाहिये। क्योंकि इसकी शक्तिका चिंतन करनेसे ही अपनी शक्तिका विकास हो सकता है। कोई अन्य मार्ग नहीं। इसकी धारणा करनेसे शक्तिकी वृद्धि होती है। इसका कारण यह है कि, यह उपासकको विलक्षण शक्तियाँ देता है, देखिये—

### (२३) शक्ति प्रदाता अग्नि ।

क्राणा रुद्रेभिर्वसुभि पुरोहितो होता निषत्तो  
रथिषालमर्त्यः ॥ रथो न विश्वंजसान आयुषु  
व्यानुष्वार्या देव ऋण्वति ॥ (११२, ऋ० १।५।१३)

‘(वसुभिः रुद्रेभिः पुरोहितः) वसुओं और रुद्रोंने जिसको अग्रभागमें रखा है, इस प्रकारका यह ( क्राणा ) कर्ता, ( होता ) दाता, आह्वाता, ( निषत्तः ) व्यास, ( रथि+पाद ) धनके साथ रहनेवाला, ( अ-मर्त्यः ) अमर देव, ( रथो न ) रथके समान, ( विश्वु आयुषु ) प्रजाजनोंमें, ( ऋजसानः ) आगे बढ़नेवाला प्रेरक ( वार्याणि ) विविध शक्तियों ( आयुषु वि ऋण्वति ) प्राप्त कराता है ।’

इस मन्त्रमें शक्तिप्रदान करनेका गुण स्पष्टतापूर्वक कहा है। जो शक्ति इससे मिलती है, वह साधारण शक्ति नहीं है, परन्तु ऐसी विलक्षण शक्ति होती है कि, जो सब ( वार्य ) दानुओंका निवारण कर सकती है। जो शक्ति शरीरमें उत्पन्न होनेसे मनुष्य अपने सब प्रकारके शत्रुओंको दूर भगा देता है। सब अन्य शक्तियोंसे ‘आत्मशक्ति’ ही सबसे विशेष प्रभावशाली होती है। आत्मशक्ति के द्वारा अन्य शक्तियोंका उपयोग किया जाता है, तथा आत्माकी दुर्बलता होनेसे अन्य शक्तियाँ कुछ भी कार्य नहीं कर सकती, इतनी इस शक्तिकी योग्यता है और यही शक्ति आत्माग्निसे प्राप्त होती है।

### (२४) पुरोहित अग्नि । गणराज ।

इस मन्त्रमें ‘पुरोहित’ शब्दके अर्थका निश्चय हुआ है। ‘पुर +हित’ शब्दका अर्थ ‘अग्रभागमें रखा हुआ, अग्रसर, प्रमुख, मुखिया’ है। इस अर्थका स्वीकार करनेसे प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि, यह किनका अग्रसर है,

किन्होंने इसको अग्रभागमें अथवा मुख्य स्थानमें रखा है, किनका यह मुखिया है ? इत्यादि प्रश्नोंका उत्तर इस मन्त्रमें दिया गया है— ( वसुभिः रुद्रेभिः पुरोहितः ) वसु तथा रुद्र देवोंने इसको अपना अग्रसर अथवा मुखिया बनाया है। वसु रुद्र और आदित्य ये ‘गणदेव’ हैं। गणदेव वे होते हैं कि, जो अपने संघमें रहते हैं और संघसे ही कार्य करते हैं। संघशक्ति का महत्त्व इन ‘गणदेवों’ के द्वारा बताया जाता है। गणदेवों के प्रत्येक संघका एक मुखिया होता ही है, और उस मुखिया को ‘पुरो-हित’ कहते हैं, क्योंकि गणोंके सब घटकों द्वारा वह स्वीकृत होता है। यह एक प्रकारकी ‘गण-राज-संस्था’ है जो वैदिक मन्त्रोंमें वर्णन की है। इसका व्यापक स्वरूप बतानेके लिये यहां स्थान नहीं है, तथापि इतना कहना आवश्यक है कि, इसके मुखिया कौं जैसा ‘पुरो-हित’ कहते हैं, उसी प्रकार ‘गण-राज, गणपति, गणेश’ आदि नाम होते हैं और इसकी अनुमतिके बिना कोई गण कोई कार्य कर नहीं सकता। प्रत्येक कार्यमें इसको बुलाया जाता है, इसका सत्कार किया जाता है और इसकी अनुमतिसे ही सब कार्य किये जाते हैं। यद्यपि गणके प्रत्येक व्यक्तिको अपना मुखिया चुननेका अधिकार होता है, तथापि मुखिया चुननेके पश्चात् मुखियाका अधिकार सर्वतोपरि होता है।

इस मन्त्रमें वसुगण और रुद्रगण का नाम आया है। अध्यात्मदृष्टिसे ‘रुद्र’ नाम प्राणोंका है। पंच प्राण और पंच उपप्राण मिलकर दस प्राण मानवी शरीरमें कार्य करते हैं। यही प्राणगण किंवा रुद्रगण हैं। स्थूल शक्तियों के अर्थात् पृथिवी आप तेज आदिकों के गणों का नाम ‘वसुगण’ है। इन दोनों गणोंका अग्रसर मुखिया आत्मा ही है। इन दोनों गणों के सब देवताओंने इस आत्माको ही अपना मुखिया बनाया है। सब कार्य करनेके समय ये सब देवगण इसको अपने अग्रभागमें रखते हैं और इसीसे शक्ति लेकर कार्य करते हैं। यह पुरोहितका भाव पाठकों को यहां ठीक ध्यान में धरना चाहिये।

यह अमर आत्मदेव सब अन्य देवताओं का अग्रसर है और सब प्रजाओं में बैठा हुआ उन सबको विलक्षण शक्ति देता है। इस दृष्टिसे इस मन्त्रका विचार करनेपर आत्माग्नि की ठीक ठीक कल्पना आ सकती है। इसी का और वर्णन देखिये—

### (२५) हस्तपादहीन गुह्य अग्नि ।

स जायत प्रथमः पस्यासु महो बुध्ने रजसो  
अस्य योनौ । अपादशीर्षा गुहमानो अन्तायो-  
युवाने वृषभस्य नीळे ॥११॥ प्र शर्ध आर्त प्रथमं  
विपन्यं ऋतस्य योना वृषभस्य नीळे । स्पाहो  
युवा वपुष्यो विभावा सप्त प्रियासोऽजनयन्त  
वृष्णे ॥१२॥ (६३७-३८, ऋ० ४।१)

‘( स प्रथमः ) वह पहला ( पस्यासु जायत ) प्रजाओं में हुआ है । तथा वह ( अस्य महः रजसः बुध्ने योनौ ) इस महान् अंतरिक्षके मूल स्थानमें होता है । यह (आपाद-शीर्षा ) पांव सिर आदि अवयवोंसे रहित (अंतः-गुहमानः) अंदर गुप्त है । ( वृषभस्य नीळे ) वीर्ययुक्त पुरुषके स्थानमें (आ योयुवानः) संघटनाका कार्य करता है, संमेलन का कार्य करता है ।’ इस मन्त्रका का तात्पर्य यह है कि, सब देवोंमें अत्यंत प्राचीन तथा सबसे पहिला यह देव है, इस महान् भवकाशमें इसका स्थान है । न इसको हाथ हैं और न पांव, न सिर आदि अवयव है । अर्थात् यह अशरीरी निराकार है और सबके अंदर गुप्त अथवा व्याप्त है । शरीररहित होनेके कारण ही यह निरवयव होनेसे सबमें व्याप्त और अभ्यक्त है । बलवान् मनुष्यके अंदर यह संमिश्रणका कार्य करता है, अर्थात् निर्बलके अंदर यह भेदन का कार्य करता है । ‘नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः’ (मुंडक० ३।२।४) यह आत्मा बलहीनको प्राप्त नहीं होता, यह तत्त्वज्ञान का सिद्धांत ही है । निश्चयपूर्वक दृढ अनुष्ठानसे ही इसकी प्राप्ति होती है और जिस समय इसकी प्राप्ति होती है, उस समय उस मनुष्यकी शक्ति, शोभा और योग्यता बढ़ जाती है ।

‘( ऋतस्य योनौ ) ऋतके मूल कारणमें ( वृषभस्य नीळे ) बलवान् के स्थानमें ( प्रथमं विपन्यं ) पहले ज्ञानी को ( शर्धः प्र आर्त ) तेज और बल प्राप्त होता है । यह ( स्पाहः ) स्पृहणीय, प्राप्त करने की इच्छा करनेयोग्य, युवा ( वपुष्यः ) देहधारी, ( विभावा ) प्रभावयुक्त है । ( वृष्णे ) इस बलवान् के लिये ( सप्त प्रियासः ) सात प्रिय देव ( अजनयन्त ) उत्पन्न करते हैं ।’

इस मन्त्रके अन्य शब्द पूर्व केखके अनुसार सुगमतासे ध्यानमें आ सकते हैं, इसलिये उनका विशेष वर्णन करनेकी

यहां आवश्यकता नहीं है । पूर्व मन्त्रमें ‘अ-पाद-शीर्षा’ हस्तपाद आदि अवयवहीन है, ऐसा वर्णन है, परन्तु यहां इस मन्त्रमें ‘वपुष्यः’ शरीरधारी है, ऐसा है । यद्यपि इसमें परस्पर विरोध दिखाई देता है, तथापि विचारकी दृष्टिसे इसमें कोई विरोध नहीं है । क्योंकि यह आत्माग्नि यद्यपि वस्तुतः शरीररहित है, तथापि इस शरीरको धारण करनेवाला यही है । इसलिये दोनों शब्द इस आत्मामें सुसंगत होते हैं । इस आत्मासेही इस शरीरमें तेज, बल, वीर्य आदि होता है, इसीलिये इसके विषयमें सब ही प्राणी हार्दिक प्रेमभाव रखते हैं, सबको ही यह प्रिय है । इस मन्त्र में ‘सात प्रिय देव इसको प्रकट करते हैं,’ ऐसा जो कहा है, इसका स्पष्टीकरण इस लेखके अतिम भागमें होगा । वहांही इसको पाठक देख सकते हैं । ( सप्त ) सात संख्या का महत्त्व क्या है, इसका पता वहांही पाठकोंको लग सकता है । अस्तु । इस प्रकार इस गुह्य अग्निका वर्णन वेदमन्त्रोंमें है । इससे स्पष्ट होता है कि, यह आत्माग्नि हृदयाकाशमें सब प्रजाओंके अंदर गुह्य रीतिसे विराजमान है । तात्पर्य, ‘अग्नि’ शब्दसे केवल ‘भाग’ का ही भाव नहीं लिया जाता, परन्तु प्रकरणानुसार अन्य अर्थ भी इस शब्दसे व्यक्त होते हैं । इसका अब और एक विलक्षण रूपक देखिये—

### (२६) वृद्ध नागरिक ।

अधा हि विश्वीड्योऽसि प्रियो नो अतिथिः ।  
रणवः पुरीव जूर्यः सूनूर्न त्रययाय्यः ॥

(१५८, ऋ० ६।२।७)

‘( अधा हि ) और तू ( नः प्रियः अतिथिः ) हमारा प्रिय अतिथि तथा ( विश्वीड्यः असि ) प्रजाओंमें पूजनीय है । जैसा ( पुरि जूर्यः रणवः इव ) नगरीमें वृद्ध पुरुष रमणीय होता है, अथवा ( सूनूर्न त्रययाय्यः ) जैसा पुत्र संरक्षणीय होता है ।’

नगरीमें जो सबसे वृद्ध जुजुर्ग होता है, वह सबको वंदनीय होता है । इसी प्रकार यह इस शरीररूपी नवद्वार पुरीमें बहुत समय से रहनेवाला सबसे प्राचीन पूर्वज होनेसे सबको पूज्य है । तथा घरमें जैसा बालक सबको संरक्षणीय होता है, वैसा यहां इस शरीररूपी घरमें यह बालकवत् ही है और इसलिये इसका संगोपन करना और इसकी सब शक्तियोंका विकास करना सबको उचित है ।



दोनों उपमाओंमें एक विशेष बात बताई है कि, यह स्वयं अशक्त है और इसलिये दूसरोंकी सहायताकी अपेक्षा करता है । यद्यपि वृद्ध मनुष्य पूज्य होता है, तथापि तरुणोंके साथ उसकी शक्तिका मुकाबला नहीं हो सकता । तथा यद्यपि बालक सुकुमार होनेसे सबको प्यारा होता है, तथापि तरुणोंकी अपेक्षा वह अशक्त ही होता है । यद्यपि वृद्ध और बालक अशक्त होते हैं, तथापि वृद्धमें अनुभवकी शक्ति होनेसे वह सबको वंदनीय होता है और बालक सुकुमार होनेसे तथा सब शक्तियोंको बीजवत् अपने अंदर धारण करता है, इसलिये सबको प्यारा होता है । आत्मा इस शरीरके जन्मसे पहिले विद्यमान था, इसलिये शरीरसे वृद्ध है और उसकी संपूर्ण शक्तियोंका विकास होनेवाला है, इस कारण वह बालकवत् ही है । तथा यह आत्मा जो कार्य करता है, यद्यपि अपनी शक्तिये करता है, तथापि इंद्रियोंद्वारा कराता है, इसलिये इंद्रियोंकी सहायताकी अपेक्षा रहनेके कारण वह वृद्धवत् अथवा बालकवत् दूसरोंकी सहायता चाहता है । ये सब रूपकके भाव यहां देखनेयोग्य हैं । अभिदेवताके रूपसे यह आत्माका भाव यहां बताया है । अभिदेवताकी चिनगारी छोटी होनेके कारण जैसी उसकी रक्षा करनी आवश्यक है, परंतु अनुकूल परिस्थिति प्राप्त होनेके पश्चात् वही चिनगारी बड़े दावानल का रुद्ररूप धारण करती है और बड़े धुरंधर शत्रुओंको भी डराती है, उसी प्रकार यह आत्मा प्रारंभमें अपने अंदर सब शक्तियां बीजरूपसे धारण करता है, उस समय बड़ा अशक्तता प्रतीत होता है, परंतु अनुकूल माता-पिता, गुरु, मित्र आदिकी परिस्थिति प्राप्त होनेके पश्चात् जिस समय यह आत्माका " महात्मा " बनता है, तब यही सबको पूज्य होता है, और इसके तेजसे इसके शत्रुभी डरने लग जाते हैं । इस प्रकार अभिदेवताके साथ इस आत्माकी समानता देखनेयोग्य है । इसका ग्रहण कैसे किया जाता है, इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

(२७) प्रजामें देवताका अनुभव ।

अग्ने कदा ते आनुषभुवद्देवस्य चेतनम् ।

अथा हि त्वा जगृभिरे मर्तासो विश्वीड्यम् ॥

( ६९४; ऋ. ४।१२ )

' हे अग्ने! जब तुझ देवताकी चेतनता हुई, तब ही 'तुझे सब मर्त्यांमें ( विश्व ईश्वर ) सब प्रजाओंमें पूजनीयको

( जगृभिरे ) धारण किया । ' अर्थात् जब तेरे चेतन्यका पता लगा, तब मनुष्योंने तेरा ग्रहण किया । आत्माका ग्रहण उस समय होता है कि, जब आत्माकी चेतनशक्ति का पता लग जाता है । विचारशील मनुष्य पहले शरीरमें अनुभव करता है कि, इसमें एक चेतन चालक शक्ति है, तत्पश्चात् उसकी खोज की जाती है और उसका ग्रहण करनेके लिये अनुष्ठानपूर्वक साधन होता है । इसके पश्चात् उसका ग्रहण हो जाता है । यह उसकी अंतिम उन्नतिकी सीमा है । इसका वर्णन देखिये—

(२८) न दबनेवाला ।

स मानुषीषु दूळभो विश्वु प्रावीरमर्त्यः ।

दूतो विश्वेषां भुवत् ॥ ( ७१३; ऋ० ४।१२ )

' वह ( मानुषीषु विश्वु ) मानवी प्रजाओंमें ( दूळभः दुर्दमः ) न दबनेवाला ( अमर्त्यः ) अमर ( प्रावीः ) प्रकट हुआ है, वह सबका दूत हो गया है । ' इस के पूर्व एक मंत्रमें कहा है कि, यह वृद्धके समान अथवा बालकके समान है । यह प्रारंभिक अवस्था थी । इस प्रारंभिक अवस्थामें इसका बचाव करना आवश्यक होता है । परंतु जिस समय यह अपनी शक्तियोंके उत्कर्षके साथ प्रकट हो जाता है, उस समय यही ( दूळभः- दुर्दमः ) न दबनेवाला हो जाता है । कितनी भी शक्ति शत्रुकी हो, उसके दबावसे यह दबाया नहीं जायगा, इतनी प्रचंड शक्ति यह प्राप्त करता है । इस मंत्रमें एक विशेष बात कही है । वह यह है कि, यह आत्मा ( मानुषीषु विश्वु दूळभः ) मानवी प्रजाओंमें ही यह न दबनेवाला बन जाता है, यह अवस्था उसको मानवयोनिमें ही प्राप्त होती है । पशुपक्षियोंकी योनियोंमें इस प्रकार उन्नति यह प्राप्त नहीं कर सकता । इस विधानसे इन अभिदेवता आत्मा ही स्वरूप है । यह बात निश्चिन्तनी है, क्योंकि आत्माके विकासकी कर्मभूमि या कुक्षेत्र यह मानवयोनि ही है । अन्यत्र ऐसा पुरुषार्थ नहीं हो सकता । यह सबका ' दूत ' है । जिस समय श्रद्धाभक्तिये इसको कहा जाता है कि, यह कार्य ऐसा करो, तो यह वैसा बना देता है । ' मानस-चिकित्सा ' से जो आरोग्य प्राप्त होता है, वह इसी आत्माकी निज शक्तिये होता है । ' हे आत्मदेव ! तुम मुझे आरोग्य दो, इस अवयवमें नीरोगता करो, ' ऐसा विश्वासपूर्वक कहनेसे उसकी

शक्ति वहां इष्ट कार्य कर देती है । इसको कहनेसे यह बैसाही कर देता है, इसलिये इसको आज्ञाधारक ' दूत ' कहते हैं । अग्निमंत्रोंमें दूत के विषयमें बहुत वर्णन है । प्रसंगविशेषसे भिन्न भिन्न प्रकारका भाव उस वर्णन में है, तथापि उनमें एक भाव यह है, जो यहां बताया है । अन्य भाव स्थान स्थान में बताये जायेंगे । इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

अग्निर्वेद्यु राजत्यग्निर्मर्त्याविशन् ।

अग्निर्नो हव्यवाहनोऽग्निं धीभिः सपर्यत ॥

(११४; ऋ ५।२५।४)

(१) अग्नि देवोंमें प्रकाशता है, (२) अग्नि मर्त्यांमें आवेश करता है, (३) अग्नि हमारा अन्ननाहक है, (४) इसलिये अग्नि की बुद्धियो और कर्मोंसे पूजा कीजिये ।

इस मंत्रमें चार विधान है । अग्नि देवोंमें प्रकाशता है, यह पहिला कथन है । देव शब्द इंद्रियवाचक सुप्रसिद्ध है । इंद्रियोंमें आत्माकी शक्ति प्रकाशित होती है । सब मनुष्यों को इसका अनुभव अपने ही शरीरमें हो सकता है । आंख, नाक, कानोंमें आत्माकी ही शक्ति वहांका कार्य कर रही है । यही आत्माका आवेश मर्त्यांमें है । शरीर स्वयं चेतन नहीं है, आत्माकी शक्तिसे ही इसकी चेतनता है । आत्म-शक्तिका आवेश जब इस शरीरमें होता है, तभी यह मूक शरीर वक्त्रत्व करने लग जाता है, जड शरीर दौडने लग जाता है, मुर्दा शरीर सचेतन प्रतीत होता है । यही इस महा-भूत का संचार है, इसीको आवेश कहते हैं । यही आत्माग्नि इस शरीर में अन्न का भोग लेता है और सब इंद्रियोंको पहुंचाता है । प्रत्येक इंद्रियमें एक एक देव बैठा है, वहां उसके पास योग्य अन्नरसको पहुंचानेका कार्य यह करता है, यही उसका ' दूत ' भाव है । जिस प्रकार दूत, उसको दिये हुए पदार्थ बांट देता है, ठीक इसी प्रकार यह दूत शरीरस्थानीय देवताओंको अन्नरसका विभाग यथायोग्य रीतिसे बांटता रहता है । इस दूतकर्मसे ही अन्य देव अर्थात् इंद्रियगण पुष्ट होते हैं और अपना अपना कार्य यथायोग्य रीतिसे करते रहते हैं । यह आत्मा इतना कार्य कर रहा है, इसलिये बुद्धियोंद्वारा इसकी उपासना करनी अष्टावश्यक है । यह इस मंत्रका तात्पर्य है । यह जैसा अचेतन देहको सचेतन करता है, वैसेही मूकसे वक्त्रत्व कराता है, इस विषयमें निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(२९) मूकमें वाचाल ।

अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेष्वग्निरमृतो  
निधायि । स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः  
सदा त्वे सुमनसः स्याम ॥ (१३७, ऋ० ७।४।४)

( ' अयं प्रचेताः अग्निः ) यह ज्ञानी अग्नि ( अ-कविषु कविः ) शब्द न करनेवालों में शब्दका प्रवर्तक, ( मर्तेषु अमृतः ) मरनेवालोंमें अमर ( निधायि ) रहा है । हे ( सहस्वः ) बलवान् ! तरे विषयमें सदा हम ( सु-मनसः ) मन का उत्तम भाव धारण करेंगे, इसलिये वह तू हमारी ( मा जुहुरः ) हिंसा न कर ।'

इस मंत्रके प्रथमाधमें आत्माग्निके गुण वर्णन किये हैं । (१) यह आत्माग्नि ( अ-कविषु ) जो शब्दका उच्चार नहीं कर सकते, जो स्वयं ज्ञानी नहीं है, उनमें ( कविः ) शब्द का प्रवर्तक और ज्ञानी है । (२) तथा ( मर्तेषु ) मरनेवालों में यह अमर तत्त्व है । इस विधान की सत्यता हमने इससे पूर्व देखी है । मुख जड है, स्वयं मुखसे शब्द नहीं निकल सकता, परन्तु यह जड मुखसे बड़ा भोजस्वी वक्त्रत्व करा सकता है । सब हस्तपादादि अवयव और इंद्रिय मरनेवाले और क्षीण होनेवाले है, उन सबमें यह अविनाशी और अमर है । जो ज्ञानी लोग इसके विषयमें मनमें ( सु-मनसः ) उत्तम भावना धारण करेंगे, उनकी उन्नति होगी, क्योंकि यह आत्माग्नि अपनी शक्ति उनमें विकसित करता है और उनको तेजस्वी करता है । इतलिये आत्मनिष्ठ मनुष्योंका तेज सर्वत्र फैलता है । यह आत्माग्नि सच्चा मित्र है और इसीलिये उपासकोंकी सहायता करता है—

(३०) पुराना मित्र ।

द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं प्रत्नमृत्विजमध्व-  
रस्य जारं । बाहुभ्यामग्निमायश्चोऽज्जनयंत विश्वु  
होतारं न्यासाद्यन्त ॥ ( १५३१, ऋ० १०।७।५ )

( ' द्युभिः हितं ) तेजस्वियोंके साथ रहनेवाला, ( प्रत्नं मित्रं इव प्रयोगं ) पुराने मित्रके समान योग्य सहायता देनेवाला, ( ऋतु+इज् ) ऋतुके अनुकूल कर्म करनेवाला, ( अ-ध्वरस्य जारं ) सत्कर्म की समाप्ति करनेवाला, अग्नि है । इसको ( आयवाः ) मनुष्य अपने पुरुषार्थसूचक बाहुओंसे प्रकट करते रहे और उस ( होतारं ) दाताको ( विश्वु ) प्रजाओंमें रखने रहे ।'

यह आत्मग्नि ( प्रसन्न मित्रं ) पुराने मित्रके समान योग्य समयमें योग्य सहायता करनेवाला है । जो इस आत्मग्नि की यह मित्रता जानते हैं, वेही उसका सच्चा मूल्य अनुभव करते हैं और वेही अपने आपको धन्य धन्य बना सकते हैं । बाहुबलों अर्थात् पुरुषार्थोंसेही उसकी प्रसिद्धि होती है । यह महात्मा ऐसे शुभ कर्म करनेसे जगत् में वंदनीय बना है । योग्य सर्वजन हितकारी पुरुषार्थों से ही प्रशंसा होती है । तात्पर्य यह है कि, निष्ठापूर्वक ज्ञानसे आत्म-ग्निका अनुभव होता है और सर्वजन हितकारी पुरुषार्थोंसे उसकी प्रसिद्धि होती है । इस प्रकार पुराने मित्रकी उदारता है, इसलिये सबको इसके विषयमें आदर रखना उचित है । अब और इसका अमरत्व देखिये—

### ( ३१ ) विनाशियोंमें अविनाशी ।

अपश्यमस्य महतो महित्वममर्त्यस्य मर्त्यासु विक्षु ॥  
( १६३७, ऋ० १०।७९।१ )

‘ ( मर्त्यासु विक्षु ) मर्त्य प्रजाओंमें ( अस्य महतः अमर्त्यस्य ) इस महान् अमरका महत्त्व देखा है । ’ यह अनुभव की बात इस मंत्रमें कही है । सब देह मरनेपर भी यह अमर रहता है । मरणधर्मा शरीरोंमें यह अमर और अविनाशी आत्मशक्ति रहती है । इसीका नाम आत्मग्नि है । तथा—

अग्निं सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय चार्याणाम् ।  
द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्व्वा होता मंद्रतमो विशि ॥  
( १४१९, ऋ० ८।७१।११ )

‘ ( सहसः सूनुं ) सहस्रशक्ति को बढ़ानेवाले, ( जातवेदसं ) जिससे ज्ञान और धन की उत्पत्ति हुई है, ऐसे अग्निकी ( चार्याणां दानाय ) शत्रुनिवारक शक्तियोंके दानके लिये प्रशंसा करता हूँ । जो ( मर्त्येषु अमृतः ) मरणधर्म-घालोंमें अमर, ( विशि मंद्रतमः ) प्रजामें अत्यंत तृप्ति करनेवाला ( होता ) दाता ( द्वि-ता भूत् ) दो प्रकारसे होता है । ’

( १ ) यह आत्मग्नि सहस्रशक्ति अर्थात् शत्रुको दूर भगानेकी शक्ति बढ़ाता है, आत्मिक बलसेही संपूर्ण शत्रु दूर भाग जाते हैं । ( २ ) यह चित्स्वरूप होनेसे इससे ही ज्ञान का प्रवाह चलता है । ( ३ ) शत्रुता-निवारक धन और

शक्ति का प्रदान यही करता है । ( ४ ) ‘ सब मर्त्योंमें यही अमर है, ’ और ( ५ ) सबको अत्यंत हर्ष देनेवाला भी यही है । ( ६ ) इसकी शक्ति स्थूल और सूक्ष्ममें संचारित हो रही है । यह इसका वर्णन स्पष्टतासे इसका आरम्भिक स्वरूप व्यक्त कर रहा है । तथा और देखिये—

स नो विभावा चक्षणिर्न वस्तोरग्निर्वेदारु  
वेद्यश्च नो धात् । विश्वायुर्यो अमृतो मर्त्येषु-  
पर्भुद् भूदतिथिर्जातवेदाः ॥ ( १७२, ऋ० ६।४१२ )  
‘ ( वस्तो चक्षणिः न ) दिनमें सूर्य जैसा ( विभावा ) प्रकाशक ( वेद्यः ) और जाननेयोग्य, वह अग्नि ( वेदारु चनः ) वंदनीय अन्न ( नः धात् ) हम सबको देवे । ( विश्व-आयु अमृतः ) पूर्ण आयु देनेवाला यह अमर ( मर्त्येषु उषभूत् ) मर्त्योंमें ब्राह्मसुहृत्के समय जागनेवाला ( जातवेदाः ) ज्ञान का प्रकाशक ( अ-तिथिः ) जिसकी आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है ऐसा है । ’

सूर्य जैसा सब को प्रकाश देता है, उसी प्रकार यह आत्मग्नि सबको ज्ञानका प्रकाश देता है । इसलिये यह ( वेद्य ) जाननेयोग्य है । इसकी खोज करनी चाहिये, ऐसा जो कहते हैं, उसका यही कारण है । ( विश्व-आयुः ) सब आयु का धारण यही करता है, जबतक यह अमर देव मर्त्य शरीर में रहता है, तब तकही इसकी आयु होती है । जब यह चला जाता है, तब कहते हैं कि, इसकी आयु पूरी हो गई । इसका तात्पर्य ही यह है कि, सबकी आयु इसके साथही सम्बन्धित होती है । इस प्रकारका यह आत्मग्नि मर्त्योंमें अमर रूपसे रहता है । तथा और देखिये—

स मर्त्येष्वमृत प्रचेता राया द्युग्नेन श्रवसा  
विभाति ॥ ( १८३, ऋ० ६।५।५ )

‘ हे अमृत ! वह मर्त्योंमें ( प्र-चेता ) विशेष ज्ञानसंपन्न ( राया ) धन और ( द्युग्नेन श्रवसा ) तेजस्वी यज्ञसे ( विभाति ) विशेष चमकता है । ’ अमर आत्मग्निके कारण ही यह यज्ञ और यह धनयुक्त तेज उसको प्राप्त होता है, इसलिये यह धन, शोभा, तेज और यज्ञ उसीका है और उसीसे सबको प्राप्त होता है । इसलिये इसकी उपासना प्रातःकाल करनी चाहिये । देखिये—

प्रातरग्निः पुरुप्रियो विशः हतवेताऽतिथिः ।

विश्वानि यो अमर्त्यो ह्वया मर्त्येषु रणयति ॥

( ८८१, ऋ० ५।१८।१ )

‘(अ-तिथिः) जिसकी आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है, वह (विशः) सबका निवासक (पुरु+प्रियः) सबको प्रिय अग्नि (प्रातः सवेत) प्रातःकाल में प्रशंसित होवे । वह मत्स्योमें अमर ( विश्वानि हृष्या ) सब अन्नो को ( रषयति ) चाहता है ।’

यह पूर्वोक्त आत्माग्नि सबको प्रिय है, इससे अधिक प्रिय वस्तु दुनियाभरमें और कोई भी नहीं है । इसलिये इसको ‘पुरु-प्रिय’ कहते हैं, इस विषयमें उपनिषदों में निम्न प्रकार वर्णन है—

आत्मानमेव प्रियमुपासीत ॥ ( बृ० उ० १।१।८ )  
न वा अरे वित्तस्य कामाय वित्तं प्रियं भवति  
आत्मनस्तु कामाय वित्तं प्रियं भवति ॥ ....  
न वा अरे देवानां कामाय देवाः प्रिया भवंत्या-  
त्मनस्तु कामाय देवाः प्रिया भवंति ॥ .....  
न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवत्या-  
त्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति । आत्मा वा  
अरे द्रष्टव्य श्रोतव्यो मंतव्यो निदिध्यासितव्यः ॥  
( बृ० उ० २।४।५ )

‘आत्माको ही प्रिय मानकर उपासना करनी चाहिये । अरे वित्त के लिये वित्त प्रिय नहीं होता है, परन्तु आत्माके लिये ही वित्त प्रिय होता है । ... देवोंके लिये देवतायं प्रिय नहीं होती हैं, परन्तु आत्माके लिये ही देव प्रिय होते हैं । ... सबके लिये ही सब प्रिय नहीं होता है, परन्तु आत्माके लिये ही सब कुछ प्रिय होता है । इसलिये आत्मा की खोज करनी चाहिये और उसीका श्रवण, मनन, निदिध्यासन करना चाहिये ।’ पूर्वोक्त वेदमंत्रमें जो ‘पुरु+प्रिय’ शब्द है, उसीका यह स्पष्टीकरण है । प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्तमें इसीका चिंतन करना चाहिये—

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय चित्तयेदात्मनो हितं ॥

‘ब्राह्म मुहूर्त में उठकर आत्मा का हित करनेका उपाय सोचना चाहिये ।’ यह आर्योंकी सनातन रीति है । अस्तु ।

पूर्वोक्त मंत्रमें कहा है कि, यह आत्मा सब अन्न, (विश्वानि हृष्या) सब प्रकारका भक्ष्य चाहता है । इसकी सत्यता देखनेके लिये हरएक योनिके प्राणियोंका निरीक्षण कीजिये । हरएक योनिके प्राणीका भक्ष्य अलग अलग रहता है । प्रायः सब योनियों के प्राणी सब कुछ पदार्थ खाते हैं । इसलिये कहा है कि—

स यद्यदेवाऽसृजत तत्तद्वस्तुमध्रियत सर्वं वा  
अत्तीति तद्दितेरदितित्वं सर्वस्यैतस्यात्ता  
भवति सर्वमस्यान्नं भवति य एवमदितेरदितित्वं वेद ॥  
( बृ० उ० १।२।५ )

सर्वस्यात्ता भवति सर्वमस्यान्नं भवति ।

( बृ० उ० २।२।४ )

वात्यश्त्वं प्राणैक ऋषिरत्ता विश्वस्य सत्पतिः ॥

( प्रश्न उ० २।११ )

‘उसने जो उत्पन्न किया, वह सब खाने के लिये धर दिया, क्योंकि यह सबका भक्षक है । इसीलिये इसको अदिति कहते हैं, यह सबका भक्षक है और सब इसका अन्न है । हे प्राण ! तू वात्य, एक, ऋषि, सत्पति और सब विश्वका भक्षक है ।’ यह उपनिषदों का वर्णन पूर्वोक्त मंत्र के साथ देखनेयोग्य है । इस विधानों की तुलना करने से मंत्र का आशय अधिक स्पष्ट होता है और वैदिक कल्पना विशेष स्पष्ट होनेमें सहायता हो जाती है । अस्तु । तात्पर्य यह कि, यह आत्माग्नी ही (अत्ता) भक्षक किंवा सर्वभक्षक है । यह न केवल मत्स्योका अपितु देवोंका भी हित करता है, इस विषय में निम्न मंत्र देखिये—

(३२) अनेक देवोंका प्रेरक एक देव ।

यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा होता यजिष्ठ

इरुणोति देवान् ॥ ( २३४; ऋ० १।७।१ )

‘यह मत्स्योमें अमर, (ऋता-वात्) सत्य नियमों का पालक, दाता, ( यजिष्ठः ) पूज्य है, और यह देवोंका हित करता है ।’ यहां प्रश्न उत्पन्न होता है कि, यह मर्त्य शरीरमें रहता हुआ देवोंका हित कैसा करता है? इस प्रश्नका उत्तर इतनाही है कि, इस शरीरमें ही स्थानस्थानमें अनेक देवताएं अंशरूपसे आकर बैठी हैं, उनका हित यही करता है । आंखमें सूर्यनारायण है, नाकमें अश्विनी देव हैं, छातीमें मरुत् हैं, इसी प्रकार अन्यान्य स्थानोंमें अन्यान्य देव हैं । इन सब देवगणोंका हित यही आत्माग्नि कर रहा है । देवोंका अपने अपने स्थानमें निवास कराना, उनको अन्नरस पहुंचाना, उनसे योग्य कार्य लेना, अपने साथ उनको लाना और ले जाना, उनको हृष्टपुष्ट करना, इत्यादि सब कार्य इसी आत्माग्निके हैं । आग्निस्फूर्तिमें स्थानस्थानमें

इस विषय के वर्णन अनेक हैं, उनका विशप विचार किसी समय हो जायगा। यहां केवल सूचानाके लिये लिखा है। तथापि कुछ थोड़े वाक्य देखिये—

- [१] स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ य. ३४।५१  
 [२] स देवेषु घनते घार्याणि ॥ ऋ. ५।४।३  
 [३] देवो देवान् ऋतुना पर्यभूषत् ॥ ऋ. २।१२।१  
 [४] देवो देवान् परिभूषतेन ॥ ऋ. १०।१२।२  
 [५] देवो देवान् यजत्वग्निरर्हन् ॥ ऋ. २।३।१  
 [६] देवो देवान् यजसि जातवेद. ॥ ऋ. १०।११०।१  
 [७] देवो देवान् स्वेन रसेन पृंचन् ॥ ऋ. १।२७।१२

‘(१) वह देवोंमें दीर्घ आयु करता है। (२) वह देवोंमें शक्तियां देता है। (३) वह देव अपने कर्मसे देवोंको सुभूषित करता है। (४) सत्यसे वह देव देवोंको व्यापता है। (५) अग्नि देव योग्य होनेसे देवोंका यजन करता है, (६) जातवेद अग्नि देव देवोंका यज्ञ करता है। (७) देव अपने रससे देवोंको पुष्ट करता है।’

इस प्रकारके सैकड़ों वचन हैं कि, जो आत्मा और इन्द्रियोंका ही संबंध वर्णन कर रहे हैं। आत्मा अग्नि है और इन्द्रिय-स्थानमें सब देवतागण है। इनका ही वर्णन यहां अग्निसूक्तों में मुख्यतया है और इसी प्रकार अन्य देवताके सूक्तोंमें भी है। परंतु यहां अग्निविषयक ही वर्णन का विचार करना है, इसलिये अन्य देवताके मंत्र देखनेकी आवश्यकता नहीं है। अब निम्न लिखित मंत्रमें इसका संबंध अन्य देवोंके साथ देखिये—

त्वां ह्यग्ने सदमित् समन्यवो देवासो देवमरति  
 न्येरिरे इति कृत्वा न्येरिरे। अमर्त्यं यजत  
 मर्त्येषु देवमा देवं जनत प्रचेतसं विश्वमादेवं  
 जनत प्रचेतसम् ॥ (६३१; ऋ. ४।१।१)

‘हे अग्ने! (स-मन्यवः) अत्यंत उत्साही देव (अरति त्वां देवं) गतियुक्त तुझ देवको (सदं इत्) सदा (न्येरिरे) प्रेरित करते हैं। हे (यजत) पूज्य! (मर्त्येषु अमर्त्यं) मर्त्योंमें अमर (आदेवं देवं) देवताको (आजनत) प्रकट करते हैं, तथा (प्र-चेतसं) चिस्वरूप देवको प्रकट करते हैं।’

यह आत्माग्नि मरणधर्मवालोंमें अमर है और इसको अन्य देव प्रकट कर रहे हैं। अर्थात् अन्य देवताओंके कारण

इसका अनुभव हो रहा है। बाह्य जगत् में देखिये कि, सूर्यादि देवताओंके अस्तित्व से ही परमात्माका अस्तित्व है, यह कल्पना उत्पन्न होती है। इसी प्रकार अध्यात्मपक्षमें अपने देहमें आंख, नाक, कानोंके व्यापार देखकर इनके अंदर एक आत्मतत्त्व है, ऐसा अनुभव होता है। दोनों दृष्टियोंसे देवताएं आत्माको प्रकट करती हैं, यह कथन सत्य है। इस प्रकार मर्त्योंमें अमर आत्माग्निका वर्णन वेदमें अग्निके भिषसे होता है। इस विषयमें और एक ही मंत्र देखिये—  
 यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा देवो देवेष्वरतिर्निधायि।  
 होता यजिष्ठो महा शुचधै हव्यैरग्निर्मनुष ईरधै॥  
 (६४७; ऋ. ४।२।१)

‘(यः अमृतः) जो अमर (ऋतावा) सत्य धर्मसे युक्त, (अरतिः) गतिमान् अग्निदेव है, वह (मर्त्येषु) मर्त्योंमें (निधायि) रखा है। यह (होता) दाता (यजिष्ठः) पूज्य (महा) अपने महत्त्वसे (शुचधै) प्रकाश करनेके लिये रखा है। तथा (हव्यैः) अन्नोंसे (मनुषः) मनुष्यको (ईरधै) प्रेरणा अर्थात् उन्नति करने के लिये रखा है।’

इस मंत्रमें यह आत्माग्नि किस प्रयोजन के लिये यहां इस शरीरमें रखा है, उसका वर्णन है। श्री सायणाचार्य इस मंत्रपर निम्न प्रकार भाष्य करते हैं।

मर्त्येषु मनुष्यसम्बन्धिषु वागादीन्द्रियेषु निहितः।  
 अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राधिशत् इति श्रुतेः।  
 (सा० भाष्य०, ऋ० ४।२।१)

‘मर्त्यों में अर्थात् मनुष्यसंबन्धी वाग् आदि इन्द्रियोंमें रखा है। क्योंकि अग्नि वाक् बनकर मुखमें प्रविष्ट हुआ, ऐसा श्रुतिवचन है। (तै. ब्रा. ३।९।१७)। यह आत्माग्नि मनुष्योंमें रहकर (शुचधै) उनमें तेज उत्पन्न करता है, तथा (ईरधै) उन्नतिकी ओर प्रेरणा करता है। ये दो कार्य इसके इस शरीरमें हैं। मर्त्य प्राणियोंमें अमर आत्माग्नि का यह कार्य हरएक को देखनेयोग्य है। अपने अंदर इस प्रकार की दिव्य और अमर आत्मशक्ति है और वह हमको उन्नतिकी ओर प्रेरणा कर रही है, यह विश्वास उत्पन्न होना चाहिये। वैदिक धर्मका यही उद्देश्य है। अपने नित्य जपके गायत्री मंत्रमें (धियो यो नः प्रचोदयात्। ऋ. ३।६२।१०) ‘जो हमारी इन्द्रियोंको प्रेरणा

करता है, ” उसका हम ध्यान करते हैं, ऐसा जो कहा है, उसका भी यहां विचार करना चाहिये । क्योंकि दोनों में उन्नतिकी प्रेरणा समानही है । अस्तु । इस प्रकार प्रेरक आत्माग्नि मत्स्योमें है और वह अमर है, यह बात उक्त मंत्रोंद्वारा सिद्ध हुई । अब अन्य बातका विचार करेंगे । वेदमें देवों के साथ अग्नि आता है, अथवा जाता है, इस आशयके वर्णन अनेक स्थानोंमें हैं । इनमेसे कुछ मंत्र इससे पूर्व दिये गये हैं और कुछ आगे दिये जायगे । यहां उक्त आशय के ही परंतु वही आशय अन्य शब्दोंद्वारा जिनमे बताया है, ऐसे मंत्र पहिले दिये जाते हैं । उनका विचार होनेके पश्चात् देवोंका संबंध अग्निके साथ देखेंगे—

### ( ३३ ) अनेक अग्नियोंके साथ एक अग्नि ।

जिस समय अग्निका स्वरूप निश्चय करना होता है, उस समय ‘ अनेक अग्नियोंके साथ एक अग्नि है, ’ यह वेदका वर्णन सब से पहले देखना चाहिये । क्योंकि कि ऐसे मंत्रोंमें “ अग्नि ” शब्द विशेष भावसे प्रयुक्त होता है । देखिये—

विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः ।

चनो धाः सहसो यहो ॥ ( ३७; ऋ० १।२६।१० )

‘ हे ( सहसः यहो ) बल के सरक्षक ! हे अग्ने ! तू ( विश्वेभिः अग्निभिः ) सब अग्नियोंके साथ इस यज्ञमें आ और इस वचन को सुनो । तथा हमको ( चनः ) भक्ष दो । ’ इस मन्त्रका कथन स्पष्ट है कि, यह अग्नि एक यज्ञमें अपने साथ सब अग्नियोंको लाता है । अब पता लगाना चाहिए कि, यह एक अग्नि कौन है और उसके साथ आनेवाले अनेक अग्नि कौन हैं । इसका पता लगानेके लिए निम्न लिखित मन्त्र देखिए—

अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्देवेभिर्महया गिरः ।

यज्ञेषु ये उ चावयः ॥ ( ५३०; ऋ० ३।२४।४ )

‘ हे अग्ने ! ( विश्वेभिः अग्निभिः देवेभिः ) सब अग्निदेवों के साथ तू ( गिरः महय ) वाणीको सुपूजित करो, तथा जो ( चावय. ) यज्ञमें पूजक होते हैं, उनको भी उन्नत करो । ’

इस मन्त्रमें ( अग्निभिः देवेभिः ) अग्नि और देव ये शब्द एकही पदार्थके द्योतक हैं । तात्पर्य, किसी स्थानपर ‘ देव ’ शब्द प्रयुक्त हुआ अथवा किसी स्थानपर ‘ अग्नि ’ शब्द का उपयोग हुआ, तोभी उन दोनोंसे एकही अर्थ

सिद्ध होता है । अर्थात् “ हे अग्ने ! तू देवोंके साथ आ ” तथा “ हे अग्ने ! तू अग्नियोंके साथ आ ” इसका भाव एकही है । “ देव ” शब्दका भाव अध्यात्ममें “ इंद्रिय ” है, यह बात पहिले निश्चित की गई है, वही भाव ‘ अग्नि ’ शब्दमें है, यह यहां निश्चित हो रहा है । इस विषयमें भगवद्गीताका प्रमाण देखिए—

शब्दादीन्विषयानन्य इंद्रियाग्निषु जुह्वति ॥

( भ० गी० ४।२६ )

‘ शब्दादि विषयोंका इंद्रियाग्नियों में हवन करते हैं । ’ इस श्लोकमें इंद्रियरूप अग्नि अनेक हैं, यह स्पष्ट है । प्रत्येक इंद्रियमें एक एक अग्निकुंड है और वहां उम उस विषयका हवन हो रहा है । आंखके स्थानीय अग्निमें रूप का हवन होता है, कर्णस्थानीय अग्निमें शब्द का हवन, इसी प्रकार अन्यान्य इंद्रियाग्नियोंमें अन्यान्य विषयों का हवन हो रहा है । और जिसका हवन होता है, उसको वह अग्नि महान् आत्माग्नि तक पहुंचाता है । यह केवल आलंकारिक वर्णन नहीं है, परन्तु इसका अनुभव भी पाठक कर सकते हैं । इंद्रियस्थानीय सपूर्ण अग्नि यदि नियत रीतिसे योग्य आहुतियां डालकर सुपूजित किने गये, तो वे इस शरीरके अभिष्टाता मुख्य आत्माको इष्ट उन्नतितक पहुंचाते हैं, परन्तु यदि कोई एक इंद्रियाग्नि हृदसे अधिक बढ गया, तो सबको जलाकर सबका नाश करता है । फिर सब इंद्रियाग्नि भडकने लगे, तो क्या अवस्था होगी, इसका विचार कल्पनासेही पाठक कर सकते हैं !!! इस अवस्थाको देखनेसे प्रत्येक इंद्रियमें अग्नि है, यह बात सिद्ध होती है, अर्थात् यहां जितनी इंद्रियां हैं, उतनेही अग्नि हैं । इसलिए “ हे अग्ने ! तू सब अग्निदेवोंके साथ सुपूजित हो । ” इस वाक्यका तात्पर्य, “ हे आत्मन् ! तू सब इंद्रिय शक्तियोंके साथ पूज्य बनो ” यही है । जहाँ ‘ आत्माग्नि ’ जाता है, वहाँ सब इतर ‘ इंद्रियाग्नि ’ जाते हैं, यह सब स्वाभाविक ही है । शरीरस्थानीय इंद्रियाग्नियोंके विषयमें यह विचार हुआ । इनके अतिरिक्त भी और बहुतसे अग्नि यहां रहते हैं, उनका विचार निम्न लिखित उपनिषद्वाक्य में देखिए—

शरीरमिति कस्मात् । अग्नयो ह्यत्र श्रियन्ते, क्षानाग्निर्दशानाग्निः कोष्ठाग्निरिति । तत्र कोष्ठा-

शिर्नामाशितपीतलेह्यचोष्यं पचति । दर्शनाग्नी  
रूपाणां दर्शनं करोति । ज्ञानाग्निः शुभाशुभं च  
कमे विन्दति । त्रीणि स्थानानि भवति, मुखे  
आहवनीय, उदरे गार्हपत्याग्नि, हृदि दक्षिणाग्निः।  
आत्मा यजमानो, मनो ब्रह्मा, लोभाद्यः पशवो,  
धृतिर्दीक्षा संतोषश्च, बुद्धीन्द्रियाणि यज्ञ-  
पात्राणि, हवीषि कर्मेन्द्रियाणि, शिरः कपालं,  
केशा दर्भाः, मुखमंतर्वेदिः ॥ ( गर्भोपनिषद् ५ )

‘ इस को शरीर क्यों कहते हैं ? क्योंकि यहां अग्नि  
आश्रय लेते हैं, ज्ञानाग्नि, दर्शनाग्नि और कोष्ठाग्नि । उस  
में कोष्ठाग्नि अन्न का पचन करता है । दर्शनाग्नि रूपों को  
देखता है । ज्ञानाग्नि शुभाशुभ कर्मोंको प्राप्त करता है ।  
अग्नियों के तीन स्थान होते हैं, मुख में आहवनीयाग्नि,  
उदर में गार्हपत्याग्नि और हृदय में दक्षिणाग्नि है ।  
इस यज्ञ में आत्मा यजमान है, मन ब्रह्मा, लोभादि पशु,  
धृति दीक्षा, ज्ञानेन्द्रियां यज्ञपात्र है, कर्मेन्द्रियां हविर्द्रव्य  
हैं, शिर कपाल है, केश दर्भ है और मुख अन्तर्वेदि है ।’  
इस प्रकार यह यज्ञ चल रहा है । यही शतसांवरसरिक  
महासत्र है । यहां यज्ञपुरुष प्रत्यक्ष आत्मा है । जो इस यज्ञ  
को अपने अन्दर देखेगा, उस को ही एक अग्निकी तथा  
उस के साथवाले अनेक अग्नियों की कल्पना ठीक प्रकार  
हो सकती है और उसी को संदेहरहित ज्ञान होना सम्भव  
है । इस प्रकार ये अनेक अग्नि यहां इस देहरूपी  
यज्ञशाला में प्रत्यक्ष हैं और इसी का नक्षत्र बाहिर की  
यज्ञशाला में किया जाता है । बाह्य यज्ञ जो हवनकुंडों में  
किया जाता है, वह इसलिये ही है कि, उस नक्षत्र को  
देख कर इस असली यज्ञ का पता लगे । परन्तु शोक की  
बात इतनी ही है कि, यह ‘ नक्षत्रा ’ ही अधिक प्रिय हो  
गया है और वास्तविक यज्ञ की ओर कोई देखता ही नहीं  
है ॥ वेद का अर्थ जानने की इच्छा करनेवालों को तो  
यह आध्यात्मिक, यज्ञ अवश्यमेव ध्यानपूर्वक समझना  
चाहिये । अन्यथा वेदमंत्र का अर्थ समझना ही अशक्य है ।  
‘ अनेक अग्नियों के साथ एक अग्नि आता है ’  
यह वेदमंत्र का कथन पूर्वोक्त रूपक का सूचक है, इस  
विषय में अब सदेह नहीं हो सकता । अब निम्न लिखित  
मंत्र देखिये—

तमु घृमः पूर्वणीक होतरग्ने अग्निभिर्मनुष  
इधानः । स्तोमं यमस्मै ममतेष शूषं घृतं न  
शुचि मतय पवंते ॥ ( १९४; ऋ. ६-१०-२ )

‘ हे ( घृमः ) तेजस्वी ( पुरु+अनीक ) बहुसेनायुक्त,  
बहुबलयुक्त अग्ने ! ( अग्निभि ) अग्नियों के साथ प्रवृ-  
त्तित होनेवाला तू ( मनुषः ) मनुष्य के उस स्तुति का  
श्रवण कर । ( यं स्तोमं ) जिस स्तोत्र को, ( शुचि शूषं घृतं  
न ) शुद्ध सुखकर धी के समान, ( मतयः ) बुद्धियां  
पुनीत करती है ।’

इस मंत्र में एक अग्नि अनेक अग्नियों के साथ प्रदीप्त  
हो रहा है, यही वर्णन है । इस का भाव पूर्वोक्त स्तरीकरण  
के साथ विशेष खुल सकता है । एक आत्माग्नि अनेक  
इन्द्रियों के साथ यहां इस देह में प्रदीप्त हो रहा है । यह  
मुख्य आत्माग्नि ( पुरु अनीक ) अनेक बलों से युक्त है,  
अनेक शक्तियां इस में हैं, तथा अनेक सेनासमूह भी इस  
के साथ रहते हैं । प्रत्येक इन्द्रियस्थान में सैनिकों का एक  
एक गण है और सब गणों का यही एक अध्यक्ष ‘ गणपति ’  
है । गणेश को सैनिकों के गणों का स्वामी कहते ही हैं ।  
शरीरके प्रत्येक इन्द्रिय में सूक्ष्म कीटाणुओं का एक एक गण  
रहता है, वहां प्रत्येक गण का एक अधिष्ठाता रहता है ।  
और संपूर्ण गणों का यह मुख्याधिष्ठाता होता है । इसलिये  
इस को ( पूर्वणीक=पुरु-अनीक ) बहु सेना से युक्त कहते  
हैं । प्रत्येक गण का अधिष्ठाता एक अग्नि और सब गणों  
के अधिष्ठातारूप अनेक अग्नियों का मुख्याधिष्ठाता यह  
महान् अग्नि है । यही गणराज होता है । इस गणराज-  
संस्था को अपने शरीर में ही देखना चाहिये । यहां इस  
का अनुभव होने के पश्चात् राष्ट्र में ‘ गणराज-संस्था ’  
किस प्रकार होती है, इस का ज्ञान होना सम्भव है । इस  
लिये पाठक इस संस्थाको अपने अन्दर देखें और अनुभव  
करें । तथा अपने समाज में इसी गणराज-संस्था को  
जीवित कर के अपना राज्ययन्त्र उत्तम सजीव करने का  
यत्न करें । अस्तु । अब इन अग्नियों के विषय में एक  
वर्णन देखिये—

( ३४ ) अग्नियोंमें अग्नि ।

प्रो त्थे अग्नयोऽग्निषु विश्वं पुष्यंति वार्यं ।

ते हिन्विरे त इन्विरे त इषण्यंत्यानुषगिषं  
स्तोतृभ्य आभर ॥ ( ८०६. ऋ. ५-६-६ )

‘ ( अग्नयः ) ये अग्नि ( अग्निषु ) अग्नियों में ( विश्वं वार्यं ) सब शक्ति का ( प्रो पुष्यति ) पोषण करते हैं । ( ते हिन्विरे ) वे संतुष्टता करते हैं, ( ते इन्विरे ) वे व्यापते हैं, ( ते इषण्यन्ति ) वे भक्ष की इच्छा करते हैं । इसलिये स्तोत्रार्थों का क्रमशः पोषण करो । ’

इस मंत्रमें चार विधान हैं, जो अग्निका वास्तविक स्वरूप बता रहे हैं— ( १ ) ( विश्व वार्यं पुष्यति ) सब निवारक शक्तिको बढ़ाते हैं । शरीर में एक निवारक शक्ति है, जो रोगादिकों का प्रतिबन्ध करती है, अपमृत्यु का निवारण करती है । उस का पोषण यह अग्नि कर रहा है । ( २ ) ( हिन्विरे ) संतोष करते हैं । संतोष, खुशी, आनन्द दे रहे हैं । पूर्वोक्त अग्नि अपने अन्दर विविध प्रकार के हवन स्वीकार कर के देवताओं की संतुष्टता कर रहे हैं । यह भाव अपने अन्दर पूर्वोक्त स्रष्टीकरण से विशद हो सकता है । ( ३ ) ( इन्विरे ) व्यापते हैं । अपनी इन्द्रियाशक्तियों से व्यापक होते हैं । देखिये, अपना ही दर्शनाग्नि जो आंख में है, वह जगत् में सूर्यचंद्रादिकों तक फैलता है, इसी प्रकार कर्णस्थानीय श्रवणाग्नि दश दिशाओं में फैल रहा है । इसी प्रकार अपनी शक्तियां फैल रहीं हैं । ( ४ ) ( इषण्यन्ति ) भक्ष की इच्छा करते हैं । ये इन्द्रियाग्नि अपने अपने भोग्य अन्न को प्रतिदिन चाहते हैं । अपना अपना भक्ष मिल जाने से ही वे शक्तियों को पुष्ट करते हैं, संतोष देते हैं, तथा व्यापते हैं और भक्ष न मिलने पर वे शक्तिहीन होते हैं, संतोष नहीं देते और अपनी शक्ति को फैला भी नहीं सकते ।

सूक्ष्म दृष्टि से यदि पाठक इस मंत्र का विचार करेंगे, तो उन के ध्यान में स्पष्ट रीति से आ सकता है कि, इस मंत्र में कहे हुए अग्नि ‘ इन्द्रियाग्नि ’ ही मुख्यतया हैं । क्योंकि इन में ही मंत्रोक्त बातों का अनुभव हो सकता है । अन्यत्र लक्षणा से भी अनुभव आना अशक्य है । इसलिये ये अग्नि मुख्यतः अपने शरीर की शक्तियां ही हैं और उनका सम्बन्ध व्यक्त करने के लिये ही बाहर के यज्ञ में विविध अग्नियों की योजना की गई है । यही बात निम्न लिखित मंत्र में और स्पष्ट हुई है । देखिये—

( ३५ ) देवोंद्वारा प्रदीप्त अग्नि ।

मा नो अग्ने दुर्भृतये सचैषु देवेद्धेष्वग्निपु  
प्रवोचः । मा ते अस्मान् दुर्मतयो भृमाच्चि-  
देवस्य सूनो सहस्रो नशन्त ( ११२१; ऋ. ७-१-२२ )  
‘ हे अग्ने ! ( न सचा ) हमारा सहायक तू है, इस-  
लिये इन ( देवेद्धेषु ) देवोंद्वारा प्रदीप्त किये हुए अग्नियों  
में ( दुर्भृतये ) कृशता के लिये ( मा प्रवोचः ) न कहो ।  
तथा हे ( सहस्र सूनो ) बलपुत्र ! ( ते देवस्य दुर्मतय )  
तुझ देव की दुर्बुद्धियां ( भृमात्चित् ) भ्रम से भी  
हमारा नाश न करे । ’

इस में मुख्य अग्नि की प्रार्थना की गई है कि, वह मुख्याग्नि गौण अग्निर्धों में कृशता के शब्द न बोले और भ्रम से भी दुष्ट भाव न धारण करे । मुख्याग्नि आत्माग्नि है और गौणाग्नि इन्द्रियाग्नि ही हैं । आत्माग्नि की प्रेरणा इन्द्रियाग्नियों में होती है और यहां का सब कार्य चलता है । यह आत्माग्नि गुप्त शब्दोंद्वारा इन्द्रियाग्नियों में प्रेरणा करता है । इस की यह प्रेरणा ( दुर्भृतये ) कृशता के लिये न हो, परन्तु ( सुभृति ) पुष्टि के लिये होवे । निम भाव की धारणा होती है, वैसी ही यहां की अवस्था बन जाती है । ‘ मैं प्रतिदिन उन्नत, पुष्ट और नीरोग हो रहा हूं । ’ ऐसी भावना धरने से उन्नति, पुष्टि और नीरोगता सिद्ध होती है । तथा इस के विपरीत भाव धारण करने से विपरीत परिणाम होता है । इसलिये भ्रम में भी दुष्ट भावना मन में धारण नहीं करनी चाहिये । क्योंकि यदि दुष्ट भावना का धारण हुआ, तो निःसन्देह नाश होगा । इतनी प्रबल शक्ति भावना में है । यह मंत्र मानसशास्त्र के एक बड़े भारी सिद्धांत का प्रकाश कर रहा है । आशा है कि, पाठक इस का विचार कर के अपना लाभ करने का यत्न करेंगे । निश्चय शुद्ध भावना की स्थिरता करने से निश्चय लाभ होगा, यह अटल सिद्धांत है ।

इस मंत्र में ( देवेद्धः अग्निः ) देवोंद्वारा प्रदीप्त किये अग्नियों का उल्लेख है । यहां कौनसे अग्नि, देवों के प्रयत्न से प्रदीप्त हुए हैं ? इस का पता लगाना आवश्यक है । उपनिषदों में कहा है कि— ( १ ) सूर्य भगवान् नेत्रस्थान में आकर रहे हैं और दर्शनाग्नि को प्रदीप्त कर रहे हैं । ( २ ) आध्विनी देव नाभिकास्थान में प्राणाग्नि



को प्रदीप्त कर रहे हैं । ( ३ ) अग्नि वाक् स्थान में बैठ कर शब्दाग्नि को जला रहा है । ( ४ ) शिस्नस्थान में जल-देवताएं बैठी हैं और वीर्याग्नि का प्रदीपन कर रही हैं । ( ५ ) नाभिस्थान में सृष्ट्युदेव आकर अपनाग्नि को उद्दीपित कर रहा है, इसी प्रकार अन्यान्य देवताएं अन्यान्य इंद्रिय-स्थानों में बैठ कर अपने अपने हवनकुंड में अपने अपने अग्नि प्रदीप्त कर रही हैं । ये सब अग्नि ( देव+इन्द्र ) देवों द्वारा प्रदीप्त किये हैं । पाठक इतना अनुभव अपने देह में कर सकते हैं ।

देवी शक्तियों द्वारा इंद्रियाग्नियों का प्रज्वलन सर्वत्र उपनिषदादि ग्रंथों में वर्णन किया है । इसलिये वही यहां लेना उचित है और वह लेने से ही मंत्रका गर्भिताशय स्पष्ट हो जाता है । यही भाव निम्न लिखित मंत्र में देखिये-

दशस्या नः पुर्वणीक होतर्देवेभिरग्ने अग्निभि  
रिधानः । रायः सूनो सहसो वावसाना अति  
स्लेम वृजनं नांहः ॥ ( १००५; ऋ ६-११-६ )

‘ हे ( पुरु-अनीक ) बहुबलयुक्त ( होतः ) दाता अग्ने ! ( देवभिः अग्निभिः ) अग्निदेवों के साथ ( इधानः ) प्रदीप्त होता हुआ, ( न ) हम को ( रायः ) धन ( दशस्य ) दो । हे ( सहसः सूनो ) बल-पुत्र ! ( वावसाना ) वसने की इच्छा करनेवाले हम सब ( वृजनं न ) शत्रु के समान ( अंहः ) पाप का भी ( अतिस्लेम ) अतिक्रमण कर के परे चले जायेंगे ।’

हममें भी अनेक अग्निदेवों के साथ प्रदीप्त होनेवाले एक मुख्य अग्नि का वर्णन है और इस में प्रायः वे ही शब्द हैं, कि जो पहिले आ चुके हैं, इसलिये इनका अधिक स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता नहीं है । इसी प्रकार निम्न लिखित मंत्र में भी यही वर्णन है-

स त्वं नो अर्वन्निदाया विश्वेभिरग्ने अग्नेभि-  
रिधानः । वेषि रायो वि यासि दुच्छुना मन्त्रे म  
शतहिमा सुवीराः ॥ ( १०११; ऋ ६-१२-६ )

‘ हे ( अर्वन् ) गतिशील अग्ने ! तू ( विश्वेभिः अग्निभिः ) सब अग्नियों के साथ प्रदीप्त होता हुआ ( निदायाः ) निदा से ( पाहि ) हमारा रक्षण कर, ( रायः वेषि ) धन दो, ( दुच्छुना वियासि ) दुःखकारकोंको विविध प्रकारसे भगाओ, जिससे हम ( शत-हिमाः ) सौ वर्ष ( सु-वीरा )

उत्तम वीरोंसे युक्त होकर ( मदेम ) आनंदित हों ।’

सब इंद्रियाग्नियोंसे युक्त होता हुआ आत्माग्नि ऐसी प्रेरणा करे कि, हम सब निंदासे बचें, धन प्राप्त करें, विपरीत भावनाओंको दूर भगा दे । ऐसा करनेसे हम सौ वर्ष आनंद से व्यतीत करेंगे । इस का तात्पर्य यह है कि, यदि हम घृणित कर्म करेंगे, धन नहीं प्राप्त करेंगे, विपरीत भावना-रूपी शत्रुओंको दूर न भगायेंगे, तो घृणित कर्मों के कारण हमारा अतःकरण मलिन होगा, धनहीनताके कारण संसार-यात्रा कष्टप्रद होगी, विरुद्ध भावनाओंके कारण क्लेश होंगे और इन सबका यही परिणाम होगा कि, हमारी आयु क्षीण हो जायगी । इसलिए मंत्रोक्त उपदेशके अनुसार आचरण करके दीर्घायु बनना हरएक वैदिक धर्मीको उचित है । अस्तु । अब उक्त विषयकाही और एक मन्त्र देखिए—

( ३६ ) दूत अग्नि ।

अग्नि वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूत-  
मध्वरे ऋणुध्वं ॥ यो मर्त्येषु निध्वर्विर्कृतावा  
तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः ॥ ( ११२४; ऋ० ७।३।१ )

‘ ( अग्निभिः ) अग्नियोंके साथ रहनेवाले ( यजिष्ठं देव ) पूज्य अग्निदेव को ( अध्वरे ) यज्ञमें दूत कीजिए । जो अग्नि ( मर्त्येषु ) मर्त्योंमें ( नि-ध्रुविः ) ध्रुव, ( ऋतावा ) सत्यवान्, ( तपुर्मूर्धा ) तपस्वी, ( घृत्+अन्नः ) घीयुक्त अन्न खानेवाला और ( पावकः ) शुद्धिकर्ता है ।’

इंद्रियोंके साथ रहनेवाला आत्माग्नि पूज्य, अमर, स्थिर, दृढ, सत्य, तपस्वी और शुद्ध है । इसीको यज्ञ में दूत करना चाहिए । दूत वह होता है कि जो नियत कार्यको करता है, जिस प्रकार कहा जाय, वैसा ही कर लेता है । क्या यह आत्माग्नि हमारा दूत है ? आध्यात्मिक दृष्टिसे विचार करनेपर पता लग जायगा कि, विशेष अवस्थामें यह दूत भी बनता ही है । योगसाधन से जिनका मन शांत और स्थिर हुआ है, वे योगी जो भाव मनमें लाते हैं, वैसा ही बन जाता है । यह कौन करता है ? विचार करनेपर मानना पडता है कि, यह आत्माही करता है । मनमें जो इच्छा होगी, वह बन जायगी । अर्थात् मनकी इच्छाके अनुसार यह दूत बनकर कार्य करता है । इस अर्थमें यह दूत है । पौराणिक मतसे श्रीकृष्ण भगवान् परमात्माका पूर्णावतार होता हुआ भी साधक जीव अर्जुन के रथपर

साथी अर्थात् दूत ही बना था, उसके घोड़े साफ किया करता था, महायज्ञमें भोजनके बाद उच्छिष्ट निकालनेका काम करता था और पांडवोंकी इच्छाके अनुसार सब कार्य करता था । इस कथामें परमात्मा, जीवात्माका दौत्य करता है । वास्तविक यह अलंकार है । और वही अलंकार अग्नि के मिश्रसे यहाँ इस इस मन्त्रमें बताया है । योगबलसे साधक जीवको इतना अधिकार प्राप्त हों सकता है कि, वह जिसकी इच्छा करेगा, वह उसको परमात्मा देगा । इच्छा करनेवाला योगी और सिद्ध करनेवाला आत्मा यहाँ होता है । इसीलिए इसको दूत कहा है । इस दूतकर्म के विषयमें वेदमें सैकड़ों प्रकारके आलंकारिक वर्णन हैं, उनका स्पष्टीकरण स्थानस्थानमें किया जायगा । उनमेंसे एक भाव यहाँ बताया है । इसी विषयमें दूसरा अलंकार देखिये—

(३७) होता अग्नि ।

अग्नि आयाह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।

आ त्वामनक्तु हविष्मती यजिष्ठं बर्हिंरासवे ॥

( १३८९, ऋ. ८-६०-१ )

‘ हे अग्ने ! तू अग्नियों के साथ आ । तुझे हम हवनकर्ता ऋत्विज् स्वीकार करते हैं । ( हविष्मती बर्हिः ) अन्नयुक्त वेदी तुझ पूज्य को प्राप्त करके सुपूजित करे । ’

पूर्वमंत्र में इस आत्माग्नि को दूत स्वीकार किया था, अब इस मंत्र में ऋत्विज् हवनकर्ता स्वीकार करते हैं । ‘ होता ’ शब्द का अर्थ दाता, आदाता, आह्वानकर्ता और हवनकर्ता है । यह आत्माग्नि इंद्रियाग्नियों, प्राणाग्नियों तथा जाठरादि अग्नियों में विविध प्रकार के हवन कर रहा है । इस प्रत्यक्ष बात का ही यह वर्णन है, इसलिये अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है । अब और एक अलंकार देखिये—

(३८) अग्निरूप होना ।

स्वग्नयो घो अग्निभिः स्याम सूनो सहस ऊर्जा

पते ॥ सुवीरस्वमस्मयुः । ( १२३०; ऋ. ८/१९/७ )

‘ हे ( सहस सूनो ) बल पुत्र ! हे ( ऊर्जा पते ) अन्नपते ! आप के अग्नियों के साथ ( अग्नयः ) हम अग्नि ( स्याम ) बनेंगे । तू ( सुवीरः ) उत्तम वीर और ( अस्मयुः ) हम सब को चाहनेवाला हो । ’

इस मंत्र में कहा है कि, हम सब अग्निरूप बनेंगे । आत्मा मुख्याग्नि है और हम उस के साथी अन्य अग्नि बनेंगे । अर्थात् उन के समान उन के गुणधर्मों से युक्त और उन के मित्र बनकर रहेंगे । तथा वह भी हम को चाहनेवाला होवे, अर्थात् हमारे द्वारा कोई ऐसा आचरण न हो कि, जिस से वह आत्मशक्ति हम से विमुख हो । हम आत्मशक्ति से विमुख न हों और वह आत्मा हम से विमुख न हो ।

माहं ब्रह्म निराकुर्या

मा मा ब्रह्म निराकरोत् ॥ ( उप. शांति. केन. उ. )

‘ मैं ब्रह्म का निराकरण न करूँ, ब्रह्म मेरा निराकरण न करे । ’ यह केनोपनिषद् की शांति का वाक्य यही भाव बता रहा है, तथा—

( वयं ) अग्नयः स्याम ।

( अग्निः ) अस्मयुः ( भवतु ) ॥ ( ऋ. ८-१९-७ )

‘ हम अग्नि बनें, अग्नि हमारा भला चाहनेवाला बने । ’ यह भाव शांतिमंत्र के समान ही है । यहाँ शंका हो सकती है कि, एक अग्नि का दूसरे अनेक अग्नियों के साथ कौनसा सम्बन्ध है ? इस का विचार करने के लिये ( १ ) एक परमात्मा का अनेक जीवात्माओं के साथ सम्बन्ध, ( २ ) एक महात्मा का दूसरे अल्प आत्माओं के साथ सम्बन्ध, ( ३ ) एक जीवका अन्य जीवों के साथ सम्बन्ध, ( ४ ) एक आत्मा का अन्य इंद्रियों से सम्बन्ध, ( ५ ) एक अवयव का अन्य अवयवों के साथ सम्बन्ध देखना चाहिये । विचार करने पर पता लगेगा कि, यह एक विलक्षण सम्बन्ध है और उस सम्बन्ध के कारण ही यह विश्व चल रहा है । एक के द्वारा दूसरे के जीवन में परिणाम होता है । इस का भाव निम्न लिखित मंत्र में है—

(३९) एक अग्नि से दूसरे अग्नि का जलना ।

अग्निनाऽग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा ।

हव्यवाड् जुहास्यः ॥ ( १५; ऋ. १-१२-६ )

‘ ( अग्निना अग्निः ) एक अग्नि से दूसरा अग्नि ( संमिध्यते ) प्रदीप्त किया जाता है । यह अग्नि कवि, गृहपति ( युवा ) जवान्, ( हव्य-वाट् ) अन्नवाहक और ( जुहु+आस्यः ) चमस से घी मुख में डालनेवाला है । ’

इस मंत्र में कवि, गृहपति, युवा ये शब्द हैं । ये शब्द

मानवी अग्नि के ही वाचक हैं । जो गृहस्थी युवा कवि हैं, वह भी समाज में अग्निवत् ही है । वह अन्न में पुष्ट होता है और चमस से घी पीता है, इसलिये हृष्टपुष्ट रहता है । पहला मनुष्य अग्नि था, यह बात मानवी अग्नि के विषय में इस लेख के प्रारम्भ में ही कही है । उस बात की स्पष्टता पुनः यह मंत्र कर रहा है । अध्यात्म-दृष्टि से जीवात्मा का घर यह शरीर है । इस कारण आत्मा गृहपति है, इस की गृहपत्नी बुद्धि है । यह युवा इसलिये है कि, यह न शरीर के साथ जन्मता और न मरता है, शरीर के बाल्य और वार्धक्य ये गुण इस को बाधित नहीं करते, इसलिये यह सदा युवा ही कहलाता है । यही बुद्धि, मन और प्राणद्वारा शब्द की प्रेरणा करता है, इस कारण यह कवि है । यह अन्नभक्षक और घी पीनेवाला है । शरीर के साथ रहने से इस को खानपान करना पड़ता है । यद्यपि शरीर ही खानपान करता है, तथापि इस के होने तक शरीर खातापीता है, इसलिये ही इस को (अत्ता) भक्षक कहते हैं । तात्पर्य व्यक्ति में आत्मा और समाज में गृहस्थी कवि अग्निरूप है ।

एक अग्नि दूसरे अग्नि को प्रदीप्त करता है, यह इस मंत्र का कथन है । इस की सत्यता देखिये— राष्ट्र में अध्यापक शिष्यों को ज्ञान देते हैं । विद्वान् अध्यापक युवा शिष्यों को ज्ञान देते हैं । इसमें ज्ञानाग्नि का प्रज्वलन है । अध्यापक अपने ज्ञानाग्नि से शिष्य के अन्दर ज्ञानाग्नि प्रदीप्त कर रहा है । सब अध्ययन का क्रम इसी प्रकार चलता है । एक कवि अपने काव्य से दूसरों में काव्यस्फूर्ति उत्पन्न करता है । प्राचीन ज्ञानी अपने ग्रंथों और उपदेशों-द्वारा नवीनों में स्फूर्ति दे रहे हैं । यही भाव निम्न लिखित मंत्र में है—

त्वं ह्यग्ने अग्निना विप्रो विप्रेण सन् सता ।

सखा सख्या समिध्यसे ॥ ( १२३३; ऋ. ८-४३-१४ )

‘ हे अग्ने ! तू ( अग्निः अग्निना ) अग्नि आग्नि से ( विप्रः विप्रेण ) ज्ञानी ज्ञानी से, ( सन् सता ) साधु साधु से, ( सखा सख्या ) मित्र मित्र से प्रदीप्त होता है ।’

इस मंत्र के निम्न शब्द देखनेयोग्य हैं—

अग्निः अग्निना ( समिध्यते ) । ऋ० १।१२।६  
हे अग्ने ! त्वं अग्निना ( समिध्यसे ) । ऋ० ८।४२।१४

विप्रः विप्रेण ( समिध्यते ) । ऋ० १।१२।६  
सन् सता ,, ,, ,, ,,  
सखा सख्या ,, ,, ,, ,,  
( शिष्यः अध्यापकेन ) ,, ,, ,, ,,

पहला कथन अग्निविषयक होनेसे देवताविषयक है । दूसरा ज्ञानीके विषयमें है, तीसरा सज्जनों के संबंध में है और चौथा साधारण मित्रताके संबंधमें है । इसके साथ हम “ शिष्य अध्यापकके द्वारा उत्तेजित होता है ” यह वाक्य जोड़ सकते हैं । मित्रता करनेसे ही मैत्री बढ़ती है, साधुके साथ रहनेसे साधुता प्राप्त होती है, विद्वान् की संगतिसे ज्ञान बढ़ता है, तेजस्वीके साथ रहनेसे तेजस्विता बढ़ती है, गुरुके साथ रहनेसे शिष्यको विद्या प्राप्त होती है, यही तात्पर्य है कि, अग्निके द्वारा दूसरे अग्निका प्रज्वलन होता है । अग्निसंकेतसे कितनी बातें छेनी होती हैं, इसका यहाँ स्पष्टीकरण हुआ है । यही वैदिक “ अग्निविद्या ” है । इस रीतिसे मंत्रोंका भाव अन्य वेदमंत्रोंके साथ देखने से वैदिक आशयका ठीक ठीक रीतिसे पता लग जाता है और मंत्रके भावार्थके विषयमें किसी प्रकारका संदेह नहीं रहता । अस्तु ।

इस प्रकार यहाँ एक अग्नि अनेक अग्नियोंके साथ किस रूपमें रहता है, यह बात देखी है । आत्माग्नि इंद्रियाग्नियोंके साथ रहता है, परमात्माग्नि सूर्यादि तेजोंके साथ रहता है, ज्ञानी ज्ञानियोंके साथ प्रकाशता है, कवि कवियोंके साथ रहता है, तेजस्वी तेजस्वियोंके साथ शोभता है, साधु साधुओंके साथ रहता है, विप्र विप्रोंके साथ रहता है, मित्र मित्रोंके साथ रहते हैं, गुरु शिष्योंके साथ प्रकाशते हैं, तात्पर्य एक अग्नि दूसरे अनेक अग्नियोंके साथ ही रहता है, वह कदापि अपने विरोधियोंके साथ नहीं रह सकता । समानधर्मियोंके साथ रहनेसे शोभा बढ़ती है और विरोधियोंके साथ रहनेसे शक्ति क्षीण होती है । इत्यादि सहस्रों उपदेश यहाँ विचारी पाठकों को प्राप्त हो सकते हैं । अस्तु । यहाँ इस विषयको समाप्त करके अब अनेक देवों द्वारा स्थापित एक अग्निका मनोरंजन विषय देखेंगे—

( ४० ) देवोंद्वारा स्थापित अग्नि ।

इस समयतक देवोंके साथ रहनेवाला, अग्नियोंके साथ आनेजानेवाला, देवोंको बुलानेवाला अग्नि किस भावका

घोतक है, यह देख लिया। अब देवोंद्वारा स्थापित अग्नि की कल्पना देखनी है। इस विषयमें निम्न लिखित मन्त्र देखिए—  
अग्निं देवासो मानुषीषु विश्वु प्रियं धुः क्षेप्यन्तो  
न मित्रं । स दीदयदुशतीरुर्म्या आ दक्षायो  
यो दास्वते दम आ ॥ ( ४१८; ऋ० २।४।३ )

‘ (क्षेप्यन्तः देवासः) गतिमान देवोंने ( मानुषीषु विश्वु ) मानवी प्रजाओंमें प्रिय ( अग्नि ) अग्नि की ( मित्रं न ) मित्रके समान ( धुः ) स्थापना की अथवा धारणा की है। यह ( दक्षायः ) दक्ष अग्नि अपने दमनमें तथा ( उशतीः ऊर्म्याः ) स्पृहणीय रात्रियोंमें ( दास्वते ) दाताके लिए ( आ दीदयत् ) प्रकाश देता है ।’

‘ देव ’ शब्द का अर्थ बाह्य जगत् में सूर्य, चंद्र आदि देवता है और शरीरमें चक्षुरादि इंद्रियगण है। इस मंत्र में मनुष्य में आत्माग्नि की स्थापना करनेवाली जो देवताएँ हैं, वही शरीरस्थानीय चक्षुरादि इंद्रिय ही हैं। इन इंद्रियों के द्वारा आत्मा शरीर में रखा गया है, किंवा ये इंद्रिय-शक्तियाँ शरीर के अन्दर आत्मा का धारण कर रही हैं। जिस प्रकार सब ओहदेदार राष्ट्र में राजा का धारण करते हैं, उसी प्रकार ये आत्मा के ओहदेदार चक्षुरादि इंद्रियगण शरीर में आत्मा की धारणा कर रहे हैं। यह आत्माग्नि ही सब के लिये प्रिय और हितकारी है और सब का सच्चा मित्र भी है। आत्मा से अधिक प्रिय और अधिक हितकारक मित्र दूसरा कोई भी नहीं है, यह बात पूर्व स्थल में बता दी है। इस की दक्षता इतनी है कि, यह रात्रि के अन्धकार में प्रकाश देकर सब का मार्गदर्शक होता है। धर्मके लक्षणों में ‘ आत्मा की तुष्टि ’ एक लक्षण इसी हेतु से कहा है, देखिये—

भुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्थ च प्रियमात्मनः ।  
एतच्चतुर्विधं ज्ञेयं साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥१२॥

तथा—

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम् ।  
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च ॥६॥

( मनु. २ )

यहां धर्मके लक्षणों में ( १ ) भुति, ( २ ) स्मृति, ( ३ ) सदाचार, ( ४ ) आत्माकी तुष्टि ये चार लक्षण कहे हैं। धर्म का अंतिम निश्चय अपनी आत्मा की तुष्टि से

होता है, इतना आत्मा का अधिकार है, क्योंकि अन्धकार-पूर्ण रात्रि के अत्यन्त विकट प्रसंग में यही आत्मा शुद्ध प्रकाश देकर ठीक मार्ग बताता है। सच्चा मित्र कौन है ? इस प्रश्न के उत्तर में कहना पड़ेगा कि, वही सच्चा मित्र है, जो कि कठीण प्रसंग में सहायक होता है। यह लक्षण आत्मा के मित्रत्व की सिद्धि करता है, क्योंकि जहां अन्य बल काम नहीं देते, वहाँ ‘ आत्मिक बल ’ ही सहायता देता है। यह आत्मिक बल संयम में है, यह भाव उक्त मंत्र में ‘ दम ’ शब्दद्वारा व्यक्त किया है। इस प्रकार देवों द्वारा स्थापित आत्माग्नि की कल्पना है। इसी विषय का निम्न लिखित मंत्र देखिये—

( ४१ ) मानवी प्रजा में अग्नि ।

आधत्यग्निर्मानुषीषु विश्वपां गर्भो मित्र ऋतेन  
साधन् । आ हर्यतो यजतः सान्वस्थादभूदु विप्रो  
हव्यो मतीनाम् ॥ ( ४७२; ऋ- ३-५ ३ )

‘ ( ऋतेन साधन् ) सीधे मार्ग से जाने पर सिद्धि देने-वाला सच्चा मित्र और ( अपां गर्भः ) कर्मों का केंद्र अग्नि ( मानुषीषु विश्वु ) मानवी प्रजाओं में ( देवैः ) देवों द्वारा ( अधायि ) रखा गया है। यह ( हर्यत ) स्पृहणीय और ( यजतः ) पूज्य होता हुआ ( सानु ) उच्च स्थान में ( आ स्थात् ) रहता है। यह ( वि-प्रः ) विशेष ज्ञानी ( मतीनां हव्य. ) बुद्धियों का हवन करनेवाला ( अभूत् ) है ।’

आत्माग्नि मानवी देह में उच्च स्थान में निवास करता है, इस बात को यह मंत्र कहता है। मानवी देह में हृदय से लेकर मस्तक तक जो स्थान है, वही उच्च स्थान है। इसमें आत्माग्नि का निवास है। यह सच्चा मित्र है और यही सीधे मार्गसे चलाता है, यही सब कर्मों और संपूर्ण हलचलोंका प्रेरक है। जिस प्रकार किरणोंका केंद्र सूर्य है, उसी प्रकार कर्मों का केंद्र यही आत्माग्नि है। यह इस शरीरमें सौ वर्ष निवास करके सैकड़ों कर्म करता है, इसीलिए इसको “ शत-ऋतु ” कहते हैं। इसका स्वभाव-धर्म ही कर्म है, इसीलिए इसको “ ऋतु ” भी कहते हैं। यह आत्मा चितस्वरूप अर्थात् ज्ञानस्वरूप होने से ही इसको “ वि-प्र ” कहते हैं, तथा यही बुद्धिक्रम प्रेरक है। इस प्रकार इस मन्त्रका वर्णन आत्माका परियय करा रहा

है, इसका अभिच विचार पाठक करें। इसीके विषयमें अब निम्न लिखित मन्त्र देखिए—

### (४२) जीवन-रसरूप अग्नि । .

अच्छा नो अंगिरस्तमं यज्ञासो यन्तु संयतः ।  
होता यो अस्ति विश्वा यशस्तमः ॥

( १२७९; ऋ० ८।२३।१० )

‘ ( नः संयतः यज्ञासः ) हमारे नियत यज्ञ ( अंगिरस्-तमं ) अंगोंके रसोंमें मुख्य अग्निके प्रति ( यन्तु ) पहुँचें। जो ( विश्व ) प्रजाओं में ( होता ) हवनकर्ता और ( यशस्-तमः ) अत्यंत यशस्वी है ।’

यह मन्त्र अग्निका निश्चित रूप बता रहा है। यह अग्नि “ अंगि-रस्-तम ” है। प्रत्येक अगमें जो जीवनरस है, उस प्रकारके जीवनरसों में अत्यंत मुख्य जीवन-रस यही है। सब हमारे कर्म इस मुख्य जीवनरस के संवर्धनके लिए ही होने चाहिये। मनुष्यों से ऐसा कोई कर्म नहीं होना चाहिए कि, जिससे इस मुख्य जीवनरस में कुछ क्षति हो सके। इसीका नाम “ आत्मघातक कर्म ” है। वास्तव में आत्माका घात नहीं हो सकता, परन्तु आत्माके विकास में प्रतिबन्ध जिससे होता है, उस को आत्मघातक कर्म कहते हैं। इसी प्रकार आत्माग्निके किसी प्रकारकी क्षति भी नहीं होती, तथापि उसके आरम्भिक बलके विस्तार में जिनसे न्यूनता हो सकती है, वैसे कर्म नहीं करने चाहिए और ऐसे करने चाहिए कि, जिनसे अंगोंमें मुख्य जीवनरस की समृद्धि हो। मनुष्योंमें यही आत्मा यशका प्रदाता है। इसीलिए जो मनुष्य शांतिसे आरम्भिक बलके कार्य करता है, उसीका यश होता है। इस मन्त्रका ‘ अंगिरस्तम ’ शब्द इस अग्निकी मुख्य विभूति आत्माही है, यह भाव स्पष्ट कर रहा है। यह “ जीवनरस ” होनेके कारण इसीसे सबकी पुष्टि होती है, इस विषय में निम्न लिखित मंत्र देखिए—

### (४३) देवोंका निवासक अग्नि ।

अग्निदेवेषु संवसुः स विश्वु यज्ञियास्वा ॥  
स मुदा काव्या पुरु विश्वं भूमेव पुष्यति ।  
देवो देवेषु यज्ञियो नभन्तामन्यके समे ॥

( १३०६; ऋ० ८।३९।७ )

‘ अग्नि देवों में तथा ( यज्ञियासु विश्वु ) पूज्य प्रजाओंमें ( संवसुः ) उत्तम निवासक है। वह ( भूमा इव ) भूमिके समान ( पुरु विश्वं ) सब कुछ पुष्ट करता है, तथा ( मुदा ) आनंदसे ( काव्या ) काव्योंको करता है। वही देवों में पूजनीय है। ( समे ) सब ( अन्यके ) शत्रु ( नभन्ताम् ) नष्ट हो जावें ।’

यह मन्त्र अग्निका स्वरूप-विज्ञान होनेके लिए अनेक दृष्टियोंसे उपयोगी है। देवोंके अन्दर रहता हुआ यह अग्नि देवोंका उत्तम प्रकार से निवासक होता है। पाठक विचार करेंगे, तो उनको पता लग जायगा कि, यह बात आत्माग्निके ही विशेष कर घट सकती है, क्योंकि देवों अर्थात् इंद्रियों में रहता हुआ ही आत्मा उन इंद्रियों का निवास उत्तम प्रकार कर रहा है। जिस प्रकार भूमि सब का पोषण कर रही है, उसी प्रकार आत्मा सबका पोषण कर रहा है। कई पाठक यहां शका करेंगे कि, पौष्टिक अन्न से पोषण होता है, आत्माग्निके किस प्रकार पोषक हो सकता है? इसका उत्तर इतनाही है कि मुर्देमें कितना भी पौष्टिक अन्न रखा जाय, उस अन्नसे मुर्दा पुष्ट नहीं होगा; क्योंकि ‘ स्रच्छा पोषक ’ वहां नहीं है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि, आत्मा ही पोषक है और अन्य पौष्टिक अन्नादि सहायक हैं। यह आत्माग्निके सबसे प्रमुख है, इसलिए ( देवेषु यज्ञियो देवः ) देवोंमें पूज्य देव अर्थात् सब इंद्रियोंमें पूज्य आत्माही है, यह मन्त्रका वर्णन सार्थ हो जाता है, इस प्रकार यह वर्णन देवों के निवासक अग्नि का है। पाठक इस मन्त्रमें यह वर्णन देखें और देवोंद्वारा स्थापित अग्नि का वर्णन पूर्व मंत्रोंमें पढ़ें। इन दोनों वर्णनोंका विचार करने से उनको स्पष्ट पता लग जायगा कि यद्यपि ये दोनों वर्णन दो भिन्न दृष्टिकोनोंसे हुए हैं, तथापि एकही पदार्थ के हैं। इंद्रियोंमें रहनेवाला, इंद्रियोंको पुष्टि देनेवाला, इंद्रियोंद्वारा प्रकट होनेवाला एकही आत्मा है। यही भाव विश्वव्यापक परमात्माके विषयमें सत्य है, क्योंकि वह परमात्मा सूर्यादि देवोंमें रहता है, इन देवताओंको पुष्ट करता है और इन देवताओंसे ही प्रकट हो रहा है। व्यापकता का वर्तुल छोटा लिया, तो वही वर्णन आत्मा के विषयमें हुआ और व्यापकता का वर्तुल अमर्याद बड़ा लिया, तो वही वर्णन परमात्माका हुआ। यह बात यहाँ स्पष्ट हो जाती है। वेद

की वर्णनशैली की यहाँ अद्भुतता है । पाठक यहाँ इसका अनुभव करे । अस्तु । इस प्रकारका यह आत्माग्नि मनुष्यों में ही प्रवर्तित होता है, अर्थात् अन्य प्राणिमात्रमें यह वैसा तेजस्वी नहीं होता, जैसा कि मानवी देहमें होता है । इसका कारण स्पष्टही है कि, मानवी योनि ' कर्मयोनि ' है, यहाँ ही पुरुषार्थ होना संभव है; उस प्रकार अन्य योनियोंमें संभव ही नहीं है । पुरुषार्थके विना उन्नति होनी अशक्य है । इसीलिए मन्त्र में कहा होता है कि, ' मानवी प्रजामें यह आत्माग्नि प्रदीप्त होता है ' और देखिए—

न यस्य सातुर्जनितोरवारि न मातरा पितरा  
नृचिद्विष्टौ ॥ अधा मित्रो न सुधितः पावकोऽ-  
ग्निर्दीदाय मानुषीषु विश्वु ॥ ( ६८८; ऋ० ४, ६, ७ )

' जिस ( जनितोः ) उत्पादक के ( सातुः ) तेजको मातापितादि कोई भी ( न अवारि ) प्रतिबन्ध कर नहीं सकते, इस प्रकारका ( मित्रः न ) मित्रके समान हितकारी ( सुधितः पावकः अग्निः ) सुरक्षित शुद्ध अग्नि ( मानुषीषु विश्वु ) मानवी प्रजाओंमें ( दीदाय ) प्रदीप्त होता है ।'

जिस समय यह आत्माग्नि मानवी प्रजाओं में प्रदीप्त होता है, उस समय उस महान् आत्माका तेज फैलता जाता है, कोई उसको प्रतिबन्ध कर नहीं सकते । इतनाही नहीं, परन्तु जो प्रतिबन्ध करनेका यत्न करते हैं, वेही नष्ट-भ्रष्ट होते हैं, अथवा उनके प्रतिबन्ध के कारण उस महान् आत्माका तेज अधिक विस्तृत होने लगता है । इस बातकी साक्षी इतिहास में सर्वत्र मिलती है । आत्मिक बलकी उग्रता सर्वत्र प्रसिद्ध ही है । यह आत्मा सबका मित्र होने से जिसमें इसका तेज प्रदीप्त होता है, वह बड़ा यशस्वी हो जाता है । इस मन्त्रमें ( मानुषीषु विश्वु दीदाय ) मानवी प्रजाओंमें यह आत्माग्नि प्रदीप्त होता है, यह बात स्पष्ट कही है । इसका अर्थ यह है कि, अन्य प्राणियोंमें यह निवास करता है, परन्तु वहाँ यह विकसित नहीं हो सकता, क्योंकि उन्नतिसाधक योनि मनुष्ययोनि ही है । इसका वर्णन ऐतरेय उपनिषद् में देखिए—

ता पता देवता सृष्टा अस्मिन्महत्पर्यवे प्राप-  
तन्...॥ ता एनमब्रुवन्नायत्तनं नः प्रजानीहि  
यस्मिन्प्रतिष्ठिता अन्नमदामेति ॥ १ ॥ ताभ्यो  
गामानयत्, ता अब्रुवन्न वै नोऽयमलमिति ॥

ताभ्योऽश्वमानयत्ता अब्रुवन्न वै नोऽयमल-  
मिति ॥ २ ॥ ताभ्यः पुरुषमानयत्ता अब्रुवन्न  
सुकृतं बतेति ॥ पुरुषो घाव सुकृतम् ॥ ता  
अब्रवीद्यथाऽऽयतनं प्रविशतेति ॥३॥ ( ऐ० उ० २ )

' वे सब देवताएं इस बड़े समुद्रमें आ पड़ीं । सब देवताएं उससे कहने लगीं कि, हमें स्थान दो कि जहाँ बैठकर हम अन्न खायेगे । वह देवताओंके सम्मुख गां लाया । देवताओंने कहा कि यह ठीक नहीं है, पश्चात् घोडा लाया, उसको देखकर देवताओंने कहा कि यह भी ठीक नहीं है । इसके अनन्तर मनुष्य लाया गया, उसे देखकर देवताएं कहने लगीं कि यह ठीक है, मनुष्य ही ठीक है । ऐसा कह कर सब देवताएं अपने अपने स्थानपर इस मानवी देहमें बैठ गईं ।'

यह विकास-वादाका वर्णन स्पष्टतासे कह रहा है कि, मानवी योनि ही उत्कर्षकी योनि है और इसके अग्रप्रत्य-गोंमें सपूर्ण देवताएं निवास कर रही हैं, और अपना अपना भोग्य भोग ले रही हैं । इन सब देवताओंका अधिष्ठाता आत्मा है, जिसके साथ देवताएं आती हैं और वह जिस समय इस देहको छोड़कर चला जाता है, उस समय चली जाती है । यह वर्णन ही वेदमन्त्रों में अनेक प्रकार के रूप-रूपांतरोंसे आया है । अस्तु । तात्पर्य यह है कि यह आत्मा इस मानवी योनिमें ही उत्कर्षको प्राप्त हो सकता है और जिस समय इसका तेज फैलने लगता है, उस समय उसको कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती । यही वर्णन उक्त मन्त्रमें है । अब और एक दृष्टिकोन से देखिए । पूर्वस्थल में एक मन्त्र दिया ही है, जिसमें कहा है कि, यह आत्माग्नि देवों द्वारा प्रकट होता है । यही भाव निम्न लिखित मन्त्र में भिन्न रूपक से वर्णन किया है—

( ४४ ) दस बहिनें इसको प्रकट करती हैं ।

द्विर्यं पंच जीजनन्संवसानाः स्वसारो अग्नि  
मानुषीषु विश्वु ॥ ( ६८९, ऋ० ४, ६, ८ )

' इस अग्नि को ( द्विः पंच स्वसारः ) दो गुणा पांच बहिनें मानवी प्रजाओं में ( संवसानाः ) रहती हुई, ( जीजनन् ) प्रकट करती हैं ।'

दो गुणा पांच बहिनें अर्थात् दस बहिनें मानवी शरीर में हैं और ये दस बहिनें आत्माग्नि को प्रकट करती हैं ।

पंच ज्ञानेन्द्रियां और पंच कर्मेन्द्रियां इस देह में हैं और उन के द्वारा यह आत्मा प्रकट हो रहा है। अरणियों के घर्षण से जो अग्नि सिद्ध होता है, वह भी दम अंगुलियों से ही घर्षण होता है। इसलिये ये बहिन कहलाती है। ये भाव इस मंत्र में स्पष्ट हैं।

अन्दर आत्मा का अस्तित्व है। यह बात इन्द्रियों के द्वारा ही प्रकट हो रही है, यदि इंद्रियां न होतीं, तो अन्दर के मुख्य देव को जानना ही अशक्य होता। विचार कर के पाठक देखेंगे, तो उन को इस बात का पता लग जायगा कि, इन्द्रियों के कार्य से ही आत्मा के अस्तित्व का अनुमान होता है। तात्पर्य, इन्द्रियों से आत्मा प्रकट होता है। यही भाव देवोंद्वारा प्रकट होनेवाले अग्नि में है। पाठक यहां देखें कि, विभिन्न दृष्टिकोनों के वर्णनोंसे एक ही बात किस प्रकार व्यक्त हो जाती है। और इस मुख्य बात को ही सर्वत्र देखने का यत्न करें। इंद्रिय-शक्तियां आत्मा की बहिन हैं, इसमें अलंकार की दृष्टिसे कोई अत्युक्ति ही नहीं है। परन्तु इसमें एक विशेष विचार करनेयोग्य श्लेषार्थ भी है। 'स्व-सृ' शब्द का अर्थ 'बहिन' है, परन्तु इस का यौगिक अर्थ ( स्व सरति ) अपने निज के प्रति जो जाती है, अथवा ( स्वस्मात् सरति ) अपने निज से जो चलती है, वह 'स्व-सृ' है। अर्थात् जागृति की अवस्थामें जो इन्द्रियां आत्मा से शक्ति लेकर बाहर जाती हैं और सुषुप्ति अवस्था में इन्द्रियां बाहर से आकर आत्मा के अन्दर लीन हो जाती हैं, वह सब इंद्रिय-शक्तियां आत्मा की बहिन ही हैं। यह श्लेषार्थ पूर्णतया आत्मा और इन्द्रिय-शक्तियों में मगत हो रहा है। इस रीतिसे अनेक दृष्टिकोनों द्वारा ही सद्रस्तु के भिन्न भिन्न भाशय प्रकट हो रहे हैं। वेद के वर्णन में यह श्लेषार्थ की अपूर्वता पाठक देख सकते हैं। यह अग्नि मनुष्यों के अन्दर ही है, इस विषय में निम्न मन्त्र देखिये—

त्वं होता मंद्रतमो नो अधुगंतर्देवो विदथा  
मर्त्येषु । ( १००१; ऋ० ६।११२ )

'हे अग्ने ! तू ( मर्त्येषु अन्त ) मनुष्यों के अन्दर है और ( विदथा ) इस यज्ञ में हवनकर्ता तू ही है। तथा ( मंद्रतमः ) सुखदायक और ( अधुक् ) द्रोह न करने-वाला देव तू ही एक है।'

अग्नि मनुष्य के अन्दर है, मानवी आयुष्य में जो शत-सांवासरिक यज्ञ चलता है, उसका होता अर्थात् याज्ञक यही आत्माग्नि है। यह बात अब अधिक स्पष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वेद ही स्वयं कह रहा है कि, यह आत्माग्नि मनुष्य के अन्दर रहता है और द्रोह न करना हुआ सबको सुख देता है। यही सबको पूज्य और प्राप्त्य है, क्योंकि यही सबसे मुख्य है। कितनी स्पष्टता से वेद यह कह रहा है, यहां देखनेयोग्य है। इतना स्पष्ट कथन होनेपर किसीको शंका नहीं होनी चाहिये। परन्तु वैदिक दृष्टिकोन ठीक प्रकार ध्यान में न आनेके कारण यह सब गड़बड़ हो रही है। एक बार वेदका दृष्टिकोन समझ में आ गया, तो कोई शंका ही नहीं रहेगी। अस्तु।

इस आत्माग्नि के पूज्य होने के विषय में निम्न लिखित मन्त्र देखिये—

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येषु ॥

त्वं यज्ञेष्वीड्यः ॥ ( १२१४; ऋ० ८।११-१ )

'हे अग्ने ! हे देव ! तू मर्त्यों में व्रतपालक है और तू ही यज्ञोंमें पूज्य है।' मर्त्य शरीरमें अमर आत्मा है, इसलिए अमर की ही पूजा करनीयोग्य है। अमरको छोड़कर मरने-वालेकी पूजा कौन करेगा ? सब प्रकार के यज्ञों में जिसकी पूजा होती है, वह यही आत्माग्नि है। यही व्रतपालक अर्थात् नियमपालक है। उन्नति के सब नियमों का पालन करके विकसित होना इसका ही स्वभाव-धर्म है। इस प्रकार आत्माकी उपासना वेदमंत्रोंद्वारा सूचित होती है। यही आत्मा सबका रक्षक है, इस विषय में निम्न मन्त्र देखिए—

( ४५ ) प्रजाका रक्षक ।

अग्नि द्वेषो योतवै नो मृणीमस्यग्नि शंयोश्च  
दातवै ॥ विश्वासु विश्ववितेव हृद्यो भवद्भस्तु-  
र्ऋषूणाम् ॥ ( १४२३; ऋ० ८, ७१, १५ )

'( नः द्वेषः ) हम शत्रुओंको ( योतवै ) दूर करनेके लिए अग्निकी ( मृणीमसि ) स्तुति करते हैं। तथा ( शं योः च ) सुखप्राप्ति और दुःखदूरीकरण के लिये अग्नि की उपासना करते हैं। क्योंकि यही अग्नि ( विश्वासु विश्व ) सब प्रजाओंमें ( भविता ) रक्षण करता है और इसलिये ( ऋषूणां ) ऋषियोंका ( वस्तु ) निवासक ( हृद्यः )

और प्राप्त्य हुआ है ।'

आत्माग्निकी उपासना करनेसे कौनसे लाभ होते हैं, यह इस मन्त्रमें उत्तम प्रकार वर्णन किया है— ( १ ) शत्रु के साथ युद्ध करके उनको दूर भगानेका सामर्थ्य प्राप्त होता है, ( २ ) शांति प्राप्त होती है और दुःख दूर होते हैं । क्योंकि यही आत्मिक बलसे युक्त होनेके कारण सब प्रजाओंमें सब्बा रक्षक है और इसीलिए ऋषि इसकी प्राप्तिके लिए यत्न करते हैं ।

इस मन्त्रमें अग्नि शब्दसे आत्माका वर्णन स्पष्ट ही हुआ है । यह वर्णन आत्मामें ही सार्थ होता है, इस विषय में अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं है । क्योंकि इस समय तक यही एक विषय चारंवार आ गया है । यह आत्माग्निकी मुख्य है, और इससे ही सब इंद्रियादिकों को सुख होता है, इस विषयमें स्पष्ट मन्त्र यह है—

महँ आस्यध्वरस्य प्रकेतो न ऋते त्वद्मृता  
मादयन्ते । आ विश्वेभिः स-रथं याहि देवै-  
र्यग्ने होता प्रथमः सदेह ॥ ( १११६, ऋ० ७।११११ )

' हे अग्ने ! तू ( अध्वरस्य ) इस यज्ञका ( महान् प्रकेत. ) बडा ध्वज है । ( त्वत् ऋते ) तेरे विना ( अमृता. ) देव ( न मादयन्ते ) सुखी नहीं होते । ( विश्वेभिः देवैः ) सब देवोंके साथ ( स-रथं ) अपने रथपर से आओ और ( प्रथमः होता ) मुख्य याजक बनकर ( इह ) यहां ( नि सद ) बैठो । ' देखिए, कैसा इस वर्णन का प्रत्येक वाक्य अपने अन्दर अनुभव होता है— ( १ ) इस शत-सांवत्सरिक महायज्ञका यही आत्माग्निकी मुख्य चिह्न है । ( २ ) इस आत्माग्निके विना कोई इंद्रिय सुख का अनुभव कर ही नहीं सकती । ( ३ ) सब इंद्रियशक्तियोंके साथ यह आत्मा यहां इस देहमें आता है और जानेके समय भी सबको साथ ले जाता है, मानो सब देव इसके रथ परसे यहां आते हैं, किंचित् काल रहते हैं और इसीके रथपर बैठकर इसके साथ ही चले जाते हैं । ( ४ ) यहां इस देहमें— इस कर्म भूमिमें— जो यह शतसांवत्सरिक यज्ञ चल रहा है, उसका मुख्य याजक यही आत्माग्निकी है । इत्यादि प्रकार विचार करनेसे उक्त मन्त्रके कथनका साक्षात् अनुभव अपने शरीरमें ही होता है । और जिस समय अपनेमें यह दृष्टि लाल जाती है, उस समय वेदमन्त्रोंकी सत्यता अधिकाधिक

अनुभवमें आ जाती है । सब अनुभव अपने अन्दर ही होना है, किसी बातका अनुभव बाहर नहीं हो सकता । अपने अन्दर जो अनुभव बीजरूपसे होता है, विस्तृत रूपसे वही भवस्था बाह्य जगत् में है, परन्तु यह तर्क से जानी जाती है, अर्थात् अनुभव की बात अपने अन्दर ही होती है । पाठक इस दृष्टि से मंत्रों का विचार करें और सत्य बातका साक्षात् अनुभव लेने और देखने का पुरुषार्थ करें । अब एक अनुभव की बात देखिये । देवों के साथ यह आत्माग्निकी इस शरीरमें आता है, रहता है और चला जाता है, यह वर्णन पूर्वस्थल में आया है । इस के आने का मार्ग देखिये—

( ४६ ) देवोंके साथ अग्निका बैठनेका स्थान ।

अग्ने विश्वेभिः स्वनीक देवैरुर्णावंतं प्रथम.  
सीद योनिं । कुलायिनं घृतवतं सवित्रे यज्ञं  
नय यजमानाय साधु ॥ ( १०३८, ऋ ६-१५-१६ )

' हे ( स्वनीक अग्ने ) उत्तम सेनापते अग्ने ! तू प्रथम देवों के साथ आकर ( उर्णा-वंतं योनिं ) उनसे युक्त योनिके स्थान में ( सीद ) बैठ जाओ । और ( सवित्रे ) प्रसव करने-वाले यजमान के लिये ( साधु ) उत्तम प्रकार से ( कुला-यिन ) घर बढानेवाले तेजस्वी यज्ञ को ( नय ) चलाओ ।'

' सब देवों के साथ ऊनवाली योनि के स्थान में आकर बैठ जाओ । ' यह मंत्र का पहिला कथन है । स्त्री का योनिस्थान देहका जन्मस्थान है, इसलिये स्पष्ट है कि, यदि किसी रीति से आत्माग्निकी अन्य देवों के साथ आगमन इस देह में होना है, तो योनिमार्ग से ही होना चाहिये, दूसरा कोई मार्ग नहीं । मंत्र के ' उर्णावंतं योनिं ' ऊनवाली योनि ये शब्द स्पष्टतया बता रहे हैं कि, गर्भधारणयोग्य तरुण युवती के ही सूचक ये शब्द हैं, क्योंकि तारुण्य में ही उस स्थान पर बालों की उत्पत्ति होती है । गर्भधारण के समय सब देवी शक्तियों के समेत जीवात्मा यहां आवे और प्रवेश करे, यह इच्छा यहां स्पष्ट रीति से व्यक्त हो रही है ।

शरीर में देवों का अंशावतार होने का वर्णन ऐतरेयोप-निषद् के प्रारम्भ में ही है । अग्नि, वायु, रवि आदि देव क्रमशः वाक्, प्राण, चक्षु आदि के रूप धारण कर के इस



शरीर में आ बसे हैं और यहां का कार्य कर रहे हैं । यह उपनिषद् का कथन सत्य होने के लिये आत्माको अन्य देवों के साथ इस शरीर में आना आवश्यक ही है । इस का आगमन जिस मार्ग से होता है, उस मार्ग का वर्णन उक्त मंत्र में किया है । रजवीर्य का संयोग होकर जिस समय गर्भ बनने लगता है, उस समय आत्मा के समेत सब देवताएं आती हैं और अपने अपने स्थान में रहती हैं, ( गं उ २ ) आत्माग्नि ( स्वनीक=सु+अनीक ) उत्तम सैन्ययुक्त है, अन्य देवताओं के अंश ही उस का सैन्य है । जहां यह सेनापति जाता है, वहां उस के सैनिक जाते हैं । ( विश्वेभि देवैभिः ) सब देवों के अंशों के साथ यह आत्माग्नि ऊनवाली योनि में आता है ।

इस कथनसे एक बात सिद्ध होती है कि, जगत्में जितने देव हैं, अर्थात् देवी तत्त्व हैं, उन सबके अंश इस देहमें हैं । पांच महाभूत पांच बड़े देव हैं । इन महाभूतोंके अंश इस देहमें हैं । इसी प्रकार अन्य देवोंके अंश इस देहमें रहते हैं । देवताका जो अंश इस शरीरमें आता है, वह इस शरीरका निज बनकर रहता है । पृथ्वीका अंश मिट्टीके रूप से शरीरमें नहीं है, परन्तु उसका शरीर बन कर वह अंश रहना है । इसी प्रकार अन्यान्य देवों के विषय में समझना चाहिए । ये सब देव यहां आकर इस शतसांवत्सरिक मंत्र को चलाते हैं । यह बात ( यज्ञं नय ) 'यज्ञ को चलाओ' इन शब्दों द्वारा सूचित की है । यह यज्ञ (कुलायिनं घृत-घृतं) कुल अथवा घर बढानेवाला और तेज वृद्धिगत करनेवाला है । आत्मा इस शरीरमें जब संपूर्ण देवोंके साथ आता है, तब घर बढता है, इसका अनुभव संतान उत्पत्ति की खुशीसे पाठकोंको हुआ ही है । इसलिए इस विषयमें अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं है । पाठक देखें कि, वैदिक तत्त्वज्ञान कैसा प्रत्यक्ष होता है, देखिए निम्न मन्त्र-

### ( ४७ ) यज्ञका झंडा ।

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे समीधरे । इंद्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन्नि होता यज्ञथाय सुकृतुः ॥ ( ८४३; क्र० ५, ११, २ )

( नरः ) मनुष्य ( प्रथमं पुरोहितं ) पहिले पूर्ण हितकारी ( इंद्रेण देवैः ) इंद्रके तथा अन्य देवोंके साथ ( सरथं ) एक रथमें आनेवाले अग्निकी प्रदीप्ति ( त्रि-सधस्थे )

तीन स्थानोंमें करते हैं । यह अग्नि यज्ञका ध्वज है । वह उत्तम यज्ञ करनेवाला ( बर्हिषि ) अन्तःकरणमें बैठकर हवन करता है ।'

इन्द्र और अन्य देवोंके साथ एक रथमें आनेवाला यह अग्निदेव है । इंद्र देवोंका अधिपति है । तैत्तीसकोटि देवोंके साथ इंद्रको भी अपने रथपर से लानेवाले अग्निका रथ कितना बड़ा होगा ? क्या इसका अंदाजा हो सकता है ? यदि सूर्यचंद्रादि सबही देव अग्निके रथ में बैठने हैं, तो उस अग्निका रथ इस विश्वके बराबर विशाल होना चाहिए । तात्पर्य, व्यापक दृष्टिसे देखा जाय, तो संपूर्ण जगत् ही इस अग्निका रथ है; इस रथपर सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, वायु आदि सब देव बैठे हैं । यहां विश्वव्यापक परमात्मा रथी है और अन्य देव उसके रथपर बैठनेवाले उसके सहायक हैं । इस का प्रतिरूप दूसरा छोटा रथ है, जिसको देह कहते हैं, इसमें आत्माग्नि रथी है और संपूर्ण देवताओंके अंश अर्थात् इंद्रिय उसके सहायक हैं । यह जीवात्माका रथ छोटा है और परमात्मा बड़ा है । तथापि दोनोंमें, छोटे और बड़ेपन को छोड़ दिया जाय, तो तत्त्वोंकी एकता ही है । देह में अंशरूप ३३ देव हैं और विश्वमें विस्तृत ३३ देवता विराजमान हुए हैं । इस प्रकार विचार करके मन्त्रका तत्त्व जानना चाहिए । इस मन्त्रका तत्त्व इस शरीर में ही प्रत्यक्ष होता है, इसलिए अध्यात्मदृष्टिसे मन्त्रका अर्थ मुख्य और अन्य रीतिसे गौण है ।

' यज्ञका झंडा ' यही आत्माग्नि है । शरीर में जो शतसांवत्सरिक मंत्र चल रहा है, उस का सब से प्रमुख अधिकारी यही है, यही पूर्ण हितकर्ता है । इस की पूजा तीन ( त्रि-सधस्थे ) तीन स्थानों में होती है- ( १ ) मस्तिष्क, ( २ ) हृदय और ( ३ ) पेट में इस की पूजा हो रही है । जो केवल पेट की पूजा करते हैं, वे गिरते हैं; परन्तु जो साथ साथ मस्तिष्क के ज्ञान से और हृदय की भक्ति से भी इस की पूजा करते हैं, वे दुःख के पार हो जाते हैं । तीन स्थानों में, तीन धामों में इस प्रकार इस की उपासना करना आवश्यक है । यही तीन धामों की यात्रा है, जो करने से पुण्य मिलता है और न करने से पाप लगता है । यही आत्माग्नि मस्तिष्क में ज्ञानरूप कार्य करता है, हृदय में शांति का अनुभव

करता है और पेट में भक्षक बनकर अन्नरसों को अपनाता है। ये इस के कार्य देखनेयोग्य हैं। वेद में इन तीन धामों और स्थानों का वर्णन अनेक स्थानोंमें है, इसलिये इस बात का ठीक ज्ञान होने पर उन मंत्रों की संगति लग सकती है। यह आत्मा ( बर्हिषि ) अन्तःकरण में बैठता है, यहीं इस का मुख्य स्थान है। यही सब का केंद्र है, यहीं से यह राजा सर्वत्र प्रेरणा भेजता है, यहींसे यह यजमान सर्व यज्ञमण्डप का यज्ञप्रबन्ध करता है, यहीं से यह रथी अपने रथके घोड़े चलाता है और विरोध करनेवाले शत्रुओं से लड़कर अपना जय प्राप्त करता है। इसीलिए इसको ( सु+क्रतु ) उत्तम कर्म करनेवाला कहा है। इस प्रकार जो उत्तम कर्म करता है, उसकी शक्ति विक्रमिती होती है और जो नहीं करता, उसका विकास वैसा नहीं होता। इसलिये ही कर्मका महत्त्व बड़ा भारी है। इसका यह यज्ञ किम स्थानमें दिखाई देता है? ऐसा प्रश्न यहां पूछा जा सकता है, उसका उत्तर निम्न लिखित मंत्रमें देखिये—

### ( ४८ ) देवोंमें यज्ञ ।

इमं नो यज्ञममृतेषु धेहीमा हव्या जातवेदो जुषस्व ॥

[ ६१८; ऋ० ३।२।११ ]

‘ इस हमारे यज्ञ को ( अ-मृतेषु ) अमर देवोंमें ( धेहि ) पहुंचाओ और हे ( जात-वेदः ) वेदजनक अग्ने ! इन हवनीय पदार्थोंको स्वीकार करो । ’

इस मंत्रमें कहा है कि, यह अग्नि यज्ञके हव्य पदार्थोंको लेता है और देवों में पहुंचाता है। जो अग्नि हवनकुंड में रहता है, उसमें डाली हुई आहुतियां सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि देवोंतक पहुंचती हैं, या नहीं इस विषयमें कोई प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है। यह बात तर्कसे नहीं विदित हो सकती। किसी ग्रंथ के वचनपर कोई विश्वास करे, वह बात दूसरी है, परंतु प्रत्यक्ष अनुभव इस विषयमें कोई भी नहीं है। परंतु इसका अनुभव अध्यात्ममें अर्थात् अपने शरीरमें प्रत्यक्ष हो सकता है। जो अन्न पेटमें डाला जाता है, उसके अंश संपूर्ण इंद्रियों और अवयवों में यथाभाग पहुंचते हैं। इस जठराग्निमें डाली हुई आहुतिएं सूर्यके प्रतिनिरूप नेत्रमें जाती हैं और वहांकी पुष्टि करती हैं, इसी प्रकार अन्य देवताओंके प्रतिनिधिभूत जो अन्य इंद्रियगण हैं, उनकी भी इसी प्रकार पुष्टि होती है। यह प्रतिदिनके अनुभवका

ज्ञान है। यद्यपि यह आत्माग्नि अन्नके विभाग किस प्रकार करता है और इंद्रियों में रहनेवाले देवोंतक किस रीति से पहुंचाता है, इसका भी हमें प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है; तथापि अनुभव से पता है कि, वह पहुंचाता है और वहांके देवताकी पुष्टि करता है। वैद्यलोग इसका ज्ञान अधिक विस्तार से बता सकते हैं, उस प्रकार सामान्य मनुष्यको बताना असंभव है। परंतु अन्न खानेके बाद शरीरकी पुष्टिका अनुभव बताता है कि, यह आत्माग्नि ही कार्य है, क्योंकि आत्माग्नि चला गया, तो शरीरकी पुष्टि नहीं होती। इस बातका विचार करनेसे-इसका नाम ‘ ( हव्य-वाह ) हव्य पदार्थोंको देवताओंतक पहुंचानेवाला ’ किम उद्देश्यसे रखा है, इस बातका पता लग सकता है।

### ( ४९ ) यही दूत है ।

दूत नाम सेवक का होता है। आज्ञाकारी सेवक आज्ञाके अनुसार कार्य सत्वर करता है। पेटमें रखा हुआ अन्न संपूर्ण इंद्रियोंतक पहुंचानेका दूतका कार्य यह करता है। इसीलिये इस आत्माग्नि को अनेक सूक्तों में ‘ दूत ’ कहा है—

विश्वे हि त्वा सजोषसो देवासो दूतमक्रत ॥

श्रुष्टी देव प्रथमो यज्ञियो भुवः। ( १२८७; ऋ. ८।२३।१८ )

‘ ( स-जोषतः ) एक विचारसे कार्य करनेवाले सब देवोंने तुमको दूत ( अक्रत ) बनाया है। हे देव ! तू पहला ( यज्ञियः ) पूज्य देव है । ’

इस मंत्रके प्रथम अर्धम कहा है कि, “ देवोंने इसको दूत बनाया है। ” और दूसरे अर्ध भागमें कहा है कि, “ यह पहला पूज्य देव है। ” जो सबसे प्रथम पूजनीय देव है, वह सबसे श्रेष्ठ देव होना स्वाभाविक है, इसलिये यहां शंका हो सकती है कि, जो सबसे श्रेष्ठ देव है, वह सब गौण देवों का दूत कैसा हो सकता है? इस शंकाका समाधान होनेके लिये एक उदाहरण लेता हूं। राजा, महाराजा अथवा सम्राट् अपने राज्यमें सबसे श्रेष्ठ होता है, उसके नीचे अनेक ओहदेदार होते हैं, और इनके आधीन सब प्रजाजन रहते हैं। तथापि सब ओहदेदारोंको प्रजाके नौकर ( Public servant ) ही कहा जाता है। प्रजाके नौकरोंमें जो ‘ सबसे बड़ा नौकर ’ होता है, वही ‘ राजा, महाराजा और सम्राट् ’ कहलाता है। तात्पर्य यह है कि, यद्यपि राजाके और राजपुरुषों के आधीन प्रजाजन

होते हैं, तथापि वे सबही अधिकारी प्रजाजनोंके नौकर ही होते हैं, और राजा नौकरोका भी बड़ा नौकर होता है। इसलिये वही राजा इतिहास में सुपूजित होता है कि, जो अपनी नौकरी सबसे उत्तम करता है। जिस प्रकार अभिभूत में अर्थात् राष्ट्रमें यह बात सत्य है, उसी प्रकार अध्यात्ममें भी सत्य है। यहाँ आत्मा राजा महाराजा और सम्राट् है और इसी लिये उक्त प्रकार वह सबका सबसे बड़ा दूत, नौकर अथवा सेवक है। इसी कारण जो अन्न उमके पास दिया जाता है, वह सब देवोंके पास पहुँचाता है, तथा हरएक प्रकारसे ( देवों ) इंद्रियोंकी सेवा करता है। वह अपने लिये कुछ भी चाहता नहीं। जो कुछ चाहता है, सब इंद्रियोंके लिये ही चाहता है। यह इस आत्मा-ग्निका दूतकर्म विचार की दृष्टिसे देखनेयोग्य है। परमात्माका यही दूतकर्म प्रभुवनमें हो रहा है।

पाठक यहाँ एक नया दृष्टिकोणका अनुभव कर सकते हैं। पूर्व समयमें इस आत्माग्निका वर्णन अधिकारीके भावसे किया, अब उसी का वर्णन दूतभावसे किया जाता है। वेदमें इस प्रकार अनेक दृष्टिकोण हैं। हरएक दृष्टिकोणसे वस्तु देखी जाती है और उसीके अनेक विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया जाता है। यह प्रयास इसलिये है कि, उस सद्वस्तुका सब पहलुओं से यथार्थ ज्ञान सबको हो जावे। जो पाठक इन सब दृष्टिकोणों को यथावत् जान सकते हैं, वेही वेदकी गंभीरता जान सकते हैं। अस्तु। अब इसके अनंतर अग्निके गुहानिवासित्वका विचार करेंगे। इसके विचारसे अग्निके शुद्ध स्वरूपका पता लग सकता है।

### ( ५० ) गुहासंचारी अग्नि ।

गुहासंचारी अग्नि का स्वरूप अब देखना है। इसका मूल स्वरूप देखनेके लिये “ गुहा ” शब्दका वैदिक अर्थ देखना चाहिये। इस लिये निम्नलिखित वचन देखिये—  
 आत्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् ॥ ( कठ उ २।२० )  
 विद्धि त्वमेनं निहितं गुहायाम् ॥ ( कठ. उ. १।१४ )  
 गुहाहितं गङ्गरेष्ठं पुराणम् ॥ ( कठ. उ. २।१२ )  
 आत्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः ॥ ( श्वे. उ ३।२० ;  
 महा. ना. उ. ८।३ )  
 एष पंचधात्मानं विभज्य निहितो गुहायाम् ॥  
 ( मैत्री उ २।६ )

एतद्यो वेद निहितं गुहायाम् ॥ ( मुंढ. उ. २।१।१० )  
 अंतश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः ॥

( महा. ना. उ. १।५।६ )

आविः संनिहितं गुहाचरं नाम महत्पदम् ॥

( मुंढ. उ. २।२।१ )

इस प्रकार “ गुहा ” शब्दका प्रयोग उपनिषदोंमें अनेक स्थानपर आया है। इन सब वचनोंका यही तात्पर्य है कि ‘ आत्मा इस प्राणीकी ( गुहा ) अर्थात् हृदयमें रहता है । ’ गुहा शब्दका अर्थ इस दृष्टिसे ‘ हृदय, अंतःकरण, ’ आदि है। कोशोंमें भी ‘ गुहा ’ शब्दका अर्थ ‘ हृदय, बुद्धि, अंतःकरण, गुफा, गुप्त रहनेका स्थान ’ इस प्रकार दिया है। आत्मा हृदय की गुहामें छिपा है, वहाँही उसको देखना चाहिये, यह भाव वेद और वेदांतशास्त्रमें सर्वत्र है इस प्रकार गुहा शब्दका अर्थ ‘ हृदय ’ निश्चित हुआ। जो गुहामें होता है, उसको ‘ गुह्य ’ कहते हैं। हृदयके अंदर अपने मनमें ही जो रत्नकी बात होती है, उसको गुह्य कहते हैं। आत्माका भी नाम गुह्य इसलिये है कि, वह हृदयमें गुप्त होता है। इस दृष्टिसेभी गुहाका अर्थ अंतःकरणही होता है। इस अर्थको लेकर निम्नलिखित मंत्र देखिये—

पश्वा न तायुं गुहाचरन्तं नमो युजानं नमो  
 वहन्तम् ॥ सजोषा धीराः पदैरनुगमन्नुप त्वा  
 सीदन् विश्वे यजत्राः ॥ ( १२४-१२५; ऋ १।६।५।१ )  
 इस मंत्रके दो अर्थ हैं। एक अर्थ चोरके विषयका है और दूसरा आत्माके विषयका है। इस मंत्रका ऋषि पराशर है और देवता अग्नि है। देखिये इसके दोनों अर्थ—

( १ ) चोरविषयक अर्थ— ( न ) जैसा पशुकी चोरी करके ( तायु ) चोर उस ( पश्वा ) पशुके साथ ( गुहा-चरन्तं ) पर्वतों की गुहाओंमें जा कर छिप जाता है, वहाँ वह चोर अपने साथ ( नमः वहन्तं ) अन्न भी रखता है और ( नमः युजानं ) शस्त्र की भी योजना करता है। इस प्रकारके बड़े डाकू को पकड़नेके लिये ( स-जोषाः यजत्राः विश्वे धीराः ) एक विचारसे प्रयत्न करनेवाले सब धैर्यशाली वीर [ पदैः अनुगमन् ] पशुके और चोरके पाँवोंके चिह्न जो भूमिपर लगे होते हैं, उनको देख देखकर पास पहुँचते हैं और [ उप सीदन् ] बिलकुल समीप जाकर उसको पकड़ते हैं। इसी प्रकार धैर्यसे चोरको पकड़ना चाहिये ।

जो डाकू, चोर, लुंटेर आदि होते हैं, वे शहरों में चोरी करके पशु, धन, अन्न आदि पदार्थ अपने साथ लेकर भागते हैं और पर्वतों के दुर्गम स्थानों में जाकर छिपते हैं । वहां वे रहते हैं, अपने साथ का अन्न खाते हैं और पकड़नेका प्रयत्न करनेवाले नागरिकोंके ऊपर अपने पासके शस्त्रप्रयोग करते हैं और पास भाने नहीं देते ! इस प्रकारके चोरोंको पकड़कर दंड देना चाहिये । पकड़ने की यह युक्ति है कि सबको एक विचारसे मिलकर, संघ बनाकर, भागे बड़ना चाहिये और उसके पदाचिह्नों को देखदेखकर उसका पता लगाना चाहिये और युक्तिसे उसको पकड़ना चाहिये । यह चोरको दंड देने और उससे जनताका बचाव करनेके विषय में वेदका उपदेश है । इसका यहां अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं । जैसी गुहामें चोरकी खोज की जाती है, उसी प्रकार हृदयकंदरामें आत्माकी खोज होती है । इस विषय का अर्थ देखिये—

( २ ) आत्मा के विषयमें अर्थ— ( न ) जिस प्रकार (तायुं) चोर पशुके साथ गुहामें रहता है, उस प्रकार (पश्वा) इंद्रियादि शक्तियों को लेकर (गुहा चरन्तं) जो हृदयमें रहता है और वहां (नमः वहन्तं) नमस्कारों को स्वीकार करता है और (नमः युजानं) नमन का योग करता है, उसको देखनेके लिये (स-जोषाः धीराः) समान ज्ञानवाले बुद्धिमान् लोग (पदैः) मंत्रों के पदों के साथ, अथवा आत्माके जो पद इंद्रियादि स्थानोंमें दिखाई देते हैं, उनको देखदेखकर (अनु-गमन्) पीछेसे जाते हैं और वे (विश्वे-यजत्राः) सब याजक (उप सीदन्) पास बैठते हैं, अर्थात् उपासना करते हैं ।

एकही मंत्रमें ये दोनों भाव देखनेयोग्य है । चोरकी उपमा आत्माको देनेसे कोई हानि नहीं है । ' छिपकर रहने का भाव ' ही दोनों स्थानपर विशेषतया देखना है । सब इंद्रियोंकी शक्तियोंका आकर्षण करनेवाला यह 'कृष्ण' किंवा 'संकर्षण,' गौवों (इंद्रियों) का पालन करनेवाला यह 'गोपाल,' गौवोंके साथ पर्वतकी गुहामें छिपकर रहनेवाला यह मायाविहारी 'गोपनाथ,' पशुओंकी पालना करनेवाला यह 'पशुपति' एकही है । इन सब विविध रूपकों और अलंकारों में एकही आत्मतत्त्वका वर्णन होता है । इसीको 'चोर-जार-कपटनाटकी' भी कहा जाता है ! !

यद्यपि ये शब्द बाह्य अर्थमें निदाश्रयक हैं, तथापि इसका गुप्त अर्थ बुरा नहीं है । रुद्रके वर्णन में 'तरुकर, स्तेन, स्तेनानां पति.' ये 'चोर' वाचक शब्द रुद्रदेवताके लिये आये हैं । रुद्र पशुपति है अर्थात् पशुपतिही तरुकर है । इसका तात्पर्य इतनाहि है कि, ये शब्द किसी एक आशयके साथ मंत्रमें देखने होते हैं । अर्थात् 'चोरके समान छिपकर रहनेवाला आत्मदेव है । इसमें 'गुप्त रहना' ही देखना है, चोर का दूसरा भाव देखना नहीं है । अब इस आत्माकी खोज कैसी करनी है, देखिये । एकविचारसे, एकनिष्ठा से अनुष्ठान करने का निश्चय करना चाहिये । उसके जो पद अर्थात् विह्व इंद्रियों और अवयवों में दिखाई देते हैं, उनको देखते हुए उसका मार्ग ढूँढना चाहिये । इन पदोंपर अपना कदम रखकर जायेगे, तो संभवतः उसके मूळ स्थान-गुहामें-पहुच सकते हैं और वहां उसका पता लगा सकते हैं । वह जिस गुहामें छिपकर बैठा है, उसके पता लगानेका यही एक उपाय है । इसके गुहानिवासी होनेके विषयमें और एक मन्त्र देखिये—

हस्ते दधानो नृष्णा विश्वान्यमे देवान्धाद्रुहा-  
निषीदन् ॥ विदन्तीमन्न नरो धियं धा हृदा  
यत्तपान्मंत्रां अशंसन् ॥ [ १४६, क्र० १।६७।३ ]

' (विश्वानि नृष्णानि) सब सुखों को (हस्ते दधानः) अपने हाथमें धारण करनेवाला, (गुहा निषीदन्) अपनी अंतःकरण की गुहामें बैठनेवाला, (देवान् अमे धात्) सब देवों को अर्थात् इंद्रियों को जीवनमें धारण करता है । (धियं-धाः नरः) बुद्धि को धारण करनेवाले नर (अत्र) इस गुहामें ही (हं विदति) इसको जानते हैं, (यत्) जिस समय (हृदा तपान् मंत्रान्) हृदयसे निकले हुए सुविचारों को (अशंसन्) कहते हैं । '

जिस समय हृदयमें भक्ति के भाव चलने लगते हैं और दिलमें सच्ची भक्ति होती है, उसी समय शानी मनुष्य इसको हृदयकंदरामेंही प्राप्त करते हैं । यह यहां हृदयमें बैठा हुआ, सब सुखों को अपने पास रखकर, सब इंद्रियों में जीवन का प्रवाह चलाता है । पाठक इस वर्णन से जान सकते हैं कि, इस मंत्रमें जिस अमिका वर्णन है, वह अमि कौन है? निःसंदेह चूल्हेमें जलनेवाली आग इस मंत्रमें अभिप्रेत नहीं है । मनुष्यके हृदयमें जो आत्माप्रति है, वही

यहां वर्णित है । यहाँ (१) सब सुखों को अपने में धारण करता है, (२) इंद्रियोंमें जीवनका प्रवाह चलाता है और (३) भक्तिकी भावनासे आनंदित होकर यही ज्ञानियोंको प्राप्त होता है । और देखिये—

य ई चिकेत गुहा भवन्तमा यः ससाद् धारामृतस्य ॥  
वि ये चृतभृत्या सपन्त आदिद्वसूनि प्रववाचास्मे ॥

[१५०-१५१, ऋ० १।६७।४]

‘ (यः) जो ज्ञानी (गुहा भवन्तं) हृदयकंदरामें रहनेवाले (ई) इसको (चिकेत) जानता है, (यः) वह मानो (ऋतस्य धारां) सत्यके स्रोतको (आससाद्) प्राप्त करता है । (ये च ऋतानि सपन्तः) जो सत्यका आश्रय करनेवाले पुरुष हैं, जो सत्याग्रही हैं, वे (भात् इत्) निश्चयसे (अस्मि) इसके लिये ही (वसूनि प्रववाच) धन हैं, ऐसा कहते हैं । अर्थात् सब धन इसी का है, ऐसा कहकर हमीको अपना सर्वस्व अर्पण करते हैं । ’

हृदयमें जहां यह आत्माग्नि रहता है, वहांसे ही सत्यका स्रोत चलता है और इसीलिये जो सत्यके ऊपर स्थिर रहनेवाले होते हैं, वे ही इसको प्राप्त करते हैं । जिस प्रकार नदीके प्रवाहके साथ उलटा जानेसे नदीके उगम-स्थानतक पहुंच सकते हैं, उसी प्रकार सत्यकी नदी इससे शुरू होती है, इसलिये जो सत्यका आश्रय करते हैं, वे इसके पास पहुंचते हैं, क्योंकि इसके पास सत्य है और इससे दूर असत्य है । इसके पास जितना जितना जाय, उतना उतना सत्य अधिक होता है और जितना इससे विमुख होता है, उतना असत्य पास आने लगता है । इसी कारणही कहते हैं कि असत्य छोड़कर सत्य को पास करने से देवत्व प्राप्त होता है । अस्तु । इस रीतिसे इन मन्त्रों का विचार करनेपर निश्चय होता है कि यह गुहानिवासी अग्नि आत्मा ही है । और देखिये—

गुहा चरन्तं सखिभिः शिवेभिः ॥ (४५५; ऋ० ३।१।९)

‘ शुभ मित्रोंके साथ गुहामें संचार करनेवाला ’ यह अग्नि है । यह भी आत्माग्निकाही रूपक है । आत्माग्नि के शुभ मित्र संपूर्ण इंद्रियशक्तियांही हैं । क्योंकि ये शक्तियां इसके साथ आती हैं, इसके साथ रहती हैं और इसके जानेके समय इसके साथ चली जाती हैं । अर्थात् मित्रवत् इनका बर्ताव होता है । कई समझते हैं कि, इसका ज्ञान

प्राप्त होना कठिन है, परन्तु वेद कहता है कि यह बात सुगम है, देखिये—

चित्रं संतं गुहाहितं सुवेदं ॥ (६९८; ऋ० ४।७।६)

‘ यह गुहानिवासी बड़ा विलक्षण है, परन्तु यह (सु-वेदं) उत्तम प्रकारसे अथवा सुगमतासे जाननेयोग्य है । ’ इन मंत्रोंके विचारसे अग्नि का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है । यह विचार यहांही समाप्त करके और एक रीतिसे विचार करेंगे । सहचारी देवोंके विचारसे इसका विचार अब करना है ।

(५१) अग्निके साथी अनेक देव ।

अग्निके साथी जो अनेक देव हैं, उनकी संख्याका उल्लेख निम्न मन्त्रमें किया है । इसलिये वह मंत्र देखिये—

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा  
नव चासपर्यन् ॥ (५०८; ऋ० ३।१।९)

‘ तीन सहस्र, तीन सौ, तीस और नौ देव इस अग्निकी (सपर्यन्) सेवा करते हैं । ’ इस मन्त्रमें अग्निदेवकी पूजा अथवा सेवा करनेवाले देवोंकी संख्या कही है । जहां अग्निदेव जाता है, वहां उसके साथ ये भी देव जाते हैं । ये देव उसके रथपरसे जाते हैं और अग्निके साथ उसके रथपर बैठकर ही आते हैं । देखिये इसका वर्णन—

एभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् नानारथं वा विभवो  
ह्यध्वाः ॥ पत्नीवतस्त्रिंशत् त्रींश्च देवाननुष्वध  
मा वह माद्यस्व ॥ (४८८, ऋ० ३।६।९)

‘ हे अग्ने ! आपके अध्व (वि-भवः) प्रभावशाली हैं, इसलिये (एभिः) इन सब देवोंके साथ (सरथं) एक ही रथ परसे अथवा (नानारथ) अनेक रथोंके ऊपर (आ याहि) आओ । पत्नियोंके साथ तीस और तीन देवोंको बल के लिये यहां ले आओ और आनंदित रखो । ’ इस मन्त्रमें ३३ देवोंका संबंध अग्निके साथ बतलाया है । पूर्व मन्त्रमें ३३ देवोंका संबंध वर्णन किया है ।



यह देवोंकी संख्या विशेष महत्त्व रखती है । उक्त संख्या बढ़नेका क्रम ३३ करोड़ तक है । स्थानस्थानमें इस संख्या

का वर्णन ब्राह्मणोंमें आता है । एक मुख्य देव है, जिसको आत्मदेव कहते हैं । उसके साथ अनेक देवताएं हैं । अन्य देवताएं प्राकृतिक शक्तियां हैं और एक देव आत्मा है । आत्मा और प्रकृति, पुरुष और प्रकृति, आदि शब्द इस भेदका वर्णन कर रहे हैं । आत्माकी शक्तियां प्रकृतिमें जाकर सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, अग्नि, वायु, जल आदि अनेक देव बने हैं । इसका क्रम निम्न लिखित प्रकार है—

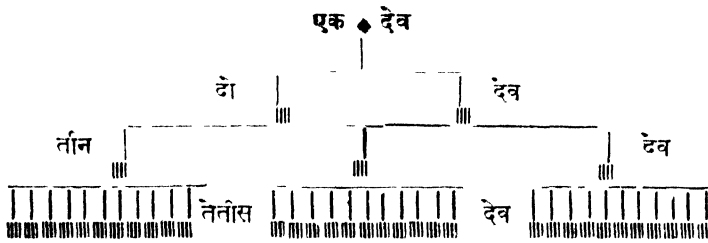
१ एक देव—आत्मा ।

२ दो देव—आत्मा और प्रकृति, पुरुष और प्रकृति, इत्यादि ।

३ तीन देव—पृथ्वीस्थानपर अग्नि, अतरिक्ष स्थानपर विद्युत् और घुस्थानमें सूर्य । त्रिमूर्ति ।

३३ तैत्तिरीय देव— ११ पृथ्वीपर, ११ अतरिक्षमें, ११ घुलोकमें ।

इन्हीं के विभाग ३३२९ और इसी क्रम से इससे भी अधिक हुए हैं । इसका चित्र निम्न प्रकार बन सकता है—



इस प्रकार प्रत्येकके और भेद होनेसे अनेक देव हो जाते हैं । ये सब 'अनेक विभिन्न देव' हैं । ये विभिन्न देव 'एक अभिन्न देव' के साथी हैं ।

(१) एक अभिन्न देव (आत्मा) = आत्मा ।

(२) अनेक विभिन्न देव (अनात्मा) = देवताएं ।

यह कल्पना ठीक प्रकार ध्यानमें आ गई, तो वेदके बहुतसे मन्त्रोंके वर्णन सुगमतया ध्यानमें आ सकते हैं । इसलिये पाठकोंसे प्रार्थना है कि, वे इस कल्पनाको ध्यानमें लानेका यत्न करे ।

अनेक विभिन्न देवोंमें एक अभिन्न देवकी शक्ति कार्य करती है, इसलिये एक अभिन्न देव श्रेष्ठ और अनेक विभिन्न देव गौण हैं । पूर्वोक्त मंत्रमें एक अग्निदेवके साथी ३३२९ अथवा ३३ होनेका वर्णन है । इसका भाव इसी

प्रकार समझना चाहिये । इस समयतक के वर्णन से पाठकों के मनमें यह बात आ गई होगी, कि इन मन्त्रोंमें जो अग्नि शब्दसे वर्णन हो रहा है, वह मुख्यतया 'आत्माग्नि' का ही वर्णन है । इस आत्माग्निके साथ तीन, तैत्तिरीय अथवा इसी प्रमाणसे अधिक देवताएं आती हैं, रहती हैं और जाती हैं । इन सबका आना और रहना इस शरीरमें होता है, इस विषयमें पूर्व स्थलमें बहुत बार कह दिया है । अस्तु, इस प्रकार अग्निदेवके वर्णनसे मुख्यतया आत्माका वर्णन होता है । और इसकी सूचनाएं पूर्वोक्त प्रकार स्थानस्थान के सूक्तोंमें वर्णन की गई हैं । अब अग्निदेवके वर्णनमें 'सप्त' अर्थात् 'सात' संख्याका विशेष महत्त्व है, इसका विचार करके निश्चय करना है कि यह किस बातका वर्णन है—

(५२) " सात " संख्या का महत्त्व ।

वैदिक तथा लौकिक सारस्वतमें अग्निके वर्णनमें 'सप्त-हस्त' 'सप्त-जिह्व' आदि शब्द आते हैं । [१]

सात हाथोंसे युक्त । [२] सात-जिह्वाओंसे युक्त यह उन शब्दोंका भाव है । देखिये—

सप्तहस्तश्चतुःशृंगः सप्तजिह्वो द्विशि-  
र्षकः ॥ त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखा-  
सीनः शुचिस्मितः ॥ स्वाहां तु  
दक्षिणे पादं देवीं वामे स्वधां  
तथा ॥ बिभ्रद्दक्षिणहस्तैस्तु शक्ति-

मन्त्रं स्रुचं स्रुवम् ॥ तोमरं व्यजनं वामैर्घृतपात्रं  
च धारयन् ॥ आत्माभिमुखमासीन एव रूपो  
हुताशनः ॥

हुताशन अग्निका यह वर्णन सुप्रसिद्ध है । हममें 'सप्त-हस्त, सप्त-जिह्व' शब्द है । यह पौराणिक वर्णन जिन वेदमंत्रके आधार पर रचा गया है, वह मंत्रभी यहां देखिये—

( ५३ ) सात हाथ ।

चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शिषे सप्त  
हस्तासो अस्य । त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति  
महो देवो मर्या आविवेश ॥ (१८९७, ऋ. ४।५।८।३)  
इस अग्नि देवताके मंत्रका आशय भगवान् पतंजलि

मुनिने शब्दविषयक लिया है और बताया है कि, यहांके 'सप्त हस्त' शब्दका भाव सात विभक्तियां हैं। इस मंत्रका शब्दविषयक यह एक अर्थ है। परंतु इसके अनेक अर्थ हैं, क्यो कि यह 'कूट मंत्र' है, इसका विशेष स्पष्टीकरण 'तर्कसे वेदका अर्थ' इस पुस्तकके अंदर 'भाष्यकारोंका मतभेद' इस शीर्षक के लेखमें विशेष रूपसे दिया है। पाठक वह लेख इस प्रकरणमें अवश्य अवलोकन करे। इस कूट मंत्रके अनेक अर्थ होनेका कारण यहां ही स्पष्ट कर दिया है। इसके अध्यात्मपरक अर्थ केवल आत्माके विषयमेंही होते हैं, प्रायः सब भाष्यकार इसको मानते हैं। आरण्यकादिकोंमें यह प्रणव अर्थात् ओंकार पर मंत्र घटाया है। इससे स्पष्ट है कि, आत्मा पर इसका अर्थ होनेके प्रसंगमें इस मंत्रका 'सप्त-हस्त' शब्द आत्माकी सात शक्तियोंका ही वाचक होगा। यही बात 'सप्त-जिह्व' शब्दके विषयमें समझनी चाहिये। यहां सूचना मिलती है कि, आत्माकी सात शक्तियां हैं, जो 'सात हाथ' अथवा 'सात जिह्वाएं' शब्दोंद्वारा वर्णन की गई हैं, यही बात निम्न लिखित मंत्रमें देखिये—

### ( ५४ ) सात जिह्वाएं ।

द्विधश्चिदग्ने महिना पृथिव्या ।

वच्यन्तां त वह्नयः सप्तजिह्वाः ॥

( ४८१, ऋ. ३।६.२ )

'हे अग्ने ! [ महिना ] अपनी महिमासे पृथ्वीमें और तुलोकमें वह्निरूप तेरी सात जिह्वाएं [ वच्यन्तां ], घोषणा करे।' इसमें अग्निकी सात जिह्वाओंका वर्णन है। इन सात जिह्वाओंसे अग्नि तीनों लोकोंमें घोषणा कर रहा है। प्रत्येक जिह्वाकी अलग अलग घोषणा हो रही है। एक जिह्वाकी घोषणा दूसरी जिह्वाकी घोषणासे भिन्न है, यह बात यहां ध्यानमें धरने योग्य है। इस मंत्रमें सात जिह्वाओंका स्वरूप [ वह्नयः सप्तजिह्वाः ] वह्निरूप है, ऐसा स्पष्ट कहा है। वह्नि शब्द जैसा अग्निवाचक है, उसी प्रकार 'वाहक' अर्थमेंभी प्रसिद्ध है। अर्थात् ये सात जिह्वाएं वाहक हैं। वाहक होनेके कारण यहां प्रश्न हो सकता है कि ये किस पदार्थको लाती हैं? इसका उत्तर निम्न लिखित मंत्रमें देखिये—

### ( ५५ ) सात नदियां ।

अवर्धयत्सुभगं सप्त यज्ञीः श्वेतं जज्ञानमरुषं महिरवा । शिशुं न जातमभ्याहरश्वा देवासो अग्निं जनिमन्त्रपुष्यन् ॥ ( ४५०; ऋ. ३।१।४ )

'जिस प्रकार [ अग्निः शिशुं जातं अभ्यारुः न ] घोड़ियां नूतन उत्पन्न बच्चेके चारों ओर रहती हैं, उसी प्रकार यह (सप्त यज्ञीः) सात नदियां उस (सुभगं) उत्तम भाग्यशालीको (अवर्धयत्) बढ़ाती हैं कि, जो (जज्ञानं श्वेतं) उत्पत्तिके समय श्वेत था, परंतु पश्चात् (महिरवा) अपने महत्त्वसे (अरुषं) लाल बन गया। इस प्रकारके अग्निके जन्म की देव पुष्टि करते हैं।'

इस मंत्रमें निम्न लिखित बातें हैं कि, जो अग्निके स्वरूप तथा सप्त नदियोंकी कल्पनाका तत्त्व विशद कर रही है—

- [१] बलुंडको बीचमें रखकर जिस प्रकार घोड़ियां अथवा माताएं चारों ओर बैठती हैं।
- [२] उस प्रकार इस अग्निको बीचमें रख कर उसके चारों ओर ये सात नदियां प्रवाहित होती हैं।
- [३] अपने प्रवाहके साथ ये सातों नदियां भाग्यशाली इस अग्निको बढ़ाती हैं,
- [४] यह अग्नि भारत में श्वेत था, परंतु पश्चात् लाल हो गया है।
- [५] इस अग्निही पुष्टि देवोंने भी की है।

अग्निको बीचमें रख कर उस मध्यस्थानसे चारों ओर अथवा सातों ओर सात नदियां बह रही हैं, अर्थात् सात नदियोंके उगमस्थानमें यह अग्नि है। कौनसे एक स्थानसे सात नदियां बह रही हैं? और कौनसी नदीके उगमस्थानमें प्रतापी अग्नि रहता है? बहुतसे विद्वान् कहते हैं कि, वेदमें वर्णित सात नदियां पंजाब में हैं, कई कहते हैं कि, मध्य एशियामें हैं, कई कहते हैं कि उत्तर ध्रुवके पास हैं। परंतु स्थानस्थानमें प्रयत्नपूर्वक देखनेपर एक स्थानपर उगम होनेवाली सात नदियां कहीं भी दिखाई नहीं देतीं और जो थोड़ी हैं, उनके उगमस्थानमें ऐसा कोई अग्नि नहीं है। चूंकि यह वर्णन पृथ्वीपर का नहीं है। इसलिये जो विद्वान् इसको इस भूमिपर देखनेका यत्न करते हैं, वे फलीभूत नहीं होते !! इसका स्वरूप देखना है तो निम्न लिखित मंत्र देखिये—

## (५६) सप्त ऋषि और सप्त नद ।

सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति  
सदमप्रमादम् । सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र  
जागृतो अस्वप्नजौ सप्तसदौ च देवौ ॥

[ वा० य० ३४।५५ ]

‘ प्रत्येक (शरीरे) शरीरमें (सप्त ऋषयः) सात ऋषि (हिताः) रहते हैं । ये सात इस (सदं) घरका रक्षण करते हैं । ये (सप्त आपः) जल के सात प्रवाह (स्वपत) सोने-वाले आत्माके (लोकं ईयुः) स्थान को पहुंचते हैं । इस (सप्त-सदौ) यज्ञमें जागनेवाले और (अ-स्वप्न-जौ) कभी न सोनेवाले (देवौ) दो देव हैं । ’

इस मंत्रमें कई गूढ तत्त्वोंका स्पष्टीकरण किया है, उसका आशय निम्न प्रकार है—

(१) प्रत्येक शरीरमें सात ऋषि रहते हैं ।

(२) इस शरीरका संरक्षण ये सात ऋषि कर रहे हैं ।

(३) सात जलप्रवाह (सात नदियां) भी इसी शरीरमें हैं, जो सुषुप्तिकी अवस्थामें आत्माके स्थानको वापस जाते हैं । अर्थात् जागृति की अवस्था में ये सात नदियां आत्मा से चलकर बाहर जगत् में फैलती हैं ।

(४) मनुष्य-जीवन एक सप्त अर्थात् शतसांवत्सरिक महायज्ञ है । इसीमें ये सप्त ऋषि यज्ञ कर रहे हैं । सप्त नदियों के किनारे पर इनका यज्ञ चल रहा है । ये सात ऋषि कुछ काल सोते हैं और कुछ काल जागते हैं ।

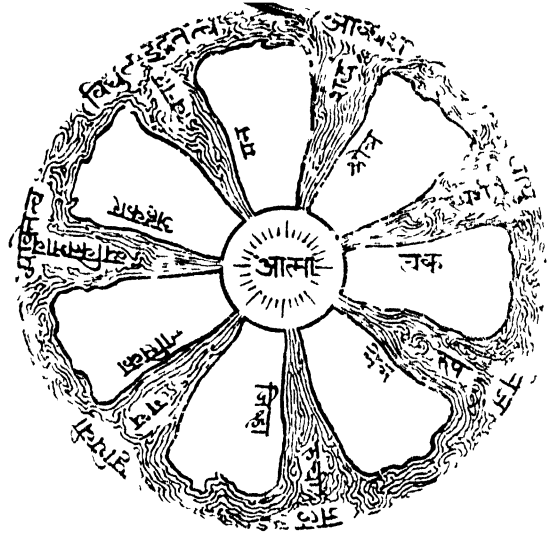
(५) सोने के समय इन सप्त नदियोंका प्रवाह उलटा होता है और इस समय ये नदियां अंतर्मुख होती हैं । तथा जागने के समय इनका प्रवाह बहिर्मुख होता है ।

(६) इस सप्त में दो देव खड़े पहरा दे रहे हैं, जो कभी सोते नहीं । सदैव इसके संरक्षण करने में ये दक्ष रहते हैं ।

इस वर्णनसे स्पष्ट पता लग जाता है कि, यह सप्त नदियोंका वर्णन आत्मापरही विशेष रूपसे घट सकता है ।

### सप्त नद ।

आत्माभि मध्यमें है और इस उगमस्थानसे अहंकार, मन, श्रोत्र, स्पर्श, नेत्र, रसना और नासिका ये सात प्रवाह चलते हैं । (१) अहंकार की नदी घमंडके क्षेत्रमें बह रही



### सप्त नद ।

है । (२) मनका नद मननके प्रदेश को भिगी रहा है । (३) श्रोत्रकी नदी कानोंके द्वारा प्रवाहित होकर शब्दकी भूमिमें बह रही है । (४) स्पर्श की नदी चर्ममार्गसे स्पर्शके प्रदेश में फैल रही है । (५) नेत्रकी नदी दृष्टिके मार्गसे दर्शनक्षेत्र में प्रवाहित हो रही है । (६) रसना नदी रुचिके अंत्रमें जिह्वाके स्थानसे व्याप्त हो रही है । इसी प्रकार (७) नासिका द्वारा सुवासके क्षेत्रमें नासा नदी बह रही है । प्रत्येक नदीका क्षेत्र भिन्न है, प्रत्येक नदीका जल भी भिन्न है और प्रत्येक नदीका स्वभाव भी भिन्न है । ये सप्त नदियां हैं, जो कि आत्माके स्थानसे बह रहीं हैं । सुषुप्तिकी अवस्थामें ये सातों नदियां अंतर्मुख होकर उलटी बहने लग जाती हैं और आत्मामें मग्न होती हैं; परन्तु जागृतिमें आत्मासे बहिर्मुख होकर फिर बाहर प्रवाहित होकर जगत् में कार्य करने लग जाती हैं ।

प्रतिदिन इन सातों नदियोंका यह प्रवाह हरएकके अनुभवमें आता है । इनका प्रवाह उलटा चलनेवाली नाम सुषुप्ति और इनका प्रवाह बाहरकी ओर बहनेकाही नाम जागृति है ।

प्रत्येक नदीके तटपर एक एक अधिष्ठाता ऋषि हैं, जो वहां तप कर रहा है । ये सात ऋषि इस जीवनरूपी महा-



यज्ञ में यजन कर रहे हैं, जिस समय ये सातों अधिष्ठाता ऋषिगण थक कर सो जाते हैं, उस समय तथा अन्य समय में भी इस देहरूपी सत्रमें दो देव जागते हैं !! इन देवोंका नाम प्राण अर्थात् श्वाभ और उच्छ्वास है। जन्मसे मरने-तक ये श्वासोच्छ्वासरूपी दो देव जागते हैं और खड़े पहरा करते हैं। इनके कारणही इस सत्र अर्थात् देहरूपी यज्ञ-भूमिका संरक्षण हो रहा है।

पाठक विचार करेंगे, तो उनका पता लग जायगा कि, यह वर्णन हमारे देहका ही है और इसीमें (१) सात ऋषि, (२) सात नदियां और (३) जलके सात प्रवाह अपना अपना कार्य कर रहे हैं।

अब पूर्वोक्त मंत्र का अनुसंधान कीजिये, तो पता लग जायगा कि आत्माग्निको मध्यमें रख कर सात नदियां चारों ओर फैल रही हैं, इसका तात्पर्य क्या है? नदियोंके उगमस्थानमें कौनसा अग्नि है? उससे कौनसे प्रवाह किस भूमिमें फैलते हैं? और समयपर वापस भी किस रीतिसे होते हैं?

यह आत्माग्निक प्रारंभमें श्वेत और पशुत् रक्तवर्ण होता है। यह भी स्पष्ट है। श्वेतवर्ण सत्त्वगुण और रक्तवर्ण रजोगुण का द्योतक है। प्रथमतः आत्मबुद्धिमें सार्विक भाव होते हैं, परन्तु जब वे भाव भोगोंके साथ परिणत होते हैं, तब रजोगुणमय होते हैं। इत्यादि विषय अब पूर्णतासे स्पष्ट हो सकता है।

- (१) ये ही आत्माग्निके सात हाथ हैं, जिनसे वह कार्य करता है।
- (२) ये ही आत्माग्निकी सात जिह्वाएं हैं, जिनसे वह आत्माकी घोषणा करता है, अथवा जगत की रुचि लेता है।
- (३) ये ही सात नदियां हैं, जो अपने अपने क्षेत्रमें बहती हैं।
- (४) ये ही सात जलप्रवाह हैं, जिनपर सात ऋषि तपस्या कर रहे हैं।
- (५) ये ही सप्त ऋषि हैं, जो सात प्रकारका ज्ञान दे रहे हैं और शरीरका अर्थात् ऋषि आश्रमका संरक्षण कर रहे हैं।

(६) ये ही ऋषि-आश्रम हैं, जिनपर रोगरूपी राक्षस वारंवार हमला करते हैं और इस शतसांवसरिक सत्रका विध्वंस करते हैं। जिनका कि दो देव रक्षण कर रहे हैं।

(७) ये ही सप्तारिभ हैं, जो आत्मारूपी सूर्यके सात किरण हैं, इस त्रिषयमें निम्न लिखित मंत्र देखिये-

### (५७) सात किरण ।

आ यस्मिन्सप्त रश्मयस्तता यज्ञस्य नेतरि ।  
मनुष्वहैव्यमष्टमं पोता विश्वं तदिन्वति ॥

( ४२६, ऋ० २।५।२ )

( 'यस्मिन् यज्ञस्य नेतरि ) जिस यज्ञ के नेताके अंदर सप्त रश्मयः ) सात किरण अथवा सात लगाम ( तताः ) तने हुए हैं। वह यज्ञका नेता (पोता) पवित्र कर्ता आत्मा ( मनुष-वत् ) मनुष्ययुक्त ( देव्यं विश्व ) देवतामय विश्वको अष्टम होकर ( इन्वति ) प्राप्त करता है ।'

“ यज्ञका नेता ” आत्माही है, जो इस शरीररूपी यज्ञमंडपमें इस शतसांवसरिक महायज्ञ को चलाता है। इसी आत्माके पूर्वोक्त सात किरण इस देहरूपी यज्ञमंडपमें प्रकाशित हो रहे हैं। यह सूर्यचंद्रादि देवतामय विश्व जो मनुष्यप्राणियोंके कारण विशेष रूपसे प्रसिद्ध है, उसको अष्टम अर्थात् आठवां मान कर यही प्राप्त करता है। सात इन्द्रियशक्तियां, आठवां देवतामय विश्व और उसको प्राप्त करनेवाला स्वयं यजमान आत्मा है। यह मंत्र भी आत्माग्निकी ही वर्णन कर रहा है।

इस मंत्रका मनन करनेसे पता लग सकता है कि, वेदमें जो सप्त रश्मि, सप्त किरण, आदि वर्णन है, वह केवल सूर्यप्रकाश के ही सात किरणोंका वर्णन नहीं है, प्रत्युत आत्माकी सात शक्तियों का वह मुख्य वर्णन है और गौण-वृत्तिसे अन्य भाव को भी व्यक्त करता है। वेदमें केवल सप्त रश्मियोंकाही वर्णन नहीं है, प्रत्युत यह सप्त संख्या अनेक वार विविध प्रकारके वर्णनमें आई है, देखिये—

### (५८) सप्त रत्न ।

दमेदमे सप्त रत्ना दधानोऽग्निर्होता निषसादा  
यज्ञीयान् ॥ ( ७५७; ऋ० ५।१।५ )

‘ घरघरमें सात प्रकारके रत्नों को धारण करनेवाला अग्नि यज्ञ करता हुआ बैठा है । ’ इस मंत्रमें सात रत्नों को धारण करनेवाला अग्नि यही आत्माग्नि है और उनके सात रत्न पूर्वोक्त सात शक्तियाँही हैं । “ दमे दमे ” का अर्थ प्रत्येक घरमें अर्थात् प्रत्येक शरीरमें है, क्योंकि शरीर-ही आत्माका घर है । रत्न शब्दका अर्थ रमणीय है । उक्त सात इंद्रियां ज्ञान देनेके कारण आत्माको रममाण करती हैं, इसलिये रत्न शब्दका मूल धात्वर्थ भी यहाँ सगत होता है । जो सप्त रत्न है, वे ही “ सप्त धातु ” हैं । इनका वर्णन निम्न लिखित मंत्रमें देखिये—

### (५९) सप्त धातु ।

बृहद्दधाथ धृषता गभीरं यद्गं पृष्ठं प्रयसा सप्त धातु ॥  
( १७६३; ऋ० ४।५।७ )

‘ ( धृषता प्रयसा ) वीर्ययुक्त प्रयत्नके साथ रहनेवाला गभीर ( पृष्ठं ) प्रशंसनीय महान् ( सप्तधातु ) सप्तधातु-रूप धन दो । ’

आत्माकी उक्त सात शक्तियाँ ही शरीरमें मुख्य धन हैं । इनमें एकाध शक्ति न होनेसे अन्य धन उतने उपयोगी नहीं हो सकते । इसीलिये वेदमें इन सात शक्तियोंको ही मुख्य धन कहा है । इस विषयका और एक अलंकार देखिये—

### (६०) सात घोड़े ।

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं  
हविष्मंत ईळते सप्तवाजिनम् ॥

( ६७८, ऋ १०।१२२।४ )

‘ यज्ञका केतु, पहला पुरोहित ( सप्त-वाजिनं ) सात घोड़ोंसे युक्त है, उसीकी प्रशंसा करते हैं । ’ इस मंत्रमें ‘ सप्तवाजी ’ शब्द है । ‘ वाज ’ शब्दका अर्थ बल है और ‘ वाजी ’ शब्दका अर्थ घोड़ा है । ‘ सप्तवाजी ’ शब्दका अर्थ सात प्रकारके बलोंसे युक्त, अथवा सात घोड़ोंसे युक्त है । पूर्व वर्णन के साथ विचार करनेपर पता लग जायगा कि, ये ‘ सात घोड़े ’ कौनसे हैं । इस अग्निके रथको येही सात घोड़े जोते हैं । सूर्यके रथको जो सात घोड़े जोते हैं, वेभी येही हैं । सात ऋषि, सात किरण, सात घोड़े, सात नदियाँ, सात प्रवाह, सात रत्न, सात धातु, ये सर्व भिन्न नाम पूर्वोक्त सात शक्तियोंके ही वाचक हैं । ये ही अग्निकी सात बहिनें हैं—

### (६१) सात बहिनें ।

सप्त स्वसूरुषीर्वावशानो विद्वान् मध्व  
उज्जभारा दशे कम् । अंतयेमे अंतरिक्षे  
पुराजा इच्छन् वयिमविदत् पूषणस्य ॥

( १५१७, ऋ. १०।५।५ )

‘ [ वावशानः ] इच्छा करनेवाला विद्वान् [ अरुषीः ] गमनशील [ सप्त स्वसूः ] सात बहिनों को [ मध्वः ] मीठपनका [ कं दशे ] सुख देखनेके लिये [ उत् जभार ] ऊपर उठाता है । यह [ पुरा जाः ] पुराणपुरुष [ पूषणस्य वाचि ] पूषाके रूपकी इच्छा करता हुआ अंतरिक्ष में [ अंतःयेमे ] अदरसे नियमन करता है और [ अविदत् ] प्राप्त करता है । ’

इस मंत्रमें ‘ सात बहिनों ’ का वर्णन है । एक मूल-स्थानसे जो सात शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, उनको सात बहिने कहा है । एक मातासे भाईबहिनोंकी उत्पत्ति होती है । यहाँ भी परमात्मा, परम पिता और प्रकृति परम माता हैं । वहाँसे ही पूर्वोक्त सात शक्तियोंकी उत्पत्ति है, इसलिये परमात्माका अमृत पुत्र आत्मा है और पूर्वोक्त सातों शक्तियाँ उसकी बहिनें हैं । अलंकार इसी रीतिसे स्पष्ट हो जाता है । ये ही सात हवन करनेवाले ऋत्विज हैं, इसका वर्णन देखिये—

### (६२) सात ऋत्विज् ।

सप्त होतारस्तमिदीळते स्वाग्ने ।

[ १४०४, ऋ. ८।६०।१६ ]

‘ हे अग्ने ! [ सप्त होतारः ] सात ऋत्विज् तेरी ही स्तुति करते हैं । ’ ‘ होता ’ उसको कहते हैं कि जो हवन करता है । यहाँ आत्माग्निमें पूर्वोक्त सात इंद्रियाँ हवन कर रहीं हैं । नेत्र रूपका हवन करता है, कान शब्दोंका हवन करता है । हमी प्रकार अन्यान्य ज्ञानेन्द्रियाँ अन्यान्य ज्ञानोंकी आहुतियाँ आत्मातक पहुंचाती हैं, मानो, आत्माके हवनकुडसे ये सात इंद्रियगणरूपी ऋत्विज् अपने अपने विषयकी आहुतियाँ ही डाल रहे हैं और इस प्रकारका यह हवन इस यज्ञमंडपमें सौ वर्षतक चलना है । शतसांवत्सरिक यज्ञ यही है । इसके ये होता गण है । ये ही ऋत्विज्-सप्त ऋषि नामसे अन्य स्थानमें कहे गये हैं । सप्त ऋषि, सप्त होता, सप्त ऋत्विजः, सप्त मानुषः, आदि शब्द यही भाव बना रहे हैं । इसके साथ अब निम्न लिखित मंत्र देखिये—

## (६३) पांच और दो दोहनकर्ता ।

दुहन्ति सप्तैकामुप द्वा पंच सृजतः ।

तीर्थे लिधोरधि स्वरे ॥ ( १४३०; ऋ. ८।७२।७ )

‘ [ एकां ] एक गौ माताका [ सप्त दुहन्ति ] सात दोहन कर रहे हैं । उनमें [ द्वौ ] दो [ पच ] अन्य पांचोको [ उप सृजतः ] प्रेरित करते हैं । [ अधि स्वरे ] स्वरयुक्त सिंधुके तीर्थ पर यह हो रहा है । ’

एक गौका सात ग्वालियों द्वारा दोहन निःसंदेह आलंकारिक है । इसमें भी दो ग्वालिये अन्य पांचको प्रेरणा करनेवाले हैं । यह सब बात अपना पूर्वोक्त अलंकार स्वीकार करनेपर ठीक प्रकारसे ध्यानमें आ सकती है । पूर्वोक्त सातोंमें [१] मन तथा [२] अहंकार ये दो अन्य इंद्रियशक्तियोंके प्रेरक हैं; [१] श्रोत्र, [२] त्वक्, [३] चक्षु, [४] रसना और [५] घ्राण ये पांच उन दोनों द्वारा प्रेरित होकर अपना अपना दोहन का कार्य कर रहे हैं । आत्मारूपी एक गौ से ये सात ग्वालिये अपने लिये अलग अलग प्रकारका दूध निचोड़ रहे हैं, और एक ही वह गाय इनमेंसे प्रत्येक को भिन्न प्रकारका दूध दे रही है !!!

अब विचार कीजिये, वेदमें एक ही बात कितने भिन्न अलंकारोंसे वर्णन की है । ‘सात’ संख्याका अलंकार अग्नि के विषयमें इतना ही नहीं है प्रत्युत बहुत ही प्रकारका है; यहां केवल नमूनेके लिये थोड़ेसे ही उदाहरण दिये हैं । पाठक विचार करके इन उदाहरणोंके मननसे अन्य अलंकारोंको भी जान सकते हैं ।

तात्पर्य, इन सब विभिन्न अलंकारोंके वर्णनसे वेदको एक आत्मा का ही वर्णन करना है । उसके जितने पहलू हो सकते हैं, उन सब पहलुओंके द्वारा विभिन्न अलंकारोंमें वेद वर्णन करता है । इसलिये पाठकोंको उचित है कि, वे सबसे प्रथम वैदिक शैलीको देखकर वेदमंत्रोंका मनन करे और वेदके गंभीर आशयको समझनेका यत्न करे । एक समय वेदकी मूलभूत कल्पना ठीक प्रकार ध्यानमें आगई तो पश्चात् वेदका कोई भी वर्णन समझनेमें कठिनता नहीं रहेगी ।

## (६४) तनूनपात् अग्नि ।

अब ‘ तनूनपात् ’ शब्दका विचार करिये । यह शब्द अग्निका वाचक है । इसका अर्थ ( तन्+न+पात् ) शरी-

रोंको न गिरानेवाला होता है । जिसके रहनेसे शरीरोंका पतन नहीं होता और जिसके न होनेसे शरीरोंका पतन होता है । पाठकोंके ध्यानमें यह बात आ गई होगी कि, यहां स्थूल सूक्ष्म कारण नामक शरीरोंको धारण करनेवाला और उन शरीरोंपर कार्य करनेवाला आत्माही है । इसलिये ‘ तनू-न-पात् ’ अग्नि निःसंदेह ‘ आत्माऽग्नि ’ है । इस समयतक अग्निवाचक मंत्रोंका जो विचार किया गया है, उसके साथ यह अर्थ कितना ठीक सजता है, इसकी सत्यता पाठक यहां अवश्य देखे और वेदमें अग्नि शब्दसे आत्माग्निका भाव ही मुख्यतः लेना है, यह बात यहां ठीक समझनेका यत्न करे । क्या कि यह शब्द मुख्यतः इसी अर्थमें प्रयुक्त होता है । गौण वृत्तिसे इसके तथा अन्य शब्दोंके भाव विविध होनेपर भी मुख्य अर्थको भूलना कदापि उचित नहीं है । यह ‘ तनू-न-पात् ’ शब्द निम्न मंत्रमें देखिये—

मधुमंतं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे ॥

अद्या ऋणुहि वीतये ॥ [ १९०७; ऋ. १।१३।२ ]

‘ हे [ तनू-न-पात् ] शरीरोंको न गिरानेवाले [ कवे ] शब्दके प्रेरक अग्ने ! तू मधुयुक्त यज्ञ आज ही देवोंके अंदर [ वीतये ] रक्षण के लिये [ ऋणुहि ] कर । ’

देवोंके अंदर ‘शरीरोंको न गिरानेवाले आत्माग्निक’ द्वारा होनेवाले इस शतसंवत्सरिक महायज्ञका वर्णन ही विभिन्न रूपसे स्थानस्थानपर है । यह बात इस समयतक अनेक मंत्रोंके उदाहरणोंसे पूर्व स्थलमें बताई गई है । वही बात इस मंत्रमें ‘ तनू-न-पात् ’ देवताके भिषसे वर्णन की गई है ।

यह तनूनपात् शब्द अग्निदेवका वास्तविक स्वरूप व्यक्त कर रहा है । जितने दिन यह ‘ तनू+न+पात् ’ आत्माग्निक इस शरीरमें निवास करता है, उतने दिन ही यह शरीर सचेतन रहता है और जीवित रहता है । इसके चले जानेके पश्चात् इस शरीरका ऐसा पतन होता है कि, कोई इसको पास रखना नहीं चाहते । इस से स्पष्ट होता है कि यही आत्माग्निक तनूको न गिरानेवाला ‘ तनू-न-पात् ’ अग्नि है । इस तनूनपात् आत्माग्निक शरीरमें अवस्थान निम्न लिखित प्रकार है—

अपनी शरीर की रचनाका संबन्ध यज्ञशालासे वैसा है, यह बात विचार करनेसे ज्ञात हो सकती है। यज्ञशालाके विविध अग्निकुंडोंके स्थान अपने शरीरके आधारपर रचे गए हैं। इसका स्पष्टीकरण सहजहीसे हो सकता है। अपने शरीरमें आत्मा, हृदय, मस्तिष्क, प्रजनन आदिके स्थान हैं। वही स्थान हवनकुंडोंके आकारमें यज्ञशालामें बताये जाते हैं। अपने शरीरमें आत्माको आधार रखकर जो घटनाएं होती हैं, उनकोही यज्ञशालामें विविध अग्नियोंके नामसे बताया है। मानो यज्ञशाला एक अपने देहका ही नकशा है। जिस प्रकार पाठशालाओंमें देशोंके नक्शे होते हैं और उनमें ग्राम, प्रांत, नदी, पर्वत, आदि बताये जाते हैं उसी प्रकार शरीरका नक्शा यज्ञशालाके रूपसे बताया गया है। जो बातें अव्यक्त रूप से शरीर में हो रही हैं, वही बातें यज्ञशाला में हवनरूप से की जाती हैं।

( १ ) मुखमें भ्रम डालनेसे वह पेटमें जाता है और वहां उसका जठराग्निद्वारा पचन होता है। आहवनीय अग्नि के हवनकुंड में भी उसी भ्रम का हवन किया जाता है। अग्नि प्रदीप्त हुआ, तो हवन अच्छा होता है, प्रदीप्त न होनेकी अवस्था में किया हुआ हवन धूँव को बढ़ाता है। उसी प्रकार जठराग्नि प्रदीप्त न होनेकी अवस्था में खाये हुए भ्रम से पेट में वायु कुपित होता है और अग्निमांघ, डकार, अपान वायु आदि होता है।

( २ ) गार्हपत्याग्नि वास्तविक स्त्रीके योनिस्थानमें है। इसके विशेष वर्णन की यहाँ आवश्यकता नहीं है। पाठक अपनी विचारशक्तिसेही इसको जान सकते हैं।

( ३ ) उत्तर वेदीमें ज्ञानाग्नि है, जो मस्तिष्क नामसे प्रसिद्ध है। इसमें दुष्ट मनोविकारोंका हवन होता है। पाशवीय भावनाओंका हवन यहाँ होता है।

इस प्रकार सारांशरूपसे यज्ञशालाका संबन्ध अपने शरीरके व्यापारोंसे है। पाठक विशेष विचार करके यह जान सकते हैं। यहाँ विशेष विचार करनेके लिये स्थान नहीं है, परन्तु प्रसंग प्राप्त होनेके कारण संक्षेपसे लिखना पडा है।

यज्ञशालाकी रचना शरीरकी घटनापर हुई है, यह ज्ञान हो जानेके पश्चात् 'आत्माग्नि ही तनूनपात् अग्नि है' यह बात स्पष्ट हो जाती है और पूर्वोक्त सब वर्णन ठीक प्रकार ध्यानमें आ सकता है। इसका ठीक ठीक ज्ञान होनेके

पश्चात् ही वैदिक यज्ञोंका तत्त्वज्ञान ठीक प्रकार समझ में आ सकता है, इसलिए पाठकोंसे प्रार्थना है, कि वे इस बात को विशेष रूपसे समझनेका यत्न करें।

उपनिषदोंमें भी इस शरीरयज्ञका वर्णन इसी प्रकार है, देखिए—

तस्यैवं विदुषो यज्ञस्यात्मा यजमानः श्रद्धा  
पत्नी० ॥ ( नारायणोपनिषद् ८० )  
पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य यानि चतुर्विंशति वर्षाणि  
तत्प्रातःसवनम् ॥ ( छां. उ. ३, १६, १ )

'इस यज्ञका यजमान आत्मा है और यजमानपत्नी श्रद्धा है। पुरुषही यज्ञ है, उसकी चौबीस वर्षकी आयु प्रातःसवन है।' इत्यादि वर्णनोंसे स्पष्ट हो जाता है कि, इस शरीरमें जो शतसांवत्सरिक यज्ञ चल रहा है, वही सत्य यज्ञ है और उसीका यजमान आत्मा और यजमानपत्नी श्रद्धाबुद्धि है और इसी यज्ञका प्रातःसवन प्रारंभ की २४ वर्षोंकी आयु है। इस यज्ञकी दृष्टिसेही वेदके मंत्रोंको हमें देखना चाहिए।

इस से पूर्व जो विचार किया है, वह इसी दृष्टि से किया है, इस से पाठकों के मन में बात आ गई होगी कि, यही उपनिषदों की दृष्टि होने से सत्यदृष्टि है। और इसी सत्य दृष्टि से वेद का अर्थ देखना चाहिये।

### ( ६५ ) अन्य बातों का उपदेश ।

इस से कोई यह न समझे कि, वेद में अध्यात्म से भिन्न कोई अन्य बात ही नहीं है। अन्य बातें बहुत ही हैं, उन का प्रसंगवशात् विचार अवश्य होगा। परन्तु पूर्वोक्त विवरण से यही बताया है कि, ये देवतावाचक शब्द मुख्य अर्थ में किस प्रकार आत्मा का भाव बताते हैं। स्थान स्थान के सूक्तों में परमात्मा ब्रह्म, राजा, विद्वान्, शूर आदि प्रकरणों के अनुसार अग्निशब्द ही उक्त पदार्थों का वाचक है। इस बात के उदाहरण भी यहाँ विशेष रूप से देने की कोई आवश्यकता ही नहीं है।

'चत्वारि श्रृंगः' यह ऋग्वेद का अग्निदेवता का मंत्र भगवान् पतंजलि महामुनिने 'शब्द' पर लगाया है। इस से 'अग्नि' देवता का एक अर्थ 'शब्द' है, यह बात स्पष्ट होती है। यह मंत्र ( ऋ. ४-५८ ३ ) में

हैं और इस का अध्यात्मविषयक अर्थ इसी लेख में दिया ही है। यहाँ इतना ही बताना है कि, जिस प्रकार इस का अध्यात्मविषयक अर्थ होने पर 'शब्द' विषयक अर्थ हटा नहीं है, उसी प्रकार अन्यान्य मंत्रों के विषय में पाठकों को समझना चाहिये। 'अग्नि' शब्द परमात्म-वाचक भी है, देखिये—

### (६६) परम आत्मानि ।

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम । स नो मह्यादितये पुनर्दात् पितरं च दृशोयं मातरं च ॥ ( २७; ऋ १-२४-२ )

'हम (अमृतानां प्रथमस्य) अमर देवों में पहले (देवस्य अग्ने.) अग्निदेव का अर्थात् तेजस्वी परमात्मा का (चारु नाम) सुन्दर नाम (मनामहे) मन में लाते हैं। वही हम सब को (अदितये) प्रकृति में पुनः डालता है और जिस से हम माता-पिता को देखते हैं।'

इस मंत्र में 'सब से पहले अग्निदेव' अर्थात् तेजस्वी परमात्मा का वर्णन स्पष्ट है। इसी प्रकार अन्यान्य पदार्थों के वाचक स्पष्ट मन्त्र अनेक हैं। उन का यहाँ भूमिका में विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन का स्पष्ट विचार सूक्तों के विचार करने के समय ठीक प्रकार किया जायगा। यहाँ इस भूमिका में अग्निमन्त्रों का आध्यात्मिक

विचार करने की राति इसलिये विशेष रूप से बताई है कि साधारण पाठक 'अग्नि' शब्द से 'भाग' का ही ग्रहण करते हैं और वेदमन्त्रों के अर्थ का अनर्थ करते हैं, इसलिये अग्नि-देवता का मुख्य अध्यात्म स्वरूप जानने की इस स्थानपर विशेष आवश्यकता है। उपनिषदोंमें यही बात स्थान स्थानपर कही है, देखिए—

अयमग्निवैश्वानरो योऽयमन्तः पुरुषे येनेदमन्नं पच्यते, यदिदमद्यते ॥ ( बृ उ ५।९ )

'यही वैश्वानर अग्नि है, जो इस मनुष्यशरीर के अन्दर है, जो खाये हुए भक्षक पचन करता है।' यहाँ वैश्वानर अग्निका आध्यात्मिक रूप बताया है, वैश्वानर अग्निका आधिभौतिक रूप इसी लेखके प्रारंभमें बताया है। वहीं उसको पाठक देख सकते हैं। इसी प्रकार अग्निके भिन्न-भिन्न स्वरूप का विचार वेदमें स्थानस्थानके मंत्रोंमें है और उसको उसी प्रकार उस उस स्थानपर समझना चाहिए।

### (६७) सारांश ।

सारांश यह है कि, इस भूमिकामें जो विचार किया है, वह बिल्कुल नया नहीं है। ब्राह्मणग्रंथोंमें, उपनिषदोंमें तथा संपूर्ण आर्ष वाङ्मयमें यही विचार स्थानस्थानपर है। उसको स्पष्ट शब्दों में यहाँ एकत्रित किया है। इसका अधिक विचार पाठक भी अपनी स्वतंत्र बुद्धिसे करें और वेदके अर्थकी अधिक खोज करें।

## अग्निदेवताके विचार करनेकी दिशा ।

ऋग्वेद का प्रथम सूक्त 'वैश्वामित्रमधुच्छंदा' ऋषिवा देखा हुआ है। इसी प्रकार का गायत्री 'विश्वामित्र' ऋषिका देखा हुआ एक सूक्त तृतीय मंडलमें है। दोनों सूक्त 'अग्नि' देवता के हैं और दोनों में ९ मन्त्र हैं, तथा शब्दों और वाक्यों की समानता भी बहुत है। सबसे प्रथम यह समानता देखने योग्य है—

वैश्वामित्रो मधुच्छंदाः ( ऋ० १।१ )

( १ ) अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृ-  
त्विजं होतारं ॥ १ ॥

( २ ) गोपामृतस्य व्रीद्विष्विं वर्धमानं स्व दमे ॥ ८ ॥

( ३ ) राजन्तमध्वराणां ॥ ८ ॥

( ४ ) देवो देवेभिरागमत् ॥ ८ ॥

गायिनो विश्वामित्रः ( ऋ० ३।१० )

त्वां यज्ञेष्वृत्विजमग्ने होतारमीळते ॥ २ ॥

गोपा ऋतस्य व्रीद्विष्वे दमे ॥ २ ॥

स केतुरध्वराणाम् ॥ ४ ॥

अग्निदेवेभिरागमत् ॥ ४ ॥

इस प्रकार देवताकी स्तुतिमें अनेक स्थानोंमें समानता है। शब्द, वाक्य और मन्त्रभाग तथा पूर्ण मन्त्र एक देवता

के वर्णनमें तथा भिन्न देवताओं के वर्णन में भी पुनःपुनः वैसेके वैसेही आ गये हैं। यह समानता यहाँ प्रथमतः

देखने का उद्देश्य इतनाही है कि, मंत्रोंका अर्थ निश्चित करने के लिए इस समानताके देखनेसे बहुत सहायता होती है ।

अग्नि का विचार करनेके पूर्व 'अग्नि' के विशेषणरूप जो शब्द इस सूक्तमें आ गये हैं, वे किस पदार्थके विशेषतया बोधक हो सकते हैं, इसका प्रथम विचार करना आवश्यक है । 'अग्नि' शब्दसे लोकभाषामें 'आग' का बोध होता है, परन्तु इस सूक्तमें केवल 'आग' का भावही है, ऐसा नहीं माना जा सकता; क्योंकि कई शब्दोंकी सार्थकता 'आग' अर्थ लनेसे नहीं होती है । देखिये-

( १ ) रत्न-धा-तमः = रत्नोंका धारण करनेवाला 'रत्न+धा' होता है, और अनेक प्रकारके रत्नोंका धारण करनेवाला 'रत्न+धा+तम' कहलाता है । प्रत्यक्ष देखा जाय, तो यह 'आग' स्वयं अपने शरीरपर अनेक रत्नोंका धारण करती हुई दिखाई नहीं देती, इसलिए यह शब्द विशेष कर किसी अन्य पदार्थ की सूचना दे रहा है, ऐसा प्रतीत होना स्वाभाविक है ।

( २ ) कविऋतुः = 'कवि' शब्द केवल 'भाग' का गुण बतानेके लिए प्रयुक्त हुआ है, ऐसा मानना असंभव है । क्योंकि भाग में कवित्वकी प्रत्यक्षता नहीं है । कवि वह होता है कि, जो अतीन्द्रिय बातोंको शब्दोंके द्वारा प्रकट करता है । यह बात 'भाग' में नहीं है । 'ऋतु' शब्द 'प्रज्ञा' वाचक मानते हैं, यह भाव भी 'भाग' में नहीं है । इसलिए मुख्य दृष्टिसे 'कवि+ऋतु' शब्द आगका सूचक यहां नहीं हो सकता । कवि मानव ही होगा । ऋतु भी मानव ही करता है ।

( ३ ) सत्यः = यह शब्द भी त्रिकालाबाधित तत्त्वका बोधक है । इसलिए 'आग' का बोधक नहीं है, क्योंकि भाग बुझ जाती है और तीनों कालोंमें एक जैसी नहीं रहती ।

( ४ ) पुरोहित, ऋत्विज्, होता = ये शब्द भी मुख्य दृष्टिसे आगके बोधक नहीं हो सकते । ये मानवोंके बोधक हैं ।

इस प्रकार ये विशेषणरूप शब्द 'आग' का बोध नहीं कराते, परन्तु किसी अन्य पदार्थमें ये अन्वयक होते हैं । जिस पदार्थमें सूक्तके सब शब्द सुसंगत हो सकते हैं, वही पदार्थ सूक्त का 'मुख्य देवता' है । अन्य भाव गौण वृत्ति

से मानना न मानना योजक की योजना पर ही अवलंबित है । यहां हमें देखना है कि, इस सूक्तमें मुख्य दृष्टिसे किस का वर्णन हो रहा है और किस रीतिसे गौण दृष्टिमें अन्य पदार्थोंका बोध हो सकता है । इसका निश्चय करनेके लिए इस सूक्तमें निम्न दो शब्द विशेष महत्त्व रखते हैं-

( ५ ) अंग = 'अंग' शब्द का अर्थ 'अवयव' है । 'शरीर, अवयव, शरीरके अंग अथवा भाग' इस अर्थमें मुख्यतः यह शब्द प्रयुक्त होता है । हर एक प्राणिमात्रको अपना शरीर अथवा अपने शरीर के अंग अत्यंत प्रिय होते हैं, इसलिए अवयववाचक 'अंग' शब्दका 'प्रिय' ऐसा अर्थ पीछेसे हाने लगा । यदि इस सूक्तका 'अंग' शब्द अपने ही निज 'अवयव' का बोधक माना जायगा, तो मानना पड़ेगा कि, इस सूक्तमें वर्णित 'अग्नि' अपने ही शरीरमें निज अवयवरूप अथवा अपना अंगभूत ही कोई पदार्थ है, जहां यह 'अंग' शब्द पूर्ण रीतिसे सार्थक हो सकता है । इस विषय में निम्नलिखित शब्द विशेष सूक्ष्म दृष्टिसे देखनेयोग्य हैं-

( ६ ) अंगिराः = (अंगि+रस) = अपने शरीरके अंगोंमें जो एक जीवनरूप रस होता है, उसको 'अंगीय-रस' कहते हैं । यही जीवनरूप अंग-रस 'अंगि+रस्' शब्दसे बताया जाता है । इस विषय में ब्राह्मण ग्रंथों का कथन देखनेयोग्य है-

( १ ) तद्देवा रेतः प्राजनयन्, ततोऽंगाराः समभवन्, अंगारेभ्योऽगिरसः । ( शं० ब्रा० ४।५।१।८ )

( २ ) तं वा एतं अंगरसं संतं अंगिरा इत्याचक्षते । ( गो० ब्रा० ५० १।७ )

( ३ ) येऽगिरसः स रसः ये अधर्वाणः... तद्देवजं . तद्मृतं ... तद्, ब्रह्म । ( गो० ब्रा० ५० ३।४ )

" ( १ ) देवोंने रेत उत्पन्न किया, उससे अंगार (जलते हुए कोयले) उत्पन्न हुए, उनसे अगिरस हुए हैं । ( २ ) जो अंग+रस है, वही अंगिर (अंगि-रस्) है । ( ३ ) जो अंगिरस् है, वह रस है, यही अधर्वा है और यही औषधी ... अमृत ... और ब्रह्म है । "

इस कथन से स्पष्ट हो रहा है कि "अंगि-रस्" मुख्य-तया शरीर का जीवनरस है । क्योंकि जो यह जीवनरस शरीरके अंगों और अवयवों में है, वही अमृत रस है, उर्म

में प्रकृति की शक्ति रहती है। इसलिये जबतक यह जीवन-रस शरीर में ठीक अवस्था में रहता है, तबतक ही आरोग्य रहता है। इसीलिये इस रस को गोपथ-ब्राह्मण में 'भेषज' अर्थात् दोषनिवारक औषधि कहा है। अंगिरस का यह मूल स्वरूप है। और यह अपने शरीर के अंगों में ही व्यापक है, हतनाही नहीं, परन्तु अपना अंगरूप ही सख है। इस प्रकार जो जीवन का मन्त्र 'अगिरस् और अंग' शब्दों से बनाया जाता है, वही इस सूक्तका प्रतिपाद्य विषय मुख्य रूप से है। इस अर्थ को ध्यान में धरनेसे सूक्त का मुख्यार्थ ध्यान में आ सकता है।

मुख्य दृष्टि और गौण दृष्टि, ऐसी दो दृष्टियोंसे वेदका अर्थ देखना होता है। मुख्य प्रतिपाद्य विषय में मन्त्र के संपूर्ण शब्द पूर्णतया सगत होते हैं और गौण विषय में लक्षणा करके, अर्थ का सकोष करके, केवल भाव ही देखा जाता है। इन दो प्रकार के अर्थों का अन्य वर्गीकरण, जो वैदिक सारस्वत में सुप्रसिद्ध है, यहां अवश्य देखना चाहिये। वेद-मंत्रोंका अर्थ— ( १ ) आध्यात्मिक, ( २ ) आधिभौतिक, और ( ३ ) आधिदैविक ज्ञानक्षेत्रसे भिन्न भिन्न होता है। आध्यात्मिक क्षेत्र वह है कि, जो आत्मासे लेकर स्थूल देह-तक फैला है, आधिभौतिक क्षेत्र वह है कि, जो प्राणिमात्रके संघात में फैला है, तथा आधिदैविक क्षेत्र वह है कि जो संपूर्ण जगत् की स्थिर चर समष्टिमें व्यापक है। उक्त तीनों क्षेत्रोंका भाव बतानेवाला सक्षिप्त और बालबोध शब्द ' ( १ ) व्यक्ति, ( २ ) समाज और ( ३ ) जगत् ' येही हैं। यद्यपि इनसे संपूर्ण पूर्वोक्त क्षेत्रों का बोध नहीं होता, तथापि उनका साधारण तात्पर्य इन शब्दोंसे जाना जा सकता है।

'अंग, अंगरस्' आदि शब्दोंसे बोधित होनेवाला अंग अग्नि है, वह 'आग' नहीं है, प्रत्युत हमारे शरीर के अंगों में कार्य करनेवाला जीवनरूप अंगरस ही है, इस बातका सूचना इससे पूर्व दी गई है। शरीरका 'अंगरस' व्यक्तिगत होनेसे आध्यात्मिक पदार्थ है। इसीका आधि-भौतिक अर्थात् सामाजिक किंवा राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिनिधि 'राष्ट्रीय जीवन' उत्पन्न करनेवाला संघ होना स्वाभाविक है। यही 'पंचजन, वैश्वानर या विश्वमानुष' है। तथा आधिदैविक क्षेत्र में इसीका रूप अग्नि अथवा आगमें

देखा जा सकता है। इससे स्पष्ट हुआ है कि, यहां का 'अग्नि' शब्द किस क्षेत्र में किस पदार्थ का बोधक है। यद्यपि सूक्त का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'जीवनाग्नि' है, तथापि 'राष्ट्रीय जीवनाग्नि' और 'पंचभौतिक अग्नि' भी उक्त प्रकार बोधित होते हैं।

प्रत्येक प्राणिमात्र के शरीर में जो जीवनरस है, वही उस व्यक्ति का सच्चा कल्याण करता है। इसलिये यह जीवनशक्ति संपूर्ण अन्य शक्तियों की अपेक्षा सब से अधिक कल्याण करनेवाली है। इसी प्रकार जगत् के व्यवहार में अग्नि का महत्त्व है। इस आग्नेय शक्ति का यह कार्य विचार की दृष्टि से सर्वत्र देखनेयोग्य है। इसलिये वेद में अन्यत्र कहा है—

- ( १ ) अग्निमीडिष्य यंतुरम् ॥ ( ऋ. ८.१९-२ )  
 ( २ ) अग्निमीडिष्यावसे ॥ ( ऋ. ८.७१-१४ )  
 ( ३ ) अग्निमीडीत मर्यः ॥ ( ऋ. ५.२१-४ )  
 ( ४ ) अग्निमीडीताध्वरेहविष्मान् ॥ ऋ. ६-१६-४६  
 ( ५ ) अग्निमीडे कविक्रतुम् ॥ ( ऋ. ३-२७-१९ )  
 ( ६ ) अग्निमीडेभ्यं कविम् ॥ ( ऋ. ५.१४-५ )  
 ( ७ ) अग्निमीडे पूर्वचित्ति नमोभिः ॥

( वा. य. १३-४३ )

- ( ८ ) अग्निमीडेभुजां यविष्टम् ॥ ( ऋ. १०-२०-२ )  
 ( ९ ) अग्निमीडे व्यष्टिषु ॥ ( ऋ. १-४४-४ )

' ( १ ) नियामक अग्नि की प्रशंसा कर, ( २ ) अपने संरक्षण के लिये अग्नि का वर्णन कर, ( ३ ) मर्य अग्नि की स्तुति करे, ( ४ ) यज्ञ में हविर्द्रव्य लेनेवाला अग्नि का महत्त्व कहे, ( ५ ) कवि और क्रतुरूप अग्नि का वर्णन करता हूं, ( ६ ) कवि अग्नि वर्णनीय है, ( ७ ) पहिले प्रदीप्त अग्नि को नमस्कारों या अर्चोंद्वारा बढ़ाता हूं, ( ८ ) ( भुजां ) भोग करनेवालों में ( यविष्टं ) युष्ठा अग्नि का वर्णन करता हूं, ( ९ ) ( व्यष्टिषु ) उदय के समयों में अग्नि का वर्णन करता हूं । '

ये मन्त्रभाग बता रहे हैं कि आग्नेय शक्ति का महत्त्व कितना है। इन मंत्रों का महत्त्व उस समय ध्यान में आ सकता है कि, जिस समय तीनों क्षेत्रों में अग्निस्वरूप का ठीक ठीक पता लग जाय। उक्त मन्त्रभागों में स्पष्ट बताया है कि, यह अग्नि ( यंतुर ) नियामक, व्यवस्थापक

अथवा प्रबधकर्ता है, ( कवि ) शब्दशास्त्र में प्रवीण है, ( भुजां यविष्ठं ) भोग करनेवालों में युवा है, तथा ( व्युष्टिषु ) उद्य के समय में इस का चिंतन किया जाता है । ये शब्द अग्नि का स्वरूप व्यक्त कर सकते हैं । अग्नि की जो प्रशंसा की जाती है, वह अपने ( अवसे ) संरक्षण के लिये ही है, क्योंकि यही अपना सच्चा संरक्षण करता है । इतने वर्णन से अग्नि के स्वरूप का थोड़ासा निश्चय हुआ है और उस का पुरोहित होने का भाव भी ध्यान में आ गया है । अब देखना है कि, ' ईडे ' शब्द का वास्तविक तात्पर्य क्या है । क्योंकि अग्नि के साथ ' ईडे ' शब्द का प्रयोग कई मंत्र में हुआ है और यह शब्द विशेष हेतु से ही प्रयुक्त होता है । प्रायः इस का अर्थ ' प्रशंसा, स्तुति, वर्णन ' आदि करते हैं और हमने भी ये ही अर्थ ऊपर रखे हैं, परन्तु हम का विशेष भाव यहाँ है । यह भाव निम्न लिखित मंत्रों से व्यक्त हो सकता है—

( १ ) ईळामहा ईड्याँ आज्येन ॥ ( ऋ. १०-५३-२ )

( २ ) तं हि शश्वत ईळते सूचा देवं घृतश्रुता  
अग्निं हव्याय वोळहवे ॥ ( ऋ. ५-१४-३ )

( ३ ) देवाँ ईळाना हविषा घृताची ॥ ( ऋ. ५-२८-१ )

( ४ ) को अग्निमीडे हविषा घृतेन ॥ ( ऋ. १-८४-१८ )

( १ ) ( आज्येन ) घी के साथ पूजनीयों की पूजा करेंगे, ( २ ) ( घृतश्रुता सूचा ) घीवाले चमस से अग्नि-देव की पूजा करते हैं, ( ३ ) घी से देवों की पूजा होती है, ( ४ ) घृतयुक्त द्रवि से कौन अग्नि की पूजा करता है ?

इन मंत्रभागों में ' ईड् ' के साथ ' आज्य ' का संबंध है । अर्थात् इस के विचार से पता लगेगा कि, ' ईडे ' शब्द का अर्थ केवल स्तुति नहीं है, परन्तु घी, ( हवि ) अन्न आदि के साथ अर्पण का संबंध है । यह भाव ध्यान में धरकर निम्न लिखित मंत्र देखिये—

( १ ) अग्निमीडे पूर्वचित्तं नमोभिः ॥ ( वा. य. १३-४१ )

( २ ) अग्निमीडे भुजां यविष्ठम् ॥ ( ऋ. १०-२०-२ )

( ३ ) घृता चिरीडानो वहिर्नमसा ॥ ( अ. ५-२७-४ )

( १ ) ( नमोभिः ) अन्नोंद्वारा अग्नि की पूजा करता हूँ,

( २ ) भोग करनेवालोंमें युवा अग्नि की अर्थात् जबान होने के कारण अधिक खानेवाले अग्नि की मैं पूजा करता हूँ,

( ३ ) घी और ( नमसा ) अन्न से अग्नि की पूजा होती है ।

इन मंत्रों में ' नम ' शब्द है, पूर्वमंत्रों के साथ इनका विचार करने से यहाँ ' नमः ' का अर्थ ' अन्न ' प्रतीत होता है । अन्न, वज्र और नमन ये तीन अर्थ ' नम ' के हैं । प्रसंगानुकूल यहाँ अन्न इष्ट है, क्योंकि उसके साथ घी भी है । अन्न और घीसे अग्नि की स्तुति, प्रशंसा आदि नहीं हो सकती, परन्तु उसका संवर्धन हो सकता है । इसलिये ' अग्निमीडे पुरोहितं ' इन पदोंका अर्थ मैं प्रत्यक्ष हितकर्ता ( अग्नि ) जीवनाग्नि का संवर्धन करता हूँ । ' ऐसा हो सकता है । घी और उत्तम अन्नों से जीवनशक्ति का संवर्धन होना संभवनीय भी है, इसलिये यह अर्थ प्रत्यक्ष अनुभव में भी आ सकता है ।

वेद में अन्न वाचक ' इष्, इप् ' ये शब्द हैं । नरुक्त दृष्टिसे इनका संबध ' इष्, इर, इरा, इडा, ईरा, इड, ईडा, इळा, इला ' शब्दों के साथ है और इसीलिये इन सब शब्दों के अनेक अर्थों में ' अन्न ' भी एक अर्थ है । यही कारण है कि, अन्न और घी के साथ ही अग्नि की ( ईडा ) वधाई होती है, जो पूर्वोक्त मंत्रोंसे सूचित हो गई है । सब प्रणी अन्न चाहते हैं, इसलिये ' इष् ( इच्छ ) ' का अर्थ अन्न होता है और वही भाव ' ईड्, ईळ् ' आदि शब्दों में है । हमसे ' ईडे ' का सम्बन्ध अन्नसे है, यह बात सिद्ध है ।

इस सूक्त में अग्नि शब्द का मुख्य स्वरूप जीवनाग्नि है, यह बात पूर्व ही बताई गई है । यह जीवनाग्नि घी और अन्न के योग्य सेवन से बढ सकता है, यह दीर्घायु-प्राप्ति का बोध यहाँ इस मंत्र में बताया गया है । यही जीवनाग्नि किंवा आत्माग्नि, अगिरम, अगारम, अमृत रम अथवा ब्राह्म रस है, जिसका योग्य अन्न और उत्तम घीद्वारा पोषण होता है, यही सूचना इस मंत्र में ' ईड् ' धातु कर रहा है । यह आध्यात्मिक जीवनाग्नि के पक्ष में अर्थ है । आधिभौतिक पक्ष में राष्ट्रीय जीवनाग्नि गुरु और उपाध्यायों के रूपमें समाजमें होता है, इनका सत्कार अन्न-दि-द्वारा करना योग्य है । आधिदैविक पक्ष में हवनीय अग्नि घी आदि हवनीय पदार्थों द्वारा बढ़ाया जाता है, इत्यादि भाव प्रत्येक समयमें पाठक विचार की दृष्टिसे देखते जाय । वैयक्तिक और सामाजिक अर्थ मानवी उन्नति के साधक है और पांचभौतिक अग्निपरक अर्थ सामान्य दृष्टि से स्थूल उपासनाका साधक है । अब और दो पदोंका विचार करेंगे—



‘ यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥  
होतारं रत्नधातमम् ॥ ’

इन दोनों पादों में अग्नि का स्वरूप-वर्णन है । सब से प्रथम ‘ यज्ञस्य देवम् ’ ये शब्द विशेष महत्त्व रखने के कारण यहां देखनेयोग्य हैं । यह अग्नि यज्ञ का देवता है । जिस यज्ञ का देवता अग्नि है, वह यज्ञ कौनसा है ? और कहां चल रहा है ? इस बात का पता लगाना आवश्यक है । इसका विचार करने के लिये निम्न वाक्य देखिये—

हृदयमें यज्ञ ।

अविन्दन्ते अतिहितं यदासीत्

यज्ञस्य धाम परमं गुहा यत् ॥ ( ऋ० १०।१८।१।२ )

‘ जो ( यज्ञस्य परमं धाम ) यज्ञ का परम स्थान ( गुहा ) बुद्धि में, हृदय में है, वह ( अति-हितं ) अत्यंत गुप्त है, परन्तु ज्ञानी सत्पुरुष उस को ( अविन्दन्ते ) प्राप्त करते हैं । ’ इस मंत्र में यज्ञ का स्थान हृदय है, ऐसा स्पष्ट कहा है । हृदयस्थान में अत्यन्त गुप्त रूप से अर्थात् अदृश्य रीति से यह यज्ञ चल रहा है । जो विशेष ज्ञानी हैं, वे ही इस को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से जानते हैं । अन्य साधारण मनुष्य जो स्थूल दृष्टि के हैं, वे इस यज्ञ को देख नहीं सकते, इस का कारण उन का अज्ञान ही है । ऐसे अज्ञानी मनुष्यों को व्यक्त रूप में बताने के लिये ही बाह्य यज्ञ रचा गया है, जो अग्नि में आहुतियां डाल कर किया जाता है । तात्पर्य यह कि, मनुष्य की हृदयरूप गुहा में सच्चा यज्ञ गुप्त रीति से चल रहा है, उस का नकशा ही यह बाह्य यज्ञ है । इस बात का विशेष वर्णन क्रमशः आगे आ जायगा । अब यहां इस का और भाव देखना है, इस-लिये निम्न लिखित वचन देखिये—

( १ ) पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य यानि चतुर्थि-  
शति वर्षाणि तत्प्रातःसवनं... ॥ १ ॥ ... यानि  
चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि तन्माध्यंदिनं सवनं...  
॥ ३ ॥ . यान्यष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि तत्तृतीयस-  
वनं... ॥ ५ ॥ ( छां. ३-१६ )

( २ ) यद्यज्ञ इत्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तत् ॥  
( छां. ८-५-१ )

( ३ ) अहं ब्रह्माहं यज्ञः ॥ ( बृ. १-५-१७ )

( ४ ) तस्यैवं विदुषो यज्ञस्यात्मा यजमानः,  
श्रद्धा पत्नी, शरीरमिध्मं, उरो वेदिः, लोमानि बर्हिः,  
वेदः शिखा, हृदयं यूपः, काम आज्यं, मन्युः पशुः,  
तपोऽग्निः, दमः शमयिता, वाग्घोता, प्राण उद्गाता,  
चक्षुरध्वर्युः, मनो ब्रह्मा, श्रोत्रमग्नीत्, यावद् ध्रियते  
सा दीक्षा, यदश्नाति तद्धविः, यत्पिबति तद्स्य  
सोमपानं..... यन्मुखं तदाहवनीयः..... ॥

( ५ ) स्वे शरीरे यज्ञं परिवर्तयामि ॥ ( प्राणाग्नि उ. २ )

( ६ ) अहं ऋतुरहं यज्ञः ॥ ( भ. गी. ९-१६ )

( ७ ) बुद्धीन्द्रियाणि यज्ञपात्राणि ॥ ( गर्भ उ. ४ ;  
प्राणाग्नि उ. ४ )

( ८ ) वाग्वै यज्ञस्य होता, चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युः,  
... प्राणो वै यज्ञस्योद्गाता, मनो वै यज्ञस्य ब्रह्मा  
( बृ० ३-१-१ )

‘ ( १ ) मनुष्य का जीवन-संपूर्ण आयु-ही एक यज्ञ है, पहिले २४ वर्ष का प्रातःसवन है, मध्य के ४४ वर्ष माध्यं-दिन सवन है, अंत के ४८ वर्ष तृतीय सवन है । ( २ ) जो यह यज्ञ है, वही ब्रह्मचर्य है । ( ३ ) मैं ब्रह्मा और मैं यज्ञ हूं । ( ४ ) इस ज्ञानी के यज्ञ में आत्मा यजमान, श्रद्धा यजमान पत्नी, शरीर इध्म, छाती वेदी, बाल बर्हि, वेद शिखा, हृदय यूप, वासना घी, क्रोध पशु, तप अग्नि, दम शमिता, वाणी होता, प्राण उद्गाता, चक्षु अध्वर्यु, मन ब्रह्मा, कान आग्नीध्र, व्रतपालन दीक्षा, भोजन हवि, जल सोमपान, मुख आहवनीय अग्नि है । ( ५ ) अपने शरीर में यज्ञ का परिवर्तन करता हूं । ( ६ ) मैं ऋतु और मैं ही यज्ञ हूं । ( ७ ) बुद्धि और इतर इंद्रिय यज्ञपात्र हैं । ( ८ ) यज्ञ का होता वाक् है, ... अध्वर्यु चक्षु है, ... उद्गाता प्राण है, ... और ब्रह्मा मन है । ’

यह यज्ञ का वर्णन विस्पष्ट रूप से बता रहा है कि, यह यज्ञ मनुष्य के अंदर ही हो रहा है । ‘ यज्ञ का स्थान हृदय में गुप्त है ’ ( ऋ० १०।१८।१।२ ) इस ऋग्वेद के कथन का आशय ही उपनिषद्कारों ने उक्त प्रकार स्पष्ट किया है । यही यज्ञ यहां इस ऋग्वेद के प्रथम सूक्त में है और इसी यज्ञ का देव ( यज्ञस्य देवं ) जो अग्नि है, वह हृदयस्थान में ही विराजमान है । अब पाठकों को पता लग सकता है कि, ‘ अंग, अंगिरस् ’ आदि पदोंद्वारा किस

रहस्य का कथन हुआ है । हृदय में जो आत्मशक्ति है, वही यह अग्नि है । यहां हृदय में बैठकर यही आत्मा आयुष्य की समाप्ति तक यज्ञ कर रहा है । यही क्रतु है । प्रत्येक वर्ष एक एक क्रतु करता है और इस प्रकार १०० वर्षों में १०० क्रतु होनेके कारण इमीका नाम ' शतक्रतु ' होता है । यह शतक्रतु आत्मा ही ' इंद्र ' नाम से प्रसिद्ध है और इसी आत्मा शतक्रतु इंद्र की शक्ति ' इंद्रियों ' में कार्य कर रही है । इस प्रकार यहां इंद्र और अग्नि एक ही हैं । इसीलिये कहा है कि—

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुडमान् । एकं सखिषा बहुधा वदंत्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥ ( ऋ १।१६४।४६ )

' एकही सट्टस्तुका ज्ञानी लोग इंद्र, अग्नि, मित्र, वरुण, सुपर्ण, यम, मातरिश्वा आदि विविध नामोंसे वर्णन करते हैं । ' जिस एक आत्माका विविध नामोंसे उक्त प्रकार वर्णन होता है, वही आत्मामि इस ऋग्वेद के प्रथम सूक्तमें वर्णन किया गया है । और यही ' यज्ञका देव ' है । क्योंकि जबतक यह इस शरीर के हृदयमंडप में रहकर यज्ञ करता है, तबतक ही यह यज्ञ चलता रहता है । जब यह चला जाता है, तब यज्ञ समाप्त हो जाता है । पूर्ण शतायु ( अर्थात् १०८ अथवा १२० वर्ष की आयु ) का उपभोग लेकर स्वेच्छा से यज्ञ समाप्त करके यह नला गया, तो कहा जाता है कि, ' इसका यज्ञ समाप्त हुआ, ' परन्तु जब विविध व्याधियां इस पर आक्रमण करती हैं और इसका अकालमृत्यु होता है, तब कहा जाता है कि राक्षसोंने इस यज्ञ का विध्वंस किया । इस प्रकार बीच में अकाल में ही यज्ञ का विध्वंस न हो, ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये । क्या ऐसा प्रबन्ध करना मनुष्य के अधीन है ? वेदादि शास्त्रों के परिशालन से पता लग सकता है कि, योगादि साधन प्रारम्भ से ही यदि किये जायं, तो उक्त सिद्धि प्राप्त हो सकती है । इस हेतु से ही इस प्रथम मंत्र में कहा है कि, यही ' यज्ञ का देव ' है । यदि इसका यथायोग्य सत्कार हुआ, तो यह यज्ञ की समाप्ति ठीक प्रकार कर सकेगा, अन्यथा चला जायगा । प्रत्येक मनुष्य को यह सूचना यहां मिल रही है कि, ' यज्ञका देव ' अपने हृदय में है, उसको देखना चाहिये और हमका महत्त्व

जानना चाहिये । इस आध्यात्मिक दृष्टि से वेदमंत्रों का मनन करने से उक्त ज्ञान प्राप्त हो सकता है ।

यह ' यज्ञ का देव ' है और यही ' ऋत्विज् ' है । पाठकों को यहां ध्यानपूर्वक देखना चाहिये कि, यही यज्ञ का देव और ऋत्विज् एक ही हुए हैं ( १ ) यज्ञ का देव, ( २ ) पुरोहित, ( ३ ) ऋत्विज्, ( ४ ) होता आदि सब बाह्य यज्ञ में अलग अलग होते हैं, परन्तु इस प्रथम मंत्र में वर्णित यज्ञ में ये सब एकही वस्तु में मिल गये हैं । जो यज्ञ का देव है, वही पुरोहित, ऋत्विज् और वही होता है । इतना ही नहीं प्रत्युत अन्य याजक भी वही एक है । इसीलिये इस मंत्र में वर्णन किया हुआ यज्ञ अध्यात्म-यज्ञ है और बाह्य यज्ञ नहीं है । क्योंकि अध्यात्मयज्ञ में आत्मा ही सब कुछ बनता है, वैसे इस बाह्य यज्ञ में नहीं हो सकता । इस बाह्य यज्ञ में यज्ञ का देव अन्य होता है तथा ऋत्विज्, यजमान आदि उससे भिन्न होते हैं । जहां अग्निष्टोमादि यज्ञ होते हैं, वहां देखने से पता लग सकता है कि, उक्त भिन्नता कितनी स्पष्ट होती है । परन्तु इस मंत्र में स्पष्ट रीति से कहा है कि, यज्ञ का देव और ऋत्विज् एक ही है । अध्यात्म में यह एकता कैसी होती है देखिये ।

' वाणी, प्राण, चक्षु, मन, ये क्रमशः होता, उद्गाता, अध्वर्यु, ब्रह्मा हैं । ( वृ० उ० ३।१।१-६ ) ' जिन्होंने आत्मविचार किया है, उनको पता है कि, आत्मा की शक्ति ही वाणी, प्राण, चक्षु और मन में कार्य कर रही है, इसलिये आत्मा ही सब यज्ञ कर रहा है । वही यज्ञ का देव है, जिसकी उपासना यज्ञ में की जाती है, वही यजमान है, जो यज्ञ करता है, वही होता, उद्गाता, अध्वर्यु, ब्रह्मा आदि ऋत्विज् है, जिन के द्वारा यज्ञ कराया जाता है । इस अवस्था में उपास्य और उपासक एक ही हो जाते हैं । यह भाव प्रथम मंत्र में वेदने दिया है । जो कहते हैं कि, अध्यात्मविद्या उपनिषदों में ही है और वेद में नहीं है, उनको इस मंत्र का विचार उक्त प्रकार अवश्य करना चाहिये । तब पता लगेगा कि वेदमंत्रों की गुप्त विद्या अब तक ही गूढ़ रही है और उसमें से थोड़ीसी उपनिषदों में प्रकट हो गई है । अस्तु । अब ऋत्विज आदि दत्तों का तात्पर्य देखना चाहिये ।

ऋत्विज् = ( ऋतु + यज् ) = जो ऋतु के अनुसार यज्ञ करता है । अध्यात्मदृष्टि से व्यक्ति में छः ऋतु हैं । ( १ ) उत्पत्ति, ( २ ) अस्तित्व, ( ३ ) वर्धन, ( ४ ) विपरिणाम, ( ५ ) क्षीणता और ( ६ ) नाश । जगत् के संपूर्ण पदार्थों में ये छः ऋतु हैं । कोई पदार्थ ऐसा नहीं है कि, जिसमें ये न हों । वनस्पति, पशु, पक्षी, तथा मनुष्य इनमें ये प्रत्यक्ष हैं । प्राणिमात्र में जो आत्मारिण है, वह इन छः ऋतुओं में प्राप्त ऋतु के अनुकूल व्यापार करता है । आत्मा की प्रेरणा से बालक पैदा होता है, वह अपने अस्तित्व के लिये प्रयत्न करता है, शरीरादि को बढ़ाता है, बढ़ते बढ़ते परिपक्व हो जाता है, पश्चात् क्षीणता का ऋतु प्रारम्भ होता है और अन्त में नाश होता है । इस प्रकार इस यज्ञ का प्रारम्भ और अंत आत्मा ही करता है । इन व्यापारों में आत्मा की शक्ति का कार्य देखना इष्ट है । वैदिक धर्म की यदि कोई विशेषता है, तो यही है कि, यह वैदिक धर्म हरएक स्थान पर आत्मा की शक्ति की जागृति कराता है । अस्तु ।

इस रीतिसे व्यक्तिके शरीरमें आत्मा का ऋतुओंके अनुकूल कार्य देखा जाता है, यही अध्यात्मज्ञान है । आत्माके संबंधसे जिसकी उत्पत्ति है, वह अध्यात्म ( अधि+आत्मा ) है । हरएक मनुष्य को ऋतुओंके अनुकूल कार्य करना चाहिए, यह उपदेश यहां मिलता है । बाल्य, तारुण्य और वार्धक्य इन तीन कालोंमें प्रत्येकमें दो ऋतु होनेसे आयुभर में छः ऋतु होते हैं । प्रत्येक ऋतुमें जो करनेयोग्य कर्तव्य होते हैं, उनको उत्तम प्रकार करना अत्यावश्यक है । कर्तव्य स्वयं अपने विषयमें जैसे होते हैं, वैसे ही दूसरोंके संबंधके कारण भी उत्पन्न होते हैं । ये सब ऋतुके अनुकूल ही करने चाहिए । मनुष्यके संपूर्ण आयुमें छः ऋतु है, उसी प्रकार सालमें छः ऋतु हैं । इन ऋतुओंके अनुसार अपनी ऋतुचर्या रखनेसे आयु, आरोग्य और बल प्राप्त होता है । इसी प्रकार मासमें और प्रतिदिन ऋतु होते हैं । इसका कोष्ठक यह है—

आयुमें ऋतु	वर्षमें ऋतु	मासमें ऋतु	दिनमें ऋतु
१०० वर्ष	१२ मास	३० दिन	२४ घण्टे
जन्म, बालपन	वसंत	प्रतिपदा	प्रातःकाल
कुमारावस्था	ग्रीष्म	अष्टमी	मध्याह्न
तारुण्य	वर्षा	पूर्णिमा	सायंकाल

वृद्धता	शरद्	षष्ठी	रात्रिका प्रारंभ
क्षीणावस्था	हेमंत	द्वादशी	मध्यरात्र
अंतसमय	शिशिर	अमावास्या	रात्रि का अंतिम प्रहर ।

इस प्रकार समय के छोटे या बड़े विभाग में ऋतुओंकी कल्पना की जाती है और प्रत्येक प्राप्त ऋतुकाल में व्यक्ति-विषयक, समाजविषयक और जगद्विषयक कर्तव्य अवश्य पालन होना चाहिए । यज्ञका देव आत्माप्रि है, वह ऋतुके अनुसार अपने कर्तव्य करता है, इसलिए हरएकको वैसे करना अत्यावश्यक है, जो ऋतुके अनुसार अपना कर्तव्य योग्य रीतिसे करेगा, वही उन्नत होगा और जो न करेगा वह अवनत होगा । यज्ञका देव हमारा आदर्श है । उसके गुण, धर्म और कर्म वेदमंत्रों में इसलिए कहे हैं, कि उसके अनुसार मनुष्य कार्य करे और अपनी उन्नतिका साधन करे ।

आधिभौतिक दृष्टिसे सामाजिक और राष्ट्रीय कार्यक्षेत्र में भी राष्ट्रीय जीवनमें जो ऋतु होते हैं, उनके अनुसार हरएक को अपने कर्तव्य अवश्य करने चाहिए । राष्ट्रीय ऋतु-परिवर्तन राजकीय क्रांतिरूपसे इतिहासमें प्रसिद्ध है । इसी प्रकार अन्यान्य अवस्थामें राष्ट्रके और समाज, संघ अथवा जातिके ऋतु होते हैं । इन ऋतुओंके अनुकूल अपना कर्तव्य पालन करनेसे राष्ट्रीय उन्नति और कर्तव्यपालन न करनेसे राष्ट्रीय अवनति होती है । सब अन्य व्यवहारोंके विषयमें भी यही बात सनातन है । योग्य विचार करके इस विषय का अनुभव पाठक ले लें । जगत् के अन्दर जो सांवासरिक ऋतु परिवर्तन होता है अथवा राष्ट्रके तथा समाजके जीवन में ऋतुपरिवर्तन होता है, उसके अनुकूल मनुष्यमात्र को अपना आचरण करना आवश्यक ही है । जो ऋतुके अनुसार अपना कर्तव्यपालन न करेगा, उसका नाश होगा । सामान्यतः बहुत से यज्ञयाग ऋतुसंधि में जो बीमारियां होती हैं, उनके निवारण के लिए किए जाते हैं, इसलिए कहा है—

भैषज्ययज्ञा वा पते । तस्मादृतुसंधिषु प्रयुज्यन्ते ।  
ऋतुसन्धिषु वै व्याधिर्जायते ( गी. उ. प्र. १-१९ )  
' औषधियोंके ही ये यज्ञ हैं, इसलिए ऋतुके संधिसमय में ये किए जाते हैं, क्योंकि ऋतुसंधिमें व्याधियां होती हैं । ' इस प्रकार यह आधिभौतिक दृष्टिसे विचार हुआ है ।

पाठक विचार करके इससे अधिक बोध ले ले ।

होता = इस शब्दका अर्थ दाता, आदाता और आह्वानकर्ता है । देनेवाला, लेनेवाला और बुलानेवाला ये तीन भाव इस शब्दमें हैं । पहिला दान लेना है, पश्चात् दूसरों को बुलाना और तदनंतर उनको दान देना होता है । विद्या प्राप्त करनी, विद्यार्थियोंको अपने पास बुलाना और उनको विद्यादान करना, यह 'ज्ञानयज्ञ' का हवन है । धन प्राप्त करना, जिनको धनकी आवश्यकता है, उनको निमंत्रण देना और उनको धनका अर्पण करना, यह 'द्रव्ययज्ञ' है । इसी प्रकार अन्यान्य यज्ञोंमें 'होता' का काम निश्चित है । अध्यात्मदृष्टिसे व्यक्ति के शरीरमें आत्मापि प्राकृतिक पदार्थों को अपने पास कर रहा है, वायु, सूर्य, जल आदि देवताओंके अंशोंको बुलाकर उनको शरीरके भिन्नभिन्न स्थानोंमें रखता है और अपनी शक्ति उनको देकर उनके द्वारा यह बातसांस्वरिक यज्ञ कराता है । इसी प्रकार अपनी उन्नतिके लिए हरएकको अपने अपने कार्यक्षेत्र में करना चाहिये ।

रत्नधातमः = ( रत्न+धा+तमः ) = रत्नोंका धारण करनेवाला है । यहां शका हो सकती है कि यह आत्मा रत्नोंका धारक कैसा है, इसके रत्न कौनसे हैं और उनका धारण यह कैसा करता है ? इन प्रश्नोंके उत्तर के लिए निम्नलिखित मन्त्र देखिये—

दमे दमे सप्त रत्ना दधानोऽग्निर्होता निषसादा  
यजीयान् ॥ ( ७५९, ऋ० ५ १-५ )

' ( दमे ) घर घर में सात रत्नोंको धारण करनेवाला अग्नि यज्ञ करनेके लिये होता बनकर बैठा है ! ' आत्मापि शरीरमें बैठा है, आत्माका घर यही शरीर है, इत्यादि बातों का निश्चय पहिले हो चुका है । इस शरीरमें यह आत्मापि सात रत्नोंका धारण करता है । ये सात रत्न— ( १ ) मुख, ( २ ) नेत्र, ( ३ ) कर्ण, ( ४ ) नासिका, ( ५ ) त्वचा ये पंच ज्ञानेन्द्रियाँ और ( ६ ) मन तथा ( ७ ) बुद्धि ( किंवा कईयों के मतसे अहंकार ) मिलकर होते हैं । जिन प्रकार विविध रत्नोंके अलंकारोंसे शरीरकी शोभा बढती है, उसी प्रकार उक्त इंद्रिय-शक्तियोंके विकास से मनुष्यकी शोभा वृद्धिगत होती है । परन्तु इसमें विशेष बात यह है कि, यदि ये आत्माके सात रत्न उत्तम अवस्थामे रहे, तो बाह्य रत्नोंके बिना भी शोभा और यश बढता है और ये आत्मा

के सप्त रत्न ठाक न रहे, तो बाह्य रत्नोंसे शरीरके अलंकार बढानेपर भी उसका कोई उपयोग नहीं होता । तात्पर्य ये आत्माके रत्न मुख्य हैं और बाह्य रत्न गौण है ।

व्यक्तिमें और जगत्में भी सप्त रत्न हैं । समाज और राष्ट्रमें प्रकाश, शांति, उम्रता, ज्ञान, गुरुत्व, वीर्य और स्वैर्य इन सप्त गुणोंके कर्म करनेवाले श्रेष्ठ पुरुष रत्नरूप होते हैं और वेही राष्ट्रकी शोभा बढाते हैं । इस प्रकार सर्वत्र सप्त रत्नोंका रूप देखकर उनका धारण, पोषण करना आवश्यक है ।

प्रत्येक रत्नका वर्ण भिन्न होता है और 'वर्णचिकित्सा' के नियमानुसार अपने अनुरूप वर्णका रत्न शरीरपर धारण करनेसे शरीरका आरोग्य, आयुष्य और बल बढनेमें सहायता होती है । इस विषयका विचार सुविचारों वैद्योंको करना उचित है ।

यहां प्रथम मंत्रके सपूर्ण शब्दोंका विचार हुआ । इस मन्त्र में कहे सब शब्द अग्नि का स्वरूप निश्चित करनेके लिए सहायता दे रहे हैं । इन शब्दोंके आशयका विचार करनेसे जो स्वरूप निश्चित होता है, वह ऊपर बताया ही है । इस स्वरूपको ध्यानमें धरकर इस प्रकार का यह अग्नि 'यज्ञ का देव' है और यह यज्ञ मुख्यतया अपने शरीरमेंही चल रहा है, इसके नियम देखकर मानवसंघका व्यवहार होना चाहिए, इत्यादि बोध अशरूपसे हमने देखा है ।

अब और देखिये—

“ स देवाँ पृह वक्षति ॥ २ ॥ ( २ )

' वह देवों को यहां लाता है । ' यह क्रिया वर्तमानकाल की और प्रत्यक्ष अनुभव की है । इस कथन से प्रश्न होता है कि ( १ ) यह देवों को कहां लाता है ? किस रीति से लाता है ? किस समय लाता है ? और कहां से लाता है ? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर देने के पूर्व यह देखना चाहिये कि, इस मंत्रभाग की वेदमें कहां द्विरुक्ति हुई है । देखिये—

( १ ) मधुच्छंदा वैश्वामित्रः ॥ अग्निः ॥

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनरुत ।

स देवाँ पृह वक्षति ॥ ( २, ऋ० १-१-२ )

( २ ) वामदेवो गौतमः ॥ अग्निः ॥

स हि वेदा वसुधितिं महीं आरोधनं दिवः ।

स देवाँ पृह वक्षति ॥ ( ७०५; ऋ० ४-८-९ )

दो भिन्न ऋषियों के देखे हुए मंत्रों में इस तृतीय चरण की द्विरुक्ति हुई है । जो मंत्र वेद में वारंवार आता है, उस में विशेष महत्त्व का उपदेश होता है, इसलिये उस बात को वारंवार कहकर पाठकों के मन में वह बात स्थिर की जाती है । पुनरुक्त मंत्रों का इस प्रकार महत्त्व है । अब पता लगाना चाहिये कि, कोनसी महत्त्व की बात इस मंत्रभाग में कही है ? इसका विचार करने के लिये निम्न लिखित मंत्र देखिये—

( १ ) स देवान् विश्वान् बिभर्ति ॥ ऋ० ३-५९ ८

( २ ) स देवान् सर्वानुरस्युपद्य सपश्यन्  
याति भुवनानि विश्वा ॥ ( अ० १०-८-१८ )

‘ ( १ ) वह एक देव सब अन्य देवों का धारण, पोषण करता है । ( २ ) वह एक देव सब अन्य देवों को अपनी छाती में धारण करके सब भुवनों को देखता हुआ चलता है । ’ यह उस एक आत्मा का वर्णन है कि, जिस के आधार से अन्य देवगण रहते हैं । यही सब अन्य देवों का धारण, पोषण करनेवाला और सब से उचित कार्य करानेवाला देव है । इसलिये कहा है—

( १ ) यन्नो बभूव, स आबभूव, स प्रजज्ञे, स उ  
घाववृध्रे पुन । स देवानामधिपतिर्बभूव ॥  
( अ० ७-५-१ )

( २ ) स योनिमैति, स उ जायते पुनः, स देवाना-  
मधिपतिर्बभूव ॥ ( अ० १३-२-२५ )

‘ ( १ ) एक यज्ञ था, वह प्रकट हुआ, वह बन गया और पुनः बढने लगा । वह देवों का अधिपति हो गया । ( २ ) वह योनि को प्राप्त हुआ, वह नि संदेह पुनः पुनः जन्म लेता है, वह देवों का अधिपति हुआ है । ’

यज्ञ प्रकट होता है, पुनः पुनः बनता है, बनने के पश्चात् बढता है, यह वर्णन ‘ जीवनरूप यज्ञ ’ का है । क्योंकि भगले मंत्रमें ही कहा है कि वह देवों का अधिपति बननेवाला है, वह योनि में प्रविष्ट होकर पुनः पुनः जन्म लेता है ।

इस प्रकार वारंवार जन्म लेता हुआ, अनेक वार यज्ञ करने का यत्न करता है । इसके यज्ञ पर राक्षस हमला करते हैं, और बीच में विघ्न करते हैं । इस प्रकार यज्ञों में विघ्न होने पर वह फिर योनि में प्रविष्ट होकर पुनः जन्म

लेता है और पुनः यज्ञ करता है । यह उसका प्रयत्न यज्ञ की पूर्णता होने तक चलता है । यह मंत्र पुनर्जन्म का स्वरूप बता रहा है, परन्तु उसका अधिक विचार करने का यह स्थान नहीं है । पुराणों में ऋषियों के यज्ञों का नाश राक्षसों के द्वारा होने की अनेक कथाएं हैं, उनका मूल यहां इन मंत्रों में है । विचारशील पाठको को पता लग सकता है कि, यह आत्मा का शतसांवरसरिक जीवन-यज्ञ ही है । जिस समय यज्ञ करने की इच्छा से यह योनिक्षेत्र में उतरता है, उस समय यह देवों को अपने साथ लाता है और इसका आह्वान सुन कर सब ३३ कोटी देव अपने अंशरूप से इस गर्भ में अवतार लेते हैं और उन सब देवों का अधिराजा यह स्वयं हृदयस्थान में रहने लगता है । इसका प्रभाव देखिये—

( १ ) स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ ( य. ३४-५१ )

( २ ) स जीवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ ( अ. १-३५-२ )

( ३ ) स देवेषु धनते वार्याणि ॥ ( ऋ. ५-४-३ )

( ४ ) स देवो देवान्प्रति पप्रथे पृथु ॥

( ऋ. २-२४-११ )

‘ ( १ ) वह देवों में दीर्घ आयु करता है, ( २ ) वह जीवों में दीर्घ आयु करता है, ( ३ ) वह देवों में से वरने-योग्य सत्त्वों को स्वीकार करता है, ( ४ ) वही एक देव है, जो अन्य सब देवों के प्रति कैला है । ’ इस एक आत्म-देव का इतना प्रभाव होने के कारण इसका शब्द सुनते ही इसके साथ सब अन्य देव जाते हैं । अब और देखिये—

( १ ) देवो देवानां गुह्यानि नामाधिष्कृणोति ॥

( ऋ. ९-९५-२ )

( २ ) देवो देवानां जनिमा विवक्ति ॥

( ऋ. ९-९७-७ )

( ३ ) आदित्यानां वसूनां रुद्रियाणां देवो देवानां  
न मिनामि धाम ।

ते मा भद्राय शवसे ततक्षुरपरजितमस्तु-  
तमषाल्लहम् ॥ ( ऋ. १०-४८-११ )

( ४ ) त्वमग्ने प्रथमो अंगिरा ऋषिर्देवो देवा-  
नामभवः शिवः सखा ॥

तथ व्रते कवयो विश्वनापसोऽजायन्त

महतो भ्राजदृष्टयः ( ५०; ऋ० १।३।११ )

- ( ५ ) त्वमग्ने प्रथमो अंगिरस्तमः कविर्देवानां  
परिभूषसि व्रतम् ॥ ( ५१; ऋ० १।३।१२ )
- ( ६ ) देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो वसुर्व-  
सूनामसि चारुध्वरे । शर्मन्त्स्याम तव  
सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं  
तव ॥ ( २६८; ऋ० १।१४।१३ )
- ( ७ ) देवो देवान् ऋतुना पर्यभूषत् ॥  
( ऋ० २।१२।१ )
- ( ८ ) देवो देवान् परिभूर्ऋतेन ( ऋ० १०।१२।२ )
- ( ९ ) होता पावकः प्रदिवः सुमेधा देवो  
देवान् यजत्वग्निरहन् ॥ ( ऋ० २।३।१ )
- ( १० ) समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्  
यजसि जातवेदः ॥ ( ऋ० १०।११०।१ )
- ( ११ ) देवो देवान् स्वेन रसेन पृञ्चन् ॥  
( ऋ० १।९७।१२ )

‘ ( १ ) यह एक देव अन्य देवोंके ( नामानि ) नामों को प्रकट करता है, ( २ ) यह एक देव अन्य सब देवोंके जन्म कहता है, ( ३ ) वसु, रुद्र और आदित्यादि देवोंके धामका भे नाश नहीं करता । क्योंकि मैं अपराजित, अजेय और असह्य हूँ और वेही कल्याण और बल के लिये मुझे व्यक्त करते हैं, ( ४ ) हे अग्ने ! वही पहिला अगिरा ऋषि है, और तू एक देव अन्य सब देवोंका सच्चा शुभ मित्र है । तेरे नियममें ही ज्ञानसे पुरुषार्थ करनेवाले कवि तेजस्वी होते हैं, ( ५ ) हे अग्ने ! तू पहिला अत्यंत अगस्त्य है, और अन्य देवोंके नियमको सुभूषित करता है, ( ६ ) तू सब देवोंका एक देव अद्भुत मित्र है, और यज्ञमें वसुओंका भी वसु तूही है । हे अग्ने ! तेरे सत्यमें हम ( मा रिषाम ) नष्ट नहीं होंगे और ( शर्मन् ) सुख ही प्राप्त करेंगे, ( ७ ) तू एक देव अन्य देवोंको कर्मसे भूषित करता है, ( ८ ) सत्य नियमसे तू एक देव अन्य देवोंको व्यापता है, ( ९ ) होता, ( पावकः ) पवित्रकर्ता, उत्तम मेधावान् योग्य अग्निदेव देवोंका यजन करे, ( १० ) हे जातवेद अग्ने ! तू ( मनुषः दुरोणे ) मनुष्यके घरमें प्रदीप्त होकर देवोंके लिये यज्ञ करता है, ( ११ ) एक देव अपने रससे अन्य देवोंको तृप्त करता है । ’

यह एक देवका महत्त्व है । यह एक देव सब अन्य

देवोंको अपने यज्ञ में बुलाता है, वे देव उसके यज्ञमें आते हैं, उसके साथ रहते हैं और वह चला गया, तो उसके साथ चले जाते हैं । यह सब वेदका आलंकारिक वर्णन एक ही बातको बता रहा है । वह बात यह है कि, ‘ ( १ ) आत्मा जन्म लेने के समय योनि में प्रवेश करना चाहता है, उस समय वह अन्य देवोंके अर्थात् पृथिवी, आप, तेज, वायु सूर्य, चंद्र, विष्णु, आदि सब देवताओंको अपने साथ बुलाता है, ( २ ) उसका शब्द सुनकर सब ३३ कोटी देव अपने अपने अंशको उसके साथ भेजने हैं, ( ३ ) सब देवोंका यह देह बनता है और उसका अधिष्ठाता आत्मदेव होता है और इस प्रकार बनकर वह जन्म लेता है और शतसांवत्सरिक यज्ञ प्रारंभ करता है । ये देव आकर कहा रहते हैं, इसका वर्णन भी देखिये—

- [१] सर्वं संसिच्य मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥१२॥  
[२] गृहं कृत्वा मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥१३॥  
[३] रेतः कृत्वा आऽग्रं देवा पुरुषमाविशन् ॥२९॥  
[४] सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणं पुरुषस्य विभंजिरे ॥३१॥  
[५] तस्माद्वै विद्वान् पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते ।  
सर्वा ह्यस्मिन् देवता गावो गोष्ठ इवासते ॥३२॥  
( अ. १।१।८ )

- [६] अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्,  
वायुः प्राणां भूत्वा नासिके प्राविशत्,  
आदित्यश्चक्षुर्भूत्वाऽक्षिणी प्राविशत्,  
चंद्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्,  
आपो रेतो भूत्वा शिस्नं प्राविशन् ॥ ( ए. उ. २।४ )

‘ ( १ ) सब मर्त्य शरीरका भिचन करके देव पुरुषमें घुसे हैं, ( २ ) मर्त्य घर करके देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं, ( ३ ) रेत का घी बनाकर देव पुरुष में वसने लगे हैं, ( ४ ) सूर्य चक्षु बना है, वायु प्राण-हुआ है, ( ५ ) इमालिये जानी इस पुरुषको ब्रह्म मानता है, क्योंकि सब देवताएँ इसीके अंदर रहती हैं, जैसी गौवं गोशालामें रहती हैं । ( ६ ) अग्नि वाचा बनकर मुखमें घुसा है, वायु प्राण बनकर नासिकामें रहने लगा, सूर्य चक्षु बनकर आंखमें वसने लगा, चंद्र मन बनकर हृदयमें रहने लगा, जलदेव वीर्य बनकर शिस्नमें रहा । ’ इस प्रकार अन्यान्य देवताएँ इस एक देवके साथ आ गईं और यहां इस शरीरमें अपने अपने

स्थानमें रहने लगीं । यह सब वेदों और उपनिषदोंका वर्णन देखनेसे पता लग सकता है कि, इस शरीरमें आत्माके साथ देव आकर बसे हैं । इस हेतुसे ही कहा है कि ' स देवान् एह वक्षति ' अर्थात् ' वह सब देवोंको यहां लाता है । ' उक्त मंत्रोंके विचारसे पाठकोंको पता लगाही होगा कि कहां और किस प्रकार लाता है, इसलिये इसका अधिक विचार अब करनेकी आवश्यकता नहीं है । परमात्मा सपूर्ण जगत् में व्यापक होकर सूर्यादि सब देवताओंका धारण-पोषण करता है, उसी प्रकार उसका अमृतपुत्र जीवात्मा इस देहमें रहकर सूर्यादि देवताओंका धारण-पोषण करता है, यह दोनोंमें समानता होनेके कारण मंत्रोंमें दोनोंका वर्णन एकही रीतिसे होता है, यह बात पाठक पूर्वोक्त मंत्रोंमें स्पष्ट रूपसे देख सकते हैं । अस्तु । इस रीतिसे यह आत्माग्नि अन्य देवोंको यहां— इस देहमें—इस कर्मभूमिमें— लाता है और शतमांवात्मरिक यज्ञ करनेकी तैयारी करता है ।

अध्यात्मदृष्टिसे शरीरमें देखिये कि यह आत्मा, प्राण अथवा जीवनका सत्वरस शरीर में प्राणघातक व्याधिकीटकोंके साथ सदैव युद्ध करता है, युद्धमें उनका पराभव करता है और आरोग्य का रक्षण करता है । व्याधिकीटक आसुरी स्वभावके कारण शरीरकी हिंसा करना चाहते हैं, उस हिंसासे इस शरीरका बचाव करनेके कारण आत्माके इस सत्कर्म को " अ-ध्वर यज्ञ " अर्थात् हिसारहित यज्ञ कहते हैं । शरीरका सर्वतोपरि संरक्षण करनेका कार्य पूर्णतया यही जीवनका केंद्र कर रहा है, इसलिये मंत्रमें कहा है कि ( विश्वतः परि-भूः ) सब प्रकारसे सबका नियामक और शासक यही है । सब जानते ही हैं कि, आत्माकी श्रेष्ठता है और अन्य इन्द्रिय-शक्तियोंकी गौणता है, क्योंकि आत्माकी जीवनरूप प्राणशक्ति ही अन्य इन्द्रियों, अंगों और अवयवोंमें पहुंच कर कार्य करती है । यही भाव ( म, इत् देवेषु गच्छति ) "वह यज्ञ देवोंमें पहुंचता है" इस वाक्यसे व्यक्त किया है । आत्माग्नि यज्ञ करता है, उसका मुख्य प्रबधकर्ता स्वयं आत्माही है और वह यज्ञ ( देवों द्वारा ) इन्द्रियोंद्वारा होता है, इन्द्रियोंमें उसका प्रभाव पहुंचता है । यह सब हरएक के अनुभव में है ।

आधिभौतिक दृष्टिसे संघ में, समाज में अथवा राष्ट्रमें भी यही भाव दिखाई देता है ।

तीनों स्थानोंमें इस बातकी सार्वत्रिकता देखनेयोग्य है । (१) अपना संरक्षण, (२) शत्रुशक्तिका पराभव, आरमशक्तिका विजय, (३) अपनी उन्नति और स्वकीय शक्तिका विकास, (४) सहाय्यकर्ताओंका संघीकरण और उनका पोषण, यही मुख्य बातें हैं, जो इस यज्ञसे ध्वनित होती हैं । जिस व्यक्तिमें और जिस राष्ट्रमें ये होती रहेगी, उसका संरक्षण होगा और जहां न होगी वहां नाश होगा । इसलिये सबको उचित है कि, इस प्रकार अपनी उन्नतिके लिए हरएक प्रयत्न करे । अब द्विरुक्तिका विचार करना है—

[१] मधुच्छंदा वैश्वामित्रः । अग्निः ।

विश्वतः परिभूरसि ॥ ( ४; ऋ० १।१।४ )

[२] कुत्सः आंगिरसः । अग्नि शुचिः ।

एवं हि विश्वतो मुखो ' विश्वतः परिभूरसि ॥ '

अप नः शोशुचदधम् ॥ ( १८९२, ऋ० १।९।६ )

दो विभिन्न ऋषियोंके मंत्रोंमें ' विश्वतः परिभूः असि ' ( सब प्रकारसे सर्वोपरि है ) यह वाक्य द्विरुक्त हुआ है । अग्निका सर्वतोपरि शासक होना इस द्विरुक्तिसे व्यक्त होता है । सबका नियामक आत्मा होनेसे यहां विशेषतया आत्माग्नि ही वक्तव्य है, इसकी सिद्धता पहिले हो चुकी है । आत्माका वर्णन भी इन्ही शब्दोंसे ईशोपनिषद् में हुआ है—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धम-  
पापविद्धं । कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथात-  
थ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभतः समाभ्यः ॥

( वाय० ४०।८; ईश. ८ )

' वह आत्मा ( पर्यगात् ) व्यापक है और ( शुक्रं ) वीर्यरूप, देहरहित, व्रणहीन, स्नायुहीन, शुद्ध, निष्पाप, कवि, बुद्धिमान्, ( परिभू ) सबका नियंता, तथा ( स्वयंभूः ) स्वयंसिद्ध है । वह शाश्वत कालसे यथायोग्य रीतिसे सब अर्थोंको करता आया है । ' वही आत्माग्निका यज्ञ जो शाश्वत कालसे चल रहा है, वही ऋग्वेदके प्रथम सूक्तमें वर्णन किया है । ' परिभू, कवि, ' आदि शब्द इस सूक्तमें आ गये हैं, अग्निका नाम ' पावकः, शुचिः ' प्रसिद्ध है, इस नाममें ' शुद्ध ' शब्दका भाव आ गया है । वह स्वयं ' अ-पाप-विद्ध ' अर्थात् निष्पाप है, इतनाही नहीं, परंतु

वह ( नः अर्घं अप शोशुचत् । ( क्र. १।९७।६ ) वह हमारे पापको दूर करके हमको भी पवित्र करता है, अर्थात् वह स्वयं शुद्ध है और दूसरोंको भी पवित्र करता है । वह एकदेशी नहीं है, परंतु वह (पर्यगात्) सर्वत्र है, यही भाव ( त्वं हि विश्वतो मुख ) ' तू सर्वत्र मुखवाला है ' इस कथनमें व्यक्त हुआ है । एक देवता का वर्णन वेदमें निम्न प्रकार आया है—

विश्वतश्चक्षुस्त विश्वतो मुखो  
विश्वतो बाहुस्त विश्वतरूपात् ।  
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैः  
द्यावाभूमी जनजन् देव एकः ॥ ( क्र १०।८१।३ )

' जिस एक देवके ( विश्वतः चक्षुः ) सर्वत्र आंख, ( विश्वतः मुखः ) सर्वत्र मुख, सर्वत्र बाहु और सर्वत्र पांव है, जो बाहुओंसे और पंखोंसे सबका धारण और नियमन करता है, वही द्युलोक और पृथिवीको उत्पन्न करता है । ' इस मंत्रका ' विश्वतो मुखः ' शब्द इस आत्मामिके वर्णनमें इस मंत्रमें है । आत्माकी सर्वव्यापकता इस मंत्रसे बताई है । अग्नि भी सब जगत्के सब पदार्थोंमें विद्यमान है, देखिये—

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो  
बभूव । एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं  
प्रतिरूपो बहिश्च ॥ ( कठ. उ. ५।९ )

' जिस प्रकार एकही अग्नि सब भुवनमें प्रविष्ट हो कर प्रत्येक रूपमें प्रतिरूप हुआ है, वैसाही एक सब भूतोंका अंतरात्मा प्रत्येक रूपमें प्रतिरूप हुआ है और बाहिर भी है । ' यहां प्रसंगतः अग्निके विषयका उपनिषदोंका संतव्य देखनेयोग्य है—

- (१) एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यद्ग्निरुर्वलति । ( कौ. उ १२ )
- (२) यः पुरुषः सोऽग्निवैश्वानरः । ( मैत्री. उ. २।६ )
- (३) प्राणोऽग्निः परमात्मा । ( मैत्री. ६।९, प्राणाग्नि २ )
- (४) प्राणोऽग्निरुदयते । ( मुंड. २।१।७, प्रश्न १।७ )
- (५) अग्निर्ह वै प्राणः । ( जावा ४ )
- (६) अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् ।  
मंत्रोऽहमहमेवाऽयमहमग्निरहं हुतम् ॥  
( भ. गी. ९।१६ )

' (१) यह ब्रह्मही प्रकाशता है जो अग्नि जलता है, (२) जो पुरुष है वही वैश्वानर अग्नि है, (३) प्राण अग्नि परमात्मा है, (४) यह प्राण अग्निही उदय पाता है, (५) प्राण ही निःसदेह अग्नि है, (६) ( अहं ) मैं आत्माही क्रतु, यज्ञ, स्वधा, औषध, मंत्र, आज्य, अग्नि और हवन हूँ । ' इन उपनिषदोंके कथनेके साथ निम्न उपनिषदाक्षय देखिये—

(१) पुरुषो वाव गौतमाग्निः, तस्य वागेव समित्, प्राणो धूमो, जिह्वा अर्चिः, चक्षुरंगाराः, श्रोत्रं विस्फुलिगा ॥ १ ॥ तस्मिन्नेतस्मिन्नगौ देवा अन्नं जुह्वति, तस्या आहुते रेतः संभवति ॥ २ ॥ ७॥

(२) योषा वाव गौतमाग्निः, तस्या उपस्थ एव समित्, यदुपमंत्रयते स धूमो, योनिरर्चिः, यदन्तः करोति ते अंगाराः, अभिनंदां विस्फुलिगाः ॥ १ ॥ तस्मिन्नेतस्मिन्नगौ देवा रेतो जुह्वति तस्या आहुते गर्भः संभवति ॥ २ ॥ ८ ॥ ( छां उ ५।३ )

यही कथन थोड़ेसे भिन्न-प्रके साथ वृहदारण्यकमें आया है, वह भी यहां देखिये—

### अंशावतार

पुरुषो वाऽग्निर्गौतम, व्यात्तमेव समित्, प्राणा धूमो, वागर्चिः, चक्षुरंगाराः, श्रोत्रं विस्फुलिगाः, तस्मिन्नेतस्मिन्नगौ देवा अन्नं जुह्वति, तस्या आहुत्यै रेतः संभवति ॥ १२ ॥

(२) योषा वा अग्निर्गौतम, तस्या उपस्थ एव समित्, लोमानि धूमो, योनिरर्चिः, यदन्तः करोति ते अंगाराः, अभिनंदां विस्फुलिगाः, तस्मिन्नेतस्मिन्नगौ देवा रेतो जुह्वति, तस्या आहुत्यै पुरुषः संभवति, स जीवति यावज्जीवति ॥ १३ ॥

( वृ. आ. ६।२ )

' (१) पुरुष अग्नि है, इसमें अन्नका हवन होता है, इस हवन से रेतकी उत्पत्ति होती है, (२) स्त्री अग्नि है, इसमें रेतका हवन होता है, इस हवनसे बालक उत्पन्न होता है । ' इस वर्णनसे पता लग सकता है कि क्रिय अपूर्व अलंकार से अग्निकी विभूति स्थानस्थानमें देखनी होती है और वहां का भाव समझना होता है । स्त्रीरूप अग्निमें जिस समय आत्मा आता है, उस समय वह त्रैलोक्यके संपूर्ण



देवोंको अपने साथ बुलाता है और उनके साथ ' अंशा-वतार ' लेता है । यही बालक है । बालक का जन्म होते ही उसके शरीरमें यह शतसांख्यिक क्रतु करने लगता है, जो भोग इसको दिख जाते हैं, वे उस उस देवता तक पहुंचाता है । रूपके भोग आंखमें रहनेवाले सूर्यके अंशको देता है, सुगंधके भोग नामिकानिवासी अश्विनी देवोंको देता है, रुचिके भोग जिह्वानिवासी जलदेव वरुणको देता है, स्पर्शके भोग वायुको पहुंचाता है, इसी प्रकार अन्यान्य भोग अन्यान्य देवताओंके अंशोंके द्वारा उस उस देवतातक पहुंचाता है । यही इस आत्माग्निका दत्त है । अग्नि दत्त होनेका वर्णन आगे अनेक सूक्तोंमें आनेवाला है, इसलिये पाठक इस विषयको ठीक प्रकार समझनेका यत्न करे । यदि यह बात ठीक रीतिसे ध्यानमें आ गई, तो आत्माग्नि यज्ञ ( देवेषु गच्छति ) देवोंतक कैसा पहुंचाता है, इसका ठीक विज्ञान हो सकता है । अपने शरीरमें ही यह यज्ञ पाठक देख सकते हैं। वेदको अभीष्ट है कि पाठक इस यज्ञको अपने अंदर अनुभव करे । यही आत्माग्नि सब देवोंका केंद्र है, देवियं—

(१) अग्ने नेमिरराँ इव देवांस्त्वं परिभूरसि ॥

( ८५९; ऋ ५।१३।६ )

(२) स होता विश्वं परिभूत्वध्वरं ॥ (३८९; ऋ. २।२।५)

' (१) हे अग्ने ! जैसे चक्री नामिमें आर होते हैं, वैसे देव तंत्र में हैं, और देवोंका तू नियामक है । (२) वही अग्नि हवनकर्ता है और सब (अ-ध्वरं) यज्ञका प्रबंधकर्ता है । ' इन मंत्रोंसे अग्नि शब्द आत्माग्निका ही मुख्यतया वाचक है, यह बात ध्यानमें ठीक प्रकार आ सकती है। पूर्वोक्त भगवद्गीताके श्लोकमें ' मैं (आत्माग्नि) यज्ञ हूं, और मैं ही अग्नि, घी, मंत्र, तथा हवन भी मैं ही हूं ' (गी ९।१६ ) यह बात ध्यानमें धर कर इस सूक्तका कथन देखिये— ' अग्नि यज्ञका देव, पुरोहित, होता और ऋत्विज् आदि है । ' दोनोंका एकही तात्पर्य है । दोनोंको आत्माग्नि ही वर्णन भिन्न रीतिसे करना है । यह आत्माग्नि यहां इस देहमें सब देवोंको लाता है और सौ वर्ष तक यज्ञ करनेका यत्न करता है । यह आत्माग्नि जो यह यज्ञ करता है, वह यज्ञ निःसंदेह देवोंतक पहुंचता है । पूर्वोक्त स्पष्टीकरणसे यह कथन अब पाठकोंको प्रत्यक्ष हुआही होगा ।

यहां आत्माग्नि मुख्य केंद्र है और अन्य देव उसके साथी हैं । ये साथी उसको यथाशक्ति सहाय्यता करते हैं । यद्यपि आत्माग्नि शक्तिके बिना आंख, नाक, कुछ भी कार्य नहीं कर सकते, तथापि आंखके बिना देखना तथा अन्य इंद्रियोंके बिना अन्य अनुभव लेना आत्माके लिये अशक्य है । इसलिये (१) आत्मा सम्राट् है और ये अन्य देव उसके मांडलिक राजे हैं । ये मांडलिक राजे अपने देशके उत्पन्नका करभार सम्राट्को देते हैं, और सम्राट्ही उनको यथायोग्य प्रसाद देता है । अथवा (२) अन्य देव इसके सेवक हैं, अपना कार्य करनेद्वारा उसकी सेवा करते हैं और वह भी उनको यथायोग्य वेतन देता है । अथवा (३) ये देव उसके मित्र हैं, वे इसकी सहाय्यता करते हैं और वह भी अपना धन उनको बांटता है । किंवा (४) वह यज्ञ करनेवाला है और ये ऋत्विज हैं, ये उसका यज्ञ यथायोग्य रीतिसे करते हैं और वह भी इसको योग्य दक्षिणा देता है । कोई अलंकार लीजिये, ये तथा बहुतसे अन्य अलंकार वेदमें म्यान स्थानमें आ गये हैं । सब अलंकारोंका तात्पर्य एकसा ही है । (स इत् देवेषु गच्छति ) वह यज्ञ देवोंमें पहुंचता है, इसका तात्पर्य उक्त प्रकार है । यदि किसीने किसीसे सेवा ली, तो उसको उचित है कि, वह सहाय्यकर्ताका ऋण प्रत्युपकार द्वारा नापस करे, यह बोध यहां मिलता है ।

' स देवानेह वक्षति । ' इस प्रथम मंत्रके कथनसे पता लगा है, कि ' आत्माग्नि देवोंको यहां लाता है । ' इसका शब्द सुनकर सब देव अंशरूपसे आते हैं, अथवा अपने अपने सूक्ष्म अंशोंको भेजते हैं । सब देव आनेके पश्चात् इसका यज्ञ शुरु होता है और यज्ञमें यह आत्माग्नि ' ( स इत् देवेषु गच्छति ) ' सब देवोंको यथायोग्य यज्ञ-भाग देता है । परस्पर सहाय्यता करनेका यह बोध हरएक मनुष्यको देखना चाहिये और इस प्रकार परस्पर सहाय्यता करके संघशक्तिद्वारा अपनी उन्नति करनी चाहिये । यहां यह विशेष रूपसे कहनेकी आवश्यकता नहीं कि, यह शरीर देवोंके ' संघका ही कार्य ' है । इस प्रकार जो अभेद्य संघ बनायेंगे, वे भी विलक्षण शक्तिसे युक्त होकर उन्नत हो जायेंगे ।

यह आत्मा (होता) हवनकर्ता है । यह अपने श्रोत्रादिक सब इंद्रियोंको ' संयमाग्नि ' में हवन करता है

और संयमी बनकर अभ्युदयको प्राप्त करता है । शब्दादि सब विषयोंको यही ' इंद्रियाग्नि ' में हवन करता है और उपभोग लेकर सुखी होता है । तथा सब इंद्रियकर्मोंको और प्राणकर्मोंको ' योगाग्नि ' में हवन करके योगी बनता है और स्वाधीनता प्राप्त करता है । हवन किमी प्रकारका हो, यही हवनकर्ता है, इसमें कोई सदेह ही नहीं है ।

साधारण सुबोध भाषा में बोलना हो, तो इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह आत्मा इंद्रियोंको विषयभोग देता है, यही उसका इंद्रियाग्नि में हवन है और इसीलिये इसको ' होता ' कहते हैं । हवन किये पदार्थ वह देवों तक पहुंचाता है, इसका यही तात्पर्य है । ' देव ' शब्दका अध्यात्मदृष्टिसे अर्थ ' इंद्रिय ' ही है । जो आत्माका इंद्रियों से संबध है, वही ब्रह्माग्नि का अन्य देवांसे है । ब्रह्माग्नि, आत्माग्नि और अग्नि सांकेतिक दृष्टिसे एकही पदार्थ है ।

( कवि-ऋतुः ) ज्ञानी और पुरुषार्थी ' अग्नि ' अर्थात् आत्माग्नि है । आत्माका चित् स्वरूप सुप्रसिद्ध है तथा चेतन आत्मा सबका प्रेरक होनेसे सब पुरुषार्थोंका प्रवर्तक निःसन्देह है । ' कवि ' शब्दका अर्थ ज्ञानी, बुद्धिमान् और शब्दप्रेरक है । इसलिये कहा है कि—

अग्ने कविः काव्येनासि विश्ववित् ॥

( १६५३, ऋ १०।९।३ )

अग्ने कविर्वेधा असि ॥ ( १३९; १ ऋ० ८।६०।३ )

' हे अग्ने ! तू कवि है और अपने काव्यसे ( विश्व-वित् ) सर्व-ज्ञ है । हे अग्ने ! तू कवि और ( वेधाः ) ज्ञानी है । '

यह अग्निका वर्णन उसके ' आत्माग्नि ' होनेकी सिद्धता कर रहा है । क्योंकि ( विश्व-वित् ) सर्वज्ञत्व एक आत्मा में ही संभवनीय है । कवि काव्य करता है और सर्वज्ञ कविका काव्य भी सर्वज्ञानसे परिपूर्ण होना संभवनीय है । इसीलिये परमात्माका ' शब्द ' प्रमाण माना जाता है । आत्माभी शब्दका प्रेरक ही है—

आत्मा बुद्ध्या समेत्यार्थान् मनो युंक्ते विचक्षया ।

मनः कायाग्निमाहंति स प्रेरयति माहृतम् ॥६॥

माहृतस्तूरसि स्वरन् मंद्रं जनयति स्वरम् ॥७॥

सोदीर्णो मूर्ध्न्यभिहतो वक्त्रमापद्य माहृतः ।

वर्णान् जनयते तेषां विभागः पंचधा स्मृतः ॥९॥

( पाणिनीय शिक्षा )

' आत्मा बुद्धिके साथ मिलकर अर्थकी प्रेरणा मनमें करता है । मन शरीरकी उष्णता पर आघात करके वायुको प्रेरित करता है । वह वायु छातिसे ऊपर चलने लगता है, उम समय सूक्ष्म स्वर उत्पन्न करता है । यही स्वर मुखमें विविध स्थानोंमें आकर विविध वर्णोंमें परिणत होता है । '

इस प्रकार आत्मा शब्द का प्रेरक है, इसलिये ' कवि ' है । आत्माग्नि का कवि होना इस प्रकार शास्त्रसिद्ध है । उपनिषदोंमें भी कहा है—

[१] केनेषितां वाचमिमां वदन्ति ?

[२] वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य प्राणः ॥

[३] यद्वाचाऽनभ्युदितं येन वागभ्युद्यते ॥

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि० ॥ ( केन उ० १।१-४ )

' (१) किससे प्रेरित हुई वाणी बोलते है ? (२) (वह प्रेरक) वाणीकी वाणी और प्राण का प्राण है । (३) जो वाणीसे प्रकाशित नहीं होता, परन्तु जिमसे वाणी प्रेरित होती है, वह ब्रह्म है, ऐसा तू जान । ' इससे स्पष्ट है कि आत्माग्नि ही वाणीका प्रेरक है । इसीलिये इसको कवि कहते है । इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

[१] युवा कविरध्वरस्य प्रणेता ॥

( ६२७, ऋ० ३।२३।१ )

[२] अहं कविरुशना पश्यता मा ॥

( ऋ० ४।२६।१ )

[३] युवा कविः पुरुनिःष्ठ ऋतावा धर्ता कृष्टी-

नायुत मध्य इक्ष् ॥ ( ७६०; ऋ० ५।१।६ )

[४] अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेऽवग्निरमृतो

निधायि ॥ ( ११३७, ऋ० ७।४।४ )

[५] अमूरः कविरद्वितिर्विवस्वान् त्सु सं सन्मित्रो

अतिथिः शिवो न ॥ ( ११५७; ऋ० ७।९।३ )

[६] सत्यो यज्वा कवितमः स वेधा ॥

( ५८१; ऋ० ३।१४।१ )

[७] होता मंद्रः कवितमः पावकः ॥

( ११५५; ऋ० ७।९।१ )

' (१) यह जवान कवि यज्ञका चालक है, (२) मैं ही इच्छा करनेवाला कवि हूं, मुझे देखिये, (३) जवान कवि ( पुरु+निः-ष्ठः ) सब पदार्थोंमें स्थित, सत्यवान्, ( कृष्टीनः धर्ता ) प्रजाओं का धारण करनेवाला और मध्यमें प्रदत्त है, (४) यह ( अ-कविषु कविः ) शब्द न करनेवालोंमें

शब्दकर्ता है, ( प्र-चेता ) चेतन और यही मर्त्योंमें अमृत है, ( ५ ) यह ( अ-मूरः ) मूढ नहीं है, कवि, ( अ-दितिः ) अमर्याद, ( विवस्वान् ) सबका निवासक, उत्तम मित्र, ( अ-तिथि ) जिसकी आनेकी तिथि निश्चित नहीं होती, ऐसा और ( शिव ) कव्याणकारी है, ( ६ ) सत्य, याजक श्रेष्ठ कवि और ( वेधा ) ज्ञानी है, ( ७ ) यह हवनकर्ता, हर्षकारक, श्रेष्ठ कवि और ( पावकः ) पवित्रकर्ता अग्नि है ।

इन मन्त्रोंमें ' कवि ' शब्द है और उसका शब्दकी उत्पत्तिके साथ ही संबंध है । ( अहं कविः ) ' मैं कवि हूँ ' ऐसा अध्यात्म वचन है । इसका स्पष्ट भाव है कि, मैं इन्द्र कवि हूँ, जिसका दूसरा नाम अग्नि भी है। क्योंकि एकही सद्बस्तुको अग्नि, इंद्र, आदि अनेक नाम ज्ञानी देते हैं । यह कवि अग्नि ( युवा ) जवान है । जो अज और अनंत होता है, उसको ही ' युवा ' कहते हैं । आत्माही अजन्मा और अविनाशी है, इसलिये युवा भी है । यह ' पुरु+निष्ठ ' सबमें व्याप्त है । ( कृष्टीनां धर्ता ) प्रजाओंका धारणपोषणकर्ता यही है । ( अ-कविपु कविः ) शब्द न करनेवालोंमें यह शब्द उत्पन्न करनेवाला है, जड़ोंमें यह वक्ता है, शरीरके मूक जड़ अवयवोंमें यही एक शब्द बोलनेवाला है और यही ( मर्त्येषु अमृतः ) मरनेवालोंमें अमर है । सब शरीर मरता है और उसमें यही एक आत्मा अमर है । यह ऐसा है कि ( अ-तिथिः ) जिसकी तिथि निश्चित नहीं है, जिसके आनेकी और जानेकी तिथि निश्चित नहीं है, जन्म और मरणकी तिथि इस आत्माकीहि निश्चित नहीं है । इस प्रकारका यह अग्नि निःसंदेह ' आत्माग्नि ' ही है । उक्त शब्द यदि किसीका सत्य वर्णन कर रहे हैं, तो वह निःसंदेह आत्माग्नि ही है, क्योंकि उक्त शब्दोंकी सार्थकता आत्माग्निमेंही होती है । अस्तु । इस प्रकार यह आत्माग्नि कवि है ।

यह ' क्रतु ' अर्थात् ' यज्ञ ' भी है । क्योंकि ' पुरुषार्थ ' ही इसका स्वरूप है । सतत पुरुषार्थ इसका निज धर्म है । ' पुरुषो घाव यज्ञः ' ( छां० उ० ३।१६ ) पुरुष अर्थात् आत्मा यज्ञस्वरूपही है । इसलिये उसको ' क्रतु ' तथा ' शत-क्रतु ' कहते हैं । ' क्रतु ' शब्दका दूसरा अर्थ ' प्रज्ञा ' है । ज्ञानरूप चित्स्वरूप, होने से इसके भावमें यह अर्थ भी योग्य हो सकता है ।

' कवि-क्रतु ' का दूसरा अर्थ ' क्रांत-प्रज्ञ ' अर्थात्

' विशेष ज्ञानी ' है । यह अर्थ भी पूर्व अर्थोंके साथ सुसंगतहि है ।

' सत्यः ' यह इस मंत्रका शब्द विशेष महत्त्वपूर्ण है । इसका भाव ' तीनों कालोंमें विद्यमान ' ऐसा होता है । यह आग भूतकालमें नहीं होती, बीचमें जलती है और फिर बुझ जाती है, तीनों कालोंमें एक रूपमें नहीं रहती, परन्तु यह आत्मा तीनों कालोंमें समरस रहता है । यद्यपि गुप्त, व्यापक अग्नि सर्वदा विद्यमान होता है, तथापि इस अग्निका अग्निपन भी उस आत्मापर तो अवलंबित है, क्योंकि इस अग्निका अग्निही यह ' आत्माग्नि ' है । ' सत, सत्य ' ये शब्द एक सत्यस्वरूप आत्माकेही मुख्यतया वाचक हैं ।

" चित्र+श्रवः+तमः " विलक्षण यशसे युक्त । यह शब्द मुख्य वृत्तिसे आत्माग्निकाही वर्णन कर रहा है । देखिये इसका वर्णन—

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्ब्रूति  
तथैव चान्यः । आश्चर्यवच्चैवमन्यः शृणोति  
श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥ ( अ०गी० २।२९ )

' कोई तो आश्चर्य समझकर इसकी और देखते हैं, कोई आश्चर्य सरीखा इसका वर्णन करता है, कोई आश्चर्यसे सुनता है, परंतु सुन कर भी कोई इसे जानता नहीं है । "

इस प्रकार आत्माग्निके अपूर्व यशका गुणगान सब शास्त्र कर रहे हैं । इस प्रकारकी यह अद्भुत वस्तु है । अस्तु । इतना विवेचन चतुर्थ मंत्रके प्रथम दो पादोंका हुआ और इससे निश्चय हुआ है कि, यह मुख्यतया आत्माग्निका ही वर्णन है और गौण वृत्तिसे अन्य पदार्थोंका वर्णन है ।

आधिभौतिक दृष्टिसे समाज और राष्ट्रमें मनुष्य कोभी इसी प्रकार बर्ताव करना चाहिये । सृज् मनुष्य ( अग्निः ) अग्निके समान तेजस्वी, ( होता ) दाता, यज्ञ करनेवाला, ( सत्यः ) सच्चा, सत्याग्रही, सत्यनिष्ठ, ( चित्र-श्रवः-तमः ) विलक्षण यशस्वी बने और अनुकरणीय बनकर सबका चालक बने । इस रीतिसे येही शब्द मनुष्यके सामाजिक और राष्ट्रीय कर्तव्योंके बोधक हैं । इस प्रकार दो पादोंका स्पष्टीकरण करनेके पश्चात् अब विशेष महत्त्वका तृतीय पाद देखना है—

देवो देवेभिरागमत् ॥ ( ऋ० १।१।५ )

‘ यह एक देव अन्य सब देवोंके साथ आ जावे । ’ इस विषयमें जो वक्तव्य है, वह स इहेवेषु गच्छति ॥ ( ऋ० १।१।४ ) तथा ‘ स देवान् एह वक्षति । ’ ( ऋ० १।१।२ ) इनकी व्याख्या करते हुए कहा ही है ।

- [१] स देवान् इह आवक्षति = वह देवोंको यहां लाता है ।  
[२] स देवेषु इत् गच्छति = वह देवोंमें पहुंचता है ।  
[३] देवो देवेभि आगमत् = देव देवोंके साथ आ जाय ।

इन तीनों कथनोंमें एकही विशेष भाव है । एक आत्मा का अन्य देवोंके साथ जो संबन्ध है, वही यहां बताया है । इसका स्वरूप ठीक ठीक ध्यानमें आनेके लिये निम्न मंत्रोंका विचार करना आवश्यक है—

[१] अग्निर्देवेभिरागमत् ॥ ( ५१२ ऋ० ३।१०।४ )

[२] विश्वेभिः देवेभिर्याहि यक्षि च ॥

( ऋ० १।१४।१ )

[३] देवेभिरग्न आगहि ॥ ( ऋ० १।१४।२ )

[४] क्षयं बृहन्त परिभूषति द्युभिर्देवेभिरग्निः ॥

( ऋ० ३।३।२ )

[५] अग्निर्देवेभिर्मनुषश्च जंतुभिस्तन्वानो यक्षं पुरुपेशसं धिया ॥

( ऋ० ३।३।६ )

[६] गमहेवेभिरा स नो यजिष्ठः ॥ ( ऋ० ३।१३।१ )

[७] देवेभिर्देव सुरचा रुद्रानः ॥ ( ऋ० ३।१५।६ )

[८] अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्देवेभिर्महया गिरः ॥

( ऋ० ३।२४।४ )

[९] अग्ने विश्वेभिरागहि देवेभिर्हव्यदातये ॥

[१०] देवेभिरग्ने अग्निभिरिधानः ॥

( ऋ० ६।११।६ )

[११] त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः ।

देभिर्मानुषे जने ॥ ( ऋ० ६।१६।१ )

[१२] आ नो देभिरुप इवहृतिमग्ने याहि ॥

( ऋ० ७।१४।३ )

[१३] यो भानुभिर्विभावा विभात्यग्निर्देवेभिर्ऋता-  
वाजस्रः । ( ऋ० १०।६।२ )

‘ (१) देवोंके साथ अग्नि आया है, (२) सब देवोंके साथ आओ और यजन करो, (३) हे अग्ने ! तू देवोंके साथ आ, (४) अग्नि सब तेजस्वी देवोंके साथ बडे

(क्षयं) निवासस्थानको भूषित करता है, (५) देवोंके साथ और मनुष्यके संतानों के साथ बुद्धिमें विविध रूपवाला यज्ञ अग्नि फैलाता है, (६) पृथ्वी अग्नि देवोंके साथ हमारे पास आता है, (७) हे देव ! अनेक देवोंके साथ तू तेजसे तेजस्वी है, (८) हे अग्ने ! सब अग्निरूप देवोंके साथ वाणीको बढाओ, (९) हे अग्ने ! सब देवोंके साथ अन्नदानके लिये आओ, (१०) हे अग्ने ! तू सब अग्निरूप देवोंसे प्रदीप्त होता है, (११) हे अग्ने तू मानवी जनोंमें सब यज्ञोंका हितकारक और सब देवोंके साथ हवन करने-वाला है, (१२) हे अग्ने ! सब देवोंके साथ हमारे यज्ञमें आओ, (१३) जो तेजस्वी अग्नि तेजस्वियोंके साथ चमकता है । ’

इत्यादि मंत्रोंमें भी अनेक देवोंके साथ अग्निका रहना वर्णन किया है । ‘अनेक अग्नियोंके साथ अग्नि ( अग्नि-भिः अग्निः ) आता है । ’ यह इन मंत्रोंका वर्णन स्पष्ट-तासे सिद्ध कर रहा है कि, यहां अग्नि शब्द विशेष अर्थसे प्रयुक्त हुआ है, और केवल आगका ही वाचक नहीं है । इसी प्रकार देवतावाचक अन्य शब्दोंका भी उपयोग किया है । देखिये—

देवता इंद्र—

(१) स वह्निभिर्ऋकभिर्गांषु शश्वन् मितक्षुभि पुरु-  
कृत्वा जिगाय । पुरः पुरोहा सखिभिः सखी-  
यान् दृळ्हा हरोज कविभिः कविः सन् ॥

( ऋ० ६।३।२।३ )

(२) इन्द्र प्र णो धितावानं यक्ष विश्वेभिः देवेभिः ।  
तिरस्तवान विश्वते ॥ ( ऋ० ३।४।०।३ )

(३) प्र मात्राभी रिरिचे रोचमानः प्र देवेभिर्विश्वतो  
अप्रतीतः ॥ ( ऋ० ३।४।६।३ )

देवता अश्विनौ—

(१) आ नासत्या त्रिभिरैकादशैरिह देवेभिर्यातं  
मधुपेयमश्विना ॥ ( ऋ० १।१३।१।१ )

(२) आ नी देवेभिर्ऋप यातमर्वाक् सजोषसा नासत्या  
रथेन ॥ ( ऋ० ७।७।२।२ )

(३) आ...गतं ॥ देवा देवेभिरथ सचनस्तमा ॥

( ऋ० ८।२।६।८ )

इंद्र देवता के मंत्र-(१) ( पुरु-कृत्वा ) विविध कर्म करनेवाला वह इंद्र (शश्वत्) सर्वदा ( मित-जुभि वह्निभिः ऋकभिः ) घुटनोके बल बैठनेवाले अग्निके समान तेजस्वी उपासकोंके साथ (गोषु) गौवो, इंद्रियों और भूमि आदिकोंके संबंधमें (जिगाय) विनय प्राप्त करता है । ( पुरो-हा ) शत्रुके नगरोंका नाश करनेवाला ( सखिभिः कविभिः ) मित्ररूप कवियोंके साथ (सखीयन् कविः) मित्रता करनेवाला कवि ( दृढा पुरः ) बलयुक्त नगरोंका ( रुरोज ) भेदन करता है ॥ (२) हे (विश्व+पते इंद्र) प्रजापालक प्रभो! (नः धिता+वान यज्ञ) हमारे उत्तम उपकारी यज्ञको ( विश्वेभिः देवेभिः ) सब देवोंके साथ ( प्र तिरः ) पूर्ण करो ॥ (३) यह इंद्र ( रोचमानः ) तेजस्वी होता हुआ ( मात्राभिः ) सब प्रमाणोंसे ( प्र रिरिचे ) विशेष तेजस्वी हुआ है और ( देवेभिः ) देवोंके साथ ( विश्वतः ) सब प्रकारसे ( अ-प्रतीतः ) पीछे हटनेवाला नहीं है ।

अश्विनी देवताके मंत्र = (१) ( त्रिभिः एकादशैः देवेभिः ) तीन गुणा ग्यारह देवोंके साथ, हे अश्विदेवो! यहां मधुपान के लिये आइये । (२) हे (नासत्या) अश्वि-देवो! देवोंके साथ रथमें बैठकर वेगसे हमारे पास आइये । (३) हे ( सचनस्तमौ देवौ ) पूज्य देवो! अन्य देवोंके साथ यहां आइये ।

अग्नि, इंद्र और अश्विनी देवताओंके मंत्र ऊपर दिये हैं। उनको देखनेसे पता लग सकता है कि, वाक्य कैसे समान भावके ही हैं। देखिये—

अग्निदेवता—

देवो देवेभिः आगमत् ॥ ( ऋ. १।१।५ )  
अग्निः देवेभिः आगमत् ॥ ( ऋ. ३।१०।४ )  
अग्ने, अग्निभिः देवेभिः मह्य ॥ ( ऋ. ३।२४।४ )  
भानुभिः देवेभिः अग्निः विभाति ॥ ( ऋ. १०।६।२ )

इंद्र देवता—

वह्निभिः सः गोषु जिगाय ॥ ( ऋ. ६।३२।३ )  
पुरोहा सखिभिः सखीयान् हरोज ॥ ( ऋ. ६।३२।३ )  
कविभिः कविः पुरः हरोज ॥ ( ऋ. ६।३२।३ )

अश्विनी देवता—

त्रिभिरेकादशैः देवैः आयातं ॥ ( ऋ. १।३४।११ )  
नासत्यौ देवेभिः आयातं ॥ ( ऋ. ७।७२।२ )

देखिये, भिन्न शब्दोंसे किस प्रकार एकही भाव व्यक्त किया गया है। ' इंद्र ' शब्द ' आत्मा ' अर्थमें सुप्रसिद्ध है, क्योंकि ' इंद्रिय ' शब्द इंद्रशक्तिका वाचक आजकलकी भाषाओंमें भी अत्रयवोंके अर्थमें प्रयुक्त है, अर्थात् ' अनेक देवोंके साथ देवोंका राजा इंद्र शत्रुके किले तोड़ता है ' इस वर्णनमें ' आत्मा इंद्रियशक्तियोंके साथ विरोधकोका नाश करता है ' यही भाव है। तार्पर्य, इंद्रवर्णनसे आत्मवर्णन होनेमें कोई शका नहीं हो सकती। अश्विनी-देवोंके विषयमें किम्पीको शका होना स्वाभाविक है। परंतु ' नास+त्य ' शब्द ' नासिका में रहनेवाला ' प्राण इस अर्थमें प्रयुक्त होता है। ' नास+त्य ' यह विशेषण अश्विनी देवोंका है, इससे इनका स्थान नासिका है। इसलिये प्राणापान, श्वास-उच्छ्वास आदिकोंका वाचक यह शब्द है, इसमें शका नहीं। यह प्राण अन्य देवोंके साथ शरीरमें आता है और यहां यज्ञ करता है, यह वर्णन पूर्वोक्त अग्निके वर्णन के साथ मिलानेसे पता लग सकता है कि, दोनों वर्णनोंसे एक ही यज्ञका भाव बताया गया है। ( देवो देवेभि आगमत् ) ' एक देव अनेक देवोंके साथ यहां आता है, यहां यज्ञ करता है। देवोंसे यज्ञ कराता है, देवोंको हविर्भाग देता है, यज्ञसमाप्तिके पश्चात् देवोंके साथ चला जाता है। ' यह सब वर्णन यहांही इस शरीरमें देखनेका है। आत्मा इंद्रियशक्तियोंके साथ यहां आता है, इंद्रियोंसे कार्य कराता है, खाये हुए अन्नसे अंशरूप भोग प्रत्येक इंद्रियतक पहुंचाता है, इस अंशभोगसे इंद्रियस्थानीय देवतागग संतुष्ट होता है और वह इस आत्माको भी सुखी करता है। यह भाव निम्न गीतावचनमें देखिये—  
देवान् भावयताऽनेन ते देवा भवयंतु वः ।  
परस्परं भावयंतः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥  
( भ. गी. ३।११ )

' तुम इस यज्ञसे देवताओंको संतुष्ट करते रहो और वे देवता तुम्हें संतुष्ट करते रहे। इस प्रकार परस्पर एक दूसरेको संतुष्ट करते हुए दोनों परम श्रेय अर्थात् कल्याण प्राप्त कर लो। '

आत्मा और अन्य ३३ देव इतनेही पदार्थ इस जगत् में हैं। आत्मा स्वयंप्रकाशी सन्नाट है और ३३ देव आत्माके तेजसे प्रकाशित होनेवाले और आत्माके आदेशानुसार अपना नियत कार्य करनेवाले हैं। जहां आत्मा जाता है, वहां ये जाते हैं, जिस प्रकार सम्राट् के साथ ओहदेदारोंको जाना पड़ता है। अकेला आत्मा कुछ कर नहीं सकता और न सब देव आत्मशक्तिके बिना कुछ कर सकते हैं। इस प्रकार अन्यान्य सहाय्यताकी आवश्यकता है। अन्यान्य संगतिका ही नाम यज्ञ है। परस्पर सहकारितासे बड़े बड़े कार्य हो सकते हैं। आत्मा और ३३ देवोंकी सहकारितासे ही यह शरीरका कार्य चल रहा है। इसका इतना महत्त्व है कि, इससे और आश्चर्यकारक घटना जगत्में दूसरी हैही नहीं। परस्पर सहकारितासे इतने आश्चर्यकारक कार्य होना संभव है। यदि एक देव यहां बिगड बैठा, तो सब बिगड हो जाता है, तात्पर्य सबसे सहकार्यसेही आनंद होना संभव है।

### तुलना ।

मधुच्छंदा वैश्वामित्रः । अग्निः ।

[१] राजन्तमध्वराणां ॥ (८; ऋ० १।१।८)

प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः ।

[२] राजन्तमध्वराणां ॥ (१०३, ऋ० १।४।५।४)

[३] पतिर्ह्वराणामग्ने ॥ (९४, ऋ० १।४।४।९)

देवरातः, शुनःशेष अजीगर्तिः । अग्निः ।

[४] सम्राजन्तमध्वराणां ॥ (३८, ऋ० १।२।७।१)

विश्वामित्रः । अग्निः ।

[५] स केतुरध्वराणां ॥ (५१२, ऋ० ३।१।०।४)

सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ ।

[६] राजन्तौ अध्वराणां ॥ ( ऋ० ८।८।१।८ )

वत्सप्रिः । अग्निः ।

[७] नेतारमध्वराणाम् ॥ (१६०४; ऋ० १।०।४।६।४)

भिन्न ऋषि-दृष्ट मन्त्रोंमें वर्णन की समानता इस प्रकार है। अश्विनी देवोंका भी वर्णन इन्हीं शब्दोंसे हुआ है। इसका तात्पर्य यह कि द्रष्टा ऋषिकी भिन्नता और वर्णनीय देवताकी भिन्नता होनेपर भी 'प्रतिपाद्य विषयकी

एकता' है, अर्थात् जो 'यज्ञ' अग्निदेवताके भिषसे वेवमें बताया है, वही यज्ञ 'अश्विनौ' देवताके नामसे वर्णन किया है और इसी प्रकार अन्यान्य देवताओंके वर्णनसे 'उसी बातका दर्शन होता है। 'अग्नि यज्ञोका राजा किंवा प्रकाशक अथवा नेता है,' यही आशय ऊपरके मन्त्रोंका है। यहां इसके द्वारा जो यज्ञ किया जाता है, उसका सविस्तर वर्णन इसी स्पष्टीकरण में इसीसे पूर्व बताया जाता है। उसको देखनेसे पाठकोंको स्वयं अनुभव हो सकता है कि, यह यज्ञोंका राजा कैसा है और किस रीतिसे यज्ञ कर रहा है।

'ऋतस्य गोपा' अर्थात् 'अनादि सत्य नियमोंका पालनकर्ता' यही है। 'ऋत और सत्य' ये दो अनादि-भिन्न त्रिकालाबाधित सत्य नियम इस जगत् में सनातन हैं। इनका कोई उल्लंघन नहीं कर सकता। इनका संरक्षण यही आत्माग्नि है। इस विषयमें निम्न मन्त्र देखिये—

[१] ऋतं च सत्यं चाभीक्षात्तपसोऽध्यजायत ॥  
( ऋ० १०।१९०।१ )

[२] ऋतं पिपर्यनृतं नि तारीत् ॥  
( ऋ० १।१५२।२ )

[३] ऋतं चिकित्त्व ऋतमिच्चिकिद्भृतस्य धारा  
अनु तृन्धि पूर्वाः ॥ ( ऋ० ५।१२।२ )

[४] ऋतं ऋताय पत्रते सुमेधाः ॥  
( ऋ० ९।९७।२३ )

[५] ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते ॥  
( ऋ० ५।६८।४ )

'(१) प्रदीप्त तपसे ऋत और सत्य उत्पन्न हुए हैं, (२) ऋतका पालन करता है और अनृतको हटाना है, (३) ऋतके जाननेवाले ऋतके नियमको जानो, सनातन ऋतके प्रवाह फैलाओ, (४) उत्तम बुद्धिमान् ऋतके लिये ही ऋत को पवित्र करता है, (५) ऋत नियमसे ऋतका पोषण करनेवाले बहुत सामर्थ्य प्राप्त करते हैं।'

जिन दो अटल सत्य और सनातन नियमोंसे यह जगत् चल रहा है, वे 'ऋत और सत्य' ये दो नियम हैं। ऋतके विषयमें और देखिये—

[१] हंसः शुचिषद्भसुरंतरिक्षसञ्ज्ञो वा वेदिषद्-  
तिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद् वरसद्वत्सद्वयोमस-  
दृजा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥

( ऋ. ४।४०।५; कठ० ५।२ )

[२] प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य ॥ ( महा. ना. उ. २।७ )

[३] अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य ॥ ( तै उ. ३।१०।६ )

[४] ऋतं तपः सत्यं तपः ॥ ( महा. ना. उ. ८।१ )

[५] ऋतं सत्यं परं ब्रह्म ॥ ( महा. ना. उ. १२।१ )

(१) ( हंसः ) जिस प्राणका बाहिर आनेके समय 'ह' ध्वनि होता है और अंदर जानेके समय 'स' ध्वनि होता है, वह प्राण ( शुचि+षद् ) शुद्धमें रहनेवाला, ( वसुः ) निवासक, ( अंतरिक्ष+सद् ) हृदयके मध्यमें रहनेवाला, ( होता ) हवन करनेवाला, ( वेदि-षद् ) हृदय की वेदिमें रहनेवाला, ( अ-तिथिः ) जिसकी आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है, ( दुरोण-सत् ) स्वस्थानमें रहनेवाला, ( नृ+षद् ) मनुष्यके अंदर-हृदयमें-रहनेवाला, ( वर-सद् ) श्रेष्ठ स्थान में रहनेवाला, ( ऋत-सद् ) सत्यमें रहनेवाला, ( व्योम-सद् ) आकाशमें रहनेवाला, ( अष-जा ) कर्मके साथ होनेवाला, जीवनके साथ रहनेवाला, ( गो-जा ) इंद्रियोंके साथ रहनेवाला, ( ऋत-जा ) ऋतका प्रवर्तक, ( अ-द्रि-जा ) जड़में रहनेवाला, जो है, वही 'बृहत् ऋत' है। (२) ऋतका प्रथम प्रवर्तक प्रजापति है। (३) मैं ( अहं ) आत्मा ऋतका पहिला प्रवर्तक हूं। (४) ऋत और सत्य तपही है। (५) ऋत और सत्य परब्रह्म है।

यह ऋत की महिमा है। ऋत स्वयं आत्माका रूपही है। पूर्व मंत्रमें प्राण और आत्माही ऋत है, ऐसा स्पष्ट कहा है, इस लिये आत्माके निज धर्म ही ऋत और सत्य नामसे प्रसिद्ध है। 'ऋत' नाम यज्ञका भी है इसलिये ( ऋतस्य गोपा ) 'ऋतका रक्षक' का अर्थ 'यज्ञका रक्षक' भी है। इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

यज्ञस्य देवः । ( ऋ. १।१।१ )

ऋतस्य गोपा । ( ऋ. १।१।८; ३।१०।२ )

अध्वराणां राजन् । ( ऋ. १।१।८ )

अध्वराणां नेता । ( ऋ. १०।४६।४ )

यज्ञस्य नेता । ( ऋ. २।५।२ )

यज्ञस्य प्राविता । ( ऋ. ३।२।१३ )

यज्ञस्य साधनः ।

( ऋ. ३।२।७ )

अग्निदेवता का यह वर्णन एकही भावका घोटक होना स्वाभाविक है। यज्ञका स्वरूप पहले निश्चित किया ही है। पुरुषका जीवन यज्ञ ही है। इस जीवनरूप यज्ञका नेता, चालक, रक्षक यही आत्माग्नि है, इसमें कोई शंका नहीं है। यही बात पूर्वोक्त उपनिषद्ग्रन्थोंसे सिद्ध हो रही है। वहां भी ऋतका स्वरूप 'आत्मा' ही बताया है। इस प्रकार अनेक रीतिसे विचार करनेपर तात्पर्य एकही सिद्ध होता है, यही सत्य अर्थका लक्षण है।

'दीदिवि' शब्द इसके पश्चात् आता है। इसका अर्थ 'प्रकाशमान' है। इसके समान जो अन्यत्र मंत्रभाग है, उसमें 'दीदिहि' पाठ है, देखिये—

मधुच्छंश वैश्वामित्रः । अग्निः ।

गोपामृतस्य दीदिविम् । ( ऋ. १।१।८ )

विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः ।

गोपा ऋतस्य दीदिहि । ( ऋ. १।१०।२ )

उरुक्षय आमहीयवः । अग्नी रक्षोहा ।

गोपा ऋतस्य दीदिहि । ( ऋ. १०।११।८।७ )

घोडासा पाठभेद होनेपर भी अर्थकी एकता ही है, 'दीदिवि' शब्दका अर्थ 'प्रकाशमान' है और 'दीदिहि' का अर्थ 'प्रकाशित हो', ऐसा है, इसलिये अर्थकी दृष्टिसे कोई भेद नहीं है।

'वर्धमानं स्वे दमे' अपने दमनमें बढनेवाला, अपने घरमें वृद्धिको प्राप्त होनेवाला, यह इसका भाव है। 'दम' शब्दका अर्थ 'संयम, दमन, आत्मसंयम, मनोविकार और इंद्रिय वृत्तियोंका संयम मनकी स्थिरता, घर, परिवार' इतना है। संयमसे अपनी शक्ति बढती है। मनोनिग्रहसे आत्मशक्तिका विकास होता है। यही उन्नतिका नियम है।

(१) सत्कर्मोंका फैलाव करना, (२) सत्यनिष्ठा बढानी, (३) अज्ञानांधकार दूर करके ज्ञानका प्रकाश करना, और (४) संयमसे अपनी शक्तिका विकास करना चाहिये। इस मंत्रसे सब मनुष्योंके लिये यही उपदेश है और जो आत्मोन्नति चाहते हैं, उनके लिये ये बोध अमूल्य हैं। इनका पालन करनेसे मनुष्य अग्निके समान तेजस्वी हो सकता है।

इस तरह तुलनात्मक अध्ययन वेदके मंत्रोंका करना उचित है । इस तरहके अध्ययनसे ही वेद मंत्रोंका रहस्य ध्यानमें आ सकता है । इस दैवत-संहितासे इस तरहके अध्ययनकी अतीव सहायता होनेवाली है । आशा है, इस तरह का अध्ययन करके पाठक लाभ उठावेंगे ।

### सूचियोंका उपयोग ।

अग्निदेवताकी 'पुनरुक्त-मन्त्र-सूची' पृ० १८७से २१६ तक है । इस सूचीसे किस मन्त्रका कौनसा भाग कहां पुनरुक्त हुआ है, इसका पता लग सकता है । अग्निके विवरणमें तथा भूमिकामें जो पुनरुक्त मन्त्र दिये हैं और जो विवरण किया है, उससे इस सूचीकी सहायता वेद-मन्त्रोंका अर्थ करनेमें कितनी है, इसका पता लग सकता है । भूमिका पृ० ४८ से ६६ तक पाठक देख सकते हैं कि पुनरुक्त मन्त्रसूचीसे कैसा लाभ हो सकता है । यदि पाठक इस सूचीका उत्तम उपयोग कर सकेंगे, तो मन्त्रका अर्थ अन्तर्गत प्रमाणोंसे निश्चित होनेमें बड़ी सहायता हो सकती है ।

दूसरी उपमा-सूची है । इससे पता लग सकता है कि अग्निको कितनी उपमाएं किस अर्थमें दी हैं ।

तीसरी सूची मन्त्रोंकी अकारादि वर्णानुक्रम-सूची है । इससे कौनसा मन्त्र कहां है, इसका पता लग सकता है । अन्तिम सूची विशेषणोंकी है, इससे अग्निके गुण जाने जा सकते हैं । गुणोंका बोध होनेसे स्वरूप का निश्चय होता है । इस तरह ये सब सूचियां बड़ी उपयोगी हैं ।

### अन्तिम निवेदन ।

यहां अन्तिम निवेदन यह है कि यहां अग्निके विषयमें जो लिखा है, वही परिपूर्ण है, ऐसा नहीं समझना चाहिये । पाठक विचार करते रहेंगे, तो उनके सामने कई अन्य बातें स्वयं उपस्थित होंगी और प्रकाशित होती रहेंगी । इसलिये हर एक पाठक अपनी स्वतंत्र विचार-शक्तिसे इन मंत्रोंका विचार करें और जो विचार होगा, वह जनताके सामने रखते जाय । इसी तरह करनेसे ही वेद-विद्याका प्रकाश होगा ।

—संपादक





# अग्निदेवता का परिचय ।

## भूमिका की विषय-सूची ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१ विषय प्रवेश ।	६	२६ वृद्ध नागरिक ।	१९
२ भाषामें अग्नि शब्दका भाव ।	११	२७ प्रजामें देवताका अनुभव ।	२०
३ अग्निके पर्याय शब्द ।	११	२८ न दबनेवाला ।	११
४ पहला मानव " अग्नि " ।	११	२९ मूकमें वाचाल ।	२१
५ वृषभ और घेनु ।	७	३० पुराना मित्र ।	११
६ पहला अगिरा ऋषि ।	८	३१ विनाशियोंमें अविनाशी ।	२२
७ वैश्वानर अग्नि ।	११	३२ अनेक देवोंका प्रेरक एक देव ।	२३
८ ब्राह्मण और क्षत्रिय ।	९	३३ अनेक अग्नियोंके साथ एक अग्नि ।	२५
९ अग्निसंवर्धन ।	१०	३४ अग्नियोंमें अग्नि ।	२६
१० व्यक्तिभाव और सघभाव ।	११	३५ देवोंद्वारा प्रदीप्त अग्नि ।	२७
११ संघशक्ति का अद्भुत बल ।	११	३६ दूत अग्नि ।	२८
१२ जनता का केन्द्र ।	१२	३७ होता अग्नि ।	२९
१३ समाज का अमरत्व ।	११	३८ अग्निरूप होना ।	११
१४ सन्न धन सघका ही है ।	१३	३९ एक अग्नि से दूसरे अग्निका जलना ।	११
१५ सघ के विजयमें व्यक्ति का जय ।	११	४० देवोंद्वारा स्थापित अग्नि ।	३०
१६ बुद्धि में पहिला अग्नि ।	१४	४१ मानवी प्रजा में अग्नि ।	३१
१७ पहिला मननकर्ता अग्नि ।	१५	४२ जीवन-रसरूप अग्नि ।	३२
१८ मनुष्यमें अग्नि ।	११	४३ देवोंका निवासक अग्नि ।	११
१९ मर्त्यों में अमृत अग्नि ।	१६	४४ दस बहिर्न इसको प्रकट करती हैं ।	३३
२० जाठराग्नि ।	११	४५ प्रजाका रक्षक ।	३४
२१ वाणी के स्थानमें अग्नि ।	१७	४६ देवोंके साथ अग्निका बैठनेका स्थान ।	३५
२२ दिव्य जन्मकर्ता अग्नि ।	११	४७ यज्ञका ऋषि ।	३६
२३ शक्ति प्रदाता अग्नि ।	१८		
२४ पुरोहित अग्नि । गणराज ।	११		
२५ हस्तपादहीन गुह्य अग्नि ।	१९		

४८ देवोंमें यज्ञ ।	३७	५८ सप्त धातु ।	४५
४९ यही दूत है ।	„	६० सात घोड़े ।	„
५० गुहा संचारी अग्नि ।	३८	६१ सात बहिनें ।	„
५१ अग्निके साथी अनेक देव ।	४०	६२ सात ऋत्विज् ।	„
५२ “ सात ” संख्या का महत्त्व ।	४१	६३ पांच और दो दोहनकर्ता ।	४६
५३ सात हाथ ।	„	६४ तनूनपात् अग्नि ।	„
५४ सात जिह्वाएं ।	४२	६५ अन्य बातों का उपदेश ।	४७
५५ सात नदियां ।	४२	६६ परम आत्माग्नि ।	४८
५६ सप्त ऋषि और सप्त नद ।	४३	६७ सारांश ।	„
५७ सात किरण ।	४४	६८ अग्नि देवताके विचार करनेकी दिशा ।	„
५८ सप्त रत्न ।	„	६९ हृदयमें यज्ञ	५२

## अग्निदेवताकी सूचियाँ ।

१ पुरुरक्त-मन्त्रसूची	पृ० १८७-२१६
प्रथम-मण्डल	१८७-१९४
द्वितीय ”	१९४-१९५
तृतीय ”	१९५-१९८
चतुर्थ ”	१९८-२००
पञ्चम ”	२००-२०४
षष्ठ ”	२०४-२०६
सप्तम ”	२०६-२०८
अष्टम ”	२०८-२१०
दशम ”	२१०-२१६
२ उपमासूची	२१७-२२४
३ मंत्राणां अकारानुक्रमसूची	२२५-२३८
४ (विशेषण)गुणबोधकपदसूची	२३८-२७४

# अग्निमन्त्राणां ऋषिसूची ।

(१) अग्निः ।

ऋषि	मंत्रसंख्या	पृष्ठं	ऋषि	मंत्रसंख्या	पृष्ठं
मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः	१-९	१	धरुण आङ्गिरसः	८६६-८७०	६४
मेधातिथिः काण्वः	१०-२६	"	पूरुहान्त्रेयः	८७१-८८०	६५
शुनः शेष आजीगर्तिः, स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः	२७-४९	२	द्वितो मृकतवाहा आत्रेयः	८८१-८८५	"
हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः	५०-६७	३	वन्निरात्रेयः	८८६-८९०	६६
कण्वो घौरः	६८-८५	५	प्रयस्वन्त आत्रेयाः	८९१-८९४	"
प्रस्करुण्वः काण्वः	८६-१०९	६	सस आत्रेयः	८९५-८९८	६७
नोधा गौतमः	११०-१२३	८	विश्वसामा आत्रेयः	८९९-९०२	"
पराशरः शाक्यः	१२४-२१४	९	धुम्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः	९०३-९०६	"
गौतमो राहृगणः	२१५-२५५	१४	बन्धुः सुबन्धु श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च	९०७-९१०	"
कुत्स आङ्गिरसः	२५६-२७१	१६	क्रमेण गौपायना लौपायना वा	९११-९१२	"
परुच्छेपो दैवोदासिः	२७२-२९१	१८	वसूयव आत्रेयाः	९१३-९२७	"
दीर्घतमा औचथ्यः	२९२-३६०	२०	धरुणक्षैवृष्णः, त्रसदस्युः पौरु-		
अगस्त्यो मैत्रावरुणः	३६१-३६८	२६	कुत्सः, अश्वमेधश्च भारताः राजानः	९२८-९३२	६९
गृत्समदः शौनकः	३६९-४१५	२७	(अत्रिभौम इति केचित्)		
सोमाहुतिर्भागवः	४१६-४४६	३०	विश्ववारात्रेयी	९३३-९३८	"
विश्वामित्रो गाथिनः	४४७-५७३	३२	भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	९३९-१०८९	७०
ऋषभो वैश्वामित्रः	५७४-५८७	४१	शंयुर्बार्हस्पत्य (तृणपाणिः)	१०९०-१०९९	८०
उत्कीलः कात्यः	५८८-५९९	४२	वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	११००-१२१३	८१
कतो वैश्वामित्रः	६००-६०९	४३	वत्सः काण्वः	१२१४-२३	८९
गाथी कौशिकः	६१०-६२६	४४	सोभरिः काण्वः	१२२४-६९	९०
देवश्रवा देववातश्च भारतौ	६२७-६३०	४६	विश्वमना वैयश्वः	१२७०-९९	९३
वामदेवो गौतमः	६३१-७५४	"	नाभाकः काण्व	१३००-१३०९	९४
बुधगविष्टिरावात्रेयौ	७५५-७६६	५५	विरूप आङ्गिरसः	१३१०-१३८८	९५
कुमार आत्रेयः, वृशो वा जानः उभौ वा	७६७-७७८	५६	भर्गः प्रागाथः	१३८९-१४०८	९८
वसुश्रुत आत्रेयः	७७९-८१०	५७	सुदीति-पुरुमीकहावाङ्गिरसौ,	१४०९-१४२३	१००
इष आत्रेयः	८११-८२७	६०	तयोर्बान्धवतरः		
गय आत्रेयः	८२८-८४१	६१	हर्यतः प्रागाथः	१४२४-४१	१०१
सुतंभर आत्रेयः	८४२-८६५	६३	गोपवन आत्रेयः	१४४२-५३	१०२
			उशाना कात्यः	१४५४-६२	"

प्रयोगो भार्गवः, पावकोऽग्नि- बार्हस्पत्यो वा गृहस्पति-यविष्ठौ सहसः पुत्रावान्यतरो वा	१४६३-८४	१०३
त्रित आप्त्यः	१४८५-१५३३	"
त्रिशिरास्वाष्टः	१५३४-३९	१०८
हविर्धान आङ्गिः	१५४०-५६	"
दमनो यामायन.	१५५७-७०	११०
विमद ऐन्द्र, प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा वासुकः	१५७१-८८	१११
वत्सप्रिर्भालन्दनः	१५८९-१६१०	११२
देवाः	१६११-२४	११४
सुमित्रो वाङ्मयश्चः	१६२५-३६	११५
सौचीकोऽग्निः, वैश्वानरो वा, (ससिर्वाजंभरो वा)	१६३७-५०	११६
अरुणो वैतहृद्यः	१६५१-६५	११७
उपस्तुतो वारिहृद्यः	१६६६-७४	११८
चित्रमहा वासिष्ठः	१६७५-८२	११९
अग्निः	१६८३	१२०
पावकोऽग्नि.	१६८४-८९	"
शाङ्गर्गाः (जरिता, द्रोणः, सारिसृक्चः, सार्वमित्रः)	१६९०-९७	१२१
सृकीको वासिष्ठः	१६९८-१७०९	"
केतुराग्नेयः	१७०३-७	१२२
सुनुराभ्वः	१७०८-१०	"
वत्स आग्नेय.	१७११-१५	"
संवनन आङ्गिरसः	१७१६	"

(२) वैश्वानरोऽग्निः ।

नोधा गौतमः	१७१७-२३	१२३
कुत्स आङ्गिरसः	१७२४-२६	"
विश्वामित्रो गाथिनः	१७२७-५७	१२४
वामदेवो गौतमः	१७५८-७२	१२६
भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	१७७३-९३	१२७
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	१७९४-१८१२	१२९

(३) रक्षोहाऽग्निः ।

वामदेवो गौतमः	१८१३-२७	१३१
---------------	---------	-----

पायुर्भारद्वाजः	१८२८-५२	१३२
उरुक्षय आमहीयवः	१८५३-६१	१३४

(४) जातवेदा अग्निः ।

कश्यपो मारीच.	१८६२	"
इयेन आग्नेयः	१८६३-६५	१३५
भृगुः	१८६६	"

(५) घर्मोऽग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः	१८६७	"
----------------	------	---

(६) औषसोऽग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः	१८६८-७८	"
----------------	---------	---

(७) द्रविणोदा अग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः	१८७९-८६	१३६
----------------	---------	-----

(८) शुचिराग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः	१८८७-९४	१३७
----------------	---------	-----

(९) अग्निरापो गावश्च ।

वामदेवो गौतमः	१८९५-१९०५	१३८
---------------	-----------	-----

(१०) आप्री सूक्तानि ।

मेधातिथिः काण्वः	१९०६-१७	१३९
दीर्घतमा औचथ्यः	१९१८-३०	"
अगस्थो मैत्रावरुणिः	१९३१-४१	१४०
गुत्समदः शौनकः	१९४२-५२	"
विश्वामित्रो गाथिनः	१९५३-६३	१४१
वसुश्रुत आग्नेयः	१९६४-७३	१४२
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	१९७४-८०	१४३
असितः काश्यपो देवलो वा	१९८१-९१	१४४
सुमित्रो वाङ्मयश्च	१९९२-२००२	"
जमदग्निर्भार्गवः, रामो वा जामदग्न्यः	२००३-१३	१४५

विवस्वानृषि	२०१४-७१	१४६
ब्रह्मा	२०७२-८३	१५२
विवस्वानृषिः	२०८४-२१२८	१५३

त्रिवस्वानृषिः	२१२९-४१	१५७
अथर्वा	२१४२-२२१६	१५९
भृगुः	२२१७-७४	१६५
भृग्वज्रिः	२२७५-७८	१६९
भज्रिः	२२७९-८३	१७०
चातनः	२२८४-२३१८	"
शौनकः	२३१९-२९	१७२
मृगारः	२३३०-३६	१७३
गार्ग्यः	२३३७-३८	१७४
पतिवदनः	२३३९-४०	"
गृत्समदो मेधातिथिर्वा	२३४१	"
शुक्रः	२३४२	"
ब्रह्मा	२३४३-५४	"
वसिष्ठः	२३५५-६४	१७५
बादरायणिः	२३६५-७१	१७६
भज्रिः प्रचेताः	२३७२	१७७
मरीचिः काश्यपः	२३७३	"
जातवेदाः	२३७४	"
कौशिकः	२३७५-८९	"
कबन्धः	२३९०-९६	१७८

## अग्निसहचारी देवगणः ।

### (१) वैश्वानरोऽग्निः सूर्यश्च ।

सूर्धन्वाङ्गिरसो, } वामदेव्यो वा }	२३९७-२४१५	१७९
---------------------------------------	-----------	-----

### (२) रक्षोहाऽग्निः ।

रक्षोहा ब्राह्मः	२४१६-२१	१८१
------------------	---------	-----

### (३) अपां-न-पादाग्निः ।

गृत्समदः शौनकः	२४२२-३६	"
----------------	---------	---

### (४) अग्निन्द्रादयः ।

विष्वो मैत्रावरुणिः	२४३७	१८२
---------------------	------	-----

### (५) अग्निर्मरुतश्च ।

मेधातिथिः काण्वः	२४३८-४६	१८३
सोमरिः काण्वः	२४४७	"

### (६) अग्निमित्रवरुणादयः ।

हिरण्यस्तूप भाङ्गिरसः	२४४८	"
-----------------------	------	---

### (७) अग्निर्वरुणश्च ।

वामदेवो गौतमः	२४४९-५२	"
---------------	---------	---

### (८) अग्नाविष्णु ।

मेधातिथिः	२४५३-५४	१८४
-----------	---------	-----

### (९) अग्निः सूर्यो वायुश्च ।

पृषधः काण्वः	२४५५	"
--------------	------	---

### (१०) अग्निः सूर्यो वायुश्च ।

दीर्घतमा औचथ्यः	२४५६	"
-----------------	------	---

### (११) अग्निः सूर्यानिताः ।

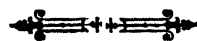
इरिम्बिठिः काण्वः	२४५७	"
-------------------	------	---

### (१२) [ केशिनः= ] अग्निः सूर्यवायवः ।

वातरशाना मुनयः= (१-७)	} २४५८-६४	१८५
क्रमेण जूतिः, वातजूतिः,		
विप्रजूतिः, वृषाणकः, करि-		
कतः, एतशः, ऋष्यशृङ्ग )		

### (१३) अग्नीषोमौ ।

गौतमो राह्वगणः	२४६५-७६	"
ब्रह्मा	२४७७-७९	१८६
अथर्वा (यशस्कामः)	२४८०	"
शन्तातिः	२४८१	"
भार्गवः	२४८२-८३	"





# दैवत-संहिता

( ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मंत्रान् देवतानुसारेण सगृह्य निर्मिता )

## १ अग्निदेवता ।

॥ १ ॥ ( ऋग्वेदस्य मण्डलं १, सूक्तं १, मंत्राः १-९ ) [ १ - ९ ] मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ( ८×३ ) ।

॥ॐ॥ अग्निमीळे पुरोहितं	यज्ञस्य देवमृत्विजम्	। होतारं रत्नधातमम्	१
अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिर्	ईड्यो नूतनैरुत	। स देवाँ एह वक्षति	२
अग्निना रयिमश्रवत्	पोषमेव दिवेदिवे	। यशसं वीरवत्तमम्	३
अग्ने यं यज्ञमध्वरं	विश्वतः परिभूरसि	। स इद् देवेषु गच्छति	४
अग्निर्होता कविक्रतुस्	सत्यश्चित्रश्रवस्तमः	। देवो देवेभिरा गमत्	५
यदुङ्ग दाशुषे त्वम्	अग्ने भद्रं करिष्यसि	। तवेत् तत् सत्यमङ्गिरः	६
उप त्वामे दिवेदिवे	दोषावस्तार्धिया वयम्	। नमो भरन्त एमसि	७
राजन्तमध्वराणां	गोपामतस्य दीदिविम्	। वर्धमानं स्वे दमे	८
स नः पितेव सूनवे	ऽग्ने क्षपायनो भव	। सचस्वा नः स्वस्तये	९

॥ २ ॥ ( ऋ० १ । १२ । १-१२ ) [ १० - २६ ] मेधातिथिः काण्वः ।

अग्निं दूतं वृणीमहे	होतारं विश्ववेदसम्	। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्	१०
अग्निमग्निं हवीमभिस्	सदा हवन्त विश्वपतिम्	। हव्यवाहं पुरुप्रियम्	११
अग्ने देवाँ इहा बह	जज्ञानो वृक्तबर्हिषे	। असि होता न ईड्यः	१२
ताँ उञ्जतो वि बौधय	यदग्ने यासि दूत्यम्	। देवैरा संस्ति बर्हिषि	१३

घृताहवन दीदिवः	प्रति ष्म रिषतो दह । अग्ने त्वं रक्षस्विनः	१४
अग्निनाग्निः समिध्यते	कविर्गृहपतिर्युवा । हन्यवाड् जुह्वास्यः	१५
कविमग्निमुप स्तुहि	सत्यधर्माणमध्वरे । देवममीव चार्तनम्	१६
यस्त्वामग्ने हविर्षतिर्	दूतं देव सपर्यति । तस्य स्म प्राविता भव	१७
यो अग्निं देववीतये	हविष्मौ आविवासति । तस्मै पावक मृळय	१८
स नः पावक दीदिवो	ऽग्ने देवाँ इहा वह । उप यज्ञं हविश्च नः	१९
स नः स्तवान् आ भर	गायत्रेण नवीयसा । रयिं वीरवतीमिषम्	२०
अग्ने शुक्लेण शोचिषा	विश्वाभिर्देवहूतिभिः । इमं स्तोमं जुषस्व नः	२१

॥ ३ ॥ ( ऋ० १ । १५ । ४, १२ )

अग्ने देवाँ इहा वह	सादया योनिषु त्रिषु । परिं भूष पिबं क्रतुना	२२
गार्हपत्येन सन्त्य	क्रतुना यज्ञनीरसि । देवान् देवयते यज	२३

॥ ४ ॥ ( ऋ० १ । २२ । ९-१० )

अग्ने पत्नीरिहा वह	देवानामुशतीरुप । त्वष्टारं सोमपीतये	२४
आ या अग्न इहावसे	होत्रां यविष्ठ भारतीम् । वरूत्रीं धिषणां वह	२५

॥ ५ ॥ ( ऋ० १ । २३ । २४ ) अनुष्टुप् ( ८×४ ) ।

सं माग्ने वर्चसा सृज	सं प्रजया समायुषा ।	
विद्युर्मै अस्य देवा	इन्द्रो विद्यात् सह ऋषिभिः	२६

॥ ६ ॥ ( ऋ० १ । २४ । २ )

[ २७-४९ ] शुनःशेष आजीगर्तिः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । त्रिष्टुप् ( ११×४ ) ।

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतांनां	मनामहे चारुं देवस्य नाम ।	
स नो मन्वा अदितये पुनर्दात्	पितरं च हशेयं मातरं च	२७

॥ ७ ॥ ( ऋ० १ । २६ । १-१० ) गायत्री ( ८×३ ) ।

वसिष्वा हि मिषेध्य	वस्त्राण्यूर्जां पते । सेमं नो अध्वरं यज	२८
नि नो होता वरेण्यस्	सदा यविष्ठ मन्मभिः । अग्ने दिविर्त्मता वचः	२९
आ हि ष्मा सूनवे पिता	ऽऽपिर्यजत्यापये । सखा सख्ये वरेण्यः	३०

आ नो बर्ही रिशादसो	वरुणो मित्रो अर्यमा ।	सीदन्तु मनुषो यथा	३१
पूर्व्यं होतरस्य नो	मन्दस्व सख्यस्य च ।	इमा उ षु श्रुधी गिरः	३२
यच्चिद्धि शश्वता तना	देवंदेवं यजामहे ।	त्वे इद्रूयते हविः	३३
प्रियो नो अस्तु विशपतिर्	होता मन्द्रो वरेण्यः ।	प्रियाः स्वघ्नयो वयम्	३४
स्वघ्नयो हि वार्यं	देवासो दधिरे च नः ।	स्वघ्नयो मनामहे	३५
अथा न उभयेषाम्	अमृत मर्त्यानाम् ।	मिथः संन्तु प्रशस्तयः	३६
विश्वेभिरग्ने अग्निभिर्	इमं यज्ञमिदं वचः ।	चनो धाः सहसो यहो	३७

॥ ८ ॥ ( ऋ० १ । २७ । १-१२ ) ।

अश्वं न त्वा वारवन्तं	वृन्दध्या अग्नि नमोभिः ।	सम्राजन्तमध्वराणाम्	३८
स घा नः सुनुः शर्वसा	पृथुप्रगामा सुशेवः ।	मीङ्गाँ अस्माकं बभूयात्	३९
स नो दूराक्षासाच्च	नि मर्त्यादघायोः ।	पाहि सदमिद् विश्वायुः	४०
इमम् षु त्वमस्माकं	सनि गायत्रं नर्व्यासम् ।	अग्ने देवेषु प्र वोचः	४१
आ नो भज परमेष्वा	वाजेषु मध्यमेषु ।	शिक्षा वस्वो अन्तमस्य	४२
विभक्तार्सि चित्रभानो	सिन्धोरूर्मा उपाक आ ।	सद्यो दाशुषे क्षरसि	४३
यमग्ने पृत्सु मर्त्यम्	अवा वाजेषु यं जुनाः ।	स यन्ता शश्वतीरिषः	४४
नकिरस्य सहन्त्य	पर्येता कर्यस्य चित् ।	वाजो अस्ति श्रवाय्यः	४५
स वाजं विश्वचर्षणिर्	अर्वद्भिरस्तु तरुता ।	विप्रेभिरस्तु सनिता	४६
जराबोध तद् विविद्धि	विशेविशे यज्ञियाय ।	स्तोमं रुद्राय दृशीकम्	४७
स नो महाँ अनिमानो	धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः ।	धिये वाजाय हिन्वतु	४८
स रेवाँ इव विशपतिर्	दैव्यः केतुः शृणोतु नः ।	उक्थैरग्निर्वृहद्भानुः	४९

॥ ९ ॥ ( ऋ० १ । ३२ । १-१८ ) [ ५० - ६७ ] हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः ।

जगती ( १२×४ ), ५७, ६५, ६७ त्रिष्टुप् ( ११×४ ) ।

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋषिर्	देवो देवानामभवः शिवः सखा ।	
तवं व्रते क्वयौ विश्वनापसो	ऽजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः	५०
त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः	क्विर्देवानां परि भूषसि व्रतम् ।	
विभुर्विश्वस्मै भुवनाय मेधिरो	द्विमाता शयुः कतिधा चिदायवे	५१



त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन	आविर्भव सुक्रतूया विवस्वते ।	
अरेजेतां रोदसी होतृवूर्ये	ऽसंघोर्भारमयजो महो वंसो	५२
त्वमग्ने मनवे द्यामवाशयः	पुरूरवसे सुकृते सुकृत्तरः ।	
श्वात्रेण यत् पित्रोर्मर्च्यसे पर्या	ऽऽ त्वा पूर्वमनयन्नापरं पुनः	५३
त्वमग्ने वृषभः पुष्टिवर्धन	उद्यतस्रुचे भवसि श्रवाग्र्यः ।	
य आहुतिं परि वेदा वर्षट्कृतिम्	एकायुरग्रे विश आविवाससि	५४
त्वमग्ने वृजिनवर्तेनि नरं	सकमन् पिपार्षि विदथे विचर्षणे ।	
यः शूरसाता परितकम्ये धने	दग्नेभिश्चित् समृता हंसि भूर्यसः	५५
त्वं तमग्ने अमृतत्व उत्तमे	मर्ते दधासि श्रवसे दिवेदिवे ।	
यस्तातृषाण उभयाय जन्मने	मर्यः कृणोषि प्रय आ च सूरये	५६
त्वं नो अग्ने सनये धनानां	यशसं कारुं कृणुहि स्तवानः ।	
ऋध्याम कर्मापसा नवेन	देवैर्घावापृथिवी प्रावतं नः	५७
त्वं नो अग्ने पित्रोरुपस्थ आ	देवो देवेष्वनवद्य जागृविः ।	
तनुकृद् बोधि प्रमतिश्च कारवे	त्वं कल्याण वसु विश्वमोपिषे	५८
त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं पितासि नस्	त्वं वयस्कृत् तवं जामयो वयम् ।	
सं त्वा रायः शतिनः सं सहस्रिणः	सुवीरं यन्ति व्रतपामदाभ्य	५९
त्वमग्ने प्रथममायुमायवे	देवा अकृण्वन् नहुषस्य विश्वपतिम् ।	
इळामकृण्वन् मनुषस्य शासनीं	पितुर्यत् पुत्रो ममकस्य जायते	६०
त्वं नो अग्ने तवं देव पायुभिर्	मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्ध ।	
त्राता तोकस्य तनेये गवामसि	अनिमेषं रक्षमाणस्तवं व्रते	६१
त्वमग्ने यज्यवे पायुरन्तरो	ऽनिषङ्गाय चतुरक्ष इध्यसे ।	
यो रातह्वयोऽवृक्काय धार्यसे	कीरेश्चिन् मन्त्रं मनसा वनोषि तम्	६२
त्वमग्ने उरुशंसाय वाघते	स्पर्ह यद् रेकणः परमं वनोषि तत् ।	
आध्रस्य चित् प्रमतिरुच्यसे पिता	प्र पाकं शास्सि प्र दिशो विदुष्टरः	६३
त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं	वर्मेव स्यूतं परि पासि विश्वतः ।	
स्वादुक्षन्ना यो वसतौ स्योनकृज्	जीवयाजं यजते सोपमा दिवः	६४

इमामग्ने शरणि मीमृषो न इममध्वानं यमगाम दूरात् ।	
आपिः पिता प्रमतिः सोम्यानां भृमिरस्यृषिकृन् मर्त्यानाम्	६५
मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्वदङ्गिरो ययातिवत् सदाने पूर्वच्छ्लुचे ।	
अच्छ याहा वहा दैव्यं जनम् आ सादय बर्हिषि यक्षि च प्रियम्	६६
एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृधस्व शक्ती वा यत्ते चकृमा विदा वा ।	
उत प्र णेष्यभि वस्यो अस्मान्त् सं नः सृज सुमत्या वाजवत्या	६७

॥ १० ॥ ( ऋ० १ । ३६ । १-१२, १५-२० )

[ ६८ - ८५ ] कण्वो घौरः । प्रगाथः = बृहती ( ८ । ८ । १२ । ८ ) + सतो बृहती ( १२ । ८ । १२ । ८ ) ।

प्र वो यहं पुरुणां विशां देवयतीनाम् ।	
अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिरीमहे यं सीमिदन्य ईळते	६८
जनासो अग्निं दधिरे सहोवृधं हविष्मन्तो विधेम ते ।	
स त्वं नो अद्य सुमना इहाविता भवा वाजेषु सन्त्य	६९
प्र त्वा दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं ।	
महस्ते सतो वि चरन्त्यर्चयो दिवि स्पृशन्ति भानवः	७०
देवासस्त्वा वरुणो मित्रो अर्यमा सं दूतं प्रत्नमिन्धते ।	
विश्वं सो अग्ने जयति त्वया धनं यस्ते ददाश मर्त्यैः	७१
मन्द्रो होता गृहपतिर् अग्ने दूतो विशामसि ।	
त्वे विश्वा संगतानि व्रता ध्रुवा यानि देवा अकृण्वत	७२
त्वे इदग्ने सुभगे यविष्ठय विश्वमा हूयते हविः ।	
स त्वं नो अद्य सुमना उताऽपरं यक्षि देवान्सुवीर्या	७३
तं धेमिस्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।	
होत्राभिरग्निं मनुषुः समिन्धते तितिर्वासो अति स्निधः	७४
घन्तो वृत्रमतरन् रोदसी अप उरु क्षयाय चक्रिरे ।	
भुवत् कण्वे वृषा द्युमन्याहुतः क्रन्दुदश्वो गर्विष्टिषु	७५
सं सीदस्व महाँ असि शोचस्व देववीतमः ।	
वि भूममग्ने अरुषं मिथेध्य सृज प्रशस्त दर्शतम्	७६

यं त्वा देवासो मनवे दधुरिह यजिष्ठं हव्यवाहन ।	
यं कण्वो मेध्यातिथिर्धनस्पृतं यं वृषा यमुपस्तुतः	७७
यमग्निं मेध्यातिथिः कण्वं ईध ऋतादधि ।	
तस्य प्रेषो दीदियुस्तमिमा ऋचस् तमग्निं वर्धयामसि	७८
रायस्पृधिं स्वधावोऽस्ति हि ते ऽग्ने देवेष्वाप्यम् ।	
त्वं वाजस्य श्रुत्यस्य राजसि स नो मृळ महौ असि	७९
पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः ।	
पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यर्विष्ठय	८०
घनेव विष्वग् वि जह्वराव्णस् तर्पुर्जम्भ यो अस्मधुक् ।	
यो मर्त्यः शिशीते अत्यक्तुभिर् मा नः स रिपुरीशित	८१
अग्निर्वन्ने सुवीर्यम् अग्निः कण्वाय सौभगम् ।	
अग्निः प्रार्वन् मित्रोत मेध्यातिथिम् अग्निः साता उपस्तुतम्	८२
अग्निना तुर्वशं यदुं परावतं उग्रादेवं हवामहे ।	
अग्निर्नयन् नववास्त्वं बृहद्रथं तुवीतिं दस्यवे सहः	८३
नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते ।	
दीदथ कण्वं ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः	८४
त्वेषासो अग्नेरमवन्तो अर्चयो भीमासो न प्रतीतये ।	
रक्षस्विनः सदमिद्यातुमावतो विश्वं समत्रिणं दह	८५

॥ ११ ॥ ( ऋ० १ । ४४ । १-१४ )

[ ८६ - १०९ ] प्रस्कण्वः काण्वः । प्रगाथः = बृहती ( ८ । ८ । १२ । ८ ) + सतो बृहती ( १२ । ८ । १२ । ८ ) ।

अग्ने विवस्वदुषसश् चित्रं राधो अमर्त्य ।	
आ दाशुषे जातवेदो बहा त्वम् अद्या देवाँ उपबुधः	८६
जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनो ऽग्ने रथीरध्वराणाम् ।	
सजूरश्विभ्यामुषसा सुवीर्यम् अस्मे धेहि श्रवो बृहत्	८७
अद्या दूतं वृणीमहे वसुमग्निं पुरुप्रियम् ।	
धूमकेतुं भाक्रजीकं व्युष्टिषु यज्ञानामध्वरश्रियम्	८८

श्रेष्ठं यर्विष्टमतिथिं स्वाहुतं जुष्टं जनाय दाशुषे । देवाँ अच्छा यातवे जातवेदसम् अग्निमीळे व्युष्टिषु	८९
स्तविष्यामि त्वामहं विश्वस्यामृत भोजन । अग्ने त्रातारमृते मियेध्य यजिष्ठं हव्यवाहन	९०
सुशंसौ बोधि गृणते यविष्ठय मधुजिह्वः स्वाहुतः । प्रस्कण्वस्य प्रतिरन्नायुर्जावसे नमस्या दैव्यं जनम्	९१
होतारं विश्ववेदसं सं हि त्वा विश इन्धते । स आ वह पुरुहूत प्रचेतसो ऽग्ने देवाँ इह द्रवत्	९२
सवितारमुषसमश्विना भगम् अग्नि व्युष्टिषु क्षपः । कणासस्त्वा सुतसोमास इन्धते हव्यवाहं स्वध्वर	९३
पतिर्ह्यध्वराणाम् अग्ने दूतो विशामसि । उषर्बुध आ वह सोमपीतये देवाँ अद्य स्वर्दशः	९४
अग्ने पूर्वा अनुषसो विभावसो दीदेथ विश्वदर्शतः । असि ग्रामेष्वविता पुरोहितो ऽसि यज्ञेषु मानुषः	९५
नि त्वा यज्ञस्य साधनम् अग्ने होतारमृत्विजम् । मनुष्वद् देव धीमहि प्रचेतसं जीरं दूतममर्त्यम्	९६
यद् देवानां मित्रमहः पुरोहितो ऽन्तरो यासि दूत्यम् । सिन्धौरिव प्रस्वनितास ऊर्मयो ऽग्नेभ्राजन्ते अर्चयः	९७
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर् देवैरग्ने सयावभिः । आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावाणो अध्वरम्	९८
शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः सुदानवो ऽग्निजिह्वा ऋतावृधः । पिबन्तु सोमं वरुणो धृतव्रतो ऽश्विभ्यामुषसा सजूः	९९

॥ १२ ॥ ( ऋ० १ । ४५ । १-१० ) अनुष्टुप् ( ८×४ ) ।

त्वमग्ने वरिह रुद्राँ आदित्याँ उत । यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् १००  
श्रुष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः। तान् रोहिदश्व गर्वणस् त्रयस्त्रिशतमा वह १०१  
प्रियमेधवदन्निवज् जातवेदो विरूपवत् । अङ्गिरस्वन् महिब्रत प्रस्कण्वस्य श्रुधी हवम् १०२

महिकेरव उतये प्रियमेधा अहूषत । राजन्तमध्वराणाम् अग्निं शुक्रेण शोचिषा १०३  
 घृताहवन सन्त्य इमा उ षु श्रुधी गिरः । याभिः कर्णस्य सूनवो हवन्तेऽवसे त्वा १०४  
 त्वां चित्रश्रवस्तम हवन्ते विक्षु जन्तवः । शोचिष्केशं पुरुप्रिय अग्ने हव्याय वोह्वे १०५  
 नि त्वा होतारमृत्विजं दधिरे वसुवित्तमम् । श्रुत्कर्णं मप्रथस्तमं विप्रा अग्ने दिर्विष्टिषु १०६  
 आ त्वा विप्रा अचुच्यवुः सुतसोमा अभि प्रयः । बृहद् भा बिभ्रतो हविर् अग्ने मर्तीय दाशुषे १०७  
 प्रातर्याव्णः सहस्कृत सोमपेयाय सन्त्य । इहाद्य दैव्यं जनं बृहिरा सादया वसो १०८  
 अर्वाञ्च दैव्यं जनम् अग्ने यक्ष्व सहृतिभिः । अयं सोमः सुदानवस् तं पात तिरोअह्वयम् १०९

॥१३॥ (श्र० १।५८।१-९) [ ११०-१२३ ] नोधा गौतमः । जगती, (१२×४) ११५-१२३ त्रिष्टुप (११×४) ।

नू चित् सहोजा अमृतो नि तुन्दते होता यद् दूतो अभवद् विवस्वतः ।  
 वि सार्धिष्ठेभिः पथिभी रजो मम आ देवताता हविषां विवासति ११०  
 आ स्वमघं युवमानो अजरस् तृष्वविष्यन्नतसेषु तिष्ठति ।  
 अत्यो न पृष्ठं मृषितस्य रोचते दिवो न सानुं स्तनयन्नचिक्रदत् १११  
 क्राणा रुद्रेभिर्वसुभिः पुरोहितो होता निषत्तो रयिषाळमर्त्यः ।  
 रथो न विक्ष्वृञ्जसान आयुषु व्यानुषग् वार्यां देव ऋण्वति ११२  
 वि वार्तजूतो अतसेषु तिष्ठते वृथा जुह्वभिः सृण्यां तुविष्वणिः ।  
 तृषु यदग्ने वनिनो वृषायसे कृष्णं त एम रुशदूर्मे अजर ११३  
 तर्पुर्जम्भो वन आ वार्तचोदितो यूथे न साह्वँ अत्र वाति वंसगः ।  
 अभित्रजन्नक्षितं पाजसा रजः स्थातुश्चरथं भयते पतत्रिणः ११४  
 दधुष्टा भृगवो मानुषेष्वा रयिं न चारुं सुहवं जनैभ्यः ।  
 होतारमग्ने अतिथिं वरेण्यं मित्रं न शेवं दिव्याय जन्मने ११५  
 होतारं सप्त जुहोइ यजिष्ठं यं वाघतो वृणते अध्वरेषु ।  
 अग्निं विश्वेषामरतिं वसूनां सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ११६  
 अच्छिद्रा सूनो सहसो नो अद्य स्तोतृभ्यो मित्रमहः शर्म यच्छ ।  
 अग्ने गृणन्तमंहस उरुष्य ऊर्जो नपात् पूभिरायसीभिः ११७  
 भवा वरुथं गृणते विभावो भवा मघवन् मघवञ्चः शर्म ।  
 उरुष्याग्ने अंहसो गृणन्तं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ११८

॥ १४ ॥ ( ऋ० १ । ६० । १-५ )

[ ११९-१२३ ] नोधा गौतमः । त्रिष्टुप् ।

वह्निं यशसं विदथस्य केतुं	सुप्राव्यं दूतं सद्योअर्थम् ।	
द्विजन्मानं रयिमिव प्रशस्तं	रातिं भरद् भृगवे मातरिश्वा	११९
अस्य शासुरुभयासः सचन्ते	हविष्मन्त उशिजो ये च मतीः ।	
दिवश्चित् पूर्वो न्यसादि होता	ऽऽपृच्छयौ विश्वपतिर्विक्षु वेधाः	१२०
तं नव्यसी हृद आ जायमानम्	अस्मत् सुकीर्तिर्मधुजिह्वमश्याः ।	
यमृत्विजो वृजने मानुषासः	प्रयस्वन्त आयवो जीजनन्त	१२१
उशिक् पावको वसुमानुषेषु	वरेण्यो होताधायि विश्वु ।	
दर्मुना गृहपतिर्दम आँ.	अग्निर्धुवद् रयिपती रयीणाम्	१२२
तं त्वा वयं पतिमग्रे रयीणां	प्र शंसामो मतिभिर्गोतमासः ।	
आशुं न वाजंभरं मर्जर्यन्तः	प्रातर्मक्षु धियावसुर्जगम्यात्	१२३

॥ १५ ॥ ( ऋ० १ । ६५ । १-१० )

[ १२४-२१४ ] पराशरः शाक्यः । द्विपदा विराद् ।

पश्चा न त्रायुं, गुहा चतन्तं	नमो युजानं, नमो वहन्तम्	१२४
सजोषा धीराः, पदैरनु ग्मन्	उप त्वा सीदन्, विश्वे यजत्राः	१२५
ऋतस्य देवा, अनु व्रता गुर्	भुवत् परिष्टिर, द्यौर्न भूम	१२६
वर्धन्तीमारपः, पन्वा सुशिश्चिम्	ऋतस्य योना, गर्भे सुजातम्	१२७
पृष्टिर्न रण्वा, क्षितिर्न पृथ्वी	गिरिर्न भुज्म, क्षोदो न शंभु	१२८
अत्यो नाज्मन्, त्सर्गप्रतक्तः	सिन्धुर्न क्षोदुः, क ई वराते	१२९
जामिः सिन्धूनां, भ्रातैव स्वस्राम्	इभ्यान् न राजा, वनान्यत्ति	१३०
यद्वातजूतो, वना व्यस्थाद्	अग्निर्ह दाति, रोमां पृथिव्याः	१३१
श्चसित्यप्सु, हंसो न सीदन्	ऋत्वा चेतिष्ठो, विशामुषश्चुत्	१३२
सोमो न वेधा, ऋतप्रजातः	पशुर्न शिश्वा, विश्वदूरेभाः	१३३

॥ १६ ॥ ( ऋ० १ । ६६ । १-१० )

स्यिर्न चित्रा, सूरु न संहग्	आयुर्न प्राणो, नित्यो न सूनुः	१३४
तक्ष न भूर्णिर, वना सिषक्ति	पयो न धेनुः, शुचिर्विभावा	१३५

दाधार क्षेमम्, ओको न रण्वो	यवो न पक्वो, जेता जनानाम्	१३६
ऋषिर्न स्तुभ्वा, विश्वु प्रशस्तो	वाजी न प्रीतो, वर्यो दधाति	१३७
दुरोकशोचिः, क्रतुर्न नित्यो	जायेव योनाव्, अरं विश्वस्मै	१३८
चित्रो यदभ्राद्, ह्येतो न विश्वु	रथो न रुक्मी, त्वेषः समत्सु	१३९
सेनेव सृष्टा, ऽमै दधाति	अस्तुर्न दिद्युत्, त्वेषप्रतीका	१४०
यमो ह जातो, यमो जर्नित्वं	जारः कनीनां, पतिर्जनीनाम्	१४१
तं वञ्चराथा, वयं वसत्यास्	तं न गावो, नक्षन्त इद्धम्	१४२
सिन्धुर्न क्षोदुः, प्र नीचीरैनोन्	नवन्त गावः, स्वर्दृशीके	१४३

॥ १७ ॥ (ऋ० १। ६७। १-१०)

वनेषु जायुर्, मर्तेषु मित्रो	वृणीते श्रुष्टि, राजेवाजुर्यम्	१४४
क्षेमो न साधुः, क्रतुर्न भद्रो	भुवत् स्वाधीर्, होता हव्यवाद्	१४५
हस्ते दधानो, नृम्णा विश्वानि	अमै देवान् धाद्, गुहा निषीदन्	१४६
विदन्तीमत्र, नरो धियंधा	हृदा यत् तष्टान्, मन्त्राँ अशंसन्	१४७
अजो न क्षां, दाधारं पृथिवीं	तस्तम्भ द्यां, मन्त्रैभिः सुत्यैः	१४८
प्रिया पदानि, पश्वो नि पाहि	विश्वायुग्ने, गुहा गुहं गाः	१४९
य ई चिकेत, गुहा भवन्तम्	आ यः ससाद्, धारामृतस्य	१५०
वि ये चृतान्ति, क्रता सर्पन्त	आदिद् वसन्ति, प्र ववाचास्मै	१५१
वि यो वीरुत्सु, रोधन् महित्वा	उत प्रजा, उत प्रसूष्वन्तः	१५२
चित्तिरपां, दमै विश्वायुः	सर्वेव धीराः, संमाय चक्रुः	१५३

॥ १८ ॥ (ऋ० १। ६८। १-१०)

श्रीणन्नपं स्थाद्, दिवं भुरण्युः	स्थातुश्चरथम्, अक्तून् व्यूर्णोत्	१५४
परि यदेषाम्, एको विश्वेषां	भुवद् देवो, देवानां महित्वा	१५५
आदित् ते विश्वे, क्रतुं जुषन्त	शुष्काद्यद् देव, जीवो जर्निष्ठाः	१५६
भजन्त विश्वे, देवत्वं नाम	ऋतं सर्पन्तो, अमृतमेवैः	१५७
ऋतस्य प्रेषा, ऋतस्य धीतिर्	विश्वायुर्विश्वे, अपांसि चक्रुः	१५८
यस्तुभ्यं दाशाद्, यो वा ते शिक्षात्	तस्मै चिकित्वान्, रयिं दयस्व	१५९
होता निषत्तो, मनोरपत्ये	स चिन् न्वासां, पती रयीणाम्	१६०

इच्छन्त॒ रेतो॑, मिथ॒स्तनू॑षु	सं जान॑त॒ स्वैर्, दक्षै॑रमू॒राः	१६१
पितु॑र्न पु॒त्राः, ऋ॑तुं जुष॒न्त	श्रोष॑न् ये अ॒स्य, शासं॑ तु॒रासः	१६२
वि राय॑ औ॒र्णोद्, दुरः॑ पु॒रुक्षुः	पिपे॑श॒ नाकं॑, स्त॒भिर्द॑मू॒नाः	१६३

॥ १९ ॥ ( ऋ० १ । ६९ । १-१० )

शुक्रः॑ शु॒शुक्राँ, उ॒षो न जा॑रः	प॒प्रा संमी॑ची, दि॒वो न ज्योतिः॑	१६४
परि॑ प्रजा॒तः, ऋ॑त्वा बभू॒थ	भुवो॑ दे॒वानां॑, पि॒ता पु॒त्रः सन्	१६५
वे॒धा अ॒दृप्तो॑, अ॒ग्निर्वि॑जानन्	ऊ॒र्ध्नं गो॑नां, स्वा॒द्यां पि॒तूनाम्	१६६
जने॑ न शेव, आ॒हूर्यः॑ सन्	म॒ध्ये निष॑त्तो, र॒ण्वो दुरो॑णे	१६७
पु॒त्रो न जा॑तो, र॒ण्वो दुरो॑णे	वा॒जी न प्री॑तो, वि॒शो वि ता॑रीत्	१६८
वि॒शो यद॑ह्ने, नृ॒भिः सनी॑ळा	अ॒ग्निर्दे॑व॒त्वा, विश्वा॑न्य॒श्याः	१६९
नकि॑ष्ट ए॒ता, व्र॒ता मि॑नन्ति	नृ॒भ्यो यदे॑भ्यः, श्रु॒ष्टिं च॒कर्त्त	१७०
तत् तु ते दंसो॑, यद॒हन्त्स॑मानैर्	नृ॒भिर्यद् यु॑क्तो, वि॒वे रपांसि॑	१७१
उ॒षो न जा॑रो, वि॒भावो॑स्रः	संज्ञा॑तरूप॒श्चि॒कैतद॑स्मै	१७२
त्मना॑ वह॒न्तो, दुरो॑ व्यृ॒ण्वन्	नव॑न्त॒ विश्वे॑, स्व॒र्षु दृशी॑के	१७३

॥ २० ॥ ( ऋ० १ । ७० । १-११ )

व॒नेम॑ पूर्वी॒र्, अ॒र्यो म॑नीषा	अ॒ग्निः सु॒शोको॑, विश्वा॑न्य॒श्याः	१७४
आ दै॒व्यानि॑, व्र॒ता चि॑कित्वा॒न्	आ मा॑नु॒षस्य॑, ज॒नस्य॑ ज॒न्म	१७५
ग॒र्भो यो अ॒पां, ग॒र्भो व॑ना॒नां	ग॒र्भश्च॑ स्था॒तां, ग॒र्भश्च॑रथाम्	१७६
अ॒द्रौ चि॑द॒स्मा, अ॒न्तर्दुरो॑णे	वि॒शां न विश्वो॑, अ॒मृतः॑ स्वा॒धीः	१७७
स हि॑ क्ष॒पावो॑, अ॒ग्नी र॑यीणां	दा॒शद् यो अ॑स्मा, अ॒रं सू॑क्तैः	१७८
ए॒ता चि॑कित्वा॒न्, भू॒मा नि पा॑हि	दे॒वानां॑ ज॒न्म, म॑तीश्च वि॒द्वान्	१७९
व॒र्धान्यं॑ पूर्वीः, क्ष॒पो वि॑रू॒पाः	स्था॑तुश्च॒ रथ॑म्, ऋ॒तप्र॑वी॒तम्	१८०
अ॒राधि॑ हो॒ता, स्व॑र्षु॒र्निष॑त्तः	कृ॒ण्वन् विश्वा॑नि, अ॒पांसि॑ स॒त्या	१८१
गोषु॑ प्र॒शस्ति॑, व॒नेषु॑ धिषे	भ॒रन्त॑ विश्वे, ब॒र्लि स्व॑र्णः	१८२
वि त्वा॑ नरः, पु॒रुत्रा॑ संप॒र्यन्	पि॒तुर्न जि॑त्रे॒र्, वि वे॑दो॑ भ॒रन्त	१८३
सा॒धुर्न गृ॑ध्नु॒र्, अ॒स्तैव॑ श॒रो	या॑तैव॒ भीम॑स्, त्वेषः॑ स॒मत्सु॑	१८४



॥ २१ ( ऋ० १।७१।१-१० ) । त्रिष्टुप् ।

उप प्र जिन्वन्नृशतीरुशन्तं	पतिं न नित्यं जनयः सनीळाः ।	
स्वसारः श्यावीमरुषीमजुषन्	चित्रमुच्छन्तीमुषसं न गावः	१८५
वील्ल चिद् दृह्हा पितरो न उक्थैर्	अद्रिं रुजन्नङ्गिरसो रवेण ।	
चक्रुर्दिवो बृहतो गातुमस्मे	अहः स्वर्विविदुः केतुमुस्राः	१८६
दधन्नृतं धनयन्नस्य धीतिम्	आदिदुर्यो दिधिष्वोरे विभृत्राः ।	
अतृष्यन्तीरपसौ यन्त्यच्छा	देवाञ् जन्म प्रयसा वर्धयन्तीः	१८७
मथीद् यदीं विभृतो मातरिश्वा	गृहेगृहे श्येतो जेन्यो भूत् ।	
आदीं राज्ञे न सहीयसे सचा	सन्ना दूत्यं भृगवाणो विवाय	१८८
महे यत् पित्र ई रसं दिवे कर्	अवं त्सरत् पृश्न्यश्चिकित्वान् ।	
सृजदस्ता धृषता दिद्युमस्मै	स्वायां देवो दुहितरि त्विषिं धात्	१८९
स्व आ यस्तुभ्यं दम आ विभाति	नमो वा दाशादुशतो अनु दून ।	
वधो अग्ने वयो अस्य द्विवर्हा	यासद् राया सरथं यं जुनासि	१९०
अग्निं विश्वा अभि पृक्षः सचन्ते	समुद्रं न स्रवतः सप्त यहीः ।	
न जामिभिर्वि चिकिते वयो नो	विदा देवेषु प्रमतिं चिकित्वान्	१९१
आ यदिषे नृपतिं तेज आनद्	शुचि रेतो निषिक्तं द्यौरभीके ।	
अग्निः शर्धमनवद्यं युवानं	स्वाध्व्यं जनयत् सूदयञ्च	१९२
मनो न योऽध्वनः सद्य एति	एकः सत्रा सूरौ वस्व ईशे ।	
राजाना मित्रावरुणा सुपाणी	गोषु प्रियममृतं रक्षमाणा	१९३
मा नो अग्ने सख्या पित्र्याणि	प्र मर्षिष्ठा अभि विदुष्कविः सन् ।	
नभो न रूपं जरिमा मिनाति	पुरा तस्या अभिशस्तेरधीहि	१९४

॥ २२ ॥ ( ऋ० १।७२।१-१० )

नि काव्या वेधसः शश्वतस्कर्	हस्ते दधानो नर्यां पुरूणि ।	
अग्निर्भुवद् रयिपती रयीणां	सत्रा चक्राणो अमृतानि विश्वा	१९५
अस्मे वत्सं परि षन्तं न विन्दन्	इच्छन्तो विश्वे अमृता अमूराः ।	
श्रमयुवः पदव्यो धियंधास्	तस्थुः पदे परमे चार्वमेः	१९६

तिस्रो यदग्ने शरदुस्त्वामिच्च	छुचिं घृतेन शुचयः सपर्यान् ।	
नामानि चिद् दधिरे यज्ञियानि	असूदयन्त तन्वः सुजाताः	१९७
आ रोदसी बृहती वेविदानाः	प्र रुद्रिया जग्निरे यज्ञियासः ।	
विदन् मर्तो नेमधिता चिकित्वान्	अग्निं पदे परमे तस्थिर्वासम्	१९८
संजानाना उप सीदन्नभिज्जु	पत्नीवन्तो नमस्यं नमस्यन् ।	
रिरिक्कांसस्तन्वः कृण्वत स्वाः	सखा सख्युर्निमिषि रक्षमाणाः	१९९
त्रिः सप्त यद् गुह्यानि त्वे इत्	पदाविदन् निहिता यज्ञियासः ।	
तेभी रक्षन्ते अमृतं सजोषाः	पशुञ्च स्थातृञ्चरथं च पाहि	२००
विद्राँ अग्ने वयुनानि क्षितीनां	व्यानुषकुरुधो जीवसे धाः ।	
अन्तर्विद्राँ अध्वनो देवयानान्	अतन्द्रो दूतो अभवो हविर्वाट्	२०१
स्वाध्याँ दिव आ सप्त यही	रायो दुरो व्यृतज्ञा अजानन् ।	
विदद् गव्यं सरमा दृह्ममूर्ध्वं	येना नु कं मानुषी भोजते विट्	२०२
आ ये विश्वा स्वपत्यानि तस्थुः	कृण्वानासो अमृतत्वार्यं गातुम् ।	
महा महङ्गिः पृथिवी वि तस्थे	माता पुत्रैरदितिर्धार्यसे वेः	२०३
अधि श्रियं नि दधुश्चारुमस्मिन्	दिवो यदुक्षी अमृता अकृण्वन् ।	
अध क्षरन्ति सिन्धवो न सृष्टाः	प्र नीचीरग्ने अरुषीरजानन्	२०४

॥ २३ ॥ ( क्र० १ । ७३ । १-१० )

रयिर्न यः पितृवित्तो वयोधाः	सुप्रणीतिश्चिकितुषो न शसुः ।	
स्योनशीरतिथिर्न प्रीणानो	होतेव सन्नं विधतो वि तारीत्	२०५
देवो न यः संविता सत्यमन्मा	क्रत्वा निपाति वृजनानि विश्वा ।	
पुरुप्रशस्तो अमतिर्न सत्य	आत्मेव शेवो दिधिषाय्यो भूत्	२०६
देवो न यः पृथिवी विश्वधाया	उपक्षेति हितमित्रो न राजा ।	
पुरःसदः शर्मसदो न वीरा	अनवद्या पतिजुष्टेव नारीं	२०७
तं त्वा नरो दम् आ नित्यमिद्धम्	अग्ने सचन्त क्षितिषु ध्रुवासु ।	
अधि द्युम्नि नि दधुर्भूर्यस्मिन्	भवा विश्वार्युर्धरुणो रयीणाम्	२०८

वि पृक्षो अग्ने मघवानो अश्रुर्	वि सूरयो ददतो विश्वमायुः ।	
सनेम वाजं समिथेष्वर्यो	भागं देवेषु श्रवसे दधानाः ।	२०९
ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः	स्मदूधीः पीपयन्त द्युभक्ताः ।	
परावतः सुमतिं भिक्षमाणा	वि सिन्धवः समयां ससुरद्रिम्	२१०
त्वे अग्ने सुमतिं भिक्षमाणा	दिवि श्रवो दधिरे यज्ञियासः ।	
नक्ता च चक्रुरुषसा विरूपे	कृष्णं च वर्णमरुणं च सं धुः	२११
यान् राये मर्तान्तसुषूदो अग्ने	ते स्याम मघवानो वयं च ।	
छायेव विश्वं भुवनं सिसाक्षि	आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम्	२१२
अर्वेन्द्रिरग्ने अर्वतो नृभिर्नृन्	वीरैर्वीरान् वनुयामा त्वोताः ।	
ईशानासः पितृवित्तस्य रायो	वि सूरयः शतहिमा नो अश्रुः	२१३
एता ते अग्न उचथानि त्रेधो	जुष्टानि सन्तु मनसे हृदे च ।	
शकेम रायः सुधुरो यमं ते	ऽधि श्रवो देवभक्तं दधानाः	२१४

॥ २४ ॥ ( ऋ० १ । ७४ । १-९ ) [ २१५-२५५ ] गोतमो राहृगणः । गायत्री ।

उपप्रयन्तो अध्वरं	मन्त्रं वोचेमाग्नये	। आरे अस्मे च शृण्वते	२१५
यः स्त्रीहितीषु पूर्यः	संजग्मानासु कृष्टिषु	। अरक्षद् दाशुषे गयम्	२१६
उत भुवन्तु जन्तव	उदभिर्वृत्रहाजनि	। धनंजयो रणेरणे	२१७
यस्य दूतो असि क्षये	वेषि हव्यानि वीतये	। दुस्मत् कृणोष्यध्वरम्	२१८
तमित् सुहृव्यमङ्गिरः	सुदेवं सहसो यहो	। जना आहुः सुबर्हिषम्	२१९
आ च वहासि तां इह	देवां उप प्रशस्तये	। हव्या सुश्वन्द्र वीतये	२२०
न योरुपन्दिरश्व्यः	शृण्वे रथस्य कच्चन	। यदग्ने यासि दूत्यम्	२२१
त्वोतो वाज्यहयो	ऽभि पूर्वस्मादपरः	। प्र दाश्वं अग्ने अस्थात्	२२२
उत द्युमत् सुवीर्यं	बृहदग्ने विवाससि	। देवेभ्यो देव दाशुषे	२२३

॥ २५ ॥ ( ऋ० १ । ७५ । १-५ )

जुषस्व सप्रथस्तमं	बचो देवप्सरस्तमम् । हव्या जुह्वान आसनि	२२४
अथा ते अङ्गिरस्तम	अग्ने वेधस्तम प्रियम् । वोचेम ब्रह्म सानसि	२२५
कस्ते जाभिर्जनानाम्	अग्ने को दाश्वध्वरः । को ह कस्मिन्नसि श्रितः	२२६

त्वं जामिर्जनानाम् अग्ने मित्रो असि प्रियः । सखा सखिभ्य ईड्यः २२७  
यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ ऋतं बृहत् । अग्ने यक्षि स्वं दर्मम् २२८

॥ २६ ॥ ( ऋ० १ । ७६ । १-५ ) त्रिष्टुप् ।

का त उपेतिर्मनसो वराय भुवदग्ने शंतमा का मनीषा ।  
को वा यज्ञैः परि दक्षं त आप केन वा ते मनसा दाशेम २२९  
एह्यन्न इह होता नि षीद अदब्धः सु पुरेता भवा नः ।  
अवतां त्वा रोदसी विश्वमिन्वे यजा महे सौमनसाय देवान् २३०  
प्र सु विश्वान् रक्षसो धक्ष्यग्ने भवा यज्ञानामभिशस्तिपावा ।  
अथा वह सोमपतिं हरिभ्याम् आतिथ्यमस्मै चकृमा सुदान्त्रे २३१  
प्रजावता वचसा वहिरासा च हुवे नि च सत्सीह देवैः ।  
वेषि होत्रमुत पोत्रं यजत्र बोधि प्रयन्तर्जनितर्वसूनाम् २३२  
यथा विप्रस्य मनुषो हविभिर् देवाँ अयजः कविभिः कविः सन् ।  
एवा होतः सत्यतर त्वमद्य अग्ने मन्द्रया जुह्वा यजस्व २३३

॥ २७ ॥ ( ऋ० १ । ७७ । १-५ )

कथा दाशेमाग्नये कास्मै देवजुष्टोच्यते भामिने गीः ।  
यो मर्त्येष्वमृतं ऋतावा होता यजिष्ठ इत् कृणोति देवान् २३४  
यो अश्वरेषु शंतम ऋतावा होता तमू नमोभिरा कृणुध्वम् ।  
अग्निर्यद् वेर्मतीय देवान् त्स चा बोधाति मनसा यजाति २३५  
स हि ऋतुः स मर्यः स साधुर् मित्रो न भूदद्भुतस्य रथीः ।  
तं मेधेषु प्रथमं देवयन्तीर् विश उप ब्रुवते दुस्मारीः २३६  
स नो नृणां नृतमो रिशादा अग्निर्गिरोऽवसा वेतु धीतिम् ।  
तना च ये मधवानः शर्विष्ठा वाजप्रसूता इषयन्त मन्म २३७  
एवाग्निर्गोतमेभिर्ऋतावा विप्रैभिरस्तोष्ट जातवेदाः ।  
स एषु द्युम्नं पीपयत् स वाजं स पुष्टिं याति जोषमा चिकित्वान् २३८

॥ २८ ॥ ( ऋ० १ । ७८ । १-५ ) गायत्री

अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे । द्युम्नैरभि प्र गोनुमः २३९

तमु त्वा गोतमो गिरा	रायस्कामो दुवस्यति ।	द्युम्नैराभि प्र णौनुमः	२४०
तमु त्वा वाजसार्तमम्	अङ्गिरस्वद् हवामहे ।	द्युम्नैराभि प्र णौनुमः	२४१
तमु त्वा वृत्रहन्तमं	यो दस्यूरवधुनुषे	। द्युम्नैराभि प्र णौनुमः	२४२
अवोचाम् रहूगणा	अग्रये मधुमद् वचः	। द्युम्नैराभि प्र णौनुमः	२४३

॥ २९ ॥ ( ऋ० १ । ७९ । १-१२ )

२४४-४६ त्रिष्टुप्; २४७-४९ उष्णिक्, २५०-२५५ गायत्री ।

हिरण्यकेशो रजसो विसारे	ऽह्निर्धुनिर्वाति इव ध्रजीमान् ।		
शुचिभ्राजा उषसो नवैद्रा	यशस्वतीरपस्युवो न सत्याः		२४४
आ ते सुपर्णा अभिनन्तं एवैः	कृष्णो नोनाव वृषभो यदीदम् ।		
शिवाभिर्न स्मर्यमानाभिरागात्	पतन्ति मिहः स्तनयन्त्यभ्रा		२४५
यदीमृतस्य पर्यसा पियानो	नयन्नृतस्य पथिभी रजिष्ठैः ।		
अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा	त्वचं पृञ्चन्त्युपरस्य योनौ		२४६
अग्ने वाजस्य गोमत्	ईशानः सहसो यहो ।	अस्मे धेहि जातवेदो महि श्रवः	२४७
स इधानो वसुष्कविर्	अग्निरीळ्ण्यो गिरा ।	रेवदुस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि	२४८
क्षपो राजकुत त्मना	ऽग्ने वस्तोरुतोषसः ।	स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति	२४९
अवा नो अग्र ऊतिभिर्	गायत्रस्य प्रभर्मणि ।	विश्वासु धीषु वन्द्य	२५०
आ नो अग्ने रयि भर	सत्रासाहं वरेण्यम् ।	विश्वासु पृतसु दुष्टरम्	२५१
आ नो अग्ने सुचेतुना	रयि विश्वायुषोषसम् ।	माडीकं धेहि जीवसे	२५२
प्र पूतास्तिग्मशोचिषे	वाचो गोतमाग्रये ।	भरस्व सुम्नयुगिरः	२५३
यो नो अग्नेऽभिदासति	अन्ति दूरे पदीष्ट सः ।	अस्माकमिद् वृधे भव	२५४
सहस्राक्षो विचर्षणिर्	अग्नी रक्षोसि सेधति ।	होता गृणीत उक्थ्यः	२५५

॥ ३० ॥ ( ऋ० १ । ९४ । १-१६ )

[ २५६-२७१ ] कुत्स आङ्गिरसः । जगती; २७०-७१ त्रिष्टुप् ।

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे	रथमिव सं महेमा मनीषया ।		
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसदि	अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव		२५६
यस्मै त्वमायजसे स साधति	अनर्वा क्षेति दधते सुवीर्यम्		
स तूताव नैनमश्रोत्यंहतिर्	अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव		२५७

शक्रेम त्वा समिधं साधया धियस् त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।	
त्वमादित्याँ आ वह तान् ह्युषमसि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२५८
भरामेधमं कृणवामा हवीषि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम् ।	
जीवार्तवे प्रतरं साधया धियो ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२५९
विशां गोपा अस्य चरन्ति जन्तवो द्विपञ्च यदुत चतुष्पदुक्तुभिः ।	
चित्रः प्रक्रेत उषसो महँ असि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६०
त्वमध्वर्युरुत होतासि पूर्यः प्रशास्ता पोता जनुषा पुरोहितः ।	
विश्वा विद्राँ आर्त्विज्या धीर पुष्यसि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६१
यो विश्वतः सुप्रतीकः सदङ्कुसि दूरे चित् सन्तळिदिवाति रोचसे ।	
रात्र्याश् चिदन्धो अर्तिं देव पश्यसि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६२
पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथो ऽस्माकं शंसो अभ्यस्तु दूढ्यः ।	
तदा जानीतोत पुष्यता वचो ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६३
वधैर्दुःशसाँ अप दूढ्यो जहि दूरे वा ये अन्ति वा के चिदत्रिणः ।	
अथा यज्ञाय गृणते सुगं कृधि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६४
यद्युक्था अरुषा रोहिता रथे वातजूता वृषभस्येव ते रवः ।	
आदिन्वसि वनिनो धूमकेतुना ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६५
अध स्वनादुत बिभ्युः पतत्रिणो द्रप्सा यत् ते यवसादो व्यस्थिरन् ।	
सुगं तत् ते तावकेभ्यो रथेभ्यो ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६६
अयं मित्रस्य वरुणस्य धायसे ऽवयातां मरुतां हेळो अङ्कुतः ।	
मृळा सु नो भूत्वेषां मनः पुनर् अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६७
देवो देवानामसि मित्रो अङ्कुतो वसुर्वस्रनामसि चारुरध्वरे ।	
शर्मन् तस्याम तव सप्रथस्तमे ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६८
तत् ते भद्रं यत् समिद्धः स्वे दमे सोमाहुतो जरसे मृळ्यत्तमः ।	
दधासि रत्नं द्रविणं च दाशुषे ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६९
यस्मै त्वं सुद्रविणो ददाशो ऽनागास् त्वमदिते सर्वताता ।	
यं भद्रेण शर्वसा चोदयासि प्रजावता राधसा ते स्याम	२७०

स त्वमग्ने सौभगत्वस्य विद्वान् अस्माकमायुः प्र त्तिरेह देव ।  
तन् नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम् अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः २७१

॥ ३१ ॥ ( ऋ० १ । १२७ । १-११ )

[ २७२—२९१ ] परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, २७७ अतिधृतिः ।

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सुनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम् ।  
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा ।  
घृतस्य विभ्राष्टिमनु वष्टि शोचिषा ऽऽजुह्वानस्य सर्पिषः २७२  
यजिष्ठं त्वा यजमाना हुवेम ज्येष्ठमङ्गिरसां विप्र मन्मभिर् विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः ।  
परिज्मानमिव द्यां होतारं चर्षणीनाम् ।  
शोचिष्केशं वृषणं यमिमा विशः प्रावन्तु जूतये विशः २७३  
स हि पुरु चिदोर्जसा विरुक्मता दीघानो भवति द्रुहन्तरः परशुर्न द्रुहन्तरः ।  
वीळ चिद् यस्य समृतौ श्रुवद् वनेव यत् स्थिरम् ।  
निष्पहमाणो यमते नायते धन्वासहा नायते २७४  
दृह्णा चिदस्मा अन्तु दुर्यथा विदे तेजिष्ठाभिररणिभिर्दाष्टयवसे ऽग्रये दाष्टयवसे ।  
प्र यः पुरुणि गार्हते तक्षद् वनेव शोचिषा ।  
स्थिरा चिदन्ना नि रिणात्योर्जसा नि स्थिराणि चिदोर्जसा २७५  
तमस्य पृक्षष्टुपरासु धीमहि नक्तं यः सुदर्शितरो दिवातराद् अप्रायुषे दिवातरात् ।  
आदस्यायुर्ग्रभणवद् वीळ शर्म न सूनवे ।  
भक्तमभक्तमवो व्यन्तो अजरा अग्रयो व्यन्तो अजराः २७६  
स हि शर्धो न मारुतं तुविष्वणिर अम्रस्वतीषूर्वरास्विष्टनिर् आर्तनास्विष्टनिः ।  
आदद्भ्रुव्यान्यादादिर यज्ञस्य केतुरर्हणा ।  
अध स्मास्य हर्षतो हषीवतो विश्वे जुषन्त पन्थां नरः शुभे न पन्थाम् २७७  
द्विता यदी क्रीस्तासो अभिद्यवो नमस्यन्त उपवोचन्त भृगवो मग्न्तो दाक्षा भृगवः ।  
अग्निरीशे वसनां शुचियो धर्णिरेषाम् ।  
प्रियां अपिर्धोर्वनिषीष्ट मेधिर् आ वनिषीष्ट मेधिर् २७८

- विश्वासां त्वा विशां पतिं हवामहे सर्वसां समानं दंपतिं भुजे सत्यगिर्वाहसं भुजे ।  
 अतिथिं मानुषाणां पितुर्न यस्यासया ।  
 अमी च विश्वे अमृतास आ वयो हव्या देवेष्ववा वयः २७९
- त्वमग्ने सहसा सहन्तमः शुष्मिन्तमो जायसे देवतातये रयिर्न देवतातये ।  
 शुष्मिन्तमो हि ते मदीं द्युष्मिन्तम उत क्रतुः ।  
 अध स्मा ते परिं चरन्त्यजर श्रुष्टीवानो नाजर २८०
- प्र वो महे सहसा सहस्वत उषर्बुधे पशुषे नामये स्तोमो बभूत्वग्रये ।  
 प्रति यदीं हविष्मान् विश्वासु क्षासु जोगुवे ।  
 अग्ने रेभो न जरत ऋषूणां जूणिर्होत ऋषूणाम् २८१
- स नो नेदिष्ठं दृशान आ भर अग्ने देवेभिः सचनाः सुचेतुना महो रायः सुचेतुना ।  
 महिं शविष्ठ नस्कृधि संचक्षे भुजे अस्यै ।  
 महिं स्तोतृभ्यो मघवन् त्सुवीर्यं मथीरुग्रो न शवसा २८२

॥ ३२ ॥ ( ऋ० १ । १२८ । १-८ )

- अयं जायत मनुषो धरीमणि होता यजिष्ठ उशिजामनु व्रतम् अग्निः स्वमनु व्रतम् ।  
 विश्वश्रुष्टिः सखीयते रयिरिव श्रवस्यते ।  
 अदब्धो होता नि षददिळस्पदे परिंवीत इळस्पदे २८३
- तं यज्ञसाधमपि वातयामसि ऋतस्य पथा नमसा हविष्मता देवताता हविष्मता ।  
 स न ऊर्जामुपाभृनि अया कृपा न जूर्यति ।  
 यं मातरिश्वा मनवे परावतो देवं भाः परावतः २८४
- एवेन सद्यः पर्येति पार्थिवं सुहुर्मी रेतो वृषभः कर्निकदद् दधद् रेतः कर्निकदत् ।  
 शतं चक्षाणो अक्षभिर् देवो वनेषु तुर्वणिः ।  
 सद्यो दधान उपरेषु सानुषु अग्निः परेषु सानुषु २८५
- स सुक्रतुः पुरोहितो दमेदमे ऽभिर्यज्ञस्याध्वरस्य चेतति क्रत्वा यज्ञस्य चेतति ।  
 क्रत्वा वेधा इषूयते विश्वां जातानि पस्पशे ।  
 यतो घृतश्रीरतिथिरजायत वहिर्वेधा अजायत २८६



ऋत्वा यदस्य तविषीषु पृञ्चते ऽग्नेरवेण मरुतां न भोज्या इषिराय न भोज्या ।

स हि ष्मा दानमिन्वति वसूनां च मज्मना ।

स नस् त्रासते दुरितादभिहृतः शंसादुघादभिहृतः २८७

विश्वो विहाया अरतिर्वसुर्दधे हस्ते दक्षिणे तरणिर्न शिश्रथच् छूवस्यया न शिश्रथत् ।

विश्वस्मा इदिषुध्यते देवत्रा हव्यमोहिषे ।

विश्वस्मा इत् सुकृते वारमृण्वति अग्निर्द्वारा व्यृण्वति २८८

स मानुषे वृजने शंतमो हितोऽ ऽग्निर्यज्ञेषु जेन्यो न विस्पतिः प्रियो यज्ञेषु विस्पतिः ।

स हव्या मानुषाणाम् इळा कृतानि पत्यते ।

स नस् त्रासते वरुणस्य धूर्तेर् महो देवस्य धूर्तेः २८९

अग्निं होतारमीळते वसुधितिं प्रियं चेतिष्ठमरतिं न्येरिरे हव्यवाहं न्येरिरे ।

विश्वायुं विश्ववेदसं होतारं यजतं कविम् ।

देवासो रण्वमवसे वसूयवो गीर्भो रण्वं वसूयवः २९०

॥ ३३ ॥ ( ऋ० १ । १३९ । ७ )

ओ षू णो अग्ने शृणुहि त्वमीळितो देवेभ्यो ब्रवसि यज्ञियेभ्यो राजभ्यो यज्ञियेभ्यः ।

यद्भू त्यामङ्गिरोभ्यो धेनुं देवा अदत्तन ।

वि तां दुहे अर्यमा कर्तरी सचा एष तां वेद मे सचा २९१

॥ ३४ ॥ ( ऋ० १ । १४० । १-१३ )

[ २५२-३६० ] दीर्घतमा औचथ्यः । जगती, ३०१ त्रिष्टुप्वा, ३०३-४ त्रिष्टुप् ।

वेदिषदे प्रियधामाय सुद्युते धासिमिव प्र भरा योनिमग्रये ।

वस्त्रेणैव वासया मन्मना शुचिं ज्योतीरथं शुक्रवर्णं तमोहनम् २९२

अभि द्विजन्मा त्रिवृदन्नमृज्यते संवत्सरे वावृधे जग्धमी पुनः ।

अन्यस्यासा जिह्वया जेन्यो वृषा न्यून्येन वनिनो मृष्ट वारणः २९३

कृष्णप्रुतौ वेविजे अस्य सक्षिता उभा तररेते अभि मात्रा शिशुम् ।

प्राचारिहं ध्वसयन्तं तृषुच्युतम् आ साच्यं कुपयं वर्धनं पितुः २९४

मुमुक्ष्वोरे मनवे मानवस्यते रघुदुर्वः कृष्णसीतास ऊ जुर्वः ।

अममना अजिरासो रघुष्यदो वातज्जा उप युज्यन्त आशबः २९५

आदस्य ते ध्वस्यन्तो वृथैरते कृष्णमभ्वं महि वर्षः करिक्रतः । यत् सीं महीमवनिं प्राभि मर्भृशद् अभिश्चसन् तस्तनयञ्चेति नानंदत्	२९६
भूषन् न योऽधि बभूषु नन्नते वृषेव पत्नीरभ्येति रोर्बवत् । ओजायमानस् तन्वश्च शुम्भते भीमो न शृङ्गा दविधाव दुर्गभिः	२९७
स संस्तिरो विष्टिः सं गृभायति जानन्नेव जानतीर्नित्य आ श्ये । पुनर्वर्धन्ते अपि यन्ति देव्यम् अन्यद् वर्षः पित्रोः कृण्वते सचा	२९८
तमग्रुवः केशिनीः सं हि रैभिर ऊर्ध्वासु तस्थुर्मग्नूषीः प्रायवे पुनः । तासां जरां प्रमुञ्चन्तेति नानंदद् असुं परं जनयञ्जीवमस्तृतम्	२९९
अधीवासं परिं मातू रिहन्नहं तुविश्रेभिः सत्वभिर्याति वि जयः । वयो दधत् पद्वते रेरिहत् सदा अनु श्येनीं सचते वर्तनीरहं	३००
अस्माकमग्रे मघवत्सु दीदिहि अध श्वसीवान् वृषभो दमूनाः । अवास्या शिशुमतीरदीदेर् वमेव युत्सु परिजर्भुराणः	३०१
इदमग्रे सुधितं दुधितादधि प्रियादुं चिन् मन्मनः प्रेयो अस्तु ते । यत् तै शुक्रं तन्वोऽं रोचते शुचि तेनास्मभ्यं वनसे रत्नमा त्वम्	३०२
रथाय नावमुत नो गृहाय नित्यारित्रां पद्वतीं रास्यग्रे । अस्माकं-वीरां उत नो मघोनो जनांश्च या पारयाच्छर्म या च	३०३
अभी नो अग्न उक्थमिज् जुगुर्या घावाक्षामा सिन्धवश्च स्वर्गताः । गव्यं यव्यं यन्तो दीर्घाहा इषं वरंमरुण्यो वरन्त	३०४

॥ ३५ ॥ ( ऋ० १ । १४१ । १-१३ ) जगती. ३१६-१७ त्रिष्टुप् ।

बळित्था तद् वपुषे धायि दर्शतं देवस्य भर्गः सहसो यतो जनिं । यदीमुप ह्वरते साधते मतिर् ऋतस्य धेना अनयन्त सस्रुतः	३०५
पृक्षो वपुः पितृमान् नित्य आ श्ये द्वितीयमा सप्तशिवासु मातृषु । तृतीयमस्य वृषभस्य दोहसे दशप्रमतिं जनयन्त योषणः	३०६
निर्यदीं बुध्नान् मंहिषस्य वर्षस ईशानासः शर्वसा क्रन्तं सूरयः । यदीमनु प्रदिशो मध्व आध्वे गुहा सन्तं मातरिश्वा मथायति	३०७

प्र यत् पितुः परमाग्नीयते परि	आ पृक्षुधो वीरुधो दंसु रोहति ।	
उभा यदस्य जनुषं यदिन्वत	आदिद् यविष्ठो अभवद् घृषा सुम्भिः	३०८
आदिन्मातृराविशद् यास्वा शुचिर्	अहिंस्यमान उर्विया वि वाङ्घ्रे ।	
अनु यत् पूर्वा अरुहत् सनाजुत्रो	नि नव्यसीष्वबरासु धावते	३०९
आदिद्धोतारं वृणते दिविष्टिषु	भगमिव पपृचानासं ऋञ्जते ।	
देवान् यत् क्रत्वा मज्मना पुरुष्टुतो	मर्तं शंसं विश्वधा वेति धारसे	३१०
वि यदस्थाद् यजतो वार्तचोदितो	हारो न वक्त्रा जरणा अनाकृतः ।	
तस्य पत्नम् दक्षुषः कृष्णजैहसः	शुचिजन्मनो रज आ व्यध्वनः	३११
रथो न यातः शिकभिः कृतो घाम्	अङ्गभिररुषेभिरीयते ।	
आदस्य ते कृष्णासौ दक्षि सूरयः	शूरस्येव त्वेषथादीषते वयः	३१२
त्वया ह्यग्ने वरुणो धृतव्रतो	मित्रः शाशद्रे अर्यमा सुदानवः ।	
यत् सीमनु क्रतुना विश्वथा विश्वर्	अरान् न नेमिः परिभूरजायथाः	३१३
त्वमग्ने शशमानाय सुन्वते	रत्नं यविष्ठ देवतातिमिन्वसि ।	
तं त्वा नु नव्यं सहसो युवन् वयं	भगं न कारे महिरत्न धीमहि	३१४
अस्मे रयिं न स्वर्थं दर्मनसं	भगं दक्षं न पपृचासि धर्णसिम् ।	
रश्मीरिव यो यमति जन्मनी उभे	देवानां शंसंमृत आ च सुक्रतुः	३१५
उत नः सुघोत्मा जीराश्वो	होता मन्द्रः शृणवच् चन्द्ररथः ।	
स नो नेषन्नेषतमैरमूरो	ऽग्निर्वामं सुवितं वस्यो अच्छ	३१६
अस्ताव्यग्निः शिमीवद्भिरकैः	साम्राज्याय प्रतरं दधानः ।	
अमी च ये मघवानो वयं च	मिहं न सूरौ अति निष्टतन्युः	३१७

॥ ३६ ॥ ( ऋ० १ । १४३ । १-८ ) जगती, ३२५ त्रिष्टुप् ।

प्र तव्यसीं नव्यसीं धीतिमग्रये	वाचो मति सहसः सूनवे भरे ।	
अपां नपाद् यो वसुभिः सह प्रियो	होता पृथिव्यां न्यसीददृत्वियः	३१८
स जायमानः परमे व्योमनि	आविरग्निरभवन् मातरिश्वने ।	
अस्य क्रत्वा समिधानस्य मज्मना	प्र द्यावा शोचिः पृथिवी अरोचयत्	३१९

अस्य त्वेषा अजरा अस्य भानवः सुसंदृशः सुप्रतीकस्य सुद्युतः । मास्त्वक्षसो अत्यक्तुर्न सिन्धवो ऽग्ने रेंजन्ते असंसन्तो अजराः	३२०
यमेरिरे भृगवो विश्ववेदसं नाभा पृथिव्या भुवनस्य मज्जना । अग्निं तं गीर्भिर्हिनुहि स्व आ दमे य एको वस्त्रो वरुणो न राजति	३२१
न यो वराय मरुतामिव स्वनः सेनेव सृष्टा दिव्या यथाशनिः । अग्निर्जम्भैस् तिगितैरत्ति भवेति योधो न शत्रून् त्स वना न्यृञ्जते	३२२
कुविन्नो अग्निरुचर्थस्य वीरसद् वसुष्कुविद् वसुभिः काममावरत् । चोदः कुवित् तुतुज्यात् सातये धियः शुचिप्रतीकं तमया धिया गृणे	३२३
घृतप्रतीकं व क्रतस्य धूर्षदम् अग्निं मित्रं न समिधान ऋञ्जते । इन्धानो अक्रो विदथेषु दीर्घच् छुक्रवर्णामुदु नो यंसते धियम्	३२४
अप्रयुच्छन्नप्रयुच्छद्भिरग्ने शिवेभिर्नः पायुभिः पाहि शग्मैः । अदब्धेभिरदपितेभिरिष्टे ऽनिमिपद्भिः परि पाहि नो जाः	३२५

॥ ३७ ॥ ( ऋ० १ । १४४ । १-७ ) जगती ।

एति प्र होता व्रतमस्य मायया ऊर्ध्वा दधानः शुचिपेशसं धियम् । आभि सुचः क्रमते दक्षिणावृतो या अस्य धामं प्रथमं ह निंसते	३२६
अभीमृतस्य दोहना अनूषत् योनौ देवस्य सदर्ने परीवृताः । अपामुपस्थे विभृतो यदावसद् अर्ध स्वधा अर्धयद् याभिरीर्यते	३२७
युयूषतः सर्वयसा तदिद् वपुः समानमर्थं वितरित्रता मिथः आर्दी भगो न हव्यः समस्मदा वोहूर्न रश्मीन् त्समयंस्त सारथिः	३२८
यमीं द्वा सर्वयसा सपर्यतः समाने योना मिथुना समोकसा । दिवा न नक्तं पलितो युवाजनि पुरू चरन्नजरो मानुषा युगा	३२९
तमीं हिन्वन्ति धीतयो दश त्रिंशो देवं मर्तास ऊतये हवामहे । धनोरधि प्रवत् आ स ऋणवति अभिव्रजद्भिर्वयुना नवाधित	३३०
त्वं हग्ने दिव्यस्य राजसि त्वं पार्थिवस्य पशुपा इव त्मना । इनीं त एते बृहती अभिश्रिया हिरण्ययी चकरी बहिराशाते	३३१

अग्ने जुषस्व प्रति हर्य तद् वचो मन्द्र स्वधाव ऋतजात् सुऋतो ।  
यो विश्वतः प्रत्यङ्कुसि दर्शतो रणवः संदृष्टौ पितुमाँ इव क्षयः ३३२

॥ ३८ ॥ ( ऋ० १ । १४५ । १-५ ) जगती, ३३७ त्रिष्टुप् ।

तं पृच्छता स जगामा स वेदु स चिकित्वाँ ईयते सा न्वीयते ।  
तस्मिन्सन्ति प्रशिषस्तस्मिन्निष्टयः स वाजस्य शवसः शुष्मिणस्पतिः ३३३

तमित् पृच्छन्ति न सिमो वि पृच्छति स्वेनेव धीरो मनसा यदग्रभीत् ।  
न मृष्यते प्रथमं नापरं वचो ऽस्य ऋत्वा सचते अप्रदृपितः ३३४

तमिद् गच्छन्ति जुहुस्तमर्वतीर् विश्वान्येकः शृणवद् वचांसि मे ।  
पुरुषैषस् ततुरिर्यज्ञसाधनो ऽच्छिद्रोतिः शिशुरादत्त सं रभः ३३५

उपस्थायं चरति यत् समारत सद्यो जातस् तत्सार युज्येभिः ।  
अभि श्वान्तं मृशते नान्द्ये मुदे यदीं गच्छन्त्युशतीरपिष्ठितम् ३३६

स ईं मृगो अप्यो वनगुर् उप त्वच्युपमस्यां नि धायि ।  
व्यब्रवीद् वयुना मत्येभ्यो ऽग्निर्विद्राँ ऋतचिद्धि सत्यः ३३७

॥ ३९ ॥ ( ऋ० १ । १४६ । १-५ ) त्रिष्टुप् ।

त्रिमूर्धानं सप्तर्क्षिं गृणीषे ऽनूनमग्निं पित्रोरुपस्थे ।  
निषत्तमस्य चरतो ध्रुवस्य विश्वा दिवो रौचनापप्रिवांसम् ३३८

उक्षा महौ अभि ववक्ष एने अजरस् तस्थावितऊतिर्ऋष्वः ।  
उच्यः पदो नि दधाति सानौ रिहन्त्युधो अरुषासो अस्य ३३९

समानं वत्समभि संचरन्ती विश्वग् धेनू वि चरतः सुमेके ।  
अनपवृज्याँ अर्ध्वनो मिमाने विश्वान् केताँ अधि महो दधाने ३४०

धीरांसः पदं कवयो नयन्ति नाना हृदा रक्षमाणा अजुर्यम् ।  
सिषासन्तः पर्यपश्यन्त सिन्धुम् आविरेभ्यो अभवत् सूर्यो नृन् ३४१

दिदृक्षेण्यः परि काष्ठासु जेन्य ईलेन्यो महो अभीय जीवसे ।  
पुरुत्रा यदभवत् सरहेभ्यो गर्भेभ्यो मघवा विश्वदर्शतः ३४२

॥ ४० ॥ ( ऋ० १ । १४७ । १-५ )

कथा ते अग्ने शुचयन्त आयोर् ददाशुर्वाजेभिराशुषाणाः ।  
उमे यत् तोके तनये दधाना ऋतस्य सामन् रणयन्त देवाः ३४३

बोधा मे अस्य वचसो यविष्ठु मंहिष्ठस्य प्रभृतस्य स्वधावः ।	
पीयति त्वो अनु त्वो गृणाति वन्दारुस् ते तन्वं वन्दे अग्ने	३४४
ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन् ।	
ररक्ष तान् सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद् रिपवो नाहं देभुः	३४५
यो नो अग्ने अररिवाँ अघायुर् अरातीवा मर्चयति द्वयेन ।	
मन्त्रो गुरुः पुनरस्तु सो अस्मा अनु मृक्षीष्ट तन्वं दुरुक्तैः	३४६
उत वा यः सहस्य प्रविद्वान् मतो मर्ति मर्चयति द्वयेन ।	
अतः पाहि स्तवमान स्तुवन्तम् अग्ने मार्किनो दुरिताय धायीः	३४७

॥ ४१ ॥ ( ऋ० १ । १४८ । १-५ )

मथीद् यदीं विष्टो मातरिश्वा होतारं विश्वाप्सुं विश्वदैव्यम् ।	
नि यं दुधुर्मेनुष्यासु विक्षु स्वर्णं चित्रं वपुषे विभावंम्	३४८
ददानमिन्न ददभन्त मन्म अग्निर्वरूथं मम तस्य चाकन् ।	
जुषन्त विश्वान्यस्य कर्म उपस्तुतिं भरमाणस्य कारोः	३४९
नित्ये चिन्नु यं सद्ने जगुभ्रे प्रशस्तिभिर्दधिरे यज्ञियांसः	
प्र स्र नयन्त गृभयन्त इष्टौ अश्वासो न रथ्यो रारहाणाः	३५०
पुरुणि दुस्मो नि रिंणाति जम्भैर् आद् रोचते वन आ विभावा ।	
आदस्य वातो अनु वाति शोचिर् अस्तुर्न शर्यामसनामनु घृन्	३५१
न यं रिपवो न रिषण्यवो गर्भे सन्त रेषणा रेषयन्ति ।	
अन्धा अपश्या न दभन्नभिख्या नित्यास ई प्रेतारो अरक्षन्	३५२

॥ ४२ ॥ ( ऋ० १ । १४२ । १-५ ) विराट्

महः स राय एषते पतिर्दम् इन इनस्य वसुनः पद आ ।	
उप भ्रजन्तमद्रयो विधमिन्	३५३
स यो वृषा नरां न रोदस्योः श्रवोभिरस्ति जीवपीतसर्गः ।	
प्र यः संस्राणः शिश्रीत योनौ	३५४
आ यः पुरं नार्मिणीमदीदेद् अत्यः कविर्भन्योऽु नार्वी ।	
स्रो न रुरुकाञ्छतात्मा	३५५

अभि द्विजन्मा त्री रौचनानि विश्वा रजांसि शुशुचानो अस्थात् । होता यज्ञिष्ठो अपां सधस्थे	३५६
अयं स होता यो द्विजन्मा विश्वा दुधे वार्याणि श्रवस्या । मर्तो यो अस्मै सुतुको द्वादश	३५७

॥ ४३ ॥ ( ऋ० १ । १५० । १-३ ) उष्णिक् ।

पुरु त्वां दाश्वान् वौचे अरिरे त्वं स्विदा । तोदस्येव शरण आ महस्यं व्यनिनस्य धनिनः प्रहोषे चिदररुषः । कदा चन प्रजिगतो अदेवयोः स चन्द्रो विप्र मर्त्यो महो ब्राधन्तमो दिवि । प्रप्रेत् ते अग्ने वनुषः स्याम	३५८ ३५९ ३६०
--	-------------------

॥ ४४ ॥ ( ऋ० १ । १८९ । १-८ )

( ३६१-३६८ ) अगस्त्यो मैत्रावरुणः । त्रिष्टुप् ।

अग्ने नय सुपथां राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूर्यिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम	३६१
अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान् त्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा । पृथ्वी पृथ्वी बहुला न उर्वी भवां तोकाय तनयाय शं योः	३६२
अग्ने त्वमस्मद् युयोध्यमीवा अनग्नित्रा अभ्यमन्त कृष्टीः । पुनरस्मभ्यं सुवितार्य देव क्षां विश्वेभिरमृतोभिर्यजत्र	३६३
पाहि नो अग्ने पायुभिरजस्रैर् उत प्रिये सदन आ शुशुक्लान् । मा ते भयं जरितारं यविष्ठ नूनं विदुन् मापरं सहस्वः	३६४
मा नो अग्नेऽव सृजो अघाय अविष्यवे रिपवे दुच्छुनायै । मा दत्वते दर्शते मादते नो मा रीषते सहसावन् परा दाः	३६५
वि घ त्वावां ऋतजात यंसद् गृणानो अग्ने तन्वेडे वरूथम् । विश्वाद् रिरिक्षोरुत वा निनित्सोर् अभिहुतामसि हि देव विष्पट्	३६६
त्वं तां अग्न उभयान् वि विद्वान् वेषि प्रपित्वे मनुषो यजत्र । अभिपित्वे मनवे शास्यो भूर् मर्मृजेन्य उशिग्भिर्नाक्रः	३६७
अवोचाम निवर्चनान्यस्मिन् मानस्य सनुः सहसाने अग्नौ । वयं सहस्रमृषिभिः सनेम विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्	३६८

॥ ४५ ॥ ( ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलं २, सूक्तं १, मन्त्राः १-१६ )

जगती । ( ३६९—४१५ ) गृत्समदः शौनकः ( आङ्गिरसः शौनहोत्रो भार्गवः ) ।

त्वमग्ने द्युभिस् त्वमांशुशुक्षणिस्	त्वमद्भ्यस् त्वमश्मनस् परि ।	
त्वं वनेभ्यस् त्वमोषधीभ्यस्	त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः	३६९
तवाग्ने होत्रं तवं पोन्नमृत्विथं	तवं नेष्ट्रं त्वमग्निदृतायतः ।	
तवं प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि	ब्रह्मा चासि गृहपतिश् च नो दमे	३७०
त्वमग्ने इन्द्रो वृषभः सतामसि	त्वं विष्णुरुरुगायो नमस्यः ।	
त्वं ब्रह्मा रयिविद् ब्रह्मणस्पते	त्वं विधत्तः सचसे पुरंध्या ।	३७१
त्वमग्ने राजा वरुणो धृतव्रतस्	त्वं मित्रो भवसि दुस्म ईड्यः ।	
त्वमर्थमा सत्पतिर्यस्य संभुजं	त्वमंशो विदथे देव भाज्युः	३७२
त्वमग्ने त्वष्टा विधते सुवीर्यं	तव भावो मित्रमहः सजात्यम् ।	
त्वमांशुहेमा ररिषे स्वश्व्यं	त्वं नरां शर्धो असि पुरुवसुः	३७३
त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्	त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे ।	
त्वं वातैररुणैर्यासि शंगयस्	त्वं पूषा विधत्तः पांसि नु त्मना	३७४
त्वमग्ने द्रविणोदा अरंकृते	त्वं देवः सविता रत्नधा असि ।	
त्वं भगो नृपते वस्वं ईशिषे	त्वं पायुर्दमे यस् तेऽविधत्	३७५
त्वामग्ने दम आ विश्वपतिं विश्वस्	त्वां राजानं सुविदत्रमृञ्जते ।	
त्वं विश्वानि स्वनीक पत्यसे	त्वं सहस्राणि शता दश प्रति	३७६
त्वामग्ने पितरमिष्टिभिर्नरस्	त्वां भ्रात्राय शम्यां तनुरुचम् ।	
त्वं पुत्रो भवसि यस् तेऽविधत्	त्वं सर्वा सुशेवः पास्याधृषः	३७७
त्वमग्ने क्रभुराके ममस्यस्	त्वं वाजस्य क्षुमतो राय ईशिषे ।	
त्वं वि भास्यनु दक्षि दावने	त्वं विशिक्षुरसि यज्ञमातनिः	३७८
त्वमग्ने अदितिर्देव दाशुषे	त्वं होत्रा भारती वर्धसे गिरा ।	
त्वमिळा शतहिमासि दक्षसे	त्वं वृत्रहा बंसुपते सरस्वती	३७९
त्वमग्ने सुभृत उत्तमं वयस्	तवं स्पार्हे वर्ण आ संदशि श्रियः ।	
त्वं वाजः प्रतरणो बृहन्नसि	त्वं रयिर्बहुलो विश्वतस्पृथुः	३८०



त्वामग्न आदित्यास आस्यं	त्वां जिह्वां शुचयश् चक्रिरे कवे ।	
त्वां रातिषाचो अध्वरेषु सश्वरे	त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।	३८१
त्वे अग्ने विश्वे अमृतासो अद्रुह	आसा देवा हविरदन्त्याहुतम्	
त्वया मर्तासः स्वदन्त आसुति	त्वं गर्भो वीरुधां जज्ञिषे शुचिः	३८२
त्वं तान् त्सं च प्रति चासि मज्जना	अग्ने सुजात प्र च देव रिच्यसे ।	
पृक्षो यदत्र महिना वि ते भुवद्	अनु द्यावापृथिवी रोदसी उभे	३८३
ये स्तोतृभ्यो गोअग्रामश्वपेशसम्	अग्ने रातिमुपमृजन्ति सूरयः ।	
अस्माञ्च तांश्च प्र हि नेषि वस्य आ	बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	३८४

॥ ४६ ॥ ( ऋ० २ । २ । १-१३ )

यज्ञेन वर्धत जातवेदसम्	अग्निं यजध्वं हविषा तना गिरा ।	
समिधानं सुप्रयसं स्वर्णरं	द्युक्षं होतारं वृजनेषु धूर्षदम्	३८५
अभि त्वा नक्तीरुषसो ववाशिरे	अग्ने वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ।	
दिव इवेदरतिर्मानुषा युगा	आक्षपो भासि पुरुवार संयतः	३८६
तं देवा बुध्ने रजसः सुदंसं	दिवस्पृथिव्योररतिं न्येरिरे ।	
रथामिव वेद्यं शुक्रशौचिषम्	अग्निं मित्रं न क्षितिषु प्रशंस्यम्	३८७
तमुक्षमाणं रजसि स्व आ दमे	चन्द्रमिव सुरुचं ह्यार आ दधुः ।	
पृश्न्याः पतरं चितयन्तमक्षभिः	पाथो न पायुं जनसी उभे अनु	३८८
स होता विश्वं परि भूत्वध्वरं	तमु हव्यैर्मनुष ऋञ्जते गिरा ।	
हिरिशिप्रो वृधसानासु जर्धुरद्	द्यौर्न स्तृमिंश् चितयद् रोदसी अनु	३८९
स नो रेवत् समिधानः स्वस्तये	संददस्वान् रथिमस्मासु दीदिहि ।	
आ नः कृणुष्व सुविताय रोदसी	अग्ने हव्या मनुषो देव वीतये	३९०
दा नो अग्ने बृहतो दाः सहस्रिणो	दुरो न वाजं श्रुत्या अपा वृधि ।	
प्राची द्यावापृथिवी ब्रह्मणा कृधि	स्वर्णं शुक्रमुषसो वि दिद्युतुः	३९१
स इधान उषसो राम्या अनु	स्वर्णं दीदेदरुषेण भानुना ।	
होत्राभिरग्निर्मनुषः स्वध्वरो	राजा विशामतिथिश् चारुरायवे	३९२

एवा नो अग्ने अमृतेषु पूज्ये धीष् पीपाय बृहद्विषेषु मानुषा ।	
दुहाना धेनुर्वृजनैषु कारवे त्मनां श्रतिनें पुरुरूपमिषणि	३९३
वयमग्ने अर्वता वा सुवीर्ये ब्रह्मणा वा चितयेमा जनाँ अति ।	
अस्माकं द्युममधि पञ्च कृष्टिषु उच्चा स्वर्गं शुशुचीत दुष्टरम्	३९४
स नो बोधि सहस्य प्रशंस्यो यस्मिन् त्सुजाता इषयन्त सूर्यः ।	
यमग्ने यज्ञमुपयन्ति वाजिनो नित्यं तोके दीद्विवांसं स्वे दमे	३९५
उभयासो जातवेदः स्याम ते स्तोतारो अग्ने सूर्यश् च शर्मणि ।	
वस्वो रायः पुरुश्चन्द्रस्य भूर्यसः प्रजावतः स्वपत्यस्य शग्धि नः	३९६
ये स्तोतृभ्यो० ( ३८४ )	

॥ ४७ ॥ ( ऋ० २ । ८ । १-६ ) गायत्री, ४०२ अनुष्टुप् ।

वाजयन्निव नू रथान् योगाँ अग्रेरुपं स्तुहि । यशस्तमस्य मीहुषः	३९७
यः सुनीथो दंदाशुषे अजुर्यो जरयन्नरिं । चारुप्रतीक आहुतः	३९८
य उं श्रिया दमेष्वा दोषोषसिं प्रशस्यते । यस्य व्रतं न मीर्यते	३९९
आ यः स्वर्गं भानुना चित्रो विभात्यर्चिषा । अज्जानो अजरैरभि	४००
अत्रिमनु स्वराज्यम् अग्निमुक्थानि वावधुः । विश्वा अधि श्रियो दधे	४०१
अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य देवानामूतिभिर्वियम् । अरिष्यन्तः सचेमहि अभि प्याम पृतन्यतः	४०२

॥ ४८ ॥ ( ऋ० २ । ९ । १-६ ) । त्रिष्टुप् ।

नि होता होतृपदने विदानस् त्वेषो दीद्विवाँ असदत् सुदक्षः ।	
अदब्धव्रतप्रमतिर्वसिष्ठः सहस्रंभरः शुचिजिह्वो अग्निः	४०३
त्वं दूतस् त्वमु नः परस्पास् त्वं वस्य आ वृषभ प्रणेता ।	
अग्ने तोकस्य नस् तने तनूनाम् अप्रयुच्छन् दीद्यद् बोधि गोपाः	४०४
विधेम ते परमे जन्मन्मग्ने विधेम स्तोमैरवरे सधस्थे ।	
यस्माद् योनेरुदारिथा यजे तं प्र त्वे हवीषि जुहुरे समिद्धे	४०५
अग्ने यजस्व हविषा यजीयाञ् छुष्टी देष्णमभि गृणीहि राधः ।	
त्वं क्षसि रयिपती रयीणां त्वं शुक्रस्य वचसो मनोता	४०६

उभयं ते न क्षीयते वसव्यं द्विभेदिवे जायमानस्य दस्म ।  
 कृधि क्षुमन्तं जरितारमग्ने कृधि पतिं स्वपत्यस्यं रायः ४०७  
 सैनानीकेन सुविदत्रो अस्मे यष्टा देवाँ आयजिष्ठः स्वस्ति ।  
 अदब्धो गोपा उत नः परस्या अग्ने द्युमदुत रेवद् दिदीहि ४०८

॥ ४९ ॥ ( ऋ० २ । १० । १-६ )

जोहूत्रो अग्निः प्रथमः पितेव इळस्पदे मनुषा यत् समिद्धः ।  
 श्रियं वसानो अमृतो विचेता मर्मजेन्यः श्रवस्यः स वाजी ४०९  
 श्रूया अग्निश् चित्रभानुर्हव्यं मे विश्वाभिर्गीर्भिरमृतो विचेताः ।  
 श्यावा रथं वहतो रोहिता वा उतारुषाहं चक्रे विभृत्रः ४१०  
 उत्तानार्यामजनयन् त्सुषूतं भुवद्दग्निः पुरुपेशासु गर्भः ।  
 शिरिणायां चिद्वक्तुना महोभिर् अपरीवृतो वसति प्रचेताः ४११  
 जिघर्म्यग्निं हविषा घृतेन प्रतिक्षियन्तं भुवनानि विश्वा ।  
 पृथुं तिरश्चा वयसा बृहन्तं व्यचिष्ठमन्नै रभसं दृशानं ४१२  
 आ विश्वतः प्रत्यश्चं जिघर्मि अरक्षसा मनसा तज्जुषेत ।  
 मर्यश्रीः स्पृहयद् वर्णो अग्निर् नाभिमृशे तन्वाडे जर्भुराणः ४१३  
 ज्ञेया भागं सहसानो वरेण त्वादूतासो मनुवद् वदेम ।  
 अनूनमग्निं जुद्धा वचस्या मधुपृचं धनसा जौहवीभि ४१४

॥ ५० ॥ ( ऋ० २ । ४१ । १९ तृतीयः पादः ) गायत्री ।

अग्निं च हव्यवाहनम् ४१५

॥ ५१ ॥ ( ऋ० २ । ४ । १-२ ) ( ४१६-४४६ ) सोमाहुतिर्भागवः । त्रिष्टुप् ।

हुवे वः सुद्योत्मानं सुवृक्तिं विशामग्निमतिथिं सुप्रयसम् ।  
 मित्र इव यो दिधिषाय्यो भूद् देव आदेवे जनै जातवेदाः ४१६  
 इमं विघन्तो अपां सधस्थे द्वितादधुर्मृगवो विक्ष्वाडेयोः ।  
 एष विश्वान्यभ्यस्तु भूमा देवानामग्निररतिर्जीराश्वः ४१७  
 अग्निं देवासो मानुषीषु विक्षु प्रियं धुः क्षेप्यन्तो न मित्रम् ।  
 स दीदयदुशतीरूम्या आ दृक्षाय्यो यो दास्वते दम आ ४१८

अस्य रण्वा स्वस्यैव पुष्टिः संदष्टिरस्य हियानस्य दक्षोः ।	
वि यो भरिभ्रदोषधीषु जिह्वाम् अत्यो न रथ्यो दोधवीति वारां	४१९
आ यन्मे अर्भवं वनदः पनन्त उशिग्भ्यो नामिमीत वर्णम् ।	
स चित्रेण चिकिते रंसु भासा जुजुर्वा यो मुहुरा युवा भूत्	४२०
आ यो वना तातृषाणो न भाति वार्ण पथा रथ्यैव स्वानीत् ।	
कृष्णाध्वा तपू रण्वश् चिकेत द्यौरिव स्मयमानो नभोभिः	४२१
स यो व्यस्थाद्गभि दक्षदुर्वी पशुनेति स्वयुरगोपाः ।	
अग्निः शोचिष्मो अतसान्युष्णन् कृष्णव्यथिरस्वदयन्न भूमं	४२२
नू ते पूर्वस्यावसो अधीतौ तृतीये विदथे मन्मं शंसि ।	
अस्मे अग्ने संयद्वीरं बृहन्तं क्षुमन्तं वाजं स्वपत्यं रयिं दाः	४२३
त्वया यथा गृत्समदासो अग्ने गुहा वन्वन्त उपरो अभि ष्युः ।	
सुवीरासो अभिमातिषाहः स्मत् सूरिभ्यो गृणते तद् वयो धाः	४२४

॥ ५२ ॥ ( ऋ० २ । ५ । १-८ ) । अनुष्टुप् ।

होताजनिष्ट चेतनः पिता पितृभ्य ऊतये ।	
प्रयक्षञ्जेन्यं वसु श्केर्म वाजिनो यमम्	४२५
आ यस्मिन् त्सप्त रश्मयस् तता यज्ञस्य नेतरि ।	
मनुष्वद् दैव्यमष्टमं पोता विश्वं तदिन्वति	४२६
दुधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्माणि वेरु तत् ।	
परि विश्वानि काव्या नेमिश् चक्रमिवाभवत्	४२७
साकं हि शुचिना शुचिः प्रशास्ता क्रतुनाजनि ।	
विद्वाँ अस्य व्रता ध्रुवा वया इवानु रोहते	४२८
ता अस्य वर्णमायुवो नेष्टुः सचन्त धेनवः ।	
कुर्वित् तिसृभ्य आ वरं स्वसारो या इदं ययुः	४२९
यदी मातरुप स्वसा घृतं भरन्त्यस्थित ।	
तास्माध्वर्युरागतौ यवो वृष्टीव मोदते	४३०
स्वः स्वाय धायसे कृष्णतामृत्विगृत्विजम् ।	
स्त्रोमं यज्ञं चादरं वनेमा ररिमा वयम्	४३१

यथा विद्वाँ अरं करद् विश्वेभ्यो यजतेभ्यः ।

अयमग्ने त्वे अपि यं यज्ञं चक्रुमा वयम् ४३२

॥ ५३ ॥ ( ऋ० २ । ६ । १-८ ) गायत्री ।

इमां मे अग्ने समिधम्	इमासुपसदं वनेः	। इमा उ पु श्रुधी गिरः	४३३
अया ते अग्ने विधेम	ऊर्जो नपादश्वमिधे	। एना सूक्तेन सुजात	४३४
तं त्वा गीर्भिर्गिर्विणसं	द्रविणस्थुं द्रविणोदः	। सपर्येम सपर्यवः	४३५
स बोधि सूरिर्मघवा	वसुपते वसुदावन्	। युयोध्यस्मद् द्वेषांसि	४३६
स नो वृष्टिं दिवस्परि	स नो वार्जमनुर्वाणम्	। स नः सहस्रिणीरिषः	४३७
ईळानायावस्यवे	यविष्ठ दूत नो गिरा	। यजिष्ठ होतरा गहि	४३८
अन्तर्हीम ईर्यसे	विद्वान् जन्मोभया कवे	। दूतो जन्मैव मित्र्यः	४३९
स विद्वाँ आ च पिप्रयो	यक्षिं चिकित्वा आनुषक्	। आ चास्मिन् त्सत्सि बर्हिषि	४४०

॥ ५४ ॥ ( ऋ० २ । ७ । १-६ )

श्रेष्ठं यविष्ठ भारत	अग्ने द्युमन्तमा भर	। वसो पुरुस्पृहं रयिम्	४४१
मा नो अरातिरीशत	देवस्य मर्त्यस्य च	। परि तस्या उत द्विषः	४४२
विश्वा उत त्वया वयं	धारा उदन्या इव	। अति गाहेमहि द्विषः	४४३
शुचिः पावक वन्द्यो	अग्ने बृहद् वि रौचसे	। त्वं घृतोभिराहुतः	४४४
त्वं नो असि भारत	अग्ने वशाभिरुक्षमिः	। अष्टापदीभिराहुतः	४४५
द्रुमः सर्पिरासुतिः	प्रलो होता वरेण्यः	। सहसस्पुत्रो अद्भुतः	४४६

॥ ५५ ॥ ( ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलं ३, सूक्तं १, मन्त्राः १-२३ )

( ४४७—५७३ ) विश्वामित्रो गाथिनः । त्रिष्टुप् ।

सोमस्य मा त्वसं वक्ष्यग्ने	वह्निं चकर्थ विदथे यजध्वै ।	
देवाँ अच्छा दीर्घद् युञ्जे अद्रिं	शमाये अग्ने तन्वं जुषस्व	४४७
प्राश्चं यज्ञं चक्रुम वर्धतां गीः	समिद्धिरग्निं नमसा दुवस्यन् ।	
दिवः शशासुर्विदथा कवीनां	गृत्साय चित् त्वसे गातुमीषुः	४४८
मयो दधे मेधिरः पूतदक्षो	दिवः सुबन्धुर्जनुषा पृथिव्याः ।	
अविन्दन्नु दर्शतमप्स्वन्तर	देवासो अग्निमपसि स्वसृणाम्	४४९

अवर्धयन् त्सुभगं सप्त यद्हीः	श्वेतं जज्ञानमरुपं महित्वा ।	
शिञ्जुं न जातमभ्यासुरश्वा	देवासो अग्निं जनिमन् वपुष्यन्	४५०
शुक्रेभिरङ्गै रज आततन्वान्	ऋतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः ।	
शोचिर्वसानुः पर्यायुरपां	श्रियो मिमीते बृहतीरनूनाः	४५१
वव्राजा सीमनवस्तीरवब्धा	दिवो यद्हीरवसाना अनग्नाः ।	
सना अत्र युवतयः सयोनीर्	एकं गर्भं दधिरे सप्त वाणीः	४५२
स्तीर्णा अस्य संहतो विश्वरूपा	घृतस्य योनौ स्रवथे मधूनाम् ।	
अस्थुरत्र धेनवः पिन्वमाना	मही दुस्मस्य मातरा समीची	४५३
बभ्राणः सूनो सहसो व्यद्यौद्	दधानः शुक्रा रभसा वपूषि ।	
श्रोतन्ति धारा मधुनो घृतस्य	वृषा यत्र वावृधे काव्येन	४५४
पितुश् चिद्धर्जनुषा विवेदु	व्यस्य धारा असृजद् वि धेनाः ।	
गुहा चरन्तं सखिभिः शिवेभिर्	दिवो यद्हीभिर्न गुहा बभूव	४५५
पितुश् च गर्भं जनितुश् च बभ्रे	पूर्वीरेको अधयत् पीप्यानाः ।	
वृष्णो सपत्नी शुचये सबन्धू	उभे अस्मै मनुष्येभ्यो नि पाहि	४५६
उरौ महौ अनिबाधे ववर्ध	आपो अग्निं यशसः सं हि पूर्वीः ।	
ऋतस्य योनावशयद् दमूना	जामीनामभिरपसि स्वसृणाम्	४५७
अक्रो न बभ्रिः समिथे महीनां	दिदृक्षेयः सूनवे भाक्रजीकः ।	
उदुस्त्रिया जनिता यो जजान	अपां गर्भो नृतमो यद्हो अग्निः	४५८
अपां गर्भं दर्शतमोषधीनां	वना जजान सुभगा विरूपम् ।	
देवासंश् चिन्मनसा सं हि जग्मुः	पनिष्ठं जातं तवसं दुवस्यन्	४५९
बृहन्त इद् भानवो भाक्रजीकम्	अग्निं सचन्त विद्युतो न शुक्राः ।	
गुहेव वृद्धं सदसि स्वे अन्तर्	अपार ऊर्वे अमृतं दुहानाः	४६०
ईळे च त्वा यजमानो हविभिर्	ईळे सखित्वं सुमतिं निकामः ।	
देवैरवो मिमीहि सं जस्त्रि	रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः	४६१
उपक्षेतारस् तव सुप्रणीते	अग्ने विश्वानि धन्या दधानाः ।	
सुरैस्तसा श्रवसा तुजमाना	अग्निं प्याम पृतनायूरदेवान्	४६२

आ देवानामभवः केतुरभे मन्द्रो विश्वानि काव्यानि विद्वान् ।	
प्रति मर्तो अवासयो दमूना अनु देवान् रथिरो यासि साधन्	४६३
नि दुरोणे अमृतो मर्त्यानां राजा ससाद विदथानि साधन् ।	
घृतप्रतीक उर्विया व्यद्यौद् अभिर्विश्वानि काव्यानि विद्वान्	४६४
आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर् महान् महीभिरूतिभिः सरण्यन् ।	
अस्मे रयि बहुलं संतरुत्रं सुवाचं भागं यशसं कृधी नः	४६५
एता ते अग्ने जनिमा सनानि प्र पूर्याय नूतनानि वोचम् ।	
महान्ति वृष्णे सर्वना कृतेमा जन्मञ्जन्मन् निहितो जातवेदाः	४६६
जन्मञ्जन्मन् निहितो जातवेदा विश्वामित्रेभिरिध्यते अजस्रः ।	
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्य अपि भद्रे सौमनसे स्याम	४६७
इमं यज्ञं सहसावन् त्वं नो देवत्रा धेहि सुक्रतो रराणः ।	
प्र यंसि होतर्बृहतीरिषो नो अग्ने महि द्रविणमा यजस्व	४६८
इळामग्ने पुरुदंसं सनि गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध ।	
स्यान्नः सुनुस् तनयो विजावा अग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे	४६९

॥ ५६ ॥ ( ऋ० ३।५।१-११ )

प्रत्यभिरुषसश् चेर्कितानो ऽबोधि विप्रः पदवीः कवीनाम् ।	
पृथुपाजा देवयद्भिः समिद्धो ऽपु द्वारा तमसो वह्निरावः	४७०
प्रेद्धभिर्वीवृधे स्तोमेभिर् गीभिः स्तोतृणां नमस्य उक्थैः ।	
पूर्वीर्ऋतस्य संदृशश् चकानः सं दूतो अद्यौदुषसो विरोके	४७१
अघाय्यग्निर्मानुषीषु विक्षु अपां गर्भो मित्र ऋतेन साधन् ।	
आ हर्षतो यजतः सान्वस्थाद् अभूदु विप्रो हव्यो मतीनाम्	४७२
मित्रो अभिर्भवति यत् समिद्धो मित्रो होता वरुणो जातवेदाः ।	
मित्रो अघ्वर्युरिषिरो दमूना मित्रः सिन्धूनामुत पर्वतानाम्	४७३
पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः पाति यद्दृश चरणं सूर्यस्य ।	
पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्वः	४७४

ऋभुश् चक्र ईड्यं चारु नाम	विश्वानि देवो वयुनानि विद्वान् ।	
ससस्य चर्म घृतवत् पदं वेस्	तदिदुग्नी रक्षत्यप्रयुच्छन्	४७५
आ योनिमग्निर्घृतवन्तमस्थात्	पृथुप्रगाणमुशन्तमुशानः ।	
दीघानः शुचिर्ऋष्वः पावकः	पुनःपुनर्मातरा नर्व्यसी कः	४७६
सद्यो जात ओषधीभिर्ववक्षे	यदी वर्धन्ति प्रस्वो घृतेन ।	
आप इव प्रवता शुम्भमाना	उरुष्यदग्निः पित्रोरुपस्थे	४७७
उदु घृतः समिधा यद्दो अद्यौद्	वर्ष्मन् दिवो अधि नाभा पृथिव्याः ।	
मित्रो अग्निरीड्यो मातरिश्वा	दूतो वक्षद् यजथाय देवान्	४७८
उदस्तम्भीत् समिधा नाकमुष्वोऽ	अग्निर्भवन्नुत्तमो रोचनानाम् ।	
यदी भृगुम्यः परि मातरिश्वा	गुहा सन्तं हव्यवाहं समीधे	४७९
इत्थाममे० (४६९)		

॥ ५७ ॥ ( ऋ० ३ । ६ । १-११ )

प्र कारवो मनना वच्यमाना	देवद्रीचीं नयत देवयन्तः ।	
दक्षिणावाड् वाजिनी प्राच्येति	हविर्भरन्त्यग्ने घृताचीं	४८०
आ रोदसी अपृणा जायमान	उत प्र रिक्था अध नु प्रयज्यो ।	
दिवश् चिदमे महिना पृथिव्या	वच्यन्तां ते वह्यः सप्तजिह्वाः	४८१
द्यौश् च त्वा पृथिवी यज्ञियासो	नि होतारं सादयन्ते दमाय ।	
यदी विशो मानुषीर्देवयन्तीः	प्रयस्वतीरीळते शुक्रमर्चिः	४८२
महान् त्सधस्थे ध्रुव आ निषत्तो	अन्तर्घात्रा माहिने हर्यमाणः ।	
आस्त्रे सपत्नी अजरे अमृक्ते	सबर्दुर्घे उरुगायस्य धेनू	४८३
व्रता ते अग्ने महतो महानि	तव ऋत्वा रोदसी आ तंतन्थ ।	
त्वं दूतो अभवो जायमानस्	त्वं नेता वृषभ चर्षणीनाम्	४८४
ऋतस्य वा केशिना योग्याभिर्	घृतस्नुवा रोहिता धुरि धिष्व ।	
अथा वह देवान् देव विश्वान्	त्स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः	४८५
दिवश् चिदा ते रुचयन्त रोका	उषो विभातीरनु भासि पूर्वीः ।	
अपो यदम उशधग् वनेषु	होतुर्मन्द्रस्य पनयन्त देवाः	४८६



उरौ वा ये अन्तरिक्षे मरुन्ति दिवो वा ये रौचने सन्ति देवाः ।  
 ऊर्मा वा ये सुहर्वासो यजत्रा आयेमिरे रथ्यो अग्ने अश्वः ४८७  
 ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् नानारथं वा विभवो ह्यश्वः ।  
 पत्नीवतस् त्रिंशत् त्रींश् च देवान् अनुष्वधमा वह माद्रयस्व ४८८\*  
 स होता यस्य रोदसी चिदुर्वी यज्ञयज्ञमभि वृधे गृणीतः ।  
 प्राची अध्वरेव तस्थतुः सुमेके ऋतावरी ऋतजातस्य सत्ये ४८९  
 इळामग्ने० (४६९)

॥ ५८ ॥ (ऋ० ३।७।१-११)

प्र य आरुः शितिपुष्टस्य धासेर् आ मातरां विविशुः सप्त वाणीः ।  
 परिक्षिता पितरा सं चरेते प्र संस्राते दीर्घमायुः प्रयक्षे ४९०  
 दिवक्षसो धेनवो वृष्णो अश्वः देवीरा तस्थौ मधुमद् वहन्तीः ।  
 ऋतस्य त्वा सदैसि क्षेमयन्तं पर्येका चरति वर्तनि गौः ४९१  
 आ सीमरोहत् सुयमा भवन्तीः पतिंश् चिकित्वान् रयिविद् रयीणाम् ।  
 प्र नीलपृष्ठो अतसस्य धासेस् ता अवासयत् पुरुधप्रतीकः ४९२  
 महि त्वाष्ट्रमूर्जयन्तीरजुर्य स्तभूयमानं वहतो वहन्ति ।  
 व्यङ्गैभिर्दिद्युतानः सधस्थ एकामिव रोदसी आ विवेश ४९३  
 जानन्ति वृष्णो अरुषस्य शेवम् उत ब्रध्नस्य शासने रणन्ति ।  
 दिवोरुचः सुरुचो रोचमाना इळा येषां गण्या माहिंजा गीः ४९४  
 उतो पितृभ्यां प्रविदानु घोषं महो महश्चामनयन्त शुषम् ।  
 उक्षा ह यत्र परि धानमक्तोर् अनु स्वं धाम जरितुर्ववक्ष ४९५  
 अध्वर्युभिः पञ्चभिः सप्त विप्राः प्रियं रक्षन्ते निहितं पदं वेः ।  
 प्राञ्चो मदन्त्युक्षणो अजुर्या देवा देवानामनु हि व्रता गुः ४९६  
 दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति ।  
 ऋतं शंसन्त ऋतमित् त आहूर् अनु व्रतं व्रतपा दीध्यानाः ४९७  
 वृषायन्ते महे अत्याय पूर्वीर् वृष्णे चित्राय रश्मयः सुयामाः ।  
 देव होतमन्द्रतरश् चिकित्वान् महो देवान् रोदसी एह वक्षि ४९८

पृथ्वाप्रसन्नो द्रविणः सुवाचः सुक्रेतव उषसो रेवदेषुः ।  
 उतो लिदमे मद्भिना पृथिव्याः कृतं चिदेनः सं महे दशस्य ४९९  
 इळाम्मे० (४६९)

॥ ५९ ॥ ( ऋ० ३ । ९ । १-९ ) बृहती, ५०८ श्रिष्टुप ।

सखाँसु त्वा ब्रवमहे देवं मर्तास ऊतये ।  
 अपां न्यसतं सुभगं सुदीदिति सुप्रतीमनेहसम् ५००  
 कार्यमानो वना त्वं यन्मातृरजगन्नपः ।  
 न तद् ते अग्रे प्रमृषे निवर्त्तनं यद् दूरे सन्निहाभवः ५०१  
 अतिं तृष्टं ववक्षिथ अथैव सुमना असि ।  
 प्रप्रान्ये मन्ति पर्यन्य आसते येषां सख्ये असि श्रितः ५०२  
 ईयिवासमति सिधः शश्वतीरति सश्वतः ।  
 अन्वीमविन्दन् निचिरासो अद्रुहो अप्सु सिंहमिव श्रितम् ५०३  
 ससृवांसमिव त्मना अभिमित्था तिरोहितम् ।  
 ऐनं नयन् मातरिश्वां परावतो देवेभ्यो मथितं परि ५०४  
 तं त्वा मर्ता अगृभ्णत देवेभ्यो हव्यवाहन ।  
 विश्वान् यद् यज्ञां अभिपासि मानुष तव क्रत्वा यविष्ठ्य ५०५  
 तद् भद्रं तव दुंसना पाकाय चिच्छदयति ।  
 त्वां वक्षे पश्वः समासते सन्निद्धमपिशर्वरे ५०६  
 आ जुहोता स्वध्वरं शीरं षावकशोचिषम् ।  
 आशुं दूतमजिरं प्रलमीड्यं श्रुष्टी देवं संपर्यत ५०७  
 त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।  
 औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरस्मा आदिद्वोतारं न्यसादयन्त ५०८

॥ ६० ॥ ( ऋ० ३ । १० । १-९ ) । उष्णिक् ।

त्वामग्ने मनीषिणः सम्राजं चर्षणीनाम् । देवं मर्तास इन्धते समध्वरे ५०९  
 त्वां यज्ञेष्वृत्विजम् अग्रे होतारमीकृते । गोपा क्रतस्य दीदिहि स्वे इमे ५१०  
 स धा यस् ते ददांशति समिधा जातवेदसे । सो अग्रे धत्ते सुवीर्यं स पुष्यति ५११

स केतुरध्वराणाम्	अग्निर्देवेभिरा गमत् । अज्ञानः सप्त होतृभिर्हविष्मते	५१२
प्र होत्रे पूर्य्य वचो	अग्नये भरता बृहत् । विपां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे	५१३
अग्निं वर्धन्तु नो गिरो	यतो जायत उक्थयः । महे वाजाय द्रविणाय दर्शतः	५१४
अग्ने यजिष्ठो अध्वरे	देवान् देवयते यज । होता मन्द्रो वि राजस्यति सिधः	५१५
स नः पावक दीदिहि	द्युमद्रस्मे सुवीर्यम् । भवां स्तोतृभ्यो अन्तमः स्वस्तये	५१६
तं त्वा विप्रां विपन्यवो	जागृवांसः समिन्धते । हव्यवाहममर्त्यं सहोवृधम्	५१७

॥ ६१ ॥ ( ऋ० ३ । ११ । १-९ ) गायत्री ।

अग्निर्होता पुरोहितो	अध्वरस्य विचर्षणिः । स वेद यज्ञमानुषक्	५१८
स हव्यवाळमर्त्यं	उशिग् दूतश् चनोहितः । अग्निर्धिया समृण्वति	५१९
अग्निर्धिया स चैतति	केतुर्यज्ञस्य पूर्य्यः । अर्थं ह्यस्य तरणि	५२०
अग्निं सूनुं सनश््रुतं	सहसो जातवेदसम् । वह्निं देवा अकृण्वत	५२१
अदाभ्यः पुरएता	विशामग्निर्मानुषीणाम् । तूर्णी रथः सदा नवः	५२२
साह्वान् विश्वा अभियुजः	ऋतुर्देवानाममृक्तः । अग्निस् तुविश्रवस्तमः	५२३
अग्निं प्रयांसि वाहसा	दाश्वां अश्नोति मर्त्यः । क्षयं पावकशोचिषः	५२४
परि विश्वानि सुधिता	अग्नेरश्याम मन्मभिः । विप्रांसो जातवेदसः	५२५
अग्ने विश्वानि वार्या	वाजेषु सनिषामहे । त्वे देवास एरिरे	५२६

॥ ६२ ॥ ( ऋ० ३ । २४ । १-५ ) ५२७ अनुष्टुप्; ५२८-५३१ गायत्री ।

अग्ने सहस्व पृतना	अभिमातीरपास्य । दृष्टरस् तरभरातीर् वचो धा यज्ञवाहसे	५२७
अग्ने इळा समिध्यसे	वीतिहोत्रो अमर्त्यः । जुषस्व स्र नो अध्वरम्	५२८
अग्ने द्युम्नेन जागृवे	सहसः स्रनवाहुत । एदं बर्हिः सदो मम	५२९
अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्	देवेभिर्महया गिरः । यज्ञेषु य उं चायवः	५३०
अग्ने दा दाशुषे रयि	वीरवन्तं परीणसम् । शिशीहि नः स्रनुमतः	५३१

॥ ६३ ॥ ( ऋ० ३ । २५ । १-५ ) विराट् ।

अग्ने दिवः सूनुरसि प्रचेतास्	तनां पृथिव्या उत विश्ववेदाः ।	
ऋषग् देवाँ इह यजा चिकित्वः		५३२
अग्निः सनोति वीर्यीणि विद्वान्	त्सनोति वाजममृताय भूषन् ।	
स नो देवाँ एह वहा पुरुक्षो		५३३

अग्निर्घावापृथिवी विश्वजन्ये	आ भाति देवी अमृते अमूरः ।	
क्षयन् वाजैः पुरुश्चन्द्रो नमोभिः		५३४
अग्न इन्द्रश् च दाशुषो दुरोणे	सुतावतो यज्ञमिहोप यातम् ।	
अमर्धन्ता सोमपेयाय देवा		५३५
अग्ने अपां समिध्यसे दुरोणे	नित्यः सूनो सहसो जातवेदः ।	
सधस्थानि मह्यमान ऊती		५३६

॥ ६४ ॥ ( ऋ० ३ । २७ । १-१५ ) गायत्री ।

प्र वो वाजा अभिर्घवो	हविष्मन्तो घृताच्या । देवाञ्जिगाति सुम्युः	५३७
ईळे अग्निं विपश्चितं	गिरा यज्ञस्य साधनम् । श्रुष्टीवानं धितावानम्	५३८
अग्ने श्केर्म ते वयं	यमं देवस्य वाजिनः । अति द्वेषांसि तरेम	५३९
समिध्यमानो अध्वरेऽ	अग्निः पावक ईड्यः । शोचिष्केशस् तमीमहे	५४०
पृथुपाजा अमर्त्यो	घृतनिर्णिक् स्वाहुतः । अग्निर्यज्ञस्य हव्यवाद्	५४१
तं सबाधो यत्सुच	इत्था धिया यज्ञवन्तः । आ चक्रुरग्निमूतये	५४२
होता देवो अमर्त्यः	पुरस्तादिति मायया । विदथानि प्रचोदयन्	५४३
वाजी वाजेषु धीयते	अध्वरेषु प्र णीयते । विप्रो यज्ञस्य साधनः	५४४
धिया चक्रे वरेण्यो	भूतानां गर्भमा दधे । दक्षस्य पितरं तना	५४५
नि त्वा दधे वरेण्यं	दक्षस्येळा सहस्कृत । अग्ने सुदीतिमुशिजम्	५४६
अग्निं यन्तुरमपुत्रम्	ऋतस्य योगे वनुषः । विप्रा वाजैः समिन्धते	५४७
ऊर्जो नपातमध्वरे	दींदिवांसमुप दधि । अग्निमीळे कविक्रतुम्	५४८
ईळेन्यो नमस्यस्	तिरस् तमांसि दर्शतः । समग्निरिध्यते वृषा	५४९ *
वृषो अग्निः समिध्यते	अश्वो न देववाहनः । तं हविष्मन्त ईळते	५५० *
वृषणं त्वा वयं वृषन्	वृषणः समिधीमहि । अग्ने दीद्यतं बृहत्	५५१ *

॥ ६५ ॥ ( ऋ० ३ । २८ । १-६ )

५५२-५५३, ५५७ गायत्री, ५५४ उष्णिक्, ५५५ त्रिष्टुप्, ५५६ जगती ।

अग्ने जुषस्व नो हविः	पुरोळाशं जातवेदः । प्रातःसावे धियावसो	५५२
पुरोळा अग्ने पचतस्	तुभ्यं वा घा परिष्कृतः । तं जुषस्व यविष्ठय	५५३
अग्ने वीहि पुरोळाशम्	आहुतं तिरोअह्वयम् । सहसः सूनुरस्यध्वरे हितः	५५४

माध्यंदिने सर्वने जातवेदः पुरोळाशमिह कवे जुषस्व ।	
अग्ने यद्दस्य तव भागधेयं न प्र मिनन्ति विदथेषु धीराः	५५५
अग्ने तृतीये सर्वने हि कानिषः पुरोळाशं सहसः सूनवाहुतम् ।	
अथा देवेष्वध्वरं विपन्यया धा रत्नवन्तममृतेषु जागृविम्	५५६
अग्ने वृधान आहुतिं पुरोळाशं जातवेदः । जुषस्व तिरोअह्यम्	५५७

॥ ६६ ॥ ( ऋ० ३ । २९ । १-१६ ) त्रिष्टुपः

५५८, ५६१, ५६७, ५६९ अनुष्टुपः; ५६३, ५६८, ५७१, ५७२ जगती ।

अस्तीदमधिमन्थनम् अस्तिं प्रजननं कृतम् ।	
एतां विश्वलीमा भर अग्निं मन्थाम पूर्वथा	५५८
अरभ्येनिहितो जातवेदा गर्भे इव सुधितो गर्भिणीषु ।	
दिवेदिव ईड्यो जागृवन्निर् हविष्मन्निर्मनुष्येभिरग्निः	५५९
उत्तानायामर्ष भरा चिकित्वान् त्सद्यः प्रवीता वृषणं जजान ।	
अरुषस्तूपो रुशदस्य पाज इळायास् पुत्रो वयुनेऽजनिष्ट	५६०
इळायास् त्वा पदे वयं नाभां पृथिव्या अधि ।	
जातवेदो नि धीमहि अग्ने हव्याय वोह्वे	५६१
मन्थता नरः कविमद्वयन्तं प्रचेतसममृतं सुप्रतीकम् ।	
यज्ञस्यं केतुं प्रथमं पुरस्ताद् अग्निं नरो जनयता सुशेवम्	५६२
यदी मन्थन्ति बाहुभिर्वि रोचते अश्वो न वाज्यरुषो वनेष्वा ।	
चित्रो न यामभश्चिनोरनिवृतः परिं वृणक्त्यश्मनस् तृणा दहनं	५६३
जातो अग्नी रोचते चेकितानो वाजी विप्रः कविशस्तः सुदानुः ।	
यं देवास ईड्यं विश्वमिदं हव्यवाहमर्धुरध्वरेषु	५६४
सीदं होतः स्व उ लोके चिकित्वान् त्सादया यज्ञं सुकृतस्य कीनौ ।	
देवावीर्देवान् हविषा यज्ञसि अग्ने बृहद् यजमाने वयो धाः	५६५
कृणोत धूमं वृषणं सखायो अस्त्रेभन्त इतन् वाज्रमच्छ ।	
अयमग्निः पृतनाषाद् सुवीरो येन देवासो अर्सेहन्त दस्युन्	५६६

अयं ते योनिर्ऋत्वियो	यतो जातो अरोचथाः ।	
तं जानन्नम आ सीद	अथा नो वर्धया गिरः	५६७
तनूनपादुच्यते गर्भे आसुरो	नराशंसो भवति यद् विजायते ।	
मातरिश्वा यदर्मिमीत मातरि	वार्तस्य सर्गो अभवत् सर्गामणि	५६८
सुनिर्मथा निर्मथितः	सुनिधा निहितः कृविः ।	
अग्ने स्वध्वरा कृणु	देवान् देवयते यज	५६९
अजीजनन्नमृतं मर्त्यासो	अस्त्रेमाणं तरणिं वीळुजम्भम् ।	
दश स्वसरो अग्रुवः समीचीः	पुमांसं जातमभि सं रभन्ते	५७०
प्र सप्तहोता सनकादरोचत	मातुरुपस्थे यदशोचदूधनि ।	
न नि मिषति सुरणो द्विवेदिवे	यदसुरस्य जठरादजायत	५७१
अमित्रायुधो मरुतामिव प्रयाः	प्रथमजा ब्रह्मणो विश्वमिद् विदुः ।	
द्युन्नवद् ब्रह्म कुशिकास एरिर	एकएको दमे अग्निं समीधिरे	५७२
यदद्य त्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन्	होतश् चिकित्वोऽवृणीमहीह ।	
ध्रुवमया ध्रुवमुताशमिष्ठाः	प्रजानन् विद्राँ उप याहि सोमम्	५७३

॥ ६७ ॥ ( ऋ० ३ । १३ । १-७ ) [ ५७४-५८७ ] ऋषभो वैश्वामित्रः । अनुष्टुप् ।

प्र वो देवायामये	बर्हिष्ठमर्चास्मै ।	
गमद् देवेभिरा स नो	यजिष्ठो बर्हिरा संदत्	५७४
ऋतावा यस्य रोदसी	दक्षं सचन्त ऊतयः ।	
हविष्मन्तस् तमीळते	तं सनिष्यन्तोऽवसे	५७५
स यन्ता विप्र एषां	स यज्ञानामथा हि षः ।	
अग्निं तं वो दुवस्यत्	दाता यो वनिता मघम्	५७६
स नः शर्माणि वीतये	अग्निर्यच्छतु शतमा ।	
यतो नः प्रुष्णवद् वसु	दिवि क्षितिभ्यो अप्स्वा	५७७
दीदुवांसमपूर्व्य	वस्वीभिरस्य धीतिभिः ।	
ऋक्काणो अग्निमिन्धते	होतारं विश्वतिं विशाम	५७८

उत नो ब्रह्मन्निविष उक्थेषु देवहृतमः ।  
 शं नः शोचा मरुद्रुधो अग्ने सहस्रसातमः ५७९  
 नू नो रास्व सहस्रवत् तोकवत् पुष्टिमद् वसु ।  
 द्युमदग्ने सुवीर्यं वर्षिष्ठमनुपक्षितम् ५८०

॥ ६८ ॥ ( ऋ० ३ । १४ । १-७ ) त्रिष्टुप् ।

आ होता मन्द्रो विदथान्यस्थात् सत्यो यज्वा कवितमः स वेधाः ।  
 विद्युद्रथः सहसस्पुत्रो अग्निः शोचिष्केशः पृथिव्यां पाजो अश्रेत् ५८१  
 अयामि ते नमउक्तिं जुषस्व ऋतावस् तुभ्यं चेतते सहस्वः ।  
 विद्राँ आ वक्षि विदुषो नि षत्सि मध्य आ बर्हिरूतये यजत्र ५८२  
 द्रवतां त उषसा वाजयन्ती अग्ने वातस्य पृथ्याभिरच्छ ।  
 यत् सीमञ्जन्ति पूर्यं हविभिर् आ बन्धुरेव तस्थतुर्दुरोणे ५८३  
 मित्रश् च तुभ्यं वरुणः सहस्वो अग्ने विश्वे मरुतः सुम्नमर्चन् ।  
 यच्छोचिषा सहसस्पुत्र तिष्ठा अभि क्षितीः प्रथयन् त्वर्यो नृन् ५८४  
 वयं ते अद्य ररिमा हि कामम् उत्तानहस्ता नमसोपसद्य ।  
 यजिष्ठेन मनसा यक्षि देवान् अस्त्रेधता मन्मना विप्रो अग्ने ५८५  
 त्वद्धि पुत्र सहभो वि पूर्वीर् देवस्य यन्त्युतयो वि वाजाः ।  
 त्वं देहि सहस्रिणं रयि नो अद्रोघेण वर्चसा सत्यमग्ने ५८६  
 तुभ्यं दक्ष कविक्रतो यानीमा देव मर्तासो अध्वरे अकर्म ।  
 त्वं विश्वस्य सुरथस्य बोधि सर्वं तदग्ने अमृत स्वदेह ५८७

॥ ६९ ॥ ( ऋ० ३ । १५ । १-७ ) ( ५८८-५९९ ) उत्कीलः कात्यः । त्रिष्टुप् ।

वि पाजसा पृथुना शोशुचानो बाधस्व द्विषो रक्षसो अमीवाः ।  
 सुशर्मणो बृहतः शर्मणि स्याम् अग्नेरहं सुहवस्य प्रणीतौ ५८८  
 त्वं नो अस्या उषसो व्युष्टौ त्वं सूर उदिते बोधि गोपाः ।  
 जन्मैव नित्यं तनयं जुषस्व स्तोमं मे अग्ने तन्वा सुजात ५८९  
 त्वं नृचक्षा वृषभानु पूर्वीः कृष्णास्वग्ने अरुषो वि भाहि ।  
 वसो नेषि च पर्षि चात्यंहः कृधी नो राय उशिजो यविष्ठ ५९०

अषाहो अग्ने वृषभो दिदीहि	पुरो विश्वाः सौभगा संजिगीवान् ।	
यज्ञस्य नेता प्रथमस्य पायोर्	जातवेदो बृहतः सुप्रणीते	५९१
अच्छिद्रा शर्मं जरितः पुरूणि	देवाँ अच्छा दीद्यानः सुमेधाः ।	
रथो न सस्त्रिभिर्वक्षि वाजम्	अग्ने त्वं रोदसी नः सुमेके	५९२
प्र पीपय वृषभ जिन्व वाजान्	अग्ने त्वं रोदसी नः सुदोर्वे ।	
देवेभिर्देव सुरुचा रुचानो	मा नो मर्तस्य दुर्मतिः परिं घात्	५९३
इळामग्ने० ( ४६९ )		

॥ ७० ॥ ( ऋ० ३ । १६ । १-६ ) प्रगाथः ( = बृहती + सतोबृहती । )

अयमग्निः सुवीर्यस्य ईशे महः सौभगस्य ।		
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमंतं	ईशे वृत्रहथानाम्	५९४
इमं नरो मरुतः सश्रता वृधं	यस्मिन् रायः शेवृधासः ।	
अभि ये सन्ति पृतनासु दूढ्यो	विश्वाहा शत्रुमादुभुः	५९५
स त्वं नो रायः शिशीहि	मीढ्वो अग्ने सुवीर्यस्य ।	
तुर्विद्युम्न वर्षिष्ठस्य प्रजावतो	अनमीवस्यं शुष्मिणः	५९६
चक्रियो विश्वा भुवनाभि सांसहिश्	चक्रिर्देवेष्वा दुवः ।	
आ देवेषु यतत आ सुवीर्यं	आ शंसं उत नृणाम्	५९७
मा नो अग्नेऽमृतये	माकीरतायै रीरधः ।	
मागोतायै सहसस्पुत्र मा निदे	अप द्वेषास्या कृधि	५९८
शग्धि वाजस्य सुभग प्रजावतो	अग्ने बृहतो अध्वरे ।	
सं राया भूर्यसा सृज मयोभुना	तुर्विद्युम्न यशस्वता	५९९

॥ ७१ ॥ ( ऋ० ३ । १७ । १-५ ) ६००—६०९ कतो वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

समिध्यमानः प्रथमानु धर्मा	समक्तुभिरज्यते विश्ववारः ।	
शोचिष्केशो घृतनिर्णिक् पावकः	सुयज्ञो अग्निर्यजथाय देवान्	६००
यथार्यजो होत्रमग्ने पृथिव्या	यथा दिवो जातवेदश् चिकित्वान् ।	
एवानेन हविषा यक्षि देवान्	मनुष्वद् यज्ञं प्र तिरेममद्य	६०१



त्रीण्यायुंषि तव जातवेदस् तिस्र आजानीरुषसस् ते अग्ने । ताभिर्देवानामवो यक्षि विद्वान् अथा भव यजमानाय शं योः	६०२
अग्निं सुदीतिं सुदृशं गृणन्तो नमस्यामस् त्वेढ्यं जातवेदः । त्वां दूतमरतिं हव्यवाहं देवा अकृण्वन्नमृतस्य नाभिम्	६०३
यस् त्वद्धोता पूर्वा अग्ने यजीयान् द्विता च सत्ता स्वधया च शंभुः । तस्यानु धर्म प्र यजा चिकित्वो अथा नो धा अध्वरं देववीतौ	६०४

॥ ७२ ॥ ( ऋ० ३ । १८ । १-५ )

भवां नो अग्ने सुमना उपेतौ सखैव सख्ये पितरैव साधुः । पुरुद्रुहो हि क्षितयो जनानां प्रति प्रतीचीर्दिहतादरातीः	६०५
तपो ष्वग्ने अन्तरां अमित्रान् तपा शंसमररुषः परस्य । तपो वसो चिकितानो अचित्तान् वि ते तिष्ठन्तामजरा अयासः	६०६
इधमेनाग्ने इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तरसे बलाय । यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम्	६०७
उच्छोचिषां सहसस्पुत्र स्तुतो बृहद् वयः शशमानेषु धेहि । रेवदग्ने विश्वामित्रेषु शं योर् मर्मृज्मा ते तन्वं भूरि कृत्वः	६०८
कृधि रत्नं सुसनितर्धनानां स घेदग्ने भवसि यत् समिद्धः । स्तोतुर्दुरोणे सुभगस्य रेवत् सृप्रा करस्ता दधिषे वपूंषि	६०९

॥ ७३ ॥ ( ऋ० ३ । १९ । १-५ ) [ ६१०—६२६ ] गार्गी कौशिकः ।

अग्निं होतारं प्र वृणे मियेधे गृत्सं कविं विश्वविदुममूरम् । स नो यक्षद् देवताता यजीयान् राये वाजाय वनते मघानि	६१०
प्र ते अग्ने हविष्मतीमियमि अच्छा सुद्युम्नां रातिनीं घृताचीम् । प्रदक्षिणिद् देवतातिमुराणः सं रातिभिर्वसुभिर्यज्ञमश्रेत्	६११
स तेजीयसा मनसा त्वोत् उत शिक्ष स्वपत्यस्य शिक्षोः । अग्ने रायो नृतमस्य प्रभूतौ भूयाम ते सुष्टुतर्यश् च वस्वः	६१२
भूरीणि हि त्वे दधिरे अनीका अग्ने देवस्य यज्यवो जनासः । स आ वह देवतातिं यविष्ठ शर्धो यदुद्य दिव्यं यजासि	६१३

यत् त्वा होतारमनर्जन् मियेधे निषादयन्तो यजथाय देवाः ।  
स त्वं नो अग्नेऽवितेह बोधि अधि श्रवांसि धेहि नस् तनूषु ६१४

॥ ७४ ॥ ( ऋ० ३ । २० । २-४ )

अग्ने त्री ते वाजिना त्री पृधस्था तिस्रस् ते जिह्वा ऋतजात पूर्वीः ।  
तिस्र उ ते तन्वो देववातास् तामिर्नः पाहि गिरो अप्रयुच्छन् ६१५  
अग्ने भूरीणि तव जातवेदो देव स्वधावोऽमृतस्य नाम ।  
याश् च माया मायिना विश्वमिन्व त्वे पूर्वीः संदधुः पृष्टबन्धो ६१६  
अग्निर्नेता भग इव क्षितीनां दैवीनां देव ऋतुपा ऋतावा ।  
स बृत्रहा सनयो विश्ववेदाः पर्पद् विश्वाति दुरिता गृणन्तम् ६१७

॥ ७५ ॥ ( ऋ० ३ । २१ । १-५ )

६१८, ६२१ त्रिष्टुप्, ६१९-२० अनुष्टुप्, ६२२ विराड् रूपा सतोबृहती ।

इमं नो यज्ञममृतेषु धेहि इमा हव्या जातवेदो जुषस्व ।  
स्तोकानामग्ने मेदसो घृतस्य होतः प्राशान प्रथमो निषध ६१८  
घृतवन्तः पावक ते स्तोकाः श्रोतन्ति मेदसः ।  
स्वधर्मन् देववीतये श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम् ६१९  
तुभ्यं स्तोका घृतश्रुतो अग्ने विप्राय सन्त्य ।  
ऋषिः श्रेष्ठः समिध्यसे यज्ञस्य प्राविता भव ६२०  
तुभ्यं श्रोतन्त्यग्निगो शचीवः स्तोकासो अग्ने मेदसो घृतस्य ।  
कविशस्तो बृहता भानुनागा हव्या जुषस्व मेधिर ६२१  
ओजिष्ठं ते मध्यतो मेद उद्धृतं प्र ते वयं ददामहे ।  
श्रोतन्ति ते वसो स्तोका अधि त्वचि प्रति तान् देवशो विहि ६२२  
॥ ७६ ॥ ( ऋ० ३ । २२ । १-५ ) ६२६ पुरीष्याग्रयः । त्रिष्टुप्, ६२६ अनुष्टुप् ।  
अयं सो अग्निर्यस्मिन् त्सोमं इन्द्रः सुतं दधे जठरे वावशानः ।  
सहस्रिणं वाज्रमत्यं न समिं ससवान् त्सन् तस्तूयसे जातवेदः ६२३  
अग्ने यत् ते दिवि वर्चः पृथिव्यां यदोषधीष्वप्स्वा यजत्र ।  
येनान्तरिक्षमूर्वातन्थ त्वेषः स भानुरर्णवो नृचक्षाः ६२४

अग्ने दिवो अर्णमच्छा जिगासि अच्छा देवाँ ऊचिषे धिष्ण्या ये ।  
 या रौचने परस्तात् सूर्यस्य याश् चावस्तादुपतिष्ठन्त आपः ६२५  
 पुरीष्यासो अग्रयः प्रावणेभिः सजोषसः ।  
 जुषन्तां यज्ञमद्रुहो अनमीवा इषो महीः ६२६  
 इळामग्ने० ( ४६९ )

॥ ७७ ॥ ( ऋ० ३ । २३ । १-५ )

६२७-६३० देवश्रवा देववातश्च भारतौ । त्रिष्टुप्, ६२९ सतोबृहती ।

निर्मथितः सुधित आ सधस्थे युवां कविरध्वरस्य प्रणेता ।  
 जूर्यत्स्वग्निरजरो वनेषु अत्रा दधे अमृतं जातवेदाः ६२७  
 अमन्धिष्ठां भारता रेवदग्निं देवश्रवा देववातः सुदक्षम् ।  
 अग्ने वि पश्य बृहताभि राया इषां नो नेता भवतादनु धून् ६२८  
 दश क्षिपः पूर्य सीमजीजनन् त्सुजातं मातृषु प्रियम् ।  
 अग्निं स्तुहि दैववातं देवश्रवो यो जनानामसद् वशी ६२९  
 नि त्वा दधे वर आ पृथिव्या इळायास्पदे सुदिनत्वे अह्वाम् ।  
 दृषद्वत्यां मानुष आपयायां सरस्वत्यां रेवदग्ने दिदीहि ६३०  
 इळामग्ने० ( ४६९ )

॥ ७८ ॥ ( ऋग्वेदस्य चतुर्थे मण्डले , सूक्तं १, मंत्राः १, ६-२० )

[ ६३१-७५५ ] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्, ६३१ अष्टिः ।

त्वां ह्यग्ने सदमित् समन्यवो देवासो देवमरति न्येरिर इति क्रत्वा न्येरिरे ।  
 अमर्त्यं यजत मर्त्येष्व्वा देवमादेवं जनत प्रचेतसं विश्वमादेवं जनत प्रचेतसम् ६३१  
 अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य सदृग् देवस्य चित्रतमा मर्त्येषु ।  
 शुचिं घृतं न तप्तमघ्न्यायाः स्पार्हा देवस्य मंहनेव धेनोः ६३२  
 त्रिरस्य ता परमा सन्ति सत्या स्पार्हा देवस्य जनिमान्यग्नेः ।  
 अनन्ते अन्तः परिवीत आगात् शुचिः शुक्रो अर्यो रोरुचानः ६३३  
 स दूतो विश्वेदभि वष्टि सद्वा होता हिरण्यरथो रंसुजिह्वः ।  
 रोहिदश्वो वपुष्यो विभावा सदा रण्वः पितुमतीव संसत् ६३४

स चैतयन् मनुषो यज्ञबन्धुः	प्र तं महा रश्नया नयन्ति ।	
स क्षेत्रस्य दुर्यासु सार्धन्	देवो मर्तस्य सधनित्वमाप	६३५
स तू नो अग्निर्नयतु प्रजानन्	अच्छा रत्नं देवभक्तं यदस्य ।	
धिया यद् विश्वे अमृता अकृष्वन्	द्यौष्पिता जनिता सत्यमुक्षन्	६३६
स जायत प्रथमः पस्त्यासु	महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।	
अपादशीर्षा गुहमानो अन्ता	आयोर्युवानो वृषभस्य नीले	६३७
प्र शर्धे आर्तं प्रथमं विपन्याँ	ऋतस्य योनां वृषभस्य नीले ।	
स्पाहो युवा वपुष्यो विभावा	सप्त प्रियासोऽजनयन्त वृष्णे	६३८
अस्माकमत्र पितरो मनुष्या	अभि प्र सैदुर्कृतमाशुषाणाः ।	
अश्मव्रजाः सुदुर्घा वत्रे अन्तर्	उदुस्त्रा आजन्नुषसो हुवानाः	६३९
ते मर्मृजत ददृवांसो अद्रिं	तदेषामन्ये अभितो वि वोचन् ।	
पश्वयन्त्रासो अभि कारमर्चन्	विदन्त ज्योतिश् चकूपन्त धीभिः	६४०
ते गव्यता मनसा दध्रमुब्धं	गा येमानं परि षन्तमद्रिम् ।	
दृहं नरो वचसा दैव्येन	व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वत्रुः	६४१
ते मन्वत प्रथमं नाम धेनोस्	त्रिः सप्त मातुः परमाणि विन्दन् ।	
तज्जानतिरभ्यनूषत त्रा	आविर्भुवदरुणीर्यशसा गोः	६४२
नेशत् तमो दुधितं रोचत द्यौर्	उद् देव्या उपसो भानुरर्त ।	
आ सूर्यो बृहतस् तिष्ठदज्जौ	ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्	६४३
आदित् पश्चा बुबुधाना व्यख्यन्	आदिद् रत्नं धारयन्त द्युभक्तम् ।	
विश्वे विश्वासु दुर्यासु देवा	मित्र धिये वरुण सत्यमस्तु	६४४
अच्छा वोचेय शुशुचानमग्निं	होतारं विश्वभरसं यजिष्ठम् ।	
शुच्युधौ अतृणन्न गवाम्	अन्धो न पूतं परिषिक्तमंशोः	६४५
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां	विश्वेषामतिथिर्मानुषाणाम् ।	
अग्निर्देवानामव आवृणानः	सुमृळीको भवतु जातवेदाः	६४६

॥ ७९ ॥ ( ऋ० ४ । २ । १-२० ) त्रिष्टुप् ।

यो मर्त्येष्वमृतं ऋतावा	देवो देवेष्वरतिर्निधायि ।	
होता यजिष्ठो महा शुचध्वै	हव्यैरग्निर्मनुष ईर्यध्वै	६४७

इह त्वं सूनो सहसो नो अद्य जातो जाताँ उभयोँ अन्तरंग्रे ।	
दूत ईयसे युयुजान ऋष्व ऋजुमुष्कान् वृषणः शुक्रांश्च	६४८
अत्या वृधस्नू रोहिता घृतस्नू ऋतस्य मन्ये मनसा जविष्ठा ।	
अन्तरीयसे अरुषा युजानो युष्मांश् च देवान् विश आ च मर्तान्	६४९
अर्यमणं वरुणं मित्रमेषाम् इन्द्राविष्णू मरुतो अश्विनोत् ।	
स्वश्वो अग्ने सुरार्थः सुराधा एदु वह सुहविषे जनाय	६५०
गोमाँ अग्नेऽविमाँ अश्वी यज्ञो नृवत्सखा सदमिदप्रमृष्यः ।	
इळावाँ एषो असुर प्रजावान् दीर्घो रयिः पृथुबुधः सभावान्	६५१
यस् त इध्मं जभरत् सिध्विदानो मूर्धानं वा ततपते त्वाया ।	
भुवस् तस्य स्वर्तवाँः पायुरग्ने विश्वस्मात् सीमघायत उरुष्य	६५२
यस् ते भरादन्नियते चिदन्नं निशिषन् मन्द्रमतिथिमुदीरत् ।	
आ देव्युरिनर्धते दुरोणे तस्मिन् रयिर्ध्रुवो अस्तु दास्वान्	६५३
यस् त्वा दोषा य उषसि प्रशंसात् प्रियं वा त्वा कृणवते हविष्मान् ।	
अश्वो न स्वे दम आ हेम्यावान् तमंहंसः पीपरो दाश्वांसम्	६५४
यस् तुभ्यमग्ने अमृताय दाशद् दुवस् त्वे कृणवते यत्सृक् ।	
न स राया शशमानो वि योपत् नैनमंहः परिं वरदघायोः	६५५
यस्य त्वमग्ने अध्वरं जुजोषो देवो मर्तस्य सुधितं रराणः ।	
प्रीतेदसद्दोत्रा सा यविष्ठ असाम् यस्य विधतो वृधासः	६५६
चित्तिमचित्ति चिनवद् वि विद्वान् पृष्ठेवं वीता वृजिना च मर्तान्	
राये च नः स्वपत्याय देव दितिं च रास्वादितिमुरुष्य	६५७
कवि शशासुः कवयोऽदब्धा निधारयन्तो दुर्यास्वायोः ।	
अतस् त्वं दृश्याँ अग्र एतान् पङ्क्तिः पश्येरद्भुताँ अर्य एवैः	६५८
त्वमग्ने वाघते सुप्रणीतिः सुतसोमाय विधते यविष्ठ ।	
रत्नं भर शशमानाय घृष्वे पृथु श्रैन्द्रमवसे चर्षणिप्राः	६५९
अधा ह यद् वयमग्ने त्वाया पङ्क्तिर्हस्तेभिश् चकृमा तनूभिः ।	
रथं न क्रन्तो अपसा भुरिजोर् ऋतं यैमुः सुध्य आशुषाणाः	६६०

अधा मातुरुषसः सप्त विप्रा जायेमहि प्रथमा वेधसो नृन् दिवस्पुत्रा अङ्गिरसो भवेम अद्रिं रुजेम धनिनै शुचन्तः	६६१
अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासो अग्र क्रतमाशुषाणाः । शुचीदयन् दीधितिसुक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरपं व्रन्	६६२
सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तो अयो न देवा जनिमा धमन्तः । शुचन्तो अग्निं ववृधन्त इन्द्रं उर्व गव्यं परिषदन्तो अगमन्	६६३
आ यूथेवं क्षुमति पश्वो अख्यद् देवानां यज् जनिमान्त्युग्र । मतीनां चिदुर्वशीरकृप्रन् वृधे चिदुर्य उपरस्यायोः	६६४
अकर्म ते स्वपसो अभूम क्रतमवसन्नृषसो विभातीः । अनूनमग्निं पुरुधा सुश्चन्द्रं देवस्य मर्मजतश् चारु चक्षुः	६६५
एता ते अग्र उचथानि वेधो अवीचाम कवये ता जुषस्व । उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो नो महो रायः पुरुवार प्र यन्धि	६६६

॥ ८० ॥ ( ऋ० ४।३।२-१६ )

अयं योनिश् चकृमा यं वयं ते जायेव पत्यं उशती सुवासाः । अर्वाचीनः परिवीतो नि षीद इमा उ ते स्वपाक प्रतीचीः	६६७
आशृण्वते अदपिताय मन्म नृचक्षसे सुमृळीकार्य वेधः । देवार्य शस्तिममृताय शंसं श्रावैव सोता मधुषुद् यमीळे	६६८
त्वं चिन्नः शम्यां अग्ने अस्या क्रतस्य बोध्यतचित् स्वाधीः । कदा ते उक्था संघमाद्यानि कदा भवन्ति सख्या गृहे ते	६६९
कथा ह तद् वरुणाय त्वमग्ने कथा दिवे गर्हसे कन्न आगः । कथा मित्राय मीह्वेषे पृथिव्यै ब्रवः कदर्यम्णे कद् भगाय	६७०
कद्विष्ण्यासु वृधसानो अग्ने कद् वाताय प्रतवसे शुभये । परिज्मने नासत्याय क्षे ब्रवः कदग्ने रुद्राय नृग्ने	६७१
कथा महे पुष्टिभराय पूष्णे कद् रुद्राय सुमखाय हविर्दे । कद् विष्णव उरुगायाय रेतो ब्रवः कदग्ने शरवे बृहत्यै	६७२

कथा शर्धाय मरुतामृताय कथा सुरे बृहते पृच्छयमानः । प्रति ब्रवोऽदितये तुराय साधा दिवो जातवेदश् चिकित्वान्	६७३
ऋतेन ऋतं नियतमीळ आ गोर् आमा सचा मधुमत् पक्वमग्ने । कृष्णा सती रुशता धासिनैषा जामर्येण पर्यसा पीपाय	६७४
ऋतेन हि ष्मा वृषभश् चिदुक्तः पुमाँ अग्निः पर्यसा पृष्व्येन । अस्पन्दमानो अचरद् वयोधा वृषा शुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः	६७५
ऋतेनाद्रिं व्यसन् भिदन्तः समाङ्गिरसो नवन्त गोभिः । शुनं नरः परि षदन्नुषासम् आविः स्वरभवज् जाते अग्नौ	६७६
ऋतेन देवीरमृता अमृक्ता अर्णोभिरापो मधुमद्गिरग्ने । वाजी न सर्गेषु प्रस्तुभानः प्र सदामित् सवितवे दधन्युः	६७७
मा कस्य यक्षं सदामिद्गुरो गा मा वेशस्य प्रमिनतो मापेः । मा भ्रातुरग्ने अनृजोऋणं वेर् मा सख्युर्दक्षं रिपोर्भुजेम	६७८
रक्षा णो अग्ने तव रक्षणेभी रारक्षणः सुमख प्रीणानः । प्रति ष्फुर वि रुज वीङ्गहो जहि रक्षो मर्हि चिद् वावृधानम्	६७९
एभिर्भव सुमना अग्ने अकैर् इमान् त्स्पृश मन्मभिः शूर वाजान् । उत ब्रह्माण्यङ्गिरो जुषस्व सं ते शस्तिर्देववाता जरेत	६८०
एता विश्वा विदुषे तुभ्यं वेधो नीथान्यग्ने निण्या वचांसि । निवर्चना कवये काव्यानि अशंसिषं मतिभिर्विप्र उक्थैः	६८१
॥ ८१ ॥ ( ऋ० ४ । ६ । १-११ )	
ऊर्ध्व ऊ षु णो अघ्वरस्य होतर् अग्ने तिष्ठ देवताता यजीयान् । त्वं हि विश्वमभ्यसि मन्म प्र वेधसंश् चित् तिरसि मनीषाम्	६८२
अमूरो होता न्यसादि विक्षु अग्निर्मन्द्रो विदथेषु प्रचेताः । ऊर्ध्व भानुं सवितेवाश्रेन् मेतेव धूमं स्तभायदुप द्याम्	६८३
यता सुजूर्णा रातिनी घृताचीं प्रदक्षिणिद् देवतातिमुराणः । उदु स्वरुर्नवजा नाक्रः पश्वो अनक्ति सुधितः सुमेकः	६८४

स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्रा ऊर्ध्वो अध्वर्युर्जुषाणो अस्थात् । पर्यग्निः पशुपान होता त्रिविष्टयेति प्रदिव उरणः	६८५
परि त्मना मितद्रुरेति होता अग्निर्मन्द्रो मधुवचा क्रतावा । द्रवन्त्यस्य वाजिनो न शोका भयन्ते विश्वा भुवना यदभ्राट्	६८६
भद्रा ते अग्ने स्वनीक संदृग् घोरस्य सतो विषुणस्य चारुः । न यत् ते शोचिस् तमसा वरन्त न ध्वस्मानस् तन्वीडे रेप आ धुः	६८७
न यस्य सातुर्जनितोरवारि न मातरापितरा नू चिदिष्टौ । अधा मित्रो न सुधितः पावको अग्निर्दीदाय मानुषीषु विश्वु	६८८
द्विर्य पञ्च जीजनन् त्संवसानाः स्वसारो अग्निं मानुषीषु विश्वु । उषर्बुधमथयोडे न दन्तै शुक्रं स्वासै परशुं न तिग्मम्	६८९
तव त्पे अग्ने हरितो घृतस्त्रा रोहितास क्रज्वञ्चः स्वञ्चः । अरुषासो वृषण क्रजुमुष्का आ देवतातिमहन्त दुस्माः	६९०
ये ह त्पे ते सहमाना अयासस् त्वेषासो अग्ने अर्चयश् चरन्ति । श्येनासो न दुवसनासो अर्थं तुविष्वणसो मारुतं न शर्धः	६९१
अकारि ब्रह्म समिधान तुभ्यं शंसात्युक्थं यजते व्यु धाः । होतारमग्निं मनुषो नि पैदुर् नमस्यन्त उशिजः शंसमायोः ।	६९२

॥ ८२ ॥ ( ऋ० ४ । ७ । १-११ ) त्रिष्टुप्, ६९३ जगती, ६९४-९८ अनुष्टुप् ।

अयमिह प्रथमो धायि धातुभिर् होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः । यमर्भवानो भृगवो विरुरुचुर् वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे	६९३
अग्ने कदा त आनुषग् भुवद् देवस्य चेतनम् । अधा हि त्वा जगृभिरे मर्तीसो विक्ष्नीड्यम्	६९४
क्रतावानं विचेतसं पश्यन्तो द्यामिव स्तर्भिः । विश्वेषामध्वराणां हस्कृत्तारं दमेदमे	६९५
आशुं दूतं विवस्वतो विश्वा यश् चर्षणीरभि । आ जभ्रुः केतुमायवो भृगवाणं विशेविशे	६९६



तमीं होतारमानुषक् चिकित्वांसं नि षेदिरे ।	
रुण्वं पावकशोचिषं यजिष्ठं सप्त धामभिः	६९७
तं शश्वतीषु मातृषु वन आ वीतमश्रितम् ।	
चित्रं सन्तं गुहां हितं सुवेदं कूचिदुर्थिनम्	६९८
ससस्य यद् वियुता सस्मिन्नूधन् क्रतस्य धामन् रणयन्त देवाः ।	
महो अग्निर्मसा रातहव्यो वेरध्वराय सदमिदृतावा	६९९
वेरध्वरस्य दूत्यानि विद्वान् उभे अन्ता रोदसी संचिकित्वान् ।	
दूत ईयसे प्रदिव उरणो विदुष्टरो दिव आरोधनानि	७००
कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाश् चरिष्ण्वर्चिर्वपुषामिदेकम् ।	
यदप्रवीता दधते ह गर्भं सद्यश् चिज् जातो भवसीदु दूतः	७०१
सद्यो जातस्य ददृशानमोजो यदस्य वातो अनुवार्ति शोचिः ।	
वृणक्ति तिग्मामतसेषु जिह्वां स्थिरा चिदन्ना दयते वि जम्भैः	७०२
तृषु यदन्ना तृषुणा ववक्षं तृषु दूतं कृणुते यद्दो अग्निः ।	
वातस्य मेळि सचते निजूर्वन् आशुं न वाजयते हिन्वे अर्वा	७०३

॥ ८३ ॥ ( ऋ० ४ । ८ । १-८ ) गायत्री ।

दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम् । यजिष्ठमृञ्जसे गिरा	७०४
स हि वेदा वसुधितिं मह्यं आरोधनं दिवः । स देवाँ एह वक्षति	७०५
म वेद देव आनमं देवाँ क्रतायते दमे । दाति प्रियाणि चिद् वसु	७०६
स होता सेदु दूत्यं चिकित्वाँ अन्तरीयते । विद्वोँ आरोधनं दिवः	७०७
ते स्याम ये अग्रये ददाशुर्हव्यदातिभिः । य ई पुष्यन्त इन्धते	७०८
ते राया ते सुवीर्यैः ससवासो वि शृण्विरे । ये अग्ना दधिरे दुवः	७०९
अस्मे रायो दिवेदिवे सं चरन्तु पुरुस्पृहः । अस्मे वाजास ईरताम्	७१०
स विप्रश् चर्षणीनां शर्वसा मानुषाणाम् । अति क्षिप्रेव विध्यति	७११

॥ ८४ ॥ ( ऋ० ४ । ९ । १-८ )

अग्ने मृळ मह्यं असि य ईमा देवयुं जनम् । इयेथ बर्हिरासदम्	७१२
स मानुषीषु दूळभो विक्षु प्रावीरमर्त्यः । दूतो विश्वेषां भुवत्	७१३

स सद्य परि णीयते	होता मन्द्रो दिविष्टिषु । उत पोता नि षीदति	७१४
उत मा अग्निरध्वर	उतो गृहपतिर्दमे । उत ब्रह्मा नि षीदति	७१५
वेषि हध्वरीयताम्	उपवक्ता जनानाम् । हव्या च मानुषाणाम्	७१६
वेषीद् वस्य दूत्यं	यस्य जुजोषो अध्वरम् । हव्यं मर्तस्य वोह्वे	७१७
अस्माकं जोष्यध्वरम्	अस्माकं यज्ञमङ्गिरः । अस्माकं शृणुधी हवम्	७१८
परि ते दूळभो रथो	अस्माँ अश्रोतु विश्वतः । येन रक्षसि दाशुषः	७१९

॥ ८५ ॥ ( ऋ० ४ । १० । १-८ )

पदपांक्तिः, (७२३, ७२५, ७२६ उष्णिग्वा,) ७२४ महापदपांक्तिः, ७२७ उष्णिक् ।

अग्ने तमद्य	अश्वं न स्तोमैः	ऋतुं न भद्रं	हृदिस्पृशम् । ऋध्यामां त ओह्वैः	७२०
अघ्ना हग्ने	ऋतोर्भद्रस्य	दक्षस्य साधोः । रथीर्ऋतस्य	बृहतो बभूथ	७२१
एभिर्नो अकैर्	भवा नो अवाङ्	स्वर्णं ज्योतिः । अग्ने विश्वेभिः	सुमना अनीकैः	७२२
आभिष्टे अद्य	गीर्भिर्गुणन्तो	अग्ने दाशेम । प्र ते दिवो न	स्तनयन्ति शुष्माः	७२३
तव स्वादिष्ट	अग्ने संदष्टिर्	इदा चिदहं इदा चिदक्तोः । श्रिये रुक्मो न	रोचत उपाके	७२४
घृतं न पूतं	तनूररेपाः	शुचि हिरण्यम् । तत् ते रुक्मो न	रोचत स्वधावः	७२५
कृतं चिद्धि ष्मा	सनेमि, द्वेषो	अग्रं इनोषि मर्तात् । इत्था यजमानादृतावः		७२६
शिवा नः सख्या	सन्तु, भ्रात्रा	अग्ने देवेषु युष्मे । सा नो नाभिः	सदने सस्मिन्नुधन्	७२७

॥ ८६ ॥ ( ऋ० ४ । ११ । १-६ ) त्रिष्टुप् ।

भद्रं ते अग्ने सहसिन्ननीकम्	उपाक आ रोचते सूर्यस्य ।	
रुशद् दृशे दृशे नक्तया चिद्	अरुक्षितं दृश आ रूपे अन्नम्	७२८
वि षाह्यग्ने गृणते मनीषां	खं वेपसा तुविजातु स्तवानः ।	
विश्वेभिर्यद् वावनः	शुक्र देवैस् तन्नो रास्व सुमहो भूरि मन्म	७२९
त्वदग्ने काव्या त्वन्मनीषास्	त्वदुक्था जायन्ते राध्यानि ।	
त्वदेति द्रविणं वीरपेशा	इत्थार्धिये दाशुषे मर्त्याय	७३०
त्वद् वाजी वाजंभरो विहाया	अभिष्टिकृज् जायते सत्यशुष्मः ।	
त्वद् रयिर्देवजूतो मयोभुस्	त्वदाशुर्जूजुवाँ अग्ने अर्वा	७३१
त्वामग्ने प्रथमं देवयन्तो	देवं मर्ती अमृत मन्द्रजिह्वम् ।	
द्वेषोयुतमा विवासन्ति धीभिर्	दमूनसं गृहपतिमग्रम्	७३२

आरे अस्मदमतिमारे अंह आरे विश्वां दुर्मतिं यन्निपासि ।  
दोषा शिवः सहसः सूनो अग्ने यं देव आ चित् सचसे स्वस्ति ७३३

॥ ८७ ॥ ( ऋ० ४ । १२ । १-६ )

यस् त्वामग्र इनधते यतस्रुकु त्रिस् ते अन्नं कृणवत् सस्मिन्नहन् ।  
स सु द्युमैरभ्यस्तु प्रसन्नत् तव ऋत्वा जातवेदश् चिकित्वान् ७३४

इध्मं यस् ते जभरच्छश्रमाणो महो अग्ने अनीकमा संपर्यन् ।  
स इधानः प्रति दोषामुषासं पुष्यन् रयिं संचते घ्नन्नमित्रान् ७३५

अग्निरीशे बृहतः क्षत्रियस्य अग्निर्वाजस्य परमस्य रायः ।  
दधाति रत्नं विधते यविष्ठो व्यानुषड् मर्त्याय स्वधावान् ७३६

यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा यविष्ठ अचित्तिभिश् चकृमा कश्चिदागः ।  
कृधी ष्वस्मां अदितेरनागान् व्येनांसि शिश्रथो विष्वगग्ने ७३७

महश् चिदश् एनसो अभीकं ऊर्वाद देवानामुत मर्त्यानाम् ।  
मा ते सखायः सदमिद् रिषाम यच्छा तोफाय तनयाय शं योः ७३८

यथा ह त्यद् वंसवो गौर्यं चित् पदि पिताममुञ्चता यजत्राः ।  
एवो ष्वस्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः ७३९

॥ ८८ ॥ ( ऋ० ४ । १३ । १-५ )

प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यद् विभातीनां सुमना रत्नधेयम् ।  
यातमश्विना सुकृतो दुरोणम् उत् सूर्यो ज्योतिषा देव एति ७४०

ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् द्रुप्सं दविध्वद् गविषो न सत्वा ।  
अनु व्रतं वरुणो यन्ति मित्रो यत् सूर्यं दिव्यारोहयन्ति ७४१

यं सीमकृण्वन् तमसे विपृचं ध्रुवक्षेमा अनवस्यन्तो अर्थम् ।  
तं सूर्यं हरितः सप्त यहीः स्पशं विश्वस्य जगतो वहन्ति ७४२

वहिष्ठेभिर्विहरन् यासि तन्तुम् अवव्ययन्नसितं देव वस्म ।  
दविध्वतो रश्मयः सूर्यस्य चमेवावाधुस् तमो अष्ववृन्तः ७४३

अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्कुत्तानोऽव पद्यते न ।  
कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृतः पाति नार्कम् ७४४

॥ ८९ ॥ ( ऋ० ४ । १४ । १-५ )

प्रत्यभिरुषसो जातवेदा अख्यद् देवो रोचमाना महोभिः । आ नासत्योरुगाया रथेन इमं यज्ञमुप नो यातमच्छं	७४५
ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेज् ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वन् । आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं वि सूर्यो रश्मिभिश् चैकितानः	७४६
आवहन्त्यरुणीज्योतिषागान् मही चित्रा रश्मिभिश् चैकिताना । प्रबोधयन्ती सुविताय देवी उषा ईयते सुयुजा रथेन	७४७
आ वां वहिष्ठा इह ते वहन्तु रथा अश्वास उपसो व्युष्टौ । इमे हि वां मधुपेयाय सोमा अस्मिन् यज्ञे वृषणा मादयेथाम्	७४८
अनायतो० (७४४)	

॥ ९० ॥ ( ऋ० ४ । १५ । १-६ ) गायत्री ।

अग्निहोता नो अध्वरे वाजी सन् परि णीयते । देवो देवेषु यज्ञियः	७४९
परि त्रिविष्टयध्वरं यात्यग्नी रथीरिव । आ देवेषु प्रयो दधत्	७५०
परि वार्जपतिः कविर् अग्निहव्यान्यक्रमीत् । दधद् रत्नानि दाशुषे	७५१
अयं यः सृज्ये पुरो दैववाते समिध्यते । द्युमाँ अमित्रदम्भनः	७५२
अस्य घा वरि ईवतो अग्नेरीशीत् मर्त्यैः । तिग्मजम्भस्य मीहृषः	७५३
तमर्वन्तं न सानसिम् अरुषं न दिवः शिशुम् । मर्मज्यन्ते दिवेदिवे	७५४

॥ ९१ ॥ ( ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलं, सूक्तं १, मन्त्राः १-१२ )

( ७५५-७६६ ) बुधगविष्टिरावात्रेयौ । त्रिष्टुप् ।

अबोधयग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम् । यह्ना इव प्र व्यामुजिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छं	७५५
अबोधि होता यजथाय देवान् ऊर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातरस्थात् । समिद्धस्य रुशददर्शि पाजो महान् देवस् तमसो निरमोचि	७५६
यदी गणस्य रशनामजीगः शुचिरङ्के शुचिभिर्गोभिरग्निः । आद् दक्षिणा युज्यते वाजयन्ती उत्तानामूर्ध्वे अधयज् जुहूर्भिः	७५७

अग्निमच्छा देवयतां मनांसि चक्षुषीव सूर्ये सं चरन्ति । यदीं सुवाते उपसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्रे अह्वाम्	७५८
जनिष्ट हि जेन्यो अग्रे अह्नां हितो हितेष्वरुषो वनेषु । दमेदमे सप्त रत्ना दधानो अग्निर्होता नि षसादा यजीयान्	७५९
अग्निर्होता न्यसीदद् यजीयान् उपस्थे मातुः सुरभा उं लोके । युवां कविः पुरुनिःष्ठ क्रतावा धर्ता कृष्टीनामुत मर्ष्य इद्रः	७६०
प्र णु त्वं विप्रमध्वरेषु साधुम् अग्निं होतारमीळते नमोभिः । आ यस् ततान रोदसी क्रतेन नित्यं मृजन्ति वाजिनै वृतेन	७६१
मार्जाल्यो मृज्यते स्वे दमूनाः कविप्रशस्तो अतिथिः शिवो नः । सहस्रशृङ्गो वृषभस् तदोजा विश्वां अग्रे सहसा प्रास्यन्यान्	७६२
प्र सद्यो अग्रे अत्येष्यन्यान् आविर्यस्मै चारुतमो बभूथ । ईकेन्यो वपुष्यो विभावा प्रियो विशामतिथिर्मानुषीणाम्	७६३
तुभ्यं भरन्ति क्षितयो यविष्ठ बलिमग्रे अन्तित् ओत दूरात् । आ भन्दिष्ठस्य सुमतिं चिकिद्धि बृहत् तै अग्रे महि शर्म भद्रम्	७६४
आद्य रथं भानुमो भानुमन्तम् अग्रे तिष्ठं यजतेभिः समन्तम् । विद्वान् पथीनामुर्वन्तरिक्षम् एह देवान् हविरद्याय वक्षि	७६५
अवोचाम कवये मेध्याय वचो वन्दारु वृषभाय वृष्णे । गविष्ठिरो नमसा स्तोममग्नौ दिवीव रुक्मसुरुव्यञ्जमश्रेत्	७६६

॥ ९२ ॥ ( क्र० ५।२। १-१२ )

( ७६७-७७८ ) कुमार आत्रेयः, वृशो वा जानः, उभो वा; २, ९ वृशो जानः । त्रिष्टुप् , १२ शकवरी ।

कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहां विभर्ति न ददाति पित्रे । अनीकमस्य न मिनजनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ	७६७
कमेतं त्वं युवते कुमारं पेपीं विभर्षिं महिषी जजान । पूर्वाहिं गर्भः शरदो ववर्ध अपश्यं जातं यदस्रत माता	७६८
हिरण्यदन्तं शुचिवर्णमारात् क्षेत्रादपश्यमायुधा मिमानम् । द्रदानो अस्मा अमृतं विपृक्तं किं मामनिन्द्राः कृणवन्ननुकथाः	७६९

क्षेत्रादपश्यं सनुतश् चरन्तं सुमद् युथं न पुरु शोभमानम् । न ता अगृभ्रन्नर्जनिष्ट हि षः पलिंक्कीरिद् युवतयो भवन्ति	७७०
के मे मर्यकं वि यवन्त गोभिर् न येषां गोपा अरणश् चिदासं । य ईं जगृध्ररव ते सृजन्तु आजति पश्च उप नश् चिकित्वान्	७७१
वसां राजानं वसति जनानाम् अरातयो नि दधुर्मर्त्येषु । ब्रह्माण्यत्रेरव तं सृजन्तु निन्दितारो निन्द्यासो भवन्तु	७७२
शुनश्चिच्छेपं निर्दितं सहस्राद् यूपादमुञ्चो अशमिष्ट हि षः । एवास्मदग्ने वि मुमुग्धि पाशान् होतश् चिकित्व इह तू निषद्यं	७७३
हृणीयमानो अप हि मदैयेः प्र मे देवानां व्रतपा उवाच । इन्द्रो विद्रां अनु हि त्वा चक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम्	७७४
वि ज्योतिषा बृहता भाल्यभिर् आविर्विश्वानि कृणुते महित्वा । प्रादेवीर्मायाः संहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे	७७५
उत स्वानासो दिवि षन्त्वग्नेस् तिग्मार्युधा रक्षसे हन्तवा उ । मदे चिदस्य प्र रुजन्ति भामा न वरन्ते परिबाधो अदेवीः	७७६
एतं ते स्तोमं तुविजात विप्रो रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् । यदीदग्ने प्रति त्वं देव हर्याः स्वर्वतीरप एना जयेम	७७७
तुविप्रीवो वृषभो वावृधानो अशत्र्वर्यः समजाति वेदः । इतीममग्निममृता अवोचन् बर्हिष्मते मनत्रे शर्म यंसद्बर्हिष्मते मनत्रे शर्म यंसत्	७७८

॥ ९३ ॥ ( ऋ० ५ । ३ । १-२, ४-१२ )

( ७७९-८१० ) वसुश्रुत आत्रेयः । ७७९ विराट्, ७८०-७८९ त्रिष्टुप् ।

त्वमग्ने वरुणो जायसे यत् त्वं मित्रो भवसि यत् समिद्धः । त्वे विश्वे सहसस्पुत्र देवास् त्वमिन्द्रो दाशुषे मर्त्याय	७७९
त्वमर्यमा भवसि यत् कनीनां नाम स्वधावन् गुह्यं बिभर्षि । अञ्जन्ति मित्रं सुधितं न गोभिर् यद् दंपती समनसा कृणोषि	७८०
तव श्रिया सुदृशो देव देवाः पुरु दधाना अमृतं सपन्त । होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर् दशस्यन्त उशिजः शंसमायोः	७८१

न त्वद्दोता पूर्वो अग्ने यजीयान्	न काच्यैः पुरो अस्ति स्वधावः ।	
विशश् च यस्या अतिथिर्भवासि	स यज्ञेन वनवद् देव मर्तान्	७८२
वयमग्ने वनुयाम त्वोता	वसुयवो हविषा बुध्यमानाः ।	
वयं समये विदथेष्वह्नां	वयं राया सहसस्पुत्र मर्तान्	७८३
यो न आगो अभ्येनो भगति	अधीदधमघशंसे दधात ।	
जही चिकित्वो अभिशस्तिमेताम्	अग्ने यो नो मर्चयति द्वयेन	७८४
त्वामस्या व्युषि देव पूर्वे	दूतं कृण्वाना अयजन्त हव्यैः ।	
संस्थे यदग्ने इयसे रयीणां	देवो मर्तैर्वसुभिरिध्यमानः	७८५
अवं स्पृधि पितरं योधि विद्वान्	पुत्रो यस् ते सहसः स्रन ऊहे ।	
कदा चिकित्वो अभि चक्षसे नो	अग्ने कदां ऋतचिद् यातयासे	७८६
भूरि नाम वन्दमानो दधाति	पिता वसो यदि तज् जोषयासे ।	
कुविद् देवस्य सहसा चक्रानः	सुम्नमग्निर्वनते वावृधानः	७८७
त्वमङ्ग जरितारं यविष्ट	विश्वान्यग्ने दुरितार्तिं पर्षि ।	
स्तेना अदृश्रन् रिपवो जनासो	अज्ञातकेता वृजिना अभूवन्	७८८
इमे यामासस् त्वद्रिगभूवन्	वसवे वा तदिदागो अवाचि ।	
नाहायमग्निर्भिशस्तये नो	न रीषते वावृधानः परा दात्	७८९

॥ ९४ ॥ ( ऋ० ५ । ४ । १-११ ) त्रिष्टुप् ।

त्वामग्ने वसुपतिं वसूनाम्	अभि प्र मन्दे अध्वरेषु राजन् ।	
त्वया वाजं वाजयन्तो जयेम	अभि प्याम पृत्सुतीर्मर्त्यानाम्	७९०
हव्यवाळग्निर्जरः पिता नो	विभ्रुर्विभावा सुदशीको अस्मे ।	
सुगार्हपत्याः समिषो दिदीहि	अस्मद्यक् सं मिमीहि श्रवांसि	७९१
विशां कविं विश्पतिं मानुषीणां	शुचिं पावकं घृतपृष्ठमग्निम् ।	
नि होतारं विश्वविदं दधिध्वे	स देवेषु वनते वार्याणि	७९२
जुषस्वाग्ने इळया सजोषा	यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य ।	
जुषस्व नः समिधं जातवेद	आ च देवान् हविरघाय वक्षि	७९३

जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुप याहि विद्वान् ।	
विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयतामा भरा भोजनानि	७९४
वधेन दस्युं प्र हि चातर्यस्व वर्यः कृण्वानस् तन्वेडे स्वायै ।	
पिपर्षि यत् सहसस्पुत्र देवान् त्सो अग्ने पाहि नृतम वाजै अस्मान्	७९५
वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम वयं हव्यैः पावक भद्रशोचे ।	
अस्मे रयि विश्ववारं समिन्व अस्मे विश्वानि द्रविणानि धेहि	७९६
अस्माकमग्ने अध्वरं जुषस्व सहसः सूनो त्रिषधस्थ हव्यम् ।	
वयं देवेषु सुकृतः स्याम शर्मणा नम् त्रिवरूथेन पाहि	७९७
विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुं न नावा दुरितातिं पर्षि ।	
अग्ने अत्रिवन्नमसा गृणानोडे अस्माकं बोध्यविता तनूनाम्	७९८
यस् त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानो अमर्त्य मर्त्यो जोहवीमि ।	
जातवेदो यशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्	८९९
यस्मै त्वं सुकृते जातवेद उ लोकमग्ने कृणवः स्योनम् ।	
अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयि नशते स्वस्ति	८००

॥ ९५ ॥ ( क्र० ५ । ६ । १-१० ) पङ्क्तिः ।

अग्निं तं मन्ये यो वसुर् अस्तं यं यन्ति धेनवः ।	
अस्तमर्वन्त आशवो अस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०१
सो अग्नियो वसुर्गुणे सं यमायन्ति धेनवः ।	
समर्वन्तो रघुद्रुवः सं सुजातासः सुरय इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०२
अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः ।	
अग्नी राये स्वाश्रुवं स प्रीतो याति वार्यम् इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०३
आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।	
यद्ग स्या ते पनीयसी समिद् दीदयति घवि इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०४
आ ते अग्न ऋचा हविः शुक्रस्य शोचिषस्पते ।	
सुश्वन्द्र दस्म विदपते हव्यवाट् तुभ्यं हूयत इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०५



प्रो त्ये अग्रयोऽग्निषु	विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।	
ते हिंन्विरे त इन्विरे	त इषण्यन्त्यानुषग्	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८०६
तव त्ये अग्ने अर्चयो	महिं ब्राधन्त वाजिनः ।	
ये पत्वभिः शफानां	ब्रजा भुरन्त गोनाम्	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८०७
नवां नो अग्र आ भेर	स्तोतृभ्यः सुक्षितीरिषः ।	
ते स्याम य आनुचुस्	त्वादृतासो दमेदम्	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८०८
उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो	दवीं श्रीणीष आसनि ।	
उतो न उत् पुपूर्या	उक्थेषु शवसस्पत	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८०९
एवाँ अग्निर्मजुर्यमूर्	गीर्भिर्यज्ञेभिरानुषक् ।	
दधदुस्मे सुवीर्यम्	उत त्यदाश्वश्व्यम्	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८१०

॥ ९६ ॥ ( ऋ० ५। ७। १-१० ) ( ८११-८२७ ) इष आत्रेयः । अनुष्टुप्, ८२० पङ्क्तिः ।

सखायः सं वः सम्यञ्चम्	इषं स्तोमं चाग्रये ।	
वर्षिष्ठाय क्षितीनाम्	ऊर्जो नप्त्रे सहस्वते	८११
कुत्रा चिद् यस्य समृतौ	रुणा नरो नृषदने ।	
अहन्तश् चिद् यमिन्धते	संजनयन्ति जन्तवः	८१२
सं यद्विषो वनामहे	सं हव्या मानुषाणाम् ।	
उत द्युमस्य शवस	ऋतस्य रश्मिमा ददे	८१३
सः स्मा कृणोति केतुमा	नक्तं चिद् दूर आ सते ।	
पावको यद् वनस्पतीन्	प्र स्मा मिनात्यजरः	८१४
अव स्म यस्य वेपणे	स्वेदं पथिषु जुहति ।	
अभीमह स्वजेन्यं	भूमा पृष्ठेव रुरुहुः	८१५
यं मर्त्यः पुरुस्पृहं	विदद् विश्वस्य धायसे ।	
प्र स्वादनं पितूनाम्	अस्तंताति चिदायवे	८१६
स हि ष्मा धन्वाक्षितं	दाता न दात्या पशुः ।	
हिरिश्मश्रुः शुचिदम्	ऋशुरनिभृष्टतविषिः	८१७

शुचिः ष्म यस्मा अत्रिवत् प्र स्वधितीव रीयते ।	
सुषूरस्रत माता क्राणा यदानशे भगम्	८१८
आ यस्ते सर्पिरासुते अग्ने शमस्ति धार्यसे ।	
ऐषु द्युम्नमुत श्रव आ चित्तं मर्त्येषु धाः	८१९
इति चिन् मन्युमग्निजुस् त्वादातमा पशुं ददे ।	
आदग्ने अपृणतो अग्निः सासह्याद् दस्यून् इषः सासह्याच्चून्	८२०

॥ ९७ ॥ ( ऋ० ५ । ८ । १-७ ) जगती ।

त्वामग्ने ऋतायवः समीधिरे प्रत्नं प्रत्नासं ऊतये सहस्कृत ।	
पुरुश्चन्द्रं यजतं विश्वधायसं दर्मूनसं गृहपतिं वरेण्यम्	८२१
त्वामग्ने अतिथिं पूव्यं विशः शोचिष्केशं गृहपतिं नि षेदिरे ।	
बृहत्केतुं पुरुरूपं धनस्पतं सुशर्माणं स्वर्वसं जरद्विषम्	८२२
त्वामग्ने मानुषीरीळते विशो होत्राविदं विविचि रत्नधातमम् ।	
गुहा सन्तं सुभग विश्वदर्शतं तुविष्णसं सुयजं घृतश्रियम्	८२३
त्वामग्ने धर्णासिं विश्वधा वयं गीर्भिर्गुणन्तो नमसोप सोदिम ।	
स नो जुषस्व समिधानो अङ्गिरो देवो मर्तस्य यशसा सुदीतिभिः	८२४
त्वामग्ने पुरुरूपो विशोविशे वयो दधासि प्रत्नथा पुरुष्टुत ।	
पुरुण्यन्ना सहसा वि राजसि त्विषिः सा ते तित्विषाणस्य नाधृषे	८२५
त्वामग्ने समिधानं यविष्य देवा दूतं चक्रिरे हव्यवाहनम् ।	
उरुज्यसं घृतयोनिमाहुतं त्वेषं चक्षुर्दधिरे चोदयन्मति	८२६
त्वामग्ने प्रदिव आहुतं घृतैः सुम्नायवः सुषमिधा समीधिरे ।	
स वावृधान ओषधीभिरुक्षितोऽग्ने अभि ज्रयांसि पार्थिवा वि तिष्ठसे	८२७

॥ ९८ ॥ ( ऋ० ५ । ९ । १-७ )

( ८२८-८४१ ) गय आत्रेयः । अनुष्टुप् । ८३२; ८३४ पङ्क्तिः ।

त्वामग्ने हविष्मन्तो देवं मर्तास ईळते ।	
मन्ये त्वा जातवेदसं स हव्या वक्ष्यानुषक्	८२८
अग्निर्होता दास्वतः क्षयस्य वृक्तबर्हिषः ।	
सं यज्ञासश् चरन्ति यं सं वाजासः श्रवस्यवः	८२९

उत स्म यं शिशुं यथा नवं जनिष्टारणी ।	
धर्तारं मानुषीणां विशामग्निं स्वध्वरम्	८३०
उत स्म दुर्गृभीयमे पुत्रो न ह्यार्याणाम् ।	
पुरू यो दग्धासि वना अग्ने पशुर्न यवसे	८३१
अधं स्म यस्यार्चयः सम्यक् संयन्ति धूमिनः ।	
यदीमहं त्रितो दिवि उप ध्मातेव धमति शिशीति ध्मातरीं यथा	८३२
तवाहमग्नं ऊतिभिर् मित्रस्य च प्रशस्तिभिः ।	
द्वेषोयुतो न दुरिता तुर्याम मर्त्यानाम्	८३३
तं नो अग्ने अभी नरो रयिं सहस्व आ भर ।	
स क्षेपयत् स पोषयद् भुवद् वाजस्य मातर्यं उतैधि पृत्सु नो वृधे	८३४

॥ ९९ ॥ ( ऋ० ५। १०। १-७ ) अनुष्टुप्. ८३८, ८४१ पङ्क्तिः ।

अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमग्निगो ।	
प्र नो राया परीणसा रत्सि वाजाय पन्थाम्	८३५
त्वं नो अग्ने अद्भुतं क्रत्वा दक्षस्य मंहना ।	
त्वे असुर्युमारुहत् क्राणा मित्रो न यज्ञियः	८३६
त्वं नो अग्न एषां गयं पुष्टिं च वर्धय ।	
ये स्तोमैभिः प्र सूरयो नरो मघान्यान्शुः	८३७
ये अग्ने चन्द्र ते गिरः शुम्भन्त्यश्वराधसः ।	
शुष्मैभिः शुष्मिणो नरो दिवश् चिद् येषां बृहत् सुक्तीतिर्बोधति त्मना	८३८
तव त्ये अग्ने अर्चयो भ्राजन्तो यन्ति धृष्णुया ।	
परिज्मानो न विद्युतः स्वानो रथो न वाजयुः	८३९
नू नो अग्न ऊतयै सबाधसश् च रातयै ।	
अस्माकासश् च सूरयो विश्वा आशास् तरीषणि	८४०
त्वं नो अग्ने अङ्गिरः स्तुतः स्तवान् आ भर ।	
होतर्विभ्वासहै रयिं स्तोतृभ्यः स्तवसे च न उतैधि पृत्सु नो वृधे	८४१

॥ १०० ॥ ( ऋ० ५ । ११ । १-६ ) ( ८४२-८६५ ) सुतंभर आत्रेय । जगती ।

जनस्य गोपा अजनिष्टु जागृविर् अग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे ।	
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद् वि भाति भरतेभ्यः शुचिः	८४२
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितम् अग्निं नरस् त्रिषधस्थे समीधिरे ।	
इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन्नि होता यजथाय सुक्रतुः	८४३
असंमृष्टो जायसे मात्रोः शुचिर् मन्द्रः क्विरुदतिष्ठो विवस्वतः ।	
घृतेन त्वावर्धयन्न आहुत धूमस् ते केतुरभवद् दिवि श्रितः	८४४
अग्निर्नो यज्ञमुप वेतु साधुया अग्निं नरो वि भरन्ते गृहेगृहे ।	
अग्निर्दूतो अभवद्भव्यवाहनो अग्निं वृणाना वृणते क्विक्रतुम्	८४५
तुभ्येदमग्ने मधुमत्तमं वचस् तुभ्यं मनीषा इयमस्तु शं हृदे ।	
त्वां गिरः सिन्धुमिवावनीर्महीर् आ पृणन्ति शवसा वर्धयन्ति च	८४६
त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा हितम् अन्वविन्दञ्छ्रियाणं वनेवने ।	
स जायसे मध्यमानः सहो महत् त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः	८४७

॥ १०१ ॥ ( ऋ० ५ । १२ । १-६ ) त्रिष्टुप् ।

प्राग्यै बृहते यज्ञियाय ऋतस्य वृष्णे असुराय मन्म ।	
घृतं न यज्ञ आस्येइ सुपृतं गिरं भरे वृषभाय प्रतीचीम्	८४८
ऋतं चिकित्वा ऋतमिच् चिकिद्धि ऋतस्य धारा अनु तृन्धि पूर्वीः ।	
नाहं यातुं सहसा न द्रयेन ऋतं संपाम्यरुषस्य वृष्णः	८४९
कया नो अग्न ऋतयन्नृतेन भुवो नवेदा उचथस्य नव्यः ।	
वेदा मे देव ऋतुपा ऋतूनां नाहं पतिं सनितुरस्य रायः	८५०
के ते अग्ने रिपवे बन्धनासः के पायवः सनिषन्त द्युमन्तः ।	
के धासिमग्ने अनृतस्य पान्ति क आसतो वर्चसः सन्ति गोपाः	८५१
सखायस् ते विषुणा अग्न एते शिवासः सन्तो अशिवा अभूवन् ।	
अधूर्षत स्वयमेते वचोभिर् ऋजूयते वृजिनानि ब्रुवन्तः	८५२
यस् ते अग्ने नर्मसा यज्ञमीडं ऋतं स पात्यरुषस्य वृष्णः ।	
तस्य क्षयः पृथुरा साधुरेतु प्रसर्षाणस्य नहुषस्य शेषः	८५३

॥ १०२ ॥ ( ऋ० ५ । १३ । १-६ ) गायत्री ।

अर्चन्तस् त्वा हवामहे	अर्चन्तः समिधीमहि	। अग्ने अर्चन्त ऊतये	८५४
अग्नेः स्तोमं मनामहे	सिध्रमघ दिविस्पृशः	। देवस्य द्रविणस्यवः	८५५
अग्निर्जुषत नो गिरो	होता यो मानुषेष्वा	। स यक्षद् दैव्यं जन्म	८५६
त्वमग्ने सप्रथा असि	जुष्टो होता वरेण्यः	। त्वया यज्ञं वि तन्वते	८५७
त्वामग्ने वाजसार्तमं	विप्रा वर्धन्ति सुष्टुतम्	। स नो रास्व सुवीर्यम्	८५८
अग्ने नेमिरराँ इव	देवाँस् त्वं परिभूरसि	। आ राधश् चित्रमृञ्जसे	८५९

॥ १०३ ॥ ( ऋ० ५ । १४ । १-६ )

अग्निं स्तोमेन बोधय	समिधानो अमर्त्यम् ।	हव्या देवेषु नो दधत्	८६०
तमध्वरेष्वीळते	देवं मर्ता अमर्त्यम् ।	यजिष्ठं मानुषे जने	८६१
तं हि शश्वन्त ईळते	स्रुचा देवं घृतश्रुता ।	अग्निं हव्याय वोह्वे	८६२
अग्निर्जातो अरोचत	घ्नन् दस्यूञ् ज्योतिषा तमः ।	अविन्दद् गा अपः स्वः	८६३
अग्निमीळेन्यं कवि	घृतपृष्ठं सपर्यत ।	वेतु मे शृण्वद्ववम्	८६४
अग्निं घृतेन वावृधुः	स्तोमेभिर्विश्वर्षणिम् ।	स्वाधीभिर्ष्वस्युभिः	८६५

॥ १०४ ॥ ( ऋ० ५ । १५ । १-५ ) ( ८६६-८७० ) धरुण आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

प्र वेधसे कवये वेद्याय	गिरं भरे यशसे पूर्याय ।		
घृतप्रसक्तो असुरः सुशेवो	रायो धर्ता धरुणो वस्वो अग्निः		८६६
ऋतेन ऋतं धरुणं धारयन्त	यज्ञस्य शाके परमे व्योमन् ।		
दिवो धर्मन् धरुणं सेदुषो नृञ्	जातैरजाताँ अभि ये ननक्षुः		८६७
अंहोयुवस् तन्वस् तन्वते वि	वयो महद् दुष्टरं पूर्याय ।		
स संवतो नवजातस् तुतुर्यात्	सिंहं न क्रुद्धमभितः परिं षुः		८६८
मातेव यद् भरसे पप्रथानो	जनंजनं धार्यसे चक्षसे च ।		
वयोवयो जरसे यद् दधानः	परि त्मना विष्टुरूपो जिगासि		८६९
वाजो नु ते शर्वसस्यात्वन्तम्	उरुं दोषं धरुणं देव रायः ।		
पदं न तायुर्गुहा दधानो	महो राये चित्तयन्नत्रिमस्यः		८७०

॥ १०५ ॥ ( ऋ० ५। १६। १-५ ) [८७१-८८०] पूरुरात्रेयः । अनुष्टुप्, ८७५ पङ्क्तिः ।

बृहद् वयो हि भानवे ऽर्चा देवायाम्नये ।  
यं मित्रं न प्रशस्तिभिर् मतीसो दधिरे पुरः ८७१  
स हि द्युभिर्जनानां होता दक्षस्य बाहोः ।  
वि हव्यमग्निर्गनुषग् भगो न वारमृण्वति ८७२  
अस्य स्तोमै मघोनः सख्ये वृद्धशोचिषः ।  
विश्वा यस्मिन् तुविष्वणि समये शुष्ममादुधुः ८७३  
अधा ह्यग्र एषां सुवीर्यस्य मंहना ।  
तमिद् यहं न रोदसी परि श्रवो बभूवतुः ८७४  
नू न एहि वार्यम् अग्ने गृणान आ भर ।  
ये वयं ये च सूरयः स्वस्ति धामहे सचा उतैधि पृत्सु नो वृधे ८७५

॥ १०६ ॥ ( ऋ० ५। १७। १-५ ) अनुष्टुप्, ८८० पङ्क्तिः ।

आ यज्ञैर्देव मर्त्ये इत्था तव्यांसमूतये ।  
अग्निं कृते स्वध्वरे पूरुरीळीतावसे ८७६  
अस्य हि स्वयंशस्तर आसा विधर्मन् मन्यसे ।  
तं नाकं चित्रशोचिषं मन्द्रं परो मनीषया ८७७  
अस्य वासा उ अर्चिषा य आयुक्त तुजा गिरा ।  
दिवो न यस्य रेतसा बृहच्छोचन्त्यर्चयः ८७८  
अस्य क्रत्वा विचेतसो दुस्मस्य वसु रथ आ ।  
अधा विश्वासु हव्यो ऽग्निर्विभु प्र शस्यते ८७९  
नू न इद्धि वार्यम् आसा संचन्त सूरयः ।  
ऊर्जो नपादुभिष्टये पाहि शग्धि स्वस्तय उतैधि पृत्सु नो वृधे ८८०

॥ १०७ ॥ ( ऋ० ५। १८। १-५ )

[ ८८१-८८५ ] द्वितो मृक्तवाहा आत्रेयः । अनुष्टुप्, ८८५ पङ्क्तिः ।

प्रातरग्निः पुरुप्रियो विशः स्तवेतातिथिः ।  
विश्वानि यो अमर्त्यो हव्या मर्तेषु रण्यति ८८१

द्विताय मृक्तवाहसे	स्वस्य दक्षस्य मंहना ।	
इन्दुं स धत्त आनुषक्	स्तोता चित् ते अमर्त्य	८८२
तं वो दीर्घायुशोचिषं	गिरा हुवे मघोनाम् ।	
अरिंष्टो येषां रथो	व्यश्वदावन् नीयते	८८३
चित्रा वा येषु दीधितिर्	आसन्नकथा पान्ति ये ।	
स्तीर्णा बर्हिः स्वर्णरे	श्रवांसि दधिरे परि	८८४
ये मे पञ्चाशतं ददुर्	अश्वानां सधस्तुति ।	
द्युमद्रे महि श्रवां	बृहत् कृधि मघोनां नृवदमृत नृणाम्	८८५

॥ १०८ ॥ ( ऋ० ५।१९।१-५ )

[ ८८६-८९० ] वविरात्रेयः । ८८६-८८७ गायत्री, ८८८-८८९ अनुष्टुप्, ८९० विराङ्गरूपा ।

अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते	प्र वव्रेर्वव्रिश् चिकेत । उपस्थे मातुर्वि चष्टे	८८६
जुहुरे वि चितयन्तो	ऽनिमिषं नृम्णं पान्ति । आ हृह्णां पुरं विविशुः	८८७
आ श्वेत्रेयस्य जन्तवो	द्युमद् वर्धन्त कृष्टयः ।	
निष्कप्रीवो बृहदुक्थ	एना मध्वा न वाजयुः	८८८
प्रियं दुग्धं न काम्यम्	अजामि जाम्योः सर्चा ।	
घर्मो न वाजजठरो	ऽदब्धः शश्वतो दभः	८८९
क्रीळन् नो रश्म आ भुवः	सं भस्मना वायुना वेविदानः ।	
ता अस्य सन् धूपजो न तिग्माः	सुसंशिता वक्ष्यो वक्षणेस्थाः	८९०

॥ १०९ ॥ ( ऋ० ५।२०।१-४ ) [ ८९१-८९४ ] प्रयस्वन्त आत्रेयाः । अनुष्टुप्, ८९४ पङ्क्तिः ।

यमग्ने वाजसातम्	त्वं चिन् मन्यसे रयिम् ।	
तं नो गीभिः श्रवाय्यै	देवत्रा पनया युजम्	८९१
ये अग्ने नेरयन्ति ते	वृद्धा उग्रस्य शवसः ।	
अप द्वेषो अप हरो	ऽन्यत्रतस्य सश्विरे	८९२
होतारं त्वा वृणीमहे	ऽग्ने दक्षस्य सार्धनम् ।	
यज्ञेषु पूर्व्य गिरा	प्रयस्वन्तो हवामहे	८९३
इत्था यथा त ऊतये	सहसावन् दिवेदिवे ।	
राय ऋताय सुक्रतो	गोभिः ग्याम सध्मादो वीरैः स्याम सध्मादः	८९४

॥ ११० ॥ ( ऋ० ५ । २१ । १-४ ) [ ८९५-८९८ ] सप्त आत्रेयः । अनुष्टुप्, ८९८ पङ्क्तिः ।

मनुष्वत् त्वा नि धीमहि मनुष्वत् समिधीमहि । अग्ने मनुष्वदङ्गिरो देवान् देवयते यज ८९५  
 त्वं हि मानुषे जने ऽग्ने सुप्रीत इध्यमे । सुचस् त्वा यन्त्यानुषक् सुजात सर्पिरासुते ८९६  
 त्वां विश्वे सजोषसो देवासो दूतमक्रत । सपर्यन्तस् त्वा कवे यज्ञेषु देवमीळते ८९७  
 देवं वो देवयज्यया अग्निमीळीत मर्त्यैः ।  
 समिद्धः शुक्र दीदिहि ऋतस्य योनिमासदः सप्तस्य योनिमासदः ८९८

॥ १११ ॥ ( ऋ० ५ । २२ । १-४ ) [ ८९९-९०२ ] विश्वसामा आत्रेयः । अनुष्टुप्, ९०२ पङ्क्तिः ।

प्र विश्वसामन्नत्रिवद् अर्ची पावकशोचिषे । यो अध्वरेष्वीड्यो होता मन्द्रतमो विशि ८९९  
 न्युग्नि जातवेदसं दधाता देवमृत्विजम् । प्र यज्ञ एत्वानुषग् अद्या देवव्यचस्तमः ९००  
 चिकित्विन् मनसं त्वा देवं मर्तीस ऊतये । वरेण्यस्य तेऽवस इयानासो अमन्महि ९०१  
 अग्ने चिकिद्धयुस्य न इदं वचः सहस्य ।  
 तं त्वा सुशिप्र दंपते स्तोमैर्वर्धन्त्यत्रयो गीभिः शुम्भन्त्यत्रयः ९०२

॥ ११२ ॥ ( ऋ० ५ । २३ । १-४ ) [ ९०३-९०६ ] द्युम्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अनुष्टुप्, ९०६ पङ्क्तिः ।

अग्ने सहन्तमा भर द्युम्नस्य प्रासहा रयिम् । विश्वा यश् चर्षणीरभि आऽसा वाजेषु मामहत् ९०३  
 तमग्ने पृतनाषहं रयिं सहस्व आ भर । त्वं हि सत्यो अद्भुतो दाता वाजस्य गोमतः ९०४  
 विश्वे हि त्वा सजोषसो जनासो वृक्तबर्हिषः । होतारं सन्नसु प्रियं व्यन्ति वार्यो पुरु ९०५  
 स हि ष्मा विश्वचर्षणिर् अभिमाति सहो दुधे ।  
 अग्र एषु क्षयेष्वा रेवन् नः शुक्र दीदिहि द्युमत् पावक दीदिहि ९०६

॥ ११३ ॥ ( ऋ० ५ । २४ । १-४ )

[ ९०७-९१० ] बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च क्रमेण गोपायना लौपायना वा । द्विपदा विगद ।

अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरूध्यः ९०७  
 वसुरग्निरवसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः ९०८  
 स नो बोधि श्रुधी हवम् उरुष्या णो अघायतः समस्मात् ९०९  
 तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ९१०

॥ ११४ ॥ ( ऋ० ५ । २५ । १-२ ) [ ९११-९२७ ] वसूयव आत्रेयाः । अनुष्टुप् ।

अच्छा वो अग्निवसे देवं गांसि स नो वसुः ।  
 रासत् पुत्र ऋषुणाम् ऋतावा पर्षति द्विषः ९११



स हि सत्यो यं पूर्वे चिद् देवासंश् चिद् यमीधिरे ।	
होतारं मन्द्रजिह्वमित् सुदीतिभिर्विभावसुम्	९१२
स नो धीती वरिष्ठया श्रेष्ठया च सुमत्या ।	
अग्ने रायो दिदीहि नः सुवृक्तिभिर्वरेण्य	९१३
अग्निदेवेषु राजति अग्निर्मतेष्वाविशन् ।	
अग्निर्नो हव्यवाहनो ऽग्निं धीभिः संपर्यत	९१४
अग्निस् तुविश्रवस्तमं तुविब्रह्माणमुत्तमम् ।	
अतूर्तं श्रावयत् पतिं पुत्रं ददाति दाशुषे	९१५
अग्निर्ददाति सत्पतिं सासाह यो युधा नृभिः ।	
अग्निरत्यं रघुष्पदं जेतारमपरराजितम्	९१६
यद् वाहिष्ठं तदग्रये बृहदर्चं विभावसो ।	
महिषीव त्वद् रायिस् त्वद् वाजा उदीरते	९१७
तव द्युमन्तो अर्चयो ग्रावेवोच्यते बृहत् ।	
उतो ते तन्यतुर्यथा स्वानो अर्तं त्मना दिवः	९१८
एवाँ अग्निं वसूयवः सहसानं ववन्दिम ।	
स नो विश्वा अति द्विषः पर्षन्नावेवं सुक्रतुः	९१९

॥ ११५ ॥ ( ऋ० ५ । २६ । १-८ ) गायत्री ।

अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया । आ देवान् वक्षि यक्षि च	९२०
तं त्वा घृतस्त्रवीमहे चित्रभानो स्वर्दशम् । देवाँ आ वीतर्ये वह	९२१
वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं समिधीमहि । अग्ने बृहन्तमध्वरे	९२२
अग्ने विश्वेभिरा गहि देवेभिर्हव्यदातये । होतारं त्वा वृणीमहे	९२३
यजमानाय सुन्वत आग्ने सुवीर्यं वह । देवैरा संत्सि बर्हिषि	९२४
समिधानः सहस्रजिद् अग्ने धर्माणि पुष्यसि । देवानां दूत उक्थ्यः	९२५
न्यग्निं जातवैदसं होत्रवाहं यविष्ठ्यम् । दधाता देवमृत्विजम्	९२६
प्र यज्ञ एत्वानुषग् अद्या देवव्यचस्तमः । स्तृणीत बर्हिरासदे	९२७

॥ ११६ ॥ ( ऋ० ५।२७।१-५ )

[ १२८-१३२ ] त्र्यरुणस्त्रैवृष्णः, त्रसदस्युः पौरुकुत्सः, अश्वमेधश्च भारताः राजानः ( अग्निर्भौम इति केचित् ) । त्रिष्टुप्, १३१-१३२ अनुष्टुप् ।

अनस्वन्ता सत्पतिर्मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः ।	
त्रैवृष्णो अग्ने दुशर्मिः सहस्रैर् वैश्वानर त्र्यरुणश् चिकेत	१२८
यो मे शता च विंशति च गोनां हरीं च युक्ता सुधुरा ददाति ।	
वैश्वानर सुष्टुतो वावृधानो ऽग्ने यच्छ त्र्यरुणाय शर्म	१२९
एवा ते अग्ने सुमतिं चक्रानो नविष्टाय नवमं त्रसदस्युः ।	
यो मे गिरस् तुविजातस्य पूर्वोर् युक्तेनाभि त्र्यरुणो गृणाति	१३०
यो म इति प्रवोचति अश्वमेधाय सूरये ।	
ददद्वा सनि यते ददन्मेधामृतायते	१३१
यस्य मा परुषाः शतम् उद्धर्षयन्त्युक्षणः ।	
अश्वमेधस्य दानाः सोमा इव त्र्याशिरः	१३२

॥ ११७ ॥ ( ऋ० ५।२८।१-६ )

[ १३३-१३८ ] विश्ववाग्नेयी । १३३, १३५ त्रिष्टुप्, १३४ जगती, १३६ अनुष्टुप्, १३७-१३८ गायत्री ।

समिद्धो अग्निर्दिवि शोचिरश्रेत् प्रत्यङ्मुपसमुर्विया वि भाति ।	
एति प्राचीं विश्ववारा नमोभिर् देवाँ ईळाना हविषां घृताचीं	१३३
समिध्यमानो अमृतस्य राजसि हविष् कृण्वन्तं सचसे स्वस्तये ।	
विश्वं स धत्ते द्रविणं यमिन्वसि आतिथ्यमग्ने नि च धत्त इत् पुरः	१३४
अग्ने शर्धे महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु ।	
सं जास्पत्यं सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि	१३५
समिद्धस्य प्रमहसो ऽग्ने वन्दे तव श्रियम् ।	
वृषभो द्युम्नवाँ असि समध्वरेष्विध्यसे	१३६
समिद्धो अग्न आहुत देवान् यक्षि स्वध्वर । त्वं हि हव्यवाळसि	१३७
आ जुहोता दुवस्यत अग्निं प्रयत्यध्वरे । वृणीध्वं हव्यवाहनम्	१३८

॥ ११८ ॥ ( ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलं, सूक्तं १, मन्त्राः १-१३ )

[ ९३९-१०९० ] भरद्वाजो वार्हस्पत्यः । त्रिण्डुप् ।

त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोता	अस्या धियो अर्भवो दस्म होता ।	
त्वं सीं वृषन्नकृणोर्दुष्टरीतु	सहो विश्वस्मै सहसे सहध्वै	९३९
अधा होता न्यसीदो यजीयान्	इळस्पद इषयन्नीज्यः सन् ।	
तं त्वा नरः प्रथमं देवयन्तो	महो राये चितयन्तो अनु ग्मन्	९४०
वृतेव यन्तं बहुभिर्वसव्यैः	त्वे रयिं जागृवांसो अनु ग्मन् ।	
रुशन्तमग्निं दर्शतं बृहन्तं	वपावन्तं विश्वहा दीदिवांसम्	९४१
पदं देवस्य नमसा व्यन्तः	श्रवस्यवः श्रवं आपन्नमृक्तम् ।	
नामानि चिद् दधिरे यज्ञियानि	भद्रायां ते रणयन्त संदृष्टौ	९४२
त्वां वर्धन्ति क्षितयः पृथिव्यां	त्वां राय उभयांसो जनानाम् ।	
त्वं त्राता तरणे चेत्यो भूः	पिता माता सदमिन्मानुषाणाम्	९४३
सपर्येण्यः स प्रियो विक्ष्वग्निर्	होता मन्द्रो नि षसादा यजीयान् ।	
तं त्वा वयं दम आ दीदिवांसम्	उप जुबाधो नमसा सदेम	९४४
तं त्वा वयं सुध्योः नव्यमग्ने	सुम्नायव ईमहे देवयन्तः ।	
त्वं विशो अनयो दीधानो	दिवो अग्ने बृहता रोचनेन	९४५
विशां क्विं विश्पतिं शश्वतीनां	नितोशनं वृषभं चर्षणीनाम् ।	
प्रेतीपणिमिषयन्तं पावकं	राजन्तमग्निं यजतं रयीणाम्	९४६
सो अग्र ईजे शशमे च मतो	यस्त आनद् समिधा हव्यदातिम् ।	
य आहुतिं परि वेदा नमोभिर्	विश्वेत् स वामा दधते त्वोतः	९४७
अस्मा उ ते महिं महे विधेम	नमोभिरग्ने समिधोत हव्यैः ।	
वेदीं स्रनो सहसो गीभिरुक्थैर्	आ ते भद्रायां सुमतौ यतेम	९४८
आ यस् ततन्थ रोदसी वि भासा	श्रवोभिश्च श्रवस्यैस् तरुवः ।	
बृहद्भिर्वाजैः स्थविरेभिरस्मे	रेवद्भिरग्ने वितरं वि भाहि	९४९
नृवद् वसो सदमिद्धैह्यस्मे	भूरिं तोकाय तनयाय पश्वः ।	
पूर्वीरिषो बृहतीरारेअघा	अस्मे भद्रा सौश्रवमानि सन्तु	९५०

पुरूष्यग्ने पुरुधा त्वाया वसूनि राजन् वसुता ते अश्याम् ।  
पुरूणि हि त्वे पुरुवार सन्ति अग्ने वसुं विधत्ते राजनि त्वे

९५१

॥ ११९ ॥ ( ऋ० ६ । २ । १-११ ) अनुष्टुप्, ९६२ शकरी ।

त्वं हि क्षैतवद् यशो ऽग्ने मित्रो न पत्यसे । त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि ९५२  
त्वां हि ष्मा चर्षणयो यज्ञेभिर्गीर्भिरीळते । त्वां वाजी यात्यवृको रजस्तूर्विश्वचर्षणिः ९५३  
सजोषस् त्वा दिवो नरो यज्ञस्य केतुमिन्धते । यद्द स्य मानुषो जनः सुम्नायुर्जुह्वे अध्वरे ९५४  
ऋधद् यस् ते सुदानवे धिया मर्तः शशमते । ऊती ष बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति ९५५  
समिधा यस् त आहुतिं निशितिं मर्त्यो न शत । वयावन्तं स पुष्यति क्षयमग्ने शतायुषम् ९५६  
त्वेषस् ते धूम ऋण्वति दिवि षच्छुक्र आततः । सरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे ९५७  
अधा हि विक्षीड्यो ऽसि प्रियो नो अतिथिः । रण्वः पुरीव जूर्यः सूनुर्न त्रययाय्यः ९५८  
ऋत्वा हि द्रोणे अज्यसे ऽग्ने वाजी न कृत्वयः । परिजमेव स्वधा गयो ऽत्यो न ह्यार्यः शिशुः ९५९  
त्वं त्या चिदच्युता अग्ने पशुर्न यवसे । धामा ह यत् ते अजर वना वृश्चन्ति शिर्कसः ९६०  
वेषि ह्वध्वरीयताम् अग्ने होता दमे विशां । समृधौ विशपते कृणु जुषस्व हव्यमङ्गिरः ९६१  
अच्छा नो मित्रमहो देव देवान् अग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः ।  
वीहि स्वस्ति सुक्षितिं दिवो नृन् द्विषो अहांसि दुरिता तरेम, ता तरेम, तवावसा तरेम ९६२

॥ १२० ॥ ( ऋ० ६ । ३ । १-८ ) त्रिष्टुप् ।

अग्ने स क्षेषदत्ता ऋतेजा उरु ज्योतिर्नशते देवयुष्टे ।  
यं त्वं मित्रेण वरुणः सजोषा देव पासि त्यजसा मर्तमंहः ९६३  
ईजे यज्ञेभिः शशमे शमीभिर् ऋधद्वारायाग्रये ददाश ।  
एवा चन तं यशसामजुष्टिर् नांहो मर्तं नशते न प्रदप्तिः ९६४  
सरो न यस्य दशतिररेपा भीमा यदेति शुचतस् त आ धीः ।  
हेषस्वतः शुरुधो नायमक्तोः कुत्रा चिद् रण्वो वसतिर्वनेजाः ९६५  
तिग्मं चिदेम महि वर्षो अस्य भसदश्चो न यमसान आसा ।  
विजेहमानः परशुर्न जिह्वां द्रविर्न द्रावयति दारु धक्षत् ९६६  
स इदस्तेव प्रति धादमिष्यञ्छिशीति तेजोऽयसो न धाराम् ।  
चित्रध्रजतिररतिर्यो अक्तोर् वेर्न द्रुषद्वा रघुपत्मजंहाः ९६७

स ई' रेभो न प्रति वस्त उस्त्राः	शोचिषा रारपीति मित्रमहाः ।	
नक्तं य ईमरुषो यो दिवा नृन्	अमर्त्यो अरुषो यो दिवा नृन्	९६८
दिवो न यस्य विधतो नवीनोद्	वृषा रुक्ष ओषधीषु नूनात् ।	
घृणा न यो ध्रजसा पत्मना यन्	ना रोदसी वसुना दं सुपत्नी	९६९
धायोभिर्वा यो युज्येभिरकैर्	विद्युन्न दविद्योत् स्वेभिः शुष्मैः ।	
शर्धो वा यो मरुतां ततक्ष	ऋभुर्न त्वेषो रभसानो अद्यौत्	९७०

॥ १२१ ॥ ( ऋ० ६।४।१-८ )

यथा होतर्मनुषो देवताता	यज्ञेभिः सूनो सहसो यजासि ।	
एवा नो अद्य समना समानान्	उशन्नम् उशतो यक्षि देवान्	९७१
स नो विभावा चक्षणिर्न वस्तोर्	अग्निर्वन्दारु वेद्यश्चनो धात् ।	
विश्वायुर्यो अमृतो मर्त्येषु	उषभुद्भूदतिथिर्जातवैदाः	९७२
द्यावो न यस्य पनयन्त्यभ्वं	भासांसि वस्ते सूर्यो न शुक्रः ।	
वि य इनोत्यजरः पावको	ऽश्रस्य चिच्छिन्नथत् पूर्याणि	९७३
वन्ना हि सूनो अस्यन्नसद्रा	चक्रे अभिर्जनुषाज्मानम् ।	
स त्वं न ऊर्जसन ऊर्ज धा	राजैव जेरवृके क्षेप्यन्तः	९७४
नितिक्रित यो वारणमन्नमत्ति	वायुर्न राष्ट्रयत्येत्यक्तून् ।	
तुर्याम यस् त आदिशामरातीर्	अत्यो न हुतः पततः परिहुत्	९७५
आ सूर्यो न भानुमद्भिरकैर्	अग्ने ततन्थ रोदसी वि भासा ।	
चित्रो नयत् परि तमांस्यक्तः	शोचिषा पत्मन्नौशिजो न दीर्यन्	९७६
त्वां हि मन्द्रतममर्कशोकैर्	ववृमहे मर्हि नः श्रोष्यन्ने ।	
इन्द्रं न त्वा शर्वसा देवता	वायुं पृणन्ति राधसा नृतमाः	९७७
नू नो अग्नेऽवृकेभिः स्वस्ति	वेषि रायः पथिभिः पर्येहः ।	
ता सूरिभ्यो गृणते रासि सुम्नं	मदेम शतहिमाः सुवीराः	९७८

॥ १२२ ॥ ( ऋ० ६।५।१-७ )

हुवे वः सूनुं सहसो युवानम्	अद्रोघवाचं मतिभिर्यविष्ठम् ।	
य इन्वति द्रविणानि प्रचेता	विश्ववाराणि पुरुवारो अधुक्	९७९

त्वे वसूनि पुर्वणीक होतर् द्रोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियासः ।	
क्षामैव विश्वा भुव्नानि यस्मिन् त्सं सौभगानि दधिरे पावके	१८०
त्वं विश्वु प्रदिवः सीद आसु क्रत्वा रथीरभवो वार्याणाम् ।	
अत इनोषि विधते चिकित्वो व्यानुषग् जातवेदो वसूनि	१८१
यो नः सनुत्यो अभिदासदग्ने यो अन्तरो मित्रमहो वनुष्यात् ।	
तमजरैर्भिर्वृषभिस् तव स्वैस् तपा तपिष्ठ तपसा तपस्वान्	१८२
यस् तै यज्ञेन समिधा य उक्थैर् अकैभिः सूनो सहसो ददाशत् ।	
स मर्त्येष्वमृत प्रचेता राया द्युम्नेन श्रवसा वि भाति	१८३
स तत् कृधीषितस् तूर्यमग्ने स्पृधो बाधस्व सहसा सहस्वान् ।	
यच्छस्यसे द्युभिरक्तो वचोभिस् तज् जुषस्व जरितुषोषि मन्म	१८४
अश्याम तं काममग्ने तवोती अश्याम रयि रयिवः सुवीरम् ।	
अश्याम वाजमभि वाजयन्तो अश्याम द्युम्नमजराजरं ते	१८५

॥ १२३ ॥ ( ऋ० ६ । ६ । १-७ )

प्र नव्यसा सहसः सूनुमच्छा यज्ञेन गातुमव इच्छमानः ।	
वृश्चद्रनं कृष्णयामं रुशन्तं वीती होतारं दिव्यं जिगाति	१८६
स श्रितानस् तन्यत् रौचनस्था अजरैर्भिर्नानदद्भिर्यविष्ठः ।	
यः पावकः पुरुतमः पुरूणि पृथून्यगिरनुयाति भर्वन्	१८७
वि ते विष्वग् वातजूतासो अग्ने भामासः शुचे शुच्यश् चरन्ति ।	
तुविम्रक्षासो दिव्या नवग्वा वना वनन्ति धृषता रुजन्तः	१८८
ये तै शुक्रासः शुचयः शुचिष्मः क्षां वपन्ति विषितासो अश्वाः ।	
अधं भ्रमस् त उर्विया वि भाति यातयमानो अधि सानु पृश्नेः	१८९
अधं जिह्वा पापतीति प्र वृष्णो गोषुयुधो नाशनिः सृजाना ।	
शूरस्येव प्रसितिः क्षातिरग्नेर् दुर्वर्तुर्भीमो दयते वनानि	१९०
आ भानुना पार्थिवानि ज्रयांसि महस् तोदस्य धृषता तंतन्थ ।	
स बाधस्वाप भया सहोभिः स्पृधो वनुष्यन् वनुषो नि जूर्व	१९१

स चित्रं चित्रं चितर्यन्तमस्मे चित्रक्षत्रं चित्रतमं वयोधाम् ।  
चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रं चन्द्राभिर्गृणते युवस्व १९२

॥ १२४ ॥ ( ऋ० ६ । १० । १-७ ) त्रिष्टुप्; ९९९ द्विपदा विराट् ।

पुरो वो मन्द्रं दिव्यं सुवृक्तिं प्रयति यज्ञे अग्निर्मध्वरे दधिध्वम् ।  
पुर उक्थेभिः स हि नो विभावा स्वध्वरा करति जातवेदाः १९३  
तमुं द्युमः पुर्वणीक होतर् अग्ने अग्निभिर्मनुष इधानः ।  
स्तोमं यमस्मै ममतेव शूषं घृतं न शुचिं मतयः पवन्ते १९४  
पीपाय स श्रवसा मर्त्येषु यो अग्रये ददाश विप्र उक्थैः ।  
चित्राभिस् तमूतिभिश् चित्रशोचिर् ब्रजस्य साता गोमतो दधाति १९५  
आ यः पप्रौ जायमान उर्वी दूरेदशा भासा कृष्णाध्वा ।  
अधं बहु चित् तम ऊर्म्यायास् तिरः शोचिषा ददशे पावकः १९६  
नू नंश् चित्रं पुरुवाजाभिरूती अग्ने रयिं मघवञ्चश् च धेहि ।  
ये राधसा श्रवसा चात्यन्यान् त्सुवीर्येभिश् चाभि सन्ति जनान् १९७  
इमं यज्ञं चनो धा अग्न उशन् यं त आसानो जुहुते हविष्मान् ।  
भरद्वाजेषु दधिषे सुवृक्तिम् अवीर्वाजस्य गध्यस्य सातौ १९८  
वि द्वेषांसीनुहि वर्धयेळां मदेम शतहिमाः सुवीराः १९९

॥ १२५ ॥ ( ऋ० ६ । ११ । १-६ ) त्रिष्टुप् ।

यजस्व होतरिषितो यजीयान् अग्ने बाधो मरुतां न प्रयुक्ति ।  
आ नो मित्रावरुणा नासत्या धावां होत्राय पृथिवी ववृत्याः १०००  
त्वं होता मन्द्रतमो नो अधुग् अन्तर्देवो विदथा मर्त्येषु ।  
पावकया जुह्वाङ् वह्निरासा ऽग्ने यजस्व तन्वं तव स्वाम् १००१  
घन्या चिद्धि त्वे धिषणा वष्टि प्र देवाञ् जन्म गृणते यजघ्यै ।  
वेपिष्ठो अङ्गिरसां यद्द विप्रो मधुं च्छन्दो भनन्ति रेभ इष्टौ १००२  
अर्दिद्युतत् स्वपाको विभावा ऽग्ने यजस्व रोदसी उरुची ।  
आयुं न यं नमसा रातह्वया अञ्जन्ति सुप्रयसं पञ्च जनाः १००३

वृञ्जे ह यन्नमसा बर्हिर्ग्नौ अयामि सुग् घृतवती सुवृक्तिः ।  
 अम्यक्षि सन्न सर्दने पृथिव्या अश्रायि यज्ञः सूर्ये न चक्षुः १००४  
 दशस्या नः पुर्वणीक होतर् देवभिरग्ने अग्निभिरिधानः ।  
 रायः सूनो सहसो वावसाना अति स्रसेम वृजनं नाहः १००५

॥ १२६ ॥ ( ऋ० ६ । १२ । १-६ )

मध्ये होता दुरोणे बर्हिषो राब् अग्निस् तोदस्य रोदसी यजध्वै ।  
 अयं स सूनुः सहस ऋतावा दूरात् सूर्यो न शोचिषा ततान १००६  
 आ यस्मिन् त्वे स्वपाके यजत्र यक्षद् राजन्त्सर्वततेव नु द्यौः ।  
 त्रिषधस्थस् ततरुषो न जंहो ह्वया मघानि मानुषा यजध्वै १००७  
 तेजिष्ठा यस्यारतिर्वनेराट् तोदो अध्वन्न वृधसानो अद्यौत् ।  
 अद्रोघो न द्रविता चैतति त्मन् अमर्त्योऽवर्त्र ओषधीषु १००८  
 सास्माकेभिरेतरी न शूषैर् अग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः ।  
 दृक्षो वन्वन् ऋत्वा नावा उस्तः पितेव जारयारि यज्ञैः १००९  
 अघं स्मास्य पनयन्ति भासो वृथा यत् तक्षदनुयार्ति पृथ्वीम् ।  
 सद्यो यः स्पन्द्रो विषितो धवीयान् ऋणो न तायुरति धन्वा राट् १०१०  
 स त्वं नो अर्वाभिदाया विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिधानः ।  
 वेषि रायो वि यासि दुच्छुना मदम शतहिमाः सुवीराः १०११

॥ १२७ ॥ ( ऋ० ६ । १३ । १-६ )

त्वद् विश्वा सुभग सौभगानि अग्ने वि यन्ति वनिनो न वयाः ।  
 श्रुष्टी रयिर्वाजो वृत्रतूर्ये दिवो वृष्टिरीड्यो रीतिरपाम् १०१२  
 त्वं भगो न आ हि रत्नमिषे परिज्मेव क्षयसि दुस्मर्वर्चाः ।  
 अग्ने मित्रो न बृहत ऋतस्य असि क्षत्ता वामस्य देव भूरैः १०१३  
 स सत्पतिः शर्वसा हन्ति वृत्रम् अग्ने विप्रो वि पणेर्भिति वाजम् ।  
 यं त्वं प्रचेत ऋतजात राया सजोषा नप्त्रापां हिनोषि १०१४  
 यस् ते सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर् यज्ञैर्मतो निशिति वेद्यानट् ।  
 विश्वं स देव प्रति वारमग्ने धत्ते धान्यं पत्यते वसव्यैः १०१५



ता नृभ्य आ सौश्रवसा सुवीरा अग्ने सूनो सहसः पुष्यसे धाः ।  
 कृणोषि यच्छवसा भूरिं पश्चो वयो वृकायारये जसुरये १०१६  
 वच्चा सूनो सहसो नो विहाया अग्ने तोकं तनयं वाजि नो दाः ।  
 विश्वाभिर्गीर्भिरभि पूर्तिमश्यां मदेम शतहिमाः सुवीराः १०१७

॥ १२८ ॥ ( ऋ० ६ । १४ । १-६ ) अनुष्टुप्, ९६२ शकरी ।

अग्रा यो मर्त्यो दुवो धियं जुजोष धीतिभिः । भसन्नु ष प्र पूर्व्य इषं वुरीतावसे १०१८  
 अग्निरिद्धि प्रचेता अग्निर्वेधस्तम ऋषिः । अग्निं होतारमीळते यज्ञेषु मनुषो विशः १०१९  
 नाना ह्यग्नेऽवसे स्पर्धन्ते रायो अर्यः । तूर्वन्तो दस्युमायवो व्रतैः सीक्षन्तो अव्रतम् १०२०  
 अग्निरप्सामृतीषहं वीरं ददाति सत्पतिम् । यस्य व्रसन्ति शवसः संचक्षि शत्रवो भिया १०२१  
 अग्निहिं विन्ननां निदो देवो मर्तमुरुष्यति । सहावा यस्यावृतो रयिर्वाजेष्ववृतः १०२२  
 अच्छा नो मित्रमहो० ( ९६२ )

॥ १२९ ॥ ( ऋ० ६ । १५ । १-१९ )

जगती, १०२५, १०३७ शकवरी, १०२८ अतिशकवरी, १०३९ अनुष्टुप्, १०४० बृहती;  
 १०३२-३६, १०३८, १०४१ त्रिष्टुप् ।

इममू षु वो अतिथिमुषवुधं विश्वासां विशां पतिमृज्जसे गिरा ।  
 वेतीद् दिवो जनुषा कच्चिदा शुचिर् ज्योक् चिदत्ति गर्भो यदच्युतम् १०२३  
 मित्रं न यं सुधितं भृगवो दुधुर् वनस्पतावीड्यमूर्ध्वशोचिषम् ।  
 स त्वं सुप्रीतो वीतहव्ये अद्भुत प्रशस्तिभिर्महयसे दिवेदिवे १०२४  
 स त्वं दक्षस्यावृको वृधो भूर्यः परस्य अन्तरस्य तरुषः ।  
 रायः सूनो सहसो मर्त्येष्वा छर्दिर्यच्छ वीतहव्याय सप्रथो भरद्वाजाय सप्रथः १०२५  
 द्युतानं वो अतिथिं स्वर्णरम् अग्निं होतारं मनुषः स्वध्वरम् ।  
 विप्रं न द्युक्षर्वचसं सुवृक्तिभिर् हव्यवाहमरतिं देवमृज्जसे १०२६  
 पावकया यश् चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच उषसो न भानुना ।  
 तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नूरण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः १०२७  
 अग्निमग्निं वः समिधां दुवस्यत प्रियंप्रियं वो अतिथिं गृणीषणिं ।  
 उषं वो गीर्भिरमृतै विवासत देवो देवेषु वनन्ते हि वार्यं देवो देवेषु वनन्ते हि नो दुवः १०२८

समिद्धमग्निं समिधा गिरा गृणे शुचिं पावकं पुरो अध्वरे ध्रुवम् ।	
विभ्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविं सुश्रैरीमहे जातवेदसम्	१०२९
त्वां दूतमग्ने अमृतं युगेयुगे हव्यवाहं दधिरे पायुमीड्यम् ।	
देवासंश् च मर्तासंश् च जागृवि विभुं विश्पतिं नमसा नि षेदिरे	१०३०
विभूषन्नग्र उभयाँ अनु व्रता दूतो देवानां रजसी समीयसे ।	
यत् तै धीतिं सुमतिमावृणीमहे ऽध स्मा नस् त्रिवरूथः शिवो भव	१०३१
तं सुप्रतीकं सुदृशं स्वञ्चम् अविद्वांसो विदुष्टरं सपेम ।	
स यक्षद् विश्वा वयुनानि विद्वान् प्र हव्यमग्निरमृतेषु वोचत्	१०३२
तमग्ने पास्युत तं पिपषिं यस् त आनट् कवये शूर धीतिम् ।	
यज्ञस्य वा निशितिं वोदितिं वा तमित् पृणक्षि शर्वसोत राया	१०३३
त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवघात् ।	
सं त्वा ध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री	१०३४
अग्निर्होता गृहपतिः स राजा विश्वा वेद जनिमा जातवेदाः ।	
देवानामुत यो मर्त्यानां यजिष्ठः स प्र यजतामृतावा	१०३५
अग्ने यदद्य विशो अध्वरस्य होतः पावकशोचे वेष्टं हि यज्वा ।	
ऋता यजासि महिना वि यद् भूर् हव्या बंह यविष्ठ या तै अद्य	१०३६
अभि प्रयांसि सुधितानि हि खयो, नि त्वा दधीत रोदसी यजध्वै ।	
अवां नो मघवन् वाजसातौ, अग्ने विश्वानि दुरिता तरेम, तातरेम तवावसा तरेम	१०३७
अग्ने विश्वेभिः स्वनीक देवैर् ऊर्णावन्तं प्रथमः सीदु योनिम् ।	
कुलायिनं घृतवन्तं सवित्रे यज्ञं नय यजमानाय साधु	१०३८
इममु त्यमथर्ववद् अग्निं मन्थन्ति वेधसः ।	
यमङ्कयन्तमानयन् अमूरं श्याव्याभ्यः	१०३९
जनिष्वा देववीतये सर्वताता स्वस्तये ।	
आ देवान् वक्ष्यमृताँ ऋतावृधो यज्ञं देवेषु पिस्पृशः	१०४०
वयमु त्वा गृहपते जनानाम् अग्ने अकर्म समिधा बृहन्तम् ।	
अस्थुरि नो गार्हपत्यानि सन्तु तिग्मेन नस् तेजसा सं शिशाधि	१०४१

॥ १३० ॥ ( ऋ० ६।१६।१-१८ )

गायत्री; १०४२, १०४७ वर्धमाना; १०६८।१०८८-१०८९ अनुष्टुप्; १०८७ त्रिष्टुप् ।

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः	।	देवेभिर्मानुषे जने	१०४२
स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः	।	आ देवान् वक्षि यक्षि च	१०४३
वेत्था हि वैधो अध्वनः पथश् च देवाञ्जसा	।	अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो	१०४४
त्वामीळे अध द्विता भरतो वाजिभिः शुनम्	।	ईजे यज्ञेषु यज्ञियम्	१०४५
त्वमिमा वार्यां पुरु दिवोदासाय सुन्वते	।	भरद्वाजाय दाशुषे	१०४६
त्वं दूतो अमर्त्य आ ब्रह्मा दैव्यं जनम्	।	शृण्वन् विप्रस्य सुष्टुतिम्	१०४७
त्वमग्ने स्वाध्योऽर्धे मर्तासो देववीतये	।	यज्ञेषु देवमीळते	१०४८
तव प्र यक्षि संदशम् उत क्रतुं सुदानवः	।	विश्वे जुषन्त कामिनः	१०४९
त्वं होता मनुर्हितो वहिरासा विदुष्टरः	।	अग्ने यक्षि दिवो विशः	१०५०
अग्र आ याहि वीतर्ये गृणानो हव्यदातये	।	नि होता सत्सि बर्हिषि	१०५१
तं त्वां समिद्धिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि	।	बृहच्छोचा यविष्ठय	१०५२
स नः पृथु श्रवाय्यम् अच्छा देव विवाससि	।	बृहदग्ने सुवीर्यम्	१०५३
त्वमग्ने पुष्करादधि अथर्वा निरमन्थत	।	मूर्धो विश्वस्य वाघतः	१०५४
तमु त्वा दध्यङ्गृषिः पुत्र ईधे अथर्वणः	।	वृत्रहणं पुरंदरम्	१०५५
तमु त्वा पाध्यो वृषा समीधे दस्युहन्तमम्	।	धनंजयं रणेरणे	१०५६
एह्यु षु ब्रवाणि ते ऽग्र इत्थेतरा गिरः	।	एभिर्विर्धास इन्दुभिः	१०५७
यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम्	।	तत्रा सदः कृणवसे	१०५८
नहि ते पृतमक्षिपद् शुर्वन्नेमानां वसो	।	अथा दुवो वनवसे	१०५९
आग्निरंगामि भारतो वृत्रहा पुरुचेतनः	।	दिवोदासस्य सत्पतिः	१०६०
स हि विश्वाति पार्थिवा रयिं दाशन् महित्वना	।	वन्वन्नवातो अस्तृतः	१०६१
स प्रल्वन्नवीयसा अग्ने द्युम्नेन संयता	।	बृहत् तंतन्थ भानुना	१०६२
प्र वः सखायो अग्रये स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया	।	अर्चं गायं च वेधसे	१०६३
स हि यो मानुषा युगा सीदद्भोता क्विक्रतुः	।	दूतश् च हव्यवाहनः	१०६४
ता राजाना शुचित्रता आदित्यान् मारुतं गणम्	।	वसो यक्षीह रोदसी	१०६५
वस्वीं ते अग्ने संदष्टिर् इष्यते मर्त्याय	।	ऊर्जो नपादुमृतस्य	१०६६
क्त्वा दा अस्तु श्रेष्ठो ऽद्य त्वा वन्वन्तसुरेकणाः ।	।	मर्तं आनाश सुवृक्षितम्	१०६७

ते तै अग्ने त्वोता इष्यन्तो विश्वमायुः ।	
तरन्तो अर्यो अरातीर् वन्वन्तो अर्यो अरातीः	१०६८
अग्निस् तिग्मेन शोचिषा यासद् विश्वं न्यत्रिणम् ।	अग्निर्नो वनते रयिम् १०६९
सुवीरं रयिमा भर जातवेदो विचर्षणे ।	जहि रक्षांसि सुक्रतो १०७०
त्वं नः पाहंहसो जातवेदो अघायतः ।	रक्षा णो ब्रह्मणस् कवे १०७१
यो नो अग्ने दुरेव आ मर्तो वधाय दाशति ।	तस्मान्नः पाहंहसः १०७२
त्वं तं देव जिह्या परि बाधस्व दुष्कृतम् ।	मर्तो यो नो जिघांसति १०७३
भरद्वाजाय सप्रथः शर्म यच्छ सहन्त्य ।	अग्ने वरेण्यं वसु १०७४
अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया ।	समिद्धः शुक्र आहुतः १०७५
गर्भे मातुः पितृष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे ।	सीदन्नृतस्य योनिमा १०७६
ब्रह्म प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणे ।	अग्ने यद् दीदयद् दिवि १०७७
उप त्वा रण्वसंहशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत ।	अग्ने ससृज्महे गिरः १०७८
उप च्छायामिव घृणेर् अगन्म शर्म ते वयम् ।	अग्ने हिरण्यसंहशः १०७९
य उग्र इव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वंसंगः ।	अग्ने पुरो रुरोजिथ १०८०
आ यं हस्ते न खादिनं शिशुं जातं न बिभ्रति ।	विशामग्निं स्वध्वरं १०८१
प्र देवं देववीतये भरता वसुवित्तमम् ।	आ स्वे योनौ नि षीदत १०८२
आ जातं जातवेदसि प्रियं शिशीतार्तिथिम् ।	स्योन आ गृहपतिम् १०८३
अग्ने युक्ष्वा हि ये तव अश्वासो देव साधवः ।	अरं वहन्ति मन्यवे १०८४
अच्छा नो याह्या वह अभि प्रयांसि वीतये ।	आ देवान् त्सोर्मपीतये १०८५
उदग्ने भारत द्युमद् अर्जसेण दविद्युतत् ।	शोचा वि भाह्यजर १०८६
वीती यो देवं मर्तो दुवस्येद् अग्निमीळीताध्वरे हविष्मान् ।	
होतारं सत्ययज्ञं रोदस्योर् उक्तानहस्तो नमसा विवासेत्	१०८७
आ तै अग्न ऋचा हविर् हृदा तष्टं भरामसि ।	ते तै भवन्तूक्षणं ऋषभासो वशा उत १०८८
अग्निं देवासो अग्रियम् इन्धते वृत्रहन्तमम् ।	येना वसून्यामृता तृह्णा रक्षांसि वाजिना १०८९

॥ १३१ ॥ ( ऋ० ६। ४८। १-१० )

( १०९०-१०९९ ) शंयुर्बार्हस्पत्यः ( तृणपाणिः ) । प्रगाथः = १०९०, १०९२ बृहती; १०९१, १०९३ सतोबृहती, १०९४ बृहती, १०९५ महा सतोबृहती, १०९६ महा बृहती, १०९७ महा सतो-बृहती, १०९८ बृहती, १०९९ सतोबृहती ।

यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।  
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् १०९०

ऊर्जो नपातं स हिनायमस्मयुर् दाशेम हव्यदातये ।  
भुवद् वाजेष्वविता भुवद् वृध उत त्राता तनूनाम् १०९१

वृषा ह्यग्ने अजरो महान् विभास्यर्चिषा ।  
अर्जन्नेण शोचिषा शोशुचच् छुचे सुदीतिभिः सु दीदिहि १०९२  
महो देवान् यजसि यक्ष्यानुषक् तव क्रत्वोत दुंसना ।  
अर्वाचः सीं कृणुह्यग्नेऽवसे रास्व वाजोत वैस्व १०९३

यमापो अद्रयो वना गर्भमृतस्य पिप्रति ।  
सहसा यो मथितो जायते नृभिः पृथिव्या अधि सानवि १०९४  
आ यः पप्रौ भानुना रोदसी उभे धूमेन धावते दिवि ।  
तिरस् तमो ददश ऊर्म्यास्वा श्यावास्वरूपो वृषा श्यावा अरुषो वृषा १०९५

बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा ।  
भरद्वाजे समिधानो यविष्य रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत् पावक दीदिहि १०९६  
विश्वासां गृहपतिर्विशामसि त्वमग्ने मानुषीणाम् ।  
शतं पुर्भिर्यविष्ठ पाह्वंसः समेद्वारं शतं हिमाः स्तोतृभ्यो ये च ददति १०९७

त्वं नश् चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय ।  
अस्य रायस् त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः १०९८  
पर्षिं तोकं तनयं पृत्भिष्टम् अदब्धैरप्रयुत्वभिः ।  
अग्ने हेळांसि दैव्या युयोधि नो ऽदेवानि ह्वरांसि च १०९९

॥ १३२ ॥ ( ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलं, सूक्तं १, मन्त्राः १-२५ )  
[ ११००-१२१३ ] वासिष्ठो मैत्रावरुणिः । विराट्, १११८-२४ त्रिष्टुप् ।

अग्निं नरो दीधितिभिरण्योर्	हस्तंच्युती जनयन्त प्रशस्तम् ।	
दूरेदृशं गृहपतिमथर्युम्		११००
तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्	त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश् चित् ।	
दुक्षायो यो दम आस नित्यः		११०१
प्रेद्धं अग्ने दीदिहि पुरो नो	ऽजस्रया सूर्म्या यविष्ठ ।	
त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः		११०२
प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो वरं निः	सुवीरांसः शोशुचन्त द्युमन्तः ।	
यत्रा नरः समासते सुजाताः		११०३
दा नो अग्ने धिया रयिं सुवीरं	स्वपत्यं सहस्य प्रशस्तम् ।	
न यं यावा तरति यातुमावान्		११०४
उप यमेति युवतिः सुदक्षं	दोषा वस्तोर्हविष्मती घृताचीं ।	
उप स्वैनमरमतिर्वसूयुः		११०५
विश्वा अग्नेऽपं दहारातीर्	येभिस् तपोभिरदहो जरूथम् ।	
प्र निस्वरं चातयस्वामीवाम्		११०६
आ यस् तै अग्न इधते अनीकं	वसिष्ठ शुक्र दीदिवः पार्वक ।	
उतो न एभिः स्तवथैरिह स्याः		११०७
वि ये तै अग्ने भेजिरे अनीकं	मर्ता नरः पित्र्यांसः पुरुत्रा ।	
उतो न एभिः सुमना इह स्याः		११०८
इमे नरो वृत्रहत्येषु शूरा	विश्वा अदेवीरग्नि संन्तु मायाः ।	
ये मे धियं पनयन्त प्रशस्ताम्		११०९
मा शूने अग्ने नि षदाम नृणां	माशेषसोऽवीरंता परि त्वा ।	
प्रजावतीषु दुर्यासु दुर्य		१११०
यमश्वी नित्यमुपयाति यज्ञं	प्रजावन्तं स्वपत्यं क्षयं नः ।	
स्वजन्मना शेषसा वावृथानम्		११११

पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात् त्वा युजा पृतनायूरभि ष्याम्	पाहि धूर्तेरररुपो अघायोः ।	१११२
सेदग्निरग्नीरत्यस्त्वन्यान् सहस्रपाथा अक्षरा समेति	यत्र वाजी तनयो वीळुपाणिः ।	१११३
सेदग्नियो वनुष्यतो निपाति सुजातासः परि चरन्ति वीराः	समेद्धारमंहस उरुष्यात् ।	१११४
अयं सो अग्निराहुतः पुरुत्रा परि यमेत्यध्वरेषु होता	यमीशानः समिदिन्धे हविष्मान् ।	१११५
त्वे अग्र आहवनानि भूरि उभा कृण्वन्तो बहू मियेधे	ईशानास आ जुहुयाम नित्या ।	१११६
इमो अग्ने वीततमानि हव्या प्रति न ई सुरभीणि व्यन्तु	ऽजसो वाक्षि देवतातिमच्छ ।	१११७
मा नो अग्नेऽवीरिते परा दा मा नः क्षुधे मा रक्षस ऋतावो	दुर्वाससेऽमृतये मा नो अस्यै । मा नो दमे मा वन आ जुह्वर्थाः	१११८
नू मे ब्रह्माण्यग्र उच्छशाधि रातौ स्यामोभयास आ ते	त्वं देव मघवञ्चः सुपूदः । यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	१११९
त्वमग्ने सुहवो रणवसैदक् मा त्वे सचा तनये नित्य आ धड्	सुदीती स्रनो सहसो दिदीहि । मा वीरो अस्मन्नयो वि दासीत्	११२०
मा नो अग्ने दुर्भृतये सचा मा ते अस्मान् दुर्मृतयो भूमाच्चिद्	एषु देवेद्वेष्वग्निषु प्र वीचः । देवस्य स्रनो सहसो नशन्त	११२१
स मर्तो अग्ने स्वनीक रेवान् स देवता वसुवनि दधाति	अमर्त्ये य आजुहोति हव्यम् । यं सूरिरथी पृच्छमान एति	११२२
महो नो अग्ने सुवितस्य विद्वान् येन वयं सहसावन् मदेम	रयि सूरिभ्य आ वहा बृहन्तम् । अर्विक्षितास आयुषा सुवीराः	११२३
नू मे ब्रह्माण्यग्र० (१११९)		

॥ १३३ ॥ ( ऋ० ७ । ३ । १-१० ) त्रिष्टुप् ।

अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम् । यो मर्त्येषु निधुर्विर्कृतावा तपुर्मूर्धा घृताक्षः पावकः	११२४
प्रोधदश्वो न यवसेऽविष्यन् यदा महः संवरणाद् व्यस्थात् । आदस्य वातो अनु वाति शोचिर् अर्ध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति	११२५
उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णो ऽग्ने चरन्त्यजरा इधानाः । अच्छा घामरूपो धूम एति सं दूतो अग्न ईर्यसे हि देवान्	११२६
वि यस्य ते पृथिव्यां पाजो अश्रेत् तृषु यदन्ना समवृक्त जम्भैः । सेनेव सृष्टा प्रसितिष्ट एति यवं न दस जुह्वा विवेक्षि	११२७
तमिद् दोषा तमुषसि यविष्ठम् अग्निमत्यं न मर्जयन्त नरः । निशिशांना अतिथिमस्य योनौ दीदार्य शोचिराहुतस्य वृष्णः	११२८
सुसुदृक् ते स्वनीक प्रतीकं वि यद् रुक्मो न रोचस उपाके । दिवो न ते तन्यतुरैति शुष्मश् चित्रो न सूरः प्रति चक्षि भानुम्	११२९
यथा वः स्वाहाग्नये दाशेम परीळाभिर्धृतवद्भिश् च हव्यैः । तेभिर्नो अग्ने अमितैर्महोभिः शतं पुर्भिरायसीभिर्नि पाहि	११३०
या वा ते सन्ति दाशुषे अधृष्टा गिरो वा याभिर्नृवतीरुष्याः । ताभिर्नः सूनो सहसो नि पाहि सत् सूरीञ् जरितृञ् जातवेदः	११३१
निर्यत् पूतेव स्वधितिः शुचिर्गात् स्वया कृपा तन्वाङ् रोचमानः । आ यो मात्रोरुशेन्यो जनिष्ट देवयज्याय सुकृतुः पावकः	११३२
एता नो अग्ने सौभगा दिदीहि अपि क्रतुं सुचेतसं वतेम । विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	११३३

॥ १३४ ॥ ( ऋ० ७ । ४ । १-१० )

प्र वः शुक्राय भानवे भरध्वं हव्यं मतिं चाग्नये सुपूतम् । यो दैव्यानि मानुषा जनुषि अन्तर्विश्वानि विन्नना जिगाति	११३४
स गृत्सो अग्निस् तरुणश् चिदस्तु यतो यविष्ठो अजनिष्ट मातुः । सं यो वना युवते शुचिदन् भूरि चिदन्ना समिदत्ति सद्यः	११३५



अस्य देवस्य संसद्यनीके यं मर्तीसः श्येतं जगृभ्रे । नि यो गृभं पौरुषेयीमुवोचं दुरोकमग्निरायवे शुशोच	११३६
अयं क्विरकविषु प्रचेता मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि । स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम	११३७
आ यो योनिं देवकृतं ससाद् ऋत्वा ह्यग्निर्मृताँ अतारीत् । तमोषधीश् च वनिनश् च गर्भं भूमिश् च विश्वधायसं विभर्ति	११३८
ईशे ह्यग्निर्मृतस्य भूरेर् ईशे रायः सुवीर्यस्य दातोः । मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा माप्सवः परि षदाम मादुवः	११३९
परिषद्यं ह्यरणस्य रेक्णो नित्यस्य रायः पतयः स्याम । न शेषो अग्रे अन्यजातमस्ति अचेतानस्य मा पथो वि दुक्षः	११४०
नहि ग्रभायारणः सुशेवो ऽन्योदर्यो मनसा मन्तवा उ । अर्धा चिदोकः पुनरित् स एति आ नो वाज्यभीषाळेतु नव्यः	११४१
त्वमग्ने वनुष्यतो० ( १०३४ ) एता नो अग्ने० ( ११३४ )	

॥ १३५ ॥ ( ऋ० ७।७।१-७ )

प्र वो देवं चित् सहसानमग्निम् अश्वं न वाजिनं हिषे नमोभिः । भवा नो दूतो अध्वरस्य विद्वान् त्मना देवेषु विविदे मितद्रुः	११४२
आ याह्यग्ने पथ्याइ अनु स्वा मन्द्रो देवानां सख्यं जुषाणः । आ सानु शुष्मैर्नदर्यन् पृथिव्या जम्भेभिर्विश्वमुशधग् वनानि	११४३
प्राचीनो यज्ञः सुधितं हि बर्हिः प्रीणीते अग्निरीळितो न होता । आ मातरा विश्ववारि हुवानो यतो यविष्ठ जज्ञिषे सुशेवः	११४४
सद्यो अध्वरे रथिरं जनन्त मानुषासो विचेतसो य एषाम् । विशामंधायि विश्वर्तिदुरोणेइ ऽग्निमन्द्रो मधुवचा ऋतावा	११४५
असादि वृतो वह्निराजगन्वान् अग्निर्ब्रह्मा नृषदने विधर्ता । द्यौश् च यं पृथिवी वावृधाते आ यं होता यजति विश्ववारम्	११४६

एते द्युन्नेभिर्विश्वमातिरन्त मन्त्रं ये वारं नर्या अतक्षन् ।  
 प्र ये विशस् तिरन्त श्रोषमाणा आ ये मे अस्य दीर्घयन्तस्य ११४७  
 नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम् ।  
 इषं स्तोतृभ्यो मघवञ्च आनड् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११४८

॥ १३६ ॥ ( ऋ० ७।८।१-७ )

इन्धे राजा समर्यो नमोभिर् यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन ।  
 नरो हव्येभिरीकते सबाध आग्निरग्र उषसामशोचि ११५९  
 अयमु ष्य सुमहाँ अवेदि होता मन्द्रो मनुषो यद्वा अग्निः ।  
 वि भा अकः ससृजानः पृथिव्यां कृष्णपविरोषधीभिर्ववक्षे ११५०  
 कया नो अग्ने वि वसः सुवृक्ति काशु स्वधामृणवः शस्यमानः ।  
 कदा भवेम पतयः सुदत्र रायो वन्तारो दुष्टरस्य साधोः ११५१  
 प्रप्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे वि यत् सूर्यो न रोचते बृहद्भाः ।  
 अभि यः पूरुं पृतनासु तस्थौ द्युतानो दैव्यो अतिथिः शुशोच ११५२  
 असन्नित् त्वे आहव्नानि भूरि भुवो विश्वेभिः सुमना अनीकैः ।  
 स्तुतश् चिदग्ने शृण्विषे गृणानः स्वयं वर्धस्व तन्वं सुजात ११५३  
 इदं वचः शतसाः संसहस्रम् उदग्रये जनिषीष्ट द्विवर्हाः ।  
 शं यत् स्तोतृभ्य आपये भवति द्युमदमीवचातनं रक्षोहा ११५४  
 नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा० ( ११५० )

॥ १३७ ॥ ( ऋ० ७।९।१-६ )

अवोधि जार उषसामुपस्थाद् होता मन्द्रः कवितमः पावकः ।  
 दधाति केतुमुभयस्य जन्तोर् हव्या देवेषु द्रविणं सुकृत्सुं ११५५  
 स सुकृतुर्यो वि दुरः पणीनां पुनानो अर्कं पुरुभोजसं नः ।  
 होता मन्द्रो विशां दमूनास् तिरस् तमो ददृशे राम्याणाम् ११५६  
 अमूरः कविरदितिर्विस्वान् त्सुसंसन्मित्रो अतिथिः शिवो नः ।  
 चित्रभानुरुषसां भात्यग्रे ऽपां गर्भः प्रस्व आ विवेश ११५७

ईळैन्यो वो मनुषो युगेषु समनगा अशुचज् जातवेदाः ।  
 सुसंदृशा भानुना यो विभाति प्रति गावः समिधानं बुधन्त ११५८  
 अग्ने याहि दूत्यं मा रिषण्यो देवाँ अच्छा ब्रह्मकृता गणेन ।  
 सरस्वतीं मरुतो अश्विनापो यक्षि देवान् रत्नधेयाय विश्वान् ११५९  
 त्वामग्ने समिधानो वसिष्ठो जरूथं हन् यक्षि राये पुरंधिम् ।  
 पुरुणीथा जातवेदो जरस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११६०

॥ १३८ ॥ ( ऋ० ७ । १० । १-५ ) ।

उषो न जारः पृथु पाजो अश्रेद् दविद्युत् दीद्यच्छोशुचानः ।  
 वृषा हरिः शुचिरा भाति भासा धियो हिन्वान उशतीरजीगः ११६१  
 स्वर्णं वस्तोरुषसामरोचि यज्ञं तन्वाना उशिजो न मन्म ।  
 अग्निर्जन्मानि देव आ वि विद्वान् द्रवद् दूतो देवयावा वनिष्ठः ११६२  
 अच्छा गिरो मतयो देवयन्तीर् अग्निं यन्ति द्रविणं भिक्षमाणाः ।  
 सुसंदृशं सुप्रतीकं स्वञ्च हव्यवाहमरतिं मानुषाणाम् ११६३  
 इन्द्रं नो अग्ने वसुभिः सजोषा रुद्रं रुद्रेभिरा वहा बृहन्तम् ।  
 आदित्येभिरदितिं विश्वजन्यां बृहस्पतिमृकभिर्विश्ववारम् ११६४  
 मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठम् अग्निं विश ईळते अध्वरेषु ।  
 स हि क्षपावाँ अभवद् रयीणाम् अतन्द्रो दूतो यजथाय देवान् ११६५

॥ १३९ ॥ ( ऋ० ७ । ११ । १-५ )

महाँ अस्यध्वरस्य प्रकृतो न ऋते त्वदुमृता मादयन्ते ।  
 आ विश्वेभिः सरथं याहि देवैर् न्यग्ने होता प्रथमः संदेह ११६६  
 त्वामीळते अजिरं दूत्याय हविष्मन्तः सदमिन् मानुषासः ।  
 यस्य देवैरासदो बर्हिरेग्ने ऽहान्यस्मै सुदिना भवन्ति ११६७  
 त्रिश् चिद्वक्तोः प्र चिकितुर्वसन्ति त्वे अन्तर्दाशुषे मर्त्याय ।  
 मनुष्वदम् इह यक्षि देवान् भवा नो दूतो अभिशस्तिपावा ११६८  
 अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्य अग्निर्विश्वस्य हविषः कृतस्य  
 ऋतुं ह्यस्य वसवो जुषन्त अथा देवा दधिरे हव्यवाहम् ११६९

आग्नें वह हविरद्याय देवान् इन्द्रज्येष्ठास इह मादयन्ताम् ।  
इमं यज्ञं दिवि देवेषु धेहि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११७०

॥ १४० ॥ ( ऋ० ७ । १२ । १-३ )

अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे ।  
चित्रभानुं रोदसी अन्तरुवी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम् ११७१

स म्हा विश्वा दुरितानि साह्वान् अग्निः ष्ट्वे दम आ जातवेदाः ।  
स नो रक्षिषद् दुरितादवद्याद् अस्मान् गृणत उत नो मघोनः ११७२

त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः ।  
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११७३

॥ १४१ ॥ ( ऋ० ७ । १४ । १-३ ) त्रिष्टुप्, ११७४ बृहती ।

समिधा जातवेदसे देवाय देवहृतिभिः ।  
हविर्भिः शुक्रशोचिषे नमस्विनो वयं दाशेमाग्रये ११७४

वयं ते अग्ने समिधा विधेम वयं दाशेम सुष्टुती यजत्र ।  
वयं घृतेनाध्वरस्य होतर् वयं देव हविषा भद्रशोचे ११७५

आ नो देवेभिरुप देवहृतिम् अग्ने याहि वर्षट्कृतिं जुषाणः ।  
तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११७६

॥ १४२ ॥ ( ऋ० ७ । १५ । १-१५ ) गायत्री ।

उपसद्याय मीहृष आस्ये जुहुता हविः । यो नो नेदिष्ठमाप्यम् ११७७

यः पञ्च चर्षणीरभि निषसादु दमेदमे । कविर्गृहपतिर्युवा ११७८

स नो वेदो अमात्यम् अग्नी रक्षतु विश्वतः । उतास्मान् पात्वंहसः ११७९

नवं जु स्तोममग्रये दिवः श्येनाय जीजनम् । वस्वः कुविद् वनार्ति नः ११८०

स्पार्हा यस्य श्रियो ह्ये रयिर्वीरवतो यथा । अग्ने यज्ञस्य शोचतः ११८१

सेमां वेतु वर्षट्कृतिम् अग्निर्जुषत नो गिरः । यजिष्ठो हव्यवाहनः ११८२

नि त्वा नक्ष्य विष्पते द्युमन्तं देव धीमहि । सुवीरमग्र आहुत ११८३

क्षप उन्नश् च दीदिहि स्वग्रयस् त्वया वयम् । सुवीरस् त्वमस्मयुः ११८४

उप त्वा सातये नरो विप्रासो यन्ति धीतिभिः । उपाक्षरा सहस्रिणी ११८५

अग्नी रक्षांसि सेधति	शुक्रशोचिरमर्त्यः	। शुचिः पावक ईड्यः	११८६
स नो राधास्या भर	ईशानः सहसो यहो	। भर्गश् च दातु वार्यम्	११८७
त्वमग्ने वीरवद् यशो	देवश् च सविता भर्गः	। दितिश् च दाति वार्यम्	११८८
अग्ने रक्षा णो अंहसः	प्रति ष्म देव रीषंतः	। तर्पिष्ठैरजरो दह	११८९
अधा मही न आयासि	अनाधृष्टो नृपीतये	। पूर्ववा शतश्रुजिः	११९०
त्वं नः पाह्यंहसो	दोषावस्तरघायतः	। दिवा नक्तमदाभ्य	११९१

॥ १४३ ॥ ( ऋ० ७ । १६ । १-१२ ) प्रगाथः- ( बृहती, सतोबृहती । )

एना वो अग्नि नमसा	ऊर्जो नपातमा हुवे ।		
प्रियं चेतिष्ठमर्ति	स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम्		११९२
स योजते अरुषा	विश्वभोजसा स दुद्रवत् स्वाहुतः ।		
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी	वसूनां देवं राधो जनानाम्		११९३
उदस्य शोचिरस्थाद्	आजुह्वानस्य मीहुषः ।		
उद्धूमासो अरुषासो	दिविस्पृशः समग्निमिन्धते नरः		११९४
तं त्वा दूतं कृण्महे	यशस्तमं देवाँ आ वीतये वह ।		
विश्वा सूनो सहसो	मर्तभोजना रास्व तद् यत् त्वेमहे		११९५
त्वमग्ने गृहपतिस्	त्वं होता नो अध्वरे ।		
त्वं पोता विश्ववार	प्रचेता यक्षि वेषि च वार्यम्		११९६
कृधि रत्नं यजमानाय	सुक्रतो त्वं हि रत्नधा असि ।		
आ न ऋते शिशीहि	विश्वमृत्विजं सुशंसो यश् च दक्षते		११९७
त्वे अग्ने स्वाहुत	प्रियासः सन्तु सूरयः ।		
यन्तारो ये मघवानो	जनानाम् ऊर्वान् दयन्त गोनाम्		११९८
येषामिळा घृतहस्ता	दुरोण आँ अपि प्राता निषीदति ।		
ताँस् त्रायस्व सहस्य	द्रुहो निदो यच्छा नः शर्म दीर्घश्रुत्		११९९
स मन्द्रया च जिह्या	वहिरासा विदुष्टरः ।		
अग्ने रयि मघवन्स्यो	न आ वह हृव्यदाति च सूदय		१२००

ये राधांसि ददत्यश्रुया मघा कामेन श्रवसो महः ।	
ताँ अंहसः पिपृहि पर्त्तभिष्टं शतं पूभिर्येविष्य	१२०१
देवो वो द्रविणोदाः पूर्णा विवष्टासिचम् ।	
उद् वा सिध्वस्वसुप वा पृणध्वम् आदिद् वो देव ओहते	१२०२
तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वहिँ देवा अकृण्वत ।	
दधाति रत्नं विधते सुवीर्यम् अग्निर्जनाय दाशुषे	१२०३

॥ १४४ ॥ ( ऋ० ७ । १७ । १-७ ) द्विपदा त्रिष्टुप् ।

अग्ने भव सुषामिधा समिद्ध उत बहिर्हृविंया वि स्तृणीताम्	१२०४
उत द्वार उशतीर्वि श्रयन्ताम् उत देवाँ उशत आ वहेह	१२०५
अग्ने वीहि हविषा यक्षि देवान् त्स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः	१२०६
स्वध्वरा करति जातवेदा यक्षद् देवाँ अमृतान् पिप्रयच्च	१२०७
वंस्व विश्वा वार्याणि प्रचेतः सत्या भवन्त्वाशिषो नो अद्य	१२०८
त्वामु ते दधिरे हव्यवाहँ देवासो अग्न ऊर्ज आ नपातम्	१२०९
ते ते देवाय दाशतः स्याम महो नो रत्ना वि दध इयानः	१२१०

॥ १४५ ॥ ( ऋ० ७ । ५० । २ ) जगती ।

यद् विजामन् परुषि वन्दनं भुवद् अष्टीवन्तौ परि कुल्फौ च देहत् ।	
अभिष्टच्छोचन्नप वाधतामितो मा मां पद्येन रपसा विदुत् त्सरुः	१२११

॥ १४६ ॥ ( ऋ० ७ । १०४ । १०, १४ ) त्रिष्टुप् ।

यो नो रसं दिप्सति पित्वो अग्ने यो अश्नानां यो गवां यस् तनूनाम् ।	
रिपुः स्तेनः स्तेयकृद् दुभ्रमेतु नि ष हीयतां तन्वाइ तना च	१२१२
यदि वाहमनृतदेव आस मोघं वा देवाँ अप्युहे अग्ने ।	
किमस्मभ्यं जातवेदो हृणीषे द्रोघवाचस् ते निर्ऋथं संचन्ताम्	१२१३

॥ १४७ ॥ ( ऋग्वेदस्य अष्टमं मण्डलम् । सूक्तं ११, मन्त्राः १-१० )

( १२१४—१२२३ ) वत्सः काण्वः । गायत्री, १२१४ प्रतिष्ठा, १२१५ वर्धमाना, १२२३ त्रिष्टुप् ।

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वा । त्वं यज्ञेष्वीड्यः	१२१४
--	------

त्वमसि प्रशस्यो विदथेषु सहन्त्य	। अग्ने रथीरध्वराणाम्	१२१५
स त्वमस्मदप द्विषो युयोधि जातवेदः	। अदेवीरग्ने अरातीः	१२१६
अन्ति चित् सन्तमहं यज्ञं मर्त्यस्य रिपोः	। नोपं वेषि जातवेदः	१२१७
मर्ता अमर्त्यस्य ते भूरि नाम मनामहे	। विप्रासो जातवेदसः	१२१८
विप्रं विप्रासोऽवसे देवं मर्तास ऊतये	। अग्निं गीभिर्हवामहे	१२१९
आ ते वत्सो मनो यमत् परमाचित् सधस्थात्	। अग्ने त्वां-कामया गिरा	१२२०
पुरुत्रा हि सदङ्कुसि विशो विश्वा अनु प्रभुः	। समत्सु त्वा हवामहे	१२२१
समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे	। वाजेषु चित्रराघसम्	१२२२
प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश् च सत्सि ।		
स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रयस्व अस्मभ्यं च सौभगमा यजस्व		१२२३

॥ १४८ ॥ ( ऋ० ८ । १९ । १-३३ )

( १२२४—१२६९ ) सोमरिः काण्वः । प्रगाथः = ( ककुप+ सतोबृहती ), १२५० छिपदा विराद् ।

तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे । देवत्रा हव्यमोहिरे	१२२४
विभूतरातिं विप्र चित्रशोचिषम् अग्निमीळिष्व यन्तुरम् ।	
अस्य मेघस्य सोम्यस्य सोभरे प्रेमध्वराय पूर्व्यम्	१२२५
यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होता रममर्त्यम् । अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्	१२२६
ऊर्जो नपातं सुभगं सुदीदितिम् अग्निं श्रेष्ठशोचिषम्	
स नो मित्रस्य वरुणस्य सो अपाम् आ सुम्नं यक्षते दिवि	१२२७
यः समिधा य आहुती यो वेदेन ददाश मर्तो अग्रये । यो नमसा स्वध्वरः	१२२८
तस्येदर्वन्तो रंहयन्त आशवस् तस्यं द्युन्नितमं यशः ।	
न तमहो देवकृतं कृतं च न मर्त्यकृतं नशत्	१२२९
स्वग्रयो वो अग्निभिः स्याम स्वनो सहस ऊर्जा पते । सुवीरस् त्वमस्मयुः	१२३०
प्रशंसमानो अतिथिर्न मित्रियो ऽग्नी रथो न वेद्यः ।	
त्वे क्षेमासो अपि सन्ति साधवस् त्वं राजा रयीणाम्	१२३१
सो अद्धा दाश्वध्वरो ऽग्ने मर्तः सुभग स प्रशंस्यः । स धीभिरस्तु सनिता	१२३२

यस्य त्वमुध्वो अध्वराय तिष्ठसि क्षयद्वीरः स साधते । सो अर्वेद्भिः सनिता स विपन्युभिः स शूरैः सनिता कृतम्	१२३३
यस्याग्निर्वपुर्गृहे स्तोमं चनो दधीत विश्ववार्यः । हव्या वा वेविषद् विषः विप्रस्य वा स्तुवतः सहसो यहो मक्षतमस्य रातिषु । अवोदैवमुपरिमर्त्यं कृधि वसो विविदुषो वचः	१२३४ १२३५
यो अग्निं हव्यदातिभिर् नमोभिर्वासुदक्षमाविवासति । गिरा वाजिरशोचिषम् समिधा यो निशित्ती दाशदादिति धामभिरस्य मर्त्यैः । विश्वेत् स धीभिः सुभगो जनाँ अतिं द्युमैरुद्र इव तारिषत्	१२३६ १२३७
तदग्ने द्युममा भरं यत् सासहत् सदाने कं चिदुत्रिणम् । मन्युं जनस्य दूढ्यः येन चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा येन नासत्या भगः । वयं तत् ते शवसा गातुवित्तमा इन्द्रत्वोता विधेमहि	१२३८ १२३९
ते धेदग्ने स्वाध्योऽं ये त्वा विप्र निदधिरे नृचक्षसम् । विप्रसो देव सुक्रतुम् त इद् वेदिं सुभग त आहुतिं ते सोतुं चक्रिरे द्विवि । त इद् वाजेभिर्जिग्युर्महद्भनं ये त्वे कामं न्येरिरे	१२४० १२४१
भद्रो नो अगिराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः । भद्रा उत प्रशस्तयः भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये येना समत्सु सासहः । अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धतां वनेमा ते अभिष्टिभिः	१२४२ १२४३
ईळे गिरा मनुहितं यं देवा दूतमरतिं न्येरिरे । यजिष्ठं हव्यवाहनम् तिग्मजम्भाय तरुणाय राजते प्रयो गायस्यग्नये । यः पिंशते सूनृताभिः सुवीर्यम् अभिर्धृतेभिराहुतः	१२४४ १२४५
यदी धृतेभिराहुतो वाशीमग्निर्भरत उच्चारं च । असुर इव निर्णिजम् यो हव्यान्यैरयता मनुहितो देव आसा सुगन्धिना । विवासते वार्याणि स्वध्वरो होता देवो अमर्त्यैः	१२४६ १२४७
यदग्ने मर्त्यस् त्वं स्यामहं मित्रमहो अमर्त्यैः । सहसः सूनवाहुत	१२४८



न त्वा रासीयाभिश्स्तये वसो न पापत्वार्य सन्त्य ।	
न मे स्तोतामतीवा न दुर्हितः स्यादग्ने न पापया	१२४९
पितुर्न पुत्रः सुभृतो दुरोण आ देवाँ एतु प्र णो हविः	१२५०
तवाहमग्न ऊतिभिर् नेदिष्ठाभिः सचेय जोषमा वसो । सदा देवस्य मर्त्यः	१२५१
तव ऋत्वा सनेयं तव रातिभिर् अग्ने तव प्रशस्तिभिः ।	
त्वामिदाहुः प्रमतिं वसो मम अग्ने हर्षस्व दातवे	१२५२
प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस् तिरते वाजर्भर्मभिः । यस्य त्वं सख्यमावरः	१२५३
तव द्रप्सो नीलवान् वाश ऋत्विय इन्धानः सिष्णवा ददे ।	
त्वं महीनामृषसामसि प्रियः क्षपो वस्तुषु राजसि	१२५४
तमार्गन्म सोभरयः सहस्रमुष्कं स्वभिष्टिमवसे । सम्राजं त्रासदस्यवम्	१२५५
यस्य ते अग्ने अन्ये अग्रय उपक्षितो वया इव ।	
विपो न द्युम्ना नि युवे जनानां तव क्षत्राणि वर्धयन्	१२५६

॥ १४९ ॥ ( ऋ० ८ । १०३ । १-१३ )

बृहती; १२६१ विराड् रूपा, १२६३, १२६५, १२६७, १२६९, सतो बृहती;

१२६४, १२६८ ककुप्, १२६६ हसीयसी ।

अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः ।	
उपो षु जातमार्थस्य वर्धनम् अग्निं नक्षन्त नो गिरः	१२५७
प्र दैवोदासो अग्निर् देवाँ अच्छा न मज्मना ।	
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य सानवि	१२५८
यस्माद् रेजन्त कृष्टयश् चर्कृत्यानि कृण्वतः ।	
सहस्रसां मेधसाताविव त्मना अग्निं धीभिः संपर्यत	१२५९
प्र यं राये निनीषसि मर्तो यस् ते वसो दाशत् ।	
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्रपोषिणम्	१२६०
स दृहे चिदभि तृणत्ति वाजम् अर्वता स धत्ते अक्षिति श्रवः ।	
त्वे देवत्रा सदा पुरुवसो विश्वा वामानि धीमहि	१२६१

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।	
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्यग्र्ये	१२६२
अश्वं न गीर्भी रथ्यं सुदानवो मर्मज्यन्तै देवयवः ।	
उभे तोके तनये दस्म विशपते पर्षि राधो मघोनाम्	१२६३
प्र मंहिष्ठाय गायत ऋतान्नै बृहते शुक्रशोचिषे ।	
उपस्तुतासो अग्र्ये	१२६४
आ वंसते मघवा वीरवद् यशः समिद्धो घुङ्गयाहुतः ।	
कृविन्नो अस्य सुमतिर्नवीयसी अच्छा वाजैभिरागमत्	१२६५
प्रेष्ठम् प्रियाणां स्तुह्यासावार्तिथिम् ।	
अग्नि रथानां यमम्	१२६६
उदिता यो निर्दिता वेदिता वसु आ यज्ञियो वर्तति ।	
दुष्टरा यस्य प्रवणे नोर्मयो धिया वाजं सिषासतः	१२६७
मा नो हणीतामतिथिर् वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः ।	
यः सुहोता स्वध्वरः	१२६८
मो ते रिष्ये अच्छोक्तिभिर्वसो ऽग्ने केभिश् चिदेवैः ।	
कीरिश् चिद्धि त्वामीष्टे दूत्याय रातहव्यः स्वध्वरः	१२६९

॥ १५० ॥ ( ऋ० ८ । २३ । १-३० )

( १२७०—१२९९ ) विश्वमना वैयश्वः । उष्णिक् ।

ईळिष्वा हि प्रतीव्यं	यजस्व जातवेदसम् ।	चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम्	१२७०
वामानं विश्वर्षणे	ऽग्नि विश्वमनो गिरा ।	उत स्तुषे विष्पर्धसो रथानाम्	१२७१
येषामावाध ऋग्मियं	इषः पृक्षश् च निग्रभे ।	उपविदा वह्निर्विन्दते वसु	१२७२
उदस्य शोचिरस्थाद्	दीदियुषो व्यृजरम् ।	तपुर्जम्भस्य सुद्युतो गणश्रियः	१२७३
उदु तिष्ठ स्वध्वर	स्तवानो देव्या कृपा ।	अभिख्या भासा बृहता शुशुक्निः	१२७४
अग्ने याहि सुशस्तिभिर्	हव्या जुह्वान आनुषक् ।	यथा दूतो बभूथ हव्यवाहनः	१२७५
अग्नि वः पूव्यं हुवे	होतारं चर्षणीनाम् ।	तमया वाचा गृणे तमु वः स्तुषे	१२७६
यज्ञेभिरहृतक्रतुं	यं कृपा सुदर्यन्त इत् ।	मित्रं न जने सुधितमृतावनि	१२७७

ऋतावानमृतायवो यज्ञस्य साधनं गिरा	। उपो एनं जुजुषुर्नमसस्पदे	१२७८
अच्छा नो अङ्गिरस्तमं यज्ञासो यन्तु संयतः	। होता यो अस्ति विक्ष्वा यशस्तमः	१२७९
अग्ने तव त्वे अजर इन्धानासो बृहद् भाः	। अश्वा इव वृषणस् तविषीयवः	१२८०
स त्वं न ऊर्जा पते रयिं रास्व सुवीर्यम्	। प्राव नस् तोके तनये समत्स्वा	१२८१
यद्वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशि	। विश्वेदुग्निः प्रति रक्षीसि सेधति	१२८२
श्रुष्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते	। नि मायिनस् तपुषा रक्षसो दह	१२८३
न तस्य मायया चन रिपुरीशीत मर्त्यः	। यो अग्रये द्वादश हव्यदातिभिः	१२८४
व्यश्वस् त्वा वसुविदम् उक्षण्युरप्रीणादृषिः	। महो राये तमु त्वा समिधीमहि	१२८५
उशना काव्यस् त्वा नि होतारमसादयत्	। आयजि त्वा मनवे जातवेदसम्	१२८६
विश्वे हि त्वा सजोषसो देवासो दूतमकृत	। श्रुष्टी देव प्रथमो यज्ञियो भुवः	१२८७
इमं घा वीरो अमृतं दूतं कृष्वीत मर्त्यः	। पावकं कृष्णवर्तनिं विहायसम्	१२८८
तं हुवेम यत्सुचः सुभासं शुक्रशौचिषम्	। विशामग्निमजरं प्रत्नमीढ्यम्	१२८९
यो अस्मै हव्यदातिभिर् आहुतिं मतोऽविधत्	। भूरि पोषं स धत्ते वीरवद् यशः	१२९०
प्रथमं जातवेदसम् अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम्	। प्रति सुगेति नमसा हविष्मती	१२९१
आभिर्विधेमाग्रये ज्येष्ठाभिव्यश्ववत्	। मंहिष्ठाभिर्मतिभिः शुक्रशौचिषे	१२९२
नूनमर्च विहायसे स्तोमैभिः स्थूरयूपवत्	। ऋषे वैयश्च दम्यायाग्रये	१२९३
अतिथिं मानुषाणां सूनुं वनस्पतीनाम्	। विप्रा अग्निमवसे प्रत्नमीळते	१२९४
महो विश्वा अभि पतोऽग्निं हव्यानि मानुषा	। अग्ने नि षत्सि नमसार्थे बर्हिषि	१२९५
वंस्वा नो वार्या पुरु वंस्व रायः पुरुस्पृहः	। सुवीर्यस्य प्रजावतो यशस्वतः	१२९६
त्वं वरो सुषाम्णे अग्ने जनाय चोदय	। सदा वसो रतिं यविष्ठ शश्वते	१२९७
त्वं हि सुप्रतूरसि त्वं नो गोमतीरिषः	। महो रायः सातिमग्ने अपा वृधि	१२९८
अग्ने त्वं यशा असि आ मित्रावरुणा वह	। ऋतावाना सम्राजा पूतर्दक्षसा	१२९९

॥ १५१ ॥ ( ऋ० ८ । ३९ । १-१० ) [ १३००-१३०९ ] नाभाकः काण्वः । महापङ्क्तिः ।

अग्निमस्तोष्यग्मियम् अग्निमीळा यज्यै ।  
 अग्निदेवां अनक्तु न उभे हि विदथे क्विर् अन्तश्चरति दूत्यं । नभन्तामन्यके संमे १३००  
 न्यग्ने नव्यसा वचस् तनूषु शंसमेषाम् ।  
 न्यराती रराव्णां विश्वा अर्यो अरातीर् इतो युच्छन्त्वामुरो नभन्तामन्यके संमे १३०१

अग्ने मन्मानि तुभ्यं कं घृतं न जुह्व आसनि ।	
स देवेषु प्र चिकिद्धि त्वं ह्यसि पूर्यः शिवो दूतो विवस्वतो नभन्तामन्यके संमे	१३०२
तत्तदग्निर्वयो दधे यथायथा कृपण्यति ।	
ऊर्जाहुतिर्वसनां शं च योश् च मयो दधे विश्वस्यै देवहृत्यै नभन्तामन्यके संमे	१३०३
स चिकेत सहीयसा अग्निश् चित्रेण कर्मणा ।	
स होता शश्वतीनां दक्षिणाभिरभीवृत इनोति च प्रतीव्यं नभन्तामन्यके संमे	१३०४
अग्निर्जाता देवानामग्निर् वेदु मतीनामपीच्यम् ।	
अग्निः स द्रविणोदा अग्निर्द्वारा व्यूर्णुते स्वाहुतो नवीयसा नभन्तामन्यके संमे	१३०५
अग्निर्देवेषु संवसुः स विश्वु यज्ञियास्वा ।	
स मुदा काव्या पुरु विश्वं भूमैव पुष्यति देवो देवेषु यज्ञियो नभन्तामन्यके संमे	१३०६
यो अग्निः सप्तमानुषः श्रितो विश्वेषु सिन्धुषु ।	
तमार्गन्म त्रिपस्त्यं मन्धातुर्देस्युहन्तमम् अग्नि यज्ञेषु पूर्य नभन्तामन्यके संमे	१३०७
अग्निस् त्रीणि त्रिधातूनि आ क्षेति विदथा कविः ।	
स त्रीरेकादुशौ इह यक्षच्च पिप्रयच्च नो विप्रो दूतः परिष्कृतो नभन्तामन्यके संमे	१३०८
त्वं नो अग्न आयुषु त्वं देवेषु पूर्य वस्व एक इरज्यसि ।	
त्वामापः परिस्नुतः परि यन्ति स्वसेतवो नभन्तामन्यके संमे	१३०९

॥ १५२ ॥ ( ऋ० ८।४३।१-३३ ) [ १३१०-१३८८ ] विरूप आङ्गिरसः । गायत्री ।

इमे विप्रस्य वेधसो ऽग्नेरस्तृतयज्वनः । गिरः स्तोमास ईरते	१३१०
अस्मै ते प्रतिहर्यते जातवेदो विचर्षणे । अग्ने जनामि सुष्टुतिम्	१३११
आरोका इव घेदहं तिग्मा अग्ने तव त्विषः । दुद्धिर्वनानि बप्सति	१३१२
ईरयो धूमकैतवो वातजूता उप दधि । यतन्ते वृथगग्रयः	१३१३
रते त्ये वृथगग्रय इद्वासः समदक्षते । उषसामिव केतवः	१३१४
कृष्णा रजांसि पत्सुतः प्रयाणे जातवेदसः । अग्निर्यद् रोधति क्षमि	१३१५
शांसि कृष्णान ओषधीर् बप्सदग्निर्न वायति । पुनर्यन् तरुणीरपि	१३१६
जिह्वाभिरह नर्ममद् अर्चिषा जञ्जणाभवन् । अग्निर्वनेषु रोचते	१३१७
प्रप्स्वग्ने साधेष्टव सौषधीरनु रुच्यसे । गर्भे सन् जायसे पुनः	१३१८

उदग्ने तव तद् घृताद्	अर्ची रोचत आहुतम्	निसानं जुहोतु मुखे	१३१९
उक्षात्राय वशात्राय	सोमपृष्ठाय वेधसे	स्तोमैर्विधेमाग्रये	१३२०
उत त्वा नमसा वयं	होतर्वरेण्यक्रतो	अग्ने समिद्धिरीमहे	१३२१
उत त्वा भृगुवच्छुचे	मनुष्वदम आहुत	अङ्गिरस्वद्धवामहे	१३२२
त्वं ह्यग्ने अग्निना	विप्रो विप्रेण सन्त्सता	सखा सख्या समिध्यसे	१३२३
स त्वं विप्राय द्वाशुषे	रयिं देहि सहस्रिणम्	अग्ने वीरवतीमिषम्	१३२४
अग्ने भ्रातः सहस्कृत	रोहिदश्च शुचित्रत	इमं स्तोमै जुषस्व मे	१३२५
उत त्वाग्ने मम स्तुतो	वाश्रायं प्रतिहर्यते	गोष्ठं गाव इवाशत	१३२६
तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम	विश्वाः सुक्षितयः पृथक्	अग्ने कामाय येमिरे	१३२७
अग्निं धीभिर्मनीषिणो	मेधिरासो विपश्चितः	अन्नसद्याय हिन्विरे	१३२८
तं त्वामज्मेषु वाजिनै	तन्वाना अग्ने अध्वरम्	वह्निं होतारमीळते	१३२९
पुरुत्रा हि सद्दङ्कुसि	विशो विश्वा अनु प्रभुः	समत्सु त्वा हवामहे	१३३०
तमीळिष्व य आहुतो	ऽग्निर्विभ्राजते घृतैः	इमं नः शृणवद्धवम्	१३३१
तं त्वा वयं हवामहे	शृण्वन्तं जातवेदसम्	अग्ने घन्तमप द्विषः	१३३२
विशां राजानमद्भुतम्	अध्यक्षं धर्मणामिमम्	अग्निमीळे स उ श्रवत्	१३३३
अग्निं विश्वायुवेपसं	मर्यं न वाजिनै हितम्	सग्निं न वाजयामसि	१३३४
घ्नन् मृध्राण्यप द्विषो	दहन् रक्षांसि विश्वहा	अग्ने तिग्मेन दीदिहि	१३३५
यं त्वा जनास इन्धते	मनुष्वदङ्गिरस्तम	अग्ने स बोधि मे वचः	१३३६
यदग्ने दिविजा असि	अप्सुजा वा सहस्कृत	तं त्वा गीर्भिर्हवामहे	१३३७
तुभ्यं घेत ते जना इमे	विश्वाः सुक्षितयः पृथक्	धासिं हिन्वन्त्यत्तवे	१३३८
ते घेदग्ने स्वाध्यो	ऽहा विश्वा नृचक्षसः	तरन्तः स्याम दुर्गहा	१३३९
अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं	शीरं पावकशोचिषम्	हृद्धिर्मन्द्रेभिरीमहे	१३४०
स त्वमग्ने विभावंसुः	सृजन्त्सूर्यो न रश्मिभिः	शर्धन् तमांसि जिघ्रसे	१३४१
तत् ते सहस्व ईमहे	दात्रं यन्नोपदस्यति	त्वदग्ने वार्यं वसु	१३४२

॥ १५३ ॥ ( क्र० ८ । ४४ । १-३० )

समिधाग्निं दुवस्यत	घृतैर्बोधयतातिथिम्	आस्मिन् हव्या जुहोतन	१३४३
अग्ने स्तोमै जुषस्व मे	वर्धस्वानेन मन्मना	प्रति सूक्तानि हर्य नः	१३४४

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे	। देवाँ आ सादयादिह	१३४५
उत् ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः	। अग्ने शुक्रास ईरते	१३४६
उप त्वा जुह्वोः मम घृताचीर्यन्तु हर्यत	। अग्ने हव्या जुषस्व नः	१३४७
मन्द्रं होतारमुत्विजं चित्रभानुं विभावंसुम्	। अग्निमीळे स उं श्रवत	१३४८
प्रलं होतारमीड्यं जुष्टमग्निं कविक्रतुम्	। अध्वराणामभिश्चियम्	१३४९
जुषाणो अङ्गिरस्तम इमा हव्यान्यानुषक्	। अग्ने यज्ञं नय क्रतुथा	१३५०
समिधान उं सन्त्य शुक्रशोच इहा वह	। चिकित्वान् दैव्यं जनम्	१३५१
विप्रं होतारमद्रुहं धूमकेतुं विभावंसुम्	। यज्ञानां केतुमीमहे	१३५२
अग्ने नि पाहि नस् त्वं प्रति ष्म देव रीषतः	। भिन्धि द्वेषः सहस्कृत	१३५३
अग्निः प्रलेन मन्मना शुम्भानस् तन्वंषु स्वाम्	। कविर्विप्रेण वावृधे	१३५४
उर्जो नपातमा हुवे ऽग्निं पावकशोचिषम्	। अस्मिन् यज्ञे स्वध्वरे	१३५५
स नो मित्रमहस् त्वम् अग्ने शुक्रेण शोचिषां	। देवैरा संत्सि बर्हिषिं	१३५६
यो अग्निं तन्वोः दमे देवं मर्तैः सपर्यति	। तस्मा इद् दीदयद् वसु	१३५७
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत् पतिः पृथिव्या अयम्	। अपां रेतोसि जिन्वति	१३५८
उदग्ने शुचयस् तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते	। तव ज्योतीष्यर्चयः	१३५९
ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वर्पतिः	। स्तोता स्यां तव शर्माणि	१३६०
त्वामग्ने मनीषिणस् त्वां हिन्वन्ति चित्तिभिः	। त्वां वर्धन्तु नो गिरः	१३६१
अदब्धस्य स्वधावतो दूतस्य रेभतः सदा	। अग्नेः सख्यं वृणीमहे	१३६२
अग्निः शुचिर्व्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः	। शुची रोचत आहुतः	१३६३
उत् त्वा धीतयो मम गिरो वर्धन्तु विश्वहा	। अग्ने सख्यस्य बोधि नः	१३६४
यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्	। स्युष्टे मत्या इहाशिषः	१३६५
वसुर्वसुपतिर्हि कम् अस्यग्ने विभावंसुः	। स्याम ते सुमतावपि	१३६६
अग्ने धृतव्रताय ते समुद्रायैव सिन्धवः	। गिरो वाश्रास ईरते	१३६७
युवानं विश्वपतिं कविं विश्वादे पुरुवेषसम्	। अग्निं शुम्भामि मन्मभिः	१३६८
यज्ञानां रथ्ये वयं तिग्मजम्भाय वीळ्वे	। स्तोमैरिषेमाधये	१३६९
अयमग्ने त्वे अपि जरिता भृतु सन्त्य	। तस्मै पावक मृळ्य	१३७०
धीरो ह्यस्यग्रसद् विप्रो न जागृविः सदा	। अग्ने दीदयसि धवि	१३७१

पुराग्ने दुरितेभ्यः पुरा मृध्रेभ्यः कवे । प्र ण आयुर्वसो तिर १३७२

॥१५४॥ ( क्र० ८ । ७५ । १-१६ )

युक्ष्वा हि देवहूतमाँ	अश्वाँ अग्ने रथीरिव	। नि होता पुच्यः संदः	१३७३
उत नो देव देवाँ	अच्छा वोचो विदुष्टरः	। श्रद् विश्वा वार्या कृधि	१३७४
त्वं ह यद् यविष्ठ्य	सहसः सूनवाहुत	। ऋतावा यज्ञियो भुवः	१३७५
अयमग्निः सहास्त्रिणो	वाजस्य शतिनस्पतिः	। मूर्धा कवी रयीणाम्	१३७६
तं नेमिमृभवो यथा	नमस्व सहूतिभिः	। नेदीयो यज्ञमङ्गिरः	१३७७
तस्मै नूनमभिद्यवे	वाचा विरूप नित्यया	। वृष्णे चोदस्व सुष्टुतिम्	१३७८
कमुं ष्विदस्य सेनया	अग्नेरपाकचक्षसः	। पणि गोषु स्तरामहे	१३७९
मा नो देवानां विशः	प्रस्तातीरिवोस्त्राः	। कृशं न हीसुरध्याः	१३८०
मा नः समस्य दृढ्यः	परिद्वेषसो अंहतिः	। ऊर्मिर्न नावमा वधीत्	१३८१
नमस् ते अग्न ओजसे	गुणन्ति देव कृष्टयः	। अमैरमित्रमर्दय	१३८२
कुवित् सु नो गर्विष्टये	ऽग्ने संवेर्षिषो रयिम्	। उरुकुदुरु णस् कृधि	१३८३
मा नो अस्मिन् महाधने	परा वर्गर्भारभृद् यथा ।	संवर्गं सं रयिं जय	१३८४
अन्यमस्मद्भिया इयम्	अग्ने सिषक्तु दुच्छुना	। वर्धा नो अमवच्छवः	१३८५
यस्याजुषन्नमस्विनः	शमीमर्दुर्मखस्य वा	। तं घेदुभिर्वृधावति	१३८६
परस्या अधि संवतो	ऽवराँ अभ्या तर	। यत्राहमस्मि ताँ अव	१३८७
विद्वा हि ते पुरा वयम्	अग्ने पितुर्यथावसः	। अधा ते सुममीमहे	१३८८

॥१५५॥ ( क्र० ८।६०।१-२० ) [ १३८९-१४०८ ] भर्गः प्रागाथः ।

प्रागाथः= ( बृहती+सतोबृहती ) ।

अग्न आ याह्यग्निभिर्	होतारं त्वा वृणीमहे ।	
आ त्वामनक्तु प्रयता	हविष्मती यजिष्ठं बहिरासदे	१३८९
अच्छा हि त्वा सहसः	सूनो अङ्गिरः सुचश् चरन्त्यध्वरे ।	
ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहे	ऽग्निं यज्ञेषु पुच्यम्	१३९०
अग्ने कविर्वेधा असि	होता पावक यक्षयः ।	
मन्द्रो यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यो	विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः	१३९१

अद्रोँधमा वहोशतो यविष्य देवाँ अजस्र वीतये ।	
अभि प्रयांसि सुधिता वंसो गहि मन्दस्व धीतिभिर्हितः	१३९२
त्वमित् सप्रथा असि अग्ने त्रातर्कृतस् कविः ।	
त्वां विप्रांसः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः	१३९३
शोचां शोचिष्ठ दीदिहि विशे मयो रास्व स्तोत्रे म्हाँ असि ।	
देवानां शर्मन् मम सन्तु सूरयः शत्रूषाहः स्वग्रयः	१३९४
यथा चिद् वृद्धमतसम् अग्ने संजूर्वसि क्षमि ।	
एवा दह मित्रमहो यो अस्मधुग् दुर्मन्मा कश् च वेनति	१३९५
मा नो मर्तीय रिपवे रक्षस्विने माघशंसाय रीरधः ।	
अस्त्रैधद्भिस् तरणिभिर्यविष्यं शिवेभिः पाहि पायुभिः	१३९६
पाहि नो अग्र एकया पाह्युत द्वितीयया ।	
पाहि गीभिस् तिसृभिर्रुजां पते पाहि चतसृभिर्वसो	१३९७
पाहि विश्वस्माद् रक्षसो अराव्णः प्र स्म वाजेषु नोऽव ।	
त्वामिद्धि नेदिष्ठं देवतांतय आपि नक्षामहे वृधे	१३९८
आ नो अग्ने वयोवृधे रयि पावक शंस्यं ।	
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती स्वयंशस्तरम्	१३९९
येन वंसाम पृतनासु शर्धतस् तरन्तो अर्य आदिशः ।	
स त्वं नो वर्ध प्रयसा शचीवसो जिन्वा धियो वसुविदः	१४००
शिशानो वृषभो यथा अग्निः शृङ्गे दविध्वत् ।	
तिग्मा अस्य हनवो न प्रतिधृषे सुजम्भः सहसो यहुः	१४०१
नहि तै अग्ने वृषभ प्रतिधृषे जम्भासो यद् वितिष्ठसे ।	
स त्वं नो होतः सुहुतं हविष्कृधि वंस्वा नो वार्या पुरु	१४०२
शेषे वनेषु मात्रोः सं त्वा मर्तास इन्धते ।	
अतन्द्रो हव्या वहसि हविष्कृत आदिद् देवेषु राजसि	१४०३
सप्त होतारस् तमिदीळते त्वा अग्ने सुत्यजमह्यम् ।	
भिनस्सद्वि तर्पसा वि शोचिषा प्राग्ने तिष्ठ जनाँ अति	१४०४



अग्निर्मग्निं वो अग्निं गुं हुवेम वृक्तबर्हिषः ।	
अग्निं हितप्रयसः शश्वतीष्वा होतारं चर्षणीनाम्	१४०५
केतेन शर्मन्त्सचते सुषामणि अग्ने तुभ्यं चिकित्वना ।	
इषण्यया नः पुरु रूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये	१४०६
अग्ने जरितर्विष्पतिस् तेपानो देव रक्षसः ।	
अप्रोषिवान् गृहपतिर्महो असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः	१४०७
मा नो रक्ष आ वेशीदाघृणीवसो मा यातुर्यातुमावताम् ।	
परोगव्युत्यनिरामप क्षुध्रम् अग्ने सेध रक्षस्विनः	१४०८

॥ १५६ ॥ ( ऋ० ८।७१।१-१५ )

[ १४०८—१४२३ ] सुदीति-पुरुमीह्लावाङ्गिरसौ, तयोर्वान्यतर. । गायत्री, १४१८-१४२३  
प्रगाथः=( बृहती, सतोबृहती ) ।

त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः । उत द्विषो मर्त्यस्य	१४०९
नहि मन्युः पौरुषेय ईशे हि वः प्रियजात । त्वमिदसि क्षपावान्	१४१०
स नो विश्वेभिर्देवेभिर् ऊर्जो नपाद् भद्रशोचे । रयिं देहि विश्वारम्	१४११
न तमग्ने अरातयो मर्त युवन्त रायः । यं त्रायसे दाश्वांसम्	१४१२
यं त्वं विप्र मेधसातौ अग्ने हिनोषि धनाय । स तवोती गोषु गन्ता	१४१३
त्वं रयिं पुरुवीरम् अग्ने दाशुषे मर्तीय । प्र णो नय वस्यो अच्छ	१४१४
उरुष्या णो मा परा दा अघायते जातवेदः । दुराध्येडु मर्तीय	१४१५
अग्ने मार्किष्टे देवस्य रातिमदेवो युयोत । त्वमीशिषे वसूनाम्	१४१६
स नो वस्व उप मासि ऊर्जो नपान्माहिनस्य । सखे वसो जरितृभ्यः	१४१७
अच्छा नः शरिशोचिषं गिरो यन्तु दर्शतम् ।	
अच्छा यज्ञासो नमसा पुरुवसुं पुरुप्रशस्तमूतये	१४१८
अग्निं सनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम् ।	
द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्वा होता मन्द्रतमो विशि	१४१९
अग्निं वो देवयज्यया अग्निं प्रयत्यध्वरे ।	
अग्निं धीषु प्रथममग्निमर्वति अग्निं क्षेत्राय साधमे	१४२०

अग्निरिषां सख्ये ददातु न ईशे यो वार्याणाम् ।  
अग्निं तोके तनये शश्वदीमहे वसुं सन्तं तनूपाम् १४२१

अग्निमीळिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम् ।  
अग्निं राये पुरुमीह्म श्रुतं नरो ऽग्निं सुदीतये छार्दिः १४२२ ×

अग्निं द्वेषो योतवै नो गृणीमसि अग्निं शं योश् च दातवै ।  
विश्वासु विक्ष्ववितेव हव्यो भुवद् वस्तुर्कृपणाम् १४२३

॥ १५७ ॥ ( क्र० ८ । ७२ । १-१८ ) [ १४२४-१४४१ ] हर्यतः प्रागाथः । गायत्री ।

हविष्कृणुध्वमा गमद् अध्वर्युर्वेनते पुनः ।	विद्रो अस्य प्रशासनम् १४२४
नि तिग्ममभ्यंशुं सीद्द्रोता मनावधि ।	जुषाणो अस्य सख्यम् १४२५
अन्तरिच्छन्ति तं जने रुद्रं परो मनीषया ।	गृभ्णन्ति जिह्वया ससम् १४२६
जाम्यतीतपे धनुर् वयोधा अरुहद्वनम् ।	दृषदं जिह्वावधीत् १४२७
चरन् वत्सो रुशन्निह निदातारं न विन्दते ।	वेति स्तोतव अम्ब्यम् १४२८
उतो न्वस्य यन्महद् अश्वावद् योजनं बृहत् ।	दामा रथस्य ददृशे १४२९
दुहन्ति सप्तैकाम् उप द्वा पञ्च सृजतः ।	तीर्थे सिन्धोरधि स्वरे १४३०
आ दशभिर्विवस्वत इन्द्रः कोशमचुच्यवीत् ।	खेदया त्रिवृता दिवः १४३१
परि त्रिधातुरध्वरं जुषिरेति नवीयसी ।	मध्वा होतारो अञ्जते १४३२
सिञ्चन्ति नमसावतम् उच्चाचक्रं परिज्मानम् ।	नीचीनवारमक्षितम् १४३३
अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु ।	अवतस्य विसर्जने १४३४
गाव उपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा ।	उभा कर्णा हिरण्यया १४३५
आ सुते सिञ्चत श्रियं रोदस्योरभिश्रियम् ।	रसा दधीत वृषभम् १४३६
ते जानत स्वमोक्ष्यं सं वत्सासो न मातृभिः ।	मिथो नसन्त जामिभिः १४३७
उप स्रक्वेषु बप्सतः कृण्वते धरुणं दिवि ।	इन्द्रे अग्रा नमः स्वः १४३८
अधुक्षत् पिप्युषीमिषम् ऊर्जे सप्तपदीमरिः ।	सूर्यस्य सप्त रश्मिभिः १४३९
सोमस्य मित्रावरुणा उर्दिता सूर आ ददे ।	तदातुरस्य भेषजम् १४४०
उतो न्वस्य यत् पदं हर्यतस्य निधान्यम् ।	परि द्यां जिह्वयातनत् १४४१

॥ १५८ ॥ ( ऋ० ८। ७४। १-१२ )

[ १४४२-१४५३ ] गोपवन आत्रेयः । अनुष्टुप्मुखः प्रगाथः= ( अनुष्टुप्+गायत्री ) ।

विशोर्विशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ।	
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुपे शूषस्य मन्मभिः	१४४२
यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम् । प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः	१४४३
पन्यांसं जातवेदसं यो देवतात्युद्यता । हव्यान्यैरयद् दिवि	१४४४
आगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम् ।	
यस्य श्रुतर्वा बृहन् आर्क्षो अनीक एधते	१४४५
अमृतं जातवेदसं तिरस् तर्मांसि दर्शतम् । घृताहवनमीड्यम्	१४४६
सबाधो यं जना इमे ई ऽग्निं हव्येभिरीळते । जुह्वानासो यतसुचः	१४४७
इयं ते नव्यसी मतिर् अग्ने अधाय्यसदा ।	
मन्द्र सुजात सुक्रतो ऽम्रं दस्मातिथे	१४४८
सा ते अग्ने शंतमा चनिष्ठा भवतु प्रिया । तया वर्षस्व सुष्टुतः	१४४९
सा बुभ्रैद्युभिनीं बृहद् उपोप श्रवांसि श्रवः । दधीत वृत्रतूर्यै	१४५०
अश्वमिद् गां रथप्रां त्वेषमिन्द्रं न सत्पतिम् ।	
यस्य श्रवांसि तूर्वथ पन्येषन्यं च कृष्टयः	१४५१
यं त्वा गोपवनो गिरा चनिष्ठग्ने अङ्गिरः । स पावक श्रुधी हवम्	१४५२
यं त्वा जनास ईळते सबाधो वाजसातये । स बोधि वृत्रतूर्यै	१४५३

॥ १५९ ॥ ( ऋ० ८। ८४। १-९ ) ( १४५४-१४६२ ) उशना काव्यः । गायत्री ।

प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुपे मित्रमिव प्रियम् । अग्निं रथं न वेद्यम्	१४५४
कृविमिव प्रचेतसं यं देवासो अधं द्विता । नि मर्त्येष्वदुधुः	१४५५
त्वं यविष्ठ दाशुषो नूः पाहि शृणुधी गिरः । रक्षां तोकमुत त्मना	१४५६
कयां ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम् । वराय देव मन्यवै	१४५७
दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो । कर्तुं वोच इदं नमः	१४५८
अधा त्वं हि नस् करो विश्वा अस्मभ्यं सुक्षितीः । वाजद्रविणसो गिरः	१४५९
कस्य नूनं परीणसो धियो जिन्वसि दंपते । गोषाता यस्य ते गिरः	१४६०
तं मर्जयन्त सुक्रतुं पुरोयावानमाजिषु । स्वेषु क्षयेषु वाजिनम्	१४६१
क्षेति क्षेमेभिः साधभिर नक्रियं घ्नन्ति हन्ति यः । अग्ने सुवीर एधते	१४६२

॥ १६० ॥ ( ऋ० ८ । १०२ । १ २२ )

१४६३-१४८४ प्रयोगो भार्गवः, पावकोऽग्निर्वाहस्पत्यो वा, गृहपति-यविष्ठौ सहसः पुत्रौ अन्यतरो वा ।

त्वमग्ने बृहद् वयो	दधासि देव दाशुषे	। कविर्गृहपतिर्युवा	१४६३
स न ईळानया सह	देवाँ अग्ने दुवस्युवा	। चिकिद् विभानवा ब्रह्म	१४६४
त्वया ह स्विद् युजा वयं	चोदिष्टेन यविष्ठ्य	। अभि ष्मो वार्जसातये	१४६५
और्वभृगुवच्छुचिम्	अमवानवदा हुवे	। अग्निं समुद्रवाससम्	१४६६
हुवे वातस्वनं कवि	पर्जन्यक्रन्धं सहः	। अग्निं समुद्रवाससम्	१४६७
आ सवं सवितुर्यथा	भर्गस्येव भुजिं हुवे	। अग्निं समुद्रवाससम्	१४६८
अग्निं वो वृधन्तम्	अध्वराणां पुरुतमम्	। अच्छा नत्रे सहस्वते	१४६९
अयं यथा न आभुवत्	त्वष्टां रूपेव तक्ष्या	। अस्य क्रत्वा यशस्वतः	१४७०
अयं विश्वा अभि श्रियो	ऽग्निदेवेषु पत्यते	। आ वाजैरुप नो गमत्	१४७१
विश्वेषामिह स्तुहि	होतृणां यशस्तमम्	। अग्निं यज्ञेषु पूर्यम्	१४७२
शीरं पावकशोचिषं	ज्येष्ठो यो दमेष्वा	। दीदाय दीर्घश्रुत्तमः	१४७३
तमर्वन्तं न सानसि	गृणीहि विप्र शुष्मिणम्	। मित्रं न यातयज्जनम्	१४७४
उप त्वा जामयो गिरो	देदिशतीर्हविष्कृतः	। वायोरनीके अस्थिरन्	१४७५
यस्य त्रिधात्ववृतं	बर्हिस् तस्थावसंदिनम्	। आपश् चिन्नि दधा पदम्	१४७६
पदं देवस्य मीहुषो	ऽनाधृष्टाभिरूतिभिः	। भद्रा सूर्ये इवोपदृक्	१४७७
अग्ने घृतस्य धीतिभिस्	तेपानो देव शोचिषा	। आ देवान् वक्षि यक्षि च	१४७८
तं त्वाजनन्त मातरः	कवि देवासो अङ्गिरः	। हव्यवाहममर्त्यम्	१४७९
प्रचेतसं त्वा कवे	ऽग्ने दूतं वरेण्यम्	। हव्यवाहं नि षेदिरे	१४८०
नहि मे अस्त्यध्या	न स्वधितिर्वनन्वति	। अथैतादृग् भंगामि ते	१४८१
यदग्ने कानि कानि चिद्	आ ते दारूणि दुधमसि	। ता जुपस्व यविष्ठ्य	१४८२
यदस्युपजिह्विका	यद् वम्रो अतिसर्पति	। सर्वं तदस्तु ते घृतम्	१४८३
अग्निमिन्धानो मनसा	धियं सचेत् मर्त्यः	। अग्निमीधे विवस्वभिः	१४८४

॥ १६१ ॥ ऋग्वेदस्य मण्डलं १० । सूक्तं १ । मन्त्राः १-७ )

[ १४८५—१५३३ ] त्रित आप्त्यः । त्रिष्टुप् ।

अग्ने बृहन्नृषसामूध्वो अस्थान् निर्जगन्वान् तमसो ज्योतिषागात् ।

अभिर्भानुना रुशता स्वङ्ग आ जातो विश्वा सन्नान्यप्राः

१४८५

स जातो गर्भो असि रोदस्योर्	अग्ने चारुर्विभृत ओषधीषु ।	
चित्रः शिशुः परि तमांस्यक्तून्	प्र मातृभ्यो अधि कर्निक्रदद् गाः	१४८६
विष्णुरिस्था परममस्य विद्वान्	जातो बृहन्नभि पाति तृतीयम् ।	
आसा यदस्य पयो अकृतं स्वं	सचैतसो अभ्यर्चन्त्यत्र	१४८७
अतं उ त्वा पितुभृतो जनित्रीर्	अन्नावृधं प्रति चरन्त्यन्नैः ।	
ता इ प्रत्येषि पुनरन्यरूपा	असि त्वं विक्षु मानुषीषु होता	१४८८
होतारं चित्ररथमध्वरस्य	यज्ञस्ययज्ञस्य केतुं रुशन्तम् ।	
प्रत्यर्धि देवस्यदेवस्य मद्वा	श्रिया त्वग्निमर्तिथि जनानाम्	१४८९
स तु वस्त्राण्यध पेशनानि	वसानो अग्निर्नाभा पृथिव्याः ।	
अरुषो जातः पद इळायाः	पुरोहितो राजन् यक्षीह देवान्	१४९०
आ हि द्यावापृथिवी अग्न उभे	सदा पुत्रो न मातरा ततन्थ ।	
प्र याह्यच्छोशतो यविष्ठ	अथा वह सहस्येह देवान्	१४९१

॥ १६२ ॥ ( ऋ० १० । २ । १-७ )

पिप्रीहि देवा उशतो यविष्ठ	विद्राँ ऋतूँऋतुपते यजेह ।	
ये दैव्या ऋत्विजस् तेभिरग्ने	त्वं होतृणामस्यायजिष्ठः	१४९२
वेषि होत्रमुत पोत्रं जनानां	मन्धातासि द्रविणोदा ऋतावा ।	
स्वाहा वयं कृणवामा हवीषि	देवो देवान् यजत्वग्निरहेन्	१४९३
आ देवानामपि पन्थामगन्म	यच्छक्रवाम तदनु प्रवोह्युम् ।	
अग्निविद्वान् त्स यजात् सेदु होता	सो अध्वरान् त्स ऋतून् कल्पयाति	१४९४
यद् वो वयं प्रमिनाम व्रतानि	विदुषां देवा अविदुष्टरासः ।	
अग्निष्टद् विश्वमा पृणाति विद्वान्	येभिर्देवाँ ऋतुभिः कल्पयाति	१४९५
यत् पाकत्रा मनसा दीनदक्षा	न यज्ञस्य मन्वते मर्त्यासः ।	
अग्निष्टद्वोता ऋतुविद् विज्ञानन्	यजिष्ठो देवाँ ऋतुशो यजाति	१४९६
विश्वेषां ह्यध्वराणामनीकं	चित्रं केतुं जनिता त्वा जजान ।	
स आ यजस्व नृवतीरनु क्षाः	स्पार्हा इषः क्षुमतीँ विश्वर्जन्याः	१४९७

यं त्वा द्यावापृथिवी यं त्वापस् त्वष्टा यं त्वा सुजनिमा जजान ।  
पन्थामनु प्रविद्वान् पितृयाणं द्युमदग्ने समिधानो वि भाहि १४९८

॥ १६३ ॥ ( ऋ० १० । ३ । १-७ )

इनो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमां अदर्शि ।  
चिकिद् वि भाति भासा बृहता असिक्रीमेति रुशतीमपाजन् १४९९

कृष्णां यदेनीमभि वर्षसा भूज् जनयन् योषां बृहतः पितुर्जाम् ।  
ऊर्ध्वं भानुं सूर्यस्य स्तभायन् दिवो वसुभिररतिर्वि भाति १५००

भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात् ।  
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन् रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात् १५०१

अस्य यामासो बृहतो न वृशन् इन्धाना अग्नेः सख्युः शिवस्य ।  
ईड्यस्य वृष्णो बृहतः स्वासो भामासो यामन्नक्तवशं चिकिरे १५०२

स्वना न यस्य भामासः पवन्ते रोचमानस्य बृहतः सुदिवः ।  
ज्येष्ठेभिर्यस् तेजिष्ठैः क्रीळुमद्भिर् वर्षिष्ठेभिर्भानुभिर्नक्षति द्याम् १५०३

अस्य शुष्मासो ददृशानपवेर् जेहमानस्य स्वनयन् नियुद्धिः ।  
प्रलेभिर्यो रुशद्भिर्देवतमो वि रेभद्भिररतिर्भाति विभ्वा १५०४

स आ वक्षि महि न आ च सत्सि दिवस्पृथिव्योररतिर्युवत्योः ।  
अग्निः सुतुकः सुतुकैभिरश्वै रभस्वद्भ्यो रभस्वाँ एह गम्याः १५०५

॥ १६४ ॥ ( ऋ० १० । ४ । १-७ )

प्र ते यक्षि प्र ते इयमि मन्म भुवो यथा वन्द्यो नो हवेषु ।  
धन्वन्निव प्रपा असि त्वमग्न इयक्षवे पूरवे प्रत्न राजन् १५०६

यं त्वा जनासो अभि संचरन्ति गाव उष्णमिव ब्रजं यविष्ठ ।  
दूतो देवानामसि मर्त्यानाम् अन्तर्महाँश् चरसि रोचनेन १५०७

शिशुं न त्वा जेन्यं वर्धयन्ती माता विभर्ति सचनस्यमाना ।  
धनोरधि प्रवता यासि हर्यञ् जिगीषसे पशुरिवावसृष्टः १५०८

मूरा अमूर न वयं चिकित्वो महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से ।  
शयै वद्विश् चरति जिह्यादन् रेरिह्यते युवति विश्पतिः सन् १५०९

कृचिजायते सनयासु नव्यो वने तस्थौ पलितो धूमकेतुः । अस्नातापो वृषभो न प्र वेति सचेतसो यं प्रणयन्त मर्तीः	१५१०
तनूत्यजेव तस्करा वनर्गू रशनाभिर्दशभिरभ्यधीताम् । इयं ते अग्ने नव्यसी मनीषा युक्ष्वा रथं न शुचयद्भिरङ्गैः	१५११
ब्रह्म च ते जातवेदो नमश् च इयं च गीः सदामिद् वर्धनी भूत् । रक्षां णो अग्ने तनयानि तोका रक्षोत नस् तन्वोऽे अप्रयुच्छन्	१५१२

॥ १६५ ॥ ( ऋ० १० । ५ । १-७ )

एकः समुद्रां धरुणां रयीणां अस्मद्भूदो भूरिजन्मा त्रि चष्टे । सिषक्त्वूर्धनिण्योरुपस्थ उत्संस्य मध्ये निहितं पदं वेः	१५१३
समानं नीलं वृषणो वसानाः सं जग्मिरे महिषा अर्वतीभिः । ऋतस्य पदं क्वयो नि पान्ति गुहा नामानि दाधिरे पराणि	१५१४
ऋतायिनीं मायिनीं सं दधाते मित्वा शिशुं जज्ञतुर्वर्धयन्ती । विश्वस्य नाभिं चरतो ध्रुवस्य क्वेश् चित् तन्तुं मनसा वियन्तः	१५१५
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातम् इषो वाजाय प्रदिवः सचन्ते । अधीवासं रोदसी वावसाने घृतैरन्नैर्वावृधाते मधूनाम्	१५१६
सप्त स्वसररुषीर्वावशानो विद्वान् मध्व उज्जभारा दृशे कम् । अन्तर्येमे अन्तरिक्षे पुराजा इच्छन् वत्रिमविदत् पूषणस्य	१५१७
सप्त मर्यादाः क्वयस् ततक्षुस् तासामेकामिदुभ्यंहुरो गात् । आयोर्हे स्कम्भ उपमस्य नीले पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ	१५१८
असच्च सच्च परमे व्योमन् दक्षस्य जन्मन्नदितेरुपस्थै । अग्निर्हे नः प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं आयुनि वृषभश् च धेनुः	१५१९

॥ १६६ ॥ ( ऋ० १० । ६ । १-७ )

अयं स यस्य शर्मन्नवोभिर् अग्नेरेधते जरिताभिष्टौ । ज्येष्ठैभिर्यो भानुभिर्ऋषूणां पर्येति परिवीतो विभावा	१५२०
यो भानुभिर्विभावा विभाति अग्निदेवेभिर्ऋतावाजस्रः । आ यो विवार्य सख्या सखिभ्यो ऽपरिहृतो अत्यो न सप्तिः	१५२१

ईशे यो विश्वस्या देववीतेर् ईशे विश्वायुरुषसो व्युष्टौ । आ यस्मिन् मना हवीष्यधौ अरिष्टरथः स्कभ्राति शूषैः	१५२२
शूषेभिर्वृधो जुषाणो अकैर् देवाँ अच्छा रघुपत्वा जिगाति । मन्द्रो होता स जुह्वाइ यजिष्ठः संमिक्षो अगिरा जिघति देवान्	१५२३
तमुस्त्रामिन्द्रं न रेजमानम् अग्निं गीभिर्नमोभिरा कृणुध्वम् । आ यं विप्रासो मतिभिर्गृणन्ति जातवेदसं जुह्वं सहानाम्	१५२४
सं यस्मिन् विश्वा वसूनि जग्मुर् वाजे नाश्वाः मप्तीवन्त एवैः । अस्मे ऊतीरिन्द्रवाततमा अर्वाचीना अग्र आ कृणुष्व	१५२५
अधा ह्ये महा निषद्या सद्यो जज्ञानो हव्यो वभूथ । तं ते देवासो अनु केतमायन् अधावर्धन्त प्रथमाम् ऊमाः	१५२६

॥ १६७ ॥ ( ऋ० १०।७।१-७ )

स्वस्ति नो दिवो अग्ने पृथिव्या विश्वायुर्धेहि यजथाय देव । सचेमहि तव दस्म प्रकैतर् उरुण्या ण उरुभिर्देव शंसैः	१५२७
इमा अग्ने मतयस् तुभ्यं जाता गोभिरश्वैरभि गृणन्ति राधः । यदा ते मतो अनु भोगमानड् वमो दधानो मतिभिः सुजात	१५२८
अग्निं मन्ये पितरमग्निमापिम् अग्निं भ्रातरं सदामित् सखायम् । अग्नेरनीकं बृहतः संपर्य दिवि शुक्रं यजतं सूर्यस्य	१५२९
सिध्ना अग्ने धियो अस्मे सनुत्रीर् यं त्रायसे दम् आ निन्यहोता । ऋतावा स रोहिदश्वः पुरुक्षुर् द्युभिरस्मा अहभिर्नाममस्तु	१५३०
द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं प्रत्नमृत्विजमध्वरस्यं जारम् । बाहुभ्यामग्निमायवोऽजनन्त विश्वु होतारं न्यसादयन्त	१५३१
स्वयं यजस्व दिवि देव देवान् किं ते पाकः कृणवदप्रचेताः । यथार्यज ऋतुभिर्देव देवान् एवा यजस्व तन्वं सुजात	१५३२
भवा नो अग्नेऽवितोत गोपा भवा वयस्कृदुत नो वयोधाः । रास्वा च नः सुमहो हव्यदाति त्रास्वोत नस् तन्वोइ अप्रयुच्छन्	१५३३



॥ १६८ ॥ ( ऋ० १०।८।१-६ ) [ १५३४-१५३९ ] त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः ।

प्र केतुना बृहता यात्यग्निर् आ रोदसी वृषभो रौरवीति ।	
दिवश् चिदन्ताँ उपमाँ उदानळ् अपामुपस्थे महिषो ववर्ध	१५३४
मुमोद गर्भो वृषभः ककुब्जान् अस्त्रेमा वत्सः शिमीवाँ अरावीत् ।	
स देवतात्युद्यंतानि कृण्वन्त् स्वेषु क्षयेषु प्रथमो जिगाति	१५३५
आ यो मूर्धानं पित्रोरग्ध्रं न्यध्वरे दधिरे सरो अर्णः ।	
अस्य पत्मन्नरुषीरश्वबुधा ऋतस्य योनौ तन्वो जुषन्त	१५३६
उषउषो हि वसो अग्रमेधि त्वं यमयौरभवो विभावा ।	
ऋताय सप्त दधिषे पदानि जनयन् मित्रं तन्वेडे स्वायै	१५३७
भुवश् चक्षुर्मह ऋतस्य गोपा भुवो वरुणो यदृताय वेषि ।	
भुवो अपां नपाजातवेदो भुवो दूतो यस्य हव्यं जुजोषः	१५३८
भुवो यज्ञस्य रजसश् च नेता यत्रा नियुद्धिः सचसे शिवाभिः ।	
दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षा जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्	१५३९

॥ १६९ ॥ ( ऋ० १०।११।१-९ ) [ १५४०-१५५६ ] हविर्धान आङ्गिः । जगती, १५४६-४८ त्रिष्टुप् ।

वृषा वृष्णे दुदुहे दोहसा दिवः पर्यासि यद्वो अदितेरदाभ्यः ।	
विश्वं स वेदु वरुणो यथा धिया स यज्ञियो यजतु यज्ञियाँ ऋतून्	१५४०
रपद् गन्धर्वीरप्या च योषणा नदस्य नादे परि पातु मे मनः ।	
इष्टस्य मध्ये अदितिर्नि धातु नो आता नो ज्येष्ठः प्रथमो वि वोचति	१५४१
सो चिन्नु भद्रा क्षुमती यशस्वती उषा उवास मनवे स्वर्वती ।	
यदीमुशन्तमुशतामनु ऋतुम् अग्निं होतारं विदथाय जीजनन्	१५४२
अध त्वं द्रप्सं विभ्वं विचक्षणं विराभरदिषितः इयेनो अध्वरे ।	
यदी विशो वृणते दुस्ममारी अग्निं होतारमध धीरजायत	१५४३
सदासि रण्वो यवसेव पुष्यते होत्राभिरग्ने मनुषः स्वध्वरः ।	
विग्रस्य वा यच्छशमान उक्थयं वाजं ससवाँ उपयासि भूरिभिः	१५४४
उदीरय पितरां जार आ भगम् इयक्षति हर्यतो हृत् इष्यति ।	
विवक्ति वाङ्गिः स्वपस्यते मखस् तविष्यते असुरो वेपते मती	१५४५

यस् ते अग्ने सुमतिं मर्तो अक्षत् सहसः सूनो अति स प्र शृण्वे । इषं दधानो वहमानो अश्वैर् आ स द्युमां अमवान् भूषति द्यन्	१५४६
यदग्न एषा समितिर्भवाति देवी देवेषु यजता यजत्र । रत्नां च यद् विभजासि स्वधावो भागं नो अत्र वसुमन्तं वीतात्	१५४७
श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा रथममृतस्य द्रवितुम् । आ नो वह रोदसी देवपुत्रे मार्किदेवानामपं भूरिह स्याः	१५४८

॥ १७० ॥ ( ऋ० १० । १२ । १-९ ) त्रिष्टुप् ।

द्यावां ह क्षामां प्रथमे ऋतेन अभिश्रावे भवतः सत्यवाचां । देवो यन्मर्तान् यजथाय कृण्वन् सीदद्भोतो प्रत्यङ् स्वमसुं यन्	१५४९
देवो देवान् परिभूर्ऋतेन वहा नो हव्यं प्रथमश् चिकित्वान् । धूमकैतुः समिधा भाक्रजीको मन्द्रो होता नित्यो वाचा यजीयान्	१५५०
स्वावृग् देवस्यामृतं यदी गोर् अतो ज्ञातासो धारयन्त उर्वी । विश्वे देवा अनु तत् ते यजुर्गुर् दुहे यदेनी दिव्यं घृतं वाः	१५५१
अर्चामि वां वर्धायापो घृतस्नु द्यावाभूमी शृणुतं रोदसी मे । अहा यद् द्यावोऽसुनीतिमयन् मध्वा नो अत्र पितरां शिशीताम्	१५५२
किं स्वित्तो राजा जगृहे कदस्य अति व्रतं चक्रमा को वि वेद । मित्रश् चिद्वि ष्मा जुहुराणो देवाञ् लोको न यातामपि वाजो अस्ति	१५५३
दुर्मन्वत्रामृतस्य नाम सलक्ष्मा यद् विष्टुरूपा भवाति । यमस्य यो मनवते सुमन्तु अग्ने तमृष्व पाह्यप्रयुच्छन्	१५५४
यस्मिन् देवा विदथे मादयन्ते विवस्वतः सदने धारयन्ते । सूर्ये ज्योतिरदधुर्मास्यक्तून् परि द्योतनिं चरतो अर्जसा	१५५५
यस्मिन् देवा मन्मनि संचरन्ति अपीच्येह न वयमस्य विद्म । मित्रो नो अत्रादितिरनागान्त् सविता देवो वरुणाय वोचत्	१५५६

श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे० । (१५४८)

॥ १७१ ॥ ( ऋ० १०। १६। १—१४ )

[ १५५७-१५७० ] दमनो यामायनः । त्रिष्टुप्, १५६७-७० अनुष्टुप् ।

मैनमग्ने वि दहो माभि शौचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम् ।	
यदा शृतं कृणवो जातवेदो ऽथेमेनं प्र हिणुतात् पितृभ्यः	१५५७
शृतं यदा करसि जातवेदो ऽथेमेनं परिं दत्तात् पितृभ्यः ।	
यदा गच्छात्यसुनीतिमेताम् अथा देवानां वशनीर्भवाति	१५५८
सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वार्तामात्मा द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा ।	
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितम् ओषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः	१५५९
अजो भागस् तपसा तं तपस्व तं ते शोचिस् तपतु तं ते अर्चिः ।	
यास् ते शिवास् तन्वो जातवेदुस् तामिर्वहेनं सुकृतांस्तु लोकम्	१५६०
अव सृज पुनरग्ने पितृभ्यो यस् त आहुतश् चरति स्वधाभिः ।	
आयुर्वसान उर्ष वेतु शेषः सं गच्छतां तन्वा जातवेदः	१५६१
यत् ते कृष्णः शकुन आतुतोर्द पिपीलः सर्प उत वा श्वार्पदः ।	
अग्निष्टद् विश्वादगदं कृणोतु सोमश् च यो ब्राह्मणां आविवेश	१५६२
अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्णुष्व पीवसा मेदसा च	
नेत् त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हषाणो दुधृग् विधृक्ष्यन् पर्यङ्ख्याते	१५६३
इममग्ने चमसं मा वि जिह्वरः प्रियो देवानामुत सोम्यानाम् ।	
एष यश् चमसो देवपानस् तस्मिन् देवा अमृता मादयन्ते	१५६४
ऋव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः ।	
इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन्	१५६५
यो अग्निः ऋव्यात् प्रविवेश वो गृहम् इमं पश्यभितरं जातवेदसम् ।	
तं हरामि पितृयज्ञाय देवं स घर्माभिन्वात् परमे सधस्थे	१५६६
यो अग्निः ऋव्यवाहनः पितृन् यक्षदतावृधः ।	
प्रेतु हव्यानि वोचति देवेभ्यश् च पितृभ्य आ	१५६७
उशन्तस् त्वा नि धीमहि उशन्तः समिधीमहि ।	
उशन्तुशत आ वह पितृन् हविषे अन्वे	१५६८

यं त्वमग्ने समदहस् तमु निर्वापया पुनः ।	
क्रियाम्बवत्र रोहतु पाकदूर्वा व्यल्कशा	१५६९
शीतिके शीतिकावति ह्लादिके ह्लादिकावति ।	
मण्डूक्यारे सु सं गम इमं स्वर्गिर्हर्षय	१५७०

॥ १७२ ॥ ( ऋ० १० । २० । १-१० )

[ १५७१-१५८८ ] विमद ऐन्द्रः, प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा वासुकः । गायत्री, १५७१ एकपदा विराट् ( एष मन्त्रः शान्त्यर्थः ), १५७२ अनुष्टुप्, १५७९ विगट्, १५८० त्रिष्टुप् ।

भद्रं नो अपि वातय मनः	१५७१
अग्निमीळे भुजां यविष्ठं शासा मित्रं दुर्धरीतुम् ।	
यस्य धर्मन् त्स्वरेनीः सपर्यन्ति मातुरूधः	१५७२
यमासा कृपनीळं भासाकेतुं वर्धयन्ति । भ्राजते श्रेणिदन्	१५७३
अर्यो विशां गातुरेति प्र यदानद् दिवो अन्तान् । कविरभ्रं दीघानः	१५७४
जुषद्द्रव्या मानुषस्य ऊर्ध्वस् तस्थावृभ्वा यज्ञे । मिन्वन् त्सन्नं पुर एति	१५७५
स हि क्षेमो हविर्यज्ञः श्रुष्टीदस्य गातुरेति । अग्निं देवा वाशीमन्तम्	१५७६
यज्ञासाहं दुवं इषे ऽग्निं पूर्वस्य शेवस्य । अद्रेः सनुमायुमाहुः	१५७७
नरो ये के चास्मदा विश्वेत् ते वाम आ स्युः । अग्निं हविषा वर्धन्तः	१५७८
कृष्णः श्वेतोऽरुषो यामो अस्य ब्रध्न क्रज्ज उत शोणो यशस्वान् ।	
हिरण्यरूपं जनिता जजान	१५७९
एवा तै अग्ने विमदो मनीषाम् ऊर्जो नपादुमृतेभिः सजोषाः ।	
गिर आ वक्षत् सुमतीरियान इषमूर्जे सुक्षितिं विश्वमाभाः	१५८०

॥ १७३ ॥ ( ऋ० १० । २१ । १-८ ) आस्तारपङ्क्तिः ( ८+८+१२+१२ ) ।

आग्निं न स्ववृक्तिभिर् होतां त्वा वृणीमहे ।	
यज्ञाय स्तीर्णबर्हिषे वि वो मदे शीरं पावकशोचिषं विवक्षसे	१५८१
त्वामु ते स्वाभुवः शुम्भन्त्यश्वराधसः ।	
वेति त्वामुपसेचनी वि वो मदु ऋजीतिरग्न आहुतिविवक्षसे	१५८२
त्वे धर्माण आसते जुह्वभिः सिञ्चतीरिव ।	
कृष्णा रूपाण्यर्जुना वि वो मदे विश्वा अधि अग्नयो धिषे विवक्षसे	१५८३

यमग्ने मन्यसे रयिं सहसावन्नमर्त्य ।	
तमा नो वाजसातये वि वो मदे यज्ञेषु चित्रमा भरा विवक्षसे	१५८४
अग्निर्जातो अथर्वणा विदद् विश्वानि काव्या ।	
भुवद् दूतो विवस्वतो वि वो मदे प्रियो यमस्य काम्यो विवक्षसे	१५८५
त्वां यज्ञेष्वीळते ऽग्ने प्रयत्यध्वरे ।	
त्वं वसनि काम्या वि वो मदे विश्वा दधासि दाशुषे विवक्षसे	१५८६
त्वां यज्ञेष्वृत्विजं चारुमग्ने नि वेदिरे ।	
घृतप्रतीकं मनुषो वि वो मदे शुक्रं चेतिष्ठमक्षभिर्विवक्षमे	१५८७
अग्ने शुक्रेण शोचिषा उरु प्रथयसे बृहत्	
अभिक्रन्दन् वृषायसे वि वो मदे गर्भं दधासि जामिषु विवक्षसे	१५८८

॥ १७४ ॥ (ऋ० १० । ४५ । १-२२) [१५८९-१६१०] वत्सप्रिर्भालन्दनः । त्रिष्टुप् ।

दिवस्परिं प्रथमं जज्ञे अग्निर् अस्मद् द्वितीयं परिं जातवेदाः ।	
तृतीयमप्सु नृमणा अजस्रम् इन्धान एनं जरते स्वाधीः	१५८९
विद्वा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्वा ते धाम विभृता पुरुत्रा ।	
विद्वा ते नाम परमं गुहा यद् विद्वा तमुत्सं यत आजगन्थ	१५९०
समुद्रे त्वां नृमणां अप्सवन्तर नृचक्षा ईधे दिवो अग्न ऊर्धन् ।	
तृतीयं त्वा रजसि तस्थिवांसम् अपामुपस्थे महिषा अवर्धन्	१५९१
अक्रन्ददुग्धिः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद् वीरुधः समञ्जन् ।	
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अरुयद् आ रोदसी भानुना भात्यन्तः	१५९२
श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्थणः सोमगोपाः ।	
वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा वि भात्यग्र उषसामिधानः	१५९३
विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ।	
वीळं चिदद्रिमभिनत् परायन् जना यदग्निमयजन्त पञ्च	१५९४
उशिक् पावको अरतिः सुमेधा मर्तेष्वग्निर्मृतो नि धायि ।	
इयति धूममरुषं भरिभ्रद् उच्छुक्तेण शोचिषा द्यामिनक्षन्	१५९५

दृशानो रुक्म उर्विया व्यद्यौद् दुर्मर्षमार्युः श्रिये रुचानः । अभिरमृतौ अभवद् वयौभिर् यदेनं द्यौर्जनयत् सुरेताः	१५९६
यस् ते अद्य कृणवद् भद्रशोचे ऽपुपं देव घृतवन्तमग्ने । प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छ अभि सुभ्रं देवभक्तं यविष्ठ	१५९७
आ तं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थउक्थ आ भज शस्यमाने । प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति उजातेन भिनद्दुज्जित्वैः	१५९८
त्वामग्ने यजमाना अनु द्यून् विश्वा वसुं दधिरे वार्याणि । त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वत्रुः	१५९९
अस्ताव्यग्निर्नरां सुशेवो वैश्वानर ऋषिभिः सोमगोपाः । अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम्	१६००

॥ १७५ ॥ ( ऋ० १० । ४६ । १-१० )

प्र होता जातो महान् नभोविन् नृषद्वा सीददपामुपस्थे । दधिर्यो धायि स ते वयसि यन्ता वसूनि विधते तनूपाः	१६०१
इमं विधन्तो अपां सधस्थे पशुं न नष्टं पदैरनु ग्मन् । गुहा चतन्तमुशिजो नमोभिर् इच्छन्तो धीरा भृगवोऽविन्दन्	१६०२
इमं त्रितो भूर्येविन्ददिच्छन् वैभूवसो मूर्धन्यङ्घोयाः । स शेवृधो जात आ हर्म्येषु नाभिर्युवा भवति रोचनस्य	१६०३
मन्द्रं होतारमुशिजो नमोभिः प्राञ्चं यज्ञं नेतारमध्वराणाम् । विशामकृष्वभरति पावकं हव्यवाहं दधतो मानुषेषु	१६०४
प्र भूर्जयन्तं महां विपोधां मूरा अमूरं पुरां दुर्माणम् । नयन्तो गर्भं वनां धियं धुर् हिरिश्मश्रुं नार्वीणं धनर्चम्	१६०५
नि पस्त्यासु त्रितः स्तभूयन् परिवीतो योनौ सीददुन्तः । अतः संगृभ्यां विशां दमूना विधर्मणायन्त्रैरीयते नृन्	१६०६
अस्याजरासो दुमामरित्रा अर्चद्भूमासो अग्रयः पावकाः । श्चितीचयः श्वात्रासो भुरण्यवो वनर्षदो वायवो न सोमाः	१६०७

प्र जिह्वया भरते वेपों अग्निः प्र वयुनानि चेतसा पृथिव्याः ।  
तमायवः शुचयन्तं पावकं मन्द्रं होतारं दधिरे यजिष्ठम् १६०८

द्यावा यमग्निं पृथिवीं जनिष्टाम् आपस् त्वष्टा भृगवो यं सहोभिः ।  
ईच्छेन्न्यं प्रथमं मातरिश्वा देवाम् ततक्षुर्मनवे यजत्रम् १६०९

यं त्वा देवा दधिरे हव्यवाहं पुरुस्पृहो मानुषासो यजत्रम् ।  
स यामन्त्रे स्तुवते वयो धाः प्र देवयन् यशसः सं हि पूर्वीः १६१०

॥ १७६ ॥ ( ऋ० १० । ५२ । १, ३, ५, ७, ९, ) [ १६११-१६२४ ] देवाः ।

महत् तदुत्वं स्थावरं तदासीद् येनाविष्टितः प्रविवेशिथापः ।  
विश्वा अपश्यद् बहुधा ते अभ्रे जातवेदस् तन्वो देव एकः १६११

एच्छाम त्वा बहुधा जातवेदः प्रविष्टमग्ने अप्सवोर्षधीषु ।  
तं त्वा यमो अचिकेचित्रमानो दशान्तरुष्यादतिरोचमानम् १६१२

एहि मनुर्देवयुर्यज्रकामो ऽरंकृत्या तमसि क्षेप्यग्ने ।  
सुगान् पथः कृणुहि देवयानान् वहं हव्यानि सुमनस्यमानः १६१३

कुर्मस् त आयुरजरं यदग्ने यथा युक्तो जातवेदो न रिप्याः ।  
अथा वहामि सुमनस्यमानो भागं देवेभ्यो हविषः सुजात १६१४

तव प्रयाजा अनुयाजाश् च केवल ऊर्जस्वन्तो हविषः सन्तु भागाः ।  
तवाग्ने यज्ञोऽयमस्तु सर्वम् तुभ्यं नमन्तां प्रदिशश् चतस्रः १६१५

॥ १७७ ॥ ( ऋ० १० । ५३ । १-३, ६-११ ) जगती, १६१६-१८, १६२१ त्रिष्टुप् ।

यमैच्छाम मनसा सोऽुऽयमागाद् यज्ञस्य विद्वान् परुषश् चिकित्वान् ।  
स नो यक्षद् देवताता यजीयान् नि हि पत्सदन्तरः पूर्वी अस्मत् १६१६

अराग्निं होता निषदा यजीयान् अभि प्रयांसि सुधितानि हि ख्यत् ।  
यजामहै यज्ञियान् हन्त देवाँ ईकामहा ईड्याँ आज्येन १६१७

साध्वीमकर्देववीतिं नो अद्य यज्ञस्य जिह्वामविदाम गुह्याम् ।  
स आयुरागात् सुरभिर्वसानो भद्रामकर्देवहृतिं नो अद्य १६१८

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान् ।  
अनुल्बणं वयत् जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् १६१९

अक्षानहो नह्यतनोत सौम्या	इष्कृणुध्वं रशना ओत पिंशत ।	
अष्टार्वन्धुरं वहताभितो रथं	येन देवासो अनयन्नभि प्रियम्	१६२०
अश्मन्वती रीयते सं रभध्वम्	उत् तिष्ठत् प्र तरता सखायः ।	
अत्रा जहाम ये असन्नशैवाः	शिवान् वयमुत् तरेमाभि वाजान्	१६२१
त्वष्टा माया वैदपसामपस्तमो	बिभ्रत् पात्रा देवपानानि शंतमा ।	
शिशीते नूनं परशुं स्वायसं	येन वृश्वादेतशो ब्रह्मणस्पतिः	१६२२
सतो नूनं कवयः सं शिशीत्	वाशीभिर्याभिरमृताय तक्षथ ।	
विद्वांसः पदा गुह्यानि कर्तन	येन देवासो अमृतत्वमानशुः	१६२३
गर्भे योपामर्दधुर्वत्समासनि	अपीच्येन मनसोत जिह्वया ।	
स विश्वाहा सुमना योग्या अभि	सिपासनिर्वनते कार इजितिम्	१६२४

॥१७८॥ ( ऋ० १० । ६९ । १-१२ ) [१६२५-१६३६] सुमित्रा वाध्यश्वः । त्रिष्टुप्, १६२५, २६ जगती ।

भद्रा अग्नेर्वध्यश्वस्य सदृशो	वामी प्रणीतिः सुरणा उपंतयः ।	
यदी सुमित्रा विशो अग्रं इन्धते	घृतेनाहुतो जरत् दर्विद्युतन्	१६२५
घृतमग्नेर्वध्यश्वस्य वर्धनं	घृतमन्नं घृतम्बस्य मेदनम् ।	
घृतेनाहुत उर्विया वि पप्रथे	सूर्य इव रोचते सर्पिरामुतिः	१६२६
यत् ते मनुयदनीकं सुमित्रः	समीधे अग्ने तदिदं नवीयः ।	
स रेवच्छोच स गिरौ जुषस्व	स वाजं दर्पि स इह श्रवो धाः	१६२७
यं त्वा पूर्वमीळितो वध्यश्वः	समीधे अग्ने स इदं जुषस्व ।	
स नः स्तिपा उत भवा तनूपा	दात्रं रक्षस्व यदिदं ते अस्मे	१६२८
भवा द्युम्नी वाध्यश्वोत गोपा	मा त्वा तारीदभिमातिर्जनानाम् ।	
शूर इव धृष्णुश्च्यवनः सुमित्रः	प्र नु वोचं वाध्यश्वस्य नाम	१६२९
समज्या पर्वत्याइ वसूनि	दामा वृत्राण्यार्या जिगेथ ।	
शूर इव धृष्णुश् च्यवनो जनानां	त्वमग्ने पृतनार्यूरभि ष्याः	१६३०
दीर्घतन्तुर्वहदुक्षायमग्निः	सहस्रस्तरीः शतनीथ ऋभवा ।	
द्युमान् द्युमत्सु नृभिर्मृज्यमानः	सुमित्रेषु दीदयो देवत्सु	१६३१



त्वे धेनुः सुदुघा जातवेदो ऽसश्चतैव समना संवर्धुक् ।	
त्वं नृभिर्दक्षिणावद्भिरग्ने सुमित्रेभिरिध्यसे देवयद्भिः	१६३२
देवाश् चित् ते अमृता जातवेदो महिमानं वाध्यश्च प्र वोचन् ।	
यत् संपृच्छं मानुषीर्विश आयन् त्वं नृभिरजयस् त्वावृधेभिः	१६३३
पितेवं पुत्रमविभरुपस्थे त्वामग्ने वध्यश्चः संपर्यन् ।	
जुषाणो अस्य समिधं यविष्ठ उत पूर्वाँ अवनोर्ब्राधतश् चित्	१६३४
शश्वद्भिर्वध्यश्चस्य शत्रून् नृभिर्जिगाय सुतसोमवद्भिः ।	
समनं चिददहश् चित्रभानो ऽव ब्राधन्तमभिनद् वृधश् चित्	१६३५
अयमग्निर्वध्यश्चस्य वृत्रहा संनकात् प्रेद्धो नमसोपवाक्यः ।	
स नो अजामीरुत वा विजामीन् अभि तिष्ठ शर्धतो वाध्यश्च	१६३६

॥ १७९ ॥ ( ऋ० १० । ७९ । १-७ )

[ १६३७--१६५० ] अग्निः साँचीको, वैश्वानरो वा, (सप्तिर्वाजंभरो वा) । त्रिष्टुप् ।

अपश्यमस्य महतो महित्वम् अमर्त्यस्य मर्त्यासु विक्षु ।	
नाना हनू विभृते सं भरेते असिन्वती बप्सती भूर्यत्तः	१६३७
गुहा शिरो निहितमृधगक्षी असिन्वन्नत्ति जिह्वया वनानि ।	
अत्राण्यस्मै पृङ्भिः सं भरन्ति उत्तानहस्ता नमसार्धिं विक्षु	१६३८
प्र मातुः प्रतरं गुह्यमिच्छन् कुमारो न वीरुधः सर्पदुर्वीः ।	
ससं न पक्वमविदच्छुचन्तं रिरिह्वांसं रिप उपस्थे अन्तः	१६३९
तद् वामृतं रोदसी प्र ब्रवीमि जायमानो मातरा गर्भो अत्ति ।	
नाहं देवस्य मर्त्येश् चिकेत अग्निरङ्ग विचेताः स प्रचेताः	१६४०
यो अस्मा अन्नं तृष्वाद्दधाति आज्यैर्धृतैर्जुहोति पुष्यति ।	
तस्मै सहस्रमक्षभिर्वि चक्षे ऽग्रे विश्वतः प्रत्यङ्कुसि त्वम्	१६४१
किं देवेषु त्यज एनश् चकर्थ अग्रे पृच्छामि नु त्वामविद्वान् ।	
अक्रीळन् क्रीळन् हरिरत्तवेऽदन् वि पर्वशश् चकर्त गार्मिवासिः	१६४२
विषूचो अश्वान् युयुजे वनेजा ऋजीतिभी रशनाभिर्गृभीतान् ।	
चक्षदे मित्रो वसुभिः सुजातः समानृधे पर्वभिर्वावृधानः	१६४३

॥ १८० ॥ ( क्र० १०। ८०। १-७ )

अग्निः सप्तं वाजंभरं ददाति	अग्निर्वीरं श्रुत्यं कर्मनिःष्ठाम् ।	
अग्नी रोदसी वि चरत् समञ्जन्	अग्निर्नारीं वीरकुक्षिं पुरंधिम्	१६४४
अग्नेरमंसः समिदस्तु भद्रा	ऽग्निर्मही रोदसी आ विवेश ।	
अग्निरेकं चोदयत् समत्सु	अग्निर्वृत्राणि दयते पुरूणि	१६४५
अग्निर्ह त्वं जरतः कर्णमाव	अग्निरञ्चो निरदहज्जरूथम् ।	
अग्निरत्रिं घर्म उरुष्यदुन्तर्	अग्निर्नृमेधं प्रजयासृजत् सम्	१६४६
अग्निर्दाद् द्रविणं वीरपेशा	अग्निर्कषिं यः सहस्रां सनोति ।	
अग्निर्दिवि हव्यमा तंतान	अग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा	१६४७
अग्निमुक्थैर्कषयो वि ह्वयन्ते	ऽग्निं नरो यामानि बाधितासः ।	
अग्निं वयो अन्तरिक्षे पतन्तो	ऽग्निः सहस्रा परि याति गोनाम्	१६४८
अग्निं विश ईळते मानुषीर्या	अग्निं मनुषो नहुषो वि जाताः ।	
अग्निर्गान्धर्वी पथ्यामृतस्य	अग्नेर्गव्यूतिर्धृत आ निषत्ता	१६४९
अग्नये ब्रह्म क्रभवंस् ततक्षुर्	अग्निं महामवोचामा सुवृकितम् ।	
अग्ने प्राव जरितारं यविष्ठ	अग्ने महि द्रविणमा यजस्व	१६५०

॥ १८१ ॥ ( क्र० १०। ९१। १-१५ ) [ १६५१-१६६५ ] अरुणो वैतहव्यः । जगती, १६६५ षिष्टुप् ।

सं जागृवद्भिर्जरमाण इध्यते	दमे दमूना इषयन्निळस्पदे ।	
विश्वस्य होता हविषो वरेण्यो	विभ्रुर्विभावा सुषखा सखीयते	१६५१
स दर्शतश्रीरतिथिर्गृहेगृहे	वनेवने शिश्रिये तक्रवीरिव ।	
जनंजनं जन्यो नाति मन्यते	विश आ क्षेति विश्योऽं विशंविशम्	१६५२
सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि सुक्रतुर्	अग्ने कविः काव्येनासि विश्ववित् ।	
वसुर्वसूनां क्षयसि त्वमेक इद्	द्यावा च यानि पृथिवी च पुष्यतः	१६५३
प्रजानन्नग्ने तव योनिमृत्वियम्	इळायास्पदे घृतवन्तमासदः ।	
आ ते चिकित्र उषसामिवेतयो	ऽरेपसः सूर्यस्येव रश्मयः	१६५४
तव श्रियो वर्ष्यस्येव विद्युतश्	चित्राश् चिकित्र उषसां न केतवः ।	
यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च	परि स्वयं चिनुषे अन्नमास्ये	१६५५

तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियं तमापो अग्निं जनयन्त मातरः ।	
तमित् समानं वनिर्नश् च वीरुधो ऽन्तर्धतीश् च सुवते च विश्वहा	१६५६
वातोपधूत इषितो वशां अनु तृषु यदन्ना वेविषद् वितिष्ठसे ।	
आ ते यतन्ते रथ्योऽथ यथा पृथक् शर्धीस्यग्ने अजराणि धक्षतः	१६५७
मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनम् अग्निं होतारं परिभूतमं मतिम् ।	
तमिदमे हविष्या समानमित् तमिन्महे वृणते नान्यं त्वत्	१६५८
त्वामिदत्र वृणते त्वायत्रो होतारमग्ने विदथेषु वेधसः ।	
यद् देवयन्तो दधति प्रयांसि ते हविष्मन्तो मनवो वृक्तवर्हिपः	१६५९
तवाग्ने होत्रं तव पोत्रमृत्वियं तव नेष्टं त्वमग्निदृतायतः ।	
तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयमि ब्रह्मा चासि गृहर्पतिश् च नो दमे	१६६०
यस् तुभ्यमग्ने अमृताय मर्त्यः समिधा दाशदुत वा हविष्कृति ।	
तस्य होता भवसि यासि दूत्यम् उप ब्रूषे यजस्यध्वरीयमि	१६६१
इमा अस्मै मतयो वाचो अस्मदो ऋचो गिरः सुष्टुतयः समग्मत ।	
वसूयवो वमवे जातवेदसे वृद्धासु चिद् वर्धनो यासु चाकनत्	१६६२
इमां प्रत्ताय सुष्टुतिं नवीयसी वोच्यमस्मा उशते शृणोतु नः ।	
भूया अन्तरा हृद्यस्य निस्पृशे जायेव पत्य उशती सुवासाः	१६६३
यस्मिन्नश्वास ऋषभास उक्षणो वशा मेपा अवसृष्टास आहुताः ।	
कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधमे हृदा मतिं जनये चारुमग्नये	१६६४
अहाव्यग्ने हविरास्ये ते सुचीव घृतं चम्बीव सोमः ।	
वाजसनिं रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम्	१६६५

॥ १८२ ॥ ( ऋ० १०।११५।१-९ )

[ १६६६-१६७४ ] उपस्तुतो वार्षिहव्यः । जगती, १६७३ त्रिष्टुप्, १६७४ शकरी ।

चित्र इच्छिशोस् तरुणस्य वक्षथो न यो मातरावप्येति धातवे ।	
अनूधा यदि जीजनदधा च नु ववक्ष सद्यो मर्हि दूत्यम् चरन्	१६६६
अग्निर्ह नाम धायि दन्नपस्तमः सं यो वना युवते भस्मना दता ।	
अभिप्रसुरा जुह्वा स्वध्वर इनो न प्रोथमानो यवसे वृषा	१६६७

तं वो विं न द्रुषदं देवमन्धस इन्दुं प्रोथन्तं प्रवपन्तमर्णवम् । आसा वह्निं न शोचिषा विरग्निं महिब्रतं न सरजन्तमध्वनः	१६६८
वि यस्य ते जयसानस्याजर धक्षोर्न वाताः परि सन्त्यच्युताः । आ रण्वासो युयुधयो न सत्वन् त्रितं नशन्त प्र शिपन्त इष्टये	१६६९
स इदग्निः कण्वतमः कण्वसखा अर्यः परस्यान्तरस्य तरुषः । अग्निः पातु गृणतो अग्निः सूरीन् अग्निर्देदातु तेषामवो नः	१६७०
वाजिन्तमाय सहस्रे सुपित्र्य तृषु च्यवानो अनुं जातवेदसे । अनुद्रे चिद् यो धृषता वरं मते महिन्तमाय धन्वनेदविष्यते	१६७१
एवाग्निर्मतैः सह सूरिभिर् वसुः एवे सहस्रः सूनरो नृभिः । मित्रासो न ये सुधिता ऋतायवो द्यावो न द्युमैरभि सन्ति मानुषान्	१६७२
उजो नपात् सहसावन्निति त्वा उपस्तुतस्य वन्दते वृषा वाक् । त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः	१६७३
इति त्वाग्ने वृष्टिहव्यस्य पुत्रा उपस्तुताम् ऋषयोऽवोचन । तोश्च पाहि गृणतश् च सूरीन् वषट्पळित्यूर्ध्वासो अनक्षन् नमो नम इत्यूर्ध्वासो अनक्षन्	१६७४

॥ १८३ ॥ ( ऋ० १० । १२२ । १-८ ) [१६७५-१६८२] चित्रमहा वासिष्ठः । जगती, १६७५-१६७९ त्रिष्टुप् ।

वसुं न चित्रमहसं गृणीषे वामं शेवमतिथिमद्विपेण्यम् । स रांसते शुरुधो विश्वधायसो ऽग्निहोता गृहपतिः सुवीर्यम्	१६७५
जुषाणो अग्ने प्रति हर्य मे वचो विश्वानि विद्वान् वयुनानि सुक्रतो । घृतनिर्णिग् ब्रह्मणे गातुमेरय तव देवा अजनयन्ननु व्रतम्	१६७६
सप्त धामानि परियन्नमत्यो दाशद् दाशुषे सुकृते मामहस्व । सुवीरेण रयिणाग्ने स्वाभुवा यस् त आनट् समिधा तं जुषस्व	१६७७
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं हविष्मन्त ईळते सप्त वाजिनम् । शृण्वन्तमग्निं घृतपृष्ठमुक्षणं पृणन्तं देवं पृणते सुवीर्यम्	१६७८
त्वं दूतः प्रथमो वरेण्यः स हूयमानो अमृताय मत्स्व । त्वां मर्जयन् मरुतो दाशुषो गृहे त्वां स्तोमेभिर्भृगवो वि रुरुचुः	१६७९

इषं दुहन् त्सुदुघां विश्वधायसं यज्ञप्रिये यजमानाय सुक्रतो । अग्ने घृतस्नुस् त्रिर्ऋतानि दीर्घद् वर्तिर्यज्ञं परियन् त्सुक्रतूयसे	१६८०
त्वामिदस्या उषसो व्युष्टिषु दूतं कृण्वाना अयजन्त मानुषाः । त्वां देवा महयाय्याय वावृधुर् आज्यमग्ने निमृजन्तो अध्वरे	१६८१
नि त्वा वसिष्ठा अह्वन्त वाजिनं गृणन्तो अग्ने विदथेषु वेधसः । रायस्पोषं यजमानेषु धारय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	१६८२

॥ १८४ ॥ ( ऋ० १० । १२४ । १ ) [ १६८३ ] अग्निः । त्रिष्टुप ।

इमं नो अग्र उप यज्ञमेहि पञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम् । असौ हव्यवाळुत नः पुरोगा ज्योगेव दीर्घं तम् आशयिष्ठाः	१६८३
---	------

॥ १८५ ॥ ( ऋ० १० । १४० । १-६ )

[ १६८४-१६८९ ] अग्निः पावकः । सतोबृहती, १६८४-८६ विष्टारपङ्क्तिः, १६८९ उपरिष्ठाज्ज्योतिः ।

अग्ने तव श्रवो वयो महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो । बृहद्भानो शर्वसा वाजमुक्थ्यं दधासि दाशुषे कवे	१६८४
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा अनूनवर्चा उदियषि भानुना । पुत्रो मातरा विचरन्नुपावसि पृणक्षि रोदसी उभे	१६८५
ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुशस्तिभिर् मन्दस्व धीतिभिर्हितः । त्वे इषुः सं दधुर्भूरिर्वपसश् चित्रोतयो वामजाताः	१६८६
इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व जन्तुभिर् अस्मे रायो अमर्त्य । स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि पृणक्षि सानसि क्रतुम्	१६८७
इष्कर्तारमध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्तं राधसो महः । रातिं वामस्य सुभगां महीमिषं दधासि सानसि रयिम्	१६८८
ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतम् अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः । श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा दैव्यं मानुषा युगा	१६८९

॥ १८६ ॥ ( ऋ० १०। १४२। १-८ )

[ १६९०—१६९७ ] १६९०-१६९१ जरिता, १६९२-९३ द्रोणः, १६९४-९५ सारिसृकः, १६९६-९७ स्तम्भमिन्नः  
( एते शाङ्ग्याः ) । त्रिष्टुप्. १६९०-९१ जगती, १६९६—९७ अनुष्टुप् ।

अयमग्ने जरिता त्वे अभूदपि सहसः सूनो नह्यन्यदस्त्याप्यम् ।  
भद्रं हि शर्म त्रिवरुथमस्ति त आरे हिंसानामप दिद्युमा कृधि १६९०  
प्रवत् ते अग्ने जनिमा पितृयतः साचीव विश्वा भुवना न्यृञ्जसे ।  
प्र सप्तयः प्र संनिपन्त नो धियः पुरश् चरन्ति पशुपा इव त्मना १६९१  
उत वा उ परि वृणक्षि वप्सद् वहोरग्र उलपस्य स्वधावः ।  
उत खिल्या उर्वराणां भवन्ति मा ते हेतिं तविषीं चुक्रुधाम १६९२  
यदुद्रतो निवतो यासि वप्सत् पृथगेषि प्रगृधिनीं व सेना ।  
यदा ते वातो अनुवार्ति शोचिर् वप्सव इमश्रु वपसि प्र भूम १६९३  
प्रत्यस्य श्रेणयो ददृश्र एकं नियानं बहवो रथासः ।  
बाहू यदग्ने अनुमर्मृजानो न्यङ्कुत्तानामन्वेषि भूमिम् १६९४  
उत् ते शुष्मा जिहतामुत् ते अचिर् उत् ते अग्ने शशमानस्य वाजाः ।  
उच्छ्वस्व नि नम वर्धमान आ त्वाद्य विश्वे वसवः सदन्तु १६९५  
अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य निवेशनम् ।  
अन्यं कृणुष्वेतः पन्थां तेन याहि वशां अनु १६९६  
आयने ते परायणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः ।  
हृदाश् च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे १६९७

॥ १८७ ॥ ( ऋ० १०। १५०। १-५ )

[ १६९८-१७०२ ] मृळीको वासिष्ठः । बृहती, १७०१-२ उपरिष्टाज्ज्योतिः, १७०१ जगती वा ।

समिद्धश् चित् समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन ।  
आदित्यै रुद्रैर्वसुभिर्न आ गंहि मृळीकार्यं न आ गंहि १६९८  
इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागंहि ।  
मतीसस् त्वा समिधान हवामहे मृळीकार्यं हवामहे १६९९

त्वामुं जातवेदसं विश्ववारं गृणे धिया ।	
अग्ने देवाँ आ वह नः प्रियव्रतान् मृळीकार्यं प्रियव्रतान्	१७००
अग्निर्देवो देवानामभवत् पुरोहितो ऽग्निं मनुष्याः ऋषयः समीधिरे ।	
अग्निं महो धनसातावहं हुवे मृळीकं धनसातये	१७०१
अग्निरग्निं भरद्वाजं गर्विष्ठिरं प्रावन्नः कण्वं त्रसदस्युमाहवे ।	
अग्निं वसिष्ठो हवते पुरोहितो मृळीकार्यं पुरोहितः	१७०२

॥ १८८ ॥ ( ऋ० १० । १५६ । १-५ ) [ १७०३-१७०७ ] केतुराग्नेयः । गायत्री ।

अग्निं हिन्वन्तु नो धियः सप्तिसाशुर्मिवाजिषु । तेन जेष्म धनं धनम्	१७०३
यया गा आकरामहे सेनयाग्ने तवोत्या । तां नो हिन्व मघत्तये	१७०४
आग्नें स्थूरं रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम् । अङ्घ्रिं खं वर्तया पणिम्	१७०५
अग्ने नक्षत्रमजरम् आ सूर्यं रोहयो दिवि । दधज् ज्योतिर्जनेभ्यः	१७०६
अग्नें केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत् । बोधां स्तोत्रे वयो दधत्	१७०७

॥ १८९ ॥ ( ऋ० १० । १७६ । २-४ ) [ १७०८-१७१० ] सूनुराभ्रवः । गायत्री, १७०९-१० अनुष्टुप् ।

प्र देवं देव्या धिया भरता जातवेदसम् । हव्या नो वक्षदानुषक्	१७०८
अयमु ष्य प्र देवयुर् होता यज्ञाय नीयते ।	
रथो न योरभीवृतो घृणीवाञ् चेतति त्मना	१७०९
अयमग्निरुरुष्यति अमृतादिव जन्मनः ।	
सहसश् चित् सहीयान् देवो जीवातवे कृतः	१७१०

॥ १९० ॥ ( ऋ० १० । १८७ । १-५ ) [ १७११-१७१५ ] वत्स आग्नेयः । गायत्री ।

प्राग्नेये वाचमीरय वृषभाय क्षितीनाम् । स नः पर्षदति द्विषः	१७११
यः परस्याः परावतस् तिरो धन्वातिरोचते । स नः पर्षदति द्विषः	१७१२
यो रक्षांसि निजूर्वति वृषां शुक्रेण शोचिषां । स नः पर्षदति द्विषः	१७१३
यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति । स नः पर्षदति द्विषः	१७१४
यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत । स नः पर्षदति द्विषः	१७१५

॥ १९१ ॥ ( ऋ० १ । १९१ । १ ) [ १७१६ ] संवनन आङ्गिरसः । अनुष्टुप् ।

संसमिद् युवसे वृषन् अग्ने विश्वान्यर्य आ ।	
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर	१७१६

## वैश्वानरोऽग्निः ।

॥ १९२ ॥ ( ऋ० १ । ५९ । १-७ ) [१७१७-१७२३] नोधा गौतमः । त्रिष्टुप् ।

व्या इदमे अग्रयस् ते अन्ये त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते ।	
वैश्वानर नाभिरसि क्षितीनां स्थूणैव जना उपमिद् ययन्थ	१७१७
मूर्धा दिवो नाभिरग्निः पृथिव्या अथाभवदरती रोदस्योः ।	
तं त्वा देवासोऽजनयन्त देवं वैश्वानर ज्योतिरिदार्याय	१७१८
आ सूर्ये न रश्मयो ध्रुवासो वैश्वानरे दधिरेऽग्ना वसूनि ।	
या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु या मानुषेष्वसि तस्य राजा	१७१९
बृहती इव सूनवे रोदसी गिरो होता मनुष्योऽङ्गु न दक्षः ।	
स्वर्वते सत्यशुष्माय पूर्वा वैश्वानराय नृतमाय यहीः	१७२०
दिवश् चित् ते बृहतो जातवेदो वैश्वानर प्र रिरिचे महित्वम् ।	
राजा कृष्टीनामसि मानुषीणां युधा देवेभ्यो वरिवश् चकर्थ	१७२१
प्र नू महित्वं वृषभस्य वोचं यं पूरवो वृत्रहणं सचन्ते ।	
वैश्वानरो दस्युमग्निर्जघन्वाँ अधूनोत् काष्ठा अत्र शम्बरं भेत्	१७२२
वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिर् भरद्वाजेषु यजतो विभावा ।	
शातवनेये शतिनीभिरग्निः पुरुणीथे जरते सूनृतावान्	१७२३

॥ १९३ ॥ ( ऋ० १ । ९८ । १-३ ) [१७२४-१७२६] कुन्स आङ्गिरसः ।

वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवनानामभिः ।	
इतो जातो विश्वमिदं वि चष्टे वैश्वानरो यतते सूर्येण	१७२४
पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां पृष्टो विश्वा ओषधीरा विवेश ।	
वैश्वानरः सहसा पृष्टो अग्निः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम्	१७२५
वैश्वानर तव तत् सत्यमस्तु अस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम् ।	
तपो मित्रो वरुणो मामहन्ताम् अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	१७२६



॥ १९४ ॥ ( ऋ० ३।२।१-१५ ) [ १७२७-१७५७ ] विश्वामित्रो गाथिनः । जगती ।

वैश्वानराय धिषणामृतावृधे घृतं न पूतमग्नये जनामसि ।	
द्विता होतारं मनुषश् च वाघतो धिया रथं न कुलिशः समृण्वति	१७२७
स रोचयञ् जनुषा रोदसी उभे स मात्रोरभवत् पुत्र ईडयः ।	
हव्यवाळग्निरजरश् चनोहितो दूळभो विशामतिथिर्विभावंसुः	१७२८
क्त्वा दक्षस्य तरुषो विधर्मणि देवासो अग्निं जनयन्त चित्तिभिः ।	
रुरुचानं भानुना ज्योतिषा महाम् अत्यं न वाजं सनिष्यन्नुपं ब्रुवे	१७२९
आ मन्द्रस्य सनिष्यन्तो वरेण्यं वृणीमहे अह्यं वाजमृग्मियम् ।	
रातिं भृगूणामुशिजं कृविकृतम् अग्निं राजन्तं दिव्येन शोचिषा	१७३०
अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जना वाजश्रवसमिह वृक्तवर्हिषः ।	
यतस्रुचः सुरुचं विश्वदैव्यं रुद्रं यज्ञानां सार्धदिष्टिमपसाम्	१७३१
पावकशोचे तव हि क्षयं परि होतर्यज्ञेषु वृक्तवर्हिषो नरः ।	
अग्ने दुर्व इच्छमानास आप्यम् उपासते द्रविणं धेहि तेभ्यः	१७३२
आ रोदसी अपृणदा स्वर्महज् जातं यदेनमपसो अधारयन् ।	
सो अध्वराय परि णीयते क्विर् अत्यो न वाजसातये चनोहितः	१७३३
नमस्यत हव्यदाति स्वध्वरं दुवस्यत दम्यं जातवेदसम् ।	
रथीकृतस्य बृहतो विचर्षणिर् अग्निर्देवानामभवत् पुरोहितः	१७३४
तिस्रो यहस्य समिधः परिज्मनो ऽग्नेरपुनन्नुशिजो अमृत्यवः ।	
तासामेकामर्द्धुर्मर्त्ये भुजसु लोकमु द्वे उपं जामिर्मायतुः	१७३५
विशां क्विं विष्पतिं मानुषीरिषः सं सीमकृण्वन् त्स्वधितिं न तेजसे ।	
स उद्वतो निवतो याति वेर्विपत् स गर्भमेषु भुवनेषु दीधरत्	१७३६
स जिन्वते जठरेषु प्रजज्ञिवान् वृषां चित्रेषु नानदुन्न सिंहः ।	
वैश्वानरः पृथुपाजा अमर्त्यो वसु रत्ना दयमानो वि दाशुषे	१७३७
वैश्वानरः प्रलथा नाकारुहद् दिवस्पृष्टं भन्दमानः सुमन्मभिः ।	
म पूर्ववज् जनयञ् जन्तवे धनं समानमज्मं पर्येति जागृविः	१७३८

ऋतावानं यज्ञियं विप्रमुक्थ्युम् आ यं दधे मातरिश्वा दिवि क्षयम् ।	
तं चित्रयामं हरिकेशमीमहे सुदीतिमग्निं सुविताय नव्यसे	१७३९
शुचिं न यामन्निषिरं स्वर्दृशं केतुं दिवो रोचनस्थामुषवुधम् ।	
अग्निं मूर्धानं दिवो अप्रतिष्कृतं तमीमहे नमसा वाजिनं बृहत्	१७४०
मन्द्रं होतारं शुचिमद्रयाविनं दमूनसमुक्थ्यं विश्वचर्षणिम् ।	
रथं न चित्रं वपुषाय दर्शतं मनुर्हितं सदमिद् राय ईमहे	१७४१

॥ १२५ ॥ ( ऋ० ३ । ३ । १-११ )

वैश्वानरायं पृथुपाजसे विपो रत्ना विधन्त धरुणेषु गातवे ।	
अग्निर्हि देवाँ अमृतो दुवस्यति अथा धर्माणि सनता न दृदुषत्	१७४२
अन्तर्दूतो रोदसी दस्म ईयते. होता निषत्तो मनुषः पुरोहितः ।	
क्षयं बृहन्तं परिं भूषति द्युभिर् देवेभिरग्निरिपितो धियावंसुः	१७४३
केतुं यज्ञानां विदथस्य सार्धनं विप्रासो अग्निं महयन्त चित्तिभिः ।	
अपांसि यस्मिन्नधि संदधुर्गिरम् तस्मिन् त्सुम्नानि यजमान आ चके	१७४४
पिता यज्ञानामसुरो विपश्चितां विमानमग्निर्व्युनं च वाघताम् ।	
आ विवेश रोदसी भूरिवर्षसा पुरुप्रियो भन्दते धामभिः क्विः	१७४५
चन्द्रमग्निं चन्द्ररथं हरिव्रतं वैश्वानरमप्सुषदं स्वर्विदम् ।	
विगाहं तूर्णिं तविषीभिरावृतं भूर्णिं देवासं इह सुश्रियं दधुः	१७४६
अग्निर्देवेभिर्मनुषश् च जन्तुभिस् तन्वानो यज्ञं पुरुपेशसं धिया ।	
रथीरन्तरीयते सार्धदिष्टिभिर् जीरो दमूना अभिशस्तिचातनः	१७४७
अग्ने जरस्व स्वपत्य आयुनि ऊर्जा पिन्वस्व समिपो दिदीहि नः ।	
वयांसि जिन्व बृहतश् च जागृव उशिग् देवानामसिं सुक्रतुर्विपाम्	१७४८
विशपतिं यद्धमतिथिं नरः सदा यन्तारं धीनामुशिजं च वाघताम् ।	
अध्वराणां चेतनं जातवेदसं प्र शंसन्ति नमसा जूतिभिर्वृधे	१७४९
विभावां देवः सुरणः परिं क्षितीर् अग्निर्विभूव शर्वसा सुमद्रथः ।	
तस्य व्रतानि भूरिपोषिणो वयम् उप भूषेम दम आ सुवृक्तिभिः	१७५०
वैश्वानर तव धामान्या चके यैभिः स्वर्विदभवो विचक्षण ।	
जात आपृणो भुवनानि रोदसी अग्ने ता विश्वा परिभूरसि त्मना	१७५१

वैश्वानरस्य दंसनाभ्यो बृहद् अरिणादेकः स्वपस्यया कविः ।  
उभा पितरा महयन्नजायत अग्निर्द्यावापृथिवी भूरिरेतसा १७५२

॥ १९६ ॥ ( ऋ० ३ । २६ । १-३, ७-८ ) जगती, [ १७५६-१७५७ ] त्रिष्टुप् ।

वैश्वानरं मनसाग्निं निचाय्या हविष्मन्तो अनुषत्यं स्वविदम् ।  
सुदानुं देवं रथिरं वसूयवो गीर्भी रण्वं कुशिकासो हवामहे १७५३

तं शुभ्रमग्निमवसे हवामहे वैश्वानरं मातरिश्वानमुक्थ्यम् ।  
बृहस्पतिं मनुषो देवतातये विप्रं श्रोतारमतिथिं रघुष्यदम् १७५४

अश्वो न क्रन्दञ्जनिभिः समिध्यते वैश्वानरः कुशिकेभिर्युगेयुगे ।  
स नो अग्निः सुवीर्यं स्वश्व्यं दधातु रत्नममृतैषु जागृविः १७५५

अग्निर्गस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् ।  
अर्कस् त्रिधातु रजसो विमानो ऽजसो घर्मो हविरस्मि नाम १७५६

त्रिभिः पवित्रैरपुणोद्ध्यैर्कं हृदा मतिं ज्योतिरनु प्रजानन् ।  
वर्षिष्ठं रत्नमकृत स्वधाभिर् आदिद् द्यावापृथिवी पर्यपश्यत् १७५७

॥ १९७ ॥ ( ऋ० ४ । ५ । १-१५ ) [ १७५८-१७७२ ] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

वैश्वानराय मीहृषे सजोषाः कथा दाशेमाग्रये बृहद् भाः ।  
अननेन बृहता वक्षथेन उप स्तभायदुपमिन्न रोधः १७५८

मा निन्दत य इमां मह्यं रातिं देवो दुदौ मर्त्याय स्वधावान् ।  
पाकाय गृत्सो अमृतो विचेता वैश्वानरो नृतमो यहो अग्निः १७५९

मामं द्विर्वा महि तिग्मभृष्टिः सहस्ररेता वृषभस् तुविष्मान् ।  
पदं न गोरपगूहं विविद्वान् अग्निर्मह्यं प्रेदु बोचन्मनीषाम् १७६०

प्र ताँ अग्निर्बभसत् तिग्मजम्भस् तपिष्ठेन शोचिषा यः सुराधाः ।  
प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धामं प्रिया मित्रस्य चेततो ध्रुवाणि १७६१

अभ्रातरो न योषणो व्यन्तः पतिरिपो न जनयो दुरेवाः ।  
पापासः सन्तो अनृता असत्या इदं पदमजनता गभीरम् १७६२

इदं मे अग्ने कियते पावक अमिनते गुरुं भारं न मन्म ।  
बृहद दधाथ धृषता गभीरं यह्यं पृष्ठं प्रयसा सप्तधातु १७६३

तमिह्वेदुध समना समानम्	अभि ऋत्वा पुनती धीतिरइयाः ।	
ससस्य चर्मन्धि चारु पृश्नेर्	अग्ने रूप आरुपितं जबारु	१७६४
प्रवाच्यं वचसः किं मे अस्य	गुहा हितमुप निणिग् वदन्ति ।	
यदुस्त्रियाणामप वारिव व्रन्	पार्ति प्रियं रूपो अग्रं पदं वेः	१७६५
इदमु त्यन्महि महामनीकं	यदुस्त्रिया सचत पूच्यं गौः ।	
ऋतस्य पदे अधि दीघानं	गुहा रघुष्यद् रघुयद् विवेद	१७६६
अध द्युतानः पित्रोः सचासा	ऽमनुत गुह्यं चारु पृश्नेः ।	
मातुष् पदे परमे अन्ति षद् गोरु	वृष्णः शोचिषः प्रयतस्य जिह्वा	१७६७
ऋतं वोचे नमसा पूच्छयमानस्	तवाशसा जातवेदो यदीदम् ।	
त्वमस्य क्षयसि यद् विश्वं	दिवि यद् द्रविणं यत् पृथिव्याम्	१७६८
किं नो अस्य द्रविणं कद् रत्नं	वि नो वोचो जातवेदश् चिकित्वान् ।	
गुहाध्वनः परमं यन्नो अस्य	रेकु पदं न निदाना अगन्म	१७६९
का मर्यादा वयुना कद् वामम्	अच्छा गमेम रघवो न वाजम् ।	
कदा नो देवीरमृतस्य पत्नीः	सूरो वर्णेन ततननुषासः	१७७०
अनिरेण वचसा फल्गेन	प्रतीत्येन कृधुनातुपासः ।	
अथा ते अग्ने किमिहा वदन्ति	अनायुधास आसता सचन्ताम्	१७७१
अस्य श्रिये समिधानस्य वृष्णो	वसोरनीकं दम आ रुरोच ।	
रुशद् वसानः सुदृशीकरूपः	क्षितिर्न राया पुरुवारो अधौत्	१७७२

॥ १९८ ॥ ( ऋ० ६ । ७ । १-७ )

[ १७७३-१७९३ ] भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप्, १७७८—१७७९ जगती ।

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या	वैश्वानरमृत आ जातमग्निम् ।	
कविं सम्राजमार्तिथिं जनानाम्	आसन्ना पात्रं जनयन्त देवाः	१७७३
नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणां	महामाहावमभि सं नवन्त ।	
वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां	यज्ञस्यं कृतं जनयन्त देवाः	१७७४
त्वद् विप्रो जायते वाज्यग्ने	त्वद् वीरासो अभिमातिषाहः ।	
वैश्वानर त्वमस्मासु धेहि	वसन्नि राजन् त्स्पृहयाय्याणि	१७७५

त्वां विश्वे अमृतं जायमानं	शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते ।	
तव ऋतुभिरमृतत्वमायन्	वैश्वानरं यत् पित्रोरदीदेः	१७७६
वैश्वानरं तव तानि व्रतानि	महान्यग्रे नकिरा दधर्ष ।	
यज् जायमानः पित्रोरुपस्थे	ऽविन्दः केतुं वयुनेष्वहाम्	१७७७
वैश्वानरस्य विमितानि चक्षसा	सानूनि दिवो अमृतस्य केतुना ।	
तस्येदु विश्वा भुवनार्धि मूर्धनि	वया इव रुरुहुः सप्त विस्रुहः	१७७८
वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुर्	वैश्वानरो वि दिवो रोचना कविः ।	
परि यो विश्वा भुवनानि पप्रथे	ऽदब्धो गोपा अमृतस्य रक्षिता	१७७९

॥ १९९ ॥ ( ऋ० ६ । ८ । १-७ ) जगती, १७८६ त्रिष्टुप् ।

पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू सहः	प्र तु वोचं विदथा जातवेदसः ।	
वैश्वानराय मतिर्नव्यसी शुचिः	सोम इव पवते चारुरग्रये	१७८०
स जायमानः परमे व्योमनि	व्रतान्यग्निर्व्रतपा अरक्षत ।	
व्येन्तरिक्षममिमीत सुक्रतुर्	वैश्वानरो महिना नाकमस्पृशत्	१७८१
व्यस्तभ्राद् रोदसी मित्रो अद्भुतो	ऽन्तर्वावदकृणोज् ज्योतिषा तमः ।	
वि चर्मणीव धिषणे अवर्तयद्	वैश्वानरो विश्वमधत्त वृष्ण्यम्	१७८२
अपामुपस्थे महिषा अगृभ्णत	विशो राजानमुप तस्थुर्कृग्निर्यम् ।	
आ दूतो अग्निमभरद् विवस्वतो	वैश्वानरं मातरिश्वा परावतः	१७८३
युगेयुगे विदथ्यं गुणञ्चो	ऽग्रे रयि यशसं धेहि नव्यसीम् ।	
पव्येवं राजन्नघशंसमजर	नीचा नि वृश्च वनिनं न तेजसा	१७८४
अस्माकमग्रे मधवत्सु धारय	अनामि क्षत्रमजरं सुवीर्यम् ।	
वयं जयेम शतिनं सहस्रिणं	वैश्वानरं वाजमग्रे तवोतिभिः	१७८५
अदब्धेभिस् तव गोपार्भिरिष्टे	ऽस्माकं पाहि त्रिषधस्थ सूरीन् ।	
रक्षा च नो दुहुषां शर्धो अग्रे	वैश्वानरं प्र च तारीः स्तवानः	१७८६

॥ २०० ॥ ( ६ । ९ । १-७ ) त्रिष्टुप् ।

अहश् च कृष्णमहरजुनं च	वि वर्तेते रजसी वेद्याभिः ।	
वैश्वानरो जायमानो न राजा	अवातिरज् ज्योतिषाभिस् तमांसि	१७८७

नाहं तन्तुं न वि जानाम्योतुं	न यं वयान्ति समरेऽतमानाः ।	
कस्य स्वित् पुत्र इह वक्त्वानि	परो वंदात्यवरेण पित्रा	१७८८
स इत् तन्तुं स वि जानात्योतुं	स वक्त्वान्यृतुथा वंदाति ।	
य ई चिकेतदुमृतस्य गोपा	अवश् चरन् परो अन्येन पश्यन्	१७८९
अयं होता प्रथमः पश्यतेमम्	इदं ज्योतिरमृतं मर्त्येषु ।	
अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तो	ऽमर्त्यस् तन्वाइ वधमानः	१७९०
ध्रुवं ज्योतिर्निहितं दृश्ये कं	मनो जविष्टं पतर्यत्स्वन्तः ।	
विश्वे देवाः समनसः सकैता	एकं क्रतुमभि वि यन्ति साधु	१७९१
वि मे कर्णां पतयतो वि चक्षुर्	वीइदं ज्योतिर्हृदय आहितं यत् ।	
वि मे मनश् चरति दूरार्थीः	किं स्विद् वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये	१७९२
विश्वे देवा अनमस्यन् भियानास्	त्वामग्ने तमसि तस्थिवांसम् ।	
वैश्वानरोऽवतूतये नो	ऽमर्त्योऽवतूतये नः	१७९३

॥ २०१ ॥ ( ऋ० ७ । ५ । १-९ ) [१७९४-१८१२] वासष्टो मंत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

प्राग्ने तवसे भरध्वं गिरं दिवो अरतये पृथिव्याः ।		
यो विश्वेषाममृतानामुपस्थे	वैश्वानरो वावृधे जागृवद्भिः	१७९४
पृष्टो दिवि धाय्यभिः पृथिव्यां	नेता सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।	
स मानुषीरभि विशो वि भाति	वैश्वानरो वावृधानो वरेण	१७९५
त्वद् भिया विश आयन्नसिक्तीर्	असमना जहतीर्भोजनानि ।	
वैश्वानर पूरवे शोशुचानः	पुरो यदग्ने दरयन्नदीदेः	१७९६
तव त्रिधातु पृथिवी उत द्यौर	वैश्वानर व्रतमग्ने सचन्त ।	
त्वं भासा रोदसी आ ततन्थ	अजस्रेण शोचिषा शोशुचानः	१७९७
त्वामग्ने हरितो वावशाना	गिरः सचन्ते धुनयो घृताचीः ।	
पतिं कृष्टीनां रथ्यं रयीणां	वैश्वानरमुषसां क्रतुमह्वाम्	१७९८
त्वे असुर्यु वसवो न्यृण्वन्	क्रतुं हि ते मित्रमहो जुषन्त ।	
त्वं दस्युरोक्तसो अग्न आज	उरु ज्योतिर्जनयन्नार्यीय	१७९९

स जायमानः परमे व्योमन् वायुर्न पाथुः परिं पासि सद्यः ।	
त्वं भुवना जनयन्नभि क्रन् अप्तयाय जातवेदो दशस्यन्	१८००
तामग्ने अस्मे इषमेरयस्व वैश्वानर द्युमतीं जातवेदः ।	
यया राधुः पिन्वसि विश्ववार पृथु श्रवो दाशुषे मर्त्याय	१८०१
तं नो अग्ने मध्वञ्चः पुरुक्षुं रयिं नि वाजं श्रुत्यै युवस्व ।	
वैश्वानर महि नः शर्म यच्छ रुद्रेभिरग्ने वसुभिः सजोषाः	१८०२

॥ २०२ ॥ ( ऋ० ७।६।१-७ )

प्र सम्राजो असुरस्य प्रशस्ति पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य ।	
इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दे दारुं वन्दमानो विवक्त्रिम	१८०३
कविं केतुं धासिं भानुमद्रेर् द्विन्वन्ति शं राज्यं रोदस्योः ।	
पुरंदरस्य गीर्भिरा विवासे ऽग्नेर्व्रतानि पूव्या महानि	१८०४
न्यक्तून् ग्रथिनो मध्रवाचः पर्णीरंश्रद्धां अवृधौ अयज्ञान् ।	
प्रप्र तान् दस्युराग्निर्विवाय पूर्वश चकारापरौ अयज्यन्	१८०५
यो अपाचीने तमसि मदन्तीः प्राचींश् चकार नृतमः शचीभिः ।	
तमीशानं वस्वो अग्निं गृणीषे ऽनानतं दमयन्तं पृतन्यून	१८०६
यो देहोऽनमयद् वधस्रैर् यो अर्यपत्नीरुषसंश् चकार ।	
स निरुध्या नहुषो यहो अग्निर् विशंश् चक्रे बलिहतः सहोभिः	१८०७
यस्य शर्मन्नुप विश्वे जनास एवैस् तस्थुः सुमतिं भिक्षमाणाः ।	
वैश्वानरो वरमा रोदस्योर् आग्निः संसाद पित्रोरुपस्थम्	१८०८
आ देवो ददे बुध्याऽ वसुनि वैश्वानर उदिता सूर्यस्य ।	
आ समद्रादवरादा परस्माद् आग्निर्ददे दिव आ पृथिव्याः	१८०९

॥ २०३ ॥ ( ऋ० ७।१३।१-३ )

प्राग्नये विश्वशुचं धियंधे ऽसुरग्ने मन्म धीतिं भरध्वम् ।	
भरे हविर्न बर्हिषि प्रीणानो वैश्वानराय यतये मतीनाम्	१८१०
त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान आ रोदसी अपृणा जायमानः ।	
त्वं देवाँ अभिशस्तेरमुञ्चो वैश्वानर जातवेदो महिस्वा	१८११

जातो यदग्ने भुवना व्यख्यः पशून् न गोपा इर्यः परिज्मा ।  
वैश्वानरं ब्रह्मणे विन्द गातुं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१८१२

### ३ रक्षोहाऽग्निः ।

॥ २०४ ॥ (ऋ० ४ । ४ । १-१५) [ १८१३-१८२७ ] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ इभेन ।  
तृष्वीमनु प्रसितिं दूणानो ऽस्तासि विध्य रक्षसस् तर्पिष्ठैः १८१३  
तव भ्रमास आशुया पतन्ति अनु स्पश धृषता शोशुचानः ।  
तपूष्यमे जुहा पतङ्गान् असंदितो वि सृज विष्वगुल्काः १८१४  
प्रति स्पशो वि सृज तूर्णितमो भवां पायुर्विशो अस्या अदब्धः ।  
यो नो दूरे अघशंसो यो अन्ति अग्ने मार्किष्टे व्यथिरा दधर्षात् १८१५  
उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ ओषतात् तिग्महेते ।  
यो नो अरातिं समिधान चक्रे नीचा तं धक्षयत्सं न शुष्कम् १८१६  
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मद् आविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ।  
अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्र मृणीहि शत्रून् १८१७  
स ते जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत् ।  
विश्वान्यस्मै सुदिनानि रायो द्युम्नान्ययो वि दुरो अभि द्यात् १८१८  
सेदग्ने अस्तु सुभगः सुदानुर् यस् त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः ।  
पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेदस्मै सुदिना सासद्विष्टिः १८१९  
अर्चामि ते सुमतिं घोष्यर्वाक् सं ते वावातां जरतामियं गीः ।  
स्वश्वास् त्वा सुरथा मर्जयेम अस्मे क्षत्राणि धारयेरनु द्यून् १८२०  
इह त्वा भूर्या चरेदुप त्मन् दोषावस्तदींदिवांसमनु द्यून् ।  
श्रीळन्तस् त्वा सुमनसः सपेम अभि द्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम् १८२१  
यस् त्वा स्वर्धः सुहिरण्यो अग्न उपयाति वसुमता रथेन ।  
तस्य ज्ञाता भवसि तस्य सखा यस् तं आतिध्यमानुषग् जुजोषत् १८२२



महो रुजामि बन्धुता वचोभिस् तन्मा पितुर्गोतमादन्वियाय । त्वं नो अस्य वचसश् चिकिद्धि होतर्यविष्ठ सुक्रतो दमूनाः	१८२३
अस्वमजस् तरणयः सुशेवा अतन्द्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः । ते पायवः सध्र्यश्चो निषद्य अग्ने तव नः पान्त्वमूर	१८२४
ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन् । ररक्ष तान् त्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद् रिपवो नाहं देशुः	१८२५
त्वया वयं सध्र्यन्तस् त्वोतास् तव प्रणीत्यश्याम वाजान् । उभा शंसां सृदय सत्यताते ऽनुष्ठुया कृणुह्ययाण	१८२६
अया ते अग्ने समिधां विधेम प्रति स्तोमं शस्यमानं गृभाय । दहाशसो रक्षसः पाह्यस्मान् द्रुहो निदो मित्रमहो अवघात्	१८२७

॥ २०५ ॥ ( ऋ० १० । ८७ । १-२५ )

[ १८२८—१८५२ ] पायुर्भारद्वाजः । त्रिष्टुप्, १८४९-५२ अनुष्टुप् ।

रक्षोहणं वाजिन्मा जिघर्मि मित्रं प्रथिष्ठमुपं यामि शर्म । शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पांतु नक्तम्	१८२८
अयोदंष्ट्रो अर्चिषा यातुधानान् उप स्पृश जातवेदः समिद्धः । आ जिह्वया मूरदेवान् रभस्व क्रव्यादो वृक्त्व्यपि धत्स्वासन्	१८२९
उभोभयाविभ्रुपं धेहि दंष्ट्रां हिंस्रः शिशानोऽवरं परं च । उतान्तरिक्षे परिं याहि राजञ् जम्भैः सं धेह्याभि यातुधानान्	१८३०
यज्ञैरिषूः संनममानो अग्ने वाचा शल्यां अशनिभिर्दिहानः । ताभिर्विध्य हृदये यातुधानान् प्रतीचो बाहून् प्रति भङ्ध्येषाम्	१८३१
अग्ने त्वचं यातुधानस्य भिन्धि हिंसाशनिर्हरसा हन्त्वेनम् । प्र पर्वाणि जातवेदः शृणीहि क्रव्यात् क्रविष्णुर्वि चिनोतु वृक्णम्	१८३२
यत्रेदानीं पश्यसि जातवेदस् तिष्ठन्तमग्र उत वा चरन्तम् । यद् वान्तरिक्षे पथिभिः पतन्तं तमस्तां विध्य शर्वा शिशानः	१८३३
उतालब्धं स्पृणुहि जातवेद आलेभानादृष्टिभिर्यातुधानात् । अग्ने पूर्वां नि जहि शोशुचान आमाद्गः क्ष्विक्कास तमदन्त्वेनीः	१८३४

इह प्र ब्रूहि यतमः सो अग्ने	यो यातुधानो य इदं कृणोति ।	
तमा रभस्व समिधा यविष्ठ	नृचक्षसश् चक्षुषे रन्धयैनम्	१८३५
तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष यज्ञं	प्राञ्चं वसुभ्यः प्र णय प्रचेतः ।	
हिंस्रं रक्षांस्यभि शोशुचानं	मा त्वा दभन् यातुधानां नृचक्षः	१८३६
नृचक्षा रक्षः परि पश्य विश्व	तस्य त्रीणि प्रति शृणीह्यग्रा ।	
तस्याग्ने पृष्टीहरसा शृणीहि	त्रेधा मूलं यातुधानस्य वृश्च	१८३७
त्रिर्योतुधानः प्रसिति त एतु	ऋतं यो अग्ने अनृतेन हन्ति ।	
तमर्चिषा स्फूर्जयञ् जातवेदः	समक्षमेनं गृणते नि वृद्धि	१८३८
तदग्ने चक्षुः प्रति धेहि रेभे	शंफारुजं येन पश्यसि यातुधानम् ।	
अथर्ववज् ज्योतिषा दैव्येन	सत्यं धूर्वन्तमचितं न्योष	१८३९
यदग्ने अद्य मिथुना शपातो	यद् वाचस् तृष्टं जनयन्त रेभाः ।	
मन्योर्मनसः शरव्याइ जायते	या तथा विध्य हृदये यातुधानान्	१८४०
परा शृणीहि तपसा यातुधानान्	पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि ।	
परार्चिषा मूरदेवाञ् छृणीहि	परासुतृपो अभि शोशुचानः	१८४१
पराद्य देवा वृजिनं शृणन्तु	प्रत्यगेनं शपथां यन्तु तृष्टाः ।	
वाचास् तैनं शरव ऋच्छन्तु	मर्मन् विश्वस्यैतु प्रसिति यातुधानः	१८४२
यः पौरुषेयेण ऋविषा समङ्के	यो अश्वयेन पशुना यातुधानः ।	
यो अद्याया भरति क्षीरमग्ने	तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च	१८४३
संवत्सरीणं पय उस्त्रियायास्	तस्य माशीद् यातुधानो नृचक्षः ।	
पीयूषमग्ने यतमस् तितृप्सात्	तं प्रत्यञ्चमर्चिषा विध्य मर्मन्	१८४४
विषं गवां यातुधानाः पिबन्तु	आ वृश्चयन्तामदितये दुरेवाः ।	
परैरान् देवः संविता ददातु	परा भागमोषधीनां जयन्ताम्	१८४५
सनादग्ने मृणसि यातुधानान्	न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः ।	
अनु दह सहमूरान् ऋव्यादो	मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः	१८४६
त्वं नो अग्ने अधरादुदक्तात्	त्वं पश्चादुत रक्षा पुरस्तात् ।	
प्रति ते ते अजरासस् तपिष्ठा	अघशंसं शोशुचतो दहन्तु	१८४७

पश्चात् पुरस्तादधरादुदक्तात् कृविः काव्येन परि पाहि राजन् । सखे सखायमजरौ जरिम्णे ऽग्ने मर्ता अमर्त्यस् त्वं नः	१८४८
परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि । धृषद्वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावताम्	१८४९*
विषेणं भङ्गुरावतः प्रति ष्म रक्षसो दह । अग्ने तिग्मेन शोचिषा तपुरग्राभिर्ऋष्टिभिः	१८५०
प्रत्यग्ने मिथुना दह यातुधाना किमीदिना । सं त्वा शिशामि जागृहि अदब्धं विप्र मन्मभिः	१८५१
प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणीहि विश्वतः प्रति । यातुधानस्य रक्षसो बलं वि रुज वीर्यम्	१८५२
॥ २०६ ॥ ( ऋ० १०। ११८। १-९ ) [ १८५३-१८६१ ] उरुक्षय आमहीयवः । गायत्री ।	
अग्ने हंसि न्यत्रिणं दीद्यन् मर्त्येष्वाम् । स्वे क्षये शुचिव्रत	१८५३
उत् तिष्ठसि स्वाहुतो घृतानि प्रति मोदसे । यत् त्वा सुचः समस्थिरन्	१८५४
स आहुतो वि रोचते ऽग्निरीलेन्यो गिरा । सुचा प्रतीकमज्यते	१८५५
घृतेनाग्निः समज्यते मधुप्रतीक आहुतः । रोचमानो विभावंसुः	१८५६
जरमाणः समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन । तं त्वा हवन्त मर्त्याः	१८५७
तं मर्ता अमर्त्य घृतेनाग्निं संपर्यत । अदाभ्यं गृहपतिम्	१८५८
अदाभ्येन शोचिषा ऽग्ने रक्षस् त्वं दह । गोपा ऋतस्य दीदिहि	१८५९
स त्वमग्ने प्रतीकेन प्रत्योष यातुधान्यः । उरुक्षयेषु दीद्यत्	१८६०
तं त्वा गीभिर्ऋक्षया हव्यवाहं समीधिरे । यजिष्ठं मानुषे जनै	१८६१

## ४ जातवेदा अग्निः ।

॥२०७॥ ( ऋ० १। ९९। १ ) [१८६२] ऋक्षयो मारीचः । त्रिष्टुप् ।

जातवेदसे सुनवाम् सोमम् अरातीयतो नि दहाति वेदः । स नः पर्यदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः	१८६२
--	------

॥ २०८ ॥ ( ऋ० १० । १८८ । १-३ ) [ १८६३-१८६५ ] इयं आग्नेयः । गायत्री ।

प्र नूनं जातवेदसम् अश्वं हिनोत वाजिनम् । इदं नो बर्हिरासदं १८६३  
 अस्य प्र जातवेदसो विप्रवीरस्य मीहुषः । महीमियमि सुष्टुतिम् १८६४  
 या रुचो जातवेदसो देवत्रा हव्यवाहनीः । ताभिर्नो यज्ञमिन्वतु १८६५

॥ २०९ ॥ ( अथर्ववेदे कां० ७ । ८४ ( ८९ ) । १ ) [ १८६६ ] भृगुः । जगती ।

अनाधृष्यो जातवेदा अमर्त्यो विराडमे क्षत्रभृद् दीदिहीह ।  
 विश्वा अमीवाः प्रमुञ्चन् मानुषीभिः शिवाभिरद्य परि पाहि नो गयम् १८६६

## ५ घर्मोऽग्निः ।

॥ २१० ॥ ( ऋ० १ । ११२ । १ छितीयः पादः ) [ १८६७ ] कुत्स आंगिरसः ।

अग्निं घर्मं सुरुचं यामन्निष्टये । १८६७

## ६ औषसोऽग्निः ।

॥ २११ ॥ ( ऋ० १ । ९५ । १-११ ) [ १८६८-१८७८ ] कुत्स आंगिरसः । त्रिष्टुप् ।

द्वे विरूपे चरतः स्वर्धे अन्यान्या वत्समुप धापयेते ।  
 हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ् लुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चीः १८६८  
 दशेमं त्वष्टृर्जनयन्त गर्भम् अतन्द्रासो युवतयो विभृत्रम् ।  
 तिग्मानीकं स्वयंशसं जनेषु विरोचमानं परि षीं नयन्ति १८६९  
 त्रीणि जाना परि भूषन्त्यस्य समुद्र एकं दिव्येकमप्सु ।  
 पूर्वामनु प्र दिशं पार्थिवानाम् ऋतून् प्रशासद् वि दधावनुष्टु १८७०  
 क इमं वो निण्यमा चिकेत वत्सो मातृर्जनयत स्वधाभिः ।  
 बहूनां गर्भो अपसामुपस्थात् महान् कविर्निश् चरति स्वधानान् १८७१  
 आविष्ट्यो वर्धते चारुंरासु जिह्वानामूर्ध्वः स्वयंशा उपस्थे ।  
 उभे त्वष्टृर्विभ्यतुर्जायमानात् प्रतीची सिंहं प्रति जोषयेते १८७२

उभे भद्रे जोषयेते न मेने गावो न वाश्रा उप तस्थुरेवैः ।	
स दक्षाणां दक्षपतिर्बभूव अञ्जन्ति यं दक्षिणतो हविर्भिः	१८७३
उद् ययमीति सवितेव बाहू उभे सिचौ यतते भीम ऋञ्जन् ।	
उच्छ्रुक्रमत्कमजते सिमस्मात् नवा मातृभ्यो वसना जहाति	१८७४
त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत् संपृञ्चानः सदाने गोभिरद्भिः ।	
कविर्बुध्नं परि मर्मज्यते धीः सा देवताता समितिर्बभूव	१८७५
उरु ते जयः पर्येति बुध्नं विरोचमानं महिषस्य धाम ।	
विश्वेभिरग्ने स्वयंशोभिरिद्धो ऽदब्धेभिः पायुभिः पाह्यस्मान्	१८७६
धन्वन् त्स्रोतः कृणुते गातुमूर्भि शुक्रैरूर्भिभिरभि नक्षति क्षाम् ।	
विश्वा सनानि जठरैषु धत्ते ऽन्तर्नवासु चरति प्रसूषु	१८७७
एवा नो अग्ने समिधा वृधानो रेवत् पावक श्रवसे वि भाहि ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम् अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	१८७८

## ७ द्रविणोदा अग्निः ।

॥ २१२ ॥ ( ऋ० १ । ९६ । १-२ ) [ १८७९—१८८७ ] कुत्स आंगिरसः । त्रिष्टुप् ।

स प्रलथा सहसा जायमानः सद्यः काव्यानि बळधत्त विश्वा ।	
आपंश् च मित्रं धिषणा च साधन् देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८७९
स पूर्वया निविदा कव्यतायोर् हुमाः प्रजा अजनयन् मनूनाम् ।	
विवस्वता चर्क्षसा घामपश् च देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८०
तमीळत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृञ्जसानम् ।	
ऊर्जः पुत्रं भरतं सृप्रदानुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८१
स मातरिश्वा पुरुवारंपुष्टिर् विदद् गातुं तनयाय स्वर्वित् ।	
विशां गोपा जनिता रोदस्योर् देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८२
नक्तोषासा वर्णामामेभ्याने धापयेते शिशुमेकं समीची ।	
घावाक्षामा रुक्मो अन्तर्वि भाति देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८३

रायो बुधः संगमनो वसूनां यज्ञस्य केतुर्मन्मसाधना वेः ।	
अमृतत्वं रक्षमाणास एनं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८४
नू च पुरा च सदनं रयीणां जातस्य च जायमानस्य च क्षाम् ।	
सतश् च गोपां भवतश् च भूरैर् देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८५
द्रविणोदा द्रविणसस् तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्र यंसत् ।	
द्रविणोदा वीरवतीमिषं नो द्रविणोदा रांसते दीर्घमायुः	१८८६
एवा नो अग्ने समिधां वृधानो० । ( १८७८ )	

## ७ शुचिरग्निः ।

॥ २१३ ॥ ( क्र० १।९७।१-८ ) ( १८८७-१८९४ ) कृत्स् आङ्गिरसः । गायत्री ।

अप नः शोशुचदुघम्	अग्ने शुशुग्ध्या रयिम् ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८८७
सुक्षेत्रिया सुगातुया	वसूया च यजामहे ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८८८
प्र यद् भन्दिष्ठ एषां	प्रास्माकांसश् च सूर्यः ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८८९
प्र यत् ते अग्ने सूरयो	जायंमहि प्र ते वयम् ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८९०
प्र यदग्नेः सहस्वतो	विश्वतो यन्ति भानवः ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८९१
त्वं हि विश्वतोमुख	विश्वतः परिभूरमि ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८९२
द्विषो नो विश्वतोमुख	अति नावेवं पारथ ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८९३
स नः सिन्धुमिव नावया	अति पर्षा स्वस्तये ।	
अप नः शोशुचदुघम्		१८९४

## ८ अग्निरापो गावश्च ।

अग्निः सूर्यो वा आपो वा गावो वा घृतस्तुतिर्वा ।

॥ २१४ ॥ ( ऋ० ४ । ५८ । १-११ ) [ १८९५-१९०५ ] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्, १९०५ जगती ।

समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारद्	उपांशुना सममृतत्वमानद् ।	
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति	जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः	१८९५
वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्य	अस्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः ।	
उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं	चतुःशृङ्गोऽवमीद् गौर एतत्	१८९६
चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा	द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।	
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति	महो देवो मर्त्याँ आ विवेश	१८९७
त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं	गवि देवासोँ घृतमन्वविन्दन् ।	
इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान	वेनादेकं स्वधया निष्टंक्षुः	१९९८
एता अर्षन्ति हृद्यात् समुद्रात्	शतब्रजा रिपुणा नावचक्षे ।	
घृतस्य धारा अभि चाकशीमि	हिरण्ययोँ वेतसो मध्य आसाम्	१९९९
सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना	अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः ।	
एते अर्षन्त्यूर्मयोँ घृतस्य	मृगा इव क्षिपणोरीपमाणाः	१९००
सिन्धोरिव प्राध्वने शघनासो	वार्तप्रमियः पतयन्ति यहाः ।	
घृतस्य धारा अरुपो न वाजी	काष्ठा भिन्दन्नूर्भिभिः पिन्वमानः	१९०१
अभि प्रवन्त समनेव योषाः	कल्याण्युः स्मर्यमानासो अग्निम् ।	
घृतस्य धाराः समिधोँ नसन्त	ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः	१९०२
कन्या इव वहतुमेतवा उ	अङ्गयज्ञाना अभि चाकशीमि ।	
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो	घृतस्य धारा अभि तत् पवन्ते	१९०३
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिम्	अस्मासु भद्रा द्रविणानि घत्त ।	
इमं यज्ञं नयत देवता नो	घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ते	१९०४*
धामन् ते विश्वं भुवनमधि श्रितम्	अन्तः समुद्रे हृद्युँन्तरायुषि ।	
अपामनीके समिथे य आभृतस्	तमश्याम् मधुमन्तं त जुमिम्	१९०५

## १ आप्रीसूक्तानि ।

॥ २१५ ॥ ( ऋ० १ । १३ । १-१२ )

१९०६-१७ मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं = [क्रमेण-१ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ नराशंसः, ४ इळः, ५ बर्हिः, ६ देवीः द्वारः, ७ उषासानक्ता, ८ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसां, ९ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभाग्यः, १० त्वष्टा, ११ वनस्पतिः, १२ स्वाहाकृतयः] । गायत्री ।

सुसमिद्धो न आ वह	देवाँ अग्ने हविष्मते । होतः पावक यार्क्षि च	१९०६
मधुमन्तं तनूनपाद्	यज्ञं देवेषु नः कवे । अद्या कृणुहि वीतये	१९०७
नराशंसमिह प्रियम्	अस्मिन् यज्ञ उप ह्वये । मधुजिह्वं हविष्कृतम्	१९०८
अग्ने सुखतमे रथे	देवाँ ईळित आ वह । असि होता मनुर्हितः	१९०९
स्तृणीत बर्हिरानुषग्	घृतपृष्ठं मनीषिणः । यत्रामृतस्य चक्षणम्	१९१०
वि श्रयन्तामृतावृधो	द्वारो देवीरंसश्रतः । अद्या नूनं च यष्ट्वे	१९११
नक्तोषासां सुपेशसा	अस्मिन् यज्ञ उप ह्वये । इदं नो बर्हिरासदे	१९१२
ता सुजिह्वा उप ह्वये	होतारा दैव्या कवी । यज्ञं नो यक्षतामिमम्	१९१३
इळा सरस्वती मही	तिस्रो देवीर्मयोभुवः । बर्हिः सीदन्त्वसिधः	१९१४
इह त्वष्टारमग्रियं	विश्वरूपमुप ह्वये । अस्माकमस्तु केवलः	१९१५
अव सृजा वनस्पते	देव देवेभ्यो हविः । प्र दातुरस्तु चेतनम्	१९१६
स्वाहा यज्ञं कृणोतन	इन्द्राय यज्वनो गृहे । तत्र देवाँ उप ह्वये	१९१७

॥ २१६ ॥ ( ऋ० १ । १४२ । १-१३ )

१९१८-३० दीर्घमता औचथ्यः । आप्रीसूक्तं = [क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ नराशंसः, ४ इळः, ५ बर्हिः, ६ देवीः द्वारः, ७ उषासानक्ता, ८ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसां, ९ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळा-भाग्यः, १० त्वष्टा, ११ वनस्पतिः, १२ स्वाहाकृतयः, १३ इन्द्रः] । अनुष्टुप् ।

समिद्धो अग्न आ वह	देवाँ अद्य यत्सुचे । तन्तुं तनुष्व पूर्य सुतसोमाय दाशुषे	१९१८
घृतवन्तमुप मासि	मधुमन्तं तनूनपात् । यज्ञं विप्रस्य मावतः शशमानस्य दाशुषः	१९१९
शुचिः पावको अद्भुतो	मध्वा यज्ञं मिमिक्षति । नराशंसस् त्रिरा दिवो देवो देवेषु यज्ञियः	१९२०
ईळितो अग्न आ वह	इन्द्रं चित्रमिह प्रियम् । इयं हि त्वा मतिर्मम अच्छा सुजिह्व वच्यते	१९२१
स्तृणानासो यत्सुचो	बर्हिर्यज्ञे स्वध्वरे । वृञ्जे देवव्यञ्जस् तमम् इन्द्राय शर्म सप्रथः	१९२२
वि श्रयन्तामृतावृधः	प्रयै देवेभ्यो महीः । पावकासः पुरुस्पृहो द्वारो देवीरंसश्रतः	१९२३



आ भन्दमाने उपाक्रे नक्तोपासा सुपेशसा । यद्ही क्रतस्य मातरा सीदतां बर्हिरा सुमत् १९२४  
 मन्द्रार्जिहा जुगुर्वणी होतारा दैव्या कवी । यज्ञं नो यक्षतामिमं सिधमद्य दिविस्पृशम् १९२५  
 शुचिदेवेष्वर्पिता होत्रा मरुत्सु भारती । इळा सरस्वती मही बर्हिः सीदन्तु यज्ञियाः १९२६  
 तन्नस् तुरीपमद्भुतं पुरु वारं पुरु त्मना । त्वष्टा पोषाय विष्यतु राये नाभा नो अस्मयुः १९२७  
 अवसृजन्नुप त्मना देवान् यक्षि वनस्पते । अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरः १९२८  
 पृषण्वते मरुत्वते विश्वदैवाय वायवे । स्वाहा गायत्रेवसे हव्यमिन्द्राय कर्तन १९२९  
 स्वाहाकृतान्या गृहि उप हव्यानि वीतये । इन्द्रा गृहि श्रुधी हवं त्वां हवन्ते अध्वरे १९३०

॥ २१७ ॥ ( ऋ० १ । १८८ । १-११ )

१९३१-४१ अगस्त्यो मैत्रावरुणः । आप्रीसूक्तं= ( क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उपासानक्ता, ७ दैव्यो होतारौ प्रचेतसा, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः ) । गायत्री ।

समिद्धो अद्य राजसि देवो देवैः सहस्रजित् । दूतो हव्या कृविर्वह १९३१
तनूनपादृतं यते मध्वा यज्ञः समज्यते । दधत् सहस्रिणीरिषः १९३२
आजुह्वानो न ईड्यो देवा आ वक्षि यज्ञियान् । अग्नें सहस्रसा असि १९३३
प्राचीनं बर्हिरोजसा सहस्रवीरमस्तृणन् । यत्रादित्या विराजथ १९३४
विराट् सम्राड् विभ्वीः प्रभ्वीर् बह्वीश् च भूयसीश् च याः । दुरो घृतान्यक्षरन् १९३५
सुरुक्मे हि सुपेशसा अधि श्रिया विराजतः । उपासावेह सीदताम् १९३६
प्रथमा हि सुवाचसा होतारा दैव्या कवी । यज्ञं नो यक्षतामिमम् १९३७
भारतीळे मरस्वति या वः सर्वा उपब्रुवे । ता नश् चोदयत श्रिये १९३८
त्वष्टा रूपाणि हि प्रभुः पशून् विश्वान् त्समानजे । तेषां नः स्फातिमा यज १९३९
उप त्मन्या वनस्पते पार्थो देवेभ्यः सृज । अग्निर्हव्यानि सिष्वदत् १९४०
पुरोगा अग्निर्देवानां गायत्रेण समज्यते । स्वाहाकृतीषु रोचते १९४१

॥ २१८ ॥ ( ऋ० २ । ३ । १-११ )

१९४२-५२ गृत्समदः शौनकः । आप्रीसूक्तं= [ क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उपासानक्ता, ७ दैव्यो होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः ] । त्रिष्टुप्; १९४८ जगती ।

समिद्धो अग्निर्निर्हितः पृथिव्यां प्रत्यङ् विश्वानि भुर्वनान्यस्थात् ।  
 होता पावकः प्रदिवः सुमेधा देवो देवान् यजत्वग्निर्हन् १९४

नराशंसः प्रति धामान्यञ्जन् तिस्रो दिवः प्रति मद्वा स्वर्चिः ।	
घृतप्रुषा मनसा हृव्यमुन्दन् मूर्धन् यज्ञस्य समनक्तु देवान्	१९४३
ईळितो अग्ने मनसा नो अर्हन् देवान् यक्षि मानुषात् पूर्वी अद्य ।	
स आ वह मरुतां शर्धो अच्युतम् इन्द्रं नरो बर्हिषदं यजध्वम्	१९४४
देव बर्हिर्वर्धमानं सुवीरं स्तीर्णं राये सुभरं वेद्यस्याम् ।	
घृतेनाक्तं वसवः सीदतेदं विश्वे देवा आदित्या यज्ञियासः	१९४५
वि श्रयन्तामुर्विया ह्यमाना द्वारो देवीः सुप्रायणा नमोभिः ।	
व्यचस्वतीर्वि प्रथन्तामजूर्या वर्णं पुनाना यज्ञसं सुवीरम्	१९४६
साध्वपांसि सनतां न उक्षिते उषासानक्ता वय्येव रण्विते ।	
तन्तुं तत् संवर्यन्ती समीची यज्ञस्य पेशः सुदुधे पयस्वती	१९४७
दैव्या होतारा प्रथमा त्रिदुष्टर ऋजु यक्षतः समृचा वपुष्टरा ।	
देवान् यजन्तावृतुथा समञ्जतो नाभा पृथिव्या अधि सानुषु त्रिषु	१९४८
सरस्वती साधयन्ती धियं न इळा देवी भारती विश्वतूर्तिः ।	
तिस्रो देवीः स्वधया बर्हिरेदम् अच्छिद्रं पान्तु शरणं निषद्य	१९४९
पिशङ्गरूपः सुभरो वयोधाः श्रुष्टी वीरो जायते देवकामः ।	
प्रजां त्वष्टा वि ष्यतु नाभिस्मस्मे अथा देवानामप्येतु पार्थः	१९५०
वनस्पतिरवसुजन्तुर्प स्थाद् अग्निर्हविः सुदयाति प्र धीभिः ।	
त्रिधा समक्तं नयतु प्रजानन् देवेभ्यो दैव्यः शमितोप हृव्यम्	१९५१
घृतं मिभिक्षे घृतमस्य योनिर् घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम ।	
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हृव्यम्	१९५२

॥ २१९ ॥ ( ऋ० ३ । ४ । १-११ )

१९५३-६३ विश्वामित्रो गाथिनः। आप्रीसूक्तं= [क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनवान्, ३ इळा, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः ]। त्रिष्टुप् ।

समित् समित् सुमना बोध्यस्मे शुचाशुचा सुमतिं रांसि वस्वः ।	
आ देव देवान् यजथाय वक्षि सखा सखीन् त्सुमना यक्षयन्ते	१९५३

यं देवासस् त्रिरहन्नायजन्ते	दिवेदिवे वरुणो मित्रो अग्निः ।	
सेमं यज्ञं मधुमन्तं कृधी नस्	तन्नूनपाद्भृतयोनिं विधन्तम्	१९५४
प्र दीर्घितिर्विश्ववारा जिगति	होतारमिळः प्रथमं यजध्वै ।	
अच्छा नमोभिवृषभं वन्दध्वै	स देवान् यक्षदितो यजीयान्	१९५५
ऊर्ध्वो वां गतुरध्वरे अकारि	ऊर्ध्वा शोचीषि प्रस्थिता रजांसि ।	
दिवो वा नाभा न्यसादि होता	स्तृणीमहिं देवव्यचा वि बहिः	१९५६
सप्त होत्राणि मनसा वृणाना	इन्वन्तो विश्वं प्रति यन्नृतेन ।	
नृपेशसो विदथेषु प्र जाता	अभीष्टं यज्ञं वि चरन्त पूर्वीः	१९५७
आ भन्दमाने उषसा उपाके	उत स्मयेते तन्वाद् विरूपे ।	
यथा नो मित्रो वरुणो जुजोषद्	इन्द्रो मरुत्वा उत वा महोभिः	१९५८
दैव्या होतारा प्रथमा न्यञ्जे	सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति ।	
ऋतं शंसन्त ऋतमित् त आहुर्	अनु व्रतं व्रतपा दीध्यानाः	१९५९
आ भारती भारतीभिः सजोषा	इळां देवैर्मनुष्यैर्भिरग्निः ।	
सरस्वती सारस्वतेभिर्वाक्	तिस्रो देवीर्बहिरेदं संदन्तु	१९६०
तन्नस् तुरीपमर्धं पोषयित्नु	देवं त्वष्टृर्वि रराणः स्यस्व ।	
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो	युक्तग्रावा जायते देवकामः	१९६१
वनस्पतेऽवं सृजोषं देवान्	अग्निर्हविः शमिता सृदयाति ।	
सेद्दु होता सत्यतरो यजाति	यथा देवानां जनिमानि वेदं	१९६२
आ याह्यग्रे समिधानो अर्वाङ्	इन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः ।	
बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रा	स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्	१९६३

॥ २२० ॥ ( ऋ० ५ । ५ । १-११ )

१९६४-७३ वसुभृत आग्नेयः । आग्रीसूक्तं = (क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा. २ नराशंसः, ३ इळाः, ४ बर्हिः, ५ देवीर्द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्या होतारा प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळा भारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः ) । गायत्री ।

सुसमिद्धाय शोचिषे	घृतं तीव्रं जुहोतन	। अग्रये जातवेदसे	१९६४
नराशंसः सुषूदति	इमं यज्ञमदाभ्यः	। कविर्हि मधुहस्तयः	१९६५

ईळितो अ॒ग्न आ व॒ह	इन्द्रं चि॒त्रमि॒ह प्रि॒यम् । सुखै॑ रथेभि॒रु॒तये॑	१९६६
ऊर्ण॑प्र॒दा वि प्रथ॑स्व	अ॒भ्यर्का॑ अ॒नूष॑त । भवा॑ नः शु॒भ्र सा॒तये॑	१९६७
देवी॑र्द्वारो वि श्र॒यध्वं	सुप्रा॑य॒णा न उ॒तये॑ । प्र॒प्र य॒ज्ञं पृ॒णीत॑न	१९६८
सुप्र॑ती॒के वयो॑वृ॒धा य॒ह्नी ऋ॒तस्य॑ मा॒तरा॑ । दोषामु॒षास॑मीमहे		१९६९
वा॒तस्य॑ प॒त्स॒न्नीळि॒ता	दै॒व्या हो॒तारा॑ मनु॒षः। इ॒मं नो॑ य॒ज्ञमा॑ ग॒तम्	१९७०
इळा॑ सर॒स्वती॑ म॒ही० । (१९१४)		
शि॒वस् त्व॑ष्टि॒रिहा॑ ग॒हि वि॒भ्रुः पोष॑ उ॒त त्म॑ना । य॒ज्ञेय॑ज्ञे न॒ उद॑व		१९७१
यत्र॑ वे॒त्थ व॑नस्प॒ते दे॒वानां॑ गु॒ह्या ना॑मानि । तत्र॑ ह॒व्यानि॑ गाम॒य		१९७२
स्वाहा॑ग्नये॒ वरु॑णाय॒ स्वाहे॑न्द्राय॒ मरु॑द्भ्यः । स्वाहा॑ दे॒वेभ्यो॑ ह॒विः		१९७३

॥ २९१ ॥ ( ऋ० ७।२।१-११ )

१९७४-८० वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आप्रीसूक्तं- (क्रमेण १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवाः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यां होतारो प्रचेतसां, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः ) । त्रिष्टुप् ।

जुष॑स्व नः स॒भिध॑मग्ने अ॒द्य शो॒चा बृ॒हद् य॒जतं॑ धूममु॒ष्वन् ।		
उप॑ स्पृश॒ दिव्यं॑ सानु॒ स्तूपैः॑ सं र॒श्मिभि॑स् ततनः॒ सूर्य॑स्य		१९७४
नरा॑शंसस्य म॒हिमान॑मेषाम् उप॑ स्तोषाम॒ यज॑तस्य॒ यज्ञैः॑ ।		
ये सु॒कृत॑वः शु॒चयो॑ धि॒यंघाः॑ स्वद॑न्ति दे॒वा उ॒भया॑नि ह॒व्या		१९७५
ई॒ळेन्यं॑ वो अ॒सुरं॑ सु॒दक्ष॑म् अ॒न्तर्दू॑तं रोद॑सी स॒त्यवा॑चम् ।		
मनु॑ष्वदु॒र्गि मनु॑ना॒ समि॑द्धं॒ सम॑ध्व॒राय॑ स॒दुमि॑न्महे॒म		१९७६
सप॑र्यवो भ॒रमा॑णा अ॒भिज्ञु॑ प्र वृ॒ञ्जते॑ नम॑सा ब॒र्हिर॑ग्नौ ।		
आ॒जुह्वा॑ना घृ॒तपृ॑ष्ठं पृष॑द्द्व॒ अध्व॑र्यवो ह॒विषा॑ म॒र्जय॑ध्वम्		१९७७
स्वा॒ध्याोऽ॒ वि दुरो॑ दे॒वय॑न्तो ऽशि॒श्र्यू रथ॑यु॒देवता॑ता ।		
पूर्वा॑ शि॒शुं न मा॑तरा॒ रिहा॑णे॒ सम॑गु॒त्रो न स॑मने॒ष्वञ्ज॑न्		१९७८
उ॒त योष॑णे॒ दिव्ये॑ म॒ही न॑ उ॒षासा॑नक्ता॒ सुदु॑षेव॒ धेनुः॑ ।		
ब॒र्हिष॑दा॒ पुरु॑हू॒ते म॒घोनी॑ आ॒ यज्ञि॑ये॒ सुवि॑तार्य॒ श्रये॑ताम्		१९७९
विप्रा॑ य॒ज्ञेषु॑ मानु॒षेषु॑ का॒रू मन्ये॑ वां जा॒तवे॑दसा॒ यज॑ध्वै ।		
ऊ॒र्ष्व नो॑ अध्व॒रं कृ॑तं ह॒वेषु॑ ता दे॒वेषु॑ व॒नथो॑ वा॒र्याणि॑		१९८०

आ भारती भारतीभिः सजोषा०। (१९६०)  
 तन्नस् तुरीपमध पोषयित्नु० । (१९६१)  
 वनस्पतेऽर्वं सजोषं देवान्० । (१९६२)  
 आ याँह्ये समिधानो अर्वाङ्० । (१९६३)

॥ २२२ ॥ ( ऋ० ९।५।१-११ )

१९८१-९१ असितः काश्यपो देवलो वा । आग्नीसूक्तं=(क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीद्वार, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः । गायत्री, १९९४-९७ अनुष्टुप् ।

समिद्धो विश्वतस्पतिः	पर्वमानो वि राजति ।	ग्रीणन् वृषा कर्निकदत्	१९८१
तनूनपात् पर्वमानः	शृङ्गे शिशानो अर्षति ।	अन्तारिक्षेण रारजत्	१९८२
इळैन्यः पर्वमानो	रयिधि राजति द्युमान् ।	मधोर्धाराभिरोजसा	१९८३
बर्हिः प्राचीनमोजसा	पर्वमानः स्तृणन् हरिः ।	देवेषु देव ईयते	१९८४
उदातैर्जिहते बृहद्	द्वारौ देवीर्हिरण्ययीः ।	पर्वमानेन सुष्टुताः	१९८५
सुशिल्पे बृहती मही	पर्वमानो वृषण्यति ।	नक्तोषासा न दर्शते	१९८६
उभा देवा नृचक्षसा	होतारा दैव्या हुवे ।	पर्वमान इन्द्रो वृषा	१९८७
भारती पर्वमानस्य	सरस्वतीळा मही । इमं नो यज्ञमा गमन्	तिस्रो देवीः सुपेशसः	१९८८
त्वष्टारमग्रजां गोपां	पुरोयावानमा हुवे । इन्दुरिन्द्रो वृषा हरिः	पर्वमानः प्रजापतिः	१९८९
वनस्पतिं पर्वमान	मध्वा समङ्ग्धि धारया । सहस्रवल्शं हरितं	भ्राजमानं हिरण्ययम्	१९९०
विश्वे देवाः स्वाहाकृतिं	पर्वमानस्या गत । वायुर्बृहस्पतिः सूर्यो	ऽग्निरिन्द्रः सजोषसः	१९९१

॥ २२३ ॥ ( ऋ० १०।७०।१-११ )

१९९२-२००२ सुमित्रो वाध्वश्वः । आग्नीसूक्तं= ( क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः ) । त्रिष्टुप् ।

इमां मे अग्ने समिधं जुषस्व इळस्पदे प्रति हर्या घृताचीम् ।  
 वर्ष्मन् पृथिव्याः सुदिनत्वे अह्वाम् ऊर्ध्वो भव सुक्रतो देवयज्या १९९२  
 आ देवानामग्रयावेह यातु नराशंसो विश्वरूपेभिरश्वैः ।  
 ऋतस्य पथा नमसा मियेधो देवेभ्यो देवर्तमः सुषूदत् १९९३

शश्चत्तममीळते दूत्याय हविष्मन्तो मनुष्यासो अग्निम् । वर्हिष्ठैरथैः सुवृता रथेन आ देवान् वक्षि नि षदेह होता	१९९४
वि प्रथतां देवजुष्टं तिरश्चा दीर्घं द्वाध्मा सुरभि भूत्वस्मे । अहैळता मनसा देव वर्हिर् इन्द्रज्येष्ठो उशतो यक्षि देवान्	१९९५
दिवो वा सानु स्पृशता वरीयः पृथिव्या वा मात्रया वि श्रयध्वम् । उशतीर्द्वीरो महिना महद्भिर् देवं रथं रथयुधीरयध्वम्	१९९६
देवी दिवो दुहितरा सुशिल्पे उषासानक्ता सदतां नि योनां । आ वां देवास उशती उशन्त उरौ सीदन्तु सुभगे उपस्थं	१९९७
ऊर्ध्वो ग्रावां बृहदुभिः समिद्धः प्रिया धामान्यदितरुपस्थं । पुरोहितावृत्विजा यज्ञे अस्मिन् विदुष्टरा द्रविणमा यजथाम्	१९९८
तिस्रो देवीर्बर्हिरीदं वरीय आ सीदत चक्रुमा वः स्योनम् । मनुष्वद् यज्ञं सुधिता हवीषि इळा देवी घृतपदी जुपन्त	१९९९
देवं त्वष्टर्यद्धं चारुत्वमानद् यदाङ्गिरसामभवः सचाभूः । स देवानां पाथ उप प्र विद्वान् उशन् यक्षि द्रविणोदः सुग्लः	२०००
वनस्पते रशनया नियूया देवानां पाथ उप वक्षि विद्वान् । स्वदाति देवः कृणवद्धवीषि अवतां द्यावापृथिवी हवी मे	२००१
आग्ने वह वरुणमिष्टये न इन्द्रं दिवो मरुतो अन्तरिक्षात् । सीदन्तु बर्हिर्विश्च आ यजत्राः स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्	२००२

॥ २२४ ॥ ( ऋ० १० । ११० । १ ११ )

११ जमदग्निर्भागवः, रामो वा जामदग्न्यः । आप्रीसूक्तं=(क्रमेण-१ इधमः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ इळा, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ देव्यौ होतागौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । त्रिष्टुप् । ( अथर्व० ५ । १० । १-११ [ अथर्ववेदे अंगिरा ऋषिः । ] काठक सं० १६ । २०, मैत्रायणी सं० ४।१३ । ३; तै० ब्रा० ३।६।३ )

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान् यजसि जातवेदः । आ च वह मित्रमहश चिकित्वान् त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः	२००३
तनूनपात् पथ ऋतस्य यानान् मर्वा समञ्जन् त्स्वदया सुजिह्व । मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन् देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः	२००४

आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्च आ याह्यग्रे वसुभिः सजोषाः । त्वं देवानामसि यह्य होता स एनान् यक्षीषितो यजीयान्	२००५
प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्वाम् । व्यु प्रथते वितरं वरीयो देवेभ्यो अदितये स्योनम्	२००६
व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः । देवीर्दारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः	२००७
आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ । दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियं शुक्रपिशं दधाने	२००८
दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजर्ध्वे । प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्तां	२००९
आ नो यज्ञं भारती तूर्यमेतु इळा मनुष्वदिह चेतयन्ती । तिस्रो देवीर्विहिरेदं स्योनं सरस्वती स्वपसः सदन्तु	२०१०
य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिशद्भुवनानि विश्वा । तमद्य होतरिषितो यजीयान् देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान्	२०११
उपावसृज त्मन्यां समञ्जन् देवानां पार्थ ऋतुथा हवीषि । वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन	२०१२
सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञम् अग्निर्देवानामभवत् पुरोगाः । अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः	२०१३

२२५ ॥ ( वा० यजुर्वेद २०। ३६-४६, तैत्ति० सं० २।६।८; काठकसं० ३।८।६, मैत्रायणीसं० ३।१।१। )

समिद्धं इन्द्रं उषसामनीके पुरोरुचा पूर्वकृद् वावृधानः । त्रिभिर्देवैस् त्रिंशता वज्रबाहुर् जघान वृत्रं वि दुरो ववार	२०१४
नराशंसः प्रति शूरो मिमानस् तनूनपात् प्रति यज्ञस्य धाम । गोभिर्वपावान् मधुना समञ्जन् हिरण्यैश् चन्द्री यजति प्रचेताः	२०१५

मैत्रायणी-पाठभेदाः- २०१४ ( १ समिद्धा ) ( २००४-५ मध्ये ' नराशंसस्य० ' इति मन्त्रोऽग्रे वा० यजुर्वेदे अ० २९-२५-३६ द्रष्टव्य )

काठकपाठभेदाः- २०१५ ( १ यजतु )

ईडितो देवैर्हरिवाँ २ अभिष्टिर्	आजुह्वानो हविषा शर्धमानः ।	
पुरन्दुरो गोत्रभिद् वज्रबाहुर्	आ यातु यज्ञमुप नो जुषाणः	२०१६
जुषाणो बर्हिर्हरिवान् न इन्द्रः	प्राचीनं सीदत प्रदिशा पृथिव्याः ।	
उरुप्रथाः प्रथमानं स्येनम्	आदित्यैरक्तं वसुभिः सजोषाः	२०१७
इन्द्रं दुरं कवृष्यो धारमाना	वृषाणं यन्तु जनयः सुपत्नीः ।	
द्वारो देवीरभितो वि श्रयन्तां	सुवीरा वीरं प्रथमाना महोभिः	२०१८
उषासानक्ता बृहती बृहन्तं	पर्यस्वती सुदुघे शूरमिन्द्रम् ।	
तन्तुं ततं पेशसा संवयन्ती	देवानां देवं यजतः सुरुक्मे	२०१९
दैव्या मिमाना मनुषः पुरुत्रा	होतारो विन्द्रं प्रथमा सुवाचा ।	
मूर्धन् यज्ञस्य मधुना दधाना	प्राचीनं ज्योतिर्हविषा वृधातः	२०२०
तिस्रो देवीर्हविषा वर्धमाना	इन्द्रं जुषाणा जर्नयो न पत्नीः ।	
अच्छिन्नं तन्तुं पर्यसा सरस्वती	इडा देवी भारती विश्वतूर्तिः	२०२१
त्वष्टा दध्क् छुममिन्द्राय वृष्णे	स्पाकोऽचिष्टुर्यशसे पुरूणि ।	
वृषा यजन् वृषणं भूरिरेता	मूर्धन् यज्ञस्य समनक्तु देवान्	२०२२
वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैस्	त्मन्या समञ्जश् छमिता न देवः ।	
इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पृणानः	स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन	२०२३
स्तोकानामिन्दुं प्रति शूर इन्द्रो	वृषायमाणो वृषभस् तुराषाट् ।	
घृतप्रुषा मनसा मोदमानाः	स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्	२०२४

॥ २२६ ॥ ( वा० यजुर्वेद २० । ५५-६६; मैत्रा० सं० ३।११३, काठक सं० ३।८; तैत्ति० ब्रा० २।६।१२ )

समिद्धो अगिरंश्विना तमो घर्मो विराट् सुतः ।

दुहे धेनुः सरस्वती सोमं शुक्रमिहेन्द्रियम् २०२५

मैत्रा० पाठ०- २०१६ ( १ गोत्रमृद् ), २०१७ ( १ ना, २ सीदात् ) २०१८ ( १ यन्ति ), २०१९ ( १ पेशस्वती तन्तुना );  
२०२० ( १ मनसा ; २ होतारा इन्द्र ) २०२१ ( १ वृषण ); २०२२ ( १ दधदिन्द्राय शुष्ममपाको )  
२०२३ ( १ स्वदातु ), २०२४ ( १ हव्यमुदन्स्वाहाकृतं जुषतां हव्यमिन्द्रः )

काठ० पाठ०- २०१९ ( १ पेशस्वती तन्तुना ), २०२० ( १ मनसा , २ होतारा इन्द्र ) २०२१ ( १ वृषण ),  
२०२२ ( १ दधदिन्द्राय शुष्ममपाको ) २०२४ ( १ हव्यमुदन्मूर्धन्ययज्ञस्य जुषतां स्वाहा )



तनुपा भिषजां सुते ऽश्विनोभा सरस्वती । मध्वा रजांसीन्द्रियम् इन्द्राय पथिभिर्वहान्	२०२६
इन्द्रायेन्दुं सरस्वती नराशंसेन नमहुम् । अघातामश्विना मधु भेषजं भिषजां सुते	२०२७
आजुह्वाना सरस्वती इन्द्रायेन्द्रियाणि वीर्यम् । इडाभिरश्विनांविषं समर्जं सं रयिं दधुः	२०२८
अश्विना नम्रुचेः सुतं सोमं शुक्रं परिस्रुता । सरस्वती तमा भरद् बर्हिषेन्द्राय पातवे	२०२९
कवष्यो न व्यचस्वतीर् अश्विभ्यां न दुरो दिशः । इन्द्रो न रोदसी उभे दुहे कामान् त्सरस्वती	२०३०
उपासानक्तमश्विना दिवेन्द्रं सायमिन्द्रियैः । सज्जानाने सुपेशसा समज्जाते सरस्वत्या	२०३१
पातं नो अश्विना दिवा पाहि नक्तं सरस्वति । दैव्यां होतारा भिषजा पातमिन्द्रं सचां सुते	२०३२
तिस्रस् त्रेधा सरस्वती अश्विना भारतीडा । तीव्रं परिस्रुता सोमम् इन्द्राय सुषुवुर्मदम्	२०३३
अश्विना भेषजं मधु भेषजं नः सरस्वती । इन्द्रे त्वष्टा यशः श्रियं रूपं रूपमधुः सुते	२०३४
ऋतुथेन्द्रो वनस्पतिः शशमानः परिस्रुता । कीलालमश्विभ्यां मधु दुहे धेनुः सरस्वती	२०३५
गोभिर्न सोममश्विना मासरेण परिस्रुता । समघातं सरस्वत्या स्वाहेन्द्रै सुतं मधु	२०३६

मैत्रा० पाठ०- २०२६ ( १ पथिभिर्वह ), २०२८ ( १ अश्विना इषं ); २०३३ ( १ इन्द्रायासुषुवु० ),  
२०३६ ( १ समघाता )

काठ० पाठ०- २०२८ ( १ अश्विना इषं ); २०३० ( १ दुहे ), २०३३ ( १ इन्द्रायासुषुवु० )  
२०३४, ( १ द्वितीयऽर्षः, तथा कामाक २०३५ गोपलगतै ); २०३६ ( १ समघाता )

॥ २२७ ॥ ( वा० यजुर्वेद २१ । १२-२२; मैत्रा० सं० ३।११।११, काठक सं० ३।१०; तै० ब्रा० २।६।२८ )

समिद्धो अग्निः समिधा	सुसमिद्धो वरेण्यः ।	
गायत्री छन्द इन्द्रियं	त्र्यविर्गौर्ययो दधुः	२०३७
तनूनपांश्च छुचिव्रतस्	तनूपाश् च सरस्वती ।	
उष्णिहा छन्द इन्द्रियं	दित्यवाङ् गौर्ययो दधुः	२०३८
इडाभिरग्निरीडयः	सोमो देवो अमर्त्यः ।	
अनुष्टुप् छन्द इन्द्रियं	पञ्चाविर्गौर्ययो दधुः	२०३९
सुबर्हिरग्निः पूषण्वान्	स्तीर्णबर्हिरमर्त्यः ।	
बृहती छन्द इन्द्रियं	त्रिवत्सो गौर्ययो दधुः	२०४०
दुरो देवीर्दिशो महीर्	ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ।	
पङ्क्तिश् छन्द इहेन्द्रियं	तुर्यवाङ् गौर्ययो दधुः	२०४१
उषे यङ्ही सुपेशसा	विश्वे देवा अमर्त्याः ।	
त्रिष्टुप् छन्द इहेन्द्रियं	पष्टवाङ् गौर्ययो दधुः	२०४२
दैव्या होतारा भिषजा	इन्द्रेण सयुजा युजा ।	
जगती छन्द इन्द्रियम्	अनुड्वान् गौर्ययो दधुः	२०४३
तिस्र इडा सरस्वती	भारती मरुतो विशः ।	
विराट् छन्द इहेन्द्रियं	धेनुर्गौर्न वयो दधुः	२०४४
त्वष्टा तुरीपो अद्भुत	इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना ।	
द्विपदा छन्द इन्द्रियम्	उक्षा गौर्न वयो दधुः	२०४५
शमिता नो वनस्पतिः	सविता प्रसुवन् भगम् ।	
ककुप् छन्द इहेन्द्रियं	वशा वेहद्वयो दधुः	२०४६
स्वाहा यज्ञं वरुणः	सुक्षत्रो भेषजं करत् ।	
अतिच्छन्दा इन्द्रियं बृहद्	ऋषभो गौर्ययो दधुः	२०४७

मैत्रा० पाठ०-- २०३७ ( १ त्रियवि० ), २०३८ ( १ अयं प्रथमोऽर्धो न दश्यते; २ उष्णिक् ), २०४१ ( १ इन्द्रियं );  
२०४४ ( १ तिस्रो देवीरिडा मही; २ इन्द्रियं ), २०४६ ( १ ऋषभो गौर्ययो ), २०५७  
( १ बृहद्वशा वेहद्वयो )

काठ० पाठ०-- २०३७ ( १ त्रियवि० ), २०४१ ( २ इहेन्द्रियं ), २०४५ ( १ अतिच्छन्द; २ बृहद्वशो )

॥ २२८ ॥ ( वा० यजुर्वेद २१ । २९—४०; मैत्रायणी सं० ३ । ११ । २; तै० ब्रा० २ । ६ । ११ )

होता यक्षत् समिधाग्निमिडस्पदे—ऽश्विनेन्द्रं सरस्वती—मजो धूम्रो न गोधूमैः कुर्वलै-  
भेषजं मधु शपैर्न तेज इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य  
होतर्यजं २०४८

होता यक्षत् तनूनपात् सरस्वती—मर्विर्मेषो न भेषजं पथा मधुमता भर—ऽश्विनेन्द्राय  
वीर्यं बदरैरुपवाकाभिर्भेषजं तोक्मभिः पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य  
होतर्यजं २०४९

होता यक्षन्नराशं न नग्रहं पतिं सुरयां भेषजं मेषः सरस्वती भिषग् रथो न  
चन्द्रयश्विनो—र्वपा इन्द्रस्य वीर्यं बदरैरुपवाकाभिर्भेषजं तोक्मभिः पयः सोमः  
परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५०

होता यक्षदिडेडित आजुह्वानः सरस्वती—मिन्द्रं बलेन वर्धय—ऋषभेण गर्वेन्द्रिय—म-  
श्विनेन्द्राय भेषजं यवैः कर्कन्धुभि—र्मधु लाजैर्न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं  
मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५१

होता यक्षद् बहिरूर्णम्रदा भिषङ् नासत्या भिषजाश्विनाश्चा शिशुमती भिषग् धेनुः  
सरस्वती भिषग् दुह इन्द्राय भेषजं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य  
होतर्यजं २०५२

होता यक्षद् दुरो दिशः कवृष्यो न व्यचस्वती—रश्विभ्यां न दुरो दिशं इन्द्रो न  
रोदसी दुषे दुहे धेनुः सरस्वत्यं—श्विनेन्द्राय भेषजं शुक्रं न ज्योतिरिन्द्रियं पयः  
सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५३

होता यक्षत् सुपेशसोषे नक्तं दिवा—श्विना समञ्जाति सरस्वत्या त्विषिमिन्द्रे न  
भेषजं श्येनो न रजसा हृदा श्रिया न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु  
व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५४

मैत्रा० पाठ० - २०४९ ( १ मधुमदाभरण०; २ वेत्वाज्यस्य ); २०५० ( १ सुराया, २ वेत्वाज्यस्य );  
२०५२ ( १ भिषगिन्द्राय दुह इन्द्रियं ); २०५३ ( १ दिशा; २ 'अश्विनेन्द्राय भेषजं' इति न  
दृश्यते ) २०५४ ( १ संजानाने सुपेशमा समञ्जाते, २ त्विषिमिन्द्रेण; ३ हृदा पयः; ४ वीतामा-  
ज्यस्य )

होता यक्षद् दैव्या होतारा भिषजाश्विनेन्द्रं न जागृवि दिवा नक्तं न भेषजैः शूषथं  
सरस्वती भिषक् सीसैन दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य  
होतर्यजं २०५५

होता यक्षत् तिस्रो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपसो रूपमिन्द्रै हिरण्ययमाश्विनेडा न  
भारती वाचा सरस्वती महं इन्द्राय दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु  
व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५६

होता यक्षत् सुरेतसंमृषभं नर्यापसं त्वष्टारमिन्द्रमश्विना भिषजं न सरस्वतीमोजो न  
जूतिरिन्द्रियं वृको न रभसो भिषग् यशः सुर्या भेषजथं श्रिया न मासरं  
पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५७

होता यक्षद् वनस्पतिथं शमितारथं शतक्रतुं भीमं न मन्युथं राजानं व्याघ्रं नमसा-  
श्विना भामथं सरस्वती भिषगिन्द्राय दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु  
व्यन्त्वा ज्यस्य होतर्यजं २०५८

होता यक्षदुग्धिथं स्वाहाज्यस्य स्तोक्रानाथं स्वाहा मेदसां पृथक् स्वाहा छागम-  
श्विभ्याथं स्वाहा भेषथं सरस्वत्यै स्वाह ऋषभमिन्द्राय सिथंहाय सहस इन्द्रियथं  
स्वाहाग्निं न भेषजंथं स्वाहा सोममिन्द्रियं स्वाहेन्द्रंथं सुत्रामाणंथं सवितारं वरुणं  
भिषजां पतिथं स्वाहा वनस्पतिं प्रियं पाथो न भेषजंथं स्वाहा देवा आज्यपा  
जुषाणो अग्निभेषजं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५९

॥ २२८ ॥ ( वा० यजुर्वेद २७ । ११-२२; काठक सं० १८ । १७; मैत्रा० सं० २ । १२ । ६ )

ऊर्ध्वा अस्य समिधो भवन्ति ऊर्ध्वा शुक्रा शोचीथंष्यग्नेः ।

द्युमत्तमा सुप्रतीकस्य सूनोः २०६०

तनूनपादसुरो विश्ववेदा देवो देवेषु देवः । पथो अनक्तु मध्वा घृतेन २०६१

मध्वा यज्ञं नक्षसे प्रीणानो नराशंथसो अग्ने । सुकृद्देवः सविता विश्ववारः २०६२

मैत्रा० पाठ०— २०५५ ( १ वीतामाज्यस्य ); २०५६ ( १ रूपमिन्द्रो ; २ महा ). २०५७ ( १ यक्षत्त्वष्टारं  
रूपकृतं सुपेशसं वृषभं, २ सुराया; ३ वेत्वाज्यस्य ), २०५८ ( १ वेत्वाज्यस्य ), २०५९ ( १ स्वाहा;  
२ भेषजैः ; ३ ०मिन्द्रियैः ) [पंक्तिपदच्छेदपद्धतिः क्वचिद्विज्ञा,] २०६० ( १ देवेभ्यो देवयानान् )  
२०६२ ( १ नक्षति; २ अग्निः ; )

काठ० पाठ०-- [पंक्तिच्छेदपद्धतिभिज्ञा] २०६१ ( १ घृतेन... .प्रीणानः इत्येव एका पंक्तिः ) २०६२ ( १ नक्षति)

अच्छायंमिति शवसा घृतेनेडानो वह्निर्मसा ।

अग्निं सुचो अध्वरेषु प्रयत्सु २०६३

स यक्षदस्य महिमानमग्नेः स ई मन्द्रो सुप्रयसः ।

वसुश्चेतिष्ठो वसुधातमश्च २०६४

द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता ददन्ते अग्नेः ।

उरुव्यचसो धाम्ना पत्यमानाः २०६५

ते अस्य योषणे दिव्ये न योनी उषासानक्ता ।

इमं यज्ञमवतामध्वरं नः २०६६

दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं नो ऽग्नेर्जिह्वामभि गृणीतम् ।

कृणुतं नः स्विष्टिर्म २०६७

तिस्रो देवीर्बहिरेदं सन्दन्तु इडा सरस्वती भारती ।

मही गृणाना २०६८

तन्नस्तुरीपमङ्कृतं पुरुक्षु त्वष्टा सुवीर्यम् ।

रायस्पोषं वि प्यर्तुं नाभिमस्मे २०६९

वनस्पतेऽव सृजा रराणस्मना देवेषु ।

अग्निर्हव्यं शमिता हृदयाति २०७०

अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदं इन्द्राय हव्यम् ।

विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम् २०७१

॥ २३० ॥ ( अथर्व० कां० ५।२७ )

१—१२ ब्रह्मा । अग्निः । १ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप्; २ द्विपदा सास्त्री भुरिगनुष्टुप्; ३ द्विपदार्ची बृहती;

४ द्विपदा सास्त्री भुरिगृहती; ५ द्विपदा सास्त्री त्रिष्टुप्; ६ द्विपदा विराणनाम गायत्री;

७ द्विपदा सास्त्री बृहती; ८ संस्तारपशक्तिः; ९ षट्पदानुष्टुब्गर्भा पराति-

जगती, १०—१२ पुरउष्णिक ( २-७ एकावसाना ) ।

उर्ध्वा अस्य समिधो भवन्ति ऊर्ध्वा शुक्रा शोचीष्यग्नेः ।

द्युमत्तमा सुप्रतीकः सखनुस् तनूनपादसुरो भूरिपाणिः २०७२

मैत्रा० पाठ० - २०६४ ( १ स ई मन्द्रा सुप्रयसा स्तरीमन् । बहिषो मित्रमहा ) २०६५ ( १ विश्वा ); २०६७ ( १ होतारा ऊर्ध्वमिमध्वरं, २ स्विष्टम् ); २०६८ ( १ स्थोनम्; २ मही शब्दः नास्ति ) २०६९ ( १ त्वष्टः ) २०७० ( १ विध्य; २ देवेभ्यः ) २०७१ ( १ जातवेदा, २ देवेभ्यः )

काठ० पाठ० - २०६३ ( १ अच्छायं यन्ति; २ घृताचीः ईडाना वह्निः, २०६४ ( १ स्तनी मन्द्रस्तुप्रयक्षु ); २०६६ ( १ दिव्यो न योनिषासानक्तामेः ), २०६७ ( १ होतारोर्ध्वमिमध्वरं; २ स्विष्टम् ) २०६८ ( १ महीगृणाना ); २०६९ ( १ त्वष्टः पोषाय विध्य नाभिमस्मे ) २०७० ( १ सृज; ३ हविः )

देवो देवेषु देवः पथो अनाक्ति मध्वा घृतेन ।	२०७३
मध्वा यज्ञं नक्षति प्रैणानो नराशंसो अग्निः सुकृद् देवः सविता विश्ववारः	२०७४
अच्छायमेति शर्वसा घृता चिदीडानो वह्निर्मसा	२०७५
अग्निः सुचो अध्वरेषु प्रयक्षु स यक्षदस्य महिमानमग्नेः	२०७६
तरी मन्द्रासु प्रयक्षु वसवश्चातिष्ठन् वसुधातरश्च	२०७७
द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रतं रक्षन्ति विश्वहा	२०७८
उरुव्यचसाऽग्नेर्धाम्ना पत्यमाने ।	
आ सुष्वर्यन्ती यजते उपाके उषासानक्तेमं यज्ञमवतामध्वरं नः	२०७९
दैवा होतार उध्वम् अध्वरं नोऽग्नेजिह्वया अभि गृणत गृणता नः स्विष्टये ।	
तिस्रो देवीर्विहिरेदं सदन्तामिडा सरस्वती मही भारती गृणाना	२०८०
तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु । देवं त्वष्टा रायस्पोषं वि प्य नाभिमस्य	२०८१
वनस्पतेऽव सृजा रराणः । त्मना देवेभ्यो अग्निर् हव्यं शमिता स्वदयतु	२०८२
अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदः । इन्द्राय यज्ञं विश्वे देवा हविरिदं जुपन्ताम्	२०८३

॥ २३१ ॥ ( वा० यजुर्वेद २८।१-११ )

होता यक्षत् समिधेन्द्रमिडस्पदे नाभा पृथिव्या अधि ।	
दिवा वर्ष्मन् त्समिध्यत ओजिष्ठश्वर्षणीसहा वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०८४
होता यक्षत् तनूनपातमूतिभिर्जेतारमपराजितम् ।	
इन्द्रं देवथं स्वर्विदं पथिभिर्मधुमत्तमैर्नराशथंसेन तेजसा वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०८५
होता यक्षदिडाभिरिन्द्रमीडितमाजुह्वानममर्त्यम् ।	
देवो देवैः सवीर्यो वज्रहस्तः पुरन्दरो वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०८६
होता यक्षद् बहिषीन्द्रं निषद्वरं वृषभं नर्यापसम् ।	
वसुभी रुद्रेरादित्यैः सयुग्भिर्बहिंरासदुद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२०८७
होता यक्षदोजो न वीर्युथं सहो द्वार इन्द्रमवर्धयन् ।	
सुप्रायणा अस्मिन् यज्ञे वि श्रयन्तामृतावृधो द्वार इन्द्राय मीदुषे व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं	२०८८
होता यक्षदुषे इन्द्रस्य धेनू सुदुधे मातरा मही ।	
सवातरौ न तेजसा वत्समिन्द्रमवर्धतां वीतामाज्यस्य होतर्यजं	२०८९

होता यक्षद् दैव्या होतारा भिषजा सखाया हविषेन्द्रं भिषज्यतः ।	
कवी देवौ प्रचेतसाविन्द्राय धत्त इन्द्रियं वीतामाज्यस्य होतर्यज	२०९०
होता यक्षत् तिस्रो देवान् भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपस इडा सरस्वती भारती महीः ।	
इन्द्रपत्नीर्हविष्मतीर्व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज	२०९१
होता यक्षत् त्वष्टारमिन्द्रं देवं भिषजं सुयजं घृतश्रियम् ।	
पुरुरूपं सुरेतसं मघोनमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२०९२
होता यक्षद् वनस्पतिं शमितारं शतक्रतुं धियो जोष्टारमिन्द्रियम् ।	
मध्वा समञ्जन् पथिभिः सुगेभिः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२०९३
होता यक्षदिन्द्रं स्वाहाज्यस्य स्वाहा मेदसः स्वाहा	
स्तोकानां स्वाहा स्वाहाकृतीनां स्वाहा हव्यसूक्तीनाम् ।	
स्वाहा देवा आज्यपा जुषाणा इन्द्र आज्यस्य व्यन्तु होतर्यज	२०९४

॥ २३२ ॥ ( वा० यजुर्वेद २८ । २४-३४ )

होता यक्षत् समिधानं महद् यज्ञः सुसमिद्धं वरेण्यमग्निमिन्द्रं वयोधसम् ।	
गायत्रीं छन्दं इन्द्रियं त्र्यविं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२०९५
होता यक्षत् तनूनपातमुद्भिदं यं गर्भमादितिर्दधे शुचिमिन्द्रं वयोधसम् ।	
उष्णिहं छन्दं इन्द्रियं दित्यवाहं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२०९६
होता यक्षदीडेन्यमीडितं वृत्रहन्तममिडाभिरीडयं सहः सोममिन्द्रं वयोधसम् ।	
अनुष्टुभं छन्दं इन्द्रियं पञ्चाविं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२०९७
होता यक्षत् सुबर्हिषं पूषण्वन्तममर्त्यं सीदन्तं बर्हिषि प्रियेऽमृतेन्द्रं वयोधसम् ।	
बृहतीं छन्दं इन्द्रियं त्रिवत्सं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२०९८
होता यक्षद् व्यचस्वतीः सुप्रायणा क्रतावृधो द्वारो देवीर्हिरेण्ययीर्ब्रह्माणमिन्द्रं वयोधसम् ।	
पङ्क्तिं छन्दं इहेन्द्रियं तुर्यवाहं गां वयो दधद् व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज	२०९९
होता यक्षत् सुपेशसा सुशिल्पे बृहती उभे नक्तोपासा न दर्शते विश्वमिन्द्रं वयोधसम् ।	
त्रिष्टुभं छन्दं इहेन्द्रियं पष्ठवाहं गां वयो दधद् वीतामाज्यस्य होतर्यज	२१००
होता यक्षत् प्रचेतसा देवानामुत्तमं यज्ञो होतारा दैव्या कवी सयुजेन्द्रं वयोधसम् ।	
जगतीं छन्दं इन्द्रियमनुडवाहं गां वयो दधद् वीतामाज्यस्य होतर्यज	२१०१

होता यक्षत् पेशस्वतीस्तिस्रो देवीर्हिरण्ययीभारतीर्बृहतीर्महीः पतिमिन्द्रं वयोधसम् । बिराजं छन्दं इहेन्द्रियं धेनुं गां न वयो दधद् व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं	२१०२
होता यक्षत् सुरतसं त्वष्टारं पृष्टिवर्धनं रूपाणि बिभ्रतं पृथक् पृष्टिमिन्द्रं वयोधसम् । द्विपदं छन्दं इन्द्रियमुक्षणं गां न वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२१०३
होता यक्षद् वनस्पतिंश्च शमितारंश्च शतक्रतुंश्च हिरण्यपर्णमुक्थिनंश्च रश्नानां बिभ्रतं वशि भगमिन्द्रं वयोधसम् । ककुभं छन्दं इहेन्द्रियं वशां वेहतं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं	२१०४
होता यक्षत् स्वाहाकृतीरग्निं गृहपतिं पृथग् वरुणं भेषजं कविं क्षत्रमिन्द्रं वयोधसम् । अतिच्छन्दसं छन्दं इन्द्रियं बृहदृषभं गां वयो दधद् व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं	२१०५

॥ २३३ ॥ ( वा० यजुर्वेद २९ । १-११ काठक, सं० पा० १२; मैत्रा० सं० ३ । १६ । २; तै० ब्रा० ५।१।११ )

समिद्धो अञ्जन्दरं मतीनां घृतमग्ने मधुमत् पिन्वमानः । वाजी वहन् वाजिनं जातवेदो देवानां वक्षि प्रियमा सधस्थम्	२१०६
घृतेनाञ्जन् त्सं पथो देवयानान् प्रजानन् वाज्यप्येतु देवान् । अनु त्वा सप्ते प्रदिशः सचन्तांश्च स्वधामस्मै यजमानाय धेहि	२१०७
ईक्ष्वासि वन्द्यश्च वाजिन्नाशुश्चासि मेर्ध्यश्च सप्ते । अग्निष्ठां देवैर्वसुभिः सजोषाः प्रीतं वह्निं वहतु जातवेदाः	२१०८
स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम् । देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु	२१०९
एता उ वः सुभगा विश्वरूपा वि पक्षोभिः श्रयमाणा उदातैः । ऋषाः सतीः कवेषः शुम्भमाना द्वारो देवीः सुप्रायणा भवन्तु	२११०
अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभि संविदाने । उषासा वांश्च सहिरण्ये मुशिल्ये ऋतस्य योनीविह सादयामि	२१११

मैत्रा० पाठ० — २१०७ ( १ तनूनपात्सं, २ स्वधा देवैर् ); २१०८ ( १ मेर्ध्यश्चासि ); २१०९ ( १ देवेभिरक्तम० )  
२११० ( १ विश्ववारा ); २१११ ( ४ योना इह )

काठ० पाठ० — २१०९ ( १ देवेभिरक्तम० ), २११० ( १ विश्ववारा; २ कवेष, ३ सुप्रायणा ) २१११ ( १ योना इह )



प्रथमा वांश्च सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा । अर्पिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्तां	२११२
आदित्यैर्नां भारती वष्टु यज्ञश्च सरस्वती सह रुद्रैर्न आषीत् । इडोपहृता वसुभिः सजोषा यज्ञं नो देवीरमृतेषु धत्त	२११३
त्वष्टा वीरं देवकामं जजान त्वष्टुरवीं जायत आशुरश्वः । त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजान बहाः कर्तारमिह यक्षि होतः	२११४
अथो घृतेन त्मन्या समक्तं उप देवो २ ऋतुशः पार्थ एतु । वनस्पतिर्देवलोकं प्रजानन्नग्निना हव्या स्वदितानि वक्षत्	२११५
प्रजापतेस्तपसा वावृधानः सद्यो जातो दधिषे यज्ञमग्रे । स्वाहाकृतेन हविषा पुरोगा याहि साध्या हविरदन्तु देवाः	२११६

॥ २३४ ॥ ( वा० यजुर्वेद २९।२५-३६; काठकसं० १६।२०, मैत्रा० सं० ४।१३।३, तैत्ति० ब्रा० २।६।३ )

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान् यजसि जातवेदः । आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान् त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः	२११७
तनूनपात् पथ ऋतस्य यानान् मध्वा समञ्जन् त्स्वदया सुजिह्व । मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन् देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः	२११८
नराशश्चसस्य महिमानमेषामुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः । ये सुक्रतवः शुचयो धियंधाः स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या	२११९
आजुह्वानं ईड्यो वन्द्यश्वा याह्यग्रे वसुभिः सजोषाः । त्वं देवानामसि यह्व होता स एनान् यक्षीषितो यजीयान्	२१२०
प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्वाम् । व्यु प्रथते वितरं वरीयो देव्येभ्यो अर्दितये स्योनम्	२१२१
व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः । देवीर्दारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः	२१२२

मैत्रा० पाठ०— २११३ ( १ स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु ) २११४ ( १ त्वष्टेमा विश्वा भुवना ) २११५ ( १ समक्षा;  
२ देव ); २११९ ( १ स्वदन्तु ); २१२० ( १ आजुह्वाना )

काठ० पाठ०— २११६ ( १ गधिषे; २ सकृया ); २११९ अयं मन्त्रो नास्ति ।

आ सुष्वर्यन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ । दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियंश्च शुक्रपिशं दधाने	२१२३
दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्वै । प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशां दिशन्ता	२१२४
आ नो यज्ञं भारती तूर्यमेत्विडा मनुष्वदिह चेतयन्ती । तिस्रो देवीर्बिहिरेदं स्योनं सरस्वती स्वर्षसः सदन्तु	२१२५
य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिंश्चद् भुवनानि विश्वा । तमद्य होतरिषितो यजीयान् देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान्	२१२६
उपावसृज त्मन्यां समञ्जन् देवानां पार्थ ऋतुथा हवींश्चिषि । वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन	२१२७
सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत् पुरोगाः । अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः	२१२८
॥ २३५ ॥ ( ऋग्वेदीय-परिशिष्ट-प्रैषाध्याये १-१३ । मैत्रा० सं० ४ । १३ । २, २०० । १; काठक सं० १५ । १३, तै० ब्रा० ३ । ६ । २ । १ )	
होता यक्षदग्निं समिधा सुषमिधा समिद्धं नाभा पृथिव्याः संगथे वामस्य । वर्षमन् दिव इळस्पदे वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२१२९
होता यक्षत् तनूनपातमदितेर्गर्भं भुवनस्य गोपाम् । मध्वाद्य देवो देवेभ्यो देवयानान् पथो अनक्तु वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२१३०
होता यक्षन्नराशंसं नृशस्त्रं प्रणेत्रं । गोभिर्वपावान् तस्याद् वीरैः शक्तीवान् रथैः प्रथमयावा हिरण्यैश्चन्द्री वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२१३१
होता यक्षदग्निमीळ ईळितो देवो देवा आवक्षद्दूतो हव्यवाळमूरैः । उपेमं यज्ञमुपेमो देवो देवहूतिमवतुं वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२१३२

मैत्रा० पाठ०- २१२८ मंत्रः नोपलभ्यते; २१३१; ( १ नृशस्तं, नृस्पणेत्रं ); २१३२ ( १ द्रमिमिड, २ देवं  
आ च वक्षद्, ३ ०मूरा ),

काठ० पाठ०- २१२९ ( १ समिधं ), २१३१ अयं मन्त्र नोपलभ्यते; २१३२ ( १ नृशस्तं वेत्वा० );

होता यक्षद् बर्हिः सुष्टरीमोर्णप्रदा अस्मिन् यज्ञे वि च प्र च प्रथतां स्वासस्थं देवेभ्यः ॥  
एमेनदद्य वसवो रुद्रा आदित्याः सदेन्तु प्रियामिन्द्रस्यास्तु वेत्वाज्यस्य होतर्त्यज २१३३

होता यक्षद् दुर ऋष्वाः कवष्यो कोषधावनीरुद्राताभिर्जिहतां विपक्षोभिः श्रयतां ।  
सुप्रायणा अस्मिन् यज्ञे विश्रयन्तामृतावृधो व्यन्त्वाज्यस्य होतर्त्यज २१३४

होता यक्षदुषासानक्ता बृहती सुपेशसा नृःपतिभ्यो योनिं कृष्वाने ।  
संस्मयमाने इन्द्रेण देवैरेदं बर्हिः सीदतां वीतामाज्यस्य होतर्त्यज २१३५

होता यक्षद् दैव्या होतारा मन्द्रा पोतारा कवी प्रचेतसा ।  
स्विष्टमद्यान्यः करदिषा स्वभिगूर्तमन्य ऊर्जा मतवसेमं यज्ञं दिवि  
देवेषु धत्तां वीतामाज्यस्य होतर्त्यज २१३६

होता यक्षत् तिस्रो देवीरपसामपस्तमा अच्छिद्रमद्येदमपस्तन्वतां ।  
देवेभ्यो देवीर्देवमपो व्यन्त्वाज्यस्य होतर्त्यज २१३७

होता यक्षत् त्वष्टारमर्चिष्टमपाकं रेतोधां विश्रवसं यशोधां ।  
पुरु रूपमकामकर्शनं सुपोषः पोषैः स्यात् सुवीरो वीरैर्वेत्वाज्यस्य हातर्त्यज २१३८

होता यक्षद् वनस्पतिमुपावस्रक्षद्वियो जोष्टारं शशमं नरः ।  
स्वदान् स्वधितिर्ऋतुथाद्य देवो देवेभ्यो हव्यवाद् वेत्वाज्यस्य होतर्त्यज २१३९

अजैदभिरसनद्वाजं नि देवो देवेभ्यो हव्यवाद् प्रांजोभिर्हिन्वानो धेनाभिः ।  
कल्पमानो यज्ञस्यायुः प्रतिरन्नुपप्रेष्य होतर्हव्या देवेभ्यः २१४०

होता यक्षदग्निं स्वाहाज्यस्य स्वाहा मेदसः स्वाहा स्तोकानां स्वाहा  
स्वाहाकृतीनां स्वाहा हव्यस्रक्तीनाम् ॥  
स्वाहा देवा आज्यपा जुषाणा अग्न आज्यस्य व्यन्तु होतर्त्यज २१४१

मैत्रा० पाठ०- २१३३ ( १ देवेभ्यः; स्वदन्तु ); २१३४ ( १ श्रयतां ); २१३५ ( नृःपतिभ्यो );  
२१३९ ( १ स्वदान्; २ हव्यवाद् ); २१४०-२१४२ मन्त्रा नोपलभ्यन्ते ।

काठ० पाठ०- २१३४ ( १ श्रयतां ), २१३६ ( १ करत्स्वभिः, २ मन्यस्वतसेमं ), २१३८ ( १ मर्चिष्टुमपाकं )  
२१३९ ( १ स्वदान् ); २१४० अयं मंत्रो नोपलभ्यते ।

## अथर्ववेदेऽग्निमन्त्राः ।

(अथर्ववेदे कां० १, सू० ९, मं० ३-४ अथर्वा । त्रिष्टुप् ।)

येनेन्द्राय समभरः पर्यां—स्युत्तमेन ब्रह्मणा जातवेदः ।	
तेन त्वमग्न इह वर्धयेमं संजातानां श्रेष्ठ्य आ वेद्यनम्	२१४२
एषां यज्ञमुत वर्चो ददेऽहं रायस्पोषमुत चित्तान्यग्ने ।	
सपत्ना अस्मदधरे भवन्तूत्तमं नाकमधि रोहयेमम्	२१४३

( अथर्व० २ । १९ । १-४ । विञ्चद्विषमा गायत्री, २१४८ भुरिग्विषमा । )

अग्ने यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप	योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः	२१४४
अग्ने यत् ते हरस्तेन तं प्रति हरं	योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः	२१४५
अग्ने यत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्चं	योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः ।	२१४६
अग्ने यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोचं	योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः	२१४७
अग्ने यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु	योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः	२१४८

( अथर्व० २।२९।१—२। २१४९ अनुष्टुप्, २१५० त्रिष्टुप् । )

पार्थिवस्य रस देवा भगस्य तन्वोरे बले ।	
आयुष्यमिस्सा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः	२१४९
आयुरस्मै वेहि जातवेदः प्रजां त्वंष्टरधिनिधेह्यस्मै ।	
रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदुस्तवायम्	२१५०

( अथर्व० २ । ३४ । ३ । त्रिष्टुप् )

ये बध्यमानमनु दीध्याना अन्वैक्षन्त मनसा चक्षुषा च ।	
अग्निष्टानग्ने प्र मुमोक्तु देवो विश्वकर्मा प्रजया संरराणः	२१५१

(अथर्व० कां० ३ । १ । १-३, ५-६। २१५२ त्रिष्टुप्, २१५३ विराङ्गर्भा भुरिक, २१५४ अनुष्टुप्, २१५६ विरादपुर उष्णिक् । )

अग्निर्नः शत्रून् प्रत्येतु विद्वान् प्रतिदहन्मभिश्चस्तिमरातिम् ।	
स तेनां मोहयतु परेषां निर्हेस्तांश्च कृणवञ्जाववेदाः	२१५२

युयमुग्रा मरुत ईदृशे स्था—भि प्रेतं मृणतु सहध्वम् । अमीमृणन् वसवो नाथिता इमे अग्निर्द्वेषां दूतः प्रत्येतुं विद्वान्	२१५३
अमित्रसेनां मघवन् अस्मान् छत्रयतीमभि । युवं तानिन्द्र वृत्रहन् अग्निश्च दहतं प्रति	२१५४
इन्द्रः सेनां मोहयतु मरुतो मन्त्वोजमा । चक्ष्ण्यगिरा दत्तां पुनरेतु पराजिता	२१५५

( अथर्व० ३ । २ । १—३ । २१५६ त्रिष्टुप् ; २१५७-५८ अनुष्टुप् । )

अग्निनां दूतः प्रत्येतुं विद्वान् प्रतिदहन्नभिर्शस्तिमरातिम् । स चित्तानि मोहयतु परेषां निर्हस्तांश्च कृणवज्जातवेदाः	२१५६
अयमग्निरमृमुहद् यानि चित्तानि वो हृदि । वि वो धमत्वोक्तसः प्र वो धमतु सर्वतः	२१५७
इन्द्रं चित्तानि मोहयन्नुर्वाडाकृत्या चर । अग्नेर्वर्तस्य ध्राज्या तान् विषूचो वि नाशय	२१५८

( अथर्व० ३ । ३ । १ । त्रिष्टुप् )

अचिक्रदत् म्वपा इह भुवदग्ने व्यचिस्व रोदसी उरूची । युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस आमं नय नमसा रातहव्यम्	२१५९
--	------

( अथर्व० ३ । ४ । ३ )

अच्छ त्वा यन्तु हविर्नः सजाता अग्निर्दूतो अजिरः सं चराते । जायाः पुत्राः सुमर्नसो भवन्तु बृहं बलिं प्रति पश्यासा उग्रः	२१६०
---	------

( अथर्व० ३ । २७ । १ । पञ्चपदा ककुम्मतीगर्भाऽष्टिः । )

प्राचीं दिग्भिरधिपतिसितो रक्षितादित्या इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः	२१६१
--	------

( अथर्व० ४ । ४ । ६ । भुरिक् । )

अद्याग्ने अद्य संवित्—रद्य देवि सरस्वति । अद्यास्य बह्मणस्पते धनुर्निवा तानया पसः	२१६२
--	------

( अथर्व० ५।८। १-३। अनुष्टुप्. २१६४ इयवसाना षट्पदा जगती । )

वैकङ्कतेनेध्मेन देवेभ्य आज्यं वह ।  
 अग्ने ताँ इह मादय सर्व आ यन्तु मे हवम् २१६३  
 इन्द्रा याहि मे हवम् इदं करिष्यामि तच्छृणु ।  
 इम ऐन्द्रा अतिसरा आकृति सं नमन्तु मे ।  
 तेभिः शकेम वीर्यं जातवेदस्तनूवशिन् २१६४  
 यदुसावृमुतो देवा अदेवः संश्रिकीर्षति ।  
 मा तस्याग्निर्हव्यं वांशीद्वयं देवा अस्य मोषं गुर्मपैव हवमेतन २१६५

( अथर्व ५।२४। २। चतुष्पदातिशकरी । )

अग्निर्वनस्पतीनाम् अधिपतिः स मावतु ।  
 अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां  
 चित्र्यामस्यामाकृत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा २१६६

( अथर्व० ५।२८। १-१४ । त्रिष्टुप्. २१७२ पञ्चपदातिशकरी २१७३, ७५, ७६ ७८  
 ककुम्भत्यनुष्टुप् २१७९ पुरउष्णिक् । )

नवं प्राणान् नवभिः सं मिमीते दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ।  
 हरिते त्रीणि रजते त्रीणि अयमि त्रीणि तपमात्रिष्ठितानि २. ६७  
 अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा भूमिरापो द्यौरन्तरिक्षं प्रदिशो दिशश्च ।  
 आर्तवा ऋतुभिः संविदाना अनेन मा त्रिवृता पाग्यन्तु २१६८  
 त्रयः पोपास्त्रिवृति श्रयन्ताम् अनक्तु पूषा पर्यसा घृतेन ।  
 अन्नस्य भूमा पुरुषस्य भूमा भूमा पशूनां त इह श्रयन्ताम् २१६९  
 इममादित्या वसुना समुक्षते ममग्ने वर्धय वावृधानः ।  
 इममिन्द्र सं सृज वीर्येणास्मिन् त्रिवृच्छ्रयतां पोषयिष्णु २१७०  
 भूमिष्ठा पातु हरितेन विश्वभृदुभिः पिपृत्वयसा सजोषाः ।  
 वीरुद्धिष्टे अर्जुनं संविदानं दक्षं दधातु सुमनस्यमानम् २१७१  
 त्रेधा जातं जन्मनेदं हिरण्यमग्नेरेकं प्रियतमं बभूव सोमस्यैकं हिमितस्य परापतत् ।  
 अपामेकं त्रेधा नां रेत आहुस् तत् ते हिरण्यं त्रिवृदुस्त्वायुषे २१७२

त्र्यायुषं जमदग्रेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । त्रेधामृतस्य चक्षुषं त्रीण्यायुषि तेऽकरम्	२१७३
त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता यदार्यन्न एकाक्षरमभिसंभूय शक्राः । प्रत्यौहन् मृत्युममृतेन साकम् अन्तर्दधाना दुरितानि विश्वा	२१७४
दिवस्त्वा पातु हरितं मध्यात् त्वा पात्वर्जुनम् । भूम्या अयस्मयं पातु प्रागाद् देवपुरा अयम्	२१७५
इमास्तिस्रो देवपुरास्तास्त्वा रक्षन्तु सर्वतः । तास्त्वं बिभ्रद्वर्चस्व्युत्तरो द्विषतां भव	२१७६
पुरं देवानाममृतं हिरण्यं य आबिधे प्रथमो देवो अग्रे । तस्मै नमो दश प्राचीः कृणोम्यनु मन्यतां त्रिवृदावर्धे मे	२१७७
आ त्वां चृतत्वयमा पूषा बृहस्पतिः । अहर्जातस्य यन्नाम तेन त्वाति चृतामसि	२१७८
ऋतुभिर्घातवैरायुषे वर्चसे त्वा । संवत्सरस्य तेजमा तेन सहेनु कृणमसि	२१७९
घृतादुल्लुभं मधुना समक्तं भूमिदंहमच्युतं पारयिष्णु । भिन्दत् सपत्नानधरांश्च कृण्वदा मां रोह सहते सौभगाय	२१८०

( अथर्व० ६। ३६। १-३। गायत्री । )

ऋतावानं वैश्वानरम् ऋतस्य ज्योतिषस्पतिम् । अजस्रं घर्ममीमहे	२१८१
स विश्वा प्रति चाक्लप ऋतूरुत्सृजते वशी । यज्ञस्य वयं उत्तिरन्	२१८२
अग्निः परेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य । सम्राडेको वि राजति	२१८३

( अथर्व० ६। ११०। २-३। त्रिष्टुप् । )

ज्येष्ठघ्यां जातो विचृतोर्यमस्य मूलवर्हणात् परिं पाह्वेनम् । अत्येनं नेषद् दुरितानि विश्वा दीर्घायुत्वार्यं शतशारदाय	२१८४
व्याघ्रेऽह्वयजनिष्ठ वीरो नक्षत्रजा जायमानः सुवीरः । स मा वधीत् पितरं वर्धमानो मा मातरं प्र मिनीजनित्रीम्	२१८५

( अथर्व० ६ । १११ । १-४ । अनुष्टुप्, २१८६ परानुष्टुप् त्रिष्टुप् । )

इमं मे अग्ने पुरुहं सुप्रुध्यं यं यो वद्वः सुयतो लालपीति ।

अतोऽधि ते कृणवद् भागधेयं यदानुन्मदितोऽसति २१८६

अग्निष्टे नि शमयतु यदि ते मन उद्युतम् । कृणोमि विद्वान् भेषजं यथानुन्मदितोऽसति २१८७

देवैन्सादुन्मदितम् उन्मत्तं रक्षमस्परिं । कृणोमि विद्वान् भेषजं यदानुन्मदितोऽसति २१८८

पुनस्त्वा दुरप्सरसः पुनरिन्द्रः पुनर्भगः । पुनस्त्वा दुर्विश्वे देवा यथानुन्मदितोऽसति २१८९

( अथर्व० ६ । ११२ । १-३ । त्रिष्टुप् । )

मा ज्येष्ठं वधीद्वयमग्न एषां मूलवर्हेणात् परिं पाह्येनम् ।

स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् तुभ्यं देवा अनु जानन्तु विश्वे २१९०

उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न एषां त्रयस्त्रिभिरुत्सिता येभिरासन् ।

स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् पितापुत्रौ मातरं मुञ्च सर्वान् २१९१

येभिः पाशैः परिवित्तो विबद्धो ऽङ्गैर्भङ्ग आर्षित उत्सितश्च ।

वि ते मुच्यन्तां विमुचो हि सन्ति भ्रूणग्नि पृषन् दुरितानि मृक्ष्व २१९२

( अथर्व० ७ । ३४ ( ३५ ) । १ ॥ जगती । )

अग्ने जातान् प्र णुदा मे सपत्नान् प्रत्यजाताञ्जातवेदो नुदस्व ।

अधस्पदं कृणुष्व ये पृतन्यवो ऽनागसस्ते वयमदितये स्याम २१९३

( अथर्व० ७ । ३५ [३६] १-३ ॥ त्रिष्टुप्, २१९४ अनुष्टुप् । )

प्रान्यान् त्सपत्नान् त्सहसा सहस्व प्रत्यजातान् जातवेदो नुदस्व ।

इदं राष्ट्रं पिपूहि सौभगाय विश्व एनमनु मदन्तु देवाः २१९४

इमा यास्ते शतं हिराः सहस्रं धमनीरुत ।

तासां ते सर्वासामहमश्मना बिलमप्यधाम् २१९५

परं योनेरवरं ते कृणोमि मा त्वा प्रजाभि भून्मोत स्रुतुः ।

अस्वैः त्वाप्रजसं कृणोम्यश्मानं ते अपिधानं कृणोमि २१९६

( अथर्व० ७ । ७४ [७८] । ४ ॥ अनुष्टुप् । )

व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो विश्वाहा सुमना दीदिहीह ।

तं त्वा वयं जातवेदुः समिद्धं प्रजावन्त उप सदेम सर्वे २१९७



( अथर्व० ७ । ७८ ( ८३ ) १-२॥ २१९८ परोष्णिक्, २१९९ त्रिष्टुप् । )

वि ते मुञ्चामि रश्नां वि योक्त्रं वि नियोजनम् । इहैव त्वमजस्र एध्यमे २१९८  
अस्मै क्षत्राणि धारयन्तमग्ने युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येन ।  
दीदृह्यस्मभ्यं द्रविणेह भद्रं प्रेमं वोचो हविर्दा देवतासु २१९९

( अथर्व० ७ । १०६ [ १११ ] । १ । बृहत् गिर्मा त्रिष्टुप् । )

यदस्मृति चकृम किं चिदग्न उपास्मि चरणे जातवेदः ।  
ततः पाहि त्वं नः प्रचेतः शुभे सखिभ्यो अमृतत्वमस्तु नः २२००

( अथर्व० ७ । ११५ । १२० । १-४॥ अनुष्टुप्, २-०२-३ त्रिष्टुप् । )

प्र पतेतः पापि लक्ष्मि नश्येतः प्रामुतः पत । अयस्मयेनाङ्केन द्विषते त्वा संजामसि २२०१

या मा लक्ष्मीः पतयाल्लरजुष्टा भिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम् ।  
अन्यत्रास्मत् सवितस्तामितो धा हिरण्यहस्तो वभु नो रराणः २२०२  
एकशतं लक्ष्म्योऽं मर्त्यस्य साकं तन्वा जनुषांऽधि जाताः ।  
तासां पापिष्ठा निरितः प्र हिण्मः शिवा अस्मभ्यं जातवेदो नि यच्छ २२०३

एता एना व्याकरं खिले गा विष्टिता इव ।  
रमेन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम् २२०४

( अथर्व० १९ । ३ । १-४॥ त्रिष्टुप्, २२०६ भुरिक् । )

दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षाद् वनस्पतिभ्यो अध्योषधीभ्यः ।  
यत्रयत्र विभृतो जातवेदास्ततस्तुतो जुषमाणो न एहि २२०५  
यस्ते अप्सु महिमा यो वनेषु य ओषधीषु पशुष्वस्वन्तः ।  
अग्ने सर्वास्तन्वः सं रभस्व ताभिर्न एहि द्रविणोदा अजस्रः २२०६  
यस्ते देवेषु महिमा स्वर्गो या ते तनूः पितृष्विवेश ।  
पुष्टिर्या ते मनुष्येषु पप्रथे ऽग्ने तया रयिमस्मासु धेहि २२०७  
श्रुत्कर्णाय क्वये वेद्याय वचोभिर्वाकैरुप यामि रातिम् ।  
यतो भयमभयं तन्नो अस्त्व—व देवानां यज हेडो अग्ने २२०८

अथर्व० १९ । ४ । १-४॥ त्रिष्टुप्, २२०९ पचपदा विराडितिजगती, २२१० जगती ।

यामाहुतिं प्रथमामर्थवा या जाता या हव्यमकृणोजातवेदाः ।  
तां त एतां प्रथमो जोहवीमि ताभिष्टुप्तो वहतु हव्यमग्नि—रग्ये स्वाहा २२०९

आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे चित्तस्य माता सुहवा नो अस्तु । यामाशामेमि केवली सा मे अस्तु विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम्	२२१०
आकूत्या नो बृहस्पत आकूत्या न उपा गहि । अथो भगस्य नो धेहि अथो नः सुहवो भव	२२११
बृहस्पतिर्म आकूतिमाङ्गिरसः प्रति जानातु वाचमेताम् । यस्य देवा देवताः संबभूवुः स सुप्रणीताः कामो अन्वैत्वसान्	२२१२

( अथर्व० १२।३७।१-४॥ २२१३ त्रिष्टुप्; २२१४ आस्तारपांक्तिः, २२१५ त्रिपदा महाबृहती, २२१६ पुरोत्पिणक । )

इदं वर्चो अग्निना दत्तमागन् भगो यशः सह ओजो वयो बलम् । त्रयस्त्रिंशद् यानि च वीर्याणि तान्यग्निः प्र ददातु मे	२२१३
वर्च आ धेहि मे तन्वांश्च सह ओजो वयो बलम् । इन्द्रियाय त्वा कर्मणे वीर्यायि प्रति गृह्णामि शतशारदाय	२२१४
ऊर्जे त्वा बलाय त्वौजसे सहसे त्वा । अभिभूयाय त्वा राष्ट्रभृत्याय पर्युहामि शतशारदाय	२२१५
ऋतुभ्यध्वत्वेभ्यो माञ्च्यः संवत्सरेभ्यः । धात्रे विधात्रे समृधे भूतस्य पतये यजे	२२१६

( अथर्व० ४।१४।१-९। भृगु । त्रिष्टुप्; २२१८, २२२० अनुष्टुप्; २२१९ प्रस्तारपङ्क्तिः; २२२३, २२२५ जगती, २२२४ पञ्चपदातिशकरी । )

अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकात् सो अपश्यञ्जनितारमग्ने । तेन देवा देवतामग्र आयन् तेन रोहान् रुरुहुर्मेध्यासः	२२१७
क्रमध्वमग्निना नाकमुख्यान् हस्तेषु बिभ्रतः । दिवस्पृष्टं स्वर्गित्वा मिश्रा देवेभिराध्वम्	२२१८
पृष्ठात् पृथिव्या अहमन्तरिक्षम् आरुहमन्तरिक्षाद् दिवमारुहम् । दिवो नाकस्य पृष्ठात् स्वर्ग्योतिरंगामहम्	२२१९
स्वर्ग्यन्तो नापेक्षन्त आ द्यां रोहन्ति रोदसी । यज्ञं ये विश्वतौधारं सुविद्वांसो वितेनिरे	२२२०

अग्ने प्रेहि प्रथमो देवतानां चक्षुर्देवानामुत मानुषाणाम् ।  
इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः स्वर्गिन्तु यजमानाः स्वस्ति २२२१

अजमनज्मि पर्यसा घृतेन दिव्यं सुपर्णं पयसं बृहन्तम् ।  
तेन गेष्म सुकृतस्य लोकं स्वरारोहन्तो अभि नाकमुत्तमम् २२२२

पञ्चोदनं पञ्चभिरङ्गुलिभिर्दर्व्योद्भ्रं पञ्चधैतमौदनम् ।  
प्राच्यां दिशि शिरो अजस्य धेहि दक्षिणायां दिशि दक्षिणं धेहि पार्श्वम् २२२३

प्रतीच्यां दिशि भसदमस्य धेहि उत्तरस्यां दिश्युत्तरं धेहि पार्श्वम् ।  
ऊर्ध्वायां दिश्युजस्यानूकं धेहि दिशि ध्रुवायां धेहि पाजस्यं अन्तरिक्षे मध्यतो मध्यमस्य २२२४

शृतमजं शृतया प्रोर्णुहि त्वचा सर्वैरङ्गैः संभृतं विश्वरूपम् ।  
स उत्तिष्ठेतो अभि नाकमुत्तमं पद्भिश्चतुर्भिः प्रति तिष्ठ दिक्षु २२२५

( अथर्व० ७ । ८४ । १ । जगती । )

अनाधृष्यो जातवेदा अमर्त्यो विराडग्ने क्षत्रभृद् दीदिहीह ।  
विश्वा अमीथाः प्रमुञ्चन् मानुषीभिः शिवाभिरद्य परि पाहि नो गयम् २२२६

( अथर्व० ७ । १०८ [११३] । १-२॥ २२२७ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप्, २२२८ त्रिष्टुप् । )

यो नस्तायद् दिप्सति यो न आविः स्वो विद्वानरणो वा नो अग्ने ।  
प्रतीच्येत्वरणी दुत्वती तान् स्मैषामग्ने वास्तु भूमो अपत्यम् २२२७

यो नः सुमाञ्जाग्रतो वाभिदासात् तिष्ठतो वा चरतो जातवेदः ।  
वैश्वानरेण सयुजा सजोषास् तान् प्रतीचो निर्देह जातवेदः २२२८

(अथर्व० कां १२ । २ । १-१३, ३३-५५ । त्रिष्टुप्, २२३०, २२३३, २२३८-४५, २२४७-४९, २२५१-५४, २२५६, २२६४, २२६७ अनुष्टुप् ( २२४२ ककुम्मती पराबृहती, २२४४ निचृत्, २२५३ पुरस्तात्ककुम्मती); २२३१ आस्तारपङ्कितः, २२३४ भुरिगार्गी पङ्कितः २२५८ जगती; २२६१-६२ भुरिग्, २२३५ अनुष्टुप्गर्भा विपरीतपादलक्ष्मा पङ्कितः; २२५० पुरस्ताद्बृहती; २२५५ त्रिप० एकाव० भुरिगार्गी गायत्री; २२५७ एकाव० द्विप० आर्ची बृहती; २२५९ एका० द्विप० सास्त्री त्रिष्टुप्; २२६० पञ्चपदा बार्हतवैराजगर्भा जगती, २२६३ उपरिष्ठाद्विराड् बृहती; २२६५ पुरस्ताद्विराड् बृहती, २२६८ बृहतगर्भा । )

नडमा रोह न ते अत्र लोक इदं सीसं भागधेयं त एहि ।  
यो गोषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मस्तेन त्वं साकर्मधराश्च परैहि २२२९

अघशंसदुःशसाभ्यां करेणानुकरेण च । यक्ष्मं च सर्वं तेनेतो मृत्युं च निरंजामसि २२३०

निरितो मृत्युं निऋतिं निररातिमजामसि ।	
यो नो द्वेष्टि तमद्दद्यन्ने अक्रव्याद्यमु द्विष्मस्तमु ते प्र सुवामसि	२२३१
यद्यग्निः क्रव्याद्यदि वा व्याघ्र इमं गोष्ठं प्रविवेशान्योकाः ।	
तं माषाज्यं कृत्वा प्र हिणोमि दूरं स गच्छत्वप्सुपदोऽप्यग्नीन्	२२३२
यत्त्वा क्रुद्धाः प्रचक्रुर्मन्युना पुरुषे मृते । सुकल्पमग्ने तत् त्वया पुनस्त्वोद्दीपयामसि	२२३३
पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः पुनर्ब्रह्मा वसुनीतिरग्ने ।	
पुनस्त्वा ब्रह्मणस्पतिराधाद् दीर्घायुत्वार्यं शतशरदाय	२२३४
यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेशं ( ऋ० १० । १६ । १० ) ( १५६६ )	
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं ( १० । १६ । ९ ) ( १५६६ )	
क्रव्यादमग्निमिषितो हरामि जनान् दृहन्तं वज्रेण मृत्युम् ।	
नि तं शास्मि गार्हपत्येन विद्वान् पितृणां लोकेऽपि भागो अस्तु	२२३५
क्रव्यादमग्निं शशमानमुक्थ्यं प्र हिणोमि पथिभिः पितृयाणैः ।	
मा देवयानैः पुनरा गा अत्रैवैधि पितृषु जागृहि त्वम्	२२३६
समिन्धने संकसुकं स्वस्तये शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।	
जहाति रिप्रमत्येन एति समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाति	२२३७
देवो अग्निः संकसुको दिवस्पृष्टान्यारुहत् ।	
मुच्यमानो निरेणसो ऽमोगस्माँ अशस्त्याः	२२३८
अस्मिन् वयं संकसुके अग्नौ रिप्राणि मृज्महे ।	
अभूम यज्ञियाः शुद्धाः प्र ण आयुषि तारिपत्	२२३९
संकसुको विकसुको निऋथो यश्च निस्वरः । ते ते यक्ष्मं सवेदसो दूराद् दूरमनीनशन्	२२४०
यो नो अश्वेषु वीरेषु यो नो गोष्वजाविषु । क्रव्यादं निर्णुदामसि यो अग्निर्जनयोपनः	२२४१
अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यस्त्वा ।	
निः क्रव्यादं नुदामसि यो अग्निर्जीवित्तयोपनः	२२४२
यस्मिन् देवा अमृजत् यस्मिन् मनुष्या उत । तस्मिन् घृतस्तावो मृष्ट्वा त्वमग्ने दिवं रुह २२४३	
समिद्धो अग्न आहुत् स नो माभ्यपक्रमीः । अत्रैव दीदिहि द्यवि ज्योक् च सूर्यं दृशे २२४४	
सीसे मृड्ङ् नडे मृड्ङ्क् अग्नौ संकसुके च यत् । अथो अव्यां रामायां शीर्षक्तिमुपवर्हणे २२४५	

यो नो अग्निः पितरो हृत्स्वोऽन्तराविवेशामृतो मर्त्येषु ।

मय्यहं तं परिं गृह्णामि देवं मा सो अस्मान् द्विक्षत मा वयं तम् २२४६

अपावृत्य गार्हपत्यात् ऋव्यादा प्रेतं दक्षिणा । प्रियं पितृभ्य आत्मने ब्रह्मभ्यः कृणुता प्रियम् २२४७

द्विभागधनमादाय प्र क्षिणात्यवर्त्या । अग्निः पुत्रस्य ज्येष्ठस्य यः ऋव्यादनिराहितः २२४८

यत् कृषते यद् वनुते यच्च वस्नेन विन्दते । सर्वं मर्त्यस्य तन्नास्ति ऋव्याच्चेदनिराहितः २२४९

अयज्ञियो हतवर्चा भवति नैनेन हविरत्तवे । छिनत्ति कृष्या गोर्धनाद् यं ऋव्यादनुवर्तते २२५०

मुहुर्गृध्वैः प्र वदत्यातिं मर्त्यो नीत्यं । ऋव्याद्यानग्निरन्तिकादनुविद्वान्वितावति २२५१

ग्राह्यां गृहाः सं सृज्यन्ते स्त्रिया यन्म्रियते पतिः ।

ब्रह्मैव विद्वानेष्योऽ यः ऋव्यादं निरादधत् २२५२

यद् रिप्रं शर्मलं चकृम यच्च दुष्कृतम् । आपो मा तस्माच्छुम्भन्त्वग्नेः संकसुकाच्च यत् २२५३

ता अधरादुदीचीराववृत्रन् प्रजान्तीः पथिभिर्देवयानैः ।

पर्वतस्य वृषभस्याधि पृष्ठे नवाश्वरन्ति सरितः पुराणीः २२५४

अग्ने अऋव्याग्निः ऋव्यादं नुदा देवयजनं वह २२५५

इमं ऋव्यादा विवेशायं ऋव्यादुमन्वगात् । व्याघ्रौ कृत्वा नानानं तं हरामि शिवापरम् २२५६

अन्तर्धिर्देवानां परिधिर्मनुष्याणाम् अग्निर्गार्हपत्य उभयानन्तरा श्रितः २२५७

जीवानामायुः प्र तिर त्वमग्ने पितृणां लोकमपि गच्छतु ये मृताः ।

सुगार्हपत्यो वितपन्नरातिम् उषामुषां श्रेयसीं धेह्यस्मै २२५८

सर्वानग्ने सहमानः सपत्नानैषामूर्जं रयिमस्मासु धेहि २२५९

इममिन्द्रं वह्निं पप्रिमन्वारंभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवद्यात् ।

तेनाप हत शरुमापतन्तं तेन रुद्रस्य परिं पातास्ताम् २२६०

अनङ्गाहं प्लवमन्वारंभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवद्यात् ।

आ रोहत सवितुर्नावमेतां षड्भिरुर्वाभिरमतिं तरेम २२६१

अहोरात्रे अन्वेषि विभ्रत् क्षेम्यस्तिष्ठन् प्रतरणः सुवीरः ।

अनातुरान् त्सुमनसस्तल्प विभ्रज् ज्योगेव नः पुरुषगन्धिरोधि २२६२

ते देवेभ्य आ वृश्न्ते पापं जीवन्ति सर्वदा । ऋव्याद्यानग्निरन्तिकादश्च इवानुवर्षते नडम् २२६३

येऽश्रद्धा धनकाम्यात् ऋव्यादा समासते । ते वा अन्येषां कुम्भी पर्यादधति सर्वदा २२६४

प्रेवं पिपतिषति मनसा मुहुरा वर्तते पुनः । क्रव्याद्यानग्निरन्तिका—दनुविद्वान्वितावति २२६५	
अर्विः कृष्णा भागधेयं पशूनां सीसं क्रव्यादपि चन्द्रं त आहुः ।	
माषां पिष्टा भागधेयं ते हव्य—मरण्यान्या गह्वरं सचस्व	२२६६
इषीकां जरतीमिष्टा तिल्पिञ्जं दण्डनं नडम् ।	
तमिन्द्रं इधमं कृत्वा यमस्याग्निं निरादधौ	२२६७
प्रत्यञ्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा प्रविद्वान् पथां वि ह्यविवेश ।	
परामीषामस्रन्दिदेश दीर्घेणायुषा समिमान् त्सृजामि	२२६८

(अथर्व० १९। ५५। १-६ ॥ त्रिष्टुप्; २२७० आस्तारपांक्तिः; २२७३ इयवसाना पञ्चपदा पुरस्ताज्ज्यातिष्मती।)

रात्रिरात्रिमप्रयातं भरन्तो ऽश्वयेव तिष्ठते घासमस्मै ।	
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम	२२६९
या ते वमोर्वात् इषुः सा त एषा तया नो मृड ।	
रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा ते अग्ने प्रतिवेशा रिषाम	२२७०
सायंसायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातः प्रातः सौमनसस्य दाता ।	
वसोर्विसोर्विसुदान एधि वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम	२२७१
प्रातःप्रातर्गृहपतिर्नो अग्निः सायंसायं सौमनसस्य दाता ।	
वसोर्विसोर्विसुदान एधी—न्धानास्त्वा शतंहिमा ऋधेम	२२७२
अपश्चा दुग्धानस्य भूयासम् । अन्नादायान्नपतये रुद्राय नमो अग्नये ।	
सभ्यः सभां मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः	२२७३
त्वमिन्द्रा पुरुहूत विश्वमायुर्व्यश्नवत् ।	
अहरहर्बलिमित् ते हरन्तो ऽश्वयेव तिष्ठते घासमग्ने	२२७४

( अथर्व० कां० १, सू० २५, मं० १-४ । भृग्वक्त्रिः । २२७५ त्रिष्टुप् २२७६-७७ त्विराङ्गर्भा, २२७८ पुराऽनुष्टुप् । )

यदग्निरापो अदहत् प्रविश्य यत्राकृण्वन् धर्मधृतो नमोसि ।	
तत्र त आहुः परमं जनित्रं स नः संविद्वान् परिं वृद्धिंघ तक्मन्	२२७५
यद्यर्चिर्यदि वारिं शोचिः शशल्येषि यदि वा ते जनित्रम् ।	
हूडुर्नमासि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परिं वृद्धिंघ तक्मन्	२२७६

यदि शोको यदि वाभिशोको यदि वा राज्ञो वरुणस्यासि पुत्रः ।  
 ब्रूडुर्नामासि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृद्धिंघ तक्मन् २२७७  
 नमः शीतार्य तक्मने नमो रूराय शोचिषे कृणोमि ।  
 यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति तृतीयकाय नमो अस्तु तक्मने २२७८

( अथर्व० २ । ३५ । १ ॥ अङ्गिराः । त्रिष्टुप् । )

ये भक्षयन्तो न वसून्त्यानुधु—र्यानग्रयो अन्वतेप्यन्त धिष्ण्याः ।  
 या तेषामवया दुरिष्टिः स्विष्टिं नस्तां कृणवद् विश्वकर्मा २२७९

( अथर्व० ४ । ३९ । १, २, ९, १० ॥ अङ्गिराः । २२८० त्रिपदा महाबृहती, २२८१ संस्तरपङ्क्तिः, ।  
 २२८०-८३ त्रिष्टुप् । )

पृथिव्यामग्रये समनमन्त्स आर्धोत् ।  
 यथा पृथिव्यामग्रये समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु २२८०

पृथिवी धेनुस्तस्या अग्निर्वत्सः । सा मेऽग्निना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम् ।  
 आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा २२८१

अग्नावग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपा उं ।  
 नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि मा देवानां मिथुया कर्म भागम् २२८२

हृदा पूतं मनसा जातवेदो विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।  
 मन्त्राभ्यानि तव जातवेदस्तेभ्यो जुहोमि स जुषस्व हव्यम् २२८३

( अथर्व० १ । ७ । १-७ ॥ चातनः । अनुष्टुप्, २२८८ त्रिष्टुप् । )

स्तुवानमग्र आ वह यातुधानं किमीदिनम् । त्वं हि देव वन्दितो हन्ता दस्योर्विभूविथ २२८४  
 आज्यस्य परमेष्ठिन् जातवेदस्तनूवशिन् । अग्ने तौलस्य प्राशान यातुधानान् वि लापय २२८५  
 वि लपन्तु यातुधानां अत्त्रिणो ये किमीदिनः । अथेदमग्ने नो हवि—रिन्द्रश्च प्रति हर्यतम् २२८६  
 अग्निः पूर्वं आ रभतां प्रेन्द्रो नुदतु बाहुमान् । ब्रवीतु सर्वो यातुमान् अयमस्मीत्येत्यं २२८७  
 पश्याम ते वीर्यं जातवेदः प्र णो ब्रूहि यातुधानान्मृचक्षः ।

त्वया सर्वे परितप्ताः पुरस्तात् त आ यन्तु प्रब्रुवाणा उपेदम् २२८८

आ रभस्व जातवेदो ऽस्माकार्थीय जज्ञिषे । दूतो नो अग्ने भूत्वा यातुधानान् वि लापय २२८९  
 त्वमग्ने यातुधानान् उपबद्धां इहा वह । अथैषामिन्द्रो वज्रेण अपि शीर्षाणि वृश्चतु २२९०

( अथर्व० १ । ८ । ३-४ ॥ २२९१ अनुष्टुप्, २२९२ बाह्वृत्तगर्भा त्रिष्टुप् ।

यातुधानस्य सोमप जहि प्रजां नर्यस्व च । नि स्तुवानस्य पातय परमक्षुतावरम् २२९१

यत्रैषामग्ने जनिमानि वेत्थ गुहां सतामत्त्रिणां जातवेदः ।

तांस्त्वं ब्रह्मणा वावृधानो जह्येषां शततर्हमग्ने २२९२

( अथर्व० १ । २८ । १-२ । अनुष्टुप् । )

उप प्रागाद् देवो अग्नी रक्षोहामीवचातनः । दहन्नप द्वयाविनो यातुधानान् किमीदिनः २२९३  
प्रतिं दह यातुधानान् प्रतिं देव किमीदिनः । प्रतीचीः कृष्णवर्तने सं दह यातुधान्यः २२९४

( अथर्व० ४ । ३६ । १-१० ॥ अनुष्टुप्, २३०३ भुरिक् । )

तान् त्सृत्यौजाः प्र दह—त्वग्निर्वैश्वानरो वृषा । यो नो दुरस्यादिप्सा—चाथो यो नो अरातियात् २२९५  
यो नो दिप्सददिप्सतो दिप्सतो यश्च दिप्सति । वैश्वानरस्य दंष्ट्रयो—रग्नेरपि दधामि तम् २२९६  
य आगरे मृगयन्ते प्रतिक्रोशेऽमावास्ये । क्रव्यादो अन्यान् दिप्सतः सर्वास्तान् त्सहसा सह २२९७  
सहै पिशाचान् त्सह—सैषां द्रविणं ददे । मर्वांन् दुरस्यतो हन्मि सं म आकूतिक्रुध्यताम् २२९८  
ये देवास्तेन हासन्ते सूर्येण भिमते जवम् । नदीषु पर्वतेषु ये सं तैः पशुभिर्विदे २२९९  
तर्पनो अस्मि पिशाचानां व्याघ्रो गोमतामिव ।

श्वानः सिंहमिव दृष्ट्वा ते न विन्दन्ते न्यञ्चनम् २३००

न पिशाचैः सं शक्नोमि न स्तेनैर्न वनर्गुभिः । पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति यमहं ग्राममाविशे २३०१  
यं ग्राममाविशत इदमुग्रं सहो मम । पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति न पापमुप जानते २३०२  
ये मा क्रोधयन्ति लपिता हस्तिनै मशका इव । तानहं मन्ये दुहितान् जने अल्पशयूनिव २३०३  
अभि तं निर्कृतिर्धत्ताम् अश्वमिवाश्वभिधान्या । भ्रुवो यो मह्यं क्रुध्यति स उ पाशान् मुच्यते २३०४

( अथर्व० ५ । २९ । १-१५ । त्रिष्टुप्, २३०७ त्रिपदा विराणनाम गायत्री; २३०९ पुरोऽतिजगती विगाडजगती  
२३१५-१८ अनुष्टुप् ( २३१५ भुरिक्; २३१७ चतुष्पदा परावृहती ककुम्भती । )

पुरस्ताद् युक्तो बह जातवेदो ऽग्ने विद्धि क्रियमाणं यथेदम् ।

त्वं भिषग् भेषजस्यासि कर्ता त्वया गामश्चं पुरुषं सनेम २३०५

तथा तदग्ने कृणु जातवेदो विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः ।

यो नो दिदेव यतमो जघास यथा सो अस्य परिधिष्पताति २३०६

यथा सो अस्य परिधिष्पताति तथा तदग्ने कृणु जातवेदः ।

विश्वेभिर्देवैः सह संविदानः २३०७



अक्षयौ३ नि विध्य हृदयं नि विध्य जिह्वां नि तृन्दि प्र दतो मृणीहि ।

पिशाचो अस्य यतमो जघास अग्ने यविष्ठ प्रति तं शृणीहि २३०८

यदस्य हृतं विहृतं यन् पराभृतम् आत्मनो जग्धं यतमत् पिशाचैः ।

तदग्ने विद्वान् पुनरा भर त्वं शरीरे मांसमसुमेरयामः २३०९

आमे सुपक्के शबले विपक्के यो मा पिशाचो अशने दुदम्भ ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु २३१०

क्षीरे मा मन्थे यतमो दुदम्भा कृष्टपच्ये अशने धान्ये३ यः ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु २३११

अपां मा पाने यतमो दुदम्भं क्व्याद् यातूनां शयने शयानम् ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु २३१२

दिवा मा नक्तं यतमो दुदम्भं क्व्याद् यातूनां शयने शयानम् ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु २३१३

क्व्यादमग्ने रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि जातवेदः ।

तमिन्द्रो वाजी वज्रेण हन्तु च्छिनत्तु सोमः शिरो अस्य धृष्णुः २३१४

सनादग्ने मृणसि यातुधानान्० ( ऋ० १० । ८७ । १९ ) ( १८४६ )

। माहर् जातवेदो यद्वृतं यत् पराभृतम् । गात्राण्यस्य वर्धन्ताम् अंशुरिवा प्यायतामयम् २३१५

। गोमस्येव जातवेदो अंशुरा प्यायतामयम् । अग्ने विरिग्निं मेध्यम् अयक्ष्मं कृणु जीवतु २३१६

। तास्ते अग्ने समिधः पिशाचजम्भनीः । तास्त्वं जुषस्व प्रति चैना गृहाण जातवेदः २३१७

। षाष्टीर्धरे अग्ने समिधः प्रति गृह्णाह्यर्चिषां । जहातु क्व्याद् रूपं यो अस्य मांसं जिहीर्षति २३१८

( अथर्व० २ । ६ । १-५ ॥ शौनकः । त्रिष्टुप् २३२२ चतुष्पदाशी पङ्क्तिः, २३२३ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः । )

समास्त्वाम्भ्रं क्रतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या ।

सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आ भाहि प्रदिशश्चतस्रः २३१९

सं चेध्यस्वाग्ने प्र च वर्धयेमम् उच्चं तिष्ठ महते सौभगाय ।

मा ते रिषन्नुपसत्तारो अग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये २३२०

त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे शिवो अग्ने संवरणे भवानः ।

सपत्न्याग्ने अभिमातिजिद् भव स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन् २३२१

क्षत्रेणाग्ने स्वेन सं रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधा यतस्व ।  
 सजातानां मध्यमेष्टा राज्ञाम् अग्ने विहव्यो दीदिहीह २३२२  
 अति निहो अति सिधो ऽत्यचित्तरिति द्विषः ।  
 विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वमथास्मभ्यं सहवीरं रयिं दाः २३२३

( अथर्व० ६ । १०८ । ४ । अनुष्टुप् । )

यामृषयो भूतकृतो मेधां मेधाविनो विदुः । तथा मामद्य मेधया ऽग्ने मेधाविनें कृणु २३२४  
 ( अथर्व० ७ । ८२ ( ८७ ) । २-६ ॥ त्रिष्टुप्, २३२५ ककुम्मती बृहती, २३२६ जगती । )

मय्यग्ने अग्निं गृह्णामि सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन ।  
 मयिं प्रजां मय्यायु—र्दधामि स्वाहा मय्यग्निम् २३२५  
 इहैवाग्ने अग्निं धारया रयिं मा त्वा नि क्रन् पूर्वचित्ता निक्कारिणः ।  
 क्षत्रेणाग्ने सुयममस्तु तुभ्यम् उपसत्ता वर्धतां ते अनिष्टृतः २३२६  
 अन्वग्निरुषसामग्रमख्यदन् वहानि प्रथमो जातवेदाः ।  
 अनु सूर्य उषसो अनु रश्मीन् अनु द्यावापृथिवी आ विवेश २३२७  
 प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यत् प्रत्यहानि प्रथमो जातवेदाः ।  
 प्रति सूर्यस्य पुरुधा च रश्मीन् प्रति द्यावापृथिवी आ तंतान २३२८  
 घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुर्द्या समिन्धे ।  
 घृतं ते देवीर्निपत्यं आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुहतां गावो अग्ने २३२९  
 ( अथर्व० ४ । २३ । १-७ । मृगारः । त्रिष्टुप्, २३३० पुरस्ताज्ज्योतिष्मती, २३३३ अनुष्टुप्, २३३५ प्रस्तारपङ्क्तिः । )

अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः पाञ्चजन्यस्य बहुधा यमिन्धते ।  
 विशोविशः प्रविशिवांसमीमहे स नो मुञ्चत्वंहसः २३३०  
 यथा हव्यं वहसि जातवेदो यथा यज्ञं कल्पयसि प्रजानन् ।  
 एवा देवेभ्यः सुमतिं न आ वह स नो मुञ्चत्वंहसः २३३१  
 यामन् यामन्नुपयुक्तं वहिष्ठं कर्मन् कर्मन्नाभंगम् ।  
 अग्निमीडे रक्षोहर्षं यज्ञवृधे घृताहुतं स नो मुञ्चत्वंहसः २३३२  
 सुजातं जातवेदसम् अग्निं वैश्वानरं विशुम् ।  
 हव्यवाहं हवामहे स नो मुञ्चत्वंहसः २३३३

येन ऋषयो बलमद्योतयन् युजा	येनासुराणामयुवन्त मायाः ।	
येनाग्निना पणीनिन्द्रो जिगाय	स नो मुञ्चत्वंहसः	२३३४
येन देवा अमृतमन्वविन्दन्	येनौषधीर्मधुमतीरकृण्वन् ।	
येन देवाः स्वश्राभरन्	त्स नो मुञ्चत्वंहसः	२३३५
यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते	यज्जातं जनितव्यं च केवलम् ।	
स्तौम्यमिं नाथितो जोहवीमि	स नो मुञ्चत्वंहसः	२३३६

( अथर्व० ६ । ४९ । १-२ ॥ गार्ग्यः । २३३७ अनुष्टुप्, २३३८ जगती । )

नहि ते अग्ने तन्वः	क्रूरमानंश्च मर्त्यः ।	
कपिर्विभस्ति तेजं	स्वं जरायु गौरिव	२३३७
मेष इव वै सं च वि चोर्विच्यसे	यदुत्तरद्रावुपरश्च खादतः ।	
शीर्ष्णा शिरोऽप्ससाप्सो अर्दयन्	अंशून् बभस्ति हरितैभिरासभिः	२३३८

( अथर्व० २ । ३६ । १, ३ । पतिवेदनः । २३३९ त्रिष्टुप्, २३४० भुरिक । )

आ नो अग्ने सुमतिं सँभलो गमे	दिमां कुमारीं सह नो भगेन ।	
जुष्टा वरेषु समनेषु वल्गु	रोषं पत्या सौभगमस्त्वस्यै	२३३९
इयमग्ने नारी पतिं विदेष्ट	सोमो हि राजा सुभगां कृणोति ।	
सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति	गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु	२३४०

( अथर्व० २० । २ । २ । गृत्समदो मेधातिथिर्वा । विगाङ् गायत्री । )

अभिराग्नीध्रात् सुष्टुभः	स्वर्कादितुना सोमं पिबतु	२३४१
--------------------------	--------------------------	------

( अथर्व० ४ । ४० । १ । शुक्रः । त्रिष्टुप् । )

ये पुरस्ताञ्जुह्वति जातवेदुः	प्राच्यां दिशोभिदासन्त्यस्मान् ।	
अग्निमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां	प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि	२३४२

( अथर्व० ३ । ३१ । १, ६ । ब्रह्मा । अनुष्टुप् । )

वि देवा जरसावृतन्	वि त्वमग्ने अरात्या । व्यंशुहं सर्वेण पाप्मना	वि यक्ष्मेण समायुषा २३४३
अग्निः प्राणान् त्सं दधाति	चन्द्रः प्राणेन संहितः ।	
व्यंशुहं सर्वेण पाप्मना	वि यक्ष्मेण समायुषा	२३४४

( अथर्व० ५ । २६ । १ । द्विपदार्थी उष्णिक् । )

यजूषि यज्ञे समिधः स्वाहा ऽग्निः प्रविद्वानिह वो युनक्तु २३४५

( अथर्व० ६ । ७१ । १-३ । जगती, २३४८ त्रिष्टुप् । )

यदन्नमग्निं बहुधा विरूपं हिरण्यमश्वमुत गामजामविष् ।  
यदेव किं च प्रतिजग्रहाहम् अग्निष्टद्वोता सुहुतं कृणोतु २३४६

यन्मा हुतमहुतमाजगाम दत्तं पितृभिरनुमतं मनुष्यैः ।  
यस्मान्मे मन उदिव रारंजीत्यग्निष्टद्वोता सुहुतं कृणोतु २३४७

यदन्नमदयनृतेन देवा दास्यन्नदास्यन्नत संगृणामि ।  
वैश्वानरस्य महतो महिम्ना शिवं मद्यं मधुमदस्त्वन्नम् २३४८

( अथर्व० १९ । ६५ । १ । जगती । )

हरिः सुपर्णो दिवमारुहोऽर्चिषा ये त्वा दिप्सन्ति दिवमुत्पतन्तम् ।  
अव तां जहि हरसा जातवेदो ऽविभ्यदुग्रोऽर्चिषा दिवमा रोह सूर्य २३४९

( अथर्व० १९ । ६६ । १ । अति जगती । )

अयोजाला असुरा मायिनो ऽयस्मयैः पाशैरङ्गिनो ये चरन्ति ।  
तांस्ते रन्धयामि हरसा जातवेदः सहस्रक्रष्टिः सपत्नान् प्रमृणन् पाहि वज्रः २३५०

( अथर्व० १९ । ६४ । १-४ ॥ अनुष्टुप् । )

अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे । स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्र यच्छतु २३५१  
इध्मेन त्वा जातवेदः समिधां वर्धयामसि । तथा त्वमस्मान् वर्धय प्रजयां च धनेन च २३५२  
यदग्ने यानि कानि चिदा ते दारूणि दुध्मसि । सर्वं तदस्तु मे शिवं तज्जुषस्व यविष्य २३५३  
एतास्ते अग्ने समिधस्त्वमिद्धः समिद्धं व । आर्युरस्मासु धेह्यमृतत्वमाचार्यायि २३५४

( अथर्व० ३ । २१ । १-१० । वसिष्ठः । त्रिष्टुप्, २३५५ पुरोनुष्टुप्, २३५६-५७, २३६१ भुरिक्, २३५९ जगती, २३६० उपरिष्ठाद्विराङ्गबृहती, २३६१ विराङ्गर्भा, २३६३ निचृदनुष्टुप्, २३६४ अनुष्टुप् । )

ये अग्नयो अप्स्वृन्तर्ये वृत्रे ये पुरुषे ये अश्मसु ।  
य आविवेशोषधीर्यो वनस्पतींस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् २३५५

यः सोमं अन्तर्यो गोष्वन्तर्य आविष्टो वयःसु यो मृगेषु ।  
य आविवेश द्विपदो यश्चतुष्पदस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् २३५६

य इन्द्रेण सरथं यार्ति देवो वैश्वानर उत विश्वदाव्यः ।	
यं जोहवीमि पृतनासु सासहि तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३५७
यो देवो विश्वाद्यमु काममाहु यं दातारं प्रतिगृह्णन्तमाहुः ।	
यो धीरः शक्रः परिभूरदाभ्यस् तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३५८
यं त्वा होतारं मनसाभि सँविदुस् त्रयोदश भौवनाः पञ्च मानवाः ।	
वर्चोधसे यशसे सूनृतावते तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३५९
उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे ।	
वैश्वानरज्येष्ठेभ्यस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३६०
दिवं पृथिवीमन्वन्तरिक्षं ये विद्युतमनुमंचरन्ति ।	
ये दिक्ष्वँन्तर्ये वार्ते अन्तस् तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३६१
हिरण्यपाणिं सवितारमिन्द्रं बृहस्पतिं वरुणं मित्रमाग्निम् ।	
विश्वान् देवानङ्गिरसो हवामह इमं क्रव्यादं शमयन्त्वाग्निम्	२३६२
शान्तो अग्निः क्रव्याच् छान्तः पुरुषरेषणः ।	
अथो यो विश्वदाव्यँस् तं क्रव्यादमशीशमम्	२३६३
ये पर्वाताः सोमपृष्ठा आपं उत्तानशीवरीः ।	
वार्तः पर्जन्य आदुगिस् ते क्रव्यादमशीशमन्	२३६४
( अथर्व० ७ । १०९ (११४) । १-७ । वादरायणिः । अनुष्टुप् २३६५ विराट् पुरस्ताद्बृहती, २३६६-६७, २३६९-७० त्रिष्टुप् )	
इदमुग्राय बभ्रवे नमो यो अक्षेषु तनूवशी ।	
घृतेन कलिं शिक्षामि स नो मृडातीदृशे	२३६५
घृतमप्सुराभ्यो वह त्वमग्ने पांसूनक्षेभ्यः सिकता अपश्च ।	
यथाभागं हव्यदाति जुषाणा मदन्ति देवा उभयानि हव्या	२३६६
अप्सरसः सधमादं मदन्ति हविर्धानमन्तरा सूर्यं च ।	
ता मे हस्तौ सं सृजन्तु घृतेन सपत्नं मे कितवं रन्धयन्तु	२३६७
आदिनवं प्रतिदीने घृतेनास्माँ अभि क्षर ।	
वृक्षमिवाशन्या जहि यो अस्मान् प्रतिदीव्यति	२३६८

यो नो ह्युवे धनमिदं चकार यो अक्षाणां ग्लहनं शेषणं च ।  
 स नो देवो हविरिदं जुषाणो गन्धर्वेभिः सधमादं मदेम २३६९  
 संवसन्न इति वो नामधेयम् उग्रंपश्या राष्ट्रभृतो ह्यक्षाः ।  
 तेभ्यो व इन्दवो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम् २३७०  
 देवान् यन्नाथितो हुवे ब्रह्मचर्यं यदपिम । अक्षान् यद् बभ्रुनालभे ते नो मृडन्त्वीदृशे २३७१

( अथर्व० ६ । ४७ । १ । अङ्गिराः प्रचेता । त्रिष्टुप् । )

अग्निः प्रातःसवने पात्वस्मान् वैश्वानरो विश्वकृद् विश्वशंभूः ।  
 स नः पावको द्रविणे दधातु आयुष्मन्तः सहभक्षाः स्याम २३७२

( अथर्व० ७ । ६२ ( ६४ ) । १ । मरीचिः काश्यपः । जगती । )

अयमग्निः सत्पतिर्वृद्धवृष्णो रथीव पत्नीनजयत् पुरोहितः ।  
 नाभा पृथिव्यां निहितो दविद्युतद् अधस्पदं कृणुतां ये पृतन्यवः २३७३

( अथर्व० ७ । ६३ ( ६५ ) । २ । जातवेदाः । जगती । )

पृतनाजितं सहमानमग्निमुक्थैर् हवामहे परमात् सधस्थात् ।  
 स नः पर्षदतिं दुर्गाणि विश्वा क्षामद् देवोऽतिं दुरितान्यग्निः । २३७४

( अथर्व० ६ । ३५ । १-३ । कौशिकः । गायत्री । )

वैश्वानरो न ऊतय आ प्र यातु परावतः । अग्निर्नः सुष्टृतीरुपं २३७५  
 वैश्वानरो न आगमद् इमं यज्ञं सजूरुपं । अग्निरुक्थेष्वंहसु २३७६  
 वैश्वानरोऽङ्गिरसां स्तोममुक्थं च चाकल्पत् । एषु द्युम्नं स्वर्यिमत् २३७७

( अथर्व० ६ । ११७ । १-३ । त्रिष्टुप् । )

अपमित्यमप्रतीक्षं यदास्मि यमस्य येन बालिना चरामि ।  
 इदं तदग्ने अनुणो भवामि त्वं पाशान् विचृतं वेत्थ सर्वान् २३७८  
 इहैव सन्तः प्रतिं दद्य एनज् जीवा जीवेभ्यो नि हराम एनत् ।  
 अपमित्यं धान्व्यं यज्जघसाहम् इदं तदग्ने अनुणो भवामि २३७९  
 अनुणा अस्मिन्ननुणाः परस्मिन् तृतीये लोके अनुणाः स्याम ।  
 ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः सर्वान् पथो अनुणा आ क्षियेम २३८०

( अथर्व० ६ । ११८ । १-३ । त्रिष्टुप् )

यद्भस्ताभ्यां चकृम किल्बिषाणि अक्षाणां गन्तुमुपलिप्समानाः । उग्रंपश्ये उग्रजितौ तद्य अप्सरसावनुं दत्तामृणं नः	२३८१
उग्रंपश्ये राष्ट्रभृत् किल्बिषाणि यदुक्ष्वृत्तमनुं दत्तं न एतत् । ऋणान्नो नर्णमर्त्सीमानो यमस्य लोके अधिरज्जुरायत् ।	२३८२
यस्मा ऋणं यस्य जायामुपैमि यं याचमानो अभ्यैमि देवाः । ते वाचं वादिषुर्मोत्तरां महैवपत्नी अप्सरमावधीतम्	२३८३

( अथर्व० ६ । ११९ । १-३ । त्रिष्टुप् । )

यददीच्यन्नृणमहं कृणोमि अदास्यन्नग्र उत संगृणामि । वैश्वानरो नो अधिपा वसिष्ठ उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम्	२३८४
वैश्वानराय प्रति वेदयामि यदृणं संगरो देवतासु । स एतान् पाशान् विचृतं वेदु सर्वान् अथ पक्केन सह सं भवेम	२३८५
वैश्वानरः पविता मा पुनातु यत् संग्रमभिधावाभ्याशाम् । अनाजानन् मनसा याचमानो यत् तत्रैनो अप तत् सुवामि	२३८६

( अथर्व० ६ । १२१ । १, २, ४ । २३८७, २३३८, त्रिष्टुप्, २३८९, २३९० अनुष्टुप् । )

विषाणा पाशान् वि ष्याध्यस्मद् य उत्तमा अधमा वारुणा ये । दुष्वभ्यं दुरितं नि ष्वास्मद् अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम्	२३८७
यद् दारुणि बध्यसे यच्च रज्ज्वां यद् भूम्यां बध्यसे यच्च वाचा । अयं तस्माद् गार्हपत्यो नो अग्निर् उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम्	२३८८
वि जिहीष्व लोकं कृणु बन्धान्मुञ्चासि बद्धकम् । योन्या इव प्रच्युतो गर्भः पथः सर्वा अनु क्षिय	२३८९

( अथर्व० ६ । ७६ । १-४ कवन्धः । अनुष्टुप्, २३९२ ककुम्भती । )

य एनं परिपीदन्ति ममादधति चक्षसे । संप्रेद्धो अग्निर्जिह्वाभिर् उदेतु हृदयादधि	२३९०
अग्नेः सांतपनस्याहं आयुषे पदमा रभे । अद्भ्रातिर्यस्य पश्यति धूममुद्यन्तमास्यतः	२३९१
यो अस्य समिधं वेद क्षत्रियेण समाहिताम् । नाभिह्वारे पदं नि दधाति स मृत्यवे	२३९२

नैनं मन्ति पर्यायिणो न सखाँ अव गच्छति । अग्रेयः क्षत्रियो विद्वान् नाम गृह्णात्यायुषे २३९३

( अथर्व० ६ । ७७ । १-३ । अनुष्टुप । )

अस्थाद् द्यौरस्थात् पृथिवि अस्थाद् विश्वमिदं जगत् ।

आस्थाने पर्वता अस्थु स्थास्यश्वाँ अतिष्ठिपम्

२३९४

य उदानट् परायणं य उदानण्णयानम् । आवर्तनं निवर्तनं यो गोपा अपि तं हुवे २३९५

जातवेदो नि वर्तय शतं तै सन्त्वावृतः । सहस्रं त उपावृतस् ताभिर्नः पुनरा कृधि २३९६

अग्निसहस्राग्नी देवगणः

## १२ वैश्वानरोऽग्निः सूर्यश्च ।

( ऋ० १० । ८८ । १-१९ ) मूर्धन्यानाङ्गिरसो, वामदेव्यो वा । सौर्य-  
वैश्वानरोऽग्नि । त्रिष्टुप । )

हविष्णान्तमजरं स्वविदिं दिविस्पृश्याहुतं जुष्टमग्नौ ।

तस्य भर्मणे भुवनाय देवा धर्मणे कं स्वधया पप्रथन्त

२३९७

गीर्णं भुवनं तमसापगूळहम् आविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ।

तस्य देवाः पृथिवी द्यौरुतापो ऽग्णयन्नोपधीः सख्ये अस्य

२३९८

देवेभिर्निषितो यज्ञियेभिर् अग्निं स्तोपाण्यजरं बृहन्तम् ।

यो भानुना पृथिवीं द्यामुतेमाम् आततान रोदसी अन्तरिक्षम्

२३९९

यो होतासीत् प्रथमो देवजुष्टो यं समाङ्गनाज्येना वृणानाः ।

स पतन्नीत्वरं स्था जगद् यत् श्वात्रमग्निरंक्रुणोज्जातवेदाः

२४००

यज्जातवेदो भुवनस्य मूर्धन् अतिष्ठो अग्ने सह रोचनेन ।

तं त्वाहेम मतिभिर्गीर्भिरुक्थैः स यज्ञियो अभवो रोदसिप्राः

२४०१

मूर्धा भुवो भवति नक्तमग्निस् ततः सूर्यो जायते प्रातरुद्यन् ।

मायामू तु यज्ञियानामेताम् अपो यत् तूर्णेश्वरति प्रजानन्

२४०२

दृशेन्यो यो महिना समिद्धो ऽरोचत दिवियोनिर्विभावा ।

तस्मिन्नग्नौ सक्तवाकेन देवा हविर्विश्व आजुहवुस्तनृपाः

२४०३



सूक्तवाकं प्रथममादिदुग्निम् आदिद्विविरजनयन्त देवाः । म एषां यज्ञो अभवत् तनुपास् तं द्यौर्वेदु तं पृथिवी तमार्षः	२४०४
यं देवासोऽजनयन्ताग्निं यस्मिन्नाजुहवुर्भुवनानि विश्वा । सो अर्चिषा पृथिवीं द्यामुतेमाम् ऋजूयमानो अतपन्महित्वा	२४०५
स्तोमेन हि दिवि देवासो अग्निम् अजीजनञ्छक्तिभी रोदसिग्राम् । तमू अकृण्वन् त्रेधा भुवे कं स ओषधीः पचति विश्वरूपाः	२४०६
यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो दिवि देवाः सूर्यमादितेयम् । यदा चरिणू मिथुनावभूताम् आदित् प्रापश्यन् भुवनानि विश्वा	२४०७
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय देवा वैश्वानरं केतुमह्नामकृण्वन् । आ यस्ततानोषसो विभातीर् अपो उर्णोति तमो अर्चिषा यन्	२४०८
वैश्वानरं कवयो यज्ञियासो ऽग्निं देवा अजनयन्नजुर्यम् । नक्षत्रं प्रलमर्मिनच्चरिण्यु यक्षस्याध्यक्षं तविषं बृहन्तम्	२४०९
वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं मन्त्रैरग्निं कविमच्छा वदामः । यो महिम्ना परिवभूवोर्वी उतावस्तादुत देवः परस्तात्	२४१०
द्वे स्रुती अंशृणवं पितृणाम् अहं देवानामुत मर्त्यानाम् । ताभ्यामिदं विश्वमेजत् समेति यदन्तरा पितरं मातरं च	२४११
द्वे समीची विभृतश्चरन्तं शीर्षतो जातं मनसा विमृष्टम् । स प्रत्यङ् विश्वा भुवनानि तस्थौ अप्रयुच्छन् तरणिर्भ्राजमानः	२४१२
यत्रा वदेते अवरः परश्च यज्ञन्योः कतरो नौ वि वेद । आ शैकुरित् संधमादुं सखायो नक्षन्त यज्ञं क इदं वि वोचत्	२४१३
कत्यग्रयः कति सूर्यासः कत्युषासः कत्यु स्विदार्षः । नोपस्पिजं वः पितरो वदामि पृच्छामि वः कवयो विब्रने कम्	२४१४
यावन्मात्रमुषमो न प्रतीकं सुपण्योऽं वसते मातरिश्चः । तावद् दधात्युषं यज्ञमायन् ब्राह्मणो होतुरवरो निषीदन्	२४१५

## १३ रक्षोहाग्निः ।

( ऋ० १० । १६२ । १-६ । रक्षोहा = ( गर्भस्य दोषनिवारकः ) ( अत्रानुसंधेया मन्त्राः १८१३-१८६१ )  
रक्षोहा ब्राह्मः । अनुष्टुप् । )

ब्रह्मणाग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः ।	
अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये	२४१६
यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा योनिमाशये ।	
अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत्	२४१७
यस्ते हन्ति पतर्यन्तं निषत्सुं यः संरीसृपम् ।	
जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि	२४१८
यस्त ऊरू विहरति अन्तरां दंपती शये ।	
योनिं यो अन्तरारेळिह तमितो नाशयामसि	२४१९
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते ।	
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि	२४२०
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते ।	
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि	२४२१

## १४ अपां-न-पादग्निः ।

( ऋ० २ । ३५ । १-१५ । गृत्समदः शौनकः । त्रिष्टुप् । )

उपेमसृक्षि वाजयुर्वचस्यां चनो दधीत नाद्यो गिरो मे ।	
अपां नपादाशुहेमा कुवित् स सुपेशसस्करति जोषिषद्भि	२४२२
इमं स्वस्मै हृद आ सुतष्टं मन्त्रं वोचेम कुविदस्य वेदत् ।	
अपां नपादसुर्यस्य मद्वा विश्वान्ययो भुवना जजान	२४२३
समन्या यन्त्युप यन्त्यन्याः समानमूर्धं नद्यः पृणन्ति ।	
तमू शुचिं शुचयो दीदिवांसम् अपां नपातं परिं तस्थुरापः	२४२४
तमस्मेरा युवतयो युवानं मर्मृज्यमानाः परिं यन्त्यापः ।	
स शुक्रेभिः शिकभी रेवदस्मे दीदायानिष्मो घृतनिर्णिगप्सु	२४२५

अस्मै तिस्रो अव्यध्याय नारीर् देवार्य देवीर्दिधिषन्त्यन्नम् ।	
कृता इवोप हि प्रसर्से अप्सु स पीयूषं धयति पूर्वस्रनाम्	२४२६
अश्वस्यात्र जनिमास्य च स्वरं द्रुहो रिषः संपृचः पाहि सूरीन् ।	
आमासु पूषु परो अप्रमृष्यं नारातयो वि नशन्नानृतानि	२४२७
स्व आ दमे सुदुघा यस्य धेनुः स्वधां पीपाय सुभ्वन्नमत्ति ।	
सो अपां नपादूर्जयन्नप्स्वन्तरं वसुदेयाय विधते वि भाति	२४२८
यो अप्स्वा शुचिना दैव्येन ऋतावाजस्र उर्विया विभाति ।	
वया इदुन्या भुर्वनान्यस्य प्र जायन्ते वीरुधश्च प्रजाभिः	२४२९
अपां नपादा ह्यस्थादुपस्थं जिह्वानामूर्ध्वो विद्युतं वसानः ।	
तस्य ज्येष्ठं महिमानं वहन्तीर् हिरण्यवर्णाः परि यन्ति यहीः	२४३०
हिरण्यरूपः स हिरण्यसदृग् अपां नपात्सेदु हिरण्यवर्णः ।	
हिरण्ययात् परि योनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै	२४३१
तदस्यानीकमुत चारु नाम अपीच्यं वर्धते नप्तुरपाम् ।	
यमिन्धते युवतयः समित्था हिरण्यवर्ण घृतमन्नमस्य	२४३२
अस्मै बहूनामंत्रमाय सख्ये यज्ञैर्विधेम नमसा हविभिः ।	
सं सानु मार्जिम दिधिषामि विल्भैर् दधाम्यन्नैः परि वन्द ऋग्भिः	२४३३
स ई वृषाजनयत् तासु गर्भं स ई शिशुर्धयति तं रिहन्ति ।	
सो अपां नपादनभिम्लातवर्णो ऽन्यस्येवेह तन्वा विवेष	२४३४
अस्मिन् पदे परमे तस्थिवांसम् अध्वस्मभिर्विश्वहा दीदिवांसम् ।	
आपो नत्रे घृतमन्नं वहन्तीः स्वयमत्कैः परि दीयन्ति यहीः	२४३५
अयांसमग्ने सुक्षिति जनाय अयांसमु मघवद्भ्यः सुवृक्तिम् ।	
विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवा बृहद् वंदेम विदथे सुवीराः	२४३६

### १५ अग्नीन्द्रादयः ।

(ऋ० ७।४१।१। वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नीन्द्रमित्रावरुणाश्विभगपूषब्रह्मणस्पतिसोमरुद्राः । जगती । )

प्रातरग्निं प्रातरिद्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।	
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम	२४३७

## १६ अग्निर्मरुतश्च ।

( ऋ० १ । १९ । १-९ । मेघान्तिथिः काण्वः । गायत्री । )

प्रति त्वं चारुमध्वरं	गोपीथाय प्र ह्ययमे	। मरुद्भिरग्न् आ गहि	२४३८
नहि देवो न मर्त्यो	महस्तव क्रतुं परः	। मरुद्भिरग्न् आ गहि	२४३९
ये महो रजसो विदुर्	विश्वे देवासो अद्रुहः	। मरुद्भिरग्न् आ गहि	२४४०
ये उग्रा अर्कमानुचुर्	अनाधृष्टास ओजसा	। मरुद्भिरग्न् आ गहि	२४४१
ये शुभ्रा घोरवर्षसः	सुक्षत्रासो रिशादसः	। मरुद्भिरग्न् आ गहि	२४४२
ये नाकस्याधि रोचने	दिवि देवास आसते	। मरुद्भिरग्न् आ गहि	२४४३
य ईह्वर्यन्ति पर्वतान्	तिरः समुद्रमण्वम्	। मरुद्भिरग्न् आ गहि	२४४४
आ ये तन्वन्ति रश्मिभिस्	तिरः समुद्रमोजसा	। मरुद्भिरग्न् आ गहि	२४४५
अभि त्वा पूर्वपीतये	सृजामि सोम्यं मधु	। मरुद्भिरग्न् आ गहि	२४४६

( ऋ० ८ । १०३ । १४ । सोभरिः काण्वः । अनुष्टुप् । )

अग्ने याहि मरुत्सखा	रुद्रेभिः सोमपीतये ।	
सोभर्या उप सुष्टुति	मादयस्व स्वर्णरे	२४४७

## १७ अग्निमित्रावरुणादयः ।

( ऋ० १ । ३५ । १ । हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अग्निमित्रावरुणौ रात्रिः सविता च । जगती । )

ह्वर्याम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये	ह्वर्यामि मित्रावरुणाविहावसे ।	
ह्वर्यामि रात्रीं जर्गतो निवेशनीं	ह्वर्यामि देवं संवितारमृतये	२४४८

## १८ अग्निर्वरुणश्च ।

( ऋ० ४ । १ । २-५ । वामदेवो गोतमः । त्रिष्टुप्, २४४९ अति जगती, २४५० धृतिः । )

स भ्रातरं वरुणमग्न् आ ववृत्स्व देवाँ	अच्छा सुमती यज्ञर्वनसं ज्येष्ठं यज्ञर्वनसम् ।	
ऋतावानमादित्यं चर्षणीधृतं	राजानं चर्षणीधृतम्	२४४९
सखे सखायमभ्या ववृत्स्वाशुं न	चक्रं रथ्येव रंहास्मभ्यं दस्म रंहा ।	
अग्ने मृलीकं वरुणे सर्वा विदो	मरुत्सु विश्वभानुषु ।	
तोकार्यं तुजे शुशुचान्	शं कृध्यस्मभ्यं दस्म शं कृधि	२४५०

त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्	देवस्य हेळोऽव यासिसीष्टाः ।	
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो	विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्	२४५१
स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती	नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ।	
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो	वीहि मृळीकं सुहवो न एधि	२४५२

### १९ अग्नाविष्णू ।

( अथर्व कां० ७ । २९ ( ३० ) । १-२ । मेधातिथिः । त्रिष्टुप् । )

अग्नाविष्णू महि तद्वीं महित्वं	पाथो घृतस्य गुह्यस्य नाम ।	
दमेदमे सप्त रत्ना दधानौ	प्रति वां जिह्वा घृतमा चरण्यात्	२४५३
अग्नाविष्णू महि धाम प्रियं वां	वीथो घृतस्य गुह्या जुषाणौ ।	
दमेदमे सुष्टुत्या वावृधानौ	प्रति वां जिह्वा घृतमुच्चरण्यात्	२४५४

### २० अग्निसूर्यौ ।

( ऋ० ८ । ५६ । ( ८ ) ५ । वाल्यखिल्यसूक्तम् । पृषध्नः काण्वः । पंक्तिः । )

अचेत्यग्निश्चिकितुर्	हव्यवाट् स सुमद्रथः ।	
अग्निः शुक्रेण शोचिषां	बृहत्सरो अरोचत दिवि सूर्यो अरोचत	२४५५

### २१ (केशिनः)—अग्निः सूर्यो वायुश्च ।

( ऋ० १ । १६४ । ४४ दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् । )

त्रयः केशिनं ऋतुथा वि चक्षते	संवत्सरे वपत् एक एषाम् ।	
विश्वमेको अभि चष्टे शचीभिर्	ध्राजिरेकस्य ददृशे न रूपम्	२४५६

### २२ अग्निसूर्यानिलाः ।

( ऋ० ८ । १८ । ९ हरिम्बिठिः काण्वः । उष्णिक् । )

शमभिरग्निभिः करच्	छं नस्तपत् सूर्यैः । शं वातो वातु	अर्पा अप सिधः	२४५७
-------------------	-----------------------------------	---------------	------

## अग्निसूर्यवायवः ।

( ऋ० १० । १३६ । १-७ ॥ २४५८ जूतिः, २४५९ वातजूतिः २४६० विप्रजूतिः, २४६१ वृषाणकः, २४६२ करिकतः २४६३ पतशः, २४६४ ऋष्यशृङ्गः ( एते वातरशना मुनयः ) । ( केशिनः=) अग्नि-सूर्य-वायवः । अनुष्टुप् । )

केश्यग्निं केशी विषं	केशी विमर्ति रोदसी ।	
केशी विश्वं स्वर्दशे	केशीदं ज्योतिरुच्यते	२४५८
मुनयो वातरशनाः	पिशङ्गा वसते मला ।	
वातस्यानु भ्राजिं यन्ति	यद् देवासो अर्विक्षत	२४५९
उन्मदिता मौनेयेन	वाताँ आ तस्थिमा वयम् ।	
शरीरेदुस्माकं यूयं	मर्तासो अभि पश्यथ	२४६०
अन्तरिक्षेण पतति	विश्वा रूपावचाकशत् ।	
मुनिर्देवस्यदेवस्य	सौकृत्याय सखा हितः	२४६१
वातस्याश्वो वायोः सखा	अथो देवेषितो मुनिः ।	
उभौ समुद्रावा क्षेति	यश्च पूर्वं उतापरः	२४६२
अप्सरसां गन्धर्वाणां	मृगाणां चरणे चरन् ।	
केशी केतस्य विद्वान्	त्सखा स्वादुर्मदिन्तमः	२४६३
वायुरस्मा उपामन्थत्	पिनष्टि स्मा कुनन्नमा ।	
केशी विषस्य पात्रेण	यद् रुद्रेणापिबत् सह	२४६४

## अग्नीषोमौ ।

( ऋ० १ । ९३ । १-१२ । गोतमो राहुगणः । २४६५-२४६७ अनुष्टुप् ; २४६८-२४७१, २४७६ त्रिष्टुप् ; २४७२ जगती त्रिष्टुप् ; २४७३-२४७५ गायत्री ।

अग्नीषोमाविमं सु मे शृणुतं वृषणा हवम् । प्रतिं सूक्तानि हर्यतं भवतं दाशुषे मयः २४६५  
 अग्नीषोमा यो अद्य वांम् इदं वचः सपर्यति । तस्मै धत्तं सुवीर्यं गत्रां पोषं स्वश्र्यम् २४६६  
 अग्नीषोमा य आहुतिं यो वां दाशाद्भविष्कृतिम् । स प्रजया सुवीर्यं विश्वमायुर्व्यंश्रवत् २४६७  
 अग्नीषोमा चेति तद् वीर्यं वां यदमुष्णीतमवसं पणिं गाः ।  
 अवातिरतं वृसयस्य शेषो ऽविन्दतं ज्योतिरेकं बहुभ्यः २४६८

युवमेतानि दिवि रोचनानि अग्निश्च सोम सक्रतू अधत्तम् ।	
युवं सिन्धूरमिशस्तेरवद्याद् अग्नीषोमावमुञ्चतं गृभीतान्	२४६९
आन्यं दिवो मातरिश्वा जभार अमध्नादन्यं परि श्येनो अद्रेः ।	
अग्नीषोमा ब्रह्मणा वावृधाना उरुं यज्ञाय चक्रथुरु लोकम्	२४७०
अग्नीषोमा हविषः प्रस्थितस्य वीतं हर्यतं वृषणा जुषेथाम् ।	
मुशर्माणा स्ववसा हि भूतम् अथा धत्तं यजमानाय शं योः	२४७१
यो अग्नीषोमा हविषा सपर्याद् देवद्रीचा मनसा यो घृतेन ।	
तस्य व्रतं रक्षतं पातमंहसो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम्	२४७२
अग्नीषोमा सर्वेदसा सहृती वनतं गिरः । सं देवत्रा बभूवधुः	२४७३
अग्नीषोमावनेन वां यो वां घृतेन दाशति । तस्मै दीदयतं बृहत्	२४७४
अग्नीषोमाविमानि नो युवं हव्या जुजोषतम् । आ यातमुप नः सचा	२४७५
अग्नीषोमा पिपृतमर्वतो न आ प्यायन्तामुस्त्रिया हव्यसूदः ।	
अस्मे बलानि मघवत्सु धत्तं कृणुतं नो अध्वरं श्रुष्टिमन्तम्	२४७६

( अथर्व० ६ । ५४ । १-३ । ब्रह्मा । अनुष्टुप् । )

इदं तद् युज उत्तरम् इन्द्रं शुम्भाम्यष्टये । अस्य क्षत्रं श्रियं महीं वृष्टिरिव वर्षया तृणम् २४७७  
 अस्मै क्षत्रमग्नीषोमौ अस्मै धारयतं रयिम् । इमं राष्ट्रस्याभीवर्गे कृणुतं युज उत्तरम् २४७८  
 सबन्धुश्चासंबन्धुश्च यो अस्मां अभिदासति । सर्वं तं रन्धयासि मे यजमानाय सुन्वते २४७९

( अथर्व० ६ । ५८ । ३ । अथर्वा ( यशस्कामः ) । अग्निः, इन्द्रः, सोमः । अनुष्टुप् । )

यशा इन्द्रो यशा अग्निर् यशाः सोमो अजायत ।

यशा विश्वस्य भूतस्य अहमस्मि यशस्तमः २४८०

( अथर्व० ६ । ९३ । ३ । शन्तातिः । अग्निषोमौ वरुणः मरुतः वातपर्जन्यौ । त्रिष्टुप् । )

त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो वधाद् विश्वे देवा मरुतो विश्ववेदसः ।

अग्नीषोमा वरुणः पूतर्दक्षा वातापर्जन्ययोः सुमतौ स्याम २४८१

( अथर्व० ७ । ११४ ( ११९ ) । १-२ ॥ भार्गवः । अग्नीषोमौ । अनुष्टुप् । )

आ ते ददे वक्षणाभ्य आ तेऽहं हृदयाद् ददे ।

आ ते मुखस्य संकाशात् सर्वे ते वर्चे आ ददे २४८२

प्रेतो यन्तु व्याधियः प्रानुध्याः प्रो अशस्तयः ।

अग्नी रक्षस्विनीर्हन्तु सोमो हन्तु दुरस्यतीः २४८३

# अग्निदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

## ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[२] १।१।२ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । अग्नि )

स देवाँ एह वक्षति ।

(७०५) ४।८।२ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )

स देवाँ एह वक्षति ।

[४] १।१।४ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । अग्नि )

विश्वत परिभूरसि ।

(१८९२) १।९।६ ( कुन्स आगिरम । अग्नि )

विश्वतः परिभूरसि ।

[५] १।१।५ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । अग्नि )

देवो देवेभिरागम् ।

(५१२) ३।१०।४ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )

अग्निदेवेभिरागम् ।

[८] १।१।८ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । अग्नि )

राजन्तमध्वराणां ।

(३८) १।२७।१ (शुनः शेष आर्जागति । अग्नि )

सम्राजन्तमध्वराणाम् ।

(१०३) १।४५।४ ( प्र ष्व काण्व । अग्नि )

राजन्तमध्वराणाम् ।

८।८।१८ ( सभ्वंस काण्व । अश्विनौ )

राजन्तमध्वराणाम् ।

[१०] १।१२।१ ( मेधातिथि काण्व । अग्नि )

अग्निं दूतं वृणीमहे ।

(७०) १।३६।३ प्र त्वा दूत वृणीमहे ।

(८८) १।४४।३ अद्या दूत वृणीमहे ।

[१०] १।१२।१ ( मेधातिथि काण्व । अग्नि )

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।

अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।

(७०) १।३६।३ ( कण्वो घोर । अग्नि )

प्र त्वा दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।

(९२) १।४४।७ ( प्रस्कण्व काण्व । अग्नि )

होतारं विश्ववेदसम् ।

(१२२६) ८।१९।३ ( सौभरि काण्व । अग्नि )

यजिष्ठं त्वा वधुमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम् ।

अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।

[१२] १।१२।३ ( मेधातिथि काण्व । अग्नि )

अग्ने देवाँ इहा वह ।

(१९) १।१०।१० ( मेधातिथि काण्व । अग्नि )

अग्ने देवाँ इहा वह ।

(२२) १।१५।४ ( मेधातिथि काण्व । अग्नि )

अग्ने देवाँ इहा वह ।

[१३] १।१२।४ ( मेधातिथि काण्व । अग्नि )

यदग्ने यासि दूत्यम् । देवैरा सत्सि बर्हिषि ।

(२२१) १।७४।७ ( गौतमो राह्वग्य । अग्नि )

यदग्ने यासि दूत्यम् ।

(९२४) ५।२६।५ ( वसुयव अत्रेया । अग्नि )

देवैरा सत्सि बर्हिषि ।

(१३५६) ८।४४।१४ ( विष्णु अत्रिग्य । अग्नि )

देवैरा सत्सि बर्हिषि ।

[१५] १।१२।६ ( मेधातिथि काण्व । अग्नि )

कविर्गृहपतिर्युवा ।

(११७८) ७।१५।२ ( वर्गिष्ठो मन्त्रावर्णि । अग्नि )

कविर्गृहपतिर्युवा ।

(१४६३) ८।१०२।१ ( प्रयोगो भार्गव — । अग्नि )

कविर्गृहपतिर्युवा ।

[१६] १।१२।७ कविमग्निमुप स्तुहि ।

१।१३६।६ इन्द्रमग्निमुप स्तुहि ।

[१६] १।१२।७ सत्यधर्माणमध्वरं ।

५।५१।२ सत्यधर्माणो अध्वरम् ।

[१८] १।१०।९ ( मेधातिथि काण्व । अग्नि )

तस्मै पावक मृत्त्रय ।

(१३७०) ८।४४।२८ ( विष्णु अत्रिग्य । अग्नि )

तस्मै पावक मृत्त्रय ।

[१९] १।१२।१० ( मेधातिथि काण्व । अग्नि )

स नः पावक दीदिवः ।

(५१६) ३।१०।८ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )

स नः पावकः दीदिह ।

[१९] १।१२।१०; (१०) १।१०।३; (२०) १।१५।४

अग्ने देवाँ इहा वह ।



[ २० ] १।२२।११ ( मेघातिथि काण्व । अग्निः )

स नः स्तवान् आ भर ।

...रयि वीरवतीमिषम् ।

८।२४।३ ( विश्वमना वैयश्व । इन्द्र )

स नः स्तवान् आ भर रयि ।

१।४०।५ ( बृहन्मतिराङ्गिरस । पवमान सोम )

स नः पुनान् आ भर रयि स्तोत्रे सुवीर्यम् ।

१।६१।६ अमर्हायुराङ्गिरस । पवमान सोम )

स नः पुनान् आ भर रयि वीरवतीमिषम् ।

[ २१ ] १।१२।१२ ( मेघातिथि काण्व । अग्निः )

अग्ने शुक्रेण शोचिषा ।

.. इमं स्तोमं जुषस्व न ।

( १३५६ ) ८४४।१४ ( विरूप आङ्गिरस । अग्निः )

अग्ने शुक्रेण शोचिषा ।

( १५८८ ) १०।२१।८ ( विमद ऐन्द्र । अग्निः )

अग्ने शुक्रेण शोचिषोरू ।

( १३२५ ) ८।४३।२६ ( विरूप आङ्गिरस । अग्निः )

इमं स्तोमं जुषस्व मे ।

[ २२ ] १।१५।४. ( १२ ) १।१२।३. ( १९ ) १।१२।१०

अग्ने द्वाँ इहा वह ।

[ २८ ] १।२६।१; १।१४।११, सेमं नो अध्वरं यज ।

[ ३१ ] १।२६।४ ( शुन शेष आजीगर्ति । अग्निः )

वरुणो मित्रो अर्यमा । सीदन्तु मनुषो यथा ।

१।४१।१ ( कण्वो घौर । वरुणमित्रार्यमण । )

वरुणो मित्रो अर्यमा ।

४।५५।१० ( वामदेवो गौतम । विश्वेदेवा )

वरुणो मित्रो अर्यमा ।

५।६७।३ ( यजत अत्रेय । मित्रावरुणौ )

वरुणो मित्रो अर्यमा ।

८।१८।३ ( इरिम्बिठि काण्व । आदित्या )

वरुणो मित्रो अर्यमा ।

८।२८।२ ( मनुर्वैवस्वत । विश्वेदेवा )

वरुणो मित्रो अर्यमा ।

८।८३।२ ( कुसीदी काण्व । विश्वेदेवा )

वरुणो मित्रो अर्यमा ।

९।६४।२९ ( कश्यपो मारीच । पवमान सोम )

सीदन्तो वनुषा यथा ।

[ ३२ ] १।२६।५ ( शुन शेष आजीगर्ति । अग्निः )

इमा उषु धुधा गिरः ।

( १०४ ) १।४५।५ ( प्रस्कण्व काण्व । अग्निः )

इमा उषु धुधी गिरः ।

( ४३३ ) २।६।१ ( सोमाहुतिर्भोगव । अग्निः )

इमा उषु धुधी गिरः ।

[ ३७ ] १।२६।१० ( शुन शेष आजीगर्ति । अग्निः )

इमं यज्ञमिदं वचः ।

१।९१।१० ( गोतमो राहुगण । सोम )

इमं यज्ञमिदं वचो । जुजुषाण उपागहि ।

( १६९९ ) १०।१५०।२ ( मृळीको वासिष्ठ । अग्निः )

इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि ।

[ ३८ ] १।२७।१ ( शुन शेष आजीगर्ति । अग्निः )

सम्राजन्तमध्वराणाम् ।

( ८ ) १।१।८; ( १०३ ) १।४५।४ राजन्तमध्वराणां ।

८।८।१८ राजन्तावध्वराणां ।

[ ५७ ] १।३१।८ ( हिरण्यस्तूप आङ्गिरस । अग्निः )

यशसं कारं कृणुहि स्तवानः ।

देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ।

९।६९।१० ( हिरण्यस्तूप आङ्गिरस । पवमान सोम )

भरा चन्द्राणि गृणते वसूनि देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ।

१०।६७।१२ ( अयास्य आङ्गिरस । बृहस्पति )

देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ।

[ ७० ] १।३६।३ प्र त्वा दूतं वृणीमहे,

( १० ) १।१२।१ अग्निं दूतं वृणीमहे ।

( ८८ ) १।४४।३ अद्या दूतं वृणीमहे ।

[ ७० ] १।३६।३; ( १० ) १।१२।१; ( ९२ ) १।४४।७

होतारं विश्वेवदसं ।

[ ७१ ] १।३६।४ देवासस्वा वरुणो मित्रो अर्यमा ।

१।४०।५ यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

७।६६।१२ यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा ।

७।८२।१०; ८।३।१० अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

८।१९।१६ येन चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ।

८।२६।११ सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा ।

१०।३६।१ द्यावा क्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा ।

१०।६५।१ अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।

१०।६५।९ इन्द्रवायू वरुणो मित्रो अर्यमा ।

१०।९२।६ तेभिश्चष्ट वरुणो मित्रो अर्यमा ।

[ ७२ ] १।३६।५ ( कण्वो घौर । अग्निः )

अग्ने दूता विशामसि ।

( ९४ ) १।४४।९ ( प्रस्कण्व काण्व । अग्निः )

अग्ने दूता विशामास ।

- [ ७४ ] १ । ३६ । ७ ( कण्वो घौर । अग्नि )  
तं घेमिन्त्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।  
८ । ६९ । १७ ( प्रियमेध आङ्गिरस । इन्द्र )  
तं घेमिन्त्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।
- [ ७५ ] १ । ३६ । ८ ( कण्वो घौर । अग्नि )  
उरु क्षयाय चक्रिरे ।  
७ । ६० । ११ ( वसिष्ठ । मित्रावरुणौ )  
उरु क्षयाय चक्रिरे सुधातु ।
- [ ७७ ] १ । ३६ । १० ( कण्वो घार । अग्नि )  
यं त्वा देवासो मनवे दधुरिह यजिष्ठं हव्यवाहन ।  
( ९० ) १ । ४४ । ५ ( प्रस्कण्व काण्व । अग्नि )  
यजिष्ठं हव्यवाहन ।  
( ११८२ ) ७ । १५ । ६ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि )  
यजिष्ठो हव्यवाहनः ।  
( १२४४ ) ८ । १९ । २१ ( सोमरि काण्वः । अग्नि )  
यजिष्ठं हव्यवाहनम् ।
- [ ७९ ] १ । ३६ । १२ स नो मृळ महौ असि ।  
( ७१२ ) ४ । ९ । १ अग्ने मृळ महौ असि ।  
१ । ३६ । १४ ( कण्वो घौर । यूप )  
कृधी न उर्ध्वाञ्चरथाय जीवसे ।  
१ । १७२ । ३ ( अगस्त्यो मैत्रावरुण । मरुतः )  
उर्ध्वान्नः कर्त जीवसे ।
- [ ८० ] १ । ३६ । १५ ( कण्वो घौर । अग्नि )  
पाहि नो अग्ने रक्षस पाहि धूर्तेररावणः ।  
( १११२ ) ७ । १ । १३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि )  
पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात्पाहि धूर्तेररक्षो अघायो
- [ ८७ ] १ । ४४ । २ ( प्रस्कण्व काण्व । अग्नि )  
अग्ने रथीरध्वराणाम् ।  
( १२१५ ) ८ । ११ । २ ( वत्स काण्व । अग्नि )  
अग्ने रथीरध्वराणाम् ।
- [ ८७ ] १ । ४४ । २; १ । ९ । ८; ८ । ६५ । ९  
अस्मे धेहि श्रवो बृहत् ।
- [ ८८ ] १ । ४४ । ३ अद्या दूतं वृणीमहे ।  
( १० ) १ । १२ । १ अग्निं दूतं वृणीमहे ।  
( ७० ) १ । ३६ । ३ प्र त्वा दूतं वृणीमहे ।
- [ ९० ] १ । ४४ । ५, ( ७७ ) १ । ३६ । १०  
यजिष्ठं हव्यवाहन । ७ । १५ । ६ यजिष्ठो  
हव्यवाहनः । ८ । १९ । २१ यजिष्ठ हव्यवाहनं ।
- [ ९२ ] १ । ४४ । ७; ( १० ) १ । १२ । १;  
( ७० ) १ । ३६ । ३ होतार विश्ववेदसं ।

- [ ९४ ] १ । ४४ । ९, ( ७२ ) १ । ३६ । ५  
अग्ने दूतो विशामसि ।
- [ ९६ ] १ । ४४ । ११ ( प्रस्कण्व काण्व । अग्नि )  
नि त्वा यज्ञस्य साधनम् ।  
( ५३८ ) ३ । २७ । २ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
गिरा यज्ञस्य साधनम् ।  
८ । ६ । ३ ( वत्स काण्व । इन्द्र )  
स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम् ।  
( १२७८ ) ८ । २३ । ९ ( विश्वमना कैयश्च । अग्नि )  
यज्ञस्य साधनं गिरा ।
- [ ९९ ] १ । ४४ । १४ ( प्रस्कण्व काण्व । अग्नि )  
अग्निजिह्वा ऋतावृधः ।  
अश्विभ्यामुपसा सजूः ।  
७ । ६६ । १० ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । आदित्य )  
अग्निजिह्वा ऋतावृधः ।  
१० । ६५ । ७ ( वसुकर्णो वामुक । विश्वेदेवा )  
दिवक्षसो अग्निजिह्वा ऋतावृधः ।  
५ । ५१ । ८ ( स्वस्त्यात्रेय । विश्वेदेवा )  
अश्विभ्यामुपसा सजूः ।
- [ १०३ ] १ । ४५ । ४ ( प्रस्कण्व काण्व । अग्नि )  
प्रियमेधा अहृषत ।  
८ । ८ । १८ ( सन्वस काण्व । अश्विनौ )  
प्रियमेधा अहृषत ।  
८ । ८ । ३ बुध्निको वा वासिष्ठ । अश्विनौ )
- [ १०३ ] १ । ४५ । ४; ( ८ ) १ । १ । ८ राजन्तमध्वराणाम् ।  
८ । ८ । १८ राजन्तावध्वराणाम् ।  
( ३८ ) १ । २७ । १ सम्राजन्तमध्वराणाम् ।
- [ १०३ ] १ । ४५ । ४ अग्निं शुक्रेण शोचिषा ।  
( २१ ) १ । १२ । १२ अग्ने शुक्रेण शोचिषा ।
- [ १०४ ] १ । ४५ । ५; ( ३२ ) १ । २६ । ५, २ । ६ । १  
इमा उ पु श्रुधी गिरः ।
- [ १०५ ] १ । ४५ । ६ ( प्रस्कण्व काण्व । अग्नि )  
अग्ने हव्याय वोळहवे ।  
( ५६१ ) ३ । २९ । ४ ( विश्वामित्रो गाथिन अग्नि )  
अग्ने हव्याय वोळहवे ।
- [ १०६ ] १ । ४५ । ७ ( प्रस्कण्व काण्व । अग्नि )  
श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं ।  
( १६८९ ) १० । १४० । ६ ( अग्नि पावक । अग्नि )  
श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा ।

[१०७] १, ४५, ८, अग्ने मर्ताय दाशुषे १ ८४, ७, ९, ९८, ४  
वम् मर्ताय दाशुषे । ८, १, २२ देवो मर्ताय दाशुषे ।

[१११] १, ५८, २ (नोधा गौतम । अग्नि )

दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदत् ।

९, ८६, ९ (अकृष्टा माषा । पवमान सोम )

[११३] १, ५८, ४ ( नोधा गौतम । अग्नि )

कृष्णं त एम रुशदूर्मे अजर ।

( ७०१ ) ४, ७, ९ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )

कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाक ।

( ११६ ) १ । ५८ । ७ ( नोधा गौतम । अग्नि )

यं वाघतो वृणते अध्वरेषु ।

सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ।

१०, ३०, ४ ( कवष णेल्लप । आप अपानपात्र वा )

यं विप्रास ईळते अध्वरेषु ।

३, ५४, ३ ( प्रजापतिवैश्वामित्र प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वेदेवा )

सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ।

[ ११७ ] १, ५८, ८ अच्छिद्रा सूनो सहसो नो अघ

४, २, २ इह त्वं सूनो०-६, ५०, ९ उत त्वं सूनो०-।

[११८] १, ५८, ९, ( १२३ ) १, ६०, ५, १, ६१, १६, १, ६२, १३,

१।६४, १५, ८, ८०, १०, ९, ९३, ५ प्रातर्मक्षू

धियावसुर्जगम्यात् ।

[ १२२ ] १, ६०, ४ ( नोधा गौतम । अग्नि )

अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणाम् ।

( १९५ ) १, ७२, १ ( पराशर शाक्य अग्नि )

[ १४३ ] १ । ६६ । ९, १० ( पराशर शाक्य । अग्नि )

एनोन्नवन्त गावः स्व १ ईशीके ।

( १७३ ) १, ६९, ९, १० ( पराशर शाक्य । अग्नि )

नवन्त विश्वे स्व १ ईशीके ।

[ १६० ] १, ६८, ९, १०, पितुर्न पुत्राः क्रतुं जुषन्त ।

९, ९७, ३०, पितुर्न पुत्रः क्रतुभिर्यता न ।

[ १७० ] १, ६९, ७ नकिष्ट एता व्रता मिनन्ति ।

१०, १०, ५ नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि ।

[ १७३ ] १, ६९, ९, १० ; ( १४३ ) १, ६६, ९, १०

[ १७८ ] १, ७०, ५, ६, ( पराशर शाक्य । अग्नि )

स हि क्षपावाँ अग्नी रयीणां ।

( १२६५ ) ७, १०, ५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि )

स हि क्षपावाँ अभवद्रयीणाम् ।

[ १८८ ] १, ७१, ४ ( पराशर शाक्य । अग्नि )

मथीघर्दी विश्वतो मातरिश्वा ।

( ३४८ ) १, १४८, १ ( दीर्घतमा औचथ्य । अग्नि )

मथीघर्दी विश्वो मातरिश्वा ।

[ १९३ ] १, ७१, ९ ( पराशर शाक्यः । अग्नि )

राजानामित्रावरुणा सुपाणी ।

३, ५६, ७ ( प्रजापतिवैश्वामित्र प्रजापतिर्वाच्यो वा ।

विश्वेदेवा )

[ १९४ ] १, ७१, १० ( पराशर शाक्य । अग्नि )

प्र मर्षिष्ठा अभि विदुष्कवि सन् ।

७, १८, २ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्रः )

एवाव द्युभिरभि०— ।

[ १९५ ] १, ७२, १ ( पराशर शाक्य । अग्नि )

हृस्ते दधानो नर्या पुरुणि ।

७, ४५, १ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । सविता )

[ १९५ ] १, ७२, १ ; ( १२२ ) १, ६०, ४ अग्निर्भुवद्रयिपती

रयीणां ।

[ १२७ ] १, ७२, ३ ( पराशर शाक्य । अग्नि )

नामानि चिद्धिरे यज्ञियानि ।

( ९४२ ) ६, १, ४ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि )

[ १९८ ] १, ७२, ४ अग्नि पदे परमे तस्थिवांसम् ।

२, ३५, १४ अस्मिन् पदे०— ।

[ १९९ ] १, ७२, ५ ( पराशर शाक्य । अग्नि )

रिरिकांसस्तन्वः कृण्वत स्वाः ।

४, २४, ३ ( वामदेवो गौतम । इन्द्र )

रिरिकांसस्तन्वः कृण्वत त्राम ।

[ २०३ ] १, ७२, ९ ( पराशर शाक्य । अग्नि )

कृण्वानासो अमृतत्वाय गातुम् ।

३, ३१, ९ ( कुशिक ऐषीरथि विश्वामित्रो गाथिनो वा । इन्द्र )

[ २०६ ] १, ७३, २ ( पराशर शाक्य । अग्नि )

देवो न यः सविता सत्यमन्मा ।

९, ९७, ४८ ( कुत्स आङ्गिरसः । पवमान सोमः )

[ २०७ ] १, ७३, ३ ( पराशर शाक्य । अग्नि )

देवो न यः पृथिवाँ विश्वधाया उपक्षेति

हितमित्रो न राजा ।

पुरः सदः शर्मसदो न वीरा ।

३, ५५, २१ ( प्रजापतिवैश्वामित्रः प्रजापति

र्वाच्यो वा । विश्वेदेवा )

इमां च नः पृथिवाँ विश्वधाया उप क्षेति०—।

[ २१२ ] १, ७३, ८ ( पराशर शाक्य । अग्नि )

आपमिवाप्रोदसी अन्तरिक्षम् ।

१०. १३९, २ ( विश्वावसुर्देवगन्धर्व । सविता )  
 [ २१४ ] १, ७३, १० ( पराशर शाक्त्य । अग्नि )  
 एता ते अग्न उचथानि वेधो जुष्टानि सन्तु ।  
 ( ६६६ ) ४, २, २० ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 एता ते अग्न उचथानि वेधोऽवोचाम कवये ता जुषस्व ।  
 उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो नो महो रायः पुरुवार प्र यन्धि ।  
 [ २१७ ] १, ७४, ३ ( गोतमो राहूगण । अग्नि )  
 अभिवृत्रहाजनि ।  
 धनंजयो रणेरणे ।  
 ( १०५६ ) ६, १६, १५ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्निः )  
 दस्युहन्तमम् ।  
 धनंजयं रणेरणे ।  
 [ २२१ ] १. ७४, ७; ( १३ ) १, १२, ४ यदग्ने यासि दूत्यम् ।  
 [ २२७ ] १. ७५, ४ ( गोतमो राहूगण । अग्नि )  
 सखा सखिभ्य ईडयः ।  
 ९ ६६, १ ( शनं वैखानसा । पवमान सोम )  
 [ २३२ ] १, ७६, ४ ( गोतमो राहूगण । अग्नि )  
 वेषि होत्रमुत पोत्रं यजत्र ।  
 ( १४९३ ) १०, २, २ ( त्रित आप्त्य । अग्नि )  
 — पोत्रं जनानां ।  
 [ २३४ ] १, ७७, १ ( गोतमो राहूगण । अग्नि )  
 यो मर्येध्वमुत ऋतावा होता यजिष्ठ ।  
 ( ६४७ ) ४, २, १ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 — ऋतावा । होता यजिष्ठो ।  
 [ २३७ ] १, ७७, ४ वाजप्रसूता इषयन्त मन्म ।  
 ७, ८७, ३ प्रचेतसो य इषयन्त मन्म ।  
 [ २३९ ] १, ७८, १ ( गोतमो राहूगण । अग्नि )  
 अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे ।  
 द्युमैरभि प्र णोनुमः ।  
 ४, ३२, ९ ( वामदेवो गौतम । इन्द्र )  
 अभि त्वा गोतमा गिरानूषत ।  
 ( १०७० ) ६, १६, २९ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि )  
 आ भर जातवेदो विचर्षणे ।  
 ( १०७७ ) ६, १६, ३६ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि )  
 आ भर जातवेदो विचर्षणे ।  
 ( १३११ ) ८, ४३, २ ( विरूप आद्विरस । अग्नि )  
 जातवेदो विचर्षणे ।  
 [ २३९ - २४३ ] १. ७८. १-५ द्युमैरभि प्र णोनुमः ।  
 [ २४६ ] १, ७९, ३ ( गोतमो राहूगण । अग्निः )  
 अर्यमा मित्रो वरुणः परिष्मा ।

८, २७, १७ ( मनुर्वैवस्वत । विश्वेदेवा )  
 — वरुणः सरातयो ।  
 १०, ९३, ४ ( तान्य पार्थ्य । विश्वेदेवा )  
 [ २४७ ] १, ७९, ४ ( गोतमो राहूगण । अग्नि )  
 ईशानः सहसो यहो ।  
 ( ११८७ ) ७, १५, ११ ( वसिष्ठो मैत्रावरुण । अग्नि )  
 [ २४८ ] १. ७९, ५ ( गोतमो राहूगण । अग्नि )  
 अग्निरीळ्यो गिरा ।  
 ( १८५५ ) १०, ११८, ३ ( उरुक्षय आमर्षयव । रक्षोहाऽग्नि )  
 [ २५१ ] १, ७९, ८ ( गोतमो राहूगण । अग्नि )  
 सत्रासाहं वरेण्यम् ।  
 ३, ३४, ८ ( विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्र )  
 — वरेण्यं सत्रोदां ।  
 [ २५२ ] १, ७९, ९ ( गोतमो राहूगण । अग्नि )  
 रयिं विश्वायुपापसम् ।  
 ६, ५९, ९ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्य । इन्द्रमी )  
 [ २५५ ] १, ७९, १२ ( गोतमो राहूगण । अग्नि )  
 अग्नी रक्षांसि सेधति ।  
 ( ११८६ ) ७, १५, १० ( वसिष्ठो मैत्रावरुण । अग्नि )  
 [ २५६-२६९ ] १, ९४, १-१४ अग्ने सख्ये मा रिषामा  
 वयं तव ।  
 [ २५८ ] १, ९४, ३ ( कुन्म आद्विरस । अग्नि )  
 त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।  
 ( ३८१ ) २, १, १३ ( गृत्समद आनक्रो मार्गव ( आद्विरस  
 आनहोत्रो ) । अग्नि )  
 [ २६८ ] १, ९४, १३ शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमे ।  
 ५, ६५, ५ स्याम सप्रथस्तमे ।  
 [ २७१ ] १, ९४, १६, ( १८७८ ) ९५, ११, ( १८७८ )  
 ९६, ९; ( १७२६ ) ९८, ३, १००, १९, १०२,  
 ११; १०३, ८; १०५, १९, १०६, ७, १०७,  
 ३; १०८, १३; १०९ ८; ११०, ९, १११, ५;  
 ११२, २५; ११३, २०; ११४, ११, ११५, ६;  
 ९, ९७, ५८; तन्नो मित्रो वरुणो मामह-  
 न्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ।  
 [ १८७२ ] ( औषसोऽग्नि प्रकरणं ) । ऋ १।१.५।१-११  
 १, ९५, ५ जिह्मानामूर्ध्वः स्वयशा उपस्थे ।  
 २, ३५, ९ जिह्मानामूर्ध्वो विद्युतं वसानः ।  
 [ १८७५ ] १, ९५, ८ ( कुत्स आद्विरसः । अग्नि औषसोऽग्निर्वा )  
 त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत् गोभिरङ्घ्रिः । धीः ।

९.७१.८ ( ऋषभो वैश्वामित्र । पवमान सोम. )  
 त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य सुष्टुती गोअग्रया ।  
 ( ऋ१, ९६, १—९ द्रविणोदा अग्निः प्रकरण । )  
 [ १८७८ ] १.९५.११; १.९६९ ( कुत्स आङ्गिरस । अग्नि. )  
 एवा नो अग्ने समिधा वृधानो  
 रेवत्पाशक श्रवसे वि भाहि ।  
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदिति  
 सिन्धु पृथिवी उत द्यौः ।  
 [ १८७९-१८८६ ] १, ९६, १-७ देवा अग्नि  
 धारयन्द्रविणोदाम् ।  
 [ १८८४ ] १.९६.६ ( कुत्स आङ्गिरस । अग्नि  
 द्रविणोदा अग्निर्वा )  
 रायो बुध्नः संगमनो वसूनां ।  
 १०, १३९, ३ विश्वावसुर्देव गन्धर्वः । सविता )  
 [ १८८६ ] १.९६.८ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य ।  
 १, १५, ७ द्रविणोदा द्रविणसो ।  
 [ १८७८ ] १. ९६, ९ ( १८७८ ) १, ९५, ११  
 ( शुचिरग्नि प्रकरणं ऋ १, ९७, १-८ )  
 ( १८८७-१८९४ ) १, ९७, १, १-८,  
 अप नः शोमुचदधम् ।  
 [ १८८९ ] १, ९७, ३ प्रास्माकासश्च सूरयः ।  
 ( ८४० ) ५, १०, ६ अस्माकासश्च सूरयो ।  
 [ १८९२ ] १, ९७, ६, ( ४ ) १, १, ४  
 विश्वतः परिभूरसि ।  
 [ १७२५ ] १, ९८. २ ( कुत्स आङ्गिरस । अग्नि,  
 वैश्वानरोऽग्निर्वा )  
 पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां । स नो दिवा  
 स रिषः पातु नक्तम् ।  
 ( १७९५ ) ७, ५, २ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । वैश्वानरोऽग्नि )  
 पृष्टो दिवि धार्यग्निः पृथिव्यां ।  
 ( १८२८ ) १०, ८७, १ ( पायुर्भारद्वाज । रक्षोहामि )  
 स नो दिवा ।  
 ( जातवेदा अग्नि प्रकरण )  
 [ १८६२ ] १, ९९, १ स न पर्षदति दुर्गाणि विश्वा ।  
 ( ३६२ ) १, १८९, २, १०. ५६, ७  
 स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।  
 [ २७२ ] १, १२७, १ वसुं सुनुं सहसो जातवेदसं ।  
 ( १४१९ ) ८. ७१. ११ अग्निं सुनुं-  
 [ २७३ ] १, १२७, २ ( परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः ) हुवम  
 विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः । होतारं चर्षणीनाम् ।

( १३९१ ) ८ । ६०, ३ ( भर्गः प्रागाथः । अग्निः )  
 विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः  
 १२७६) ८, २३, ७ ( विश्वमना वैयश्वः । अग्निः )  
 अग्निं वः हुवे होतारं चर्षणीनाम् ।  
 ( १४०५ ) ८, ६०, १७ ( भर्गः प्रागाथः । अग्निः )  
 अग्निर्मग्निं वो हुवेम । होतारं चर्षणीनाम् ।  
 [ २७९ ] १, १२७; ८ ( परुच्छेपो दैवोदासि । अग्निः )  
 अतिथिं मानुषाणां ।  
 ( १२९४ ) ८ २३, २५ ( विश्वमना वैयश्व । अग्नि )  
 [ २८० ] १, १२७, ९ ( परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्नि )  
 शुष्मिन्तमो हि ते मवो घस्मिन्तम उत क्रतुः ।  
 १, १७५, ५ ( अगस्त्यो मैत्रावरुण । इन्द्र )  
 [ २८१ ] १, १२७, १० ( परुच्छेपो दैवोदासि । अग्नि )  
 विश्वास क्षासु जोगुवे ।  
 ५, ६४, २ ( अर्चनाना आत्रेय । मित्रावरुणो )  
 [ २८४ ] १, १२८, २ ( परुच्छेपो दैवोदासि । अग्नि )  
 ऋतस्य पथा नमसा हविष्मता ।  
 ( १९९३ ) १०, ७०, २ ( सुमित्रो वाऽयश्व ।  
 आप्रीसूक्तं=नराशंस )  
 ऋतस्य नमसा मियेधो ।  
 १०, ३१, २ ( कवष ऐलषः । विश्वे देवाः )  
 पथा नमसा विवासेत् ।  
 [ २८८ ] १, १२८, ६ ( परुच्छेपो दैवोदासि । अग्नि )  
 अरतिः . ।  
 ... देवत्रा हव्यमोहिषे ।  
 अग्निर्द्वारा व्यृण्वति ।  
 ( १२२४ ) ८, १९, १ ( सोभरिः काण्व । अग्नि )  
 अरतिं देवत्रा हव्यमोहिरै ।  
 ( १३०५ ) ८, ३९, ६ ( नाभाक काण्व । अग्नि )  
 अग्निर्द्वारा व्यृणुते ।  
 [ २९० ] १, १२८, ८ ( परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्नि. )  
 अग्निं होतारमीळते वसुधितिं प्रियं चेतिष्ठमरतिं  
 न्येरिरे  
 ( ७६१ ) ५, १, ७ ( बुधगविष्टिरावात्रेयौ । अग्निः )  
 अग्निं होतारमीळते नमोभिः ।  
 ( १०१९ ) ६, १४, २ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः )  
 अग्निं होतारमीळते  
 ( ११९२ ) ७, १६, १ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । प्रगाथः )  
 प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं ।

- [३०१] १, १४०, १० ( दीर्घतमा औच्यः । अग्निः )  
**अस्माकमग्ने मघवत्सु दीदिहि ।**  
 ( १७८५ ) ६, ८, ६ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । वैश्वानरोऽग्निः )  
 — धारयानामि ।
- [३१३] १, १४१, ९ अरान्न नेमिः परिभूरजायथा ।  
 १, ३२, १५ — परि ता बभूव ।
- [३१९] १, १४३, २ ( दीर्घतमा औच्यः । अग्निः )  
**स जायमानः परमे व्योमन्याविरगिनः ।**  
 ( १७८१ ) ६, ८, २ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । वैश्वानरोऽग्निः )  
 — व्योमनि व्रतान्यग्निः ।  
 ( १८०० ) ७, ५, ७ ( वसिष्ठो मन्त्रावरुणि । वैश्वानरोऽग्निः )  
 — व्योमन् ।  
**ऋन्नपत्याय जातवेदो ।**
- [३२५] १, १४३, ८ अदब्धेभिरदृषितेभिरिष्टेऽग्निमि-  
 षद्भिः परि पाहि नो जा ।  
 ( १७८६ ) ६, ८, ७ अदब्धेभिस्तव गोपाभिरिष्टे  
 ऽस्माकं पाहि त्रिषधस्थ सूरीन् ।
- [३२९] १, १४४, ४ समाने योना मिथुना समोकसा ।  
 १, १५९, ४ जामी सयोनी— ।
- [३३०] १, १४४, ५ ( दीर्घतमा औच्यः । अग्निः )  
**देवं मर्तास ऊतये हवामहे ।**  
 ( ५०० ) ३, ९, १ ( विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः )  
**देवं मर्तास ऊतये ।**  
 ( ९०१ ) ५, २२, ३ ( विश्वमामा आत्रेयः । अग्निः )  
 — ऊतये ।  
 ( १२१९ ) ८, ११, ६ ( वसु काण्व । अग्निः )  
 — ऊतये । अग्निं गीर्भिर्हवामहे ।
- [३३२] १, १४४, ७ ( दीर्घतमा औच्यः । अग्निः )  
**मन्द्र स्वधाव ऋतजात सुक्रतो ।**  
**रणवः संहृष्टौ पितृमँइव क्षयः ।**  
 ( १४४८ ) ८, ७४, ७ ( गोपवन आत्रेयः । अग्निः )  
**मन्द्र सुजात सुक्रतो ।**  
 १०, ६४, ११ ( गयः छातः । विश्वदेवाः )  
 — क्षयो ।
- [३४०] १, १४६, ३ समानं वत्समभि संचरन्ती ।  
 ३, ३३, ३; १०, १७, ११ समानं योनिमनु  
 संचरन्ती ( १०, १७, ११, संचरन्तम् ) ।
- [३४३] १, १४७, १ ( दीर्घतमा औच्यः । अग्निः )  
**ऋतस्य सामन्नणयन्त देवाः ।**

- ( ६९९ ) ४, ७, ७ ( वामदेवो गौतमः । अग्निः )  
 — धामन्नणयन्त — ।
- [३४५] १, १४७, ३ ( दीर्घतमा औच्यः । अग्निः )  
 ( ८२५ ) ४, ४, १३ ( वामदेवो गौतम । रक्षोहाऽग्निः )  
**ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं**  
**दुरितादरक्षन् ।** — ररक्ष तान्सुकृतो  
**विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः ।**
- [३४८] १, १४८, १ मथीद्यदी विष्टा मातरिश्वा ।  
 ( १८८ ) १, ७१, ४ — विभृतो— ।
- [३५१] १, १४८, ४ ( दीर्घतमा औच्यः । अग्निः )  
**आदस्य वातो अन वाति शोचिर् ।**  
 ( ११२५ ) ७, ३, २ ( वसिष्ठो मन्त्रावरुणि । अग्निः )
- [३५३] १, १४९, १ ( दीर्घतमा औच्यः । अग्निः )  
**महः स राय एषते पतिर्दन् ।**  
 १०, ९३, ६ ( तान्व पाथ्यः । विश्वदेवा )  
 — एषते ।
- [३६१] १, १८९, १ ( अगस्त्यो मन्त्रावरुण । अग्निः )  
**विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।**  
 ( ४७५ ) ३, ५, ६ ( विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः )  
 — देवो— ।
- [३६२] १, १८९, २ ( अगस्त्यो मन्त्रावरुणः । अग्निः )  
**स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।**  
 १०, ५६, ७ ( बृहदुक्थो वामदेव्यः । विश्वेदेवा )
- [२४३८-४६] १, १९, १-९ मरुद्भिरग्न आ गहि ।
- [२४४०] १, १९, ३ ( मेधातिथि काण्व । अग्निर्मरुतश्च )  
**विश्वे देवासो अद्रहः ।**  
 ९, १०२, ५ ( त्रित आप्त्य । पवमानः सोम )
- [२४४६] १, १९, ९ ( मेधातिथि काण्व । अग्निर्मरुतश्च )  
**अभि त्वा पूर्वपीतये ।**  
 ८, ३, ७ ( मेधातिथि काण्व । इन्द्रः )
- [२४६६] १, ९३, २ ( गोतमो राहृगण । अग्नीषोमं )  
**गवां पोषं स्वश्च्यम् ।**  
 ९, ६५, १७ ( भृगुवर्षाणिर्जमदाग्निर्भागीवो वा । पवमानः सोमः )
- [२४६७] १, ९३, ३ ( गोतमो राहृगण । अग्नीषोमं )  
**विश्वमायुर्व्यश्नुत ।**  
 ८, ३१, ८ ( मनुर्वैवस्वतः । दम्पती )  
**विश्वमायुर्व्यश्नुतः ।**  
 १०. ८५, ४२ ( सूर्यो सावित्री ऋषिका । सूर्यो सावित्री )  
**विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।**

[ २४६८ ] १, ९३, ४ अग्नीषोमा चेति तद्वीर्यम् ।  
३, १२, ९ तद्वां च्चेति प्र वीर्यम् ।  
[ २४७० ] १, ९३, ६ ( गोतामो गङ्गण । अग्नीषोमा )  
यज्ञाय चक्रथुरु लोकम् ।

७, ९९, ४ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्राविष्णु )  
[ २४७२ ] १, ९३, ८ ( गोतामो गङ्गण. । अग्नीषोमौ )  
विशं जनाय महि शर्मं यच्छतम् ।  
७, ८२, १ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि. । इन्द्रावरुणौ )

## ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[ ३७० ] २, १, २ ( गृत्समद जानकं भार्गव [ आङ्गि  
अनहोत्र ] । अग्नि )  
( १६६० ) १०, ९१, १० ( अग्नीषोमा वनहोत्र । अग्नि )  
तद्याग्ने होत्रं तव पात्रमुत्त्वियं तव नष्ट  
त्वमग्निदृतायतः ।  
तव प्रशास्त्र त्वमध्वरीयस्मि ब्रह्मा चासि  
गृहपतिश्च नो दमे ।

[ ३८१ ] २, १, १३ ( २५८ ) १ ९७३  
त्व देवा हविरदन्त्याहुतम् ।

[ ३८४ ] २, १, १६ ( गृत्समद जानकं भार्गव [ आङ्गि  
अनहोत्र ] । अग्नि ) =  
( ३८४ ) २, २, १३, ( गृत्समद जानक । अग्नि )  
ये स्तोत्रभ्यां गो अग्रामश्वेषशस-  
मग्ने गतिमुपसृजन्ति मूग्यः ।  
अस्माञ्च ताश्च प्र हि नेपि वम्य  
आ बृहद्वेदम विदथ सुवीराः ।

( ३८४ ) २, ६, १६, २, १३, ११, २१, १३, १३, १४, १२  
१५, १०, १६, ९, १७, ९, १८, ९ २०, ९ २३, १९ २४, १६  
२७, १७, २८, ११, २९, ७, ३३, १५, ३५, १५, ३९, ८, ४०, ६,  
४२, ३, ९, ८६, ४८, बृहद्वेदम विदथ सुवीराः ।

[ ३८६ ] २, २, २ ( गृत्समद जानक । अग्नि )  
अभि त्वा नक्तीरुपसो ववाशिरेऽग्ने वत्सं न  
स्वसरेषु धेनवः ।

८, ८८, १ ( नोया गोताम । इन्द्र )

अभि वत्स न स्वसरेषु धेनवः ।

[ ३८८ ] २, २, ४ पाथो न पायु जनसी उभे अनु ।  
९ ७०, ३ अदाभ्यासो जनुर्पा उभे अनु ।

[ ३९० ] २ २, ८ ( गृत्समद जानक । अग्नि )  
होत्राभिरग्निर्मनुषः स्वध्वरो ।  
( १५४४ ) १०, ११, ५ ( हविर्यान आत्ति । अग्नि )  
होत्राभिरग्ने मनुषः स्वध्वरः ।

[ ४१७ ] २, ४, २ ( सोमाहुतिर्भार्गव । अग्नि )  
इमं विधन्तो अपां सधस्थे  
द्वितादधुर्भृगवो विश्वाश्चो ।  
( १६०२ ) १०, ४६, २ ( वत्सप्रिर्भालन्दन. । अग्नि. )  
—सधस्थे ।  
इच्छन्तो धीरा भृगवांऽविन्दन् ।

[ ४२८ ] २, ५, ४ ( सोमाहुतिर्भार्गव । अग्नि. )  
वया इवानु रोहते ।  
८, १३, ६ ( नारद काण्व. । इन्द्र )  
—जुषन्त यत् ।

[ ४३२ ] २, ५, ८ ( सोमाहुतिर्भार्गव । अग्नि )  
अयमग्ने त्वे अपि ।  
( १३७० ) ८, ४४, २८ ( विष्णु आङ्गिरस । अग्नि )

[ ४३३ ] २, ६, १ ( ३२ ) १, २६, ५, ( १०४ ) १, ४५, ५  
इमा उ षु श्रुधी गिरः ।  
[ ४३७ ] २, ६, ५ ( सोमाहुतिर्भार्गव । अग्नि )

स नो वृष्टिं दिवस्परि ।  
९, ६५, २४ ( भृगुर्वावरुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पक्मान सोम )  
ते नो — ।

[ ४४३ ] २, ७, ३ अति गांहमहि द्विषः ।  
( ५३९ ) ३, २७, ३ अति द्वेषांसि तरेम ।  
[ ४४४ ] २, ७, ४ ( सोमाहुतिर्भार्गव । अग्नि )

शुचिः पावक वन्द्यो ।  
( ११८६ ) ७, १५, १० ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि. । अग्नि )  
—ईड्यः ।

[ ४०१ ] २, ८, ५ अग्निमुक्थानि वावृधुः ।  
८, ६, ३५, ८, ९५, ६ इन्द्रमुक्थानि वावृधुः ।  
[ ४०१ ] २, ८, ५ ( गृत्समद जानक । अग्नि )

विश्वा अधि श्रियो दधे ।  
( १५८३ ) १०, २१, ३ ( विमद ऐन्द्र प्राजापत्यो वा  
वमुकुन्ना वामुक । अग्नि )  
—श्रियो धिषे विवक्षसे ।

१०, १२७, १ (कुशिक सोमरात्रिर्वा भारद्वाजा ।  
रात्रि )  
—अथियो ऽधित ।  
[ ४०२ ] २, ८, ६ ( गुह्यमद शौनक । अग्नि )  
अरिष्यन्त सचेमह्यभि प्याम पृतन्यत ।  
८, २५, ११ ( विद्यमना वेद्य । विद्येदेवा )  
अरिष्यन्तो नि पायुभि सचेमहि ।

९, ३५, ३ ( प्रभवमगाक्षिरम । पवमान सोम )  
अभि प्याम पृतन्यतः ।  
( ९०० ) ५, २६, १, ( १०४३ ) ६, १८, २,  
( १४७८ ) ८, १००, १६.  
आ देवान्वाक्षि यक्षि च  
० ३६, ४, ( गुह्यमद शौनक । अभि शुचिश्च )  
आ वक्षि देवो इह विप्र यक्षि च ।

## ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[ ४५१ ] ३, १, ५, क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः ।  
३, ३१, १६ मध्वः पुनाना — ।  
[ ४५९ ] ३ १, १३, १, १६४, ५०  
अपा गर्भं दर्शतमोषधीनां ।  
[ ४६१ ] ३, १, १५ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः ।  
३, ५४, १ ( प्रजापतिर्व्यामित्र, प्रजापतिर्वानयो वा ।  
विद्येदेवा ) शृणोतु नो — ।  
[ ४६५ ] ३, १, १९ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर्महान  
महीभिरूतिभिः सरण्यन् ।  
३, ३१, १८ ( कुशिक पर्षारि विश्वामित्रो गाथिनो वा । उन्द्र )  
४, ३२, १ ( वामदेवो गातम । उन्द्र )  
आ त न उन्द्र वृत्रहन्ममाप्रमर्धमा गहि ।  
महान्महीभिरूतिभिः ।  
[ ४६६ ] ३, १, २० ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्निः )  
महान्ति वृष्णे सवना कृतेमा जन्मञ्जमन्  
निहितो जातवेदाः ।  
३, ३०, २ ( विश्वामित्रो गाथिन । उन्द्र )  
स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा ।  
( ४६६ ) ३, १, २१, ( ४६७ ) ३, १, २० जन्मञ्जमन्  
निहितो जातवेदाः ।  
[ ४६७ ] ३, १, २१ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
तस्य वयं सुमता यज्ञियस्यापि भट्टे सौमनसे  
स्याम ।  
३, ५९, ४ ( विश्वामित्रो गाथिन । मित्र )  
६, ४७, १३ ( गणो भारद्वाज । उन्द्र )  
१०, १३१, ७ ( मुर्कानि काक्षीवत । उन्द्र )  
१०, १४, ६ ( यमो वैवस्वत । अत्रि पितृवर्षभृगुर्ममा )

लिङ्गोक्तेवता पितरो वा )  
तेषां वयं सुमता यज्ञियानामपि -  
[ ४६८ ] ३ १ २० ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
अग्ने महि द्रविणमा यज+व ।  
( १६५० ) १० ८० ७ ( अग्नि गानाको वधानरो वा  
सतिर्वाजभरो वा । अग्नि )  
[ ४६९ ] ३, १, २३ = ३, ५, ११ = ३, ६, ११ = ३, ७, ११  
( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि ) ३, १५, ७ ( उर्काल वात्य ।  
अभि ) = ३, २२, ५ ( गार्गी काशिक । अग्नि ) = ३, २३, ५  
( देव त्रया देववातश्च भारतो । अग्नि )  
इळामग्ने पुरुदसं सनि गोः शश्वत्तमं हवमानाय  
साध ।  
स्यान्नः सनुस्ननयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ।  
[ ४७३ ] ३, ५, ४, मित्रो अग्निर्भवति यत्समिद्धो ।  
( ७७९ ) ५, ३, १ त्वं मित्रो भवसि यत्समिद्धः ।  
[ ४७३ ] ३ ५ ४, ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
मित्रो होता वरुणो जातवेदाः ।  
१०, ८३, २ ( मन्युस्तापरा । मन्यु )  
मन्युहोता—  
[ ४७४ ] ३, ५, ५, ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
पाति प्रियं रिपो अग्रं पद वेः ।  
( १७६५ ) ४, ५, ८, ( वामदेवो गातम । वानरोऽग्नि )  
—रूपो—  
[ ४७५ ] ३, ५, ६ विश्वानि देवो व्युनानि विद्वान् ।  
( ६६१ ) १, १८९, १ —देव— ।  
[ ४६९ ] ३, ५, ११ = ३, ६, ११ = ३, ७, ११  
३, ५० ७ = ३, २२, ५ = ३ २३, ५  
[ ४८१ ] ३, ६, २ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
आ रोदसी अपृणा जायमान



- ४ १८, ५ ( अदिति ऋषिका । वामदेव )  
 आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ।  
 ( १८११ ) ७, १३, २ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि ।  
 वेद्यानरोऽग्नि )  
 —जायमानः ।  
 ( १५९४ ) १० ४५, ६ ( वन्मप्रिर्माखन्दन । अग्नि )  
 —अपृणाज्जायमानः ।  
 [ ४८४ ] ३, ६, ५ ( विश्वामित्रो गार्थिन । अग्नि )  
 त्वं दूतो अभवो जायमानः ।  
 [ ४८५ ] ३, ६, ६, ( विश्वामित्रो गार्थिन । अग्नि )  
 स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः ।  
 ( ९९३ ) ६, १०, १ ( भरद्वाजो वार्हस्पत्य । अग्नि )  
 —करति जातवेदा ।  
 ( १२०६ ) ७, १७, ३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि )  
 ( १२०७ ) ७, १७, ४ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि )  
 —करति जातवेदा ।  
 [ ४८८ ] ३, ६, ९ ( १९५२ ) २, ३, ११ अनुष्वधमा  
 वह माद्यस्व ।  
 [ ४६९ ] ३, ६, ११ ३, १, २३ ३, ५, ११  
 ३ ६, ११, ३, ७, ११;  
 ३, १५, ७ ३, २२, ५ ३, २३, ५  
 [ ४९७ ] ३, ७ ८, ( १९५९ ) ३, ४, ७  
 [ ५०० ] ३, ९, १ : ( ९०१ ) ५ २२, ३, ८, ११, ६  
 देवं मर्तास ऊतये ।  
 ( ३३० ) १, १४४, ५ — ऊतये हवामह ।  
 [ ५०० ] ३, ९, १ ( विश्वामित्रो गार्थिन । अग्नि )  
 अपां नपातं सुभग सुदीदिति ।  
 ( १२२७ ) ८, १९, ४ ( सोमगि काण्व । अग्नि )  
 ऊर्जा —।  
 [ ५०० ] ३, ९, १; १, ४०, ४ सुप्रतूर्तिमनेहसम् ।  
 [ ५०५ ] ३, ९, ६ ( विश्वामित्रो गार्थिन । अग्नि )  
 तं त्वा मर्ता अगृभ्णत देवेभ्यो हव्यवाहन ।  
 ( १८५७ ) १०, ११८, ५ ( उरुक्षय आमहीयव ।  
 रक्षोहाऽग्नि )  
 देवेभ्यो हव्यवाहन । तं त्वा हवन्त मर्त्याः ।  
 १०, ११९, ६३ ( लव ऐन्द्र । आत्मा [ इन्द्र ] )  
 देवेभ्यो हव्यवाहनः ।  
 ( १६९८ ) १०, १५०, १ ( मृळीको वासिष्ठ । अग्निः )  
 देवेभ्यो हव्यवाहन ।

- [ ५०७ ] ३, ९, ८ ( विश्वामित्रो गार्थिन । अग्नि )  
 शीरं पावकशोचिषम् ।  
 ( १३४० ) ८, ४३, ३१ ( विरूप आङ्गिरस । अग्नि )  
 ( १४७३ ) ८, १०२, ११ ( प्रयोगो भार्गव , पावकोऽ  
 मिर्बाहेस्पत्यो वा, गृहपति - यविष्ठो सहस  
 पुत्रोऽन्यतरो वा । अग्नि )  
 ( १५८१ ) १०, २१, १ ( विमद ऐन्द्र प्राजापत्यो वा,  
 वसुकृद्वा वामुक । अग्नि )  
 —पावकशोचिषं विवक्षसे ।  
 [ ५०८ ] ३, ९ ९ ( विश्वामित्रो गार्थिन । अग्नि )  
 १०, ५२, ६ ( अग्नि सौचाक । विश्वेदेवा )  
 त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्नि  
 त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।  
 औक्षन्धृतरस्तृन्वीहरस्मा  
 आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥  
 [ ५०९ ] ३, १०, १ ( विश्वामित्रो गार्थिन । अग्नि )  
 त्वामग्ने मनीषिणः सम्राजं चर्षणीनाम् ।  
 ( १३६१ ) ८, ४४, १९ ( विरूप आङ्गिरस । अग्नि )  
 —मनीषिणः ।  
 १०, १३४, १ ( मान्धाता यौवनाश्व । इन्द्र )  
 महान्त त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम् ।  
 [ ५१० ] ३, १०, २ ( विश्वामित्रो गार्थिन । अग्नि )  
 त्वां यज्ञेष्वृत्विजमग्ने ।  
 गोपा ऋतस्य दीदिहि स्वे दमे ।  
 ( १५८७ ) १०, २१, ७ ( विमद ऐन्द्र प्राजापत्यो वा,  
 वसुकृद्वा वामुक । अग्नि )  
 त्वां यज्ञेष्वृत्विजं चारुमग्ने नि वेदिरे ।  
 ( १८५९ ) १०, ११८, ७ ( उरुक्षय आमहीयव ।  
 रक्षाहोऽग्नि )  
 अदाभ्येन शोचिषाग्ने रक्षस्त्वं दह । गोपा ऋतस्य  
 दीदिहि ।  
 [ ५१० ] ३, १०, २ अग्ने होतारमीळते । ( १०१९ )  
 ६, १४, २, अग्निं होतारमीळते ( २९० ) १, १२८, ८  
 [ ५११ ] ३, १०, ३ ( विश्वामित्रो गार्थिन । अग्नि )  
 ददाशति समिधा जातवेदसे ।  
 ( ११७४ ) ७, १४, १ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि )  
 समिधा जातवेदसे ... ।  
 नमस्विनो वयं दाशमाग्नये ।  
 [ ५१२ ] ३, १०, ४ अग्निर्देवभिरागमत् ।  
 ( ५ ) १, १, ५ देवो— ।

[५१६] ३, १०, ८ स नः पावक दीदिहि  
(१९) १, १२, १० —दीदिवः ।

[५१७] ३, १०, ९ तं त्वा विप्रा विपन्यवो जागृवांसः  
सामिन्धंत । १, २२, २१ ( विष्णुदेवता )  
तद्विप्रासो विपन्यवो — ।

[५१६] ३, १०, ८ द्युमदस्मे सुवीर्यम् ।  
( ५८० ) ३, १३, ७ द्युमदग्ने— ।

[५१७] ३, १०, ९ ( विश्वामित्रो गायिन । अग्नि )  
हव्यवाहममर्त्यं सहोवृधम् ।  
( ७०४ ) ४, ८, १ ( वामदेवो गांतम । अग्नि )

हव्यवाहममर्त्यम् ।  
( १४७९ ) ८, १०२, १७ ( प्रयोगो भागीव पावकोऽग्निर्वर्हि-  
म्पत्यो वा, गृहपति-यविष्टो महम पुत्राऽन्यतरो वा । अग्नि )  
हव्यवाहममर्त्यम् ।

[५२०] ३ ११ ३ केतुर्यज्ञस्य पूर्व्यः ।  
१, २, १० आत्मा— ।

[५२१] ३, ११, ४ ( विश्वामित्रो गायिन । अग्नि )  
वह्नि देवा अकृण्वत ।  
( १२०३ ) ७, १६, १२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । प्रगाथ )

[ ५२३ ] ३, ११, ६ ( विश्वामित्रो गायिन । अग्नि )  
अग्निस्तुविश्रवस्तम ।  
( ९१५ ) ५ २५ ५ ( वसुध्व आत्रेया । अग्नि )  
—स्तमं ।

[५२५] ३, ११, ८ ( विश्वामित्रो गायिन । अग्नि )  
मन्मभिः । विप्रासो जातवेदसः ।  
( १२१८ ) ८ ११ ५ ( वन्म ऋष्व । अग्नि )  
मनामहे— ।

[ ५७५ ] ३, १३, २ १, १३४, २ दक्षं सवन्त ऊतयः ।  
[ ५८० ] ३, १३, ७ द्युमदग्ने सुवीर्यं ।  
( ५१६ ) ३, १०, ८ द्युमदस्मे— ।

[ ५८५ ] ३, १४, ५ ( ऋषभो वैश्वामित्र । अग्नि )  
उत्तानहस्ता नमसोपसद्य ।  
( १०८७ ) ६, १६, ४६ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि )

उत्तानहस्तो नमसा विवासेत् ।  
( १६३८ ) १०, ७९, २ ( अग्नि सौचीको वैश्वानरो वा  
सतिर्वाजंभरो वा । अग्नि )  
उत्तानहस्ता नमसाधि विश्वु ।

[ ५९२ ] ३, १५, ५ अच्छिद्रा शर्म जरितः पुरुणि ।

२, २५, ५ —दधिरे— ।

( ४६९ ) ३, १५, ७=३, १, २३=३, ५, ११=  
३, ६, ११=३, ७, ११=३, २२, ५=३, २३, ५

[ ५९५ ] ३, १६, २ ( उक्कील कात्य । अग्निः )

इमं नरो मरुतः सश्चता वृधं ।  
७, १८, २५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मुद्राम पेजवन )  
—मरुतः सश्चतानु ।

[ ५९९ ] ३, १६, ६ तुविद्युन्न यशस्वता ।

१, ९, ६ —यशस्वतः ।

[ ६०१ ] ३, १७, २ यथा दिवां जातवेदश्चिकित्वान् ।  
( ६७३ ) ४, ३, ८ साधा दिवो— ।

[ ६०३ ] ३, १७, ४, २, ४०, १ अकृण्वन्नमृतस्य देवा  
नाभिम् ।

[ ६०४ ] ३, १७, ५ ( कतो वैश्वामित्र । अग्नि )

यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्द्विता च सत्ता  
स्वधया च शंभुः ।

( ७८२ ) ५, ३, ५ ( वसुध्व आत्रेया । अग्निः )

न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्न काव्यैः परो  
अस्ति स्वधावः ।

[ ६१० ] ३, १९, १ ( गार्थी कौशिकः । अग्नि )

स नो यक्षदेवताता यजीयान् ।

( १६१६ ) १०, ५३, १ ( देवा आग्नि सोचीकः । अग्नि )

[ ६११ ] ३, १९, २ ( गार्थी कौशिकः । अग्नि )

सुद्युम्नां रातिनीं घृताचीम् ।

प्रदक्षिणिदेवतातिमुराणः ।

( ६८४ ) ४, ६, ३ ( वामदेवो गांतम । अग्नि )

यता सुजूर्णां रातिनीं घृताचीं ।

[ ६१८ ] ३, २१, १ ( ६०१ ) ३, २१, ४ स्तोक्रानाम्

( ३, २१, ४ स्तोक्रासो )

अग्ने मेदसो घृतस्य ।

[ ६१९ ] ३, २१, २ ( गार्थी कौशिकः । अग्नि )

श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम् ।

१०, २४, २ ( विमद ऐन्द्र प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा  
वासुकः । इन्द्र )

वार्यं विवक्षसे ।

[ ४६९ ] ३, २२, ५ ( गार्थी कौशिकः । अग्नि )

३, १, २३ ( विश्वामित्रो गायिन । अग्नि )

३, ५, ११=३, ६, ११=३, ७, ११=

३, १५, ७ ( उत्काल काल्य । अग्नि )  
 ३, २३, ५ ( देवप्रवा देववातन भार्गव । अग्नि । )  
 इळामग्ने पुरुदंसं सनि गा साध ।  
 स्यान्नः सूनस्तनयो त्वस्म ॥  
 [५२७] ३, २४, १ ३, ८, ३ वचो धा यज्ञवाहसे ।  
 [५२९] ३, २४, ३ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
 अग्ने च्यमन जामवे सहसः सूनवाहुत ।  
 एद वर्हि सदो मम ।  
 ( १२४८ ) ८, १९, २५ ( सोमरि काण्व । अग्नि )  
 यदग्नं ।  
 सहसः सूनवाहुत ।  
 ( १३७५ ) ८, ७५, ३ ( विष्णु आदिरग । अग्नि )  
 सहसः सूनवाहुत ।  
 ८, १७, १ ( ररिम्बिठि काण्व । इन्द्र )  
 एद वर्हि सदो मम ।  
 [५३८] ३, २७, २ गिरा यज्ञस्य साधनम् ।  
 ( ९६ ) १, ४४, ११ नि त्वा — ।  
 ८, ६, ३ स्तोमर्यज्ञस्य — ।  
 ( १२७८ ) ८, २३, ९ यज्ञस्य साधनं गिरा ।  
 [५३९] ३, २७, ३ अनि द्वेषांसि तरेम ।  
 ( ४४३ ) २, ७, ३ अनि गाहेमहि द्विप ।

[५४०] ३, २७, ४ अग्निः पावक ईड्यः ।  
 ( ११८६ ) ७, १५ १०, शुचि — ।  
 [५४१] ३, २७, ५ पृथुपाजा अमर्त्यो ।  
 ( १७३७ ) ३, २, ११ वैश्वानरः— ।  
 [५४३] ३, २७, ७ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
 होता देवो अमर्त्यः ।  
 ( १२४७ ) ८, १९, २४ ( सोमरि काण्व । अग्नि )  
 [५४९] ३, २७, १३ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
 तिरस्तमांसि दर्शतः ।  
 ( १४४६ ) ८, ७४, ५ ( गोपवन अत्रिय । अग्नि )  
 दर्शतम् ।  
 [५५२] ३, २८, १ ( ५५७ ) ३, २८, ६  
 पुगोलाशं जातवेदः ।  
 [५६१] ३, २९, ४ नाभा पृथिव्या अधि ।  
 ( १९४८ ) २, ३, ७ —अधि सानुषु त्रिषु ।  
 [५६१] ३, २९, ४. ( १०५ ) १, ४५, ६ अग्ने हव्याय  
 वोल्हवे ।  
 ( ८६२ ) ५, १४, ३ अग्निं हव्याय— ।  
 [५७३] ३, २९, १६ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
 प्रजानन्विद्वौ उप याहि सोमम् ।  
 ३, ३५, ४ ( विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्र )

### ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[ २४५० ] ४, १, ३, ( वामदेवो गौतम । अग्नि । )  
 अग्नी वरुणौ )  
 अग्ने मृळीक वरुणे सचा विदो मरुत्सु विश्वभानुषु ।  
 ८, २७, ३ ( मनुक्वेववत । विश्वेदेवा )  
 प्र मृ न एत्ववरोरिश्ना देवेषु पर्य्य ।  
 आदित्येषु प्र वरुणे व्रतप्रते मरुत्सु विश्वभानुषु ।  
 [ ६३७ ] ४, १, ११ महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।  
 ४, १७, १४ त्वचो बुध्ने—  
 [ ६३९ ] ४, १, १३ अश्मव्रजा सुदुघा वत्र अन्तः ।  
 ५, ३१, ३ प्राचोदयत्सुदुघा— ।  
 [ ६४१ ] ४, १, १५ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 हक्क नरो वचसा देव्येन व्रजं गोमन्नमुशिजो वि वम् ।  
 ४, १६, ६ ( वामदेवो गौतम । इन्द्र )  
 वचोभिर्व्रजं — ।

( १५९९ ) १०; ४५, ११ ( वत्सप्रिर्भालन्दन । अग्निः )  
 व्रजं — ।  
 [ ६४३ ] ४, १, १७ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ।  
 ६, ५१, २ ( ऋजिर्वा भारद्वाज । विश्वेदेवाः )  
 ७, ६०, २ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मित्रावरुणौ )  
 [ ६४६ ] ४, १, २० ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 सुमृळीको भवतु जातवेदाः ।  
 ६, ४७, १२ ( गर्गो भारद्वाज । इन्द्र )  
 १०, १३१, ६ ( मुकृति काक्षीवत । इन्द्र )  
 विश्ववेदाः ।  
 [ ६४७ ] ४, २, १ ( २३४ ) १, ७७, १  
 यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा ।  
 [ ६४८ ] ४, २, २ इह त्वं सूनो सहसो नो अद्य ।

- ( ११७ ) १, ५८, ८ अच्छिद्रा सूनो ।  
 ६, ५०, ९ उत त्वं सूनो— ।  
 [ ६६४ ] ४, २, १८ आ यूथेव ध्रुमति पश्वो अख्य  
 हेवानां यजनिमान्त्युग्र ।  
 ७, ६०, ३ सं यो यूथेव जनिमानि चष्ट ।  
 ८, २५, ७ अधि या बृहतो दिवो रे भि यूथेव पश्यत ।  
 [ ६६६ ] ४, २, २०, ( २१४ ) १, ७३, १० एता ते अग्न  
 उचथानि वेधो ।  
 [ ६६६ ] ४, २, २० उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो न ।  
 ८, ४८, ६ प्र चक्षय कृणुहि— ।  
 [ ६६७ ] ४, ३, २ १, १२४, ७, १०, ७१, ४, ( १६६३ )  
 १०, ९१, १३ जायेव पत्य उशती सुवासा ।  
 [ ६७३ ] ४, ३, ८ साधा दिवो जातवेदश्चिकित्वा न ।  
 ( ६०१ ) ३, १७, २ यथा दिवो— ।  
 [ ६७५ ] ४, ३, १० ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 वृषा शुक्रं दुदुहे पृश्निरूध ।  
 ६, ६६ १ ( भारद्वाजो बार्हस्पत्य । मत्त )  
 सकृच्छुक्रं दुदुहे पृश्निरूध ।  
 [ ६७६ ] ४, ३, ११ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 आवि स्वरभवज्जाने अग्नौ ।  
 ( २३९८ ) १०, ८८, २ सर्वन्वानाग्निमा वामदेव्यो वा ।  
 मर्थ-वैश्वानरो )  
 [ ६८३ ] ४, ६, २ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेन् ।  
 ( ७४१ ) ४ १३, २ ( वामदेवो गौतम । अग्नि  
 [ लिङ्गोक्तदेवता इति एकं ] )  
 —सविता देवो अश्रेद् ।  
 ( ७४६ ) ४, १४, २ ( वामदेवो गौतम । अग्नि  
 [ लिङ्गोक्तदेवता इति एकं ] )  
 ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेज् ।  
 ७, ७२, ४, ( वसिष्ठो मैत्रावरुण । अध्विनो )  
 —सविता देवो अश्रेद् ।  
 [ ६८४ ] ४, ६ ३ यता सुजूर्णी रातिनी घृताची ।  
 ६, ६३, ४ प्र रातिरेति जूर्णिनी घृताची ।  
 [ ६८४ ] ४, ६, ३; ( ६११ ) ३, १९, २  
 प्रदक्षिणिहेवतातिमुराणः ।  
 [ ६८५ ] ४, ६, ४ ( वामदेवो गौतमः । अग्नि )  
 स्तीर्णो बर्हिषि समिधाने अग्ना ।  
 ६, ५२, १७ ( ऋजिश्वा भरद्वाज. । विश्वेदेवा )  
 —अग्नौ ।

- [ ६८६ ] ४, ६, ५ ( वामदेवो गौतम । अग्नि  
 अग्निर्मन्द्रो मधुवचा ऋतावा  
 ( ११४५ ) ७, ७, ४ ( वसिष्ठो मैत्रावरुण । अग्नि  
 [ ६९२ ] ४, ६, ११ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 हातारमग्नि मनुषो नि षेदुर्नमस्यन्त  
 उशिजः शंसमायोः  
 ( ७८१ ) ५, ३, ४ ( वसु सुत आत्रेय । अग्नि  
 —नि पदुर्देशस्यन्त उशिज —  
 [ ६९३ ] ४, ७ १ ( वामदेवो गौतम । अग्निः )  
 हाता यजिष्ठो अध्वरेष्वाड्यः  
 ( १३९१ ) ८, ६०, ३ ( मर्ग प्रगाय. । अग्निः  
 मन्द्रो —ड्यो  
 [ ६९६ ] ४, ७, ४ १, ८६, ५, ( ९०३ ) ५, २३ १  
 विश्वा यश्चर्षणीरभि  
 [ ७०० ] ४, ७ ८ विदुष्टरो दिव आरोधनानि ।  
 ( ७०७ ) ४, ८, ४ विद्धो आरोधनं दिव  
 [ ७०१ ] ४ ७ ९ कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाः ।  
 ( ११३ ) १, ५८ ४— रुशर्द्धे अजर ।  
 [ ७०२ ] ४, ७, १० यदस्य वातो अनुवाति शोचि ।  
 ( ३५१ ) १, १४८, ४; ( ११२५ ) ७, ३, १  
 आदस्य वातो अनु वाति शोचिः  
 ( १६९३ ) १०, १४२, ४ यदा ते वातो अनुवार्ति  
 शोचिः  
 [ ७०४ ] ४, ८, १, ( १४७९ ) ८, १०२, १७ हव्यवाह  
 ममर्त्यम् । ३, १०, ९ —मर्त्यं सहावृधम्  
 [ ७०५ ] ४, ८, २; ( २ ) १, १, २ स देवा एह वक्षति  
 [ ७०७ ] ४, ८, ४ विद्धो आरोधनं दिवः ।  
 ( ७०० ) ४ ७, ८ विदुष्टरो दिव आरोधनानि  
 [ ७०९ ] ४, ८, ६, ( वामदेवो गौतमः । अग्निः  
 ससवांसो वि शृण्विरे  
 ८, ५४, ६ ( मान्तिश्वा काण्व । उन्द्रः  
 [ ७१२ ] ४, ९, १ अग्ने मृळ महौ असि ।  
 ( ७९ ) १, ३६, १२ स नो मृळ  
 [ ७१६ ] ४, ९, ५ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 वेपि ह्यध्वरीयताम्  
 हव्या...  
 ( ९६१ ) ६, २, १० ( भारद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि  
 वेपि—  
 .. . हव्यम्—  
 [ ७२४ ] ४, १०, ५ धिये रुक्मो न रोचत उपाके ।

(११२९) ७. ३, ६ वि यद्रक्मो न रोचस उपाके ।  
 [७३२] ४, १६, ५ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 त्वामग्ने ... ।  
 दमूनसं गृहपतिममूरम् ।  
 (८२१) ५, ८, १ ( इष आत्रेय । अग्नि )  
 त्वामग्ने— ।  
 .. वरण्यम्— ।  
 [७३६] ४, १२, ३ अग्निर्वाजस्य परमस्य रायः ।  
 ७, ६०, ११ वाजस्य साता ।  
 [७३६] ४, १२, ३ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 दधाति रत्नं विधते यविष्टो ।  
 (१२०३) ७, १६, १२ ( वर्मिष्टो मंत्रावमणि । अग्नि )  
 —विधते सुवीर्यम् ।  
 [७३९] ४, १२, ६ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 १०, १२६, ८ ( कुल्मलवर्हिष ङैर्लृषि अहोमुखा वामदेव्य ।  
 विधेदेवा )  
 यथा ह त्यद्वसवो गौर्यं चित्पदि पिताममुञ्चता  
 यजत्राः ।  
 एवो ष्व १ स्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतर  
 न आयुः ।  
 [७४०] ४, १३, १ यातमश्विना सुकृतो दुरोणम् ।  
 १, ११७, २ ( अश्विनो )  
 [७४१] ४, १३, २, ७, ७२ ४ ऊर्ध्वं भानुं सविता  
 देवो अश्रेत् । ( ६८३ ) ४, ६, २  
 —सवितेवाश्रेत् । ( ७४६ ) ४, १४ २ ऊर्ध्वं केतुं— ।  
 [७४४] ४, १३, ५=४, १४, ५ ( वामदेवो गौतम । अग्नि  
 ( लिङ्गोक्तदेवता इति एके )  
 अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्कुत्तानोऽव  
 पथते न ।  
 कथा याति स्वधया को ददर्श दिवः स्फम्भः  
 समृतः पाति नाकम् ।  
 [७४६] ४, १४, २ ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेत् ।  
 ( ७४१ ) ४, १३, २

[७४६] ४, १४, २ जोतिर्विध्वस्मै भुवनाय कृण्वन् ।  
 १, ९२, ४ — कृण्वती ।  
 [७४६] ४, १४, २, १, ११५, १ आप्रा द्यावापृथिवी  
 अन्तरिक्षं ।  
 [७४७] ४, १४, ३; उषा ईयते सुयुजा रथेन ।  
 १, ११३, १४ ओषा याति— ।  
 [७४८] ४, १४ ४ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 रथा अश्वास उषसो व्युष्टौ ।  
 ४, ४५, २ ( वामदेवो गौतम । अश्विनो )  
 —उषसो व्युष्टिषु ।  
 [७४८] ४, १४, ४ अस्मिन्ध्ये वृषणा मादयेथाम् ।  
 १, १८४, २ अस्मे उ षु वृषणा मादयेथाम् ।  
 [७४४] ४, १४, ५; ४, १३, ५  
 [७५१] ४, १५, ३ ( वामदेवो गौतम । अग्निः )  
 दधद्रत्नानि दाशुषे ।  
 ९, ३, ६ ( अनुःशेष आर्जागतिं स देवरात कृत्रिमो  
 वैश्यामित्रः । पवमान सोम )  
 [७५४] ४, १५, ६ ( वामदेवो गौतम । अग्नि )  
 तमर्धन्तं न सानसिम् ।  
 ( १४७४ ) ८, १०२, १२ ( प्रयोगो भार्गव , पावकोऽग्निर्वाहस्पत्यो  
 वा गृहपति—यविष्टौ सहग. पुत्रोऽन्यतरं वा । अग्निः )  
 ४, १५, ७, ९ ( म ७, देवता सोमक माहदेव्य ,  
 कुमार साहदेव्यः । म ९, अश्विनो )  
 ४, १५, ८ कुमारात्साहदेव्यात् ।  
 [१८२७] ४, ५८, ३ ( वामदेवो गौतम । अग्नि सूर्यो वा  
 आपो वा गात्रो वा घृतस्तुतिर्वा )  
 महो देवो मर्त्या आ विवेश  
 ८, ४८, १२ अमर्त्यो— ।  
 [१९०४] ४, ५८, १० अभ्यर्षत सुष्टृतिं गव्यमाजिम् ।  
 ९, ६२, ३ ( पवमान सोम. ) ।

### ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[७५९] ५, १, ५ ( बुधगविष्टरावात्रेयो । अग्नि )  
 दमेदमे सप्त रत्ना दधानो ।  
 ६, ७४, १ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सोमारुद्रौ )  
 —दधाना ।

[७५९, ७६०] ५, १, ५-६ अग्निर्होता नि षसादा  
 ( ६ न्यसीदत् ) यजीयान् ।  
 ( ९४० ) ६, १, २ अधा होता न्यसीदो यजीयान् ।  
 ( ९४४ ) ६, १, ६ होता मन्द्रो नि षसादा यजीयान् ।

- १०, ५२, २ अहं होता न्यसीदं यजीयान् ।  
 [७६१] ५, १, ७ अग्निं होतारमीळते नमोभिः ।  
 (२९०) १, १२८, ८ अग्निं होतारमीळते  
 वसुधितिं । (१०१९) ६, १४, २ अग्निं  
 होतारमीळते ।  
 [७६२] ५, १, ८ सहस्रशृङ्गो वृषभस्तदोजाः ।  
 ७, ५५, ७ — वृषभः ।  
 [७६५] ५, १, ११ एह देवान्हविरद्याय वक्षि ।  
 (७९३) ५, ४, ४ आ च देवान्हवि .. ।  
 [७७४] ५, २, ८ ( कुमार आत्रेय वृशो वा जान उर्भो वा,  
 २, ९ वृशो जान । अग्नि )  
 प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।  
 इन्द्रो विद्वो अनु हि त्वा चक्ष  
 तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम् ।  
 १०, ३२, ६ ( कवष णेलष. । इन्द्र. )  
 [७७७] ५, २, ११; ५, २९, १५ रथं न धीर स्वपा  
 अतक्षम् ।  
 १, १३०, ६ — स्वपा अतक्षिषुः ।  
 [७७९] ५, ३, १ त्वं मित्त्रो भवसि यत्समिद्ध ।  
 ( ४७३ ) ३, ५, ४ मित्रो अग्निर्भवति यत्समिद्धो ।  
 [७८१] ५, ३, ४; ( ६९२ ) ४, ६, ११ होतारमग्निं  
 मनुषो नि षेदुर्देशस्यन्त ( ४, ६, ११ नमस्यन्त )  
 उशिजः शंसमायोः ।  
 [७८५] ५, ३, ८ ( नमुश्रुत आत्रेयः । अग्निः )  
 त्वामस्या व्युषि देव पूर्वं दूतं कृण्वाना अयजन्त  
 हव्यै ।  
 ( १६८१ ) १०, १२२, ७ ( चित्रमहा वामिष्ठ । अग्निः )  
 त्वामिदस्या उपसो व्युषिषु दूतं कृण्वाना  
 अजयन्त मानुषा ।  
 [७९१] ५, ४, २ हव्यवाळग्निरजर पिता न ।  
 ( १७२८ ) ३, २, २ हव्यवाळग्निरजरश्चनोहितः ।  
 [७९१] ५, ४, २, ३, ५४, २२, ६, १९, ३  
 अस्मद्यक्सं मिमीहि श्रवांसि ।  
 [७९२] ५, ४, ३ विशां कविं विशपतिं मानुषीणां ।  
 ( १७३६ ) ३, २, १०— मानुषीरिषः ।  
 ( ९४६ ) ६, १, ८ — शश्वतीनां ।  
 [७९३] ५, ४, ४ यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य ।  
 १, १२३, १२ यतमाना— ।  
 [७९३] ५, ४, ४ आ च देवान्हविरद्याय वक्षि ।  
 ( ७६५ ) ५, १, ११ एह देवान्ह— ।

- [७९६] ५, ४, ७ ( वसुश्रुत आत्रेय । अग्नि )  
 वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम वयं हव्यैः पावक  
 भद्रशोचे ।  
 ( ११७५ ) ७, १४, २ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि )  
 वयं ते अग्ने समिधा विधेम ।  
 वयं देव हविषा भद्रशोचे ।  
 [७९७] ५, ४, ८ ( वसुश्रुत आत्रेय । अग्नि )  
 अस्माकमग्ने अध्वर जुपस्व ।  
 ६, ५२, १२ ( ऋजिश्वा भारद्वाज । विध्वेदेवा )  
 इमं नो अग्ने अध्वरं ।  
 ७, ४२, ५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । विध्वेदेवा )  
 इमं नो अग्ने — ।  
 [७९८] ५, ४, ९ अस्माकं बोध्यविता तनूनाम् । ;  
 ७, ३२, ११ ( इन्द्रः )  
 [८०१-१०] ५, ६, १ - १०; ९, २०, ४  
 इषं स्तोतृभ्य आ भर ।  
 ८, ७७, ८ तेन स्तोतृभ्य आ भर ।  
 ८, ९३, १९ कया स्तोतृभ्य— ।  
 [८०५] ५, ६, ५ ( वसुश्रुत आत्रेय । अग्नि )  
 आ ते अग्न ऋचा हविः ।  
 ( १०८८ ) ६, १६, ४७ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः )  
 — हविर ।  
 [८०६] ५, ६, ६, १, ८१, ९ विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।  
 १०, १३३, २ विश्वं पुष्यासि— ।  
 [८१०] ५, ६१० ( वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः )  
 दधदस्मे सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्व्यम् ।  
 ८, ६, २४ ( वत्सः काण्वः । इन्द्रः )  
 उत त्यदाश्वश्व्यम् ।  
 ८, ३१, १८ ( मनुवैवस्वतः । दम्पत्याशिषः )  
 असदत्र सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्व्यम् ।  
 [८११] ५, ७, १ ऊर्जो नप्त्रे सहस्वते ।  
 ( १४६९ ) ८, १०२, ७ अच्छा नप्त्रे— ।  
 [८२१] ५, ८, १ दमूनसं गृहपतिं वरेण्यम् ।  
 ( ७३२ ) ४, ११, ५— गृहपतिममूरम् ।  
 [८३०] ५, ९, ३ ( गय आत्रेयः । अग्निः )  
 यं शिशुं यथा जनिष्टारणी ।  
 विशामग्निं स्वध्वरम् ।  
 ( १०८१ ) ६, १६, ४० ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः )  
 शिशु जातं न विभ्रति ।  
 विशामग्निं स्वध्वरं ।

[ ८३१ ] ५, ९, ४ ( गय आत्रेय । अग्निः )  
 वनाग्ने पशुर्न यवसे ।  
 ( ९६० ) ६, २, ९ ( भग्नराजो बार्हस्पत्य । अग्निः )  
 अग्ने पशुर्न यवसे ।  
 वना वृश्चन्ति शिक्रम ।

[ ८३४ ] ५, ९, ७ ( गय आत्रेय । अग्निः )  
 तं नो अग्ने अभी नगे रयिं सहस्व आ भर ।  
 ( ९०४ ) ५, २३, २ ( द्युम्नो विश्वचर्षणिरात्रेय । अग्निः )  
 तमग्ने घृतनाषह रयिं सहस्व आ भर ।

[ ८३४ ] ५, ९, ७, ( ८४१ ) ५, १०, ७, ( ८७५ ) ५, १६, ५,  
 ( ८८० ) ५, १७, ५, उतैधि पृत्सु नो वृधे ।  
 ६, ४६, ३ भवा समत्सु ... ।

[ ८३५ ] ५, १०, १ प्र नो गया परीणसा । १, १२९, ९

[ ८३६ ] ५, १०, २ क्रत्वा दक्षस्य मंहना ।  
 ( ८८२ ) ५, १८, २ स्वस्य दक्षस्य मंहना ।

[ ८४० ] ५, १०, ६ अस्माकासश्च सूरयः ।  
 ( १८८९ ) १, ९७, ३ प्रास्माकासश्च सूरयः ।

[ ८४० ] ५, १०, ६, ४, ३७, ७ विश्वा आशास्तरौषणि ।

[ ८४१ ] ५, १०, ७ स्तुत स्तवान आ भर ।  
 ( २० ) १, १२, ११ स नः स्तवान आ भर ।

[ ८४३ ] ५, ११, २ ( सुतंभर आत्रेयः । अग्निः )  
 यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं ।  
 ( १६७८ ) १०, १२२, ४ ( चित्रमहा वासिष्ठः । अग्निः )  
 —पुरोहित ।  
 शृण्वन्तमग्निं घृतपृष्ठमुक्षणं ।

[ ८४३ ] ५, ११, २ इन्द्रेण देवैः सरथं स वार्हीषि ।  
 ( १९६३ ) ३, ४, ११— सरथं तुरेभिः ।  
 १०, १५, १०— सरथं दधानाः ।

[ ८४६ ] ५, ११, ५ आ पृणन्ति शवसा वर्धयन्ति च ।  
 १०, १२०, ९ हिन्वन्ति च शवसा ।

[ ८४९ ] ५, १२, २ ( ८५३ ) ५, १२, ६ ऋतं स पात्यरुषस्य ।  
 ( ८४९ ) ५, १२, २ सपात्यरुषस्य वृष्ण ।

[ ८५५ ] ५, १३, २ सिधमद्य दिविस्पृशः ।  
 ( १९२५ ) १, १४२, ८, २, ४१, २० दिविस्पृशम् ।

[ ८५८ ] ५, १३, ५ ( सुतंभर आत्रेयः । अग्निः )  
 त्वामग्ने वाजसातमं ।  
 स नो राख सुवीर्यम् ।  
 ८, ९८, १० ( नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः )  
 त्वां शुष्मिन्पुरुहूत वाजयन्तं ।  
 स नो राख सुवीर्यम् ।

[ ८६१ ] ५, १४, २ ( सुतंभर आत्रेयः । अग्निः )  
 तम् ... ।  
 यजिष्ठ मानुषे जने ।  
 ( १८६१ ) १०, ११८, ९ ( उरुक्षय आमहीयवः ।  
 रक्षोहाङ्गिः ) तं ... ।

[ ८६२ ] ५, १४, ३ ( सुतंभर आत्रेयः । अग्निः )  
 तं हि शश्वन्त ईळते ।  
 ७, ९४, ५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी )  
 ता हि शश्वन्त इळते ।

[ ८६२ ] ५, १४, ३, ( ५६१ ) ३, २९, ४

[ ८६५ ] ५, १४, ६ स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम् ।  
 १, ९, ३ ( इन्द्रः ) स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे ।

[ ८६९ ] ५, १५, ४ ( धरुण आङ्गिरसः । अग्निः )  
 दधानः परि त्मना विपुरूपो जिगासि ।  
 ७, ८४, १ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणां )  
 दधाना परि त्मना विपुरूपा जिगाति ।

[ ८७१ ] ५, १६, १ मर्तासो दधिरे पुरः ।  
 १, १३१, १, ८, १२, २२ देवासो ... ।  
 ८, १२, २५ देवास्त्वा ।

[ ८७७ ] ५, १७, २ ( पुत्ररात्रेयः । अग्निः )  
 अस्य हि स्वयशस्तर ।  
 ५, ८२, २ ( शावाश्व आत्रेयः । सविता )  
 — स्वयशस्तरं ।

[ ८७७ ] ५, १७, २ मन्द्र परो मनीषया ।  
 ( १४२६ ) ८, ७२, ३ रुद्रं ... ।

[ ८८२ ] ५, १८, २ स्वस्य दक्षस्य मंहना ।  
 ( ८३६ ) ५, १०, २ क्रत्वा दक्षस्य— ।

[ ८९३ ] ५, २०, ३ ( प्रयस्वन्त आत्रेयाः । अग्निः )  
 होतार त्वा वृणीमहे ।  
 प्रयस्वन्तो हवामहे ।  
 ( ९२३ ) ५, २६, ४ ( नसूयव आत्रेयाः । अग्निः )  
 होतारं त्वा वृणीमहे ।  
 ( १३८९ ) ८, ६०, १ ( भर्ग प्रागाथ । अग्निः )  
 होतारं— ।  
 ( १५८१ ) १०, २१, १ ( विमद ऐन्द्र प्राजापत्यो वा,  
 वसुकृद्वा वासुक । अग्निः )  
 होतारं— ।  
 ७, ९४, ६ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी )  
 प्रयस्वन्तो— ।

- ८, ६५, ६ ( प्रगाथ काण्व । इन्द्रः )  
**प्रयस्वन्तो— ।**  
 [८९७] ५, २१, ३ ( सस आत्रेय । अग्नि )  
 त्वां विश्वे सजोषसो देवासो द्रुतमक्रत ।  
 ( ९०५ ) ५, २३, ३ ( द्युम्रो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अग्नि )  
 विश्वे हि त्वा सजोषसो ।  
 ( १२८७ ) ८, २३, १८ ( विश्वमना वयस्व । अग्नि )  
 विश्वे हि त्वा सजोषसो— ।  
 [८९७] ५, २१, ३, १, १५, ७,  
 ( १०४८ ) ६, १६, ७ यज्ञेषु देवमाल्लते ।  
 [८९८] ५, २१, ४ देवं वो देवयज्यया ।  
 ( १४२० ) ८, ७१, १२ अग्निं वो— ।  
 [ ८९८ ] ५, २१, ४ ऋतस्य योनिमासदः । ३, ६२, १३  
 ९, ८, ३; ९, ६४, २२ ऋतस्य योनिमासदम् ।  
 [ ८९९ ] ५, २२, १ ( विश्वसामा आत्रेय । अग्नि )  
 होता मन्द्रतमो विशि ।  
 ( १४१९ ) ८, ७१, ११ ( सुदीति- पुरुमीळहावाग्निरसो  
 तयोर्बान्यतरः । अग्नि )  
 [ ९०० ] ५, २२, २ ( विश्वसामा आत्रेयः । अग्निः )  
 न्याग्निं जातवेदसं दधाता देवमृत्विजम् ।  
 प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः ।  
 ( ९२६ ) ५, २६, ७ ( ९२७ ) ८ ( वसूयव आत्रेयाः । अग्निः )  
 न्याग्निं जातवेदसं ।  
 दधाता देवमृत्विजम् ।  
 प्र यज्ञ— ।  
 [ ९०१ ] ५, २२, ३; ( ५०० ) ३, ९, १,  
 ( १२१९ ) ८, ११, ६ देवं मर्तास ऊतये ।  
 ( ३३० ) १, १४४, ५ — ऊतये हवामहे ।  
 [ ९०२ ] ५, २२, ४ स्तोमैर्वर्धन्त्यत्रयो गीर्भिः शुम्भन्त्यत्रय  
 ५, ३९, ५ गिरो वर्धन्त्यत्रयो गिरः शुम्भन्त्यत्रयः ।  
 [ ९०४ ] ५, २३, २, ( ८३४ ) ५, ९, ७  
 [ ९०५ ] ५, २३, ३; ( ८९७ ) ५, २१, ३  
 [ ९०५ ] ५, २३, ३; ५, ३५, ५; ८, ५, १७, ६, ३७  
 जनासो वृक्तबर्हिष ।  
 ३, ५९, ९ जनाय वृक्तबर्हिषे ।  
 [ ९०६ ] ५, २३, ४ ( द्युम्रो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अग्नि )  
 रेचन्नः शुक्र दीदिहि शुमत्पावक दीदिहि ।  
 ( १०९६ ) ६, ४८, ७ ( शंयुर्बार्हस्पत्यः, तृणपाणि ।  
 अग्निः )

- [ ९१४ ] ५, २५, ४ ( वसूयव आत्रेया । अग्नि )  
**अग्निं धीभिः सपर्यत ।**  
 ( १२५९ ) ८, १०३, ३ ( सोमरि काण्व । अग्निः )  
 [ ९१५ ] ५, २५, ५; ( ५२३ ) ३, ११, ६  
 [ ९१६ ] ५, २५, ६, १, ११, २ जेताग्मपरजितम् ।  
 [ ९१८ ] ५, २५, ८ प्रावोच्यते बृहत् ।  
 १०, ६४, १५, १०० । ८ प्रावा यत्र मधुपदुच्यते  
 बृहत् ।  
 [ ९१९ ] ५, २५, ९ ( वसूयव आत्रेया । अग्नि )  
**स नो विश्वा अति द्विषः ।**  
 ६, ६१, ९ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । मरुपती )  
**सा नो— ।**  
 [ ९२० ] ५, २६, १ ( वसूयव आत्रेया । अग्नि )  
**मन्द्रया देव जिह्या ।**  
**आ देवान्वक्षि यक्षि च ।**  
 ( १०४३ ) ६, १६, २ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्नि )  
 स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा मत् ।  
**आ देवान्वक्षि यक्षि च ।**  
 ( १४७८ ) ८, १०२, १६ ( प्रयोगो मार्गवः, पावकोऽ  
 मिर्बार्हस्पत्यो वा, गृहपति—यविष्टो सदस्य पुत्रोऽन्यतरं  
 वा । अग्नि ) आ देवान्वक्षि यक्षि च ।  
 [ ९२१ ] ५, २६, २ ( वसूयव आत्रेया । अग्नि )  
**तं त्वा घृतस्नवीमहे ।**  
**देवो आ वीतये वह ।**  
 ( ११९५ ) ७, १६, ४ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि )  
**तं त्वा दूतं कृणमहे यशस्तमं देवो आ वीतये**  
**वह । ... तयस्त्वमहे ।**  
 [ ९२३ ] ५, २६, ४ ( वसूयव आत्रेया । अग्निः )  
**अग्ने विश्वेभिरा गद्दि देवेभिर्द्व्यदातये ।**  
 ५, ५१, १ ( स्वर्ग्यात्रेय । विश्वेदेवा )  
**अग्ने सुतस्य पतये विश्वैरुभेभिरा गद्दि ।**  
**देवेभिर्द्व्यदातये ।**  
 [ ९२३ ] ५, २६, ४, ( ८९३ ) ५, २०, ३,  
 ( १३८९ ) ८, ६०, १  
 ( १५८१ ) १०, २१, १ होतार त्वा वृणीमहे ।  
 [ ९२४ ] ५, २६, ५ ( वसूयव आत्रेया । अग्नि )  
**यजमानाय सुन्वते ।**  
 ८, १४, ३ ( गोप्रकल्पस्यमक्तिना काण्वायना । इन्द्र )  
**—सुन्वते ।**



८, १०, १७ ( इरिम्बिठि काण्व । इन्द्र )  
 १०, १७५, ४ ( ऊर्ध्वप्रावा आर्बुदिः सर्प । प्रावाणः )  
 [९२४] ५, २६, ५. ( १३ ) १, १२, ४. ( १३५६ )  
 ८, ४४, १४ देवैरा सत्सि बर्हिषि ।  
 ( ९२६ ) ५, २६, ७ ( ९२७ ) ८, ( ९०० ) ५, २२, २  
 ५, २६, ९. १, ३९, ५ देवासः सर्वया विशा ।

[९२८] ५, २७, १ त्रैवृणो अग्ने दशभि सहस्रै ।  
 ८, १, ३३ आसंगो अग्ने — ।  
 [९३८] ५, २८, ६ ( विश्ववारत्रेयी । अग्नि )  
 अग्निं प्रयत्यध्वरे ।  
 ( १५८६ ) १०, २१, ६ अग्ने प्रयत्यध्वरे ।  
 ( १४२० ) ८, ७१, १२ ( सुदीति-पुस्मीकहावाङ्गिरसौ,  
 तयोर्वान्यतरः । अग्नि )

### ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[९४०] ६, १, २ ( ७५९ ) ५, १, ५  
 [९४२] ६, १, ४ ( १९७ ) १, ७२, ३ नामानि चिद्दधिरे  
 यक्षियानि ।  
 [९४४] ६, १, ६ ( ९४० ) ६, १, २  
 [९४६] ६, १, ८ ( ७९२ ) ५, ४, ३  
 [९४७] ६, १, ९ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि )  
 यस्त आनद् समिधा हव्यदातिम् ।  
 ( १६७७ ) १०, १२२, ३ ( चित्रमहा वासिष्ठ. । अग्नि )  
 —समिधा तं जुपस्व ।  
 [९४८] ६, १, १० नमोभिरग्ने समिधोत हव्यै ।  
 ७, ६३, ५ नमोभित्रावरुणोत हव्यैः ।  
 [९४८] ६, १, १० ( भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि )  
 वेदी सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर् ।  
 ( १०१५ ) ६, १३, ४ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि )  
 यस्ते सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर्यज्ञैर्मतो निशिति  
 वेद्यानद् ।  
 [९४९] ६, १, ११ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः )  
 आ यस्ततन्थ रोदसी वि भासा ।  
 ( ९७६ ) ६, ४, ६ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि )  
 अग्ने ततन्थ— ।  
 [९५०] ६, १, १२ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्नि )  
 पूर्वोरिषो बृहतीरारे अधा  
 अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु ।  
 ९, ८७, ९ ( उशाना काण्व । पयमानः सोम )  
 पूर्वोरिषो बृहतीर्जीरदानो ।  
 ६, ७४, २ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्य । सोमारुद्रा )  
 अस्मे भद्रा— ।  
 [९६०] ६, २, ९. ( ८३१ ) ५, ९, ४ अग्ने पशुर्न यवसे ।  
 [९६१] ६, २, १०. ( ७१६ ) ४, ९, ५ वेपि ह्यध्वरीयताम् ।

[ ९६२ ] ६, २, ११= ६, १४, ६, ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ।  
 अग्नि )  
 अच्छा नो मित्रमहो देव देवानग्ने वोच  
 सुमतिं रोदस्यो । वीहि स्वरित सुक्षिति  
 दिवो नृन्दिषो अंहांसि दुरिता तरेम  
 ता तरेम तवावसा तरेम ।  
 ( १०२७ ) ६, १५, १५ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यो,  
 वातहव्य आङ्गिरसो वा । अग्नि )  
 दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम ।  
 [ ९७३ ] ६, ४, ३ २, २०, ५  
 अश्रस्य चिच्छिश्नथतूर्व्याणि ।  
 [ ९७६ ] ६, ४, ६. ( ९४९ ) ६, १, ११  
 [ ९७८ ] ६, ४, ८, ( ९९९ ) १०, ७, ( १०११ ) १२, ६,  
 ( १०१७ ) १३, ६, १७, १५, २४, १०,  
 मदेम शतहिमाः सुवीराः ।  
 [ ९७९ ] ६, ५, १ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि )  
 अद्रोघवाचं मतिभिर्यविष्ठम् ।  
 ६, २२, २ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )  
 — मतिभि शविष्ठम् ।  
 [ ९८३ ] ६, ५, ५ यस्ते यज्ञेन समिधा य उक्थैः ।  
 ४, ४, ७ यस्त्वा नित्येन हविषा य— ।  
 [ ९९२ ] ६, ६, ७ चन्द्रं रथिं पुरुवीरं बृहन्तं ।  
 ४, ४४, ६ नू नो रथिं— ।  
 [ १००७ ] ६, ७, ५ महान्यग्ने नकिरा दधर्ष ।  
 ५, ८५, ६, मही देवस्य नकिरा— ।  
 [ १००९ ] ६, ७, ७ वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुर ।  
 १, १६०, ४ वि यो ममे रजसी सुक्रतूयया ।  
 [ १००९ ] ६, ७, ७ वैश्वानरो वि दिवो रोचना कवि ।  
 ९, ८५, ९ अरुरुचद्धि दिवो— ।

[ ९९३ ] ६, १०, १; ( ४८५ ) ३, ६, ६,  
 [ ९९९ ] ६, १०, ६ अवीर्वाजस्य गध्यस्य सातौ ।  
 ६, २६, २ महो वाजस्य— ।  
 [ १००४ ] ६, ११, ५ वृञ्जे ह यन्नमसा बर्हिरग्नो ।  
 ७, २, ४ प्र वृञ्जते नमसा— ।  
 [ १००५ ] ६, ११, ६ देवेभिरग्ने अग्निभिरिधानः ।  
 ( १०११ ) ६, १२, ६ विश्वेभिरग्ने — ।  
 [ १००९ ] ६, १२, ४ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः )  
 अग्निः ष्वे दम आ जातवेदाः ।  
 ( ११७२ ) ७, १२, २ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः )  
 [ १०११ ] ६, १२, ६; ( १००५ ) ६, ११, ६  
 [ १०१५ ] ६, १३, ४; ( ९४८ ) ६, १, १०  
 [ १०१९ ] ६, १४, २ ( ७६१ ) ५, १, ७  
 [ ९६२ ] ६, १४, ६ =, ६, २, ११; ( १०३७ ) ६, १५, १५  
 ता तरेम तवावसा तरेम ।  
 [ १०२५ ] ६, १५, ३ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, वीतहव्य  
 आद्विरसो वा । अग्निः )  
 अर्यः परस्यान्तरस्य तरुषः ।  
 छर्दिर्यच्छ वीतहव्याय सप्रथो भरद्वाजाय सप्रथ ।  
 ( १६७० ) १०, ११५, ५ ( उपस्तुनां वाग्निहव्यः ।  
 अग्निः ) अर्यः तरुषः ।  
 ( १०७४ ) ६, १६, ३३ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः )  
 भरद्वाजाय सप्रथ शर्म यच्छ ।  
 [ १०२८ ] ६, १५, ६, ६ देवो देवेषु वनते हि वार्यं  
 ( ६ . नो दुवः ) ।  
 [ १०२९ ] ६, १५, ७ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यो, वीतहव्य  
 आद्विरसो वा । अग्निः )  
 विप्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविं सुन्नैरीमहे  
 जातवेदसम् ।  
 ( १३५२ ) ८, ४४, १० ( विरुष आद्विरसः । अग्निः )  
 विप्रं होतारमद्रुहं ।  
 यज्ञानां केतुमीमहे ।  
 [ १०३४ ] ६, १५, १२ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यो, वीतहव्य  
 आद्विरसो वा । अग्निः )  
 ( १०३४ ) ७, ४, ९ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः )  
 त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः  
 सहसावन्नवद्यात् ।  
 सं त्वा ध्वस्मन्वद्भ्येतु पाथः सं रयिः  
 स्पृहयाय्यः सहस्री ।

[ १०३७ ] ६, १५, १५ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः वीतहव्य  
 आद्विरसो वा । अग्निः )  
 ( १६१७ ) १०, ५३, २ देवा अग्निं सौचीक । अग्निं  
 — हि ख्यत् ।  
 [ १०४३ ] ६, १६, २ ( ९२० ) ५, २६, १  
 [ १०४६ ] ६, १६, ५ दिवोदासाय सुन्वते ।  
 ४, ३०, २० — दाशुषे ।  
 ६, ३१, ४ — सुन्वते सुतक्र ।  
 [ १०४८ ] ६, १६, ७, त्वामग्ने स्वाध्या ।  
 ( १२४० ) ८, १९, १७; ( १३३९ ) ४३, ३०  
 ते घेदग्ने स्वाध्या ।  
 [ १०४८ ] ६, १६, ७. ( ८९७ ) ५, २१, ३  
 [ १०५० ] ६, १६, ९; १, १४, ११ तं होता मनुर्हित ।  
 [ १०५० ] ६, १६, ९ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः )  
 वह्निरासा विदुष्टरः ।  
 ( १२०० ) ७, १६, ९ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः )  
 [ १०५१ ] ६, १६, १० अन्न आ याहि वीतये ।  
 ५, ५१, ५ वायवा याहि वीतये ।  
 [ १०५६ ] ६, १६, १५ ( २१७ ) १, ७४, ३  
 [ १०६१ ] ६, १६, २० स हि विश्वाति पार्थिवा ।  
 ६, ४५, २० स हि विश्वानि पार्थिवाँ ।  
 [ १०६३ ] ६, १६, २२ ५, ५२, ४ स्तोमं यज्ञं च  
 धृष्णया ।  
 [ १०६५ ] ६, १६, २४; १, १४, ३ आदित्यान्मारुतं  
 गणम् ।  
 [ १०६९ ] ६, १६, २८, अग्निस्तिग्मेन शोचिषा ।  
 ( २१ ) १, १२, १२ अग्ने शुक्रेण — ।  
 [ १०७० ] ६, १६, २९, ( २३९ ) १, ७८, १  
 ( १०७७ ) ६, १६, ३६;  
 ( १३११ ) ८, ४३, २ जातवेदो विचर्षण ।  
 [ १०७० ] ६, १६, २९ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः )  
 जहि रक्षांसि सुक्रतो ।  
 ९, ६३, २८ ( निरुचिः काश्यपः । पवमानः सोमः )  
 [ १०७१ ] ६, १६, ३० ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः )  
 त्वं नः पाह्यहसो जातवेदो अघायत ।  
 ( ११९१ ) ७, १५, १५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः )  
 — हसो दोषावस्तरघायतः ।  
 [ १०७४ ] ६, १६, ३३; ( १०२५ ) ६, १५, ३

- [ १०७६ ] ६, १६, ३५ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि )  
**सीदन्नुतस्य योनिमा ।**  
 ९, ३२, ४ ( श्यावाश्व आत्रेय । पवमान सोम )  
 ९, ६४, ११ ( कश्यपो मारीच । पवमानः सोम )  
 [ १०७७ ] ६, १६, ३६; ( १०७० ) ६, १६, २९  
 [ १०८१ ] ६, १६, ४०, ( ८३० ) ५, ९, ३  
 [ १०८५ ] ६, १६, ४४ अभि प्रयांसि वीतये ।  
 १, १३५, ४ सुधितानि वीतये ।  
 [ १०८५ ] ६, १६, ४४, १, १४, ६ आ देवान्तसोमपीतये ।  
 [ १०८७ ] ६, १४, ४६, ४, ३, १ ह्योतारं सत्ययजं  
 रोदस्योः ।  
 [ १०८७ ] ६, १६, ४६, ( ५८५ ) ३, १४, ५  
 [ १०८८ ] ६, १६, ४७, ( ८०५ ) ५, ६, ५  
 [ १०९० ] ६, ४८, १ प्रप्र वयममृतं जातवेदसं ।  
 ( १४४६ ) ८, ७४ ५ अमृतं जातवेदसं ।

- [ १०९२ ] ६, ४८, ३ ( शंयुर्बार्हस्पत्य, तृणपाणि । अग्निः )  
 महान्विभास्यर्षिषा ।  
**अजस्रेण शोचिषा शोशुचच्छुचे ।**  
 ( १७९७ ) ७, ५, ४ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । वैश्वानरोऽग्नि )  
 त्वं भासा रोदसा आ ततन्थाजस्रेण शोचिषा  
**शोशुचानः ।**  
 [ १०९५ ] ६, ४८, ६ ( शंयुर्बार्हस्पत्यः, तृणपाणि । अग्निः )  
**तिरस्तमो दृदश ऊर्म्यास्वा ।**  
 ( ११५६ ) ७, ९, २ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि )  
 — दृदशे राम्याणाम् ।  
 [ १०९७ ] ६, ४८, ८ ( शंयुर्बार्हस्पत्य, तृणपाणिः । अग्नि )  
 शतं पूर्भिर्यविष्ट पाह्यंहसः शत हिमाः स्तोतृभ्यो  
 ये च ददति ।  
 ( १२०१ ) ७, १६, १० वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नि )  
 ये राधासि दृदत्यख्या ।  
 ता अंहस पिप्रति पर्तमिष्टवं शतं पूर्भिर्यविष्टय ।

### ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

- [ १११२ ] ७, १, १३, ( ८० ) १, ३६, १५  
 [ १११९ ] ७, १, २०=७, १, २५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि ।  
 अग्नि )  
 नृ मे ब्रह्माण्यश्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्य  
 सुषूदः ।  
 रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभि  
 सदा नः ।  
 [ १११९ ] ७, १, २०, २५; ( ११३३ ) ३, १०; ( ११४८ ) ७, ७, ७,  
 ७, ८, ७ ( ११६० ) ९, ६; ( ११७० ) ११, ५, ( ११७३ )  
 १२, ३, १३, ३; ( ११७६ ) १४, ३, १९, ११,  
 २०, १०, २१, १०, २२, ९, २३, ६; २४, ६; २५,  
 ६, २६, ५, २७, ५; २८, ५; २९, ५, ३०, ५;  
 ३४, २५; ३५, १५, ३६, ९; ३७, ८; ३९, ७;  
 ४०, ६; ४१, ७, ४२, ६, ४३, ५, ४५, ४ ४६, ४,  
 ४७, ४, ४८, ४, ५१, ३, ५३, ३; ५४, ४; ५६,  
 २५; ५७, ५, ५८, ६, ६०, १२; ६१, ७; ६२, ६;  
 ६३, ६, ६४, ५, ६५, ५, ६७, १०; ६८, ९, ६९, ८;  
 ७०, ७, ७१, ६; ७२, ५; ७३, ५; ७५, ८; ७६, ७, ७७,  
 ६, ७८, ५; ७९, ५; ८०, ३; ८४, ५; ८५, ५;  
 ८६, ८; ८७, ७, ८८, ७; ९०, ७, ९१, ७; ९२, ५;  
 ९३, ८, ९५, ६; ९७, १०, ९८, ७; ९९, ७, १००,

- ७, १०१, ६, ९, ९०, ६, ९७, ३, ६; १०, ६५,  
 १५; ६६, १५, १२२, ८, यूयं पात स्वस्तिभिः  
 सदा नः ।  
 [ ११२५ ] ७, ३, २, १, १४८, ४ आदस्य वातो अनु वाति  
 शोचिः ।  
 [ ११२९ ] ७, ३, ६, ४, १०, ५,  
 [ ११३३ ] ७, ३, १०; = ७, ४, १० ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।  
 अग्नि )  
 एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं  
 वतेम ।  
 विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात  
 स्वस्तिभिः सदा नः ।  
 ७, ६०, ६ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मित्रावरुणौ )  
 अपि क्रतुं सुचेतसं वतन्तस् ।  
 [ ११३५ ] ७, ४, २ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः )  
 स गृत्सो अग्निस्तहणश्चिदस्तु ।  
 सं यो वना युवते शुचिदन् ।  
 ( १६६७ ) १०, ११५, २ ( उपस्तुतो वार्धिहव्यः । अग्निः )  
 अग्निर्ह नाम धायि दक्षपस्तम सं यो वना युवते  
 भस्मना वता ।

[ ११३७ ] ७, ४, ४ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नि )  
 मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि ।  
 ( १५९५ ) १०, ४५, ७ ( वत्सप्रिर्भालन्दन । अग्नि )  
 [ ११४० ] ७, ४, ७; ४, ४१, १० नित्यस्य रायः पतय  
 स्याम ।  
 ७, ४, ९ = ( १०३४ ) ६, १५, १२  
 ७, ४, १० = ( ११३३ ) ७, ३, १०  
 ७, ४, १० = ७, ३, १०  
 [ ११४५ ] ७, ७, ४; ( ६८६ ) ४, ६, ५  
 [ ११४८ ] ७, ७, ७ ७, ८, ७ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।  
 अग्नि )  
 नू त्वामग्न ईमहे वासिष्ठा ईशानं सूनो सहस्रो  
 वसूनाम् ।  
 इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनइ यूय पात  
 स्वस्तिभि सदा नः ॥  
 [ ११५४ ] ७, ८, ६; २, ३८, ११  
 शं यस्तोतृभ्य आपये भवाति ।  
 ( ११४८ ) ७, ८, ७ = ७, ७, ७  
 [ ११५६ ] ७, ९, २ ( १०९५ ) ६, ४८, ६  
 [ ११६५ ] ७, १०, ५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नि )  
 मन्द्र होतारमुशिजो यविष्टमग्नि विश उळ्ळे  
 अध्वरेषु ।  
 ( १६०४ ) १०, ४६, ४ ( वत्सप्रिर्भालन्दन । अग्नि )  
 मन्द्र होतारमुशिजो नमोभिः प्रात्र यज्ञ  
 नेतारमध्वराणाम् । विशाम ।  
 [ ११६५ ] ७, १०, ५ स हि क्षपावाँ अभवद्दयीणाम् ।  
 ( १७८ ) १, ७०, ५ — क्षपावाँ अग्नी रयीणां ।  
 ( ११६६ ) ७, ११, १ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नि )  
 महाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतो ।  
 १०, १०४, ६ ( अष्टको वैश्वामित्रः । इन्द्रः )  
 दाश्रवाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतः ।  
 [ ११६७ ] ७, ११, २ त्वामीळ्ळे अजिरं दृत्याय हविष्मन्तः  
 सदमिन्मानुषासः ।  
 ( १९९४ ) १०, ७०, ३ शश्वत्तममीळ्ळत दृत्याय  
 हविष्मन्तो मनुष्यामो अग्निम् ।  
 [ ११६९ ] ७, ११, ४ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नि )  
 अथा देवा दधिरे हव्यवाहम् ।  
 १०, ५२, ३ ( अग्नि. सौचिकः । विवे देवाः )  
 [ ११७२ ] ७, १२, २; ( १००९ ) ६, १२, ४  
 [ ११७४ ] ७, १४, १; ( ५११ ) ३ १०, ३

[ ११७५ ] ७, १४, २ वयं ते अग्ने समिधाविधेम ।  
 ( १८२७ ) ४, ४, १५ अया ते— ।  
 ( ७९६ ) ५, ४, ७ वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम ।  
 [ ११७६ ] ७, १४, ३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नि )  
 तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम ।  
 ( १२०६ ) ७, १७, ७ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः )  
 ते ते देवाय दाशत स्याम ।  
 [ ११७८ ] ७, १५, २, ९, १०१, ९ यः पञ्च चर्षणीरभि ।  
 ५, ८६, २ या पञ्च— ।  
 [ ११७८ ] ७, १५, २ ( १५ ) १, १२, ६  
 [ ११८२ ] ७, १५, ६ ( ७७ ) १, ३६, १०  
 [ ११८४ ] ७, १५, ८ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नि )  
 स्वग्नयस्त्वया वयम् । सुवीरस्त्वमस्मयुः ।  
 ( १२३० ) ८, १९, ७ ( सोमरि काण्व । अग्नि )  
 स्वग्नयो .. ।  
 सुवीरस्त्वमस्मयुः ।  
 [ ११८६ ] ७, १५, १०. ( २५५ ) १, ७९, १२  
 अग्नी रक्षांसि सेधति ।  
 [ ११८६ ] ७, १५, १०; ( ४४४ ) २, ७, ४  
 [ ११८७ ] ७, १५, ११, ( २४७ ) १, ७९, ४  
 ईशान सहस्रो यहो ।  
 [ ११८९ ] ७, १५, १३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नि )  
 अग्ने रक्षा णो अहस प्रति ष्म देव रीषतः ।  
 ( १३५३ ) ८, ४४, ११ ( विष्प आङ्गिरस । अग्नि )  
 अग्ने नि पाहि नस्त्वं प्रति ष्म देव रीषतः  
 [ ११९१ ] ७, १५, १५; ( १०७१ ) ६, १६, ३०  
 [ ११९२ ] ७, १६, १ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नि )  
 ऊर्जो नपातमा हुवे ।  
 ( १३५५ ) ८, ४४, १३ ( विष्प आङ्गिरस । अग्नि )  
 [ ११९२ ] ७, १६, १; ( २८३ ) १, १२८, ८  
 [ ११९४ ] ७, १६, ३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नि )  
 उदस्य शोचिरस्थाद् ।  
 ( १२७३ ) ८, २३, ४ ( विश्वमना वैयश्वः । अग्निः )  
 [ ११९५ ] ७, १६, ४, ( ९२३ ) ५, २६, २  
 [ ११९७ ] ७, १६, ६, १, १५, ३ त्वं हि रत्नधा असि ।  
 [ १२०० ] ७, १६, ९; ( १०५० ) ६, १६, ९  
 [ १२०१ ] ७, १६, १०, ( १०९५ ) ६, ४८, ८  
 [ १२०२ ] ७, १६, ११ पूर्णां विवष्ट्यासिचम् ।  
 २, ३७, १ अध्वर्यवः स पूर्णां वष्ट्यासिचम् ।  
 [ १२०३ ] ७, १६, १२; ( ५२१ ) ३, ११, ४

[१२०३] ७, १६, १२; (७३६) ४, १२, ३  
[१२०६] ७, १७, ३, (४८५) ३, ६, ६

[१२०७] ७, १७, ४; (१२०६) ७, १७, ३  
[१२१०] ७, १७, ७; (११७६) ७, १४, ३

## ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[१२१४] ८, ११, १ त्व यज्ञेष्वीड्यः ।  
(१५८६) १०, २१, ६ त्वां यज्ञेष्वीळते ।  
[१२१५] ८, ११, २, (८७) १, ४४, २  
[१२१८] ८, ११, ५, (५२५) ३, ११, ८  
[१२१९] ८, ११, ६, (५००) ३, ९, १  
[१२१९] ८ ११, ६ ( वत्सः काण्व । अग्निः )  
अग्निं गीर्भिर्हवामहे ।  
१०, १४१, ३ ( अग्निस्तापस । विश्वे देवा )  
[१२२१] ८, ११, ८ ( वत्स काण्वः । अग्नि )  
(१३३०) ८, ४३, २१ ( विरूप आङ्गिरस । अग्नि )  
पुरुत्रा हि सदङ्गडसि विशो विश्वा अनु प्रभुः ।  
समत्सु त्वा हवामहे ।  
[१२२२] ८, ११, ९ ( वत्स. काण्वः । अग्निः )  
वाजयन्तो हवामहे ।  
८, ५३ ( वाल्खिल्य ५ ), २ ( मे.य. काण्व. । इन्द्र. )  
(१२२४) ८, १९, १; (२८८) १, १२८, ६  
[१२२६] ८, १९, ३, (१०) १, १२, १  
[१२२७] ८, १९, ४ ऊर्जां नपातं सुभगं सुदीदिति-  
मग्निं श्रेष्ठशोचिषम् । ( १३५५ ) ८, ४४, १३  
ऊर्जां नपातमा हुवे ऽग्निं पावकशोचिषम् ।  
[१२२९] ८, १९, ६ न तमंहो देवकृतं कुतश्चन ।  
२, २३, ५ न तमंहो न दुरितं कुतश्चन ।  
१०, १२६, १ न तमंहो न दुरितं ।  
[१२३०] ८, १९, ७ ( ११८४ ) ७, १५, ८  
[१२३१] ८, १९, ८ ( सोभरि काण्व । अग्नि )  
अतिथिर्न मित्रियोऽग्नी रथो न वेद्यः ।  
(१४५४) ८, ८४, १ ( उशना काण्व । अग्नि )  
प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुपे मित्रमिव प्रियम् ।  
अग्निं रथं न वेद्यम् ।  
[१२३२] ८, १९, ९, ४, ३७, ६ स धीभिरस्तु सनिता ।  
[१२३९] ८, १९, १६; (७१) १, ३६, ४  
[१२४०] ८, १९, १७ ( सोभरिः काण्वः । अग्नि. )  
ते घेदग्ने स्वाध्यो ये त्वा विप्र निदधिरे नृचक्षसम् ।  
(१३३९) ८, ४३, ३० ( विरूप आङ्गिरस । अग्नि. )  
ते घेदग्ने स्वाध्योऽहा विश्वा नृचक्षसः ।

[१२४३] ८, १९, २०; २, २६, २ भद्रं मनः कृणुष्व  
वृत्रतूर्यं ।  
[१२४४] ८, १९, २१; (७७) १, ३६, १०  
[१२४७] ८, १९, २४; (५४३) ३, २७, ७  
[१२४८] ८, १९, २५, (५२९) ३, २४, ३  
[१२५५] ८, १९, ३२ सम्राज त्रासदस्यवम् ।  
१०, ३३, ४ राजानं त्रासदस्यवम् ।  
[१२५८] ८, १९, ३५ स्यामेहतस्य रथ्यः ।  
७, ६६, १२; ८, ८३, ३ यूयमृतस्य — ।  
[१२७३] ८, २३, ४, (११९४) ७, १६, ३  
[१२७६] ८, २३, ७; (२७३) १, १२७, २  
[१२७८] ८, २३, ९; (९६) १, ४४, ११  
[१२८१] ८, २३, १२ रथिं रास्व सुवीर्यम् ।  
(८५८) ५, १३, ५; ८, ९८, १२  
स नो रास्व सुवीर्यम् ।  
९, ४३, ६ सोम रास्व सुवीर्यम् ।  
[१२८७] ८, २३, १८; (८९७) ५, २१, ३  
[१२९१] ८, २३, २२ ( विश्वमना वैयश्व । अग्नि )  
अग्निं यज्ञेषु पूर्यम् । प्रति क्षुगेति ।  
(१३०७) ८, ३९, ८ (नाभाक काण्व । अग्नि )  
अग्निं यज्ञेषु पूर्यम् ।  
(१३९०) ८, ६०, २ ( भर्ग. प्रागाथः । अग्नि )  
सुचश्चरन्त्यध्वरे । अग्निं यज्ञेषु पूर्यम् ।  
(१४७२) ८, १०२, १० ( प्रयोगो भार्गव., पावकोऽ  
मिर्बाह्मपत्यो वा, गृहपति- यविश्रौ सहस्रः पुत्रोऽन्यतरो  
वा । अग्नि. )  
अग्निं यज्ञेषु पूर्यम् ।  
[१२९२] ८, २३, २३ आभिर्विधेमाग्नये ।  
८, ४३, ११ स्तोमैर्विधेमाग्नये ।  
[१२९४] ८, २३, २५, १, १२७, ८  
[१२९६] ८, २३, २७ ( विश्वमना वैयश्व । अग्निः )  
वंस्वा नो वार्या पुरु ।  
(१४०२) ८, ६०, १४, (भर्ग प्रागाथः । अग्नि )  
[१२९८] ८, २३, २९ त्वं नो गोमतीरिष ।

५, ७९, ८; ८, ५, ९; ९, ६२, ४ उत नो— ।  
[१२९९] ८, २३, ३० (विश्वमना वैयश्व । अग्नि )

**ऋतावाना सम्राजा पूतदक्षसा ।**

८, २५, १ (विश्वमना वैयश्व । मित्रावरुणां )

**ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा ।**

[१३००] ८, ३९, १-१०, ८, ४०, १-११, ४१, १-१०;  
४२, ४-६ नभन्तामन्यके समे ।

[१३०५] ८, ३९, ६, (२८८) १, १२८, ६

[१३०७] ८, ३९, ८, (१२९१) ८, २३, २२

[१३१०] ८, ४३, १, ८, ३, १५ गिर. स्तोमास ईरते ।

[१३११] ८, ४३, २ (२३९) १, ७८, १

[१३२०] ८, ४३, ११ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि )

**उक्षानाय वशानाय सोमपृष्ठाय वेधसे ।**

**स्तोमैर्विधेमाग्नये ।**

(१६६४) १०, ९१, १४ (अरुणो वैतहव्य । अग्नि )

यस्मिन्नश्वाम ऋषभास उक्षणो वशा ।

**कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे ।**

(१३६९) ८, ४४, २७ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि )

**स्तोमैरिषेमाग्नये ।**

[१३२४] ८, ४३, १५ अग्ने वीरवतीमिषम् ।

(२०) १, १२, ११, ९, ६१, ६ रयिं — ।

[१३२५] ८, ४३, १६; इमं स्तोमं जुषस्व मे ।

(२१) १, १२, १२ इमं स्तोमं जुषस्व नः ।

[१३२७] ८, ४३, १८ विश्वाः सुक्षितयः पृथक् ।

(१३३८) ८, ४३, २९

[१३२९] ८, ४३, २० वह्निं होतारमीळते ।

(१०१९) ६, १४, २ अग्निं होतारमीळते ।

(५१०) ३, १०, २ अग्ने— ।

[१३३०] ८, ४३, २१= (१२२१) ८, ११, ८

[१३३१] ८, ४३, २२ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि )

**इम नः शृणवद्धवम् ।**

१०, २६, ९ (विमद ऐन्द्र प्राजापत्या वा वसुकृद्वा

वासुक । पूषा )

[१३३२] ८, ४३, २३, ४, ३२, १३= ८, ६५, ७

**त त्वा वय हवामहे ।**

[१३३३] ८, ४३, २४ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि )

**अग्निमीळे स उ श्रवत् ।**

(१३४८) ८, ४४, ६ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः )

[१३३९] ८, ४३, ३०; (१२४०) ८, १९, १७

[१३४०] ८, ४३, ३१, (५०७) ३, ९, ८

[१३४१] ८, ४३, ३२ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि )

**शर्धन्तमांसि जिघ्रसे ।**

९, १००, ८ (रेभसून् काश्यपो । पवमानः योम. )

[१३४८] ८, ४४ ६, (१३३३) ८, ४३, २४

[१३५१] ८, ४४, ९, ६, ५२, १२

**चिकित्वान्दैव्यं जनम् ।**

[१३५२] ८, ४४, १० (१०२९) ६, १५ ७

[१३५३] ८, ४४, ११ (११८९) ७, १५, १३

[१३५५] ८, ४४, १३ (११९२) ७, १६, १

[१३५६] ८, ४४, १४ (२१) १, १२, १२

[१३६१] ८, ४४, १९ (५०९) ३, १०, १

[१३६७] ८, ४४, २५; ८, ६, ४ समुद्रायिव सिन्धवः ।

[१३६९] ८, ४४, २७ (१३२०) ८, ४३, ११

[१३७०] ८, ४४, २८, २, ५, ८

[१३७०] ८, ४४, २८, १, १०, ९ तस्मै पावक मृळ्य ।

८, ४५, १ (त्रिशोक काण्व । अमीन्द्रा)

**स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् ।**

(१९१०) १, १३, ५ (मेघानिधि काण्व ।

आर्षाम्क्त=बर्हि. )

**स्तृणति बर्हिरानुषग् ।**

८, ४५, १, १-३ येषामिन्द्रो युवा सखा ।

[२४५५] ८, ५६ (वाल ८) ५, (पृषन्नः काण्व । अर्षामया)

(२१) १, १२, १२

[१३८९] ८, ६०, १; ५, २०, ३

[१३९०] ८, ६०, २; ८, २३, २२

[१३९१] ८, ६०, ३; ४, ७, १

[१३९१] ८, ६०, ३; १, १२७, २

[१३९२] ८, ६०, ४ (भर्ग प्रागाथ । अग्निः )

**मन्द्रस्व धीतिभिर्हितः ।**

(१६८६) १०, १४०, ३ (अग्नि पावक । अग्नि )

[१३९६] ८, ६०, ८ मा नो मर्ताय रिपवे रक्षम्विने ।

८, २२, १४ — रिपवे वाजिनीवसू ।

[१३९८] ८, ६०, १० पाहि विश्वस्माद्रक्षसो अरावणः ।

१, ३६, १५

[१४००] ८, ६०, १२ येन वंसाम पृतनासु शर्धतः ।

६, १९, ८ — पृतनासु शत्रून् ।

[१४०२] ८, ६०, १४; ८, २३, २७

[१४०५] ८, ६०, १७; १, १२७, २

[१४०६] ८, ६०, १८; इषण्यया नः पुरुरूपमा भर

- वाजं नेदिष्ठमृतये । [१३८८] ८, ७५, १६ ३, ४२, ६, ८, ९८, ११  
 ८, १, ४ उप क्रमस्व पुरुरूपमा— ।  
 [१४०७] ८, ६०, १९ ( अग्निं प्रागाथ । अग्निं )  
 तेषानो देव रक्षसः ।  
 ( १४७८ ) ८, १०२, १६ ( प्रयोगो भार्गव पावकोऽग्नि  
 र्वाहस्पत्यो वा गृहपति-यविष्ठा सहस पुत्रावन्यतरो वा ।  
 अग्निं ) तेषानो देव शोचिषा ।  
 [१४१४] ८, ७१, ६ प्र णो नय वरयो अच्छ ।  
 ६, ४७, ७ प्र नो नय प्रतरं वस्या अच्छ ।  
 ( १५९७ ) १०, ४५, ९ प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।  
 [१४१६] ८, ७१, ८ त्वमीशिषे वसूनाम् ।  
 १, १७०, ५ त्वमीशिषे वसुपते वसूनाम् ।  
 [१४१७] ८, ७१, ९, १, ३०, १० सखे वसो जरितृभ्यः ।  
 ३, ५१, ६ —जरितृभ्यो वयो धाः ।  
 [१४१८] ८, ७१, १० पुरुप्रशस्तमृतये ।  
 ८, १२ १४ पुरुप्रशस्तमृतये ऋतस्य यत् ।  
 [१४२०] ८, ७१, १२ ( ८९८ ) ५, २१, ४  
 [१४२१] ८, ७१, १२ ( ९३८ ) ५, २८, ६  
 ( १५८६ ) १०, २१, ६ अग्ने प्रयत्यध्वरे ।  
 [१४२१] ८, ७१, १३ ईशा यो वार्याणाम् ।  
 १, ५, २; २४, ३ ईशानां वार्याणाम् ।  
 १०, ९, ५ ईशानां वार्याणाम् ।  
 [१४२३] ८, ७२, ३, ( ८७७ ) ५ १७, २  
 [१४२८] ८, ७२, १५ उप स्रक्केषु वणसत ।  
 ७, ५५, २ — वणसतो नि षु स्वप ।  
 [१४३९] ८, ७२, १६ अधुक्षत्पिप्युर्षामिषम् । ८, ७, ३  
 [१४४६] ८, ७४, ५ ( १०९० ) ६, ४८, १  
 [१४४६] ८, ७४, ५, ( ५४९ ) ३, २७, १३  
 [१४४८] ८, ७४, ७, ( ३३२ ) १, १४४, ७  
 [१४५३] ८, ७४, १२, ७, ९४, ५ सबाधो वाजसातये ।  
 ८, ७४, १४ वक्षन्वयो न तुग्रथम् ।  
 ८, ३, २३ अस्तं वयो— ।  
 [१३७५] ८, ७५, ३, ( ५२९ ) ३, २४, ३  
 [१३८४] ८, ७५, १२ मा नो अस्मिन्महाधने परा वग्भ्रा  
 रभृद्यथा ।  
 ६, ५९, ७ — परा वक्तं गाविष्टिषु ।
- [१३८८] ८, ७५, १६ ३, ४२, ६, ८, ९८, ११  
 अथा ते सुस्रमीमहे ।  
 [१४५४] ८, ८४, १ प्रेषं वो अतिथिं ( स्तुषे ) ।  
 १, १८६, ३ — अतिथिं गृणीषे ।  
 [१४५४] ८, ८४, १ ( १२३१ ) ८, १९ ८  
 [१४५६] ८, ८४, ३ रक्षा तोकमुत त्मना ।  
 १, ४१, ६ विश्व तोकमुत त्मना ।  
 [१४६१] ८, ८४, ८ ५, ३५, ७ पुरोयावानमाजिषु ।  
 [१४६३] ८, १०२, १ ( १५ ) १, १२, ६  
 [१४६५] ८, १०२ ३, ८, २१, ११ त्वया ह स्विशुजा वयं ।  
 [१४६६-६८] ८, १०२, ४-६ अग्निं समुद्रवाससम् ।  
 [१४६९] ८, १०२ ७ ५, ७, १  
 [१४७१] ८, १०२, ९ ( प्रयोगो भार्गव पावकोऽग्निर्वाहस्पत्यो-  
 वा गृहपति-यविष्ठा सहस  
 पुत्रावन्यतरो वा । अग्निं )  
 अग्निदेवेषु पत्यये ।  
 आ वाजैरुप नो गमत् ।  
 ९, ४५, ४ ( अयाम्य आक्षिरस । पवमान सोम )  
 इन्दुदेवेषु पत्यये ।  
 [१४७२] ८, १०२, १० ( १२९१ ) ८, २३, २२  
 [१४७३] ८, १०२, ११ ( ५०७ ) ३, ९, ८  
 [१४७४] ८, १०२, १२ ( ७५४ ) ४, १५, ६,  
 [१४७८] ८, १०२, १६, ( १४०७ ) ८, ६०, १९  
 [१४७८] ८, १०२, १६, ( ९२० ) ५, २६, १  
 [१४७९] ८, १०२, १७, ( ७०४ ) ४, ८, १  
 [१४८०] ८, १०२, १८ अग्ने दूत वरेण्यम् ।  
 ( १० ) १, १२, १ अग्निं दूतं वृणीमहे ।  
 [१२५९] ८, १०३, ३, ( ९१४ ) ५, २५ ४  
 [१२६१] ८, १०३, ५, १, ४०, ४ स धत्ते अक्षिति श्रवः ।  
 ९, ६६, ७ दधानो अक्षिति श्रवः ।  
 [१२६१] ८, १०३, ५, ५, ८२, ६; ८, २२, १८  
 विश्वा वामानि धीमहि ।  
 [१२६३] ८, १०३, ७ ( सोभरि काण्व । अग्निं )  
 पर्विं राधो मघोनाम् ।  
 ९, १, ३ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । पवमानः सोमः )

### ऋग्वेदस्य दशमं मंडलम् ।

- [१४९३] १०, २, २, ( २३२ ) १, ७६, ४  
 [१४९३] १०, २, २ देवो देवान्यजत्वग्निरर्हन् ।

- ( १९४२ ) २, ३, १  
 [१४९५] १०, २, ४ यज्ञो वयं प्रमिनाम व्रतानि ।

- ८४८,९ यत्ते वयं — ।  
 [१५०७] १०,४,२ अन्तर्महाँश्चरसि रोचनेन ।  
 ३,५५,९ अन्तर्महाँश्चरति रोचनेन ।  
 [१५१२] १०,४,७ ( त्रित आत्त्य । अग्नि )  
 रक्षा णो अग्ने तनयानि तोका रक्षोत  
 नस्तन्वो ३ अप्रयुच्छन् ।  
 ( १५३३ ) १०,७,७ ( त्रित आत्त्य । अग्नि )  
 भवा नो अग्नेऽ विनोत गोपा ।  
 त्रास्वोत नस्तन्वो ३ अप्रयुच्छन् ।  
 [१५१४] १०,५,२ ( त्रित आत्त्य । अग्निः )  
 ऋतस्य पद कवयो नि पान्ति ।  
 १०,१७७,२ ( पतद्म प्राजापत्य । मायाभेद )  
 ऋतस्य पदे कवयो — ।  
 [१५२६] १०,६,७ सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूथ ।  
 ८९६,२१ —हव्यो बभूव ।  
 [१५२६] १०,६,७, त ते देवासो अनु केतमायन् ।  
 ४,२६,२ मम देवासो— ।  
 [१५२८] १०,७,२. १,१६३,७  
 यदा ते मतो अनु भोगमानत् ।  
 [१५३१] १०,७,५ विश्वु होतार न्यसादयन्त । ३,९,९  
 [१५३३] १०,७,७ ( १५१२ ) १०,४,७  
 [१५३४] १०,८,१. ६,७३,१  
 आ रोदसी वृषभो गोरवीति ।  
 [१५३४] १० ८,१ अपामुपस्थे महिषा ववर्ध ।  
 ( १५९१ ) १०,४५,३  
 अपामुपस्थे महिषा अवर्धन् ।  
 १०,९,५ ईशाना वार्याणाम् ।  
 १,५,२, २४,३ ईशान वार्याणाम् ।  
 ( १४२१ ) ८,७१,१३ ईशो यो वार्याणाम् ।  
 १० ९६,६= १,२३,२०  
 १०,९,७= १,२३,२१  
 १०,९,७= १,२३,२१ १०,५७,४ ज्योक्च  
 सूर्यं दृशे । १०,९,८= १,२३,२२  
 १० ९,९=१,२३,२३  
 [१५४४] १०,११,५ ( ३९२ ) २,२,८  
 [१५४७] १०,११,८ देवी देवेषु यजता यजत्र ।  
 ४,५६,२ देवी देवेभिर्यजते यजत्रैः ।  
 ७,७५,७ देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ।  
 [१५४८] १०,११,९= १०,१२,९ ( हविर्धीन आग्नि । अग्निः )  
 धुधी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा

- रथममुतस्य द्रवित्नुम् ।  
 आ नो वह रोदसी देवपुत्र माकिर्देवानामप  
 भूरिह स्या ।  
 [१५५४] १०,१२,६; १०,१०,२  
 सलक्ष्मा यद्विपुरूपा भवति ।  
 [१५४८] १०,१२,९=१०,११,९  
 [१५६४] १०,१६,८ तस्मिन्देवा अमृता मादयन्ते ।  
 ( १९६३ ) ३,४,११=७,२ ११ स्वाहा देवा — ।  
 [१५७१] १०,२०,१ ( विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुक्रदा  
 वासुक । अग्नि )  
 भद्रं नो अपि वातय मनः ।  
 १०,२५ १ ( विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुक्रदा  
 वासुक । रोम )  
 —वानय मनो ।  
 [१५८०] १०,२०,१० ( विमद ऐन्द्रः, प्राजापत्यो वा, वसुक्रदा  
 वासुक । अग्नि )  
 एवा .. ।  
 इयान इषमूर्जं सुक्षिति विश्वमाभाः ।  
 १०,९९,१२ ( वस्रो वेखानस । इन्द्र )  
 एवा ।  
 स इयान करति स्वस्तिमम्मा इषमूर्जं सुक्षिति  
 विश्वमाभाः ।  
 [१५८१] १०,२१,१ ( ८९३ ) ५,२०,३  
 [१५८१] १०,२१,१ ( ५०७ ) ३,९,८  
 [१५८३] १०,२१,३ ( ४०१ ) २,८,५  
 [१५८६] १०,२१,६ ( १२१४ ) ८,११,१  
 [१५८६] १०,२१,६ अग्ने प्रयत्यध्वरे ।  
 ( ९३८ ) ५,२८,६,  
 ( १४२० ) ८,७१,१२ अग्निं प्रयत्यध्वरे ।  
 [१५८७] १०,२१,७ ( ५१० ) ३,१०,२  
 [१५८८] १०,२१,८ ( २१ ) १,१२,१२  
 [१५९०] १०,४५,२ विद्या ते धाम विभृता पुरुत्रा ।  
 ( १६४७ ) १०,८०,४ अग्नेर्धामानि ।  
 [१५९०] १०,४५,२ ( वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः )  
 विद्या ते नाम परमं गुहा यद्विद्या तमुत्सं  
 यत आजगन्थ ।  
 १०,८४,५ ( मन्व्युगतापसः । मन्व्युः )  
 प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि  
 विद्या तमुत्सं यत आवभूथ ।  
 [१५९१] १०,४५,३ ( १५३४ ) १०,८,१



- [१५९४] १०,४५,६ (४८४) ३,६,५  
 [१५९५] १०,४५,७ (११३७) ७,४,४  
 [१५९७] १९,४५,९ (१४१४) ८,७१,६  
 [१५९८] १०,४५,१०, ५,३७,५  
 प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवति ।  
 [१५९९] १०,४५,११ (६४१) ४,१,१५  
 [१६००] १०,४५,१२, ९,६८,१० अङ्गेषु द्यावापृथिवी  
 हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम् ।  
 [१६००] १०,४६,२ (४१७) २,४,२  
 [१६०४] १०,४६,४ (११६५) ७,१०,५  
 [१६१०] १०,४६,१० यं त्वा देवा दधिरे हव्यवाहम् ।  
 ७,११,४  
 [१६१६] १०,५३,१ (६१०) ३,१९,१  
 [१६१७] १०,५३,२ (१०३७) ६,१५,१५  
 देवा देवता १०,५३,५: ७,३५,१४  
 गांजाता उत ये यज्ञियासः ।  
 १०,५३,५, ७,१०४,२३ पृथिवी नः पार्थिवा-  
 त्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् ।  
 [१६२३] १०,५३,१० येन देवासो अमृतन्मानशुः ।  
 १०,६३,४ बृहद्देवासो— ।  
 [१६३१] १०,६९,७ सहस्रस्तरीः शतनीथ ऋभवा ।  
 १,१००,१२ सहस्रचेता शतनीथ ऋभवा ।  
 [१६३८] १०,७९,२ (५८५) ३,१४,५  
 [१६४५] १०,८०,२ अग्निमही रोदसी आ विवेश ।  
 ३,६१,७ वृषा मही — ।  
 [१६४७] १०,८०,४, (१५९०) १०,४५,२  
 [१६५०] १०,८०,७ (४६८) ३,१,२२  
 [१६५४] १०,९१,४ अरेपसः सूर्यस्येव रश्मय ।  
 ५,५५,३ विरोकिणः सूर्यस्येव — ।  
 [१६६०] १०,९१,१० (३७०) २,१,२  
 [१६६३] १०,९१,१३ (६६७) ४,३,२  
 [१६६४] १०,९१,१४ (८०५) ५,६,५  
 [१६६४] १०,९१,१४ (१३२०) ८,४३,११  
 [१६६७] १०,११५,२ (११३५) ७,४,२  
 [१६७०] १०,११५,५ (१०२५) ६,१५,३  
 [१६७३] १०,११५,८, १,५३,११ त्वां स्तोषाम त्वया  
 सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।  
 [१६७७] १०,१२२,३ (९४७) ६,१,९  
 [१६७८] १०,१२२,४ (८४३) ५,११,२  
 यज्ञस्य कर्तुं प्रथमं पुरोहितं ।

- [१६८१] १०,१२२,७ (७८५) ५,३,८  
 [१६८५] १०,१४०,२ पृणक्षि रोदसी उभे ।  
 ८,६४,४ ओभे पृणासि रोदसी ।  
 [१६८६] १०,१४०,३ (१३९२) ८,६०,४  
 [१६८९] १०,१४०,६ (१७३१) ३,२,५  
 अग्निं सुज्ञाय दधिरे पुरो जना ।  
 [१६८९] १०, १४०, ६ (१०६) १, ४५, ७  
 [१६९८] १०, १५०, १ (५०५) ३, ९, ६  
 [१६९९] १०, १५०, २ (३७) १, २६, १०  
 [१७०१] १०, १५०, ४ अग्निर्देवो देवानामभवत्पुरो-  
 हितः । (१७३४) ३, २, ८ अग्निर्देवानामभव  
 त्पुरोहितः । (२०१३) १०, ११०, ११  
 अग्निर्देवानामभवत्पुरोगा ।  
 [१७०५] १०, १५६, ३ पृथुं गोमन्तमश्विनम् ।  
 ८, ६, ९; ९, ६२, १२, ६३, १२  
 रयिं गोमन्तमश्विनम् ।  
 [१७०६] १०, १५६, ४; ८, ८९, ७; ९, १०७, ७ आ  
 सूर्यं रोहयो दिवि । १, ७, ३ — रोहयदिवि ।  
 [१७११] १०, १८७, १ वृषभाय क्षितीनाम् ।  
 ७, ९८, १ जुहोतन— ।  
 [१७११-१५] १०, १८७, १-५ स नः पर्षदति द्विष- ।  
 [१७१३] १०, १८७, ३ वृषा शुक्रेण शोचिषा ।  
 (२१) १, १२, १२ अग्निः शुक्रेण— ।  
 [१७१६] १०, १९१, १ अग्ने विश्वान्यर्य आ ।  
 ९, ६१, ११ एना — ।  
 [१७१६] १०, १९१, १ स नो वसून्या भर ।  
 ८, ९३, २९ स नो विश्वान्या भर ।  
 [१७१९] १, ५९, ३ ( नोधा गांतम । अग्निर्वैश्वानर )  
 या पर्वतेवोषधीष्वप्सु ।  
 १, ९१, ४ ( गीतमो राहूगण । सोमः )  
 [१७१९] १, ५९, ५ राजा कर्षीनामसि मानुषीणां ।  
 ३, ३४, २ इन्द्र क्षितीनामसि — ।  
 [१७२१] १, ५९, ५ ( नोधा गांतम । अग्निर्वैश्वानर )  
 युधा देवेभ्यो वरिवश्चकथं ।  
 ७, ९८, ३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्र )  
 [१७२५] १, ९८, २ ( कुस आङ्गिरसः । अग्निं वैश्वानरोऽग्निर्वा )  
 पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां ।  
 (१७९५) ७, ५, २ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।  
 वैश्वानरोऽग्निः )  
 पृष्टो दिवि धार्यग्निः पृथिव्यां ।

( १८२८ ) १०, ८७, १ ( पात्युर्भारद्वाज । रक्षोहाऽग्नि )  
**स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् ।**  
 [ १७२८ ] ३, २, २ ( विश्वामित्रो गायिनः । वैश्वानरोऽग्नि )  
**हव्यवाळग्निरजरश्चनोहितो ।**  
 ( ७९, १ ) ५, ४, २ ( वसुधुत आत्रेयः । अग्नि )  
**हव्यवाळग्निरजरः पिता नो ।**  
 [ १७३१ ] ३, २, ५ ( विश्वामित्रो गायिनः । वैश्वानरोऽग्नि )  
**अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जना ।**  
 ( १६८९ ) १०, १४०, ६ ( अग्निः पावकः । अग्निः )  
 [ १७३४ ] ३, २, ८ ( विश्वामित्रो गायिनः । वैश्वानरोऽग्नि )  
**अग्निर्देवानामभवत्पुरोहितः ।**  
 ( २०१३ ) १०, ११०, ११ ( जमदग्निर्भार्गव रामो वा  
 जामदग्न्यः ) अप्रासृक्तं = (स्वाहाकृतय )  
**अग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः ।**  
 ( १७०१ ) १०, १५०, ४ ( मृळीका वासिष्ठ । अग्नि )  
**अग्निर्देवो देवानामभवत्पुरोहितो ।**  
 [ १७३६ ] ३, २, १० ( विश्वामित्रो गायिनः । वैश्वानरोऽग्निः )  
**विशां कवि विश्पतिं मानुषीरिषः ।**  
 ( ७९२ ) ५, ४, ३ ( वसुधुत आत्रेयः । अग्निः )  
**— मानुषीणां शुचि पावकं घृतपृष्ठमग्निम् ।**  
 ( ९४६ ) ६, १, ८ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्नि )  
**— विश्पतिं शश्वतीनां ।**  
 प्रतीक्षाणिमिपयन्त पावकं ।  
 [ १७३७ ] ३, २, ११ ( विश्वामित्रो गायिनः । वैश्वानरोऽग्निः )  
**वैश्वानरः पृथुपाजा अमर्त्यो ।**  
 ( ५४१ ) ३, २७, ५ ( विश्वामित्रो गायिनः । अग्नि )  
**पृथुपाजा अमर्त्यो ।**  
 [ १७५५ ] ३, २६, ३ **स नो अग्निः सुवीर्यं स्वश्च्यं ।**  
 ८, १२, ३३ **सुवीर्यं स्वश्च्यं ।**  
 [ १७६० ] ४, ५ ३ **सहस्रेरेता वृषभस्तुविष्मान् ।**  
 २, १२, १२ **यः सप्तर्दिमवृषभस्तुविष्मान् ।**  
 [ १७६१ ] ४, ५, ४ ( वामदेवो गौतमः । वैश्वानरोऽग्नि )  
**प्र ये भिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया**  
**मित्रस्य चेततो ध्रुवाणि ।**  
 १०, ८९, ८ ( रेणुर्वैश्वामित्रः । इन्द्र )  
**प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम युजं न जना**  
**भिनन्ति मित्रम् ।**  
 [ १७६५ ] ४, ५, ८ **पाति प्रियं रूपो अग्रं पदं वेः ।**  
 ( ४७४ ) ३, ५, ५ **पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः ।**  
 [ १७७७ ] ६, ७, ५ **महान्यग्ने नकिरा दधर्ष ।**

५, ८५, ६ **मही देवस्य नकिरा दधर्ष ।**  
 [ १७७९ ] ६, ७, ७ **वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुः ।**  
 १, १६०, ४ **वि यो ममे रजसी सुक्रतूयया ।**  
 [ १७७९ ] ६, ७, ७ **वैश्वानरो वि दिवो रोचना कवि ।**  
 ९, ८५, ९ **अरू रूचद्वि दिवो रोचना कविः ।**  
 [ १७८१ ] ६, ८, २; ( ३१९ ) १, १४३, २ **स जायमानः**  
**परमे व्योमनि । ( १८०० ) ७, ५, ७ — व्योमन् ।**  
 [ १७८१ ] ६, ८, २ **व्यश्नन्तरिक्षममिमीत सुक्रतुः ।**  
 ( १७७९ ) ६, ७, ७ **वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुः ।**  
 [ १७८५ ] ६, ८, ६ **अस्माकमग्ने मघवत्सु धारय ।**  
 ( ३०१ ) १, १४०, १० — **मघवत्सु दीदिहि ।**  
 [ १७८६ ] ६, ८, ७ **अदब्धेभिस्तव गोपाभिरिष्टेऽस्माकं**  
**पाहि त्रिषधस्थ सूरीन् ।**  
 ( ३२५ ) १, १४३, ८ **अदब्धेभिरदृपितेभिर्गिष्टे**  
**ऽनिमिपद्भिः परि पाहि नो जाः ।**  
 [ १७९५ ] ७, ५, २ **पृष्टो दिवि धाय्यग्निः पृथिव्यां ।**  
 ( १७२५ ) १, ९८, २ **पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः**  
**पृथिव्यां ।**  
 [ १७९५ ] ७, ५, २ **नेता सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।**  
 ६, ४४, २१ **वृषा सिन्धूनां — ।**  
 [ १७९७ ] ७, ५, ४ **अजस्रेण शोचिषा शोशुचानः ।**  
 ( १०९२ ) ६, ४८, ३ — **शोशुचच्छुचे ।**  
 [ १७९९ ] ७, ५, ६ **उरु ज्योतिर्जनयन्नार्याय ।**  
 १, ११७, २१ **उरु ज्योतिश्चक्रुरार्याय ।**  
 [ १८०० ] ७, ५, ७ **स जायमानः परमे व्योमन् ।**  
 ( ३१९ ) १, १४३, २, ( १७८१ ) ६, ८, २ — **व्योमनि ।**  
 [ १८०६ ] ७, ६, ४ ( वसिष्ठो भेन्नावरुणः । वैश्वानरोऽग्निः )  
**शचीभिः ।**  
**अनानतं दमयन्तं पृतन्यन् ।**  
 १०, ७४, ५, ( गौरिवांति आकत्यः । इन्द्र )  
**शचीव दन्द्रमवसे कृणु वमनानतं दमयन्तं पृतन्यन् ।**  
 [ १८११ ] ७, ६३, २ ( ४८१ ) ३, ६, २  
**आ रोदसी अपृणा जायमानः ।**  
 ४, १८, ५ ( १५९४ ) १०, ४५, ६  
**आ रोदसी अपृणाजायमानः ।**  
 [ १८१७ ] ४, ४, ५ ( वामदेवो गौतमः । रक्षोहाऽग्निः )  
**अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामि प्र गृणाहि**  
**शन्नून् ।**  
 १०, ११६, ५ ( अग्निद्युतः स्थौराऽग्निप्रपो वा रथारः । इन्द्रः )  
**अव स्थिरा तनुहि यातुजूनाम् ।**

प्रताप्या शत्रून्विगदेषु वृश्च ।  
 [१८१९] ४,४,७ यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थे ।  
 (९८३) ६,५,५ यस्ते यज्ञेन समिधा य उक्थे ।  
 [१८२५] ४,४,१३ = ( ३४५ ) १,१४७,३  
 [१८२७] ४,४,१५ ( वामदेवो गोतमः । रक्षाहाऽग्निः )  
 अया ते अग्ने समिधा विधेम ।  
 ( ११७५ ) ७,१४ २ ( वामिप्रो मैत्रावरुण । अग्निः )  
 वयं ते अग्ने— ।  
 [१८२८] १०,८७ १, ( १७२५ ) १,९८,२  
 स नो दिवा स रिष पातु नक्तम् ।  
 [१८३१, १८४०] १०,८७,४ १३  
 तामि- ( १३ तथा )- विध्य हृदयं यातुधानान् ।  
 [१८४८] १०,८७ २१ पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्तात् ।  
 ७,१०४,१९ प्राक्तादपाक्तादधरादुदक्तात् ।  
 [१८५०] १० ८७,२३ अग्ने तिग्मेन शोचिषा ।  
 अग्निस्तिग्मेन— । ( २१ ) १,१२,१२  
 [१८५५] १०,११८,३ ( २४८ ) १,७९,५  
 अग्निरीळिन्यो गिरा ।  
 [१८५७] १०,११८,५, ( ५०५ ) ३,९,६,  
 ( १६९८ ) १०,१५०,१ देवभ्यो हव्यवाहन ।  
 १०,११९,१३ देवभ्यो हव्यवाहन ।  
 [१८५९] १०,११८ ७ गोपा ऋतस्य दीदिहि ।  
 ( ५१० ) ३,१०,२ दीदिहि स्वं दमे ।  
 [१८६१] १०,११८,९; ( ८६१ ) ५,१४,२  
 यजिष्ठं मानुषं जने ।  
 ( देवता- १- २३ अश्विनो ) १,११२,१-२३  
 तामिरू पु ऊतिभिरश्विना गतम् ।  
 [१८६३] १०,१८८,१ अश्वं हिनोत वाजिनम् ।  
 ९,६२,१८ हरिं हिनोत वाजिनम् ।  
 [१८६३] १०,१८८,१; ( १९२४ ) १,१३,७, ८,६५,६  
 इदं नो बर्हिरासदे ।  
 [१८७२] १,९५,५ जिह्वानामूर्ध्वं स्वयशा उपस्थे ।  
 २,३५,९ जिह्वानामूर्ध्वो विद्युतं वसान् ।  
 [१८७५] १,९५,८ ( कुम्भ आङ्गिरस । अग्निः, औषसोऽग्निर्वा )  
 त्वेष रूपं कृणुत उत्तरं यन्मपृत्रान मदने  
 गोभिराङ्घ्रिः ।  
 ... .. धीः ।  
 ९,७१,८ ( ऋषयो वैश्वामित्र । पवमानः सोमः )  
 चेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य स यत्रायन्समुता  
 संघति स्थिय ।

स मुष्टुती नसते सं गो अग्रया ।  
 [१८७८] १,९५,११=१,९६,९ ( कुम्भ अङ्गिरसः । अग्निः,  
 औषसोऽग्निर्वा )  
 एवा नो अग्ने समिधा वृधानो रेवत्पाषक  
 श्रवसे वि भाहि ।  
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः  
 पृथिवी उत द्यौः ।  
 [१८७९-८५] १,९६,१-७  
 देवा अग्नि धारयन्द्रविणोदाम् ।  
 [१८८४] १,९६,६ ( कुम्भ आङ्गिरस । अग्निः द्रविणोदा अग्निर्वा )  
 रायो बुध्नः संगमनो वसूना ।  
 १०,६३९,३ ( विश्वावमुर्देवगन्धर्व । सविता )  
 [१८८६] १,९६,८ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य ।  
 १,२५,७ द्रविणोदा द्रविणसो ।  
 [१८८७] १,९६,९=२,९५,११  
 [१८८७-९४] १,९७,१,१-८ अप नः शोशुचदशम् ।  
 [१८८९] १,९७,३ प्रास्माकासश्च सूरयः ।  
 ( ८४० ) ५,१०,६ अस्माकासश्च सूरयो ।  
 [१८९२] १,९७,६; ( ४ ) १,१,४ विश्वतः परिभूरसि ।  
 [१८९७] ४,५८,३ महो देवो मर्त्या आ विवेश ।  
 ८,४८,१२ अमर्त्या मर्त्या आविवेश ।  
 [१९०४] ४,५८,१० अभ्यर्षत मुष्टुतिं गव्यमाजिम् ।  
 ९,६२,३  
 [१९०७] १,१३,२ ( मेधातिथिः ऋष्व । आप्रीसृक्तं=  
 तन्नपात ) मधुमन्तं तन्नपाद् ।  
 ( १९१९ ) १,१४२,२ ( दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसृक्तं=  
 तन्नपात )  
 [१९०७] १,१३,२ अद्या कृणुहि वीतये ।  
 ६,५३,१० नृवत्कृणुहि वीतये ।  
 [१९०८; १२] १,१३,३, ७ अस्मिन्यज्ञ उप ह्ये ।  
 [१९०९] १,१३,४ असि होता मनुर्हितः ।  
 १,१४,११ त्वं होता मनुर्हितो ।  
 ८,३४,८ आ त्वा होता मनुर्हितो ।  
 [१९१०] १,१३,५ ( मेधातिथिः ऋष्व । आप्रीसृक्तं=बर्हिः )  
 स्तृणीत बर्हिरानुषम् ।  
 ३,४१,२ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र )  
 तिस्तिरे बर्हिरानुषम् ।  
 ८,४५,१ ( त्रिशोकः ऋष्व । इद्र, १ अग्नीन्द्रौ )  
 स्तृणन्ति बर्हिरानुषम् ।

[१९११] १, १३, ६ ( मेधातिथि काण्वः । आप्रीसृक्तं= देवी द्वारः )

वि श्रयन्तामृतावृधं द्वारो देवीरसश्चतः ।

( १९२३ ) १, १४२, ६ ( दीर्घतमा औच्यः ।

आप्रीसृक्तं=देवी. द्वारः )

वि श्रयन्तामृतावृधः ।

द्वारो देवीरसश्चतः ।

[१९१२] १, १३, ७ ( मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसृक्तं= उपासानक्ता )

नक्तोपासा सुपेशसा ।

इदं नो वहिरासदं ।

( १९२४ ) १, १४२, ७ ( दीर्घतमा औच्यः ।

आप्रीसृक्तं= उपासानक्ता )

नक्तोपासा सुपेशसा ।

८ ६५, ६ ( प्रगाथ काण्वः । इन्द्रः )

इदं नो वहिरासदं ।

( १८६३ ) १०, १८८, १ ( श्येन आत्रेयः )

जातवेदा अग्निः )

इदं नो वहिरासदं ।

[१९१३] १, १३, ८ ( मेधातिथि काण्वः । आप्रीसृक्तं= दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ )

ता सुजिह्वा उप हथे होतारा दैव्या कवी ।

यज्ञं नो यक्षतामिमम् ।

( १९२५ ) १, १४२, ८ ( दीर्घतमा औच्यः ।

आप्रीसृक्तं=दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ )

मन्द्रजिह्वा जुगुर्णवी होतारा दैव्या कवी ।

यज्ञं नो यक्षतामिमं ।

( १९३७ ) १, १८८, ७ ( अगस्त्यो मैत्रावरुणः ।

आप्रीसृक्तं= दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ )

सुवाचसा होतारा दैव्या कवी ।

यज्ञं नो यक्षतामिमम् ।

[१९१४] १, १३, ९ ( मेधातिथि काण्वः । आप्रीसृक्तं= तिस्रो देव्यः सरस्वतीऽम्भारत्यः )

( १९७१ ) ५, ५, ८ ( वसुधृत आत्रेयः । आप्रीसृक्तं=

इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः ।

बर्हिः सीदन्वस्त्रिधः ।

[१९१५] १, १३, १०; १, ७, १० अस्माकमस्तु केवलः ।

[१९१८] १, १४२, १ ( दीर्घतमा औच्यः । आप्रीसृक्तं= इष्मः समिद्धोऽभिर्वा )

तनुं तनुष्व पूर्यं ।

८, १३, १४ ( नारद काण्वः । इन्द्रः )

—पूर्यं यथा विदे ।

[१९१९] १, १४२, २, ( १९०७ ) १, १३, २

मभुमन्तं तनूनपाद् ।

[१९१९] १, १४२, २ यज्ञं विप्रस्य मावतः ।

१, १७, २ हवं विप्रस्य मावतः ।

[१९२०] १, १४२, ३ ( दीर्घतमा औच्यः । आप्रीसृक्तं= नराजस्य )

गुचिः पावको अद्भुतो ।

८, १३, १९ ( नारद काण्वः । इन्द्रः )

गुचिः पावक उच्यते सो अद्भुतः ।

९, २४, ६ ( असिन काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )

गुचि पावको अद्भुतः ।

९, २४ ७ ( अमित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )

गुचिः पावक उच्यते ।

[१९२१] १, १४२, ४ ( दीर्घतमा औच्यः । आप्रीसृक्तं=इळ )

ईळितो अग्न आ वहेन्द्रं चित्रभिह प्रियम् ।

( १९६६ ) ५, ५, ३ ( वसुधृत आत्रेयः । आप्रीसृक्तं=इळ )

[१९२३] १, १४२, ६; ( १९११ ) १, १३, ६

[१९२४] १, १४२, ७ ( दीर्घतमा औच्यः । आप्रीसृक्तं= उपासानक्ता )

यही ऋतस्य मातरा सीदतां वहिरा सुमत् ।

( १९६९ ) ५, ५, ६ ( वसुधृत आत्रेयः । आप्रीसृक्तं= उपासानक्ता ) यही — ।

९, ३३, ५ ( त्रित आत्रेयः । पवमानः सोमः )

यहीर्ऋतस्य मातरः ।

९, १०२, ७ ( त्रित आत्रेयः । पवमानः सोमः )

यही ऋतस्य मातरा ।

१०, ५९, ८ ( वसुधृतः युतवन्नुर्विप्रबन्नुगोपायनाः ।

द्यावापृथिवी ) यही ऋतस्य मातरा ।

८, ८७, ४ ( ऋण आदिरसो, युग्रीको वा वामिष्ठः,

प्रियमेव आदिरसो वा । अधिनो )

अश्विना बर्हिः सीदतं सुमत् ।

[१९२५] १, १४२, ८ ( १९१३ ) १, १३, ८

[१९२५] १, १४२, ८ ( दीर्घतमा औच्यः । आप्रीसृक्तं= दैव्या होतारौ प्रचेतसौ )

सिधमद्य दिविस्पृशम् ।

२, ४१, २० ( गुत्समद ज्ञानकः । यावापृथिवी हविर्धाने वा )

( ८५५ ) ५, १३, २ ( सुतंभर आत्रेयः । अग्निः )

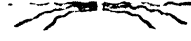
सिधमद्य दिविस्पृशः ।

[१९२८] १, १४२, ११; १, १०५, १४  
 अग्निर्हव्या सुषुदति देवो देवेषु मेधिरः ।  
 ( १९४० ) १, १८८, १० अग्निर्हव्यानि सिष्वदत् ।  
 [१९३४] १, १८८, ४ (अगरन्व्यो मैत्रावरुण । आप्रीसृक्तं=बर्हि )  
 प्राचीनं बर्हिरोजसा महस्रवीरमस्तृणन् ।  
 (१९८४) ९, ५, ४ ( अमित काश्यपो देवलो वा ।  
 आप्रीसृक्तं=बर्हि. )  
 बर्हिः प्राचीनमोजसा पवमान स्तृणन्हरिः ।  
 [१९३७] १, १८८, ७, ( १९१३ ) १, १३, ८  
 [१९४०] १, १८८, १० ( १९२८ ) १, १४२, ११  
 [१९४२] २, ३, १ ( गृत्समद शौनक । आप्रीसृक्तं=  
 डभमः समिद्धेऽग्निर्वा )  
 देवो देवान्यजत्वग्निर्हन् ।  
 ( १४९३ ) १०, २, २ ( त्रित आत्स्य । अग्नि. )  
 [१९४८] २, ३, ७ ( गृत्समद शौनक । आप्रीसृक्तं=  
 देव्यौ होतारौ प्रचेतसां )  
 देव्या होतारा प्रथमा विदुष्टर ।  
 नाभा पृथिव्या अधि सानुपु त्रिपु ।  
 ( १९५९ ) ३, ४, ७ ( विश्वामित्रो गाथिन । आप्रीसृक्तं=  
 देव्यौ होतारौ प्रचेतसौ )  
 ( ४९७ ) ३, ७, ८ ( विश्वामित्रो गाथिनः । अग्नि )  
 देव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्ज ।  
 १०, ६६, १३ ( वसुष्णो वासुकः । विश्वे देवा )  
 —प्रथमा पुरोहित ।  
 ( २००९ ) १०, ११०, ७ ( जमदग्निर्भागवः रामो वा  
 जामदग्नयः । आप्रीसृक्तं = देव्यौ होतारौ प्रचेतसां )  
 — प्रथमा सुवाचा ।  
 ( ५६१ ) ३, २२, ४ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि. )  
 नाभा पृथिव्या अधि ।  
 [१९५०] २, ३, ९ अथा देवानामप्येतु पाथः ।  
 ३, ८, ९; ७, ४७, ३ देवा ( ७, ४७, ३ देवैर् )  
 देवानामपि यन्ति पाथः ।  
 [१९५२] २, ३, ११ ( गृत्समद शौनकः । आप्रीसृक्तं=  
 रवाहाकृतय )  
 अनुष्वधमा वह् मादयस्व ।  
 ( ४८८ ) ३, ६, ९ ( विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः )  
 [१९५८] ३, ४, ६ यथा नो मित्रो वरुणो जुजोषत् ।  
 १, ४३, ३ यथा नो मित्रो वरुणो ।

[१९५९] ३, ४, ७ ( ४९७ ) ३, ७, ८ ( विश्वामित्रो गाथिन. ।  
 आप्रीसृक्तं = देव्यौ होतारौ प्रचेतसां )  
 देव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्ज सप्त पृक्षासः  
 स्वधया मदन्ति । ऋतं शंसन्त ऋतमिक्त  
 आहुरनुव्रतं व्रतपा दीध्यानाः ॥  
 [१९५९] ३, ४, ७, ( १९४८ ) २, ३, ७  
 [१९६०] ३, ४, ८ ( विश्वामित्रो गाथिन । आप्रीसृक्तं=  
 ७, २, ८ ( वसिष्ठो मैत्रावरुण । आप्रीसृक्तं=  
 तिस्रो देव्य सरस्वतीळाभारत्यः )  
 आ भारती भारतीभिः सज्जोषा इळा देवैर्म-  
 नुष्येभिरग्नि । सरस्वती सारस्वतेभिरर्वा-  
 कितस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु ॥  
 [१९६१] ३, ४, ९ ( विश्वामित्रो गाथिन । आप्रीसृक्तं=त्वष्टा )  
 ७, २, ९ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । आप्रीसृक्तं=त्वष्टा )  
 तन्नस्तुरीपमथ पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि-  
 ररणः स्यस्व । यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो  
 युक्तग्रावा जायते देवकामः ॥  
 [१९६२] ३, ४, १० ( विश्वामित्रो गाथिन । आप्रीसृक्तं=  
 वनस्पति. )  
 ७, २, १० ( वसिष्ठो मैत्रावरुण । आप्रीसृक्तं=  
 वनस्पतिः )  
 वनस्पतेऽव सृजोष देवानग्निर्हविः शमिता सूदयाति ।  
 सेदु होता सत्यतरो यजाति यथा देवानां  
 जनिमानि वेद ॥  
 [१९६३] ३, ४, ११ ( विश्वामित्रो गाथिनः । आप्रीसृक्तं=  
 ७, २, ११ वसिष्ठो मैत्रावरुण । आप्रीसृक्तं=  
 स्वाहाकृतयः )  
 आ याहाग्नं समिधानो अर्वाङ्घ्रिणेण देवैः सरथं  
 तुरेभिः ।  
 बर्हिर्न आस्तामदिति. सुपुत्रः स्वाहा देवा अमृता  
 मादयन्ताम् ।  
 ( ८४३ ) ५, ११, २ ( सुतंभर आत्रेय । अग्नि )  
 इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि ।  
 १०, १५, १० ( शङ्खो यामायनः । पितरः )  
 इन्द्रेण देवैः सरथं दधाना ।  
 ( २००२ ) १०, ७०, ११ ( सुमित्रो वा० न्यद्व ।  
 आप्रीसृक्तं=स्वाहाकृतयः ।  
 स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ।  
 [१९६६] ५, ५, ३; ( १९२१ ) १, १४२, ४  
 [१९६९] ५, ५, ६; ( १९२४ ) १, १४२, ७

# देवत--संहितान्तर्गत-

## अग्निमन्त्राणां उपमामूर्त्ती ।



अंशुः इव ५, २९, २२; २३२५ अय आयायताम् ।  
 अंहः न ६, २, ४, ९५५ स मर्त द्विष तरति ।  
 अंहः न ६, ११, ६, १००५ वावमाना वय .. वृजन ।  
 अग्रुवः न ७, २, ५, १२७८ समनेषु [अग्नि शिशु] . समजत्रु ।  
 अघ्न्या कृश न ८, ७५, ८; १३८० देवा नः मा हासु ।  
 अंगिरस्वत् १, ३१, १७; ६६ [अग्ने] मद्ने अच्छ आ याहि ।  
 अगिरस्वत् ८, ४३, १३, ८२२ शुचे, त्वा हवामहे ।  
 अज न १, ६७, ५; १४८ अग्निः...क्षां पृथिवीं च दाधार ।  
 अतस यथा [स्व] ८, ६०, ७, १३९५ क्षमि वृद्ध सजृवसि ।  
 अतसं शुक्लं न ४, ४, ४, १८१६ समिधान, यः नः ।  
 अतिथिः न १, ७३, १, २०५ स्योनशीः [अग्नि] . प्रीणान् ।  
 अतिथिः (न) ६, २, ७, ९५८ प्रिय. . अयि ।  
 अतिथिः न ८, १२, ८, १२३१ अग्नि मित्रियः प्रशसमान् ।  
 अत्य न १, ५८, २; १११ प्रुषितस्य [अग्ने] पृष्ठ... रोचते ।  
 अत्यः रथ्य वारान् दोषवीति न २, ४, ४, ४१९  
 अत्यः न ६, २, ८; ९५९ अग्ने, शिशु [स्व]... ह्यार्यं ।  
 अत्यः न ६, ४, ५, २७५... स्व हुतः पततः पशित् ।  
 अत्यः न १०, ६, २, १५२१. . अपरिहृतः सति ।  
 अत्यः न ३, २, ७; १७३३ सः [अग्नि] अध्वराय परि ।  
 अत्यम् न ७, ३, ५; ११२८ यविष्ठ तं अग्नि नः मर्जयन्त ।  
 अत्यम् न ३, २, ३, १७२२ महो अग्नि वाज सनिष्यन् ।  
 अत्रिवत् ५, ७, ८; ८१८ यस्मै (अग्रये)...परीयते ।  
 अथर्वः न ४, ६, ८; ६८९ य अग्निं द्विः पञ्च स्वसार ।  
 अथर्ववत् ६, १५, १७. १३०९ वेधस इम उ ह्यन ।  
 अथर्ववत् १०, ८७, १२; १३८९ दैव्येन ज्योतिषा सत्य ।  
 अद्भोषः न ६, १२, ३, १००८ ओषधीषु द्रविता अवर्त्रं ।  
 अध्वराः इव ३, ६, १०; ४८९ ऋतजातस्य सुमेके ऋतावरी ।  
 अग्रवानवत् ८, १०२, ४, १४६६ समुद्रवाससं अग्नि आहुवे ।  
 अमतिः न १, ७३, २; २०६ पुरुप्रशस्तः (अग्नि) सत्यः ।  
 अमृतात् इव १०, १७६, ४; १७९० अयम् अग्नि . जन्मनः ।  
 अयः न ४, २, १७; ६६३ सुकर्मणः देवाः जनिम . धमंत ।  
 अयसः धारां न ६, ३, ५ ९६७ सः [अग्निः] असिष्यत् तेजः..  
 अर्वाप्तम् न ४, १५, ६, ७५४ सानसिं तम् दिवेदिवं . ।  
 अर्वाप्तं न ८, १०२, १२; १४७४ सानसिं शुक्तिमणं... गृणीहि ।

अर्वाणम हिगिश्मन् न १०, ४६, ५, १६०५ प्रिय । ।  
 अलशयून् जन इव [अथर्व] ८४, ३६, ९, २३०३ ये  
 अरनी मही सिन्धु इव ५, ११, ५, ८४६ अग्ने, र्वा गिर । ।  
 अविता विश्वासु विश्नु इव ८, ७१, १५, १४२३ ऋप्रगा वरनु ।  
 अशनि यथा दिव्या १, १४३, ५, ३२२ य (अग्निः) वराय ।  
 अशनि. गोपुयुध. सजाना न ६, ३, ५, ९९०  
 अशन्या वृक्षम् इव (अय०) ७, १०९, ४, २३६८ यः अग्यान ।  
 अश्वः गविष्टिषु क्रन्दत् १, ३६, ८, ७५ अग्ने स्व वृषे ।  
 अश्व. न ३, २७, १४, ५५० वृषा देववाहनः अग्निः ।  
 अश्व. न ३, २९, ६, ५६३ वनेषु वात्री अरुप आ विरोचते ।  
 अश्व न ४, २, ८, ६५४ दाश्याय त स्वे दमे हेम्या तान् स्व ।  
 अश्व. न ६, ३, ४; ९६६ (अग्निः) आया यामान् ।  
 अश्व. न यवसे अविष्यन् प्रोयन् ७, ३, २; ११२५ मत् ।  
 अश्व क्रन्दत् जनिभिः न ३, २६, ३, १७५५ युगे युगे ।  
 अश्वास. न रारहाणा. रथ्यः १, १४८, ३, ३५० य [अग्निम्] ।  
 अश्वाः (इव) विषिताम. ६, ६, ४, ९८९ प्रसू नयन् ।  
 अश्वा. इव ८, २३, ११, १२८० तत्र हन्वानाम. मा ।  
 अश्वा. एवै. ससीवन्तः वाजन १०, ६, ६; १५२५ यग्मिन् ।  
 अश्व वाजिन न ७, ७, १, १४४२ सहमान देव अग्नि . ।  
 अश्व रथ्य न ८, १०३, ७, १२६३ सुदानवः दाययः ।  
 अश्वावत् ८, ७२, ६; १४२९ अरय महत् वृहत् योजन ।  
 अश्वाः जात गिष्नु न ३, १, ४, ४५० सस यङ्गी सुभग ।  
 अश्वः इव (अथर्व०) १२, २, ५०; २२६३ अग्निः अन्तिकान् ।  
 अश्वं अश्वाभिधान्या इव (अय०) ४, ३६, १०, २३०४  
 अश्वाय इव (अथर्व०) १२, ५५, १; २२६९ अस्म घाम्य ।  
 अश्वाय इव (अथर्व०) १९, ५५, ६, २२७४ अस्मै घाम्यम् ।  
 अश्वमिदं ८, ७४, १०. १४५१ गां रथया [अग्नि] त्वयं ।  
 अमश्वता इव १०, ६९, ८; १६३२ समना सवर्षुकं स्वं ।  
 असिः गां इव १०, ७९, ६; १६४२ अक्रोडन क्रीडन् हरिः ।  
 असुरः इव ८, १९, २३, १२४६ अग्निः निर्णिज उन् च ।  
 अस्ता इव १, ७०, ११; १८४ [अग्नि] शूर . ।  
 अस्ता इव ६, ३, ५; ९६७ [स्वकीया ज्वालाम्] अमिष्यन् ।  
 अस्तु दिद्युत् न १, ६६, ७; १४० स्वेषप्रतीका ।  
 अस्तुः अशानां शयां न १, १४८, ४, ३५१ अस्व शोचिः ।

आन्मा इव १,७३,२, २०६ अग्निः . शेषः ।  
 आप इव प्रवता ३,५,८; ४७७ ... शुभमाना प्रस्वः ।  
 आपि (यथा) आपये यजति १,२६,३, ३० तथा स्वमपि ।  
 आयु न ६,११,४; १००३ य सुमयस पञ्च जनाः . भजते ।  
 आरौकाः इव ८,४३,३, १३१२ अग्ने तव तिग्मा त्रिषः ।  
 आशुम् न १,६०,५; १२३ वाजंभर त्वां (अग्निम्) ।  
 आशुम् न ४,७,११, ७०३ अर्वा (अग्निः) [स्वरदिम्] ।  
 आशुम् इव अग्निषु मसि १०,१५६,१ १७०३ न. धियः ।  
 इन्द्र न ६,४,७, ९७७ शवसा त्वा नृतमा देवता ।  
 इन्द्र न ८,७४,१०, १४५१ मन्वतिम्, (हं) कृष्टय ।  
 इन्द्र न १०,६,५, १५२४ रेजमान अग्नि गीभिः ।  
 इन्द्रस्य इव ७,६,१, १८०३ चन्द्रमान [अहम्] तवसः ।  
 इषिराय भोज्या न १,१२८,५, २८७ अस्य अग्नेः ।  
 उग्र शवसा न १,१२७,११, २८२ अग्ने शवसा ।  
 उग्र इव ६,१६,३९, १०८० शयहा [अग्निः अस्ति] ।  
 उग्र इव ८,१९,१४; १२३७ स. सुभगः जनान् युम्ने ।  
 उपमित रोध न ४,५,१; १७५८ अनूनेन बृहता वभ्रयेन ।  
 उरुव्यञ्ज इव दिविरुक्म ५,१,०२; ६६६ गविष्ठिर... अश्रेत् ।  
 भानुता उपम न ६,१५,५; १०२७ य. [अग्निः] रुक्वे ।  
 उपयाम् इव १०,९१,४; १६५४ चिकिप्र ते इतयः संति ।  
 उपसां केतवः इव ८,४३,५, १३१४ एते ते अग्नयः ।  
 उपसा केतव न १०,९१,५ १६५५ चिकिप्र तव केतव ।  
 उपः जार न १,६९,१, १६४ शुक्र. [अग्निः] [भवति] ।  
 उपः जार न १,६९,९, १७२ विभावा सज्ञानरूप ।  
 उप जार न ७,१०,१; १६६१ पृथु पाजः अश्रेत् ।  
 उम्नः पिता इव ६,१२,४, १००९ इवन्नः यज्ञे जारयाधि ।  
 उम्ना इव प्रस्तातीः ८,७५,८, १३८० देवाः ..न. मा हासु ।  
 ऊध मातु [प्रतियथा वन्माः उपजीवन्ति] १०,२०,२;  
 १५७२ [तद्वत्] यस्य धर्मन् स्वर एनीः सपर्यन्ति ।  
 ऊध. न गौना १,६९,३, १६६६ अग्नि .. पितृनां स्वाग्र ।  
 ऊर्मा सिन्धो. उपाके आ १,२७,६; ४३चित्रभानो विभक्तसि ।  
 ऊर्मय सिन्धो. प्रस्वनितास इव १,४४,१२, ९७ अग्नेः ।  
 ऊर्मि नाव न ८,७५,९; १३८१ समस्य, दृष्यः परिद्वेषसः ।  
 ऊर्मय प्रवणे न ८,१०३,११; १२६७ धिया वाज सिषासत ।  
 ऊमु न ६,३,८; ९७० खेप. रथमानः [अग्निः] .. अघौत् ।  
 ऊपिः न १,६६,४, १३७ [अग्निः] स्तुभ्रा [अस्ति] ।  
 एकाम् इव ३,७,४, ४९३ दिष्टतः अग्नि रोदसी वि ।  
 एतरा न ६,१२,४, १००९ अस्माकेभिः शूवेः अग्निः .. स्ववे ।  
 ओकः न १,६६,३; १३६ [अग्निः] रणवः ।  
 औशिज पत्मन् न दीयन् ६,४,६, ९७६ चित्रः शोचिषा ।  
 कन्या इव अज्ञि अज्ञानाः वहतु ४,५८,९, १९०३ वहतुं ।

कविम् इव ८,८४,२; १४५५ प्रचेतसं यं देवासः मर्येषु ।  
 कुमार न १०,७९,३; १६३९ मातु प्रतर गुह्यं इच्छन् ।  
 क्रतुः न १,६६,५; १३८ [अस्ति] नित्यः ।  
 क्रतुम् न ४,१०,१; ७२० तम् त्ते (त्वा) ओहैः स्तोमैः ऋध्याम ।  
 क्रतुः न १,६७,२, १४५ ... [अग्निः] भद्रः ।  
 क्षामा इव त्रिषा भुवनानि ६,५,२; ९८० यस्मिन् पात्रके ।  
 क्षितिः पृथ्वी न १,६५,५; १२८ [विदनीर्णा भूमिः इव ।]  
 क्षिति राया न ४,५,१५; १७७२ सुदशीकरूप पुरुवारः ।  
 क्षेम. न १,६७,२. १४५ [अग्निः] साधुः ।  
 क्षोद. न १,६५,५; १२८ शंभु (यथा उदकं सुखं करोति) ।  
 क्षोदः न १,६५,६, १२९ [अग्नि] सिन्धुः स्वन्दनशालं ।  
 क्षोद विन्धु न १,६६,१०; १४३ [अग्नि] नीची ऐनोन ।  
 स्वादिनम् न ६,१६,४०, १०८१ यं स्वध्वरं अग्निम् ।  
 गर्भ इव गर्भिणीषु सुधितः ३,२९,२; ५५९ जातवेदाः ।  
 गर्भ इव योन्या प्रच्युत. अथ० ६,१२१,४; २३८९ सर्वान् ।  
 गविषः द्रापं दविधमन् ४,१३,२; ७४१ यत् रश्मय ।  
 गिरिः न १,६५,५, १२८ भुजा (सर्वेषां भोजयिता ।)  
 गुहा इव ३,१,१४; ४६०... स्वे सदसि वृद्धं अग्नि नव ।  
 गावः अस्त न १,६६,९, १४२ तं व. (त्वा) इद्धं अग्निं ।  
 गावः वाश्राय प्रतिहर्यते ८,४३,१७, १३१६ अग्ने, ममस्तुतः ।  
 गावः उष्ण व्रजम् इव १०,४,२; १५०७ यविष्ट, त्वां जनासः ।  
 गावः वाश्राः न (वा०) ९,५,६; १८७३ उभे मेने... एवैः ।  
 गा. खिले विष्टिताः इव (अथ०) ७,११५,४; २२०४ एता ।  
 गा. स्व जरायुम् इव (अथ०) ६,४९,१, २३३७ कपिः ।  
 गावः श्यावी उच्छन्ती अरुषीं न १,७१,१; १८५ सनीलाः ।  
 गो. पद्म् न ४,५,३, १७६० अग्नि . अषगृहं मनीषां ।  
 गोपाः पशून् न ७,१३,३, १८१२ हर्यः परिजमा, अग्ने ।  
 गौर्यं यथा ह त्यत् पद्विषितां ४,१२,६, ७३९ एवो ।  
 प्रावा सोता इव ४,३,३, ६६८ (तस्मै) देवाय शस्ति ।  
 प्रावा इव ५,२५,८, ९१८ बृहत् [स्वम्] उच्यते ।  
 घनाः इव १,३६,१६, ८१ तपुर्जम्भ, भराव्यः विष्वक् .. ।  
 घर्मः न ५,१९,४; ८८९ [अग्निः] वाजजटरः अदक्यः ।  
 घृतं न अघ्न्याया. तपं शुचि ४,१,६; ६३२ देवस्य महना ।  
 घृतं पूतं न ४,१०,६, ७२५ स्वयावः, ते तनूः... भोपाः ।  
 घृत न अस्ये [प्रहुतं] यज्ञे सुपूतं ५,१२,१; ८४८ वृषभाय ।  
 घृतं शुचि न ६,१०,२; ९९४ मतयः ..यं शूवं सोमं अस्मै ।  
 आसनि कं घृत न ८,३९,३, १३०२ अग्ने, तुभ्यं मन्मानि ।  
 घृतं शुचि इव १०,९१,१५; १६६५ अग्ने ते भास्ये... ।  
 घृतं पूतं न ३,२,१; १७२७ ऋतावृधे वैश्वानराय... ।  
 चक्षणिः वस्तोः न ६,४,२; ९७२ सः अग्निः... विभावा ।  
 चन्द्रम् सुरुचं इव २,२,४, ४८८ [देवाः] अग्निं स्वहारे ।

चर्म इव ४,१३,४; ७४३ सूर्यस्य रश्मयः अप्सु अनाः .. ।  
 चर्मणी इव ६,८,३; १७८२ वैश्वानरः धिषणे अवर्तयत् ।  
 चित्रः यामन् अश्विनोः न ३,२९,६; ५६३ वनेषु वाजी ।  
 छाया इव १,७३,८; २१२ स्व अग्निः विश्व भुवन ।  
 छायाम् इव ६,१२,३८, १०७९ अग्ने, घृगोः ते शर्म वय ।  
 जनयः नित्य पति न १,७१,१; १८५ उशतीः सनीळा ।  
 जनयः शुभमाना १०,११०,५, २००७ व्यचस्वतीः ।  
 " " (वा०य०) २९,३०; २१२२ " ।  
 जनयः न पतिरिष ४,५,५, १७६२ दुरेवाः पापाम. सन्तः ।  
 जनयः सुपत्नी (यथा) वा०य० २०,४०; २०१८ इन्द्र दुरः ।  
 जनयः पत्नीः न वा०य० २० ४३, २०२१ इन्द्रं जुषाणाः ।  
 जन्म तनय न ३,१५,२, ५८९ अग्ने, मे स्तोम नित्य ।  
 जाया योनौ इव १,६६,५; १३८ [अग्निहोत्रादिगृहे ।]  
 जाया परये उशती सुवासाः ४,३,२, ६६७ अथ ते योनिः ।  
 जाया परये उशती सुवासाः १०,९१,१३, १३६३ [अहम् ।]  
 जारः आ १०,११,६; १५४५ ... भगं पितरा उदीरय ।  
 जूर्यः इव पुरि ६,२,७, ९५८ [अग्ने] स्व रणव ।  
 तक्वीः इव १०,९१,२; १६५२ वने वने सिधिये ।  
 तक्वा न १,६६,२; १३५ [अग्निः] भूर्णि ।  
 ततरुष न ६,१२,२; १००७ जहः [त्रिषध.स्थ ।]  
 तन्यतुः यथा ५,२५,८, ९१८ दिवः ते स्वान आर्त ।  
 दिवः तन्यतु. न ७,३,६; ११२९ ते शुभः एति ।  
 तरणिः इव १,१२८,६; २८८ अतिः अग्निः दक्षिणे हस्ते ।  
 तस्कराः तनु स्वजा इव १०,४,६; १५११ वनर्गुः दशभि ।  
 तक्विर् इव १,९४,७, २६२ दुरे चित सन् अति रोचसे ।  
 तातृषाणः न २,४,६, ४२१ यः अग्निः .. वना आभाति ।  
 तापुं पश्वा (सहवर्तमानं) न १,६५,६, १२४ धीराः सजोषाः ।  
 तापुः गुहा पदं दधानः न ५,१५,५; ८७० महः राये अग्निः ।  
 तापुः क्रगः न ६,१२,५; १०१० यः रुधः स्पन्द्रः विषितः ।  
 तोदः अध्वन् न ६,१२,३ १००८ वृधसानः वनेराट् अग्निः ।  
 तोदस्य शरणे महस्य आ १,१५०,१; ३५८ अग्ने, तव स्विन् ।  
 त्रष्टा रूपा इव ८,१०२,८, १४७० अयं [अग्निः] नः .. ।  
 यथा अग्नेये इकाभि ७,३,७; ११३० अग्ने, नः तेभि ।  
 त्रिष्टुत् अस्तुः त्वेषप्रतीका न १,६६,७, १४० [अग्निः] ।  
 दिवः उयोतिः न १,६९,१; [अग्निः] समीची प्रपा ।  
 दिवः शिशुं न ४,१५,६ ७५४ अरुषं त दिवे दिवे ।  
 दिवः न ४,१०,४, ७२७ अग्ने ते शुभमाः प्रस्तनयन्ति ।  
 दिवः न ५,१७,३; ८७८ यस्य [अग्ने] रेतसा व्याप्त ।  
 दिवः न ६,३,७, ९६९ विधत यस्य [अग्ने] .. ।  
 दुग्धम् न ५,१२,४, ८८९ जाम्यो रुचा [अग्नि] शृगोतु ।  
 दूतः जग्ध. मिश्र्यः इव २,६,७ ४३९ कवे अग्ने, उभया ।

देवः न १,७३,३, २०७ [अग्नि] ... विश्वधारयः ।  
 घाम् इव परिजमानं १,१२७,२, २७३ चर्षणीनां होतार ।  
 घौः स्तुभि न २,२,५, ६८९ [अग्नि] रोदसी ।  
 घौ नभोभिः स्सयमानः २,४,६; ४२१ ... कृष्णाया तपुः ।  
 घाम् इव स्तुभिः ४,७,३. ६९५ विश्वेषां अध्वराणां ।  
 घौः न १,६५,३, १२६ .. भूम अभुत् ।  
 घाव. न १०,११५,७, १६७२ [ऋतायव] युष्मे संति ।  
 घौ स्तनयन् इव १०,४५,४; १५२२ अग्नि अक्रन्दत् ।  
 द्रविः न ६,३,४, ९६६ [अग्निः] एतत् दारु द्रावयति ।  
 देवो युतः न ५,९,६, ८३३ . मर्यानां दुरिता तुर्याम् ।  
 धनुः इव (अधर्व०) ४,४,६, २१६२ ... पम आ तनय ।  
 धन्वाराहा न १,१२७,३, २७४ नि.षहमाण (अग्नि) ।  
 धायोभि वा ६,३,८, ९७० यः [अग्नि] युज्येभि ।  
 धारा उदन्या इव २,७,३; ४४३ वग विश्वा द्विप. ।  
 धामिम् इव १,१४०,१; २९२ सुद्युते अग्नये योनिम् . ।  
 धीर स्वेन इव १,१४५,२, ३३४ [अग्निः] मनसा ।  
 धेनव स्वसरेषु वत्स न २,२,२; ३८६ [अग्ने] त्वा ।  
 धेनुः दुहाना (इव) २,२,९, ३०३ [अग्ने स्वदीया] वीः ।  
 धेनो मंहना इव ४,१,६; ६३२ देवस्य महना स्याहा ।  
 धेनुम् इव ५,१,१; ७५५ आयतीं उपारां प्रति जनानां ।  
 धेनुः सुदुघा इव ७,२,६, १९७९ उपामा नक्ता सुविताय ।  
 धमाता इव ५,९,५, ८३२ यत् [अग्निः] ईम् उपधमति ।  
 धमातरी यथा ५,९,५, ८३२ .. (स्वयमेव स्वात्मान ।  
 नभः रूपं न १,७१,४०, १९४ (स्व) कवि सन् अभि ।  
 नभन्यः अर्वा १,१४९,३; ३५५ अग्नि अत्यः कवि ।  
 नराम् न १,१४९,२, ३५४ यः रोदस्योः वृषा ।  
 नारी इव अनवद्या पतिजुष्टा १,७३,३, २०७ अग्निः अग्नि ।  
 नेमिः अरान् न १,१४१,९; ३१३ अग्ने यत् सीम क्रतुना ।  
 नेमिः चक्रम् इव २,५,३; ४२७ अग्नि ... विश्वानि काव्या ।  
 नेमिः अरान् इव ५,१३,६, ८५९ अग्ने स्व देवान् ।  
 नेमिं क्रमव यथा ८,७५,५, १३७७ अग्निः महतिथि ।  
 नावा सिन्धुम् न ५,४,२, ७९८ जातवेदः नः विश्वानि ।  
 नावा इव ५,२५,९; ९१९ अग्नि. नः विश्वा द्विपः ।  
 नावा इव सिन्धु १,९९,१; १८६२ अग्नि न विश्वा ।  
 नावा इव १,९७,७, १८२३ विश्वनोमुत्सव, नः द्विपः ।  
 नावया सिन्धुम् इव १,०,७,८; १८९४ सः एव न स्वस्याय ।  
 पयः न धेनुः १,६६,२; १३५ (पयः इव प्रीणयिता) ।  
 परशु न द्रुहतरः १,१२७,३, २७४ दीधान. अग्निः ।  
 परशु न ४,६,८, ६८९ तिग्मं स्वास दन्त अग्निम् ।  
 परशुः न ६,३,४, ९६६ [अग्निः] . जिह्वा विजेहमानः ।  
 परिजमा इव ६,२,८, ९५९ अग्ने [स्व] [सर्वभग] ।



परिजमा इव ६, १३, २, १०१३ दस्मवर्चाः क्षयसि ।  
 पय्या इव ६, ८, ५ १७८४ राजन्, अजर, .. तेजसा ।  
 पशु न शिक्षा १, ६५, १०, १३३ अग्नि शिक्षा अभूत् ।  
 पशु न २, ४, ७, ४२२ अग्नि . स्वयु अगोपा एति ।  
 पशु न दाता ५, ७, ७, ८१७ सहिष्म आक्षित धन्य . ।  
 पशु न यवसे ५, ५, ४, ८३१ अग्ने (त्व) वना .. पुरु ।  
 पशु न यवसे ६, २, ९०; ९६० अग्ने, त्वं त्याचित ।  
 पशु इव अवसृष्ट १०, ४, ३, १५०८ [दिवान्] जिगीषसे ।  
 पशु नष्ट पदे. न १०, ४३, २, १६०२ धीरा. भवां सध स्ये ।  
 पशुपा इव १, ४४, ६, ३३१ अग्ने, त्व दिव्यस्य पार्थिवस्य ।  
 पशुपा इव ४, ६, ४; ६८५ अग्नि त्रिविष्टि .. परि एति ।  
 पशुपा इव १०, १४२, २; १६९१ न. धिय. .. त्मना ।  
 पशुपे न १, १२७, १०, २८१ उपबुधे अग्ने व स्तोम ।  
 पाथ. न २, २, ४; ३८८ पायु पृथ्या. पतरं अक्षभिः ।  
 पितृमान् इव १, १४४, ७, ३३२ अग्ने, त्वं संदृष्टो रण्वः ।  
 पिता सूनवे इव १, १, ९, ९ अग्ने, न. . स्यायन ।  
 पिता सूनवे इव १, २६, ३; ३० अग्ने (पितृस्थानीय. ।)  
 पितु न जिमेः १, ७७, १०, १८३ [अग्ने] त्वा नरः पुरुषा ।  
 पितु न १, १२७, ८, २७९ यस्य आसया अमी विश्वे ।  
 पिता इव २, १०, १, ४०९ जोहूत्र. प्रथम. अग्निः यत् ।  
 पितु यथा ८, ७५, २६, १३८८ अग्ने, ते अवसः वय पुरा ।  
 पिता पुत्रम् इव १०, ६९, १०; १६३४ सपर्यन् वाधयश्चः... ।  
 पितरा इव ३, १८, १, ६०५ अग्ने, त्वं उपेतां सुमनाः ।  
 पित्रो (डा) ७, ६, ६, १८०८ रोदरस्योः उपस्थ वैश्वानर ।  
 पुत्रा. पितुः न १, ६८, ९; १६२ ये अस्य (अग्नेः) शाम ।  
 पुत्रः न १, ६६, ५, १६८ जातः अग्निः .. दुरोणे रण्वः ।  
 पुत्रः मातग न १०, १, ७; १४९१ अग्ने, (त्व) द्यावा ।  
 पुत्र. पितुः न ८, १९, २७, १२५० सुष्टतः [अग्निः] न. ।  
 पुष्टिः रण्वा न १, ६५, ५, १२८ (अग्नि. सर्वेषां ।)  
 पुष्टिः स्वस्य इव २, ४, ४, ४१९ अस्य पुष्टिः रण्वा ।  
 पृ न मही आयसी शतभुजिः ७, १५, १४, ११९० अग्ने ।  
 पूर्ववत् ३, २, १२, १७६८ सः जन्तवे धन जनयन् ।  
 पृष्ठाचीना वृजिता च इव ४, २, ११, ६५७ विद्वान् [अग्नि ।]  
 प्रया धन्यन् इव १०, ४, १; १५०६ हे अग्ने [त्व] असि ।  
 प्रयाः मरुता इव ३, २९, १५, ५७२ ब्रह्मणः प्रथमजाः सति ।  
 प्रयुक्ति मरुतां न ६, ११, १; १००० अग्ने .. [अस्मच्छ्रन् ।]  
 प्रसितिः श्वरस्य इव ६, ६, ५, १९० अग्नेः क्षातिः . अग्नि ।  
 प्रसिति पृथ्वी न ४, ४, १, १८१३ ... पाजः कृणुष्य ।  
 प्राणः आयुः न १, ६६, १; १३४ (प्रश्नसन् चायुरिव अग्नि.।)  
 वन्तुग इव ३, १४, ३, ५८२ ते उपास. दुरोणे तस्थतुः ।  
 वृत्ती इव १, ५०, ४, १७२० गेदसां युतव [अभूताम् ।]

भगः इव १, १४४, ३; ३९८ हव्यः सारथिः (सन्) ।  
 भगः ऋतुपाः इव ३, २०, ४, ६१७ दैवीनां क्षितीनां नेता  
 भगः न ५, १६, २, ८७२ अग्निः ... चारं वि ऋष्वति ।  
 भगम् इव १, १४१, ६, ३१० होतार अग्नि पृष्ठानासः ।  
 भगं दक्ष न १, १४१, ११, ३१५ अग्ने, अस्मं पर्णसि ।  
 भग न १, १४१, १०, ३१४ हे महिरन, नवं त्वा वय ।  
 भगस्य भुजिम् इव ८, १०२, ६, १४६८ भुजि समुद्रवाससं ।  
 भद्रे न १, ९५, ६; १८७३ [एनं अग्नि] उभे भद्रे मेने .. ।  
 भार गुरु न ४, ५, ६, १७६३ अग्ने, क्रियते [स्वदीयं कर्म]  
 भारभृत् यथा ८, ७५, १२, १३८४ [तथा] अस्मिन् महाधने ।  
 भीमः न १, १४०, ६, २९७ दुर्गभिः... शृङ्गा दविधाव ।  
 स्वजेन्यं भूम पृष्ठा इव ५, ७, ५, ८१५ ईम् [अग्नि] घृतस्य ।  
 भूमा विश्व इव ८, ३९, ७, १३०६ मः मुदा पुरु काप्या... ।  
 भृगुवत् ८, ४३, १३, १३२२ शुचे त्वा... हवामहे ।  
 भृगुवत् और्व ८, १०२, ४, १४६६ समुद्रवारुम अग्नि... हुवे ।  
 भोज्या मरुतां न १, १२८, ५, २८७ अस्य अग्नेः तविधीषु ।  
 भ्राता इव स्वस्त्रां १, ६५, ७; १३० (अग्नि हितकारी अस्ति) ।  
 मधो पात्रा न ८, १०३, ६, १२६२ अस्मि अग्नये... प्रयंति ।  
 मध्या न ५, १९, ३, ८८८ जन्तवः कृष्टय एना ।  
 मन. न १, ७१, ९, १९३ यः एकः सूर अध्वन . एति ।  
 मनुवत् २, १०, ६, ४१४ [वधम्] ... वदेम ।  
 मनुष. यथा (सीदन्ति) १, २६, ४; ३१ तथा वरुणः, मित्रः ।  
 मनुषः यथा यजेभिः ६, ४, १, ९७१ एवा नः अथ समना ।  
 मनुष्यत् १, ३१, १७; ६६ अगिरः, सद्ने अच्छ आयाहि ।  
 मनुष्यत् २, ५, २, ४२६ पोता अष्टम देव्य विश्व ... इष्वति ।  
 मनुष्यत् ३, १७, २; ६०१ अध इमं यश प्रतिर ।  
 मनुष्यत् ५, २१, १, ८९५ अग्ने, त्वा निधीमहि ।  
 मनुष्यत् ५, २१, १, ८२५ अग्ने, त्वा समिधीमहि ।  
 मनुष्यत् ५, २१, १, ८९५ अगिरः अग्ने, देवयते ... देवान् ।  
 मनुष्यत् ७, २, ३; १९७६ मनुता समिद्ध अग्नि महेम ।  
 मनुष्यत् ७, ११, ३, ११६८ अग्ने, देवान् इह यक्षि ।  
 मनुष्यत् ८, ४३, १३, १३२२ शुचे, त्वा हवामहे ।  
 मनुष्यत् ८, ४३, २७, १३३६ त्वां जनासः इन्धते ।  
 मनुष्यत् १०, ७०, ८, १९९९ यज्ञ इळां देवी घृत्पदी जुषन्ता ।  
 मनुष्यत् १०, ११०, ८, २०१० चेतयन्ती इह इळा ।  
 मनुष्यः न १, ५९, ४, १७२० दक्ष. होता वैश्वानराय प्रायुक्त ।  
 भमता इव ६, १०, २, ९९४ मतयः ... यं शूषं स्तोमं पवंते ।  
 मर्मेजेन्य. उशिग्भि न १, १८९, ७; ३६७ अग्ने अक्रः त्वं ।  
 मर्यं वाजिन न ८, ४३, २५; १३३४ विश्वायुवेषसं हित ।  
 माता इव ५, १५, ४; ८६९ पप्रधानः [त्वं] जनजन... भरसे ।  
 मित्रम य शेषम १, ५८, ६; ११५ जनेभ्यः सुहवं वरेण्यं दधुः

मित्रः न १,७७,३, २३६ सः [अग्नि] रथीः ... अभूत् ।  
 मित्रम् इव १,१४३,७; ३२४ समिधानः अग्निं ऋजते ।  
 मित्रम् न २,२,३; ३८७ देवाः शुक्रशोचिषं अिरतेषु ।  
 मित्रः इव २,४,१, ४१६ य जातवेदा देवः ... भूत् ।  
 मित्रं न (क्षेप्यन्त.) २,४,३, ४१८ देवाम क्षेप्यन्तः ।  
 मित्रः न ४,६,७, ६८८ ... सुधित पावकः अग्नि दीदाया ।  
 मित्रम् न ५,३,२, ७८० सुधितं गोमि अङ्गन्ति ।  
 मित्रम् न ५,१६,१, ८७१ मर्तासः [अग्निं] प्रशस्तिभिः ।  
 मित्रः न ६,२,१; ९५२ अग्ने, एवं क्षैतवत् यशः पत्यसे ।  
 मित्रं न ६,१५,२, १०२४ मृगव सुधित य दधुः ।  
 मित्रं न ८,२३,८; १२७७ ऋतावनि जने सुधितम् ।  
 मित्रं न ८,७४,२, १४४३ सर्पिरासुति जनासः क्षमति ।  
 मित्रम् इव ८,८४,१, १४५४ प्रिय वः श्रेष्ठ अतिथिं रतुषे ।  
 मित्रम् इव १०,७,५, १५३१ प्रयोग अग्नि भायव ।  
 मित्रम् न २,२,३; ३८७ देवाः शुक्रशोचिषं क्षितिषु ।  
 मित्रः इव २,४,१, ४१६ यः देवः जातवेदा त्रिधिषाययः ।  
 मित्रः न ५,१०,२, ८३६ यज्ञियः एवं ऋणा [भव] ।  
 मित्रः न ६,२,१; ९५२ अग्ने, एवं क्षैतवत् यशः ।  
 मित्रं न ६,१३,२; १०१३ वृद्धत ऋतस्य, क्षत्ता अस्ति ।  
 मित्रं प्रियं न ६,४८,१; १०९० अमृत जातवेदस वयः .. ।  
 मित्रं न ८,१०२,१२, १४७४ यातयजन्तं शुष्मिणः . गृणीहि, ।  
 मित्रः यथा, वरुण, इन्द्रः ३,४,६, १९५८ तथा उपासानक्तं ।  
 मित्रास न १०,११५,७; १६७२ सुधिता ऋतायव ।  
 मृगाः क्षिपणः ईषमाणा इव ४,५८,६; १९०० एते घृतस्यः ।  
 मेता इव ४,६,२, ६८३ [अग्नि] धूमं धाम् उप ।  
 मेष इव (अध०) ६,४९,२; २३३८ यत् उत्तरद्रौ उपरः च ।  
 यथा ऋतुभिः देवान् देवः, १०,७,६, १५३२ एवं, आ यजा ।  
 यज्ञ प्रजानन् यथाभय ४,२३,२, २३३१ एवा देवेभ्य न ।  
 यथातिवत् १,३१,१७, ६६ अगिर, सद्ने अच्य आ याति ।  
 यवः न पक्वः १,६६,३, १३६ पक्वः यवः इव उपभोग योग्य ।  
 यवः वृष्टि इव २,५,६; ४३० तामा (जुह्वाङ्गीनाम्) आगतौ ।  
 यवं न ७,३,४, ११२७ दस्य, [त्र] जुह्वा विवेक्षि ।  
 यवसा पुष्यते इव १०,१२,५, १५४४ एवं सदा रणवः अस्ति ।  
 यद्गम् न ५,१६,४; ८७४ रोदसी श्रवः तमित परि ।  
 याता इव १,७०,११, १८४ भीमः अग्निरपि दृष्टमाग्नेण ।  
 यामन् तूर्त्नं न ६,१५,५; १०२७ एतन्नस्य रणं य ।  
 युयुधयः न १०,११५,४; १६६९ रणवासः ऋत्विज सन्ति ।  
 युवत्योः [न] १०,३,७; १५०५ दिवस्पृथिव्यो .. अरतिः ।  
 युवतयः युवानं अरमेराः २,३५,४, २४२५ मर्म्यमानाः ।  
 यूथा इव क्षुमति पशुः ४,२,१८; ६६४ देवानां यत् ।  
 यूथम् न ५,२,४ ७७० अहं सुमनं पुरु शोभमानं अन्तान् ।

योधः शत्रून् न १,१४३,५; ३२२ अग्निः वनानि ऋजते ।  
 योषण अत्रातर न ४,५,५, १७६२ दुरेवाः पापासः ।  
 योषाः समगा इव ४,६८,८; १९०२ कल्याण्यः स्मयमानास ।  
 रघवः वाजम् न ४,५,१३, १७७० का मर्यादा, वयुना ।  
 रथः न १,५८,३, ११२ देवः विक्षु .. आयुषु ऋजमान ।  
 रथ न १,६६,६, १३९ रुक्मी [अग्नि] ।  
 रथः शिकभिः कृतः न १,१४१,८, ३१२ यातः (मन्) ।  
 रथ न ३,१५,५, ५९२ अग्ने, रुक्मि. त्व न वाज .. ।  
 रथः न स्वान ५,१०,५, ८३९ अग्ने, धृष्ण्या भ्राजन्त्य ।  
 रथ न ८,१९,८, १२३१ [अग्नि] वेधः ।  
 रथम् इव १,९४,१, २५६ जातवेदसे मर्तापया इम स्तोमा ।  
 रथम् इव २,२,३; ३८७ देवाः तं वेध अग्निम् न्येरिरे ।  
 रथम् न ऋतः ४,२,१४, ६६० सुधयः आशुषाणा ।  
 रथम् न ५,२,११, ७७७ तुविजात, विप्रः अह ते पूत ।  
 रथम् न ८,८४,१, ११५४ वेध अग्नि रतुषे ।  
 रथम् न १०,४,६, १५११ शुचयद्भि अङ्गं ... युंक्ष्व ।  
 कुलिशः रथ न ३,२,१, १७२७ द्विता होतार मनुषः ।  
 रथम् न ३,२,१५, १७४१ मन्त्रं विश्वचर्षणिं चित्रं ईमहे ।  
 रथाम. एक नियानं बहवः १०,१४२,५, १६९४ ददध्रं ।  
 रथः न १०,१७६,२, १७०९ य अभीवृत्तः ।  
 रथी इव ४,१५,२, ७५० अग्निः अध्वर परि याति ।  
 रथी इव ८,७५,१, १३७३ अग्नेः देवहृतमानं युंक्ष्व ।  
 रथ यथा १०,२१,७, १६५७ अग्ने, यक्षतः ते अजराणि ।  
 रथी पतीन् इव अथर्व० ७,६२,१; २३७३ अग्निः अजयत ।  
 रथ्या इव २,४,६, ४२१ [अग्निः] .. स्वानीत् ।  
 रथि. न १,६६,१, १३४ [अग्निः] चित्रः ।  
 रथिः पितृवित्तः इव १,७३,१ २०५ यः [अग्निः] वयोधाः ।  
 रथिः न देवतातये १,१२७,९, २८० अग्ने, शुष्मिन्तमः ।  
 रथिः इव १,१२८,१; २८३ अग्निः श्रवस्थते . [भवति] ।  
 रथिः यथा वीरवतः ७,१५,५; ११८१ [तथा] यस्य श्रियः ।  
 रथि चारु न १,५८,६, ११५ [अग्ने] मृगवः त्वा आदधुः ।  
 रथिम् इव १,६०,१, ११९ प्रशस्त [अग्नि] मानरिश्वा भरत ।  
 रथि न १,१४१,११, ३१५ अस्मै स्वयं दमूनसं ... पृष्टायि ।  
 रथमयः ध्रुवासः सूर्ये न १,५९,३, १७१९ वैश्वानरं अग्ना ।  
 रथीन् यमति इव १,१४१,११; ३१५ स उभे जन्मनी ।  
 रथीन् सारथिः वोळुः १,१४४,३, ३२८ हव्य सारथिः ।  
 राजा इभ्यान् न १,६५,७; १३० [अग्निः] वनानि . अस्ति ।  
 राजा अजुर्वम् इव १,६७,१; १४४ मित्रः [अग्नि] . ।  
 राजा हितमित्रः न १,७३,३; २०७ [यः अग्निः] .. उपेक्षति ।  
 राजा इव ६,४,४; ९७४ अवृक्तं क्षेप्यन्त जे ।  
 राजा न ६,९,१; १७८७ जायमानं अग्निः .. योतिषा ।

राजा भमवान् ह्येन इव ४,४,१, १८१३ [अग्ने, स्व याहि।]  
 राजानम् विशः इव ६,८,४; १७८३ . [स्रोतारः ।]  
 रुक्म न ४,१०,५; ७२४ अग्ने, स्वादिष्टा तव मरुष्टि ।  
 रुक्म. न ४ १०,६; ७२५ स्वधाव , ते शुचि हिरण्यः रोञ्चते।  
 रुक्मः न ७,३,६, ११२९ स्वर्नाक, यत् ..उपाके ।  
 रभ न ६,३,६; ९६८ सः [अग्निः]...उस्त्रा प्रति वस्ते ।  
 रभः (ऋषगा भग्ने) न १,१२७,१०, २८१ ऋषगां [मध्ये]।  
 बन्दना वृक्षम् इव (अथ०) ७,११५,२; २२०२ या पतयालः।  
 वषग (यूथे साह्वान्) न १,५८,५, ११४ तपुर्जम्भ वाति ।  
 वंसग तिग्मश्टग. न ६,१६,३९, १०८० अग्ने, स्व .. ।  
 वस्व. [इव] ८,७२,५, १४२८ चरन रुदान् इह निदातारं ।  
 वस्वाम. मातृभि न ८.७२,१४, १४३७ जामिभि नसना ।  
 वना इव १,१२७,३, २७४ यस्य [अग्ने] समृता वीळु ।  
 वना इव १,१२७,४, २७५ य [अग्निः] पुरुणि गाहते ।  
 वनिनः वयाः न ६,१३,१, १०१२ अग्ने, स्वत् विश्वा ।  
 वनिनं न ६,८,५; १७८४ अजर, अधशस नीचा... वृश्च ।  
 वनेराट् [न] ६,१२,३; १००८ यस्य [अग्नेः] भरतिः ।  
 वता इव १०,१४२,४, १६९३ यदा वानः ते शोचि ।  
 वयाः इव २,५,४; ४२८ अस्य [अग्नेः] भ्रुवा व्रता विद्वान् ।  
 वयाम् प्र उजिजहानाः इव ५,१,१, ७५५ अस्य यद्वाः ।  
 वया. (उपक्षित.) इव ८,१९,३३, १२५६ अग्ने, अन्य ।  
 वया. इव ६,७,६, १७७८ सप्त विस्वहः...वैश्वानरस्य ।  
 वयथाः इव २,३,६, १९४७ उपायानकं . राण्वते तत् ।  
 वरुण. यथा १०,११,१, १५४० स' [अग्निः] धिया वेद ।  
 वरुणः न १,१४३,४; ३२१ य. एकः वस्वः [अग्निः] ।  
 वर्म स्थृत इव १,२१,१,५, ६४ अग्र, स्व नर पाणि ।  
 वर्म युसु इव १,१४१,१०; ३०१ [स्व] परिजर्भुराणः भव ।  
 वसुम् न १०,१०२,१, १६७५ चिभ्रमहम् [अग्निम्] गृणीषे।  
 वस्त्रेग इव १,१४०,१, २९२ योनि [योनिस्थान] ...।  
 वाङ्मि न १०,११५,३, १६६८ आसा . [हविः] वहतां ।  
 वाजयन् इव २,८,१, ३९७ यशसामस्य मीळहुष अग्नेः ।  
 वाज्यु न ५,१०,५, ८३९ अग्ने घृणुया आजनय यति ।  
 वाजी न १,६६,४; १३७ [अग्नि] प्रीतः [अस्ति] ।  
 वाजी न प्रीतः १,६९,५, १६८ [अग्नि.] विशाः ..विनारीता ।  
 वाजी न सर्गेषु प्रस्तुमान ४,३,१२; ६७७ अग्ने, मधुमद्भि ।  
 वाजिन न ४,६,५, ६८६ अस्य [अग्नेः] शोकाः द्रवति ।  
 वाजी मन् (इव) ४,१५,१, ७४९ होता अग्निः न. अघरे ।  
 वाजी न ६,२,८, ९५९ अग्ने, [स्व] कृष्य. ।  
 वाजी अरुपः न ४,५८,७; १९०१ घृतस्य धारा. भवति ।  
 वातः इव १,७९,१; २४४ हिरण्यकेशः अहिः धुतिः ... ।  
 वाता न १०,११५,४; १६६९ पक्षीः अच्युता [प्रभावा] ।

वायुः न ६,४,५, ९७५ राष्टी ..अक्तून् भत्येति ।  
 वायुं न ६,४,७, ९७७ शवसा...त्वा नृतमाः पृणति ।  
 वायु पाथः न ७,५,७; १८०० परमे ष्योमन् जायमानः ।  
 वार् न २,४,६, ४२१ य. अग्निः ... पथा [गच्छति] ।  
 वार् इव ४,५,८, १७६८ उस्त्रियाणां यत् ...अप मन् ।  
 वे. न ६,३,५; ९६७ अग्निः.. रघुपत्मजंहाः हुषद्वा ।  
 विं न १०,११५,३, १६६८ हुषद् देवम् अग्निम् ।  
 विदे यथा [ददति] १,१२७,४, २७५ अस्यै दळ्हा चित् दुः ।  
 विद्युत् न ३,१,१४; ४६० शुक्रा. बृहन्तः भानवः सचंत ।  
 विद्युतः परिजमान न ५,१०,५, ८३९ अग्ने, घृणुया ।  
 विद्युत् न ६,३,८; ९७० य. [अग्निः] रवेभि शुष्मैः . . ।  
 विद्युत् वर्यस्य इव १०,९१,५; १६५५ चिकिभ्र, भ्रियः संति ।  
 विपः न ८,१९,३३; १२५६ तव क्षत्राणि वर्धयन् ।  
 विप्र(जातवेदसं) न १,१२७,१, २७२ होतारं अग्नि मन्वे ।  
 विप्र न ६,१५,४, १०२६ शुभ्रवचस हव्यवाहं ... कजसे ।  
 विप्रः न ८,४४,२९, १३७१ अग्ने, ...सदा जागृविः अस्ति ।  
 विश्वपतिः रेवान् इव १,२७,१२; ४९ सः अग्निः शृगोतु ।  
 विश्वपति जेन्थ न १,१२८,७; २८९ अग्नि. यज्ञेषु ।  
 विश्व. विश्वाम् न १,७०,४; १७७ अमृतः अग्निः .. ।  
 वीराः शर्मसदः न १,७३,३, २०७ [यस्य अग्नेः] पुरः वर्तते ।  
 वृजन न ६,११,६, १००५ वावसानाः [वयं] .. सलेम ।  
 वृषभस्य इव १,९४,१०, २६५ अग्ने, ते रवः अस्ति ... ।  
 वृषभ शृंगशिशानः यथा ८,६०,१३; १४०१ [तया] अग्निः ।  
 वृषभ. न १०,४,५, १५१० अस्त्राता अपः प्र वेति ।  
 वृषा इव १,१४०,६; २९७ अग्नि (नमन्) ..रोरुवत् ।  
 वृषा इन्. प्रोयमानः यवसे न १०,११५,२; १६६७ अभि ।  
 वेधसे न ३,१०,५, ५१३ विषां ज्योतीषि विश्रते...भरत ।  
 व्याघ्र गोमतां इव (अथ०) ४,३६,६; २३०० [अहम्] ।  
 शमिता न देव [वा० य०] २०,४५; २०२३ वनस्पतिः ।  
 शर्धः मारुत् न १,१२७,६, २७७ [अग्नि] तुविष्वणि ।  
 शर्धः मारुत् न ४,६,१०, ६९१ ते स्वेपारा; अर्धयः ... ।  
 शर्म सुनवे वीळु न १,१२७,५; २७६ अस्य आयुः अभूत् ।  
 शर्यहा इव ६,१६,३९. १०८० त्वम् उग्रः [अस्ति] ।  
 शर्यहा उग्र इव (वा) स्वं शत्रूणां पुरः शरीजिभ ।  
 शामु चिकितुषः न १,७३,१; २०५ यः [अग्निः] ।  
 शिवाभि. स्मयमानाः १,७९,२. २४५ [अग्निः विद्युन्नि] ।  
 शिशु नव यथा ५,९,३; ८३० यम् अग्नि अरणी जनिहा ।  
 शिशु जात न ६,१६,४०, १०८१ अग्निम् हस्ते आ ।  
 शिशु न १०,४,३; १५०८ माता जेन्थं त्वा...वर्धयन्ती ।  
 शिशुं न ६,७,४. १७७६ जायमानं त्वा...विश्वे देवाः नवते ।  
 शिशं मातरा न ७,२,५; १९७८ पूर्वी विहाणे समनेषु ।

सूरः इव १०, ६९, ५; १६२९ धृष्णुः च्यवनः अग्निः ।  
 सूरः इव १०, ६९, ६; १६३० धृष्णुः च्यवनः जनानाम् ।  
 सूरस्य स्वेषयात् वयः इव १, १४१, ८; ३१२ स्वेषयात् अग्ने ।  
 सूरस्य प्रसितिः इव ६, ६, ५, ९९० अग्ने क्षातिः दुर्वतुः ।  
 सुहृथः हेषस्वतः न ६, ३, ३; ९६५ अयं वनेजाः अक्तोः ।  
 शेषः जने न १, ६९, ४; १६७ अग्निः.. मध्ये आहृत्यः ।  
 इयेनाय दिवः ७, १५, ४, ११८० अग्रये नव सोमम् ।  
 इयेनासः न ४, ६, १०, ६२१ स्वेषासः ते अच्येय ... गच्छंति ।  
 श्रुष्टीवानः न १, १२७, ९; २८० अजर ते ... परिचरन्ति ।  
 श्वेतः न १, ६६, ६, १३९ यत् अभात् तदा .. (श्वेत आदित्य ।  
 संवयन्ती तत तन्तुं पेशामा वा० य० २०, ४१; २०१९ देवाना ।  
 ससद् पितृमती इव ४, १, ८; ७३४ अग्निः सदा रण्यः ।  
 मत्वा सख्ये यथा १, २६, ३, ३० तथा अग्ने मद्यं अभीष्ट देहि ।  
 मत्वा सख्ये इव ३, १८, १, ६०५ अग्ने उपेतौ नः .. भव ।  
 सचा मन् सहायसे राज्ञे १, ७१, ४, १८८ भृगवाणः इम् ।  
 सत्याः यशस्वती अपस्युव १, ७९, १, २४४ उपसः नवेदा ।  
 ससिम् न ३, २२, १, ६२३ जातवेदः सहस्त्रिण अन्यम् ।  
 सासि न ८, ४३, २५, १३३४ सुवेपसं अग्निं वाजयामसि ।  
 ससय इव १०, १४२, २, १६९१ नः धियः.. सनिषंत ।  
 सवम् इव १, ६७, १०; १५३ धीराः [अग्नि] .. समाय चक्रुः ।  
 समनम् पृथिव्या अग्नये (अथ०) ४, ३९, ४, २२८० एवं मद्य ।  
 समिधा जातवेद इध्मेन अथ० १९, ३४, २, २३५२ तथा खं ।  
 सरजन्तम् न १०, ११५, ३, १६६८ अध्वनः [राजयन्तम्] ।  
 सरितः घेनाः व ४, ५८, ६, १९०० घृतस्य धाराः स्ववंति ।  
 सवातरी तेजसा (वा० य०) २८, ६; २०८९ सुदुधे मही ।  
 सविता देवः न १, ७३, २, २०६ [यः अग्निः] सत्य० ।  
 सविता इव ४, ६, २; ६८३ [अग्निः] भानु . ऊर्ध्वं ।  
 सवितुः यथा सवम् ८, १०२, ६, १४६८ अग्निं आहुवे ।  
 सविता बाहू इव १, ९५, ७, १८७४ औषसः अग्निः .. ।  
 ससं पकं न १०, ७९, ३; १६३९ शुचन्तं रिप उपस्थे अविदत् ।  
 ससृवांसम् इव ३, ९, ५, ५०४ इत्यात्मना तिरोहितं अग्नि ।  
 साधी इव १०, १४२, २; १६९१ अग्ने, त्वं विश्वा न्यूजसे ।  
 साधुः न १, ७०, ११; १८४ [अग्नि] ... गृधुः ।  
 सारथिः वीळहुः रश्मीज १, १४४, ३; ३२८ हव्यः सारथिः ।  
 सिंहम् इव ३, ९, ४; ५०३ अट्टहुः निचिरामः स्निधः ।  
 सिंहं क्रुद्धं न [मृगाः] ५, १५, ३, ८६८ शत्रव मां परिष्टुः ।  
 सिंहं न नानदत् ३, २, ११, १७३७ प्रजज्ञिवान् वृषामः जिन्वते ।  
 सिंहं ज्ञानः (अथ०) ४, ३६, ६; २३०० ते [पिशाचः] ।  
 सिञ्चतीः इव १०, २१, ३; १५८३ धर्माणः जुहुमि ।  
 सिन्धवः नीचीः न १, ७२, १०, २०४ अग्नेः सृष्टाः क्षरंति ।  
 सिन्धवः समुद्राय इव ८, ४४, २५, १३६७ अग्ने गिरः ईरते ।

सिन्धो इव ४, ५८, ७, १९०१ प्राध्वने शूधनामः ।  
 सिन्धव (भान्वक्ष्म.) १, १४३, ३; ३२० भान्वक्ष्मः ।  
 सूनुः न नित्य १, ६६, १; १३४ (ध्रुव पुत्रः इव प्रियकारा ।)  
 सूनुः न ६, २, ७, ९५८ [अग्ने, त्व] प्रययाद्यः ।  
 सूरः न १, ६६, १; १३४ [अग्नि] सट्क ।  
 सूर मिह न १, १४३, १३, ३१७ अमीचवस न अग्नि ।  
 सूर न १, १४२, ३; ३५५ अय अग्नि रुक्मान शतामा ।  
 सूर न ६, २, ६; ९५७ पावक, त्व सुता रोचसे ।  
 सूर न ६, ३, ३; ९६५ यस्य दशति .. अरेया ।  
 सूरः न ७, ३, ६, ११२९ चित्र भानु प्रति चक्षि ।  
 सूर्यः न ६, ४, ३, ९७३ शुक्रः भासासि वस्ने ।  
 सूर्यः भानुमदि अर्के न ६, ४, ६, ९७६ अग्ने, त्व भामा ।  
 सूर्यं न ६, १२, १, १००६ सः अय सहसः सूनु नतान् ।  
 सूर्यः न ७, ८, ४; ११५२ नृहद्रा अग्निः .. विरोचते ।  
 सूर्यः सृजन् न ८, ४३, ३२, १३४१ अग्ने त्वं रश्मिभिः ।  
 सूर्यः इव ८, १०२, १५, १४७७ अस्य [अग्नेः] उपट्क ।  
 सूर्य इव १०, ६९, २; १६२६ सर्पिगसुति . रोचते ।  
 सूर्यस्य इव १०, ९१, ४; १६५४ चिकित्त्र ते रश्मयः.. ।  
 सूर्यं चक्षुषि इव ५, १, ४ ७५८ देवयता मनांसि अग्नि ।  
 सूर्यं चक्षु न ६, ११, ५; १००४ यजः अश्रायि ।  
 सूर्यस्य दिवि शुक्र यजतमिव १०, ७, ३, १५२९ नृहतः ।  
 सृष्टा सेना इव १, ६६, ७, १४० [अग्निः] भय दधाति ।  
 सृष्टा सेना इव १, १४३, ५; ३२२ य अग्नि वराय न ।  
 सृष्टा सेना इव ७, ३, ४; ११२७ ते [अग्ने] प्रमितिः एति ।  
 सेना प्रगधिनी इव १०, १४२, ४; १६९३ पृथक् पृथि ।  
 सोमाः इव ५, २७, ५, ९३२ बापन् यापि ।  
 सोमा न १०, ४६, ७; १६०७ वायवः अग्नयः ।  
 सोम चम्बि इव १०, ९२, १५, १६६५ अग्ने ते आस्ये ।  
 सोमः इव ६, ८, १; १७८ वैश्वानराय अग्नये नव्यमी पवते ।  
 सोमः न १, ६५, १०, १३३ अग्नि . वेधा ।  
 सोमस्य अंशुः इव (अथ०) ५, २९, १२, २३१६ अय ।  
 स्थूणा उपमित् इव १, ५९, १; १७१७ अग्ने त्व उपमित् ।  
 सस यहीः स्ववतः समुद्र न १, ७१, ७; १९१ विश्वा पृश्ना ।  
 स्वधितिः इव ५, ७, ८; ८१८ शुचि पम यस्मै [अग्नये] ।  
 स्वधितिः पूता इव ७, ३, ९; ११३२ शुचिः [अग्निः] निरगान् ।  
 स्वधितिं न ३, २, १०, १७३६ ह्यः मानुषीः विशा अकृण्वन् ।  
 स्वनः मरुतां इव १, १४३, ५, ३२२ यः [अग्निः] वराय ।  
 स्वनाः न १०, ३, ५, १५०३ यस्य भामामः .. पवन्ते ।  
 स्वर चित्रं विभाव न १, १४८, १; ३४८ यं मनुष्यासु विक्षु ।  
 स्वर न २, २, ७; ३९१ अग्ने, धावापृथिवी . ब्रह्मगा कृधि ।  
 स्वर न २, २, ८; ३९२ सः [अग्नि] राम्याः उषसः दीदेत् ।

स्वर न २,२,१०, ३९४ अस्माक पञ्च कृष्टिषु अधि।  
स्वर भानुना न २,८,४. ४०० चित्रः अग्नि . विभाति।  
स्वर न ४,१०,३, ७२२ ज्योतिः।  
स्वर न ७,१०,२, ११६२ उपमां [अग्ने] तन्मो... अरोचि।  
स्वर न ४,६,३, ६८४ नवजाः स्वर उदु अक्क।  
हमः न मीदन् १,६५,९, १३२ [अग्नि] आसु इवामिति।

हनवः न ८,६०,३३: १४०१ अस्य [ज्वाला.] तिग्माः।  
हस्तिनं मशका. इव ४,३६,९, अथ० २३०३ ये लपिताः।  
हस्य यथा वहसि ४,२३,२, अथ० २३३१ एव जातवेद।  
होता इव १,७३,१, २०५ प्रीणानः [अग्नि.] विधतः रुभ।  
ह्वारः अनाकृत. वक्क. १,१४१,७, ३११ यद् [अयं अग्निः।]  
ह्वार्याणा पुत्र. न ५,९,४, ८३१ ... [अग्ने एव दुर्गभीषसे।]

## देवत-संहितान्तर्गत-अग्निमंत्राणां सूची ।

अंडोयुवस्तन्वस्तन्वतं	८६८	अग्नि विश्वा अभि पृश्न.	१९१	अग्निमीलेन्य कवि	८६४
अकर्म ते स्वपयो अभूम	६६५	अग्नि विश्वायुवेपसं	१३३४	अग्निमीले पुरोहित	१
अकारि ब्रह्म समिधान	६९२	अग्नि वो देवमग्निभि.	११२४	अग्निमीले भुजां	१५७२
अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव	१५९२	अग्नि वो देवयज्यया	१४२०	अग्निमुत्थैर्कपयो	१६४८
अक्रो न बभ्रिः समिधे	४५८	अग्नि वो वृधन्तम्	१४६९	अग्निंरत्रि भरद्वाजं	१७०२
अक्षानहो नह्यतनोत	६६२०	अग्नि सुदीति सुदशं	६०३	अग्निरामासृतीषहं	१०२१
अक्षयौ३ नि विभ्य	२३०८	अग्नि सुभ्नाय दधिरे	१७३१	अग्निरस्मि जन्मना	१७५६
अगन्म महा नमसा यविष्ठ	११७१	अग्नि सूनु सनध्रुतं	५२१	अग्निराग्नीध्रात् सुष्ठुभः	२३४१
अग्न आ याहि वीतये	१०५१	अग्नि सूनु सहसो	१४१९	अग्निरिद्धि प्रचेता	१०१९
अग्न आ याह्यग्निभि	१३८९	अग्नि स्तोमेन बोधय	८६०	अग्निरिषां सख्ये	१४२१
अग्न इन्द्रश्च दाशुषो दुरोगे	५३५	अग्नि हिन्वन्तु नो धियः	१७०३	अग्निरीशे वृहतः क्षत्रियरय	७३६
अग्न इळा समिधसे	५२८	अग्नि होतार प्र वृणे मियेधे	६१०	अग्निरीशे वृहतो अध्वरस्य	११६९
अग्न ओजिष्ठमा भर	८३५	अग्नि होतार मन्ये दास्वन्तं	२७२	अग्निर्जातो अथर्वणा	१५८५
अग्नये ब्रह्म ऋभन	१६५०	अग्नि होतारमीळते वसुधिति	२९०	अग्निर्जातो अरोचत	८६३
अग्नया यो मर्यां दुवो	१०१८	अग्नि. परेषु धामसु	२१८३	अग्निर्जाता देवानामग्निः	१३०५
अग्नावग्निश्चरति	२२८२	अग्निः पूर्व आ रभतां	२०८७	अग्निर्जुषत नो गिरो	८५६
अग्नाविष्णु महि तद्वां	२४५३	अग्नि पूर्वभिक्रपिभिः	२	अग्निर्ददाति सत्पतिं	९१६
अग्नाविष्णु महि धाम	२४५४	अग्निः प्रत्नेन मन्मना	१३५४	अग्निर्दात् द्रविण	१६४७
अग्नि घर्मं सुहृत्	१८६७	अग्नि. प्राणान्स दधाति	२३४४	अग्निर्देवेभिर्मनुषश्च	१७४७
अग्नि घृतेन वावृधुः	८६५	अग्नि. प्रात सवने	२३७२	अग्निर्देवेषु राजति	९१४
अग्नि च हस्यवाहनम्	४१५	अग्नि. शुचिचततमः	१३६३	अग्निर्देवेषु संवसुः	१३०६
अग्नि तं मन्ये यो वसु	८०१	अग्नि. सनोति वीर्याणि	५३३	अग्निर्देवो देवानाम्	१७०१
अग्नि दूतं पुगे दधे	१३४५	अग्नि. ससिं वाजभर	१६४४	अग्निर्द्यावापृथिवी विश्वजन्ये	५३४
अग्नि दूतं वृणीमहे	१०	अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा	२१६८	अग्निर्धिया स चेतति	५२०
अग्नि देवासो अग्निग्रम्	१०८९	अग्निः स्रुचो अध्वरेषु	२०७६	अग्निर्न शत्रून् प्रत्येतु	२१५२
अग्नि देवासो भानुषीषु	४१८	अग्निनाग्नि. समिधते	१५	अग्निर्नेता भग इव	६१७
अग्नि द्वेषो योतवे	१४२३	अग्निना तुर्वशं यदु	८३	अग्निर्नो कृत प्रत्येतु	२१५६
अग्नि धीभिर्मनीषिणो	१३२८	अग्निना रथिमभवत	३	अग्निर्नो यज्ञसुप वेतु	८४५
अग्नि नरो दीधितिभि.	११००	अग्निमग्नि वः समिधा	१०२८	अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्	१३५८
अग्नि मन्द्रं पुरुप्रियं	१३४०	अग्निमग्नि वो अग्निगुं	१४०५	अग्निर्वनस्पतीनाम्	२१६६
अग्नि मन्ये पितरमग्निम्	१५२९	अग्निमग्नि हवीमभिः	११	अग्निर्वज्रे सुवीर्यम्	८२
अग्नि यन्तुरमन्तुरम्	५४७	अग्निमच्छा देवयतां	७५८	अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद्	१०७५
अग्नि वः पूर्यं हुवे	१२७६	अग्निमस्तोत्यृगिमयम्	१३००	अग्निर्ह रथं जरतः	१६४६
अग्नि वर्धन्तु नो गिरो	५१४	अग्निमिन्धानो मनसा	१४८४	अग्निर्ह नाम धायि	१६६७
अग्नि विश इळते	१६४९	अग्निमीळिष्वावसे	१४२२		

अग्निर्हि वाजिनं विशे	८०३	अग्ने त्वं नो अन्तम उत	९०७	अग्ने युक्त्वा हि ये तव	१०८४
अग्निर्हि विघ्नना निदो	१०२२	अग्ने त्वं पारया नव्यो	३६२	अग्ने रक्षाणो अहसः	११८९
अग्निर्होता कविऋतुः	१	अग्ने त्व यशा अस्मि	१२९२	अग्नेरममः समिदस्तु	१६४५
अग्निर्होता गृहपतिः	१०३५	अग्ने त्वच यातुधानस्य	१८३२	अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य	४०२
अग्निर्होता दास्वत	८२९	अग्ने त्वमस्मद युयोध्य	३६३	अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य	२३३०
अग्निर्होता नो अध्वरे	७४९	अग्ने दा दाशुषे रयि	५३१	अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृताना	२७
अग्निर्होता न्यसीदद्	७६०	अग्ने दिवः सुसुराणि	५३२	अग्नेर्वर्म परि गोभिः	११६३
अग्निर्होता पुरोहितो	५१८	अग्ने दिवो अर्णमच्छा	६२५	अग्ने वाजस्य गोमत	२४७
अग्निष्टे नि शमयतु	२१८७	अग्ने देवां इहा वह जजानो	१२	अग्ने त्रिवस्वदुपमः	८३
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा	१०६९	अग्ने देवां इहा वह सादया	२२	अग्ने विश्वानि वार्या	५२६
अग्निस्तुविश्रवस्तम	९१५	अग्ने युञ्जन् जागृवे	५२९	अग्ने विश्वेभिः स्वर्नाक	१०३८
अग्निस्त्रीणि त्रिधातूनि	१३०८	अग्ने षृतव्रताय ते	१३६७	अग्ने विश्वेभिरग्निभिः	५३०
अग्नी रक्षांसि सेधति	११८६	अग्ने नक्षत्रमजरम्	१७०६	अग्ने विश्वेभिर्ग गहि	९२३
अग्नीषोमा चेति तवृ	२४६८	अग्ने नय सुपथा रायं	३६१	अग्ने वीहि पुरोळाशम्	५५४
अग्नीषोमा पिपृतम्	२४७६	अग्ने नि पाहि नस्त्वं	१३५३	अग्ने वीहि हविषा यश्नि	१२०६
अग्नीषोमा य आहुति	२४६७	अग्ने नेमिररां इव	८५९	अग्ने वृधान आहुति	५५७
अग्नीषोमा यो अथा	२४६६	अग्ने पन्तीरिहा वह	२४	अग्ने शक्रेम ते वय	५३९
अग्नीषोमावनेन वां	२४७४	अग्ने पावक रोचिषा	९२०	अग्ने शर्धं महते सौभगाय	९३५
अग्नीषोमाविमं सु मे	२४६५	अग्ने पूर्वा अनृषसो	९५	अग्ने शुक्रेण शोचिषा उरु	१५८८
अग्नीषोमाविमानि नो	२४७५	अग्ने प्रेहि प्रथमो	२२२१	अग्ने शुक्रेण शोचिषा विश्वामि	२१
अग्नीषोमा सवेदमा	२४७३	अग्ने वृहन्नुपसामूर्ध्वो	१४८५	अग्ने स श्वेपदतपा	९६३
अग्नीषोमा हविष	२४७१	अग्ने भव सुषमिधा	१२०४	अग्ने समिधमाहार्ष	२३५१
अग्नेः सांतपनस्याहं	२३९१	अग्ने भूरीणि तप जातवेदो	६१६	अग्ने महन्तमा भर	९०३
अग्नेः स्तोमं मनामहे	८५५	अग्ने भ्रातः सहस्कृत	१३२५	अग्ने सहस्व पृतना	५२७
अग्ने अक्रव्याञ्चिः	२२५५	अग्ने मन्मानि तुभ्यं कं	१३०२	अग्ने सुचतमं रथं	१९०९
अग्ने अपां समिध्यसे	५३६	अग्ने माकिष्टे देवस्य	१४१६	अग्ने स्तोम जुपस्य	१३४४
अग्ने कदा त आनुषग्	६९४	अग्ने मृळ महौ अस्मि	७१२	अग्ने स्वाहा० (इन्द्राय यज्ञ०)	२०८३
अग्ने कविर्वेधा अस्मि	१३९१	अग्ने य यज्ञमध्वर	४	अग्ने स्वाहा० (इन्द्राय हव्य०)	२०७१
अग्ने केतुर्विशामसि	१७०७	अग्ने यजस्व हविषा	४०६	अग्ने हस्मि न्यश्त्रिण	१८१३
अग्ने घृतस्य धीतिभिः	१४७८	अग्ने यजिष्ठी अध्वरे	५१५	अवशसनुःशसाभ्यां	२२३०
अग्ने चिकिद्धयस्य न	९०२	अग्ने यत् ते तपस्तेन	२१४४	अचिक्रदत्त स्वपा इह	२१५९
अग्ने जरस्व स्वपत्य	१७४८	अग्ने यत् ते तेजस्तेजः	२१४८	अचेत्यग्निश्चिकितु	२४५५
अग्ने जरितर्विंशपति	१४०७	अग्ने यत् ते दिवि वर्चः	६२४	अच्छ त्वा यन्तु हविनः	२१६०
अग्ने जातान् प्र णुदा	२१९३	अग्ने यत् तेऽर्चिस्तेन	२१४६	अच्छा गिरो मतयो	१६६३
अग्ने जुषस्व नो हविः	५५२	अग्ने यत् ते शोचिस्तेन	२१४७	अच्छा न शीरशोचिर्णं	१४१८
अग्ने जुषस्व प्रति हर्यं	३३२	अग्ने यत् ते हरस्तेन	२१४५	अच्छा नो अङ्गिरस्तम	१२७९
अग्ने तमद्याश्चं न स्तामैः	७२०	अग्ने यदद्य विशो	१०३६	अच्छा नो मिग्रमहां	९६२
अग्ने तव रथे अजर	१२८०	अग्ने याहि दूत्यसमा	११५९	अच्छा नो याहा वह	१०८५
अग्ने तव श्रवो वयो	१६८४	अग्ने याहि सुशस्तिभिः	१२७५	अच्छायमेति शवसा घना	२०७५
अग्ने तृतीये सवने हि	५५६				
अग्ने त्री ते वाजिना त्री	६१५				

अन्त्यायमेति शत्रुसा नृतेन	२०६३	अधा यथा नः पितरः	६६२	अस्वग्ने सधिष्टव	१३१८
अन्त्रा यो अग्निमवसे	९११	अधाद्यग्निर्मानुषीयु	४७२	अबोधि जार उषसाम्	११५५
अन्त्रा बोधेय शुशुचानम्	६४५	अधा इ यद्दयमग्ने	६६०	अबोधि होता यजथाय	७५६
अन्त्रा हि स्वा सहस्रः	१३९०	अधा हि विक्ष्वीह्यो	९५८	अबोधयिनः समिधा	७५५
अन्त्रिद्रा शर्म जरित.	५९२	अधा होता न्यसीदो	९४०	अभि तं निर्कतिर्धत्ताम्	२३०४
अन्त्रिद्रा सूतो सहस्रो	११७	अधा ह्यग्न एषा	८७४	अभि स्वा गोतमा गिरा	२३९
अजमनजिम पयसा	२२२२	अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य	७२१	अभि स्वा नक्तीरुषसो	३८६
अजीजनन्नसृत् मर्त्यागो	५७०	अधा ह्यग्ने मद्वा	१५२६	अभि स्वा पूर्वपीतये	२४४६
अज्ञेदाग्नेरसनहाज	२१४०	अधि श्रिय नि दधुश्चास्म	२०४	अभि द्विजन्मा त्रिवृदक्षम्	२९३
अज्ञो न क्षा दावार	१४८	अधीवास परि मात्	३००	अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि	३५६
अज्ञो नागस्तपसा	१५६०	अधुक्षत पिण्यपीमिषम्	१४३९	अभि प्रयांसि वाहसा	५२४
अज्ञो ह्यग्नेरजनष्ट	२२१७	अध्वर्युभि पञ्चभिः सप्त	४९६	अभि प्रयांसि सुधितानि	१०३७
अन उ स्वा पितृभृगो	१४८८	अनडवाह एलवमन्वारभध्व	२२६१	अभि प्रवन्त समनेव	१९०२
अनि नृष्ट चव्रात्रिय	५०२	अनस्वन्ता सप्ततिर्मांमहे	९२८	अभी नो अग्न उक्थमिज्	३०४
अनिर्वा मानुषाणा	१२९४	अनाष्ट्व्यो जातवेदा	१८६६; २२२६	अभीमृतस्य दोहना अनुषत	३२७
अनि निर्हा अनि निधा	२३२३	अनायतो अनिबद्ध	७४४	अभ्यर्पत मुष्टुति	१९०४
अन्था वृधसृ रोहिता	६४२	अनिरेण वचसा	१७७१	अभ्यवस्था. प्र जायन्ते	८८६
अन्थो नाउमन्मर्गप्रतक्तः	१२९	अनृणा अस्मिन्नृणाः	२३८०	अभ्यारमिदद्रयो	१४३४
अत्रिमनु स्वराजाम्	४०१	अन्तरा मित्रावरुणा	२१११	अभ्रातरो न योषणो	१७६२
अथा ते अक्षिरस्तम	२२५	अन्तरिक्षेण पतति	२४६१	अमन्थिष्टां भारता रेवर्णिन	६२८
अथा न उभयेषाम्	३६	अन्तरिक्षान्ति त जने	१४२६	अमित्रसेनां मघवन्	२१५४
अदक्यस्य स्वधात्रतो	१३६२	अन्तर्द्वतो रोदसी दस्म	१७४३	अमित्रायुधो महतामिव	५७२
अदक्यभिस्तव गोपाभि	१७८६	अन्तर्धिर्देवाना	२२५७	अमूर. कविरदितिर्विस्वान्	११५७
अदाशे गानुचित्तमो	१२५७	अन्तर्ह्यग्न ईयसे	४३९	अमूरो होतान्यसादि	६८३
अदाभ्यः पुरणता	५२२	अन्ति चित् सन्नमह	१२१७	अमृत जातवेदमं	१४४६
अदाभ्येन शोधिषा	१८५९	अन्यमस्मादिया इयम्	१३८५	अय कविरकविषु	११३७
अदिसुतस्वपाको विभावा	१००३	अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो	२२४२	अय जायत मनुषो	२८३
अघारने अद्य सवितरद्य	२१६२	अन्वगिनरुपसामग्रम्	२३२७	अय ते योनिर्कविषयो	५६७
अघा दृत वृर्णामहे	८८	अप न. शोशुचदधम्	१८८७	अयं मित्रस्य वरुणस्य	२६७
अघोघमा यदोशनो	१३९२	अपमित्यमप्रतीत्तं	२३७८	अय यः सृजये पुरो	७५२
अघो चिदम्मा अन्तर्द्वराणे	१७७	अपश्चा दग्धान्नस्य	२२७३	अयं यथा न आभुवन्	१४७०
अध जिन्ना पापतीति	९९०	अपश्यमस्य महतो	१६३७	अयं योनिश्चक्रमा यं	६६७
अध त्व द्रुपम त्रिभुं	१५४३	अपामिद न्ययनं	१६९६	अय विश्वा अभि श्रियो	१४७१
अध द्युतानः पित्रोः	१७६७	अपामुपस्थे महिषा	१७८३	अय स यस्य शर्मन्	१५२०
अध स्स यस्याच्यय	८३२	अपावृत्य गार्हपत्यात्	२२४७	अयं स होता यो द्विजन्मा	३५७
अध स्वास्य पनयन्ति	१०१०	अपां गर्भं दर्शतमोषधीनां	४५२	अयं सो अनिराहुतः	१११५
अध स्वनाहुत बिभ्यु	२६६	अपां मा पाने यतमो	२४३०	अयं सो अग्निर्यस्मिन्सोम	६२१
अघा त्व हि नम्करो	१४५९	अप्रयुच्छन्नप्रयुच्छन्निरग्ने	३२५	अयं होता प्रथमः	१७९८
अघा मही न आयसि	११९०	अप्सरसः सधमाद्	२३६७	अयज्ञियो हतवर्चा	२२५५
अघा मातुरुपमः सप्त	६६१	अप्सरसां गन्धर्वाणां	२४६३	अयमग्निः सप्तपतिः	२३७१

अयमग्निः सहास्त्रिणो	१३७६	अश्व न गीर्भा रथ्य	१२६३	अस्य रणवा स्वस्येव	४६९
अयमग्निः सुवीर्यस्य	५९४	अश्वं न त्वा वारवन्तं	३८	अस्य वामा उ अर्चिषा	८७८
अयमग्निरमूमुहद्	२१५७	अश्वमिद् गां रथप्रो	१४५१	अस्य शासुरुभयाम	६२०
अयमग्निरुह्यति	१७१०	अश्वस्याप्र जनिमास्य	२४२७	अस्य शुभामसो उहजानपव	१५०४
अयमग्निर्वैद्यश्वस्य	१६३६	अश्विना नमुचेः सुत-	२०२९	अस्य श्रिये समिधानरथ	१७७२
अयमग्ने जरिता त्वे	१६९०	अश्विना भेषज मधु	२०३४	अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य	६३२
अयमग्ने त्वे अपि	१३७०	अश्वो घृतेन त्मन्या	२११५	अस्य स्तोभे मधोन	८७३
अयमिह प्रथमो धायि	६९३	अश्वो न क्रद जनिभिः	१७५५	अस्य द्वि रथयशाम	८७७
अयमु प्य प्र देवयुः	१७०९	अषाढो अग्ने वृषभो	५९१	अस्याजराभो दमामरिप्रा	१६०७
अयमु प्य सुमहो अवेदि	११५०	अमसृष्टो जायसे मात्रो	८४४	अस्वप्रजस्वराण्य	१८२४
अयाममग्ने सुक्षिति	२४३६	अमच्च सच्च परभे	१५१९	अहश्च कृष्णमह	१७८७
अया ते अग्ने विधेम	४३४	असन्नित् त्वं आहवनानि	११५३	अहाव्यग्ने हरिरास्य	१६६५
अया ते अग्ने समिधा	१८२७	असादि वृत्तो वह्निराज	११४६	अहोरात्रे अन्वेपि	२०६२
अयामि ते नमउक्ति	५८२	अस्ताव्यग्नि शिमीवद्भिः	३१७	आकृति देवा सुभगा	२२१०
अयोजाला असुरा	२३५०	अस्ताव्यग्निर्नरा सुशेवो	१६००	आकृत्या नो गुप्सवा	२०११
अयोदंष्ट्रो अर्चिषा	१८२९	अस्तीदमधिमन्थनम्	५५८	आगन्म वृत्रहन्तम	१४४१
अरण्योर्निहितो जातवेदा	५५९	अस्थाद् घौरस्थात	२३९४	आ रना अग्न इहावसे	२५
अराधि होता निषदा	१६१७	अस्मा उ ते महि महे	९४८	आग्नि न स्ववृषिभिः	१५८१
अराधि होता स्वर्गनिषत्तः	१८१	अस्माक जोष्यध्वरम	७१८	आग्निरगामि भारतो	१०६०
अर्चन्तस्त्वा हवामहे	८५४	अस्माकमग्ने अध्वरं	७९७	आग्ने याहि मरुतमगा	२४४७
अर्चामि ते सुमति	१८२०	अस्माकमग्ने मधवत्सु दीदिहि	३०१	आग्ने वह वरुणमिष्टये	२००२
अर्चामि वां वर्धायापो	१५५२	अस्माकमग्ने मधवत्सु धारय	१७८५	आग्ने वह हरिराथाय	११५१
अयमण वरुण मित्रम्	६५०	अस्माकमत्र पितरो	६३९	आग्ने स्तूर रथि भर	१७५९
अर्यो विशां गानुरेति	१५७४	अस्मिन् पदे परमे	२४३५	आ च वहामि तो इद	२००
अर्वङ्गिरग्ने अर्वतो नृभिः	२१३	अस्मिन् वय संकसुके	२२३९	आ जात जातवेदमि	१०८३
अर्वाञ्च देव्यं जनम्	१०९	अस्मै रथि न स्वयं	३१५	आ जुतोता दुस्वपत	९३८
अवर्धयन्सुभग सप्त यद्भिः	४५०	अस्मै रायो दिवेदिवे	७१०	आ जुतोता स्व-र	५०७
अवसृजन्नुप त्मना	१९२८	अस्मै वस्म परि पन्तं	१९६	आजुह्वान ईड्यो पन्थाश्च २००४, २१२३	२१२३
अव सृज पुनरग्ने	१५६१	अस्मै क्षत्रमग्नीषोमो	२४७८	आजुह्वाना मरुतर्वा	२०२१
अव सृजा वनस्पते	१९९६	अस्मै क्षत्राणि धारयन्त	२१९९	आजुह्वानो न ईड्या	१९४३
अव सृष्टि पितर योधि	७८६	अस्मै तिस्रो अव्यथ्याय	२४२६	आज्यस्य परमष्टि	२०८१
अव स्र यस्य वेषणे	८१५	अस्मं ते प्रतिहृत्यते	१३११	आ त भज सौश्रवसे	१५९८
अवा नो अग्न ऊतिभिः	२५०	अस्मं बहूनामवसाय	२४३३	आ ते अग्न इवामहि	८०४
अवि. कृष्णा भागधेयं	२२६६	अस्य क्रवा विचेतमो	८७९	आ ते अग्न ( शुक्रभय )	८०५
अवोचाम कवये मेध्याय	७६६	अस्य घा वीर ईवतो	७५३	आ ते अग्न ( हृदा )	१०८८
अवोचाम निवचनान्यस्मिन्	३६८	अस्य त्वेषा अजरा	३२०	आ ते ददे वध्रणाभ्य	२४८२
अवोचाम रहुगणा	२४३	अस्य देवस्य ससद्यनीके	११३६	आ ते वत्सो मनो य-त	१२२०
अश्मन्वती रीयते	१६२१	अस्य प्र जातवेदमो	१८६४	आ ते सुपर्णा अभिनगरे	२४५
अश्याम तं काममग्ने	९८५	अस्य यामामो वृहतो	१५०२	आ त्वा चूतव्ययमा	२१७८
				आ त्वा विप्रा अनुन्या	१०७



आ दशभिर्विवस्वत	१४३१	आ यन्मे अभ्र वनद	४२०	आ होता मन्द्रो विदधा	५८१
आदस्य ते ध्रमयन्तो	२९६	आ यस्तन्थ रोदसी	९४९	इच्छन्त रतो मिथस्तनुषु	१६१
आदित् ते विदत्रे क्रतु जुपन्त	१५६	आ यस्ते अग्न इधते	११०७	इडाभिरग्निरडीच्यः	२०३९
आदित्यश्चा बुबुधाना	६४४	आ यस्ते सर्पिरामुते	८१९	इति चिन्मन्युमग्निजः	८२०
आदित्यैर्नो भारती	२११३	आ यस्मिन् त्वे स्वपाके	१००७	इति त्वाग्ने वृष्टिहव्यस्य	१६७४
आदिद्धोतार वृणने	३१०	आ यस्मिन्सप्त रश्मयः	४२६	इत्या यथा त ऊतये	८९४
आदिनव प्रतिदीप्त	२३६८	आ याह्यग्ने पथ्याऽनु	११४३	इदं तद्युज उत्तरम्	२४७७
आदिन्मातृराविशद्याऽवा	३०९	आ याह्यग्ने समिधानो	१९६३	इदं मे अग्ने कियते	१७६३
आ देवानामग्रयावेह	१९९३	आयुस्मै धेहि जातवेद	२१५०	इदं वचः शतसा	११५४
आ देवानामपि	१४९४	आ यूथेव क्षुमति पश्वा	६६४	इदं वचो अग्निना	२२१३
आ देवानामभव	४६३	आ य तन्वन्ति रश्मिभिः	२४४५	इदमग्ने सुधित दुर्धिताद्	३०२
आ देवो ददे बुभ्याऽ	१८०९	आ ये विश्वा स्वपद्यानि	२०३	इदसुग्राय बभ्रवे	२३६५
आ देव्यानि व्रता चिकित्वान्	१७५	आ योनिमग्निर्घृतवन्तम्	४७६	इदसु त्यन्महि महाम्	१७६६
आद्य रथ भानुमो	७६५	आ यो मूर्धान पित्रोः	१५३६	इधं यस्ते जभरच्छभ्रमाणो	७३५
आ नो अग्ने रथि भर	२५१	आ यो योनि देवकृत	११३८	इधेन त्वा जातवेदः	२३५२
आ नो अग्ने वयोवृध	१३९९	आ यो वना तातृषाणो	४२१	इधेनाग्न इच्छमानो	६०७
आ नो अग्ने सुचंतुना	२५२	आ रभस्व जातवदो	२२८९	इनो राजन्नरतिः समिद्धो	१४९९
आ नो अग्ने सुमति	२३३९	आरे अस्मदमतिमारे	७३३	इन्द्रं दुरः कवप्यो	२०१८
आ नो गहि सव्येभिः	४६५	आरोका इव घेदह	१३१२	इन्द्र नो अग्ने वसुभिः	११६४
आ नो देवेभिरुप	११७६	आ रोदसी भृणदा	१७३३	इन्द्रः सेना मोहयतु	२१५५
आ नो वहाँ रिशादसो	३१	आ रोदसी अपृणा	४८१	इन्द्र चित्तानि मोहयन्	२१५८
आ नो भज परमेष्वा	४२	आ रोदसी वृहती	१९८	इन्द्रा याहि मे हवम्	२१६४
आ नो यज्ञ भारती	२०१०; २१२५	आ वंसते मघवा वीरवद्	१२६५	इन्द्रायेन्दुः सरस्वती	२०२७
आन्य दिवा मातरिश्वा	२४७०	आवहन्यरुणीर्जातिषा	७४७	इन्धे राजा समर्थो नमोभिः	११४९
आ भन्दमाने उपाके	१९२४	आ वां वहिष्ठा इह ते	७४८	इम क्रव्यादा विवंशा	२२५६
आ भन्दमाने उपसा	१९५८	आ विश्वतः प्रत्यञ्च	४१३	इमं घा वीरो अमृत	१२८८
आ भानुना पार्थिवानि	९९१	आविष्टयो वर्धते चारुरामु	१८७२	इमं त्रितो भूर्यविन्दद्	१६०३
आ भारती भारतीभिः	१९६०	आशु दूतं विवस्वतो	६९६	इमं नरो मरुतः सश्रता	५९५
आभिर्विधेमाग्नये	१२९२	आश्रयते अदपिताय	६६८	इमं नो अग्न उप	१६८३
आभिष्टे अद्य गीर्भिः	७२३	आ श्वेत्रेयस्य जन्तवो	८८८	इम नो यज्ञममृतेषु	६१८
आ मन्द्रस्य रुनिष्यन्तो	१७३०	आ सव सविमुर्यथा	१४६८	इमं मे अग्ने पुरुष	२१८६
आमे सुपक्वे शबले	२३१०	आ सीमरोहस्तुयमा	४९२	इम यज्ञं चनो धा अग्न	९९८
आ य हस्ते न खादिन	१०८१	आ सुते सिञ्चत श्रियं	१४३६	इमं यज्ञ सहसावन्वं	४६८
आ य पशौ जायमान	९९६	आ सुव्रयन्ती यजते	२००८, २१२३	इम यज्ञमिदं वचो	१६९९
आ यः पशौ भानुना	१०९५	आ सूर्ये न रश्मयो	१७१९	इमं विधन्तो द्वितादधुः	४१७
आ यः पुर नार्मिणीम्	३५५	आ सूर्यो न भानुम्	९७६	इम विधन्तो... पशुं	१६०२
आ यः स्वर्ण भानुना	४००	आ स्रमस्य युवमानो	१११	इमं स्तोममर्हते	२५६
आ यज्ञेदेव मर्त्य	८७६	आ हि द्यावापृथिवी	१४९१	इमं स्वस्मै हृद् आ	२४२३
आ यदिषे नृपति तेज	१९२	आ हि प्सा सूनवे पिता	३०	इममग्ने चमसं मा	१५६४
आयते ते परायणे	१६९७			इममादित्या वसुजा	२१७०

इमामिन्द्रं वह्निं	२२६०	ईळितो अग्न० (सुखै रयेभिः०)	१९६६	उत्ते बृहन्तो अर्चयः	१३४६
इममु त्वमथर्वत्रद्	१०३९	ईळितो अग्ने मनसा	१९४४	उत्ते शुष्मा जिहताम्	१६२५
इममू पु त्वमस्माकं	४१	ईळिष्वा हि प्रतीव्य१	१२७०	उदग्ने तव तद् घृताद्	१३१९
इममू पु वो अतिथिम्	१०२३	ईळे अग्नि विपश्चित	५३८	उदग्ने तिष्ठ प्रत्या	१८१६
इमां प्रत्याय सुष्टुतिं	१६६३	ईळे गिरा मनुर्हित	१२४४	उदग्ने भारत छुमद्	१०८६
इमां मे भग्ने इमां	४३३	ईळे च त्वा यजमानो	४६१	उदग्ने शुचयस्तव	१३५९
इमां मे भग्ने ..सुपस्व	१९९२	ईळैन्यं वो असुरं	१९७६	उदस्तम्भीस्तमिधा	४७९
इमा भग्ने मतयः	१५२८	ईळैन्यः पवमानो	१९८३	उदस्य शोचिरस्थाद् (आजुह्वा०)	११९४
इमा भग्ने मतयो	१६६२	ईळैन्यो नमस्यः	५४९	उदस्य शोचिरस्थाद् (दीदिगुषो)	१०७३
इमामग्ने शराणि मीमूषो	६५	ईळैन्यो वो मनुषो	११५८	उदातैर्जिहते बृहद्	१९८५
इमा यास्ते शत हिरा	२१९५	उक्षाज्ञाय० (। त्रैश्वानरज्येष्टेभ्यः)	२३६०	उदिता यो निदिता	१२६७
इमास्तिस्रो देवपुरा	२१७६	उक्षाज्ञाय० (। स्तोमैर्विधेम०)	१३२०	उदीरय पितरा जार	१५४५
इमे नरो वृत्रहत्येषु	११०९	उक्षा महो अभि चवक्ष	३३९	उदु तिष्ठ स्वध्वर	१२७४
इमे यामासस्वद्रिगु	७८९	उग्रपश्ये राष्ट्रभृत्	२३८२	उदु घृत समिधा यज्ञो	४७८
इमे विप्रस्य वेधसो	१३१०	उच्छोचिषा सहसस्पुत्र	६०८	उद्ययमीति सवितेव	१८७४
इमो भग्ने वीततमानि	१११७	उत र्ना अग्निरध्वर	७१५	उद्यस्य ते नवजातस्य	११२६
इयं ते नव्यसी मतिः	१४४८	उत त्वाग्ने मम स्तुतो	१३२६	उन्मदिता मौनेयन	२४६०
इयमग्ने नारी पति	२३४०	उत त्वा धीतयो मम	१३६४	उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न	२१९१
हरज्यज्ञग्ने प्रथयस्व	१६८७	उत त्वा नमसा वय	१३२१	उपक्षेतारस्तव सुप्रणीते	४६२
इषं दुहन्सुदुघां	१६८०	उत त्वा भृगुवच्छुचे	१३२२	उप च्छायाभिव घृणे	१०७९
इषीकां जरतीमिष्ट्वा	२२६७	उत छुमत्सुवीर्यं	२२३	उप त्मन्या वनस्पते	१९४०
इष्कर्तारमध्वरस्य	१६८८	उत द्वार उशतीर्वि	१२०५	उप त्वाग्ने दिवेन्द्रिदे	७
इह त्वं सूनो सहसो	६४८	उत नः सुद्योत्मा जीराश्वो	३१६	उप त्वा जामयो गिरो	१४७५
इह स्वष्टारमप्रिय	१९१५	उत नो देव देवो	१३७४	उप त्वा जुहो३ मम	१३४७
इह त्वा भूर्या चरेदुप	१८२१	उत नो ब्रह्मन्नविष	५७९	उप त्वा रणवसंसदश	१०७८
इह प्र बृहि यतम	१८३५	उत भ्रुवन्तु जन्तवः	२१७	उप त्वा मातये नरो	११८५
इहैव सन्तः प्रति दग्ना	२३७९	उत योषणे दिव्ये	१९७९	उप प्र जिन्वन्नुशतीः	१८५
इहैवाग्ने अधि धारया	२३२६	उत वा उ परि वृणक्षि	१६९२	उपप्रयन्तो अध्वर	२१५
इळामग्ने पुरुदंस	४६९	उत वा यः सहस्य प्रविद्वान्	३४७	उप प्रागाद् देवो	२२९३
इळायारस्वा पदे वयं	५६१	उत स्म दुर्गुभीयसे	८३१	उप यमेति युवतिः	११०५
इळा सरस्वती मही	१९१४	उत स्म यं शिशु यथा	८३०	उपसद्याय मीळुप	११७७
ईजे यज्ञेभि शशमे	९६४	उत स्वानासो दिवि	७७६	उपस्थायं चरति यत्	३३६
ईळितो देवैर्हरिवो२	२०१६	उतालब्धं स्पृणुहि	१८३४	उप स्रक्वेपु ब्रह्मन्तः	१४३८
ईळ्यश्वासि वन्धश्च	२१०८	उतो न्वस्य यत् पद	१४४१	उपावसृज त्मन्या	२०१२, २१२७
इथिवांसमति त्निधः	५०३	उतो न्वस्य यन्महद्	१४२९	उपेमसृक्षि वाजयु	२४२२
ईशिषे वार्यस्य हि	१३६०	उतो पितृभ्यां प्रविदानु	४९५	उभय ते न क्षीयते	४०७
ईशो यो विश्वस्या	१५२२	उत्तानायामजनयन्	४११	उभयासो जातवेद स्याम	३२६
ईशो अग्निरमृतस्य	११३९	उत्तानायामव भरा	५६०	उभा देवा नृचक्षसा	१९८७
ईळानायावस्यवे	४३८	उत्तिष्ठसि स्वाहुतो	१८५४	उभे भद्रे जोषयेते	१८७३
ईळितो अग्न० (। इयं हि०)	१९२१			उभे सुश्रन्नद सर्पिणो	८०९

उभोभयाविन्नुप धेहि	१८३०	ऋतायिनी मायिनी	१५१५	एषां अग्निं वसूयवः	९१९
उरु ते ज्ञय पर्येति	१८७६	ऋतावानं महिषं	१६८९	एषां अग्निमजुर्गुप्तुः	८१०
उरुभ्यचसाग्नेर्धाञ्जा	२०७९	ऋतावानं यज्ञियं	१७३९	एवाग्निर्गोतमेभिर्कृतावा	२३८
उरुपया णो मा परा दा	१४१५	ऋतावानं विचेतसं	६९५	एवाग्निर्मतैः सह	१६७२
उरौ महं अनिवाधे	४५७	ऋतावानं वैश्वानरम्	२१८१	एवा ते अग्ने विमदो	१५८०
उरौ वा ये अन्तरिक्षे	४८७	ऋतावानमृतायवो	१२७८	एवा ते अग्ने सुमतिं	९३०
उशना काव्यस्त्वा	१२८६	ऋतावा यस्य रोदसी	५७५	एवा नो अग्ने अमृतेषु	३९३
उशन्तस्त्वा नि धीमहि	१५६८	ऋतुयेन्द्रो वनस्पतिः	२०३५	एवा नो अग्ने समिधा	१८७८
उशिक पावको अरतिः	१५९५	ऋतुभिष्ट्वार्तवैराषुषे	२१७२	एवेन सद्य पर्येति पार्थिवं	२८५
उशिक पावको वसुः	१२२	ऋतुभ्यष्ट्वार्तवेभ्यो	२२१६	एहि मनुर्देवयुर्थज्ञकामो	१६१३
उपउपो हि वसो	१५३७	ऋतेनं ऋत धरुणं	८६७	एह्यग्न इह होता	२३०
उपावानक्तमश्विना	२०३१	ऋतेन ऋत नियतमीळ	६७४	एहूषु ब्रवाणि ते	१०५७
उपामानक्ता बृहती	२०१९	ऋतेन देवीरमृता	६७७	एच्छाम त्वा बहुधा	१६१२
उपो यद्वी सुपेशसा	२०४२	ऋतेन हि ष्मा वृषभः	६७५	ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाड्	४८८
उपो न जार पृथु	११६१	ऋतेनाद्रि व्यसन् भिदन्तः	६७६	ऐषां यज्ञमुत वर्चो	२१४३
उपो न जारो विभावोस्त्र	१७२	ऋधद्यस्ते सुदानवे	९५५	ओजिष्ठं ते मध्यतो मेद	६२२
ऊर्जो त्वा बलाय	२२१५	ऋभुश्चक ईढ्य चारु	४७५	ओषू णो अग्ने ऋणुहि	२९१
ऊर्जो नपाजातवेदः	१६८६	ऋषिर्न स्तुभवा विश्वु	१३७	और्वभृगुवच्छुचिम्	१४६६
ऊर्जो नपात स हिनायम्	१०९१	एकः समुद्रो धरुणो	१५१३	क इमं वो निण्यमा	१८७१
ऊर्जो नपात सुभग	१२२७	एकशतं लक्ष्म्यांश्च	२२०३	कथ्यप्रयः कति सूर्यासः	२४१४
ऊर्जो नपातमध्वरे	५४८	एत ते स्तोमं तुविजात	७७७	कथा ते अग्ने शुच्यन्त	३४३
ऊर्जो नपातमा हुवे	१३५५	एता अर्पन्ति हृद्यान्	१८९२	कथा दाशेमाप्रये	२३४
ऊर्जो नपात्सहसावन्	१६७३	एता उ वः सुभगा	२११०	कथा महे पुष्टिभराय	६७२
ऊर्णप्रदा वि प्रथस्व	१९६७	एता एना व्याकरं	२२०४	कथा शर्धाय मरुता०	६७३
ऊर्ध्व ऊ पु णो अध्वरस्य	६८२	एता चिकित्वो भूमानि	१७९	कथा ह तद्वरुणाय	६७०
ऊर्ध्व केतु सप्रिता देवो	७४६	एता ते अग्न० (। शक्रेम राय० )	२११४	कच्छिण्यासु बृधसानो	६७१
ऊर्ध्व भानु सविता देवो	७४१	एता ते अग्न० (। उच्छोचस्व० )	६६६	कन्या इव वहतुमेतवा	१९०३
ऊर्ध्व अस्य समिधो	२०६०, २०७२	एता ते अग्ने जनिमा	४६६	कमु त्विदस्य सेनया	१३७९
ऊर्ध्वया दिश्य जस्य	२२२४	एता नो अग्ने सौभगा	११३३	कमेतं त्वं युवते	७६८
ऊर्ध्वो प्रावा बृहदग्निः	१९९८	एता त्रिश्वा विदुषे	६८१	कया ते अग्ने अङ्गिर	१४५७
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्या	१८१७	एतास्ते अग्ने समिधः पिशाच	२३१७	कया नो अग्न ऋतय०	८५०
ऊर्ध्वो वां गातुरध्वरे	१९५६	एतास्ते अग्ने समिधस्त्वमिद्धः	२३५४	कया नो अग्ने वि वस	११५१
ऋत चिकित्व ऋतमिच्	८४२	एति प्र होता व्रतमस्य	३२६	कवद्यो न व्यच्छस्वती	२०३०
ऋत वोच नमसा	१७६८	एते स्ये वृथगगनय	१३१४	कविं शशासुः कवयो	६५८
ऋतस्य देगा अनु व्रता	१२६	एते ह्युन्नेभिर्विश्वमालिः	११४७	कविं केतुं धालिं	१८०४
ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य धीति	१५८	एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृधस्व	६७	कविमग्निमुप स्तुहि	१६
ऋतस्य वा केशिना	४८५	एना वो अग्निं नमसा	११९२	कविमिव प्रचेतसं	१४५५
ऋतस्य हि धेनवो	२१०	एभिर्नो अर्कैर्भवा नो	७२२	कस्ते जामिर्जनानाम्	२२६
ऋतस्य हि वर्तनयः	१५१६	एभिर्भव सुमना अग्ने	६८०		



तं वो वि न हुषद्	१६६८	तं स्वा वयं पतिमग्ने	१२३	तमु स्वा पाथ्यो वृषा	१०५६
तं शश्वतीषु मातृषु	६९८	तं स्वा वयं सुध्यो	९४५	तमु स्वा वाजसातमं	२४१
तं शुभ्रमग्निमवसे	१७५४	तं स्वा वय हवामहे	१३३२	तमु स्वा वृषहन्तमं	२४२
तं सबाधो यतस्रुच	५४२	त स्वा विप्रा विपन्यवो	५१७	तमु धुमः पुर्वणीक	९९४
त सुप्रतीकं सुदृशं	१०३२	तं स्वा शोचिष्ठ दीदिवः	९१०	तमुत्ताभिन्द्र न रेजमानम्	१५२४
तं हि शश्वन्त ईळते	८६२	त स्वा समिन्द्रिरङ्गिरो	१०५२	तमोषधीर्दधिरे गर्भम्	१६५६
तं हुवेम यतस्रुचः	१२८९	तं देवा बुध्न रजसः	३८७	तं पृच्छता स जगामा	३३३
तं होतारमध्वरस्य	१२०३	तं नव्यसी हृद् आ	१२१	तं मर्जयन्त सुक्रतु	१४६१
त इद् वेदि सुभग	१२४१	तन्नस्तुरीपमद्भृतं० (देव त्वष्टा०)	२०८१	तं मर्ता अमर्त्यं घृतेन	१८५८
तक्का न भूर्णिर्वना	१३५	तन्नस्तुरीपमद्भृतं० (। रायस्पोष)	२०६९	तरी मन्द्रासु प्रयक्षु	२०७७
तं गूर्धया स्वर्णर देवासो	१२२४	तन्नस्तुरीपमद्भृत पुरु वार	१९२७	तव क्रत्वा सनेयं	१२५२
त घेमिस्था नमस्विन	७४	तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु	१९६१	तव त्ये अग्ने अर्चयो	८०७, ८३९
तत्तदग्निर्वयो दधे	१३०३	तं नेमिमृभवो यथा	१३७७	तव त्ये अग्ने हरितो	६९०
तत्तु ते दंसो यद०	१७१	त नो अग्ने अभी नरो	८३४	तव त्रिधातु पृथिवी	१७९७
तत्ते भद्र यत्	२६९	त नो अग्ने मधवद्भयः	१८०२	तव धुमन्तो अर्चयो	९१८
तत्ते सहस्व ईमहे	१३४२	तपनो अस्मि पिशाचानां	२३००	तव द्रप्सो नीलवान्	१२५४
तथा तदग्ने कृणु	२३०६	तपुर्जम्भो वन भा	११४	तव प्र यक्षि संदशम्	१०४९
तदग्ने चक्षु प्रति धेहि	१८३९	तपो एवग्ने अन्तरां	६०६	तव प्रयाजा अनुयाजा	१६१५
तदग्ने धुमना भर	१२३८	तमग्निमस्ते वसवो	११०१	तव भ्रमास आश्रुया	१८१४
तदस्यानीकमुत चारु	२४३२	तमग्ने पास्थुत तं	१०३३	तव श्रिया सुदृशो	७८१
तद्भद्रं तव दग्ना	५०६	तमग्ने पृतनाषहं	९०४	तव श्रियो वर्प्यस्येव	१६५५
तद्दामृतं रोदसी प्र	१६४०	तमयुवः केशिनीः	२९९	तव स्वादिष्ठ अग्ने	७२४
तनृत्यजेव तस्करा	१५११	तमध्वरेण्वीळते देवं	८६१	तवाने होत्र तव	३७०, १६६०
तनूनपाच्छुचिघ्नतः	२०३८	तमर्वन्त न सानसि	७५४; १४७४	तवाहमम ऊतिभिः	८३३; १२५१
तनूनपात् पथ ऋतस्य	२००४; २११८	तमस्मेरा युवतयो	२४२५	तस्मै नूनमभिघवे	१३७८
तनूनपान् पवमान	१९८२	तमस्य पृक्षमुपरासु	२७६	तस्येदर्वन्तो रंहयन्त	१२२९
तनूनपादसुरो विश्ववेदा	२०६१	तमागन्म सोभरयः	१२५५	ता अधरादुदीची	२२५४
तनूनपादुच्यते	५६८	तमित्पृच्छन्ति न सिमो	३३४	ता अस्य वर्णमायुवो	४२९
तनूनपादृतं यते	१९३२	तमित्सुहव्यमङ्गिरः	२१९	ता उशतो वि बोधय	१३
तनूपा भिषजा सुते	२०२६	तमित्पृच्छन्ति जुह्व०	३३५	ता नृभ्य आ सौश्रवसा	१०१६
तन्तुं तन्वन् रजसो	१६१९	तमिद्वाषा तमुषसि	११२८	तान्त्सत्यौजाः प्र दह	२२९५
तं स्वा गीभिर्हरक्षया	१८६१	तमिन्न्वे देव समना	१७६४	तामग्ने अस्मे हृषभेरयस्व	१८०१
तं स्वा गीभिर्गिर्वणस	४३५	तमीं हिन्वान्ति धीतयो	३३०	ता राजाना शुचिघ्नता	१०६५
तं स्वा घृतस्रवीमहे	९२१	तमीं होतारमानुषक्	६२७	ताष्टांघीरग्ने समिधः	२३१८
तं स्वाजनन्त मातरः	१४७९	तमीळत प्रथमं यज्ञसाध	१८८१	ता सुजिह्वा उप ह्वेय	१९१३
तं स्वा दूतं कृणमहे	११९५	तमीळिष्व य आहुतो	१३३१	तिग्म चिदेम महि	९६६
त स्वा नरो दम आ	२०८	तमुक्षमाणं रजसि	३८८	तिग्मजम्भाय तरुणाय	१२४५
त स्वामज्जेषु वाजिनं	१३२९	तमु स्वा गोतमो गिरा	२४०	तिघ्न इहा सरस्वती	२०४४
तं स्वा मर्ता अगृभ्णत	५०५	तमु स्वा दध्यङ्कृषि	१०५५	तिघ्नोधा सरस्वती	२०३३

तिस्त्रो देवीर्बर्हिर्दिवं वरीय	१९९९	त्रिश्चिदक्तोः प्र चिकितुः	११६८	त्व नृचक्षा वृषभानु	५९०
तिस्त्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु	२०६८	त्रीणि जाना परि भूपन्धस्य	१८७०	त्वं नो अग्न आयुषु	१३०९
तिस्त्रो देवीर्हविषा वर्धमाना	२०२१	त्रीणि शता त्री सहस्रा०	५०८	त्व नो अग्न एषां गर्भं	८३७
तिस्त्रो यदग्ने शरदः	१९७	त्रीण्यायूषि तव जात०	६०२	त्व नो अग्ने अङ्गिर	८४१
तिस्त्रो यद्दस्य समिधः	१७३५	त्रेषा जात जन्मनेदं	२१७२	त्वं नो अग्ने अद्भुत	८३६
तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष	१८३६	ध्यायुष जमदग्नेः	२१७३	त्वं नो अग्ने अधराद्	१८४७
तुभ्य श्रोतन्त्यग्निगो	६२१	त्व यविष्ठ दाशुषो	१४५६	त्व नो अग्ने तव देव	६१
तुभ्यं स्तोत्रा घृतश्रुतो	६२०	त्व रथिं पुरुवारम्	१४१४	त्व नो अग्ने पित्रोः	५८
तुभ्यं घेत् ते जना इमे	१३३८	त्व वरुण उत मित्रो	११७३	त्व नो अग्ने महोभिः	१४०९
तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम	१३२७	त्व वरो सुषाग्णे	१२९७	त्वं नो अग्ने वरुणस्य	२४५१
तुभ्यं दक्ष कविक्रतो	५८७	त्व विक्षु प्रदिवः सीद	९८१	त्व नो अग्ने सनधे	५७
तुभ्यं भरन्ति क्षितयो	७६४	त्व ह यद्यविष्ठ	१३७५	त्व नो असि भारत	४४५
तुभ्येदमग्ने मधु०	८४६	त्वं हि क्षैतवद्यक्षो	९५२	त्व नो अस्या उषसो	५८९
तुविमीवो वृषभो	७७८	त्वं हि मानुषे जने	८९६	त्वमग्न इन्द्रो वृषभ	३७१
तृषु यदज्ञा तृषुणा	७०३	त्व हि विश्वतोमुख	१८९२	त्वमग्न उरुशसाय	६३
ते अस्य योषणे दिश्ये	२०६६	त्व हि सुप्रतरसि	१२९८	त्वमग्न ऋभुराके	३७८
ते गव्यता मनसा	६४१	त्वं होता मनुर्हितो	१०५०	त्वमग्ने अदितिर्देव	३७९
ते घेदग्ने स्वाध्वो३ ये त्वा	१२४०	त्व होता मन्द्रतमो	१००१	त्वमग्ने गुहृपति	११९६
ते घेदग्ने स्वाध्वोऽहा	१३३९	त्वं ह्यग्ने अग्निना	१३२३	त्वमग्ने त्वष्टा विधते	३७३
ते जानत स्वमोक्य१ सं	१४३७	त्वं ह्यग्ने दिव्यस्य राजसि	३३१	त्वमग्ने द्याभिस्त्वमाम०	३६९
तेजिष्ठा यस्यारतिः	१००८	त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोता	९३९	त्वमग्ने द्रविणोदा	३७५
ते ते अग्ने त्वोता	१०६८	त्व चिन्नः शम्या अग्ने	६६९	त्वमग्ने पुरुरूपो	८२५
ते ते देवाय दाशतः	१२१०	त्व जाभिर्जनानाम्	२२७	त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः	५१
ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते	२२६३	त्वदग्ने काव्या त्वन्म०	७३०	त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा	५०
ते मन्वत प्रथम	६४२	त्वद्धि पुत्र सहस्रो	५८६	त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन	५२
ते मर्मजत दृढवांसो	६४०	त्वङ्गिया विश आयन्न	१७९६	त्वमग्ने प्रमतिस्त्व	५९
ते राया ते सुवीर्यैः	७०९	त्वद्वाजी वाजभरो	७३१	त्वमग्ने प्रयतदक्षिण	६४
ते स्याम ये अग्नये	७०८	त्वद्विप्रो जायते वाज्यग्ने	१७७५	त्वमग्ने बृहद्वयो	१४६३
त्मना वहन्तो दुरो	१७३	त्वद्विश्वा सुभग सौभगानि	१०१२	त्वमग्ने मनवे द्याम०	५३
प्रयः केशिन ऋतुथा	२४५६	त्व त देव जिह्वया	१०७३	त्वमग्ने यजानां होता	१०४२
प्रयः पोषास्त्रिवृति	२१६९	त्वं तमग्ने अमृतस्व	५६	त्वमग्ने यज्यवे पायु०	६२
प्रय सुपर्णास्त्रिवृता	२१७४	त्व तौ अग्न उभयान्	३६७	त्वमग्ने यातुधानान्	२२९०
प्रायध्व नो अघविषाभ्यो	२४८१	त्वं तान्स च प्रति चासि	३८३	त्वमग्ने राजा वरुणो	३७२
ग्निः सप्त यद्गुह्यानि	२००	त्वं त्या चिदच्युता	९६०	त्वमग्ने रदो असुरो	३७४
ग्निधा हितं पणिभिः	१८९८	त्व दूतो अमर्त्य आ	१०४७	त्वमग्ने वनुष्यतो	१०३४
ग्निभि पवित्रैरपुपोद्धय१र्कं	१७५७	त्व दूत प्रथमो वरेण्यः	१६७९	त्वमग्ने वरुणो जायसे	७७९
ग्निमूर्धानं सप्तारिंम	३३८	त्वं दूतस्त्वसु नः	४०४	त्वमग्ने वसूरिह	१००
ग्निरस्य ता परमा	६३३	त्वं नः पाह्यहसो	१०७१, ११९१	त्वमग्ने वाघते सुप्र०	६५९
ग्निर्यातुधान. प्रसितिं	१८३८	त्व नश्चित्र ऊस्या	१०९८	त्वमग्ने वीरवद्यतो	११८८

त्वमग्ने वृजिनवर्तनि	५५	त्वामग्ने अङ्गिरसो	८४७	त्वेषासो अग्नेरमवन्तो	८५
त्वमग्ने वृषभ पुष्टि०	५४	त्वामग्ने अतिथि पूर्यं	८२२	त्वोजो वाज्यहयोऽभि	२२२
त्वमग्ने व्रतपा असि	१२१४	त्वामग्ने दम भा विदपतिं	३७६	ददानमिन्न ददभन्त	३४९
त्वमग्ने शशमानाय	३१४	त्वामग्ने धर्णासि विश्वधा	८२४	दधन्तुत धनयज्ञस्य	१८७
त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान	१८११	त्वामग्ने पितरमिष्टिभिः	३७७	दधन्वे वा यदीमनु	४२७
त्वमग्ने सप्रथा असि	८५७	त्वामग्ने पुष्करादधि	१०५४	दधुष्ट्वा भृगवो मानुषेष्वा	११५
त्वमग्ने सहसा सहन्तम	२८०	त्वामग्ने प्रथम देव०	७३२	दश क्षिप पूर्यं सीम०	६२९
त्वमग्ने सुभृत उत्तम	३८०	त्वामग्ने प्रथममायुम्	६०	दशस्या न. पुर्वणीक	१००५
त्वमग्ने सुहव रणव०	११२०	त्वामग्ने प्रादिव आहुत	८२७	दशोमं त्वष्टुर्जनयन्त	१८६९
त्वमङ्ग जरितार	७८८	त्वामग्ने मनीषिण	५०९	दाधार क्षेममोको	१३६
त्वमध्वर्युरुत होतासि	२६१	त्वामग्ने मनीषिणस्त्वा	१३६१	दा नो अग्ने धिया	११०४
त्वमर्यमा भवसि यत्	७८०	त्वामग्ने मानुषीरीळते	८२३	दा नो अग्ने बृहतो	३९१
त्वमसि प्रशस्यो विदधेषु	१२१५	त्वामग्ने यजमाना अनु	१५९९	दामान विश्वचर्षणे	१२७१
त्वमित् सप्रथा असि	१३९३	त्वामग्ने वसुपति	७९०	दाशेम कस्य मनसा	१४५८
त्वमिन्द्रा पुरुहूत	२२७४	त्वामग्ने वाजसातम	८५८	दिवृक्षेण्य. परि	३४२
त्वमिमा वार्यां पुरु	१०४६	त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा	२३२१	दिवक्षसो धेनवो	४९१
त्व भगो न आ हि	१०१३	त्वामग्ने हरितो वावशाना	१७९८	दिवं पृथिवीमन्वन्तरिक्षं	२३६१
त्वया यथा गृत्समदासो	४२४	त्वामग्ने हविष्मन्तो	८२८	दिवश्चित्ते बृहतो जातवेदो	१७२१
त्वया वयं सधन्यस्त्वोताः	१८२६	त्वामग्ने समिधान	८२६	दिवश्चिदा ते रुचयन्त	४८६
त्वया ह स्वियुजा	१४६५	त्वामग्ने समिधानो	११६०	दिवस्त्वा पातु हरित	२१७५
त्वया ह्यग्ने वरुणो	३१३	त्वामग्ने स्वाध्योऽमर्तासो	१०४८	दिवस्परि प्रथमं जज्ञे	१५८९
त्वष्टा तुरीपो अद्भुत	२०४५	त्वामस्या व्युषि देव	७८५	दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षाद्	२२०५
त्वष्टा दधच्छुष्ममिन्द्राय	२०२२	त्वामिदन्न वृणते	१६५९	दिवा मा नक्त यतमो	२३१३
त्वष्टा माया वेदपसाम	१६२२	त्वामिदस्या उषसो	१६८१	दिवो न यस्य विधतो	९६९
त्वष्टारममजां गोपां	१९८९	त्वामीळते अजिर	११६७	दिवो वा सानु स्पृशता	१९९६
त्वष्टा रूपाणि हि प्रभु	१९३९	त्वामीळे अध द्विता	१०४५	दीदिवांसमपूर्यं	५७८
त्वष्टा वीर देवकामं	२११४	त्वामु जातवेदम	१७००	दीर्घतनुर्बृहदुक्षायमग्नि	१६३१
त्वां यज्ञेष्वीळतेऽग्ने	१५८६	त्वामु ते दधिरे हव्यवाहं	१२०९	दुरोकशोचिः ऋतुर्न	१३८
त्वा यज्ञेष्त्वृत्विजं	५१०; १५८७	त्वामु ते स्वाभुवः	१५८२	दुरो देवीर्दिशो महीः	२०४१
त्वां वर्धन्ति क्षितयः	९४३	त्वे अग्न आहवनानि	१११६	दुर्मन्त्वभ्रामृतस्य	१५५४
त्वां विश्वे अमृत जायमानं	१७७६	त्वे अग्ने विश्वे अमृतासो	३८२	दुहन्ति सप्तकाम्	१४३०
त्वां विश्वे सजोषसो	८९७	त्वे अग्ने सुमतिं	२११	दूत वो विश्वेवदस	७०४
त्वां हि मन्द्रतम०	९७७	त्वे अग्ने स्वाहुत	११९८	दशानो रुक्म उर्विया	१५९६
त्वां हि ष्मा चर्षणथो	९५३	त्वे असुर्यं वसवो	१७९९	दशेन्यो यो महिना	२४०३
त्वां ह्यग्ने सदमित्	६३१	त्वे इदग्ने सुभगे	७३	दृक्का चिदस्मा अनु	२७५
त्वां चिन्नश्रवस्तम	१०५	त्वे धर्माण आसते	१५८३	देवं वो देवयज्यया	८९८
त्वां दूतमग्ने अमृतं	१०३०	त्वे धेनुः सुदुघा जातवेदो	१६३२	देव दृष्ट्यंक्ष चारुत्वम्	२०००
त्वामग्न आदित्यास	३८१	त्वे वसूनि पुर्वणीक	९८०	देव बर्हिर्वर्धमानं सुवीरं	१९४५
त्वामग्न ऋतायवः	८२१	त्वेषं रूपं कृणुत	१८७५	देवान् यज्ञाभितो हुवे	२३७१
		त्वेषस्ते धूम ऋषवति	९५७		

देवाश्रिते अमृता	१६३३	धन्या चिद्धि त्वे	१००२	नहि ते पूर्वमक्षिपद्	१०५९
देवासस्त्वा वरुणो	७१	धन्वन्स्त्रोतः कृणुते	१८७७	नहि मन्यु पौरुषेय	१४१०
देवी दिवो दुहितरा	१९९७	धामन् ते विश्वं भुवनमधि	१९०५	नहि मे अस्यधन्या	१४८१
देवीर्द्वारो वि श्रयध्व	१९६८	धायोभिर्वा यो युज्येभि	९७०	नाना ह्यग्नेऽवसे स्पधन्ते	१०२०
देवैर्भिर्निषितो यज्ञियेभिः	२३९९	धासि कृण्वान ओषधी	१३१६	नाभि यज्ञानां सदनं	१७७४
देवैन्सादुन्मदितम्	२१८८	धिया चक्रे वरेण्यो	५४५	नाहं तन्तु न वि जानामि	१७८८
देवो अग्निः संकसुको	२२३८	धीरासः पद कवयो	३४१	नि काव्या वेधसः	१९५
देवो देवानामसि	२६८	धीरो ह्यस्यन्नसद्विप्रो	१३७१	नितिक्ति यो वारण	९७५
देवो देवान् परिभृक्तेन	१५५०	ध्रुव ज्योतिर्निहितं	१७९१	नित्ये चिन्तु ये सद्ने	३५०
देवो देवेषु देव पथो	२०७३	नाकिरस्य सहन्त्य	४५	नि तिगममभ्यशुं	१४२५
देवो न यः पृथिवीं	२०७	नकिष्ट एता व्रता	१७०	नि त्वा दधे वर आ	६३०
देवो न यः सविता	२०६	नक्तोषासा वर्णमामेभ्याने	१८८३	नि त्वा दधे वरेण्यं	५४६
देवो चो द्रविणोदाः	१२०२	नक्तोषासा सुपेशसा	१९१२	नि त्वा नक्ष्य विश्रते	११८३
दैवा होतार ऊर्ध्वम्	२०८०	नडमा रोह न ते अन्न	२२२९	नि त्वा मग्ने मनुर्दधे	८४
दैव्या मिमाना मनुषः	२०२०	न तमग्ने अरायतो	१४१२	नि त्वा यज्ञस्य साधनम्	९६
दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं	२०६७	न तस्य मायया चन	१२८४	नि त्वा वसिष्ठा अह्वन्त	१६८२
दैव्या होतारा प्रथमा० ४९७, १९५९	१९५९	न त्वद्धोता पूर्वा अग्ने	७८२	नि त्वा होतारमृत्विज	१०६
दैव्या होतारा प्रथमा विदुष्टर	१९४८	न त्वा रासीयाभिः शस्त्रे	१२४९	नि दुरोणे अमृतो	४६४
दैव्या हो० प्र० सुवाचा २००९; २११४	२११४	न पिशाचैः सं शक्नोमि	२३०१	नि नो होतार वरेण्य	२९
दैव्या होतारा भिषजा	२०४३	नमः शीताय तक्मने	२२७८	नि पस्वासु त्रितः	१६०६
द्यावा यमग्नि पृथिवी	१६०९	नमस्ते अग्न ओजसे	१३८२	निरितो मृत्यु निष्कृति	२२३१
द्यावा इ क्षामा प्रथमे	१५४९	नमस्यत हव्यदाति	१७३४	निर्मथितः सुधित	६२७
द्यावो न यस्य पनय०	९७३	न य रिपवो न	३५२	निर्यत् पूतेव स्वधितिः	११३२
द्युतानं वो अतिथि	१०२६	न यस्य सातुर्जनितो	६८८	निर्यदी बुध्नान् महिषस्य	३०७
द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोग	१५३१	न योरुपब्दिरदव्य	२२१	नि होता होतृषदने	४०३
द्यौश्च त्वा पृथिवी	४८२	न यो वराय मरुता०	३२२	नू च पुरा न सदन	१८८५
द्रवतां त उपसा	५८३	नराशंस प्रति धामान्यञ्जन्	१९४३	नू चित्सहोजा अमृतो	११०
द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य	१८८६	नराशंसः प्रति शूरो	२०१५	नू ते पूर्वस्थावसो	४२३
द्रवज्ञः सर्पिरासुतिः	४४६	नराशंस सुषूदति	१९६५	नू त्वा मग्न ईमहे	११४८
द्रावो देवीरन्वस्य विश्वे व्रतं	२०७८	नराशंसमिह प्रियम्	१९०८	नू न इद्धि वार्यम्	८८०
द्रावो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता	२०६५	नराशंसस्य महिमानं १९७५; २११९	२११९	नू न एहि वार्यम्	८७५
द्विता यदी कीस्तासो	२७८	नरो ये के चास्पदा	१५७८	नूनमर्चं विहायसे	१२९३
द्विताय मृक्तवाहसे	८८२	नवं नु स्तोममग्नये	११८०	नू नश्विन्नं पुरुवाजा०	९९७
द्विभागधनमादाय	२२४८	नव प्राणान् नवाभि.	२१६७	नू नो अग्न ऊतये	८४०
द्विर्यं पञ्च जीजनन्	६८९	नवा नो अग्न आ भर	८०८	नू नो अग्नेऽवृकेभिः	९७८
द्विषो नो विश्वतोमुख	१८९३	नहि प्रभायारणः	११४१	नू नो रास्व सहस्रवत्	५८०
द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे	१८६८	नहि ते अग्ने तन्वः	२३३७	नू मे ब्रह्माण्यग्न	१११९
द्वे समीची बिभृतः	२४१२	नहि ते अग्ने वृषभ	१४०९	नृचक्षा रक्ष परि पश्य	१८३७
द्वे स्तुती अशृणवं	२४११	नहि देवो न मर्त्या	२४३९	नृशंसो सद्मिद्धे०	९५०



नेशक्तमो दुधित	६४३	पिता यज्ञानामसुरो	१७४५	प्रचेतस त्वा कवे	१४८०
नैनं धनन्ति पर्यायिणो	२३९३	पितुर्न पुत्र. सुभृतो	१२५०	प्रजानङ्गने तव	१६५४
न्यक्रतून् ग्रथिनो मृध्रवाचः	१८०५	पितुर्न पुत्रा. क्रतु	१६२	प्रजापतेस्तपसा वाबृधानः	२११६
न्यग्निं जातवेदस	९००, ९२६	पितुश्च गर्भं जनितुः	४५६	प्रजावता वचसा	२३२
न्यराती नरावणां विश्वा	१३०१	पितुश्चिद्वधजनुषा	४५५	प्र जिह्वया भरते वेपो	१६०८
पृञ्चौदन परुचभिः	२२२३	पितेव पुत्रमविभरूपस्थे	१६३४	प्र णु स्यं विप्रमध्वरेषु	७६१
पतिह्यध्वराणाम्	९४	पिप्रीहि देवो उशतो	१४९२	प्र तव्यसी नव्यसी	३१८
पदं देवस्य नमसा	९४२	पिशङ्गरूपः सुभरो	१९५०	प्र तो अग्निर्बभसत्	१७६१
पदं देवस्य मीळुधुपो	१४७७	पोपाय स श्रवसा	९९५	प्रति स्यं चारुमध्वरं	२४३८
पन्यांस जातवेदसं	१४४४	पुत्रो न जातो रणवो	१६८	प्रति दह यातुधानान्	२२९४
पर योनेरवर ते	२१९६	पुनस्त्वादित्या रुद्रा	२२३४	प्रति स्पशो वि सृज	१८१५
परस्या अधि सवतो	१३८७	पुनस्त्वा दुरप्परसः	२१८९	प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो	११०३
पराद्य देवा वृजिन	१८४२	पुर देवानाममृतं	२१७७	प्र ते अग्ने हविष्मती	६११
परा शृणीहि तपसा	१८४१	पुरस्ताद् युक्तो वह	२३०५	प्र ते यक्षि प्र त इयमिं	१५०६
परि ते दूळभो रथो	७१९	पुराग्ने दुरितेभ्यः	१३७२	प्रल होतारमीह्य	१३४९
परि त्रिधातुरध्वर	१४३२	पुरीष्यासो अग्नय	६२६	प्रतो हि कमीह्यो अध्वरेषु	१२२३
परि त्रिविष्टयध्वरं	७५०	पुरुत्रा हि सदङ्ङसि	१२२१; १३३०	प्रत्यग्निरुषसामश्रेकितानो	४७०
परि रमना मितहुरेति	६८६	पुरु त्वा दाश्वान्वोचे	३५८	प्रत्यग्निरुषसामग्रम्	७४०; २३२८
परि त्वाग्ने पुर वय	१८४९	पुरुणि दस्मो नि	३५१	प्रत्यग्निरुषसो जात०	७४५
परि प्रजातः ऋत्वा	१६५	पुरुष्यग्ने पुरुधा	९५१	प्रत्यग्ने मिथुना दह	१८५१
परि यदेषामेको	१५५	पुरोगा अग्निर्देवानां	१९४१	प्रत्यग्ने हरसा हरः	१८५२
परि वाजपतिः कवि	७५१	पुरो वो मन्द्रं दिव्यं	९९३	प्रत्यञ्जमर्कं प्रथ्यर्पयित्वा	२२६८
परि विश्वानि सुधिता	५२५	पुरोळा अग्ने पचत.	५५३	प्रत्यस्य श्रेणयो दहश्र	१६९४
परिपद्य ह्यरणस्य	११४०	पुष्टिर्न रणवा क्षितिर्न	१२८	प्र त्वा दूतं वृणीमहे	७०
पर्षि तोक तनयं	१०९९	पूर्वो देवा भवन्तु	२६३	प्रथम जातवेदसम्	१२९१
पश्चात् पुरस्तादधरादुदक्तात्	१८४८	पूर्व्यं होतरस्य नो	३२	प्रथमा वा सरथिना	२११२
पश्वा न तायु गुहा	१२४	पूपपवते मरुवते	१९२९	प्रथमा हि सुवाचसा	१९३७
पश्याम ते वीर्यं	२२८८	पृक्षप्रयजो द्रविण.	४९९	प्र दीधितिर्विश्ववारा	१९५५
पातं नो अश्विना दिवा	२०३२	पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य	१७८०	प्र देवं देववीतये	१०८२
पाति प्रिय रिपो अग्र	४७४	पृक्षो वपुः पितुमान्	३०६	प्र देवं देव्या धिया	१७०८
पाथिवस्य रसे देवा	२१४९	पृतनाजितं सहमानम्	२३७४	प्र देवोदासो अग्निः	१२५८
पावकया यश्चितयन्त्या	१०२७	पृथिवी धेनुस्तस्या	२२८१	प्र नव्यसा सहसः	९८६
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा	१६८५	पृथिव्यामग्नेवे समनमन्स	२२८०	प्र नून जातवेदसम्	१८६३
पावकशोचे तव हि	१७३२	पृथुपाजा अमर्त्यो	५४१	प्र नू महित्वं वृषभस्य	१७२२
पाहि गीर्भस्तिस्मिभि	१३९८	पृष्टो दिवि धायग्निय	१७९५	प्र पतेतः पापि लक्षिम	२२०१
पाहि नो अग्न एकया	१३९७	पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः	१७२५	प्र पीपाय वृषभ	५९३
पाहि नो अग्ने पायुभिः	३६४	पृष्ठात् पृथिव्या अहम्	२२१९	प्र पूतास्तिग्मशोचिषे	२५३
पाहि नो अग्ने रक्षसः	८०; १११२	प्र कारवो मनना	४८०	प्र प्रायमग्निर्भरतस्य	११५२
पाहि विश्वस्माद्रक्षसो	१३९८	प्र केतुना बृहता	१५३४	प्र भूर्जयन्तं महां	१६०५

प्र महिष्ठाय गम्यत	१२६४	प्रातर्याङ्गः सहस्कृत	१०८	भवा वरूथ गृणते	११८
प्र मातुः प्रतरं गुह्यम्	१६३९	प्रान्यान्सपत्नान्	२१९४	भारती पवमानस्य	१९८८
प्र यं राये निनीषसि	१२६०	प्रियं दुग्धं न काम्यम्	८८९	भारतीके सरस्वति	१२३८
प्र य आरुः शिति०	४९०	प्रियमेधवदत्रि०	१०२	भुवश्चक्षुर्महं क्रतस्य	१५३८
प्र यज्ञ एत्वानुषग्	९२७	प्रिया पदानि पश्वो	१४९	भुवो यज्ञस्य रजसश्च	१५३९
प्र यत् ते अग्ने सूरयो	१८९०	प्रियो नो अस्तु विप्रति.	३४	भूमिष्टवा पातु हरितं	२१७१
प्र यत् पितुः परमा०	३०८	प्रेतो यन्तु व्याध्य	२४८३	भूरि नाम वन्दमानो	७८७
प्र यदग्ने सहस्वतो	१८९१	प्रेद्धो अग्ने दीदिहि	११०२	भूरीणि हि त्वे दधिरे	६१३
प्र यद् भन्दिष्ट पुषां	१८८९	प्रेद्गग्निर्वावृधे स्तोमेभिः	४७१	भूपन् न योऽधि	२२७
प्र व शुक्राय भानवे	११३४	प्रेव पिपतिपति	२२६५	मथीद्यदीं विभृतो	१८८
प्र वः सखायो अग्नये	१०६३	प्रेष्ठ वो अतिधि	१४५४	मथीद्यदी विष्टो	३४८
प्रवत् ते अग्ने जनिमा	१६९१	प्रेष्ठसु प्रियाणां	१२६६	मधुमन्त तनूनपाद्	१९०७
प्रवाच्यं वचसः कि मे	१७६५	प्रो त्ये अग्नयोऽग्निपु	८०६	मध्ये होता दुरोगे	१००६
प्र विश्वसामन्नत्रिवद्	८९९	प्रोथदश्वो न यवसे	११२५	मध्वा यज्ञं नक्षति	२०७४
प्र वेधसे कवये	८६६	ब्रभ्राण. सूनो सहस्रो	४५४	मध्वा यज्ञं नक्षसे	२०६२
प्र वो देव चित्सहसा	११४२	बर्हिः प्राचीनमोजसा	१९८४	मनुष्वत्वा नि धीमहि	८९५
प्र वो देवायाम्नये	५७४	बळित्था तद्गुणे	३०५	मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्व०	६६
प्र वो महे सहसा	२८१	बृहती इव सूनवे	१७२०	मनो न योऽध्वन	१९३
प्र वो यह्नं पुरूषां	६८	बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः	१०९६	मन्यता नर. कविः	५६२
प्रशंसमानो अतिथिर्न	१२३१	बृहद्वयो हि भानवे	८७१	मन्द्र होतारं शुचिमद्	१७४१
प्र शर्धे आर्ते प्रथमं	६३८	बृहन्त इजानवो	४६०	मन्द्र होतारमुक्षिजो	११६५, १६०४
प्र सद्यो अग्ने अल्पेपि	७६३	बृहस्पतिर्म आकृतिम्	२२१२	मन्द्र होतारमृत्विजं	१३४८
प्र सप्तहोता सनका	५७१	बोधो मे अस्य वचसो	३४४	मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणी	१९२५
प्र सन्नजो असुरस्य	१८०३	ब्रह्म च ते जातवेदो	१५१२	मन्द्रो होता गृहपतिः	७२
प्र सु विश्वान् रक्षसो	२३१	ब्रह्मणाग्निः संविदानो	२४१६	मयो दधे मेधिर	४४९
प्र सो अग्ने तवोतिभिः	१२५३	ब्रह्म प्रजावदा भर	१०७७	मय्यग्ने अग्नि गृह्णामि	२३२५
प्र होता जातो महान्	१६०१	भ्रजन्त विश्वे देवत्वं	१५७	मर्ता अमर्त्यस्य ते	१२१८
प्र होत्रे पूर्यं वचो	५१३	भद्र ते अग्ने सहसि०	७२८	महः स राय एपते	३५३
प्राप्तये तवसे भरध्वं	१७९४	भद्रं नो अपि वातय	१५७१	महत् तदुल्वं स्थविर	१६११
प्राप्तये बृहते यज्ञियाय	८४८	भद्र मनः कृणुष्व	१२४३	महश्चिदग्न एनसो	७३८
प्राप्तये वाचमीरय	१७११	भद्रा अग्नेर्वैद्यइवस्य	१६२५	महो अस्यध्वरस्य	११६६
प्राग्नये विश्वशुचे	१८१०	भद्रा ते अग्ने स्वनीक	६८७	महान्सधस्थे ध्रुव	४८३
प्राची दिग्गिनरधिपतिः	२१६१	भद्रो नो अग्निराहुतो	१२४२	महिकेरव उतये	१०३
प्राचीनं बर्हिः प्रादिशा	२००६, २१२१	भद्रो भद्रया सचमान	१५०१	महि त्वाष्टमूर्जयन्ती	४९३
प्राचीनं बर्हिरोजसा	१९३४	भरद्वाजाय सप्रथः	१०७४	महे यरिपत्र इं	१८९
प्राचीनो यज्ञः सुधितं	११४४	भरामेधं कृणवामा	२५९	महो देवान्यजसि	१०९३
प्राञ्च यज्ञं चक्रम	४४८	भवा ह्युन्नी वाध्यइवोत	१६२९	महो नो अग्ने सुवितस्य	११२३
प्रातः प्रातरगृहपतिर्नो	२२७२	भवा नो अग्नेऽवितोत	१५३३	महो रुजामि बन्धुता	१८२३
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं	२४३७	भवा नो अग्ने सुमना	६०५	महो विश्वो अभि	१२९५
प्रातरग्निः पुरुप्रियो	८८१				

मा कस्य यक्ष	६७८	य उदानट् परायणं	२३९५	यस्वा क्रुद्धा प्रचक्रुः	२२३३
मा ज्येष्ठं वधीदयमग्न	२१९०	य उ श्रियो दमेष्वा	३९९	यस्वा होतारमनजन्	६१४
मातेव यद्भरसे	८६९	य एन परिधीदन्ति	२३९०	यथा चिद् वृद्धमतसम्	१३९५
माध्यंदिने सवने	५५५	य सीमकृण्वन्	७४२	यथायजो होत्रमग्ने	६०१
मानः समस्य दूह्य १ः	१३८१	यः पञ्च चर्षणीराभि	११७८	यथा व स्वाहाग्ने	११३०
मानिन्दत य इमां	१७५९	य परस्या परावतः	१७१२	यथा विद्वो अरं करद्	४३२
मानां अग्ने दुर्भृतये	११२१	य पौरुषयेण क्रविपा	१८४३	यथा त्रिप्रस्य मनुषो	२३३
मानो अग्नेऽमतये	५९८	यः समिधा य आहुती	१२२८	यथा सो अस्य प्ररिधिः	२३०७
मानो अग्नेऽव सृजो	३६५	यः सुनीथो ददाशुषे	३९८	यथा ह स्यद्वसत्रो	७३९
मानो अग्नेऽवीरते	१११८	य सोमे अन्तर्यो	२३५६	यथा हस्य वहसि	२३३१
मानो अग्ने सख्या	१९४	य स्नीहितीयु पूर्व्य	२१६	यथा होतर्मनुषो	९७१
मानो अरातिरीशत	४४२	य प्राममाविशत	२३०२	यदग्न एषा समितिः	१५४७
मानो अस्मिन् महाधने	१३८४	यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा	७३७	यदग्निरापो भदहत्	२२७५
मानो देवानां विश	१३८०	यच्चिद्धि शश्वता तना	३३	यदग्ने अद्य मिथुना	१८४०
मानो मर्ताय रिपवे	१३९६	यजमानाय सुन्वत	९२४	यदग्ने कानि कानि	१४८२
मानो रक्ष आ वेशीद्	१४०८	यजस्व होतरिषितो	१०००	यदग्ने दिविजा अस्मि	१३३७
मानो हृणीतामतिथिः	१२६८	यजा नो मित्रावरुणा	२२८	यदग्ने मर्त्यस्त्वं	१२४८
मार्जाल्यो मृज्यते स्वे	७६२	यजिष्ठ त्वा यजमाना	२७३	यदग्ने यानि कानि	२३५३
माग्ने अग्ने नि षदाम	१११०	यजिष्ठ त्वा ववृमहे	१२२६	यदग्ने स्यामह त्वं	१३६५
मित्र न य सुधित	१०२४	यजूषि यज्ञे समिधः	२३४५	यदग्न दाशुषे त्वं	६
मित्रश्च तुभ्य वरुण.	५८४	यजातवेदो भुवनस्य	२४०१	यदस्युपजिह्विका यद्	१४८३
मित्रो अग्निर्भवति	४७३	यज्ञस्य केतुं प्रथमं	८४३, १६७८	यददीव्यन्नृणमह	२३८४
मुनयो वातरशनाः	२४५९	यज्ञानां रथ्ये वय	१३६९	यदद्य त्वा प्रयति	५७३
मुमुक्ष्वोऽ मनवे	२९५	यज्ञायज्ञा वो अग्नये	१०९०	यदन्नमग्नि बहुधा	२३४६
मुमोद गर्भो वृषभः	१५३५	यज्ञासाहं दुव इषे	१५७७	यदन्नमदस्यनृतेन देवा	२३४८
मुहुर्गृध्रैः प्र वदत्यार्तिं	२२५१	यज्ञेन वर्धत जात०	३८५	यदयुक्था अरुषा	२६५
मूरा अमूर न वय	१५०९	यज्ञेभिरद्भुतक्रतु	१२७७	यदसावसुतो देवा	२१६५
मूर्धा दिवो नाभिरग्नि	१७१८	यज्ञैरिषू सन्नममानो	१८३१	यदस्मृति चक्रम किं	२२००
मूर्धानं दिवो अरतिं	१७७३	यं जनासो हविष्मन्तो	१४४३	यदस्य हतं विहतं	२३०९
मूर्धा भुवो भवति	२४०२	यता सुजूर्णां रातिनी	६४८	यदि वाहमनृतदेव	१२१३
मेधाकारं विदथस्य	१६५८	यस्कृषते यद्वनुते	२२४९	यदि शोको यदि	२२७७
मेष इव वै सं च	२३३८	यत्ते कृष्णः शकुन	१५६२	यदीं गणस्य रशना०	७५७
मैनमग्ने वि दहो माभि	१५५७	यत्ते मनुर्थदनीक	१६२७	यदी घृतेभिराहुतो	१२४६
मो ते रिषन्थे अच्छोक्तिभिः	१२६९	यत्पाकत्रा मनसा	१४९६	यदी मन्थन्ति बाहुभि	५६३
यु भागरे मृगयन्ते	२२९७	यत्र क्व च ते मनो	१०५८	यदी मानुरुप स्वसा	४३०
य इन्द्रेण सरथं याति	२३५७	यत्र वेथ वनस्पते	१२७२	यदीमृतस्य पयसा	२४६
य इमे धावापृथिवी	२०११; २१२६	यत्रा वदेते अवरः	२४१३	यदुद्धतो निवतो यासि	१६९३
य ई चिकेत गुहा	१५०	यत्रेदानीं पश्यसि	१८३३	यदेदेनमदधुः	२४०७
य उग्र इव शर्यहा	१०८०	यत्रैषामग्ने जनिमानि	२२९२	यद् दारुणि बध्यसे	२३८८

यद्देवानां मित्रमहः	९७	यस्त ऊरू विहरति	२४१९	यस्येद प्रदिशि यद्	२३३६
यद्धस्ताभ्यां चकूम	२३८१	यस्तुभ्य दाशाद्यो	१५९	यातुधानस्य सोमप	२२९१
यद्यग्निः क्रव्याद्यदि वा	२२३२	यस्तुभ्यमग्ने अमृताय	६५५, १६६१	या ते वसोर्वात इषु	२२७०
यद्यर्चिर्यदि वासि शोचि	२२७६	यस्ते अग्ने नमसा	८५३	यान् राये मर्तान्सुपूदो	२१२
यद् रिप्रं शमल चकूम	२२५३	यस्ते अग्ने सुमति	१५४६	यामन् यामन्नुपयुक्त	२३३२
यद्वा उ विश्वपति शितः	१२८२	यस्ते अद्य कृणवद्	१५९७	या मा लक्ष्मी पतयाल्ल	२२०२
यद्वातजूतो वना	१३१	यस्ते अप्पु महिमा	२२०६	यामाहुति प्रथमामथर्वा	२२०९
यद्वाहिष्ठं तदग्नये	९१७	यस्ते गर्भममीवा	२४१७	यामृपयो भूतकृतो	२३२४
यद् विजामन्परुषि	१२११	यस्ते देवेषु महिमा	२२०७	या रूचो जातवेदमो	१८६५
यद् वो वय प्रमिनाम	१४९५	यस्ते भरादन्नियते	६५३	यावन्मात्रमुषसो	२४१५
यं त्वं विप्र मेधसातौ	१४१३	यस्ते यज्ञेन समिधा	९८३	या वा ते सन्ति दाशुपे	११३१
यं स्वमग्ने समदहः	१५६९	यस्ते सुनो सहस्रो	१०१५	युक्ष्मा हि देवहृतमो	१३७३
यं त्वा गोपवनो गिरा	१४५२	यस्ते हन्ति पतयन्त	२४१८	युगेयुगे विदथं	१७८४
यं त्वा जनास इन्धते	१३३६	यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने	६०४	युयूषतः सवयसा	३२८
यं त्वा जनास ईळते	१४५३	यस्त्वा दोषा य उषसि	६५४	युवमेतानि दिवि	२४६९
यं त्वा जनासो अभि	१५०७	यस्त्वा भ्राता पतिभूत्वा	२४२०	युवानं विश्वपति कविं	१३६८
यं त्वा देवा दधिरे	१६१०	यस्त्वामग्ने इन्धते	७३४	यूयमुष्मा मरुत ईदृशे	२१५३
यं त्वा देवासो मनवे	७७	यस्त्वामग्ने हविष्पति.	१७	ये अग्नयो अप्स्वन्तये	२३५५
यं त्वा द्यावापृथिवी	१४९८	यस्त्वा स्वप्नेन तमसा	२४२१	ये अग्ने चन्द्र ते गिरः	८३८
यं त्वा पूर्वमीळितो	१६२८	यस्त्वा स्वश्च सुहिरण्यो	१८२२	ये अग्ने नेरयन्ति	८९२
यं त्वा होतारं मनसाभि	२३५९	यस्त्वा हृदा कीरिणा	७९९	ये उग्र अर्कमानुचु	२४४१
यं देवासन्निरहन्	१९५४	यस्मा ऋण यस्य जायाम्	२३८३	ये ते शुक्रास शुचयः	९८९
यं देवासोऽजनयन्त	२४०५	यस्माद् रेजन्त कृष्टय	१२५९	ये देवास्तेन हासन्ते	२२९९
यन्मा हुतमहुतम्	२३४७	यस्मिन् देवा अमृजत	२२४३	येन ऋपयो बलम्	२३३४
यमग्नि मेध्यातिथिः	७८	यस्मिन् देवा मन्मनि	१५५६	येन चष्टे वरुणो मित्रो	१२३९
यमग्ने पृत्सु मर्त्यम्	४४	यस्मिन् देवा विदथे	१५५५	येन देवा अमृतम्	२३३५
यमग्ने मन्यसे रथि	१५८४	यस्मिन्नश्वास ऋषभाम	१६६४	येन वसाम पृतनासु	१४००
यमग्ने वाजसातम	८९१	यस्मै त्व सुकृते	८००	ये नाकस्याधि रोचने	२४४३
यमर्था नित्यमुपयाति	११११	यस्मै त्व सुद्रविणो	२७०	येनेन्द्राय समभरः	२१४२
यमापो अद्रयो वना	१०९४	यस्मै त्वमायजसे	२५७	ये पर्वताः सोमपृष्ठा	२३६४
यमासा कृपनीळं	१५७३	यस्य ते अग्ने अन्ये	१२५६	ये पायवो मामतेय	३४५; १८२५
यमीं द्वा सवयसा	३२९	यस्य त्रिधात्ववृत्ता	१४७६	ये पुग्स्ताज्जुह्वति	२३४२
यमेरिरे भृगवो	३२१	यस्य त्वमग्ने अध्वरं	६५६	ये बध्यमानमनु दीध्याना	२१५१
यमैच्छाम मनसा	१६१६	यस्य त्वमूर्ध्वो अध्वराय	१२३३	ये भक्षयन्तो न वसुनि	२२७९
यमो ह जातो यमो	१४१	यस्य दूतो असि क्षये	२१८	येभिः पाशै विरिवित्तो	२१९२
यं मर्त्यः पुरुस्पृहं	८१६	यस्य मा परुषा शतम्	९३२	ये महो रजमो विदुः	२४४०
यया गा आकरामहे	१७०४	यस्य शर्मन्नुप विश्वे	१८०८	ये मा क्रोधयन्ति लपिता	२३०३
यशा इन्द्रो यशा अग्निः	२४८०	यस्याग्निर्वपुर्गृहे	१२३४	ये मे पञ्चाशतं ददुः	८८५
यस्त इधम जभरत्	६५२	यस्याजुषन्नमस्विनः	१३८६	ये राधांसि ददत्यद्वया	१२०१

ये शुभ्रा घोरवर्षस.	२४४२	यो विश्वा दयते वसु	१२६२	वर्धन्तीमापः पन्वा	१२७
येऽश्रद्धा धनकाम्यात्	२२६४	यो विश्वाभि विपश्यति	१७१४	वर्धान्यं पूर्वाः क्षपो	१८०
येपामाबाध ऋग्मिय	१२७२	यो हव्यान्धैरयता	१२४७	वत्राजा सीमनदतीः	४५२
येपामिळा घृतहस्ता	११९९	यो होतासीत् प्रथमो	२४००	वसां राजानं वसतिं	७७२
ये स्तोतृभ्यो गोभद्रा०	३८४	रक्षा णो अग्ने तव	६७९	वसिष्वा हि मियेध्य	२८
ये ह त्ये ते सहमाना	६९१	रक्षोहणं वाजिनमा	१८२८	वसु न चित्रमहसं	१६७५
यो अग्निं तन्वो३ दमे	१३५७	रथाय नावमुत् नो	३०३	वसुरग्निर्वसुश्रवा	९०८
यो अग्नि देवधीतये	१८	रथो न यातः शिक्षभिः	३१२	वसुर्वसुपतिर्हि कम्	१३६६
यो अग्नि हव्यदातिभिः	१२३६	रपङ्गन्धर्वारण्या च	१५४१	वस्त्री ते अग्ने संदशिः	१०६६
यो अग्निः ऋव्यवाहनः	१५६७	रथिर्न चित्रा सुरो	१३४	वहिष्ठेभिर्विहरन्	७४३
यो अग्निः ऋव्यात् प्रविशेश	१५६६	रथिर्न यः पितृत्रित्तो	२०५	वाजयन्निव नू रथान्	३९७
यो अग्निः सप्तमानुष	१३०७	राजन्तमध्वराणां	८	वाजिन्तमाय सद्भ्यसे	१६७१
यो अग्नीषोमा हविषा	२४७२	रात्रिरात्रिमप्रयातं	२२६९	वाजी वाजेषु धीयते	५४४
यो अध्वरेषु शतम	२३५	रायस्पर्धि स्वधावोऽस्ति	७९	वाजो नु ते शवस०	८७०
यो अपार्चानि तमसि	१८०६	रायो बुध्नः संगमनो	१८८४	वातस्य परमकीकृता	१९७०
यो अपस्वा शुचिना दैव्येन	२४२९	वंस्व विश्वा वार्याणि	१२०८	वातस्या श्चो वायोः सखा	२४६२
यो अस्मा अन्न तृणा३	१६४१	वस्वा नो वार्या पुरु	१२९६	यातोपधूत इषितो	१६५७
यो अस्मै हव्यादातिभिः	१२९०	वश्ना सूनो सहसो	१०१७	वायुरस्मा उपामन्यत्	२४६४
यो अस्य पारं रजसः	१७१५	वश्ना हि सूनो अस्य०	९७४	वि घ त्वावां ऋतजात	३६६
यो अस्य समिधं वेद	२३९२	वधेन दस्यु प्र हि	७९५	वि जिहीष्व लोक कृणु	२३८९
यो देवो विश्वाद्यमु	२३५८	वधैर्दु शंसा अप दूढ्यो	२६४	वि ज्योतिषा बृहता	७७५
यो देह्यो३ अनमयद्	१८०७	वनस्पति पवमान	१९९०	वि ते मुञ्चामि रशनां	२१९८
यो न आगो अभ्येनो	७८४	वनस्पतिरवसृजन्	१९५१	वि ते विष्वग्वातजूतासो	९८८
यो नः सनुस्यो अभि	९८२	वनस्पतिरवसृष्टो	२०२३	वि त्वा नर पुरुश्रा	१८३
यो न सुप्ताङ्गाप्रतो	२२२८	वनस्पते रशनया नियूया	२००१	विदन्तीमन्न नरो	१४७
यो नस्तायद दिप्सति	२२२७	वनस्पतेऽव सृजोप	१९६२	वि देवा जरसावृत्न	२३४३
यो नो अग्नि पितरो	२२४६	वनस्पतेऽव सृजा	२०७०, २०८२	विश्वा ते अग्ने त्रेधा	१५९०
यो नो अग्ने अररिचो	३४६	वनेम पूर्वारयो	१७४	विश्वा हि ते पुरा वथम्	१३८८
यो नो अग्ने दुरव	१०७२	वनेषु जायुर्मतेषु	१४४	विद्वो अग्ने वयुनानि	२०१
यो नो अग्नेऽभिदासति	२५४	वह्नि यशसं विदथस्य	११९	वि द्वेषांसीनुहि	९९९
यो नो अश्वेषु वीरेषु	२२४१	वय ते अग्न उक्थेः	७९६	विधेम ते परमे	४०५
यो नो दिप्सददिप्सतो	२२९६	वयं ते अग्ने समिधा	११७५	वि पाजसा पृथुना	५८८
यो नो ध्रुवे धनमिदं	२३६९	वयं ते अद्य ररिमा	५८५	वि वृक्षो अग्ने मघवानो	२०९
यो नो रमं दिप्सति	१२१२	वयं नाम प्र ब्रवामा	१८९६	विप्रं विप्रासोऽवसे	१२१९
यो भानुभिर्विभावा	१५२१	वयमग्ने अर्वता	३९४	विप्र होतारमद्गुहं	१३५२
यो म इति प्रवोचति	९३१	वयमग्ने वनुयाम	७८३	वि प्रथतां देवजुष्टं	१९९५
यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा	६४७	वयमु त्वा गृहपते	१०४१	विप्रस्य वा स्तुवत	१२३५
यो मे शता च विशतिं	९२९	वया इदग्ने अग्नयस्ते	१७१७	विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु	१९८०
यो रक्षांसि निजूर्वति	१७१३	वर्च आ धेहि मे तन्वां३	२२१४	विभक्तासि चित्रभानो	४३
यो विश्वतः सुप्रतीकः	२६२			विभावा देव सुरणः	१७५०

विभूतरातिं विप्र	१२२५	विष गवां यातुधाना	१८४५	वैश्वानरोऽङ्गिरसां	२३७७
विभूषन्नग उभयौ	१०३१	विषाणा पाशान् वि	२३८७	वैश्वानरो न आगमद्	२३७६
वि मे कर्णा पतयतो	१७९२	वि षाह्यग्ने गृणते	७२९	वैश्वानरो न ऊतय	२३७५
वि यदस्थायजतो	३११	विषूचो अश्वान् युयुजे	१६४३	वैश्वानरो महिम्ना	१७२३
वि यस्य ते ज्ञयस्नानस्य	१६६९	विषेण भद्गुरावतः	१८५०	व्यचस्वतीरुर्विया	२००७, २१२२
वि यस्य ते पृथिव्यां	११२७	विष्णुरिस्था परममस्य	१४८७	व्यनिनस्य धनिनः	३५९
वि ये चृतन्ति ऋता	१५१	वीतिहोत्र स्वा कवे	९२२	व्यश्वस्त्वा वसुविदम्	१२८५
वि ये ते अग्ने भेजिरे	११०८	वीती यो देवं मर्तो	१०८७	व्यस्तन्नाद् रोदमी मित्रो	१७८२
वि यो रजांस्यमिमीत	१७७९	वीळु चिद् दृळहा पितरो	१८६	व्याघ्रेऽह्वयजनिष्ट वीरो	२१८५
वि यो वीरुसु रोधन्	१५२	वृजे ह यज्ञमसा	१००४	व्रता ते अग्ने महतो	४८४
विराट् सन्नाड् विभ्वी	१९३५	वृतेव यन्त बहुभिः	९४१	व्रतेन त्वं व्रतपते	२१९७
वि राय और्णोदुर	१६३	वृषण स्वा वय वृषन्	५५१	शक्रेम स्वा समिधं	२५८
वि लपन्तु यातुधाना	२२८६	वृषायन्ते महे अत्याय	४९८	शग्धि वाजस्य सुभग	५९९
वि वातजूतो अतसेपु	११३	वृषा वृष्णे दुदुहे	१५४०	शमग्निरग्निभिः करच्छं	२४५७
विशां कवि विष्पति	७९२, ९४६;	वृषा ह्यग्ने अजरो	१०९२	शमिता नो वनस्पतिः	२०४६
१७३६		वृषो अग्निः समिध्यते	५५०	शश्वत्तमनीळते दूत्याय	१९९४
विशा गोपा अस्य	२६०	वेस्था हि वेधो अध्वनः	१०४४	शश्वद्गनिर्वधयश्वस्य	१६३५
विशां राजानमद्भुतम्	१३३३	वेदिषदे प्रियधामाय	२९२	शान्तो अग्निः क्रव्याच्छान्त	२३६३
विशो यदहं नृभिः	१६९	वेधा अदृप्तो अग्निः	१६६	शिवस्त्वष्टरिहा गहि	१२७१
विशोविशो वो अतिथि	१४४२	वेध्वरस्य दूत्यानि	७००	शिवा नः सख्या सन्तु	७२७
विश्वपतिं यह्नमतिथि	१७४९	वेषि होत्रमृत पोत्रं	१४९३	शिशानो वृपभो यथा	१४०१
वि श्रयन्तामुर्विया	१९४६	वेषि ह्यध्वरीयताम्	७१६, ९६१	शिञ्जु न स्वा जेन्यं	१५०८
वि श्रयन्तामृतावृधः	१९२३	वेपीद्वस्य दूत्यं	७१७	शीतिके शीतिकावति	१५७०
वि श्रयन्तामृतावृधो	१९११	वैकङ्कतेनेध्मेन	२१६३	शीर पावकशोचिष	१४७३
विश्वस्मा अग्नि भुवनाय	२४०८	वैश्वानरं कवयो	२४०९	शुक्रः शुशुक्वौ उपो	१६४
विश्वस्य केतुभुवनस्य	१५९४	वैश्वानर मनसार्गिन	१७५३	शुक्रेभिरङ्गै रज	४५१
विश्वा अग्नेऽप दहारातीः	११०६	वैश्वानरं विश्वहा	२४१०	शुचि न यामञ्जिविरं	१७४०
विश्वा उत स्वया वय	४४३	वैश्वानर. पविता मा	२३८६	शुचिः पावक वन्धो	४४४
विश्वानि नो दुर्गहा	७९८	वैश्वानर प्रतनथा नाकम्	१७३८	शुचिः पावको अद्भुतो	१९२०
विश्वामां गृहपतिः	१०२७	वैश्वानर तय तत्	१७२६	शुचिः षम यस्मा अश्वित्	८१८
विश्वासां स्वा विशां	२७९	वैश्वानर तव तानि	१७७७	शुचिर्देवेष्वर्पिता होत्रा	१९२६
विश्वे देवाः स्वाहाकृति	१९९१	वैश्वानर तव धामान्या	१७५१	शुनश्चिच्छेप निदित	७७३
विश्वे देवा अनमस्यन्	१७९३	वैश्वानरस्य दसनाभ्यो	१७५२	शूषेभिवृधो जुषाणो	१५२३
विश्वेभिरग्ने अग्निभिः	३७	वैश्वानरस्य त्रिमितानि	१७७८	शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः	९९
विश्वेषां ह्यध्वराणाम्	१४९७	वैश्वानरस्य सुमतौ	१७२४	शृतं यदा करसि	१५५८
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां	६४६	वैश्वानराय धिषणाम्	१७२७	शृतमज शृतया	२२२५
विश्वेषामिह स्तुहि	१४७२	वैश्वानराय पृथुपाजसे	१७४२	शेषे वनेषु माघोः सं	१४०३
विश्वे हि स्वा सजोषसो	९०५; १२८७	वैश्वानराय प्रति	२३८५	शोचा शोचिष्ट दीदिहि	१३२४
विश्वो विहाया अरति.	२८८	वैश्वानराय मीळ्हुषे	१७५८	श्रीणन्नुप स्याद्विवं	१५४

श्रीणामुदारो धरुणो	१५९३	स जातो गर्भो असि	१४८६	स नः शर्माणि वीतये	५७७
श्रुत्कर्णाय कवये	२२०८	स जायत प्रथमः	६३७	स नः सिन्धुमिव नावया	१८९४
श्रुधि श्रुत्कर्णं वह्निभिः	९८	स जायमानः परमे	३१९; १७८१	स नः स्तवान् आ भर	२०
श्रुधी नो अग्ने सदने	१५४८	स जायमानः परमे व्योमन्	१८००	सनादग्ने मृणसि	१८४६
श्रुष्टीवानो हि दाशुषे	१०१	स जिन्वते जठरेषु	१७३७	स नो दूराच्छासाष्वा	४०
श्रुत्क्यग्ने नवस्य मे	१२८३	सजोपस्त्वा दिवो नरो	९५४	स नो धीतो वरिष्ठया	९१३
श्रूया अग्निश्चिन्नभानुः	४१०	सजोषा धीराः पदैरनु	१२५	स नो नृणां नृतमो	२३७
श्रेष्ठं यविष्ठ भारत	४४१	सं चेष्यस्वाग्ने प्र	२३२०	स नो नेदिष्ठं दृष्टान	२८२
श्रेष्ठं यविष्ठमतिथि	८९	स जागृवद्भिर्जरमाण	१६५१	स नो बोधि श्रुधी हवम्	९०९
श्रसित्यप्सु हंसो न	१३२	संजानाना उप मीद	१९९	स नो बोधि सहस्य	३९५
सं यद्विपो वनामहे	८१३	स तत्कृधीषित०	९८४	स नो मन्द्राभिरध्वरे	१०४३
सं यस्मिन्निश्वा वसूनि	१५२५	स तु वस्त्राण्यध पेवानानि	१४९०	स नो महो अनिमानो	४८
संवत्सरीणं पय	१८४४	स तू नो अग्निर्नयतु	६३६	स नो मित्रमहस्त्वम्	१३५६
संवसव इति वो	२३७०	स ते जानाति सुमतिं	१८१८	स नो राधास्या भर	११८७
संसमिष्टुवसे वृषन्	१७१६	स तेजीयसा मनसा	६१२	स नो रेवत्सामिधानः	३९०
सं सीदस्व महो असि	७६	सतो नूनं कवय सं	१६२३	स नो वस्व उप मासि	१४१७
स आ वक्षि महि न आ	१५०५	स त्वं दक्षस्यावृको	१०२५	स नो विभावा चक्षणिः	९७२
स आहुतो वि रोचते	१८५५	स त्वं न ऊर्जा पते	१२८१	स नो विश्वेभिर्देवेभिः	१४११
स इत्तन्तु स वि जानाति	१७८९	स त्वं नो अवंजिदाया	१०११	स नो वृष्टिं दिवस्परि	४३७
स इदग्निः कण्वत्तमाः	१६७०	स त्वं नो रायः शिशिहि	५९६	स नो वेदो अमात्यम्	११७१
स इदस्तेव प्रति	९६७	स त्वं विप्राय दाशुषे	१३२४	सपर्यवो भरमाणा	१९७७
स इधान उषसो	३९२	स त्वमग्ने प्रतीकेन	१८६०	सपर्येण्यः स प्रियो	९४४
स इधानो वसुष्कवि	२४८	स त्वमग्ने विभावसुः	१३४१	स पूर्वया निविदा	१८८०
स इं मृगो अप्यो वनगुं:	३३७	स त्वमग्ने सौभग०	२७१	सप्त धामानि परियन्	१६७७
स इं रंभो न प्रति	९६८	स त्वमस्मदप द्विपो	१२१६	सप्त मर्यादाः कवयः	१५१८
स इं वृषाजनयत्	२४३४	स दर्शत श्रीरतिथि	१६५२	सप्त स्वसूररुषीः	१५१७
स केतुरध्वराणाम्	५१२	सदासि रणवो यवसेव	१५४४	सप्त होतारस्तमिदीळते	१४०४
सखाय सं वः सम्यञ्चम्	८११	स दूतो विश्वेदभि	६३४	सप्त होत्राणि मनसा	१९५७
सखायस्ते विपुणा	८५२	स दृढहे चिदाभि तृणति	१२६१	स प्रत्नथा सहसा	१८७२
सखायस्त्वा ववृमहे	५००	सद्यो अध्वरे रथिरं	११४५	स प्रत्नवज्जवीयसा	१०६२
सखे सखायमभ्या	२४५०	सद्यो जात ओषधीभि	४७७	सबन्धुश्चासबन्धुश्च	२४७२
स गृत्सो अग्निस्तरुणः	११३५	सद्यो जातस्य दृष्टान०	७०२	सबाधो य जना इमे३	१४४७
स घा नः सूनुः	३९	सद्यो जातो व्यमिमीत	२०१३, २१२८	स बोधि सूरिर्मघवा	४३६
स घा यस्ते ददाशति	५११	स न ईळानया सह	१४६४	स भ्रातरं वरुणमग्न	२४४९
संकसुको विकसुको	२२४०	स नः पावक दीदिवो	१९	समङ्गया पर्वत्या३ वसूनि	१६३०
स चन्द्रो विप्र मर्या	३६०	स नः पावक दीदिहि	५१६	समस्वग्निमवसे	१२२२
स चिकेत सहीयसा	१३०४	स नः पितेव सूनवे	९	स मन्द्रया च जिह्वया	१२००
स चित्र चित्र चितयन्त०	९९२	स न पृथु श्रवाय्यम्	१०५३	समन्या यन्त्युप यन्ति	२४२४
स चेतयन्मनुषो	६३५			स मर्तो अग्ने स्वनीक	११२२

स मङ्गा विश्वा दुरितानि	११७२	स योजते अरुषा	११९३	स होता सेदु दूखं	७०७
स मातरिश्वा पुरुवार	१८८२	स यो वृषा नरां न	३५४	साक हि शुचिना शुचि	४१८
समानं नीळ वृषणो	१५१४	सरस्वती साधयन्ती	१९४९	सप्त ते अग्ने शन्तमा	१४४९
समानं वस्समभि	३४०	स रेवो इव विश्वति	४९	सा द्युमनैर्द्युमिनी बृहद्	१४५०
स मानुषीषु दूळभो	७१३	स रोचयज्जनुषा	१७२८	साधुर्न गृधुरस्तेव	१८४
स मानुषे वृजने	२८९	सर्वानग्ने सहमानः	२२५९	साध्वपांसि सनता न	१९४७
समास्वाग्ने ऋतवो	२३१९	स वाजं विश्वचर्षणिः	४६	साध्वीमकर्देववीति	१६१८
समाहर जातवेदो	२३१५	सवितारमुपसमाश्विना	९३	साम द्विवर्हा महि	१७६०
समित्समित्सुमना	१९५३	स विद्वो आ च पिप्रयो	४४०	सायसाय गृहपतिर्नो	२२७१
समिद्ध इन्द्र उषसाम्	२०१४	स विप्रश्चर्षणीनां	७११	सास्माकेभिरेतरी	१००९
समिद्धमग्निं समिधा	१०२९	स विश्वा प्रति चाकल्प	२१८२	साह्वान्विश्वा अभियुजः	५२३
समिद्धश्चित् समिध्यसे	१६९८	स वेद देव आनम	७०६	मिञ्चन्ति नमसावतम्	१४३३
समिद्धस्य प्रमहसो	९३६	स व्यस्थादभि	४२२	सिध्ना अग्ने धियो अस्मे	१५३०
समिद्धो अग्ने आ वह	१९१८	स श्वितानस्तन्यत्	९८७	सिन्धुर्न क्षोत्रः प्र	१४३
समिद्धो अग्ने आहुत	९३७, २२४४	स संस्तिरो विष्टिरः	२९८	सिन्धोरिव प्राध्वने	१९०१
समिद्धो अग्निः समिधा	२०३७	स सत्पति शवसा	१०१४	सीद होत स्व उ लोके	५६५
समिद्धो अग्निरश्विना	२०२५	स सन्न परि णीयते	७१४	सीसे मृद्द्वं नडे मृद्द्ववम्	२२४५
समिद्धो अग्निर्दिवि	९३३	ससस्य यद्वियुता	६९९	सुकर्माण सुरुचो	६६३
समिद्धो अग्निर्निहित	१९४२	स सुकतु पुरोहितो	२८६	सुक्षेत्रिया सुगातुया	१८८८
समिद्धो अज्जन्कुरं	२१०६	स सुकतुर्यो वि दुरः	११५६	सुजातं जातवेदस	२३३३
समिद्धो अद्य मनुषो	२००३; २११७	ससृवांसमिव रमना	५०४	सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि	१६५३
समिद्धो अद्य राजसि	१९३१	सः स्मा कृणोति केतुमा	८१४	सुनिर्मथा निर्मथितः	५६९
समिद्धो विश्वतस्पतिः	१९८१	स हव्यवाळमर्त्यं	५१९	सुप्रतीके वयोवृषा	१९६९
समिधामि दुवस्यत	१३४३	सहस्राक्षो विचर्षणिः	२५५	सुवर्हरिमिः पूषण्वान्	२०४०
समिधा जातवेदसे	११७४	स हि क्रतुः स मर्यं.	२३६	सुरुवमे हि सुपेशसा	१९३६
समिधान उ सन्त्य	१३५१	सहि क्षपावो अग्नी	१७८	सुवीर रथिमा भर	१०७०
समिधानः सहस्राजिद्	९२५	स हि क्षेमो हविर्यज्ञ	१५७६	सुशसो बोधि गृणते	९१
समिधा यस्य आहुति	९५६	स हि द्युभिर्जनानां	८७२	सुशित्पे बृहती मही	१९८६
समिधा यो निशितो	१२३७	स हि पुरु चिदोजसा	२७४	सुसदृक् ते स्वनीक	११२९
समिध्यमानः प्रथमानु	६००	स हि यो मानुषा युगा	१०६४	सुसमिद्धाय शोचिषे	१९६४
समिध्यमानो अध्वरे	५४०	स हि विश्वाति पार्थिवा	१०६१	सुसमिद्धो न आ वह	१९०६
समिध्यमानो अमृतस्य	९३४	स हि वेदा वसुधिति	७०५	सूक्तवाकं प्रथमम्	२४०४
समिन्धते संकसुक	२२३७	स हि शर्धो न मारुतं	२७७	सूर्यो न यस्य दशति०	९६५
समुद्रादूर्मिंधुमो	१८९५	स हि ष्मा धन्वाक्षितं	८१७	सूर्यं चक्षुर्गच्छतु	१५५९
समुद्रे त्वा नृमणा	१५९१	स हि ष्मा विश्वचर्षणि	९०६	सेदग्निर्ग्रीरत्य०	१११३
सं माग्ने वर्चसा सृज	२६	स हि सत्यो यं पूर्वं	९१२	सेदग्निर्यो वनुष्यतो	११४
सम्यक् स्रवन्ति सरितो	१९००	सहे पिशाचान्सहसा	२२९८	सेदग्ने अस्तु सुभगः	१८१९
स यक्षदस्य महिमानम्	२०६४	स होता यस्य रोदसी	४८९	सेनेव सृष्टामं दधाति	१४०
स यन्ता विप्र एषां	५७६	स होता विश्वं परि	३८९	सेमां वेतु वषट्कृतिम्	११८२



सैनानीकेन सुविदध्रो	४०८	स्वाष्टृग् देवस्यामृत	१५५१	होता यक्षत् समिधाग्निम्	२०४८
सो अग्न ईजं शशमे	२४७	स्वाहाकृतान्या गहि	१९३०	होता यक्षत् समिधानं	२०९५
सो अग्निर्यो वसुगृणे	८०२	स्वाहाग्नये वरुणाय	१९७३	होता यक्षत् समिधेन्द्रम्	२०८४
सो अद्धा दाश्वधरो	१२३२	स्वाहा यज्ञं कृणोतन	१९१७	होता यक्षत् सुपेशसा	२१००
सो चिन्नु भद्रा क्षुमती	१५४२	स्वाहा यज्ञं वरुणः	२०४७	होता यक्षत् सुपेशसोषे	२०५४
सोमस्य मा तवसं	४४७	हरयो धूमकेतवो	१३१३	होता यक्षत् सुवर्हिष	२०२८
सोमस्य मित्रावरुणा	१४४०	हरिः सुपर्णो दिवम्	२३४९	होता यक्षत् सुरेतसं २१०३; २०५७	
सोमस्येव जातवेदो	२३१६	हविष्कृणुध्वमा गमद्	१४२४	होता यक्षत् स्वाहाकृती	२१०५
सोमो न वेधा ऋत०	१३३	हविष्पान्तमजरं	२३९७	होता यक्षदग्नि समिधा	२१२९
स्तविष्यामि त्वामह	९०	हन्यवाळग्निरजर	७९१	होता यक्षदग्निं स्वाहा २०५९, २१४१	
स्तीर्णं बर्हिः सुष्ट्रीमा	२१०९	हस्ते दधानो नृम्णा	१४६	होता यक्षदग्निमीळ	२१३२
स्तीर्णा अस्य संहतो	४५३	हिरण्यकेशो रजसो	२४४	होता यक्षदिवाभिरिन्द्रम्	२०८६
स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने	६८५	हिरण्यदन्तं शुचिर्वर्ण०	७६९	होता यक्षदिडेडित	२०५१
स्तुवानमग्न आ वह	२२८४	हिरण्यपाणि सवितारं	२३६२	होता यक्षदिन्द्रं स्वाहा	२०९४
स्तृणानासो यतस्तुचो	१९२२	हिरण्यरूप स हिरण्य	२४३१	होता यक्षदीडेन्यम्	२०९७
स्तृणीत बर्हिरानुषग्	१९१०	हुवे व. सुद्योत्मानं	४१६	होता यक्षदुषासानक्ता	२१३५
स्तोकानामिन्दुं प्रति	२०२४	हुवे वः सूनु सहसो	९७९	होता यक्षदुषे इन्द्रस्य	२०८९
स्तोमेन हि दिवि देवासो	२४०६	हुवे वास्तस्वनं कवि	१४६७	होता यक्षदोजो न वीर्यं	२०८८
स्पर्हा यस्य श्रियो दशे	११८१	हृणीयमानो अप हि	७७४	होता यक्षद् दुर ऋषवाः	२१३४
स्व आ दमे सुदुघा	२४२८	हृदा पूत मनसा	२२८३	होता यक्षद् दुरो दिशः	२०५३
स्व आ यस्तुभ्यं दम	१९०	होताजनिष्ट चेतन.	४२५	होता यक्षद् दै० २०५५, २०९०, २१३६	
स्वः स्वाय धायसे	४३१	होता देवो अमर्थः	५४३	होता यक्षद् बर्हिः	२१३३
स्वग्नयो वो अग्निभिः	१२३०	होता नियत्तो मनो	१६०	होता यक्षद् बर्हिरूपंभ्रदा	२०५२
स्वग्नयो हि वार्यं	३५	होता यक्षत् तनूनपातम् २०८५, २०९६;		होता यक्षद् बर्हिषीन्द्र	२०८७
स्वध्वरा करति जातवेदा	१२०७	२१३०		होता यक्षद् वन २०५८, २०९३; २१०४	
स्वना न यस्य भामास	१५०३	होता यक्षत् तनूनपात्	२०४९	होता यक्षद् वनस्पतिम्	२१३९
स्वयं यजस्व दिवि देव	१५३२	होता यक्षत् तिस्रो देवो २०५६, २१३७		होतारं एवा वृणामहे	८९३
स्वर्णं वस्तोरुषसा	११६२	होता यक्षत् तिस्रो (। इन्द्रपत्नी ) २०९१		होतारं विश्वेधसं	९२
स्वर्धन्तो नापेक्षन्त आ	२२२०	होता यक्षत् पेशस्वतीः	२१०२	होतारं सप्त जुहो	११६
स्वस्ति नो दिवो अग्ने	१५२७	होता यक्षत् प्रचेतसा	२१०१	होता यक्षद् व्यचस्वती	२०९९
स्वाधयो दिव आ सप्त	२०२	होता यक्षत् त्वष्टारमच्छिम्	२१३८	होता यक्षक्षराशस २०५०, २१३१	
स्वाधयो३ वि दुरो देवयन्तो	१९७८	होता यक्षत् त्वष्टारमिन्द्र	२०९२	होतारं चित्ररथम्	१४८९
				ह्वयाम्यग्निं प्रथमं	२४४८

अग्न आयुषि पवस  
अग्निर्ऋषिः पवमानः  
अग्ने पवस्व स्वपा

२४८४  
२४८५  
२४८६

उभाभ्यां देव सवित  
त्रिभिष्टव देव सवित  
पुनन्तु मां देवजनाः

२४८९  
२४९०  
२४९१

यत्ते पवित्रमर्चिष्यदग्ने  
यत्ते पवित्रमर्चिष्यदग्ने

२४८८  
२४८७

सोमसूक्तेषु पठिताः, सोममन्त्रसंग्रहे मुद्रिताश्च

## अग्निमन्त्राः ।

( ऋ० ९।६६।१९--२१ )

( शनं वैखानसाः । अग्निः पवमानः । गायत्री । )

अग्र आरुंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः ।	
आरे बांधस्व दुच्छुनाम् ॥	२४८४
अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।	
तमीमहे महागयम् ॥	२४८५
अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।	
दधंद् रयिं मयि पोषम् ॥	२४८६

( ऋ० ९।६७।२३--२७ )

( पवित्र आङ्गिरसो वा वासिष्ठो वा उभौ वा । पवमानोऽग्निः । गायत्री, २४९१ अनुष्टुप् । )

यत् ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा । ब्रह्म तेन पुनीहि नः ॥	२४८७
यत् ते पवित्रमर्चिर्वदग्ने तेन पुनीहि नः ।	
ब्रह्मसवैः पुनीहि नः ॥	२४८८
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च ।	
मां पुनीहि विश्वतः ॥	२४८९
त्रिभिष्ट्वं देव सवितुर्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः ।	
अग्ने दक्षैः पुनीहि नः ॥	२४९०
पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया ।	
विश्वे देवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहि मां ॥	२४९१

दैवत-सहितान्तर्गत-अग्निदेवतायाः

## गुणबोधक-पदानां सूची ।

अंश स्वस् २, १, ४; ३७२  
 अक्तः शुभिः ६, ४, ६; ९७६ । ६, ५, ६;  
 ९८४  
 अक्रः १, १८९, ७, ३६७  
 अक्षभिः शतं चक्ष्माण. १, १२८, ३, २८५  
 अक्षित ८, ७२, १०, १४३३  
 अगृभीतशोचिः ८, २३, १. १२७०  
 अग्रयः [ बहुवचनम् ] १, १२७, ५, २७६  
 अग्रय अग्निभ्यः वरम् ७, १, ४; ११०३  
 अग्निः. सामान्येन सर्वत्र निर्देशः ।  
 अग्निः अन्यान् अग्नीन् अति अस्ति  
 ७, १, १४, १११३  
 अग्नि अग्निभिः सजोषा ७, ३, १; ११२४  
 अग्निः ह नाम धायि दन् अपस्तमः,  
 यः भस्मना दत्ता वना सं युवते  
 १०, ११५, २, १६६७  
 अग्नौ प्रविष्टः चरति अथर्व ४, ३९,  
 ९; २२८२  
 अगदः अयम् अथर्व ५, २९, ६-९,  
 २३१०--२३१३  
 अग्रजः [ स्वर्ण ] ९, ५, ९, १९८९  
 अग्रयावा देवानाम् १०, ७०, २, १९९३  
 अग्रियः ६, १६, ४८; १०८९ । १, १३,  
 १०; १९१५  
 अहकृयन् ६, १५, १७; १०३९  
 अङ्गिराः १, ३१, १७; ६६ । १, ७४, ५;

२१९ । ४, ३, १५, ६८० । ४, ९, ७;  
 ७१८ । ५, ८, ४, ८२४ । ५, १०, ७,  
 ८४१ । ५, ११, ६, ८४७ । ५, २१, १;  
 ८९५ । ६, २, १०, ९६१ । ६, १६, ११  
 १०५२ । ८, ६०, २, १३९० । ८, ७४, ११;  
 १४५२ । ८, ८४, ४, १४५७ ।  
 ८, १०२, १७ १४७९  
 अङ्गिरसः [ देवताविशेषः ] अथर्व ०  
 ३, २१, ८, २३६२  
 अङ्गिरा ऋषि १, ३१, १; ५०  
 अङ्गिरा ऋषिः प्रथमः १, ३१, १; ५०  
 अङ्गिरसां ज्येष्ठः १, १२७, २; २७३  
 अङ्गिरस्तमः १, ३१, २; ५१ । १, ७५, २;  
 २२५ । ८, २३, १०, १२७९ ।  
 ८, ४३, १८, १३२७ । ८, ४४, ८, १३५०  
 अच्छिद्रोतिः १, १४५, ३; ३३५  
 अजः अथर्व ० ४, १४, ६; २२२२  
 अजरः १, ५८, २, १११ । १, ५८, ४,  
 ११३ । १, १२७, ९, २८० । १, १४४, ४;  
 ३२९ । १, १४६, २ ३३९ । ५, ४, २  
 ७९१ । ५, ६, ४, ८०४ । ५, ७, ४,  
 ८१४ । ६, २, ९; ९६० । ६, ४, ३,  
 ९७३ । ६, ५, ७, ९८५ । ६, १५, ५,  
 १०२७ । ६, १६, ४५; १०८६ ।  
 ६, ४८, ३, १०९२ । ७, १५, १३;  
 ११८९ । ८, २३, ११; १२८० ।

८, २३, २०; १२८९ । १०, ११५, ४;  
 १५६९ । १०, ४६, ७; १६०७ ।  
 ३, २६, २; १७२८ । ६, ८, ५; १७८४ ।  
 १०, ८७, २१, १८४८ । १०, ८८, ३;  
 २३९९  
 अजरः जूर्यःसु वनेषु ३, २३, १; ६२७  
 अजराः १, १२७, ५; २७६  
 अजस्रः १०, ६, २; १५२१ । अथर्व ०  
 ७, ७८, १; २१९८ । १९, ३, २; २२०६  
 अजिर ७, ११, २; ११६७ । अथर्व ०  
 ३, ४, ३; २१६०  
 अजिरशोचिः ८, १९, १३ १२३६  
 अजुर्यः १, ६७, १, १४४ । २, ८, २;  
 ३९८ । ३, ७, ४ ४९३ । १०, ८८, १३;  
 २४०९  
 अजुर्याः [ देवीर्दार ] २, ३, ५; १९४६  
 अजन् मतीनां कृदरम् वा ० य ०  
 २९, १; २१०६  
 अज्ञानः सप्त होतृभिः ३, १०, ४; ५१२  
 अतन्द्रः १, ७२, ७, २०१ । ८, ६०, १५;  
 १४०३  
 अतन्द्रः दूतः ७, १०, ५, ११६५  
 अतिथिः १, ४४, ४; ८९ । १, ५८, ६;  
 ११५ । १, १२८, ४; २८६ । २, २, ८;  
 ३२२ । २, ४, १, ४१६ । ५, १, ८;  
 ७६२ । ५, ४, ५; ७९४ । ५, ८, २; ८२२ ।

६, ४, २, ९७२ । ६, १५, १; १०२३ ।  
 ६, १५, ४; १०, १०-२६ । ६, १५, ६;  
 १०२८ । ६, १६, ४२; १०८३ ।  
 ८, १०३, १०, १२६६ । ८, १०३, १२,  
 १२६८ । ८, ४४, १; १३४३ ।  
 ८, ७४, १; १४४२ । ८, ७४, ७; १४४८ ।  
 ८, ८४, १; १४५४ । १०, ९१, २;  
 १६५२ । १०, १२२, १, १६७५ ।  
 ३, ३, ८, १७४९ । ३, २६, २, १७५४  
 अतिथिः म्रिय - ६, २, ७, ९५८  
 अतिथिः शिवः- ७, ९, ३, ११५७  
 अतिथि जनानाम्- १०, १, ५; १४८९ ।  
 ६, ७, १; १७७३  
 अतिथिः मानुषाणाम्- १, १२७, ८; २७९  
 ४, १, २०; ६१६ । ८, २३, १५; १२९४  
 अतिथि, विशाम्- ३, २६, २, १७२८  
 अत्यः ३, ७, २, ४९८  
 अत्रिः २, ८, ५; ४०१ ।  
 अथयुः ७, १, १; ११००  
 अदब्धः १, ७६, २, २३० । १, १२८, २,  
 २८३ । २, ९, ६; ४०८ । ५, १९, ४;  
 ८८९ । ८, ४४, २०; १३६२ ।  
 ६, ७, ७, १७७९ । ४, ४, ३, १८१५ ।  
 १०, ८७, २४; १८५१  
 अदब्धप्रमतमतिः २, ९, १, ४०३  
 अदाभ्यः १, ३१, १०, ५९ । ३, ११, ५,  
 ५२२ । ७, १५, १५, ११९१ ।  
 १०, ११, १; १५४० । १०, ११८, ६;  
 १८५८ । ९, ५, २; १९६५ । अथर्वं  
 ३, २१, ४, २३५८  
 अदितिः १, ९४, १५; २७० । २, १, ११,  
 ३७९ । ७, ९, ३; ११५७ । ८, १२, १४,  
 १२३७ । १०, ११, १, १५४१  
 अदितिः विष्णोर्षा यज्ञियानाम्- ४, २, २०;  
 ६४६  
 अदितेः गर्भः ऋ. प्रेष० २; २१३०  
 अदपितः ४, ३, ३; ६६८  
 अदसः १, ६९, ३; १६६  
 अद्भुतः २, ७, ६; ४४६ । ५, १०, २,

८३६. ५, २३, २, ९०४ । ६, १५, २,  
 १०२४ । ८, ४३, २४, १३३३ । ६, ८, ३;  
 १७८२ । १, १४२, ३; १२२०  
 अद्भुतकृतः ८, २३, ८; १२७८  
 अस्यन्नासद्वा ६, ४, ४; ९७४  
 अद्भु-अद्भुक् ३, २२, ४; ६२६ ।  
 ६, ५, १, ९७९ । ६, ११, २; १००१  
 ६, १५, ७, १०२९ । ८, ४४, १०;  
 १३५२  
 अद्भुहः [मरुत ] १, १९, ३; २४४०  
 अद्भेः सूत्रः १०, २०, ७, १५७७  
 अद्भोषवाक् ६, ५, १, ९७९  
 अद्भयन् (यन्तम् द्वि०) ३, २९, ५,  
 ५६२  
 अद्भयाविन्-वी ३, २, १५; १७४१  
 अद्भिवेष्यः १०, १२२, १; १६७५  
 अधिप अथर्वं ६, ११९, १, २३८४  
 अधिपतिः । अथर्वं ३, २७, १; २१६१  
 अधिपतिः वनस्पतीनाम् । अथर्वं  
 ५, २४, २; २१६६  
 अध्वक्षः धर्मणाम्- ८, ४३, २४; १३३३  
 अध्विगु ३, २१, ४, ६२१ । ५, १०, १,  
 ८३५ । ८, ६०, १७, १४०५ ।  
 अध्वरश्रीः १, ४४, ३; ८८  
 अध्वरस्य इष्कर्ता १०, १४०, ५; १६८८  
 अध्वरस्य जारः १०, ७, ५; १५३१  
 अध्वरस्य प्रणेता ३, २३, १; ६२७  
 अध्वरस्य राजा ४, ३, १; [रुद्रः] (साम )  
 १, १, ७, ७  
 अध्वराणां अनीकः १०, २, ६, १४९७  
 अध्वराणां केतुः ३, १०, ४; ५१२  
 अध्वराणां गोपा १, १, ८; ८  
 अध्वराणां चेतनः ३, ३, ८; १७४९  
 " पतिः १, ४४, ९; ९४  
 " रथीः १, ४४, २; ८७  
 " रथ्यम् ६, ७, २; १७७४  
 " सम्राट् १, २७, १, ३८  
 " हस्कर्ता ४, ७, ३, ६९५  
 अध्वरीपति २, १, २; ३७०  
 अध्वर्युः २, ५, ६; ४३० । ३, ५, ४; ४७३  
 अध्वर्युः त्वम् १, २४, ६; २६१

अनङ्गान् अथर्वं १२, २, ४८, २२६१  
 अनभिम्लातवर्णः २, ३५, १३; २४३४  
 अनवद्यः १, ३१, ९, ५८  
 अनाष्टयः ७, १५, १४; ११९०  
 अनाष्टयामः [मरुतः] १, १९, ४;  
 २४४१  
 अनाष्टयः अथर्वं ७, ८४, १; १८६६  
 अनानतः ७, ६, ४, १८०६  
 अनिधमः शुक्रेभिः शिक्रिभि दीदाय  
 २, ३५, ४; २४२५  
 अनिमानः १, २७, ११, ४८  
 अनिष्टतविधिः ५, ७, ७, ८१७  
 अनिष्टतः ३, २९, ६; ५६३  
 अनीकम् उत चारु २, ३५, ११; २४३२  
 अनुमाद्यः कृष्टीनाम् ७, ६, १, १८०३  
 अनुषत्यः [सत्यः] ३, २६, १, १७५३  
 अनूनः १, ४६, १, ३३८ । २, १०, ६;  
 ४१४ । ४, २, १; ६६५ ।  
 अनूनवर्चाः १०, १४६, २; १६८५  
 अनेहाः ३, ९, १; ५००  
 अन्तमः नः भव ५, २४, १, २०७  
 अन्तमः स्तोत्रभ्यः भव ३, १०, ८, ५१६  
 अन्तर १०, ५३, १, १६१६  
 अन्तर्धिः देवानाम् अथर्वं १२, २, ४४  
 २२५७  
 अन्ति चित् सन् ८, ११, ४, १२१७  
 अन्नम् अस्य घृताम् २, ३५, ११; २४३२  
 अन्नपतिः अथर्वं १९, ५५, ५; २२७३  
 अन्नाद्य अथर्वं १९, ५५, ५, २२७३  
 अन्नवृष् (धम् द्वि) १०, १, ४; १४८८  
 अन्नियत ४, २, ७, ६५३  
 अपराजित वा० य० २८, २, २०८५  
 अपरीवृतः शिरिणायां चिद्वक्तुना-  
 २, १०, ३; ४११  
 अपस्तमः १०, ११५, २; १६६७  
 अपाम् उपस्थे सीदत् १०, ४६, १;  
 १६०१  
 " गर्भः १, ७०, ३; १७६ ।  
 ३, १, १२-१३; ४५८-५९ ।  
 ३, ५, ३; ४७२

अपाम् गर्भं प्र० आ त्रिवेश ७,९,३;  
११५७

” नपात् १,१४३,१, ३१८।  
१०,८,५, १५३८

अपां नपात् [ देवता ] २,३५,१-१५;  
२४२२-३६

अपां सध.स्थे-स्थः १०,४६,२, १६०२  
अपाक. ६,११,४, १००३। ६,१२,२,  
१००७

अपाकचक्षाः ८,७५,७, १३७९

अपाक् ४,१,११, ६३७

अपूर्व्यः ३,१३,५; ५७८

अप्तरः ३,२७,११, ५४७

अप्यः १,१४५,५, ३३७

अप्रतिष्कृतः ३,२,१४; १७४०

अप्रमृष्य. २,३५,६, २४२७

अप्रयुच्छन् १,१४३,८; ३२५। ३,५,६,  
४७५। १०,८८,१६; २४१२। अथर्व०  
२,६,३, २३२१

अप्रायुः दिवातरात् १,१२७,५, २७६

अप्रोषिवान् ८,६०,१९, १४०७

अप्सरसौ (सः)। अथर्व० ६,११८,१,  
२३८१

अप्सुजाः ८,४३,२८, १३३७

अप्सु श्रितः ३,९,४; ५०३

अप्सुषद् ३, ३, ४; १७४६। अथर्व०  
१२,२,४, २२३२

अभिद्युः ८,७५,६, १३७८

अभिमाति जनानां १०,६९,५, १६२९

अभिमाति जित् अथ० २,६,३, २३२१

अभिशास्तिचातनः ३,३,६, १७४७

अभिशास्तिपा अथर्व० ४,३९,९; २२८२

अभिशास्तिपावा ७,११,३, ११६८

अभिशास्तिपावा यज्ञानाम् १, ७६, ३;  
२३१

अभिशोक. अथर्व० १, २५, ३, २२७७

अभिप्री. १,९८,१; १७२४

” अध्वराणाम् ८,४४,७; १३४९

अभिषसन् एति १,१४०,५; २९६

अभिष्टिः [ इंद्रः ] वा० य० २०,३८;  
२०१६

अमत्यः १,४४,१, ८६। १४४,११,  
९६। १,५८,३, ११२। १,७०,४;  
१७७। ३,१०,९; ५१७। ३,११,२;  
५१९। ३,२४,२, ५२८। ३,२७,५-७;  
५४१-४३। ४,१,१, ६३१। ४,८,१,  
७०४। ५,१४,१-२; ८६०-६१।  
५,१८,१-२, ८८१-८२। ६,३,६,  
९३८। ६,१२,३, १००८। ६,१६,६  
१०४७। ७,१,२३, ११२२।  
७,१५,१०; ११८६। ८,११,५, १२१८।  
८,१९,३; १२२६। ८,१९, २४;  
१२४७। ८,१०२, १७; १४७९।  
१०,२१,४; १५८४। १०,७९,१;  
१६३७। १०, १२२, ३, १६७७।  
१०, १४०, ४, १६८७। ३, २, ११.  
१७३७। ६,९,४-७, १७९०-९३।  
१०,८७,२१, १८४८। १०,११८,६;  
१८५८। वा० य० २१,१५, २०४०।  
२८,३; २०८६। २८,१७, २०९८।  
अथर्व० ७,८४,१, १८६६

अमिन्नदम्भन ४,१५,४; ७५२

अमीवचातनः १,१२,७; १६। अथर्व०  
१,२८,१, २२९३

अमूरः १,१४१,१२, ३१६। ३,२५,३,  
५३४। ३,१९,१, ६१०। ४,६,२;  
६८३। ४,११,५, ७३२। ६,१५,१७,  
१०३९। ७,९,३, ११५७। ८,७४,७,  
१४४८। १०,४,४, १५०९।  
१०, ४६, ५; १६०५। ४, ४, १२;  
१८२४। ऋ० प्रैष ४, २१३२

अमृक्तः ३,११,६; ५२३

अमृतः १,२६,९; ३६। १,४४,५;  
९०। १,५८,१, ११०। १,६८,४,  
१५७। १,७७,१, २३४। २,१०,१२;  
४०९-१०। ३, १, १८; ४६४।  
३,२९,५; ५६२। ३,२९,१३; ५७०।

अमृतस्य केतुः ६,७,६, १७७८

” नाभिः ३,१७,४; ६०३

” रक्षिता ६,७,७; १७७९।  
६,९,३; १७८९

अमृतानां प्रथमः १,२४,२; २७

अमृतानि सत्रा चक्राः विश्वा १,७२,१;  
१९५

अमे देवान् धात् १,६७,३; १४६

अयोद्धृष्टः १०,८७,२, १८२९

अरम् विश्वस्मै १,६६, ५; १३८

अरंकृत्य १०,५१,५; १६१३

अरतिः १,१२८,६; २८८। ३,१७,४;  
६२३। ४,१,१; ६३१। ४,२,१;  
६४७। ७,१६,१; ११९२। ६,१५,४;  
१०२६। ८,१९,१, १२२४। ८,१९,२१;  
१२४४। १०, २, १; १४९९।  
१०,३,६; १५०४। १०,४५,७;  
१५९५। १०,४६,४; १६०४

अरतिः अक्तोः ६,३,५; ९६७

” दिवः हव २,२,२, ३८६।

” दिवस्पृथिव्योः २,२,३; ३८७।  
१०,३,७; १५०५। २,५,१; १७९४

” रोदस्यो... १,५९,२; १७१८

३,१४,७; ५८७। ३,२०,२; ६१६।  
४,२,१; ६४७। ४, २, ९; ६५५।  
४,३,३; ६६८। ४,११,५, ७३२।  
५,१८,५, ८८५। ६,४,२; ९७२।  
६,५,५, ९८३। ६,१५,६; १०२८।  
६,१५,८; १०३०। ६,४८,१, १०९०।  
७,४,४, ११३७। ७,१६,१, ११९२।  
८,२३,१९, १२८८। ८,७१,११,  
१४२९। ८, ७४, ५; १४४६।  
१०,४५,७; १५९५। १०,९१,११;  
१६६१। ३,३,१; १७४२। ४,५,२;  
१७५९। ६,७,४; १७७६। १,१३,५;  
१९१०। १०,७०,११; २००२

अथर्व० १२,२,३३, २२४६

अमृतः वयोभि. १०,४५,८; १५२६

अमृतं म आसन् (आस्ये) ३,२६,७;  
१७५६

अमृतस्य केतुः ६,७,६, १७७८

” नाभिः ३,१७,४; ६०३

” रक्षिता ६,७,७; १७७९।  
६,९,३; १७८९

अमृतानां प्रथमः १,२४,२; २७

अमृतानि सत्रा चक्राः विश्वा १,७२,१;  
१९५

अमे देवान् धात् १,६७,३; १४६

अयोद्धृष्टः १०,८७,२, १८२९

अरम् विश्वस्मै १,६६, ५; १३८

अरंकृत्य १०,५१,५; १६१३

अरतिः १,१२८,६; २८८। ३,१७,४;  
६२३। ४,१,१; ६३१। ४,२,१;  
६४७। ७,१६,१; ११९२। ६,१५,४;  
१०२६। ८,१९,१, १२२४। ८,१९,२१;  
१२४४। १०, २, १; १४९९।  
१०,३,६; १५०४। १०,४५,७;  
१५९५। १०,४६,४; १६०४

अरतिः अक्तोः ६,३,५; ९६७

” दिवः हव २,२,२, ३८६।

” दिवस्पृथिव्योः २,२,३; ३८७।  
१०,३,७; १५०५। २,५,१; १७९४

” रोदस्यो... १,५९,२; १७१८

अरतिः विशेषां वसूनां १०, ५८, ७, ११६  
 अरपाः [वायुदेवता] ८, १८, ९, २४५, ७  
 अरित्राः दमाम् १०, ४६, ७; १६०७  
 अरुष ३, ७, ५, ४९४ । ६, २९, ६,  
 ५६३ । ४, १५, ६; ७५४ । ५, १२, ६;  
 ८५३ । ६, ३, ६, ९६८ । ६, ४८, ६;  
 १०९५ । १०, १, ६; १४९० । ६, ८, १;  
 १७८०  
 अरुष कृष्णासु ३, १५, ३, ५९०  
 " वनेषु ५, १, ५; ७५२  
 अरुषं भरिभ्रत १०, ४५, ७, १५९५  
 अरुषस्तूपः ३, २९, ३; ५६०  
 अर्कः त्रिधातुः ३, २६, ७, १७५६  
 अर्चङ्गमासः १० ४६, ७, १६०७  
 अर्चिः अथर्वं १, २५, २; २२७६  
 अर्चिषा असौ अस्यै ५, १७, ३; ८७८  
 अर्णवः ३, २२, २, ६२४ । १०, ११५, ३,  
 १६६८  
 अर्थ हि अस्य तरणिः ३, ११, ३, ५२०  
 अर्थि मङ्गा देवस्यदेवस्य १०, १, ५  
 १४८९  
 अर्थः ४, १, ७; ६३३ । ४, २, १२; ६५८ ।  
 ७, ८, १, ११४९ । १०, ११५, ५;  
 १६७२ । १०, १९९, १, १७१६ ।  
 ४, ४, ६, १८१८ । २, ३५, २, २४२३  
 अर्थ मनीषा १, ७०, १; १७४  
 अर्थः विशाम् १०, २०, ४; १५७४  
 अर्थमा ५, ३, २, ७८०  
 अर्थमा त्वम् २, १, ४, ३७२  
 अर्थमा त्वया सुदानुः १, १४१, ९, ३१३  
 अर्वन् अर्वा ६, १२, ६, १०११  
 अर्वन्तीः तमिद् गच्छन्ति १, १४५, ३,  
 १३५  
 अर्हन् १, ९४, १; २५६ । १०, २, २;  
 १४९३ । २, ३, १; १९४२  
 अवनः ८, ७२, १०-१२; १४३३-३५ ।  
 अवमः, बहूनाम् २, ३५, १२, २४३३  
 अवन्ने. ६, १२, ३; १००८  
 अवसि पुत्रो मातरा विचरन् उप-  
 दै० [अग्निः] ३१

१०, १४०, २, १६८५  
 अत्रात. ६, १६, २०, १०६१  
 अवि. ( अय्यारामायाम् ) अथ०  
 १२, २, १९; २२४५  
 अविता ३, १९, ५, ६१४ । १०, ७, ७,  
 १५३३  
 " ग्रामेषु १, ४४, १०; ९५  
 " यज्ञस्य प्र- ३, २१, ३, ६२०  
 अविष्यत् अनुद्रे ष्वता धन्वना इत्-  
 १०, ११५, ६; १६७१  
 अवृकः ६, १५, ३; १०२५  
 अव्यथ्यः ३, ३५, ५, २४२६  
 अशीर्ष. ४, १, ११, ६३७  
 अश्रित. ४, ७, ६; ६९८  
 अश्वः १०, १८८, १, १८६३  
 अश्वदावन - वा ५, १८, ३; ८८३  
 अश्विन् — श्वी ७, १, १२, ११११  
 अश्विना [देवता] ७, ४१, १, २४३७  
 अमन्दिता ४, ४, २; १८१४  
 अमित. अथ० ३, २७, १; २१६१  
 असिन्वन् जिह्वया वनानि अत्ति  
 १०, ७९, २, १६३८  
 असु यन्, स्वम्- १०, १२, १,  
 १५४९  
 असुरः ४, २, ५; ६५१ । ५, १२, १,  
 ८४८ । ५, १५, १, ८६६ । ७, ६, १;  
 १८०३ । ७, २, ३, १९७६, अथर्व०  
 ५, २७, १, २०७२ । वा०य० २७, १२;  
 २०६१  
 असुरहन् - हा ७, १३, १, १८१०  
 " विपश्चिताम्- ३, ३, ४; १७४५  
 अस्ता ४, ४, १, १८१३  
 अस्तृतः ६, १६, २०, १०६१  
 अस्तृतयज्वा ८, ४३, १; १३१०  
 अस्त्राता १०, ४, ५, १५१०  
 अस्सयु ६, ४८, २; १०९१ । ७, १५, ८,  
 ११८४ । ८, १९, ८, १२३१ ।  
 १, १४२, १०, १९२७  
 अस्त्रिध् १, १३, ९, १९१४ । ५, ५, ८

अस्त्रमा १०, ८, २, १५३५  
 अस्त्रमाण ३, २९, १३, ५७०  
 अहिः १, ७९, १, २४४  
 अहिस्यमानः १, १४१, ५; ३०९  
 अहोरात्रे विभ्रत अथ० १२, २, ४९;  
 २२६२  
 अहयः ८, ६०, १६; १४०४  
 अहयाणः ४, ४, १४; १८२६  
 आकृति [देवता] अथ० १९, ४, २-४,  
 २२१०-२२१२  
 आघृगावसु ८, ६०, २०, १४०८  
 आजुह्वान ७, १६, ३; ११९४ ।  
 १०, ११०, ३, २०१० । वा० य०  
 २८, ३, २०८६ । २९, २८; २२२०  
 " [द्वन्द्वः] वा०य० २०, ३८;  
 २०१६  
 आततान यः भानुना पृथिवीम्, ग्राम्  
 रोदमी, अन्तरिक्षम् - १०, ८८, ३;  
 २३९९  
 आतनि २, १, १०; ३७८  
 आदित्य [वरुण.] ४, १, २; २४४६  
 आदित्याः [देवता] अथ० ३, २७, १,  
 २१६१  
 आदेवः मर्त्येषु - ४, १, १, ६३१  
 आष्टप. २, १, ९, ३७७  
 आध्रस्य चित पिता १, ३१, १४, ६३  
 आनव ८, ७४, ४, १४४५  
 आप [देवता] ४, ५८, १-११,  
 १८९५-१९०५  
 आपप्रियवान् रोदमी अन्तरिक्षम्  
 १, ७३, ८; २१२  
 आपिः, नेदिष्ठः १, ३१, १६, ६५ ।  
 ८, ६०, १०, १३९८  
 आपृच्छयः १, ६०, २; १२०  
 आप्यम्, नेदिष्ठम् ७, १५, १; ११७७  
 आबाधः ८, २३, ३, १२७२  
 आयजिः ८, २३, १७; १२८६  
 आयजिष्ठः २, ९, ६; ४०८ । १०, २, १,  
 १४९२

आयवे वनिधाचित्

शयुः १, ३१, २, ५१

आयु १०, २०, ७, १५७७ ।

१०, ४५८, १५९६

आयुधामिमान्. ५, २, ३, ७६९

आयो युवान्. ४, १, ११, ६३७

आविष्टय, आसुभासु १, ९५, ५, १८७२

आपृणान्., अप. देवानाम् ४, १, २०,

६४६

आशव उपयुज्यन्ते अस्य १, १४०, ४,  
२९१

आशु ४, ७, ४, ६९६

आशुहेम. २, ३५, १, २४२२

आश्वपवन् ४, ३, ३, ६६८

आसन ६, ७, १, १७७३

आमने देवाम अधिनाकस्य रोचने

दिवि [मरुत.] १, १९, ६, २४४३

आसुर ३, २९, ११, ५६८

आस्य चक्रिरे, त्वा आदित्यास.

२, १, १३, ३८१

आहाव, महाम् ६, ७, २, १७७४

आहुत. २, ८, २, ३९८ । ३, २४, ३,

५२९ । ५, ११, ३, ८४४ । ५, २८, ५,

९३७ । ६, १६, ३४, १०७५ ।

८, १९, २५, १२४८ । ८, ४३, १३,

१३२२ । ८, ७५, ३, १३७५ ।

१०, ११८, ३, १८५५ । १०, ११८, ४,

१८५६ । १, १६, ३, १८८१ । अथ०

१२, २, १८, २२४४

आहुतः षुतेभिः २, ७, ४, ४४४

आस्थानि सप्त तव अथ० ४, ३९, १०,

२२८३

दूडः [देवता] वा० य० २०, ३८, ५८;

२०१६, २०२८ । २१, १४, ३२, २०३९:

२०५१ । २७, १४, २०६३ । २८, ३, २६;

२०८६, २०९७ । २९, २८, २१२०

ऋ० प्रैप ४, २१३२ अथर्व० ५, २७, ४,

२०७५

इडा (इळा) [देवता] अथ० ५, २७, ९;  
२०८०

इद्धः १, ६६, ९, १४२

इधानः १, ७९, ५, २४८

इधान. आग्निभिः विश्वेभिः ६, १०, २,

९९४ । ६, १२, ६, १०११

इधानः देवेभिः ६, ११, ६; १००५

इध्मः [अग्निदेवता] १, १३, १, १९०६ ।

१, १४२, १, १९१८ । १, १८८, १

१९३१ । २, ३, १, १९४२ । ३, ४, १

१९५३ । ५, ५, १, १९६४ । ७, २, १;

१९७४ । ९, ५, १, १९८१ । १०, ७०, १;

१९९२ । १०, ११०, १; २००३ ।

वा० य० २८, १; २०८४ । अथ०

५, १२, १, २००३

इनः १०, ३, १; १४९९

इनस्य इनः २, १, ३, ३७२

इन्दवः अथ० ७, १०९, ६; २३७०

इन्दुः अन्धस्य १०, ११५, ३, १६६८

इन्दुः ९, ५, ९, १९८९

इन्द्रः ९, ५, ७, ९; ९८७, ९८९, अथ०

१२, २, ७, २२६०; वा० य० २०, ३६,

४०-४६, २०१४; २०१८-२०२४ ।

२८, १-७, ९-११; २०८४-९० ।

२०९२-९४ । २८, २४-३४, २०९५-

२१०६ । अथ० १९, ५५, ६; २२७४ ।

१, ७, ३; ४-७, २२८६, २२८७-२२९०

इन्द्रः [देवता] १, १४२, १२-१३;

१९२९-३० । ७, ४१, १, २४३७ ।

अथ० ५, २९, १०, २३१४ । वा० य०

२०, ५६-६६; २०२६-२०३६ । अथ०

१, ७, ३; २२०६ । ३, २१, ८; २३६२

इन्द्र. दाशुषे मर्त्याय ५, ३, १; ७७९

इन्द्रः त्वम् २, १, ३; ३७१

इन्धानः १, १४३, ७; ३२४

हरज्यन् जन्तुभिः १०, १४०, ४, १६८७

हर्यः ७, १३, ३, १८१२

इळ [अग्निदेवता] १, १३, ४; १९०९ ।

१, १४२, ४, १९२१ । १, १८८, ३;

१९३३ ।

२, ३, ३; १९४४ । ३, ४, ३, १९५५ ।

५, ५, ३; १९६६ । ७, २, ३, १९७६ ।

९, ५, ३; १९८३ । १०, ७०, ३; १९९४ ।

१०, ११०, ३, २००५ । अथ० ५, १२, ३;

२००५

इळस्पदे हपयन् १०, ९१, १; १६५१

इळस्पदे न्मसीदः ६, १, २; ९४०

इळा [देवता] पश्य 'देव्य तिष्ठा.' १,

१४२, ९, १९२६

इळा त्वं शतं हिमा २, २, ११, ३७९

इळायास्पुत्रः ३, २९, ३; ५६०

इषःसहस्रिणीःदधत् १, १८८, २; १९३२

इषयन् ६, १, २, ८; ९४०, ९४६

इषितः १०, ११०, ३; २०१० ।

३, ४, ३, १९५५

इषितः वा० य० २९, २८, ३४

२१२०, २१२६

इषितः देवेभिः ३, ३, २; १७४३

इषिरः, यज्ञे ३, २, १४, १७४०

इष्टयः तस्मिन् सन्ति १, १४५, १,

३३३

इष्टिः १, १४३, ८, ३२५ । ६, ८, ७,

१७८६

ईल्वयन्ति पर्वतान् तिरः समुद्रमर्णवम्-

[ मरुतः ] १, १९, ७; २४४४

ईडानः अथ० ५, २, ७; २०७५

ईडितः वा० य० २८, २६, २०९७

ईडितः, देवैः [ इन्द्रः ] वा० य०

२०, ३८; २०१६ । २८, ३, २०८०

ईडेन्यः वा० य० २८, २६, २०९७

ईड्यः १, १, २; २ । १, १२, ३; १२ ।

१, ७५, ४; २२७ । २, १, ४, ३७२ ।

३, ५, ६, ९; ४७५, ४७८ । ३, ९, ८;

५०७ । ३, २७, ४; ५४० । ३, २९, ७;

५६४ । ३, १७, ४, ६०३ । ४, ७, २;

६९४ । ६, १, २; ९४० । ६, १३, १;

१०१२ । ६, १५, २८; १०२४, १०३० ।

७, १५, १०; ११८६ । ८, ११, १;

१२१४ । ८, ४४, ७; १३४९ ।

८,७४,५; १४४६ । १०,३,४;  
 १५०२ । ३,२६,२; १७२८ ।  
 १,१८८,३; १९३३ । १०,११०,३;  
 २०१० । वा० य० २१,१४, २०३९ ।  
 २८, २६; २०९७ । २९, २८,  
 २१२० ।  
 ईक्ष्यः अध्वरेषु - ४,७,१; ६२३  
 ५,२२,१; ८९९ । ८,११,१०, १२२३ ।  
 ८,६०,३, १३९१  
 ईक्ष्यः दिवेदिवे ३,२९,२, ५५९  
 ईक्ष्यः विष्णु- ६,२,७; ९५८  
 ईक्षितः १,१३९,७, २९१ ।  
 १,१३,४; १९०९ । १,१४२,४,  
 १९२१ । ५,५,३, १२६६ । क्र० प्रैष  
 ४, २१३२ ।  
 ईक्षेन्यः १,७९,५, २४८ । ३,२७,१३;  
 ५४९ । ५,१४,५; ८६४ । ७,९,४;  
 ११५८ । १०,४६,९, १६०९ । ७,२,३;  
 १९७७ । १०, ११८, ३; १८५५ ।  
 ९,५,३; १९८३ ।  
 ईवान् ४,१५,५,७५३ । ४,४,६; १८१८  
 ईशानः ७,१५,११; ११८७ । ७,६,४,  
 १८०६  
 ईशिषे वार्यस्य दात्रस्य- ८,४४,१८;  
 १३६०  
 ईशो क्षत्रियस्य बृहत -- ४,१२,३,  
 ७३६  
 ईशो देववीतेः विश्वस्य - १०,६,३,  
 १५२२  
 ईशो वाजस्य रायश्च, परमस्य ४,१२,३;  
 ७३६  
 ईशो सुवीर्यस्य सौभगस्य रायः  
 स्वपत्यस्य गोमतः, वृत्रहथानाम्-  
 ३,१६,१, ५९४  
 उक्थी वा० य० २८,३३, २१०४  
 उक्थ्यः १,७९,१२, २५५ । ३,१०,६  
 ५१४ । ३,२,१३, १७३९ । ३,२,१५;  
 १७४१ । ३,२६,२; १७५४ । अथ०  
 १२,२,१०; २२३६

उक्थ्यः देवानाम्- ५,२६,६; ९२५  
 उक्षत्-न् १,१२२,४; १६७८  
 उक्षमाण २,२,४; ३८८  
 उक्षाः १,१४६,२; ३३९ । ३,७,६,  
 ४९५  
 उक्षाज्ञ. ८,४३,११, १३२०; अथ०  
 ३,२१,६, २३६०  
 उक्षितः १,३६,१९, ८४  
 उक्षिते [उपासानक्ते] २,३,६, १९४७  
 उग्रः १,१२७,११, २८२ । ४,२,१८,  
 ९६४ अथ० १९,६५,१, २३४९  
 ७,१०९, (११४)१; २३६५  
 उग्राः [ मरुत ] १,१९,४, २४४१  
 उग्रजित् अथ० ६,११८,१, २३८१  
 उग्रपश्यः अथ० ७,१०९,६; २३७० ।  
 ६,११८,१,२; २३८१-८२  
 उपतन्, दिवम्- अथ० १२,६५,१;  
 २३४९  
 उज्जिद् वा० य० २८,२५, २०९६  
 उपमातिः ८,६०,११, १३९९  
 उपवक्ता ४,२,५; ७१६  
 उपसथाः ७,१५,१; ११७७  
 उपस्थसत् १०,१५६,५, १७०७  
 उपाके [ उपासानक्ते ] ६,१४२,७,  
 १९२४ । ३,४,६; १९५८  
 उभयाविन्-वी १०,८७,३; १८३१  
 उराण. ४,६,३-४, ६८४-८५  
 ४,७,८; ७००  
 उरुकृत् ८,७५,११, १३८३  
 उरुगायः ३,६,४, ४८३  
 उरुज्याः ५,८,६, ८२६  
 उरुप्रथा [ इन्द्र ] वा० य० २०,३९  
 २०१७  
 उर्विया २,३५,८, २४२९  
 उगान् २,३६,४ । २,३७,६ ।  
 १०,१६,१२; १५६८ । १०,९१,१३;  
 १६६३ । १०,७०,९; २००५  
 उशान् समानान्- ६,४,१; ९७१  
 उशती १०,७०,५-६; २००१-२

उशिक १,६०,४, १२२ । ३,११,२,  
 ५१२ । ३,२७,१०; ५४६ ।  
 १०,४५,७, १५९५ । ३,२६,४;  
 १७३० । ३,३,७-८, १७४८-१७४९  
 उपबुधः १,१२७,१०; २८१ । ४,६,८;  
 ७८९ । ६,१५,१, १०२३ । ३,२,१४;  
 १७४०  
 उपभुत् १,६५,९, १३२० । ६,४,२,  
 ९७२  
 उपसः चिकितानः ३,५,१; ४७०  
 उपसः महान् १,९४,५; २६०  
 उपसा अग्ने आ अगोवि ७,८, १;  
 ११४९  
 उपसां अग्ने भाति ७,९,३, ११५७  
 उपसां हृधानः १०,४५,५; १५९३  
 उपसां जारः ७,९,१, ११५५  
 उपामानक्ता [ देवते ] १, १३, ७;  
 १२१२ । १, १४, ७, १२२४ ।  
 १,१८८,६, १९३६ । २,३,६, १९४७ ।  
 ३,४,६; १९५८ । ५,५,६; १९६९ ।  
 ७,२,६, १९७९ । ९,५,६, १९८६ ।  
 १०,७०,६, १९९७ । १०,११० ६;  
 २००८ । अथ० ५,२७,८, २०७९ ।  
 ५,१२,६; २००८  
 उपासानक्ते [ देवते ] वा० य० २०,४१;  
 २०१९ । २०, ६२; २०३१ ।  
 २१, १७, ३५; २०४२, २०५४ ।  
 २७,१७, २०६६ । २८,६, २९, २०८२,  
 २१०० । २९,६,३९, २१११, २१२३ ।  
 क्र० प्रैष ७, २१३५  
 ऊर्जः पुत्रः १,९६,३, १८८१  
 ऊर्जयन् २,३५,७, २४२८  
 ऊर्जमनः ६,४,४, ९७४  
 ऊर्जो नपात् १,५८,८; ११७ । २,६,२;  
 ४३४ । ३,२७,१२, ५४८ । ५,१७,५,  
 ८८० । ६,६,२५; १०६६ । ६,४८,२,  
 १०९१ । ७,१६,१, ११९२ । ७,१७,६;  
 १२०९ । ८, १९, ४, १२७७ ।



८, ४४, १३, १३५५। ८, ६०, २;  
 १३२०। ८, ७१, ३, ९, १४११, १४१७।  
 ८, ८४, ४, १४५७। १०, २०, १०,  
 १५८०। १०, ११५, ८, १६७३।  
 १०, १४०, ३, १६८६  
 ऊर्जापतिः १, २६, १; २८। ८, १९, ७;  
 १२३०। ८, २३, १२; १२८१।  
 ८, ६, ९, १३९७  
 ऊर्जाहृतिः ८, ३९, ४; १३०३  
 ऊर्ध्वः १०, ७०, १, १९९७  
 ऊर्ध्वः जिह्वामाम्— २, ३५, ९, २४३०  
 ऊर्ध्वं शोचिः ६, १५, २, १०२४  
 ऊर्णम्रदाः [ बहिः ] ५, ५, ४, १२६७  
 ऋग्मिथः ८, २३, ३, १२७२।  
 ८, ३९, १, १३००। ६, ८, ४; १७८३  
 ऋजूयमानः पृथिवीम् उत धाम्  
 १०, ८८, ९, २४०५  
 ऋञ्जन् १, ९५, ७, १८७४  
 ऋञ्जमानः १, ९६, ३, १८८१  
 ऋतः १, ६५, ३, १२६। १, ६८, ४,  
 १५७। १, ६८, ५, १५८। ५, १५, २;  
 ८६७। ८, ६०, ५, १३९३  
 १०, ११०, ११, २०१८  
 ऋतम् ३, ७, ८, ४९७। ४, २, १४;  
 ६६०। ७, ७, ६, ११४६  
 ऋतस्य गोपा १०, ११८, ७, १८५९  
 ऋतस्य चक्षुः १०, ८, ५, १५३८  
 ऋतस्य दीदिविः १, १, ८, ८  
 ऋतस्य धारा १, ६७, ७, १५०  
 ऋतस्य पतिः अथ० ६, ३६, १; २१८१  
 ऋतस्य पदम् १०, ५, २, १५१४  
 ऋतस्य माता [ उषासानक्ते ] १, १४२, ७,  
 १९२४। ५, ५, ६, १९६९  
 ऋतस्य योना गर्भे सुजातः १, ६५, ४,  
 १२७  
 ऋतस्य वृषा ५, १२, १; ८४८  
 ऋते आजातः ६, ७०, १; १७७३  
 ऋतचित् १, १४५, ५; ३३७। ४, ३, ४,

६६९। ५, ३, ९; ७८६  
 ऋतजात १, ३६, १९, ८४। १, १४४, ७,  
 ३३२। १, १८९, ६; ३६६। ३, ६, १०,  
 ४८९। ३, २०, २१, ६१५। ६, १३, ३,  
 १०१४  
 ऋतप्रजातः १, ६५, १०; १३३  
 ऋतप्रवीत १, ७०, ७, १८०  
 ऋतावान्—वा १, ७७, १; २, ५,  
 २३४—३५, २३८। ३, २०, ४; ६१७।  
 ४, २, १; ६४७। ४, ६, ५, ६८६।  
 ४, ७, ३, ७; ६२५, ६९९। ४, १०, ७,  
 ७२६। ५, १, ६; ७६०। ५, २५, १,  
 ९११। ६, १२, १; १००६। ६, १५, १३;  
 १०३५। ७, १, १९, १११८। ७, ३, १,  
 ११२४। ७, ७, ४, ११४५। ८, १०, ३, ८,  
 १२६४। ८, १३, १९; १२७८। ८, ७५, ३;  
 १३७५। १०, २, २, १४९३। १०, ६, २,  
 १५२१। १०, १४०, ६, १६८९।  
 ३, २, १३; १७३९। २, ३५, ८, २४२९  
 ऋतावान्—वा अथ० ६, ३६, १, २१८१  
 ऋतावान् [ वरुणः ] ४, १, २, २४४९  
 ऋतावृष ३, २, १; १७२७।  
 १, १४२, ६; १९२३  
 ऋतुपतिः १०, २, १; १४९२  
 ऋतुपाः ३, २०, ४, ६१७  
 ऋतुपाः ऋतूनाम् ५, १२, ३, ८५०  
 ऋत्विक् १, १, १; १। १, ४४, ११,  
 २६। १, ४५, ७, १०६। २, ५, ७,  
 ४३१। ३, १०, २; ५१०। ५, २२, २,  
 ९००। ५, २६, ७; ९२६। ८, ४४, ६;  
 १३४८। १०, ७, ५, १५३१।  
 १०, २१, ७, १५८७  
 ऋत्विजः ३, २९, १०; ५६७  
 ऋत्विजम् तव २, १, २; ३७०  
 ऋधद्धारः ६, ३, २, ९६४  
 ऋन्धत् १०, ११०, २; २००९  
 ऋसु ३, ५, ६, ४७५। ५, ७, ७, ८१७  
 ऋवा १०, २०, ५, १५७५।  
 १०, ६९, ७, १६३१  
 ऋषभः वा० य० २१, ३८, २०५७

ऋषिः ३, २१, ३; ६२०। ६, १४, २;  
 १०१९। ऋ० ९, ६६, २०; साम०  
 २, ७, १, १२  
 ऋषिकृत् १, ३१, १६; ६५  
 ऋषीणां पुत्र अथ० ४, ३९, ९; २२८२  
 ऋषूणां पुत्रः ५, २५, १, ९९११  
 ऋष्वः १, १४६, २; ३३९। ३, ५, ७;  
 ४७६। ४, २, २; ६४८  
 ऋक्. १०, १, ५, १५१३। १०, ९१, ३;  
 १६५३। ६, ९, ५; १७९१। अथ०  
 ६, ३६, ३; २१८३  
 एम अस्य तिग्मं चित् ६, ३, ४, ९६६  
 एम ते कृणम् १, ५८, ४, ११३।  
 ४, ७, ९, ७०१।  
 पर्यायः त्वम् शरीरे मांसं असुम्—  
 अथर्व० ५, २९, ५; २३०९  
 ओजसा विरुक्मता पुरुचित् दीघानः  
 १, १२७, ३, २७४  
 ओजसा स्थिरा अन्नानि निरिणाति  
 १, १२७, ४; २७५  
 ओजायमान तन्वश्च शुम्भते  
 १, १४०, ६; २९७  
 ओजिष्ठः चर्षणीमद्राम् वा० य० २८, १,  
 २०८४  
 ओषधीः विश्वा आविवेश १, ९८, २;  
 १७२५  
 ओषधीभिः उक्षितः ५, ८, ७, ८२७  
 ओषधीनां गर्भेः ३, १, १३; ४५९  
 ओषधीषु विभृत्तः १०, १, २, १४८६  
 औषमः अग्निः [ देवता ] १, ९५ (१-११);  
 १८६८-७८  
 ककुत् ८, ४४, १६; १३५८  
 ककुञ्जन् १०, ८, २; १५३५  
 कण्वतमः १०, ११५, ५, १६७०  
 कण्वसखा १०, ११५, ५; १६७०  
 कनिक्कदत् १, १२८, ३; २८५। ९, ५, १;  
 १९८६

कम् ८, ४४, २४; १३६६  
 कपि अथ० ६, ४९, १; २३३७  
 कविः १, १२, ६-७; १५-१६ ।  
 १, ३१, २; ५१ । १, ७६, ५; २३३ ।  
 १, ७९, ५; २४८ । १, १२८, ८, २९० ।  
 २, १, १३; ३८१ । २, ६, ७; ४३९ ।  
 ३, २८, ४; ५५५ । ३, २९, ५, १२;  
 ५६२, ५६९ । ३, १९, १, ६१० ।  
 ३, २३, १, ६२७ । ४, २, १२, ६५८ ।  
 ४, २, २०, ६६६ । ४, ३, १६, ६८१ ।  
 ४, १५, ३; ७५१ । ५, १, ६, १२२;  
 ७६०, ७६६ । ५, ४, ३; ७९२ । ५, ११, ३  
 ८४४ । ५, १४, ५, ८६४ । ५, १५, १,  
 ८६६ । ५, २१, ३; ८९७ । ५, २६, ३,  
 ९२२ । ६, १, ८; ९४६ । ६, १५, ७,  
 १०२९ । ६, १५, ११, १०३३ । ७, ४, ४,  
 ११३७ । ७, ९, ३, ११५७ । ७, १५, २,  
 ११७८ । ८, ३९, १, ९, १३००, १३०८ ।  
 ८, ४४, १२, २१; २६, ३०; १३५४,  
 १३६३, १३६८, १३७२ । ८, ७५, ४,  
 १३७६ । ८, ६०, ३, ५, १३९१,  
 १३९३ । ८, १०२, १, ५, १७-१८,  
 १४६३-१४६७, १४७९-८० ।  
 १०, २०, ४, १५७४ । १०, १४, १;  
 १६८४ । ३, २, ७, १०, १७३३, १७३६ ।  
 ३, ३, ४, १७४४ । ६, ७, १, ७,  
 १७७३, १७७९ । ७, ६, २, १८०४ ।  
 १०, ८७, २१; १८४८ । १, ९५, ४, ८;  
 १८७१, १८७५ । १, १३, २, ८;  
 १९०७, १९१३ । १, १४२, ८;  
 १९२५ । १, १८८, १, १९३१ ।  
 १०, ११०, १; २००८ । ५, ५, २,  
 १९६५ । १०, ८८, १४, २४१० ।  
 कविः वा० य० २८, ३४, २१०५ ।  
 २९, २५; २११७ । अथ० १९, ३, ४;  
 २२०८  
 कविः काव्यस्य १०, ९१, ३; १६५३ ।  
 कविऋतुः १, १, २; २ । ३, २७, १२;  
 ५४८ । ३, १४, ७, ५८७ । ५, ११, ४;  
 ८४५ । ६, १६, १३; १०६४ ।

८, ४४, ७, १३४९ । ३, २, ४; १७३०  
 कवितमः ३, १४, १; ५८१ । ७, ९, १;  
 ११५५  
 कविप्रशस्तः ५, १, ८, ७६२  
 कविशस्त ३, ११, ४; ६२१ । ३, २९, ७,  
 ५६४  
 कवीनां पदवीः ३, ५, १; ४७०  
 कामः अथ० ३, २१, ४; २३५८  
 काम भूतस्य भव्यस्य अथ० ६, ३६, ३  
 २१८३  
 काम्यः यमस्य १०, २१, ५; १५८५  
 कारु [ देव्यौ होतारौ ] १०, ११०, ७,  
 २००९ । ७, २, ७, १९८०  
 कीलालपे (चतु०) १०, ९१, १४; १६६४  
 कूचिदर्थी ४, ७, ६; ६९८  
 कृन्व्य. ६, २, ८, २५९  
 कृपनीळ १०, २०, ३, १५७३  
 कृष्ण-अध्वार २, ४, ६; ४२१ । ६, १०, ४,  
 ९९६  
 कृष्णजहम् (हाः) १, १४१, ७, ३११  
 कृष्णपवि. ७, ८, २, ११५०  
 कृष्णयामः ६, ६, १; ९८६  
 कृष्णवर्तनिः अथ० ८, २३, १९,  
 १२८८ । अथ० १, २८, २, २२९४  
 कृष्टीनां पति ७, ५, ५; १७९८  
 केतुः ४, ७, ४; ६९६ । ७, ६, २, १८०४  
 केतुः दैव्यः १, २७, १२, ४९  
 केतुः अध्वराणाम् ३, १०, ४, ५१२  
 केतुः अमृतस्य ६, ७, ६; १७७८  
 केतु उषमाम् अह्नाम् ७, ५, ५; १८९८  
 केतुः यज्ञस्य १, १२७, ६, २७७ ।  
 ५, ११, २, ८४२ । ६, ७, ९, १७७४  
 केतुः यज्ञानाम् ३, ३, ३; १७४४  
 केतुः विदथस्य १, ६०, १; ११९  
 केतुः विश्वस्य १०, ४५, ६, १५९४  
 केतुना बृहता प्रयाति १०, ८, १; १५३४  
 केवल. १, १३, १०, १९१५  
 केशिनः [देवता] १, ६६४, ४४; २४५६  
 ऋतुः १, ६७, २; १४५ । १, ७७, ३;  
 २३६ । ६, ९, ५; १७९१

ऋतुः एरुः ६, ९, ५, १७९१  
 ऋतुः देवानाम् ३, ११, ६, ५२३  
 ऋतु. घुम्निन्तमः ते १, १२७, ९; २८०  
 ऋतुविद् १०, २, ५; १४९६  
 ऋत्वा चेतिष्ठः विशाम् १, ६५, ९; १३२  
 ऋव्यवाहनः १०, १६, ११; १५६७  
 ऋव्याद् अथर्व० १२, २, ३४-३९;  
 २२४७-५२  
 ऋव्यादः-त् १०, १६, ९, १०, १५६५-६६  
 अथ० १२, २, ९-१०; २२३५-३६ ।  
 ३, २१, ८-९, २३६२-६३ ।  
 ऋणा १, ५८, ३, ११२ । ५, ७, ८; ८१८  
 ऋषः वा० य० २८, ३४, २१०५  
 ऋषभृत अथ० ७, ८४, १, १८६६  
 ऋषाणि धारयन् अथ० ७, ७८, २, २१९९  
 ऋषावान् १, ७०, ५; १७८ । ७, १०, ५,  
 ११६५ । ८, ११, २, १४१०  
 ऋषयः द्वित्रि ३, २, १३, १७३९  
 ऋषय् ३, २५, ३, ५३४  
 ऋषय् महः राधस्य १०, १४०, ५;  
 १६८८  
 ऋषे १०, २०, ६, १५७६  
 ऋष्य. अथ० १२, २, ४९; २२६२  
 ऋषोद. १, ६५, ६; १२९  
 ऋषाम् जातस्य च जायमानस्य च  
 १, ९६, ७, १८८५  
 ऋणश्रीः ८, २३, ४; १२७३  
 गर्भं ६, १५, १; १०२३ । १०, ८, २;  
 १५३५ । १०, ४६, ५, १६०५  
 गर्भं अदितेः ऋ० प्रेष २, २१३०  
 गर्भं. अपसां बह्वीनाम् १, ९, ५, ४;  
 १८७१  
 गर्भं भवाम् १, ७०, ३, १७६  
 गर्भं: चरथाम् १, ७०, ३, १७६  
 गर्भः भुवनस्य १०, ४५, १; १५९४  
 गर्भः वनानाम् १, ७०, ३; १७६  
 गर्भः स्थाताम् १, ७०, ३; १७६  
 गातु १०, २०, ४, १५७४  
 गातुवित्तमः ८, १०३, १; १२५७

गायत्र्येवम्-पाः [इन्द्रः] १, १४२, १२, १९२९  
 गार्हपत्य अथर्वं १२, २, ३४, ४४, २२४७, २२५७ । ६, १२१, २, २३८८  
 गावः [देवता] ४, ५८, ( १-११ ); १८९५-१९०५  
 गर्वणाः ( णस् ) २, ६, २, ४३५  
 गृहमानः ४, १, ११, ६३७  
 गृहा चतन् १, ६५, १, १२४। १०, ४६, २ १६०२  
 गृहा चरन् ३, १, ९, ४५५  
 गृहा निषीदन् १, ६७, ३, १४६  
 गृहा भवन् १, ६७, ७, १५०  
 गृहा सन् १, १४१, ३, ३०७। ३, ५, १०, ४७९। ५, ८, ३, ८२३  
 गृहा हित ४, ७, ६, ६९८। ५, ११, ६, ८४७  
 गृह्म ३, १, २, ४४८। ३, १९, १, ६१०। ७, ४, २; ११३५। ४, ५, २, १७५९  
 गृध्नुः १, ७०, ११, १८४  
 गृहपतिः १, १२, ६; १५। १, ३६, ५, ७२। १, ६०, ४; १२२। २, १, २; ३७०। ४, ९, ४; ७१५। ४, ११, ५, ७३२। ५, ८, १-२; ८२१ २२। ६, १५, १३, १९; १०३५, १०४१। ६, १६, ४२; १०८३। ७, १, १, ११००। ७, १५, २; ११७८। ७, १६, ५, ११९६। ८, ६०, १९; १४०७। ८, १०२, १, १४६३। १०, १२२, १; १६७५। १०, ११८, ६; १८५८। वा० य० २८, ३४; २१०५, अथ० १९, ५५, ३४, २१७१-७२  
 गृहपतिः मानुषाम् विश्वासां विशाम् ६, ४८, ८; १०९७  
 गोत्रभिद् [इन्द्रः] वा० य० २०, ३८, २०६६  
 गोपाः २, ९, ६, ४०८। ३, १५, २; ५८९। १०, ७, ७; १५३३। १०, ८, ५,

१५३८। १०, ६२, ५; १६२९। ६, ७, ७; १७७९। ९, ५, ९, १९८९  
 गोपा. अध्वराणाम् १, १, ८, ८  
 गोपाः ऋतस्य १०, ११८, ७; १८५९  
 गोपाः जनस्य ५, ११, १, ८४२  
 गोपाः सुवनस्य ऋ० प्रैष २, २१३०  
 गोपाः विशाम् १, ९६, ४, १८८२  
 गोपाः सतश्च भवतश्च भूरे १, ९६, ७, १८८७  
 गौः गावः [देवता] 'गावः' (पश्य) । मा० उत अध्वरे ४, ९, ४; ७१५  
 घर्मः [देवता] १, ११२, १, १८६७  
 घर्मः अजस्रः ३, २६, ७, १७५६  
 अथ० ६, ३६, १, २१८१  
 घृणिः ६, १६, ३८, १०७२  
 घृगीवान् १०, १७६, ३, १७०२  
 घृतम् [देवता] ४, ५८, ( १-११ ), १८९५-१९०५  
 घृतम् अस्य अन्नम् १०, ६९, २; १६२६  
 घृतम् (अस्य) चक्षुः ३, २६, ७, १७५६  
 घृतम् (अस्य) मेदनम् १०, ६९, २; १६२६  
 घृतम् (अस्य) वर्धनम् १०, ६९, २; १६२६  
 घृतकेशः ८, ६०, २, १३९०  
 घृतनिर्णिकू ३, २७, ५, ५४१। ३, १७, १, ६००। १०, १२२, २, १६७६। २, ३५, ४, २४२५  
 घृतपदी [सरस्वती] १०, ७०, ८, २००४  
 घृतपृष्ठः ५, ४, ३, ७९२। ५, १४, ५; ८६४। १०, १२२, ४; १६७८  
 घृतपृष्ठम् [बर्हिः] ७, २, ४; १९७७  
 घृतप्रतीकः १, १४३, ७, ३२४। ३, १, १८; ४६४। ५, ११, १, ८४२। १०, २१, ७, १५८७  
 घृतप्रसक्तः ५, ११, १; ८४२  
 घृतयोनिः ५, ८, ६; ८२६  
 घृतश्रीः १, १२८, ४; २८६। ५, ८, ३; ८२३। वा० य० २८, ९; २०९२

घृतस्तुः ५, २६, २; ९२१। १०, १२२, ५; १६८०  
 घृताक्ष ७, ३, १; ११२४  
 घृताहवनः १, १२, ५; १४। १, ४५, ५, १०४। ८, ७४, ५, १४४६  
 घृताहुत अथ० ४, २३, ३; २३३२  
 घृष्टिः ४, २, १३ ६५९  
 घोरः ४, ६, ६; ६८७  
 घोरवर्षस [मरुतः] १, १९, ५, २४४२  
 घ्नन् द्विषः अप ८, ४३, २३; १३३२  
 चकानः । ५, ३, १०; ७८७  
 चकान ऋतस्य संदशः- ३, ५, २; ४७१  
 चक्राणः विश्वा भृतानि सत्रा- १, १७२, १; १९५  
 चक्षिः ३, १६, ४; ५९७  
 चक्षणि ६, ४, २; ९७२  
 चक्षुः देवानां उत मानुषाणाम्- अथ० ४, १४, ५; २२२१  
 चतुरक्ष १, ३१, १३, ६२  
 चनोहितः ३, ११, २, ५१९। ३, २६, २-७, १७२८-१७३३  
 चन्द्रः ५, १०, ४; ८३८। ६, ६, ७; ९९२। ३, ३, ५; १७४६। [देवता] अथ० ३, ३१, ६; २३४४  
 चन्द्ररथः १, १४१, १२; ३१३। ३, ३, ५; १७४६  
 चन्द्री वा० य० २०, ३७; २०१५  
 चरथां गर्भः १, ७०, ३; १७६  
 चरिष्णु धूमः ८, २३, १; १२७०  
 चर्षणिप्राः ४, २, १३, ६५९  
 चर्षणीधृत-तः [वरुणः] ४, १, २; २४४९  
 चर्षणीनां सत्राद् ३, १०, १; ५०९  
 चष्टे अभि एकः विश्वं शचीभिः- [सूर्य देवता] १, १६४, ४४; २४५६  
 चारुः १, ९४, १३, २६८। १०, १, २; १४८६। १०, २१, ७; १५८७। १, ९५, ५; १८७२। साम० १, १, ७, ३

चारुतमः ५, १, ९; ७६३  
 चारुप्रतीकः २, ८, २, ३९८  
 चिकित् १०, ३, १; १४९९  
 चिकितानः ३, १८, २; ६०६  
 चिकितुः ८, ५६, ५; २४५५  
 चिकित्प्रः १०, ९१, ४-५; १६५४-५५  
 चिकित्वान् १, ६८, ६; १५९ ।  
 १, ७१, ७, १९१ । १, ७७, ५, २३८ ।  
 १, १४५, १, ३३३ । २, ६, ८, ४४० ।  
 ३, ७, ३, ९, ४९२, ४९८ । ३, २५, १,  
 ५३२ । ३, २९, ८, ५६५ । ३, २९, १६,  
 ५७३ । ३, १७, २; ६०१ । ३, १७, ५,  
 ६०४ । ४, ३, ८; ६७३ । ४, ७, ५;  
 ६९७ । ४, ८, ४, ७०७ । ५, २, ५, ७  
 ७७१, ७७३ । ५, ३, ७; ७८४ । ५, १२, २,  
 ८४९ । ५, २२, ३; ९०१ । ६, ५, ३;  
 ९८१ । ८, ४४, ९, १३५१ । १०, ४, ४;  
 १५०९ । १०, १२, २; १५५० । ४, ५, १२,  
 १७६९ । १०, ११०, १, २००८ । वा०-य०  
 २९, २५; २११७  
 चिकित्वान् परुषः-- १, ५३, १, १६१६  
 चित्तस्य माता [आकृति देवता] अथ०  
 १९, ४, २, २२१०  
 चित्तिः १, ६७, १०; १५३  
 चित्रः १, ९४, ५, २६० । २, ८, ४,  
 ४०० । ३, ७, ९, ४९८ । ४, ७, ६;  
 ६९८ । ६, ४, ६; ९७६ । ६, ६, ७;  
 ९९२ । ६, ४८, २; १०९८ । ७, ३, ६;  
 ११२९ । १०, १, २; १४८६ । १०, २, ६,  
 १४९७ । ३, २, १५, १७४१ ।  
 चित्रः वनेषु ४, ७, १, ७९३  
 चित्रभ्रमः ६, ६, ७; ९९२  
 चित्रभ्रजतिः ६, ३, ५; ९६७  
 चित्रभानुः १, २७, ६, ४३ । २, १०, २,  
 ४१० । ५, २६, २; ९२१ । ७, ९, ३;  
 ११५७ । ७, १२, १; ११७१ ।  
 ८, ४४, ६; १३४८ । १०, ५१, ३;  
 १६१२ । १०, ६५, ११; १६३५  
 चित्रमहस्-हाः १०, १२२, १; १६७५ ।

चित्ररथ १०, १, ५; १४८९  
 चित्रराधस्-धाः ८, ११, ९, १२२२  
 चित्रयाम ३, २, १३; १७३९  
 चित्रशोचिः ५, १७, २; ८७७ । ६, १०, ३  
 ९९५ । ८, १९, २, १२२५  
 चित्रश्रवस्तमः १, १, ५, ५ । १, ४५, ६,  
 १०५  
 चित्रा १, ६६, १; १३४  
 चेकितानः ३, २९, ७; ५६४  
 चेतनः २, ५, १, ४२५  
 चेतन अध्वराणाम् ३, ३, ८, १७४९  
 चेतिष्ठः १, ६५, ९, १३२ । ७, १६, १,  
 ११९२ । १०, २१, ७; १५८७ ।  
 वा० य० २७, १५; २०६४  
 चेत्यः ६, १, ५, ९४३  
 चोदः १, १४३, ६; ३२३  
 चोदिष्ठः ८, १०२, ३; १४६५  
 च्यवनः १०, ६९, ५-६; १६२९-३०  
 जज्ञणाभवन् अर्चिषा ८, ४३, ८,  
 १३१७  
 जनयन् भुवना ७, ५, ७, १८००  
 जनयोपन अथ० १२, २, १५, २२४१  
 जनानां वसतिः ५, २, ६; ७७२  
 जनिता रोदस्योः १, ९६, ४, १८८२  
 जनिता वसूनाम् १, ७६, ४, २३२  
 जनित्वम् (अग्नि एव) १, ६६, ८, १४१  
 जन्यः १०, ९१, २, १६५२  
 जनिमा अत्र अश्वस्य स्वर च २, ३५, ६;  
 २४२७  
 जयन् १०, ४६, ५, १६०५  
 जरद्विद ५, ८, २, ८२२  
 जरमाण १०, ११८, ५, १८५७  
 जरमाणः जागृवद्भिः १०, ९१, १,  
 १६५१  
 जरयन् अरिम् २, ८, २, ३९८  
 जराबोधः १, २७, १०, ४७  
 जरिता ३, १५, ५; ५९२ । ८, ६०, १९;  
 १४०७

जभुराणः तन्वा २, १०, ५; ४१३  
 जर्हपाण १०, १६, ७, १५६३  
 जविष्ठः मनः-(मः) ६, ९, ५; १७९१  
 जागृविः १, ३१, ९, ५८ । ३, २४, ३;  
 ५२९ । ५, ११, १, ८४२ । ६, १५, ८;  
 १०३० । २, २, १२, १७३८ । ३, ३, ७;  
 १७४८ । ३, २६, ३ १७५५  
 जात १, ६६, ८, १४१ । १०, १, २-३;  
 १४८६-८७ । १०, ४६, १, ३,  
 १६०१, १६०३  
 जातः अथर्वणा १०, २१, ५, १५८५  
 जातः पृथिव्या नामां ह्यजाया पदे  
 १०, १, ६; १४९०  
 जातः शीर्षित १०, ८८, १६, २४१२  
 जातः सद्यः वा० य० २९, ११, ३६;  
 २११६, २१२८  
 जानवेदा १, ४४, १, ८६ । १, ४४, ४  
 ८९ । १, ४५, ३; १०२ । १, ७७, ५,  
 २३८ । १, ७८, १, २३९ । १, ७९, ४,  
 २४७ । १, ९४, १, २५६ । १, १२७, १  
 २७२ । २, २, १; ३८५ । २, २, १२,  
 ३९६ । ३, १, २०, ४६६ । ३, १, २१;  
 ४६७ । ३, ५, ४, ४७३ । ३, ६, ६,  
 ४८५ । ३, १०, ३, ५११ । ३, ११, ४;  
 ५२१ । ३, २८, १, ४, ६, ५५२, ५५५,  
 ५५७ । ३, २९, २, ५५९ । ३, २९, ४;  
 ५६१ । ३, १५, ४, ५२१ ।  
 ३, १७, २-४ ६०१-३ । ३, ११, ८;  
 ५२५ । ३, २५, ५, ५३६ । ३, २०, ३;  
 ६१६ । ३, २१, १, ६१८ । ३, २२, १,  
 ६२३ । ३, २३, १; ६२७ । ४, १, २०,  
 ६४६ । ४, ३, ८; ६७३ ।  
 ४, १२, १; ७३५ । ४, १४, १; ७४५ ।  
 ५, ४, ४, ९-११, ७९३, ७९८-८०० ।  
 ५, ९, १, ८२८ । ५, २२, २; ९०० ।  
 ५, २६, ७; ९२६ । ६, ४, २; ९७२ ।  
 ६, ५, ३; ९८५ । ६, १०, १; ९९३ ।  
 ६, १२, ४, १००९ । ६, १५, ७, १०२९ ।  
 ६, १५, १३; १०३५ । ६, १६, २९;  
 १०७० । ६, १६, ३०; १०७१ ।

६, १६, ३६; १०७७ । ६, ४८, १; १०९० । ७, ३८, ११३१ । ७, ९, ४, ६; ११५८, ११६० । ७, १४, १, ११७४ । ७, १७, ३-४, १२०६ । ७, १०४, १४; १२१३ । ८, ११, ३-५, १२१६-१८ । ८, २३, १, १७, २२, १२७०, १२८६, १२९१ । ८, ४३, २, २३, १३११, १३३२ । ८, ७१, ७, ११, १४१५, १४१९ । ८, ७४, ३, ५; १४४४, १४४६ । १०, ४, ७, १६१२ । १०, ६, ५, १५२४ । १०, ८, ५; १५३८ । १०, १६, १; १५५७ । १०, १६, २, ४, ५, ९, १०, १५५८, १५६०-६१, १५६५-६६ । १०, ४५, १; १५९० । १०, ५१, १-२, १६११-१२ । १०, ५१, ७; १६१४ । १०, ६९, ८-९; १६३२-३३, १०, ९९, १२ १६६२ । १०, ११५, ६, १६७१ । १०, १४०, ३, १६८६ । १०, १५०, ३, १७०० । १०, १७६, २ १७०८ । १, ५९, ५, १७२१ । ३, ३, ८, १७४९ । ३, २६, ७, १७५६ । ४, ५, ११ १२; १७६८-६९ । ६, ८, १, १७८० । ७, ५, ७-८; १८००-१ । ७, १३, २; १८११ । १०, ८७, २, ५-७, ११, १८२९, १८३२-३४, १८३८ । १, ९९, १, १८६२ । ४, ५८, ८; १९०२ । ५, ५, १, १९६४ । १०, ११०, १; २००३  
 जातवेदा- वा. यं २७, २२, २०७१ । २९, १; २१०६ । २९, ३, २१०८ । २९, २५, २११७ । अथं ७, ८४, १; १८६६ । ५, २७, १२; २०८३ । १, ९, ३, २१४२ । २, २९, २; २१५० । ५, ८, २; २१६४ । ७, ३४, १, २१९३ । ७, ३५, १; २१९४ । ७, ७४, ४, २१९७ । ७, १०६, १; २२०० । १९, ३, १, २२०५ । १९, ४, १, २२०९ । ७, १०८, २, २ २२२८, ३, १, १; २१५२ । ४, ३९, १०, १०; २२८३ । १०, ८८, ४-५, २४००-१ । १, ७, २, ५-६,

२२८५, २२८८-८९ । १, ८, ४; २२९, २ । ५, २९, १-३, १०, २३०५-७, २३१४ । ५, २९, १२-१४; २३१५-१७ । ७, ८२, ४-५; २३२७-२८ । ४, २३, २, ४, २३३१, २३३३ । ४, ४०, १; २३४२ । १९, ६५, १; २३४९ । १९, ६६, १, २३५० । १९, ६४, १-२, २३५१ ५२ । ६, ७७, ३; २३९६  
 जातवेदा. [ अग्निदेवता ] १, ९९, १, १८६२ । १०, ८८, १- ३; १८६३ ६५ । अथर्वं ७, ८४, १, १८६६ । अथं ७, ६३, १; २३७४ । ६, ७७, १-३, २३९४-९६  
 जातवेदा. जन्मना- ३, २६, ७, १७५६  
 जानन् १, १४०, ७; २९८  
 जामिः जनानाम्- १, ७५, ४, २२७  
 जामि. सिन्धूनाम्- १, ६५, ७; १३०  
 जायमान सहसा- १, ९६, १, १८७९  
 जायुः वनेषु-- १, ६७, १; १४४  
 जार. १, ६९, १, १६४ । १, ६९, २; १७२ । ७, ९, १, ११५५ । ७, १०, १, ११६१  
 जार कर्त्तानाम्- १, ६६, ८; १४१  
 जिन्वन्ति अग्नय दिवम्- १, १६४, ५१ ।  
 (वामनसूक्त)  
 जिह्वांचक्रिरे स्वां शुचय-- २, १, १३, ३८१  
 जीवपीतसर्गः १, १४९, २, ३५४  
 जीवितयोपनः अथं १२, २, १६, २२४२  
 जीरः १, ४४, ११; ९६ । ३, ३, ६; १७४७  
 जीराश्वः १, १४१, १२. ३१६ । २, ४, २, ४१७  
 जुगुर्वणिः १, १४२, ८, १९२५  
 जुजुर्वान् यः सुहुः आयुवाभूत् २, ४, ५; ४२९  
 जुजुषाणः १०, १५०, २; १६९९  
 जुषत्-न् भानुषस्य हृदया १०, २०, ५; १५७५  
 जुषमाणः अथं १९, ३, १, २२०५  
 जुषाणः १०, १२२, २; १६७६

जुषाणः अर्कैः, १०, ६, ४, १५२३  
 जुषाण. उप [ इन्द्र ] वां यं २०, ३८; २०१६  
 जुषाण. बर्हिः [ इन्द्र ] वां यं २०, ३९; २०१७  
 जुषाणः हृदयानि ८, ४४, ८, १३५०  
 जुषाणौ घृतस्य गुह्या [ अग्नाविष्णु ] अथ. ८, २९, २; २४५४  
 जुष्टः ५, ४, ५; ७९४ । ५, १३, ४; ८५७ । ८, ४४, ७; १३४९  
 जुष्ट. दाशुषे जनाय १, ४४, ४; ८९  
 जुह्व तमिद् गच्छन्ति १, १४५, ३, ३३५  
 जुह्व सदानाम् १०, ६, ५, १५२४  
 जुह्वास्यः १, १२, ६, १५  
 जूर्णिः ८, ७२, ९, १४३२  
 जेता वां यं २८, २; २०८५  
 जेता जनानाम् १, ६६, ३; १३६  
 जेन्यः १, ७१, ४; १८८ । १, १२८, ७, २८९ । १, १४०, २, २९३ । १, १४६, ५; ३४२ । १०, ४, ३, १५०८  
 जेन्य. जनिष्ट अह्नां अग्ने ५, १, ५, ७५९  
 जेहमानः १०, ३, ६, १५०४  
 जोष्टा धिय. वां यं २८, १०, २०९३  
 जोहूत्रः २, १०, १, ४०९  
 ज्येष्ठः ८, ७४, ४; १४४५ । ८, १०२, ११; १४७३ । [ वरुणः ] ४, १, २, २४४९  
 ज्योतिः ४, १०, ३; ७२२  
 ज्योतिः अमृतम् ६, ९, ४; १७९०  
 ज्योतिः ध्रुवम् ६, ९, ५; १७९१  
 ज्योतिषः पतिः ऋतस्य अथं ६, ३६, १; २१८१  
 ज्योतिषा बृहता भाति ५, २, ९; ७७५  
 ज्योतीषि विभ्रत्, विषाम् ३, १०, ५; ५१३  
 ज्यसातः १०, ११५, ४, १६६९  
 तक्मन् अथर्वं १९, २५, १-४; २२७५-७८  
 ततुरिः १, १४५, ३; ३३५  
 तनृषाण- ६, १५, ५; १०२७

तनूनपात् ३, २९, ११; ५६८। १, १३, २;  
१९०७ । १, १४२, २; १९१९ ।  
९, ५, २; १९८७  
तनूनपात् उच्यते गर्भः ३, २९, ११; ५६८  
तनूनपात् [देवतामन्त्रा] १, १३, २;  
१९०७ । १, १४२, २; १९१९ ।  
१, १८८, २; १९३२। ३, ४, २; १९५४।  
९, ५, २; १९८२ । १०, ११०, २;  
२००४ । वा०य० २०, ३७; २०१५ ।  
२०, ५६; २०२६। २१, १३; २०३८।  
२१, ३०; २०४९। २७, १२; २०६१।  
२८, २; २०८५ । २८, २५; २०९६।  
२९, २, २१०७। २९, २६; २११८  
ऋ० प्रेष २; २१३०  
अथर्व० ५, २७, १; २०७२। ५, १२, २;  
२००४  
तनूपाः ८, ७१, १३, १४२१। १०, ४६, १,  
१६०१ । १०, ६९, ४; १६२८ ।  
१०, ८८, ८; २४०४  
तनूरुच्-क २, १, ९; ३७७  
तनू वाशिन्-शी अथ० १, ७, २; २२८५।  
७, १०९, (११४), १; २३६५  
तन्तुं तन्वन् १०, ५३, ६; १६१९  
तन्वतुः ६, ६, २; ९८७  
तन्वन्ति आ ये रश्मिभिः तिरः समुद्रम्  
भोजसा-[महत.] १, १९, ८, २४४५  
तपस्वान् ६, ५, ४; ९८२  
तपिष्ठः ६, ५, ४; ९८२  
तपुर्जम्भः १, ५८, ५; ११४। ८, १२३, ४,  
१२७३  
तपुर्मूर्धा ७, ३, १, ११२४  
तमसि तस्थिवान् ६, ९, ७, १७९३  
तपोहन्-हा १, १४०, १, २९२  
तरणिः ३, २९, १३; ५७०। ६, १, ५;  
९४३ । १०, ८८, १६, २५१२  
तरुत्रः ६, १, ११; ९४९  
तरुणः ७, ४, २; ११३५। ८, १९, २२;  
१२४५  
तरुषः परस्य अवरस्य अर्थः ६, १५, ३;  
१०२५। १०, ११५, ५, १६७०

द्वै० [अग्निः] ३२

तळित् हव अतिरोचते कूरेचित् सन्  
१, ९४, ७; २६२  
तवस् (से-चतुर्थी) ३, १, २, १३;  
४४८, ४५९। ७, ५, १; १७९४। ७, ६, १;  
१८०३  
तविषीभिः आवृतः ३, ३, ५; १७४६  
तव्यांसः ५, १७, १; ८७६  
तस्थिवान् तमसि ६, ९, ७, १७९३  
तस्थिवान् परमेपदे १, ७२, ४; १९८।  
२, ३५, १४; २४३५  
तानृषाणः य वना आभाति २, ४, ६,  
४२१  
तिग्मः ४, ६, ८; ६८९। ८, ७२, २,  
१४२५  
तिग्मजम्भः १, ७९, ६; २४९। ४, १५, ५,  
७५३। ८, १९, २२; १२४५। ८, ४४, २७;  
१३६९। ४, ५, ४, १७६१  
तिग्मशोचिः १, ७९, १०; २५३  
तिग्म हेतिः ४, ४, ४; १८१६  
तिग्मानीकः १, ९५, २; १८६९  
तुप्त अथ० १९, ४, १; २२०९  
तुराषाद् [ इन्द्रः ] वा० य० २०, ४६;  
२०२४  
तुर्वणिः १, १२८, ३, २८५  
तुविजातः ४, ११, २, ७२९। ५, २, ११,  
७७७। ५, २७, ३; ९३०  
तुविद्युन्नः ३, १६, ३, ६; ५९६, ५९९  
तुविश्रवस्तमः ३, ११, ६; ५२३  
तुविष्मान् ४, ५, ३; १७६०  
तुविष्णवस्-णाः ५, ८, ३; ८२३  
तुविष्णविः १, ५८, ४; ११३। १, १२७, ६,  
२७७  
तूर्णिः ३, ३, ५; १७४६  
तूर्णितमः ४, ४, ३; १८१५  
तूर्णा ३, ११, ५; ५२२  
तृतीयकः अथ० १, २५, ४, २२७८  
तृषुच्युतः १, १४०, ३; २९४  
तेपानः घृतस्य धीतिभिः ८, १०२, १६,  
१४७८

तेपानः रक्षस ८, ६०, १९; १४०७  
त्रययाज्यः ६, २, ७, ९५८  
त्राता १, ४४, ५, ९०। ५, २४, १; ९०७।  
६, १, ५; ९४३। ८, ६०, ५; १३९३  
त्रासदस्यवः ८, १९, ३२; १२५५  
त्रितः १०, ४६, ६, १६०६  
त्रिधातुः ८, ७२, ९; १४३२  
त्रिधातुः अर्कः ३, २६, ७; १७५६  
त्रिपस्त्यः ८, ३९, ८, १३०७  
त्रिमूर्धा १, १४६, १; ३३८  
त्रिवरुथः ६, १५, ९; १०३१  
त्रिषधस्थः ५, ४, ८, ७९७। ६, १२, २,  
१००७। ६, ८, ७, १७८६  
त्रेधा अकृण्वन् देवासः भुवे क तम् ऊ  
१०, ८८, १०, २४०६  
त्वष्टा त्वम् २, १, ५; ३७३  
त्वष्टा [देवता] १, १३, १०, १९१५।  
१, १४२, १०, १९२७। १, १८८, ९;  
१९३९। २, ३, ९, १९५०। ३, ४, ९;  
१९६१। ५, ५, ९; १९७१। ७, २, ९,  
१९६१। ९, ५, ९; १९८९। १०, ७०, ९;  
२०००। १०, ११०, ९, २०११।  
वा०य० २०, ४४, ६५; २०२२, २०३४।  
२१, २०, ३८; २०४५, २०५७।  
२७, २०, २०६९। २८, ९, ३२, २०९२,  
२१०३। २९, ९, ३४; २११४, २१२६।  
अथ० ५, २७, १०, २०८१। ऋ० प्रेष०  
१०, २१३८। अथ० ५, १२, ९; २०११  
त्वाष्टः ३, ७, ४; ४९३  
त्वे विश्वेदेवाः ५, ३, १; ७७९  
त्वेषः १, ६६, ६; १३९। १, ७०, ११;  
१८४। २, ९, १, ४०३। ३, २२, २;  
६२४। ८, ७४, १०, १४५१  
त्वेषः (षष्ठी वि०) ६, २, ६, ९५७  
दृक्षः ३, १४, ७; ५८७। १, ५९, ४,  
१७२०  
दक्षस्-क्षाः [दक्षसे] ६, ४८, १, १०९०  
दक्षस्य साधनम् ५, २०, ३; ८९३  
दक्षपतिः दक्षाणाम् १, ९५, ६;  
१८७२

वक्षः २, ४, ३; ४१८। ७, १, २  
 ११०२  
 वक्ष्य १, १४१, ७; ३११  
 वन (न) अवन ४, ६, ८, ६८९  
 वन (ना) १०, ११५, २, १६६७  
 वदशान नेदिष्ठम् १, १२७, ११; २८२  
 वदशान पवि. १०, १, ६; १५०४  
 वधान नयां पुरुणि हस्त १, ७२, १,  
 १९५  
 वधान. वयो वयो जरसे ५, १५, ४,  
 ८६९  
 वधानो सप्त रत्ना दमे दमे [अस्मादिण्यु]  
 अथ ७, २९ (३०), १ २४५३  
 वधि. १०, ४६, १. १६०१  
 वचक-ग १०, १६, ७; १५६३  
 दमयन् प्रतन्यून ७, ६, ४; १८०६  
 दमाम् अरिना. १०, ४६ ७, १६०७  
 दम्ना. ( नग ) १, ६०, ४, १२२।  
 १, ६८, १०, १६३। १, १४१, १०,  
 ३०१। ३, १, ११; ४५७। ३, १, १७,  
 ४६३। ३, ५, ४ ४७३। ४, ११, ५;  
 ७३२। ५, १, ८; ७६२। ५, ४, ५;  
 ७७४। ५, ८, १; ८२१। ७, ९, २;  
 ११५६। १०, ४६, ६, १६०६।  
 १०, ९१, १, १६५१। ३, २, २५,  
 १७४१। ३, ३, ६ १७४७। ४, ४, ११;  
 १८२३  
 दम्पतिः १, १२७, ८, २७९। ५, २२, ४;  
 ९०२। ८, ८४, ७; १४६०  
 दम्प्यः ८, २३, २४, १२९३  
 दयमान वि वसुरत्नानि दाशुषे  
 ३, २, ११, १७३७  
 दर्मा ( मर्न ) पुगाम १०, ४६, ५; १६०५  
 दर्शत् न १, १४४ ७; २३२। ३, २७, १३;  
 ५४९। ६, १, ३, ९४१। ८, ७१, १०;  
 १४१८। ३, २, १५; १७४१  
 दर्शत् तिर तमांसि ८, ७४, ५; १४४६  
 दर्शनभीः १०, ९१, २, १६५२  
 दविद्युत् ७, १०, १, ११६१।

६, १६, ४५; १०८६। अथ ७, ६२ (६४),  
 १; २३७३  
 दविद्युत् घृतेन आहुतः १०, ६९, १;  
 १६२५  
 दशस्यन् अपत्याय ७, ५, ७; १८००  
 दशान्तरुष्यात् अतिरोचमानः  
 १०, ५१, ३, १६१२  
 दस्म १, ७७, ३, २३६। २, १, ४;  
 ३७२। २, ९, ५; ४०७। ३, १, ७;  
 ४५३। ५, १७, ४; ८७२। ६, १, १,  
 ९३९। ८, १०३, ७, १२६३।  
 ८, ७४, ७; १४४८। १०, ७, १,  
 १५२७। १०, ११, ४; १५४३। ३, ३, २,  
 १७४३ [वरुण.] ४, १, ३, २४५०  
 दस्मवर्चाः ६, १३, २। १०१३  
 दस्युहन्तम. ६, १६, १५; १०५६  
 दस्युहन्तमः मान्धातुः ८, ३९, ८,  
 १३०७  
 दाता ३, १३, ३; ५७६। अथ ०  
 ३, २१, ४; २३५८  
 दाता वाजस्य गोमतः ५, २३, २, २०४  
 दाता सौमनसस्य अथ १९, ५५, ३-४;  
 २२७१-७२  
 दामा (मन्) रथानाम् ८, २३, २, १२७१  
 दारुः ७, ६, १, १८०३  
 दाशुम्-शः ( षः-षष्ठी ) ७, ३, ८;  
 ११३१  
 दास्यत् १, १२७, १, २७२  
 दिदक्षेण्यः, परिकाष्ठासु १, १४६, ५,  
 ३४२  
 दिदक्षेयः ३, १, १२, ४५८  
 दिद्युतान ३, ७, ४, ४९३  
 दिधिषायः १, ७३, २, २०६। २, ४, १,  
 ४१६  
 दिव् घोः ( दिवः-षष्ठी ) १, ७३, ७;  
 २११। ६, २, ४, ९५५  
 दिवः केतुः ३, २, १४; १७४०  
 दिवः चित् पूर्वः १, ६०, २; १२०  
 दिवः दुहितरौ [उषासानक्ते] १०, ७०, ६;  
 २००२

दिवः पायुः ( दिवस्पायुः ) ८, ६०, १९;  
 १४०७  
 दिवः मूर्धा ८, ४४, १६, १३५८।  
 ३, २, १४; १७४०  
 दिवः सूनुः ३, २५, १; ५३२  
 दिविजाः ८, ४३, २८; १३३७  
 दिवियोनि १०, ८८, ७; २४०३  
 दिविस्पृक्-श १०, ८८, १; २३९७  
 दिव्यः ६, ६, १, ९८६। ६, १०, १;  
 ९९३। अथ ४, १४, ६; २०२२  
 दिशन्ता प्राचीन ज्योतिः प्रदिशा  
 [द्वैतौ होतां] १०, ११०, ७; २००९  
 दिदानः शल्यान् १०, ८७, ४; १८३१  
 दीदियुस्-यु. ८, २३, ४; १२७३  
 दीदिवान् १, १२, ५; १४। १, १२, १०;  
 १९। २, ९, १, ४०३। ३, १३, ५;  
 ५७८। ३, २७, १२; ५४८। ५, २४, ४;  
 ९१०। ६, १, ६; ९४४। ७, १, ८, ११०७।  
 ८, ४४, ४, १३४६। ८, ६०, ५, १३९३।  
 ४, ४, ९; १८२१। २, ३५, ३; २४२४  
 दीदिवान् विष्वाहा- ६, १, ३; ९४१।  
 १०, ८८, १४, २४१०। २, ३५, १४;  
 २४३५। साम १, ६, १३, १  
 दीदिवि. ऋतस्य- १, १, ८; ८  
 दीद्यत्-न १, १४३, ७, ३२४। ३, २७, १५;  
 ५५१। ७, १०, १; ११६१। १०, ११८, १-८;  
 १८५३-६०  
 दीद्यत्, त्रिःश्रुतानि-१, १२२, ५, १६८०  
 दीद्यान १, १२७, ३; २७४। ३, ५, ७;  
 ४७६। १०, २०, ४; १५७४। ४, ५, ९,  
 १७६६  
 दीर्घतन्तुः १०, ६९, ७, १६३१  
 दीर्घश्रुतम ८, १०२, ११, १४७३  
 दीर्घायु शोचिः ५, १८, ३; ८८३  
 दुरोकशोचिः १, ६६, ५; १३८  
 दुरोगन्तुः ८, ६०, १९, १४०७  
 दुर्घरीतुः १०, २०, २, १५७२  
 दुर्घं दुर्घं ७, १, ११, १११०  
 दुर्घर्तुः ६, ६, ५, ९९०  
 दुष्टः ३, २४, १; ५२७

दुहन् सुदुवां विश्वधायस हृषम्  
 १०, १२२, ६, १६८०  
 दूतः १, १२, १, १० । १, १२, ८; १७ ।  
 १, ३६, ३, ७० । १, ४४, २; ८७ ।  
 १, ४४, ११, ९६ । १, ५८, १; ११० ।  
 १, ६०, १, ११९ । १, ७२, ७, २०१ ।  
 २, ९, २, ४०४ । २, ६, ६, ४३८ । ३, ५, २,  
 ४७१ । ३, ६, ५, ४८४ । ३, ९, ८; ५०७ ।  
 ३, ११, २, ५१९ । ३, १७, ४; ६०३ ।  
 ४, १, ८; ६३४ । ४, ७, ८; ७०० ।  
 ४, ८, १; ७०४ । ५, ८, ६; ८२६ ।  
 ५, ११, ४, ८४५ । ५, १२, ३, ८५० ।  
 ५, २१, ३, ८९७ । ५, २६, ६, ९२५ ।  
 ६, १५, ८; १०३० । ६, १६, २३, १०६४ ।  
 ७, ७, १, ११४२ । ७, ११, ३; ११६८ ।  
 ८, १९, २१, १२४४ । ८, २३, ६, १८१९,  
 १२७५, १२८७-८८८ । ८, ३९, ९, १३०८ ।  
 ८, ४४, ३, ३०; १३४५, १३६२ ।  
 ८, १०२, १८; १४८० । १०, ८, ५;  
 १५३८ । १०, १२२, ५; १६७९ ।  
 ३, ३, २, १७४३ । १, १८८, १; १९३१ ।  
 ७, २, ३; १९७७ । १०, ११०, १, २००८ ।  
 वा० य० २९, २५; २११७ । ऋ० प्रैष  
 ४, २१३२ । अथर्व० ३, २, १, २१५६ ।  
 ३, ४, ३; २१६० । १, ७, ६, २२८९  
 दूतः देवानां मर्त्यानां च- ६, १५, ९;  
 १०३१ । १०, ४, २, १५०७  
 दूतः देवानां विश्वेषाम्- ४, ९, २, ७१३  
 दूत. विवस्वतः- ४, ७, ४, ६९६ ।  
 ८, ३९, ३; १३०२ । १०, २१, ५, १५८५  
 दूतः विश्वाम्- १, ३६, ५, ७२१ । १, ४४, २,  
 ९४  
 दूतः विश्वस्य ७, ६, १, ११९२  
 दूतः मिथ्यः २, ६, ७; ४३९  
 दूरेदश ७, १, १, ११००  
 दूरेभा. १, ६५, १०; १३३  
 दूरेसन् इह अभवः ३, २, २, ५०१  
 दूलभः ४, ९, २; ७१३ । ३, २६, २,  
 १७२८

दहन् जनान् वज्रेण मृयुम् अथ०  
 १२, २, ९; २२३५  
 दशतिः यस्य अरेषा ... ६, ३, ३, ९६५  
 दशान. १०, ४५, ८, १५९६  
 दशानः रभसम् २, १०, ४; ४१२  
 दशीकः १, ६६, १०, १४३  
 दशोन्य महिना १०, ८८, ७, २४०३  
 देवः १, १, १, १ । १, १, ५, ५ । १, १२, ७,  
 १६ । १, २४, २; २७१ । १, ४४, ११; ९६ ।  
 १, ७४, ९; २२३ । १, ९४, ७, १६,  
 २६२, २७१ । १, १२७, १; २७२ ।  
 १, १२८, २-३; २८४-८५ । १, १८५, १,  
 ३६१ । १, १८९, ३; ३६३ । १, १८९, ६,  
 ३६६ । २, १, ४, ७, ३७२; ३७५ । २, २, ६;  
 ३९७ । २, ४, १; ४१६ । ३, ५, ६; ४७५ ।  
 ३, ६, ६, ४८५ । ३, ७, ९, ४९८ ।  
 ३, ९, १, ५०० । ३, ९, ८; ५०७ ।  
 ३, २७, ३; ५३९ । ३, २७, ७, ५४३ ।  
 ३, १३, १; ५७४ । ३, १४, ७, ५८७ ।  
 ३, १५, ६, ५९३ । ३, १९, ४; ६१३ ।  
 ३, २०, ३; ६१६ । ४, १, १, ६, ९,  
 ६३१, ६३२, ६३५ । ४, २, १, १९, ६४७-  
 ६५४, ३, ३; ६६८ । ४, ७, २, ६९४ ।  
 ४, ८, ३, ७०६ । ४, ११, ५, ७३२ ।  
 ४, ११, ६, ७३३ । ४, १३, १; ७४० ।  
 ४, १४, १; ७४५ । ४, १५, १, ७४९ ।  
 ५, १, २, ७५६ । ५, २, २१; ७७७ ।  
 ५, ३, ४, ५, ८; ७८१, ७८२, ७८५ ।  
 ५, ६, ४, ८०४ । ५, ८, ४, ८२४ ।  
 ५, ९, १, ८२८ । ५, १४, १, ८६१ ।  
 ५, १५, ५, ८७० । ५, १६, १, ८७१ ।  
 ५, १७, १, ८७६ । ५, २१, ४; ८९८ ।  
 ५, २२, २, ९०० । ५, २२, ३, ९०१ ।  
 ५, २५, १; ९११ । ५, २६, १, ७;  
 ९२०, ९२६ । ६, २, २१, ९६२ । ६, ३, १,  
 ९६३ । ६, ११, २; १००१ । ६, १३, २, ४,  
 १०१३, १०१५ । ६, १५, ४, १०२६ ।  
 ६, १६, ३, ७, १०४४, १०४८ ।  
 ६, १६, १२, ३२, ४१, ४३, १०५३,

१०७३, १०८२, १०८४ । ६, १६, ४६;  
 १०८७ । ६, ४८, ७, १०९६ । ७, १,  
 २०, २५, १११९ । ७, ३, १, ११२४ ।  
 ७, १४, १-३, ११७४-११७६ ।  
 ७, १५, ७, १३, ११८३, ११८९ ।  
 ७, १६, ११; १२०२ । ७, १७, ७, १२१० ।  
 ८, ११, १, ६, १२१४, १२१५ । ८, १९,  
 १, ३, १७, २४, २४, २८, १२२४,  
 १२२६, १२४०, १२४७, १२५१ ।  
 ८, २३, १८, १२८७ । ८, ३९, ७, १३०६ ।  
 ८, ४४, ११, १५; १३५३-५७८, ७५, २,  
 १३७४८, ६०, १०, १४०७८, ७, १८,  
 १४१६ । ८, १०२, १५, १४७७ ।  
 ८, १०२, १६, १४७८ । १०, २, २, १४९३ ।  
 १०, ७, १, ६, १५२७-३२१० । १२, १,  
 १५४९, १५५१ । १०, १६, ९, १६६५ ।  
 १०, ११५, ३, १६६८ । १०, १२२, ४,  
 १६७८ । १०, १५०, ४; १७०१ । १०,  
 १७६, २, १७०८ । १०, १७६, ४, १७१०  
 ३, ३, ९, १७५० । ३, २६, १; १७५३ ।  
 ४, ५, २, १७५९ । ७, ३, ३; १८०९ ।  
 देवः १, १३, ११; १९१६ । १, १४, २, ३,  
 १९२० । १, १४, २, ११; १९२८ । १, १८८,  
 १; १९३१ । २, १, १९२५, ३, ४, १, ९,  
 १७५३-६१७, २, ९, १९६१ । ५, ४, ७,  
 १९८४, १९८७ । १०, ७०, ४, ६, १०,  
 २०००, २, ६ । १०, ११०, १, २००८ ।  
 १, ११०, १०, २०१७ । १०, ८८, १४,  
 २४१० । २, ३५, ५, २४२६ । वा० य०  
 २७, १२-१३; २०६१ । २९, २५,  
 ३४, २११७, २१२६ । ऋ० प्रैष, २१३२  
 अथर्व० ५, २७, २; २०७३ । ५, २८, २-३  
 २०८५-८६, १२, २, १२, ३३, २०३८,  
 २२४६ । २, ३४, ३, २१५१ । ४, ३९, १०,  
 २२८३ । १, ७, १; २२८४ । २, ८, १, २,  
 २२९३-२४ । ३, २१, ३-४, २३५७-  
 ५८ । साम० १, १, १, १०  
 देवः प्रथमः अथ० ५, २८, ११; २१७७  
 देवः महः मर्त्यान् आविवेश ४, ५८, ३,  
 १८९७



देवास. [ मरुतः ] १, १९, ६. २४४३  
 देवकामः ( स्वष्टा ) २, ३, २. १९५०  
 देवतमः १०, ३, ६; १५०४। १०, ७०, २,  
 १९९८  
 देवताति उराण. ३, १९, २; ६११  
 देवयाचा दूनः ७, १०, २, ११६२  
 देवयु १०, १७६, ३; १७०९  
 देववाहनः ३, २७, १४, ५५०  
 देववीतमः १, ३६, ९; ७६  
 देवहूतमः ३, १३, ६; ५१९  
 देवानां केतु. ३, १, १७; ४६३  
 देवानां दूनः ६, १५, ९, १०३१  
 देवानां देव. १, ३१, १, ५०। १, ६८, २;  
 १५५। १, ९४, १३, २६८। वा० य०  
 २०, ४१, २०१९ इन्द्र  
 देवानां पिता १, ६९, २; १६५  
 देवानां पुत्रः १, ६९, २, १६५  
 देवावी ३, २९, ८, ५६५  
 देवेषु जागृविः १, ३१, ९; ५८  
 देवेषु देवः वा० य० २७, १२; २०६१।  
 अथ० ५, २७, २; २०७३  
 देव्यः १, १४०, ७; २९८  
 देव्य. तिस्र. सरस्वती इळा भारत्यः  
 मङ्गः वा १, १३, ९, १९१४।  
 १, १४२, ९, १९२६। १, १८८, ८, १९३८।  
 २, ३, ८, १९४९। ३, ४, ८, १९६०।  
 ५, ५, ८; १९१४। ७, २, ८, १९८१।  
 १, ५, ८, १९८८। १०, ७०, ८, १९९९।  
 १०, ११०, ८; २०१०। वा० य० २०, ४३,  
 ६४; २०२१, २०३३। २१, १९, ३७,  
 २०४४, २०५६। २७, १९; २०६८।  
 २८, ८; २०९१। २८, ३१, २१०२। २९, ८,  
 २११३। २९, ३३; २१२५। ऋ० प्रेष  
 ९, २१३७। अथ० ५, २७, ९; २०८०।  
 ५, १२, ८; २००९  
 देव्यः १, २७, १२; ४९  
 देव्यः अतिथिः ७, ८, ४. ११५२  
 देव्यः केतुः १, २७, १२; ४९  
 देवोदास ८, १०३, २, १२५८  
 द्यां परिजमान इव १, १२७, २; २७३

शुक्रः २, २, १; ३८५  
 शुक्रवचा ६, १५, ४; १०२६  
 श्रुतानः ६, १५, ४. १०२६। ७, ८, ४;  
 ११५२। ४, ५, १०, १७६७  
 शुभिः हितः १०, ७, ५, १५३१  
 शुभः (संजी०) ६, १०, २; ९९४  
 शुमान् २, ९, ६, ४८०। ४, १५, ४, ७५२।  
 ५, ६, ४; ८०४। ५, २६, ३; ९२२।  
 ७, १, ४; ११०३। ७, १५, ७, ११८३।  
 १०, २, ७; १४९८। ९, ५, ३; १९८३  
 शुमान् शुमासु १०, ६९, ७, १६३१  
 शुम्नवान् ५, २८, ४, ९३६  
 शुम्नी १, ३६, ८, ७५। ८, १०३, ९;  
 १२६५। १०, ६९, ५; १६२९  
 द्रविण. अथ० ७, ७८, २, २१९९  
 द्रविणस्-णाः ३, ७, १०; ४९९  
 द्रविणस्युः २, ६, ३, ४३५। ६, १६, ३४;  
 १०७५  
 द्रविणोदा अग्निः [देवता] १, ९६, १-२;  
 १८७९-१८८७  
 द्रविणोदा २, १, ७, ३७५। २, ६, ३;  
 ४३५। ७, १६, ११, १२०२। ८, ३९, ६;  
 १३०५। १०, २, २, १४९३। १०, ७०, ९;  
 २००५। अथ० १९, ३, ३; २२०६  
 दुषद् १०, ११५, ३. १६६८  
 दुहन्तरः १, १२७, ३, २७४  
 द्रवज्ञः ६, १२, ४, १००९। २, ७, ६,  
 ४४६  
 द्वारः देवी [देवता] १, १३, ६, १९११।  
 १, १४२, ६; १९२३। १, १८८, ५, १९३५।  
 २, ३, ५; १९४६। ३, ४, ५; १९५७।  
 ५, ५, ५; १९६८। ७, २, ५ १९७८।  
 ९, ५, ५, १९८४। १०, ७०, ५; १९९६।  
 १०, ११०, ५, २००७। वा० य० २०, ४७,  
 २०१८। २०, ६१; २०३०। २१, १६,  
 २०४१। २१, ३४; २०५३। २७, १६,  
 २०६५। २८, ५; २०८८। २८, २८,  
 २०२९। २९, ५, २११०। २९, ३०;  
 २१२२। ऋ० प्रेष ५, २१३४। अथ०  
 ५, २७, ७, २०७८। ५, १२, ५; २००७

द्विजन्मा १, ६०, १; ११९। १, १४०, २;  
 २९३। १, १४९, ४-५; ३५६-३५७  
 द्विबर्हा. ४, ५, ३; १७६०  
 द्विमाता १, ३१, २; ५१  
 द्वेषोद्युतः ४, ११, ५; ७३२  
 धक्षुः १०, ११५, ४, १६६९  
 धनञ्जयः १, ७४, ३; २१७। ६, १६, १५,  
 १०५६  
 धनर्चः १०, ४९, ५; १६०५  
 धनस्पृत् १, ३६, १०, ७७। ५, ८, १;  
 ८२२  
 धरुणः ५, १५, १-२; ८६६-६७  
 धर्णसिः ५, ८, ४; ८२४  
 धर्णिः १, १२७, ७, २७८  
 धर्ता ५, १, ६; ७६०  
 धर्ता मानुषीणां विशाम् ५, ९, ३; ८३०  
 धर्ता रायः ५, १५, १; ८६६  
 धर्मः ३, १७, १; ६००  
 धर्षीयान् सद्यः ६, १२, ५; १०१०  
 धामनि उरुञ्जयः विरोचमानम्  
 १, ९५, ९, १८७६  
 धामभि (युक्त) सप्त ४, ७, ५; ६९५  
 धासिः ३, ७, १; ४९०। ७, ६, २;  
 १८०४  
 धितावान् ३, २७, २; ५३८  
 धियधिः ७, १३, १; १८१०  
 धियं साधयन्ती [ सरस्वती ] ९, ३, ८;  
 १९४९  
 धियावसु १, ५८, ९; ११८। १, ६०, ५,  
 १२३। ३, २८, १, ५५२। ३, ३, २; १७४३  
 धीः १, ९५, ८; १८७५  
 धीनां यन्ता ३, ३, ८; १७४९  
 धीरः १, ९४, ६, २६१। ८, ४४, २९;  
 १३७१। अथ० ३, २१, ४; २३५८  
 धुनिः १, ७९, १; २४४  
 धूमः ३, २९, ९; ५६६  
 धूमः ते केतुः दिविभितः ५, ११, ३, ८४४  
 धूमं ऋणवन् ७, २, १; १९७५  
 धूमकेतुः १, २७, ११; ४८। १, ४४, ३;

८८ । ८, ४४, १०; १३५२ । १०, ४, ५;  
 १५१० । १०, १२, २; १५५०  
 धूर्षद् १, १४३, ७, ३२४।२, २, १; ३८५  
 धृतव्रतः ८, ६४, २५; १३६७  
 धृषद्वर्णः १०, ८७, २२; १८४९  
 धृष्णुः ६, १६, २२; १०६३ ।  
 १०, १६, ७; १५६३ । १०, ६२, ५-६;  
 १६२९ ३०। अथ० ५, २९, १०; २३१४  
 ध्रजिमान् १, ७९, १; २४४  
 ध्राजिः एकस्य वदने [ वायुदेवता ]  
 १, १६४, ४४, २४५६  
 ध्रुवः ६, १५, ७; १०२९। ६, ९, ४, १७९०  
 ध्वंसयन् १, १४०, ३ २९४  
 नक्षति धाम् आभि शुक्रैः ऊर्मिभिः  
 १, ९५, १०; १८७७  
 नक्षयः ७, १५, ७, ११८३  
 नडे अथ० १२, २, १९, २२४५  
 नसा अध्वराणाम् ८, १०२, ७, १४६९  
 नक्षमत् जिह्वाभिः ८, ४३, ८, १३१७  
 नभोविद् १०, ४६, १, १६०१  
 नमसा उपवाक्यः १०, ६९, १२, १६३९  
 नमसा रातहस्यः ४, ७, ७; ६९९  
 नमो युजान १ ६५, १, १२४  
 नमो वहन् १, ६५, १; १२४  
 नमस्यः १, ७२, ५; १९९। २, ३, ३७१ ।  
 २, १, १०; ३७८ । ३, ५, २, ४७१  
 ३, २७, १३; ५४९  
 नराशंस [ अग्निदेवता ] १, १३, ३,  
 १९०८ । १, १४१, ३, १९२० । २, ३, ३,  
 १९४४ । ५, ५, २, १९६५ । ७, २, २,  
 १९७५ । १०, ७०, २; १९९३। वा०य०  
 २०, ३७, २०१५ । २०, ५७, २०२७ ।  
 २१, ३१; २०५० । २७, १३; २०६२।  
 २८, २; २०८५ । २९, ३; २१०८ ।  
 २९, २७; २११९। ऋ० प्रैष ३, २१३१।  
 अथ० ५, २७, ३; २०७४  
 नराशंसः भवति यद् विज्ञायते आसुरः  
 ३, २९, ११, ५६८

नर्यापसः [ त्वष्टा ] वा० य० २१, ३८।  
 २०५७ । २८, ४; २०८६  
 नर्या पुरुणि हस्ते दधानः १, ७२, १,  
 १९५  
 नचः सदा ३, ११, ५, ५२२  
 नवजातः ५, १५, ३; ८६८  
 नव्यः १, १४१, १०; ३१४। १, १८९, २,  
 ३६२। ६, १, ७; ९४५। १०, ४, ५; १५१०  
 नव्यः सनात् ८, ११, १०; १२२३  
 नाकः ५, १७, २, ८७७  
 नाद्यः २, ३५, १; २४२२  
 नानदत् एति १, १४०, ५ १९६  
 नानदत् चित्रेषु ३, २, ११; १७३७  
 नाभिः पृथिव्या १, ५९, २; १७१८  
 नाभिः यज्ञानाम् ६, ७, २. १७७४  
 नाभिः रोचनस्य १०, ४६, ३; १६०३  
 नाभि विश्वस्य चरतः ध्रुवस्य १०, ५, ३;  
 १५१५  
 नाम अस्य चारु २, ३५, ११, २४३२  
 निषवः १, ९५, ४, १८७१  
 नितोशतः ६, १, ८; ९४६  
 नित्यः १, ६६, १, ५; १३४, १३८ ।  
 ३, २५, ५, ५३६ । ५, १, ७; ७, ६१ ।  
 १०, १२, २; १५५०  
 नित्यहोता १०, ७, ४; १५३०  
 निधुविः मर्त्येषु ७, ३, १, ११२४  
 निऋतः अथ० १२, २, १४; २२४०  
 निर्मथितः ३, २३, १, ६२७  
 निवेशनी जगतः [ रात्रिः ] १, ३५, १;  
 २४४८  
 निषत् १, ५८, ३, ११२ । ३, ३, २,  
 १७४३ । ६, ९, ४; १७९०  
 निषत् सन्मध्ये १, ६९, ४; १६७  
 निषद्वरः वा० य० २८, ४, २०८७  
 निष्पद्माणः यमते नायते १, १२७, ३,  
 २७४  
 निःस्वरः अथ० १२, २, १४; २२४०  
 नीलवृष्टः ३, ७, ३; ४२२  
 नू च पुरा च १, ९६, ७, १८८५

नृचक्षाः ३, १५, ३; ५९० । ३, २२, २;  
 ६२४ । ४, ३, ३, ६६८ । ८, १९, १७;  
 १२४० । १०, ८७, ८-१०, १७;  
 १८३५-३७, १८४४। ५, ७, १९९२ ।  
 अथ० १, ७, ५, २२८८  
 नृतमः १, ७७, ४, २३७ । ३, १, १२;  
 ४५८ । ५, ४, ६; ७९५ । १, ५९, ४;  
 १७२० । ४, ५, २, १७५९ । ६, ५, ४;  
 १८०६  
 नृपतिः २, १, ७; ३७५  
 नृपेशसः [ देवीः द्वारः ] ३, ४, ५; १९५७  
 नृमणा १०, ४५, १, १५८९  
 नृमणा विश्वानि हस्ते दधानः १, ६७, ३;  
 १४६  
 नृशस्तः मैत्रा० ४, १३, २, २९३९  
 नृशस्त्रः ऋ० प्रैष ३, २१३१  
 नृषद् १०, ४६, १, १६०१  
 नृः प्रणेत्र ऋ० प्रैष ३, २१३१  
 नृः प्रणेत्र मैत्रा० ४, १३, २; २९३१  
 नेता अध्वराणाम् १०, ४६, ४; १६०४  
 नेता ह्युषाम् ३, २३, २, ६२८  
 नेता क्षितीनां देवीनाम् ३, २०, ४; ६१७  
 नेता चर्षणीनाम् ३, ६, ५; ४८४  
 नेता यज्ञस्य २, ५, २, ४२६। ३, १५, ४;  
 ५९१  
 नेता यज्ञस्य रजसश्च १०, ५, ६; १५३९  
 नेता सिन्धुनाम् ७, ५, २; १७९५  
 नेष्टा २, ५, ५, ४२९  
 नेष्टम् तव २, १, २; ३७०  
 नृचतिसः विश्वरूपा. ओषधीः १०, ८८,  
 १०; २४०६  
 पक्कः १, ६६, ३; १३६  
 पतिः वा० य० २८, ३१, २१०२  
 पतिः ३, ७, ३; ४९२  
 पति. जनीनाम् १, ६६, ८; १४१  
 पतिः पृथिव्याः ८, ४४, १६, १३५८  
 पतिः क्षातिनः सदस्त्रिणः वाजस्य  
 ८, ७५, ४; १३७६

पदास्त्रे एव निदिताः त्रिः सप्त गुह्यानि  
 १, ७२, ६; २००  
 पदे तस्थिवान् परमे १, ७२, ४; १९८  
 पानिष्ठ ३, १, १३; ४५९  
 पन्यांसः ८, ७४, ३; १४४४  
 पप्रथानः ५, १५, ४; ८६९  
 पप्रि. अथ० १२, २, ४७; २२६१  
 पयस-स् अथ० ४, १४, ६; २२२२  
 पयस्वत्-स्वान् १, २३, २३  
 पयस्वतो [उषासानक्ते] २, ३, ६; १९४७  
 परः आमाम्बु पूर्णु २, ३५, ६; २४२७  
 परमेष्ठी अथ० १, ७, २; २२८५  
 परस्पाः २, ९, २, ६; ४०४, ४०८  
 परिज्मा ६, २, ८; ९५९ । ९, ७२, १०,  
 १४३३ । ३, २६, २, १७३५ । ७, १३, ३;  
 १८१२  
 परिधि मनुष्याणाम् अथ० १२, २, ४४,  
 २२५७  
 परिभूः अथ० ३, २१, ४, २३५८  
 परिभूः देवान् १०, १२, २; १५५०  
 परिभूः विश्वातात्मना ३, ३, १०, १७५१  
 परिभूतमः १०, २१, ८, १६५८  
 परियन् वर्तिर्यशम् १०, १२२, ५, १६८०  
 परिवीतः १०, ४६, ६; १६०६  
 परिष्कृत ८, ३९, ९; १३०८  
 पर्जन्य क्रन्धः ८, १०२, ५, १४६७  
 पर्थेति पार्थिवं एवेन सद्यः १, १२८, ३,  
 २८५  
 पर्वतानां मित्रः ३, ५, ४; ४७३  
 पलितः १०, ४, ५; १५१०  
 पवमानः ९, ५, १-११; १९८१-९१  
 ९, ६६, २० । साम० २, ७, १, १२  
 पविता अथ० ६, ११९, ३, २३८६ ।  
 ९, ६६, २०; । साम० २, ७, १, १२  
 पाजः अस्य रुशत् ३, २९, ३; ५६०  
 पाञ्जजन्यः अथ० ४, २३, १; २३३०  
 पात्रः ६, ७, १, १७७७  
 पादा अस्य त्रयः ४, ५८, ३; १८९७  
 पायुः ६, १५, ८; १०३० । ४, ४, ३;  
 १८१५

पावकः १, २२, १०, १९ । १, ६०, ४;  
 १२२ । २, ७, ४; ४४४ । ३, ५, ७;  
 ४७६ । ३, १०, ८, ५१६ । ३, २७, ४,  
 ५४० । ३, १७, १; ६०० । ३, २१, २,  
 ६१९ । ४, ६, ७; ६८८ । ५, ४, ३, ७,  
 ७९२, ७९६ । ५, ७, ४; ८१४ ।  
 ५, २३, ४, ९०६ । ५, २६, १; ९२० ।  
 ६, १, ८; ९४६ । ६, २, ६, ९६८ ।  
 ६, ४, ३; ९७३ । ६, ५, २, ९८० ।  
 ६, ६, २, ९८७ । ६, २५, ७; १०२२ ।  
 ६, ४८, ७; १०९६ । ७, ३, १; ११२४ ।  
 ७, ३, ९, १६३२ । ७, ९, १; ११५५ ।  
 ७, १५, १०; ११८६ । ८, २३, १९,  
 १२८८ । ८, ४४, २८, १३७० । ८, ६०, ३,  
 ११, १३९१, १३९९ । ८, ७४, ११;  
 १४५२ । १०, ४५, ७, १५९५ ।  
 १०, ४६, ४, ७-८, १६०४, १६०७, १६०८ ।  
 ४, ५, ६; १७६३ । १, ९५, ११, १८७८ ।  
 १, ९६, ९; १८८७ । १, १३, १; १९०६ ।  
 १, १४२, ३, ६, १९२०, १९२३ । २, ३, १;  
 १९४२ । अथ० ६, ४७, १, २३७२  
 पावक वर्चाः १०, १४०, २; १६८५  
 पावक शोचिः ३, ९, ८, ५०७ । ३, ११, ७,  
 ५२४ । ४, ७, ५; ६२७ । ५, २२, १;  
 ८९९ । ६, १५, १४; १०३६ । ८, ४३, ३१;  
 १३४० । ८, ४४, १३; १३५५ । ८,  
 १०२, ११; १४७३ । १०, २१, १, १५८१ ।  
 ३, २६, ६, १७३२  
 पिता १, ३१, १०; ५९ । १, ३१, १६;  
 ६५ । २, १, ९; ३७७ । २, ५, १; ४२५ ।  
 ३, २७, ९, ५४५ । ५, ४, २; ७९१  
 पिता आश्रय चित् १, ३१, ४, ६३  
 पिता यज्ञानाम् ३, ३, ४, १७४५  
 पिता माता मनुषाणां सदमित् ६, १, ५,  
 ९४३  
 पितृमान् १, १४१, २, ३०६  
 पितृषिपता ६, १६, ३५, १०७६  
 पितृयन् १०, १४२, २, १६९१  
 पिन्वमान मधुमत् घृतम् वा० य०

२९, १, २१०६  
 पिशाङ्गरूपः [ त्वष्टा ] २, ३, ९, १९५०  
 पुनानः क्रतुम् ३, १, ५; ४५१  
 पुमान् ४, ३, १०; ६७५  
 पुरः १०, ८७, २२; १८४९  
 पुर एता १, ७६, २; २३०  
 पुर एता विशाम् ३, ११, ५; ५२२  
 पुरन्दरः ६, १६, १४; १०५५ । ७, ६, २  
 १८०४  
 पुरन्दरः [ इन्द्रः ] वा० य० २०, ३८  
 २०१६ । २८, ३, २०८६  
 पुराजाः १०, ५, ५, १५१७  
 पुरीष्याः [ प्यासः बहु० ] ३, २२, ४;  
 ६२६  
 पुरुक्षुः १, ६८, १०; १६३ । ३, २५, २;  
 ५३३  
 पुरुचेतनः ६, १६, १२; १०६०  
 पुरुतम. ६, ६, २; ९८७  
 पुरुधप्रतीक ३, ७, ३, ४९२  
 पुरनिःष्ठः ५, १, ६, ७६०  
 पुरुशशासु गभः भुवत् २, १०, ३; ४११  
 पुरुप्रशस्तः १, ७३, २; २०६ ।  
 ८, १०३, १२, १२६८ । ८, ७०, १०;  
 १४१८  
 पुरुमिय १, १२, २, ११ । १, ४४, ३  
 ८८ । १, ४५, ६; १०५ । ५, १८, १;  
 ८८१ । ८, ४३, ३१, १३४० । ८, ७४, १;  
 १४४२ । ३, ३, ४, १७४५  
 पुरुप्रैषः १, १४५, ३ ३३५  
 पुरुरूपः ५, ८२, ५, ८२२, ८२५ । वा० य०  
 २८, २; २०९२  
 पुरवारः २, २, २; ३८६ । ४, २, २०;  
 ६६६ । ६, १, ३; ९५१ । ६, ५, १, ९७९ ।  
 ६, १५, ७; १०२९ । ४, ५, १५; १७७२;  
 पुरवारपुष्टि. १, ९६, ४; १८८२  
 पुरुवेपलम् ( द्वि० ) ८, ४४, २६, १३६८  
 पुरुशोभन ५, २, ४, ७७०  
 पुरुश्वन् १, २७, ११; ४८ । ३, २५, ३;  
 ५३४ । ५, ८, १; ८२१

पुरुषवेषणः अथ० ३, २१, ९; २३६३  
 पुरुहूत १, १४१, ६; ३१० । १, ८, ५,  
 ८२५  
 पुरुस्पृहः ५, ७, ६; ८१६ । १, १४२, ६;  
 १९२३  
 पुरुहूतः १, ४४, ७, ९२ । अथ०  
 १९, ५५, ६; २२७४  
 पुरुहूते [ नक्तोषासा ] ७, २, ६; १९७९  
 पुरु ( रु ) चरन् १, १४४, ४, ३२९  
 पुरुतमः ८, १०२, ७; १४६९  
 पुरुवसुः २, १, ५, ३७३ । ८, १०३, ५;  
 १२६१ । ८, ७०, १०; १४१८  
 पुरोगाः १०, १२४, १, १६८३ । १, १८८,  
 ११, १९४१ । १०, ११०, ११; २०१३ ।  
 वा० य० २९, ११, ३६; २११६, २१२८  
 पुरोयावा ( वन् ) ८, ८४, ८; १४६१ ।  
 ९, ५, ९; १९८९  
 पुरोहितः १, १, १, १११, ४४, १०; ९५ ।  
 १, ४४, १२, ९७ । १, ५८, ३; ११२ ।  
 १, ९४, ६; २६१ । १, १२८, ४, २८६ ।  
 ३, ११, १; ५१८ । ५, ११, २; ८४३ ।  
 १०, १, ६; १४९० । १०, १२२, ४, १६७८ ।  
 १०, १५०, ४; १७०१ । १०, १५०, ५;  
 १७०२ । ३, २, ८, १७३४ । ३, ३, २;  
 १७४३ । ९, ६, २० । अथ० ७, ६२ ( ६४ ), १ ।  
 २३७३ । साम० १, १, ५, ४, २, ७,  
 १, १२  
 पुर्वणीकः ६, १०, २; ९९४ । ६, ५, २,  
 ९८० । ६, ११, ६; १००५ ।  
 पुष्टिः वा० य० २८, ३२; २१०३  
 पुष्टिवर्धनः १, ३१, ५; ५४  
 पुष्टिवर्धनः [ इन्द्राग्नी ] वा० य० २१, २०;  
 २०४५  
 पूतदक्षः ३, १, ३; ४४९  
 पूर्वः ७, ६, ३; १८०५ । १०, ८७, ७;  
 १८२४  
 पूर्वः अस्मत् १०, ५३, १; १६१६  
 पूर्वकृत [ इन्द्रः ] वा० य० २०, ३६; २०१४  
 पूर्व्यः १, २६, ५; ३२१, ७४, २, २१६ ।

२, २, ९; ३९३ । ३, ११, ३; ५२० । ३, १४, ३,  
 ५८३ । ३, २३, ३; ६२९ । ५, ८, २; ८२२ ।  
 ५, १५, १, ३; ८६६ । ५, २, ३; ८९३ ।  
 ८, १९, २; १२२५ । ८, २३, ७, २२,  
 १२७६, १२९१ । ८, ३९, ३, १०;  
 १३०२, १३०९ । ८, ७५, १; १३६३  
 पूर्व्यः यज्ञेषु ८, ३९, ८, १३०७ ।  
 ८, ६०, २; १३९० । ८, १०२, १०, १४७२  
 पूषा अथ० ६, ११२, ३; १९२ । [ देवता ]  
 ऋ० ७, ४१, १; २४३७  
 पूषा स्वम् २, १, ६; ३७४  
 पूषण्वान् वा० य० २१, १५, २०४० ।  
 २८, २७, २०९८  
 पूषण्वान् [ इन्द्रः ] १, १४२, १२, १९२९  
 पू' शतभुजिः मदी न आयसी भव  
 ७, १५, १४; ११९०  
 पृक्षः १, १४१, २; ३०६ । ६, ८, १; १७८०  
 पृच्छन्ति तम् इत् १, १४५, २, ३३४  
 पृणन् १०, १२२, ४, १६७८  
 पृतनाजित् अथ० ७, ६३ ( ६५ ), १,  
 २३७४  
 पृतनाषाट् ३, २९, ९; ५६६  
 पृथिव्याः तनः ३, २५, १; ५३२  
 पृथुः २, १०, ४; ४१२  
 पृथुपाजा ३, ५, १; ४७० । ३, २, ७, ५,  
 ५४१ । ३, २, ११, १७३७ । ३, ३, १,  
 १७४२  
 पृथुप्रगामा १, २७, २; ३९  
 पृषद्वत् [ बर्हिः ] ७, २, ४, १९७८  
 पृषबन्धुः ३, २०, ३; ६१६  
 पृष्टः दिवि पृथिव्याम् विश्वा १, २८, २;  
 १७२५  
 पोता १, ९४, ६; २६१ । २, ५, २, ४२६ ।  
 ७, १६, ५, ११९६ । ४, ७, ३; ६१४  
 पौत्रम् तत्र २, १, २; ३७०  
 प्रकेतः १, ९४, ५; २६०  
 प्रकेतः अध्वरस्य महान् ७, ११, १,  
 ११६६  
 प्रचेताः १, ४४, ११; २६ । २, १०, ३;  
 ४११ । ३, २५, १; ५३२ । ३, २९, ५,

५६२ । ४, १, ११; ६३१ । ४, ६, २;  
 ६८३ । ६, ५, १, २७९ । ६, १३, ३;  
 १०१४ । ६, १४, २; १०१९ । ७, ४, ४;  
 ११३७ । ७, ५, १२, ११९६, १२०३ ।  
 ७, १७, ५, १२०८ । १०२, १८, १४८० ।  
 १०, ७९, ४, १६४० । १०, १४०, ५;  
 १६८८ । १०, ८७, ८, १८३५ । १०, ११०,  
 ३, २००३ । वा० य० २९, २५; २११७ ।  
 अथर्व० ७, १०६, १, २२०० । ४, २३, १;  
 २३३० । [ वरुण देवता ]  
 प्रचेतसौ [ देवते ] ' होतारौ देव्यौ ' पश्य  
 प्रचोदयन् विद्यानि ३, २७, ७, ५४३  
 प्रचोदयन्ता विद्येषु [ देव्यौ होतारौ ]  
 १०, ११०, ७, २०१४  
 प्रजानन् ३, २९, १६; ५७३ । ४, १, १०;  
 ६३६ । १०, १६, ९, १५६५ । १०,  
 ८८, ६, २४०२ । अथ० ४, २३, २;  
 २३३१  
 प्रजानन् [ वनस्पतिः ] २, ३, १०; १९५१  
 प्रजानन् तत्र ऋन्वियं योनि १०, ९१, ४;  
 १६५४  
 प्रजानन् देवयानान् पथः वा० य०  
 २९, २; २१०७  
 प्रजापतिः २, ५, ९; १९८९  
 प्रणेताः वस्य आ २, ९, २, ४०४  
 प्रतरणः अथ० १२, २, ४९; २२६२ ।  
 ऋ० २, १, १२, ३८०  
 प्रतिक्रियन् विश्वा भुवनानि २, १०, ४;  
 ४१२  
 प्रतिगृह्णन् अथ० ३, २१, ४, २३५८  
 प्रतिदहन् अभिशास्ति अरातिम् अथ०  
 ३, १, १; २२५२ । ३, २, १; २२५६  
 प्रतिमिमानः [ इन्द्रः ] वा० य० २०, ३७  
 २०१५  
 प्रतिहर्यन् ( त् ) ८, ४३, २, १३११  
 प्रतिव्य ८, २३, १; १२७०  
 प्रत्नः ३, ९, ८; ५०७ । ५, ८, १, ८२१ ।  
 ८, ११, १०, १२२३ । ८, २३, २०; १२८९ ।  
 ८, २३, २५; १२९४ । ८, ४४, ७; १३४९

१०,४,१; १५०६ । १०,७,५, १५३१ ।  
 १०,९,१,१२, १६६३  
 प्रत्नः होता २,७,६; ४४६  
 प्रत्यङ् विश्वतः १,१४४,७,३३२।२,१०,  
 ५; ४१३ । १०,७९,५; १६४१  
 प्रत्यङ् तस्यौ सः विश्वा भुवनानि १०,८८,  
 १६; २४१२  
 प्रथमः १,३१,२,५१।२,१०,१; ४०९ ।  
 ३,२९,५, ५६२ । ४,१,२१, ६३७ ।  
 ४,७,१; ६९३।४,११,५, ७३२ । ५,११,  
 २; ८४३।६,१,१; ९३९।६,१५,१६;  
 १०३८ । ८,२३, २२; १२९१ ।  
 १०,१२,२, १५५० । १०,४६,९,  
 १६०९ । १०,१२२,४; १६७८ । १०,  
 १२२,५, १६७९।१,१६,३; १८८१।  
 १,१८८,७, १९३७ । ३,४,३, १९५५।  
 अथ० ७,८२, (८७), ४५, २३२७-२८।  
 ४,२३,१, २३३०  
 प्रथमः अंगिरस्तमः १,३१,२; ५१  
 प्रथमः अंगिरा ऋषिः १,३१,१; ५०  
 प्रथमः अमृतानाम् १,२४,२; २७  
 प्रथमः देवः अथ० ५, २८, ११, २१७७  
 प्रथमः देवतानाम् अथ० ४,१४,५,  
 २२२१  
 प्रथमः मात रिविश्वने विवस्वते आवि  
 भव १,३१,३; ५२  
 प्रथमः होता ७,११,१,११६६। ३,४७;  
 १९५९  
 प्रथमजाः ऋतस्य १०,५,७; १५१९  
 प्रदिवः ४,६,४; ६८५ । ४,७,८, ७००।  
 ५,८,७; ८२७ । ६,५,३; ९८१।२,३,१,  
 १९४२  
 प्रभुः ८,४३,२१; १३३०  
 प्रभुः रूपाणि १,१८८,९; १९३९  
 प्रभुः विश्वा विशः अनु ८,११,८; १२२१  
 प्रमतिः १,३१,१०, १४, १६, ५९, ६३,  
 ६५ । ८,१९, २९; १२५२  
 प्रमहाः ( हस् ) ५, २८, ४, ९३६

प्रमृणन् सपत्नान् अथ० १९, ६६, १,  
 २३५०  
 प्रयज्युः ३, ६, २, ४८१  
 प्रयतः ४, ५, १०, १७६५  
 प्रयन्ता वसूनाम् १, ७६, ४; २३२  
 प्रवपन् १०, ११५, ३; १६६८  
 प्रविद्वान् अथ० ५, २६, १, २३४५  
 प्रविशिवान् विशः विशः अथ० ४, २३,  
 १, २३३०  
 प्रशस्यः २, २, ३; ३८७  
 प्रशस्तः १, ३६, ९; ७६ । ७, १, १; ११००  
 प्रशस्त विश्व १, ६६, ४, १३७  
 प्रशस्यः विदथेषु ८, ११, २, १२१५  
 प्रशासन् ऋतून् १, ९५, ३, १८७०  
 प्रशस्ता १, ९४, ६, २६१ । २, ५, ४, ४२८  
 प्रशास्त्रम् तव २, १, २; ३७०  
 प्रशिषः तस्मिन् सन्ति १, १४५, १, ३३३  
 प्रसूषु नवासु अन्तः चरति १, ९५, १०;  
 १८७७  
 पाञ्च क् १०, ४६, ४; १६०४  
 प्राचा जिह्व १, १४०, ३, २९४  
 प्राचीनम् ९, ५, ४, १९८९  
 प्रावीः ४, २, २; ७१३  
 प्रियः १, २६, ७; ३४ । १, १२८, ७-८;  
 २८९, २९० । १, १४३, १; ३१८ ।  
 ३, २३, २, ६२९ । ५, २३, ३, ९०५ ।  
 ६, १, ६; ९४४ । ६, १६, ४२; १०८३।  
 ६, ४८, १; १०९०। ७, १६, १, ११९२।  
 १, १३, ३; १९०८ ।  
 प्रियः चमस्य १०, २१, ५; १५८५  
 प्रियः देवानाम् साम० १, १, ७, ३  
 प्रियः विशाम् ५, १, ९; ७६३  
 प्रिय जातः ८, ७१, २; १४१०  
 प्रिय धामा ( सः ) १, १४०, १; २९२  
 प्रियप्रियम् ( द्वितीया ) ६, १५, ६,  
 १०२८  
 प्रीणन् ९, ५, १; १९८६  
 प्रीणानः १, ७३, १; २०५ । वा० य०  
 २७, १३; २०६२

प्रीतः १, ६६, ४; १३७ । १, ६९, ५; १६८  
 प्रेतीषणिः चर्षणीनाम् ६, १, ८, ९४६  
 प्रेक्षः सनकात् १०, ६९, १२; १६३६  
 प्रेष्ठ ८, ८४, १, १४५४ । १०, १५६,  
 ५; १७०७  
 प्रेष्ठ प्रियाणाम् ८, १०३, १०, १२६६  
 प्रैणानः अथ० ५, २, ७; २०७४  
 प्रोथन् ( त् ) १०, ११५, ३; १६६८  
 प्लव अथ० १२, २२, ४८; २२६१  
 प्लवः त्रिधा ४, ५८, ३, १८९७  
 वपसत्-न् १०, १४२, ३; १६९२  
 वपसन्, उपस्रक्षु ८, ७२, १५, १४३८  
 वभिः ३, १, १२, ४५८  
 वरुः अथ० ७, १०९, १, ७;  
 २३६५, २३७१  
 वहिः [ देवता ] १, १३, ५, १९१० ।  
 १, १४२, ५; १९२२। १, १८८, ४; १९३४।  
 २, ३, ४; १९४५ । ३, ४, ४, १९५६ ।  
 ५, ५, ४; १९६७ । ७, २, ४; १९७७ ।  
 ९, ५, ४; १९८४। १०, ७०, ४, १९९५।  
 १०, ११०, ४; २०१६ । वा० य०  
 २०, ३९, ५९; २०१७, २०२९ ।  
 २१, १५, ३३, २०४०, २०५२। २७, १५,  
 २०६४। २८, ४; २०८७ । २८, २७;  
 २०९८। २९, ४, २९, २१०९, २१२१ ।  
 ऋ० प्रैष ५, २१३३ । अथ० ५, १२, ४;  
 २००६ । ५, २७, ९; २०८०  
 वहिषः राट् ६, १२, १; १००६  
 बहुलः २, १, १२; ३८०  
 बाहुमान् [ इन्द्रः ] अथ० १, ७, ४; २२८७  
 बृहन् [ त् ] १, ४५, ८; १०७ । २, १, १२,  
 ३८० । ३, २७, १५; ५५१। ३, १५, १;  
 ५८८ । ५, १२, १; ८४८ । ५, २६, ३;  
 ९२२ । ६, १, ३; ९४१। ६, २, ४; ९५५।  
 ८, १०३, ८; १२६४ । १०, १, १, १४८५।  
 १०, १, ३; १४८७। १०, ३, ४-५; १५०२-  
 ३। १०, ७, ३; १५२९। ३, २, १४; १७४०।  
 ४, ५, १; १७५८। १०, ७०, ७; २००३।

१० ८८, ३, २३९९। अथ० १९, ६४, १,  
२३५१। [ हन्द्र ] वा० य० २०, ४१,  
२०१९। अथ० ४, १४, ६, २२२२  
बृहत् तिरश्चा वयसा २, १०, ४, ४१२  
बृहता ज्योतिषा भाति ५, २, ९; ७७५  
बृहतीः [ देवीः द्वार ] १०, ११०, ५,  
२००७

बृहत्केतुः ५, ८, २, ८२२  
बृहत्सूरः ८, ५६, ५, २४५५  
बृहत्दर्चाः ५, २५, ७, ९१७  
बृहद्बुधा १०, ६२, ७; १६३१

बृहद्भ्राः १, ४५, ८, १०७। ८ ४; ११५२  
बृहद्भ्रातुः १, २७, १२; ४९। १, ३६, १५,  
८०। १०, १४, १, १६८४  
बृहत्सुरतिः ३, २६, २; १७५४

बृहत्स्पतिः [ देवता ] अथ० १९, ४, ४;  
२२१२। २, २९, १; २१४९। ३, २१, ८,  
२३६२

ब्रह्मः ३, ७, ५; ४९४  
ब्रह्मन्-ह्मा २, १, २; ३७०। २, १, ३;  
३७१। ४, ९, ४, ७१५। ७, ५, ११४६।  
४, ४, ६, १८१८। वा० य० २८, २८,  
२०९२

ब्रह्मणस्कविः ६, १६, ३०, १०७१  
ब्रह्मणस्पतिः २, १, ३; ३७१

" [ देवता ] ७, ४१, १, २४३७।  
अथ० ४, ४, ६, २१६२

भ्रगः त्वम् २, १, ७, ३७५। ६, १३, २,  
१०१३। वा० य० २८, ३३; २१०४।

[ देवता ] ऋ० ७, ४१, १; २४३७  
भद्रः १, ६७, २, १४५। १०, ३, ३; १५०१

भद्रम् ४, १०, १, ७२०  
भद्रशोचिः ५, ४, ७, ७९६। ७, १४, २,  
११७५। ८, ७, ३; १४११। १०, ४, ९;  
१५१७

भद्रमानः सुमन्मभिः ३, २, २; १७३८  
भद्रमाने [ उपासानक्ते ] १, १४२, ७;  
१९२४। ३, ४, ६, १९५८

भरतम्-त्-तः ( द्वि० ) १, ९६, ३, १८८१

दै० [ अग्निः ] ३३

भरतस्य अग्निः ७, ८, ४; ११५२  
भरद्वाजे समिधान. ६, ४८, ७; १०९६

भर्वन् पुरुषिण पृथूनि ६, ६, २, ९८७  
भाः १, ४५, ८, १०७। ४, ५, १, १७५८

भाक्कजीकः १, ४४, ३, ८८। ३, १, १२,  
१४; ४५८, ४६०

भाक्कजीकः समिधा १०, १५, २, १५५०  
भाजयुः २, १, ४, ३७२

भाति बृहता ज्योतिषा ५, २, ९, ७७५  
भानु ३, २२, २, ६२४। ५, १६, १,  
८७१। ७, ४, १, ११३४

भानवः अस्यः वेषाः अजराः १, १४३, ३  
३२०

भारती [ देवता ] पश्य ' तिस्रः देव्यः '  
१, १४२, ९, १९२६। अथ० ५, २७, ९;  
२०८०

भारती २, ७, १, ४४१। २, ७, ५; ४४५।  
६, १६ १९, ४५; १०६०, १०८६

भारती त्वम् २, १, ११, ३७९  
भासाकेतु १०, २०, ३; १५७३

भिषज्-क् वा य० २८, ९; २०९२।  
अथ० ५, २९, १; २३०५

भीमः १, ७०, ११; १८४। ६, ६, ५;  
९९०। १, ९५, ७, १८७४

भीमः [ वनस्पतिः ] वा० य० २१, ३९,  
२०५८

भुजम् १, ६५, ५, १२८  
भुरग्युः १, ६८, १; १५४। १०, ४६, ७;  
१६०७

भुवनस्य गर्भः १०, ४५, ६; १५२४  
भूमा देवानाम् २, ४, २, ४१७

भूरिः १०, ४६, ३; १६०३  
भूरिजन्मा १०, ५, १, १५१३

भूरिषाणिः अथ० ५, २७, १, २०७२  
भूर्जयन् १०, ४६, ५; १६०५

भूर्णिः १, ६६, २; १३५। ३, ३, ५; १७४६  
भूषन् ३, २५, २; ५३३

भेषजस्य कर्ता अथ० ५, २९, १, २३०५  
भृगवान् ४, ७, ४; ६९६

भृमिः १, ३१, १६; ६५

भेषजः वा० य० २८, ३४, २१०५  
भोजनः विश्वस्य १, ४४, ५; ९०

भ्राजमानः ९, ५, १०; १९९५। १०, ८८,  
१६; २४१२

भ्राता ८, ४३, १६, १३२५  
" [ वरुणः ] ४, १, २, २४४९

मंहिष्ठ ८, १०३, ८, १२६४

मघवन्-घवा १, ५८, ९; ११८८।  
१, १२७, ११; २८२। १, १४६, ५;  
३४२। २, ६, ४; ४३६। ५, १६, ३,  
८७३। ६, १५, १५, १०३७। ८, १०३, ९,  
१२६५। वा० य० २८, ९; २०९२

मघोनी [ उपासानक्ते ] ७, २, ६, १९७९  
मतिः १, ९१, ८; १६५८

मदः ते शुग्मिनामः १, १२७, ९; २८०  
मधुजिह्व १, ४४, ६; ९१। १, ६०, ३,  
१२१। १, १३, ३, १९०८

मधुपृच-क २, १०, ६; ४५४  
मधुपनीकः १०, ११८, ४, १८५६

मधुवचाः ४, ६, ५, ६८५। ७, ७, ४,  
११४५

मधु हस्यः ५, ५, २, १९६५  
मनीषिणां प्रार्थणः १० ४५, ५; १५२३

मनुहितः ८, १९, २१, २४; १२४४,  
१२४७। ३, २, १५, १७४१। १, १३, ४;  
१२०९

मनोता प्रथमः २, ९, ४, ४०६। ६, १, १,  
९३९

मन्द्रः १, २६, ७, ३४। १, ३६, ५;  
७२। १, १४१, १२; ३१६। १, १४४, ७,  
३३२। ३, १, १७; ४६३। ३, १०, ७,  
५१५। ३, १४, १; ५८१। ४, ६, २, ५;  
६८३, ६८६। ४, ९, ३, ७१४। ५, ११, ३;  
८४४। ५, १७, २, ८७७। ६, १, १६;  
९४४। ६, १०, १, ९२३। ७, ७, २, ४,  
११४३, ११४५। ७, ८, २, ११५०।  
७, ९, १-२, ११५५-५६। ७, १०, ५;  
११६५। ८, १०३, ६; १२६२।  
८, ४३, ३१; १३४०। ८, ४४, ६;

१३४८।८,६०,३; १३९१।८,७४,७;  
 १४४८।१०,६,४, १५२३।१०, १२, २;  
 १५५०।१०, ४६, ४, ८; १६०४,  
 १६०८।३, २६, ४, १७३०।३, २, १५;  
 १७४१  
 मन्द्रच्छि ४, ११, ५, ७३२।५, २५, २,  
 ९१२।१, १४२, ८, १२, २५  
 मन्द्रनरः ३, ७, ९; ४९८  
 मन्द्रतम ५, २२, १, ८९९।६, ११, २,  
 ११०१। ६, ४, ७, ९७७।८, ७०, ११,  
 १४१९  
 मन्घाना १०, २, २, १४९३  
 मन्मनि (सप्तमी) १०, १२, ८, १५५६  
 मन्मसाधनः-वेः १, ९६, ६, १८८४  
 मन्यु १०, ८७, १३, १८४०। वा० य०  
 २१, ३९; २०५८  
 मयोभू. [ तिस्रः देव्यः ] १, १३, ९,  
 १९१४। ५, ५, ८, १९१४  
 मरुत. [देवता] १, १९, १-९; २४३८-  
 २४४६। ८, १०३, १४; २४४७  
 मरुत्वान् [इन्द्रः] १, १४२, १२; १९२९  
 मरुत्सखः ८, १०३, १४; २४४७  
 मर्त्यजेन्यः २, १०, १; ४०९  
 मर्य. १, ७७, ३, २३६  
 मर्यश्री. २, १०, ५, ४१३  
 महत्-हान् १, २७, ११; ४८। १, ३६, ९,  
 ७६। १, ३६, १२, ७२। १, ९४, ५;  
 २६०। १, १४६, २, ३३९। ३, १, ११-१९,  
 ४५७-६५। ३, ६, ४, ४८३। ४, ७, ७;  
 ७९९। ४, ८, २; ७०५। ४, ९, १,  
 ७१२। ५, १, २, ७५६। ६, ४८, ३,  
 १०९२। ८, ६०, ६, १९; १३९४,  
 १४०७। १०, ४, २, १५०७। १०, ४६, ५,  
 १६०५। १०, ७९, १; १६३७।  
 ३, २६, ३, १७२९। १, ९५, ४; १८७१  
 महयन् छावाष्टयित्री भूरितसा-  
 ३, ३, ११; १७५२  
 महयमानः सधस्थानि ३, २५, ५, ५३६  
 महत्-महे (चतुर्थी) १, १२७, १०, २८१।  
 १, १४६, ५; ३४२। १, १४२, १, ३५३।

६, १, १०; ९४८। ७, १७, ७; १२१०  
 महाम् अनीकम् ४, ५, ९; १७६६  
 महाम् आहावम् ६, ७, २; १७७४  
 महागय ९, ६६, २०; साम. २, ७, १, १२  
 महि ३, ७, ४; ४९३। ४, ५, ९; १७६६  
 महिन्तमः १०, ११५, ६; १६७१  
 महिम्ना यः उर्वी परिभूव  
 १०, ८८, १४; २४१०  
 महिरत्नः १, १४१, १०; ३१४  
 महिवर्षः अस्य ६, ३, ४; ९६६  
 महिञ्जत १, ४५, ३; १०२। १०, ११५, ३,  
 १६६८  
 महिषः १०, १४०, ६; १६८९।  
 १, ९५, ९; १८७६  
 मही [ देवता ] पश्य ' देव्यः तिस्रः '।  
 मही [देवी द्वारः] १, १४२, ६, १९२३  
 मही [ उषासानक्तं ] ७, २, ६, १९७९।  
 ९, ५, ६, १९८६  
 मङ्गा विश्वानि भुवना जजान २, ३५, २;  
 २४२३  
 मातरिश्वा ३, २६, २, १७५४। १ ९६, ४;  
 १८८२  
 मातरिश्वा यत् अमिमीत मातरि ३, २९,  
 ११, ५६८  
 मातरिश्वने प्रथमः १, ३१, ३; ५२  
 माता मानुषाणां सवमित् ६, १, ५, ९४३  
 मातृषु शश्वतीषु वने आसन् ४, ७, ६,  
 ६९८  
 मानुषः १, ४४, १०; ९५  
 मानुषाणां भरतिः ७, १०, ३; ११६३  
 मार्जाल्य ५, १, ८; ७६२  
 मितहुः ४, ६, ५; ६८६। ७, ७, १; ११४२  
 मित्रः [ देवता ] अथ० ३, २१, ८, २३६२  
 मित्रः ३, ५, ३, ९; ४७२, ४७८। ५, ३, १;  
 ७७९। ५, ९, ६, ८३३। ७, ९, ३;  
 ११५७। १०, ७९, ७, १६४३। ६, ८, ३;  
 १७८२। १०, ८७, १; १८२८  
 मित्रः अद्भुतः १, ९४, १३, २६८। ६, ८, ३;  
 १७८२

मित्रः त्वम् ७, १२, ३; ११७३  
 मित्रः त्वं दस्मः ईक्ष्यः २, १, ४; ३७२  
 मित्रः त्वया शाश्वते १, १४१, ९; ३१३  
 मित्रः प्रिय. १, ७५, ४; २२७  
 मित्रः मर्तेषु १, ६७, १; १४४  
 मित्रः शाला १०, २०, २; १५७२  
 मित्रः समिद्धः भवति ३, ५, ४; ४७३  
 मित्रमहः १, ४४, १२; ९७८, १९, २५;  
 १२४८। ८, ४४, १४, १३५६। १०,  
 ११०, १, २००३। वा० य० २९, २५,  
 २११७  
 मित्रमहस-हाः १, ५८, ८; ११७। २,  
 १, ५, ३७३। ६, २, ११, ९६२। ६,  
 ३, ६; ९६८। ६, १४, ६, ९६२। ८,  
 ६०, ७; १३९५। ७, ५, ६; १७९९।  
 ४, ४, १५; १८२७  
 मित्रावरुणौ [ देवता ] १, ३५, १, २४४८।  
 ७, ४१, १, २४३७  
 मित्रियः ८, १९, ८; १२३१  
 मिमाना यशम् [ देव्यौ होतारौ ]  
 १०, ११०, ७, २०१४  
 मिषेधः १०, ७०, २; १९९३  
 मिषेध्यः १, २६, १; २८। १, ३६, ९,  
 ७६। १; ४४, ५; ९०  
 मीढ्वान् १, २७, २; ३९९। २, ८, १; ३९७।  
 ३, १६, ३; ५९६। ४, १५, ५, ७५३।  
 ७, १५, १; ११७७। ७, १६, ३; ११९४।  
 ८, १०२, १५; १४७७। ४, ५, १; १७५८।  
 १०, १८८, २, १८६४। वा० य० २८, ५;  
 २०८८  
 मुख्यमानः निरेणसः अथ० १२, २, १२;  
 २२३८  
 मुहुर्गीः १, १२८, ३; २८५  
 मूर्धा दिवः ६, ७, १, १७७३। १, ५९, २;  
 १७१८  
 मूर्धन् भुवनस्य अतिष्ठाः १०, ८८, ५;  
 २४०१  
 मूर्धा भुव. अग्निः नक्तं भवति १०, ८८, ६;  
 २४०२

सूची रथीणाम् ८, ७५, ४, १३७६  
 सृगः सईम् १, १४५, ५; ३३७  
 सृज्यमानः नृभिः १०, ६९, ७, १६३१  
 सृष्टयते न प्रथमं ना परं वचः १, १४५, २,  
 ३३४  
 सृळयत्तमः १, ९४, १४; २६२  
 मेधाकारः १०, ९१, ८; १६५८  
 मेधिरः १, ३१, २; ५१ । १, १२७, ७,  
 २७८ । ३, १, ३, ४४९, ३, २१, ४, ६२१ ।  
 १, १४२, ११; १९२८  
 मेध्यः ५, १, १२; ७६६  
 युधयः ८, ६०, ३, १३९१  
 यजत्-न् ५, ८, १, ८२१  
 यजन् यज्ञैः वा०य० २९, २७, २११९  
 यजन्तौ [ दैव्यौ होतारौ ] देवान्  
 २, ३, ७, १९४८  
 यजतः ४, १, १, ६३१ । ७, २, २, १९७५  
 यजत रथीणाम् ६, १, ८; ९४६  
 यजत्रः १, ७६, ४, २३२ । १, १८९, ३, ७;  
 ३६३-३६७ । ३, १४, २, ५८२ । ३, २२, २;  
 ६२४ । ६, १२, ७, १००७ । ७, १४, २;  
 ११७५ । १०, ११, ८; १५४७ ।  
 १०, ४६, ९-१०, १६०९-१०  
 यजिष्ठः १, ३६, १०; ७७ । १, ४४, ५;  
 ९० । १, ५८, ७; ११६ । १, ७७, १;  
 २३४ । १, १२८, १; २८३ । १, १४९, ४,  
 ३५६ । २, ६, ६; ४३८ । ३, १०, ७;  
 ५१५ । ३, १३, १; ५७४ । ४, १, ४,  
 ४, ११९; ६०५ । ४, २, १; ६४७ ।  
 ४, ७, १, ५; ६९३-६९७ । ४, ८, १;  
 ७०४ । ५, १४, २; ८६१ । ७, १५, ६;  
 ११८२ । १९, ३, २१; १२२६, १२४४ ।  
 ८, ६०, १, ३; १३८९, १३९१ । १०, २, ५,  
 १४९६ । १०, ६, ४; १५२३ । १०, ४६, ८,  
 १६०८ । १०, ११८, ९; १८६१  
 यजिष्ठः देवानां उत मर्यानाम्  
 ६, १५, १३; १०३५  
 यजीयान् २, ९, ४; ४०६ । ३, १९, १;  
 ६१० । ४, ६, १-२; ६८१-८३ ।

५, १, ५-६; ७५२-६० । ५, ३, ५, ७८२ ।  
 ६, १, २, ६; ९४०, ९४४ । १०, १२, २;  
 १५५० । १०, ४३, १-२; १६१६-१७ ।  
 ३, ४, ३; १९५५ । वा०य० २९, २८, ३४,  
 २१२०, २१२६  
 यज्ञः ७, १६, २, ११९३ । १०, ४६, ४;  
 १६०४ । १०, ५३, ३, १६१८ ।  
 १, १८८, २; १९३२ । १०, ८८, ८,  
 २४०४  
 यज्ञः सः १०, २, ६, १५७६  
 यज्ञ तन्वानः ३, ३, ६; १७४७  
 यज्ञ मिमाना [ दैव्यौ होतारौ ]  
 १०, ११०, ७, २०१४  
 यज्ञ विशिष्टुः २, १, १०; ३७८  
 यज्ञस्य केतुः ३, ११, ३; ५२० । ३, २९, ५;  
 ५६२ । ५, ११, २, ८४३ । ६, २, ३;  
 ९५४ । १०, १२२, ४; १६७८ ।  
 ६, ७, २; १७७४ । १, ९६, ६, १८८४  
 यज्ञस्य यज्ञस्य केतुः १०, १, ६, १४८९  
 यज्ञस्य साधनः ८, २३, ९, १२७८  
 यज्ञानां केतु ८, ४४, १०, १३५२ ।  
 ३, ३, ३; १७४४  
 यज्ञानां नाभिः ६, ७, २, १७७४  
 यज्ञानां पिता ३, ३, ४; १७४५  
 यज्ञीनीः १, १५, १२; २३  
 यज्ञवन्धुः ४, १, २; ६३५  
 यज्ञवृध् अथ० ४, २३, ३, २३३२  
 यज्ञसाधः १, १२८, २; २८४ । १, ९६, ३;  
 १८८१  
 यज्ञसाधन. १, १४५, ३, ३३५ ।  
 ३, २७, २, ८, ५३८, ५४४  
 यज्ञसाह यज्ञसाह १०, २, ७, १५७७  
 यज्ञियः ३, १, २१; ४६७ । ४, १५, १;  
 ७४९ । ५, १२, १, ८४८ । ६, १६, ४;  
 १०४५ । ८, १०३, ११; १२६७ ।  
 ८, ३९, ७; १३०६ । ८, ७५, ३; १३७५ ।  
 १०, २१, १; १५४० । ३, २, १३;  
 १७३९ । १, १४२, ३; १९२०  
 यज्ञियः प्रथमः ८, २३, १८; १२८७  
 यज्ञिये [ उवासानक्ते ] ७, २, ६; १९७९

यजन्-जवा ३, १४, १, ५८१ । ६, १५,  
 १४; १०३६  
 यत् ( यन् ) वृतेव बहुभिः वसव्यैः  
 ६, १, ३, ९४१  
 यतमः यतमानः सूर्यस्य रश्मिभिः  
 ५, ४, ४, ७९३  
 यति. मतीनाम् ७, १३, १; १८१०  
 यन्ता १०, ४६, १; १६०१  
 यन्ता धीनाम् ३, ३, ८; १७४९  
 यन्ता यज्ञानाम् ३, १३, ३, ५७६  
 यन्तुरः ३, २७, ११; ५४७ । ८, १९, २;  
 १२२५  
 यमः १, ६६, ८, १४१  
 यम रथानाम् ८, १०३, १० १२६६  
 यमति जन्मनी उभेय १, १४१, ११.  
 ३१५  
 यविष्ठः १, २२, १० २५ । १, २६, २,  
 २९ । १, ४४, ४; ८९ । १, १४१, ४,  
 १०, ३०८, ३१४ । १, १४७, २, ३४४ ।  
 १, १८९, ४, ३६४ । २, ६, ६; ४३८ ।  
 २, ७, १; ४४१ । ३, १५, ३, ५९० ।  
 ३, १९, ४, ६१३ । ४, २, १०, १३  
 ६५६, ६५९ । ४, २, ४, ७३६-३७ ।  
 ५, १, १०, ७६४ । ५, ३, ११, ७८८ ।  
 ६, ५, १, ९७९ । ६, ६, २, ९८७ ।  
 ६, १५, १४; १०३६ । ६, ४८, ८, १०९७ ।  
 ७, १, ३; ११०२ । ७, ३, ५; ११२८ ।  
 ७, ४, २, ११३५ । ७, ७, ३, ११४४ ।  
 ७, १०, ५, ११६५ । ७, १२, १; ११७१ ।  
 ८, २३, २८; १२९८ । ८, ८४, ३,  
 १४५६ । १०, १, ७; १४९१ । १०, २, १;  
 १४९२ । १०, ४, २; १५०७ ।  
 १०, ४५, ९, १५९७ । १०, ६२, १०;  
 १६३४ । १०, ८०, ७; १६५० ।  
 ४, ४, ६, ११; १८१८, १८२३ ।  
 १०, ८७, ८, १८३५ । अथ० ५, २९, ४,  
 २३०८  
 यविष्ठः भुजाम् १०, २०, २, १५७७  
 यविष्ठ्या १, ३६, ६, १५; ७३, ८० ।  
 १, ४४, ६, ९१ । ३, १, ६, ५०५ ।



३, २८, २, ५५३ । ५, ८, ६, ८२६ ।  
 ५, २६, ७, ९२६ । ६, १६, ११, १०५२ ।  
 ६, ४८, ७, १०९६ । ७, १६, १०, १२०१ ।  
 ८, ७५, ३, १३७५ । ८, ६०, ४, ८, १३९२, १३९६ ।  
 ८, १०२, ३, २०, १४६५, १४८२ ।  
 अथ० १९, ६४, ३, २३५३  
 यशस्-शाः १, ६०, १, ११९ । ८, २३, ३०, १२९९ ।  
 अथ० ३, २१, ५, २३५९ ।  
 [इन्द्र] वा० य० २०, ४४, २०२२  
 यशस्तम. २, ८, १, ३९७ । ७, १६, ४, ११९५  
 यशस्तम., विश्वेषां होतृणाम्  
 ८, १०२, १०, १४७२  
 यज्ञः १, ३६, १, ६८ । ३, १, १२, ४५८ ।  
 ३, ५, ५, ९, ४७४, ४७८ । ३, २८, ४, ५५५ ।  
 ४, ७, ११, ७०३ । ७, ८, २, ११५० ।  
 १०, ११, १, १५४० । ३, २६, ९, १७३५ ।  
 ३, ३, ८, १७४९ । ४, ५, २, १७५९ ।  
 ७, ६, ५, १८०७ । १०, ११०, ३, २००५ ।  
 वा० य० २९, २८, २२२०  
 यज्ञी [उपासानक्त] १, १४२, ७, १९२४ ।  
 ५, ५, ६, १९६२  
 यातयज्जनः ८, १०२, १२, १४७४  
 यालुमान् अथ० १, ७, ४, २२८७  
 युक्त अथ० ५, २९, १, २३०५  
 युजानः नमः १, ६५, १, १२४  
 युवा १, १२, ६, १५ । १, १४४, ४, ३२९ ।  
 ३, २३, १, ६२७ । ४, १, १२, ६३८ ।  
 ५, १, ६, ७६० । ६, ५, १, ९७९ ।  
 ७, १५, २, ११७८ । ८, ४४, २६, १३६८ ।  
 ८, १०२, १, १४३३ । १०, ४६, ३, १६०३  
 युवा आ भूत् सुहु जुजुवोः २, ४, ५, ४२०  
 योषणे दिव्ये [उपासानक्ते] ७, २, ६, १९७९ ।  
 १०, ११०, ६, २००८  
 संसृजिह्वः ४, १, ८, ६३४  
 रक्षिता अमृतस्य ६, ७, ७, १७७९

रक्षोहा [अग्निदेवता] ४, ४, (१-१५);  
 १८१३-१८२७ । १०, ८७, (१-२५),  
 १८२८-५२ । १०, ११८, (१-९), १८५३-  
 ६१ । १०, १६२, (१-६), २४१६-२४२१  
 रक्षोहा अथ० १, २८, १, २२९३ ।  
 ४, २३, ३, २३३२  
 रघुपत्न्यन्-त्वा १०, ६, ४, १५२३  
 रघुयत्-न् ४, ५, ९, १७६६  
 रघुष्य (स्य) द्व ३, २६, २, १७५४  
 रघुष्यद् गुहा ४, ५, ९, १७६६  
 रज. आततन्वान् शुक्रैः अङ्गैः ३, १, ५, ४५१  
 रजसा विमान ३, २६, ७, १७५६  
 रणवः १, ६५, ५, १२८ । १, ६६, ३, १३६ ।  
 १, १४४, ७, ३३२ । २, ४, ६, ४२१ ।  
 ४, ७, ५, ६९७ । ६, २, ७, ९५८ ।  
 ३, २६, १, १७५३  
 रणवः कुत्राचिद् ६, ३, ३, ९६५  
 रणव दुरोगे १, ६९, ४५, १६७-६८  
 रणवः सदा ४, १, ८, ६३४  
 रणव संदश ६, १६, ३७, १०७८ ।  
 ७, १, २१, ११२०  
 रत्नधा ७, १६, ६, ११९७  
 रत्नधातमः १, १, १, १ । ५, ८, ३, ८२३  
 रत्ना दधान दमेदमे सप्त ५, १, ५, ७५९  
 रथः ३, ११, ५, ५२२  
 रथमा ८, ७४, १०, १४५१  
 रथयुः १०, ७, ५, २००१  
 रथिरः ७, ७, ४, ११४५ । ३, २६, १, १७५३  
 रथीः ३, २, ८, १७३४ । ३, ३, ६, १७४७  
 रथीः अश्वराणाम् १, ४४, २, ८७ ।  
 ८, ११, २, १२१५  
 रथीः क्रवोः ४, १०, २, ७२१  
 रथीः यज्ञाणाम् ८, ४४, २७, १३६९  
 " वार्याणाम् ६, ५, ३, ९८१  
 रथ्य ६, ७, २, १७७४  
 रभस्वान् १०, ३, ७, १५०५

रथि ९, ५, ३, १९८३  
 रथिः इव श्रवस्यते १, १२८, १, २८३  
 रथिः त्वम् २, १, १२, ३८०  
 रथिः महिषी त्वत् उदीरते ५, २५, ७, ९१७  
 रथीणां दाशत् १, ७०, ५, १७८  
 " धरुणः १७३, ४, २०८ ।  
 १०, ५, १, १५१३ । १०, ४५, ५, १५९३  
 रथीणाम् पतिः १, ६०, ५, १२३ ।  
 १, ६८, ७, १६० । ३, ७, ३, ४९२ ।  
 ८, ७५, ४, १३७६  
 रथीणाम् रथ्यः ७, ५, ५, १७९८  
 रथीणाम् रथिपतिः १, ७२, १, १२५ ।  
 २, ९, ४, ४०६ ।  
 रथीणाम् रथिवित् ३, ७, ३, ४९२  
 रथीणाम् राजा ८, १९, ८, १२३१  
 रथीणाम् सदनम् (नूच पुरा च) ६, ७, २, १७७४ ।  
 (१, ९६, ७, १८८५)  
 रथिपति १, ६०, ४, १२२  
 रथिवान् ६, ५, ७, ९८५  
 रथिवित् २, १, ३, ३७१  
 रथिवित् रथीणाम् ३, ७, ३, ४९२  
 रराण ३, १, २२, ४६८ । ४, २, १०, ६५६ ।  
 ४, १, ५, २४५२  
 रराणः [त्वष्टा] ३, ४, ९, १९६१ ।  
 ७, २, ९, १९६१  
 रराणः वसु [सविता] अथ० ७, ११५, २, २२०२  
 रवः वृषभस्य इव ते १, ९४, १०, २६५  
 रशनां बिभ्रन् वा० य० २८, ३३, २१०४  
 राजत् (न्) राजन्तम् (द्वि०) १, १, ८, ८ ।  
 १, ४५, ४, १०३ । ६, १, ८, १३३ ।  
 ९४६, ९५१ । ८, १९, २२, १२४५ ।  
 १०, १, ६, १४९० । १०, ३, १, १४९९ ।  
 १०, ४, १, १५०६ । ३, २६, ४, १७३० ।  
 ६, ७, ३, १७७५ । ६, ८, ५, १७८४ ।  
 १०, ८७, २१, १८४८ । [वनस्पतिः]  
 वा० य० २१, ३९, २०५८  
 राजसि त्वं दिव्यस्य १, १४४, ६, ३३१

राजन् (राजा) २, १, ८, ३७६६, १२, २;  
१००७ । ६, १५, १३, १०३५।७, ८, १;  
११४९।१०, १२, ५, १५५३।१०, ४५, ५;  
१५९३ । १०, ८७, ३, १८३०  
राजन् अध्वरस्य ४, ३, १, साम० १, १,  
७, ७  
राजा [ वरुणः ] ४, १, २, २४४९  
राजा [सोम] अथ० २, ३६, ३; २३४०  
राजा कृष्टीनां मानुषीणाम् १, ५९, ५  
१७२१  
राजा पर्वतेषु ओषधीषु मानुषीषु वा  
१, ५९, ३; १७१९  
राजा भुवनानाम् १, ९८, १; १७२४  
राजा मर्त्यानाम् ३, १, १८, ४६४  
राट् ( राट् ) बर्हिष. ६, १२, १, १००६  
रातहव्यः नमसा ४, ७, ७, ६९९  
रातिः वामस्य १०, १४०, ५; १६८८  
रात्री [ देवता ] १, ३५, १, २४४८  
रात्र्याश्चिदन्धः अति पश्यसि १, ९४, ७;  
२६२  
रायः इंशिषे २, १, १०, ३७८  
रायः पतिः १, १४९, १; ३५३  
रायः शुभ्र. १, ९६, ६, १८८४  
राष्टभृत अथ० ७, १०९(११४), ७;  
२३७० । ६, ११८, २, २३८२  
रिप्रवाहः १०, १६, ९; १५३५  
रिशादस् ( दा ) १, ७७, ४, २३७  
रिशादमः [ मरुतः ] १, १९, ५; २४४२  
रीतिः अपाम् ६, १३, १; १०१२  
रुक्मः १०, ४५, ८; १५१६ । १, ९६, ५;  
१८८३  
रुक्मी १, ६६, ६; १३९  
रुक्षः ६, ३, ७, ९६९  
रुचानः दुर्मर्षम् १०, ४५, ८, १५९६  
रुचानः सुरुचा ३, १५, ६; ५९३  
रुद्रः ८, ७२, ३; १४२६ । ३, २, ५,  
१७३१ । ४, ३, १; साम० १, १, ७, ७;  
अथ० १९, ५५, ५; २२७३  
रुद्रः [ देवता ] ७, ४१, १; २४३७

रुद्रः एवं असुरः महः दिवः २, १, ६, ३७४  
रुक्कान् १, १४९, ३; ३५५  
रुक्चानः भानुना ज्योतिषा ३, २६, ३,  
१७२९  
रुशत् ( न् ) ४, ७, ९; ७०१ । ६, १, ३,  
९४१ । ६, ६, १, ९८६ । ८, ७२, ५;  
१४२८ । १०, १, ५; १४८९  
रुशद् वसान. ४, ५, १५; १७७२  
रुशदूर्मिः १, ५८, ४; ११३  
रूप स्वेष कृणुते १, ९५, ८, १८७५  
रूप न ददशे एकस्य [ वायु देवता ]  
१, १६४, ४४; २४५६  
रूपाणि बिभ्रत् पृथक् वा०य० २८, ३२,  
२१०३  
रूपे ( मसमी ) ४, ११, १, ७२८  
रूरः अथ० १, २५, ४; २१७८  
रेजमानः १०, ६, ५; १५२४  
रेत दधत् १, २२८, ३; २८५  
रेभत् ८, ४४, २०; १३६२  
रेरिहत् क्षामा १०, ४५, ४, १५९२  
रेवत् ३, २३, २, ६२८  
रोचनस्य. ( स्याम् ) ६, ६, २; ९८७ ।  
३, २, १४; १७४०  
रोचनानां उत्तमः ३, ५, १०, ४७९  
रोचमान ७, २, ९, ११३२ । १०, ३, ५,  
१५०३ । १०, ११८, ४; १८५६  
रोदसी अधीवास वावसाने १०, ५, ४,  
१५१६  
रोदसी भा अष्टगाः जायमान ३, ६, २,  
४८१  
रोदस्यो. जनिता १, ९६, ४; १८८२  
रोदस्योः राज्यम् ७, ६, २; १८०४  
रोरुचानः ४, १, ७; ७३३  
रोहिदश्वः ४, १, ८; ६३४ । ८, ४३, १६;  
१३२५  
रौद्रः १०, ३, १, १४९९  
वज्रः [ देवता ] अथ० १९, ६६, १, २३५०  
वज्रबाहु [ इन्द्रः ] वा०य० २०, ३६, ३८,  
२०१४, २०१६

वज्रहस्त वा०य० २८, ३; २०८६  
वत्स १, ७२, २; १९६ । १०, ८, २;  
१५३५  
वत्सः चरन् ८, ७२, ५; १४९८  
वत्सः पृथिवी धेनुः तस्याः अथ०  
४, ३९, २; २२८१  
वद्मा ६, ४, ४, ९७४ । ६, १३, ६;  
१०१७  
वध्वश्वः १०, ६९, १, १६२५  
वनर्गुः १, १४५, ५; ३३७  
वनर्षद् १०, ४६, ७, १६०७  
वनस्वति [ देवता ] १, १३, ११, १९१६ ।  
१, १४२, ११, १२२८ । १, १८८, १०;  
१९४० । २, ३, १०; १९५१ । ३, ४, १०;  
१९६२ । ५, ५, १०; १९७२ । ७, २, १०,  
१९६२ । ९, ५, १०; १९९० ।  
१०, ७०, १०; २००१ । १०, ११०, १०,  
२०१२ । वा० य० २०, ४५, ६६,  
२०२३, २०३५ । २१, २१, ३९;  
२०४६, २०५८ । २७, २१, २०७० ।  
२८, १०, ३३; २०९३, २१०४ ।  
२९, १०, ३५, २११५, २१२७ । ऋ० प्रैष  
११, २१३९ । अथ० ५, २७, ११,  
२०८२ । ५, १२, १०, २०१२  
वनस्पतीनां अधिपति अथ० ५, २४, २;  
२१६६  
वनस्पतीनां सूनु. ८, २३, २५, १२९४  
वनाम् ( द्वि० ) १०, ४६, ५, १६०५  
वना कायमानः ३, ९, २; ५०१  
वनानां गर्भः १, ७०, ३; १७६  
वनिता मधम् ३, १३, ३, ५७६  
वनिष्ट. ७, १०, २; ११६२  
वनेजा. ६, ३, ३; २६५ । १०, ७९, ७;  
१६४३ ।  
वनेवने मिश्रियागः ५, ११, ६, ८४७  
वन्धः १, ३१, १२, ६१ । २, ७, ४;  
४४४ । १०, ४, १; १५०६ । १०, ११०, ३;  
२००५  
वन्धः विश्वासु धीषु १, ७९, ७; २५०

वन्यः वा० य० २९, २८; २१२०  
 वन्यन् महिस्त्वना द, १२, ४, १००९ ।  
 द, १६, १०, १०६१  
 वपते संवत्सर एकः १, १६४, ४४;  
 २४५६  
 वपावान् द, १, ३, ९४१  
 वपावान् [इन्द्रः] वा० य० २०, ३७;  
 २०१५  
 वपु १, १४१, २; २९३  
 वपुष्टरा (रौ) [देव्यौ होतारौ] २, ३, ७,  
 १९४८  
 वपुष्यः ४, १, ८, १२; ६३४, ६३८ ।  
 ५, १, ९; ७६३  
 वयः त्वं उत्तमम् २, १, १२; ३८०  
 वय कृण्वानः स्वपै तन्त्रे ५, ४, ६,  
 ७९५  
 वयस्कृत् १०, ७, ७, १५३०  
 वयुनम् ३, ३, ४; १७४५  
 वयुनानि विद्वान् १, ७२, ७, २०१  
 वयुना व्यग्रवीत् मर्त्येभ्यः १, १४५, १,  
 ३३७  
 वयोधाः १, ७३, १, २०५ । ८, ७२, ४;  
 १४२७ । १०, ७, ७; १५३३ । वा० य०  
 २८, २४-३४, २०९५-२१०५  
 वयोधा [स्वष्टा] २, ३, ९; १९५०  
 वयोवृधा [उषासानक्ते] ५, ५, ६; १९६९  
 वरुणः [देवता] ४, १, २, ५, २४४९,  
 २४५२ । १, ३, ५, १; २४४८ । ७, ४१, १;  
 २४३७ अथ० ३, २१, ८, २३६२  
 वरुणः २, १, ४, ३७२ । ३, ५, ४, ४७३ ।  
 ५, ३, १, ७७९ । १०, २२, ८, १५५६  
 वा० य० २८, ३४; २१०५  
 वरुणः त्वम् ७, १३, ३; १८१२  
 वरुणः श्रुतव्रतः त्वया १, १४१, ९, ३१३  
 वरुणस्य पुत्रः अथ० १, २५, ३, २२७७  
 वरूथ्यः ५, २४, १; ९०७  
 वरेण्यः १, २६, २-३, ७; २९-३०, ३४ ।  
 १, ५८, ६; ११५ । १, ६०, ४; १२२ ।  
 २, ७, ६; ४४६ । ३, २७, ९-१०, ५४५-४६ ।

५, ८, १, ८२१ । ५, १३, ४; ८५७ ।  
 ५, २२, ३; ९०१ । ५, २५, ३, ९१३ ।  
 ८, १०२, १८, १४८० । १०, ९१, १;  
 १६५१ । १०, १२२, ५; १६७९ ।  
 वा० य० २१, १२, २०३७ । २८, २४;  
 २०९५  
 वरेण्यः होता १, २६, २, २९  
 वरेण्य क्रतु ८, ४३, १२; १३२१  
 वर्योधाः अथ० ३, २१, ५; २३५६  
 वर्तनिः ३, ७, २; ४९१  
 वर्धनः १०, ९१, १२; १६६२  
 वर्धनः आर्यस्य ८, १०३, १; १२५७  
 वर्धमान तन्वा ६, ९, ४; १७९०  
 वर्धमानः स्वे दमे १, १, ८, ८  
 वर्षः अस्य महि भसत् ६, ३, ४, ९६६  
 वर्षिष्ठः ५, ७, १, ८११  
 वशाक्तः ८, ४३, ११; १३२०; अथर्व०  
 ३, २१, ६, २३६०  
 वशिः वा० य० २८, ३३, २१०४  
 वशी अथ० ६, ३६, २, २१८२  
 वषट् कृतिं जुषाण. ७, १४, ३, ११७६  
 वसतिः ६, ३, ३, ९६५  
 वसवः अथ० ५, २७, ६, २०७७  
 वसव्यैः यन् बहुभिः ६, १, ३, ९४१  
 वसानः रुशत् ४, ५, १५, १७७२  
 वसानः वस्त्राणि पेशनानि १०, १, ६,  
 १४९०  
 वसान विद्युतम् २, ३५, ९, २४३०  
 वसिष्ठः २, ९, १, ४०३ । ७, १, ८; ११०७ ।  
 अथ० ६, ११९, १, २३८४  
 वसुः १, ३१, ३, ५२ । १, ४४, ३; ८८ ।  
 १, ४५, ९; १०८ । १, ६०, ४, १२२ ।  
 १, ७९, ५; २४८ । १, १२७, १, २७२ ।  
 १, १२८, ६; २८८ । १, १४३, ६; ३२३ ।  
 २, ७, १, ४४१ । ३, १५, ३; ५९० ।  
 ३, १८, २; ६०६ । ३, २१, ५, ६२२ ।  
 ४, १२, ६; ७३९ । ५, ३, १२; ७८९ ।  
 ५, ६, १-२; ८०१-२ । ५, २४, २, ९०८ ।  
 ५, २५, १; ९११ । ६, १, १२, ९५० ।

६, २, १; ९५२ । ६, १६, २४, १०६५ ।  
 ६, ४८, ९; १०९८ । ८, १९, १२, २६,  
 २८-२९, १२३५, १२४७, १२५१-५२ ।  
 ८, १०३, ४, १२-१३, १२६०,  
 १२६८-६९ । ८, २३, २८; १२९७ ।  
 ८, ४४, २४, ३०, १३६६, १३७२ ।  
 ८, ६०, ४; १३९२ । ८, ७९, ९, १३,  
 १४२७, १४२१ । १०, ७, २; १५२८ ।  
 १०, ८, ४, १५३७ । १०, ४५, ५; १५९३ ।  
 १०, ९१, १२; १६६२ । ४, ५, १५, १७७२ ।  
 वा० य० २७, १५; २०६४ । अथ०  
 १९, १५, २, २२७०  
 वसुः नेमानाम् ६, १६, १९, १०५९  
 वसुदानः अथ० १९, ५५, ३, २२७१  
 वसुदावन्-वा २, ६, ४; ४३६  
 २, ६, ४; ४३६  
 वसुधातमः वा० य० २७, १५; २०६४  
 वसुधातरः अथ० ५, २७, ६; २०७७  
 वसुधितिः १, १२८, ८, २९०  
 वसुपतिः २, १, ११, ३७२ । २, ६, ४;  
 ४३६ । ८, ४४, २४; १३९६  
 वसुविद् ८, २३, १६; १२८५; साम०  
 १, ६, १३, १  
 वसुवित्तमः १, ४५, ७, १०६ । ६, १६, ४१;  
 १०८२  
 वसुश्रवाः ५, २४, २, ९०८  
 वसुभिः इध्यमानः ५, ३, ८; ७८५  
 वसूनां भरति. विश्वेषाम् १, ५८, ७;  
 ११६  
 वसूनां ईशानः ७, ७, ७; ११४८  
 वसूनां ईशे १, १२७, ७, २७८ । ८, १,  
 ८; १४१६  
 वसूनां वसुः १, ९४, १३; २६८ ।  
 १०, ९१, ३; १६५३  
 वसूनां वसुपतिः ५, ४, १; ७९०  
 वसूनां संगमनः १, ९६, ६; १८८४  
 वसाम् राजा ५, २, ६; ७७२  
 वस्यः १, १४१, १२; ३१६  
 वस्यः आ प्रणेता २, ९, २, ४०४

बन्धाणि वसानः पेशानानि १०, १, ६।  
 १४९०  
 बन्धः १, १४३, ४; ३२१ । ५, १५, १;  
 ८६६  
 बहन् नमः १, ६५, १, १२४  
 बाह्विः १, ६०, १; ११९ । १, १२८, ४;  
 २८६ । ३, ११, ४; ५२१ । ७, ७, ५,  
 ११४६ । ७, ७, १२; १२०३ । ८, ४३,  
 २०; १३२९ । १०, ११, ६; १५४५।  
 अथ० ५, २, ७, २०७५ । १२, ३, ४७;  
 २२६०  
 बाह्विः आसा ६, ११, २, १००१ । ६, १६,  
 ९, १०५० । ७, १६, ९, १२०० ।  
 १०, ११५, ३; १६६८  
 बाह्विनमः ४, १४; २४५१  
 बाजः स्वम् २, १, १२; ३८०  
 बाजस्य ईशानः १, ७९, ४; २४६  
 बाजस्य पतिः १, १४५, १; ३३३  
 बाजस्य श्रुत्यस्य राजसि १, ३६, १२, ७९  
 बाजपतिः ४, १५, ३; ७५१  
 बाजश्रवस्-वाः ३, २६, ५; १७३१  
 बाजसातमः १, ७८, ३, २४१ । ५, १३,  
 ५; ८५८ । ५, २०, १; ८९१  
 बाजाः स्वद् उदीरते ५, २५, ७, ९१७  
 बाजिनं बहन् वा० य० २९, १; २१०६  
 बाजिन्तमः १०, ११५, ६; १६७१  
 बाजी २, १०, १, ४०९ । ३, २७, ३, ८;  
 ५३९, ५४४। ३, २९, ७, ५६४। ५, १४,  
 ७, ७५८, ७६१ । ८, ४३, २०, २५;  
 १३२९, १३३४ । ८, ८४, ८; १४६१ ।  
 १०, १२२, ४, ८; १६७८, १६८२ ।  
 ३, २, १४; १७४०। १०, ८७, १; १८२८।  
 १०, १८८, १; १८६३ । वा० य०  
 २९, १-२: २१०६-७  
 बाजी [हृन्] अथ० ५, २९, १०; २३१४  
 बाजी स्वां याति ६, २, २; ९५३  
 बाजी बाजेषु धीयते ३, २७, ८, ५४४  
 घातः [ वायु देवता ] ८, १८, ९, २४५७  
 घातचोदितः १, ५८, ५; ११४ ।

१, १४१, ७; ३११  
 वातजूनः १, ५८, ४; ११३ । १, ६५, ८;  
 १३१  
 वातस्वनः ८, १०२, ५, १४६७  
 वातस्य सर्गः अभवत्सरीमणि ३, २९,  
 ११, ५६८  
 वातोपभूतः १०, ९१, ७, १६५७  
 वाद्यश्वः १०, ६९, १२, ९; १६३६,  
 १६३३  
 वामः १०, १२२, १, १६७५  
 वायुः १०, ४६७, १६०७  
 वायुः [देवता] १०, १४२, १२, १९२९ ।  
 १, १६४, ४४, २४५६  
 वार्याणाम् ईशे ८, ७१, १३, १४२१  
 वावशानः १०, ५, ५, १५१७  
 वावृधानः ५, २, १२; ७७८ । ५, ३, १०,  
 १२; ७८७, ७८९ । ५, ८, ७; ८२७ ।  
 ५, २७, २, ९२९ । ७, ५, २, १७९५ ।  
 अथ० ५, २८, ४, २१७०  
 वावृधानः पर्वभिः १०, ७१, ७, १६४३  
 वावृधानः पुरोरुचा [हृन्] वा० य०  
 २०, ३६, २०१४  
 वावृधान प्रजापतेः तपसा वा० य०  
 २९, ११; २११६  
 वावृधानः ब्रह्मणा अथ० १, ८, ४; २२९२  
 वावृधानः वरेण ७, ५, २, १७९५  
 वावृधानौ दमेदमे सुष्टया [अग्निविष्णु]  
 अथ० ७, २९ (३०), २; २४५४  
 वाशीमान् १०, २०, ६; १५७६  
 विः ३, ५, ६, ४७५  
 विकसुकः अथ० १२, २, १४; २२४०  
 विगाहः ३, ३, ५; १७४६  
 विचक्षणः ३, ३, १०; १७५१  
 विचर्षणिः १, ३१, ६, ५५ । १, ७८, १;  
 २३९ । १, ७९, १२; २५५ । ६, २, १;  
 ९५२। ६, १६, २९, ३६, १०७०, १०७७।  
 ८, ४३, २; १३११। ३, २६, ८, १७३४  
 विचेत्ता २, १०, १-२; ४०९-१० ।  
 ४, ७, ३, ६९५ । ५, १७, ४; ८७९ ।

१०, ७९, ४; १६४० । ४, ५, २; १७५९  
 विजावन् १, ६९, ३; १६६ । १०, २, ५;  
 १४९६  
 वितपन् भरातिम् अथ० १२, २, ४५;  
 २२५८  
 विदथस्य प्रसाधन १०, ९१, ८; १६५८  
 विदथस्य साधनम् ३, ३, ३; १७४४  
 विदानः २, २, १, ४०३  
 विदिद्युतानः ६, १६, ३५; १०७६  
 विदुष्ट ४, ७, ८; ७०० । ६, १५, १०;  
 १०३२। ६, १६, ९; १०५०। ७, १६, ९;  
 १२०० । ८, ७५, २, १३७४ ।  
 १०, ७०, ७, २००३  
 विदुष्टौ [द्वैष्यौ होतारौ] २, ३, ७;  
 १९४८  
 विद्याना जिगाति अन्तः विश्वानि  
 जन्षि ७, ४, १। ११३४  
 विद्युदथः ३, १४, २, ५८१  
 विद्वान् १, १४५, ५; ३३७ । २, ६, ७;  
 ४३९। ३, २५, २; ५३१ । ३, २९, १६;  
 ५७३ । ३, १४, २; ५८२ । ३, १७, ३।  
 ६०२ । ४, २, ११, ६५७ । ४, ३, १६;  
 ६८१ । ४, ७, ८; ७०० । ५, १, ११;  
 ७६५ । ५, ४, ५; ७२४ । ७, १, २४;  
 ११२३। ७, ७, १; ११४२ । १०, १, ३;  
 १४८७। १०, २, १, ३; १४९२, १४९४।  
 १०, १, ४, १४९५। १०, ५, ५; १५१७।  
 १०, ७०, ९-१०, २०००-१ । ४, १, ४,  
 २४९१ । अथ० ५, २९, ५; २३०९ ।  
 ३, १, १, २१५२ । ३, २, १; २१५६  
 विद्वान् अन्तः अध्वन देवयानान्  
 १, ७२, ७; २०१  
 विद्वान् भारोधनं दिवः ४, ८, ४; ७०७  
 विद्वान् भास्विजया विश्वा १, ९४, ६, २६१  
 विद्वान् काश्यानि विश्वा ३, १, १७-१८;  
 ४६३-६४ । १०, २१, ५, १५८५  
 विद्वान् देवानां जन्म मर्तान् च  
 १, ७०, ६; १७९  
 विद्वान् जन्मानि ७, १०, २; ११६२

विद्वान् पितृयाण पन्थाम् अनु प्र  
 १०, २, ७; १४९८  
 विद्वान् यज्ञस्य १०, ५३, १; १६१६  
 विद्वान् वयुनानि १, ७२, ७; २०१  
 विद्वान् विश्वा वयुनानि १, १८९, १,  
 ३६१ । ३, ५, ६; ४७५ । ६, १५, १०;  
 १०३२ । १०, १२२, २, १६७६ ।  
 अथ० ४, ३९, १०; २२८३  
 विधर्ता २, १, ३, ३७१ । ७ ७, ५, ११४६  
 विपश्चित् ३, २७, २, ५३८ ।  
 विपश्चितां असुरः ३, ३४, १७४५  
 विपां ज्योतीषि बिभ्रत् ३, १०, ५, ५१३  
 विपोषाः १०, ४५, ५; १६०५  
 विप्रः १, १२७, १-२, २७२-७३ ।  
 १, १५०, ३; ३६० । ३, ५, १, ३, ४७०,  
 ४७२ । ३, २७, ८, ५४४ । ३, २९, ७,  
 ५६४ । ३, १३, ३; ५७६ । ३, १४, ५;  
 ५८५ । ४, ३, १६; ६८१ । ४, ८, ८;  
 ७१३ । ५, १, ७; ७६१ । ६, १३, ३,  
 १०१४ । ६, १५, ४, ७, १०२६, १०२९ ।  
 ८, ११, ६; १२१९ । ८, १९, १७, १२४० ।  
 ८, ३९, ९, १३०८ । ८, ४३, १; १३१० ।  
 ८, ४३, १४; १३२३ । ८, ४४, १०, २१,  
 १३५२, १३६३ । ८, ७१, ५; १४१३ ।  
 ३, २, १३, १७३९ । ३, २६, २, १७५४ ।  
 १०, ८७, २२, २४, १८४९, १८५१  
 विप्रवीरः १०, १८८, २; १८६४  
 विभाति अप्सु अन्तः २, ३५, ७-८;  
 २४२८-२९  
 विभाति सुसंष्टशा भानुना ७, ९, ४;  
 ११५८  
 विभानुः ८, १०२, २; १४६४  
 विभावसुः १, ४४, १०; ९५। ५, २५, २, ७;  
 ९१२, ९१७ । ८, ४३, ३२, १३४१ ।  
 ८, ४४, ६, १०, २४; १३४८, १३५२,  
 १३६६ । १०, १४०, १, १६८४ ।  
 ३, २६, २, १७२८ । १०, ११८, ४,  
 १८५६  
 विभावा १, ५८, ९; ११८ । १, ६६, २;  
 १३५ । १, ६९, ९; १७२ । १, १४८, ४;

३५१ । ४, १, ८, १२; ६३४, ६३८ ।  
 ५, १, ९; ७६३ । ५, ४, २; ७९१ । ६, ४, २,  
 ९७२ । ६, १०, १; ९९३ । ६, ११, ४  
 १००३ । १०, ६, १-२, १५२०-२१ ।  
 १०, ८, ४, १५३७ । १०, ९१, १,  
 १६५१ । १, ५९, ७, १७२३ । ३, ३, ९;  
 १७५० । १०, ८८, ५, २४०३  
 विभूतरातिः ८, १९, २, १२२५  
 विभूषन् उभयान् ६, १५, ९, १०३१  
 विभ्रः विशोविशे ४, ७, १, ६९३  
 विभ्रवा १०, ३, ६, १५०४  
 विमान. रजसः ३, २६, ७, १७५६  
 विमानम् ३, ३, ४, १७४५  
 विमृष्ट. १०, ८८, १६; २४१२  
 विरप्ती शोचिषा १०, ११५, ३; १६६८  
 विराट् अथ० ७, ८४, १; १८६६  
 विरूपः ३, १, १३; ४५९  
 विरूपे [उषासानक्ते] ३, ४, ६, १९५८  
 विरोचमानः १, ९५, २; १८६९  
 विवस्वान् ७, ९, ३; ११५७ । साम०  
 १, १, १, १०  
 विविचि. ५, ८, ३; ८२३  
 विविद्वान् ४, ५, ३, १७६०  
 विशां ह्येक्य. ८, २३, २०; १२९९  
 विशां केतुः १०, १५६, ५; १७०७  
 विशां गोपाः १, ९४, ५; २६० ।  
 १, ९६, ४, १८८२  
 विशां पतिः विश्वासाम् १, १२७, ८,  
 २७९ । ६, १५, १, १०२३  
 विशां प्रियः ५, १, ९, ७६३  
 विशां राजा २, २, ८, ३९२ । ८, ४३, २४,  
 १३३३  
 विशः राजा ६, ८, ४, १७८३  
 विशां विज्ञपतिः ३, १३, ५, ५७८  
 विज्ञपतिः १, १२, २, ११ । १, २६, ७;  
 ३४ । १, २७, १२; ४९ । १, ६०, २;  
 १२० । १, १२८, ७, २८९ । २, १, ८;  
 ३७६ । ५, ६, ५, ८७६ । ६, १, ८;  
 ९४६ । ६, २, १०; ९६१ । ६, १५, ८;  
 १०३० । ७, ४, ७, ११४० । ७, १५, ७;

११८३ । ७, ७, ४; ११४५ । ८, १०३, ७;  
 १२६३ । ८, २३, १३-१४; १२८२-८३ ।  
 ८, ४४, २६; १३६८ । ८, ६०, १९;  
 १४०७ । ३, ३, ८; १७४९  
 विज्ञरति मानुषीणां विशाम् ५, ४, ३;  
 ७१२ । ३, २, १०, १७३६  
 विज्ञपतिः शश्वतीनां विशाम् ६, १, ८;  
 ९४६  
 विज्ञयः १०, ९१, २, १६५२  
 विश्वः १, १२८, ६; २८८ । १०, ८७, १५;  
 १८४२ । वा०य० २८, २९; २१००  
 विश्वकर्मा अथ० २, ३४, ३, २१५१ ।  
 २, ३५, १; २२७९  
 विश्वकर्मा [देवता] अथ० २, ३५, १;  
 २२७९  
 विश्वकृत अथ० ६, ४७, १; २३७२  
 विश्वकृष्टिः १, ५९, ७, १७२३  
 विश्वचर्षणि. १, २७, ९; ४६ । ५, ६, ३;  
 ८०३ । ५, १४, ६; ८६५ । ५, २३, ४;  
 २०६ । ३, २, १५; १७४१  
 विश्वतः प(स्प)तिः ९, ५, १; १९८१  
 विश्वतः परिभूः १, ९७, ६; १८९२  
 विश्वतः पृ(स्पृ)थुः २, १, १२; ३८०  
 विश्वतः प्रत्यञ्च्-ह ७, १२, १; ११७१  
 विश्वतः भानवः यन्ति १, ९७, ५, १८९१  
 विश्वतः (तो) मुखः १, ९७, ६-७;  
 १८९२-९३  
 विश्वतूर्तिः २, ३, ८; १९४९  
 विश्वदर्शत १, ४४, १०, ९५ ।  
 १, १४६, ५, ३४२ । ५, ८, ३; ८२३ ।  
 १०, १४०, ६; १६८९  
 विश्वदाव्यः अथ० ३, २१, ३, ९;  
 २३५७, २३६३  
 विश्वदेवः १, १४२, १२; १९२९  
 विश्वदेव्यः १, १४८, १; ३४८ । ३, २६, ५;  
 १७३१  
 विश्वधाया १, ७३, ३, २०७ । ५, ८, १;  
 ८२१ । ७, ४, ५; ११३८  
 विश्वभरस्-राः ४, १, १९; ६४५

विश्वमानवः [मरुतः] ४, १०, ३; २४५०  
 विश्वभृत् अथ० ५, २८५; २१७१  
 विश्वमिन्व. ३, २०, ३; ६१६  
 विश्वमिन्वा [देवीद्वारः] १०, ११, ५,  
 २००७  
 विश्वरूपः १, १३, १०, १९१५  
 विश्ववार ३, १७ १, ६०० । ७, ७, ५;  
 ११४६ । ७, १६, ५, ११९६ ।  
 १०, १५०, ३, १७०० । ७, ५, ८,  
 १८०१ । वा०य० २७, १३, २०६२ ।  
 अथ० ५, २, ७, २०७४  
 विश्ववार्यः ८, ११, ११; १२३४  
 विश्वविद् ३, २९, ७, ५६४ । ३, १९, १;  
 ६१० । ५, ४, ३, ७९२ । १०, ९१, ३,  
 १६५३  
 विश्ववेदाः १, १२, १; १० । १, ३६, ३;  
 ७० । १, ४४, ७, ९२ । १, १२८, ८;  
 २९० । १, १४३, ४; ३२१ । १, १४७, ३;  
 ३४५ । ३, २५, १, ५३२ । ३, २०, ४,  
 ६१७ । ४, ८, १, ७०४ । ४, ४, १३;  
 १८२५ । वा०य० २७, १२, २०६१  
 विश्वशशुः अथ० ६, ४७, १; २३७२  
 विश्वशुच-क ७, १३, १; १८१०  
 विश्वशुष्टिः १, १२८, १; २८३  
 विश्वस्य केतुः १०, ४५, ६; १५९४  
 विश्वस्य नाभिः चरतः भ्रुवस्य १०, ५, ३;  
 १५१५  
 विश्वाद् ८, ४४, २६; १३६८  
 विश्वाप्सुः १, १४८, १, ३४८  
 विश्वायुः १, २७, ३; ४० । १, ६७, ६, १०;  
 १४९, १५३ । १, ६८, ५; १५८ । १, ७३, ४,  
 २०८ । १, १२८, ८, २९० । ६, ४, २;  
 ९७२ । १०, ६, ३, १५२२  
 विश्वायु वेपसम् (द्विती०) ८, ४३, २५;  
 १३३४  
 विश्वेदेवाः [देवता] अथ० ३, २१, ८;  
 २३६२  
 विश्वेदेवाः स्वे ५ ३, १, ७७९  
 विश्वेदेवासः [मरुत ] १, १९, ३; २४४०  
 दै० [अग्निः] ३४

विषित ६, १२, ५; १०१०  
 विषुणः ४ ६, ६; ६८७  
 विषुरूपः श्मना परिजिगासि ५, १५, ४,  
 ८६९  
 विष्णुः १०, १, ३; १४८७  
 विष्णुः [देवता] अथर्व० ७, २९(३०),  
 १-२; २४५३-५४  
 विष्णु. स्वम् उरुगायः २, १ ३; ३७१  
 विहस्यः अथ० २, ६ ४; २३२३  
 विहायाः १, १२८, ६; २८८ । ६, १३, ६,  
 १०१७ । ८, २३, १९, २४; १२८८,  
 १२९३  
 वीः उचथस्य कुवित १, १४३, ६, ३२३  
 वीतः ४, ७, ६, ६९८  
 वीतिहोत्र. ३, २४, २, ५२८ । ५, २६, ३;  
 ९२२  
 वीरः ८, २३, १४; १२८३  
 वीरः [ स्वष्टा ] २, ३, ९, १९५०  
 वीरपेशाः १०, ८०, ४, १६४७  
 वीरुधा गर्भं २, १, १४, ३८२  
 वीळु ८, ४४, २७, १३६९  
 वीळु जम्भः ३, २९, १३; ५७०  
 वृत्रहन्तमः १, ७८, ४, २४२ । ६, १६,  
 ४८, १०८९ । ८, ७४ ४, १४४५  
 वा० य० २८, २६, २०९७  
 वृत्रहा २, १, ११; ३७९ । ३, २०, ४; ६१७  
 ६, १६, १४, १९, १०५५, १०६० । १०,  
 ६९, १२, १६३६ । १, ५९, ६, १७२२  
 वृद्धवृष्णः अथ० ७, ६२(६४), १, २०७३  
 वृद्धशोचिः ५, १६, ३; ८७३  
 वृधः भूः दक्षस्य ६, १५ ३; १०२५  
 वृधः श्रुपेभिः १०, ६, ४, १५२३  
 वृधत्-न् ८, १०२, ७, १४६९  
 वृधानः समिधा ३ २८, ६, ५५७ ।  
 १, ९५-९६, ११, ९; १८७८  
 वृधमानः धिष्ण्यासु ४, ३, ६; ६७१  
 वृश्चद्वनः ६, ६ १; ९८६  
 वृषः ३, २७, १४; ५५०  
 वृषणः ३, २९, ३, ९; ५६०, ५६६

वृषन्-वा १, ३६, ८; ७५ । १, १२७, २,  
 २७३ । १, १४० २, २९३ । ३, १, ८,  
 ४५४ । ३, ७, २, ५, ९, ४९१, ४९४,  
 ४९८ । ३, २७, १३, १५, ५४९, ५५१ ।  
 ५, १, १२; ७६६ । ५, १२, ६; ८५३ ।  
 ६, १, १; ९३९ । ६, ३, ७; ९६९ ।  
 ६, ६, ५; ९९० । ६, ४८ ३ ६, १०२२,  
 १०२५ । ७, ३, ३, ५, ११२६, ११२८ ।  
 ७, १०, १; ११६१ । ८ ७५, ६, १३७८ ।  
 १०, ३, ४, १५०२ । १०, ११, १; १५४० ।  
 १०, १८७, ३, १७१३ । १० १९१, १,  
 १७१६ । ३, २, ११, १७३७ । ४ ५; १०,  
 १५; १७६७, १७७२ । ६ ८, १, १७८० ।  
 ९, ५, १, ७ ९; १९८१, १९८७, १९८९ ।  
 २, ३५, १३; २४३४ । वा०य० २०, ४४;  
 २०२२ । अथ० ४, ३६, १, २२९५ ।  
 साम० १, १ १०, ३  
 वृषन्-षा [इन्द्र] वा०य० २०, ४०,  
 ४४; २०१८, २०२२  
 वृषभ. १, ३१, ५, ५४ । १, १२८, ३;  
 २८५ । १, १४०, १०, ३०१ । २, १ ३,  
 ३७१ । २ ९, २, ४०४ । ३ ६, ५, ४८४ ।  
 ३, १५, ३, ४, ६; ५९०, ५९१, ५९३ ।  
 ४, ३, १०, ६७५ । ५, १, ८, १२, ७६२,  
 ७६६ । ५, २, १२; ७७८ । ५ २८, ४;  
 ९३६ । ६, १, ८; ९४६ । ८ ६०, १४;  
 १४०२ । १०, ८, १-२; १५३४-३५ ।  
 १, ५९, ६, १७२२ । ४, ५, ३, १७६० ।  
 २, ३, ११; १९५२ । २, ४, ३; १९५५ ।  
 वा०य० २८, ४, २०८७  
 वृषभ [इन्द्रः] वा०य० २०, ४६, २०२४  
 वृषभः अतिताम १०, १८७, १; १७११  
 वृषभः सोरवीति १०, ८, १; १५३४ ।  
 ४, ५८, ३; १८९७  
 वृषभः स्तियानाम् ७, ५, २, १७९५  
 वृषायमाणः [इन्द्रः] वा०य० २०, ४६;  
 २०२४  
 वेः मन्मसाधन १, ९६ ६, १८८४  
 वंत्तमः ४, ५८, ५; १८९९

वेद्य हि अन्वयः पथः ६ १६, ३, १०४४  
 वेद सः १, १४५, १, ३२३  
 वेद जनिमानि देवानाम् ३, ४, १०,  
 ७, २, १०; १९६२  
 वेद जाता देवानाम् ८, ३९, ६, १३०५  
 वेद विश्वा जनिमा ६, १५ १३; १०३५  
 वेद मर्तानां अपीच्यम् ८, ३९, ६; १३०५  
 वेदिता ८, १०३, ११; १२६७  
 वेदिषत् १, १४०, १ २९२  
 वेद्य ५, १५, १; ८६६। ६, ४, २, ९, ७२।  
 अथ० १९ ३, ४; २२०८  
 वेधस्-धाः १, ६५, १०; १३३१, ६९, ३,  
 १६६। १, ७३, १०; २१४। १, १२८, ४,  
 २८६। ३, १०, ५, ५१३। ३, १४, १;  
 ५८१। ४ २, २०, ६६६। ४, ३, १६;  
 ६८१। ५, १५, १; ८६६। ६, १६, ३, २२;  
 १०४४, १०६३। ८, ४३, १ ११; १३१०,  
 १३२०। ८, ६०, ३; १३९१। १०, ९१,  
 १४, १६६४। अथ० ३, २१, ६; २३६०  
 वेधस्तमः १, ७५, २; २२५। ६, १४, २;  
 १०१९  
 वेनः ४, ५८, ४; १८९८  
 वैश्वानरः [ अग्नि देवता ] सूक्तानि  
 १, ५९, (१-७), १७१७-२३। १, ९८,  
 (१-३) १७२४-२६। ३, २, (१-१५),  
 १७२७-४१। ३, ३, (१-११) १७४२-५२।  
 ३ २६, (१-३, ७-८); १७५३-५७।  
 ४, ५, (१-१५); १७५८-७२। ६, ७,  
 (१-७), १७७३-७९। ६, ८, (१-७);  
 १७८०-८६। ६, ९, (१-७); १७८७-  
 ९३। ७, १५, (१-९), १७९४-  
 १८०२। ७, ६, (१-७); १८०३-९।  
 ७, १३, (१-३); १८१०-१२।  
 वैश्वानरः ५, २७, १-२, ९२८-९९। १०,  
 ४५, १२; १६००। १०, ८८ १२-१४;  
 २४०८-१०। अथ० ६, ३६, १,  
 २१८१। ७, १०८, २; २२२८। ४,  
 ३६, १-२; २२९५-९६। ४, २३, ४,  
 २३७३। ६, ७१, ३; २३४८। ३, २१,  
 ३; २३५७। ६, ४७, १; २३७२।

६, ३५, १, २, ३, २३७५-७६-७७।  
 ६, ११९, १, २, ३; २३८४-८५-८६।  
 वैश्वानर ज्येष्ठः अथ० ३, २१, ६; २३६०।  
 व्यध्वा १, १४१, ७; ३११।  
 व्यचस्वतीः [ दवीर्हरः ] २, ३, ५;  
 १९४६। १०, ११०५; २००७।  
 व्याघ्रः [ वनस्पतिः ] वा० य० २१, ३९,  
 २०५८।  
 व्रजनम् कृष्णम् ते ७, ३, २; ११२५।  
 व्रतपतिः अथ० ७, ७४, ४; २१९७।  
 व्रतपाः १, ३१, १०, ५९। ८, ११, १;  
 १२१४। ६, ८, २, १७८१।  
 व्रता विश्वा ध्रुवा ते संगतानि १, ३६,  
 ५; ७२।  
 व्रतेन समक्त अथ ७, ७४, ४, २१९७।  
 श्नामः ४, ६, ११, ६९२  
 शक्रः अथ० ३, २१, ४, २३५८  
 शचीवस्-वान् ३ २१, ४; ६२१  
 शचीवसुः ८, ६०, १२, १४००  
 शतक्रतुः [ वनस्पतिः ] वा० य०  
 २१, ३९, २०५८। २८, १०; २०९३  
 २८, ३३; २१०४  
 शतनीथः १०, ६९, ७, १६३१  
 शतात्मा १, १४९, ३; ३५५  
 शन्तमः १, १२८, ७, २८९।  
 शन्तमः अध्वरेषु १, ७७, २, २३५  
 शम् ७, ६ २, १८०४।  
 शमिता २, ३, १०; १९५१। ३, ४, १०;  
 १९६२। ७, २, १०, १९६२। १०, ११०,  
 १० २०१२। वा० य० २७, २१,  
 २०७०  
 शमिता [ वनस्पतिः ] वा० य० २१,  
 ३९, २०५८। २८, १०, २०९३।  
 २८, ३३; २१०४। अथ० ५, ७, ११;  
 २०८२  
 शम्भुः १, ६५, ५; १२८। ३, १७, ५;  
 ५०४  
 शयिष्ठाः आ ज्योक् एव दीर्घं तमः  
 १०, १२४, १; १६८३

शयुः कतिधा चिद् आयवे १, ३१, २, ५१।  
 शर्धः स्वम् २, १, ५; ३७३  
 शर्धमानः [ इन्द्र ] वा० य० २०, ३८;  
 २०१६  
 शर्महा ६, १६ ३९; १०८०  
 शवसस्पतिः १, १४५, १; ३३३।  
 ५, ६, ९, ८०९  
 शवसा स्रुतुः १ २७, २; ३९  
 शविष्ठः १, १२७, ११, २८२  
 शशमान १०, १४२, ६; १६९५  
 अथ० १२, २, १०; २३३६  
 शशमान. विप्रस्य उक्थ्यम् १०, ११, ५;  
 १५९४  
 शशली (शकली) अथ० १, २५, २;  
 २२७६  
 शश्वत ५, १९, ४; ८८९  
 शश्वत्तमः १०, ७०, ३; १९९४  
 शास् (शासुः षष्ठी) १, ६०, २; १२०  
 शिक्म् ६, २, ९; ९६०  
 शितः ८, २३, १३; १२८२  
 शितिष्टः ३, ७, १; ४९०  
 शिमीवान् १०, ८, २; १५३५  
 शिव १, ३१, १; ५०। ५, १, ८, ७६२।  
 ५, २४, १, ९०७। ८, ३९, ३; १३०२।  
 १०, ३, ४; १५०२  
 शिवः [ स्वष्टा ] ५, ५, ९; १९७१  
 शिवः दोषा ४, ११, ६; ७३३  
 शिशानः १०, ८७, १, ३, ६; १८२८,  
 १८३०, १८३१  
 शिशानः शृगे ९, ५, २; १९८२  
 शिशुः १०, १, २, १४८६  
 शिश्वा १, ६५, १०, १३३  
 शीतः अथ० १, २५, ४; २२७८  
 शीर ३, ९, ८, ५०७। ८ ४३, ३;  
 १३४०। ८, १, २, ११; १४७३। १०,  
 २१, १; १५८१  
 शीरशो चिस्-चि ८, ७१, १०, १४;  
 १४१८, १४२२  
 शीर्षे द्वे अस्य ४, ५८, ३; १८९७

शुक्रः १, ६९, १, १६४ । १, १२७, २,  
२७३ । ४, १, ७; ६३३ । ४, ६, ८;  
६८९ । ४, ११, २; ७२९ । ५, २१, ४;  
८९८ । ६, १६, ३४, १०७५ । ६, ४८,  
७; १०९६ । ७, १, ८, ११०७ । ७, ४, १,  
११३४ । ८, ६०, ३; १३९१ । १०, २१,  
७; १५८७ । १०, १८७, ५, १७१५ ।  
१, ९५, १; १८६८ ।  
शुक्रवर्चाः १०, १४०, २, १६८५ ।  
शुक्रशोचिः २, २, ३; ३८७ । ७, १४,  
१, ११७४ । ७, १५, १०; ११८६ ।  
८, १०३, ८; १२६४ । ८, २३, २०, २३,  
१२८९, १२९२ । ८, ४४, ९; १३५१  
शुचत्-न् ६, ३, ३, ९६५  
शुचयत्-न् १०, ४६, ८; १६०८  
शुचिः १, ३१, १७; ६६ । १, ६६, २;  
१३५ । १, १२७, ७, २७८ । १, १४१,  
४-५, ३०८-९ । २, १, १; ३६९ । २,  
१, १४; ३८२ । २, ५, ४; ४२८ । २, ७,  
४; ४४४ । ३, ५, ७, ४७६ । ४, १, ७;  
७३३ । ५, १, ३; ७५७ । ५, ४, ३;  
७९२ । ५, ७, ८, ८१८ । ५, ११, १, ३,  
८४२, ८४४ । ६, ६, ३; ९८८ । ६, १५,  
१, ७, १०२३, १०२९ । ७, १०, १,  
११६१ । ७, १५, १०; ११८६ । ८, ४३,  
१३; १३२२ । ८, ४४, २१; १३६३ ।  
८, १०२, ४; १४६६ । ३, २, १४-१५,  
१७४०-४१ । १, १४२, ३, १९२० ।  
२, ३५, ३; २४२४, वा० य० २८, २५,  
२०९६  
शुचिः [ तिस्र देव्य ] १, १४२, ९,  
१९२६  
शुचिः [ अग्निदेवता ] १, ९७, (१-८);  
१८८७-१८९४  
शुचिजन्मा १, १४१, ७; ३११  
शुचिजिह्वः २, ९, १; ४०३  
शुचिदत्-न् ५, ७, ७; ८१७ । ७, ४, २;  
११३५  
शुचिप्रतीकः १, १४३, ६; ३२३

शुचिवर्णः ५, २, ३, ७६९  
शुचिव्रतः ८, ४३, १६, १३२५ ।  
१० ११८, १; १८५३ । वा० य०  
२१, १३; २०३८  
शुचिव्रततमः ८, ४४, २१; १३६३  
शुचिधमः ( सं० ) ६, ६, ४, ९८९  
शुभ्रः ३, २६, २, १७५४  
शुभ्रः [ बर्हिः ] ५, ५, ४; १९६७  
शुभ्राः [ मरुतः ] १, १९, ५; २४४२  
शुम्भान स्वातन्त्रम् ८, ४४, १२, १३५४  
शुशुक्निः ८, २३, ५, १२७४  
शुशुक्नान् १, ६९, १; १६४  
शुशुचानः ४, १, १९, ६४५ । ४, १, ३,  
२४५०  
शुषिमणस्पतिः १, १४५, १, ३३३  
शुषिमन्तमः १, १२७, ९; २८०  
शुषिमन्-ष्मी ८, १०२, १२, १४७४  
शूरः १, ७०, ११; १८४ । ४, ३, १५;  
६८० । ६, १५, ११; १०३३  
शृङ्गाः अस्य चत्वारि-४, ५८ ३; १८९७ ।  
शृण्वन् ८, ४३, २३; १३३२ । १०,  
१२२ ४, १६७८  
शृण्वन् आरे अस्मे च १, ७४, १; २१५  
शोचः १, ५८ ६, ११५ । १, ६९, ४;  
१६७ । १, ७३, २; २०६ । १०, १२९,  
१; १६७५  
शोचूयः १०, ४६ ३; १६०३  
शोकः अथ० १, २५, ३, २२७७  
शोचिः ५, ५, १; १९६४  
शोचिः परिवसानः ३, १, ५, ४५१  
शोचीवि ऊर्वा शुक्रा शुमन्तमा  
अथ० ५, २, ७; २०७२  
शोचिष्केशः १, ४५, ६, १०५ । १,  
१२७, २; २७३ । ३, २७, ४, ५४० ।  
३, १४, १; ५८१ । ३, १७, १ ६०० ।  
५ ८, २, ८२२  
शोचिषस्पतिः ५, ६, ५; ८०५  
शोचिषा अरोचत शुक्रेण ८, ५६, ५;  
२४५५

शोचिष्ठः ५, २४, ४, ९१० । ८ ६०, ६;  
१३९४  
शोचिष्मान् २, ४, ७, ४२२  
शोभमानः पुरु ५, २, ४, ७७०  
शोशुचन् १०, ८७, २०, १८४७  
शोशुचन् अजस्त्रेण शोचिषा ६, ४८, ३;  
१०९२  
शोशुचानः ७, १०, १; ११६१ । ७, ५, ३;  
१७९६ । ७, १३ २, १८११ । ४, ४, २,  
१८१४ । १०, ८७, ७, १८३४ । १०,  
८७, २, १४; १८३६, १८४१ । ४, १, ४;  
२४५१  
शोशुचानः पाजसा पृथुना ३, १५ १;  
५८८  
शोशुचानः अजस्त्रेण शोचिषा ७, ५ ४;  
१७९७  
शयेतः १, ७१, ४, १८८  
श्रवस्यः २, १०, १, ४०९  
श्रवस्यः श्रवोभिः ६, १, ११; ९४९  
श्रियः यस्य स्वार्हाः दृशे ४, १५, ५,  
११८१  
श्रिय दधाने शुक्रपिशात् [ उषासानक्ते ]  
१०, ११०, ६, २००८  
श्रिय वसान २, १०, १; ४०९  
श्रीणां उदारः १०, ४५, ५; १५९३  
श्रुकर्णः १, ४४, १३; ९८ । १, ४५, ७,  
१०६ । १०, १४०, ६, १६८९ । अथ०  
१९ ३, ४; २२०८  
श्रुष्टिः १, ६७, १, १४४  
श्रुष्टी [ स्वष्टा ] २, ३, ९; १९५०  
श्रुष्टीवान् ३, २७, २; ५३८  
श्रणिदन् १०, २०, ३, १५७३  
श्रेष्ठ १, ४४, ४; ८९ । ३, २१, ३,  
६२० । १०, १४६, ५, १७०७  
श्रेष्ठशोचिष्-चिः ८, १९, ४; १२२७  
श्रोता ३, २६, २; १७५४  
श्रुतीवान् १, १४०, १०; ३०१  
श्रात्र ( आसः-बहु० ) १०, ४६,  
७, १६०७



श्वितान ६, २, ९८७  
 श्वितोचिः- चयः (बहु०) १०, ४६, ७;  
 १६०७  
 श्वेत ३, १, ४; ४५० । ५, १४;  
 ७५८  
 श्वेत्य ५, १९, ३, ५८८  
 सः ५, १३, ४, ९०६  
 सयत २, २, २, ३८६  
 सवयन्ती तत तन्नुम् [उपासानक्ते]  
 २, ३, ६, १९४६  
 संवसवः [ देवता ] अथ० ७, १०९  
 (११४), ६, २३७०  
 सविदान ब्रह्मणा १०, १६२, १, २४१६  
 सविदान विश्वेभिः देवैः सह  
 अथ० ५, २९, २, २३०६  
 संविद्वान् अथ० १, २५, १, २, ३, २२७५-  
 ७६ ७७  
 सकृत् वा० य० २७, १३, २०६२  
 सखा १, ३१, १, ५० । २, १, ९, ३७७ ।  
 ८, ४३, १४; १३२३ । ८, ७१, ९, १४१७ ।  
 १०, ३, ४, १५०२ । १०, ८७, २१, १८४८ ।  
 ३, ४, १; १९५३  
 सखा साविभ्यः १, ७५, ४, २२७  
 सख्य जुषाण देवानाम् ७, ७, २, ११४३  
 सकसुक अथ १२, २, ११, १४, १९, ४०;  
 २२३७, २२४०, २२४५, २२५३  
 सचन्तः देवोभि १, १२७, ११; २८२  
 सचाभूः अङ्गिरसाम् १० ७०, ९, २००५  
 सजोषसः अग्रयः ३ २२, ४, ६२६  
 सञ्चित्वान् ४ ७, ८, ७००  
 सज्ञातरूपः १, ६९, ९, १७२  
 सत्-न् ८, ४३, १४, १३२३ । ८, ७१, १३,  
 १४२१ । १०, ११५, ६; १६७१  
 सत्पति. २, १, ४, ३७२ । ६ १६, १९,  
 १०६० । ८, ७४, १०, १४५१ । अथ०  
 ७, ६२ (६४), १, २३७३ । साम०  
 १, २, १, ९  
 सत्यः १, १, ५, ५ । १, १४५, ५, ३७७ ।  
 ३, १४, १, ५८१ । ५, ७३, २, ९०२ ।

५, २५, २, ९१२  
 सत्यतरः १, ७६, ५, २३३ । ३, ४, १०,  
 १९६२ । ७, २ १०, १९६२  
 सत्यतातिः ४, ४, १४, १८२६  
 सत्यधर्मा १, १२, ७; १६  
 सत्यमन्मा १, ७३, २; २०६  
 सत्ययजः ६, १६ ४६; १०८७ ।  
 ४, ३, १; साम० १, १, ७, ७  
 सत्यवाक् ७, २, ३, १९७७  
 सत्यशुष्मः १, ५९, ४; १७२०  
 सत्याजाः अथ० ४ ३६, १; २२२५  
 सत्वनः-नम् १०, ११५, ४, १६६९  
 सद्दः दधानः उपरेषु परेषु सानुषु  
 १, १२८, ३; २८५  
 सदानवः ३, ११, ५; ५२२  
 सदक् ८, ११, ८, १२२१ । ८, ४३, २१,  
 १३३०  
 सद्यो अर्थः १, ६०, १; ११९  
 सद्यो जात. १० ११०, ११; २०१३  
 वा० य० २९, ११; २११६  
 सनकात् ३, २९, १४; ५७१  
 सनश्रुत. ३, ११, ४; ५२१  
 सनानि जठरेषु धन्ते विश्वा १, ९५, १०,  
 १८७७  
 सनुतः चरन् ५, २, ४, ७७०  
 सनृजः १, १५, १२; २३ । १, ३६, २,  
 ६९ । १, ४५, ५, ९, १०४, १०८ ।  
 ३, २०, ४, ६१७ । ३, २१, ३, ६२० ।  
 ८, १९, २९ १२४९ । ८, ४४, ९, २८,  
 १३५१, १३७०  
 सदक् १, ६६, १, १३४  
 सदक् विश्वत सुप्रतीकः १, ६४, ७,  
 २६२  
 सदक् भद्रा चारु च ते ४, ६, ६, ६८७  
 सदष्टि वस्वी ते ६, १६, २५, १०६६  
 संनममान हृषूः १०, ८७, ४, १८३१  
 सपत्नहा अथ० २, ६, ३, २३२१  
 सपर्येण्यः ६ १, ६, ९४४  
 सप्त आस्यानि तव अथ० ४, ३९, १०,  
 २२८३

सप्त धामानि परियन् १०, १२२, ३;  
 १६७७  
 सप्तमानुष ८, ३९, ८, १३०७  
 सप्तरश्मिः १, १४६, १; ३३८  
 सप्तहोता ३, २९, १४, ५०१  
 सप्तिः वा० य० २९, २; २१०७  
 सप्रथः ६, १५, ३; १०२५  
 सप्रथम्-थाः ५, १३, ४, ८५७, ८, ६०, ५;  
 १३९३  
 सप्रथस्तम् १, ४५, ७, १०६ । १०, १४०,  
 ६; १६८९  
 सभ्यः अथ० १९, ५५, ६; २२७४  
 समक्तः व्रतेन अथ० ७, ७४, ४; २१९७  
 समञ्जन् ऋतस्य यानान् पथ. १०, ११,  
 २, २००४ । वा० य० २९, २६; २११८  
 समञ्जन् मधुना [इन्द्र.] वा० य० २०,  
 ३७, २०१५  
 समञ्जन् वीरुधः १०, ४५, ४; १५९२  
 समनगा ७, ९, ४; ११५८  
 समानः ४, ५, ७, १७६४  
 समित् समित् ३, ४, १, १९५२  
 समिद्धः [देवता] 'इधमः' पश्य. वा० य०  
 २०, ३६, ५५; २०१४, २०२५ ।  
 २१, १२, २९, २०३७, २०४८ ।  
 २७, ११; २०६० । २८ १, २४,  
 २०८४, २०९५ । २९, १, २५; २१०६,  
 २११७ । ऋ० प्रेष १ २१२९ । अथ०  
 ५, २७, १; २०७२ । ५, १२, १, २००३  
 समिद्धः ३, ९, ३, ४०५, ३, ५, १, ४७० ।  
 ३, ९, ७, ५०६ । ५, २८ १ ४ ५, ९३३,  
 ९३६-३७ । ६, १६, ३४; १०७५ ।  
 १०, ३, १, १४९९ । १०, १५, १, १६९८ ।  
 १०, ८७, १-२, १८२८ २९ । १०, ७०, ७;  
 १९९८ । ७, २, ३; १९७६ । १० ८८, ७;  
 २४०३ । अथ० ७, ७४ ४; २१९७ ।  
 १२, २, ११, १८; २२३७, २२४४  
 समिद्धः [ इन्द्रः ] वा० य० २०, ३६;  
 २०१४  
 समिद्धः समिधा ६, १५, ७; १०२९

समिधानः १, १४३, २; ३१९, २, २, १,  
 ६; ३८५, ३९०। ४, ६, ११, ६९२। ५,  
 ८, ४, ६, ८२४ ८२६। ६, ४८, ७, १०९६।  
 ७, ९, ४; ११५८। ८ ४४, ९, १३५१।  
 ८, ६०, ५, १३९३। १०, २, ७; १४९८।  
 १०, १५०, ९; १६९९। ४, ५, १५ १७७२।  
 ४, ४, ४, १८१६। ३, ४, ११, १९६३।  
 ७, २, ११; १९६३। वा० य० २८, २४;  
 २०९५। साम० १, ६, १३, १  
 समिधः अस्य ऊर्ध्वा अथ० ५, २, ७;  
 २०७२  
 समिध्यमानः अध्वरे ३, २७, ४, ५४०  
 समिध्यमानः अनु प्रथमा ३, १७, १;  
 ६००  
 समीची [ उषामानक्ते ] २, ३, ६,  
 १९४४  
 समुद्रः ४, ५८, १, १८९५ । १०, ५,  
 १, १५१३  
 समुद्रथ ३, ३, ९, १७५०  
 सम्पृचानः सदनं आङ्गिः गोमि. १, ९५,  
 ८; १८७५  
 सम्प्रेक्ष्. अथ० ६, ७६, १, २३९०  
 सम्मिश्रः १०, ६ ४; १५२३  
 सम्राज्ञ-ट् ८, १९, ३२, १२५५ । ७,  
 ६, १; १८०३। अथ० ६, ३६, ३,  
 २१८३  
 सम्राजत्-न् अध्वराण सू १, २७, १, ३८  
 सरजत्-न् अध्वनः १०, ११५, ३,  
 १६६८  
 सरण्यन् ३, १, १९, ४६५  
 सरस्वती [ देवता ] पश्य 'देव्य. तिष्ठाः'  
 अथ० ४, ४, ६, २१६२  
 सरस्वती त्वमूर्, १, ११, ३७९  
 सर्पिरासुतिः २, ७, ६, ४४६। ५, ७,  
 ९; ८१९। ५, २१, २, ८९६। १०,  
 ६९, २; १६२६  
 सविता [ देवता ] ४, १३, २; ७४१।  
 १, ३५, १, २४४८। वा० य० २७, १३,  
 २०६२। अथ० ५, २७, ३; २०७४।

२, २९, २; २१५०। ७, ११५, २, २००२।  
 ३, २१, ८, २३६२। ४, ४, ६; २१६२  
 सविता त्व देवः रत्नधा २, १, ७,  
 ३७५  
 सवीर्यः वा० य० २८, ३, २०८६  
 सवेदाः अथ० १२, २, १४, २२४०  
 सतः ३, ५, ६, ४७५  
 ससवान् वाजम् १०, ११, ५, १५४४  
 मसुनुः अथ० ५ २७, १; २०७२  
 सञ्जि ३, १५, ५, ५९२  
 सहः [इन्द्र.] वा० य० २१, ४०; २०५९।  
 २८, ३६, २०९७  
 सहः १, ३६, १८, ८३। ८, १०२, ५;  
 १४६७  
 सहन्तम १, १२७९. २८०  
 सहन्त्य १, २७, ८, ४५। ६, १६, ३३;  
 १०७४। ८, ११, २; १२१५  
 सहमानः अथ० १२, २, ४६; २२५९।  
 ७, ६३ (६५), १, २३७३  
 सहसस्तुत्र २, ७, ६, ४४६। ३, १४,  
 १, ४, ६, ५८१, ५८४, ५८६। ३, १६, ५,  
 ५९८। ३, १८४, ६०८। ५, ३, १, ६,  
 ७७९, ७८३। ५, ४, ६, ७९५। ५, ११,  
 ६, ८४७  
 सहस. सूतर. १०, ११५, ७, १६७२  
 सहस. सूत्र. १, ५८ ८, ११७। १, १२७, १;  
 २७२। १, १४३, १; ३१८। ३, १८;  
 ४५४। ३, ११, ४; ५२१। ३, २४, ३;  
 ५२९। ३ २५, ५, ५३६। ३, २८, ३, ५,  
 ५५४, ५५६। ४, २, २; ६४८। ४, ११, ६.  
 ७३३। ५, ३, ९; ७८६। ५ ४, ८. ७९७।  
 ६, १, १०; ९४८। ६, ४, १, ९७१।  
 ६ ५, १, ९७९। ६, ५, ५, ९८३।  
 ६, ६, १; ९८६। ६, ११, ६; १००५।  
 ६, १२, १, १००६। ६, १३, ४-५,  
 १०१५-१६। ६, १३, ६, १०१७।  
 ६, १५, ३; १०२५। ७, १, २१-२२;  
 ११२०-२१। ७, ३, ८, ११३१।  
 ७, ७, ७; ७, ८, ७, ११४८। ७, १६, ४,

११९५। ८, १९, ७, २५, १०३०, १२४८।  
 ८, ७५, ३; १३७५। ८, ६०, २; १३९०।  
 ८, ७१, ११; १४१९। १०, ११, ७;  
 १५४६। १०, ४५, ५; १५९३।  
 १०, १४२ १, १६९०  
 सहसान १, १८९, ८, ३६८। २, १०, ६,  
 ४१४। ५, २५, ९, ९१९। ७, ७, १;  
 ११४२  
 महासावान् १, १८९, ५, ३६५।  
 ३, १, २२; ४६८। ५, २० ४, ८९४।  
 ७, ४, ९; १०३४। ६, १५, १२;  
 १०३४। ७, १, २४, ११२३। ७, ४, ६,  
 ११३९। १०, २१, ४, १५८४।  
 १०, ११५, ८, १६७३  
 सहसिन्-मी ४, ११, १; ७२८  
 सहसा यहुः १, २६, १०, ३७।  
 १, ७४, ५, २१९। १, ७९, ४, २४७।  
 ७, १५, ११, ११८७। ८, १२, १२,  
 १२३५। ८, ६०, १३, १४०१।  
 ८, ८४, ५; १४५८  
 सहसो युवा १, १४१, १०, ३१४  
 सहस्कृतः १, ४५, ९; १०८। ३, २७, १०;  
 ५४६। ५, ८, १; ८२१। ६, १६, ३७;  
 १०७८। ८, ४३, १६, २८, १३२५,  
 १३३७। ८ ४४, ११, १३५३  
 सहस्यः १, १४७, ५, ३४७। २, २, ११,  
 ३९५। ५, २२, ४, ९०२। ७, १, ५;  
 ११०४। ७, १६८, १११९। १०, १, ७,  
 १४९१। १०, ८७ २२, १८४९  
 सहस्रकृष्टिः [ वज्रः ] अथ० १९, ६६, १;  
 २३५०  
 सहस्रजित ५, २६, ६, ९२५। १, १८८, १;  
 १९३१  
 सहस्रतरी १० ६९, ७, १६३१  
 सहस्रमुष्कः ८, १९, ३२, १२५५  
 सहस्रम्भरः २, ९, १, ४०३  
 सहस्रोता ४, ५, ३; १७६०  
 सहस्रवशाः [ वनस्पतिः ] ९, ५, १०;  
 १९९०

सहस्रशृंगः ५, १, ८, ७६२  
 सहस्रलासाः १, १८८, ३, १९३३  
 सहस्रसातमः ३, १३, ६; ५७९  
 सहस्राक्ष १, ७९, १२; २५५  
 सहस्वान् १, १२७, १०, २८१।१, १८९,  
 ४; ३६४। ३, १४ २, ४, ५८२, ५८४।  
 ५, ७, १, ८११। ६, ५, ६; ९८४। ७, ४, ४;  
 ११३७। ८, ४३, ३३, १३४२। ८, १०२, ७;  
 १४६९। १, ९७, ५; १८९१  
 सहावान् ६, १४, ५; १०२२  
 सहीयान् सहस्रश्रित् १०, १७६, ४;  
 १७१०  
 सहोजा १, ५८, १; ११०  
 सहोवृधः १, ३६, २, ६९ । ३, १०, ९,  
 ५१७  
 सद्यस्-द्या १०, ११५, ६; १६७१  
 साधदिष्टिः अपसां यज्ञानाम् ३, २६, ५,  
 १७३१  
 साधनम् यज्ञस्य १, ४४, ११; ९६  
 साधुः १, ६७, २; १४५। १, ७७, ३; २३६  
 साधुः अध्वरेषु ५, १, ७, ७६१  
 साधुया ५, ११, ४; ८४५  
 सानसिः ४, १५, ६, ७५४ । ८, १०२,  
 १२; १४४४  
 सान्तपनः [ अग्निदेवता ] अथ० ६,  
 ७६, ( १-४ ); २३९०-२३९३  
 साम्राज्याय प्रतरं दधानः १, १४१, १३;  
 ३१७  
 गालहिः ३, १६, ४, ५९७  
 गालहिः घृतनासु अथ० ३, २१, ३;  
 २३५७  
 साङ्गान् विश्वा अभियुज ३, ११, ६;  
 ५२३  
 सिंह १, ९५, ५; १८७२  
 सिंहः [ इन्द्र ] वा० य० २१, ४०,  
 २०५९  
 सिन्धूनां जामिः १, ६५, ७, १३०  
 सिन्धूनां नेता ७, ५, २, १७९५  
 सिन्धूनां मित्र ३, ५, ४, ४७३

सिन्धुषु श्रितः विश्वेषु ८, ३९, ८,  
 १३०७  
 सिष्णुः ८, १९, ३१, १२५४  
 सीदन्-न् अपा उपस्थे १०, ४६, १;  
 १६०१  
 सीदत् पस् यासु योनौ अन्त १०, ४६,  
 ६; १६०६  
 सीदत् प्राचीनम् [ इन्द्रः ] वा० य०  
 २०, ३९, २०१७  
 सीदत् प्रिये अमृते बर्हिषि वा० य०  
 २८, २७; २०९८  
 सुकृत् अथ० ५, २७, ३, २०७४  
 सुकृत्तरः १, ३१, ४; ५३  
 सुकृत् १, १२८, ४, २८६। १, १४१,  
 ११, ३१५। १, १४४, ७, ३३२।  
 ३, १, २२; ४६८। ५, ११, २; ८४२।  
 ५, २०, ४, ८९४। ५, २५, ९, ९१९।  
 ६, १६, ३, २९; १०४४, १०७०। ७, ३,  
 ९; ११३२। ७, ९, २, ११५६। ७,  
 १६, ६; ११९७। ८, १९, १७, १२४०।  
 ८, ७४, ७, १४५८। ८, ८४, ८; १४६१।  
 १०, १२२, २, ६; १६७६, १६८०।  
 ३, ३, ७, १७४८। ६, ७, ७, १७७९।  
 ६, ८, २; १७८१। ४, ४, ११; १८२३।  
 १०, ७०, १, १९९२  
 सुकृत् क्रतुना १०, ९१, ३, १६५३  
 सुकृत् यज्ञस्य ८, १९, ३, १२२६  
 सुक्षत्रासः [ मरुतः ] १, १९, ५;  
 २४४२  
 सुक्षितिः २, ३५, १५, २४३६  
 सुगार्हपत्यः अथ० १२, २, ४५; २२५८  
 सुजम्भः ८, ६०, १३; १४०१  
 सुजात २, २, १५; ३८३। २, ६, २;  
 ४३४। ३, २३, ३; ६२९। ५, २१, २;  
 ८९६। ७, ८, ५; ११५३। ८, १०३, १;  
 १२५७। ८, ७४, ७, १४४८।  
 १०, ५, ४, १५१६। १०, ७, २, ६;  
 १५२८, १५३२। १०, ५१, ७, १६१४।  
 अथ० ४, २३, ४, २३३३

सुजातः ऋतस्य योना गर्भे १, ६५, ४;  
 १२७  
 सुजातः तम्बा ३, १५, २; ५८९  
 सुजात वसुभिः १०, ७९, ७। १६४३  
 सुजिह्वः १, १०, ८, १९१३। १, १४२,  
 ४; १९२१। १०, ११०, २; २००४  
 वा० य० २९, २६, २११८  
 सुतुकः १०, ३, ७; १५०५  
 सुत्यजः ८ ६०, १६; १४०४  
 सुदंसस् २, २, ३; ३८७। ( ३, ९, १;  
 ५०० )  
 सुदक्षः २, ९, १; ४०३। ३, २३, २,  
 ६२८। ५, ११, १; ८४१। ७, १, ६,  
 ११०५। ८, १९, १३; १२३६। ७, २,  
 ३, १९७६  
 सुदक्षः दक्षैः १०, ९१, ३, १६५३  
 सुदक्ष ७, ८, ३; ११५१  
 सुदर्शतरः नक्त यः दिवातरात्  
 १, १२७, ५; २७६  
 सुदातुः ३, २९, ७; ५६४। ६, २, ४;  
 ९५५। ६, १६, ८, १०४९। ३, २६,  
 १, १७५३  
 सुदिव्-सुद्यौः १०, ३, ५; १५०३  
 सुदीतिः ३, २७, १०; ५४६। ३, १७  
 ४; ६०२। ३, २, १३, १७३९  
 सुदीदितिः ३, ९, १, ५००। ८, १९,  
 ४, १२२७  
 सुदुवे [ उषासानके ] २, ३, ६;  
 १९४७  
 सुदृन्-क् ३, १७, ४; ६०३। ६, १५,  
 १०, १०३२  
 सुदृशीकः ५, ४, २; ७९१  
 सुदृशीकरूपः ४, ५, १५; १७७२  
 सुदेवः १, ७४, ५; २१९  
 सुद्युत् १, १४०, १; २९२। १, १४३,  
 ३; ३२०। ८, २३, ४; १२७३  
 सुद्योत्मा १, १४१, १२; ३१६। २, ४,  
 १; ४१६  
 सुद्रविणः १, ९४, १५; २७०

सुधितः ३, २३, १, ६२७ । ४, ६, ७;  
 ६८८ । ८, २३, ८; १२७७  
 सुधितः वनस्पतौ ६, १५, २; १०२४  
 सुनीयः २, ८, २; ३९८  
 सुपर्णः अथ० ४, १४, ६; २२२२ ।  
 १९, ६५, १; २३४९  
 सुपिच्यः १०, ११५, ६; १६७१  
 सुपेशसः १, १४२, ७; १९२४ । १,  
 १८८, ६, १९३६ । ९, ५८, १९८८  
 सुप्रणीतिः १, ७३, १; २०५ । ४, २,  
 १३; ६५९  
 सुप्रतिचक्षु ७, १, २, ११०१  
 सुप्रतीकः १, १४३, ३; ३२० । ३, २७,  
 ५; ५९२ । ६, १५, १०, १०३२ ।  
 ७, १०, ३, ११६३ । वा० य० २७,  
 ११, २०६० । अथ० ५, २७, १;  
 २०७२  
 सुप्रत् ८, २३, २९; १२९८  
 सुप्रतीतिः ३, ९, १; ५००  
 सुप्रथाः २, २, १; ३८५ । २, ४, १, ४१६ ।  
 ६, १, ४; १००३ । वा० य० २७, १५,  
 २०६४  
 सुप्रायणाः [ देवीद्वार ] २, ३, ५;  
 १९४६ । ५, ५, ५, १९६८ । १०, ११०,  
 ५; २००७  
 सुप्राण्यः १, ६०, १, ११९  
 सुप्रीतः ६, १५, २, १०२४ । ८, २३,  
 १३; १२८२  
 सुबन्धुः ३, १, ३, ४४७  
 सुबर्हिः १, ७४, ५; २१९ । वा० य०  
 २१, १५; २०४० । २८, २७; २०९८  
 सुब्रह्मा ७, १६, २, ११९३  
 सुभगः १, ३६, ६; ७३ । ३, १, ४; ४५० ।  
 ३, १६, ६; ५९९ । ४, १, ६; ६३२ ।  
 ५, ८, २३, ८२३ । ६, १३, १; १०१२ ।  
 ८, १९, ४, ९, १८-१९, १२२७, १२३२,  
 १२४१-४२ । अथ० १९, ४, २; २२१०  
 सभगे [ उषासानक्ते ] १०, ७०, ६;  
 १९९७

सुभरः [ स्वष्टा ] २, ३, ९; १९५०  
 सुभास् ( भाः- ) भासः ८, २३, २०;  
 १२८९  
 सुभरवः ४, ३, १४, ६७९  
 सुमतीः ह्यान. १०, २०, १०; १५८०  
 सुमद्रथः ८, ५६, ५; २४५५  
 सुमनस्-नाः ३, ९, ३; ५०२ । ४,  
 १०, ३; ७२२ । ४, १३, १, ७४० ।  
 ५, १, २, ७५६ । ७, १, ९; ११०८ ।  
 ७, ८, ५; ११५३ । ३, ४, १; १९५३ ।  
 अथ० ७, ७४, ४; २१२७  
 सुमनस्यमान १०, ५१, ५, ७, १६१३-  
 १४  
 सुमहत्-हान् ७, ८, २; ११५०  
 सुमहस् हा ४, ११, २; ७२९ । १०,  
 ७, ७; १५३३  
 सुमृत्कीकः ४, १, २०; ६४६ । ४, ३, ३;  
 ६९८  
 सुमेधाः ३, १५, ५, ५९२ । १०, ४५,  
 ७, १५९५ । २, ३, १; १९४२  
 सुयज्ञः ५, ८, ३, ८२३ । वा० य०  
 २८, ९; २०९२  
 सुयज्ञ ३, १७, १, ६००  
 सुरणः ३, २९, १४, ५७१ । ३, ३, ९;  
 १७५०  
 सुरस्तः १०, ७० ९, २००५  
 सुरथः ४, २, ४; ६५०  
 सुराधाः ४, २, ४, ६५० । ४, ५, ४,  
 १७६१  
 सुरुकमे [ उषासानक्ते ] १, १८८, ६,  
 १९३६ । १०, ११०, ६; २००८  
 सुरुक्क् १, ११२, १; १८६७ । ३, २६,  
 ५; १७३१  
 सुरेताः [ स्वष्टा ] वा० य० २१, ३८;  
 २०५७ । २८, ९; २०९२ । २८, ३२;  
 २१०३  
 सुवर्चाः १, ९५, १; १८६८  
 सुवाचसा [ देव्यौ होतारौ ] १, १८८, ७;  
 १९३७

सुवाचा [ देव्यौ होतारौ ] १०, ११०, ७;  
 २००९  
 सुविद्वत्रः २, ९, ६, ४०८  
 सुवीरः १ ३१, १०, ५९ । ३, २९, ९;  
 ५६६ । ७, १, ४; ११०३ । ७, १५, ७,  
 ११८३ । ८, १९, ७, १२३० । अथ०  
 १२, २, ४९; २२६२  
 सुवृक्ति. २, ४, १; ४१६ । ६, १०, १,  
 ९९३  
 सुवेद ४, ७, ६; ६९८  
 सुशंसः गृणते १, ४४, ६, ९१  
 सुशमी ७, १६, २, ११९३  
 सुशर्मा ३, १५, १; ५८८ । ५, ८, २;  
 ८२२  
 सुशिप्र ५, २२, ४, ९०२  
 सुशिल्पे [ उषासानक्ते ] ९, ५, ६,  
 १९८६ । १०, ७०, ६, १९९७  
 सुशिक्षिः पन्वा १, ६५, ४; १२७  
 सुशेव १, २७, २; ३९ । २, १, २;  
 ३७७ । ३, २२, ५; ५६२ । ५, १५, १;  
 ८६६ । ७, ७, ३, ११४४ । १०, ४५,  
 १२; १६००  
 सुशोक. १, ७०, १, १७४  
 सुश्रन्द्रः १, ७४, ६, २२० । ४, २, १९,  
 ६६५ । ५, ६, ५, ९; ८०५, ८०९ ।  
 सुश्री ३, ३, ५; १७४६  
 सुषस्व. १०, ९१, १, १६५१  
 सुषुमान् १०, ३, १; १४९९  
 सुष्टुतः ५, १३, ५, ८५८ । ५, २७, २;  
 ९२९ । ८, ७४ ८; १४४२  
 सुश्रयन्ती [ उषासानक्ते ] १०, ११०,  
 ६, २०१३  
 सुसंसद् ७ ९, ३; ११५७  
 सुसनिता ३, १८, ५; ६०९  
 सुसंद्श १, १४३, ३, ३२० । ७, ३, ६;  
 ११२९ । ७, १०, ३; ११६१  
 सुसमिद्धः १, १३, १; १९०६ । ५, ५,  
 १; १९६४ । वा० य० २१, १२;  
 २०३७ । २८, २४; २०९५

सुहव ३,१५,१; ५८८। ७,१,२१,  
११२०। ४,१५, २४५२  
सुहवः जनेभ्यः १,५८,६, ११५  
सुहव्यः १,७४,५, २१९  
सुहोता ८,१०३,२२, १२६८  
सुवु ६,४,४, ९७४। वा० य० २७,  
११, २०६०  
सुनुतावान् १, ५९, ७, १७२३।  
अथ० ३,२१,५, २३५९  
सु-सूरः (षष्ठी) १०,८,३; १५३६  
सूरः [ सूर्यः ] ८,५६,५, २४५५  
सूरिः २,६,४; ४३६  
सूर्यः ३,१४,४,५८४। अथ० १२,२,१८;  
२२४४। ४,३६,५, २२९२  
सूर्यः [देवता] ४,५८, (१-११); १८९५-  
१९०५। १०,८८, (१-१९); २३९७-  
२४१५। ८,१८,९, २४५७। अथ०  
२,२२,१, २१४१। १९,६५,१; २३४२।  
ऋ०८,५६,५, २४५५। १,१६४,४४;  
२४५६  
सूर्यः आदित्यः १० ८८,११, २४०७  
सूर्यः जायते प्रातः उद्यन् १०, ८८, ६;  
२४०२  
सूर्यः देव. ४,१३,१; ७४०  
सुप्रदानुः १,९६,३; १८८१  
सोमः वा० य० २८,२६; २०९७ [देवता]  
७,४१,१; २४३७। [देवता] अथ०  
२,३६,३; २३४०  
सोमः अथ० ५,२९,१०, २३१४  
सोमगोपाः १०,४५,५,१२, १५९३,  
१६००  
सोमपा अथ० १,८ ३; २२२१  
सोमपृष्ठ ८,४३,११; १३२०। १०,  
९१,१४; १६६४। अथ० ३,२१,६,  
२३६०  
सौभागानि विश्वा स्वन् यन्ति १,३,१;  
१०१२  
स्कन्मः आयोः १०,५,६; १५१८  
स्त्वयन् एति १,१४०,५, २६६

स्तभूयन् १०,४६,६; १६०६  
स्तभूयमान ३,७,४; ४९३  
स्तवमानः १,१४७,५; ३४७  
स्तवान ५,१०,७, ८४१। ६,८,७,  
१७८६  
स्तिपाः १०,६९,४, १६२८  
स्तिपानां वृषभ ७,५,२, १७९५  
स्तीर्णं बहिः वा० य० २१,१५ २०४०  
स्तुतः (ष्टुतः) ३,५,९; ४७८। ५,१०,  
७; ८४१  
स्तुम्बा १,६६,४, १३७  
स्थाता गर्भ १,७०,३, १७६  
स्पन्दः ६,१२,५; १०१०  
स्पर्हः ४,१,१२, ६३८  
स्पृहयद्गर्णः २,१०,५, ४१३  
स्वङ्गः १०,१,१, १४८५  
स्वञ्जः ६,१५,१०; १०३२। ७,१०,  
३, ११६३  
स्वतवान् ४,२,६; ६५२  
स्वधावान् १,१४४,७, ३३२। १,१४७,  
२; ३४४। ३,२०,३, ६१६। ४,१०,६,  
७२५। ४,१२,३; ७३६। ५,३,२,५,  
७८०,७८२; ८, ४४, २०; १३६२।  
१०,११८, १५४७। १०, १४२, ३,  
१६९२। ४,५,२, १७५९। १,९५,१,४,  
१८६८; १८७१  
स्वध्वर. १,१२७,१, २७२। २,२,८,  
३९२। ३,९,८, ५०७। ५,२,३, ८३०।  
६,१५,४, १०२६। १,६६ ४०; १०८१।  
७,१६,१, ११९२। ८,१९,२४, १२४७।  
८,१०३,१२; १२६८। ८,२३,५; १२७४।  
१०, ११५, २, १६६७। ३,६,८, १७३४  
स्वनीकः २,१,८; ३७६। ४,६ ६,६८७।  
६,१५,१६, १०३८। ७,१,२३; ११२२।  
७,३,६, ११२९  
स्वपसः [ तिष्ठः देव्यः ] १०,११०,८,  
२०१५  
स्वभिष्टिः ८,१९,३२, १२५५  
स्वयशा १,९५,२,५, १८६९, १८७२  
स्वराट् १,३६,७; ७४

स्वराज्यः २,८,५; ४०१  
स्वचिः २,३,२, १२४३  
स्वर्णरः ६,१५,४; १०२६। ८,१९,१;  
१२२४  
स्वर्कूष् ५,२६,२, ९२१। ३,२,१४;  
१७४०  
स्वर्पतिः ८,४४,१८, १३६०  
स्वर्वाङ् १,५९,४; १७२०  
स्वर्वित् ३,३,५,१०; १७४६, १७५१।  
३,२६,१; १७५३। १,९६,४, १८८२।  
१०,८८,१; २३९७। वा० य० २८,२;  
२०८५  
स्ववसः ५,८,२; ८२२  
स्वश्व. ४,२,४, ६५०  
स्वाश (द् म) न् १,६९,३, १६६  
स्वाधी. १,६७,२, १४५। १,७०,४;  
१७७। ४,३,४, ६६९  
स्वामः (षष्ठी) ४,६,८, ६८९। १०,३,४  
१५०२  
स्वाहाकृतयः [देवता] १, १३, १२;  
१९१७। १, १४२, १२, १९२९।  
१, १८८, ११. १९४१। २, ३, ११।  
१९५२। ३, ४, ११, १९६३। ५, ५, ११;  
१९७३। ७, २, ११, १९३३। ९, ५, ११,  
१२२१। १०, ७०, ११; २००२।  
१०, ११०, ११; २०१३। वा० य०  
२०, ४६, ६६; २०२४, २०३६।  
२१, २२, ४०, २०४७, २०५९। २७, २२,  
२०७१। २८, ११, ३४, २०९४, २१०५।  
२९, ११, ३६, २११६, २१२८। ऋ० म्रैष  
१३, २१४१। अथ० ५, १२, ११।  
२०१३। ५, २७, १२; २०८३  
हृन्ता दस्योः अथ० १, ७, १; २२८४  
हृन्ता भगुरावताम् १०, ८७, २२, १८४९  
हरिः ७, १०, १, ११६१। १०, ७९, ६,  
१६४२। १, ९५, १, १८६८। ९, ५, ९,  
१९८४, १९८९। अथ० १९, ६५, १;  
२३४२  
हरिकेशः ३, २, १३; १७३९  
हरितः [वनस्पतिः] ९, ५, १०; १९९०

हरितस्य देवः अथ० १, २५, २-३,  
२२७६-७७  
हरिवान् [इन्द्र] वा०य० २०, ३८-३९  
२०१६-१७  
हरिमत ३, ३, ५; १७४६  
हर्यंत-त (सर्वो) ८४४, ५; १३४७  
हर्यमाणः ३, ६, ४; ४८३  
हर्षत् १, १२७, ६; २७७ । १०, ४, ३;  
१५०८  
हविः सः १०, २०, ६; १५७६  
हविः अस्मि नाम ३, २६, ७, १७५६  
हविर्वाद् १.७२.७, २०१  
हविष्कृत्-त-तम् (द्वि०) १, १३, ३;  
१२०८  
हव्यः जज्ञानः सद्यः बभूय १०, ६, ७,  
१५२६  
हव्यदातिः ३, २, ८; १७३४  
हव्यवाद् १, १२, २; ११ । १, १२, ६;  
१५ । १, ६७, २, १४५ । १, १२८, ८,  
२९० । ३, ५, १०, ४७२ । ३, १०, ९;  
५१७ । ३, ११, २, ५१९ । ३, २९, ७,  
५६४ । ३, १७, ४; ६०३ । ४, ८, १,  
७०४ । ५, ४, २, ७९१ । ५, ६, ५;  
८०५ । ५, २८, ५, ९३७ । ६, १५, ४, ८;  
१०२६, १०३० । ७, १०, ३; ११६३ ।  
७, १७, ६, १२०९ । ८, ४४, ३ १३४५ ।  
८, १०२, १७-१८, १४७९-८० ।  
१०, ४६, ४, १०, १६०४, १६१० ।  
१०, १२४, १; १६८३ । ३, २६, २;  
१७२८ । १०, ११८, ९ १८६१ ।  
८, ५६, ५, २४५५ । अथ० ४, २३, ४;  
२३३३ । ऋ० प्रैष १२, २१४०;  
हव्यवाद् यज्ञस्य ३, २७, ५; ५४१  
हव्यवाहनः १, ३६, १०, ७७ । १, ४४,  
२, ५; ८७, ९० । २, ४१, १९; ४१५ ।  
३, ९, ६; ५०५ । ५, ८, ६; ८२६ ।  
५, ११, ४; ८४५ । ५, २५, ४, ९१४ ।  
५, २८, ६; ९३८ । ६, १६, २, ३;  
१०६४ । ७, १५, ६; ११८२ । ८, १९;

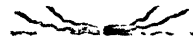
२१; १२४४ । ८, २३, ६; १२७५ ।  
१०, १५०, १; १६९८ । १०, ११८, ५,  
१८५७  
हव्या जुह्वानः १, ७५, १, २२४  
हस्तासः अस्य सप्त ४, ५८, ३, १८२७  
हिस्रः १०, ८७, ३, ८, १८३०, १८३५  
हितः १, १२८, ७, २८९ । ३, २८, ३,  
५५४ । ५, १, ५, ७५९  
हितः देवेभि मातुषे जने ६, १६, १,  
१०४२  
हिन्वान. प्र अजोभिः घेनाभिः  
ऋ० प्रैष १२, २१४०  
हिरण्यकेशः १ ७९, १, २४४  
हिरण्यदन्त. ५, २, ३, ७६९  
हिरण्यपर्णं वा० य० २८, ३३, २१०४  
हिरण्यपाणि अथ० ३, २१, ८; २३६२  
हिरण्ययः ४, ५८, ५, १८२९ । ९, ५,  
१०; १९९०  
हिरण्यरथः ४, १, ८, ६३४  
हिरण्यरूपः २, ३५, १०; २४३१ ।  
४, १, ३, साम० १, १, ७, ७,  
हिरण्यवर्णः २, ३५, १०-११;  
२४३१-३२  
हिरण्यसंदशू-क् ६, १६ ३८; १०७९ ।  
२, ३५, १०; २४३१  
हिरण्यहस्त अथ० ७ ११५, २, २२०२  
हिरिनिप्रः २, २, ५, ३८९  
हिरिश्मश्रुः ५, ७, ७, १८१७ । १०,  
४६, ५, १६०५  
हूयमानः १०, १२२, ५; १६७९  
हृदः जायमानः १, ६०, ३, १२१  
हृदिस्थू-क् ४, १०, १; ७२०  
हृषीवत् १, १२७, ६; २७७  
होता १, १, १; १ । १, १, ५; ५ ।  
१, १२, १, ३, १०, १२ । १, २६, २, ५,  
७; २९, ३२, ३४ । ३, ६, ३, ५, ७०, ७२ ।  
१, ४४, ७, ११; ९२, ९६ । १, ४५, ७;  
१०६ । १, ५८, १, ३, ६-७, ११०, ११२,  
११५-१६ । १, ६०, २, ४; १२०, १२२ ।

१, ६७, २, १४५ । १, ६८, ७; १६० ।  
१, ७०, ८, १८१ । १, ७६, २, ५; २३०,  
२३३ । १, ७७, १-२; २३४-३५ । १,  
७९, १२, २५५ । १, १२७, १, २७२ ।  
१, १२८, १; २८३ । १, १२८, ८, २९० ।  
१, १४१, ६, १२; ३१०, ३१६ ।  
१, १४३, १; ३१८ । १, १४८, १; ३४८ ।  
१, १४९, ४-५; ३५६-५७ । २, २, १,  
५; ३८५, ३८९ । २, ९, १; ४०३ ।  
२, ५, १, ४२५ । २, ६, ६; ४३८ ।  
२ ७, ६; ४४६ । ३, १, २२; ४६८ ।  
३, ५, ४; ४७३ । ३, ६, ३, १०; ४८२,  
४८९ । ३, ७, ९; ४९८ । ३, ९, ९; ५०८ ।  
३, १०, २, ५, ७; ५१०, ५१३, ५१५ ।  
३, ११, १, ५१८ । ३, १३, ५; ५७८ ।  
३, १४, १, ५८१ । ३, १९, ५, ६१४ ।  
३, २१, १; ६१८ । ३, २९, ८; ५६५ ।  
३, २९, १६; ५७३ । ३, २९, १; ६१० ।  
४, १, ८, १९, ६३४, ६४५ । ४, २, १;  
६४७ । ४, ६, १, ४ ५, ११, ६८२, ६८५-  
८६, ९१ । ४, ७, १, ५, ६९३, ६९७ ।  
४, ८, ४; ७०७ । ४, ९, ३; ७१४ ।  
४, १५, १; ७४९ । ५, १, २, ५, ६, ७;  
७५६, ७५९-६०-६१ । ५, २, ७, ७७३ ।  
५, ४, ३, ७९२ । ५, ९, २, ८२९ ।  
५, १०, ७; ८४१ । ५, ११, २; ८४३ ।  
५, १३, ४; ८५७ । ५, १६, २; ८७२ ।  
५, २०, ३; ८९३ । ५, २२, १; ८९९ ।  
५, २३, ३; ९०५ । ५, २५, २; ९१२ ।  
५, २६, ४; ९२३ । ६, १, १-२, ६;  
९३९-४०, ९४४ । ६, २, १०; ९६१ ।  
६, ४, १, ९७१ । ६, ६, १; ९८६ ।  
६, १०, २; ९९४ । ६, ११, १-२, ६;  
१०००-१, १००५; ६, १२, १; १००६ ।  
६, १४, २, १०१९ । ६, १५, ४, ७, १३;  
१०२६, १०२९, १०३५ । ६, १६, ९,  
१०, २३, ४६, १०५०-५१, १०६४,  
१०८७ । ७, ८, २, ११५० । ७, ९, १;  
११५५ । ७, १०, ५; ११६५ । ७, १६, ५,  
१२, ११९६, १२०३ । ८, ११, १०;  
१२२३ । ८, १९, ३, २४, १२२६, १२४७ ।

८, १०३, ६, १२६२ । ८, २३, १७, १२८६ । ८, ४३, १२; १३२१ । ८, ४३, २०; १३२९ । ८, ४४, ६-७, १०; १३४८-४९, १३५२ । ८, ७५, १; १३७३ । ८, ६०, १, ३; १३८९, १३९१ । ८, ६० १४, १४०२ । ८, ७१, ११, १४१९ । १०, १, ५; १४८९ । १०, २, ३, ५, १४९४, १४९६ । १०, ६, ४; १५२३ । १०, ११, ३-४; १५४२-४३ । १०, १२, १-२; १५४९-५० । १०, २१, १; १५८१ । १०, ४६, १, ४, ८; १६०१, १६०४, १६०८ । १०, ५३, २; १६१७ । १०, ९१, ८-९, ११, १६५८-५९, १६६१ । १०, १२२, १, १६७५ । १०, १७६, ३, १७०९ । १०, ५९, ४ १७२० । ३, २६, १, ६, १७२७, १७३२ । ३, २, १५; १७४१ । ४, ४, ११, १८२३ । १, १३, १, ४, ८; १९०६, १९०९, १९१३ । १, १४२, ८, १९२५ । २, ३, १, १९४२ । ३, ४, ३-४, १९५५-५६ । १०, ७०, ३; १९९९ । १०, ११०, ३, ११; २०१०, २०१८ । ३, ३, १, अथ० ६, ७१, १-२,

२३४६-४७ । ३, २१, ५, २३५९ । साम० १, १, ७, ७, होता अध्वरस्य ६, १५, १४, १०३६ होता चर्षणीनाम् १, २७, २; २७३ । ८, २३, ७; १२७६ । ८, ६०, १७, १४०५ होता देवानाम् वा० य० २९, २८, २१२० होता पूर्वः ५, ३, ५; ७८२ होता पूर्व्यः १, ९४, ६, २६१ । ८ ७५, १, १३७३ होता प्रथमः ७, ११, १; ११६६ । ६, ९, ४, १७९० होता प्रथम देवजुष्टः १०, ८८, ४, २४०० होता मनुहितः ६, १६, ९; १०५० होता यज्ञानां विश्वाम् ६, १६, १; १०४२ होता यशस्तमः विश्व ८, २३, १०; १२७९ होता रोदस्यो ६, १६, ४६, १०८७ होता विश्व मानुषीषु १०, १, ४, १४४८, १०, ७, ५; १५३१

होता शश्वतीनाम् ८, ३९, ५, १३०४ होता सनात् ८, ११, १०, १२२३ होता हविष विश्वस्य १०, ९१, १; १६५१ होतारो देव्यौ १, १३, ८, १९१३ । १, १४२, ८; १९२५ । १, १८८, ७; १९३७ । २, ३, ७, १९४८ " (प्रचेतसौ) [ देवता] ३, ४, ७, १९५९ । ५, ५, ७, १९७० । ७, २, ७; १९८० । ९, ५, ७, १९८७ । १०, ७०, ७, १९९८ । १०, ११०, ७; २००९ । वा० य० २०, ४२, ६३, २०२०, २०३२ । २१, १८, ३६, २०४३, २०५५ । २७, १८, २०६७ । २८, ७, ३०; २०९०, २१०१ । २९, ७, ३२; २११२, २१२४ । ऋ० ग्रैष ८, २१३६ । अथ० ५, १२, ७, २००९ । ५, २७, ९, २०८० होत्रम् तव २, १, २, ३७६ होत्रवाह ५, २६ ७; ९२६ होत्राविद् ५, ८, ३, ८२३ ह्युः अथ० १, २५, २-३; २२७६-७७ ।

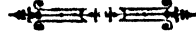




# दैवत-संहिता

( २ )

## इन्द्रदेवता



संपादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर  
स्वाध्याय-मण्डल, आंध्र ( जि० तातारा )



सबत् १९९८, शक १८६३, सन १९४५





मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवलेकर, B A.

स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, औंध, ( जि० सातारा )

# इन्द्रदेवता का परिचय ।

## मेघस्थानीय विद्युत् ।

अब इन्द्रदेवता के स्वरूप का परिचय करनेका यत्न करना है। इन्द्रदेवता कौन है, कहाँ रहता है, क्या करता है, इससे उनका संबंध क्या है, उसकी महायत्ता हमें किस तरह मिल सकती है? इसका विचार करना है। इन्द्रदेवता 'मेघस्थानीय विद्युत्' है, ऐसा कई कहते हैं। इन्द्रका अर्थ Thunderbolt [ मेघस्थानीय विद्युत् ] है, ऐसा इनका कहना है। इन्द्रदेवताके अनंतविधस्वरूप में मेघस्थानीय विद्युत् यह एक रूप है, इसमें सन्देह नहीं है। पर युरोपीयन लोग सर्वथा मेघस्थानीय विद्युत् ही 'इन्द्र' है, ऐसा जब कहने लगते हैं, तब हम कहते हैं कि, वेदका संपूर्ण इन्द्रदेवता का वर्णन 'मेघस्थानीय विद्युत्' पर घट नहीं सकता। इसका विचार करना हो, तो 'इन्द्रिय' शब्दका प्रथम विचार कीजिये।

## इन्द्रिय = इन्द्रकी शक्ति ।

'इन्द्रिय' शब्द इन्द्र शब्दसे ही बनता है। 'इन्द्र+इ+य' ये तीन विभाग इन्द्रपदमें हैं, इन्द्र [इ] की [य] शक्ति, यह इन्द्रका अर्थ है। इन्द्रिय 'इन्द्रकी शक्ति' है। भगवान् पाणिनी महामुनि 'इन्द्रिय' शब्दका निर्वचन ऐसा करते हैं—

इन्द्रियं इन्द्रलिङ्गं इन्द्रदृष्टं इन्द्रसृष्टं इन्द्रजुष्टं  
इन्द्रदत्तं इति वा । [ अष्टा० ५।२।१३ ]

इन्द्र आत्मा, तस्य लिङ्गं, करणेन कर्तुः अनु-  
मानात् । इन्द्रेण दुर्जयामिन्द्रियम् । [ भट्टोजी० ]  
इन्द्रेण दृष्टं ज्ञातं 'मम चक्षुः, मम श्रोत्रं'  
इत्यादिक्रमेण सृष्टं, अदृष्टद्वारा जुष्टं, प्रीणिनं  
सेवितं वा । दत्तं यथायथं विषयेभ्यः ॥

[ कौमुदी तत्त्वबोधिनी टीका ]

'इन्द्र आत्माका नाम है। इस आत्माका ज्ञान इससे होता है, इन्द्रने यह अपना साधन है, ऐसा जाना है, इन्द्रने अपनी साधना के लिये इसको निर्माण किया, इन्द्रने इसका सेवन किया, इन्द्रने यह विषयोंके प्रति भेजा है, वह इन्द्रिय है।'

यहां भगवान् पाणिनी मुनि अपने व्याकरण में "इन्द्र की शक्ति" इस अर्थमें इन्द्रिय शब्द सिद्ध करते हैं। यह इन्द्रिय शब्द वेदमें है। अर्थात् इन्द्रकी शक्ति अर्थमें यह इन्द्रिय शब्द है और वह वेदमें है। केवल मेघस्थानीय विद्युत् ही अर्थ लेनेसे इस पाणिनी महामुनिके बतारे अर्थकी सिद्धि नहीं हो सकती।

हम भी अपने आँख, नाक, कान आदि साधनोंको 'इन्द्रिय' ही कहते हैं। ये ज्ञानके साधन और कर्मके साधन इन्द्रिय ही हैं, अर्थात् ये इन्द्रके साधन हैं, ये इन्द्रकी शक्तियाँ हैं। अर्थात् इन्द्र इनके पीछे है, इन्द्रसे इनमें शक्ति आ रही है, इनसे इन्द्रका ज्ञान हो रहा है। यह विवरण देखनेसे मेघस्थानीय विद्युत् ही केवल इन्द्र नहीं है, यह बात सिद्ध हो जाती है। वेदमें कहा है—

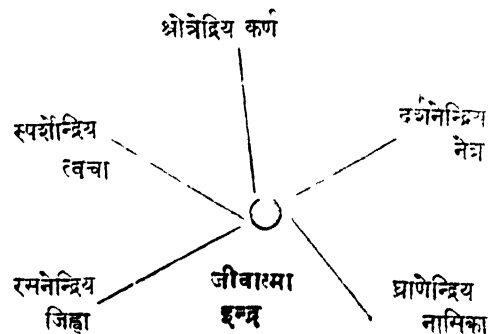
आदित् ह नेम इन्द्रियं यजन्ते । [ ऋ० ४।२।४२ ]

“[नेमे] अन्य लोग [ आत् इत् ] उस समय [इन्द्रियों] इन्द्रियोंको बल देनेवाले इन्द्रका [यजन्ते] यजन करते हैं।

इस मन्त्रमें 'इन्द्रिय' शब्दही इन्द्रका वाचक आया है, क्योंकि इन्द्रमें जो शक्ति है, वह इन्द्रकी है, इन्द्रही इन्द्रिय-रूप बना है और मानवी देहोंमें कार्य कर रहा है।

देहधारी जीवके पास सब इन्द्रियाँ हैं, वह सबकी सब इन्द्रकी शक्तियाँ हैं, अर्थात् इन्द्रियोंके पीछे इन्द्र छिपकर रहा है, अपनी शक्तिको इन्द्रियोंद्वारा प्रकट कर रहा है। इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि, जीवात्मा इन्द्र है और इन्द्रियाँ उसकी शक्तियाँ हैं।

## इन्द्रके इन्द्रिय



इन्द्रके ये इन्द्रिय हैं । इससे स्पष्ट हो जाता है, कि यह इन्द्र निःसन्देह आत्मा है, जो अन्दर रहता है और अपनि शक्तियोंको बाहर इन्द्रियस्थानोंमें भेजकर विविध कार्य करता है ।

हमारे इन्द्रियभी बाह्य देवताओपर अवलम्बित है। जैसा नेत्र सूर्यपर, जिह्वा जलपर, नासिका पृथ्वीपर, त्वचा वायुपर और कर्ण आकाशपर अवलम्बित है। बाह्य देवताओसेही ये इन्द्रियगोलक बने हैं। इसका वर्णन ऐतरेय उपनिषदमें इस तरह किया है—

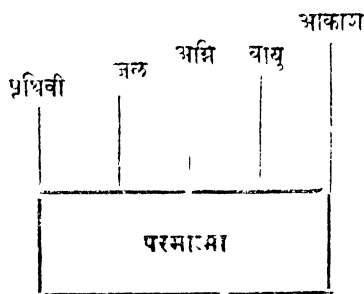
आदित्यश्चभूर्भूत्वाऽधिष्णीं प्राविशत् ।

दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशत् ।

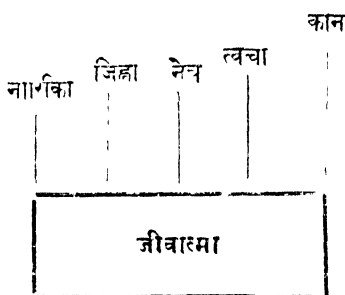
वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत् ॥ ऐतरेय ]

'सूर्य आस्र बन कर नेत्रस्थानमें प्रविष्ट हुआ, दिशा (आकाश) कान बन कर श्रवणोन्द्रियके स्थानमें प्रविष्ट हुई, वायु प्राण बन कर नासिकाके स्थानमें प्रविष्ट हुआ ।' इसी तरह अन्यान्य देवताएं अन्यान्य इन्द्रियस्थानोंमें प्रविष्ट हुई हैं ।

### विश्वसृष्टि



### व्यक्तिसृष्टि



इससे स्पष्ट हो जाता है, जो देवता इस विशाल जगत् में परमात्मदेहमें है, वे ही सूक्ष्म अक्षरूपसे इस जीवके देहमें इन्द्रियो रूपमें प्रकट हुई हैं । इस तरह विचार

करनेपर यह बात प्रकट होगी कि, जैसा इन्द्रियोंके पीछे जीवात्माके रूपमें 'इंद्र' है, उसी तरह विश्वव्यापक शक्तियों के पीछे परमात्मारूप में भी इन्द्रही है । अर्थात् एकही इन्द्रके जीवात्मा और परमात्मा ये रूप क्रमशः शरीरमें और विश्वमें है । यहांतक हमने इन्द्र का स्वरूप सामान्यतः भेदस्थानीय विद्युत् से पृथक् है, यह देख लिया । अब इसका विचार अधिक करनेके लिये सबसे प्रथम हम निरुक्त-कार श्री यास्कआचार्यजीका निर्वचन देखते हैं—

### निरुक्तकी व्युत्पत्ति ।

इन्द्र इरां दृणातीति वा, इरां ददातीति वा, इरां दधातीति वा, इरां दारयति इति वा, इरां धारयति इति वा, इन्द्रवे द्रवतीति वा, इन्द्रौ रमत इति वा, इन्धे भूतानीति वा, 'तद्यदेनं प्राणैः समैन्धंस्तदिन्द्रस्येन्द्रत्वं' इति विज्ञायते, इदं करणादित्याग्रयणः, इदं दर्शनादित्रियोपमन्वयः, इन्दतेर्वैश्वर्यकर्मणः, इन्द्रच्छत्रूणां दारयिता वा द्रावयिता वा, आदरयिता च यज्यनाम् ।

( निरुक्त० १०।१।९ )

इसमें निम्नलिखित प्रकार की निरुक्तियां दीं हैं । क्रमशः ये अब देखिये—

- (१) इरां दृणाति= जो अन्नको, जलको, बीजको फोड़ता है,
- (२) इरां ददाति= जो अन्न वा जलको देता है,
- (३) इरां दधाति= जो अन्न वा जलका धारण करता है,
- (४) इरां दारयते= जो अन्न वा जलका विदारण करता है,
- (५) इरां धारयते= जो अन्न वा जलका धारण करता है,
- (६) इन्द्रवे द्रवति= जो इन्दु-चन्द्रमा के लिये द्रवरूप होता है, रस निष्पन्न करता है,
- (७) इन्द्रौ रमते= जो जल या रसमें रमता है,
- (८) इन्धे भूतानी= जो भूतोंको प्रकाशित करता है, उजाला करता है, तेजस्वी करता है,
- (९) प्राणैः समैन्धन्= प्राणोंसे जिसका दीपन होता है, प्राणोंसे जो प्रकाशित होता है,
- (१०) इदं करोति= इस जगत् को जो निर्माण करता है,
- (११) इदं पश्यति= इस विश्व को जो देखता है,
- (१२) इन्द्रतीति इन्द्रः = परम वैश्वर्यसे जो संपन्न होता है,

(१३) इन्द्रं शश्रूणां शरयिता= शश्रुओं को विदारण करनेवाला,

(१४) इन्द्रं शश्रूणां द्राघययिता= शश्रुओंको जो भगा देता है,

(१५) यज्वनां आदरयिता=याजकोंका आदर करनेवाला,

ये निर्वचन श्री यास्काचार्य के दिये हैं । इस प्रत्येक निर्वचन की सत्यता की परीक्षा करना हो, तो इन अर्थोंके दर्शक मन्त्र वेदोंमें ढूढने चाहिये । जिस अर्थके वेदमन्त्र मिलेगे, वह अर्थ वेदप्रमाणयुक्त है, अतः आदरणीय है, और जो वेदमें नहीं दीखेगा, वह लेनेयोग्य नहीं, ऐसा समझना योग्य है । अन्तिम तीनों अर्थ वेदके प्रमाणोंसे परिपुष्ट है, इसके प्रमाण हम आगे देंगे । क्रमांक ९-१२ तकके अर्थ अध्यात्म में पाठक देख सकते हैं, इस विषयमें पाणिनी मुनि का सूत्र पूर्वस्थलमें दिया है और उसका विवरण किया है और इसी तरह की ऐतरेयोपनिषद् की व्युत्पत्ति आगे हम देंगे । अध्यात्मपक्ष के मन्त्र भी पर्याप्त मिलेगे । अन्य व्युत्पत्तियोंके लिये वेदमें मन्त्र देखने चाहिये । यह एक बड़ा खोज करनेका विषय है । इसका निर्देश यहां इसलिये किया है कि, इससे पाठकोंके मनमें इस बातका प्रकाश हो जाय कि, निरुक्तकार आदिकोंके अर्थ उस समय ही लेने चाहिये, जिस समय उस अर्थ को दर्शानेवाले मन्त्र मिल जायँ । अस्तु ! हम अब ब्राह्मणों और उपनिषदों में दिये हुए 'इन्द्र' पद के निर्वचन देखते हैं । सबसे प्रथम ऐतरेय उपनिषदमें एक उत्तम निर्वचन दिया है, वह देखिये—

### उपनिषदोंमें इन्द्रका अर्थ ।

तस्मादिन्द्रो नाम इन्द्रो ह वै नाम तमिन्द्रं संतं इन्द्र इत्याचक्षते परोक्षेण परोक्षप्रिया इव हि देवाः ॥ [ऐ० उ० ४।१।१४]

'इसका नाम 'इदं-द्र' था । इस 'इदं-द्र' को ही 'इन्द्र' परोक्षप्रियासे कहने लगे । 'इदं-द्र' का अर्थ है, (इद) इस शरीरमें (द्र) सुराख करनेवाला । इस शरीरमें सुराख करके वहां इंद्रियों को निर्माण करनेवाला । इस आत्माने इस शरीरमें अनेक सुराख किये और उनसे अपने विविध कार्य करने लगा । इन सुराखोंका नाम ही इंद्रियों है । इस विषय में पहिले दी हुई 'इंद्रिय' शब्दकी व्युत्पत्ति देखिये । इस सम्बन्धमें 'इरां ण्णाति' यह यास्कीय निरुक्ति देखने

योग्य है । इस तरह ऐतरेय उपनिषद् की यह व्युत्पत्ति इन्द्रका स्वरूप 'आत्मा' निश्चित करती है । अब और देखिये—

एष ब्रह्मा, एष इन्द्रः एष प्रजापतिः,

एतं सर्वं देवाः ।

[ ऐ० उ० ५।३ ]

'यही ब्रह्मा है, यही इन्द्र है, यही प्रजापति है, यही सब देव हैं ।' अर्थात् इन्द्र नामसे अथवा 'इदं-द्र' नामसे यहां वर्णन किया है, वही सब देवतारूप है अथवा उसीके रूप सब देवता है ।

ततः प्राणोऽजायत, स इन्द्रः स एषोऽस्पत्नोऽ

द्वितीयः ।

[ वृ० उ० १।५।१२ ]

'उससे प्राण हुआ, वही इन्द्र है और वही वायुरहित एक तथा अद्वितीय है ।' यहां प्राणकोही इन्द्र कहा है । तथा—

एतं इन्धं सन्तं इन्द्र इत्याचक्षते । [ वृ० उ० ४।२।२ ]

'इस इन्ध अर्थात् प्रदीप्त करनेवालेकोही इन्द्र कहते हैं ।' निरुक्तकारने यह व्युत्पत्ति दी है । 'इन्धे भूतानि' [निरु०] जो भूतोंको प्रकाशित करता है । निम्नलिखित वर्णनमें इन्द्रको परमात्मासे छोटा बताया है—

भीपास्मादग्निश्चेन्द्रश्च ।

[ तै० उ० २।८।१ ]

इस परमात्माके भयसे अग्नि और इन्द्र डरते हुए धीमे धीमे प्रकाशते हैं ।' तथा—

शतं देवानां आनन्दाः स एक इन्द्रस्यानन्दः ।

शतं इन्द्रस्यानन्दाः स एको बृहस्पतेरानन्दः ॥

[ तै० उ० २।८।१ ]

'देवोंके सौ आनन्दोंके बराबर इन्द्रका एक आनन्द है । इन्द्रके सौ आनन्दोंके बराबर बृहस्पतिक एक आनन्द है ।'

एष खलु आत्मा इन्द्रः ।

[ मै० उ० ६।८ ]

असौ वा आदित्य इन्द्रः

[ मै० उ० ६।३ ]

चाक्षुष इन्द्रोऽयम् ।

[ मै० उ० ७।१ ]

इन्द्रस्त्वं प्राण तेजसा रुद्रोऽसि परिरक्षिता ।

त्वमन्तरिक्षे चरमि सूर्यस्त्वं ज्योतिषां पतिः ॥

[ प्रश्न० २।९ ]

स ब्रह्मा, स शिवः, स हरिः, सन्द्रः, सोऽक्षरः,

परमः खगाट् ।

[ नृ० प० ता० उ० १।४ ]

'यह आत्मा निःसंदेह इन्द्र है । यह सूर्य इन्द्र है । चक्षु में तो तेज है, वह इन्द्र है । प्राण ही इन्द्र है, वही तेजसे रक्षण करता है, अन्तरिक्षमें यही संचार करता है,

सूर्यभी यही है । वही ब्रह्मा, शिव, हरि, इन्द्र, भक्षर और परम स्वराट् है ।' अर्थात् प्राण ही इन्द्र है और वही सब देवताओंका रूप धारण करता है ।

### मस्तकमें इन्द्रशक्ति ।

अपने शरीर मस्तकमें एक स्तन जैसा अवयव है, इसका वर्णन तै० उपनिषद् में निम्नलिखित प्रकार आया है—

अन्तरेण तालुके य एष स्तन इव अवलंबते सा इन्द्रयोनिः । [तै०उ०१।६।१]

'तालुके अन्दर [मस्तकके बीचमें] एक स्तन जैसा अवयव है, वह इन्द्रशक्तिको उत्पन्न करनेवाला है ।' अपने शरीर में इन्द्रशक्ति का संचार यहांसे होता है । इसको 'पीनियल ग्लण्ड' [इन्द्रग्रंथी] कहते हैं । योगसाधन करते हुए इस पर ध्यान करनेसे यह ग्रन्थी उत्तेजित होती है, जिससे अनेक लाभ होते हैं । इस विषयमें 'इन्द्रशक्तिका विकास' नामक पुस्तक अवश्य देखिये ।

इन्द्रके विषयमें ब्राह्मणग्रंथोंमें निम्नलिखित वचन मिलते हैं । वे अब देखिये—

### ब्राह्मणग्रंथोंमें इन्द्रका अर्थ ।

(१) इंधो वै नाम एष योऽयं दक्षिणेऽक्षन् पुरुषः  
न वा एतं इंधं संतं इंद्र इत्याचक्षते ।

[श०ब्रा०१।४।१।१२]

(२) अस्मिन् वा इदमिन्द्रियं प्रत्यस्थादिति तर्दिद्रस्य  
इंद्रत्वम् । [तै०ब्रा०२।२।१०।४]

(३) इंद्रस्य इंद्रियेणाभिषिञ्चामि । [गि०ब्रा०८।७]

(४) इंद्र [एवैनं] इंद्रियेण [अवति] [तै०ब्रा०१।७।६।६]

(५) दधातु इंद्र इंद्रियम् । [तां०ब्रा०१।३।५]

(६) मयि इंद्र इंद्रियं दधातु । [श०ब्रा०१।८।१।४२]

(७) इंद्र इति होतं आचक्षते य एषः [सूर्यः] तपति ।  
[श०ब्रा०४।६।७।११]

(८) एष वै शुक्रो य एष तपति एष उ एवेन्द्रः ।

[श०ब्रा०४।५।५।७;४।५।९।४]

(९) स यः स इंद्र एष एव स य एष तपति ।

[जै०ब्रा०उ०१।२।८।२;१३।१।५]

(१०) यः स इंद्रोऽसौ स आदित्यः । [श०ब्रा०८।५।३।२]

(११) अथ यत्रैतत्प्रदीप्तो भवति । उच्चैर्धूमः परमया  
जूत्या बल्यलीति तर्हि हैष [अग्निः] भवर्ताद्रः ।

[श०ब्रा०२।३।२।११]

(१२) इंद्रो वाग् इत्यु वाऽआहुः [श०ब्रा०१।४।५।४]

(१३) तस्मादाहुस्त्रिन्द्रो वागिति [श०ब्रा०१।१।६।१८]

(१४) अथ य इंद्रः सा वाक् । [जै०ब्रा०उ०१।३।३।२]

(१५) वाग्वा इंद्रः । [कौ०ब्रा०२।७;१।३।५]

(१६) वागिन्द्रः । [श०ब्रा०८।७।२।६]

(१७) यो वै वायुः स इन्द्रो य इन्द्रः स वायुः  
[श० ब्रा० ४।१।३।१९]

(१८) योऽयं चक्षुषि पुरुष एष इन्द्रः ।  
[जै०ब्रा०उ०१।४।३।१०]

(१९) ततः प्राणोऽजायत स इन्द्रः ।  
[श०ब्रा०१।४।४।३।१९]

(२०) प्राण एवेन्द्रः । [श०ब्रा०१।२।९।१।१४]

प्राण इन्द्रः । [श०ब्रा०६।१।२।२८]

(२१) हृदयमेवेन्द्रः । [श०ब्रा०१।२।९।१।१५]

(२२) यन्मनः स इंद्रः । [गो०ब्रा०उ०४।१।१]

(२३) मन एवेन्द्रः । [श०ब्रा०१।२।९।१।१३]

(२४) इंद्रो वै यजमानः । [श०ब्रा०२।३।२।११; ३।३।३।१०;४।५।४।८;५।१।३।४;८।५।३।८]

(२५) इत्येन वा एष इंद्रो भवति यश्च क्षत्रियो यद्  
च यजमानः । [श०ब्रा०५।३।५।२७]

(२६) इंद्रो वै राजन्यः । [तै०ब्रा०३।८।२।३।२]

(२७) इंद्रः क्षत्रम् । [श०ब्रा०१।०।४।१।५; कौ०ब्रा०१।२।८; श०ब्रा०२।५।२।२७-२।५।४।८; ३।९।१।१६; ४।३।३।६]

(२८) यदशनिर्दिन्द्रः । [कौ०ब्रा०६।९]

(२९) स्तनयित्तुरेवेन्द्रः । [श०ब्रा०१।१।६।३।९]

(३०) इन्द्रो ब्रह्मेति । [कौ०ब्रा०६।१।४]

(३१) प्रजापतिर्वा स इन्द्रः । [श०ब्रा०२।३।१।७]

(३२) देवलोको वा इन्द्रः । [कौ०ब्रा०१।६।८]

(३३) इन्द्रो बलं बलपतिः । [श०ब्रा०१।१।४।३।१२; तै०ब्रा०२।५।७।४]

(३४) वीर्यं वा इन्द्रः [तां०ब्रा०९।७।५, ८।गौ०ब्रा०उ०६।७]

(३५) इन्द्रियं वीर्यं इन्द्रः [श०ब्रा०२।५।४।८; ३।९।१।१।५; ५।४।३।१८]

- (३६) शिस्नमिन्द्रः । [श०ब्रा०१२।१।११६]
- (३७) रेत इन्द्रः । [श०ब्रा०१२।५।१।१७]
- (३८) अर्जुनो ह वै नाम इन्द्रः । [श०ब्रा०२।१।२।११; ५।४।३।७]
- (३९) इन्द्रो आहवनीयः । [श०ब्रा०२।५।१।२८; २।३।२।२]
- (४०) इन्द्र एष यदुद्राता । [जै०ब्रा०७०।१।२।२।२]
- (४१) इन्द्रः खलु वै श्रेष्ठो देवतानाम् । [तै०ब्रा०२।३।१।३]
- (४२) इन्द्रः सर्वा देवता, इन्द्रश्रेष्ठा देवाः । [श०ब्रा० ३।४।२।२; १।२।३।२०]
- (४३) ततो वा इन्द्रो देवानामधिपतिरभवत् । [तै०ब्रा०२।२।१।०।३]
- (४४) इन्द्रो वै देवानामाजिष्ठो बलिष्ठः सहिष्ठः सत्तमः, पारयिष्णुतम । [ऐ०ब्रा०७।१।१६, ८।१०]
- (४५) इन्द्रो वै देवानां ओजिष्ठो बलिष्ठः । [कौ०ब्रा०६।१४; गो०ब्रा०७०।१।१६]
- (४६) इन्द्र ओजसां पते । [तै०ब्रा०२।१।१।४।२]
- (४७) इन्द्राय अंहोमुचे । [तै०ब्रा०१।१।३।७]
- (४८) इन्द्राय सुत्राग्णे । [तै०ब्रा०१।१।३।७]
- (४९) ओकः कारी हैवैषामिन्द्रो भवति । [गो०ब्रा०६।४, ५।१५, ऐ०ब्रा०७।१।७, २०]
- (५०) इन्द्रो यन्नस्यात्मा, इन्द्रो देवता । [श०ब्रा०१।५।१।३।३]
- (५१) ऋक्सामे वा इन्द्रस्य हरी [ऐ० ब्रा० २।२४; तै० ब्रा० १।६।३।५]
- (५२) इन्द्रस्य हरी बृहद्रथंतरे । [ता० ब्रा० १।४।८]
- (५३) सेना इन्द्रस्य पत्नी । [गो० ब्रा० २।९]
- (५४) ऐंद्राः पशवः । [ऐ० ब्रा० ६।२५]
- (५५) एतद्वा इन्द्रस्य रूपं यदृषभः । [श०ब्रा०२।५।३।१८]
- (५६) इन्द्रो वा अश्वः । [कौ० ब्रा० १।५।४]
- (५७) ऐंद्रो वै माध्यंदिनः । [गो० ब्रा०७०।१।२३, ६।९। कौ० ब्रा० ५।५, २।१७; ऐ० ब्रा० ६।३०]
- (५८) इन्द्रो ज्योतिर्ज्योतिरिन्द्र इति । [कौ०ब्रा०१।४।१]
- (५९) यत् शुक्लं तदैन्द्रम् । [श० ब्रा० १।२।१।१।१२]
- इतने ब्राह्मणग्रन्थोंके वचनों में 'इन्द्र' के जो अर्थ दिये हैं, वे ये हैं— [१] दक्षिण नेत्रमें जो पुरुष है, वह इन्द्र है, [२] इंद्रियकी शक्तिसे इन्द्र का बोध होता है, [३] इन्द्र

इंद्रियसे रक्षा करता है, [४] सूर्य ही इन्द्र है, [५] अग्नि जो बलसे जलता है, जिसका धूम ऊपर जाता है वह इन्द्र है, [६] वाणी ही इन्द्र है, [७] वायुही इन्द्र है, प्राण इन्द्र है, [८] हृदय, मन ये इन्द्र हैं, [९] यजमान इन्द्र है, [१०] क्षत्रिय, राजन्य इन्द्र है, [११] क्षात्र तेज इन्द्र है, [१२] मेघस्थानीय विद्युत् इन्द्र है, [१३] ब्रह्मा इन्द्र है, [१४] प्रजापति, देवलोक, ये इन्द्र हैं, [१५] बल और बलवान् दोनों इन्द्र हैं, [१६] वीर्य इन्द्र है, [१७] शिक्ष और रेत इन्द्रिय है, [१८] अर्जुन इन्द्र है (इन्द्र पुत्र होनेसे), [१९] आहवनीय अग्नि इन्द्र है, [२०] उद्राता इन्द्र है, [२१] देवोंमें श्रेष्ठ देव इन्द्र है, सब देवताही इन्द्र हैं, देवोंका राजा इन्द्र है । [२२] जो देवोंमें बलिष्ठ, ओजिष्ठ, सहिष्ठ और संकटोंसे पार ले जानेवाला है, वह इन्द्र है, [२३] पापसे छुड़ानेवाला, रक्षा करनेवाला इन्द्र है, [२४] घर बनानेवाला इन्द्र है, [२५] यज्ञ का आत्मा, यज्ञ का देवता इन्द्र है, [२६] बैल इन्द्र का रूप है, अश्व इन्द्र है, [२७] ज्योति इन्द्र है, जो श्वेत तेज है, वह इन्द्र है, [२८] ऋचा व साम, बृहत् और रथन्तर ये इन्द्रके घोड़े हैं । [२९] सेना इन्द्रकी पत्नी है ।

इन इन्द्रके अर्थों या स्वरूपों को देखनेसे केवल मेघ-स्थानीय विद्युत्ही इन्द्र है, ऐसा कहना योग्य नहीं हो सकता । शरीरमें इन्द्र= आंखकी पुतली, इंद्रिय, हृदय, मन, प्राण, आत्मा, वाणी, बल, ओज, सह, गौरवर्ण, शिक्ष, रेत ये शरीरमें इन्द्रके रूप हैं ।

मानवोंमें इन्द्र= यजमान, ब्रह्मा, उद्राता, राजा, क्षत्रिय, वीर, बलिष्ठ, ओजिष्ठ, इच्छिष्ठ, दुःखोंके पार ले जानेवाला, वक्ता, घर बनानेवाला इन्द्र है ।

देवोंमें इन्द्र= सब देवता, देवोंका राजा, सूर्य, आदित्य, अग्नि, तेज, विद्युत्, मेघस्थानीय बिजुली इन्द्र हैं ।

पशुओंमें इन्द्र= बैल और अश्व ये पशुओंमें इन्द्र हैं । इस तरह इन्द्रके रूप विविध स्थानोंमें हैं । 'इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते' [ऋ०६।४०।१८] इन्द्र अपनी शक्तियोंसे नाना रूप धारण करता है, यह इस तरह उनके नाना रूप हैं। सब विश्वही उसका रूप है और विश्वान्तर्गत हरएक रूप इन्द्रकाही रूप है ।

इस तरह इन्द्र की महिमा देखनेयोग्य है । अब वेदुमें जो नाम इन्द्रके लिये आये हैं, उनका विचार करते हैं—

## वेदमें इन्द्रके विशेषण ।

परमेश्वर का ही नाम 'इन्द्र' है, ऐसा स्पष्ट दर्शानेवाले कई पद वेदके मंत्रोंमें है देखिये—[अनूनः] किसी स्थानपर न्यून्य नहीं, सब स्थानोंमें एक जैसा भरा है, सर्व व्यापक [दिवि-क्षाः द्युक्षः] द्युलोकमें, आकाशमें रहनेवाला [स्वर्पति] द्युलोक अथवा आकाशका स्वामी, [विश्वतस्पृथुः] विश्वके चारों ओर भरपूर विश्वसे भी अधिक व्यापक, [अन्तरिक्षप्रा] अन्तरिक्षमें, वाचके अवकाशमें परिपूर्ण होकर रहनेवाला, [विभुः] व्यापक, विश्वव्यापक, [विश्वभूः] विश्वमें भरपूर, विश्वभरमें रहनेवाला, [दिविस्पृदा] आकाशमें व्यापक ये शब्द इन्द्रदेव विश्वभरमें परिपूर्ण-तया व्यापक हैं, यह भाव बताते हैं कि सर्वव्यापक परमेश्वर ही इन्द्र है, यह बात इन शब्दोंसे सिद्ध होती है ।

[विश्वकर्मा] सब विश्वकी रचना करनेवाला, विश्वरूप कर्म करनेवाला [लोककृत्] सब सूर्यादि लोकोंका निर्माण करनेवाला [विश्वमनाः] विश्व जितना जिसका व्यापक मन है, [विश्ववेदाः] विश्वको यथावत् जाननेवाला ये पदभी इन्द्र परमात्माही हैं, ऐसा बताते हैं । ये पद वेदमंत्रों में इन्द्रके गुण बताते हैं । विश्वकी रचना करनेवाला और विश्वको जाननेवाला इन्द्र निःसन्देह परमेश्वर हैं ।

[विश्वरूपः] विश्व ही जिसका रूप है, विश्वमें जो जो वस्तु है, वह सब इन्द्रकाही रूप है। इन्द्रही नाना रूप धारण कर विश्वमें रहता है । भगवद्गीता का ११वाँ अध्याय इसी 'विश्वरूपदर्शन' नामका है । वही भाव दर्शानेवाला इन्द्रवाचक यह शब्द वेदमंत्रमें है । [विश्व-देवः] सब देव जिसके अश हैं । विश्वरूपी परमेश्वरकाही यह वर्णन है । सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, आदि सब देवताएं जिसके शरीरके अंग प्रत्यग हैं । परमात्मा ही इन्द्र है, यह आशय इन्द्रवाचक इन शब्दोंसे व्यक्त होता है ।

(ईशानकृत्) स्वामियोंको बनानेवाला अर्थात् राजाओंका भी जो राजा है, प्रभुका भी प्रभु, [बृहत्पतिः] इस बड़े विश्व का एकमात्र पालन करनेवाला, [वास्तोष्पति] सब वस्तुओंका पालक, [ज्येष्ठ राजः] सब राजाओंमें जो सबसे ब्रह्म राजा है, [ज्येष्ठतमः] श्रेष्ठोंमें जो श्रेष्ठ है, [देवतमः] सब देवोंमें जो श्रेष्ठ देव है, [द्युमत्तमः] प्रकाशवानोंमें जो सबसे अधिक प्रकाशमान है, [पितृतमः]

पिताओंका भी जो पिता है, [शिवतमः, शंतमः, शंभूः] कल्याण करनेवालोंमें जो सबसे अधिक कल्याण करनेवाला है, [असमः] जिसके समान कोई नहीं है, ये सब इन्द्र-वाचक पद परमेश्वरका ही बोध कराते हैं ।

[स्वरोच्च] उसका अपना निज तेज है, किसी दूसरेके तेजसे वह तेजस्वी नहीं बना, अपने तेजसेही वह सदा प्रकाशता रहता है, [बृहद्भानुः] उसका तेज बड़ा भारी है, उससे बड़ा किसीका भी तेज नहीं है, [चित्रभानुः] उसका तेज चित्रविचित्र है । वह स्वयं ज्योति है । ये शब्द परमेश्वरका स्वयं तेजस्वी होना बताते हैं । इन्द्रके लिये ये शब्द प्रयुक्त हुए हैं । अपने तेजसे सब विश्वको सुंदर रूप देता है, यह भाव [सुरूपकृत्] पदसे व्यक्त होता है ।

यह [अमर्त्य] अमर है, [अजरः] अजर है । [अजुरः, अजुर्यः, अजुर्यत्] क्षीण होनेवाला नहीं है, सबका [पूर्वजाः] पूर्वज है, सबका आदि है, सब धर्मोंका निर्माणकर्ता [धर्मकृत्] है, [विधर्ता] सबका आधार है, ये पद इन्द्रके लिये प्रयुक्त हुए हैं और ये स्पष्टताके साथ ईश्वरके वाचक प्रतीत होते हैं । [अनपच्युत्] इसको स्वस्थानसे कोई हिला नहीं सकता, यह अपने स्थानमें सदा रहता है ।

[विश्वचर्षणि] सर्व मनुष्यसमाजही परमेश्वरका रूप है, जनता-जनार्दन ही उसको कहते हैं, [पाञ्चजन्यः] पञ्च जन अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद ये पांच प्रकारके लोग उसका स्वरूप है, [विश्वानर] सब मानवजातिही ईश्वरका स्वरूप है । 'ब्राह्मण इस ईश्वरकी सिर है, क्षत्रिय इसके बाहु है, वैश्य इसका उदर है और शूद्र इसके पांव हैं । [ऋ० १०।१०।१२] इस वेदोक्त वर्णन के अनुसार ये पद निःसन्देह परमात्मवाचक हैं ।

ये पद किस मन्त्रमें प्रयुक्त हुए हैं, यह पाठक इन सूक्तियों में देख सकते हैं और इनके मन्त्रभी देख सकते हैं । पर ये सब शब्द इन्द्रवाचक हैं और ये सब शब्द परमात्माके ही वाचक हैं । अर्थात् 'इन्द्र' परमात्माही है । इस वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि, जो इन्द्र को केवल मेघ-स्थानीय विद्युत् ही मानते हैं, वे इन्द्रके इस परमेश्वरीय भाव को नहीं जान सकते ।

एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति ।

अग्निं यमं मातरिश्वानं आहुः ॥ [ऋ० १।१६।४६]

“एकही सत् है, जिसका वर्णन विद्वान् लोक अनेक प्रकार से करते हैं, उसको अग्नि, यम, मातरिश्वा, वायु, इन्द्र, मित्र, वरुण आदि कहते हैं।” इस तरह उस ‘एकं सत्’ को इन्द्रपद से वर्णन किया। अतः इन्द्र आत्मा है अथवा ‘एकं-सत्’ ही है। अब इस विषयके कुछ मन्त्र यहां देखते हैं—

सबका एक राजा ।

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शमस्य च  
शृंगिणो वज्रबाहुः । सेदु राजा क्षयति चर्ष-  
णीनां अरात्र नेमिः परि ता बभूव ॥

( ७२९ ऋ० १ ३२-१५ )

इंद्र ( यातः अवसितस्य राजा ) जगम और स्थावर पदार्थमात्र का राजा है, वही ( वज्रबाहु ) वज्र के समान जिसके बाहु है, ऐसा इन्द्र ( शमस्य च शृंगिणः ) शान्त और सींगवालों का अर्थात् शान्त और क्रूरों का भी राजा है। वही ( चर्षणीनां राजा ) सब प्रजाजनों का राजा है। जिस तरह ( अरात्र नेमिः ) अरों को चक्र की लोहपट्टि घेरती है, उस तरह ( ताः परि बभूव ) इन सब को वही घेरता है।

सब का एकमात्र प्रभु है, वह सब को घेरता है, वह सब के चारों ओर है। सर्वव्यापक है। सब स्थावर जंगम का एकमात्र प्रभु है। तथा और देखिए—

य एकश्चर्षणीनां वसूनां इरज्यति ।

इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ॥ ( ३६ ऋ० १-७-९ )

“ इन्द्र ही पञ्चजनों का, और सब प्रजाजनों का तथा ( वसूनां ) सब धनों का एकमात्र स्वामी है । ”

स्थावरजंगम का एक ही प्रभु है। इस विश्व के अनेक ईश्वर नहीं हैं, यही सब का एकमात्र एक ही प्रभु है। मनुष्यों, पशुओं और सब अन्य वस्तुओं का अधिष्ठाता यही है। इसकी आज्ञा का कोई उल्लंघन कर नहीं सकता। यह ब्रह्मलोक से भी बड़ा है। इस विषय में आगे का मंत्र देखिए—

ब्रह्मलोक से बड़ा ।

दिवश्चिदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न महा  
पृथिवी चन प्रति । भीमस्तुविष्मान् चर्ष-  
णिभ्य आतपः शिशीते वज्रं तेजसे न वंसग ॥

( ७९७ ऋ० १-५५-१ )

ब्रह्मलोक से भी ( अस्य वरिमा ) इस इन्द्र का महिमा

बहुत बड़ा है। पृथ्वी से भी बहुत बड़ा है। वह इन्द्र ( भीमः ) भयंकर ( तुर्विष्मान् ) बलवान् और ( चर्ष-  
णिभ्यः आतपः ) लोगों के लिये प्रकाश देनेवाला है। ( वंसगः ) बैल जैसा वह वीर ( तेजसे वज्रं शिशीते ) तीक्ष्ण करने के लिये शूर के वज्र को तेज करता है।

आ पप्रौ पार्थिवं रजो बद्धधे रञ्चना द्विवि ।

न त्वावाँ इंद्र कश्चन न जानो न जनिष्यते  
अति विश्वं ववक्षिथ ॥ ( ९२० ऋ० १-८१-५ )

इन्द्र ने ( पार्थिव रजः पप्रौ ) पृथ्वी और अन्तरिक्ष को व्यापा है, उसने ( द्विवि रोजना बद्धधे ) ब्रह्मलोक में तेजस्वी तारागण रखे हैं। तेरे समान दूसरा कोई नहीं है, न कोई है और न होगा। ( विश्व अति ववक्षिथ ) तू विश्व से बढकर है।

नहि त्वा रोदसी उभे ऋषायमाणमिन्वतः ।

जेपः स्वर्वतग्पिः सं गा अस्मभ्यं धनुहि ॥

( ६५ ऋ० १-१०-८ )

हे इन्द्र ! ( उभे रोदसी ) ब्रह्मलोक और पृथिवी ये दोनों ( त्वा न इन्वतः ) तुझ को अपने अन्दर समा नहीं सकते। तू ( ऋषायमाण ) शत्रुओं का नाश करनेवाला है। ( स्वर्वती अपः जेष ) तेजस्वी उदको का जय करके वह उदक और ( गाः ) गौंवे ( अस्मभ्य सं धनुहि ) हम सब के लिये दो।

इन्द्र पृथ्वी और ब्रह्मलोक से भी बढकर है। सर्वत्र व्याप कर रहनेवाला वह है आंग वह हमसे भी अधिक व्यापक है, अर्थात् वह जहां नहीं, ऐसा स्थान नहीं है।

त्वमस्य पांग रजसो व्योमनः स्वभृत्योजा  
अवसे धृपन्मन । चकृपे भूमि प्रतिमानमो-  
जसोऽपः स्व परिभृग्या दिवम ॥

( ७७१ ऋ० १-२२-१२ )

( त्वं अस्य रजस व्योमनः पारे ) तूने इम अन्तरिक्ष और आकाश के परे रहकर ( भूमिं चकृपे ) भूमि का निर्माण किया। ( स्वभृत्योजा धृपन्मन ) तू अपने सामर्थ्य से युक्त और शत्रुका धर्षण करनेवाला है, अतः हमारी ( अवसे ) रक्षा करने के लिये यह सब ( ओजसः प्रतिमान ) अपने बल के योग्य कर्म करता है। तू ( स्वः दिव अपः परिभूः एषि ) ब्रह्मलोक, अन्तरिक्ष और अपोलोक को घेर कर रहता है।



त्रिलोक इन्द्र से विभक्त नहीं ।

न यं विविक्तो गेदसी नान्तरिक्षाणि वज्रि-  
णम् । अमादिदस्य तित्विषे समोजसः ॥

( ३११ ऋ० ८-१२-२४ )

( य वज्रिण ) जिम इद्र को ( रोदसी ) घुलोक और  
पृथ्वी तथा ( अन्तरिक्षाणि ) अन्तरिक्ष ( न विविक्तः )  
अपने मे पृथक् कर नहीं सकते । उस इद्र के ( भोजसः )  
बल से सब कुछ ( तित्विषे ) प्रकाशित होता है ।

कुछ भी दूर नहीं है ।

न ते दूरे परमा चिद् रजांसि आ तु प्र याहि  
हरिवो हरिभ्याम् । स्थिराय वृष्ण सवना  
कृतमा युक्ता ग्रावाणः समिधाने अग्नौ ॥

( १२३९ ऋ० ३-३८-२ )

( परमा रजांसि ) दूर रजोलोक भी तरे लिये ( न ते  
दूरे ) दूर नहीं है, हे ( हरिव ) अश्वयुक्त इन्द्र ! ( हरि-  
भ्यां ) अपने दानो घोडो के साथ ( आ प्रयाहि ) आओ,  
( स्थिराय वृष्ण ) तुज जैसे स्थिर बलवान् वीर के लिये ये  
सवन किये है और अग्नि प्रज्वलित करके ( ग्रावाणः  
युक्ताः ) रस निकालने के लिये प्राँवों को लगा दिया है ।

घुलोक का उत्पादक इन्द्र ।

जनिता दिवो जनिता पृथिव्या पिवा सोमं  
मदाय कं शतक्रतो । यं ते भागमधारयन्  
विश्वोः सहानः पृतना उरु जयः समस्तुजित  
मरुत्यां इन्द्र सन्पत ॥ ( १७७२ ऋ० ८-३६-४ )

इन्द्र, घुलोक और पृथ्वीका उत्पादक करनेवाला है । तू  
सोमका पान कर, आनन्द प्राप्त कर । सब देव जो भाग  
तरे लिए निश्चित करते हैं, वह यह है । मब ( पृतनाः )  
सैन्य का पराभव करनेवाला तू है और ( अप्सु जित् )  
जलमे अथवा अन्तरिक्षमे विजय करनेवाला भी तू ही है ।

पृथ्वी और जल का उत्पादक ।

स वृत्रहेन्द्रः कृष्णयोनीः पुरंदरो दासीरैर्यद्  
वि । अजनयन् मनवे क्षां अपश्च सत्रा शंसं  
यजमानस्य तृतात ॥ ( १२१४ ऋ० २ २०-७ )

“ वह वृत्र का नाश करनेवाला और ( पुरन्दरः ) शत्रु  
के नगरो का भेदन करनेवाला इन्द्र ( कृष्णयोनीः

दासी ) काळे दासों अर्थात् शत्रुओं को ( विप्रेर्यत् )  
भगा देता है । उसने मनुष्योंके लिए ( क्षां अपः च )  
पृथ्वी और जल उत्पन्न किया । वह इन्द्र यज्ञ करनेवालों  
की प्रशसा की वृद्धि करे ।

‘ कृष्णयोनी ’ शब्द का अर्थ कृष्ण कृश्य करनेवाले दुष्ट  
शत्रु हैं । ऐसे शत्रुओं को इन्द्र भगा देता है ।

आकाश खडा करनेवाला ।

अवंशे वामस्तभायद् बृहन्तं आ रोदसी अपृ-  
णदन्तरिक्षम् । न धारयत् पृथिवी पप्रथञ्च  
सोमस्य ता मद् इन्द्रश्चकार ॥ सञ्चेव प्राचो वि-  
मिमाय मानैः वज्रेण खान्यत्पृणत् नदीनाम् ।  
वृथासृजत् पथिभिर्दीर्घयाथैः सोमस्य ता  
मद् इन्द्रश्चकार ( ११६३-६४ ऋ० २।१।५।२-३ )

( अवंशे ) आधाररहित आकाश में ( बृहन्तं चां अस्त-  
भायत् ) बडे आकाश को स्थिर किया और ( रोदसी )  
पृथ्वी और आकाश को तथा ( अन्तरिक्ष ) अन्तरिक्ष को  
( आ अपृणत् ) भर दिया । उसने पृथ्वी का धारण किया  
और बढाया ।

( मानैः ) नाप लेकर ( प्राचः सञ्च इव ) जैसा मकान  
बनाते है, वैसा ( नदीनां खानि अतृणत् ) वज्रसे नदियोंके  
मार्ग बना दिये ( दीर्घयाथैः पथिभिः ) दीर्घ मार्गों से  
जानेवाली नदियां उसने सहजी उत्पन्न की है ।

शिवकी रचना करनेका यह अपूर्व वर्णन है । सब लोक-  
लोकांतर निराधार अन्तराल में रखे हैं, यह प्रभु का अद्भुत  
सामर्थ्य है । और देखिए—

नक्षत्र स्थिर किये ।

इन्द्रेण रोचना दिवो दृढहानि दृढितानि च ।  
स्थिराणि न पराणुदे ॥ ( ३६२ ऋ० ८-१४-९ )

इन्द्रने आकाशमें तेजस्वी तारागण स्थिर और सुदृढ  
किए । उन स्थिरोंको कोई ( न पराणुदे ) हिला नहीं सकता ।

नक्षत्र स्थिर हैं, यह यहाँ कहा है । नक्षत्रों को स्थिर  
करनेवाला यही इन्द्र है । अतः इसकी शक्ति अगाध है,  
सब उसके सामने काँपते हैं—

स्थावर, जंगम कांपते हैं ।

अभिष्टने ते अद्रिवो यत् स्था जगच्च रेजते ।  
त्वष्टा चित्त तव मन्यव इन्द्र वेविज्यते भिया  
अर्चन् अनु स्वराज्यम् ॥ ( ११३ क्र० १-८०-१४ )

हे (अद्रिवः) इन्द्र ! ( ते अभिष्टने ) तेरे गर्जन से जो  
स्थावर, जंगम है, वह सब (रेजते) कांपने लगता है, (तव  
मन्यवे ) तेरा क्रोध होनेपर त्वष्टा भी ( भिया वेविज्यते )  
डर से कांपता है । ऐसा तेरा प्रभाव है, अतः स्वराज्य की  
अर्चना कर ।

तव त्विषो जनिमन् रेजत यौ रेजद् भूमिर्भि-  
यसा स्वस्य मन्यो । ऋघ्रायन्त सुभ्रुः पर्व  
तास आर्दन् धन्वानि सरयन्त आपः ॥२॥  
सुवीरस्ते जनिता मन्यत द्यौर्गिन्द्रस्य कर्ता  
स्वपस्तमोभूत् । य ई जजान स्वयं सुवज्रं  
अनपच्युतं सदसो न भूम ॥४॥ य एक इच्छ्या-  
घयति प्र भूमा राजा कृष्टीनां पुरुहत इन्द्र ।  
सत्यमेनमनु विश्वे मदन्ति रार्ति देवस्य गृणतो  
मघोनः ॥५॥ ( १४८९, ९१-९२ क्र. ४१७। २, ४, ५ )

( तव त्विष जनिमन् ) तेरे जन्मके समय तेरे तेजसे  
( यौ रेजत ) बुलोक कांपने लगा, ( भूमिः रेजत् ) भूमी भी  
कांपने लगी, ( स्वस्य मन्योः भियसा ) तेरे क्रोध के भयसे  
ये भयभीत हुए, ( पर्वतापः सुभ्रुः ऋघ्रायन्तः ) उत्तम  
पर्वत फट गए, ( धन्वानि आर्दन् ) शुष्क देश गीले हुए,  
और ( आपः सरयन्त ) जल बहने लगा ।

( ते जनिता यौ सुवीरः भमन्यत् ) तेरा जनक पिता  
बुलोक उत्तम पुत्र से युक्त अपने आपको मानने लगा,  
( इन्द्रस्य कर्ता ) वह इन्द्र का प्रकट करनेवाला था और वह  
( सु-अप -तम ) बड़े कर्मों का कर्ता हुआ । उसने ( सुवज्र )  
उत्तम वज्रवारी (अनपच्युतं) न गिरनेवाले ( स्वयं ) तेजस्वी  
इन्द्र को उत्पन्न किया ।

वह एक ही वीर ( भूमा व्यावयति ) बड़े शत्रुको हटात,  
है, वही स्तुत्य इन्द्र ( कृष्टीनां राजा ) प्रजाओंका एकमात्र राजा  
है । वह इन्द्र उपासक को धन देता है, इसलिये सब  
संसार ( विश्वे एनं सत्यं अनुमदन्ति ) इस सच्चे वीर का  
अनुमोदन करता है ।

सब का वश करनेवाला इन्द्र ।

अर्चा शक्राय शाकिने शर्चावते शृण्वन्तमिन्द्रं  
महयन्त्राभि ष्टुहि । यो धृष्णुनाः शयमा रोदसी  
उभे वृषा वृषन्वा वृषभो न्यञ्जते ॥

( ७८७ क्र १।५४।२ )

उम शक्तिमान् और बुद्धिमान् इन्द्र की स्तुति करो कि,  
जो अपने ( धृष्णुना शयमा ) धर्षणशील बल से दोनों  
द्यावापृथिवी को अपने वश में करता है । जैसा ( वृषभ )  
वीर्यशाली वीर अपने सामर्थ्य से स्त्री को वश करता है ।

सब विश्व जिस के सामने कांपता है, भयभीत होता  
है, जिस की मर्यादा का उल्लंघन नहीं कर सकता । अतः  
प्रभु सब को वश करनेवाला है ।

इंद्र का असीम सामर्थ्य ।

असमं क्षत्रमसमा मर्नीषा प्र सोमपा अपसा  
सन्तु नेम । ये त इन्द्र उदुषो वर्धयन्ति माहि क्षत्रं  
श्रविरं वृष्ण्यं च ॥ ( ७९३ क्र १।५४।८ )

( अ-सम क्षत्र ) इन्द्र का क्षात्र तेज असीम है, उम  
की ( मर्नीषा असमा ) बुद्धि भी असीम है । ( नेम ) ये  
याजक ( अपसा प्र सन्तु ) अपने कर्म से उत्कर्ष को प्राप्त  
हों । क्योंकि जो लोक तेरी वधाई करते हैं, वे ( माहि  
स्थविर वृष्ण्यं क्षत्र ) बड़ा विशाल, पौरुषयुक्त क्षात्र तेज  
प्राप्त करने हैं ।

इतना असीम सामर्थ्य है, इसीलिये सब पर उम का  
प्रभुत्व चल रहा है, सब को वश में वह रखता है । उम  
पर कोई हुकूमत नहीं कर सकता, पर सब पर उमी को  
हुकूमत चलती है । देखिये—

मन्यमिन् तन्न त्वावां अन्यो अस्तीन्द्र देवो न  
मन्यो ज्यायान । अहन्नहि परिशयानमर्णोऽवा-  
सृजो अपो अच्छा समुद्रम् ॥ ( १०७१ क्र. ६।३०।४ )

हे इन्द्र ! यह सत्य है कि, तरे जैसा न कोई देव है  
और ( न मर्त्यः ) न मानव है । तेरे से ( उपायान् ) वडा  
ता कोई नहीं है । ( अर्णः परिशयानं अहि अहन् ) जल का  
प्रतिबध करनेवाले शत्रु का वध कर के तूने ( अप समुद्र  
अवासृजः ) जल खुला किया, जो समुद्र तक बहता रहा ।

इएक वस्तुमात्र में प्रभु का सामर्थ्य दीखता है । क्या  
जल में, क्या वनरपति में, क्या अन्य पदार्थों में, उम का

सामर्थ्य विश्वभर में ओतप्रोत भरा है। अतः सब पर उस का प्रभुत्व स्थिर है और उस की आज्ञा का कोई उल्लंघन नहीं कर सकता, इस विषय में देखिये—

**तेरे मार्ग का अतिक्रमण सूर्य नहीं करता ।**

दिशः सूर्यो न मिनाति प्रदिष्टा दिवेदिवे हर्यश्व-  
प्रसूता । सं यदानलध्वन आदिदश्वैर्विमोचनं  
कृणुते तत् त्वस्य ॥ ( १२४९ ऋ. ३।३०।१२ )

( प्रदिष्टाः दिशः ) निश्चित किये दिशाओं को जो कि, ( हर्यश्व-प्रसूता ) इन्द्रने निश्चित किये है, ( सूर्य न मिनाति ) सूर्य नहीं छोड़ता । ( अश्वैः यद् अध्वनः आनट् ) घोड़ा से जब वह मार्गपर से चला जाता है, तब [ विमोचनं कृणुते ] विमोचन करता है। यह इसी का कार्य है ।

इस तरह अनेक मन्त्र पाठक इन सूक्तों में परमेश्वर के वाचन देख सकते हैं, तथा पूर्वस्थान में जो विशेषण के शब्द ईश्वरवाचक करके बताये हैं, उन पदों का भाव पाठक इन मंत्रों में देख सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं कि, इन्द्रदेवता के मंत्रों में ईश्वरविषयक वर्णन का अच्छा स्थान है ।

**\*मैं इन्द्र हूँ = इन्द्रका साक्षात्कार ।**

प्र सु स्तोमं भगत वाजयन्त इन्द्राय सत्यं यदि  
सत्यमस्ति । नेन्द्रोऽस्तीति नेम उ त्व आह क  
ई ददर्श कमभि ष्टवाम ॥ ३ ॥ अयमस्मि  
जग्निः पश्य मेह विश्वा जानान्यभ्यस्मि महा ।  
ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्ति आदिर्दिरो भुव-  
ना दर्दगीमि ॥४॥ ( १९३-१४ ऋ० ८।१००।३-४ )

यदि इन्द्र ( सत्यं अस्ति ) सचमुक्त है, तब तो उस की ( स्तोमं भरत ) स्तुति करो, पर नेमने ( आह ) कहा कि ( न इन्द्रः अस्ति ) इन्द्र नहीं है, ( क ई ददर्श ) किसने उसे देखा ? और हम ( कं अभि स्तवामः ) किसकी स्तुति करें ?

इन्द्रने उत्तर दिया— हे ( जग्निः ) स्तोता ! ( अयं अस्मि ) यह मैं हूँ ( इह मा पश्य ) यहाँ मुझे देख । ( मन्हा विश्वा जानानि अभि अस्मि ) अपने महत्त्व से सब वस्तुओं पर मैं ही प्रभाव करता हूँ ! अतः ( ऋतस्य

प्रदिशः ) सत्य को बतानेवाले ( मा वर्धयन्ति ) मुझे ही बढ़ाते हैं । ( आ दिर्दिरो ) बरूढ़ होने पर मैं [ भुवना दर्दगीमि ] सब भुवनों का नाश करता हूँ ।

भक्त को इन्द्र प्रत्यक्ष दर्शन देता है, यह बात यहाँ दर्शायी है । ईश्वरसाक्षात्कार होता है । ईश्वर साक्षात् होकर ' मैं हूँ ' ऐसा कहता है । जिसका भाग्य हो, उस को यह दर्शन होगा ।

इस तरह ईश्वरवर्णनपरक मंत्रों का नमूना देखने के बाद हम वीरत्वविषयक वर्णन का नमूना देखना चाहते हैं । ऊपर के स्थान में जहाँ ब्राह्मणमंत्रों के वचन दिये हैं, वहाँ ' राजा, क्षत्रिय, वीर, शूर ' आदि का वाचक ( इन्द्र ) पद आया है । इन्द्र के इस भाव का अब विचार करना है—

**क्षत्रिय वीर इन्द्र ।**

अब हम क्षत्रिय पराक्रमी वीर इन्द्र का विचार करते हैं । इन्द्रदेवता के जो मन्त्र वेद में हैं, उन में उसके पराक्रम के मंत्र ही बहुत हैं । अर्थात् क्षत्र भाव इन्द्र में विशेष प्रकट है । शत्रु का हनन यह भाव इसमें मुख्य है । इस भाव के वाचक शब्द इन्द्र के नामों में ये हैं—

( असुरहा ) असुरों का नाश करनेवाला, ( अहिहा ) अहि नामक शत्रु का वध करनेवाला, ( दस्युहा ) शत्रुओंका नाश करनेवाला, ( वृत्रहा, वृत्रहन्ता ) वृत्र का वध करनेवाला, ( अचहन्ता ) सब प्रकार से वैरियों का नाश करनेवाला, ( विहन्ता ) विशेष रीति से दुष्टों का वध करनेवाला, ( सत्राहा ) मित्रदल को इकट्ठा कर के शत्रु का नाश करनेवाला, ( महावधः ) बड़ी कत्तल करनेवाला, ये इन्द्र के वाचक शब्द शत्रुवध करने का उस का स्वभाव बताते हैं ।

शत्रु का हमला होने पर उसको सहकर अपने स्थान में सुस्थिर रहने का भाव निम्नलिखित शब्दोंद्वारा व्यक्त होता है— ( अभिमातिपाह, अभिमातिहा ) शत्रु को सहना, ( चर्षणीसहः ) शत्रुसेना के आक्रमण को सहनेवाला, ( जनं सह, नृपहः ) जनताकी चढाईको सहनेवाला, ( प्रसहः ) विशेष प्रकारकी चढाई को सहनेवाला, ( पृतनापाह् ) शत्रु की सेना के हमले को सहनेवाला, ( तुनापाह् ) वरा के साथ शत्रु के हमले को सहनेवाला,

( विश्वाषाह् ) सब प्रकारके शत्रु को सहनेवाला, ( सत्रा-षाह् ) मिलकर अनेक शत्रु हमला करते हुए आ गये, तो उसको सहनेवाला, ( प्राशुषाह् ) अति शीघ्रता के साथ शत्रु के हमले को सहने की तैयारी करनेवाला, इन्द्र है। शत्रु को सहने का अर्थ अपनी वीरता से, अपने बल से, अपनी शक्ति से शत्रु के हमले को सहना है। शत्रु का हमला होने पर अपना स्थान न छोड़ना, अपने स्थान पर रहते हुए शत्रु को पराजय देकर भगा देने का नाम है, शत्रु को सहना। स्वयं शत्रु को सहना और स्वयं शत्रु को असह्य होना, यह द्विविध वैदिक युद्ध-कौशल्य है।

इस तरह शत्रु को असह्य बनने के लिये उत्तम वीर बनना आवश्यक है। यह भाव इन्द्रवाचक निम्नलिखित शब्दों में देखना उचित है- ( सुवीरः ) उत्तम वीर होना, ( महावीरः, प्रवीरः, एकवीरः ) सब से बड़ा वीर होना, बलवान् और वीर्यवान् होना, अजिंक्य वीर होना, ( अभिवीरः, पुरुवीरः ) सब प्रकार का वीरत्व अपने पास रखना, अपनी सेना में सब वीर ऐसे रखने कि, जो शक्त प्रकार वीर्य दिखा सके, ( वीरतरः वीरतम ) वीरों में उत्तम वीर बनना, ( अभिभूतरः ) शत्रुका पराभव करना, विशेष प्रवीण बनना, ( अवाजित् ) रक्षणशक्ति के साथ शत्रु को जीतना ( संसृष्टजित्, सत्राजित्, सजित्वानः ) सब शत्रुओं को जीतनेवाला, विजय प्राप्त करने की शक्ति से युक्त, ये इन्द्रवाचक शब्द बताते हैं कि, इन्द्र किस तरह के वीर का नाम है।

( अपराजितः ) कभी जो पराभूत नहीं होता, ( धनंजयः ) युद्ध में शत्रु के धन को जीतनेवाला, युद्ध में विजयी, ( पूर्मित् पूर्मित्तमः ) शत्रु के नगरों और कीलों का नाश करनेवाला, ( पुरंदरः ) शत्रु के नगरों का भेदन करके अन्दर प्रवेश करनेवाला, ( अभिभूः ) सब प्रकार से शत्रु का पराभव करनेवाला ( अभीरुः, विभीषणः ) जिस को स्वयं कभी भय नहीं होता, पर जो शत्रु को भयंकर मालूम होता है, ( वीर्य्युः ) जो वीरों को अपने पास रखता है, वीरों को वीरोचित कार्यों में जो लगाता रहता है, ( आजिकृत् रणकृत् ) जो युद्ध करने में परम कुशल है, ( आजितुर ) जो युद्ध में परा से अपने कर्म करता

है, अतः जो ( भाजिपतिः ) युद्ध का स्वामी कहलाता है, ये इन्द्र के शब्द इन्द्र का रणकौशल्य बता रहे हैं।

( वाजिनीवगुः ) सेना ही जिसका धन है, सेना को ही जो अपना धन मानता है, ( महाव्रतः ) बड़े सेनासमुदायों को जो युद्धों में चलाता है, बड़ी से बड़ी सेना का संचालन करने में जो कभी प्रमाद नहीं करता, ( मेना-नीः ) जो बड़ी कुशलता से सेना को चलाता है, ( वल्विज्ञाय, म्वलः ) बल के लिये, चतुरंगबल के लिये जिसकी सर्वत्र प्रसिद्धि है, ( मत्यगुप्ता ) जिसका बल मत्य है, अर्थात् सदा विजय पाने में निश्चित सामर्थ्य से जो युक्त है, जो ( पुरोहितः, पुरःस्थाता, पुरण्णा ) अपनी सेना के अग्रभाग में रहता है, तथा शत्रु के ऊपर हमला करने में जो सदा आगे बढ़ता है।

( रथयुः, रथितमः ) रथयुद्ध में जो प्रवीण है, जिसके पास बहुत रथ हैं, रथसेना के संचालन में जो प्रवीण है, ( उरुकमः ) शत्रुपर जो बड़े आक्रमण करता है, ( वृपरथ, सुखरथः ) बैलोंके रथ और मुख देनेवाले रथ जिसके पास हैं, ( रथेष्टाः ) रथपर जो रहता है, ( वन्धुगृष्टाः ) रथमें विशेष स्थानपर जो बैठता है। ये शब्द इन्द्र का रथयुद्ध-कौशल्य बतानेवाले हैं।

( शवसः सूनूः, म्हसः सूनूः ) बलका पुत्र ये शब्द इसके असीम बलके सूचक हैं। ( महाहस्ती ) इस से उस के बड़े हाथ, बड़े बलवाले हाथ हैं, अथवा उसके पास बड़े हाथी है, यह भाव व्यक्त होता है। ( उग्रधन्वा ) बड़े प्रखर मनुष्य को बर्तनेवाला, ( इषुहस्तः ) हाथ में बाण लेनेवाला, ( वज्रहस्त, वज्रभृत्, ) हाथ में वज्र लेनेवाला, वज्र का धारण करनेवाला, ( वज्रबाहु, सुबाहुः, उग्रबाहुः, सुपाणिः ) उत्तम बाहु, वज्र जैसे कठोर बाहु, बलवान् बाहु और हाथों से युक्त इंद्र है, ( तिग्मायुधः ) जिस के शस्त्र अति तीक्ष्ण है।

इस की शक्ति के विषय में निम्नलिखित शब्द देखिये- ( अभिभृत्योजा ) शत्रु का पराभव करनेवाला जिस का सामर्थ्य है, ( अमितौजाः ) जिस के बल की सीमा नहीं है, ( अन्माम्त्योजाः धृष्णु-ओजाः ) जिस का सामर्थ्य शत्रु का ध्वंस करने में प्रकट होता है, ( स्वधृत्योजाः, स्वौजाः, विश्वौजाः ) सब प्रकार का सामर्थ्य जिस के

पास सदा तैयार रहता है । ( बाहु-ओजा. ) जिस का बाहुबल बहुत ही बड़ा है । ( सहस्वान, तवीयान् ) जिस का बल बड़ा है । ये शब्द इंद्र का बल बता रहे हैं । ( पुरुवर्पा ) शब्द उस का शरीर विशाल है, यह भाव बताता है । यह भी उस के बड़े सामर्थ्य का सूचक है ।

( हरिप्रः ) इन्द्र घोड़ेपर सवार होता है, ( पर्वनेष्टः ) पर्वतपर अथवा पर्वत के कीले में रहकर शत्रु से लड़ता है, वह ऐसा युद्ध करता है कि इस का युद्धकौशल देखकर शत्रु भी इसकी प्रशंसा करते हैं, यह भाव ( अग्नि-पुत्र ) इस शब्दसे व्यक्त होता है ।

( पुरुमायः ) वह शत्रुके साथ लड़नेमें कपट भी करता है, ( वामनीतिः ) वह शत्रु के साथ ( सुनीति, सुनीथ ) अच्छी नीति भी बरतता है और बुद्धि भी । ( गतनीथ, सहस्त्रनीथः ) सैकड़ों और सहस्रों प्रकार की युक्तियाँ उस के पास रहती हैं, इसलिए वह ( अच्युत्, अनपच्युत् ) अपने स्थानसे च्युत नहीं होता, ( दुश्च्यवनः ) उसको अपने स्थानसे भ्रष्ट करना अशक्य है, पर वह ऐसा है कि, वह दूसरे बड़े बड़े शत्रुओंको ( अच्युतच्युत् ) उनके स्थानों से हटा देता है, जो अपने स्थानोंपर स्थिर हुए शत्रु हैं, उनको परास्त करके हटा देता है, ( अद्रव्या, अद्राभ्यः ) वह शत्रुओंसे कभी न डरनेवाला है, कभी न उबनेवाला और कभी दबाया न जानेवाला है । ( सचेताः, प्रचेताः, विचेता, सहस्त्रचेताः ) वह अनन्त प्रकार की कुशल बुद्धियोंसे युक्त है, इसलिए अपने बल को शत्रुके नाश करने में उत्तम रीतिसे लगाता है और विजय प्राप्त करता है ।

इंद्र ( प्रमति ) विशेष बुद्धिमान् है, ( विप्रतम, कवितम. ) विशेष ज्ञानी, ( सुवेदा, सुविद्वान् ) उत्तम ज्ञानी है, ( सुमनाः ) उत्तम मनवाला है, ( अजात-शरः, अशरः ) स्वयं किसी की शत्रुता नहीं करता, ( विश्वतो-धी. ) उस की बुद्धि चारों ओर पहुँचनेवाली है, सब ओर वह खुली आँखों से देखता है, अतएव किसी शत्रु के द्वारा ( अनाधृष्यः, अधृष्य ) उस का पराभव या धर्षण नहीं होता, अतः ( अप्रतिधृष्टावाः ) उसको सदा विजयी बलवाला कहा गया जाता है ।

इंद्र [ एकराट्, संराट्, स्वराट् ] उत्तम राजा है, ऐसा कहते हैं, ( नृपाता ) मानवों की रक्षा वह उत्तम

रीति से करता है । उसको ( उर्वरापतिः ) भूमि का सच्चा पालन करनेवाला कहते हैं । ( गणपतिः ) सब गणों का पालन करता है, एक एक कार्य करनेवालों के संघों को गण कहते हैं । इन गणों का उत्तम रीति से पालन इंद्र करता है, क्योंकि ( कारुधायाः ) कारीगरों का पोषण करने का कार्य वह करता है । कारीगरों के पोषण से राष्ट्र में सुस्थिति रहती है । ( नृपतिः, विशास्पतिः, विशपतिः ) मानवों की पालना वह करता है, ( मित्रपति, सन्पति ) सज्जनों का पालन करता है, मित्रजनों का, मित्रदलों का पालन करता है, ( रयि-पति, रायस्पति, वसुपति. ) वह धन का पालन और संग्रह करता है । यह इंद्र ( गोपाः, शुचिपाः, व्रनपाः, चर्षणिप्राः, संवनन ) अर्थात् सब प्रजाओं का, पशुओं का, प्रजा के सब कर्मों का रक्षण करता है, इस से उस के राष्ट्र का उदय होता है । ( प्राविता ) इसीलिये उसको सच्चा रक्षक कहते हैं और यह रक्षण वह ( शवसस्पतिः ) सब के बल का रक्षण करता हुआ करता है । यही उस की बुद्धिमत्ता है ।

इंद्र का पशुपालनरूप कर्तव्य बतानेवाले शब्द ये हैं— ( संभृताश्च ) उत्तम भ्रूओं को पास रखनेवाला, ( स्वद्वः ) उत्तम घोड़े जिस के पास हैं, ( हर्यश्वः ) शीघ्रगामी घोड़े जिस के पास है, अथवा हरिद्वर्ण घोड़े जिस के पास हैं, ( स्वश्वयु. ) उत्तम घोड़े जिस के रथ को जोड़े जाते हैं, ( अश्वपति ) जो घोड़ों की पालना उत्तम करता है, ( गवां पति, गोपतिः ) गोपालन करता है, ( गव्युः, भृरिगुः ) जिस के पास बहुत गाँवें रहती हैं, ( शाचिगु, अध्रिगु ) जो उत्तम गाँवों से युक्त है । ये शब्द इंद्र के पशुपालन का भाव बता रहे हैं ।

प्रजाजनों के लिये उस की रक्षा कैसी मिलती है, यह बात निम्नलिखित इंद्रवाचक शब्दों से ज्ञात होती है, ( अक्षिनोतिः ) जिस का संरक्षण का सामर्थ्य कभी कम नहीं होता, ( ऊर्वी-ऊतिः ) जिस की रक्षण करने की शक्ति बड़ी भारी है, ( शतमृतिः, सहस्रोतिः ) सैकड़ों और हजारों साधनों से जो प्रजा की रक्षा करता है, ( भद्रकृत् ) वह सब का कल्याण करता है ।

उसकी शक्ति [ अपारः ] अपार है, पर वह सुगमता से

शत्रु के (सुपारः) पार होता है ।

इस तरह इन्द्र के वाचक, गुणबोधक अनेक शब्द हैं, जो वेदमंत्रों में प्रयुक्त हुए हैं और इन्द्र के गुण, कर्म, स्वभाव बताते हैं । इन्द्र राजा, वीर, शूर, बली, विजयी है और उसका शासन प्रजा का कल्याण करनेवाला है, हत्यादि भाव इन शब्दों से स्पष्ट प्रतीत होते हैं ।

यदि पाठक इन्द्र के वर्णन के सब पदों का इस तरह अभ्यास करेंगे, तो इन्द्र का स्वरूप सहजी से ज्ञात हो सकता है । और इन्द्र के मन्त्रोंद्वारा शौर्यवीर्यादि गुणों का संवर्धन करने का जो कार्य वेद को अभीष्ट है वह भी पाठकोंके अन्तःकरणमें प्रकट हो सकता है ।

जो इन्द्र के पराक्रम इन शब्दोंद्वारा प्रकट हुए हैं, उनका वर्णन पाठक अब मन्त्रोंद्वारा देखें । अब हम ऐसे मन्त्र देते हैं, जिनमें पूर्वोक्त स्थान में जो इन्द्र के गुण शब्दोंद्वारा प्रकट हुए हैं, वे ही मंत्रों के वर्णनों से प्रकट होंगे ।

### आर्य के लिये प्रकाश दां ।

धिष्वा शव शूर येन वृत्रमवाभिन्द दानुमौ-  
र्णवाभम् । अपावृणोऽर्ज्योतिरायाय नि सव्यत-  
सादि दस्युरिन्द्र ॥ मनमे ये त ऊतिभिस्त-  
रन्तो विश्वाः स्पृध आयेण दस्यून् । अस्मभ्यं  
तत् त्वाप्यं विश्वरूपमरन्धय. साख्यस्य  
त्रिताय ॥ ( १११८-१९ ऋ० २-११-१८।१९ )

हे शूर इन्द्र ! ( शव धिष्वा ) तू बल धारण कर ( येन वृत्रं दानु अवाभिन्दत् ) जिससे शत्रु का नाश हो जाय । ( आर्याय ज्योतिः अपावृणां ) आर्य के लिये प्रकाश ही ज्योति बताओ । ( सव्यतः दस्यु नि सादि ) सीधी ओर शत्रु को दबा दो ।

( ये ते ऊतिभिः तरन्त ) जो तेरी रक्षाओं से शत्रु के शर हो जाते हैं । ( आयेण विश्वा स्पृधः दस्यून् ) आर्य के द्वारा स्पर्धा करनेवाले दस्युओं का नाश करता है । ( अस्मभ्यं ) हम सब के लिये उस विश्वरूपी त्वष्टृपुत्र का नाश कर । शत्रु का पूर्णता से नाश कर ।

यहां ( आर्याय ज्योतिः अपावृणां ) आर्यों के लिये प्रकाश कर, ऐसा स्पष्ट कहा है । आर्यों का मार्ग विश्वभरमें खुला रहे, किसी स्थान पर आर्यों को रोकठोक या प्रति-

बध न हो, यहाँ यहाँ तात्पर्य है । आर्य सर्वत्र विजयी होते हुए अपना और बिद्व की उन्नति करते जाय, यही यहाँ तात्पर्य है ।

### धार्मिकों का हितकर्ता ।

अनुव्रताय रन्ध्रयन्नपव्रता नाभृभिरिन्द्रः श्रथयन्न-  
नाभुवः । वृद्धस्य चिद्धर्थतो धामिनक्षत स्तवानो  
वम्रो वि जघान संदिह ॥ ( ७५३ ऋ० १।५।१९ )  
( अनुव्रताय ) धर्मव्रत का पालन करनेवालोंका हित करनेके लिए ( अपव्रतान् रन्ध्रयन् ) व्रतहीनोंका नाश करता हुआ इन्द्र ( आ-भुभि ) उपासकों के साथ रहकर ( अनु-आभुवः श्रथयन् ) अभक्तों का नाश करता है । ( वृद्धस्य चित् वर्धत. ) इन्द्र प्रथम से ही बड़ा है पर वह और भी बड़ता भी है और ( ध्यां इनक्षत ) युद्धों तक पहुंचता है । ऐसे इन्द्र की ( स्तवानः ) स्तुति करनेवाला ( वन्न-सन्दिह. विजघान ) संदेह दूर करता है, अर्थात् इन्द्र का महत्त्व जानता है ।

यहां ( अनुव्रत ) और ( अपव्रत ) ये दो शब्द बड़े बोधप्रद हैं । वर्मानुकूल चलनेवाले अनुव्रत कहलाते हैं और अधर्म में प्रवृत्ति होना अपव्रतियोंका लक्षण है । इन्द्र का यहाँ कर्तव्य है कि वह अधार्मिकों का नाश करे और धार्मिक सत्यव्रतियों की उन्नति करने में सहायक हो ।

'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुःकृताम् ।  
( गीता ४।८ )

यह वचन इस मन्त्रके साथ देखनेमें बड़ा बोध मिलता है ।

### पंचजनों का रक्षक ।

विश्वेदनु रोधना अस्य पांस्यं ददुरस्यं दधिरे  
कृन्वे धनम् । पलस्तभ्ना विष्टिः पञ्च संदश  
परि परो अभव सास्युकथ्य ( ११४६ ऋ० २।११।१० )  
सबने इसके बल की वृद्धि की है । इसके पराक्रम के लिए सबने धन दिया है । पृथ्वीके ( पृत् त्रिस्थिरः अस्तभ्ना ) छः भाग स्थिर किए हैं । ( पञ्च संदश ) पंच जनों का विजय करनेवाला तू ही है, अतः तू ( उक्थ्य अमि ) प्रशंसनीय हो । तथा-

आ यस्मिन् हस्ते नर्या मिमिक्षुगा रथे हिरण्ये  
रथेष्टाः । आ रश्मयो गभस्त्याः स्थूरयोः आध्वन्न-  
श्वासो वृषणो युजानाः ॥ ( १०६३ ऋ० ६।२९।२ )

( यस्मिन् हस्ते ) जिस इन्द्र के जिस हाथ में ( नयां मिमिक्षु ) मनुष्यों के हितके लिए ही सब धन है और जो सुवर्ण के रथमें बैठकर सब को धन देता है, जिसके ( स्थूरयोः ) स्थूल हाथ में रथके लगाम है, जो अपने रथको घोड़े जोतता है और जो घोड़े सरल मार्ग से चलते है । वह इन्द्र है । तथा—

एकं नु त्वा सत्पतिं पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि  
यशसं जनेषु । तं मे जगृभ्र आशसो नविष्टं  
दोषा वस्तोर्हवमानास इन्द्रम् ॥

( १७१५ ऋ० ५।३२।११ )

इन्द्र ही एक ( सत्पति ) सब का उत्तम पालनकर्ता है और ( पाञ्चजन्यं ) पञ्चजनों का हित करनेवाला है; तू हि ( जनेषु ) लोगों में यशस्वी है, ऐसा मैं ( शृणोमि ) सुनता हूँ । उपासक लोग दिनरात तेरा ही स्वीकार करें । तथा—

### लोकहितार्थ युद्ध ।

स इन्महानि सामिथानि मज्मना कृणोति युध्म  
ओजसा जनैभ्यः । अधा चन श्रद् दधति  
न्विषीमते इन्द्राय वज्रं निघनिघ्नते वधम् ॥

( ८०१ ऋ० १।५५।५ )

( स युध्म. ) वह इन्द्र बड़ा योद्धा है, वह ( जनैभ्यः ) जनों के हित के लिये ( भोजसा महानि सामिथानि कृणोति ) अपने सामर्थ्य से बड़े युद्ध करता है । अतः सब लोग ( वधं वज्रं निघनिघ्नते ) शत्रु पर मारक शास्त्र का प्रहार करनेवाले ( त्विषीमते इन्द्राय ) तेजस्वी इन्द्र के विषय में ( श्रद् दधति ) श्रद्धा रखते है ।

सब जनता के हित करने के लिये युद्ध किया जावे, यह सूचना यहां मिलती है । जनता के हित करने के लिये क्या करना चाहिये, इस का दर्शन भगले मन्त्र में पाठक करें—

दस्युको दण्ड और आर्योकी उन्नति करो ।

वि जानीहि आर्यान् ये च दस्यवो यर्हिष्मते  
रंधया शासद्व्रतान् । शाकी भव यजमानस्य  
चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन ।

( ७५२ ऋ० १-५१-८ )

हे इन्द्र ! ( आर्यान् विजानीहि ) आर्य कौन हैं, यह तू जान, और ( ये च दस्यवः ) जो दस्यु या शत्रु हैं, उनको

भी तू जान । ( यर्हिष्मते ) यज्ञकर्ता के हित के लिये ( भ्रतान् शासत् ) व्रतहीन शत्रुओं को दण्ड देकर ( रन्धय ) नष्टकर । ( शाकी भव ) समर्थ होकर रह ( यजमानस्य चोदिता ) यजमान को प्रेरणा दे । ( सध-मादेषु ) साथ साथ मिलजुल कर जहां सत्कर्म किये जाते हैं, ऐसे यज्ञों में ( ते ता विश्वा हत् ) तेरे वे सब सत्कर्म प्रशंसा-योग्य होते है ।

शत्रु को दण्ड देना और सज्जनों की उन्नति करना ही राजा का कर्तव्य हम मन्त्र से प्रकट होता है । प्रजा के रक्षण करने के लिये क्षत्रिय को सदैव तत्पर रहना चाहिये, यह सूचना भगला मन्त्र देता है—

### रक्षण के लिये खडा रहो ।

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन् वाजे शतक्रतो ।

सं अन्येषु ब्रवावहै ॥ ( ७०४ ऋ० १-३०-६ )

हे शतक्रतो ! ( अस्मिन् वाजे ) इस युद्ध में ( नः ऊतये ) हमारा रक्षण करने के लिये ( ऊर्ध्वः तिष्ठ ) युद्धमें सुसज्य होकर खडा रह । ( अन्येषु सं ब्रवावहै ) अन्य प्रसंगों में हम मिलकर बात करोगे कि, वहां क्या करना चाहिये ।

आ घा गमद् यदि श्रवत् सहस्त्रिणीभिरुतिभिः ।

वाजेभिरुप नो हवम् । ( ७०६ ऋ० १।३०।८ )

( यदि श्रवत् ) यदि इन्द्रने हमारी पुकार सुनी, तो वह ( सहस्त्रिणीभिः उतिभिः वाजेभिः ) सहस्रों सामर्थ्यों और बलों के साथ ( नः हवं ) हमारी पुकार के स्थान के प्रति ( आगमत् ) अवश्य दौड़ते हुए आ जायगा ।

यहां ( वाजे ऊर्ध्वः तिष्ठ ) युद्ध में उठकर खडा रह, ऐसा कहा है । राष्ट्र में क्षत्रियों को प्रजारक्षणार्थ ऐसा ही खडा रहना चाहिये । दुष्टों का नाश करने के विषय में वेद का आदेश स्पष्ट है—

### दुष्टों का नाश कर ।

उद् बृह रक्ष सहमूलं इन्द्र वृश्वा मध्यं प्रत्यग्रं  
शृणीहि । आ कीवतः सललूकं चकर्थ ब्रह्माद्विषे  
तपुषि हेतिमस्य ॥ ( १२५४ ऋ० ३।३०।१७ )

हे इन्द्र ! ( रक्षः ) राक्षसों को जड़के साथ ( उद् बृह ) उखाड दो, ( मध्यं वृश्वा ) उनका मध्य फाट दो और ( अग्रं

प्रति शृणीहि) उनका अन्तभाग काट दो । (कीवतः सल-  
सुकं आचकथं) दुष्टोंको दूर कर और ज्ञान का द्वेष करनेवाले  
दुष्टपर तपा शस्त्र (अस्य) फेंक ।

यह मन्त्र दुष्टोंको उखाड़ देनेके लिये विशेष स्पष्टतापूर्वक  
उपदेश देता है । वृत्र शत्रु का नाम है । इन्द्रसे वृत्र का वैर  
प्रसिद्ध है । इस वृत्र का वध इन्द्रने किया है । इस वर्णनके  
सकड़ों मंत्र वेदमें हैं । उनसेसे कुछ देखिये —

### वृत्रवध ।

अयोद्धेव दुर्मद आ हि जह्ने महावीरं तुविबाधं  
ऋजीपम् । नातारीदस्य समृति वधानां स  
रुजानाः पिपिष इन्द्रशस्त्र ॥ अपादहस्तो  
अपृतन्यदिन्द्रमास्य वज्रं अधिसानौ जघान ।  
वृष्णो वधिः प्रतिमानं बुभूषन् पुरुत्रा वृत्रां  
अशयद् व्यस्तः ॥ [७२०-२१, ऋ० १।३२।६-७]

[अ-योद्धा इव] अब मेरे साथ युद्ध करनेयोग्य कोई  
नहीं रहा, ऐसा माननेवाला वह [दुर्मदः] दुष्टबुद्धि शत्रु  
[महावीर] बड़े शूर [तुविबाधं] बहुतोंका पराभव करने-  
वाले [ऋजीप] अदम्य इन्द्रको [आजह्ने] अपने सम्मुख  
आह्वान करने लगा । परन्तु वह [इन्द्रशत्रु] इन्द्र का शत्रु  
[वधानां समृति न अतारीत्] इन्द्रके शस्त्रके घावों को  
सहन न कर सका । अन्तमें [रुजानाः सं पिपिषं] छिन्नभिन्न  
होकर चूर्ण हुआ ।

पश्चात् उस [अपाद-हस्तः] पांव और हाथसे विहीन  
[अ-पृतन्यत्] सेनारहित वृत्रने [इन्द्रं वज्र अधिसानौ  
जघान] इन्द्रपर उसकी गर्दनमें शस्त्र मारा, पर[वधिः वृष्णो  
प्रतिमानं बुभूषन्] नपुंसक का सामना जैसा वीर्यवान्से  
होता है, वैसी उसकी अवस्था हुई और [पुरुत्रा व्यस्तः]  
अनेक स्थानोंमें फेंका जाकर [अशयत्] गिर पड़ा ।

तथा और देखिये—

### वज्रको नचाया ।

त्वं गोत्रं अङ्गिरोभ्योऽवृष्णोरपोतात्रये शतदुरेषु  
गातुवित् । ससेन चिद् विमदायावहो वसु आज्जा-  
वर्द्धि वावसानस्य नर्तयन् ॥ [७४७; ऋ० १।४।१।३]

हे इन्द्र ! तूने अंगिरोंके लिये [गोत्र अप अष्टुणोः] गौके  
स्थान को खुला कर दिया, अत्रि के लिये [शतदुरेषु गातु-

वित्] सौ द्वारोंवाले स्थानसे गमनका मार्ग बताया, विमद्  
के लिये [ससेन वसु अवहः] धान्यके द्वारा धन दिया और  
वावसान के लिये [अर्द्धि नर्तयन्] अपने वज्र को नचाया,  
अर्थात् वज्र से शत्रुको मारा । तथा—

युवं तमिन्द्रा पर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप  
तंतमिद्धत वज्रेण तंतमिद्धतम । दृग् चत्ताय  
छन्सद् गहनं यदिनशत् । अस्माकं शत्रून् परि शू  
विश्वतो दर्मा दर्षीष्ट विश्वत [१०३२ऋ० १।१३।२।८]

[पुरोयुधा] आगे होकर युद्ध करनेवाले तुम [यः नः  
पृतन्यात्] जो हमपर भैन्यसे चढाई करे, उसका वध करो,  
उसका [वज्रेण त हत] वज्रसे वध करो । [दृग् चत्ताय दूर  
रहनेवाले पर भी जो वज्र हमला करता है वह गहन स्थान  
में भी जा सकता है । [अस्माकं शत्रून्] हमारे शत्रुओंको  
[विश्वतः परि] चारों ओरसे घेरो और [विश्वत दर्मा दर्षीष्ट]  
चारों ओरसे विदारण करो ।

सेना लेकर हमपर हमला करनेवाला तथा अन्य प्रकार  
से सतानेवाला ये सब शत्रु ही हैं और शत्रु को दूर करना  
ही इन्द्र का कर्तव्य है । क्योंकि शत्रु वध्यही है—

### शत्रु वध्य हैं ।

इन्द्र दृष्ट्या यामकोशा अभूवन् यज्ञाय शिक्ष  
गृणते सखिभ्यः । दुर्मायवां दुरेवा मर्त्यानां  
निपाङ्गिणो रिपवो हन्त्वास [१०२२; ऋ० १।३०।१।२]  
हे इन्द्र ! [दृष्ट्या] प्रबल बन । [याम-कोशा अभूवन्]  
कोशोंको प्रतिबध हो रहा है । [यज्ञाय गृणते सखिभ्य]  
यज्ञकर्म, उपासना और मित्रोंको [शिक्ष] शिक्षा दे । [दुः-  
मायव ] दुष्ट, कपटी, [दुः एवा.] दुश्चरित्र, [निषङ्गिण. मर्त्यास  
रिपवः] तर्कस लिये शत्रुरूप मानव है, वे [हन्त्वास ] हनन  
करनेयोग्य है ।

शस्त्रास्त्र लिये शत्रु हमारे चारों ओर खड़े हैं, उनका  
वध होनेके बिना मानवों को सुख प्राप्त नहीं हो सकता ।  
इसलिये शत्रुको दूर करना योग्य है—

स्वर्जेपे भर आप्रस्य वकमन्युपर्वुधः स्वस्मिन्न-  
ञ्जसि क्राणस्य स्वस्मिन्नञ्जसि । अहन्निद्रो  
यथा विदे गीष्णांशीष्णांपवाच्यः । अस्मन्ना ते  
सधयक् संतु रातयोः भद्रा भद्रस्य रातयः ॥

[१०२९, ऋ० १।४३।२।८]



[स्वजेयं] सुख देनेवाले युद्धमें [उपबुधः] प्रातःकालमें जाग्रत होनेवाले वीर ! आक्रमण करनेवाले शत्रुको तू पराजित करता है । और उसका वध करता है । [त रातयः अस्त्रा मध्यक ] तेर दान हमारे पास इच्छे हों, तेर दान कल्याण-कारक हों ।

शत्रुको परास्त करके विजय संपादन करना आवश्यक है इस विषयमें देखिये—

### युद्धांमं विजयी ।

तं त्वा वाजेपु वाजिनं वाजयाम शतक्रतो ।

धनानामिन्द्र स्नातये । [१२, ऋ० १।१।५]

धनोका हमें प्राप्ति होनेके लिये, हे सैकड़ों कर्म करने-वाले इन्द्र ! [वाजेपु] युद्धोंमें [त्वा वाजिन वाजयाम.] युद्धोंमें लड़नेवाले तुझ वीर को बड़ाते हे, [बलिष्ठ करते है, युद्धमें भेजते है । ]

सैकड़ों पराक्रम करनेवाले वीरको शतक्रतु कहते है। युद्धोंमें अपने नेता वीरका बल बढ़ानेयोग्य कर्म उसके अनुयायिकोंको करने चाहिये। कभी ऐसा कर्म करना नहीं चाहिये, जिससे अपने नेताकी शक्ति कम या क्षीण हो । तथा—

शश्वद्विद्रः पोप्रथद्विर्जिगाय नानदद्वि. शाश्व-  
स्वद्विः धनानि । स नो हिरण्यरथं दंसनावान्  
त्स नः स्मनिता स्मनये स नोऽदात् ॥

[७१४, ऋ० १।३०।१०]

इन्द्रने [पोप्रथद्वि.] स्फुरण जिनमें दीखता है, [नानदद्वि] जो हिनहिनाते हैं, [शाश्वद्वि] जिनका जोरसे आसो-च्छ्वास हो रहा है, ऐसे घोड़ोंके साथ [धनानि जिगाय] धन देनेवाले युद्धोंमें विजय प्राप्त किया। उसने [नः हिरण्यरथ दंसनावान्] हमें सुवर्णका रथ दिया, और उसने हमें [स्मनये अदात्] दान कर दिया ।

इन्द्र युद्धोंमें हिनहिनानेवाले घोड़ोंके साथ जाता है और विजय प्राप्त करता है । तथा—

### कपटी शत्रुका नाश ।

गुहा हितं गुह्यं गूळहमप्सु अपीवृतं मायिनं  
क्षियन्तम् । उता अपो द्यां तस्तभ्वांसं अहन्नाहिं  
शूर वीर्येण ॥ [११०५, ऋ० २।१।१५]

[गुहा हितं] गुहामें रहनेवाले, [गुह्यं] गुप्त [अप्सु गूळहं]

पानीमें गुप्त रहनेवाले [अपीवृतं मायिनं] कपटी शत्रुको [क्षियन्तं] अपने कीलेमें रखनेवाले [द्यां अपो तस्तभ्वांसं] जलोंको बंद करनेवाले [अहिं] शत्रुको अपने [वीर्येण अहन्] पराक्रमसे नष्ट कर दिया है ।

शत्रु जलको प्रतिबन्धमें रखता है, क्योंकि जल न मिलनेसे सैनिक हँरान होते हैं और शीघ्र वश होते हैं । आजभी युद्धमें यही हम देखते है । जल जिसके पास है, वह जिसके पास जल नहीं है उसको, अपने काबू करता है । वही हम इन्द्र और वृत्रके युद्धमें देखते है । वृत्र प्रथम जलपर कब्जा करता है, इस कारण इन्द्रके अनुयायी हराण होते हैं, पश्चात् इन्द्र शत्रुका वध करके जलके स्रोत खुले करता है, तब जनता आनन्दित होती है । इन्द्र-वृत्रके युद्धमें यह वर्णन स्थानस्थानपर है—

### जल सुप्राप्य करना ।

दासपत्नीरहिगोपा अतिघ्नन् निरुद्धा आपः पणिनेव  
गावः । अपां विलं अपिहितं यदास्मीत् वृत्रं जघन्वां  
अप तद्ववार । [७२५; ऋ० १।३२।११]

[दास-पत्नी. अहिगोपा आप अतिघ्नन्] दास शत्रुने अपने आधीन किये जल [निरुद्धाः] रोके हुए थे, जैसे [पणिना इव गावः] बनिया गौबोंको रोकता है । इन जलोंका द्वार [अपिहितं आसीत्] ढका हुआ था । पर इन्द्रने [वृत्रं जघन्वान्] वृत्रको मारा और [तत् अप ववार] वह द्वार खोल दिया ।

शत्रुने जलका अपने अधीन किया था, उस शत्रुको परास्त करके जल सबको मिलनेयोग्य खुला कर दिया । यह युद्धनीति है । युद्धयमान एक पक्ष दूसरेका जल बंद करता है, जिससे उसके सैनिक जलके बिना तड़पने लगते है । फिर वह इस शत्रुको परास्त करता और जलको सुप्राप्य बनाता है । इसी तरह अन्न, वस्त्र, तथा स्थानके विषयमें जानना योग्य है ।

जंता नृभिः इंद्रः पृत्सु शूरः श्रोता हवं नाधमा-  
नस्य कारोः । प्रभर्ता रथं दाशुप उपाक उद्यंता गिरो  
यदि च त्मना भूत् ॥ [१०९८, ऋ० १।१७।१३]

[शूरः इन्द्रः] शूर इन्द्र [नृभिः] अपने वीरोंके साथ [पृत्सु] युद्धोंमें [जंता] विजय करता है । [नाधमानस्य कारोः]

हर्ष श्रोता] नाथ होनेकी इच्छा करनेवाले कारीगरका कहना सुनता है । [दाशुषः रथ उपाके प्रभर्ता] दाताके रथ को विसर्गके पास पहुँचाता है । [ यदि धमना भूत ] यदि उसमें इच्छा हुई, तो वह [गिरः उद्यन्ता] वाणियों को भी प्रेरणा करता है ।

वीर अपने अनुयायियोंको युद्धमें जानेकी प्रेरणा करता है । इसकी प्रेरणासे प्रेरित हुए वीर युद्ध करते और वीजयी होते हैं ।

**शत्रुको जंजिरोंसे बांधकर कारागारमें रखना ।**

स तुर्वणिर्महाँ अंगुणु पांस्ये गिर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः । येन शुष्णं मायिनं आयसो मदे दुध आभूषु गमयन्नि दामनि ॥ [८०७; ऋ०१।५६।३]

[सः] इन्द्र[तुर-वनिः] द्वारासे कार्य करता है, इसलिये [महान्] बड़ा है । उसका [तुजा शवः अरेणु] हिंसक बल निर्मल है, स्वच्छ है, वह [पौरुष्ये] पौरुष दिखानेके युद्धमें [गिरः भृष्टिः न भ्राजते] पर्वतके शिखरके समान चमकता है । [मदे] आनन्दमें [दुध] रहता हुआ वह इन्द्र [मायिनं शुष्ण] कपटी शोषक शत्रुको [आयसः आभूषु दामनि] लोहेके कारागृहमें जंजिरोंसे [नि रामयन्] रख देता है ।

शत्रु जब पकड़ा जाता है, तब उसको प्रतिबद्धमें रखना योग्य ही है—

**फौलादका तीक्ष्ण वज्र ।**

त्वं द्वियो वृहतः सानु कोपयोऽव त्मना भ्रूपता शंवरं भिनत् । यन्मायिनो वन्दिना मन्दिना भ्रूपन् शितां गभस्ति अशानि पृतन्यसि । [५८९; ऋ०१।५४।४]

[मन्दिना पृषत्] आनन्ददायक रामसे उत्साहयुक्त बना हुआ [शितां गभस्ति अशानि] तीक्ष्ण वज्रको हाथमें लेकर [मायिनः पृतन्यसि] कपटी शत्रुसे जिस समय तू युद्ध करता है, उस समय [वृहतः द्विवः सानु कोपय.] बड़े छलोक के शिखरको तू हिला देता है और शंवर राक्षस को अपने बलसे [अव भिनत्] छिन्न भिन्न करता है ।

शत्रुके शस्त्रास्त्रोंकी अपेक्षा अपने शस्त्र अधिक प्रखर रहने चाहिये । तब नि संदेह विजय होता है । इन्द्रका मुख्य शस्त्र वज्र है । यह फौलाद का अति तीक्ष्ण शस्त्र है । इन्द्रके पास अन्य भी अस्त्र बहुत होते हैं । शत्रुसे ये शस्त्रास्त्र अच्छे होते हैं, इसलिये इन्द्र विजयी होता है—

जघन्वां उ हरिभिः संभृत्क्रनो इन्द्र वृत्रं मनुषे गातुयन्नपः । अयच्छथा बाहोर्वज्रमायसं अधारयो दिव्या सूर्ये दशे ॥ [७६५; ऋ०१।५२।८]

हे [संभृत्क्रनो इन्द्र] सपूर्ण बलसे युक्त इन्द्र ! [ मनुषे अप गातुयन्] मानवोंकी ओर जलके प्रवाह भेजनेके लिये [हरिभिः वृत्र जघन्वां] घोड़ोंको साथ लेकर तूने वृत्रको मार डाला, उस समय तूने [आयसं वज्र अधारयः] फौलादका वज्र धारण किया था और [दिवि दशे सूर्य] आकाशमें सर्वत्र प्रकाश होनेके लिये सूर्यको स्थापन किया था ।

इन्द्र कपटी शत्रुओंसे कपट करता है, सीधे शत्रुओंसे सीधा बर्ताव करता है । कपटी शत्रुओंके कपटजालमें कभी फँसता नहीं । यह यहाँ विशेष रीतिसे देगना चाहिये ।

**कपट करनेवालोंसे कपट ।**

त्वं मायाभिर्गप मायिनोऽधमः स्वधाभिर्ये अथि शुभाचजुह्वत । त्वं पिप्रोर्नृमण प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्वानं दस्युहृत्येषु आविथ ॥

[५८९; ऋ०१।५१।५]

हे इन्द्र ! जो [स्वधाभिः शुभा अधि अजुह्वत] जो अपने ही मुखमें भस्त्रोंका हवन करत है अर्थात् जो स्वयं भोग भोगते है, उन [मायिनः] कपटियोंको तूने [मायाभि अप अधमः] कपटोंसे ही नीचे गिराया, [त्वं नृमण. पिप्रो पुर प्रारुजः] तूने धनेच्छु पिप्रु नामक शत्रुके नगरोंको तोड़ दिया, और तूने [ऋजिश्वानं] ऋजिश्वाको [दस्युहृत्येषु प्राविथ] शत्रुओंका वध करनेके समयमें बचाया ।

[मायाभिः मायिनः अप अधमः] कपटोंसे कपटी शत्रुओंको दवाना योग्य है । सर्वत्र यही न्याय है, जो वेदने बताया है । शत्रुके नगर, कीले, देश आदि जलाना, तोड़ना नष्ट करना, यह भी एक युद्ध की नीति ही है, देखिये—

**शत्रुओंके नगर फोड़ डाले ।**

अभि सिध्मो अजिगादस्य शरून् वि तिग्मेन वृप-भेणा पुरोऽभेत् । सं वज्रेणासृजद् वृत्रामिद्रः प्र म्यां मतिं अतिरच्छाशदान् । [५८९; ऋ०१।३३।१३]

[अस्य सिध्मः शरून् अभि अजिगात्] इस इन्द्रका यशस्वी वज्र शरूपर जा गिरा, इसने [तिग्मेन पुरः विभेत्] तीक्ष्ण शस्त्रसे नगरोंको तोड़ डाला । इन्द्रने [वृत्र वज्रेण स असृजत्] वृत्रपर वज्र फेंक दिया और [शाशदानः स्व]

मति अतिरत् ] प्रशंसित हुआ, वह इन्द्र अपनी बुद्धिके अनुसार विजयको प्राप्त कर सकता है ।

त्वं करञ्जमुत पर्णय वधी तेजिष्ठयातिथिग्वस्य  
वर्तनी । त्व शना वंगृदस्याभिनत् पुरोऽ-  
नानुद् परिपूता ऋजिश्विना ॥ [७८२; ऋ० १।५।३।८]

अतिथिग्व राजाके तेजस्वी चक्रसे तू करज और पर्णय शरूओका वध किया व ऋजिश्विने घेर हुए [ शता पुरः अभिनत् ] शरूके सौ कीलो अथवा नगरोंको तोड़ दिया ।

आ यद्धरी इंद्र विव्रता वेग ते वज्रं जरिता  
वाहोर्धात् । येनाविहर्यतक्रतो अमित्रान् पुर  
इष्णासि पुरुहूत पूर्वाः ॥ [ ८८६; ऋ० १।६।३।२ ]

[ यत् । जब हे इन्द्र ! तेरे [ हरी ] घोड़े [ विव्रता वेः ] इधर, उधर भटकते थे, उनको तूने [ आ ] पास लाकर रथ-को जोड़ दिया, तब [ ते बाहोः वज्र ] तेरे बाहुमे वज्र [ जरिता आधात् ] स्तोताने रख दिया । हे [ अ-वि-हर्यत क्रतो ] हे अजिंक्य वीर ! हे [ पुरुहूत ] बहुतों द्वारा प्रशंसित ! तू [ अमित्रान् पूर्वाः पुरः ] शरूओको और उनके बहुतसे नगरोंको [ इष्णामि ] नाश करनेकी इच्छा करता है ।

शत्रुके संकडों कीलोंका नाश ।

अध्वर्यवो यः शतं शबरस्य पुरो विभेदाश्वनेव  
पूर्वाः । यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्र अपाव-  
पद् भग्ना सोममस्मै ॥ [ ११५५; ऋ० २।१।४।६ ]

जिमने शबरके [ शतं पुर विभेद ] सौ कीले तोड़ दिये, [ शत सहस्र अपावत् ] जिसने लाखों सैनिकोंका नाश किया, उस इन्द्रको सोम अर्पण करो ।

न्याविध्यदिलीविशस्य दृह्वा वि शृङ्गिणं अभि-  
नच्छुणामिद्र । यावत्तरो मघवन् यावदोजो वज्रेण  
शत्रुं अवधीः पृतन्युम् ॥ [ ७८९; ऋ० १।३।३।१२ ]

[ इलिविशस्य दृहः । न्याविध्यत ] शत्रुके सुदृढ कीलोंको तोड़ दिया । [ शृगिण शुष्ण वि अभिनत् ] सींगवाले शुष्ण को लिङ्गभिन्न किया । हे इन्द्र ! त्वरासे और बलसे तूने [ पृतन्य शत्रु वज्रेण अवधीः ] युद्धकी इच्छा करनेवाले शरूका वज्रसे वध किया ।

प्रास्मै गायत्रमर्चत चावातुर्यः पुरंदरः । याभिः  
काणवस्येण वर्हिरासदं यासद् वज्री भिनत्पुरः ॥

[ २४; ऋ० ८।१।८ ]

उसके लिये गायत्र सामका गायन करो, जो [ पुरंदरः ] शरूके नगरोंको तोड़नेवाला सबको पूज्य है, जो कणवके यज्ञमें जाता है और जो वज्रधारी [ पुरः भिनत् ] शरूके कीले तोड़ता है ।

शरूके कीले अथवा नगर जलाकर, तोड़ कर जो शत्रुका नाश करता है वह वीर इन्द्र है । कणव नाम ज्ञानी का है । पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत । इन्द्रो वि-  
श्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ [ ७३; ऋ० १।१।१।४ ]

इन्द्र [ पुरां भिन्दु ] शरूके कीलोंका या नगरोंका भेदन करनेवाला, [ युवा कवि ] तरुण कवि, [ अमित भोजा ] अत्यंत बलवान् [ वज्री ] वज्रादि शस्त्र धारण करनेवाला, [ विश्वस्य कर्मणो धर्ता ] सब कर्मोंका धारण करनेवाला अर्थात् सब कर्मोंको निभानेवाला होनेके कारण [ पुरुष्टुतः ] अनेकों द्वारा प्रशंसित [ अजायत ] हुआ है ।

इस तरह के शरूके कारण वह सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

वि दृह्वानि चिदद्रिवो जनानां शचीपते ।

वृह माया अनानतः ॥ [ २०६८; ऋ० ६।४।५।९ ]

हे वज्रधारी शचीपते इन्द्र ! शरूके [ दृह्वानि ] सदृढ कीले भी [ विवह ] तोड़ दो ।

बनावटी कीलोंका नाश ।

स हि श्रवस्यु सदनानि कृत्रिमा क्षमया वृधान ओज-  
सा विनाशयन् । ज्यातीषि कृण्वन्नवृकानि यज्यवेऽ-  
व सुक्रतु सर्तवा अप सृजत ॥ [ ८०२; ऋ० १।५।५।६ ]

[ स श्रवस्युः ] वह कीर्तिकी इच्छा करनेवाला इन्द्र [ ओजसा वृधानः ] अपने पराक्रमसे बढ़नेवाला [ क्षमया कृत्रिमा सदनानि ] शत्रुके भूमिके साथ रहनेवाले बनावटी कीलोंका [ विनाशयत् ] नाश करता है । [ यज्यवेः ] याजकके हित के लिये [ अवृकानि ज्यातीषि कृण्वन् ] तेजोंको खुडा करनेवाला वह [ सक्रतुः ] उत्तम कर्म करनेवाला इन्द्र [ अपः सर्तवै अव सृजत ] जलोंको प्रवाह बननेके लिये उत्पन्न करता है ।

बनावटी कीले वे होते हैं [ कृत्रिमा सदना ] कि जो सेना अपनी रक्षार्थ थोड़ेसे परिश्रमसे तैयार करती है । ये भी इन्द्र तोड़ता है और शत्रुको परास्त करता है ।

बीस राजोंसे युद्ध ।

त्वमेतान् जनराज्ञो त्रिर्दशाऽबंधुना सुश्रवसो-  
पजग्मुषः । षष्टि सहस्रा नवर्ति नव श्रुतो नि  
चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् ॥ [ ७८३; ऋ० १।५।३।९ ]

[अबन्धुना] सहायता के विना [सुश्रवसा] सुश्रव अर्थात् कीर्तिमान् राजाने जिन [द्विः दश जनराज] बीस जनराजोंके ऊपर हमला किया था, उनके ६००००० रथोंसे युक्त दुर्धर्ष सेनाको अपने चक्रसे तूने [नि वृगक] नष्ट कर दिया।

सेनामें ६००००० रथों के लिये छः लाख सैनिक आवश्यक हैं। इतनी बड़ी सेनाके साथ यह युद्ध हुआ, ऐसा वर्णन यहां है। यह वर्णन काल्पनिक या रूपकभी माना जाय, तो भी बड़ी सेनाका संचालन यहां दीम्बता है, वह विचार के योग्य है।

### इन्द्रके रथके घोड़े ।

आ द्वाभ्यां हरिभ्यां इंद्र याहि आ चतुर्भिर्गा पद्भिर्हयमानः। आष्टाभिर्दशभिः सोमपेयमयं सुतः सुमख मा मृधस्कः ॥ ४ ॥ आ विंशत्या त्रिंशता याह्यर्वाडा चत्वारिंशता हरिभिर्युजानः। आपञ्चाशता सुग्धेभिरिंद्रा ऽऽ पृथ्या सप्तत्या सोमपेयम् ॥ ५ ॥ आशीत्या नवत्या याह्यर्वाडा शतेन हरिभिरुह्यमान । अयं हि ते शुनहोत्रेषु सोम इंद्र त्वाया परिषिक्तो मदाय ॥ ६ ॥

[११९३-००१; ऋ० ११८।४-६]

हे इन्द्र 'दो, चार, छः, आठ, दस, बीस, तीस, चालीस, पचास, साठ, सत्तर, असी, नब्बे, अथवा सौ घोड़ों को जोते हुए रथमें बैठकर यहां आ और इस सोमका ग्रहण करो।

इन्द्रके घोड़ोंका यह वर्णन है। इस समय राष्ट्रपतिका जल्लस पचास या साठ घोड़ोंके रथमें बिठलाकर निकालनेका वर्णन देखते हैं। इससे १०० घोड़ोंके रथमें इन्द्रका जल्लस निकालना, विजयी वीरका जल्लस ऐसा बड़ा निकालना संभव तो हो सकता है। इसमें कोई अत्युक्ति प्रतीत नहीं होती।

### शिरस्त्राण धारण करनेवाला इन्द्र ।

इंद्रः सुशिप्रो मघवा तरुत्रो महाव्रतस्तुविकृ-  
मिर्क्रंघावान् । यदुग्रो धा बाधितो मर्त्येषु क  
त्या त्पे वृषभ वीर्याणि॥ त्वं हि ष्मा च्यावयन्न-  
च्युतानि एको वृत्रा चरसि जिघ्रमानः । तव  
द्यावापृथिवी पर्वतासोऽनु व्रताय निमित्तेव  
तस्थुः ॥ [१२४०-४१; ऋ० ३।३०।३-४]

हे [वृषभ] बलवान् इन्द्र । तू [सु-शिप्रः] उत्तम शिर-  
स्त्राण धारण किया हुआ, [मघ-त्रा] धनवान् [तरुत्रः] स्वरासे

संरक्षण करनेवाला, [महाव्रतः] महासेनाको चढानेवाला, [तुवि-कृमिः] महापराक्रमी, [ऋघावान्] समृद्धिवान् और [उग्रः] बड़ा पराक्रमी है। तू [मर्त्येषु बाधित] मानवोंमें जो पराक्रम किये, वे तेरे पराक्रम [क] कहां हुए हैं ?

तू [एकः] अकेलाही [अच्युतानि च्यावयन्] स्थिरों को हिलानेवाला है, तू [वृत्रा जिघ्रमानः] शत्रुओंका वध करता है। तेरे [अनुव्रताय] अनुकूल कार्य करनेके लिये षुलोक, भूलोक और सब पर्वत [निमिता इव तस्थुः] स्थिर जैसे रहे हैं।

### बड़ा पादत्राण ।

अभिव्लग्या चिद्विब्रः शीर्षा यातुमतीनाम् ।  
छिन्धि वद्वरिणा पदा महावद्वरिणा पदा ॥२॥  
अवासां मघवज्रहि शर्धो यातुमतीनाम् ।  
वैलस्थानके अर्मके महावैलस्थे अर्मके ॥३॥

[१०२५-३०; ऋ० १।१३२]

हे [अद्विवः] वज्रधारी ! [अभिव्लग्या] डूँड डूँडकर [यातु-  
मतीनां शीर्षा] दुष्टोंके सिर [वद्वरिणा पदा छिन्धि] पादत्राण-  
युक्त पावसे तोड़, बड़े पादत्राणयुक्त पावसे तोड़, दुष्टोंको [भव जहि] बड़े स्पशानमें नष्ट कर।

### शत्रुका पराभव करनेका सामर्थ्य ।

हृदं न हि त्वा न्यृपन्त्यूर्मयो ब्रह्माणीद्र तव यानि  
वर्धना । त्वष्टा चित्ते युज्यं वावृधे शवः ततश्च  
वज्रं अभिभूत्योजसा ॥ [५६६; ऋ० १।१।५]  
जिस तरह [ऊर्मयः हृदं] जलप्रवाह जलाशय को भर  
देते हैं, उस तरह [ब्रह्माणि तव वर्धना] ये स्तोत्र तेरी  
बधाई को भर देते हैं, वर्णन करते हैं। त्वष्टाने [युज्यं शवः]  
तेरे योग्य बल [वावृधे] बढ़ाया और [अभिभूति-भोजसा  
वज्र ततश्च] शत्रुका पराभव करनेकी शक्तिके साथ तेरे  
लिये वज्रभी बनाया।

### इन्द्रके अन्तरिक्षस्थ शत्रु ।

त्वमेतान रुदंतां जक्षतश्च अयोधयो रजस इंद्र  
पारे। अवाद्दहो दिव आ दस्युमुष्ठा प्र सुन्वतः  
स्तुवतः शंसमाव ॥७॥ चक्राणासः परीणहं  
पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुंभमानाः । न  
हिन्वानासस्तिनिरुस्त इंद्रं परि स्पशो अद्धान् ।  
सूर्येण ॥ ८ ॥ [५३६-३७; ऋ० १।३।१-८]

हे इन्द्र ! तूने इन [रुद्रतः जक्षतः च] रोनेवाले और भोग भोगनेवाले शत्रुओंको (अयोधयः रजसः पारे) युद्ध करके अन्तरिक्षके पार भगा दिया । (दस्युं अदहः) तूने शत्रुको जला दिया और [दिवः भव] शुलोकसे उसको नीचे गिरा दिया । तथा [शंसं भावः] याजकोंकी स्तुतियोंको उच्च स्थानमें स्थिर किया है ।

सोनेके आभूषणोंसे सुशोभित हुए वे शत्रु [पृथिव्याः परीणहं चक्राणाम्] पृथ्वीके परिघमें भ्रमण करते थे, वेभी (स्पृशः) शत्रुके दूत [इन्द्र हिन्वानामः न तित्तिरु] इन्द्रको परीजित न कर सके । पर [सूर्येण परि अदधात्] उमने ही शत्रुओंको सूर्यप्रकाशसे आच्छादित किया ।

यह युद्ध नि सन्देह पृथ्वीके ऊपरका नहीं है । यह आकाशमें होनेवाला युद्ध है अथवा यह रूपक भी होगा ।

### शत्रुका वध और सत्यप्रचार ।

प्र सू त इन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्र ते वज्रः प्रमृणन्नेतु शत्रून् । जहि प्रतीचो अनूचः पगाचो विश्वं सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु ॥ [१२८३, ऋ० ३।२०।६]

हे इन्द्र ! [ते] तेरा रथ दो घोड़ोंके द्वारा शीघ्र यहाँ आवे [ते वज्र] तेरा वज्र [शत्रून् प्रमृणन् प्र एतु] शत्रुओंका वध करता हुआ चले । [प्रतीच.] हमला करनेवाले शत्रुओंको, [अनूच] दोनो ओरसे आनेवाले शत्रुओंको, तथा [पराचः] भागनेवाले शत्रुओंको तू नष्ट कर, [विश्वं सत्यं कृणुहि] विश्वमें सत्यका प्रचार कर और वह सर्वत्र [विष्टमस्तु] प्रविष्ट हो कर रहे ।

### आगे बढ ।

प्रेहि अभिहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते ।

इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपो अर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ [१००, ऋ० १।८०।३]

हे इन्द्र [प्रेहि] शत्रुपर चढाई कर, [अभिहि] शत्रुका नाश कर, [धृष्णुहि] शत्रुको परास्त कर । [ते वज्रः न नियंसते] तेरे वज्रका प्रतिकार कोई कर नहीं सकता । हे इन्द्र ! [ते शवः नृम्णं] तेरा बल विजयकारी है, अतः [वृत्र हनः] शत्रुका नाश कर, [अपः जय] जलोंको प्राप्त कर, [स्वराज्य अर्चन् अनु] स्वराज्यकी अर्चना करते हुए यह सब कर ।

### नव्वे नदियाँ ।

वि ते वज्रासो अस्थिरन् नवतिं नाध्यारे अनु । महत् त इन्द्र वीर्यं बाहोस्ते बलं हितं अर्चन् अनु स्वराज्यम् ॥ [१०७, ऋ० १।८०।८]

हे इन्द्र ! [ते वज्रास.] तेरे वज्र [नवतिं नाध्या अनु] नौकाएँ जिनमें चलती हैं, ऐसे नव्वे नदियोंके पास [वि अस्थिरन्] पहुँचे हैं । तेरा पराक्रम बहुत बड़ा है, तेरे बाहुओंमें बहुत बल है, स्वराज्यकी अर्चना करते हुए यह सब कर ।

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः । तमिन्महत्स्वाजिषूतमभे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽवियन् ॥ [११६, ऋ० १।८१।१]

[वृत्रहा इन्द्र.] शत्रुनाशक इन्द्र [मदाय शवसे] आनन्द और बल बढ़ानेके लिये [नृभि. वावृधे] मनुष्योंने बढ़ाया है, मनुष्योंने उसकी बधाई की है । [तं महत्सु आजिषु] उसको हम बड़े संग्रामोंमें तथा [अभे हवामहे] अयानक युद्धमें बुलाते हैं । वह हमें [वाजेषु अविषत्] युद्धोंमें बचावे ।

युद्धके समय इन्द्र की सहायता मांगी जाती है । क्योंकि इन्द्रही वीर्य बढ़ाता है ।

असि हि वीर सेन्योऽसि भूरि पदाददिः । असिदभ्रस्य चिद्वृधो यजमानाय शिखासि सुन्वते भूरि ते वसु ॥ [११७, ऋ० १।८१।२]

हे वीर ! तू [सेन्यः असि] सेना अपने पास रखनेवाला वीर है । शत्रुओंका [भूरि पदाददिः] परास्त करनेवाला है, [दभ्रस्य वृधः] छोटोंको तू बढ़ानेवाला है, तू यजमान को ज्ञान सिखाता है [ते भूरि वसु सुन्वते] तेरा बहुत धन यज्ञ करनेवाले के लिये ही है ।

अरोरवीद् वृष्णो अस्य वज्रोऽमानुषं यन्मानुषो निर्जूचात् । नि मायिनो दानवस्य माया अपादयत् पपिवान्तसुतस्य ॥ [११९०, ऋ० २।११।१०]

[मानुषः] मनुष्यका हित करनेवाले इन्द्रने जब [अमानुषं] अमानुष शत्रुका वध किया, तब इसका वज्र [अरोरवीत्] गर्जना करने लगा । सोम रस पीनेवाले इन्द्रने [मायिनः दानवस्य मायाः निः अपादयत्] कपटी शत्रुके सब कपटोंका नाश किया ।

न क्षोणीभ्यां परिभवे त इन्द्रियं न समुद्रैः पर्व-  
तैरिन्द्र ते रथः । न ते वज्रमन्वश्रोति कश्चन यदा-  
शुभिः पतसि योजना पुरु ॥ [११७४, ऋ० २।१६।३]

[त इन्द्रिय] तेरा सामर्थ्य आकाशपृथिवी [न परिभवे] कम नहीं कर सकते, समुद्रों और पर्वतोंसे तेरे रथको प्रतिबध नहीं होता, तेरे वज्रको कोई पराभन नहीं कर सकता, ऐसा तू अपने सत्वर चलानेवाले घोड़ोंसे बहुत योजन तक [पतसि] दूर जाता है ।

अधाकृणाः प्रथमं वीर्यं महद् यदस्याग्रं ब्रह्मणा  
शुष्ममैरग्यः । रथेष्टेन हर्यश्वेन विच्युताः प्र जीरग्यः  
सिस्त्रते सध्यक पृथक ॥ [११८०, ऋ० २।१७।३]

हे इन्द्र ' तू प्रथम बड़ा पराक्रम करने लगा, उस समय ज्ञानके साथ बड़ा बल तूने प्रकट किया । रथमें बैठ इन्द्रने [विच्युताः] अपने स्थानसे अष्ट किये शत्रु [सध्यक] इकट्ठे मिलकर तथा [पृथक] अलग अलग रहकर भी [प्रसिस्त्रते] भागते रहते हैं ।

विश्वजिते धनजिते स्वर्जिते सत्राजिते नृजिते  
उर्वराजिते । अश्वजिते गोजिते अग्निजिते भृगु-  
द्राय सोमं यजताय हर्यतम् ॥ १ ॥ अभिभुवं-  
ऽभिभंगाय वन्वतेऽपाळहाय सहमानाय  
वेधसे । तुविग्रये वह्नये दुष्टरीतवे सत्रासाहे  
नम इन्द्राय वोचत ॥२॥ [१२१७-१८, ऋ० २।२१]

[विश्वजिते] विश्वविजयी, [धनजिते] धनको जीतनेवाले, [स्वर्जिते] तेजस्विता प्राप्त करनेवाले, [सत्राजिते] साथ साथ जीतनेवाले, [नृजिते] मानवी शत्रुको जीतनेवाले, [उर्वरा-जिते] उपजाऊ भूमिको जीतनेवाले, [अश्वजिते] घोड़ोंको जीतनेवाले, [गोजिते] गौओंको जीतनेवाले, [अग्निजिते] जलको जीतनेवाले, [अभिभुवं] सामनेसे शत्रुका पराभव करनेवाले, [अभिभंगाय] शत्रुका नाश करनेवाले [अपाळहाय] जिसका प्रताप शत्रुको सहन नहीं होता, [सहमानाय] पर शत्रुका हमला सहन करनेवाले, [वेधसे] शत्रुका वेध करनेवाले, अग्नि जैसे तेजस्वी, [दुष्टरीतवे] जिसका पार करना अशक्य है, ऐसे [सत्रासाहे] मिलकर हमला करनेपर भी जो अपने स्थानपर स्थिर रहता है, ऐसे इन्द्रका स्तोत्र हम गाते हैं ।

यहां इकट्ठे इन्द्रके बहुतसे कर्म बताये हैं, ये देखनेयोग्य हैं-

सर्व कर्मोंमें अग्रसर ।

त्वं तमिन्द्र पर्वतं न भोजसे महो नृम्णस्य  
धर्मणामिरज्यसि । प्र वीर्येण देवताति चोकिने  
विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः ॥

[७९९, ऋ० १।५५।३]

हे इन्द्र ' तू [महः नृम्णस्य] बड़े धनका आंर [धर्मणामि-रज्यसि] धर्मोंका अधिपति है । तू अपने पराक्रमसे देवता-ओंमें प्रतिष्ठा पाता है, क्योंकि तू [विश्वस्मै कर्मणे] सब कर्मोंमें [उग्रः पुरोहित] प्रचंड अग्रगामी वीर है ।

पुरोहित का अर्थ यहां नेता है, जो कर्म करने के लिये आगे होता है ।

बलशाली धन ।

अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्त्रिणम् ।

यस्मिन् विश्वानि पांस्या ॥ [२०, ऋ० १।५।९]

[यस्मिन् विश्वानि पांस्या] जिसमें सब प्रकारके बल है, ऐसी शक्ति इन्द्र हमे देवे, क्योंकि [इन्द्र. अ-क्षित-उतिः] इन्द्रके रक्षण करनेके सामर्थ्य अनंत है ।

हमें धन चाहिये, पर वह ऐसा चाहिये कि, जिसके साथ हमारे पास सब प्रकारके सामर्थ्य भी प्राप्त हो । ऐसा धन हमें नहीं चाहिये कि, जो हमे कमजोर बनावे ।

इन्द्र सानसिं रथि सर्जित्वानं सदासहम् ।

वर्षिष्ठमृतये भर ॥ [३८, ऋ० १।८।१]

हे इन्द्र । [स-जित्वानं] सदा जयशाली, [सदा-सहं] सदा शत्रुका नाश करनेमें समर्थ और [वर्षिष्ठ] सदा बढ़नेवाला और कभी न घटनेवाला ऐसा [सानसिं रथि] सुख देनेवाला धन [ऊतये आभर] हमारी रक्षाके लिये हमारे पास भर कर ले आ ।

हमें धन ऐसा चाहिये कि, जिससे हमारा सदा जय होता रहे, शत्रुका पराभव करनेका सामर्थ्य हमारे पास रहे, हमारे महत्कार्योंमें जितना धन हमें आवश्यक हो, उतना सदा मिलता रहे, धनके अभावके कारण हमारे पुरुषार्थ रुकें न रहे, तथा हमारी रक्षा होती रहे । अर्थात् हमें ऐसा धन नहीं चाहिये, जिसमें धनमें फंस कर हमारा पराभव होता रहे, जिससे हम शत्रुका नाश करनेमें असमर्थ हो जाय, जो आवश्यक कर्तव्योंके लिये न्यून हो जाय और जिससे हम अपनी रक्षा करनेमें असमर्थ सिद्ध हो जाय ।

## हमें धन मिले ।

सं गोमादिन्द्र वाजवदस्मे पृथु श्रवो वृहत् । विश्वा-  
धर्षीक्षितम् ॥ अस्मे धेहि श्रवो वृहद् द्युम्नं सहस्रसा-  
तमम् । इन्द्र ता रथिनीरिपः ॥ [ ५. ८. ५५, ऋ० १।१।७-८ ]

हे इन्द्र ! हमें ऐसा धन मिले, जिसके साथ [ गोमन् ]  
बहुत गौंवे हों, [ वाजवत् ] बहुत घोड़े अर्थात् वाहन हों,  
[ अ-क्षित ] जो नाश न होनेवाला हो जो [ विश्व-आयु ]  
सब प्रकारसे आयुष्य बढ़ानेवाला हो, [ पृथु-वृहत श्रवः ]  
जो विपुल तथा श्रेष्ठ प्रकारके यशसे युक्त हो । हे इन्द्र !  
हमें [ सहस्र-सातमं ] सहस्रों प्रकारका [ वृहत् द्युम्न श्रवः ]  
विपुल और तेजस्वी धन हो । [ ता-रथिनी रिप ] तथा  
अन्न ऐसा हो कि, जो अनेक गाड़ियोंमें भरकर लाया जा सके।

हमारे घरमें गौंवे, घोड़े, वाहन, गाड़ियां, रथ, धन भरपूर  
हों, किसी तरह न्यूनता न रहे । अन्नभी बहुत हमें प्राप्त  
हो । हमसे इस धनका उत्तम उपयोग हों, जिससे हमारा  
यश चारों दिशाओंमें फैले । इस तरहका धन हमें चाहिये ।

## इन्द्रकी गुह्य मन्त्रणा ।

अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् ।

मा नो अति ख्यः ॥ [ ८, ऋ० १।८।३ ]

' तेरी गुह्य सुमतियां हमें मालूम हों, हमारे शत्रु उनका  
न जान सकें । '

' अन्तम सुमति ' वह है, जो राज्यशासन करनेवाले  
वीरोंके पास ही रहती है । गुह्य सलाह या मसलत, गुप्त  
मन्त्रणा इन्द्रके पास रहती है, क्योंकि यह इन्द्र सब  
विश्वका साम्राज्य चलाता है । हम उसके अनुयायी हैं,  
इसलिये वह मन्त्रणा हमसे ही मालूम हों, पर शत्रुओं को  
उनका पता न लगे ।

## घुटनें जोड़कर प्रार्थना ।

स वह्निभिः ऋक्भिः गांषु शश्वन मितञ्जुभिः

पुरुकृत्वा जिगाय । पुरः पुराहा सखिभिः

सखीयन् दृळ्हा हरोज कविभिः कविः सन् ।

[ २०१३; ऋ० ६।३२।३ ]

[ सः ] उस इन्द्रने [ मितञ्जुभिः ] घुटनें जोड़कर प्रार्थना  
करनेवालोंके लिये [ पुरुकृत्वा जिगाय ] बारबार विजय  
किया । उस इन्द्रने अनेक मित्रोंके साथ शत्रुके [ दृळ्हा  
पुरः ] सुदृढ नगर तोड़ दिये ।

## इन्द्र और माताका संवाद ।

जज्ञानो नु शतक्रतुः वि पृच्छदिति मातरम् ।

क उग्राः के ह शृण्विरे ॥ १॥

आदीं शवस्यब्रवीत् और्णवाभं अहीशुषम् ।

ते पुत्र सन्तु निष्टुरः ॥ २॥

समिन् तान्-वृत्रहासिदत् स्व अरौ इव खेदया ।

प्रवृद्धो दस्युहाभवत् ॥ ३॥ [ ६८०-४२; ऋ० ८।७७ ]

इन्द्र उत्पन्न होते ही अपनी मातासे पूछने लगा कि,  
कौन शूर है और कौन प्रसिद्ध वीर हैं ? वह माता उमसे  
बोली कि और्णवाभ और अहीशुव ये वीर हैं । हे पुत्र ! इन  
का निःपात करना उचित है । इन्द्रने उनको खींच लिया  
और नाश किया, इससे वह बड़ा हुआ ।

माता अपने पुत्रको वीरताकी शिक्षा कैसे देवे, यह इन  
मन्त्रोंमें है । माताएँ इस का मनन करें । बचपनसे इस  
तरह माताएँ बोध देती रहेगी, तो पुत्र वीर ही बनेगे, इस  
में सदेह नहीं है ।

## अन्तिम निवेदन ।

इन्द्रदेवता के विषयमें इतना मनन यहां पर्याप्त है ।  
इन्द्र आत्मा अथवा परमात्मा है, यह प्रथम बताया है  
और उत्तर विभागमें इन्द्र क्षत्रिय शूर वीर है, यह भाव  
बताया है । इन्द्रकी अन्यान्य विभूतियों मन्त्रोंका मनन  
करनेके बाद पाठक स्वयं जान सकते हैं ।

इस स्थानपर जो इन्द्रवाचक पद दिये हैं, वे किस  
मन्त्रमें कहां हैं, यह पाठक इन सूचियोंसे जान सकते हैं ।  
तथा इन सूचियोंका उपयोग करनेपर पाठकोंको इसी तरह  
अन्यान्य शब्द मिल सकते हैं कि, जिनसे इन्द्र का ठीक  
ठीक स्वरूप जाना जा सकता है ।

अग्निकी अपेक्षा इन्द्रकी सूचियां अधिक हैं । तथा  
इसमें उत्तरपदसूची भी विशेष उपयोगी है ।

## धन्यवाद ।

इन्द्रकी विशेषण, उपमा, तथा अन्य सूचियां बनानेका  
बड़े परिश्रमका कार्य श्री पं० अनंत दिनकर रास्ते, पूना-  
निवासीने किया है । इसलिये वे धन्यवाद के लिये योग्य  
हैं । अग्निकी सूचियां भी इन्हींकी बनायी है ।

अन्तमें पाठकोंसे प्रार्थना यही है कि, वे इस दैवत-  
संहिता से जितना अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं, उतना  
प्राप्त करें और वेदके सत्य सिद्धान्त के पास पहुचनेका  
आनन्द प्राप्त करें ।

औंध, जि० सातारा

संपादक

माघ वद्य सं० १९९८

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

# इन्द्रदेवता का परिचय ।

## भूमिका की विषय-सूची ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१ मेघस्थानीय विद्युत् ।	३	३८ शत्रुको जजिरोंसे बांधकर कारागार में रखना ।	१९
२ इन्द्रिय=इन्द्रकी शक्ति ।	"	३९ फौलादका तीक्ष्ण वज्र ।	"
३ इन्द्र के इन्द्रिय ।	"	४० कपट करनेवालोंसे कपट ।	"
४ विश्वसृष्टि ।	४	४१ शत्रुओंके नगर फोड़ डाले ।	"
५ व्यक्तिसृष्टि ।	"	४२ शत्रुके सैकड़ों कीलों का नाश ।	२०
६ निरुक्तकी व्युत्पत्ति ।	"	४३ बनावटी कीलोंका नाश ।	"
७ उपनिषदोंमें इन्द्रका अर्थ ।	५	४४ बीस राजों से युद्ध ।	"
८ मस्तकमें इन्द्रशक्ति ।	६	४५ इन्द्रके रथके घोड़े ।	२१
९ ब्राह्मणग्रन्थोंमें इन्द्रका अर्थ ।	"	४६ शिरस्त्राण धारण करनेवाला इन्द्र ।	"
१० वेदमें इन्द्रके विशेषण ।	८	४७ बड़ा पादत्राण ।	"
११ सबका एक राजा ।	९	४८ शत्रुका पराभव करनेका सामर्थ्य ।	"
१२ सुलोक से बड़ा ।	"	४९ इन्द्रके अन्तरिक्षस्थ शत्रु ।	"
१३ त्रिलोक इन्द्र से विभक्त नहीं ।	१०	५० शत्रुका वध और सत्यप्रचार ।	२२
१४ कुछ भी दूर नहीं है ।	"	५१ आग बढ ।	"
१५ सुलोक का उत्पादक इन्द्र ।	"	५२ नन्वे नदियाँ ।	"
१६ पृथ्वी और जल का उत्पादक ।	"	५३ सर्वे कर्मोंमें अग्रेसर ।	२३
१७ आकाश खड़ा करनेवाला ।	"	५४ बलशाली धन ।	"
१८ नक्षत्र स्थिर किये ।	"	५५ हमें धन मिले ।	२४
१९ स्थावर, जंगम कांपते हैं ।	११	५६ इन्द्रकी गुप्त मन्त्रणा ।	"
२० सब का वश करनेवाला इन्द्र ।	"	५७ घुटने जोड़कर प्रार्थना ।	"
२१ इन्द्र का असीम सामर्थ्य ।	"	५८ इन्द्र और माताका संवाद ।	"
२२ तेरे मार्गका अतिक्रमण सूर्य नहीं करता ।	१२	५९ अन्तिम निवेदन ।	"
२३ मैं इन्द्र हूँ= इन्द्र का साक्षात्कार ।	"	६० धन्यवाद ।	"
२४ क्षत्रिय वीर इन्द्र ।	"	<b>इन्द्रदेवताकी सूचियाँ ।</b>	
२५ आर्य के लिये प्रकाश दो ।	१५	१ पुनरुक्त-मन्त्रसूची ।	पृ० २२०-२६१
२६ धार्मिकों का हितकर्ता ।	"	प्रथम मण्डल ।	२२०-२२८
२७ पञ्चजनों का रक्षक ।	"	द्वितीय "	२२८-२२९
२८ लोकहितार्थ युद्ध ।	१६	तृतीय "	२२९-२३१
२९ दस्युको दण्ड और आर्योंकी उन्नति करो ।	"	चतुर्थ "	२३२-२३६
३० रक्षण के लिये खड़ा रहो ।	"	पञ्चम "	२३५-२३६
३१ दुष्टों का नाश कर ।	"	षष्ठ "	२३६-२३७
३२ वृत्रवध ।	१७	सप्तम "	२३९-२४०
३३ वज्र को नचाया ।	"	अष्टम "	२४०-२५१
३४ शत्रु वध है ।	"	दशम "	२५२-२६१
३५ युद्धों में विजयी ।	१८	२ उपमासूची ।	२६२-२६९
३६ कपटी शत्रु का नाश ।	"	३ मन्त्राणां अकारानुक्रमसूची ।	२७०-२९५
३७ जल सुप्राप्य करना ।	"	४ (विशेषण) गुणबोधकपदसूची ।	२९८-३३५
		५ गुणबोधक-सामासिक-पदानां उत्तर-पदसूची ।	३३८-३४८



# इन्द्रमन्त्राणां ऋषिसूची ।

## (१) इन्द्रः ।

ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठं	ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठ
मधुच्छन्दा वैश्वामित्र	१-६९	१	नोधा गौतम.	८५६-९९	४६
जेता माधुच्छन्दसः	७०-७७	४	गौतमो राहूगण'	९००-५६	५०
मेधातिथिः काण्वः	७८-८६	"	वार्षागिराः ऋजाश्वाऽम्बरिष-	९५७-७५	५४
प्रगाथो ( घौर ) काण्वः	८७-८८	७	सहदेव-भयमान-मुराधमः }		
मेधातिथि-मेधातिथी काण्वः	८९-११५	७	रेभः काश्यपः	९७६-९०	५५
मेधातिथिःकाण्वः(आङ्गिरसःप्रियमेधश्च)	११६-१५५	"	नेमो भार्गवः	९९१-१३,९९६-९९	५६
देवातिथिः काण्व	२२९-४२	१३	इन्द्र	९९४-९५	"
वत्स काण्व	२४३-८७	१४	परुच्छेपो देवोदासि	१०००-१०४१	५७
पर्वतः काण्वः	२८८-३२०	१५	अगस्त्यो मैत्रावरुणिः	१०४२-११००	६१
नारदः काण्वः	३२१-५३	१७	गृत्समदो भार्गवः शौनक	११०१-१२३७	६५
गोपूक्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ	३५४-८१	१८	गाथिनो विश्वामित्रः	१२३८-१४३६	७५
इग्निभिः काण्वः	३८२-४०८	१९	कुशिक ऐषीरथिः	१२६०-१२८१	७७
सोभरिः काण्वः	४०९-२४	२०	वामदेवो गौतमः	१४६७-१६६६	९०
नीपातिथिः काण्वः	४२५-३९	२१	गौरिवीतिः शाकल्यः	१६६७-८१	१०३
सहस्रं वसुरोचिषोऽङ्गिरस	४४०-४२	"	बभ्रुरात्रेय	१६८२-९२	१०४
त्रिशोकः काण्वः	४४३-८४	२२	भवस्युरात्रेयः १६९३-१७०४, गातुरात्रेयः १७०५-१६	१०५	
प्रस्कण्वः काण्वः	४८५-९४	२३	प्राजापत्यः संवरणः	१७१७-३५	१०६
पृष्टिगुः काण्वः	४९५-५०४	२४	प्रभूवसुराङ्गिरसः १७३६-४९, भौमोऽत्रिः १७५०-६८	१०८	
श्रुष्टिगुः काण्वः	५०५-१४	२५	इषावाश्व आत्रेयः	१७६९-८२	११०
आयुः काण्वः	५१५-२४	"	आत्रेयी अपाला	१७८३-८९	१११
मेध्यः काण्वः	५२५-३२	२६	विश्वमना वैयश्वः	१७९०-१८१६	"
मातरिश्वा काण्वः	५३३-३८	२७	वशोऽश्व्यः	१८१७-४०	११२
कृवाः काण्वः	५३९-४३	"	बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	१८४१-२००५	११४
पृषध्नः काण्वः	५४४-४७	"	सुहोत्रो भारद्वाजः	२००६-१५	११५
अग्नेः प्रागाथः	५४८-६५	२८	शुनहोत्रो भारद्वाजः	२०१६-२५	१२६
प्रगाथो घौरः काण्वः	५६६-७७	२९	नरो भारद्वाजः	२०२६-३५	१२७
प्रगाथः काण्वः	५७८-६१२	३०	वायुर्बार्हस्पत्यः	२०३६-२१०३	१२८
कङ्किः प्रागाथः	६१३-२७	३१	गर्गो भारद्वाजः	२१०४-२८	१३२
कुरुसुतिः काण्वः	६२८-६०	३२	मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	२११९-२२९०	१३३
इकृष्णौघसः ६६१-६९; कुसीदी काण्वः ६७०-८७		३४	प्रियमेध आङ्गिरसः	२२९१-२३२०	१४५
आजीगर्तिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः	६८८-७१४	३५	पुरुहन्मा आङ्गिरसः	२३२१-३५	१४६
हिरण्यस्त्व आङ्गिरसः	७१५-४४	३६	तिरश्चरिङ्गिरसः	२३३६-६३	१४७
सव्य आङ्गिरसः	७४५-८१६	३८	द्युतानो वा मारुतः	२३४५-६३	१४८
कुरुस आङ्गिरसः	८१७-५५	४४	नृमेध आङ्गिरसः	२३६४-८३	१४९
			नृमेध-पुरुमेधावाङ्गिरसो	२३८४-९६	१५०

श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः	२३९७-२४२९	१५१
सुकक्ष आङ्गिरसः	२४३०-६२	१५३
त्रिशिरास्वाष्ट	२४६३-६५	१५४
पेन्द्रो विमदः प्राजापत्यो वा, } वासुको वसुकृद्वा	२४६६-९०	"
पेन्द्रो वसुकृ	२४९१-२५२९	१५६
कवष ऐल्लष	२५३०-४०	१५९
मुष्कवानिन्द्रः	२५४१-४५	१६०
कृष्णः आंगिरसः	२५४६-७८	"
वैकुण्ठ इन्द्र	२५७९-२६०७	१६२
बृहदुक्थो वामदेव्य.	२६०८-२१	१६५
बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुगोपायनाः	२६२२	१६६
गौरिवीतिः शाक्य	२६२३-३९	"
इन्द्र , पेन्द्रो वृषाकपि , इन्द्राणी	२६४०-६२	१६७
रेणुर्वैश्वामित्रः	२६६३-७९	१६९
वन्नो वैश्वानसः	२६८०-९१	१७०
पेन्द्रोऽप्रतिरथः	२६९२-२७०२	१७१
अष्टको वैश्वामित्रः	२७०३-१३	१७२
कौत्सो दुर्मित्रः सुमित्रो वा	२७१४-२४	"
वैरूपाऽष्टादंष्टः	२७२५-३४	१७३
वैरूपा नभःप्रभेदन	२७३५-४४	१७४
वैरूप शतप्रभेदन	२७४५-५४	"
स्थौरोऽभियुतः स्थौरोऽभियूपो वा	२७५५-६३	१७५
आथर्वणो बृहद्विषः	२७६४-७२	१७६
सुकीर्तिः काक्षीवतः	२७७३-७७	१७७
सुदाः पैजवनः	२७७८-८४	"
मान्धाता यौवनाश्वः, गोधा ऋषिका	२७८५-९१	१७८
अङ्ग औरवः	२७९२-९७	"
ताक्ष्यः सुपर्ण , यामायन } उर्ध्वकृशनो वा	२७९८-२८०३	१७९
सुवेदाः शैरीषिः	२८०४-८	"
पृथुर्वैश्यः २८०९-१३, शासो भारद्वाजः	२८१४-१८	१८०
देवजामय इन्द्रमातरः	२८१९-२३	"
पूरणो वैश्वामित्रः	२८२४-२८	१८१
विश्वामित्र-जमदग्नी २८२९-३१, इटो भागर्वः	२८३२-३५	"
विश्विरौष्ठीनरः, काशिराजः } प्रतर्दनः, रौहिदश्वो वसुमनाः }	२८३६-३८	"
जय ऐन्द्रः २८३९-४१, सप्तगुराङ्गिरसः	२८४२-४९	१८२
ऐन्द्रो लवः	२८५०-६२	"
शृगुराथर्वणः २८६३-६६, सृगारः	२८६७-७३	१८३
कण्वः २८७४-८६, जाटिकायनः	२८८७-८९	१८४

अथर्वा	२८९०-९५; २९०२-४;	१८५
"	२९१५-१६	१८६
कबन्धः २८९६-९८, भगः २८९९-२९०१		१८५
शृग्वह्निराः	२९०५, २९१३	१८६
आङ्गिराः (कितववधकामः)	२९०६-११	"
शृगुः २९१२; अप्रतिरथ.	२९१४	"
गुप्समदो मेधातिथिर्वा	२९१७	"
विश्वस्वानृषिः	२९१८-७४	१८७
वामदेवो गौतमः	२९७५-७८	१९१
" " २९९१-८५ २९९३-९६		"
विश्वामित्रो गाथिन	२९७९	"
विश्वामित्रो गाथिनोऽभीपाद } उदत्वो वा	२९८०	"
त्रसदस्यु	२९८६-८९	१९२
बंधुः सुबंधुः श्रुतबंधुर्विप्रबन्धुश्च } क्रमेण गोपायना लौपायना }	२९९०	"
कवष ऐल्लष	२९९१	"
वमिष्ठो मैत्रावरुणि-	२९९२	"

### इन्द्रसहचारी देवगणः ।

#### (१) इन्द्राग्नी ।

मेधातिथिः काण्वः	३००२-७	१९३
कुत्स आङ्गिरसः	३००८-२८	१९४
परुच्छेपो देवोदासिः	३०२९	१९५
गाथिनो विश्वामित्र	३०३०-३८	"
त्रैवृष्णस्वरुण , पौरुक्कुत्स- क्षसदस्यु , भारतोऽश्वमेधश्च राजानः (अत्रिभौम इति केचित्)	३०३९	१९६
भौमोऽग्निः	३०४०-४५	"
बाहस्पत्यो भरद्वाजः	३०४६-७०	"
मैत्रावरुणिवमिष्ठः	३०७१-९०	१९७
श्याबाश्व आत्रेयः	३०९१-३१००	१९८
नाभाकः काण्वः	३१०१-१२	१९९
प्राजापत्यो यक्ष्मनाशनः, } राजयक्ष्मघ्नं वा	३११३-१७	२००
विश्वस्वानृषिः	३११८-१९	"
अथर्वा	३१२०-२७	"
प्रशोचनः ३१२८-३०; शृगुः	३१३१-३३	२०१

#### (२) इन्द्रावरुणौ ।

मेधातिथिः काण्वः	३१३५-४२	"
गाथिनो विश्वामित्रः	३१४३-४५	२०२

वामदेवो गौतमः	३१४६-५६	२०२
असदस्युः पौरुकुत्स्य	३१५७--६०	२०३
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३१६१-७१	"
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३१७२--३२०३	२०४
सुपर्ण काण्वः	३२०२-८	२०६
विवस्वानृषिः	३२०९	२०७

## (३) इन्द्रवायू ।

मधुच्छन्दा वैश्वामित्र	३२१०--१२	"
मेधातिथि काण्व	३२१३--१४	"
परुच्छेपो देवोदासिः	३२१५--१९	"
गृत्समदः शौनक	३२२०	२०८
वामदेवो गौतम	३२२१-२९	"
स्वस्त्यात्रेयः	३२३०--३२	"
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३२३३--४२	"
विवस्वानृषिः	३२४३	२०९
वसिष्ठः	३२४४	"

## (४) इन्द्र-मरुतश्च ।

मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः	३२४५--४६	"
-------------------------	----------	---

## (५) मरुत्वानिन्द्रः ।

मेधातिथिः काण्वः	३२४७-४९	२१०
इन्द्रः	३२५०--५१, ३२५३, ३२५५,	"
	३२५७, ३२५९--६१	"
मरुतः	३२५२, ३२५४, ३२५६, ३२५९	"
अगस्त्यो मैत्रावरुणिः	३२६२--६८	"

## (६) इन्द्रामरुतौ ।

तिरश्नीराङ्गिरसो, घुतानो वा मारुतः	३२६९	२११
------------------------------------	------	-----

## (७) इन्द्रासोमौ ।

गृत्समदः शौनकः	३२७०	"
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३२७१--७५	"
रेणुवैश्वामित्रः	३२७६	२१२
ऋषिः	३२७७	"
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ( चातनः )	३२७८--३३०२	"

## (८) इन्द्राविष्णु ।

दीर्घतमा औचथ्यः	३३०३--५	२१४
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३३०६--१३	"
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३३१४--१६	२१५

## (९) इन्द्राबृहस्पती ।

वामदेवो गौतमः	३३१७--२४	"
---------------	----------	---

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३३२५	२१६
तिरश्नीराङ्गिरसो घुतानो वा मारुतः	३३२६	"

## (१०) देव-भूमि-बृहस्पतीन्द्राः ।

गर्गो भारद्वाजः	३३२७	"
अङ्गिराः	३३२८--२९	"

## (११) इन्द्रापूषणौ ।

बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३३३०--३५	"
अथर्वा	३३३६	"

## (१२) ऋणञ्चयेन्द्रौ ।

बभ्रुरात्रेय	३३३७-४०	२१७
--------------	---------	-----

## (१३) इन्द्र-ऋभवश्च ।

विश्वामित्रो गाथिनः	३३४१--४३	"
---------------------	----------	---

## (१४) इन्द्रोषसौ ।

वामदेवो गौतमः	३३४५--४७	"
---------------	----------	---

## (१५) इन्द्राश्वौ ।

वामदेवो गौतमः	३३४८--४९	"
---------------	----------	---

## (१६) इन्द्रस्त्वष्टा ।

गृत्समदः शौनकः	३३५०--५१	२१८
----------------	----------	-----

## (१७) इन्द्रो गावश्च ।

भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	३३५२-५३	"
-----------------------	---------	---

## (१८) इन्द्राकुत्सौ ।

अवस्तुरात्रेयः	३३५४	"
----------------	------	---

## (१९) इन्द्रद्यावापृथिव्यः ।

बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः	३३५५	"
---	------	---

## (२०) इन्द्रापर्वतौ ।

गाथिनो विश्वामित्रः	३३५६	"
---------------------	------	---

## (२१) इन्द्रः सोमो ब्रह्मणस्पतिर्दक्षिणा च ।

मेधातिथिः काण्वः	३३५७--५८	"
------------------	----------	---

## (२२) इन्द्राब्रह्मणस्पती ।

गृत्समदः शौनकः	३३५९	२१९
----------------	------	-----

मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३३६०--६१	"
----------------------	----------	---

## (२३) दुन्दुभीन्द्रौ ।

गर्गो भारद्वाजः	३३६२	"
-----------------	------	---

## (२४) इन्द्रसूर्यादयः ।

ब्रह्मा	३३६३	"
---------	------	---



# दैवत-संहिता ।

( ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् देवतानुसारण सगृह्य निर्मिता । )

## २ इन्द्रदेवता ।

( १-६९ ) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

॥ १ ॥ ( ऋ० १।३।४-६ )

इन्द्रा याहि चित्रभानो	सुता इमे त्वायवः	। अण्वीमिस्तना पूतासः	४	१
इन्द्रा याहि धियेषितो	विप्रजूतः सुतावतः	। उप ब्रह्माणि वाघतः	५	
इन्द्रा याहि तूतुजान	उप ब्रह्माणि हरिवः	। सुते दधिष्व नश्वनः	६	

॥ २ ॥ ( ऋ० १।४।१-१० )

सुरूपकृत्नुमृतये	सुदुधामिव गोदुहे	। जुहुमसि द्यविद्यवि	१	
उप नः सवना गहि	सोमस्य सोमपाः पिब	। गोदा इद् रेवतो मर्दः	२	५
अथा ते अन्तमानां	विद्याम सुमतीनाम्	। मा नो अतिं ख्य आ गहि	३	
परेहि विग्रमस्तृत	मिद्रं पृच्छा विपश्चित्तमं	। यस्ते सखिभ्य आ वरम्	४	
उत ब्रुवन्तु नो निदो	निरन्यतश्चिदारत	। दधाना इन्द्र इद् दुवः	५	
उत नः सुभगाँ अरि	र्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः	। स्यामेदिन्द्रस्य शर्मेणि	६	
एमाशुमाशर्वे भर	यज्जभियं नृमादंनम्	। पतयन् मन्दुयत्सखम्	७	१०
अस्य पीत्वा शतक्रतो	घनो वृत्राणामभवः	। प्रावो वाजेषु वाजिनम्	८	
तं त्वा वाजेषु वाजिनं	वाजयामः शतक्रतो	। धर्नानामिन्द्र सातये	९	
यो रायोर्द्वानिर्महान्	त्सुपारः सुन्वतः सखा	। तस्मा इन्द्राय गायत	१०	

॥ ३ ॥ ( ऋ० १।५।१-१० )

आ त्वेता नि षीद्वृते—न्द्रमभि प्र गायत	। सखायः स्तोमवाहसः	१	
पुरुतमं पुरुणा—मीशानं वार्याणाम्	। इन्द्रं सोमे सचा सुते	२	१५
स चानां योग आ भुवत् स राये स पुरंध्याम्	। गमद्राजेभिरा स नः	३	
यस्य संस्थे न वृण्वते हरीं समत्सु शत्रवः	। तस्मा इन्द्राय गायत	४	
सुतपात्रे सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये	। सोमासो दध्याशिरः	५	
त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः	। इन्द्र ज्यैष्ठ्याय सुकतो	६	
आ त्वां विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः	। शं ते सन्तु प्रचेतसे	७	१०
त्वां स्तोमा अवीवृधन् त्वामुक्था शतक्रतो	। त्वां वर्धन्तु नो गिरः	८	
अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रिणाम्	। यस्मिन् विश्वानि पौंस्या	९	
मा नो मर्ता अभि दुहन् तनूनामिन्द्र गिर्वणः	। ईशानां यवया वधम	१०	

॥ ४ ॥ ( ऋ० १।६।१-३, १० )

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः	। रोचन्ते रोचना द्विवि	१	
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे	। शोणा धृष्ण नूवाहसा	२	१५
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे	। समुपन्द्रिरजायथाः	३	
इतो वा सातिमीमहे द्विवो वा पार्थिवादिधि	। इन्द्रं महो वा रजसः	१०	

॥ ५ ॥ ( ऋ० १।७।१-१० )

इन्द्रमिद्राथिनो बृह—दिन्द्रमकेभिरकिणः	। इन्द्रं वाणीरनूषत	१	
इन्द्र इन्द्रयोः सचा संमिश्र आ वचोयुजा	। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः	२	
इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्य रोहयद् द्विवि	। वि गोभिरद्रिमैरयत्	३	३०
इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च	। उग्र उग्राभिरूतिभिः	४	
इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे	। युजं वृत्रेषु वज्रिणाम्	५	
स नो वृषन्नमुं चरं सत्रादावन्नपा वृधि	। अस्मभ्यमप्रतिष्कृतः	६	
तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः	। न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्	७	
वृषा यूथेव वंसंगः कृष्टीरियत्योजसा	। ईशानो अप्रतिष्कृतः	८	३५
य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति	। इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम्	९	
इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः	। अस्माकमस्तु केवलः	१०	

॥ ६ ॥ ( ऋ० १।८।१-१० )

एन्द्रं सानसिं रयिं सजित्वानं सव्वासहम् । वर्षिष्ठमूतये भर	१	
नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहे । त्वोतासो न्यर्वता	२	
इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि । जयेम सं युधि स्पृधः	३	४०
वयं शूरेभिरस्तृभि—रिन्द्र त्वया युजा वयम् । सासह्याम पृतन्यतः	४	
महाँ इन्द्रः परश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे । द्यौर्न प्रथिना शवः	५	
समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनिता । विप्रासो वा धियायवः	६	
यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते । उर्वीरापो न काकुदः	७	
एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही । पका शाखा न दाशुषे	८	४०
एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते । सद्यश्चित् सन्ति दाशुषे	९	
एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या । इन्द्राय सोमपीतये	१०	

॥ ७ ॥ ( ऋ० १।९।१-१० )

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः । महो अभिष्टिरोजसा	१	
एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने । चक्रिं विश्वानि चक्रये	२	
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे । सचैषु सवनेष्वा	३	५०
असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुर्दहासत । अजोषा वृषभं पतिम्	४	
सं चोदय चित्रमर्वाग राध इन्द्र वरेण्यम् । असदित ते विभु प्रभु	५	
अस्मान्त्सु तत्र चोदये—न्द्र राये रभस्वतः । तुर्विद्युम्न यशस्वतः	६	
सं गोमदिन्द्र वाजव—दुस्मे पृथु श्रवा बृहत । विश्वायुर्धेद्यक्षितम्	७	
अस्मे धेहि श्रवा बृहद् द्युम्नं सहस्रसातमम् । इन्द्र ता रथिनीरिपः	८	५१
वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम् । होम गन्तारमूतयं	९	
सुतेसुते न्योकसे बृहद् बृहत एवुरिः । इन्द्राय शूषमर्चति	१०	

॥ ८ ॥ ( ऋ० १।१०।१-१२ ) अनुष्टुप् ।

गायन्ति त्वा गायत्रिणो ऽर्चन्त्यर्कमर्किणः । ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद् वंशमिव येमिं	१	
यत् सानोः सानुमारुहद् भूर्यस्पष्ट कर्त्विम । तदिन्द्रो अर्थं चेतति युथेन वृष्णिरेजाति	२	
युक्त्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा । अथा न इन्द्र सोमपा गिरामुर्पश्रुतिं चर	३	६०
एहि स्तोमो अभि स्वरा ऽभि गृणीह्या रुव । ब्रह्म च नो वसो सचे—न्द्र यज्ञं च वर्धय	४	

उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्धनं पुरुनिषिधे । शक्रो यथा सुतेषु णो रारणत् सख्येषु च ५  
 तमित सखित्व ईमहे तं राये तं सुवीर्ये । स शक्र उत नः शक्र—दिन्द्रो वसु दयमानः ६  
 सुविवृतं सुनिरज—मिन्द्र त्वादातमिद्यशः । गवामपे व्रजं वृधि कृणुष्व राधो अद्रिवः ७  
 नहि त्वा रोदसी उभे ऋघायमाणमिन्वतः । जेषः स्वर्वतीरपः सं गा अस्मभ्यं धूनुहि ८ ६५  
 आश्रुत्कर्ण श्रुधी हवं नू चिद्वाधिष्व मे गिरः । इन्द्र स्तोममिमं मम कृष्वा युजाश्चिदन्तरम् ९  
 विद्वा हि त्वा वृषन्तमं वाजेषु हवनश्रुतम् । वृषन्तमस्य हूमह ऊतिं सहस्रसार्तमाम् १०  
 आ तू न इन्द्र कौशिक मन्दसानः सुतं पिब । नव्यमायुः प्र सू तिर कृधी सहस्रसामृषिम् ११  
 परिं त्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः । वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः १२ ६९

॥ ९ ॥ ( ऋ० १।१।१-८ )

( ७०-७७ ) जेता माधुच्छन्दसः । अनुष्टुप् ।

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन् त्समुद्रव्यचसं गिरः । रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् १ ७०  
 सख्ये तं इन्द्र वाजिनो मा भैम शवसस्पते । त्वामभि प्र णोनुमो जेतारमपराजितम् २  
 पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्युतयः । यद्वी वाजस्य गोमतः स्तोतृभ्यो मंहते मघम् ३  
 पुरां भिन्दुर्युवा क्वि—रमितौजा अजायत । इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ४  
 त्वं बलस्य गोमतो ऽपावरद्रिवो बिलम् । त्वां देवा अबिभ्युषस तुज्यमानास आत्रिषुः ५  
 तवाहं शूर रातिभिः प्रत्यायं सिन्धुमावदन् । उपातिष्ठन्त गिर्वणो विदुष्टे तस्य कारवः ६ ७५  
 मायाभिरिन्द्र मायिनं त्वं शुष्णमवातिरः । विदुष्टे तस्य मेधिरास तेषां श्रवांस्युत्तिर ७  
 इन्द्रमीशानमोजसा—भि स्तोमा अनृषत । सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः ८ ७७

॥ १० ॥ ( १।१।१-९ )

( ७८-९३९ ) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

आ त्वा वहन्तु हरयो वृषणं सोमपीतये । इन्द्र त्वा सूरचक्षसः १  
 इमा धाना घृतस्नुवो हरी इहोप वक्षतः । इन्द्रं सुखतमे रथे २  
 इन्द्रं प्रातर्हवामह इन्द्रं प्रयत्यध्वरे । इन्द्रं सोमस्य पीतये ३ ८०  
 उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र केशिभिः । सुते हि त्वा हवामहे ४  
 सेमं नः स्तोममा ग—ह्युपेदं सर्वनं सुतम् । गौरो न तृषितः पिब ५  
 इमे सोमास इन्द्रवः सुतासो अधि बर्हिषि । तां इन्द्र सहसे पिब ६  
 अयं ते स्तोमो अग्रियो हविस्पृगस्तु शंतमः । अथा सोमं सुतं पिब ७

विश्वमित् सर्वनं सुतमिन्द्रो मदाय गच्छति । वृत्रहा सोमपीतये ८  
 समं नः काममा पृण गोभिरश्वैः शतक्रतो । स्तवाम त्वा स्वाध्यः ९

॥ ६१ ॥ ( ऋ० ८।१।१-२९ )

[ प्रगाथो ( घोरः ) काण्वः; ३-२९ मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वो । ] १-४ प्रगाथः=  
 ( विषमा बृहती. समा सतोबृहती ), ५-२९ बृहती ।

मा चिद्वन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।  
 इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुर्बुक्था च शंसत १  
 अवक्त्रक्षिणीं वृषभं यथाजुरं गां न चर्षणीसहम् ।  
 विद्वेषणं संवननोभयंकरं मंहिष्ठमुभयाविनम् २  
 यच्चिन्द्रि त्वा जना इमे नाना हवन्त ऊतये ।  
 अस्माकं ब्रह्मेदमिन्द्र भूतु ते ऽहा विश्वा च वर्धनम् ३  
 वि तर्तूर्यन्ते मघवन् विपश्चितो ऽर्यो विपो जनानाम् ।  
 उप क्रमस्व पुरुरूपमा भरं वाजं नेदिष्ठमूतये ४ ९०  
 महे चन त्वामद्रिवः परां शुल्काय देयाम् ।  
 न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शतार्यं शतामघ ५  
 वर्यो इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुरभुञ्जतः ।  
 माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे ६  
 क्वेयथ क्वेदसि पुरुत्रा चिन्द्रि ते मनः ।  
 अलर्षि युधम खजकृत् पुरंदरं प्र गायत्रा अंगासिषुः ७  
 प्रास्मै गायत्रमर्चत वावातुर्यः पुरंदुरः ।  
 याभिः काण्वस्योप बर्हिरासदं यासद् वज्री भिनत पुरं ८  
 ये ते सन्ति दशग्विनः शतिनो ये सहस्रिणः ।  
 अश्वसो ये ते वृषणो रघुद्रुवस्तेभिर्नस्तूयमा गहि ९ ९१  
 आ त्वद्य संबर्हुषो हुवे गायत्रवेपसम् ।  
 इन्द्रं धेनुं सुदुघामन्यामिषं मुरुधारामरंकृतम् १०  
 यत् तुदत् सूर एतशं वङ्क वातस्य पर्णिना ।  
 बहत कुत्समार्जुनेयं शतक्रतुः त्सरद् गन्धर्वमस्तृतम् ११



य ऋते चिदभिश्चिषः पुरा जञ्जुभ्य आतृदः ।		
संधाता संधिं मघवा पुरुवसु—रिष्कर्ता विहृतं पुनः	१२	
मा भूम निष्टया इवेन्द्र त्वदरणा इव ।		
वनानि न प्रजहितान्यद्रिवो दुरोषासो अमन्माहि	१३	
अमन्महीदनाशवो ऽनुग्रासश्च वृत्रहन् ।		
सकृत् सु ते महता शूर राधसा ऽनु स्तोमं मुदीमहि	१४	१००
यद्वि स्तोमं मम श्रव—दुस्माकमिन्द्रमिन्दवः ।		
तिरः पवित्रं ससृवांस आशवो मन्दन्तु तुष्टयावृधः	१५	
आ त्वर्धं च सधस्तुतिं वावातुः सख्युरा गहि ।		
उपस्तुतिर्मघोनां प्र त्वाव—त्वधा ते वश्मि सुष्टुतिम्	१६	
सोता हि सोममद्रिभि—रेमेनमप्सु धावत ।		
गव्या वस्त्रैव वासयन्त इन्नरो निर्धुक्षन् वक्षणाभ्यः	१७	
अध जमो अध वा विवो बृहतो रोचनादधि ।		
अया वर्धस्व तन्वा गिरा ममा ऽऽ जाता सुकृतो पृण	१८	
इन्द्राय सु मदिन्तमं सोमं सोता वरेण्यम् ।		
शक्र एणं पीपयद् विश्वया धिया हिन्वानं न वाजयुम्	१९	१०५
मा त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं गिरा ।		
भूणिं मृगं न सर्वनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत	२०	
मदेनेषितं मद—मुग्रमुग्रेण शर्वसा ।		
विश्वेषां तरुतारं मवुच्युतं मदे हि ष्मा ददाति नः	२१	
शेवारि वार्या पुरु देवो मर्तीय वाशुषे ।		
स सुन्वते च स्तुवते च रासते विश्वगूर्तो अरिष्टुतः	२२	
एन्द्रं याहि मत्स्व चित्रेण देव राधसा ।		
सरो न प्रास्युदरं सपीतिभि—रा सोमेभिरुरु स्फुरम्	२३	
आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये ।		
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र कोशिनो वहन्तु सोमपीतये	२४	११०
आ त्वा रथे हिरण्यये हरीं मयूरशेष्या ।		
शितिपृष्ठा वहतां मध्वो अन्धसो विवक्षणस्य पीतये	२५	

पिबा त्वस्य गिर्वणः सुतस्य पूर्वपा इव ।	
परिष्कृतस्य रसिन इयमासुतिश्चारुर्मदाय पत्यंतं	२६
य एको अस्ति कुंसना महौ उग्रो अभि व्रतैः ।	
गमत् स शिप्री न स यौषदा गमद्भ्रवं न परि वर्जति	२७
त्वं पुरं चरिष्णवं वधैः शुष्णस्य सं पिणक् ।	
त्वं भा अनु चरो अर्ध द्विता यदिन्द्र हव्यो भुवः	२८
मम त्वा सूर उदिते मम मध्यन्दिने विवः ।	
मम प्रपित्वे अपिशर्वरे वसवा स्तोमासो अवृत्सत	२९ ११५

॥ १२ ॥ ( ऋ० ८।१।१-४० )

[ मेधातिथिः काण्वः, ( आङ्गिरसः प्रियमेधश्च ) । गायत्री, १८ अनुष्टुप् ।

इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम् । अनाभयिन् ररिमा ते १	
नृभिर्धृतः सुतो अश्रैरव्यो वारैः परिपूतः । अश्वो न निकतो नदीषु २	
तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुर्मकर्म श्रीणन्तः । इन्द्रं त्वास्मिन्त्संधमादे ३	
इन्द्र इत् सोमपा एक इन्द्रः सुतपा विश्वायुः । अन्तर्वैवान् मर्त्याश्च ४	
न यं शुक्रो न दुराशीर्न तृपा उरुव्यचसम् । अपस्पृण्वते सुहार्दम् ५ १२०	
गोभिर्यदीमन्ये अस्मन् मृगं न वा मृगयन्ते । अभित्सरन्ति धेनुभिः ६	
त्रय इन्द्रस्य सोमाः सुतासः सन्तु देवस्य । स्वे क्षये सुतपात्रः ७	
त्रयः कोशासः श्रोतन्ति तिस्रश्चम्बुः सुपूर्णाः । समाने अधि भार्मन् ८	
शुचिरसि पुरुनिष्ठाः क्षीरैर्मध्यत आशीर्तः । वृक्षा मन्दिष्ठः शूरस्य ९	
इमे तं इन्द्र सोमास्तीवा अस्मे सुतासः । शुक्रा आशिरं याचन्ते १० १२५	
तां आशिरं पुरोळाशमिन्धेमं सोमं श्रीणीहि । रेवन्तं हि त्वां शुणोमि ११	
हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम् । ऊर्ध्वं नृणां जरन्ते १२	
रेवा इदं रेवतः स्तोता स्यात् त्वावतो मघोनः । प्रेदुं हरिवः श्रुतस्य १३	
उक्थं च न शस्यमानमगोररिरा चिकेत । न गायत्रं गीयमानं १४	
मा न इन्द्र पीयूतवे मा शर्धते परा दाः । शिक्षां शचीवः शचीभिः १५ १३०	

वयमु त्वा तदिदंर्था इन्द्रं त्वायन्तः सखायः । कण्वा उक्थंभिर्जरन्तं	१६	
न घमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नर्विण्टौ । तवेदु स्तोमं चिकेत	१७	
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्राय स्पृहयन्ति । यन्ति प्रमादुमर्तन्द्राः	१८	
ओ षु प्र याहि वाजेभिर्मा हृणीथा अभ्यस्मान् । महो इव युवजानिः	१९	
मो ष्वद्य दुर्हणावान् त्सायं करद्वारे अस्मत । अश्रीर इव जामाता	२०	१३५
विद्वा ह्यस्य वीरस्य भूगिदावरीं सुमतिम् । त्रिषु जातस्य मनांसि	२१	
आ तू षिञ्च कण्वमन्तं न घा विद्म शवसानात । यशस्तरं शतमूतेः	२२	
ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय सोमं वीराय शक्राय । भरा पिबन्नयाय	२३	
यो वेदिष्ठो अव्यथिष्वश्रावन्तं जगितुभ्यः । वाजं स्तोतुभ्यो गोमन्तम्	२४	
पन्यंपन्यमित् सोतार आ धावत मद्याय । सोमं वीराय शूराय	२५	१४०
पाता वृत्रहा सुतमा घा गमन्नारे अस्मत । नि यमते शतमूतिः	२६	
एह हरीं ब्रह्मयुजां शग्मा वक्षतः सखायम् । गीर्भिः श्रुतं गिर्वणसम्	२७	
स्वादवः सोमा आ याहि श्रीताः सोमा आ याहि ।		
शिप्रिन्नृषीवः शचीवो नायमच्छा सधमादम्	२८	
स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति महे राधसे नृम्णाय । इन्द्रं कारिणं वृधन्तः	२९	
गिरश्च यास्ते गिर्वाह उक्था च तुभ्यं तानि । सत्रा दधिरे शवांसि	३०	१४५
एवेवेष तुविकूर्मिर्वाजाँ एको वज्रहस्तः । सनादमृक्तो दयते	३१	
हन्ता वृत्रं दक्षिणेनेन्द्रः पुरु पुरुहूतः । महान् महीभिः शचीभिः	३२	
यस्मिन् विश्वाश्रुषणय उत च्योत्ना ज्रयांसि च । अनु घेन्मन्दी मघोनः	३३	
एष एतानि चकारेन्द्रो विश्वा योऽति शृण्वे । वाजदावा मघोनाम्	३४	
प्रभर्ता रथं गव्यन्तमपाकाच्चिद् यमवति । इनो वसु स हि वोळ्हा	३५	१५०
सनिता विप्रो अर्वन्दिर्हन्ता वृत्रं नृभिः शूरः । सत्योऽविता विधन्तम्	३६	
यजध्वैनं प्रियमेधा इन्द्रं सत्राचा मनसा । यो भूत् सोमैः सत्यमद्वा	३७	
गाथश्रवसं सत्पतिं श्रवस्कामं पुरुत्मानम् । कण्वासो गात वाजिनम्	३८	
य ऋते चिद् गास्पदेभ्यो दात् सखा नृभ्यः शचीवान् । ये अस्मिन् काममश्रियन्	३९	
इत्था धीवन्तमद्विवः काण्वं मेध्यातिथिम् । मेषो भूतोऽऽभि यन्नयः	४०	१५५



उदु त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते ।		
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव	१५	१७०
कण्वा इव भृगवः सूर्या इव विश्वमिद् धीतमानशुः ।		
इन्द्रं स्तोमैभिर्मह्यन्त आयवः प्रियमैधासो अस्वरन्	१६	
युक्त्वा हि वृत्रहन्तम् हरीं इन्द्र परावतः ।		
अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋण्वेभिरा गंहि	१७	
इमे हि ते कारवो वावशुर्धिया विप्रासो मेधसातये ।		
स त्वं नो मघवन्निन्द्र गिर्वणो वेनो न शृणुधी हवम्	१८	
निरिन्द्र बृहतीभ्यो वृत्रं धनुभ्यो अस्फुरः ।		
निरबुदस्य मृगयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा आजः	१९	
निरग्रयो रुरुचुनिरु सूर्यो निः सोम इन्द्रियो रसः ।		
निरन्तरिक्षादधमो महामहिं कृषे तदिन्द्र पौंस्यम् ।	२०	१७५
यं मे दुरिन्द्रो मरुतः पाकस्थामा कौरयाणः ।		
विश्वेषां तमना शोभिष्ठ—मुपैव द्विवि धावमानम्	२१	
रोहितं मे पाकस्थामा सुधुरं कक्ष्यप्राम् ।		
अदाद् रायो विबोधनम्	२२	
यस्मा अन्ये दश प्रति धुरं वहन्ति वह्नयः ।		
अस्तं वयो न तुग्र्यम्	२३	
आत्मा पितुस्तनूर्वास ओजोदा अभ्यञ्जनम् ।		
तुरीयमिद् रोहितस्य पाकस्थामानं भोजं द्रातारमब्रवम्	२४	

॥ १४ ॥ ( ऋ० ८।३२।१-३० )

[ मेधातिथिः काण्वः ] । गायत्री ।

प्र कृतान्यृजीषिणः कण्वा इन्द्रस्य गार्थया । मत्रे सोमस्य वोचत	१	१८०
यः सुबिन्दुमनर्शनिं पिप्रे द्वासमहीशुवम् । वर्धीदुग्रो रिणन्नपः	२	
न्यबुदस्य विष्टपं वर्ष्माणं बृहतस्तिर । कृषे तदिन्द्र पौंस्यम्	३	
प्रति श्रुतार्य वो धृषत् तूर्णांशं न गिरैरधि । हुवे सुशिप्रमूतये	४	
स गोरश्वस्य वि व्रजं मन्वानः सोम्येभ्यः । पुरं न शूर दर्शसि	५	
यदि मे रारणः सुत उक्थे वा दधसे चनः । आरादुप स्वधा गंहि	६	१८५
व्यं घा ते अपि ष्मासि स्तोतारं इन्द्र गिर्वणः । त्वं नो जिन्व सोमपाः	७	

उत नः पितुमा भर संरराणो अविक्षितम् । मघवन् भूरिं ते वसु ८	
उत नो गोमंतस्कृधि हिरण्यवतो अश्विनः । इळाभिः सं रभेमहि ९	
बृवदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्रमूतये । साधु कृण्वन्तमवसे १०	
यः संस्थे चिच्छतक्रतु रादीं कृणोति वृत्रहा । जरितृभ्यः पुरुवसुः ११	१९०
स नः शक्रश्चिदा शक्रद् दानवां अन्तराभरः । इन्द्रो विश्वाभिरूतिभिः १२	
यो रायोऽवनिर्महान् त्सुपारः सुन्वतः सखा । तमिन्द्रमभि गायत १३	
आयन्तारं महिं स्थिरं पृतनासु श्रवोजितम् । भूरेरीशानमोजसा १४	
नकिरस्य शचीनां नियन्ता सूनृतां नाम् । नकिर्वक्ता न द्वादिति १५	
न नूनं ब्रह्मणामृणं प्राशूनामस्ति सुन्वताम् । न सोमो अप्रता पपे १६	१९५
पन्य इदुपं गायत पन्य उक्थानिं शंसत । ब्रह्मा कृणोत पन्य इत् १७	
पन्य आ र्ददिरच्छता सहस्रा वाज्यवृतः । इन्द्रो यो यज्वनो वृधः १८	
वि षू चर स्वधा अनु कृष्ठीनामन्वाहुवः । इन्द्र पिब सुतानाम् १९	
पिब स्वधैनवानामुत यस्तुये सचा । उतायमिन्द्र यस्तव २०	
अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपारणे । इमं रातं सुतं पिब २१	२००
इहि तिस्रः परावत इहि पञ्च जनां अति । धेना इन्द्रावचाकशत् २२	
सूर्यो रश्मि यथा सृजा ऽऽ त्वा यच्छन्तु मे गिरः । निम्नमापो न सध्यक् २३	
अध्वर्यवा तु हि विश्व सोमं वीरायं शिप्रिणे । भरां सुतस्य पीतये २४	
य उन्नः फलिगं भिन न्ययक् सिन्धूरवासृजत् । यो गोषु पक्कं धारयत् २५	
अहन् वृत्रमृचीषम और्णवाभर्महीशुवंम् । हिमेनाविध्यदबुदम् २६	२०५
प्र व उग्रायं निष्टुरे ऽषाळहाय प्रसक्षिणे । देवत्तं ब्रह्म गायत २७	
यो विश्वान्यभि व्रता सोमस्य मदे अन्धसः । इन्द्रो देवेषु चेतति २८	
इह त्या संधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या । वोळहामभि प्रयो हितम् २९	
अर्वाञ्चं त्वा पुरुषुत प्रियमैधस्तुता हरी । सोमपेयाय वक्षतः ३०	

॥ १५ ॥ ( ऋ० ८।३३।१-१९ )

[ मेध्यातिथिः काण्वः ] । बृहती, १६-१८ गायत्री, १९ अनुष्टुप् ।

वयं घं त्वा सुतार्धन्त आपो न वृक्तवर्हिषः ।	
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परिं स्तोतारं आसते	१
स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।	२६०
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम् इन्द्र स्वब्दीव वंसगः	२

कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद् वाजं दधिं सहस्रिणाम् ।		
पिशङ्गरूपं मघवन् विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे	३	
पाहि गायान्धसो मद्रु इन्द्राय मेध्यातिथे ।		
यः संमिश्लो हर्योर्यः सुते सचा वञ्जी रथो हिरण्ययः	४	
यः सुषव्यः सुदक्षिण इनो यः सुक्रतुर्गृणे ।		
य आकरः सहस्रा यः शतामघ इन्द्रो यः पूर्भिदारितः	५	
यो धृषितो योऽवृतो यो अस्ति श्मश्रुषु श्रितः ।		
विभूतद्युम्नश्च्यवनः पुरुषुतः कत्वा गौरिव शाकिनः	६	११५
क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद् वयो दधे ।		
अयं यः पुरो विभिनच्योर्जसा मन्दानः शिप्रयन्धसः	७	
द्वाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे ।		
नकिष्ठा नि यमदा सुते गमो महोश्चरस्योर्जसा	८	
य उग्रः सन्ननिष्टृतः स्थिरो रणाय संस्कृतः ।		
यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्भवं नेन्द्रो योषत्या गमत	९	
सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽवृतः		
वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः	१०	
वृषणस्ते अभीशवो वृषा कशा हिरण्ययी ।		
वृषा रथो मघवन् वृषणा हरी वृषा त्वं शतक्रतो	११	१२०
वृषा सोता सुनोतु ते वृषन्नृजीपिन्ना भर ।		
वृषा दधन्वे वृषणं नदीष्वा तुभ्यं स्थातर्हरीणाम्	१२	
एन्द्र याहि पीतये मधु शविष्ठ सोम्यम् ।		
नायमच्छा मघवा शृणवद् गिरो बह्नोक्था च सुक्रतुः	१३	
वहन्तु त्वा रथेष्ठा मा हरयो रथयुजः ।		
तिरश्चिर्वुर्यं सर्वनानि वृत्रहन्नन्येषां या शतक्रतो	१४	
अस्माकमद्यान्तमं स्तोमं धिष्व महामह ।		
अस्माकं ते सर्वना सन्तु शतमा मदाय द्युक्ष सोमपाः	१५	
नहि षस्तव नो मम शास्त्रे अन्यस्य रण्यति । यो अस्मान् वीर आनयत्	१६	१२५
इन्द्रश्चिद् घा तदब्रवीत् स्त्रिया अशास्यं मनः । उतो अह क्रतुं रघुम्	१७	
सतीं चिद् घा मद्रुच्युता मिथुना वहतो रथम् । एवेद् धूर्वृष्ण उत्तरा	१८	

अधः पश्यस्व मोपरि संतरां पादुकौ हर ।  
मा ते कशप्लुकौ वृशन् त्वी हि ब्रह्मा बभूविथ १९

॥ १६ ॥ ( ऋ० ८।४।१-१४ )

[ देवातिथिः काण्वः ] । प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

यदिन्द्र प्रागपागुदुङ् न्यग्वा ह्यसे नृभिः ।  
सिमा पुरु नृषूतो अस्यानवे ऽसि प्रशर्ध तुर्वशं १  
यद् वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्रं मादयसे सचा ।  
कण्वासस्त्वा ब्रह्माभिः स्तोमवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या गहि २ १३०  
यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् ।  
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब ३  
मन्दन्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवो राधोदेयाय सुन्वते ।  
आमुष्या सोममपिबश्चमू सुतं ज्येष्ठं तद् दधिषे सहः ४  
प्र चक्रे सहसा सहो बभञ्ज मन्युमोजसा ।  
विश्वे त इन्द्र पृतनायवो यहो नि वृक्षा इव येमिरे ५  
सहस्रेणेव सचते यवीयुधा यस्त आनळुपस्तुतिम् ।  
पुत्रं प्रावर्गं कृणुते सुवीर्यं द्वाश्रोति नमउक्तिभिः ६  
मा भेम मा श्रमिष्मो—ग्रस्ये सस्ये तव ।  
महत ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम् ७ १३५  
सव्यामनुं स्फिर्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति ।  
मध्वा संपृक्ताः सारघेण धेनव—स्तूयमेहि द्रवा पिब ८  
अश्वी रथी सुरूप इद् गोमाँ इदिन्द्र ते सखा ।  
श्वान्नभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रो याति सभामुप ९  
ऋश्यो न तृष्यन्नवपानमा गहि पिबा सोमं वशाँ अनु ।  
निमेघमानो मघवन् क्विवेदिव ओजिष्ठं दधिषे सहः १०  
अध्वर्यो द्वावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति ।  
उप नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा ११  
स्वयं चित् स मन्यते दाशुरिर्जनो यत्रा सोमस्य तुम्पसि ।  
इदं ते अन्नं युज्यं समुक्षितं तस्येहि प्र द्रवा पिब १२ १४०



रथेष्ठायाध्वर्यवः सोममिन्द्राय सोतन ।

अधि ब्रध्नस्याद्रयो वि चक्षते सुन्वन्तो वाश्वध्वरम् १३

उप ब्रध्नं वावाता वृषणा हरी इन्द्रमपसु वक्षतः ।

अर्वाञ्च त्वा सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप १४

॥ १७ ॥ ( ऋ० ८।१।१-४५ )

[ वत्सः काण्वः ] । गायत्री ।

महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव ।	स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे	१	
प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद् भरन्त वह्नयः ।	विप्रा ऋतस्य वाहसा	२	
कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम् ।	जामि ब्रुवत आयुधम्	३	१४५
समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कूष्टयः ।	समुद्रायेव सिन्धवः	४	
ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत् ।	इन्द्रश्चर्मैव रोदसी	५	
वि चिद् वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा ।	शिरो बिभेद् वृष्णिना	६	
इमा अभि प्र णोनुमो विपामग्रेषु धीतयः ।	अग्नेः शोचिनं विद्युतः	७	
गुहा सतीरुप त्मना प्र यच्छोचन्त धीतयः ।	कण्वा ऋतस्य धारया	८	१५०
प्र तमिन्द्र नशीमहि रथिं गोमन्तमश्विनम् ।	प्र ब्रह्म पूर्वचित्तये	९	
अहमिन्द्रि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभं ।	अहं सूर्यं इवाजनि	१०	
अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुभामि कण्ववत् ।	येनेन्द्रः शुष्मिद् वृधे	११	
ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुः ऋषयो ये च तुष्टुवुः ।	ममेद् वर्धस्व सुष्टुतः	१२	
यदस्य मन्युरध्वनीद् वि वृत्रं पर्वशो रुजन् ।	अपः समुद्रमैरयत्	१३	१५५
नि शुष्णं इन्द्र धर्णसिं वज्रं जघन्थ दस्यवि ।	वृषा ह्युग्र शृण्विषे	१४	
न द्याव इन्द्रमोजसा नान्तरिक्षाणि वृज्जिणम् ।	न विव्यचन्त भूमयः	१५	
यस्तं इन्द्र महीरपः स्तभूयमान आशयत् ।	नि तं पद्यासु शिश्रथः	१६	
य इमे रोदसी मही समीची समजग्रभीत् ।	तमोभिरिन्द्र तं गुहः	१७	
य इन्द्र यतयस्त्वा भृगवो ये च तुष्टुवुः ।	ममेदुग्र श्रुधी हवम्	१८	१६०
इमास्तं इन्द्र पृथ्वयो घृतं दुहत आशिरम् ।	एनामृतस्य पिप्युषीः	१९	
या इन्द्र प्रस्वस्त्वा ऽऽसा गर्भमचक्रिन् ।	परि धर्मैव सूर्यम्	२०	
त्वामिच्छेवसस्पते कण्वा उक्थेन वावृधुः ।	त्वां सुतास इन्दवः	२१	
तवेदिन्द्र प्रणीतिषु त प्रशस्तिरद्विवः ।	यज्ञो वितन्तसाय्यः	२२	
आ न इन्द्र महीमिषं पुरं न रधिं गोमतीम् ।	उत प्रजां सुवीर्यम्	२३	१६५

उत त्यक्वाश्वश्वयं यदिन्द्र नाहुषीष्वा	। अग्ने विक्षु प्रदीदयत् २४	
अभि व्रजं न तन्निषे सूर उपाकचक्षसम्	। यदिन्द्र मूळयासि नः २५	
यदृङ्ग तविषीयस इन्द्र प्रराजसि क्षितीः	। महौ अपार ओजसा २६	
तं त्वा हविष्मतीर्विश उप ब्रुवत ऊतये	। उरुञ्जयसमिन्दुभिः २७	
उपह्वरे गिरीणां संगथे च नदीनाम्	। धिया विप्रो अजायत २८	२७०
अतः समुद्रमुद्रतश्चिकित्वाँ अव पश्यति	। यतो विषान एजति २९	
आदित प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिष्पश्यन्ति वासरम्	। परो यद्विध्यते दिवा ३०	
कण्वास इन्द्र ते मतिं विश्वे वर्धन्ति पौंस्यम्	। उतो शविष्ठ वृष्ण्यम् ३१	
इमां म इन्द्र सुष्टुतिं जुषस्व प्र सु मामव	। उत प्र वर्धया मतिम् ३२	
उत ब्रह्मण्या वयं तुभ्यं प्रवृद्ध वज्रिवः	। विप्रो अतक्षम जीवसे ३३	२७५
अभि कण्वा अनूषताऽऽपो न प्रवता यतीः	। इन्द्रं वनन्वती मतिः ३४	
इन्द्रमुक्थानि वावृधुः समुद्रमिव सिन्धवः	। अनुत्तमन्युमजरम् ३५	
आ नो याहि परावतो हरिभ्यां हर्यताभ्याम्	। इममिन्द्र सुतं पिब ३६	
त्वामिद् वृत्रहन्तम् जनासो वृक्तबर्हिषः	। हवन्ते वाजसातये ३७	
अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं न वर्त्येतशम्	। अनु सुवानास इन्द्रवः ३८	२८०
मन्दस्वा सु स्वर्णर उतेन्द्र शर्यणावति	। मत्स्वा विवस्वतो मती ३९	
वावृधान उप द्यवि वृषां वृञ्जरोरवीत्	। वृत्रहा सोमपातमः ४०	
ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा	। इन्द्रं चोष्क्यसे वसु ४१	
अस्माकं त्वा सुताँ उप वीतपृष्ठा अभि प्रयः	। शतं वहन्तु हरयः ४२	
इमां सु पूष्यां धियं मधोघृतस्य पिप्युषीम्	। कण्वा उक्थेन वावृधुः ४३	२८५
इन्द्रमिद् विमहीनां मेधे वृणीत मर्त्यः	। इन्द्रं सनिष्युरूतये ४४	
अर्वाञ्च त्वा पुरुष्टुत प्रियमेधस्तुता हरीं	। सोमपेयाय वक्षतः ४५	

॥ १८ ॥ ( ऋ० ८।१२।१-३३ )

[ पर्वतः काण्वः ] । उष्णिक्. ३३ शंक्रुमती ( पिङ्गलमतेन ) ।

य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति । येना हंसि न्यत्रिणं तमीमहे १	
येना दशग्वमधिगुं वेपयन्तं स्वर्णरम् । येना समुद्रमाविथा तमीमहे २	
येन सिन्धुं महीरपो रथाँ इव प्रचोदयः । पन्थामृतस्य यातवे तमीमहे ३	२९०
इमं स्तोममभिष्टये घृतं न पूतमद्विवः । येना नु सद्य ओजसा ववक्षिथ ४	
इमं जुषस्व गर्वणः समुद्र इव पिन्वते । इन्द्र विश्वाभिरूतिभिर्ववक्षिथ ५	

यो नो देवः परावतः साखित्वनायं मामहे ।	द्विवो न वृष्टिं प्रथयन् ववक्षिथ	६
ववक्षुरस्य केतव उत वज्रो गर्भस्त्योः ।	यत् सूर्यो न रोदसी अवर्धयत्	७
यदिं प्रवृद्ध सत्पते सहस्रं महिषाँ अघः ।	आदित् तं इन्द्रियं महि प्र वावृधे	८ १९५
इन्द्रः सूर्यस्य रश्मिभिर्न्यर्शसानमोषति ।	अग्निर्वनेव सासहिः प्र वावृधे	९
इयं तं ऋत्वियावती धीतिरेति नवीयसी ।	सपर्यन्ती पुरुप्रिया मिमीत् इत्	१०
गर्भो यज्ञस्य देव्युः क्रतुं पुनीत आनुषक् ।	स्तोमैरिन्द्रस्य वावृधे मिमीत् इत्	११
सनिर्मित्रस्य पप्रथ इन्द्रः सोमस्य पीतये ।	प्राची वाशीव सुन्वते मिमीत् इत्	१२
यं विप्रा उक्थवाहसो ऽभिप्रमन्दुरायवः ।	घृतं न पिप्य आसन्युतस्य यत्	१३ ३००
उत स्वराजे अदितिः स्तोममिन्द्राय जीजनत् ।	पुरुप्रशस्तमूतयं क्रतस्य यत्	१४
अभि वह्य ऊतये ऽनूषत् प्रशस्तये ।	न देव विव्रता हरीं क्रतस्य यत्	१५
यत् सोममिन्द्र विष्णवि यद् वा घ त्रित आप्तये ।	यद् वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः	१६
यद् वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे ।	अस्माकमित् सुते रणा समिन्दुभिः	१७
यद् वासिं सुन्वतो वृधो यजमानस्य सत्पते ।	उक्थे वा यस्य रणयसि समिन्दुभिः	१८ ३०५
देवंदेवं वोऽवस इन्द्रमिन्द्रं गृणीषणि ।	अधा यज्ञाय तुर्वणे व्यानशुः	१९
यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं सोमैभिः सोमपातमम् ।	होत्राभिरिन्द्रं वावृधुर्व्यानशुः	२०
महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः ।	विश्वा वसूनि द्वाशुषे व्यानशुः	२१
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे देवासो दधिरे पुरः ।	इन्द्रं वाणीरनूषता समोजसे	२२
महान्तं महिना वयं स्तोमैर्भिवनश्चुतम् ।	अकैरभि प्र णोनुमः समोजसे	२३ ३१०
न थं विविक्तो रोदसी नान्तरिक्षाणि वज्रिणाम् ।	अमादिदस्य तित्विषे समोजसः	२४
यदिन्द्र पृतनाज्ये देवास्त्वा दधिरे पुरः ।	आदित् ते हर्यता हरीं ववक्षतुः	२५
यदा वृत्रं नवीवृतं शवसा वज्रिन्नवधीः ।	आदित् ते हर्यता हरीं ववक्षतुः	२६
यदा ते विष्णुरोजसा त्रीणि पदा विचक्रमे ।	आदित् ते हर्यता हरीं ववक्षतुः	२७
यदा ते हर्यता हरी वावृधाते द्विवेदिवे ।	आदित् ते विश्वा भुव्नानि येमिरे	२८ ३१५
यदा ते मारुतीविशस्तुभ्यमिन्द्र नियेमिरे ।	आदित् ते विश्वा भुव्नानि येमिरे	२९
यदा सूर्यममुं द्विवि शुक्रं ज्योतिरधारयः ।	आदित् ते विश्वा भुव्नानि येमिरे	३०
इमां तं इन्द्र सुष्टुतिं विप्र इयति धीतिभिः ।	जामिं पदेव पिप्रीतीं प्राध्वरे	३१
यदस्य धामनि प्रिये समीचीनासो अस्वरन् ।	नाभा यज्ञस्य द्रोहना प्राध्वरे	३२
सुवीर्यं स्वश्व्यं सुगव्यमिन्द्र वद्वि नः ।	होतेव पूर्वचित्तये प्राध्वरे	३३ ३१०

॥ १९ ॥ ( ऋ० ८।१३।१-३३ )

[ नारदः काण्वः ] । उष्णिक् ।

इन्द्रः सुतेषु सोमेषु	क्रतुं पुनीत उक्थ्यम्	। विदे वृधस्य दक्षसो महान् हि पः	१
स प्रथमे व्योमनि	देवानां सद्ने वृधः	। सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सुजित	२
तमह्वे वाजसातय	इन्द्रं भराय शुष्मिणाम्	। भवा नः सुम्ने अन्तमः सखा वृधे	३
इयं तं इन्द्र गर्वणो	रातिः क्षरति सुन्वतः	। मन्वानो अस्य बर्हिषो वि राजसि	४
नूनं तदिन्द्र दद्धि नो	यत् त्वां सुन्वन्त ईमहे	। रयिं नश्चित्रमा भरा स्वर्विदम	५ ३२५
स्तोता यत् ते विचर्षणि	रतिप्रशर्धयद् गिरः	। वया इवानु रोहन्त जुषन्त यत्	६
प्रत्नवज्जनया गिरः	शृणुधी जरितुर्हवम्	। मदेमदे ववक्षिथा सुकृत्वन्	७
क्रीळन्त्यस्य सूनुता	आपो न प्रवता यतीः	। अया धिया य उच्यते पतिर्विवः	८
उतो पतिर्य उच्यते	कृष्टीनामेक इद् वशी	। नमोवृधैरवस्युभिः सुते रण	९
स्तुहि श्रुतं विपश्चितं	हरी यस्य प्रसाक्षिणां	। गन्तारा वृशुषो गृहं नमस्विनः	१० ३३०
तुतुजानो महेमते	ऽश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः	। आ याहि यज्ञमाशुभिः शमिद्धि ते	११
इन्द्रं शविष्ठ सत्पते	रयिं गृणत्सुं धारय	। श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वन्म	१२
हवे त्वा सूर उदिते	हवे मध्यंदिने विवः	। जुषाण इन्द्र सप्तिभिर्न आ गहि	१३
आ तू गहि प्र तु द्रव	मत्स्वा सुतस्य गोमतः	। तन्तुं तनुष्व पृथ्यं यथा विदे	१४
यच्छक्रासि परावति	यर्वावति वृत्रहन्	। यद् वा समुद्रे अन्धसोऽवितेदसि	१५ ३३५
इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर	इन्द्रं सुतास इन्दवः	। इन्द्रे हविष्मतीर्विशो अराणिपुः	१६
तमिद् विपा अवस्यवः	प्रवत्वतीभिरुतिभिः	। इन्द्रं क्षोणीरवर्धयन् वया इव	१७
त्रिकट्टकेषु चेतनं	देवासो यज्ञमन्नत	। तमिद् वर्धन्तु नो गिरः सदावृधम्	१८
स्तोता यत् ते अनुव्रत	उक्थान्युतुथा वृधे	। शुचिः पावक उच्यते सो अद्भुतः	१९
तदिद् रुद्रस्य चेतति	यहं प्रत्नेषु धामसु	। मनो यत्रा वि तद् वृधुर्विचेतसः	२० ३४०
यदि मे सख्यमावर	इमस्य पाह्यन्धसः	। येन विश्वा अति द्विषो अतारिम	२१
कदा तं इन्द्र गर्वणः	स्तोता भवाति शन्तमः	। कदा नो गव्ये अश्व्ये वसो दधः	२२
उत ते सुष्टुता हरी	वृषणा वहतो रथम्	। अजुर्यस्य मदिन्तमं यमीमहे	२३
तमीमहे पुरुष्टुतं	यहं प्रत्नाभिरुतिभिः	। नि बर्हिषि प्रिये संवृदधं द्विता	२४
वर्धस्वा सु पुरुष्टुत	ऋषिष्टुताभिरुतिभिः	। धुक्षस्व पिप्युषीमिषमवा च नः	२५ ३४५
इन्द्र त्वमवितेदसी	त्था स्तुवतो अद्रिवः	। ऋतादियमिं ते धियं मनायुजम्	२६
इह त्या सधमाद्या	युजानः सोमपीतये	। हरी इन्द्र प्रतद्वसू अभि स्वर	२७

अभि स्वरन्तु ये तव	रुद्रासः सक्षत श्रियम्	। उतो मरुत्वतीर्विशो अभि प्रयः	२८
इमा अस्य प्रतूर्तयः	पदं जुपन्त यद् द्विवि	। नाभा यज्ञस्य सं दधुर्यथा विदे	२९
अयं दीर्घाय चक्षसे	प्राचिं प्रयत्यध्वरे	। मिमीते यज्ञमानुषग्विचक्ष्य	३० ३५०
वृषायमिन्द्र ते रथं	उतो ते वृषणा हरीं	। वृषा त्वं शतक्रतो वृषा हवः	३१
वृषा ग्रावा वृषा मद्रो	वृषा सोमो अयं सुतः	। वृषा यज्ञो यमिन्वसि वृषा हवः	३२
वृषा त्वा वृषणं हुवे	वञ्चिञ्चित्रामिहृतिभिः	। वावन्थ हि प्रतिष्ठुतिं वृषा हवः	३३

॥ २० ॥ ( ऋ० ८।१४।१-१५ )

[ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ] । गायत्री ।

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्	। स्तोता मे गोषखा स्यात्	१
शिक्षेयमस्मै दिसेयं शचीपते मनीषिणे	। यद्गहं गोपतिः स्याम्	२ ३५५
धेनुष्ट इन्द्र सूनुता यजमानाय सुन्वते	। गामश्वं पिप्युषीं दुहे	३
न ते वर्तास्ति राधस इन्द्र देवो न मर्त्यः	। यद् दित्सि स्तुतो मघम्	४
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद् भूमिं व्यवर्तयत्	। चक्राण ओपशं द्विवि	५
वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः	। ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे	६
व्यन्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना	। इन्द्रो यदभिनद् वलम्	७ ३६०
उद् गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन् गुहां सतीः	। अर्वाञ्चं नुनुदे वलम्	८
इन्द्रेण रोचना द्विवो हृळ्हानि हंहितानि च	। स्थिराणि न पराणुदे	९
अपामूर्मिर्मदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते	। वि ते मदा अराजिषुः	१०
त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्रास्युक्थवर्धनः	। स्तोतृणामुत भद्रकृत	११
इन्द्रमित केशिना हरीं सोमपेयाय वक्षतः	। उर्प यज्ञं सुरार्धसम्	१२ ३६५
अपां फेनेन नमुचेः शिरं इन्द्रोदवर्तयः	। विश्वा यदजयः स्पृधः	१३
मायाभिर्रुत्सिसृप्सत् इन्द्र द्यामारुरुक्षतः	। अव दस्यूरधूनुथाः	१४
असुन्वामिन्द्र संसद्वं विषूचीं व्यनाशयः	। सोमपा उत्तरो भवन्	१५

॥ २१ ॥ ( ऋ० ८।१५।१-१३ )

[ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ] । उष्णिक् ।

तम्बुभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतं	। इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत	१
यस्य द्विवर्हसो बृहत् सहो वाधार रोदसी	। गिरीरञ्जा अपः स्ववृषत्वना	२ ३७०
स राजसि पुरुष्टुतं एको वृत्राणि जिघ्रसे	। इन्द्र जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे	३
तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पुत्सु सासहिम्	। उ लोककृत्नुमद्विवो हरिश्रियम्	४

येन ज्योतींष्यायवे मनवे च विवेदिथ	। मन्वानो अस्य बर्हिषो वि राजसि	५
तद्ग्या चित् त उक्थिनो ऽनुं ध्रुवन्ति पूर्वथा	। वृषपत्नीरपो जया द्विवेदिवे	६
तव त्यादिन्द्रियं ब्रूहत् तव शुष्ममुत् क्रतुम्	। वज्रं शिशति धिषणा वरेण्यम्	७ ३७५
तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः	। त्वामापः पर्वतासश्च हिन्विरे	८
त्वां विष्णुर्ब्रूहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः	। त्वां शर्धो मद्रुत्यनु मारुतम्	९
त्वं वृषा जनानां मंहिष्ठ इन्द्र जज्ञिषे	। सत्रा विश्वा स्वपत्यानि दधिषे	१०
सत्रा त्वं पुरुष्टुत एको वृत्राणि तोशसे	। नान्य इन्द्रात् करणं भूय इन्वति	११
यदिन्द्र मन्मशस्त्वा नाना हवन्त ऊतये	। अस्माकेभिर्नृभिस्त्रा स्वर्जय	१२ ३८०
अरं क्षयाय नो महे विश्वा रूपाण्याविशन्	। इन्द्रं जैत्राय हर्षया शचीपतिम्	१३

॥ १२ ॥ ( ऋ० ८।१६।१-१२ )

[ हरिम्बिठिः काण्वः ] । गायत्री ।

प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीभिः	। नरं नृषाहं मंहिष्ठम्	१
यस्मिन्नुक्थानि रण्यन्ति विश्वानि च श्रवस्या	। अपामवो न समुद्रे	२
तं सुष्टुत्या विवासे ज्येष्ठराजं भरे कृत्नुम्	। महो वाजिनं सनिभ्यः	३
यस्यानूना गभीरा मदा उरवस्तरुत्राः	। हर्षुमन्तः शूरसातौ	४ ३८५
तमिद् धनेषु हितेष्वधिवाकार्य हवन्ते	। येषामिन्द्रस्ते जयन्ति	५
तमिच्छयौत्तरार्यन्ति तं कृतेभिश्चर्षणयः	। एष इन्द्रो वरिवस्कृत्	६
इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र ऋषिरिन्द्रः पुरु पुरुहूतः	। महान् महीभिः शचीभिः	७
सः स्तोम्यः स हव्यः सत्यः सत्वा तुविकूर्मिः	। एकश्चित् सत्राभिभूतिः	८
तमर्केभिस्तं सामभिस्तं गायत्रैश्चर्षणयः	। इन्द्रं वर्धन्ति क्षितयः	९ ३९०
प्रणेतारं वस्यो अच्छा कर्तारं ज्योतिः समत्सु	। सामह्वासं युधामित्रान्	१०
स नः परिः पारयाति स्वास्ति नावा पुरुहूतः	। इन्द्रो विश्वा अति द्विषः	११
स त्वं न इन्द्र वाजेभिर्दशस्या च गातुया च	। अच्छा च नः सुभ्रं नैषि	१२

॥ १३ ॥ ( ऋ० ८।१७।१-१५ )

[ हरिम्बिठिः काण्वः ] । [ १४ वास्तोष्पतिर्वा ] । गायत्री, प्रगाथः = ( १४ बृहती, १५ सतोबृहती ) ।

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्	। एदं बर्हिः सद्रो मम	१
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना	। उप ब्रह्माणि नः शृणु	२ ३९५
ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः	। सुतावन्तो हवामहे	३
आ नो याहि सुतावतो ऽस्माकं सुष्टुतीरुप	। पिबा सु शिप्रिन्नन्धसः	४

आ ते सिञ्चामि कुक्ष्यो—रनु गात्रा वि धावतु । गृभाय जिह्वया मधु	५
स्वादुष्टे अस्तु संसुद्रे मधुमान् तन्वेडं तव । सोमः शर्मस्तु ते हृदे	६
अयमुं त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः । प्र सोमं इन्द्र सर्पतु	७ ४००
तुविश्रीवो वपोदरः सुबाहुरन्धसो मदे । इन्द्रो वृत्राणि जिघ्रते	८
इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान ओजसा । वृत्राणि वृत्रहञ्जहि	९
द्वीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो येना वसु प्रयच्छसि । यजमानाय सुन्वते	१०
अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि । एहीमस्य द्रवा पिब	११
शाचिगो शाचिपूजना—स्य रणाय ते सुतः । आखण्डल प्र हूयसे	१२ ४०५
यस्ते शृङ्गवृषो नपात् प्रणपात् कुण्डपाय्यः । न्यस्मिन् दध आ मनः	१३
वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां—सत्रं सोम्यानाम् ।	
द्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीना—मिन्द्रो मुनीनां सखा	१४
पृदाकुसानुर्यजतो गवेपण एकः सन्नाभि भूर्यसः ।	
भूर्णिमश्वं नयत् तुजा पुरो गृभे—न्द्रं सोमस्य पीतये	१५

॥ २४ ॥ ( ऋ० ८।२।१-१६ )

[ सोभरिः काण्वः ] । प्रगाथः— ( विषमा ककुप् समा सतोबृहती ) ।

वयमु त्वामपूर्य स्थूरं न कच्चिद् भरन्तोऽवस्यवः । वाजे चित्रं हवामहे	१
उप त्वा कर्मन्नतये स नो युवो—ग्रश्वक्राम यो धृषत् ।	
त्वामिन्द्रचवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सान्निमि	२ ४१०
आ याहीम इन्द्रुवो ऽश्वपते गोपत् उर्वरापते । सोमं सोमपते पिब	३
वयं हि त्वा बन्धुमन्तमबन्धवो विप्रास इन्द्र येमिम ।	
या ते धामानि वृषभ तेभिरा गहि विश्वेभिः सोमपीतये	४
सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मङ्गिरे विवक्षणे । अभि त्वामिन्द्र नोनुमः	५
अच्छा च त्वैना नमसा वदाममि किं मुहुश्चिद् वि दीधयः ।	
सन्ति कामासो हरिवो इदिङ्गं स्मो वयं सन्ति नो धियः	६
नूत्ना इदिन्द्र ते वय—मूती अभूम नहि नू ते अद्रिवः । विद्या पुरा परीणसः	७ ४१५
विद्या सखित्वमुत शूर भोज्यु—मा ते ता वज्रिनीमहे ।	
उतो समस्मिन्ना शिशीहि नो वसो वाजे सुशिप्र गोमति	८
यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य अनिनाय तमु वः स्तुषे । सखाय इन्द्रमूतये	९
हर्यश्वं सर्पतिं चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत ।	
आ तुं नः स वयति गव्यमश्व्यं स्तोतृभ्यो मघवा शतम्	१०

त्वया ह स्विद् युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ भुवीमहि । संस्थे जनस्य गोमतः	११
जयेम कारे पुरुहूत कारिणो ऽभि तिष्ठेम दूढ्यः ।	
नृभिर्वृत्रं हन्याम शूश्रुयाम चा—ऽवेरिन्द्र प्र णो धियः	१२ ४२०
अभ्रातृव्यो अना त्व—मनापिरिन्द्र जनुषां सनादसि । युधेदापित्वमिच्छसे	१३
नकी रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीर्यन्ति ते सुराश्वः ।	
यदा कृणोषि नदुर्नु समूहस्या—दित पितेव ह्यसे	१४
मा ते अमाजुरो यथा मुरास इन्द्र सख्ये त्वावतः । नि षदाम सचां सुते	१५
मा ते गोदत्र निरराम राधस इन्द्र मा ते गृहामहि ।	
हृव्हा चिद्वयः प्र मृशाभ्या भर न ते कामान आदभे	१६

॥ २५ ॥ ( क्र० ८।३४।१-१८ )

[ नीपातिथिः काण्वः, १६-१८ सहस्रं वसुरोचिषोऽङ्गिरसः ] । अनुष्टुप्, १६-१८ गायत्री ।

एन्द्र याहि हरिभि—रुप कण्वस्य सुष्टुतिम् । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१ ४२५
आ त्वा ग्रावा वदन्निह सोमी घोषेण यच्छतु । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	२
अत्रा वि नेमिरेषा—मुरां न धूनुते वृकः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	३
आ त्वा कर्णा इहावसे हवन्ते वाजसातये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	४
दधामि ते सुतानां वृष्णे न पूर्वपाप्यम् । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	५
स्मत्पुरन्धिर्न आ गहि विश्वतोधीर्न ऊतये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	६ (४३०)
आ नो याहि महेमते सहस्रोते शतामघ । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	७
आ त्वा होता मनुर्हितो देवत्रा वक्षदीड्यः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	८
आ त्वा मवृच्युता हरी श्येनं पक्षेव वक्षतः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	९
आ याह्यर्थ आ परि स्वाहा सोमस्य पीतये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१०
आ नो याह्युपश्रु—त्युक्थेषु रणया इह । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	११ (४३५)
सरूपैरा सु नो गहि संभृतैः संभृताश्वः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१२
आ याहि पर्वतेभ्यः समुद्रस्याधि विष्टपः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१३
आ नो गव्यान्यश्व्या सहस्रा शूर वर्हहि । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१४
आ नः सहस्रशो भरा—ऽयुतानि शतानि च । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१५
आ यद्विन्द्रश्च दद्वहे सहस्रं वसुरोचिषः । ओजिष्ठमश्वयं पशुम्	१६ (४४०)
य ऋजा वातरंहसो ऽरुषासो रघुव्यदः । भ्राजन्ते सूर्या इव	१७
पारावतस्य रातिषु इवच्चक्रेष्वानुषु । तिष्ठं वनस्य मध्य आ	१८



॥ २६ ॥ ( ऋ० ८।४।१-४२ )

[ त्रिशोकः काण्वः ] । [ १ अग्नीन्द्रौ ] । गायत्री ।

आ घा ये अग्निमिन्धते	स्तृणन्ति बहिरानुषक् ।	येषामिन्द्रो युवा सखा	१
बृहन्निद्रिधम एषां	भूरिं शस्तं पृथुः स्वरुः ।	येषामिन्द्रो युवा सखा	२
अयुद्ध इद युधा वृतं	शूर आर्जति सत्वभिः ।	येषामिन्द्रो युवा सखा	३ ४४५
आ बुन्दं वृत्रहा ददे	जातः पृच्छद् वि मातरम् ।	क उग्राः के ह शृण्वरे	४
प्रति त्वा शवसी वदद्	गिरावप्सो न योधिपत् ।	यस्ते शत्रुत्वमाचके	५
उत त्वं मघवञ्छृणु	यस्ते वष्टि ववक्षि तत् ।	यद् वीळयासि वीळु तत्	६
यदाजिं यात्याजिकृ	दिन्द्रः स्वश्वयुरुप	रथीतमो रथीनाम्	७
वि पु विश्वा अभियुजो	वज्रिन् विष्वग्यथा वृह	भवां नः सुश्रवस्तमः	८ ४५०
अस्माकं सु रथं पुर	इन्द्रः कृणोतु सातये	न यं धूर्वन्ति धूर्तयः	९
वृज्याम ते परि द्विषो	ऽरं ते शक्र द्वावने	गमेमेदिन्द्र गोमतः	१०
शनैश्चिद् यन्तो अद्विवो	ऽश्वावन्तः शतग्विनः ।	विवक्षणा अनेहसः	११
ऊर्ध्वा हि ते विवेदिवे	सहस्रां सूनृतां शता	जरितृभ्यो विमंहते	१२
विद्वा हि त्वा धनंजय	मिन्द्रं हृळ्हा चिदारुजम् ।	आदारिणं यथा गर्यम्	१३ ४५५
ककुहं चित् त्वा कवे	मन्दन्तु धृष्णविन्दवः ।	आ त्वां पणिं यदीमहे	१४
यस्ते रेवां अदाशुरिः	प्रममर्षं मघत्तये	तस्य नो वेदु आ भर	१५
इम उ त्वा वि चक्षते	सखाय इन्द्र सोमिनः ।	पुष्टार्वन्तो यथा पशुम्	१६
उत त्वावधिरं वयं	श्रुत्कर्णं सन्तमूतये	दूराविह हवामहे	१७
यच्छुश्रूया इमं हवं	दुर्मर्षं चक्रिया उत	भवेरापिनो अन्तमः	१८ ४६०
यच्चिद्धि ते अपि व्यथि	र्जगन्वांसो अमन्महि ।	गोदा इदिन्द्र बोधि नः	१९
आ त्वा रम्भं न जिब्रयो	ररम्भा शवसस्पते ।	उश्मसिं त्वा सधस्थ आ	२०
स्तोत्रमिन्द्राय गायत	पुरुनृम्णाय सत्वने	नक्रियं वृण्वते युधि	२१
अभि त्वा वृषभा सुते	सुतं सृजामि पीतये	तृम्पा व्यश्रुही मर्दम्	२२
मा त्वा मूरा अविष्यवो	मोपहस्वान आ दभन् ।	माकीं ब्रह्मद्विषो वनः	२३ ४६५
इह त्वा गोपरीणसा	महे मन्दन्तु राधसे	सरो गौरो यथा पिब	२४
या वृत्रहा परावति	सना नवा च चुच्युवे	ता संसत्सु प्र वीचत	२५
अपिबत् कद्रुवः सुत	मिन्द्रः सहस्रबाह्वे	अत्रादिदिष्ट पाँस्यम्	२६
सृत्यं तत् तुर्वशे यदौ	विदानो अह्मवाप्यम्	व्यानद् तुर्वणे शभिं	२७

तरणिं वो जनानां	त्रदं धार्जस्य गोमंतः	। समानसु प्र शंसिषम्	२८ ४७०
ऋमुक्षणं न वर्तव	उक्थेषु तुऽयावृधम्	। इन्द्रं सोमे सचा सुते	२९
यः कुन्तदिद वि योन्यं	त्रिशोकाय गिरिं पृथुम्	। गोभ्यो गातुं निरेतवे	३०
यद् दधिषे मनस्यसि	मन्द्वानः प्रेदियक्षसि	। मा तत् करिन्द्र मूळ्य	३१
वृध्रं चिद्धि त्वावतः	कृतं शृण्वे अधि क्षमि	। जिगात्विन्द्र ते मनः	३२
तवेदु ताः सुकीर्तयो	ऽसञ्चुत प्रशस्तयः	। यदिन्द्र मूळयासि नः	३३ ४७५
मा न एकस्मिन्नागसि	मा द्वयोरुत त्रिषु	। वधीर्मा शूर भूरिषु	३४
बिभया हि त्वावत	उग्रादभिप्रभङ्गिणः	। वृस्मावृहमृतीषहः	३५
मा सख्युः शूनमा विद्वे	मा पुत्रस्य प्रभूवसो	। आवृत्वद् भूतु ते मनः	३६
को नु मर्या अमिथितः	सखा सखायमब्रवीत्	। जहा को अस्मदीषते	३७
एवारं वृषभा सुते	ऽसिन्वन् भूर्यावयः	। श्वघ्नीव निवता चरन्	३८ ४८०
आ त एता वचोयुजा	हरीं गृभ्णे सुमद्रथा	। यदीं ब्रह्मभ्य इद्ददः	३९
भिन्धि विश्वा अप द्विषः	परि बाधो जही मृधः	। वसुं स्पार्हं तदा भर	४०
यद्रीळाविन्द्र यत् स्थिरे	यत् पर्शानि पराभृतम्	। वसुं स्पार्हं तदा भर	४१
यस्य ते विश्वमानुषो	भूरैर्दुत्तस्य वेदति	। वसुं स्पार्हं तदा भर	४२

॥ २७ ॥ (ऋ० ८।४९।१-१०)

[ प्रस्कण्वः काण्वः ] । प्रगाथः= ( विषमा बृहती, समा सतोबृहती ) ।

अभि प्र वः सुरार्धस—मिन्द्रमर्चं यथा विदे ।		
यो जरितृभ्यो मघवां पुरुवसुः	सहस्रेणेव शिक्षति	१ ४८५
शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया	हन्ति वृत्राणि वृशुषे ।	
गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे	दत्राणि पुरुभोजसः	२
आ त्वा सुतास इन्द्वो मदा य इन्द्र गिर्वणः ।		
आपो न वञ्चिन्नन्वोक्थं सरः	पूणान्ति शूर राधसे	३
अनेहसं प्रतरणं विवक्षणं	मध्वः स्वार्दिष्ठमीं पिब ।	
आ यथा मन्दसानः किरासि नः	प्र क्षुदेव त्मना धूषत्	४
आ नः स्तोममुप द्रव—द्वियानो अश्वो न सोतृभिः ।		
यं ते स्वधावन्स्वदयन्ति धेनव	इन्द्र कण्वेषु रातयः	५
उग्रं न वीरं नमसोप सेदिम्	विभूतिमक्षितावसुम् ।	
उद्रीव वञ्चिन्नवतो न सिञ्चते	क्षरन्तीन्द्र धीतयः	६ ४९०

यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे यद्वा पृथिव्यामधि ।	
अतो नो यज्ञमाशुभिर्महेमत उग्र उग्रेभिरा गंहि	७
अजिरासो हरयो ये ते आशवो वार्ता इव प्रसक्षिणः ।	
येभिरपत्यं मनुषः परीर्यसे येभिर्विश्वं स्वर्हृशे	८
एतावतस्त ईमह इन्द्र सुन्नस्य गोमतः ।	
यथा प्रावो मघवन् मेध्यातिथिं यथा नीपातिथिं धने	९
यथा कण्वे मघवन् त्रसदस्यवि यथा पक्थे दशवजे ।	
यथा गोशर्ये असिनोर्ऋजिष्वनीन्द्र गोमन्द्रिरण्यवत्	१०

॥ २८ ॥ ( ऋ० ८।५०।१-१० )

[ पुष्टिगुः काण्वः ] । प्रगाथः- ( विषमा बृहती, समा सतोबृहती ) ।

प्र सु श्रुतं सुरार्धसमर्चा शक्रमभिष्टये ।		
यः सुन्वते स्तुवते काम्यं वसु सहस्रेणेव महंत	१	४९५
शतानीका हेतयो अस्य दुष्टरा इन्द्रस्य समिषो महीः ।		
गिरिर्न भुज्मा मघवत्सु पिन्वते यदी सुता अमन्दिषुः	२	
यदी सुतास इन्द्रवो ऽभि प्रियममन्दिषुः ।		
आपो न धायि सवनं म आ वसो दुधा इवोप द्वाशुषे	३	
अनेहसं वो हवमानमूतये मध्वः क्षरन्ति धीतर्यः ।		
आ त्वा वसो हवमानास इन्द्रव उप स्तोत्रेषु दधिरे	४	
आ नः सोमे स्वध्वर इयानो अत्यो न तोशते ।		
यं ते स्वदावन्त्स्वदन्ति गूर्तर्यः पौरे छन्दयसे हवम्	५	
प्र वीरमुग्रं विविचिं धनस्पृतं विभूतिं राधसो महः ।		
उद्रीव वज्रिन्नवतो वसुत्वना सदा पीपेथ द्वाशुषे	६	५००
यद्ध नूनं परावति यद् वा पृथिव्यां द्विवि ।		
युजान इन्द्र हरिभिर्महेमत ऋष्व ऋष्वेभिरा गंहि	७	
रथिरासो हरयो ये ते अस्त्रिध ओजो वार्तस्य पिप्रति ।		
येभिर्नि दस्युं मनुषो निघोषयो येभिः स्वः परीर्यसे	८	
एतावतस्ते वसो विद्याम शूर नव्यसः ।		
यथा प्राव एतं कृत्वये धने यथा वशं दशवजे	९	
यथा कण्वे मघवन् मेधे अध्वरे वीर्घनीथे दमूनसि ।		
यथा गोशर्ये असिषासो अद्रिवो मयि गोत्रं हरिभियम्	१०	

॥ २९ ॥ ( ऋ० ८।५१।१-१० )

( ५०५-५१४ ) श्रुष्टिगुः काण्वः । प्रगाथः- ( विषमा बृहती; समा सतोबृहती ) ।

यथा मनौ सांवरणौ सोममिन्द्रापिबः सुतम् ।		
नीपातिथौ मघवन् मेध्यातिथौ पुष्टिगौ श्रुष्टिगौ सचा	१	५०५
पार्षद्वाणः प्रस्कण्वं समसादय च्छर्यान् जित्रिमुद्धितम् ।		
सहस्राण्यसिपासद् गवामृषिस्त्वोतो दस्यवे वृकः	२	
य उक्थेभिर्न विन्धते चिकिद्य ऋषिचोदनः ।		
इन्द्रं तमच्छा वदु नव्यस्या मत्यरिण्यन्तं न भोजसे	३	
यस्मा अर्कं सप्तशीर्षाणमानुचुस्त्रिधातुमुत्तमे पदे ।		
स त्विमा विश्वा भुवनानि चिक्रदुदादिर्जनिष्ट पोंस्यम	४	
यो नो दाता वसूनामिन्द्रं तं हृमहे वयम् ।		
विद्या ह्यस्य सुमतिं नवीयसीं गमेम गोमति वजे	५	
यस्मै त्वं वसो दानाय शिक्षसि स रायस्पोषमश्रुते ।		
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे	६	५१०
कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्रमि दाशुषे ।		
उपोषेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते	७	
प्र यो ननक्षे अभ्योजसा क्किविं वधैः शुष्णं निघोषयन् ।		
यदेदस्तम्भीत् प्रथयन्नमं दिवमादिर्जनिष्ट पार्थिवः	८	
यस्यायं विश्व आयो दासः शेषधिपा अरिः ।		
तिरश्चिदुर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत सो अज्यते रयिः	९	
तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्रुतं विप्रासो अर्कमानुचुः ।		
अस्मे रयिः पप्रथे वृण्यं शवो ऽस्मे सुवानास इन्द्रवः	१०	

॥ ३० ॥ ( ऋ० ८।५१।१-१० )

( ५१५-५१४ ) आयुः काण्वः । प्रगाथः- ( विषमा बृहती; समा सतोबृहती ) ।

यथा मनौ विवस्वति सोमं शक्रापिबः सुतम् ।		
यथा त्रिते छन्द इन्द्र जुजोषस्यायौ मादयसे सचा	१	५१५
पृषधे मेध्ये मातरिष्वनीन्द्र सुवाने अमन्दथाः ।		
यथा सोमं दशशिप्रे दशोण्ये स्युमरश्मावृजूनसि	२	
य उक्था केवला वृधे यः सोमं धृषितापिबत ।		
यस्मै विष्णुस्त्रीणि पदा विचक्रम उप मित्रस्य धर्मभिः	३	

यस्य त्वमिन्द्र स्तोमेषु चाक्रनो वाजे वाजिच्छतक्रतो ।		
तं त्वा वयं सुदुष्मामिव गोदुहो जुहूमसि श्वस्यवः	४	
यो नो वृता स नः पिता मह्यो उग्र ईशानकृत् ।		
अयामन्नग्रो मघवा पुरुवसु—गौरश्वस्य प्र दातु नः	५	
यस्मै त्वं वंसो वृताय मह्यसे स रायस्पोषमिन्वति ।		
वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे	६	५२०
कदा च न प्र युच्छस्यु—भे नि पांसि जन्मनी ।		
तुरीयादित्य हवनं त इन्द्रिय—मा तस्थावमृतं द्विवि	७	
यस्मै त्वं मघवन्नन्द्र गिर्वणः शिक्षो शिक्षसि वृशुषे ।		
अस्माकं गिरं उत सुष्टुतिं वंसो कण्ववच्छृणुधी हवम्	८	
अस्तावि मन्मं पुन्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत ।		
पूर्वाकृतस्य बृहतीरनुषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत	९	
समिन्द्रो रायो बृहतीरधुनुत सं क्षोणी समु सूर्यम् ।		
सं शुक्रासः शुचयः सं गवाशिरः सोमा इन्द्रममन्दिषुः	१०	

॥ ३१ ॥ ( ऋ० ८।५३।१-८ )

( ५२५-५३२ ) मेध्यः काण्वः । प्रगाथः = ( विषमा बृहती, समा सतोबृहती ) ।

उपमं त्वा मघोनां ज्येष्ठं च वृषभाणाम् ।		
पूर्भित्तमं मघवन्नन्द्र गोविदु—मीशानं राय ईमहे	१	५२५
य आयुं कुत्समतिथिग्वमर्दयो वावृधानो द्विवेदिवे ।		
तं त्वा वयं हर्यश्वं शतक्रतुं वाजयन्तो हवामहे	२	
आ नो विश्वेषां रसं मध्वः सिञ्चन्त्वद्रयः ।		
ये परावतिं सुन्विरे जनष्वा ये अर्वावतीन्द्वः	३	
विश्व्वा द्वेषांसि जृहि चाव चा कृधि विश्वे सन्वन्त्वा वसु ।		
शीष्टेषु चित् ते मकुरासो अंशवो यत्रा सोमस्य तुम्पसि	४	
इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः ।		
आ शंतम शंतमाभिरभिष्टिभि—रा स्वापि स्वापिमिः	५	
आजितुरं सत्पतिं विश्वचर्षणिं कृधि प्रजास्वामगम् ।		
प्र सू तिरा शचीभिर्ये त उक्थिनः क्रतुं पुनत आनुषक्	६	५३०
यस्ते साधिष्ठोऽवसे ते स्याम भरेषु ते ।		
यं होत्राभिरूत देवहूतिभिः सस्वांसो मनामहे	७	

अहं हि ते हरिवो ब्रह्म वाजयु—राजिं यामि सद्गोतिभिः ।  
त्वामिवेव तममे समश्वयु—र्गन्धुरग्रे मथीनाम्

८

॥ ३२ ॥ ( ऋ० ८।५४।१-६ )

( ५३३-५३८ ) मातरिश्वा काण्वः । प्रगाथः = ( विषमा बृहती, समा सतोबृहती ) ।

एतत् तं इन्द्र वीर्यं गीर्भिर्गुणन्ति कारवः ।

ते स्तोमन्त ऊर्जमावन् घृतश्रुतं पौरासो नक्षन् धीतिभिः

१

नक्षन्त इन्द्रमवसे सुकृत्यया येषां सुतेषु मन्वसे ।

यथा संवर्ते अमन्वो यथा कुश एवास्मे इन्द्र मत्स्व

२

यदिन्द्र राधो अस्ति ते माघोनं मघवत्तम ।

तेन नो बोधि सधमाद्यो बृधे भगो वृानार्य वृत्रहन्

५

आजिपते नृपते त्वमिन्द्रि नो वाज आ वक्षि सुक्रतो ।

वीती होत्राभिरुत देववीतिभिः ससर्वासो वि शृण्विरे

६

सन्ति ह्युर्य आशिष इन्द्र आयुर्जनानाम् ।

अस्मान् नक्षस्व मघवन्नुपावसे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्

७

वयं तं इन्द्र स्तोमेभिर्विधेम त्वमस्माकं शतक्रतो ।

महिं स्थूरं शशयं राधो अह्वयं प्रस्कण्वाय नि तोशय

८

॥ ३३ ॥ ( ऋ० ८।५५।१-५ )

( ५३९-५४३ ) कुशः काण्वः । [ प्रस्कण्वश्च ] । गायत्री, ३, ५, अनुष्टुप् ।

भूरीदिन्द्रस्य वीर्यं व्यस्यमभ्यार्यति । राधस्ते दस्यवे वृक

१

शतं श्वेतासं उक्षणो द्विवि तारो न रोचन्ते । म्हा दिवं न तस्तभुः

२

शतं वेणुञ्छतं शुनः शतं चर्माणि म्लातानि ।

शतं मे बल्वजस्तुका अरुषीणां चतुःशतम्

३

सुदेवाः स्थं काण्वायना वयोवयो विचरन्तः । अश्वासो न चङ्कमत

४

आदित् साप्तस्य चकिरं न्नानूनस्य महि श्रवः ।

श्यावीरतिध्वसन् पथ—श्वक्षुषा चन संनशे

५

॥ ३४ ॥ ( ऋ० ८।५६।१-४ )

( ५४४-५४७ ) पृषध्नः काण्वः । गायत्री ।

प्रति ते दस्यवे वृक राधो अकुर्यह्वयम् । द्यौर्न प्रथिना शवः

१

दश मह्यं पौतक्रतः सहस्रा दस्यवे वृकः । नित्याद्वायो अमंहत

२

शतं मे गर्वमानां शतमूर्णावतीनाम् । शतं वृासो अति स्रजः

३

तत्रो अपि प्राणीयत पूतक्रतायै व्यक्ता । अश्वानामिन्न यूथ्याम् ४

॥ ३५ ॥ ( क्र० ८।६।११-१८ )

( ५४८-५६५ ) भर्गः प्रगाथः । प्रगाथः- ( विषमा बृहती, ममा सतोबृहती ) ; १७ शंकुमती ।

उभयं शृणवञ्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः ।	
सत्राच्या मघवा सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् १	
तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसे धिषणे निष्टतक्षतुः ।	
उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः २	
आ वृषस्व पुरुवसो सुतस्येन्द्रान्धसः ।	
विद्वा हि त्वा हरिवः पूत्सु सासहि मधृष्टं चिद् दधुष्वणिम ३	५५०
अप्रामिसत्य मघवन् तथेदस दिन्द्र क्रत्वा यथा वशः ।	
सनेम वाजं तवं शिपिन्नवसा मक्षू चिद्यन्तो अद्रिवः ४	
शग्ध्युंषु शचीपत् इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।	
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदु मनु शूर चरामसि ५	
पौरो अश्वस्य पुरुकृद् गवाम स्युत्सो देव हिरण्ययः ।	
नकिर्हि दानं परिमर्धिषत् त्वे यद्यद्यामि तदा भर्ग ६	
त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये ।	
उद्वावृषस्व मघवन् गविष्ठय उदिन्द्राश्वमिष्ठय ७	
त्वं पुरू सहस्राणि शतानि च यूथा दानाय मंहसे ।	
आ पुरंदुरं चक्रुम विप्रवचस इन्द्रं गायन्तोऽवसे ८	५५५
अविप्रो वा यदविध द्विप्रो वेन्द्र ते वचः ।	
स प्र ममन्दत् त्वाया शतक्रतो प्राचामन्यो अहंसन ९	
उग्रबाहुर्भक्षकृत्वा पुरंदुरो यदि मे शृणवन्द्धवभ ।	
वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे १०	
न पापासो मनामहे नारायासो न जल्हवः ।	
यदिन्विन्द्रं वृषणं सचा सुते सखायं कृणवामहे ११	
उग्रं युयुज्म पृतनासु सासहि मूणकातिमदाभ्यम् ।	
वेदा भूमं चित् सनिता रथीतमो वाजिनं यमिदु नशत् १२	
यत् इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।	
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभि वि द्विपो वि मृधो जहि १३	५६०

त्वं हि राधस्पते राधसो महः क्षयस्यासि विधतः ।	
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे	१४
इन्द्रः स्पृष्टुत वृत्रहा परस्पा नो वरेण्यः ।	
स नो रक्षिषच्चरमं स मध्यमं स पश्चात् पातु नः पुरः	१५
त्वं नः पश्चाद्धरादुत्तरात् पुर इन्द्र नि पाहि विश्वतः ।	
आरे अस्मत् कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरदेवीः	१६
अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र त्रास्व परे च नः ।	
विश्वा च नो जरितुन्त्सत्पते अहा दिवा नक्तं च रक्षिषः	१७
प्रभङ्गी शूरो मघवा तुवीमघः संमिश्रलो वीर्याय कम् ।	
उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो नि या वज्रं मिमिक्षतुः	१८

५६५

॥ ३६ ॥ (ऋ० ८।३२।१-१२)

( ५६६-५७७ ) प्रगाथो घोरः काण्वः । पङ्क्तिः, ७-९ बृहती ।

प्रो अस्मा उपस्तुतिं भरता यज्जुजोषति ।	
उक्थैरिन्द्रस्य माहिं वयो वर्धन्ति सोमिनो भद्रा इन्द्रस्य रातयः	१
अयुजो असमो नृभिरेकः कृष्टीरयास्यः ।	
पूर्वीरति प्र वावृधे विश्वा जातान्योजसा भद्रा इन्द्रस्य रातयः	२
अहितेन चिदर्वता जीरदानुः सिषासति ।	
प्रवाच्यमिन्द्र तत् तव वीर्याणि करिष्यतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः	३
आ याहि कृणवाम त इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।	
येभिः शविष्ठ चाकनो भद्रमिह श्रवस्यते भद्रा इन्द्रस्य रातयः	४
धूषतश्चिद् धूषन्मनः कृणोषीन्द्र यत् त्वम् ।	
तीव्रैः सोमैः सपर्यतो नमोभिः प्रतिभूर्षतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः	५
अर्ष चष्ट ऋचीषमो ऽवता इव मानुषः ।	
जुष्टी दक्षस्य सोमिनः सखायं कृणुते युजं भद्रा इन्द्रस्य रातयः	६
विश्वे त इन्द्र वीर्यं देवा अनु क्रतुं ददुः ।	
भुवो विश्वस्य गोपतिः पुरुन्दुत भद्रा इन्द्रस्य रातयः	७
गुणे तदिन्द्र ते शव उपमं देवतातये ।	
यन्द्रंसि वृत्रमौजसा शचीपते भद्रा इन्द्रस्य रातयः	८
समनेव वपुष्यतः कृणवन्मानुषा युगा ।	
विदे तदिन्द्रश्चेतनमर्ध श्रुतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः	९

५७०



उज्जातमिन्द्र ते शश उत त्वामुत तव क्रतुम् ।	
भूरिगो भूरिं वावृधुर्मर्घवन् तव शर्मणि भद्रा इन्द्रस्य रातयः	१०
अहं च त्वं च वृत्रहन् त्सं युज्याव सनिभ्य आ ।	
अरातीवा चिदद्विवो ऽनु नौ शूर मंसते भद्रा इन्द्रस्य रातयः	११
सत्यमिद् वा उ तं वयमिन्द्रं स्तवाम नानृतम् ।	
महाँ असुन्वतो वधो भूरि ज्योतीषि सुन्वतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः	१२

॥ ३७ ॥ ( ऋ० ८।६३।१-११ )

( ५७८-६१२ ) प्रगाथः काण्वः । गायत्रीः १, ४-५, ७ अनुष्टुप् ।

स पूर्यो महानां वेनः क्रतुभिरानजे । यस्य द्वारा मनुष्पिता कुवेषु धियं आनजे	१
दिवो मानं नोत्सदन् त्सोमपृष्ठासो अद्रयः । उक्था ब्रह्मं च शंस्या	२
स विद्रां अङ्गिरोभ्य इन्द्रो गा अवृणोदप । स्तुषे तदस्य पौंस्यम्	३ ५८०
स प्रत्था कविवृध इन्द्रो वाकस्य वक्षणिः । शिवो अर्कस्य होमन्यस्मन्ना गन्त्ववसे	४
आदू नु ते अनु क्रतुं स्वाहा वरस्य यज्यवः । श्वात्रमर्का अनूपतेन्द्र गोत्रस्य द्वावने	५
इन्द्रे विश्वानि वीर्या कृतानि कर्त्वानि च । यमर्का अध्वरं विदुः	६
यत् पाञ्चजन्यया विशेन्द्रे घोषा असृक्षत । अस्तृणाद्ब्रह्मणा विपोऽर्यो मानस्य स क्षयः	७
इयमुं ते अनुष्टुतिश्चकृषे तानि पौंस्या । प्रावश्चक्रस्य वर्तनिम्	८ ५८५
अस्य वृष्णो व्योदन उरु क्रमिष्ट जीवसे । यवं न पश्व आ वदे	९
तद्धाना अवस्यवो युष्माभिर्वक्षपितरः । स्याम मरुत्वतो वृधे	१०
बहृत्वियाय धाम्न ऋक्भिः शूर नोनुमः । जेषमिन्द्र त्वया युजा	११

॥ ३८ ॥ ( ऋ० ८।६४।१-१२ ) गायत्री ।

उत त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्विवः । अव ब्रह्मद्विषो जहि	१
पदा पूर्णारराधसो नि बाधस्व महाँ असि । नहि त्वा कश्चन प्रति	२ ५९०
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम् । त्वं राजा जनानाम्	३
एहि प्रेहि क्षयो विव्याऽघोषार्धर्षणीनाम् । ओभे पृणासि रोदसी	४
त्यं चित् पर्वतं गिरिं शतवन्तं सहस्रिणम् । वि स्तोतृभ्यो हरोजिथ	५
वयमुं त्वा दिवा सुते वयं नक्तं हवामहे । अस्माकं काममा पृण	६
क्वस्य वृषभो युवा तुविग्नीवो अनानतः । ब्रह्मा कस्तं सपर्यति	७ ५९५
कस्य स्वित् सर्वनं वृषा जुजुष्वं अव गच्छति । इन्द्रं क उं स्विदा चके	८

कं ते वृाना असक्षत वृत्रहन् कं सुवीर्यां	। उक्थे क उ स्विकन्तमः	९	
अयं ते मानुषे जने सोमः पूरुषु सूयते	। तस्येहि प्र व्रवा पिब	१०	
अयं ते शर्यणावति सुषोमायामधि प्रियः	। अर्जीकीर्ये मदिन्तमः	११	
तमद्य राधसे महे चारुं मदाय घृष्वये	। एहीमिन्द्र व्रवा पिब	१२	६००

॥ ३९ ॥ ( ऋ० ८।६।१-१२ )

यदिन्द्र प्रागपागुवृङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः	। आ याहि तूर्यमाशुभिः	१	
यद्वा प्रस्रवणे त्रिवो मादयासे स्वर्णरे	। यद्वा समुद्रे अन्धसः	२	
आ त्वा गीर्भिमहामुरुं हुवे गामिव भोजसे	। इन्द्र सोमस्य पीतये	३	
आ त इन्द्र महिमानं हरयो देव ते महः	। रथे वहन्तु बिभ्रतः	४	
इन्द्रं गृणीष उं स्तुषे महौ उग्र ईशानकृत्	। एहि नः सुतं पिब	५	६०५
सुतावन्तस्त्वा वयं प्रयस्वन्तो हवामहे	। इदं नो बर्हिरासदे	६	
यच्चिन्द्रि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम्	। तं त्वा वयं हवामहे	७	
इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः	। जुषाण इन्द्र तत् पिब	८	
विश्वौ अर्यो विपश्चितो ऽति ख्यस्तूयमा गहि	। अस्मे धेहि श्रवो बृहत्	९	
वृता मे पृषतीनां राजा हिरण्यवीनाम्	। मा देवा मघवा रिषत्	१०	६१०
सहस्रे पृषतीनामधि श्रन्द्रं बृहत् पूथु	। शुक्रं हिरण्यमा ददे	११	
नपातो दुर्गहस्य मे सहस्रेण सुराधसः	। श्रवो देवेष्वक्रत	१२	

॥ ४० ॥ ( ऋ० ८।६।१-१५ )

( ६१३-६२७ ) कलिः प्रागाथः । प्रागाथः= ( विषमा वृहती, समा सतोवृहती ), १५ अनुष्टुप् ।

तरोभिर्षो विद्वंसुमिन्द्रं सबाध ऊतये ।		
बृहद्गार्यन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम्	१	
न यं बुधा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदे सुशिप्रमन्धसः ।		
य आदृत्या शशमानाय सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम्	२	
यः शक्रो मुखो अश्वयो यो वा कीर्जो हिरण्ययः ।		
स ऊर्ध्वस्य रेजयत्यपावृतिमिन्द्रो गव्यस्य वृत्रहा	३	६१५
निखातं चिद्यः पूरुसंभूतं वसूद्विद्वपति वाशुषे ।		
वञ्जी सुशिपो हर्यश्च इत् करदिन्द्रः क्रत्वा यथा वशत्	४	
यद् वावन्थं पुरुष्टुत पुरा चिच्छूर नृणाम् ।		
वयं तत् त इन्द्र सं भरामसि यज्ञमुक्थं तुरं वचः	५	

सचा सोमेषु पुरुहूत वज्रिवो मदाय द्युक्ष सोमपाः । त्वमिन्द्रि ब्रह्मकृते काम्यं वसु देष्टः सुन्वते भुवः वयमेनमिदा ह्यो ऽपीपेमेह वज्रिणाम् ।	६	
तरसा उ अद्य समना सुतं भरा—ऽऽ नूनं भूषत श्रुते वृकश्चिदस्य वारण उरामथि—रा वयुनेषु भूषति ।	७	
सेमं नः स्तोमं जुजुषाण आ गही—न्द्र प्र चित्रया धिया कदू न्वः स्याकृत—मिन्द्रस्यास्ति पौंस्यम् ।	८	६२०
केनो नु कं श्रोमतेन न शुश्रुवे जनुषः परि वृत्रहा कदू महीरधृष्टा अस्य तविपीः कदू वृत्रघ्नो अस्तृतम् ।	९	
इन्द्रो विश्वान् बेकनाटाँ अहर्हश उत क्रत्वा पणीरभि वयं घा ते अपूर्व्ये—न्द्र ब्रह्माणि वृत्रहन् ।	१०	
पुरुतमासः पुरुहूत वज्रिवो भूतिं न प्र भरामसि पूर्वाश्चिद्वि त्वे तुविकूर्मिन्नाशसो हवन्त इन्द्रातर्यः ।	११	
तिरश्चिद्वर्यः सवना वसो गहि शविष्ठ श्रुधि मे हवम् वयं घा ते त्वे इ—द्विन्द्र विप्रा अपि षमसि ।	१२	
नहि त्वदन्यः पुरुहूत कश्चन मघवन्नस्ति मर्हिता त्वं नो अस्या अमतेरुत क्षुधोऽं ऽभिशास्तेरव स्पृधि ।	१३	६२५
त्वं न ऊती तव चित्रया धिया शिक्षा शचिष्ठ गातुवित सोम इद्रः सुतो अस्तु कलयो मा बिभीतन ।	१४	
अपेक्षे ध्वस्मारयति स्वयं घैपो अपायति	१५	

॥ ४१ ॥ ( ऋ० ८।७६।१-१२ )

( ६२८-६६० ) कुरुसुतिः काण्वः । गायत्री ।

इमं नु मायिनं हुव इन्द्रमीशानमोर्जसा । मरुत्वन्तं न वृत्रसे	१	
अयमिन्द्रो मरुत्सखा वि वृत्रस्याभिनच्छरः । वज्रेण शतपर्वणा	२	
बावुधानो मरुत्सखे—न्द्रो वि वृत्रमैरयत् । सृजन्त्समुद्रिया अपः	३	६३०
अयं ह येन वा इदं स्वर्मरुत्वता जितम् । इन्द्रेण सोमपीतये	४	
मरुत्वन्तमृजीषिण—मोर्जस्वन्तं विरप्शिनम् । इन्द्रं गीभिर्हवामहे	५	
इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना मरुत्वन्तं हवामहे । अस्य सोमस्य पीतये	६	
मरुत्वो इन्द्र मीङ्कः पिबा सोमं शतक्रतो । अस्मिन् यज्ञे पुरुषुत	७	

तुभ्येदिन्द्र मरुत्वते	सुताः सोमासो अद्रिवः ।	हृदा ह्ययन्त उक्थिनः	८	६३५
पिबेदिन्द्र मरुत्सखा	सुतं सोमं दिविष्टिषु ।	वज्रं शिशान् ओजसा	९	
उत्तिष्ठन्नोर्जसा सह	पीत्वी शिप्रे अवेपयः ।	सोममिन्द्र चमू सुतम्	१०	
अनु त्वा रोदसी उभे	कक्षमाणमकृपेताम् ।	इन्द्र यद् दस्युहाभवः	११	
वाचमष्टापदीमहं	नवसक्तिमृतस्पृशम्	इन्द्रात् परि तन्वं ममे	१२	

॥ ४२ ॥ ( ऋ० ८।७७।१-११ )

[ गायत्री, १०-११ प्रगाथः= (बृहती, सतोबृहती) ]

जज्ञानो नु शतक्रतुर्वि पृच्छदिति मातरम्	। क उग्राः के हं शृण्विरे	१	६४०
आदीं शवस्यंब्रवी दौर्णवाभमहीशुवम्	। ते पुत्र सन्तु निष्ठुरः	२	
समित् तान् वृत्रहाखिवत् खे अरौ इव खेदया	। प्रवृद्धो दस्युहाभवत्	३	
एकया प्रतिधापिबत् साकं सरांसि त्रिंशतम्	। इन्द्रः सोमस्य काणुका	४	
अभि गन्धर्वमृतुण दबुधेषु रजःस्वा	। इन्द्रो ब्रह्मभ्य इद् वुधे	५	
निराविध्यद् गिरिभ्य आ धारयत् एकमोदुनम्	। इन्द्रो बुन्दं स्वाततम्	६	६४५
शतब्रध्न इषुस्तव सहस्रपर्ण एक इत्	। यमिन्द्र चकृषे युजम्	७	
तेन स्तोतुभ्य आ भर नृभ्यो नारिभ्यो अत्तवे	। सद्यो जात क्रमुष्ठिर	८	
एता च्यौत्तानि ते कृता वर्षिष्ठानि परीणसा	। हृदा वीङ्गधारयः	९	
विश्वेत् ता विष्णुराभर दुरुक्रमस्त्वेषितः ।			
शतं महिषान् क्षीरपाकमोदुनं वराहमिन्द्र एमुषम्		१०	
तुविक्षं ते सुकृतं सुमयं धनुः साधुर्बुन्दो हिरण्ययः ।			
उभा ते बाहू रण्या सुसंस्कृत ऋदूपे चिह्नवृधां		११	६५०

॥ ४३ ॥ ( ऋ० ८।७८।१-१० )

[ गायत्री, १० बृहती । ]

पुरोळाशं नो अन्धस इन्द्र सहस्रमा भर	। शता च शूर गोनाम्	१	
आ नो भर व्यञ्जनं गामश्वमभ्यञ्जनम्	। सर्वा मना हिरण्यया	२	
उत नः कर्णशोभना पुरूणि धृष्णवा भर	। त्वं हि शृण्विषे वसो	३	
नकीं वृधीक इन्द्र ते न सुषा न सुदा उत	। नान्यस्त्वच्छूरं वाघतः	४	
नकीमिन्द्रो निकर्तवे न शक्रः परिशक्तवे	। विश्वं शृणोति पश्यति	५	६५५
स मन्युं मर्त्याना मर्दब्धो नि चिकीषते	। पुरा निदाश्विकीषते	६	
क्रत्व इत् पूर्णमुदरं तुरस्यास्ति विधतः	। वृत्रघ्नः सोमपात्रः	७	

त्वे वसूनि संगता विश्वा च सोम सौभगा । सुदात्वपरिहृता	८	
त्वामिद्यवयुर्मम कामो गव्युर्हिरण्ययुः । त्वामंश्वयुरेषते	९	
तवेदिन्द्राहमाशसा हस्ते दात्रं चना ददे ।		
विनर्म्य वा मघवन्त्संभृतस्य वा पूरिं यवस्य काशिना	१०	६६०

॥ ४४ ॥ ( ऋ० ८।८०।१-९ )

( ६६१-६६९ ) एकद्युर्नोधसः । गायत्री ।

नह्युन्यं बळाकरं मर्दितां शतक्रतो । त्वं न इन्द्र मृळय	१	
यो नः शश्वत् पुराविथाऽसृधो वाजसातये । स त्वं न इन्द्र मृळय	२	
किमङ्ग रंध्रचोदनः सुन्वानस्यावितेदासि । कुवित् स्विन्द्र णः शकः	३	
इन्द्र प्र णो रथमव पश्चाच्चित् सन्तमद्रिवः । पुरस्तादेनं मे कृधि	४	
हन्तो नु किमाससे प्रथमं नो रथं कृधि । उपमं वाजयु श्रवः	५	६६५
अवा नो वाजयुं रथं सुकरं ते किमित् परि । अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृधि	६	
इन्द्र दृह्यस्व पूरसि भद्रा त एति निष्कृतम् । इयं धीर्कृत्वियावती	७	
मा सीमवद्य आ भागुर्वा काष्ठा हितं धनम् । अपावृक्ता अरत्नयः	८	
तुरीयं नाम यज्ञियं यदा करस्तदुश्मसि । आदित् पतिर्न ओहसे	९	

॥ ४५ ॥ ( ऋ० ८।८१।१-९ )

( ६७०-६८७ ) कुसीदी काण्वः ।

आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय । महाहस्ती दक्षिणेन	१	६७०
विद्वा हि त्वा तुविकूमिं तुविदेष्णं तुवीमघम् । तुविमात्रमवोभिः	२	
नहि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम् । भीमं न गां वारयन्ते	३	
एतो न्विन्द्रं स्तवामे शानं वस्वः स्वरजम् । न राधसा मधिषन्नः	४	
प्र स्तोषदुषं गासिषच्छ्रवत् सामं गीयमानम् । अभि राधसा जुगुर्त्	५	
आ नो भर दक्षिणेनाऽभि सव्येन प्र मृश । इन्द्र मा नो वसोर्निर्भाक्	६	६७५
उषं क्रमस्वा भर धृषता धृष्णो जनानाम् । अदाशूष्टरस्य वेदः	७	
इन्द्र य उ नु ते अस्ति वाजो विप्रेभिः सनित्वः । अस्माभिः सु तं संनुहि	८	
सद्योजुवस्ते वाजा अस्मभ्यं विश्वश्चन्द्राः । वशीश्च मक्षू जरन्ते	९	

॥ ४६ ॥ ( ऋ० ८।८१।२-९ )

आ प्र द्रव परावतोऽर्वावतश्च वृत्रहन् । मध्वः प्रति प्रर्ममणि	१	
तीव्राः सोमास आ गहि सुतासो मादयिष्णवः । पिबा वृधुग्यथोचिषे	२	६८०

इषा मन्वुस्वादु ते	ऽरं वराय मन्यये	। भुवत् त इन्द्र शं हृदे	३
आ त्वंशत्रवा गहि	न्युक्थानि च ह्यसे	। उपमे रौचने विवः	४
तुभ्यायमद्विभिः सुतो	गोभिः श्रीतो मदाय कम्	। प्र सोम इन्द्र ह्यते	५
इन्द्रं श्रुधि सु मे हव	मस्मे सुतस्य गोमंतः	। वि पीतिं तृप्तिमश्रुहि	६
य इन्द्र चमसेष्वा	सोमश्चमूषु ते सुतः	। पिबेदस्य त्वमीशिषे	७ ६८५
यो अप्सु चन्द्रमा इव	सोमश्चमूषु ददंशे	। पिबेदस्य त्वमीशिषे	८
यं ते श्येनः पदाभरत	तिरो रजांस्यस्पृतम	। पिबेदस्य त्वमीशिषे	९

॥ ४७ ॥ (ऋ० १।२८।१-४)

(६८८-७१४) आजीमर्तिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । अनुष्टुप् ।

यत्र ग्रावा पृथुबुध्र	ऊर्ध्वो भवति सोतवे	। उलूखलसुताना मवेद्विन्द्र जल्गुलः	१
यत्र द्वाविष जघना	धिषवण्या कृता	। उलूखलसुताना मवेद्विन्द्र जल्गुलः	२
यत्र नार्यपच्यव	मुपच्यवं च शिक्षते	। उलूखलसुताना मवेद्विन्द्र जल्गुलः	३ ६९०
यत्र मन्थां विबधते	रश्मिन् यमित्वा इव	। उलूखलसुताना मवेद्विन्द्र जल्गुलः	४

॥ ४८ ॥ (ऋ० १।२९।१-७) पंक्तिः ।

यच्चिद्धि संत्य सोमपा	अनाशस्ता इव स्मसि ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु सहस्रेषु तुवीमघ	१
शिभिन् वाजानां पते	शचीवस्तव कुंसना ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु सहस्रेषु तुवीमघ	२
नि प्वापया मिथूहशा	सस्तामबुध्यमाने ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु सहस्रेषु तुवीमघ	३
ससन्तु त्या अरातयो	बोधन्तु शूर रातर्यः ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु सहस्रेषु तुवीमघ	४ ६९५
समिन्द्र गर्दभं मृण	नुवन्तं पापयामुया ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु सहस्रेषु तुवीमघ	५
पताति कुण्डुणाच्या	दूरं वातो वनादधि ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु सहस्रेषु तुवीमघ	६
सर्वं परिक्रोशं जहि	जम्भया कृकवाश्वम् ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु सहस्रेषु तुवीमघ	७

॥ ४९ ॥ ( ऋ० १।३०।१-१६ )

१-१०, १२-१५ गायत्री, ११ पादनिष्ठुद्गायत्री, १६ त्रिष्टुप् ।

आ व इन्द्रं क्रिविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम् ।	मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः	१	
शतं वा यः शुचीनां सहस्रं वा समाशिराम	एदुं निम्नं न रीयते	२	७००
सं यन्मदाय शुष्मिण एना ह्यस्योदरे	समुद्रो न व्यचो दुधे	३	
अयमुं ते समतासि कपोत इव गर्भधिम	वचस्ताच्चिन्न ओहसे	४	
स्तोत्रं राधानां पते गिर्वीहो वीर यस्य ते	धिभूतिरस्तु सूनृता	५	
ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये ऽस्मिन् वाजे शतक्रतो	समन्येषु बवावहै	६	
योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे	सखाय इन्द्रमूतये	६	७०५
आ घा गमद्यादि श्रवत् सहस्रिणीभिः	वाजेभिरुप नो हवम्	८	
अनुं प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम्	यं ते पूर्वं पिता हुवे	९	
तं त्वा वयं विश्ववारा ऽऽ शास्महे पुरुहूत	सखे वसो जरितृभ्यः	१०	
अस्माकं शिप्रिणीनां सोमपाः सोमपात्राम्	सखे वञ्जिन्त्सखीनाम्	११	
तथा तदस्तु सोमपाः सखे वञ्जिन् तथा कृणु	यथा त उश्मसीष्टये	१२	७१०
रेवतीर्नः सधमाद् इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः	क्षुमन्तो याभिर्मदेम	१३	
आ घ त्वावान् त्मनासः स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः	ऋणोरक्षं न चक्रयोः	१४	
आ यद् दुवः शतक्रत वा कामं जरितृणाम्	ऋणोरक्षं न शचीभिः	१५	
शश्वदिन्द्रः पोषुथद्भिर्जिगाय नानदाद्भिः शाश्वसद्भिर्धनानि ।			
स नो हिरण्यरथं वृंसनावान् त्स नः सनिता सनये स नोऽदात्		१६	७१४

॥ ५० ॥ ( ऋ० १।३२।१-१५ )

( ७१५-७४४ ) हिरण्यरूप आक्रिरसः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य नु वीर्यीणि प्र वोचं यानि चकारं प्रथमानि वञ्जी ।		
अहन्नहिमन्वपस्तर्तुं प्र वक्षणा अभिन्त पर्वतानाम्	१	७१५
अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वञ्जं स्वयं ततक्ष ।		
वाश्ना इव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः	२	
वृषायमाणो ऽवृणीत् सोमं त्रिकद्वुकेष्वपिबत् सुतस्य ।		
आ सार्यकं मघवाद्दत्त वञ्ज महन्नेनं प्रथमजामहीनाम्	३	
यद्विन्द्रार्हन् प्रथमजामहीना मान्मायिनामभिनाः प्रोत मायाः ।		
आत् सूर्यं जनयन् द्यामुषासं तादीत्ना शत्रुं न किला विवित्से	४	

अहन् वृत्रं वृत्रतरं व्यस—मिन्द्रो वज्रेण महता वधेन ।	
स्कन्धांसीव कुलिशेना विवृक्णा—ऽहिः शयत उपपृक् पृथिव्याः	५
अयोद्धेव दुर्मदु आ हि जुहे महावीरं तुविबाधमृजीषम ।	
नातारीवस्य समृतिं वधानां सं रुजानाः पिपिष इन्द्रशत्रुः	६ ७२०
अपादहस्तो अपृतन्यदिन्द्र—मास्य वज्रमधि सानौ जघान ।	
वृष्णो वधिः प्रतिमानं बुभूषन् पुरुत्रा वृत्रो अशयद् व्यस्तः	७
नदं न भिन्नममुया शयानं मनोरुहाणा अति यन्त्यापः ।	
याश्चिद् वृत्रो महिना पर्यतिष्ठत तासामहिः पत्सुतःशीबिभूव	८
नीचारवया अभवद् वृत्रपुत्रे—न्द्रो अस्या अव वधर्जभार ।	
उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीद् वानुः शये सहवत्सा न धेनुः	९
अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम् ।	
वृत्रस्य निण्यं वि चरन्त्यापो क्रीर्षं तम् आशयदिन्द्रशत्रुः	१०
वासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन् निरुद्धा आपः पणिनेव गावः ।	
अपां बिलमपिहितं यदासीद् वृत्रं जघन्वाँ अप तद् ववार	११ ७२५
अश्व्यो वारो अभवस्तादिन्द्र सूके यत् त्वा प्रत्यहन् देव एकः ।	
अजयो गा अजयः शूर सोम—मवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून्	१२
नास्मै विद्युन्न तन्यतुः सिषेध न यां मिहमकिरद् धादुनिं च ।	
इन्द्रश्च यद् युयुधाते अहिश्चो—तापरीभ्यो मघवा वि जिग्ये	१३
अहेर्यातारं कर्मपश्य इन्द्र हृदि यत् ते जघ्नुषो भीरगच्छत ।	
नव च यन्नवतिं च स्रवन्तीः श्येनो न भीतो अतरो रजांसि	१४
इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शर्मस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः ।	
सेदु राजा क्षयति चर्षणीना—मरान् न नेमिः परि ता बभूव	१५

॥ ५१ ॥ ( ऋ० १।३।१-१५ )

एतायामोपं गव्यन्त इन्द्र—मस्माकं सु प्रमतिं वावृधाति ।	
अनामृणः कुविदावस्य रायो गवां केतं परमावर्जते नः	१ ७३०
उपेदुहं धनदामप्रतीतं जुष्टां न श्येनो वसतिं पतामि ।	
इन्द्रं नमस्यन्नुपमेभिरके—र्यः स्तोतृभ्यो हव्यो अस्ति यामन्	२
नि सर्वसेन इषुधीरसक्त समर्यो गा अजति यस्य वष्टि ।	
षोष्क्यमाण इन्द्र भूरिं वामं मा पणिभूरस्मदधि प्रवृद्ध	३



वधीर्हि दस्युं धनिनं घनेनै एकश्वरन्नपशाकेभिरिन्द्र ।	
धनोरधि विषुणक् ते व्यायन्नयज्वानः सनकाः प्रेतिमीयुः	४
परां चिच्छीर्षां ववृजुस्त इन्द्राऽयज्वानो यज्वभिः स्पर्धमानाः ।	
प्र यद् द्विवो हरिवः स्थातरुग्र निरव्रतां अधमो रोदस्योः	५
अयुयुत्सन्ननवद्यस्य सेनामयातयन्त क्षितयो नवंगवाः ।	
वृषायुधो न वधयो निरंष्टाः प्रवद्विरिन्द्राच्चितयन्त आयन्	६
त्वमेतान् रुदतो जक्षतश्चायोधयो रजस इन्द्र पारे ।	७३५
अवाद्दहो द्विव आ दस्युमुच्चा प्र सुन्वतः स्तुवतः शंसमावः	७
चक्राणासः परीणहं पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुभ्रमानाः ।	
न हिन्वानासस्तिरुस्त इन्द्रं परि स्पर्शां अदधात् सूर्येण	८
परि यदिन्द्र रोदसी उभे अबुभोजीर्महिना विश्वतः सीम् ।	
अमन्यमानां अभि मन्यमानैर्निर्ब्रह्माभिरधमो दस्युमिन्द्र	९
न ये द्विवः पृथिव्या अन्तमापुर्न मायाभिर्धनदां पर्यभूवन् ।	
युजं वज्रं वृषभश्चक्र इन्द्रो निज्योतिषा तमसो गा अदुक्षत्	१०
अनु स्वधामक्षरन्नापो अस्याऽवर्धत् मध्य आ नाव्यानाम् ।	
सधीचीनेन मनसा तमिन्द्र ओजिष्ठेन हन्मनाहञ्जामि द्यून्	११
न्याविध्यदिलीबिशस्य हृळ्हा वि शृङ्गिणामभिनच्छुष्णमिन्द्रः ।	७४०
यावत्तरो मघवन् यावदोजो वज्रेण शत्रुमवधीः पृतन्युम्	१२
अभि सिध्मो अजिगादस्य शत्रून् वि तिग्मेन वृषभेणा पुरोऽभेत ।	
सं वज्रेणासृजद् वृत्रमिन्द्रः प्र स्वां मतिमतिरच्छाशदानः	१३
आवः कुत्सामिन्द्र यस्मिञ्चाकन् प्रावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम् ।	
शफच्युतो रेणुर्नक्षत् द्यामुच्छ्वैत्रेयो नृषाहाय तस्थौ	१४
आवः शमं वृषभं तुष्टयासु क्षेत्रजेषे मघवन्निष्ठुत्र्यं गाम् ।	
ज्योक् चिदत्र तस्थिवांसो अक्रञ्छन्नूयतामधरा वेदनाकः	१५

॥ ५२ ॥ (ऋ० १।५१।१-१५)

(७४५-८१६) सव्य आङ्गिरसः । जगती, १४-१५ त्रिष्टुप् ।

अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम् ।	
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषा भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत	१
अभीमवन्वन्स्वभिष्टिमूतयोऽन्तरिक्षप्रां तविषीभिरावृतम् ।	७४५
इन्द्रं दक्षास ऋभवो मवृच्युतं शतक्रतुं जवनी सूनुतारुहत	२

त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरपो—तात्रये शतदुरेषु गातुषित् ।	
ससेन चिद् विमदायावहो वस्वा—जावद्विं वावसानस्य नर्तयन्	३
त्वमपामपिधानावृणोरपा—ऽधारयः पर्वते दानुमद् वसु ।	
वृत्रं यद्विन्द्र शवसावधीरहि—मादित् सूर्यं विव्यारोहयो हृशे ।	४
त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधाभिर्ये अधि शुप्तावजुह्वत ।	
त्वं पिप्रोर्नृमणः प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्चानं दस्युहृत्येष्वाविथ	५
त्वं कुत्सं शुष्णहृत्येष्वाविथा—ऽरन्धयोऽतिथिग्वाय शम्बरम् ।	
महान्तं चिदबुद्धं नि क्रमीः पदा सनादेव दस्युहृत्याय जज्ञिषे	६
त्वे विश्वा तविषी सधयग्निता तव राधः सोमपीथार्य हर्षते	७५०
तव वज्रश्रिकिते बाहोर्हितो वृश्वा शत्रोरव विश्वानि वृष्ण्या	७
वि जानीह्यार्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासद्व्रतान् ।	
शाकी भव यजमानस्य चोक्विता विश्वेत् ता ते सधमादेषु चाकन	८
अनुव्रताय रन्धयन्नपव्रता—नाभूभिरिन्द्रः श्रथयन्ननाभुवः ।	
वृद्धस्य चिद् वर्धतो घामिनक्षतः स्तवानो वस्रो वि जघान सिद्धिः	९
तक्षद् यत् त उशना सहसा सहो वि रोदसी मज्जना बाधते शवः ।	
आ त्वा वातस्य नृमणो मनोयुज आ पूर्यमाणमवहन्नभि श्रवः	१०
मन्दिष्ट यदुशने काव्ये सचाँ इन्द्रो वङ्क वङ्कतराधि तिष्ठति ।	
उग्रो यधि निरपः स्रोतसासृजद् वि शुष्णस्य हंहिता ऐरयत् पुरः	११
आ स्मा रथं वृषपाणेषु तिष्ठसि शार्यातस्य प्रभृता येषु मन्दसे ।	७५५
इन्द्र यथा सुतसोमेषु चाकनो ऽनुर्वाणं श्लोकमा रोहसे विवि	१२
अर्द्धा अर्भा महते वचस्यवे कक्षीवते वृचयामिन्द्र सुन्वते ।	
मेनाभवो वृषणश्वस्य सुक्रतो विश्वेत् ता ते सर्वनेषु प्रवाच्या	१३
इन्द्रो अश्रायि सुध्यो निरेके पञ्जेषु स्तोमो दुर्यो न यूपः ।	
अश्वयुर्गव्यू रथयुर्वसूयु—रिन्द्र इद्रायः क्षयति प्रयन्ता	१४
इदं नमो वृषभार्य स्वराजे सत्यशुष्माय तवसेऽवाचि ।	
अस्मिन्निन्द्र वृजने सर्ववीराः स्मत् सुरिभिस्तव शर्मन्त्स्याम	१५

॥ ५३ ॥ ( ऋ० १।५२।१-१५ ) जगती; १३; १५ त्रिष्टुप् ।

त्यं सु मेघं महया स्वर्षिदं शतं यस्य सुभ्वः साकमीरते ।

अत्यं न वाजं हवनस्यदं रथ—मेन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः

१ ७६०

स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः सहस्रमूतिस्तविषीषु वावृधे ।	
इन्द्रो यद् वृत्रमवधीन्नदीवृतं—मुञ्जन्नणींसि जर्हृषाणो अन्धसा	२
स हि द्वरो द्वरिषु वव ऊर्धनि चन्द्रबुध्नो मर्दवृद्धो मनीषिभिः ।	
इन्द्रं तमहे स्वपस्यया धिया मंहिष्ठरातिं स हि पप्रिरन्धसः	३
आ यं पुणन्ति द्विवि सन्नबर्हिषः समुद्रं न सुभ्वः॑ः स्वा अमिष्टयः ।	
तं वृत्रहत्ये अनु तस्थुरुतयः शुष्मा इन्द्रमवाता अहृतप्सवः	४
अभि स्ववृष्टिं मर्दे अस्य युध्यतो रध्वीरिव प्रवणे संस्रुतयः ।	
इन्द्रो यद् वज्री धूपमाणो अन्धसा भिनद् वलस्य परिधीरिव त्रितः	५
परीं घृणा चरति तित्विषे शवो ऽपो वृत्वी रजसो बुध्नमाशयत ।	
वृत्रस्य यत् प्रवणे दुर्गमिष्वनो निजघन्थ हन्वोरिन्द्र तन्यतुम्	६
	७६५
दृवं न हि त्वा न्युषन्त्यर्मया ब्रह्मणीन्द्र तव यानि वर्धना ।	
त्वष्टा चित् ते युज्यं वावृधे शर्व—स्ततक्ष वज्रमभिभूत्योजसम्	७
जघन्वाँ उ हरिभिः संभृतक्रतु—विन्द्रं वृत्रं मनुषे गातुयन्नपः ।	
अयच्छथा बाहोर्वज्रमायस—मधारयो विव्या सूर्यं हृशे	८
बृहत् स्वश्रन्द्रममवद् यदुकथ्यः॑—मकृण्वत भियसा रोहणं विवः ।	
यन्मानुषप्रधना इन्द्रमूतयः स्वर्नुषाचो मरुतोऽमदुन्ननु	९
द्यौश्चिद्वस्यामवाँ अहेः स्वना—दयोयवीद् भियसा वज्रं इन्द्र ते ।	
वृत्रस्य यद् बद्धधानस्य रोदसी मर्दे सुतस्य शवसाभिन्नच्छिरः	१०
यदिद्विन्द्र पृथिवी दशभुजि—रहानि विश्वा ततनन्त कृष्टयः ।	
अत्राहं ते मघवन् विश्रुतं सहो द्यामनु शर्वसा बर्हणा भुवत्	११
	७७०
त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मनः ।	
चक्रुषे भूमिं प्रतिमानमोजसो ऽपः स्वः परिभूरेष्या दिवम्	१२
त्वं भुवः प्रतिमानं पृथिव्या ऋष्ववीरस्य बृहतः पतिभूः ।	
विश्वमाप्रा अन्तरिक्षं महित्वा सत्यमन्द्रा नकिरन्यस्त्वावान्	१३
न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानुशुः ।	
नोत स्ववृष्टिं मर्दे अस्य युध्यत एको अन्यच्चक्रुषे विश्वमानुषक्	१४
आर्चन्नत्र मरुतः सस्मिन्नाजौ विश्वे देवासो अमदुन्ननु त्वा ।	
वृत्रस्य यद् मृष्टिमता वधेन नि त्वमिन्द्र प्रत्यानं जघन्थ	१५

॥ ५४ ॥ ( ऋ० १।५३।१-११ ) जगती. १०-११ जिष्टुप् ।

न्यु॒ष्टे॑ षु वाचं प्र म॒हे भ॑रामहे गिर॒ इन्द्रा॑य॒ स॒र्दने॑ विवस्वतः ।		
नू चि॒द्धि रत्नं॑ स॒स॒तामिवा॑वि॒त्रु—न्न॑ दु॒ष्टुति॑र्द्रै॒विणो॑दे॒षु श॑स्यते	१	७७५
दुरो अश्व॑स्य दुर इन्द्र॒ गोर॑सि दुरो य॒वस्य॑ वसु॒न इन॑स्पतिः ।		
शि॒क्षा॒नरः॑ प्र॒दिवो॑ अ॒काम॑क॒र्शनः॑ स॒खा स॒खिभ्य॑स्तमि॒दं गृ॑णीमसि	२	
शची॑व इन्द्र॒ पुरु॑कृद् द्युम॒न्तम॑ तवे॒दिदम॑भित॒श्चेकि॑ते वसु॑ ।		
अतः॑ संगृ॒भ्यामि॑भूत आ भ॑र मा त्वा॒यतो॑ ज॒रितुः॑ काम॒मून॑यीः	३	
एभि॑द्युभिः सुमना॑ एभि॒रिन्दु॑भि—नि॒रुन्धानो॑ अ॒म॒तिं गोभि॑र॒श्विना॑ ।		
इन्द्रे॑ण दस्युं॒ वुर॑यन्त इन्दु॑भि—र्युत॑द्रे॒षसः॑ स॒मिषा॑ र॒भेमहि॑	४	
समि॑न्द्र॒ राया॑ स॒मिषा॑ र॒भेमहि॑ सं वा॒जैभिः॑ पुरु॒श्चन्द्रै॑रभिद्युभिः ।		
सं दे॒व्या प्र॑मत्या वी॒रशु॑ष्मया॒ गोअ॑ग्रया॒श्र्वाव॑त्या रभेमहि	५	
ते त्वा॒ मदा॑ अम॒द्वन् तानि॑ वृ॒ष्ण्या॑ ते सोमा॑सो वृ॒त्रह॑त्येषु स॒त्पते॑ ।		
यत् कार॑वे दश॑ वृ॒त्राण्य॑प्रति ब॒र्हिष्म॑ते नि स॒हस्रा॑णि ब॒र्हयः॑	६	७८०
युधा॑ यु॒धमु॑प॒ घेदे॑पि धृ॒ष्ण्या॑ पुरा॒ पुरं॑ समि॒दं हंस्यो॑र्जसा ।		
नभ्या॑ यदिन्द्र॒ सख्या॑ परा॒वति॑ निब॒र्हयो॑ नमु॒चिं नाम॑ मा॒यिन॑म्	७	
त्वं कर॑ञ्जमु॒त पूर्ण॑यं वधी—स्तेजि॑ष्ठयातिथि॒गव॑स्य॒ वर्त॑नी ।		
त्वं श॒ता व॑द्भृ॒दस्याभि॑नत् पुरो॑ ऽना॒नुदः॑ परि॒षूता॑ ऋजि॒श्वना॑	८	
त्वमे॒ताञ्ज॑नरा॒जो द्वि॑र्दशा—ऽब्र॒न्धुना॑ सु॒श्रव॑सोप॒जग्मु॑र्षः ।		
षुष्टिं॑ स॒हस्रा॑ नव॒ति नव॑ श्रुतो नि च॒क्रेग॑ रथ्या॒ दुष्प॑दा॒वृण॑कू	९	
त्वमा॑विथ सु॒श्रव॑सं तवोतिभि—स्तव॒ त्राम॑भि॒रिन्द्र॑ तूर्व॒याणम्॑ ।		
त्वम॑स्मै कु॒त्सम॑तिथि॒गव॑मायुं म॒हे राजे॑ यूने॒ अर॑न्धनायः	१०	
य उ॒हची॑न्द्र॒ देव॑गो॒पाः स॒खाय॑स्ते शि॒वत॑मा॒ असा॑म ।		
त्वां स्तो॑षाम॒ त्वया॑ सु॒वीरा॑ द्रा॒धीय॑ आयुः प्र॒तरं॑ द॒धानाः॑	११	७८५

॥ ५५ ॥ ( ऋ० १।५४।१-११ ) जगती; ६, ८-९, ११ जिष्टुप् ।

मा नो॑ अ॒स्मिन् म॑घवन् पृ॒त्स्वंह॑सि न॒हि ते॑ अन्तः श॒वसः॑ परी॒णशे॑ ।		
अक्र॑न्दयो नद्यो॒ष्टे रो॑रु॒वद् वना॑ क॒था न क्षो॑णीभि॒यसा॑ समा॒रत॑	१	
अची॑ श॒क्राय॑ शा॒किने॑ शची॒वते॑ शृ॒ण्वन्त॑मिन्द्रं म॒हय॑न्नभि षु॒हि ।		
यो धृ॒ष्णुना॑ श॒वसा॑ रोद॒सी उ॒भे वृ॑षा वृ॒षत्वा॑ वृ॒षभो॑ न्यु॒ञ्जते॑	२	

अर्चां विवे बृहते शूण्यं वचः स्वक्षत्रं यस्य धृषता धृषन्मनः ।	
बृहच्छ्रवा असुरो बर्हणा कृतः पुरो हरिभ्यां वृषभो रथो हि षः	३
त्वं विवो बृहतः सानु कोपयो ऽव त्मना धृषता शम्बरं भिनत् ।	
यन्मायिनो व्रन्दिनो मन्दिना धृषच्छ्रितां गर्भस्तिमशानिं पृतन्यसिं	४
नि यद् वृणक्षिं श्वसनस्य मूर्धनि शूण्यस्य चिद् व्रन्दिनो रोरुवद् वना ।	
प्रार्चनिं मनसा बर्हणावता यद्द्या चित् कृणवः कस्त्वा परि	५
त्वमाविथ नयं तुर्वशं यदुं त्वं तुर्वीति वय्यं शतक्रतो ।	
त्वं रथमेतशं कृत्वये धने त्वं पुरो नवति दम्भयां नव	६
स या राजा सत्पतिः शूशुवज्जनो रातहव्यः प्रति यः शासमिन्वति ।	
उक्था वा यो अभिगुणाति राधसा दानुरस्मा उपरा पिन्वते दिवः	७
असंमं क्षत्रमसमा मनीषा प्र सोमपा अपसा सन्तु नेमे ।	
यं त इन्द्र द्रुदुपो वधयन्ति महिं क्षत्रं स्थविरं वृण्यं च	८
तुभ्येदंते बहुला अद्रिदुग्धाश्रमूषर्दश्रमसा इन्द्रपानाः ।	
व्यंशुहि तर्पया काममेषा मथा मनो वसुदेयाय कृष्व	९
अपामतिष्ठद्भरुणह्वरं तमो ऽन्तर्वृत्रस्य जठरेषु पर्वतः ।	
अभीमिन्द्रो नद्यो वविणा हिता विश्वा अनुष्ठाः प्रवणेषु जिघ्रते	१०
स शेवृधमधि धा द्युन्नमस्म महिं क्षत्रं जनापाळिन्द्र तव्यम् ।	
रक्षां च ना मघोनः पाहि सूरीन् राये च नः स्वपत्या इषे धाः	११

॥ ५६ ॥ ( ऋ० १।५।१-८ ) जगती ।

द्विवाश्रिदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न महा पृथिवी च न प्रति ।	
भीमस्तुविष्माश्रपणिभ्य आतपः शिशीति वज्रं तेजसे न वंसंगः	१
सो अर्णवा न नद्यः समुद्रियः प्रति गृभ्णाति विश्रिता वरीमभिः ।	
इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते सनात् स युध्म ओजसा पनस्यते	२
त्वं तमिन्द्र पर्वतं न भोजसे महो नृम्णस्य धर्मणामिरज्यसि ।	
प्र वीर्येण देवतार्ति चेकिते विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः	३
स इद् वने नमस्युभिर्वचस्यते चारु जनेषु प्रब्रुवाण इन्द्रियम् ।	
वृषा छन्दुर्भवति हर्यतो वृषा क्षेमेण धेनां मघवा यद्विन्वति	४
स इन्महानिं समिथानिं मज्मना कृणोति युध्म ओजसा जनेभ्यः ।	
अधा च न श्रद् दधति त्विषीमत इन्द्राय वज्रं निघनिघ्नते वधम्	५

स हि श्रवस्युः सदनानि कृत्रिमा क्षमया वृधान ओजसा विनाशयन् ।  
ज्योतीषि कृण्वन्नवृकाणि यज्यवे स्व सुक्रतुः सर्तवा अपः सृजत ६  
वृानाय मनः सोमपावन्नस्तु ते सर्वाश्चा हरीं वन्दनश्रुदा कृधि ।  
यमिष्ठासः सारथयो य इन्द्र ते न त्वा केता आ दभ्नुवन्ति भूर्णयः ७  
अप्रक्षितं वसुं विभार्षि हस्तयो रषाळहं सहस्तन्वि श्रुतो दधे ।  
आवृतासोऽवतासो न कर्तृभिस्तनूपुं ते क्रतव इन्द्र भूरयः ८

॥ ५७ ॥ ( ऋ० १।५६।१-६ )

एष प्र पूर्वीरव तस्य चम्रिणो ऽत्यो न योषामुदयंस्त भुवर्णिः ।  
दक्षं महे पाययते हिरण्ययं रथमावृत्या हरियोगमृभ्वंसम १  
तं गूर्तयो नेमन्निषः परीणसः समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः ।  
पतिं दक्षस्य विदथस्य नू सहो गिरिं न वेना अर्धि रोह तेजसा २  
स तुर्वणिर्महां अरेणु पौंस्ये गिरेभृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः ।  
येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुध आभूषुं रामयन्नि दामनि ३  
देवी यद्वि तविषी त्वावृधोतय इन्द्रं सिषक्त्युषसं न सूर्यः ।  
यो धृष्णुना शवसा बाधते तम इयति रेणुं बृहदहरिष्वणिः ४  
वि यत् तिरो धरुणमच्युतं रजो ऽतिष्ठिपो विव आतामु बहणां ।  
स्वर्मीळ्हे यन्मद इन्द्र हर्ष्याहन् वृत्रं निरपामौजो अर्णवम् ५  
त्वं विवो धरुणं धिष ओजसा पृथिव्या इन्द्र सदनेषु माहिनः ।  
त्वं सुतस्य मदे अरिणा अपो वि वृत्रस्य समया पाप्यारुजः ६

॥ ५८ ॥ ( ऋ० १।५७।१-६ )

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रथे सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे ।  
अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम १  
अध ते विश्वमनुं हासद्विष्टय आपो निम्नेव सर्वना हविष्मतः ।  
यत् पर्वते न समशीत हर्यत इन्द्रस्य वज्रः श्रथिता हिरण्ययः २  
अस्मै भीमाय नर्मसा समध्वर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे ।  
यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे ३  
इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभवसां ।  
नहि त्वदून्यो गिर्वणो गिरः सर्वत् क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद् वचः ४  
भूरिं त इन्द्र वीर्यं तव स्मस्यस्य स्तोतुमंघवन् काममा पृण ।  
अनुं ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे ५

त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन् पर्वशश्र्वकर्तिथ ।  
अवासृजो निवृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः ६

॥ ५९ ॥ ( ऋ० १।१०१।१-११ )

( ८१७-८५५ ) कुत्स आङ्गिरसः । ( १ गर्भस्त्राविण्युपनिषद् ) । जगती, ८-११ त्रिष्टुप् ।

प्र मन्दिने पितुमर्दचता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नुजिष्वना ।  
अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे १  
यो व्यंसं जाहृपाणेन मन्युना यः शम्बरं यो अहन् पिप्रुमव्रतम् ।  
इन्द्रो यः शुष्णमशुषं न्यावृणङ् मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे २  
यस्य द्यावापृथिवी पौंस्यं महद् यस्य व्रते वरुणो यस्य सूर्यः ।  
यस्येन्द्रस्य सिन्धुवः सश्रति व्रतं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ३  
यो अश्वानां यो गवां गोपतिर्वशी य आरितः कर्मणिकर्मणि स्थिरः ।  
वीळोश्चिदिन्द्रो यो असुन्वतो वधो मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ४ ८९०  
यो विश्वस्य जगतः प्राणतस्पतिर्यो ब्रह्मणं प्रथमो गा अविन्दत् ।  
इन्द्रो यो दस्यूरधरौ अवातिरन् मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ५  
यः शूरेभिर्हव्यो यश्च भीरुभिर्यो धावन्दिर्हूयते यश्च जिग्युभिः ।  
इन्द्रं यं विश्वा भुवनाभि संद्रुधुर्मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ६  
रुद्राणामेति प्रदिशा विचक्षणो रुद्रेभिर्योषां तनुते पृथु जयः ।  
इन्द्रं मनीषा अभ्यर्चति श्रुतं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ७  
यद् वा मरुत्वः परमे सधस्थे यद् वावमे वृजने मादयासे ।  
अत आ याह्यध्वरं नो अच्छां त्वाया हविश्र्वकृमा सत्यराधः ८  
त्वायेन्द्र सोमं सुपुमा सुदक्ष त्वाया हविश्र्वकृमा ब्रह्मवाहः ।  
अधा नियुत्वः सर्गणो मरुद्धि रस्मिन् यज्ञे बर्हिषि मादयस्व ९ ८९५  
मादयस्व हरिभिर्यं त इन्द्र विष्यस्व शिषे वि सृजस्व धेने ।  
आ त्वा सुशिप्र हरयो वहन्तूशन् हव्यानि प्रति नो जुषस्व १०  
मरुत्तोत्रस्य वृजनस्य गोपा वयमिन्द्रेण सनुयाम् वार्जम् ।  
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता मर्दितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ११

॥ ६० ॥ ( ऋ० १।१०१।१-११ ) १-१० जगती, ११ त्रिष्टुप् ।

इमां ते धियं प्र भरे महो मही मस्य स्तोत्रे धिषणा यत् त आनजे ।  
तमुत्सवे च प्रसवे च सासहि मिनद् देवासः शर्वसामवृन्ननु १

अस्य श्रवो नद्यः सप्त बिभ्रति द्यावाक्षामां पृथिवी दर्शतं वपुः ।	
अस्मे सूर्याचन्द्रमसाभिचक्षे श्रद्धे कर्मिन्द्र चरतो वितर्तुरम्	२
तं स्मा रथं मघवन् प्रावं सातये जैत्रं यं तं अनुमदाम संगमे ।	
आजा न इन्द्र मनसा पुरुष्टुत त्वायद्भ्यो मघवञ्छर्म यच्छ नः	३ ८३०
वयं जयेम त्वया युजा वृत् मस्माकमंशमुदवा भरेभरे ।	
अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगं कृधि प्र शत्रूणां मघवन् वृष्ण्यां रुज	४
नाना हि त्वा हवमाना जना इमे धनानां धर्तर्वसा विपन्यवः ।	
अस्माकं स्मा रथमा तिष्ठ सातये जैत्रं हीन्द्र निभृतं मनस्तवं	५
गोजिता बाह्व अभितक्रतुः सिमः कर्मन्कर्मञ्छतमूतिः खजंकरः ।	
अकल्प इन्द्रः प्रतिमानमोजसाऽथा जना वि ह्वयन्ते सिषासवः	६
उत् तं शतानमघवन्नृच भूयस उत् सहस्राद् रिरिचे कृष्टिषु श्रवः ।	
अमात्रं त्वा धिषणां तित्विषे म ह्यधा वृत्राणि जिघ्रसे पुरंदर	७
त्रिविष्टिधातुं प्रतिमानमोजसाऽस्तिस्रो भूमीर्नृपते त्रीणि रोचना ।	
अतीदं विश्वं भुवनं ववक्षिथाऽशत्रुरिन्द्र जनुषां सनादसि	८ ८३५
त्वां देवेषु प्रथमं हवामहे त्वं बभूथ पृतनासु सासहिः ।	
सेमं नः कारुमुपमन्युमुद्दिशुः मिन्द्रः कृणोतु प्रसवे रथं पुरः	९
त्वं जिगेथ न धनां रुरोधिताऽर्भेष्वाजा मघवन् महत्सु च ।	
त्वामुग्रमवसे सं शिशीमस्यथा न इन्द्र हवनेषु चोदय	१०
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अस्त्वपरिहृताः सनुयाम वाजम् ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताऽमर्दितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	११

॥ ६१ ॥ ( ऋ० १।१०३।२-८ ) त्रिष्टुप ।

तत् त इन्द्रियं परमं पराचैरधारयन्त कवयः पुरेदम् ।	
क्षमेदमन्यद् द्विव्युन्यदस्य समी पृच्यते समनेव केतुः	१
स धारयत् पृथिवीं पप्रथच्च वज्रेण हत्वा निरपः संसर्ज ।	
अहन्नहिमभिर्नद्रौहिणं व्यहन् व्यंसं मघवा शचीभिः	२ ८४०
स जातूर्भर्मा श्रद्धधान ओजः पुरो विभिन्द्रन्नचरद् वि दासीः ।	
विद्वान् वाञ्छिन् दस्यवे हेतिमस्याऽऽर्यं सहो वर्धया द्युम्नामिन्द्र	३
तद्वचुषे मानुषेमा युगानि कीर्तन्यं मघवा नाम बिभ्रत् ।	
उपप्रयन् दस्युहत्याय वञ्जी यद्ध सूनुः श्रवसे नाम वृधे	४



तदस्येदं पश्यता भूरिं पुष्टं श्रदिन्द्रस्य धत्तन वीर्याय ।  
 स गा अविन्दुत् सो अविन्दुदश्वान् त्स ओषधीः सो अपः स वनानि ५  
 भूरिकर्मणे वृषभाय वृष्णे सत्यशुष्माय सुनवाम सोमम् ।  
 य आहृत्या परिपन्थीव शूरो ऽयज्वनो विभजन्नेति वेदः ६  
 तदिन्द्र प्रेव वीर्यं चकर्थ यत् ससन्तं वज्रेणाबोधयोऽहिम् ।  
 अनु त्वा पत्नीर्हृषितं वर्यश्च विश्वे देवासो अमङ्गनु त्वा ७ ८४५  
 शुष्णं पिपुं कुर्यवं वृत्रमिन्द्र यदावंधीर्वि पुरः शम्बरस्य ।  
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ८

॥ ६२ ॥ ( ऋ० १।१०४।१-९ )

योनिष्ट इन्द्र निषदे अकारि तमा नि षीद स्वानो नार्वी ।  
 विमुच्या वयोऽवसायाश्वान् कुंषा वस्तोर्वहीयसः प्रपित्वे १  
 ओ त्ये नर इन्द्रमूतये गु—नू चित् तान्त्सद्यो अध्वनो जगम्यात् ।  
 देवासो मन्युं दासस्य श्रमन्न् ते न आ वक्षन्त्सुविताय वर्णम् २  
 अव त्मना भरते केतवेदा अव त्मना भरते फेनमुदन् ।  
 क्षरिणं स्नातः कुर्यवस्य योषे हते ते स्यातां प्रवणे शिफायाः ३  
 युयोप नाभिरुपरस्यायोः प्र पूर्वाभिस्तिरते राष्ट्रि शूरः ।  
 अञ्जसी कुलिशी वीरपत्नी पयो हिनवाना उदभिर्भरन्ते ४ ८५०  
 प्रति यत् स्या नीथादशि दस्यो—रोको नाच्छा सदंनं जानती गात ।  
 अध स्मा नो मघवश्चकृतादि—न्मा नो मघेव निष्पपी परा दाः ५  
 स त्वं न इन्द्र सूर्ये सो अपस्व—नागास्त्व आ भज जीवशंसे ।  
 मान्तरां भुजमा रीरिषो नः श्रद्धितं ते महत इन्द्रियाय ६  
 अधा मन्ये श्रत ते अस्मा अधायि वृषां चोदस्व महते धनाय ।  
 मा नो अकृते पुरुहूत योना—विन्द्र क्षुध्यद्भ्यो वयं आसुतिं दाः ७  
 मा नो वधीरिन्द्र मा परा द्वा मा नः प्रिया भोजनानि प्र मोषीः ।  
 आण्डा मा नो मघवञ्छक्र निर्भे—न्मा नः पात्रां भेत सहजानुषाणि ८  
 अर्वाडेहि सोमकामं त्वाहु—रयं सुतस्तस्य पिबा मदाय ।  
 उरुव्यचा जठर आ वृषस्व पितेव नः शृणुहि ह्यमानः ९ ८५५

॥ ६३ ॥ ( ऋ० १।६१।१-१६ )

[ ८५६-८९९ ] नोधा गौतमः ।

अस्मा इहु प्र त्वसें तुराय प्रयो न हर्मिं स्तोमं माहिनाय ।  
 ऋचीषमायाधिगव ओह—मिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा १

अस्मा इदु प्रय इव प्र यंसि	भराम्याङ्गुषं बाधे सुवृक्ति ।	
इन्द्राय हुवा मनसा मनीषा	प्रत्नाय पत्ये धियो मर्जयन्त	२
अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षा	भराम्याङ्गुषमास्येन ।	
मंहिष्टमच्छोक्तिभिर्मतीनां	सुवृक्तिभिः सुरिं वावृधधै	३
अस्मा इदु स्तोमं सं हिनोमि	रथं न तष्टेव तत्सिनाय ।	
गिरश्च गिर्वाहसे सुवृक्ती	न्द्राय विश्वमिन्वं मेधिराय	४
अस्मा इदु सतिमिव श्रवस्ये	न्द्रायार्कं जुह्वाऽ समंश्रे ।	
वीरं वानौकसं वन्दधै	पुरां गूर्तश्रवसं वृर्माणम्	५ ८६०
अस्मा इदु त्वष्टा तक्षद् वज्रं	स्वपस्तमं स्वयं रणाय ।	
वृत्रस्य चिद् विद् येन मम	तुजन्नीशानस्तुजता कियेधाः	६
अस्येदु मातुः सर्वनेषु सद्यो	महः पितुं पपिवाश्रावन्ना ।	
मुषायद् विष्णुः पचतं सहीयान्	विध्यद् वराहं तिरो अद्रिमस्ता	७
अस्मा इदु ग्राश्चिद् वेवर्पत्नी	रिन्द्रायार्कमहिहत्य ऊवुः ।	
परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वी	नास्य ते महिमानं परि ष्टः	८
अस्येदेव प्र रिरिचे महित्वं	क्विस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात् ।	
स्वराळिन्द्रो दम आ विश्वगूर्तः	स्वरिरमंत्रो ववक्षे रणाय	९
अस्येदेव शवसा शुषन्तं	वि वृश्चद् वज्रेण वृत्रमिन्द्रः ।	
गा न व्राणा अवनीरिमुश्र	वृभि श्रवो व्रावने सचेताः	१० ८६५
अस्येदु त्वेषसा रन्त सिन्धवः	परि यद् वज्रेण सीमयच्छत् ।	
ईशानकृद् वृशुषे दशस्यन्	तुर्वीतये गाधं तुर्वणिः कः	११
अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो	वृत्राय वज्रमीशानः कियेधाः ।	
गोर्न पर्व वि रदा तिरश्चे	द्यन्नर्णीस्युपां चरधै	१२
अस्येदु प्र ब्रूहि पूर्व्याणि	तुरस्य कर्माणि नव्य उक्थैः ।	
युधे यद्विष्णान आयुधा	न्युघायमाणो निरिणाति शत्रून्	१३
अस्येदु मिया गिरयश्च हृळ्हा	द्यावा च भूमा जनुषस्तुजेते ।	
उपो वेनस्य जोगुवान ओणिं	सद्यो भुवद् वीर्याय नोधाः	१४
अस्मा इदु त्यवन्तु दाय्येषा	मेको यद् वज्रे भूरेरीशानः ।	
प्रेतशं सूर्ये पस्पृधानं	सौवश्ये सुष्विमावदिन्द्रः	१५ ८७०

एवा ते हरियोजना सुवृक्ती—न्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन् ।

एषु विश्वपेशसं धियं धाः प्रातर्मक्षु धियावसुर्जगम्यात्

१६

॥ ६४ ॥ ( ऋ० १।६२।१-१३ )

प्र मन्महे शवसानाय शूष—माङ्गुषं गिर्वणसे अङ्गिरस्वत ।

सुवृक्तिभिः स्तुवत ऋग्मियाया—ऽर्चामार्कं नरे विश्रुताय

१

प्र वो महे महि नमो भरध्व—माङ्गुष्यं शवसानाय साम ।

येना नः पूर्वे पितरः पवृज्ञा अर्चन्तो अङ्गिरसो गा अविन्दन्

२

इन्द्रस्याङ्गिरसां चेष्टौ विदत सरमा तनयाय धासिम् ।

बृहस्पतिभिर्नदद्वि विदद् गाः समुस्त्रियाभिर्वावशन्त नरः

३

स सुष्टुभा स स्तुभा सप्त विप्रैः स्वरेणाद्रिं स्वयोरुं नवग्वैः ।

सरण्युभिः फलिगामिन्द्र शक्र वलं रवेण दरयो दशग्वैः

४

८७५

गुणानो अङ्गिनोभिर्दस्म वि व—रुपसा सूर्येण गोभिरन्धः ।

वि भूम्या अप्रथय इन्द्र सानुं विवो रज उपरमस्तभायः

५

तद् प्रयक्षतममस्य कर्म वृस्मस्य चारुतममस्ति दंसः ।

उपह्वरे यदुपरा अपिन्वन् मध्वर्णसो नद्यश्चतस्रः

६

द्विता वि ववे सनजा सनीले अयास्यः स्तवमानेभिरर्केः ।

भगो न मेने परमे व्योम—न्नधारयद् रोदसी सुदंसाः

७

सनाद् दिवं परि भूमा विरूपे पुनर्भुवा युवती स्वेभिरेवैः ।

कृष्णेभिरक्तोषा रुशङ्गि—र्वपुर्भिरा चरतो अन्यान्या

८

सनेमि सख्यं स्वपस्यमानः सूनुर्दाधार शवसा सुदंसाः ।

आमासु चिद् दधिषे पक्रमन्तः पयः कृष्णासु रुशद् रोहिणीषु

९

८८०

सनात् सनीळा अवनीरवाता व्रता रक्षन्ते अमृताः सहोभिः ।

पुरु सहस्रा जनयो न पत्नी—र्दुवस्यन्ति स्वसारो अह्नयाणम्

१०

सनायुवो नमसा नव्यो अर्के—र्वसूयवो मतयो दस्म दद्भुः

पतिं न पत्नीरुशतीरुशन्तं स्पृशन्ति त्वा शवसावन् मनीषाः

११

सनादेव तव रायो गर्मस्तौ न क्षीर्यन्ते नोप दस्यन्ति दस्म ।

द्युमौ असि क्रतुमौ इन्द्र धीरः शिक्षा शचीवस्तव नः शचीभिः

१२

सनायते गोतम इन्द्र नव्य—मतक्षद् ब्रह्म हरियोजनाय ।

सुनीथार्य नः शवसान नोधाः प्रातर्मक्षु धियावसुर्जगम्यात्

१३

॥ ६५ ॥ ( ऋ० १।६३।१-९ )

त्वं महाँ इन्द्र यो ह शुष्मैर्द्यावा जज्ञानः पृथिवी अमे धाः ।	
यद्ध ते विश्वा गिर्यश्चिद्भवा भिया हृळ्हासः किरणा नैजन्	१ ८८५
आ यद्धरीं इन्द्र विव्रता वेरा ते वज्रं जरिता बाह्वोर्धात् ।	
येनाविहर्यतक्रतो अमित्रान् पुरं इष्णासि पुरुहूत पूर्वीः	२
त्वं सत्य इन्द्र धृष्णुरेतान् त्वमृभुक्षा नर्यस्त्वं षाट् ।	
त्वं शुष्णं वृजने पृक्ष आणौ यूने कुत्साय द्युमते सचाहन्	३
त्वं ह त्यदिन्द्र चोद्वीः सखा वृत्रं यद् वज्रिन् वृषकर्मन्नुभ्नाः ।	
यद्ध शूर वृषमणः पराचैर्वि दस्यूर्योनावकृतो वृथाषाट्	४
त्वं ह त्यदिन्द्रारिषण्यन् हृळ्हास्य चिन्मतीनामजुष्टौ ।	
व्यस्मदा काष्ठा अर्वते वधेनेव वज्रिञ्जथिह्यमित्रान्	५
त्वां ह त्यदिन्द्रार्णिसातौ स्वमीळहे नरं आजा हवन्ते ।	
तव स्वधाव इयमा समर्य ऊतिर्वाजेष्वतसाय्या भूत्	६ ८९०
त्वं ह त्यदिन्द्र सप्त युध्यन् पुरो वज्रिन् पुरुकुत्साय ददः ।	
बर्हिर्न यत् सुदासे वृथा वर्गहो राजन् वरिवः पूरवे कः	७
त्वं त्यां न इन्द्र देव चित्रा मिषमापो न पीपयः परिज्मन् ।	
यया शूर प्रत्यस्मभ्यं यंसि त्मनमूर्जं न विश्वध क्षरधै	८
अकारि त इन्द्र गोतमेभिर्ब्रह्माण्योक्ता नमसा हरिभ्याम् ।	
सुपेशंसं वाजमा भरा नः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्	९

॥ ६६ ॥ ( ऋ० ८।८८।१-६ )

[ प्रगाथः= ( विषमा बृहती, समा सतोबृहती ) । ]

तं वो वृस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।	
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नैवामहे	१
द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम् ।	
क्षुमन्तं वाजं शतिर्न सहस्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे	२ ८९५
न त्वा ब्रुहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीळवः ।	
यद् दित्ससि स्तुवते मावते वसु नकिष्टदा मिनाति ते	३
योद्धासि क्रत्वा शवसोत कुंसना विश्वा जाताभि मज्मना	
आ त्वायमर्क ऊतये ववर्तति यं गोतमा अजीजनन्	४

प्र हि रिंरिश्च ओजसा द्विवो अन्तेभ्यस्परिं  
 न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिव—मनु स्वधां ववक्षिथ ५  
 नकिः परिंष्टिर्मघवन् मघस्य ते यद् द्वाशुषे दशस्यसि ।  
 अस्माकं बोध्युचर्थस्य चोक्विता मंहिष्ठो वाजसातये ६

॥ ६७ ॥ ( ऋ० १।८०।१-१६ )

[ ९००-९५६ ] गोतमो राहूगणः । ( अथर्वा, मनुः, दध्यङ् च ) । पंक्तिः ।

इत्या हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम् ।  
 शर्विष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहि—मर्चन्ननु स्वराज्यम् १ ९००  
 स त्वामदृद् वृषा मवुः सोमः श्येनाभृतः सुतः ।  
 येना वृत्रं निरुद्धयो जघन्थ वज्रिन्नोजसा—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् २  
 प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते ।  
 इन्द्रं नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपो ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ३  
 निरिन्द्र भूम्या अधि वृत्रं जघन्थ निर्विवः ।  
 सृजा मरुत्वतीरव जीवधन्या इमा अपो ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ४  
 इन्द्रो वृत्रस्य दोधतः सानु वज्रेण हीळितः ।  
 अभिक्रम्याव जिघ्रते ऽपः समीय चोदय—र्चन्ननु स्वराज्यम् ५  
 अधि सानो नि जिघ्रते वज्रेण शतपर्वणा ।  
 मन्दान इन्द्रो अन्धसः सखिभ्यो गातुमिच्छ—त्यर्चन्ननु स्वराज्यम् ६ ९०५  
 इन्द्र तुभ्यमिदद्विवो ऽनुत्तं वज्रिन् वीर्यम् ।  
 यद्द त्वं मायिनं मृगं तमु त्वं माययावधी—र्चन्ननु स्वराज्यम् ७  
 वि ते वज्रासो अस्थिर—न्नवातिं नाव्याऽनु ।  
 महत् तं इन्द्र वीर्यं बाहोस्ते बलं हित—मर्चन्ननु स्वराज्यम् ८  
 सहस्रं साकर्मचत परिं ष्टोभत विशतिः ।  
 शतैनमन्वनोनवु—रिन्द्राय ब्रह्मोद्यत—मर्चन्ननु स्वराज्यम् ९  
 इन्द्रो वृत्रस्य तविषीं निरहन्त्सहसा सहः ।  
 महत् तदस्य पौंस्यं वृत्रं जघन्वाँ असृज—र्चन्ननु स्वराज्यम् १०  
 इमे चित तव मन्यवे वेपेते भियसा मही ।  
 यदिन्द्र वज्रिन्नोजसा वृत्रं मरुत्वाँ अवधी—र्चन्ननु स्वराज्यम् ११ ९१०

न वेपसा न तन्यते—न्द्रं वृत्रो वि बीभयत् ।	
अभ्येनं वज्रं आयसः सहस्रभृष्टिरायता—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम्	१२
यद् वृत्रं तव चाशनिं वज्रेण समयोधयः ।	
अहिमिन्द्र जिघांसतो द्विवि ते बद्धधे शवो ऽर्चन्ननु स्वराज्यम्	१३
अभिष्टने ते अद्रिवो यत् स्था जगच्च रेजते ।	
त्वष्टा चित् तव मन्यव इन्द्रं वेविज्यते भिया—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम्	१४
नहि नु यादधीमसी—न्द्रं को वीर्यां परः ।	
तस्मिन्नृष्णमुत् क्रतुं देवा ओजांसि सं दधु—र्चन्ननु स्वराज्यम्	१५
यामथर्वा मनुष्यिता वृध्यद् धियमन्नत ।	
तस्मिन् बह्माणि पूर्वधे—न्द्रं उक्था समग्मता—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम्	१६

९१५

॥ ६८ ॥ (ऋ० १।८१।१-९)

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।	
तमिन्महत्स्वाजिषू—तेमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत्	१
असि हि वीर सेन्यो ऽसि भूरिं परावृदिः ।	
असिं वृभ्रस्यं चिद् वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरिं ते वसु	२
यदुदीरित आजयो धृष्णवे धीयते धना ।	
युक्ष्वा मवृच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधो ऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः	३
क्रत्वा महौ अनुष्वधं भीम आ वावृधे शवः ।	
श्रिय ऋध्व उपाकयो—निं शिप्री हरिवान् दधे हस्तयोर्वज्रमायसम्	४
आ पप्रौ पार्थिवं रजो बद्धधे रोचना द्विवि ।	
न त्वावाँ इन्द्र कश्चन न जातो न जनिष्यते ऽति विश्वं ववक्षिथ	५
यो अर्यो मर्तभोजनं पराददाति वृशुषे ।	
इन्द्रो अस्मभ्यं शिक्षतु वि भजा भूरिं ते वसु भक्षीय तव राधसः	६
मदेमदे हि नो वृदि—र्युथा गवामृजुक्रतुः ।	
सं गृभाय पुरू शतो—भयाहस्त्या वसुं शिशीहि राय आ भर	७
मादयस्व सुते सचा शवसे शूर राधसे ।	
विद्या हि त्वा पुरूवसु—मुप कामान्त्ससृज्महे ऽथा नोऽविता भव	८
एते त इन्द्र जन्तवो विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।	
अन्तर्हि ख्यो जनाना—मर्यो वेदो अदाशुषां तेषां नो वेदु आ भर	९

९२०

॥ ६९ ॥ ( ऋ० १।८२।१-६ ) पंक्तिः; ६ जगती ।

उपो षु शृणुही गिरो मघवन् मातथा इव ।

यदा नः सूनृतावतः कर आवृथयास इद् योजा न्विन्द्र ते हरीं १ ९२५  
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत ।

अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नर्विष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरीं २  
सुसंद्दशं त्वा वयं मघवन् वन्दिषीमहि ।

प्र नूनं पूर्णवन्धुरः स्तुतो याहि वशां अनु योजा न्विन्द्र ते हरीं ३  
स घा तं वृषणं रथमधि तिष्ठाति गोविदम् ।

यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्र चिकेतति योजा न्विन्द्र ते हरीं ४  
युक्तस्ते अस्तु दक्षिण उत सव्यः शतक्रतो ।

तेन जायामुप प्रियां मन्दानो याह्यन्धसो योजा न्विन्द्र ते हरीं ५  
युनज्मि ते ब्रह्मणा केशिना हरी उप प्र याहि दधिषे गर्भस्त्योः

उत् त्वा सुतासो रभसा अमन्दिषुः पूषण्वान् वज्रिन्त्समु पत्न्यामदः ६ ९३०

॥ ७० ॥ ( ऋ० १।८३।१-६ ) जगती ।

अश्वावति प्रथमो गोपुं गच्छति सुप्रावीरिन्द्र मर्त्यस्तवोतिभिः ।

तमित पृणक्षि वसुना भवीयसा सिन्धुमापो यथाभितो विचेतसः १

आपो न देवीरुपं यन्ति होत्रियमवः पश्यन्ति विततं यथा रजः ।

प्राचैर्देवासः प्र णयन्ति देवयुं ब्रह्मप्रियं जोषयन्ते वरा इव २

अधि द्वयोरदधा उक्थयं वचो यतसुंचा मिथुना या संपर्यतः ।

असंयतो व्रते ते क्षेति पुष्यति भद्रा शक्तिर्यजमानाय सुन्वते ३

आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे वयं इन्द्राग्रयुः शम्या ये सुकृत्यया ।

सर्वं पणेः समविन्दन्त भोजनमश्वावन्तं गोमन्तमा पशुं नरः ४

यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि ।

आ गा आजदुशना काव्यः सचा यमस्य जातममृतं यजामहे ५ ९३५

बर्हिर्वा यत् स्वपत्याय वृज्यते ऽर्को वा श्लोकमाघोषते विवि ।

शावा यत्र वदति कारुरुक्थयं—स्तस्येदिन्द्रो अभिपित्वेषु रण्यति ६

॥ ७१ ॥ ( ऋ० १।८४।१-२० )

[ १-६ अनुष्टुप्, ७-९ उष्णिक्; १०-१२ पंक्तिः; १३-१५ गायत्री; १६-१८ त्रिष्टुप्,

( प्रगाथः= १९ बृहती, २० सतोबृहती । ) ]

असावि सोम इन्द्र ते शर्विष्ठ धृष्णवा गहि । आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः ?

इन्द्रमिन्द्ररीं बहूतो ऽप्रतिधृष्टशवसम् । ऋषीणां च स्तुतीरुपं यज्ञं च मानुषाणाम् २  
 आ तिष्ठ वृत्रहन् रथं युक्ता ते बह्वणा हरी । अर्वाचीनं सु ते मनो प्रावा कृणोतु वग्नुना ३  
 इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् । शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारां क्रतस्य सादने ४ १४०  
 इन्द्राय नूनमर्चतो कथानि च ब्रवीतन । सुता अमत्सुरिन्दवो ज्येष्ठं नमस्यता सहः ५  
 नकिङ्कद रथीतरो हरी यद्विन्द्र यच्छसे । नकिङ्कानु मज्जना नक्तिः स्वश्व आनशे ६  
 य एक इद् विदयते वसु मतीय दाशुषे । ईशानो अप्रतिष्कृत इन्द्रो अङ्ग ७  
 कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत् । कदा नः शुश्रवद् गिर इन्द्रो अङ्ग ८  
 यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावाँ आविवांसति । उग्रं तत पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ९ १४५

स्वादोरिथा विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः ।

या इन्द्रेण सयावरी कृष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यम् १०

ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्रयः ।

प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सार्यकं वस्वीरनु स्वराज्यम् ११

ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः ।

व्रतान्यस्य सश्वरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् १२

इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कृतः । जघान नवतीर्नव १३

इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वर्पश्रितम् । तद् विदच्छर्यणार्वति १४ १५०

अत्राह गोरमन्वत् नाम त्वष्टुरपीच्यम् । इत्था चन्द्रमसो गृहे १५

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा क्रतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हणायून् ।

आसन्निषून् हृत्स्वसो मयोभून् य एषां भृत्यामूणधत् स जीवात् १६

क ईषते तुज्यते को बिभाय को मंसते सन्तमिन्द्रं को अन्ति ।

कस्तोकाय क इभायोत राये ऽधि ब्रवत् तन्वेऽ को जनाय १७

को अग्निमीद्रे हविषा घृतेन सुचा यजाता क्रतुभिर्ध्रुवेभिः ।

कस्मै देवा आ वंहानाशु होम को मंसते वीतिहोत्रः सुदेवः १८

त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।

न त्वदून्यो मघवन्नस्ति मर्दिते इन्द्र ब्रवीमि ते वचः १९ १५५

मा ते राधांसि मा त ऊतयो वसो ऽस्मान् कदा चना दभन् ।

विश्वा च न उपमिमीहि मानुष वसूनि चर्षणिभ्य आ २०



॥ ७२ ॥ ( ऋ० १।१००।१-१९ )

( ९५७-९७५ ) वार्षागिराः ऋज्राश्वऽम्बरीष-सहदेव-भयमान-सुराधसः । त्रिष्टुप् ।

स यो वृषा वृष्ण्येभिः समोका महो विवः पृथिव्याश्च सम्राट् । सतीनसत्वा हव्यो भरेषु मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१	
यस्यानाप्तः सूर्यस्येव यामो भरेभरे वृत्रहा शुष्मो अस्ति । वृषन्तमः सखिभिः स्वेभिरेवै मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	२	
विवो न यस्य रेतसो दुर्घानाः पन्थासो यन्ति शवसापरीताः तरद्वेषाः सासहिः पौंस्येभि मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	३	
सो अङ्गिरोभिरङ्गिरस्तमो भूद वृषा वृषभिः सखिभिः सखा सन् । ऋग्मिभिर्ऋग्मी गातुभिर्ज्येष्ठो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	४	९६०
स सूनुभिर्न रुद्रेभिर्ऋग्वा नृषाह्ये सासह्यो अमित्रान् । सनीलोभिः श्रवस्यानि तूर्धन् मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	५	
स मन्युमीः समर्दनस्य कर्ता ऽस्माकेभिर्नृभिः सूर्ये सनत् । अस्मिन्नहन्त्सत्पातिः पुरुहूतो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	६	
तमूतयो रणयञ्छूरसातौ तं क्षेमस्य क्षितयः कृण्वत त्राम् । स विश्वस्य करुणस्येश एको मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	७	
तमप्सन्त शवस उत्सवेषु नरो नरमवसे तं धनाय । सो अन्धे चित् तमसि ज्योतिर्विदन् मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	८	
स सव्येन यमति वार्धतश्चित् स दक्षिणे संगृभीता कृतानि । स कीरिणां चित् सनिता धनानि मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	९	९६५
स ग्रामेभिः सनिता स रथेभिर्विदे विश्वाभिः कृष्टिभिर्नृद्य । स पौंस्येभिरभिभूरशस्ती मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१०	
स जामिभिर्यत् समजाति मीळहे ऽजामिभिर्वा पुरुहूत एवैः । अपां तोकस्य तनयस्य जेषे मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	११	
स वज्रभृद् दस्युहा भीम उग्रः सहस्रचेताः शतनीथ ऋग्वा । चञ्च्रीषो न शवसा पाञ्चजन्यो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१२	
तस्य वज्रः क्रन्दति स्मत् स्वर्षा विवो न त्वेषो र्वथः शिमीवान् । तं संचन्ते सनयस्तं धनानि मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१३	

यस्याजस्रं शर्वसा मानमुक्थं परिभुजद् रोदसी विश्वतः सीम् ।		
स पारिषत् क्रतुभिर्मन्दसानो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१४	९७०
न यस्य देवा देवता न मर्ता आपश्चन शर्वसो अन्तमापुः ।		
स प्ररिक्वा त्वर्क्षसा क्षमो विवश्वं मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१५	
रोहिच्छयावा सुमदंशुर्लामी—र्युक्षा राय ऋञ्जाश्वस्य ।		
वृषण्वन्तं विभ्रती धूर्षु रथं मन्द्रा चिकेत नाहुपीषु विश्वु	१६	
एतत् त्यत् तं इन्द्र वृष्णा उक्थं वर्षागिरा अभि गृणन्ति राधः ।		
ऋञ्जाश्वः प्रष्टिभिरम्बरीषः सहदेवो भयमानः सुराधाः	१७	
दस्युच्छिम्यँश्च पुरुहूत एवं—हत्वा पृथिव्यां शर्वा नि बर्हीत् ।		
सनत् क्षेत्रं सखिभिः श्विन्येभिः सनत् सूर्यं सनदुपः सुवज्रः	१८	
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अ—स्त्वपरिहृताः सनुयाम् वाजम् ।		
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	१९	९७५

॥ ७३ ॥ (ऋ० ८।९७।१-१५)

(९७६-९९०) रेभः काश्यपः । बृहती, १०, १३ अतिजगती, ११-१२ उपरिष्ठाद्बृहती, १४ त्रिष्टुप्, १५ जगती ।

या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वाँ असुरेभ्यः		
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिपः	१	
यमिन्द्र दधिषे त्व—मश्वं गां भागमव्ययम् ।		
यजमाने सुन्वति दक्षिणावति तस्मिन् तं धेहि मा पृणो	२	
य इन्द्र सस्त्यव्रतो ऽनुष्वापमदेवयुः ।		
स्वैः ष एवैर्मुमुरत् पोष्यं रथिं सनुतर्धेहि तं ततः	३	
यच्छक्रासिं परावति यदर्वावति वृत्रहन् ।		
अतस्त्वा गीर्मिद्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आ विवासति	४	
यद्वासिं रोचने विवः समुद्रस्याधि विष्टपि ।		
यत् पार्थिवे सदने वृत्रहन्तम् यदुन्तरिक्ष आ गहि	५	९८०
स नः सोमेषु सोमपाः सुतेषु शवसस्पते ।		
मादयस्व राधसा सूनृतावते—न्द्र राया परीणसा	६	
मा न इन्द्र परा वृणग् भवा नः सधमाद्यः ।		
त्वं न ऊती त्वमिन्न आप्यं मा न इन्द्र परा वृणक्	७	

अस्मे इन्द्र सचा सुते नि पदा पीतये मधु ।		
कृधी जरित्रे मघवन्नवो मह दस्मे इन्द्र सचा सुते	८	
न त्वावेवास आशत न मर्त्यासो अद्रिवः ।		
विश्वा जातानि शर्वसाभिभूरसि न त्वा देवास आशत	९	
विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरं सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे ।		
क्रत्वा वरिष्ठं वरं आमुरिमुतो ग्रमोजिष्ठं तवसं तरस्विनम	१०	९८५
समी रेभासो अस्वरन्निन्द्रं सोमस्य पीतये ।		
स्वर्पतिं यदी वृधे धृतवतो ह्योजसा समृतिभिः	११	
नेमिं नमन्ति चक्षसा मेघं विप्रां अभिस्वरां ।		
सुव्रीतयो वो अद्रुहो ऽपि कर्णे तरस्विनः समृक्त्रभिः	१२	
तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कृतं शवांसि ।		
मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्तद राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वञ्चि	१३	
त्वं पुर इन्द्र चिकिदेना व्योजसा शविष्ठ शक्र नाशयधै ।		
त्वद् विश्वानि भुवनानि वञ्चिन् द्यावा रेजेते पृथिवी च भीषा	१४	
तन्म क्रतमिन्द्र शूर चित्र पात्वपो न वञ्चिन् दुरितातिं पषि भूरिं ।		
कदा न इन्द्र राय आ दशस्ये विश्वप्स्यस्य स्पृहयार्थस्य राजन्	१५	९९०

॥ ७४ ॥ ( ऋ० ८।१००।१-९ )

( ९९१-९९९ ) नेमो भार्गवः, ४-५ इन्द्रः, ९ वज्रो वा । त्रिष्टुप्, ६ जगती, ७,९ अनुष्टुप् ।

अयं त एमि तन्वा पुरस्ताद् विश्वे देवा अभि मा यन्ति पश्चात् ।		
यदा मह्यं दीधरो भागमिन्द्रा ऽऽदिन्मया कृणवो वीर्याणि	१	
दधामि ते मधुनो भक्षमग्रे हितस्ते भागः सुतो अस्तु सोमः ।		
असश्च त्वं दक्षिणतः सखा मे ऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरिं	२	
प्र सु स्तोमं भरत वाजयन्त इन्द्राय सत्यं यदि सत्यमस्ति ।		
नेन्द्रो अस्तीति नेम उ त्व आह क ईं ददर्श कमभि ष्टवाम	३	
अयमस्मि जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि म्हा ।		
क्रतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्त्या दर्विरो भुवना दर्वीमि	४	
आ यन्मा वेना अरुहन्तस्यै एकमासीनं हर्यतस्य पृष्ठे ।		
मनेश्विन्मे हृद् आ प्रत्यवोच दचिक्रवृच्छिशुमन्तः सखायः	५	९९५

विश्वेत् ता ते सर्वनेषु प्रवाच्या या चकर्थ मघवन्निन्द्र सुन्वते ।		
पारावतं यत् पुरुसंभृतं व—स्वपावृणोः शरभाय ऋषिवन्धवे	६	
प्र नूनं धावता पृथङ् नेह यो वो अवावरीत् ।		
नि षीं वृत्रस्य मर्मणि वज्रमिन्द्रो अपीपतत्	७	
समुद्रे अन्तः शयत उद्गा वज्रो अभीवृतः ।		
मरन्त्यस्मै संयतः पुरःप्रस्रवणा बलिम्	९	
सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व द्यौर्देहि लोकं वज्राय विष्कभे ।		
हनाव वृत्रं रिणचाव सिन्धू—निन्द्रस्य यन्तु प्रसवे विसृष्टाः	१२	९९९

॥ ७५ ॥ ( ऋ० १।१२९।१-११ )

( १०००-१०४१ ) परच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः; ८-९, अतिशक्यौ, ११ अष्टिः ।

यं त्वं रथमिन्द्र मेधसातये ऽपाका सन्तमिषिर प्रणयसि प्रानवद्य नयसि ।		
सद्यश्चित् तमभिष्टये करो वशश्च वाजिनम् ।		
सास्मार्कमनवद्य तूतुजान वेधसा—मिमां वाचं न वेधसाम्	१	१०००
स श्रुधि यः स्मा पृतनासु कासु चिद् दृक्षार्थं इन्द्र भरहूतये नृभि—रसि प्रतूर्तये नृभिः ।		
यः शूरैः स्वः सनिता यो विप्रैर्वाजं तरुता ।		
तमीशानास इरधन्त वाजिनं पृक्षमत्यं न वाजिनम्	२	
दुस्मो हि ष्मा वृषणं पिन्वसि त्वचं कं चिद् यावीररुं शूर मर्त्यं परिवृणक्षि मर्त्यम् ।		
इन्द्रोत तुभ्यं तद् विवे तद् रुद्राय स्वयंशसे ।		
मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः सुमृच्छीकार्यं सप्रथः	३	
अस्माकं व इन्द्रमुश्मसीष्टये सखायं विश्वायुं प्रासहं युजं वाजेषु प्रासहं युजम् ।		
अस्माकं ब्रह्मोतये ऽवा पृत्सुषु कासु चित् ।		
नहि त्वा शत्रुः स्तरते स्तृणोषि यं विश्वं शत्रुं स्तृणोषि यम्	४	
नि षू नमार्तिमतिं करस्य चित् तेजिष्ठाभिररणिभिर्नोतिभि—रुग्राभिरुग्रातिभिः ।		
नेषि णो यथा पुरा ऽनेनाः शूर मन्यसे ।		
विश्वानि पुरोरपं पषि वह्नि—रासा वह्निर्नो अच्छ	५	
प्र तद् वोचियं भव्यायेन्द्वे हव्यो न य इषवान् मन्म रेजति रक्षोहा मन्म रेजति ।		
स्वयं सो अस्मदा निदो वधैरेजत दुर्मतिम् ।		
अव सवेदृघशांसोऽवतर—मव क्षुद्रमिव सवेत्	६	१००५

दे० [ इन्द्रः ] ८

वनेम तद्भोत्रया चितन्त्या वनेम रयिं रयिवः सुवीर्यं रणवं सन्तं सुवीर्यम् ।

दुर्मन्मानं सुमन्तुभिरेमिषा पृचीमहि ।

आ सत्याभिरिन्द्रं द्युम्रहूतिभिर्यजत्रं द्युम्रहूतिभिः ७

प्रपां वो अस्मे स्वयंशोभिरूती परिवर्ग इन्द्रो दुर्मतीनां दरीमन् दुर्मतीनाम् ।

स्वयं सा र्षियधै या न उपेषे अत्रैः ।

हतेमसन्न वक्षति क्षिप्ता जूर्णिर्न वक्षति ८

त्वं न इन्द्र राया परीणसा याहि पथौ अनेहसा पुरो याह्यरक्षसा ।

सचस्व नः पराक आ सचस्वास्तमीक आ ।

पाहि नो दूराद्वारादुभिष्टिभिः सदा पाह्यभिष्टिभिः ९

त्वं न इन्द्र राया तरूषसो ग्रं चित् त्वा महिमा संक्षदवंसं महे मित्रं नावंसे ।

ओजिष्ठ त्रातरविता रथं कं चिदमर्त्य ।

अन्यमस्मद् रिरिषेः कं चिदद्विवो रिरिक्षन्तं चिदद्विवः १०

पाहि न इन्द्र सुप्तुत सिधोः ऽवयाता सकुमिद् दुर्मतीनां देवः सन् दुर्मतीनाम् ।

हन्ता पापस्य रक्षसं स्नाता विप्रस्य मावतः ।

अधा हि त्वां जनिता जीजनद् वसो रक्षोहणं त्वा जीजनद् वसो ११ १०१०

॥ ७६ ॥ ( ऋ० १।१३०।१-१० ) अत्यष्टिः; १० त्रिष्टुप् ।

एन्द्रं याह्युपं नः परावतो नायमच्छां विदधानीव सत्पतिरस्तं राजेव सत्पतिः ।

हवामहे त्वा वयं प्रयस्वन्तः सुते सचा ।

पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये १

पिबा सोममिन्द्र सुवानमद्रिभिः कोशेन सिक्तमवतं न वंसंगस्तातृषाणो न वंसंगः ।

मदाय हर्यतार्य ते तुविष्टमाय धार्यसे ।

आ त्वा यच्छन्तु हरितो न सूर्यमहा विश्वेषु सूर्यम् २

अविन्दद् द्विवो निहितं गुहां निधिं वेर्न गर्भं परिवीतमश्मन्यनन्ते अन्तरश्मनि ।

व्रजं वज्री गवामिव सिषासन्नङ्गिरस्तमः ।

अपावृणोदिष इन्द्रः परीवृता द्वार इषुः परीवृताः ३

दाहाणो वज्रमिन्द्रो गर्भस्त्योः क्षद्रेव तिग्ममसनाय सं श्यं दहिहत्याय सं श्यत् ।

संविद्यान ओजसा शवोभिरिन्द्र मज्जना ।

तथैव वृक्षं वनिनो नि वृश्चसिं परश्वेषु नि वृश्चसि ४

त्वं वृथा नद्यं इन्द्र सतवे ऽच्छा समुद्रमसृजो रथौ इव वाजयतो रथौ इव ।

इत ऊतीरयुञ्जत समानमर्थमक्षितम् ।

धेनूरिव मनवे विश्वदोहसो जनाय विश्वदोहसः

५

१०२५

इमां ते वाचं वसूयन्त आयवो रथं न धीरः स्वपा अतक्षिषुः सुम्नाय त्वामतक्षिषुः ।

शुम्भन्तो जेन्यं यथा वाजेषु विप्र वाजिनम् ।

अत्यमिव शवसे सातये धना विश्वा धनानि सातये

६

भिनत पुरो नवतिमिन्द्र पूरवे दिवोदासाय महिं द्वाशुषे नृतो वज्रेण द्वाशुषे नृतो ।

अतिधिग्वाय शम्बरं गिरेरुग्रो अवाभरत् ।

महो धनानि दयमान ओजसा विश्वा धनान्योजसा

७

इन्द्रः समत्सु यजमानमार्यं प्रावद् विश्वेषु शतमृतिराजिषु स्वर्मीळ्हेष्वाजिषु ।

मनवे शासद्व्रतान् त्वचं कृष्णामरन्धयत् ।

दक्षन्न विश्वं ततृषाणमोषति न्यर्शसानमोषति

८

सूरश्चक्रं प्र वृहज्जात ओजसा प्रपित्वे वाचमरुणो मुषायती—शान आ मुषायति ।

उशाना यत् परावतो ऽर्जगन्नूतये कवे ।

सुम्नानि विश्वा मनुषेव तुर्वणि—रहा विश्वेव तुर्वणिः

९

स नो नव्येभिर्वृषकर्मन्त्रुक्थैः पुरां दर्तः पायुभिः पाहि शग्मैः ।

दिवोक्वासेभिरिन्द्र स्तवानो वावृधीथा अहोभिरिव द्यौः

१०

१०२६

॥ ७७ ॥ ( ऋ० १।१३।१-७ ) अत्यष्टिः ।

इन्द्राय हि द्यौरसुरो अनमन्ते—न्द्राय मही पृथिवी वरीमभि—द्युम्नसाता वरीमभिः ।

इन्द्रं विश्वे सजोषसो देवासो दधिरे पुरः ।

इन्द्राय विश्वा सर्वनानि मानुषा रातानि सन्तु मानुषा

१

विश्वेषु हि त्वा सर्वनेषु तुञ्जते समानमेकं वृषमण्यवः पृथक् स्वः सनिष्पवः पृथक् ।

तं त्वा नावं न पर्षणिं शूषस्य धुरि धीमहि ।

इन्द्रं न यज्ञैश्चितयन्त आयवः स्तोमेभिरिन्द्रमायवः

२

वि त्वा ततस्त्रे मिथुना अवस्यवो ब्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः सक्षन्त इन्द्र निःसृजः ।

यद् गव्यन्ता द्वा जना स्वयन्ता समूहसि ।

आविष्करिक्रद् वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवं

३

विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो यद्विन्द्र शारदीरवातिरः सासहानो अवातिरः ।

शासस्तमिन्द्र मर्त्य—मर्यज्युं शवसरूपने ।

महीममुष्णाः पृथिवीमिमा अपो मन्दसान इमा अपः

४

आदित् ते अस्य वीर्यस्य चर्किरन् मर्देषु वृषन्नुशिजो यदाविथ सखीयतो यदाविथ । .

चकर्थं कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे ।

ते अन्यामन्यां नद्यं सनिष्णत श्रवस्यन्तः सनिष्णत

५

१०२५

उतो नो अस्या उपसो जुषेत ह्यु—कस्य बोधि हविषो हवीमभिः स्वर्षाता हवीमभिः ।

यदिन्द्र हन्तवे मृधो वृषा वद्विञ्चिकेतसि ।

आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्मं श्रुधि नवीयसः

६

त्वं तमिन्द्र वावृधानो अस्मयु—रमिन्नयन्तं तुविजात मर्त्यं वज्रेण शूर मर्त्यम् ।

जहि यो नो अघायति शृणुष्व सुश्रवस्तमः ।

रिष्टं न यामन्नप भूतु दुर्मति—विश्वार्प भूतु दुर्मतिः

७

॥ ७८ ॥ ( ऋ० १।१३१।१-६ ) [ ६ (अर्धर्चस्य) इन्द्रापर्वतो ] ।

त्वया वयं मघवन् पूर्ये धन इन्द्रत्वोताः सासह्याम पृतन्यतो वनुयाम वनुष्यतः ।

नेदिष्ठे अस्मिन्नह—न्यधि वोचा नु सुन्वते ।

अस्मिन् यज्ञे वि चयेमा भरे कृतं वाजयन्तो भरे कृतम्

१

स्वर्जेषे भर आप्रस्य वक्म—न्युषुर्बुधः स्वस्मिन्नशंसि क्राणस्य स्वस्मिन्नशंसि ।

अहन्निन्द्रो यथा विदे शीर्ष्णाशीर्ष्णोपवाच्यः ।

अस्मन्ना ते सधर्यक सन्तु रातयो भद्रा भद्रस्य रातयः

२

तत तु प्रयः प्रत्नथा ते शुशुक्वनं यस्मिन् यज्ञे वारमकृण्वत क्षयं—मृतस्य वारसि क्षयम् ।

वि तद् वोचेरधं द्विता—ऽन्तः पश्यन्ति रश्मिभिः ।

स घा विदे अन्विन्द्रो गवेषणो बन्धुक्षिद्भ्यो गवेषणः

३

१०३०

नू इत्था ते पूर्वथा च प्रवाच्यं यदङ्गिरोभ्योऽवृणोरप व्रज—मिन्द्र शिक्षन्नप व्रजम् ।

ऐभ्यः समान्या विशा ऽस्मभ्यं जेषि योत्सि च ।

सुन्वद्भ्यो रन्धया कं चिद्व्रतं हृणायन्तं चिद्व्रतम्

४

सं यज्जानान् क्रतुभिः शूर ईक्षयद् धने हिते तरुषन्त श्रवस्यवः प्र यक्षन्त श्रवस्यवः ।

तस्मा आयुः प्रजावदिद् बाधे अर्चन्त्योजसा ।

इन्द्र ओक्यं दिधिषन्त धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः

५

युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तंतमिद्धंतं वज्रेण तंतमिद्धंतम् ।

दूरे चत्तार्यं च्छन्त्सद् गर्हनं यदिनक्षत् ।

अस्माकं शत्रून् परि शूर विश्वतो कुर्मा दर्षिष्ट विश्वतः

६

॥ ७९ ॥ ( ऋ० १।१३३।१-७ ) १ त्रिष्टुप्, २-४ अनुष्टुप्, ५ गायत्री, ६ धृतिः, ७ अष्टिः ।

उभे पुनामि रोदसी ऋतेन दुहो दहामि सं महीरनिन्द्राः ।

अभिःव्लग्य यत्र हता अमित्रा वैलस्थानं परिं तूळहा अशोरन् १

अभिःव्लग्या चिदद्विवः शीर्षा यातुमतीनाम् । छिन्धि वटूरिणां पदा महावटूरिणा पदा २ १०३५

अवासां मघवश्नहि शर्धो यातुमतीनाम् । वैलस्थानके अर्मके महावैलस्थे अर्मके ३

यासां तिस्रः पञ्चाशतो ऽभिःव्लङ्गैरपावपः । तत सु ते मनायति तकत सु ते मनायति ४

पिशाङ्गभृष्टिमम्भूणं पिशाचिमिन्द्र सं मृण । सर्वं रक्षो नि बर्हय ५

अवर्मह इन्द्र दाहहि श्रुधी नः शुशोच हि द्यौः क्षा न भीषाँ अद्विवो घृणान्न भीषाँ अद्विवः ।

शुष्मिन्तमो हि शुष्मिभिर्वधैरुग्रेभिरीयसे ।

अपूरुषघ्नो अपतीत शूर सत्वभिः—खिस्रैः शूर सत्वभिः ६

वनोति हि सुन्वन् क्षयं परीणसः सुन्वानो हि ष्मा यजत्यव द्विषो देवानामव द्विषः ।

सुन्वान इत् सिषासति सहस्रा वाज्यवृतः ।

सुन्वानायेन्द्रो ददात्याभुवं रयिं ददात्याभुवम् ७ १०४०

॥ ८० ॥ ( ऋ० १।१३९।६ ) अत्यष्टिः ।

वृषन्निन्द्र वृषपाणांस इन्दव इमे सुता अद्विषुतास उद्विक्वस्तुभ्यं सुतास उद्विदः ।

ते त्वा मन्दन्तु द्वावने महे चित्राय राधसे ।

गीभिर्गिवाहः स्तवमान आ गंहि सुमृळीको न आ गंहि ६ १०४१

॥ ८१ ॥ ( ऋ० १।१६७।१ ) ( १०४२-११०० ) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

सहस्रं त इन्द्रोतयो नः सहस्रमिषो हरिवो गूर्ततमाः ।

सहस्रं रायो माद्वयध्वै सहस्रिण उप नो यन्तु वाजाः १

॥ ८२ ॥ ( ऋ० १।१६९।१-८ ) त्रिष्टुप्, २ चतुष्पदा विराट् ।

महश्चित् त्वमिन्द्र यत् एतान् महश्चिदसि त्यजसो वरुता ।

स नो वेधो मरुतां चिकित्वान् त्सुम्ना वनुष्व तव हि प्रेष्ठा १

अयुञ्जन्त इन्द्र विश्वकृष्ठी—विद्वानासो निषिधो मर्त्यत्रा ।

मरुतां पृतसुतिर्हासमाना स्वर्माळहस्य प्रधनस्य सातौ २

अम्यक् सा त इन्द्र ऋष्टिर्स्मे सनेम्यभवं मरुतो जुनन्ति ।

अग्निश्चिद्धि ष्मातसे शुशुक्ता—नापो न द्वीपं दधति प्रयांसि ३ १०४५

त्वं तू न इन्द्र तं रयिं द्वा ओजिष्ठया दक्षिणयेव रातिम् ।

स्तुतश्च यास्ते चकनन्त वायोः स्तनं न मध्वः पीपयन्त वाजैः ४



त्वे रायं इन्द्र तोशतमाः प्रणेतारः कस्य चिह्नतायोः ।	
ते षु णो मरुतो मृळयन्तु ये स्मा पुरा गातूयन्तीव देवाः	५
प्रति प्र याहीन्द्र मीळहुषो नृन् महः पार्थिवे सवने यतस्व ।	
अध यदेषां पृथुबुधास एतां स्तीर्थे नार्यः पौंस्यानि तस्थुः	६
प्रति घोराणामेतानामयासां मरुतां शृण्व आयतामुपब्धिः ।	
ये मर्त्यं पृतनायन्तमूर्धै ऋणावानं न पतयन्त सर्गैः	७
त्वं मानेभ्य इन्द्र विश्वजन्त्या रदा मरुद्भिः शुरुधो गोअग्राः ।	
स्तवानेभिः स्तवसे देव देवैर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्	८

१०५०

॥ ८३ ॥ ( ऋ० १।१७०।१-५ )

[ इन्द्रः; ( ४ अगस्त्यो वा ), २, ५ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः ] । १ बृहती २-४ अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप् ।

न नूनमस्ति नो श्वः कस्तद् वेदु यदद्भुतम् ।	
अन्यस्य चित्तमभि संचरेण्यं मुताधीतं वि नश्यति	१
किं न इन्द्र जिघांससि भ्रातरौ मरुतस्तव । तेभिः कल्पस्व साधुया	मा नः समरणे वधीः २
किं नो भ्रातरगस्त्य सखा सन्नतिं मन्यसे । विद्वा हि ते यथा मनो ऽस्मभ्यमिन्न दित्ससि ३	
अरं कृण्वन्तु वेदुं समग्निमिन्धतां पुरः । तत्रामृतस्य चेतनं यज्ञं ते तनवावहै ४	
त्वमीशिषे वसुपते वसूनां त्वं मित्राणां मित्रपते धेष्ठः ।	
इन्द्र त्वं मरुद्भिः सं वदस्वा ऽध प्राशान ऋतुथा हवीषिं	५

१०५५

॥ ८४ ॥ ( ऋ० १।१७३।१-१३ ) त्रिष्टुप्, ४ विराट्स्थाना विषमपदा वा ।

गायत् सामं नभन्यं यथा वे रर्चाम तद् वावृधानं स्वर्वत् ।	
गावो धेनवो बर्हिष्यदब्धा आ यत् सद्धानं दिव्यं विवासान्	१
अर्चद् वृषा वृषभिः स्वेदुहव्यै मृगो नाश्रो अति यज्जुगुर्यात् ।	
प्र मन्वयुर्मनां गूर्तं होता भरते मर्यो मिथुना यजत्रः	२
नक्षद्भोता परि सन्नं मिता यन् भरद् गर्भमा शरदः पृथिव्याः ।	
क्रन्वुदश्वो नयमानो रुवद् गौरन्तर्दूतो न रोदसी चर्द् वाक्	३
ता कर्माषतरास्मै प्र च्यौत्नानि देवयन्तो भरन्ते ।	
जुजोषदिन्द्रो वृस्मवर्चा नासत्येव सुग्म्यो रथेष्ठाः	४
तमु ष्टुहीन्द्रं यो ह सत्वा यः शूरो मघवा यो रथिष्ठाः ।	
प्रतीचश्चिद् योधीयान् वृषणवान् ववृषश्चित् तमसो विहन्ता	५
प्र यद्विथा महिना नृभ्यो अस्त्यरं रोदसी कक्षयेद् नास्मै ।	
सं दिव्य इन्द्रो वृजनं न भूमा भर्ति स्वधावां ओपशामिव द्याम्	६

१०६०

सुमत्सु त्वा शूर सतामुराणं प्रपथिन्तमं परितंसयधै ।		
सजोषस इन्द्रं मदे क्षोणीः सूरिं चिद् ये अनुमदन्ति वाजैः	७	
एवा हि ते शं सर्वना समुद्र आपो यत् तं आसु मदन्ति देवीः ।		
विश्वा ते अनु जोष्या भूद् गौः सूरिंश्चिद् यदि धिषा वेषि जनान्	८	
असाम यथा सुषखाय एन स्वभिष्टयो नरां न शंसैः ।		
असद् यथा न इन्द्रो वन्दनेष्ठास्तुरो न कर्म नयमान उक्था	९	
विष्पर्धसो नरां न शंसै रस्माकासदिन्द्रो वज्रहस्तः ।		
मित्रायुवो न पूर्पतिं सुशिष्टौ मध्यायुव उप शिक्षन्ति यज्ञेः	१०	१०६५
यज्ञो हि घ्मेन्द्रं कश्चिद्वन्धश्चुहुराणश्चिन्मनसा परियन् ।		
तीर्थे नाच्छा तातृषाणमोको वीर्घो न सिधमा कृणोत्यध्वा	११	
मो पू ण इन्द्रात्रं पूत्सु देवै रस्ति हि ष्मा ते शुष्मिन्नवयाः ।		
महश्चिद् यस्य मीळहुषो यव्या हविष्मतो मरुतो वन्दते गीः	१२	
एष स्तोम इन्द्र तुभ्यमस्मे एतेन गातुं हरिवो विदो नः		
आ नो ववृत्याः सुविताय देव विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्	१३	

॥ ८५ ॥ ( ऋ० १।१७४।१-१० ) त्रिष्टुप् ।

त्वं राजेन्द्र ये च देवा रक्षा नृन् पाह्यसुर त्वमस्मान् ।		
त्वं सत्पतिर्मघवा नस्तरुत्रस्त्वं सत्यो वसवानः सहोदाः	१	
दनो विश इन्द्र मूधवाचः सप्त यत् पुरः शर्म शारंकीर्दत् ।		
ऋणोरपो अनवद्याणा यूने वृत्रं पुरुकुत्साय रन्धीः	२	१०७०
अजा वृत् इन्द्र शूरपत्नीर्यां च येभिः पुरुहूत नूनम् ।		
रक्षो अग्निशुषं तूर्वयाणं सिंहो न दमे अपांसि वस्तोः	३	
शेषन् नु त इन्द्र सस्मिन् योनौ प्रशस्तये पवीरवस्य म्हा ।		
सुजदणास्यव यद् युधा गास्तिष्ठद्वरी धृषता मृष्ट वाजान्	४	
वह कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन् त्स्यमन्यू ऋञ्जा वातस्याश्वा ।		
प्र सूरश्चक्रं वृहतावुभीके ऽभि स्पृधो यासिषद् वज्रबाहुः	५	
जघन्वाँ इन्द्र मित्रेकश्चोदप्रवृद्धो हरिवो अदाशून् ।		
प्र ये पश्यन्नर्यमणं सचायोस्त्वया शूर्ता वहमाना अपत्यम्	६	
रपत् कविरिन्द्रार्कसातौ क्षां वासायोपबर्हिणीं कः ।		
करत् तिस्रो मघवा दानुचित्रा नि वुर्योणे कुर्यवाचं मूधि श्रेत्	७	१०७५

सना ता त इन्द्र नव्या आगुः सहो नभोऽविरणाय पूर्वीः  
 भिनत् पुरो न भिको अदेवी नैनमो वधरदेवस्य पीयोः ८  
 त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमती ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः ।  
 प्र यत् समुद्रमतिं शूर पर्षिं पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति ९  
 त्वमस्माकमिन्द्र विश्वधं स्या अवृकतमो नरां नृपाता ।  
 स नो विश्वासां स्पृधां सहोदा विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् १०

॥ ८६ ॥ ( ऋ० १।१७५।१-६ ) १ स्कन्धोत्रीवी बृहतीः २-५ अनुष्टुप्, ६ त्रिष्टुप् ।

मत्स्यपायि ते महः पात्रस्येव हरिवो मत्सरो मदः । वृषां ते वृष्णा इन्दुर्वाजी सहस्रसातमः १  
 आ नस्ते गन्तु मत्सरा वृषा मदो वरेण्यः । सहावां इन्द्र सानसिः पृतनाषाळमर्त्यः २ १०८०  
 त्वं हि शूरः सनिता चोदयो मनुषो रथम् । सहावान् दस्युमव्रतमोषः पात्रं न शोचिषा ३  
 मुषाय सूर्यं कवे चक्रमीशान् ओजसा । वह शुष्णाय वधं कुत्सं वातस्याश्वैः ४  
 शुष्मिन्तमो हि ते मदो द्युम्निन्तम उत क्रतुः । वृत्रघ्ना वरिवोविदा मंसीष्ठा अश्वसातमः ५  
 यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मय इवापो न तृष्यते बभूथ ।  
 तामनु त्वा निविदं जोहवीमि विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ६

॥ ८७ ॥ ( ऋ० १।१७६।१-६ ) अनुष्टुप्, ६ त्रिष्टुप् ।

मत्सि नो वस्यइष्टय इन्द्रमिन्द्रो वृषा विश । ऋघायमाण इन्वसि शत्रुमन्ति न विन्दसि १ १०८५  
 तस्मिन्ना वैशया गिरो य एकश्र्वर्षणीनाम् । अनु स्वधा यमुष्यते यवं न चर्कृषद् वृषा २  
 यस्य विश्वानि हस्तयोः पश्र क्षितीनां वसु । स्पाशयस्व यो अस्मधुग् दिव्येवाशनिर्जहि ३  
 असुन्वन्तं समं जहि दूणाशं यो न ते मयः । अस्मभ्यमस्य वेदनं वृद्धि सूरिश्रिदोहते ४  
 आवो यस्य द्विर्हसो ऽर्केषु सानुपगसत् । आजविन्द्रस्येन्वो प्रावो वाजेषु वाजिनम् ५  
 यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मय इवापो न तृष्यते बभूथ ।  
 तामनु त्वा निविदं जोहवीमि विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ६ १०९०

॥ ८८ ॥ ( ऋ० १।१७७।१-६ ) त्रिष्टुप् ।

आ चर्षणिप्रा वृषभो जनानां राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः ।  
 स्तुतः श्रवस्यन्नवसोर्प मद्रिग् युक्त्वा हरी वृषणा याह्यर्वाङ् १  
 ये ते वृषणो वृषभास इन्द्र ब्रह्मयुजो वृषरथासो अत्याः ।  
 तां आ तिष्ठ तेभिरा याह्यर्वाङ् हवामहे त्वा सुत इन्द्र सोमै २  
 आ तिष्ठ रथं वृषणं वृषां ते सुतः सोमः परिषिक्त्वा मधूनि ।  
 युक्त्वा वृषभ्यां वृषभ क्षितीनां हरिभ्यां याहि प्रवतोर्प मद्रिक् ३

अयं यज्ञो देवया अयं मियेध इमा ब्रह्माण्ययमिन्द्र सोमः ।  
 स्तीर्णं बर्हिरा तु शक्र प्र याहि पिबा निषद्य वि मुचा हरी इह ४  
 ओ सुष्टुत इन्द्र याह्यर्वा—डुप ब्रह्माणि मान्यस्य कारोः ।  
 विद्याम वस्तोरवसा गुणन्तो विद्यामेधं वृजनं जीरदानुम् ५ १०९५

॥ ८९ ॥ ( ऋ० १।६७८।१-५ )

यन्द्र स्या त इन्द्र भृष्टिरस्ति यया बभूथ जरितृभ्य ऊती ।  
 मा नः कामं मह्यन्तमा धग विश्वा ते अस्यां पर्याप आयोः १  
 न घा राजेन्द्र आ दभन्नो या नु स्वसारा कृणवन्त योनी ।  
 आपश्चिदस्मै सुतुका अवेषन् गमन्न इन्द्रः सख्या वयश्च २  
 जेता नृभिरिन्द्रः पृत्सु शूरः श्रोता हवं नाधमानस्य कारोः ।  
 प्रभर्ता रथं द्वाशुष उपाक उद्यन्ता गिरा यदि च त्मना भूत ३  
 एवा नृभिरिन्द्रः सुश्रवस्या प्रखादः पृक्षो अभि मित्रिणो भूत ।  
 समर्य इषः स्तवते विवाचि सत्राकरो यजमानस्य शंसः ४  
 त्वया वयं मधवन्निन्द्र शत्रू—नभि प्याम महतो मन्यमानान् ।  
 त्वं ज्ञाता त्वमु नो वृधे भू—विद्यामेधं वृजनं जीरदानुम् ५ ११००

॥ ९० ॥ ( ऋ० २।११।१-२१ )

( ११०१-१२३७ ) गृत्समद ( आंगिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् ) भार्गवः शौनकः । विराट्स्थाना, २१ त्रिष्टुप् ।

श्रुधी हवमिन्द्र मा रिषण्यः स्याम ते द्वावने वसूनाम् ।  
 इमा हि त्वामूर्जो वर्धयन्ति वसूयवः सिन्धवो न क्षरन्तः १  
 सूजो महीरिन्द्र या अपिन्वः परिण्ठिता अहिना शूर पूर्वीः ।  
 अमर्त्यं चिद् द्वासं मन्यमान—मवाभिनदुक्थैर्वावृधानः २  
 उक्थेष्विन्धु शूर येषु चाकन् त्तोमेण्विन्द्र रुद्रियेषु च ।  
 तुभ्येद्वेता यासु मन्दसानः प्र वायवे सिंस्रते न शुभ्राः ३  
 शुभ्रं नु ते शुष्मं वर्धयन्तः शुभ्रं वज्रं बाहोर्दधानाः ।  
 शुभ्रस्त्वमिन्द्र वावृधानो अस्मे दासीर्विशः सूर्येण सहाः ४  
 गुहा हितं गुह्यं गूळहमस्व—पीवृतं मायिनं क्षियन्तम् ।  
 उतो अपो द्यां तस्तभ्वास—महन्नहिं शूर वीर्येण ५ ११०५  
 स्तवा नु त इन्द्र पूर्वा महा—न्युत स्तवाम नूतना कृतानि ।  
 स्तवा वज्रं बाहोरुशन्तं स्तवा हरी सूर्यस्य केतू ६

हरी नु त इन्द्र वाजयन्ता घृतश्चुतं स्वारमस्वाष्टाम् ।	
वि समना भूमिप्रथिष्ठा—ऽरंस्त पर्वतश्चित् सख्यन्	७
नि पर्वतः साद्यप्रयुच्छन् त्सं मातृभिर्वावशानो अक्रान् ।	
दूरे पारे वाणीं वर्धयन्त इन्द्रेषितां धमनिं पप्रथन् नि	८
इन्द्रो मह्यं सिन्धुमाशयानं मायाविनीं वृत्रमस्फुरन्निः ।	
अरेजेतां रोदसी भियाने कर्निकदतो वृष्णो अस्य वज्रात्	९
अरोरवीद वृष्णो अस्य वज्रा ऽमानुषं यन्मानुषो निजूर्वात् ।	
नि मायिनो दानवस्य माया अपादयत् पपिवान्सुतस्य	१० १११०
पिवापिबेदिन्द्र शूर सोमं मन्दन्तु त्वा मन्दिनः सुतासः ।	
पूणन्तस्ते कृक्षी वर्धयन्त्वित्—त्था सुतः पौर इन्द्रमाव	११
त्वे इन्द्राप्यभूम विप्रा धियं वनेम ऋतया सर्पन्तः ।	
अवस्यवो धीमहि प्रशस्तिं सद्यस्तं रायो दावने स्याम	१२
स्याम ते त इन्द्र ये त ऊती अवस्यव ऊर्जे वर्धयन्तः ।	
शुष्मिन्तमं यं चाकनाम देवा—ऽस्मे रयिं रासि वीरवन्तम्	१३
रासि क्षयं रासि मित्रमस्मे रासि शर्ध इन्द्र मारुतं नः ।	
सजोषसो ये च मन्दसानाः प्र वायवः पान्यग्रणीतिम्	१४
व्यन्त्वित्नु येषु मन्दसान—स्तूपत सोमं पाहि इन्द्रादिन्द्र ।	
अस्मान्तसु पृत्स्वा तरुत्रा—ऽवर्धयो द्यां बृहद्विरुक्तेः	१५ १११५
बृहन्त इन्नु ये ते तरुत्रो—क्थेभिर्वा सुम्नमाविवासान् ।	
स्तृणानासो बर्हिः पस्त्यावत त्वोता इदिन्द्र वाजमगमन्	१६
उग्रेष्वित्नु शूर मन्दसान—स्त्रिकद्रुकेषु पाहि सोममिन्द्र ।	
प्रदोधुवच्छ्रुषुपु प्रीणानो याहि हरिभ्यां सुतस्य पीतिम्	१७
धिष्वा शर्वः शूर येन वृत्र—मवाभिन्द दानुमौर्णवाभम् ।	
अपावृणोज्योतिरार्याय नि संव्यतः सावि दस्युरिन्द्र	१८
सनेम ये त ऊतिभिस्तरन्तो विश्वाः स्पृध आर्येण दस्यून् ।	
अस्मभ्यं तत त्वाप्त्रं विश्वरूप—मरन्धयः साख्यस्य त्रिताय	१९
अस्य सुवानस्य मन्दिनस्त्रितस्य न्यर्बुदं वावृधानो अस्तः ।	
अवर्तयन् सूर्यो न चक्रं भिनद् वृलमिन्द्रो अङ्गिरस्वान्	२० १११०

नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।	
शिक्षा स्तोतृभ्यो मातिं धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	२१
॥ ९१ ॥ ( ऋ० २।१२।१-१५ ) त्रिष्टुप् ।	
यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत् ।	
यस्य शुष्माद् रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य महा स जनास इन्द्रः	१
यः पृथिवीं व्यथमानामहंहद् यः पर्वतान् प्रकुपितो अरम्णात् ।	
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो ग्रामस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः	२
यो हत्वाहिमरिणात् सप्त सिन्धून् यो गा उदाजदपथा वलस्य ।	
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक् समत्सु स जनास इन्द्रः	३
येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः ।	
श्वघ्नीव यो जिगीवाँ लक्षमाद्वर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः	४ ११२५
यं स्मां पृच्छन्ति कुह सेतिं घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम ।	
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः	५
यो रधस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरिः ।	
युक्तग्राण्णो योऽविता सुशिपः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः	६
यस्याश्वासः प्रादिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः ।	
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः	७
यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः ।	
समानं चिद् रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः	८
यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते ।	
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत् स जनास इन्द्रः	९ ११२०
यः शश्वतो मह्येनो दधाना नमन्यमानाञ्छवीं जघान ।	
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः	१०
यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत् ।	
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः	११
यः सप्तर्श्मिवृषभस्तुर्विष्मा नवासृजत् सर्तवे सप्त सिन्धून् ।	
यो रीहिणमस्फुरद् वज्रबाहु र्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः	१२
द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते ।	
यः सोमपा निचितो वज्रबाहु र्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः	१३

यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं	यः शंसन्तं यः शंशमानमूती ।		
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो	यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः	१४	११३५
यः सुन्वते पचते दुध आ चिद्	वाजं दर्दपि स किलासि सत्यः ।		
वयं तं इन्द्र विश्वहं प्रियासः	सुवीरासो विदथमा वदेम	१५	

॥ ९० ॥ ( ऋ० २।१३।१-१३ ) जगती. १३ त्रिष्टुप ।

ऋतुर्जनित्री तस्या अपस्परि मक्षू जात आविशद् यासु वर्धते ।		
तदाहना अभवत् पिप्युषी पयोऽशोः पीयूषं प्रथमं तदुक्थ्यम्	१	
सधीमा यन्ति परि विभ्रतीः पयो विश्वप्स्न्याय प्र भरन्त भोजनम् ।		
समानो अधवा प्रवतामनुष्यदे यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः	२	
अन्वेको वदति यद् ददाति तद् रूपा मिनन्तर्दपा एक ईयते ।		
विश्वा एकस्य विनुदस्ति तिक्षते यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः	३	
प्रजाभ्यः पृष्टिं विभर्जन्त आसते रयिमिव पृष्ठं प्रभवन्तमायते ।		
असिन्वन् दंष्ट्रैः पितुरंति भोजनं यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः	४	११४०
अर्धाकृणोः पृथिवीं संहशे द्विवे यो धौतीनामहिहन्नारिणक् पथः ।		
तं त्वा स्तोमैभिरुदभिर्न वाजिनं देवं देवा अजनन्त्सास्युक्थ्यः	५	
यो भोजनं च दयसे च वर्धनं मार्दादा शुष्कं मधुमद् दुदोहिथ ।		
स शेवधिं नि दधिपे विवस्वति विश्वस्यैक ईशिषे सास्युक्थ्यः	६	
यः पुष्पिणीश्च प्रस्वश्च धर्मणा ऽधि दाने व्युवनीरधारयः ।		
यश्वासमा अजनो द्विद्युतो द्विव उरुर्बुवाँ अभितः सास्युक्थ्यः	७	
यो नार्मरं सहवसुं निहन्तवे पृक्षायं च दासवेशाय चावहः ।		
ऊर्जयन्त्या अपरिविष्टमास्यं मुतैवाद्य पुरुकृत सास्युक्थ्यः	८	
ज्ञतं वा यम्य दश साकमाद्य एकस्य श्रुष्टौ यन्द्रं चोदमाविथ ।		
अरज्जौ दस्यूनस्समुनब्दुभीतये सुप्राव्यो अभवः सास्युक्थ्यः	९	११४५
विश्वेदनु रोधना अस्य पौंस्यं द्वादुरस्मै दधिरे कृत्तवे धनम् ।		
पळस्तभ्रा विष्टिरः पञ्च संहशः परि परो अभवः सास्युक्थ्यः	१०	
सुप्रवाचनं तव वीर वीर्यं यदेकेन क्रतुना विन्दसे वसु ।		
जातूष्टिरस्य प्र वयः सहस्वतो या चकथं सेन्द्र विश्वास्युक्थ्यः	११	

अरमयः सरपसस्तराय कं तुर्वीतये च वध्याय च सुतिम् ।  
नीचा सन्तमुदैनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्सास्युक्थयः १२  
अस्मभ्यं तद् वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् ।  
इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून् बृहद् वदेम विदथे सुवीराः १३

॥ ९३ ॥ ( ऋ०२।१४।१-१२ ) त्रिष्टुप् ।

अध्वर्यवो भरतेन्द्राय सोममामत्रेभिः सिञ्चता मद्यमन्धः ।  
कामी हि वीरः सदर्मस्य पीतिं जुहोत वृष्णे तदिद्रेप वृष्टि १ ११५०  
अध्वर्यवो यो अपो वव्रिवांसं वृत्रं जघानाशन्यैव वृक्षम् ।  
तस्मा एतं भरत तद्दृशाय एष इन्द्रो अर्हति पीतिर्मस्य २  
अध्वर्यवो यो हृभीकं जघान यो गा उदाजदप हि वलं वः ।  
तस्मा एतमन्तरिक्षे न वातमिन्द्रं सोमैरोर्णुत जूर्न वस्त्रैः ३  
अध्वर्यवो य उरणं जघान नवं चक्वांसं नवतिं च बाहून् ।  
यो अबुद्धमव नीचा बबाधे तमिन्द्रं सोमस्य भूथे हिनोत ४  
अध्वर्यवो यः स्वश्रं जघान यः शुष्णामशुषं यो व्यंसम् ।  
यः पिपुं नमुचिं यो रुधिक्रां तस्मा इन्द्रायान्धसो जुहांत ५  
अध्वर्यवो यः शतं शम्बरस्य पुरो विभेदाश्मनेव पूर्वाः ।  
यो वचिनः शतमिन्द्रः सहस्रमपावपद भरता सोममस्मै ६ ११५५  
अध्वर्यवो यः शतमा सहस्रं भूम्या उपस्थेऽवपज्जन्वान् ।  
कुत्सस्यायोरतिथिग्वस्य वीरान् न्यावृणग् भरता सोममस्मै ७  
अध्वर्यवो यन्नरः कामयाध्वे श्रुष्टी वहन्तो नशथा तदिन्द्रे ।  
गर्भस्तिपूतं भरत श्रुतायेन्द्राय सोमं यज्यवो जुहोत ८  
अध्वर्यवः कर्तना श्रुष्टिमस्मै वने निपूतं वन उन्नयध्वम् ।  
जुषाणो हस्त्यमभि वावशे व इन्द्राय सोमं मकुरं जुहोत ९  
अध्वर्यवः पयसोध्र्यथा गोः सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् ।  
वेदाहमस्य निभृतं म एतद् दित्सन्तं भूर्यो यजतश्चिकेत १०  
अध्वर्यवो यो विव्यस्य वस्वो यः पार्थिवस्य क्षम्यस्य राजा ।  
तमूर्धरं न पृणता यवेनेन्द्रं सोमेभिस्तदपो वो अस्तु ११ ११६०  
अस्मभ्यं तद् वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् ।  
इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून् बृहद् वदेम विदथे सुवीराः १२



॥ ९४ ॥ ( ऋ० २।१५।१-१० )

प्र घा न्वस्य महतो महानि सत्या सत्यस्य करणानि वोचम् ।	
त्रिकटुकेष्वपिबत् सुतस्याऽस्य मद्दे अहिमिन्द्रो जघान	१
अवंशे घामस्तभायद् बृहन्तमा रोदसी अपृणदन्तरिक्षम् ।	
स धारयत् पृथिवीं पप्रथच्च सोमस्य ता मद् इन्द्रश्चकार	२
समेव प्राचो वि मिमाय मानैर्वज्रेण खान्यतृणन्नदीनाम् ।	
वृथासृजत् पृथिभिर्दीर्घयाथैः सोमस्य ता मद् इन्द्रश्चकार	३
स प्रवोळ्ळृन् परिगत्यां वृभीति विश्वमधागायुधमिन्द्रे अग्नौ ।	
सं गोभिरश्वैरसृजद् रथेभिः सोमस्य ता मद् इन्द्रश्चकार	४
स ईं महीं धुनिमेतोररम्णात् सो अस्नातृनपारयत् स्वस्ति ।	
त उत्स्राय रयिमभि प्र तस्थुः सोमस्य ता मद् इन्द्रश्चकार	५
सोदञ्चं सिन्धुमरिणान्महित्वा वज्रेणान् उपसः सं पिपेप ।	
अजवसो जविनीभिर्विवृश्चन् त्सोमस्य ता मद् इन्द्रश्चकार	६
स विद्वौ अपगोहं कनीनांमाविर्भवन्नृदतिष्ठत् परावृक् ।	
प्रति श्रेणः स्थाद् व्यनगचष्ट सोमस्य ता मद् इन्द्रश्चकार	७
मिनद् बलमङ्गिरोभिर्गृणानो वि पर्वतस्य हंहितान्यैरत् ।	
रिणग्रोधांसि कृत्रिमाणेषां सोमस्य ता मद् इन्द्रश्चकार	८
स्वप्नेनाभ्युप्या चुमुरिं धुनिं च जघन्थ दस्युं प्र वृभीतिमावः	
रम्भी चिदत्र विविक्वे हिरण्यं सोमस्य ता मद् इन्द्रश्चकार	९
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनीं ।	
शिक्षां स्तोतृभ्यो मातिं धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	१०

॥ ९५ ॥ ( ऋ० २।१६।१-९ ) जगतीः ९ त्रिष्टुप् ।

प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय सुष्टुतिमग्नाविव समिधाने हविर्भरे ।	
इन्द्रमजुयं जरयन्तमुक्षितं सनाद् युवानमवसे हवामहे	१
यस्मादिन्द्राद् बृहतः किं चनेमृते विश्वान्यस्मिन्त्संभूताधि वीर्यां ।	
जठरे सोमं तन्वीऽ सहो महो हस्ते वज्रं भरति शीर्षणि क्रतुम्	२
न क्षोणीभ्यां परिभ्वे त इन्द्रियं न समुद्रैः पर्वतैरिन्द्र ते रथः ।	
न ते वज्रमन्वश्रोति कश्चन यदाशुभिः पतसि योजना पुरु	३

विश्वे ह्यस्मै यजताय धृष्णवे	क्रतुं भरन्ति वृषभाय सश्र्वते ।		
वृषा यजस्व हविषा विदुष्टरः	पिबेन्द्र सोमं वृषभेण भानुना	४	११७५
वृष्णः कोशः पवते मध्व ऊर्मि	वृषभान्नाय वृषभाय पातवे ।		
वृषणाध्वर्यु वृषभासो अद्रयो	वृषणं सोमं वृषभाय सुष्वति	५	
वृषा ते वज्र उत ते वृषा रथो	वृषणा हरीं वृषभाण्यायुंधा ।		
वृष्णो मर्दस्य वृषभ त्वमीशिष	इन्द्र सोमस्य वृषभस्य तृष्णुहि	६	
प्र ते नावं न समने वचस्युवं	ब्रह्मणा यामि सर्वनेषु दाधृषिः ।		
कृविन्नो अस्य वचसो निबोधिष	दिन्द्रमुत्सं न वसुनः सिचामहे	७	
पुरा संबाधाद्भ्या ववृत्स्व नो	धेनुर्न वत्सं यवसस्य पिप्युषीं ।		
सकृत्सु ते सुमतिभिः शतक्रतो	सं पत्नीभिर्न वृषणो नसीमहि	८	
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे	दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनीं ।		
शिक्षा स्तोतृभ्यो मार्ति धग्भगो नो	बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	९	११८०

॥ ९६ ॥ ( ऋ० २।१७।१-९ ) जगती; ८-९ त्रिष्टुप् ।

तदस्मै नव्यमङ्गिरस्वदर्चत	शुष्मा यदस्य प्रत्नथोदीरते ।		
विश्वा यद् गोत्रा सहसा परीवृता	मदे सोमस्य दंहितान्यैरयत्	१	
स भूतु यो ह प्रथमाय धार्यस	ओजो मिमानो महिमानमार्तिरत् ।		
शूरो यो युत्सु तन्वं परिव्यत	शीर्षणि द्यां महिना प्रत्यमुश्रत	२	
अर्धाकृणोः प्रथमं वीर्यं महद्	यदस्याग्रे ब्रह्मणा शुष्ममैरयः ।		
रथेष्ठेन हर्यश्वेन विच्युताः	प्र जीरयः सिस्रते सध्युक् पृथक्	३	
अधा यो विश्वा भुवनाभि मज्जने	शानकृत् प्रवया अभ्यवर्धत ।		
आद् रोदसी ज्योतिषा वह्निरातनोत्	सीव्यन् तमांसि दुर्धिता समव्ययत्	४	
स प्राचीनान् पर्वतान् दंढदोर्जसा	धराचीनमकृणोवृषामपः ।		
अधारयत् पृथिवीं विश्वधार्यस	मस्तभ्रान्मायया द्यामवस्रसः	५	११८५
सास्मा अरं बाहुभ्यां यं पिताकृणोद्	विश्वस्मादा जनुषो वेदसस्परिं ।		
येना पृथिव्यां नि क्रिविं शयधै	वज्रेण हत्व्यवृणक् तुविष्वाणिः	६	
अमाजूरिव पित्रोः सर्चा सुती	समानादा सर्वसस्त्वामिये भगम् ।		
कृधि प्रकृतमुप मास्या भर	दुद्धि भागं तन्वोऽ येन मामहः	७	

भोजं त्वामिन्द्र वयं हुवेम वृद्धिंमिन्द्रापांसि वाजान् ।  
 अविद्धीन्द्र चित्रया न ऊती कृधि वृषन्निन्द्र वस्यसो नः ८  
 नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।  
 शिक्षा स्तोतृभ्यो मातिं धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ९

॥ ९७ ॥ ( ऋ० २।१८।१-९ ) त्रिष्टुप ।

प्राता रथो नवो योजि सस्नि—श्वतुर्युगास्त्रिकशः सत्तरश्मिः ।  
 दशरित्रो मनुष्यः स्वर्षाः स इष्टिभिर्मतिभी रंघो भूत १ ११९०  
 सास्मा अरं प्रथमं स द्वितीयं—मुतो तृतीयं मनुषः स होता ।  
 अन्यस्या गर्भमन्य ऊ जनन्त सो अन्येभिः सचते जेन्यो वृषा २  
 हरी नु कं रथ इन्द्रस्य योज—माये सूक्तेन वचसा नवेन ।  
 मो पु त्वामत्र बहवो हि विप्रा नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ३  
 आ द्वाभ्यां हरिभ्यामिन्द्र या—ह्या चतुर्भिरा षड्भिर्ह्यमानः ।  
 आष्टाभिर्दशभिः सोमपेयं—मयं सुतः सुमख मा मृधस्कः ४  
 आ विंशत्या त्रिंशता याह्यर्वा—डा चत्वारिंशता हरिभिर्युजानः ।  
 आ पञ्चाशता सुरथेभिरिन्द्रा—ऽऽ षष्ट्या सप्तत्या सोमपेयम् ५  
 आशीत्या नवत्या याह्यर्वा—डा शतेन हरिभिरुह्यमानः ।  
 अयं हि ते शुनहोत्रेषु सोम इन्द्र त्वाया परिषिक्तो मदाय ६ ११९५  
 मम ब्रह्मेन्द्र याह्यच्छा विश्वा हरी धुरि धिष्वा रथस्य ।  
 पुरुत्रा हि विहव्यो बभूथा—ऽस्मिञ्छूरं सर्वाने मादयस्व ७  
 न म इन्द्रेण सख्यं वि योष—वृस्मभ्यमस्य दक्षिणा दुहीत ।  
 उप ज्येष्ठे वरुथे गर्भस्तौ प्रायेप्राये जिगीवांसः स्याम ८  
 नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।  
 शिक्षा स्तोतृभ्यो मातिं धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ९

॥ ९८ ॥ ( ऋ० २।१९।१-९ )

अपायस्यान्धसो मदाय मनीषिणः सुवानस्य प्रयसः ।  
 यस्मिन्निन्द्रः प्रादिवं वावृधान ओको वृधे ब्रह्मण्यन्तश्च नरः १  
 अस्य मन्वानो मध्वो वज्रहस्तो ऽहिमिन्द्रो अणोवृतं वि वृश्चत् ।  
 प्र यद् वयो न स्वसराण्यच्छा प्रयांसि च नदीनां चकृमन्त २ ११००

स माहि॑न इन्द्रो॑ अ॒णो॑ अ॒पां प्रै॑रयदहिहाच्छा॑ समुद्रम् ।	
अ॒र्जन॑यत् सूर्यं॑ वि॒दद् गा॑ अ॒क्तु॒नाह्नां॑ व॒यु॒ना॒नि सा॑धत् ३	
सो अ॒प्र॒ती॒नि॒ मन॑वे पुरु॒णी—न्द्रो॑ दाशद् वाशुषे॑ ह॒न्ति वृ॒त्रम् ।	
सद्यो॑ यो नृ॒भ्यो॑ अ॒त॒सा॒य्यो भू॒त् प॑स्पृ॒धाने॑भ्यः सूर्य॑स्य सा॒ती ४	
स सु॒न्व॒त इन्द्रः॑ सूर्य॑मा—ऽऽ वे॒वो रि॑ण॒ङ्म॒र्त्या॑य स्त॒वान् ।	
आ यद् र॒यिं गु॑हर्दवद्यमस्मै॑ भ॒रदं॑शं नै॒तशो॑ द॒शस्य॑न् ५	
स र॑न्धयत् स॒दिवः॑ सा॒रथ्ये॑ शु॒ष्णम॑शुषं कुर्य॑वं कु॒त्सा॑य ।	
दिवो॑दासाय न॒वतिं॑ च न॒वे—न्द्रः॑ पुरो॒ व्यै॑रच्छ॒म्बर॑स्य ६	
ए॒वा तं॑ इन्द्रो॑च॒र्थम॑हेम श्र॒व॒स्या न॑ त्मना॒ वा॒ज॒र्य॑न्तः ।	
अ॒श्या॑म॒ तत् सा॑र्त्तमाशुषा॒णा न॒नमो॑ व॒ध॒रदे॑वस्य पी॒योः ७	१२०५
ए॒वा ते॑ गृ॒त्स॒म॒दाः शू॒र म॒न्मा—ऽव॑स्यवो न व॒यु॒ना॒नि तक्षुः॑ ।	
ब्र॒ह्म॒ण्य॑न्त इन्द्र॑ ते नवी॒य इ॒षमू॑र्जं सु॒क्षितिं॑ सु॒म्नम॑शुः ८	
नूनं॑ सा ते प्रति॒ वरं॑ ज॒रित्रे॑ दु॒ही॒यदि॑न्द्र दक्षि॒णा म॑घोनी ।	
शि॒क्षा स्तो॑तृ॒भ्यो मा॑तिं ध॒ग्म॒गो नो बृ॒हद् व॑दे॒म वि॒दथे॑ सु॒वीराः॑ ९	

॥ ९९ ॥ ( ऋ० २।२०।१-९ ) त्रिष्टुप्; ३ विराड् रूपा ।

व॒यं ते॑ व॒यं इन्द्र॑ वि॒द्धि षु णः॑ प्र भ॑रामहे वा॒ज॒यु॒र्न रथ॑म् ।	
वि॒प॒न्य॒वो दी॑र्ध्यतो मनी॒षा सु॒म्नमि॑र्यक्षन्त॒स्त्वाव॑तो नृन् १	
त्वं न॑ इन्द्र॒ त्वाभि॑रू॒ती त्वा॑यतो अ॒भिष्टि॑पासि॒ जनान्॑ ।	
त्वमि॑नो वाशुषो॑ वरू॒ते—त्था॑धी॒रभि॑ यो नक्षति॒ त्वा २	
स नो॑ यु॒वेन्द्रो॑ जोहृ॒त्रः सखा॑ शि॒वो न॒राम॑स्तु पा॒ता ।	
यः शंस॑न्तं यः शंश॒मान॑मू॒ती प॑च॒न्तं च॑ स्तु॒वन्तं॑ च प्र॒णोष॑त ३	१२१०
तमु॑ स्तुष॒ इन्द्रं॑ तं गृ॒णीषे॑ यस्मिन् पुरा॑ वा॒वृधुः॑ शा॒शुदु॑श्च ।	
स व॒स्वः का॑मं पी॒पर॑दि॒यानो॑ ब्र॒ह्म॒ण्य॑तो नू॒र्तन॑स्यायोः ४	
सो अ॒ङ्गि॒रसा॑मु॒चथा॑ जु॒जु॒ष्वान् ब्र॒ह्मा तू॒तोदि॑न्द्रो॑ गा॒तुमि॑ष्णन् ।	
मु॒ष्णन्नु॑षसः सूर्ये॑ण स्त॒वान—श॑स्य चिच्छि॒भ्रथ॑त् पू॒र्व्याणि॑ ५	
स ह॑ श्रु॒त इन्द्रो॑ नाम॒ वेव॑ ऊ॒र्ध्वो भु॑व॒न्मनु॑षे दृ॒स्मर्त॑मः ।	
अ॒व प्रि॑यम॒र्शसा॑नस्य॒ साहा—ञ्छि॑रो॒ भर॑द् वा॒सस्य॑ स्व॒धावा॑न् ६	
स वृ॒त्रहे॑न्द्रः कृ॒ष्णयो॑नीः पुरं॑दू॒रो दा॑सी॒रैर्य॑द् वि ।	
अ॒र्जन॑यन् मन॒वे क्षा॑म॒पश्च॑ स॒न्ना शंसं॑ य॒र्ज॑मानस्य तू॒तोत् ७	

तस्मै तवस्यमनु दायि सत्रेन्द्राय कुवेभिरर्णसातो ।

प्रति यदस्य वज्रं बाह्वोर्धुर्हृत्वी दस्युन् पुर आर्यसीर्नि तारीत्

८

१२१५

नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रं दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।

शिक्षां स्तोतृभ्यो मातिं धग्भगो नो बृहद् वेदेम विदथे सुवीगः

९

॥ १०० ॥ ( ऋ० २।११।१-६ ) जगती; ६ त्रिष्टुप् ।

विश्वजिते धनजिते स्वजिते सत्राजिते नृजिते उर्वराजिते ।

अश्वजिते गोजिते अजिते भरेन्द्राय सोमं यजताय हर्यतम्

१

अभिभुवेऽभिभृगाय वन्वते ऽषाळहाय सहमानाय वेधसे ।

तुविग्रये वह्नये दुष्टरीतवे सत्रासाहे नम इन्द्राय वोचत

२

सत्रासाहो जनभक्षो जनंसहश्च्यवनो युधमो अनु जोषमुक्षितः ।

वृत्तचयः सहुरिर्विश्वारित इन्द्रस्य वोचं प्र कृतानि वीर्या

३

अनानुदो वृषभो दोर्धनो वधो गम्भीर ऋष्वो असंमष्टकाव्यः ।

रधचोदः श्वथनो वीळितस्पृथुरिन्द्रः सुयज्ञ उषसः स्वर्जनत

४

१२१०

यज्ञेन गातुमप्तुरो विविद्विरे धियो हिन्वाना उशिजां मनीषिणः ।

अभिस्वरा निषदा गा अवस्यव इन्द्रे हिन्वाना द्रविणान्याशत

५

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मै ।

पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वादानं वाचः सुदिनत्वमहाम्

६

॥ १०१ ॥ ( ऋ० २।२।१-४ ) १ अष्टिः, २-३ अतिशकरी, ४ अष्टिः अनिशकरी वा ।

त्रिकंठुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृपत् सोममपिबद् विष्णुना सुतं यथावशत् ।

स ईं ममाकु महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं सश्वद् देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः १

अध त्विषीमो अभ्योजसा क्रिषिं युधाभवदा रोदसी अपृणदस्य मज्मना प्र वावृधे ।

अधत्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत सैनं सश्वद् देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः २

साकं जातः कर्तुना साकमोजसा ववक्षिथ साकं वृद्धो वीर्यैः सासहिर्मृधो विचर्षणिः ।

दाता राधः स्तुवते काम्यं वसु सैनं सश्वद् देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ३ १२१५

तव त्यन्नयं नृतोऽप इन्द्र प्रथमं पूर्यं द्विवि प्रवाच्यं कृतम् ।

यद् देवस्य शर्वसा प्रारिणा असुं रिणन्नपः ।

भुवद् विश्वमभ्यादेवमोजसा विदादूर्जं शतकर्तुर्विदादिषम्

४

॥ १०२ ॥ ( ऋ० २।३।१-५; ७-८; १० ) [ ८ पूर्वाऽर्धस्य सरस्वती ] । त्रिष्टुप् ।

ऋतं देवाय कृण्वते संवित्र इन्द्रायाहिन्ने न रमन्त आपः ।

अहरहर्यात्यक्षुरपां कियत्या प्रथमः सर्ग आसाम्

१

यो वृत्राय सिनमत्राभरिष्यत् प्र तं जनित्री विदुष उवाच ।		
पथो रदन्तीरनु जोषमस्मै द्विवेदिवे धुनयो यन्त्यर्थम्	२	
ऊर्ध्वो ह्यस्थादध्यन्तरिक्षे ऽर्धा वृत्राय प्र वधं जभार ।		
मिहं वसान उप हीमदुद्रोत् तिग्मार्युधो अजयच्छत्रमिन्द्रः	३	
बृहस्पते तपुषाश्रैव विध्य वृकद्वरसो असुरस्य वीरान् ।		
यथा जघन्थ धृषता पुरा चि—देवा जहि शत्रुमस्माकमिन्द्र	४	१२३०
अव क्षिप द्विवो अश्मानमुच्चा येन शत्रुं मन्दसानो निजूर्वाः ।		
तोकरस्य सातो तनयस्य भूर—रस्माँ अर्धं कृणुतादिन्द्र गोनाम्	५	
न मां तमन्न श्रमन्नोन तन्द्र—न्न वोचाम मा सुनोतेति सोमम् ।		
यो मे पृणाद् यो द्रुद् यो निबोधाद् यो मां सुन्वन्तमुप गोभिरायत	७	
सरस्वति त्वमस्माँ अविद्धि मरुत्वती धृषती जेषि शत्रून् ।		
त्यं चिच्छधन्तं तविषीयमाण—मिन्द्रो हन्ति वृषभं शण्डिकानाम	८	
अस्माकैभिः सत्वभिः शूर शूरै—वीर्यां क्रुधि यानि ते कर्त्वानि ।		
ज्योगभूवन्ननुधूपितासो हत्वी तेषामा भरा नो वसूनि	१०	

॥ १०३ ॥ ( ऋ० २।४।१।१०-१२ ) गायत्री ।

इन्द्रो अङ्ग महद् भय—मभी षट्प चुच्यवत् । स हि स्थिरो विचर्षणिः	१०	१२३५
इन्द्रश्च मूळयाति नो न नः पश्चादुद्यं नशत । भद्रं भवाति नः पुरः	११	
इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत । जेता शत्रून् विचर्षणिः	१२	१२३७

॥ १०४ ॥ ( ऋ० ३।३।१-२२ ) ( १२३८-१४६६ ) गायिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप ।

इच्छन्ति त्वा सोम्यासुः सर्वायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि ।		
तिर्तिक्षन्ते अभिशस्ति जनाना—मिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रक्रेतः	१	
न ते दूरे परमा चिद् रजां—स्या तु प्र याहि हरिवो हरिभ्याम् ।		
स्थिराय वृष्णे सर्वना कृतेमा युक्ता ग्रावाणः समिधाने अग्नौ	२	
इन्द्रः सुशिप्रो मघवा तरुत्रो महावातस्तुविकुर्मिर्क्रवावान् ।		
यदुग्रो धा बाधितो मर्त्येषु कर्षु—त्या ते वृषभ वीर्याणि	३	१२४०
त्वं हि ष्मा च्यावयन्नच्युता—न्येको वृत्रा चरसि जिघ्रमानः ।		
तव द्यावापृथिवी पर्वतासो ऽनु व्रताय निर्मितेव तस्थुः	४	
उताभये पुरुहूत श्रवोभि—रेको हृब्धमवदो वृत्रहा सन् ।		
इमे चिदिन्द्र रोदसी अपारे यत संगृभ्णा मघवन काशिरित ते	५	

प्र सू तं इन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्र ते वज्रः प्रमूणन्नेतु शत्रून् । जहि प्रतीचो अनुचः पराचो विश्वं सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु यस्मै धायुरदधा मर्त्यायाऽभक्तं चिद् भजते गेह्यं सः ।	६	
भद्रा तं इन्द्र सुमतिघृताचीं सहस्रदाना पुरुहूत रातिः सहदानुं पुरुहूत क्षियन्तं महस्तमिन्द्र सं पिणक् कुणारुम् । अमि वृत्रं वर्धमानं पियारु मपादमिन्द्र तवसा जघन्थ नि सामनामिषिरामिन्द्र भूमिं महीमपारां सदाने ससत्थ ।	७	
अस्तभ्नाद् द्यां वृषभो अन्तरिक्षं मर्षन्त्वापस्त्वयेह प्रसूताः अलातृणो वल इन्द्र व्रजो गोः पुरा हन्तोर्भयमानो वयार । सुगान् पथो अकृणोन्निरजे गाः प्रावन् वाणीः पुरुहूतं धमन्तीः एको द्वे वसुमती समीची इन्द्र आ पथौ पृथिवीमुत द्याम् । उतान्तरिक्षाकुभि नः समीक इषो रथीः सयुजः शूर वाजान् दिशः सूर्यो न मिनाति प्रदिष्टा त्रिवेदिवे हर्यश्वप्रसूताः । सं यदानलध्वन आदिदश्वैर्विमोचनं कृणुते तत् त्वस्य दिदक्षन्त उपसो यामन्नक्तो विवस्वत्या महि चित्रमनीकम् । विश्वं जानन्ति महिना यदागा दिन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि महि ज्योतिर्निहितं वक्षणा स्वामा पक्वं चरति बिभ्रती गौः । विश्वं स्वाद्भ्र संभृतमुस्त्रियायां यत् सीमिन्द्रो अदधाद् भोजनाय इन्द्र दृह्यं यामकोशा अभूवन् यज्ञाय शिक्ष गृणते सखिभ्यः । दुर्मायवो दुरेवा मर्त्यासो निषङ्किणो रिपवो हन्त्वासः सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रैर्जही न्येष्वाशनिं तपिष्ठां । वृश्चेमधस्ताद् वि रुजा सहस्व जहि रक्षो मघवन् रन्धयस्व उद् वृह रक्षः सहमूलमिन्द्र वृश्वा मध्यं प्रत्यग्रं शृणीहि । आ कीवतः सललूकं चकथं ब्रह्माद्विषे तपुषि हेतिमस्य स्वस्तये वाजिभिश्च प्रणेतः सं यन्महीरिष आसत्सि पूर्वीः । रायो वन्तारो बृहतः स्यामाऽस्मे अस्तु भर्ग इन्द्र प्रजावान् आ नो भर भर्गमिन्द्र द्युमन्तं नि ते कृष्णस्य धीमहि प्ररेके । ऊर्व इव पप्रथे कामो अस्मे तमा पृण वसुपते वसूनाम् इमं कामं मन्दया गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च । स्वर्यवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन्	८	१२४५
	९	
	१०	
	११	
	१२	
	१३	१२५०
	१४	
	१५	
	१६	
	१७	
	१८	१२५५
	१९	
	२०	

आ नो गोत्रा दृष्टिहि गोपते गाः समस्मभ्यं सनयो यन्तु वाजाः ।  
 विवक्षा असि वृषभ सत्यशुष्मो ऽस्मभ्यं सु मघवन् बोधि गोदाः २१  
 शुनं हुवेम मघवान्मिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।  
 शृण्वन्तमुग्रमतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् २२

॥ १०५ ॥ ( ऋ० ३।२।११-२२ ) कुशिक ऐषीगधिः, गाथिनो विश्वामित्रो वा ।

शासद् वह्निर्दुहितुर्नप्यं गाद् विद्राँ ऋतस्य दीधितिं सपर्यन् ।  
 पिता यत्र दुहितुः सेकमुञ्जन् त्सं शग्भ्येन मनसा दधन्वे १ १२६०  
 न जामये तान्वो रिक्थमारिक् चकार गर्भं सनितुर्निधानम् ।  
 यदीं मातरो जनयन्त वह्निमन्यः कर्ता सुकृतोरन्य क्रन्धन् २  
 अग्निर्जज्ञे जुह्वाँ रेजमानो महस्पुत्राँ अरुषस्य प्रयक्षे ।  
 महान् गर्भो मह्या जातमेषां मही प्रवृद्धर्यश्वस्य यज्ञैः ३  
 अभि जैत्रीरसचन्त स्पृधानं महि ज्योतिस्तमसो निरजानन् ।  
 तं जानतीः प्रत्युदायन्नुषासः पतिर्गवामभवदेक इन्द्रः ४  
 वीळौ सतीरभि धीरां अतृन्दन् प्राचाहिन्वन् मनसा सप्त विप्राः ।  
 विश्वामविन्दन् पथ्यामृतस्य प्रजानन्नित्ता नमसा विवेश ५  
 विदद् यदीं सरमा रुग्णमद्रेर्महि पार्थः पूर्यं सध्यक्कः ।  
 अग्रं नयत् सुपद्यक्षराणांमच्छा रवं प्रथमा जानती गात् ६ १२६५  
 अगच्छद्दु विप्रतमः सखीयन्नसूदयत् सुकृते गर्भमद्रिः ।  
 ससान मर्यो युवभिर्मखस्यन्नथाभवदङ्गिराः सद्यो अर्चन् ७  
 सतःसतः प्रतिमानं पुरोभू—विश्वा वेदु जनिमा हन्ति शुष्णमं ।  
 प्र णो विवः पदुवीर्गव्युरर्चन् त्सखा सखीरमुञ्चन्निरवद्यात् ८  
 नि गव्यता मनसा सेदुरकैः कृण्वानासो अमृतत्वार्थं गातुम् ९  
 इदं चिन्नु सदनं भूर्येषां येन मासाँ असिषासन्नृतेन  
 संपश्यमाना अमदन्नभि स्वं पर्यः प्रत्तस्य रेतसो दुर्घानाः ।  
 वि रोदसी अतपद् घोष एषां जाते निःष्ठा मदधुर्गोषु वीरान् १०  
 स जातेभिर्वृत्रहा सेदु हव्यै—रुदुस्रिया असृजदिन्द्रो अकैः ।  
 उरुच्यस्मै घृतवद् भरन्ती मधु स्वाद्यं दुदुहे जेन्या गौः ११ १२७०  
 पित्रे चिच्चक्रुः सदनं समस्मै महि त्विषीमत सुकृतो वि हि ख्यन् ।  
 विष्कभ्रन्तः स्कम्भनेना जनित्री आसीना ऊर्ध्वं रभसं वि मिन्वन् १२



मही यदि धिषणां शिश्रथे धात सद्योवृधं विभवं रोदस्योः ।	
गिरो यस्मिन्ननवद्याः समीची विश्वा इन्द्राय तविषीरनुत्ताः	१३
मह्या ते सख्यं वशिम शक्तीरा वृत्रघ्ने नियुतो यन्ति पूर्वीः ।	
महिं स्तोत्रमव आगन्म सूरैरस्माकं सु मघवन् बोधि गोपाः	१४
महि क्षेत्रं पुरु श्रन्द्रं विविद्रा नादित सखिभ्यश्चरथं समैरत ।	
इन्द्रो नृभिरजनद् दीद्यानः साकं सूर्यमुषसं गातुमग्निम्	१५
अपश्चिदेष विश्वोऽदमूनाः प्र सधीचीरसृजद् विश्वश्चन्द्राः ।	
मध्वः पुनानाः कविभिः पवित्रैर्युभिर्हिन्वत्यक्तुभिर्धनुत्रीः	१६
अनु कृष्णे वसुधित्ती जिहाते उभे सूर्यस्य मंहना यजत्रे ।	
परि यत् ते महिमानं वृजध्वे सखाय इन्द्र काम्या ऋजिप्याः	१७
पतिर्भव वृत्रहन्त्सूनृतानां गिरां विश्वायुर्वृषभो वयोधाः ।	
आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर्महान् महीभिरूतिभिः सरण्यन्	१८
तमङ्गिरस्वन्नमसा सपर्यन् नव्यं कृणोमि सन्यसे पुराजाम् ।	
द्रुहो वि याहि बहुला अदेवीः स्वश्च नो मघवन्त्सातये धाः	१९
मिहः पावकाः प्रतता अभूवन् त्वस्ति नः पिपृहि पारमासाम् ।	
इन्द्र त्वं रथिरः पाहि नो रिषो मक्ष्मक्षू कृणुहि गोजितो नः	२०
अदेदिष्ट वृत्रहा गोपतिर्गा अन्तः कृष्णां अरूपैर्धार्माभिर्गात ।	
प्र सूनृतां दिशमान ऋतेन दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः	२१
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।	
शृण्वन्तंमग्रमृतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	२२

॥ १०६ ॥ ( ऋ० ३।३२।१-१७ )

इन्द्र सोमं सोमपते पिबेमं माध्यंदिनं सर्वनं चारु यत् ते ।	
प्रपुथ्या शिप्रे मघवन्नृजीपिन् विमुच्या हरीं इह मादयस्व	१
गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र शुक्रं पिबा सोमं ररिमा ते मदाय ।	
ब्रह्मकृता मारुतेना गणेन सजोषा रुद्रैस्तृपदा वृषस्व	२
ये ते शुष्मं ये तविषीमवर्धन्नर्चन्त इन्द्र मरुतस्त ओजः ।	
माध्यंदिने सर्वने वज्रहस्त पिबा रुद्रेभिः सर्गणः सुशिप्र	३
त इन्वस्य मधुमद् विविप्र इन्द्रस्य शर्धो मरुतो य आसन् ।	
येभिर्वृत्रस्येषितो विवेदाऽमर्मणो मन्यमानस्य मर्म	४

मनुष्यादिन्द्रं सर्वानं जुषाणः पिबन् सोमं शश्वन्ते वीर्याय ।		
स आ ववृत्स्व हर्यश्व यज्ञैः सर्णयुभिर्पो अर्णा सिसर्षि	५	
त्वमपो यद्धं वृत्रं जघन्वाँ अर्त्याँ इव प्रासृजः सर्तवाजाँ ।		
शयानमिन्द्र चरता वधेन वत्रिवांसं परि देवीरदेवम्	६	
यजाम इन्नमसा वृद्धमिन्द्रं बृहन्तमूष्वमजरं युवानम् ।		
यस्य प्रिये ममर्तुर्यज्ञियस्य न रोदसी महिमानं ममाते	७	
इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि व्रतानि देवा न मिनन्ति विश्वे ।		
वृधार यः पृथिवीं द्यामुतेमां जजान सूर्यमेषसं सुदंसाः	८	
अद्वोध सत्यं तव तन्महित्वं सद्यो यज्जातो अपिबो ह सोमम् ।		
न द्याव इन्द्र तवसस्त ओजो नाहा न मासाः शरदो वरन्त	९	१२९०
त्वं सद्यो अपिबो जात इन्द्र मदाय सोमं परमे व्योमन् ।		
यद्ध द्यावापृथिवी आविवेशी रथाभवः पूर्यः कारुधायाः	१०	
अहन्नहिं परिशयानमर्णं ओजायमानं तुविजात तव्यान् ।		
न ते महित्वमनु भूदध द्यौ र्यदुन्यया स्फिग्या इ क्षामवस्थाः	११	
यज्ञो हि त इन्द्र वर्धनो भू दुत प्रियः सुतसोमो मियेधः ।		
यज्ञेन यज्ञमव यज्ञियः सन् यज्ञस्ते वज्रमहित्य आवत	१२	
यज्ञेनेन्द्रमवसा चक्रे अर्वा गैनं सुन्नाय नव्यसे ववृत्याम् ।		
यः स्तोमेभिर्वावुधे पूर्येभिर्यो मध्यमेभिरुत नूतनेभिः	१३	
विवेष यन्मा धिषणा जजान स्तवै पुरा पार्यादिन्द्रमहः ।		
अहंसो यत्र पीपरद् यथा नो नावेव यान्तमुभये हवन्ते	१४	१२९५
आपूर्णो अस्य कलशः स्वाहा सेक्तेव कोशं सिसिचे पिबधे ।		
समु प्रिया आववृत्रन् मदाय प्रदक्षिणिवृभि सोमास इन्द्रम्	१५	
न त्वा गभीरः पुरुहूत सिन्धु नार्द्रयः परि षन्तो वरन्त ।		
इत्था सखिभ्य इषितो यद्विन्द्रा ऽऽहृहं चिदरुजो गव्यमूर्धम्	१६	
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।		
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	१७	

॥ १०७ ॥ ( ऋ० ३।३।६-७ )

इन्द्रो अस्माँ अरवुद् वज्रबाहु रपाहन् वृत्रं परिधिं नदीनाम् ।  
देवोऽनयत् सविता सुपाणि स्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः

प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं तदिन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्वत् ।  
वि वज्रेण परिषदौ जघानाऽऽयन्नापोऽयंनमिच्छमानाः

७

१३००

॥ १०८ ॥ ( ऋ० ३।३४।१-११ )

इन्द्रः पूभिर्दातिरद् दासमर्कैर्विदद् वसुर्दयमानो वि शत्रून् ।  
बह्वज्जुतस्तन्वा वावृधानो भूरिदात्र आपृणद् रोदसी उभे  
मखस्य ते तविषस्य प्र जूति मिर्यमि वाचममृताय भूषन् ।  
इन्द्रं क्षितीनामसि मानुषीणां विशां देवीनामुत पूर्वयावा  
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद् वर्षणीतिः ।

१

२

अहन व्यंसमुशधग्वनेऽवाविर्धेना अकृणोद् राम्याणाम्

३

इन्द्रः स्वर्षा जनयन्नहानि जिगायोशिग्भिः पृतना अभिष्टिः ।

प्रारोचयन्मनवे केतुमह्ना मविन्दृज्ज्योतिर्वृहते रणाय

४

इन्द्रस्तुजो बर्हणा आ विवेश नृवद् दधानो नर्यां पुरूणि ।

अचेतयद् धिर्य इमा जरित्रे प्रेमं वर्णमतिरच्छुकरमासाम्

५

१३०५

महो महानि पनयन्त्यस्येन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि ।

वृजनेन वृजिनान्त्सं पिपेष मायाभिर्दस्यूरभिभूत्योजाः

६

युधेन्द्रो मह्ना वरिवश्चकार देवेभ्यः सत्पतिश्चर्षणिप्राः ।

विवस्वतः सद्ने अस्य तानि विप्रा उक्थेभिः क्वयो गृणन्ति

७

सत्रासाहं वरेण्यं सहोदां संसवांसं स्वरपश्च देवीः ।

ससान यः पृथिवीं द्यामुतेमा मिनद्रं मवृन्त्यनु धीरणासः

८

ससानात्यौ उत सूर्यं ससानेन्द्रः ससान पुरुभोजसं गाम् ।

हिरण्ययमुत भोगं ससान हृत्वी दुस्युन् प्रार्यं वर्णमावत

९

इन्द्र ओषधीरसनोदहानि वनस्पतीरसनोदन्तरिक्षम् ।

बिभेदं वलं नुनुदे विवाचो ऽथाभवद् दमिताभिकृतूनाम्

१०

१३१०

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रं मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।

शूण्वन्तमुग्रमृतये समत्सु ग्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्

११

॥ १०९ ॥ ( ऋ० ३।३५।१-११ )

तिष्ठा हरी रथ आ युज्यमाना याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छ ।

पिबास्यन्धो अभिसृष्टो अस्मे इन्द्र स्वाहा ररिमा ते मदाय

१

उपाजिरा पुरुहूताय सप्ती हरी रथस्य धूर्वा युनज्मि ।

द्ववद् यथा संभृतं विश्वतश्चिदुपेमं यज्ञमा वहात् इन्द्रम्

२

उपो नयस्व वृषणा तपुषो—तेमव त्वं वृषभ स्वधावः ।		
ग्रसेतामश्वा वि मुचेह शोणा विवेदिवे सदृशीरद्धि धानाः ।	३	
बह्वणा ते बह्वयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमाद आशू ।		
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्वाँ उप याहि सोमम्	४	१३१५
मा ते हरी वृषणा वीतपृष्ठा नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ।		
अत्यायाहि शश्वतो वयं ते ऽरं सुतेभिः कृणवाम सोमैः	५	
तवायं सोमस्त्वमेह्यर्वाद् शश्वत्तमं सुमना अस्य पाहि ।		
अस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्या दधिष्वेमं जठर इन्दुमिन्द्र	६	
स्तीर्णं ते बर्हिः सुत इन्द्र सोमः कृता धाना अत्तवे ते हरिभ्याम् ।		
तदौकसे पुरुशाकाय वृष्णे मरुत्वते तुभ्यं गता हवीषि	७	
इमं नरः पर्वतास्तुभ्यमापः समिन्द्र गोभिर्मधुमन्तमक्रन् ।		
तस्यागत्या सुमना ऋष्व पाहि प्रजानन् विद्वान् पथ्याद् अनु स्वाः	८	
याँ आर्भजो मरुत इन्द्र सोमे ये त्वामवर्धन्नर्भवन् गणस्ते ।		
तेभिरेतं सजोषा वावशानोद् ऽग्नेः पिब जिह्वया सोममिन्द्र	९	१३२०
इन्द्र पिब स्वधया चित् सुतस्या—ऽग्नेवाँ पाहि जिह्वया यजत्र ।		
अध्वर्योवाँ प्रयतं शक्र हस्ता—द्धोतुवाँ यज्ञं हविषो जुषस्व	१०	
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।		
शृण्वन्तमुग्रमृतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	११	

॥ ११० ॥ ( ऋ० ३।३६।१-११ ) [ १० घोर आङ्गिरसः । ]

इमाम् षु प्रभृतिं सातये धाः शश्वच्छश्वद्वृतिभिर्यादमानः ।		
सुतेसुते वावृधे वर्धनेभि—र्यः कर्मभिर्महद्भिः सुश्रुतो भूत्	१	
इन्द्राय सोमाः प्रदिवो विदाना ऋभुर्येभिवृषपवाँ विहायाः ।		
प्रयम्यमानान् प्रति षू गृभाये—न्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्णः	२	
पिबा वर्धस्व तव घा सुतास इन्द्र सोमासः प्रथमा उतेमे ।		
यथापिबः पूर्व्याँ इन्द्र सोमाँ एवा पाहि पन्योँ अद्या नवीयान्	३	१३२५
महाँ अमत्रो वृजने विरुद्ध्यु—ग्रं शवः पत्यते धृष्णवोर्जः ।		
नाहं विव्याच पृथिवी चनेनं यत् सोमासो हर्यश्वममन्दन्	४	
महाँ उग्रो वावृधे वीर्याय समार्चके वृषभः काव्येन ।		
इन्द्रो भगो वाजदा अस्य गावः प्र जायन्ते दक्षिणा अस्य पूर्वाः	५	

प्र यत् सिन्धवः प्रसवं यथाय—ज्ञापः समुद्रं रथ्येव जग्मुः ।	
अतश्चिदिन्द्रः सदसो वरीयान यदीं सोमः पूणति दुग्धो अंशुः	६
समुद्रेण सिन्धवो यादमाना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तः ।	
अंशुं दुहन्ति हस्तिनो भरित्रैर्मध्वः पुनन्ति धारया पवित्रैः	७
हृदा इव कुक्षयः सोमधानाः समीं विव्याच सर्वना पुरूणि ।	
अन्ना यदिन्द्रः प्रथमा व्याश वृत्रं जघन्वाँ अवृणीत सोमम्	८
आ तू भरं माकिरतत परिं ष्ठाद् विद्या हि त्वा वसुपतिं वसूनाम् ।	
इन्द्र यत् ते माहिं दत्तम—स्त्यस्मभ्यं तद्द्वर्यश्च प्र यन्धि	९
अस्मे प्र यन्धि मघवन्नृजीषि—न्दिन्द्रं रायो विश्ववारस्य भूरः ।	
अस्मे शतं शरदो जीवसे धा अस्मे वीराञ्छश्वत इन्द्र शिपिन्	१०
शुनं हुवेम मघवानिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।	
शृण्वन्तमुग्रमतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धर्नानाम्	११

॥ १११ ॥ ( ऋ० ३।३७।१-११ ) गायत्री, ११ अनुष्टुप् ।

वात्रंहत्याय शर्वसे पृतनाषाहाय च । इन्द्र त्वा वर्तयामसि	१
अवाचीनिं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो । इन्द्रं कृण्वन्तु वाघतः	२
नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीभिरीमहे । इन्द्राभिमातिषाह्ये	३
पुरुष्टुतस्य धार्माभिः शतेन महयामसि । इन्द्रस्य चर्षणीधृतः	४
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप ब्रुवे । भरेषु वाजसातये	५
वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रता । इन्द्रं वृत्राय हन्तव	६
द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृतसूतुषु श्रवःसु च । इन्द्र साक्ष्वाभिमातिषु	७
शृण्विन्तमं न ऊतये द्युम्निं पाहिजागृविम् । इन्द्र सोमं शतक्रतो	८
इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु । इन्द्र तानि त आ वृणे	९
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद् द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम् । उत ते शुष्मं तिरामसि	१०
अवावतो न आ ग—ह्यर्थो शक्र परावतः ।	
उ लोको यस्ते अद्विव इन्द्रेह तत् आ गहि	११

॥ ११२ ॥ ( ऋ० ३।२८।१-१० )

[ प्रजापतिर्विश्वामित्रः, प्रजापतिर्षाक्यो वा; तावुभावपि वा नाथिनो विश्वामित्रो वा । ] त्रिष्टुप् ।

अभि तष्टेव दीधया मनीषा—मत्यो न वाजी सुधुरो जिहानः ।	
अभि प्रियाणि मर्मज्ञात् पराणि क्वीरिच्छामि संदृशे सुमेधाः	१

इनोत पृच्छ जनिमा कवीनां मनोधृतः सुकृतस्तक्षत द्याम् ।	
इमा उ ते प्रणयोऽर्धमाना मनोवाता अधु नु धर्मणि गमन्	२
नि धीमिदत्र गुह्या दधाना उत क्षत्राय रोदसी समञ्जन् ।	
सं मात्राभिर्मिरे येमूर्वी अन्तर्मही समृते धार्यसे धुः	३
आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूष—डिह्यो वसानश्चरति स्वरोचिः ।	
महत् तद् वृष्णो असुरस्य नामा—ऽऽ विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ	४
असूत पूर्वी वृषभो ज्याया—निमा अस्य शुरुभः सन्ति पूर्वीः ।	
दिवो नपाता विदथस्य धीभिः क्षत्रं राजाना प्रदिवो दधाथे	५
त्रीणि राजाना विदथे पुरुणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि ।	
अपश्यमत्र मनसा जगन्वान् व्रते गन्धर्वा अपि वायुकेशान्	६
तदिन्वस्य वृषभस्य धेनो—रा नामभिर्मिरे सक्म्यं गोः ।	
अन्यदन्यदसुर्यं वसाना नि मायिनो ममिरे रूपमस्मिन्	७
तदिन्वस्य सवितुर्नकिर्मे हिरण्ययीममतिं यामशिथित् ।	
आ सुण्डुती रोदसी विश्वमिन्वे अपीव योषा जनिमानि ववे	८
युवं प्रत्तस्य साधथो महो यद् देवी स्वस्तिः परि णः स्यातम् ।	
गोपाजिह्वस्य तस्थुषो विरूपा विश्वे पश्यन्ति मायिनः कृतानि	९
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।	
शृण्वन्तमुग्रमृतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	१०

॥ ११३ ॥ ( ऋ० ३।३९।१-९ )

इन्द्रं मतिर्हृद् आ वच्यमाना ऽच्छा पतिं स्तोमंतष्टा जिगाति ।	
या जागृविर्विदथे शस्यमाने—न्द्र यत् ते जायते विद्धि तस्य	१
विश्विदा पूर्या जायमाना वि जागृविर्विदथे शस्यमाना ।	
भद्रा वस्त्राण्यर्जुना वसाना सेयमस्मे संनजा पित्र्या धीः	२
यमा चिदत्र यमसूरत जिह्वाया अग्रं पतदा ह्यस्थात ।	
वपूषि जाता मिथुना संचेते तमोहना तपुषो बुध एतां	३
नकिरेषां निन्विता मर्त्येषु ये अस्माकं पितरो गोषु योधाः ।	
इन्द्रं एषां हंहिता माहिनावा—नुद् गोत्राणि ससृजे कुंसनावान्	४
सखा ह यत्र सखिभिर्नवग्वै—रभिश्वा सत्वभिर्गा अनुगमन् ।	
सत्यं तदिन्द्रो वृशभिर्दशग्वैः सूर्यं विवेद् तमांसि क्षियन्तम्	५

इन्द्रो मधु संभृतमुस्त्रियायां पद्भद् विवेद शफवन्नमे गोः ।		
गुहा हितं गुह्यं गूळहमप्सु हस्ते दधे दक्षिणे दक्षिणावान्	६	१३६०
ज्योतिर्वृणीत तमसो विज्ञानज्ञारे स्याम दुरिताकुभीके ।		
इमा गिरः सोमपाः सोमवृद्ध जुषस्वेन्द्र पुरुतमस्य कारोः	७	
ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी अनु प्याद्वारे स्याम दुरितस्य भूरैः ।		
भूरि चिद्धि तुजतो मर्त्यस्य सुपारासो वसवो ब्रह्णावत्	८	
शुनं हुवेम मघवान्मिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।		
शृण्वन्तमुग्रभूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धर्नानाम्	९	

॥ ११४ ॥ ( ऋ० ३।४०।१-९ ) गायत्री ।

इन्द्र त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे । स पाहि मध्वो अन्धसः	१	
इन्द्र क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्णुत । पिबा वृषस्व तातृपिम्	२	१३६५
इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः । तिर स्तवान विशपते	३	
इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते । क्षयं चन्द्रास इन्द्रवः	४	
दधिष्वा जठरं सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम् । तव द्युक्षास इन्द्रवः	५	
गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे । इन्द्र त्वादातमिद यशः	६	
अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता । पीत्वी सोमस्य वावृधे	७	१३७०
अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन् । इमा जुषस्व नो गिरः	८	
यदन्तरा परावतमर्वावतं च हूयसे । इन्द्रेह तत् आ गहि	९	

॥ ११५ ॥ ( ऋ० ३।४१।१-९ )

आ तू न इन्द्र मद्यग्धुवानः सोमपीतये । हरिभ्यां याह्यद्विवः	१	
सत्तो होता न ऋत्वियस्तिस्तिरे बर्हिरानुषक् । अयुञ्जन् प्रातरद्रयः	२	
इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद । वीहि शूर पुरोळाशम्	३	१३७५
रारन्धि सर्वनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन् । उक्थेष्विन्द्र गिर्वणः	४	
मतयः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम् । इन्द्रं वत्सं न मातरः	५	
स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे । न स्तोतारं निदे करः	६	
वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो जरामहे । उत त्वमस्मयुर्वसो	७	
मारे अस्मद् वि मुमुचो हरिप्रियावाङ् याहि । इन्द्रं स्वधावो मत्स्वेह	८	१३८०
अर्वाञ्च त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना । घृतस्नू बर्हिरासदे	९	

॥ ११६ ॥ ( ऋ० ३।४१।१-९ )

उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिग्म् । हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः	१	
---	---	--

तमिन्द्र मद्रुमा गहि बर्हिःष्ठां ग्रावाभिः सुतम् । कुविद्रवस्य तृष्णवः	२	
इन्द्रमित्था गिरो ममा—ऽच्छागुरिषिता इतः । आवृते सोमपीतये	३	
इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे । उक्थेभिः कुविद्वागर्मत	४	१३८५
इन्द्र सोमाः सुता इमे तान् दधिष्व शतक्रतो । जठरं वाजिनीवसो	५	
विद्वा हि त्वां धनंजयं वाजेषु दधुषं कवे । अधां ते सुम्रमीमहे	६	
इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब । आगत्या वृषभिः सुतम्	७	
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्येऽ सोमं चोदामि पीतयं । एष रारन्तु ते हृदि	८	
त्वां सुतस्य पीतये प्रत्नमिन्द्र हवामहे । कुशिकासो अवस्यवः	९	१३९०

॥ ११७ ॥ ( ऋ० ३।४३।१-८ ) त्रिष्टुप् ।

आ याह्यर्वाडुपं वन्धुरेष्ठा—स्तवेदनुं प्रदिवः सोमपेयम् ।		
प्रिया सखाया वि मुचोपं बर्हि—स्त्वामिमे हव्यवाहो हवन्ते	१	
आ याहि पूर्वीरतिं चर्षणीरौ अर्य आशिष उरपं नो हरिभ्याम् ।		
इमा हि त्वां मतयः स्तोमंतप्टा इन्द्र हवन्ते सख्यं जुषाणाः	२	
आ नो यज्ञं नमोवृधं सजोषा इन्द्र देव हरिभिर्याहि तूर्यम् ।		
अहं हि त्वां मतिभिर्जोहवीमि घृतप्रयाः सधमाद्रे मधूनाम्	३	
आ च त्वामेता वृषणा वहातो हरी सखाया सुधुरा स्वङ्गा ।		
धानावदिन्द्रः सर्वानं जुषाणः सखा सख्युः शृणवद् वन्दनानि	४	
कुविन्मा गोपां करसे जनस्य कुविद् राजानं मघवन्नृजीषिन् ।		
कुविन्म ऋषिं पपिवांसं सुतस्य कुविन्मे वस्वो अमृतस्य शिक्षाः	५	१३९५
आ त्वां ब्रूहन्तो हरयो युजाना अर्वागिन्द्र सधमादो वहन्तु ।		
प्र ये द्विता विव ऋश्रन्त्याताः सुसंमृष्टासो वृषभस्य मूगः	६	
इन्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्ण आ यं ते श्येन उशते जभारं ।		
यस्य मदे च्यावयसि प्र कृष्ठी—र्यस्य मदे अपं गोत्रा ववर्थं	७	
शुनं हुवेम मघवानामिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।		
शृण्वन्तंमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	८	

॥ ११८ ॥ ( ऋ० ३।४४।१-५ ) बृहती ।

अयं ते अस्तु हर्यतः सोम आ हरिभिः सुतः ।		
जुषाण इन्द्र हरिभिर्न आ ग—ह्या तिष्ठ हरितं रथम्	१	
हर्यन्नुषसमर्चयः सूर्यं हर्यन्नरोचयः ।		
विद्वांश्चिकित्वान् हर्यश्व वधस इन्द्र विश्वा अग्नि श्रियः	२	१४००



द्यामिन्द्रो हरिधायसं पृथिवीं हरिवर्षसम् ।	
अधारयद्भरितोभूरि भोजनं ययोरन्तर्हरिश्चरत्	३
जज्ञानो हरितो वृषा विश्वमा भाति रोचनम् ।	
हर्यश्वो हरितं धत्त आयुधमा वज्रं बाह्वोर्हरिम्	४
इन्द्रो हर्यन्तमर्जुनं वज्रं शुक्रेरभिवृतम् ।	
अपावृणोद्भरिभिरद्रिभिः सुतमुद् गा हरिभिराजत	५

॥ ११९ ॥ ( ऋ० ३।४।१-५ )

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः ।	
मा त्वा के चिन्नि यमन्विं न पाशिनो ऽति धन्वव ताँ इहि	१
वृत्रखादो वलंरुजः पुरां कुर्मो अपामजः ।	
स्थाता रथस्य हर्योरभिस्वर इन्द्रो हृच्छा चिदारुजः	२
गम्भीराँ उक्वधीरिव क्रतुं पुष्यसि गा इव ।	१४०५
प्र सुगोपा यवसं धेनवो यथा हृदं कुल्या ड्वाशत	३
आ नस्तुजं रथिं भराँ ऽशं न प्रतिजानते ।	
वृक्षं पक्कं फलमङ्कीवं धूनुहीन्द्र संपारणं वसु	४
स्वयुरिन्द्र स्वराळसि स्मद्विष्टिः स्वयंशस्तरः ।	
स वावृधान ओजसा पुरुष्टुत भवाँ नः सुश्रवस्तमः	५

॥ १२० ॥ ( ऋ० ३।४।१-५ ) त्रिष्टुप ।

युध्मस्य ते वृषभस्य स्वराज उग्रस्य यूनः स्थविरस्य घृष्वेः ।	
अजूर्यतो वज्रिणो वीर्याङ्गीन्द्र श्रुतस्य महतो महानि	१
महाँ असि महिष वृष्ण्येभिर्धनस्पृद्गु सहमानो अन्यान् ।	
एको विश्वस्य भुव्नस्य राजा स योधया च क्षयया च जनान्	२
प्र मात्राभी रिरिचे रोचमानः प्र देवेभिर्विश्वतो अप्रतीतः ।	१४१०
प्र मज्मना विव इन्द्रः पृथिव्याः प्रोरोर्महो अन्तरिक्षाहृजीषी	३
उरुं गभीरं जनुषाभ्युग्रं विश्वव्यचसमवतं मतीनाम् ।	
इन्द्रं सोमासः प्रादिवि सुतासः समुद्रं न स्रवत् आ विशन्ति	४
यं सोममिन्द्र पृथिवीद्यावा गर्भं न माता बिभ्रतस्त्वाया ।	
तं तै हिन्वन्ति तर्मु ते मृजन्त्यध्वर्यवो वृषभ पात्वा उ	५

॥ १२१ ॥ ( ऋ० ३।४७।१-५ )

मरुत्वौ इन्द्र वृषभो रणाय पिब सोममनुष्वधं मदाय ।  
 आ सिञ्चस्व जठरे मध्वं ऊर्मि त्वं राजासि प्रदिवः सुतानाम् १  
 सजोषा इन्द्र सर्गणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ।  
 जहि शत्रूरप मृधो नुकुस्वा—ऽथाभयं कृणुहि विश्वतो नः २ १४१५  
 उत क्रतुभिर्ऋतुपाः पाहि सोम—मिन्द्र देवेभिः सखिभिः सुतं नः ।  
 याँ आर्भजो मरुतो ये त्वा ऽन्वहन् वृत्रमदधुस्तुभ्यमोजः ३  
 ये त्वाहिहत्ये मघवन्नवर्धन् ये शम्बरे हरिवो ये गविष्टो ।  
 ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोमं सर्गणो मरुद्भिः ४  
 मरुत्वन्तं वृषभं वावृधान—मकवारिं क्विव्यं शासमिन्द्रम् ।  
 विश्वासाहमवसे नूतनायो—ग्रं सहोदामिह तं हुवेम ५

॥ १२२ ॥ ( ऋ० ३।४८।१-५ )

सद्यो ह जातो वृषभः कनीनः प्रभर्तुमावदन्धसः सुतस्य ।  
 साधोः पिब प्रतिकामं यथा ते रसाशिरः प्रथमं सोम्यस्य १  
 यज्जायथास्तदहरस्य कामे—ऽशोः पीयूषमपिबो गिरिष्ठाम् ।  
 तं ते माता परि योषा जनित्री महः पितुर्दम आसिञ्चदग्ने २ १४२०  
 उपस्थाय मातरमन्नमैड् तिग्ममपश्यद्वुभि सोममूर्धः ।  
 प्रयावर्यन्नचरद् गृत्सोँ अन्यान् महानि चक्रे पुरुधप्रतीकः ३  
 उग्रस्तुराषाल्लभिभूत्योजा यथावशं तन्वं चक्र एषः ।  
 त्वष्टारमिन्द्रोँ जनुषाभिभूया—ऽऽमुष्या सोममपिबच्चमूषु ४  
 शुनं हुवेम मघवानिमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वार्जसातौ ।  
 शूण्वन्तमुग्रमृतये समत्सु व्रन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ५

॥ १२३ ॥ ( ऋ० ३।४९।१-५ )

शंसा महामिन्द्रं यस्मिन् विश्वा आ कृष्टयः सोमपाः काममर्चयन् ।  
 यं सुक्रतुं धिषणे विश्वतष्टं घनं वृत्राणां जनयन्त देवाः १  
 यं नु नकिः पृतनासु स्वराजं द्विता तरति नृतमं हरिष्ठाम् ।  
 इनतमः सत्वभिरीयो ह शूषैः पृथुज्या अमिनादायुर्दस्योः २ १४२५  
 सहावा पृत्सु तरणिर्वावी वयानशी रोर्दसी मेहनावान् ।  
 भगो न कारे हृष्यो मतीनां पितेव चारुः सुहवो वयोधाः ३

धृतां द्विवा रजसस्पृष्ट ऊर्ध्वो रथां न वायुर्वसुभिर्नियुत्वान् ।  
 क्षपां वस्ता जनिता सूर्यस्य विभक्ता भागं धिषणेव वाजम् ४  
 शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रं—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।  
 शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धर्नानाम् ५

॥ १२४ ॥ ( ऋ० ३।५०।१-५ )

इन्द्रः स्वाहा पिबतु यस्य सामं आगत्या तुभ्रो वृषभो मरुत्वान् ।  
 ओरुव्यचाः पूणतामेभिरन्नै—रास्यं हविस्तन्वः काममुध्याः १  
 आ ते सपर्यु जवसें युनजिम ययोरनु प्रदिवः श्रुष्टिमावः ।  
 इह त्वा धेयुर्हरयः सुशिप्र पिबा त्वस्य सुपुतस्य चारोः २ १४३०  
 गोभिर्मिशुं दधिरे सुपार—मिन्द्रं ज्यैष्ठ्याय धार्यसे गृणानाः ।  
 मन्दानः सोमं पपिवां क्रजीषिन् त्समस्मभ्यं पुरुधा गा इषण्य ३  
 इमं कामं मन्दया गोभिरश्वं—श्चन्द्रवंता राधसा पप्रथंश्च ।  
 स्वयवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन् ४  
 शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रं—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।  
 शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धर्नानाम् ५

॥ १२५ ॥ ( ऋ० ३।५१।१-१२ ) त्रिष्टुप्, १-३ जगती, १०-११ गायत्री ।

चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्य—मिन्द्रं गिरो बृहतीरभ्यनूषत ।  
 वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभि—रमर्त्यं जरमाणं द्विवेदिवे १  
 शतक्रतुमर्णवं शाकिनं नरं गिरो म इन्द्रमुप यन्ति विश्वतः ।  
 वाजसनिं पूभिदं तूणिमपुत्रं धामसाचमभिषाचं स्वविदम २ १४३५  
 आकरे वसोर्जरिता पनस्यते ऽनेहसः स्तुभ इन्द्रो दुवस्यति ।  
 विवस्वतः सदन आ हि पिप्रियं सत्रासाहमाभिमातिहनं स्तुहि ३  
 नृणामु त्वा नृतमं गीभिर्कथै—रभि प्र वीरमर्चता सबाधः ।  
 सं सहसे पुरुमायो जिहीति नमो अस्य प्रदिव एक ईशे ४  
 पूर्वोरस्य निष्पिधो मर्त्येषु पुरु वसूनि पृथिवी विभर्ति ।  
 इन्द्राय द्याव ओषधीरुतापो रयिं रक्षन्ति जरियो वनानि ५  
 तुभ्यं ब्रह्माणि गिर इन्द्र तुभ्यं सत्रा दधिरे हरिवो जुषस्व ।  
 बोध्याऽपिरवसो नूतनस्य सखे वसो जरितृभ्यो वयो धाः ६  
 इन्द्रं मरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिबः सुतस्य ।  
 तव प्रणीती तव शूर शर्म—न्ना विवासन्ति क्ववयः सुयज्ञाः ७ १४४०

स वावशान इह पाहि सोमं मरुद्भिरिन्द्र सखिभिः सुतं नः ।  
जातं यत् त्वा परि देवा अभूषन् महे भराय पुरुहूत विश्वे ८  
अप्तर्ये मरुत आपिरेषो ऽमन्वुन्निन्द्रमनु दातिवाराः ।  
तेभिः साकं पिबतु वृत्रखादः सुतं सोमं वाशुषः स्वे सधस्थे ९  
इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते । पिबा त्वस्य गिर्वणः १०  
यस्ते अनु स्वधामसत् सुते नि यच्छ तन्वम् । स त्वा ममत्तु सोम्यम् ११  
प्र ते अश्रोतु कुक्षयोः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः । प्र बाहू शूर राधसे १२ १४४५

॥ १२६ ॥ ( ऋ० ३।५२।१-८ ) त्रिष्टुप्, १-४ गायत्री, ६ जगती ।

धानावन्तं करम्भिणामपूषवन्तमुक्थिनम् । इन्द्रं प्रातर्जुषस्व नः १  
पुरोळाशं पचत्यं जुषस्वेन्द्रा गुरस्व च । तुभ्यं हव्यानिं सिस्रते २  
पुरोळाशं च नो घसो जोषयासि गिरश्च नः । वधुयुखिं योषणाम् ३  
पुरोळाशं सनश्रुत प्रातःसावे जुषस्व नः । इन्द्रं क्रतुर्हि ते ब्रूहन् ४  
माध्यंदिनस्य सर्वनस्य धानाः पुरोळाशमिन्द्रं कृष्वेह चारुम् ।  
प्र यत् स्तोता जरिता तूष्यर्थो वृषायमाण उप गीर्भिरीष्टे ५ १४५०  
तृतीयं धानाः सर्वने पुरुष्टुत पुरोळाशमाहुतं मामहस्व नः ।  
ऋभुमन्तं वार्जवन्तं त्वा कवे प्रयस्वन्त उप शिक्षेम धीतिभिः ६  
पूषण्वते ते चकृमा करम्भं हरिवते हर्यश्वाय धानाः ।  
अपूपमद्भिः सर्गणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ७  
प्रति धाना भरत तूर्यमस्मै पुरोळाशं वीरतमाय नूणाम् ।  
दिवेदिवे सदृशीरिन्द्र तुभ्यं वर्धन्तु त्वा सोमपेयाय धृष्णो ८

॥ १२७ ॥ ( ऋ० ३।५३।२-१४ ) त्रिष्टुप् १० जगती, १२ अनुष्टुप्, १३ गायत्री ।

तिष्ठा सु कै मघवन् मा परा गाः सोमस्य नु त्वा सुषुतस्य यक्षि ।  
पितुर्न पुत्रः सिचमा रंभे त इन्द्र स्वादिष्ठया गिरा शचीवः २  
शंसावाध्वर्यो प्रति मे गृणीहीन्द्राय वाहः कृणवाव जुष्टम् ।  
एवं बर्हिर्यजमानस्य सीदा ऽथा च भूदुक्थमिन्द्राय शस्तम् ३ १४५५  
जायेदस्तं मघवन्त्सेदु योनिस्तदित् त्वा युक्ता हरयो वहन्तु ।  
यदा कदा च सुनवाम सोममग्निष्वा दूतो धन्वात्यच्छ ४  
परा याहि मघवन्ना च याहीन्द्रं भ्रातरुभयत्रा ते अर्थम् ।  
यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो रासभस्य ५

अपाः सोममस्तमिन्द्र प्र याहि कल्याणीर्जाया सुरणं गृहे ते ।	
यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो दक्षिणावत्	६
इमे भोजा अङ्गिरसो विरूपा द्विवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।	
विश्वामित्राय ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः	७
रूपंरूपं मघवां बोभवीति मायाः कृण्वानस्तन्वंः परि स्वाम् ।	
त्रिर्यद् द्विवः परि मुहूर्तमागात् स्वैर्मन्त्रैरनुतुपा क्रतावां	८ १४६०
महो ऋषिर्देवजा देवजूतो ऽस्तभ्नात् सिन्धुमर्णवं नृचक्षाः ।	
विश्वामित्रो यदवहत् सुदासमप्रियायत कुशिकेभिरिन्द्रः	९
हंसा इव कृणुथ श्लोकमद्रिभिर्मदन्तो गीभिर्ध्वरे सुते सचा ।	
देवेभिर्विप्रा ऋषयो नृचक्षसो वि पिबध्वं कुशिकाः सोम्यं मधुं	१०
उप प्रेतं कुशिकाश्चेतयध्वमश्वं राये प्र मुञ्चता सुदासः ।	
राजा वृत्रं जङ्घनत् प्रागपागुदुग्था यजाते वर आ पृथिव्याः	११
य इमे रोदसी उभे अहमिन्द्रमनुष्टवम् ।	
विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम्	१२
विश्वामित्रा अरासत् ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे । करदिन्नः सुरार्धसः	१३ १४६५
किं ते कृण्वन्ति कीकृतेषु गात्रो नाशिरं दुहे न तपन्ति घर्मम् ।	
आ नो भर प्रमगन्दस्य वेदो नैचाशाखं मघवन् रन्धया नः	१४ १४६६

॥ १२८ ॥ ( ऋ० ४।१६।१-२१ ) ( १४६७-१६६६ ) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

आ सत्यो यातु मघवां ऋजीषी द्रवन्त्वस्य हरय उप नः ।	
तस्मा इदन्धः सृषुमा सुदक्षमिहाभिपित्वं करते गृणानः	१
अव स्य शूराध्वनो नान्ते ऽस्मिन् नो अद्य सर्वने मन्दध्वै ।	
शंसात्युक्थमुशनेव वेधाश्चिक्रितुषे असुर्याय मन्म	२
कविर्न निण्यं विदथानि साधन् वृषा यत् सेकं विपिपानो अर्चीत् ।	
द्विव इत्था जीजनत् सप्त कारूनहा चिच्चकुर्वयुनां गृणन्तः	३
स्वय्यद् वेदिं सुदृशीकमर्कैर्महि ज्योतीं रुरुचुर्यद् वस्तोः ।	
अन्धा तमांसि दुर्धिता विचक्षे नृभ्यश्चकार नृतमो अभिष्टी	४ १४७०
ववक्ष इन्द्रो अमितमृजीप्युभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ।	
अतश्चिदस्य महिमा वि रेच्यमि यो विश्वा भुवना बभूव	५

विश्वानि शक्रो नयीणि विद्रानपो रिरिच सखिभिर्निकामैः ।	
अश्मानं चिद् ये विभिदुर्वचोभिर्ब्रजं गोमन्तमुशितो वि ववुः	६
अपो वृत्रं वविवासं पराहन् प्रावत् ते वज्रं पृथिवी सचेताः ।	
प्राणांसि समुद्रियाण्यैनोः पतिर्भवञ्छर्वसा शूर धृष्णो	७
अपो यदद्रिं पुरुहूत ददं राविर्भुवत् सरमा पूर्वं ते ।	
स नो नेता वाजमा दधिं भूरिं गोत्रा रुजन्नङ्गिरोभिर्गृणानः	८
अच्छां कविं नृमणो गा अभिष्टौ स्वर्षाता मधवन्नाधमानम ।	
ऊतिभिस्तमिषणो द्युन्नहूतौ नि मायावानब्रह्मा दस्युरर्त	९ १४७१
आ दस्युघ्ना मनसा याह्यस्तं भुवत् ते कुत्सः सख्ये निकामः ।	
स्वे योनौ नि षदत्तं सरूपा वि वां चिकित्सदृत्तचिन्द्र नारी	१०
यासि कुत्सेन सरथमवस्युस्तोदो वातस्य हर्योरीशानः ।	
ऋज्जा वाजं न गध्यं युयूपन् कविर्यदहन् पार्याय भूषात्	११
कुत्साय शुष्णमशुषं नि बर्हीः प्रपित्वे अह्नः कुयवं सहस्रा ।	
सद्यो दस्युन् प्र मृण कुत्स्येन प्र सूरश्चक्रं वृहताङ्गुभीके	१२
त्वं पिपुं मृगयं शूशुवांसं मुजिष्वने वैदथिनाय रन्धीः ।	
पञ्चाशत् कृष्णा नि वपः सहस्रा ऽत्कं न पुरो जरिमा वि ददः	१३
सूर उपाके तन्वं दधानो वि यत् ते चेत्यमृतस्य वपः ।	
मृगो न हस्ती तविषीमुषाणः सिंहो न भीम आयुधानि विभ्रत	१४ १४८०
इन्द्रं कामा वसूयन्तो अगमन् त्स्वर्मीळ्हे न सर्वने चक्रानाः ।	
श्रवस्यवः शशमानासं उक्थैरोको न रणवा सुदृशीव पुष्टिः	१५
तमिद् व इन्द्रं सुहवं हुवेम यस्ता चकार नयां पुरूणि ।	
यो मावते जरित्रे गध्यं चिन्मक्षू वाजं भरति स्पर्हराधाः	१६
तिग्मा यदुन्तरशनिः पताति कस्मिञ्चिच्छूर मुहुके जनानाम् ।	
घोरा यदर्यं समृतिर्भवात्यधं स्मा नस्तन्वो बोधि गोपाः	१७
भुवोऽविता वामदेवस्य धीनां भुवः सखावृको वाजसातौ ।	
त्वामनु प्रमतिमा जगन्मो रुशंसो जरित्रे विश्वधं स्याः	१८
एभिर्नृभिर्निन्द्र त्वायुभिश्चा मघवन्निर्मघवन् विश्वं आजौ ।	
द्यावो न द्युन्नैरभि सन्तो अर्यः क्षपो मदेम शरदश्च पूर्वीः	१९ १४८५

एवेदिन्द्राय वृषभाय वृष्णे ब्रह्माकर्म भृगवो न रथम् । नू चिद् यथा नः सख्या वियोप—दसन्न उग्रोऽविता तनूपाः	२०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽं न पीपेः । अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	२१

॥ १२९ ॥ ( ऋ० ४।१७।१-२१ ) त्रिष्टुप्, १५ एकपदा विराट् ।

त्वं महाँ इन्द्र तुभ्यं ह क्षा अनु क्षत्रं मंहना मन्यत द्यौः । त्वं वृत्रं शर्वसा जघन्वान् त्सृजः सिन्धूरहिना जग्रसानान्	१	
तवं त्विषो जनिमन् रेजत द्यौ रेजद् भूमिर्भियसा स्वस्य मन्योः । ऋघायन्त सुभ्वः पर्वतास आर्कुन् धन्वानि सरयन्त आपः	२	
भिनद् गिरिं शर्वसा वज्रमिष्ण—न्नाविष्कृण्वानः सहसान ओजः । वधीद् वृत्रं वज्रेण मन्दसानः सरन्नापो जर्वसा हतवृष्णीः	३	१४९०
सुवीरस्ते जनिता मन्यत द्यौ—रिन्द्रस्य कर्ता स्वपस्तमो भूत् । य ईं जजान स्वर्थं सुवज्र—मनपच्युतं सदासो न भूम	४	
य एक इच्छयावर्यति प्र भूमा राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः सत्यमेनमनु विश्वे मदन्ति रातिं देवस्य गृणतो मघोनः	५	
सत्रा सोमां अभवन्नस्य विश्वे सत्रा मदासो बृहतो मदिष्ठाः सत्राभवो वसुपतिर्वसूनां दत्रे विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः	६	
त्वमधं प्रथमं जायमानो ऽमे विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः । त्वं प्रति प्रवत आशयान्—महिं वज्रेण मघवन् वि वृश्वः	७	
सत्राहणं दाधृषिं तुभ्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम् । हन्ता यो वृत्रं सनितो न वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः	८	१४९५
अयं वृत्श्रातयते समीची—र्य आजिषु मघवा शृण्व एकः । अयं वाजं भरति यं सनोत्य—स्य प्रियासः सख्ये स्याम	९	
अयं शृण्वे अध जपन्नत न्न—न्नयमुत प्र कृणुते युधा गाः । यदा सत्यं कृणुते मन्युमिन्द्रो विश्वं दृळ्हं भयत एजदस्मात्	१०	
समिन्द्रो गा अजयत् सं हिरण्या समश्विया मघवा यो ह पूर्वीः । एभिर्नृभिर्नृतमो अस्य शाकै रायो विभक्ता संभरश्च वस्वः	११	
कियत् स्वदिन्द्रो अध्येति मातुः कियत् पितुर्जनितुर्यो जजान । यो अरय शुष्मं मुहुकैरियति वातो न जूतः स्तनर्यद्विरभैः	१२	

क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं कृणोती—र्यति रेणुं मघवां समोहम् ।		
विभञ्जनुरशनिमाँ इव द्यौ—रुत स्तोतारं मघवा वसौं धात्	१३	१५००
अयं चक्रमिषणत् सूर्यस्य न्येतशं रीरमत ससृमाणम् ।		
आ कृष्ण ईं जुहुराणो जिघर्ति त्वचो बुध्रे रजसो अस्य योनीं	१४	
असिक्न्यां यजमानो न होता	१५	
गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ।		
जनीयन्तो जनिदामक्षितोति—मा च्यावयामोऽवते न कोशम्	१६	
त्राता नो बोधि दृष्टान आपि—रभिख्याता मडिता सोम्यानाम् ।		
सखा पिता पितृतमः पितृणां कर्तेमु लोकमुंशते वयोधाः	१७	
सखीयतामविता बोधि सखा गृणान इन्द्र स्तुवते वयो धाः ।		
वयं ह्या ते चकूमा सबाध आभिः शमीभिर्महयन्त इन्द्र	१८	१५०५
स्तुत इन्द्रो मघवा यद्ध वृत्रा भूरीण्येको अप्रतीनि हन्ति ।		
अस्य प्रियो जरिता यस्य शर्म—न्नकिर्वेवा वारयन्ते न मतीः	१९	
एवा न इन्द्रो मघवां विरप्शी करत् सत्या चर्षणीधृदन्वा ।		
त्वं राजा जनुषां धेह्यस्मे आधि श्रवो माहिनं यज्रिन्ने	२०	
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इधं ज्रिन्ने नद्योऽ न पीपेः ।		
अकारि ते हरिवो बह्य नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	२१	

॥ १३० ॥ ( ऋ० ४।१।१-१३ )

[ १३ वामदेवो गौतमः, १ इन्द्रः, ४ ( उत्तरार्धस्य ), ५-७ अदितिः । ]

[ १, ४ उत्तरार्धस्य, ५, ६, ७ वामदेवः; २, ३, ४ पूर्वार्धस्य, ८-१३ इन्द्रः । ] त्रिष्टुप ।

अयं पन्था अनुवित्तः पुराणो यतो देवा उदजायन्त विश्वे ।		
अतश्चिदा जनिषीष्ट प्रवृद्धो मा मातरंममुया पत्तवे कः	१	
नाहमतो निरया दुर्गहित्ति रश्चता पार्श्वान्निर्गमाणि ।		
बहूनि मे अकृता कर्त्वाणि युधै त्वेन सं त्वेन पृच्छै	२	१५१०
परायतीं मातरमन्वचष्ट न नानु गान्यन्तु नू गर्मानि ।		
त्वष्टुर्गृहे अपिबत् सोममिन्द्रः शतधन्यं चम्बोः सुतस्य	३	
किं स ऋधक् कृणवद् यं सहस्रं मासो जभार शरदश्च पूर्वीः ।		
नही न्वस्य प्रतिमानम्—स्त्यन्तर्जातेषूत ये जनित्वाः	४	



अवद्यमिव मन्यमाना गुहाक—रिन्द्रं माता वीर्येणा न्यृष्टम् । अथोदस्थात् स्वयमत्कं वसान आ रोदसी अपृणाज्जायमानः	५
एता अर्षन्त्यललाभवन्ती—ऋतावरीरिव संक्रोशमानाः । एता वि पृच्छ किमिदं भनन्ति कमापो अद्रिं परिधिं रुजन्ति	६
किमुं ष्विदस्मै निविदो भनन्ते—न्द्रस्यावद्यं दिधिपन्त आपः । ममैतान् पुत्रो महता वधेन वृत्रं जघन्वां असृजद् वि सिन्धून्	७ १५१५
ममच्चन त्वा युवतिः परास ममच्चन त्वा कुपवा जगारं । ममच्चिदापः शिशवे ममृड्यु—ममच्चिदिन्द्रः सहसोदतिष्ठत	८
ममच्चन ते मघवन् व्यंसो निविविध्वां अप हनू जघानं । अधा निविन्द्र उत्तरो बभूवा—डिछरो दासस्य सं पिणग्वधेन	९
गूष्टिः संसूव स्थविरं तवागा—मनाधूप्यं वृषभं तुभ्रमिन्द्रम् । अरीळ्हं वत्सं चरथाय माता स्वयं गातुं तन्वं दृच्छमानम्	१०
उत माता महिषमन्वेन—दुमी त्वा जहति पुत्र देवाः । अथात्रवीद् वृत्रमिन्द्रो हनिष्यन् त्सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व	११
कस्ते मातरं विधवांमचक्र—च्छयुं कस्त्वामजिघांसच्चरन्तम् । कस्ते देवो अधि मर्डीक आसीद् यत् प्राक्षिणाः पितरं पादुगृह्यं	१२ १५२०
अर्वत्यां शुनं आन्त्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्डितारम् । अपश्यं जायाममहीयमाना—मधा मे श्येनो मध्वा जभार	१३

॥ १३१ ॥ ( ऋ० ४।१९।१-११ )

एवा त्वामिन्द्र वज्रिन्नत्र विश्वे देवासः सुहवास ऊमाः । महामुभे रोदसी वृद्धमृष्वं निरेकमिद् वृणते वृत्रहत्ये	१
अवासृजन्त जिब्रयो न देवा भुवः सम्राळिन्द्र सत्ययोनिः । अहन्नाहिं परिशयानमर्णः प्र वर्तनीररदो विश्वधेनाः	२
अनृष्णुवन्तं वियतमबुध्य—मबुध्यमानं सुपुषाणामिन्द्र । सप्त प्रतिं प्रवत आशयान—महिं वज्रेण वि रिणा अपर्वन्	३
अक्षोदयच्छर्वसा क्षाम बुध्नं वार्ण वातस्तविषीभिरिन्द्रः । दृह्वहान्यौभ्रादुशमान ओजो ऽवाभिनत् ककुभः पर्वतानाम्	४ १५२५
अभि प्र ददुर्जनयो न गर्भं रथा इव प्र ययुः साकमद्रयः । अतर्पयो विसृत उज्ज ऊमीन् त्वं वृतां अग्निणा इन्द्र सिन्धून्	५

त्वं महीमवनिं विश्वधेनां तुर्वीतये वय्याय क्षरन्तीम् ।	
अरमयो नमसैजदर्णः सुतरणां अकृणोरिन्द्र सिन्धून्	६
प्रागुवो नभन्वोऽं न वक्त्रा ध्वसा अपिन्वद् युवतीर्कृतज्ञाः ।	
धन्वान्यज्रां अपृणक् तृषाणां अधोगिन्द्रः स्तर्योऽं दंसुपत्नीः	७
पूर्वीरुषसः शरदश्च गूर्ता वृत्रं जघन्वाँ असृजद् वि सिन्धून् ।	
परिष्ठिता अतृणद् बद्धधानाः सीरा इन्द्रः स्रवितवे पृथिव्या	८
वृषीभिः पुत्रमगुवो अदानं निवेशनान्दरिव आ जभर्थ ।	
व्युधो अख्यदहिमाददानो निर्भूदुखच्छित् समरन्त पवं	९ १५३०
प्र ते पूर्वाणि करणानि विप्राऽऽविद्रौ आह विदुषे करांसि ।	
यथायथा वृष्यानि स्वगूर्ता ऽपांसि राजन् नर्याविवेपीः	१०
नू प्तुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽं न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	११

॥ १३२ ॥ ( क्र० ४२०१२-११ )

आ न इन्द्रो दूरादा न आसा—दभिष्टिकृदवसे यासदुग्रः ।	
ओजिष्ठेभिर्नृपतिर्वज्रबाहुः संगे समत्सु तुर्वाणिः पृतन्यून	१
आ न इन्द्रो हरिभिर्यात्वच्छा—ऽर्वाचीनोऽवसे राधसे च ।	
तिष्ठति वज्री मघवा विरप्शी—मं यजमनु नो वाजसातो	२
इमं यज्ञं त्वमस्माकमिन्द्र पुरो दधत सनिप्यसि क्रतुं नः ।	
श्वघ्नीव वज्रिन्त्सनये धनानां त्वया वयमर्य आजिं जयेम	३ १५३५
उशन्नु षु णः सुमना उपाके सोमस्य नु सुपुतस्य स्वधावः ।	
पा इन्द्र प्रतिभृतस्य मध्वः समन्धसा ममदः पृच्छ्येन	४
वि यो ररुश ऋषिभिर्नवैभि—वृक्षो न पक्वः सृण्यो न जेता ।	
मर्यो न योषामभि मन्यमानो ऽच्छा विवक्मि पुरुहूतमिन्द्रम्	५
गिरिर्न यः स्वतवाँ ऋष्व इन्द्रः सनादेव सहसे जात उग्रः ।	
आर्दता वज्रं स्थाविरं न भीम उद्रेव कोशं वसुना न्यृण्टम्	६
न यस्य वर्ता जनुषा न्वस्ति न राधस आमरीता मघस्य ।	
उद्गावृषाणस्तविषीव उग्रा—ऽस्मभ्यं दद्धि पुरुहूत गयः	७
ईक्षे रायः क्षयस्य चर्षणीना—मृत वज्रमपवर्तासि गोनाम् ।	
शिक्षानरः समिथेषु प्रहावान् वस्वो राशिमभिनेतासि भूरिम	८ १५४०

कया तच्छृण्वे शच्या शचिष्ठो यया कृणोति मुहु का चिहृण्वः ।	
पुरु द्वाशुषे विचयिष्ठो अंहो ऽथा दधाति द्रविणं जरित्रे	९
मा नो मर्धारा भरा वृद्धि तन्नः प्र द्वाशुषे दातवे भूरि यत् ते ।	
नव्ये वृष्णे शस्ते अस्मिन् तं उक्थे प्र ब्रवाम वयमिन्द्र स्तुवन्तः	१०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽं न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	११

॥ १३३ ॥ (ऋ० ४।२।१-११)

आ यात्विन्द्रोऽवस उप न इह स्तुतः संधमादस्तु शूरः ।	
वावृधानस्तविपीर्यस्य पूर्वी—द्यौर्न क्षत्रमभिभूति पुण्यात्	१
तस्येद्विह स्तवथ वृष्ण्यानि तुविद्युन्नस्यं तुविरार्धसो नून ।	
यस्य क्रतुर्विदथ्योऽं न सम्राट् साह्वान तरुत्रो अभ्यस्ति कृष्ठीः	२ १५४५
आ यात्विन्द्रो विव आ पृथिव्या मक्षू समुद्रादुत वा पुरीषात् ।	
स्वर्णरादवसे नो मरुत्वान् परावतो वा सदर्नाहृतस्य	३
स्थूरस्य रायो बृहतो य ईशे तमु ष्टवाम विदथेज्विन्द्रम् ।	
यो वायुना जयति गोमतीषु प्र धृष्णुया नयति वस्यो अच्छ	४
उप यो नमो नमसि स्तभाय—त्रियति वाचं जनयन् यजध्वै ।	
ऋश्रसानः पुरुवार उक्थे—रेन्द्रं कृण्वीत सदर्नेषु होता	५
धिषा यद्वि धिषण्यन्तः सरण्यान् त्सदर्न्तो अद्रिमौशिस्य गोहे ।	
आ दुरोषाः पास्त्यस्य होता यो नो महान्तसंवरणेषु वह्निः	६
सत्रा यदीं भार्वरस्य वृष्णः सिषक्ति शुष्मः स्तुवते भराय ।	
गुहा यदीमौशिस्य गोहे प्र यद् धिये प्रायसे मदाय	७ १५५०
वि यद् वरांसि पर्वतस्य वृण्वे पयोभिर्जिन्वे अपां जवांसि ।	
विदद् गौरस्य गवयस्य गोहे यद्वी वाजाय सुध्योऽं वहन्ति	८
भद्रा ते हस्ता सुकृतोत पाणी प्रयन्तारां स्तुवते राध इन्द्र ।	
का ते निषक्तिः किमु नो ममत्सि किं नोदुदु हर्षसे दातवा उ	९
एवा वस्व इन्द्रः सत्यः सम्रा—ङ्कन्ता वृत्रं वरिवः पूरवे कः ।	
पुरुषुत क्रत्वा नः शग्धि रायो भक्षीय तेऽवसो दैव्यस्य	१०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽं न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	११

॥ १३४ ॥ ( ऋ० ४।२२।१-११ )

यज्ञ इन्द्रो जुजुषे यच्च वष्टि तन्नो महान् करति शुष्मया चित् ।		
ब्रह्म स्तोमं मघवा सोममुक्त्वा यो अश्मानं शर्वसा बिभ्रदेति	१	१५५५
वृषा वृषन्धि चतुरश्रिमस्यन्नुग्रो बाहुभ्यां नृतमः शचीवान् ।		
श्रिये परुष्णीमुषमाण ऊर्णा यस्याः पर्वाणि सख्याय विव्ये	२	
यो देवो देवतमो जायमानो महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः		
दधानो वज्रं बाहोरुशन्तं द्याममेन रेजयत् प्र भूमं	३	
विश्वा रोधांसि प्रवतश्च पूर्वीर्द्यौर्ऋष्वाज्जनिमन् रेजत क्षाः ।		
आ मातरा भरति शुष्मया गोर्नूवत् परिज्मन् नोनुवन्त वाताः	४	
ता तू तं इन्द्र महतो महानि विश्वेष्वित् सर्वनेषु प्रवाच्या ।		
यच्छूर धृष्णो धृषता दधुष्वा नहि वज्रेण शवसाविषेपीः	५	
ता तू ते सत्या तुविनृम्ण विश्वा प्र धेनवः सिस्रते वृष्ण ऊर्ध्वः ।		
अर्धा ह त्वद् वृषमणो भियानाः प्र सिन्धवो जर्वसा चक्रमन्त	६	१५६०
अत्राह ते हरिवस्ता उ देवी रवोभिरिन्द्र स्तवन्त स्वसारः ।		
यत् सीमनु प्र मुचो बद्धधाना वीर्धामनु प्रसितिं स्यन्वुयर्ध्यं	७	
पिपीळे अंशुर्मद्यो न सिन्धुरा त्वा शमी शशमानस्यं शक्तिः ।		
अस्मद्राक् शुशुचानस्यं यम्या आशुर्न रश्मिं तुव्योजसं गोः	८	
अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि ज्येष्ठा नृम्णानि सत्रा सहुरे सहांसि ।		
अस्मभ्यं वृत्रा सुहनानि रन्धि जहि वर्धवनुषो मर्त्यस्य	९	
अस्माकमित् सु शृणुहि त्वमिन्द्राऽस्मभ्यं चित्राँ उप माहि वाजान् ।		
अस्मभ्यं विश्वा इषणः पुरंधी रस्माकं सु मघवन् बोधि गोदाः	१०	
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योर्द न पीपेः ।		
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	११	१५६५

॥ १३५ ॥ ( ऋ० ४।२३।१-११ ) ८-१० ऋतं वा ।

कथा महामवृधत् कस्य होतु र्यज्ञं जुषाणो अभि सोममूधः ।		
पिबन्नुशानो जुषमाणो अन्धो ववक्ष ऋष्वः शुचते धनाय	१	
को अस्य वीरः संधमार्दमाप समानंश सुमतिभिः को अस्य ।		
कदस्य चित्रं चिकिते कद्रुती वृधे भुवच्छशमानस्य यज्योः	२	

कथा गृणोति ह्यमानमिन्द्रः कथा शृण्वन्नवसामस्य वेद । का अस्य पूर्वीरूपमातयो ह कथैर्नमाहुः पपुंरिं जरित्रे	३	
कथा सबाधः शशमानो अस्य नशकुभि द्रविणं दीध्यानः । देवो भुवन्नवदा म क्रतानां नमो जगृभवाँ अभि यज्जुजोषत	४	
कथा कदुरया उपसो व्युष्टौ देवो मर्तस्य सख्यं जुजोष । कथा कदस्य सख्यं सखिभ्यो ये अस्मिन् कामं सुयुजं ततस्त्रे	५	१५७०
किमादमत्रं सख्यं सखिभ्यः कदा नु ते भ्रात्रं प्र ब्रवाम । श्रिये सुदृशो वपुस्य सर्गाः स्वर्णं चित्रतममिप आ गोः	६	
द्रुहं जिघांसन् ध्वरसमनिन्द्रां तेतिक्ते तिग्मा तुजसे अनीका । ऋणा चिद् यत्र ऋणया न उग्रो दूरे अजाता उपसो बबाधे	७	
ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वी—ऋतस्य धीतिवृजिनानि हन्ति । ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्कु कर्णा बुधानः शुचमान आयोः	८	
ऋतस्य हृद्धा धरुणानि सन्ति पुरुणि चन्द्रा वपुषे वपुषि । ऋतेन दीर्घमिपणन्त पृक्षं ऋतेन गावं ऋतमा विवेशुः	९	
ऋतं यमान ऋतमिद् वनो—त्युतस्य शुष्मस्तुरया उ गव्युः । ऋताय पृथ्वी बहुले गभीरे ऋताय धेनू परमे दुहाते	१०	१५७५
नू द्रुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ न पीपेः । अकारि ते हरिवो ब्रह्म नन्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	११	

॥ १३६ ॥ ( ४।२४।१-११ ) त्रिष्टुप्, १० अनुष्टुप् ।

का सुष्टुतिः शवसः सूनुमिन्द्र—मर्वाचीनं राधस आ ववर्तत् । दुदिर्हि वीरो गृणते वसूनि स गोपतिर्निष्पिधां नो जनासः	१	
रा वृत्रहत्ये हव्यः स ईड्युः स सुष्टुत इन्द्रः सत्यराधाः । स यामन्ना मघवा मर्त्याय ब्रह्मण्यते सुष्वये वरिवो धात	२	
तमिन्नरो वि ह्वयन्ते समीके रिरिकांसस्तन्वः कृणवत् त्राम् । मिथो यत् त्यागमुभयांसो अगमन् नरस्तोकस्य तनयस्य सातौ	३	
ऋतुयन्ति क्षितयो योग उग्रा—ऽऽशुषाणासो मिथो अर्णसातौ । सं यद् विशोऽववृत्रन्त युध्मा आदिन्नेम इन्द्रयन्ते अभीके	४	१५८०
आदिद् नेम इन्द्रियं यजन्त आदित् पक्तिः पुरोळाशं रिरिच्यात् । आदित् सोमो वि पृच्यादसुष्वी—नादिज्जुजोष वृषभं यजधै	५	

कृणोत्यस्मै वरिवो य इत्थेन्द्राय सोममुशते सुनोति ।	
सधीचीनेन मनसाविवेनन् तमित सखायं कृणुते समत्सु	६
य इन्द्राय सुनवत् सोममद्य पचात् पक्तीरुत भूज्जाति धानाः ।	
प्रति मनायोरुचथानि हर्यन् तस्मिन् दधद् वृषणं शुष्ममिन्द्रः	७
यदा समर्य व्यचेद्वघावा वीर्घं यद्वाजिमभ्यस्व्यदुर्यः ।	
अचिक्रवुद् वृषणं पत्न्यच्छा दुरोण आ निशितं सोमसुद्धिः	८
भूर्यसा वस्नमचरत् कनीयो ऽविक्रीतो अकानिषं पुनर्यन् ।	
स भूर्यसा कनीयो नारिरेचीद् वीना दक्षा वि दुहन्ति प्र वाणम	९
क इमं दशभिर्ममेन्द्रं क्रीणाति धेनुभिः ।	
यदा वृत्राणि जङ्घनदथैनं मे पुनर्ददत्	१०
नू द्रुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो बह्व नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	११

॥ १३७ ॥ ( ऋ० ४।२५।१-८ ) त्रिष्टुप ।

को अद्य नर्यो देवकाम उशन्निन्द्रस्य सख्यं जुजोष ।	
को वा महेऽवसे पार्याय समिन्द्रे अग्नौ सुतसोम ईडे	१
को नानाम वचसा सोम्याय मनायुर्वा भवति वस्त उसाः ।	
क इन्द्रस्य युज्यं कः सखित्वं को भ्रात्रं वष्टि कवये क ऊती	२
को देवानामवो अद्या वृणीते क आदित्यो अदितिं ज्योतिरीडे ।	
कस्याश्विनाविन्द्रो अग्निः सुतस्यां ऽशोः पिबन्ति मनसाविवेनम्	३
तस्मा अग्निर्भरतः शर्म यंस ज्ज्योक् पश्यात् सूर्यमुच्चरन्तम् ।	
य इन्द्राय सुनवामेत्याह नरे नर्याय नृत्तमाय नृणाम्	४
न तं जिनन्ति बहवो न द्रुभ्रा उर्वस्मा अदितिः शर्म यंसत् ।	
प्रियः सुकृत् प्रिय इन्द्रे मनायुः प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी	५
सुप्राव्यः प्राशुषाष्टेष वीरः सुष्वेः पक्तिं कृणुते केवलेन्द्रः ।	
नासुष्वेषापिर्न सखा न जामिर्दुष्प्राव्योऽवहन्तेदवाचः	६
न रेवता पणिना सख्यमिन्द्रो ऽसुन्वता सुतपाः सं गृणीते ।	
आस्य वेदः खिदति हन्ति नग्रं वि सुष्वये पक्तये केवलो भूत्	७
इन्द्रं परेऽवरे मध्यमास इन्द्रं यान्तोऽवसितास इन्द्रम् ।	
इन्द्रं क्षियन्त उत युध्यमाना इन्द्रं नरो वाजयन्तो हवन्ते	८

॥ १३८ ॥ ( ऋ० ४।२९।१-३ ) [ १-३ इन्द्रो वा ] । [ १-३ आत्मा वा ] ।

अहं मनुरभवं सूर्यश्चा—ऽहं कक्षीवाँ ऋषिरस्मि विप्रः ।	
अहं कुत्समार्जुनेयं न्यूञ्जे ऽहं कविरुशना पश्यता मा	१
अहं भूमिमददामार्याया—ऽहं वृष्टिं द्वाशुषे मर्त्याय ।	
अहमपो अनयं वावशाना मम देवासो अनु केतमायन्	२
अहं पुरो मन्दसानो व्यैरं नवं साकं नवतीः शम्बरस्य ।	
शततमं वेद्यं सर्वताता दिवोदासमतिथिग्वं यदावम्	३

॥ १३९ ॥ ( ऋ० ४।२८।१-५ ) [ इन्द्रासोमो वा । ]

त्वा युजा तव तत् सोम सख्य इन्द्रो अपो मनवे सभुतस्कः ।	
अहन्नहिमरिणात सप्त सिन्धू—नपावृणोदपिहितेव खानि	१
त्वा युजा नि खिदुत् सूर्यस्ये—न्द्रश्चक्रं सहसा सद्य इन्द्रो ।	
अधि ष्णुना बृहता वर्तमानं महो दुहो अपं विश्वार्युं धायि	२
अहन्नन्द्रो अर्दहदुग्निरिन्द्रो पुरा दस्यून् मध्यदिनादुभीके ।	
दुर्गे दुरोणे क्त्वा न यातां पुरू सहस्रा शर्वा नि बर्हीत	३
विश्वस्मात् सीमधमाँ इन्द्र दस्यून् विशो दासीरकृणोरप्रशस्ताः ।	
अबाधिताममृणतं नि शत्रू—नविन्देथामपचितिं वधत्रैः	४
एवा सत्यं मघवाना युवं त—दिन्द्रश्च सोमोर्वमश्वयं गोः ।	
आर्दहंतमपिहितान्यश्ना रिरिचथुः क्षाश्चित् ततृवाना	५

॥ १४० ॥ ( ऋ० ४।२९।१-५ )

आ नः स्तुत उप वाजेभिरूती इन्द्र याहि हरिभिर्मन्दसानः ।	
तिरश्चिद्वयः सर्वना पुरूण्या—ङ्गुषेभिर्गृणानः सत्यराधाः	१
आ हि ष्मा याति नर्याश्चिक्त्वान् हूयमानः सोतृभिरुप यज्ञम् ।	
स्वश्वो यो अभीरुर्मन्यमानः सुष्वाणेभिर्मदति सं ह वीरैः	२
श्रावयेदस्य कर्णा वाजयधै जुष्टामनु प्र दिशं मन्वुयधै ।	
उद्वावृषाणो राधसे तुविष्मान् करन्न इन्द्रः सुतीर्थाभयं च	३
अच्छा यो गन्ता नार्धमानमृती इत्था विप्रं हर्वमानं गृणन्तम् ।	
उप त्मनि दधानो धुर्यांश्शून् त्सहस्राणि शतानि वज्रबाहुः	४
त्वोतासो मघवानिन्द्र विप्रा वयं ते स्याम सूरयो गृणन्तः ।	
भेजानासां बृहद्विवस्य गाय आकार्यस्य वावने पुरूक्षोः	५

॥ १४१ ॥ ( क्र० ४३०१-८, १२-२४ ) गायत्री; ८, २४ अनुष्टुप् ।

नकिरिन्द्र त्वदुत्तरो	न ज्यायाँ अस्ति वृत्रहन्	। नकिरेवा यथा त्वम्	१	
सत्रा ते अनु कृष्टयो	विश्वा चक्रेव वावृतुः	। सत्रा महौ असि श्रुतः	२	१६१०
विश्वे चनेवुना त्वा	देवास इन्द्र युयुधुः	। यदहा नक्तमातिरः	३	
यत्रोत बाधितेभ्यः	इचक्रं कुत्साय युध्यते	। मुपाय इन्द्र सूर्यम	४	
यत्र देवाँ क्रघायतो	विश्वौ अयुध्य एक इत	। त्वमिन्द्र वनूरहन्	५	
यत्रोत मर्त्याय क	मरिणा इन्द्र सूर्यम	। प्रावः शचीभिरेतेशभ	६	
किमादुतासि वृत्रहन्	मर्षवन् मन्युमत्तमः	। अत्राह दानुमातिरः	७	१६१५
एतद् घेदुत वीर्यं	मिन्द्र चकर्थ पौंस्यम	। स्त्रियं यद् दुर्हणायुवं		वधीर्दुहितरं विवः ८
उत सिन्धुं विबाल्यं	वितस्थानामधि क्षामि	। परिं ष्ठा इन्द्र मायया	१२	
उत शुष्णस्य धृष्णया	प्र मृक्षो अभि वेदनम	। पुरो यदस्य संपिणक्	१३	
उत वासं कौलितरं	बृहतः पर्वतादधि	। अवाहन्निन्द्र शम्बरम	१४	
उत वासस्य वर्चिनः	सहस्राणि शतावधीः	। अधि पञ्च प्रधीरिव	१५	१६२०
उत त्यं पुत्रमगुवः	परावृक्तं शतक्रतुः	। उक्थेष्विन्द्र आभजत्	१६	
उत त्या त्वंशायद्वं	अस्नातारा शचीपतिः	। इन्द्रो विद्रो अपारयत्	१७	
उत त्या सद्य आर्या	सरयोरिन्द्र पारतः	। अर्णाचित्ररथावधीः	१८	
अनु द्वा जहिता नयो	ऽन्धं श्रोणं च वृत्रहन्	। न तत् ते सुन्नमष्टवे	१९	
शतमश्मन्मयीनां	पुरामिन्द्रो व्यास्यत्	। दिवोदासाय वाशुपे	२०	१६२५
अस्वापयद् वृभीतयं	सहस्रां त्रिंशतं हर्थः	। वासानामिन्द्रो मायया	२१	
स घेदुतासि वृत्रहन्	त्समान इन्द्र गोपतिः	। यस्ता विश्वानि चिच्युपे	२२	
उत नूनं यदिन्द्रियं	करिण्या इन्द्र पौंस्यम	। अद्या नकिष्टदा मिनत्	२३	
वामं वामं त आदुरे	देवो देदात्वयमा	। वामं पूषा वामं भगो		वामं देवः कुरुळती २४

॥ १४२ ॥ ( ४३११ १५ ) गायत्री, ३ पादनिकृत् ।

कया नश्चित्र आ भुव	द्वृती सदावृधः सखा	। कया शचिष्ठया वृता	१	१६३०
कस्त्वा सत्यो मदानां	मंहिष्ठो मत्सदन्धसः	। हृळ्हा चिक्वारुजे वसु	२	
अभी षु णः सखीना	मविता जरितृणाम्	। शतं भवास्यूतिभिः	३	
अभी न आ ववृत्स्व	चक्रं न वृत्तमर्वतः	। नियुद्धिश्चर्षणीनाम्	४	
प्रवता हि क्रतूना	मा हा पदेव गच्छसि	। अभक्षि सूर्यं सचा	५	
सं यत् तं इन्द्र मन्यवः	सं चक्राणि दधन्विरे	। अध त्वे अध सूर्ये	६	१६३५



उत स्मा हि त्वामाहुरि—न्मघवानं शचीपते	। दातारमविदीधयुम्	७	
उत स्मा सद्य इत् परिं शशमानाय सुन्वते	। पुरू चिन्मंहसे वसुं	८	
नहि प्मा ते शतं चन राधो वरन्त आमुरं:	। न च्यौत्तानि करिष्यत:	९	
अस्माँ अवन्तु ते शत—मस्मान्त्सहस्रमृतयः	। अस्मान् विश्वा अमिष्टयः	१०	
अस्माँ इहा वृणीष्व सख्याय स्वस्तये	। महो राये द्विवित्मते	११	१६४०
अस्माँ अविद्धि विश्वहे—न्द्र राया परिणसा	। अस्मान् विश्वाभिरूतिभिः	१२	
अस्मभ्यं ताँ अपा वृधि व्रजाँ अस्तेव गोमंतः	। नवाभिरिन्द्रोतिभिः	१३	
अस्माकं धृष्णुया रथो द्युमाँ इन्द्रानपच्युतः	। गव्युरश्वयुरीयते	१४	
अस्माकमुत्तमं कृधि श्रवो देवेषु सूर्य	। वर्षिष्ठं द्यामिवोपरि	१५	

॥ १४३ ॥ ( ऋ० ४।३२।१-२२ ) गायत्री ।

आ तू न इन्द्र वृत्रह—न्नस्माकमर्धमा गहि	। महान् महीभिरूतिभिः	१	१६४५
भूमिश्चिद् घासि तूतुजि—रा चित्र चित्रिणीष्वा	। चित्रं कृणोष्युतये	२	
दुभ्रेभिश्चिच्छशीयांसं हंसि वार्धन्तमोजसा	। सखिभिर्ये त्वे सचा	३	
वयमिन्द्र त्वे सचा वयं त्वाभि नोनुमः	। अस्माँअस्माँ इदुद्व	४	
स नश्चित्राभिरद्विवो ऽनवद्याभिरूतिभिः	। अनाधृष्टाभिरा गहि	५	
भूयामो षु त्वावतः सखाय इन्द्र गोमंतः	। युजो वाजाय घृष्वये	६	१६५०
त्वं ह्येक ईशिष इन्द्र वाजस्य गोमंतः	। स नो यन्धि महीमिषम्	७	
न त्वा वरन्ते अन्यथा यद् दित्समि स्तुतो मघम्	। स्तोतृभ्य इन्द्र गिर्वणः	८	
अभि त्वा गोतमा गिरा ऽनूषत प्र वृवने	। इन्द्र वाजाय घृष्वये	९	
प्र ते वोचाम वीर्याँ या मन्दसान आरुजः	। पुरो दासीरभीत्यं	१०	
ता ते गृणन्ति वेधसो यानि चकर्थ पौर्या	। सुतेष्विन्द्र गिर्वणः	११	१६५५
अवीवृधन्त गोतमा इन्द्र त्वे स्तोमवाहसः	। ऐषु धा वीरवद् यशः	१२	
यच्चिद्धि शश्वतामसी—न्द्र साधारणस्त्वम्	। तं त्वा वयं हवामहे	१३	
अर्वाचीनो वसो भवा—ऽस्मे सु मत्स्वान्धसः	। सोमानामिन्द्र सोमपाः	१४	
अस्माकं त्वा मतीना—मा स्तोम इन्द्र यच्छतु	। अर्वागा वर्तया हरीं	१५	
पुरोळाशं च नो घसो जोषयासि गिरिश्च नः	। वधूयुरिव योषणाम्	१६	१६६०
सहस्रं व्यतीनां युक्तानामिन्द्रमीमहे	। शतं सोमस्य खार्थः	१७	
सहस्रा ते शता वयं गवामा च्यावयामसि	। अस्मत्रा राध एतु ते	१८	
दश ते कलशानां हिरण्यानामपीमहि	। भूरिदा अमि वृत्रहन्	१९	

भूरिवा भूरि देहि नो	मा वृभ्रं भूर्या भर	। भूरि घेदिन्द्र दित्ससि	२०	
भूरिदा ह्यसि श्रुतः	पुरुत्रा शूर वृत्रहन्	। आ नो भजस्व राधसि	२१	१६६५
प्र ते बभू विचक्षण	शंसांमि गोषणो नपात्	। माभ्यां गा अनु शिश्रथः	२२	१६६६

॥ १४४ ॥ ( ऋ० ५ २९।१-१५ )

( १६६७-१६८१ ) गौर्ग्वीतिः शाकत्यः । [ ९ ( प्रथमपादस्य ) उशाना वा ] । त्रिष्टुप ।

त्र्यर्यमा मनुषो देवताता	त्री रोचना दिव्या धारयन्त ।		
अर्चन्ति त्वा मरुतः	पूतदक्षा—स्त्वमेषामृषिर्गिन्द्रासि धीरः	१	
अनु यदीं मरुतो मन्दसान	—मार्चन्निन्द्रं पपिवांसं सुतस्य ।		
आदत्त वज्रमभि यदहिं ह	—न्नपो यहीरसृजत् सर्तवा उ	२	
उत ब्रह्माणो मरुतो मे अस्ये	—न्द्रः सोमस्य सुषुतस्य पेयाः ।		
तद्धि हव्यं मनुषे गा अविन्दु	—दहन्नहिं पपिवां इन्द्रो अस्य	३	
आद् रोदसी वितरं वि ष्कभायत	संविद्यानश्चिद् भियसें मृगं कः		
जिर्गतिमिन्द्रो अपजर्गुराणः	प्रति श्वसन्तमव दानवं हन्	४	१६७०
अध क्रत्वा मघवन् तुभ्यं देवा	अनु विश्वे अददुः सोमपेयम् ।		
यत् सूर्यस्य हरितः पतन्तीः	पुरः सतीरुपरा एतञ्जे कः	५	
नव यदस्य नवतिं च भोगान्	त्साकं वज्रेण मघवां विवृश्रत ।		
अर्चन्तीन्द्रं मरुतः सधस्थे	त्रेष्टुभेन वचसा बाधत द्याम्	६	
सखा सख्ये अपचत् तूर्यमग्नि	—रस्य क्रत्वा महिषा त्री शतानि ।		
त्री साकमिन्द्रो मनुषः सरांसि	सुतं पिबद् वृत्रहत्याय सोमम्	७	
त्री यच्छता महिषाणामघो मा	—स्त्री सरांसि मघवां सोम्यापाः ।		
कारं न विश्वे अह्वन्त देवा	भरमिन्द्राय यदहिं जघानं	८	
उशाना यत् सहस्यैर्इरयातं	गृहमिन्द्र जूजुवानेभिरश्वैः ।		
वन्वानो अत्र सरथं ययाथ	कुत्सेन देवैरवनोर्ह शुष्णम्	९	१६७५
प्रान्यच्चक्रमवृहः सूर्यस्य	कुत्सायान्यद् वरिवो यातवेऽकः ।		
अनासो दस्यूरमृणो वधेन	नि दुयोण आवृणद् मूधवाचः	१०	
स्तोमासस्त्वा गौरिवीतेरवर्ध	—न्नरन्धयो वैदधिनाय पिप्रुम् ।		
आ त्वामृजिश्वा सख्याय चक्रे	पचन् पक्तीरपिबः सोमस्य	११	
नवगवासः सुतसोमास इन्द्रं	दशगवासो अभ्यर्चन्त्यर्केः ।		
गव्यं चिदूर्ध्वमपिधानवन्तं	तं चिन्नरः शशमाना अप वन्	१२	

कथो नु ते परि चराणि विद्वान् वीर्यां मघवन् या चुकर्त्थ ।		
या चो नु नव्या कृणवः शविष्ठ प्रेदु ता ते विदथेषु ब्रवाम	१३	
एता विश्वा चकृवाँ इन्द्र भूर्य—परीतो जनुषां वीर्येण ।		
या चिन्नु वज्रिन् कृणवो दधृष्वान् न ते वर्ता तविष्या अस्ति तस्याः	१४	१६८०
इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा जुषस्व या ते शविष्ठ नव्या अकर्म ।		
वस्त्रैव भद्रा सुकृता वसूयू रथं न धीरः स्वपां अतक्षम्	१५	१६८१

॥ १४५ ॥ ( ऋ० ५।३०।१-११ ) ( १६८२-१६९२ ) बभ्रुरात्रेयः ।

क्रास्य वीरः को अपश्यदिद्रं सुखरथमीर्यमानं हरिभ्याम् ।		
यो राया वज्री सुतसोममिच्छन् तदोको गन्तां पुरुहूत ऊती	१	
अवाचचक्षं पदमस्य सस्व—रुग्रं निधातुरन्वायमिच्छन् ।		
अपृच्छमन्याँ उत ते म आहु—रिन्द्रं नरो बुबुधाना अशेम	२	
प्र नु वयं सुते या ते कृतानी—न्द्र ब्रवाम यानि नो जुजोषः ।		
वेवृदविद्राञ्छृणवच्च विद्वान् वहतेऽयं मघवा सर्वसेनः	३	
स्थिरं मनश्चकृषे जात इन्द्र वेषीदेको युधये भूर्यसश्रित ।		
अश्मानं चिच्छवसा दिद्युतो वि विदो गवामूर्वमुस्त्रियाणाम्	४	१६८५
परो यत् त्वं परम आजनिष्ठाः परावति श्रुत्यं नाम बिभ्रत् ।		
अतश्चिदिन्द्रादभयन्त देवा विश्वा अपो अजयद् वासपत्नीः	५	
तुभ्येदेते मरुतः सुशेवा अर्चन्त्यर्कं सुन्वन्त्यन्धः ।		
अहिमोहानमप आशयानं प्र मायाभिर्मायिनं सक्षदिन्द्रः	६	
वि पू मृधो जनुषा दानमिन्व—न्नहन् गवां मघवन्त्संचक्रानः ।		
अत्रा वासस्य नमुचेः शिरो य—दवर्तयो मनवे गातुमिच्छन्	७	
युजं हि मामकृथा आदिदिन्द्र शिरो वासस्य नमुचेर्मथायन् ।		
अश्मानं चित् स्वर्यं वर्तमानं प्र चक्रियेव रोदसी मरुद्भ्यः	८	
स्त्रियो हि वास आयुधानि चक्रे किं मां करन्नबला अस्य सेनाः ।		
अन्तर्ह्यख्यदुभे अस्य धेने अथोप प्रैद् युधये दस्युमिन्द्रः	९	१६९०
समत्र गावोऽभितोऽनवन्ते—हेह वत्सैर्वियुता यदासन् ।		
सं ता इन्द्रो असृजदस्य शाकै—र्यदीं सोमासः सुषुता अमन्दन्	१०	
यदीं सोमा बभ्रुधूता अमन्व—न्नरोरवीद् वृषभः सादनेषु ।		
पुरंदुरः पपिवाँ इन्द्रो अस्य पुनर्गवामददादुस्त्रियाणाम्	११	१६९२

॥ १४६ ॥ ( ५१३११ ८, १०-१३ ) ( १६९३-१७०४ ) अवस्युर्गात्रेयः, ( ८ तृतीयपादस्य कुत्सो वा, चतुर्थपादस्य उशना वा ) ।

इन्द्रो रथाय प्रवतं कृणोति यमध्यस्थान्मघवा वाजयन्तम् ।		
युथेव पश्वो व्युनोति गोपा अरिष्टो याति प्रथमः सिपासन	१	
आ प्र द्रव हरिवो मा वि वेनः पिशङ्गराते अभि नः सचस्व ।		
नहि त्वदिन्द्र वस्यो अन्यदस्त्यमेनोश्चिज्जनिवतश्चकथ	२	
उद्यत सहः सहस आजनिष्ट देदिष्ट इन्द्र इन्द्रियाणि विश्वा ।		
प्राचोदयत् सुदुघा ववे अन्त वि ज्योतिषा संववृत्वन् तमोऽवः	३	१६९५
अनवस्ते रथमश्वाय तक्षन् त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम् ।		
ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्के र्वर्धयन्नहये हन्तवा उ	४	
वृष्णे यत् ते वृषणो अर्कमर्चा निन्द्र ग्रावाणो अदितिः सजोपाः ।		
अनश्वासो ये पवयोऽरथा इन्द्रेपिता अभ्यवर्तन्त दस्यून्	५	
प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं प्र नूतना मघवन् या चकथ ।		
शक्तीवो यद् विभरा रोदसी उभे जयन्नपो मनव दानुचित्राः	६	
तदिन्नु ते करणं दस्म विप्राऽहिं यद् गन्नोजो अत्रामिमीथाः ।		
शुष्णस्य चित् परि माया अंगृभ्णाः प्रपित्वं यन्नप दस्यूरसंधः	७	
त्वमपो यदवे तुर्वशायाऽरमयः सुदुघाः पार इन्द्र ।		
उग्रमयातमवहो ह कुत्सं सं ह यद् वामुशनारन्त केवाः	८	१७००
वातस्य युक्तान्तस्युजश्चिदश्वान् कविश्चिदेषो अजगन्नवस्युः ।		
विश्वे ते अत्र मरुतः सखाय इन्द्र ब्रह्माणि तविषीमवर्धन्	१०	
सूरश्चिद् रथं परितक्म्यायां पूर्वं करदुपरं जूजुवांसम् ।		
भरच्चक्रमेतशः सं रिणाति पुरो दधत् सनिष्यति क्रतुं नः	११	
आयं जना अभिचक्षे जगामेन्द्रः सखायं सुतसोममिच्छन् ।		
वदन् ग्रावाव वेदिं भियाते यस्य जीरमध्वर्यवश्चरन्ति	१२	
ये चाकनन्त चाकनन्त नू ते मती अमृत मो ते अंह आरन् ।		
वावन्धि यज्यूरुत तेषु धेह्यो जो जनेषु येषु ते स्याम	१३	१७०४

॥ १४७ ॥ ( क्र० ५१३११-१२ ) ( १७०५-१७१६ ) गातुर्गात्रेयः ।

अर्द्वरुत्समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्धधानो अरम्णाः ।		
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद् वः सृजो वि धारा अव दानवं हन्	१	१७०५

त्वमुत्सां ऋतुभिर्बद्धधानां अरंह ऊधः पर्वतस्य वज्रिन् ।	
अहिं चिदुग्र प्रयुतं शयानं जघन्वां इन्द्र तविषीमधस्थाः	२
त्यस्य चिन्महतो निर्मृगस्य वर्धर्जघान तविषीभिरिन्द्रः ।	
य एक इदं प्रतिर्मन्यमान आदस्मावुन्यो अजनिष्ट तव्यान्	३
त्यं चिदेषां स्वधया मदन्तं मिहो नपातं सुवृधं तमोगाम् ।	
वृषप्रभर्मा दानवस्य भामं वज्रेण वज्री नि जघान शुष्णम	४
त्यं चिदस्य ऋतुभिर्निषत्तम—मर्मणो विददिदस्य मर्म ।	
यदीं सुक्षत्र प्रभृता मदस्य युयुत्सन्तं तमसि हर्म्ये धाः	५
त्यं चिद्विस्था कृत्पयं शयान—मसुर्यं तमसि वावृधानम् ।	
तं चिन्मन्वानो वृषभः सुतस्यो—चैरिन्द्रो अपगूर्या जघान	६
उद यद्विन्द्रो महते दानवाय वर्धर्यमिष्ट सहो अप्रतीतम् ।	१७१०
यदीं वज्रस्य प्रभृतौ वृदाभ विश्वस्य जन्तोर्धमं चकार	७
त्यं चिदणीं मधुपं शयान—मसिन्वं व्रं मह्यादुग्रः ।	
अपादमंत्रं महता वधेन नि दुर्याण आवृणङ् मृधवाचम्	८
को अस्य शुष्मं तविषीं वरात् एको धना भरते अप्रतीतः ।	
इमे चिदस्य जयसो नु देवी इन्द्रस्यौजसो भियसा जिहाते	९
न्यस्मै देवी स्वधितिर्जिहीत इन्द्राय गातुरुज्ञतीव येमे ।	
सं यदोजो युवते विश्वमाभि—रनु स्वधात्रे क्षितयो नमन्त	१०
एकं नु त्वा सत्पतिं पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि यशसं जनेषु ।	
तं मे जगृभ्र आशसो नविष्ठं वृषा वस्तोर्हवमानास इन्द्रम्	११
एवा हि त्वामृतुथा यातयन्तं मघा विप्रेभ्यो ददतं शृणोमि ।	१७१५
किं ते ब्रह्माणो गृहते सखायो ये त्वाया निवृधुः काममिन्द्र	१२
	१७१६

॥ १४८ ॥ ( ऋ० ५।३३।१-१० ) ( १७१७-१७३५ ) प्राजापत्य. संवरणः ।

महिं महे तवसे दीध्ये नृ—निन्द्रायिस्था तवसे अतव्यान् ।	
यो अस्मै सुमतिं वार्जसाती स्तुतो जने समर्यश्चिकेत	१
स त्वं न इन्द्र धियसानो अर्के—हरीणां वृषन् योक्त्रमश्रेः ।	
या इत्था मघवन्ननु जोषं वक्षो अभि प्रार्यः सक्षि जनान्	२
न ते तं इन्द्राभ्यस्महृष्वा—ऽयुक्तासो अब्रह्मता यदसन् ।	
तिष्ठा रथमधि तं वज्रहस्ता—ऽऽ रुशिमं देव यमसे स्वश्वः	३

पुरु यत् त इन्द्र सन्त्युक्था गवे चकथोर्वरासु युध्यन् ।		
तत्क्षे सूर्याय चिदोर्कसि स्वे वृषा समत्सु दासस्य नाम चित्	४	१७२०
वयं ते त इन्द्र ये च नरः शर्धो जज्ञाना याताश्च रथाः ।		
आस्माञ्जगम्यादहिशुष्म सत्वा भगो न हव्यः प्रभूथेषु चारुः	५	
पपूक्षेण्यमिन्द्र त्वे ह्योजो नृम्णानि च नृतमानो अमर्तः ।		
स न एनीं वसवानो रयिं दाः प्रार्यः स्तुषे तुविमघस्य दानम्	६	
एवा न इन्द्रोतिभिर्व पाहि गृणतः शूर कारुन् ।		
उत त्वचं ददतो वाजसातौ पिप्रीहि मध्वः सुधुतस्य चारोः	७	
उत त्ये मा पौरुकुत्स्यस्य सुरे स्रसदस्योर्हिरणिनो रराणाः ।		
वहन्तु मा दश श्येतासो अस्य गैरिक्षितस्य क्रतुभिर्नु संश्रे	८	
उत त्ये मा मारुताश्वस्य शोणाः कत्वामघासो विदथस्य रातो ।		
सहस्रा मे च्यवतानो ददान आनूकमर्यो वपुषे नार्चत	९	१७२५
उत त्ये मा ध्वन्यस्य जुष्टा लक्ष्मण्यस्य सुरुचो यतानाः ।		
महा रायः संवरणस्य ऋषेर्ब्रजं न गावः प्रयता अपि गमन्	१०	

॥१४९॥ ( ऋ० ५।३४।१-९ ) जगती, ९ त्रिष्टुप् ।

अजातशत्रुमजरा स्वर्वत्यनु स्वधामिता वृस्ममीयते ।		
सुनोतन पचत ब्रह्मवाहसे पुरुष्टतार्य प्रतरं दधातन	१	
आ यः सोमेन जठरमपिप्रताऽमन्दत मघवा मध्वो अन्धसः ।		
यदीं मृगाय हन्तवे महावधः सहस्रभृष्टिमुशना वधं यमत्	२	
यो अस्मै घ्नस उत वा य ऊर्धनि सोमं सुनोति भवति द्युमो अह ।		
अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः	३	
यस्यावधीत् पितरं यस्य मातरं यस्य शक्रो भ्रातरं नात ईपते ।		
वेतीद्वस्य प्रयता यतं करो न किल्बिषादीपते वस्व आकरः	४	१७३०
न पञ्चभिर्वृशभिर्वष्टचारभं नासुन्वता सचते पुष्यता चन ।		
जिनाति वेदमुया हन्ति वा धुनि रा देव्युं भजति गोमति ब्रजे	५	
वित्वक्षणः समृतौ चक्रमासजो ऽसुन्वतो विषुणः सुन्वतो वृधः ।		
इन्द्रो विश्वस्य दमिता विभीषणो यथावशं नयति दासमार्यः	६	
समीं पणेरजति भोजनं मुषे वि दाशुषे भजति सूनरं वसु ।		
दुर्गे चन धियते विश्व आ पुरु जनो यो अस्य तविषीमचुकुधत	७	

सं यज्जनौ सुधनौ विश्वशर्धसा—ववेदिन्द्रो मघवा गोषु शुभिषु ।

युजं ह्यन्यमकृत प्रवेप—न्युदीं गव्यं सृजते सत्वाभिर्धुनिः

८

सहस्रसामाग्निवेशिं गृणीषे शत्रिमघ उपमां केतुमर्यः ।

तस्मा आपः संयतः पीपयन्त तस्मिन् क्षत्रममवत् त्वेषमस्तु

९

१७३५

॥ १५० ॥ ( ऋ० ५।३।१-८ ) ( १७३६-१७४९ ) प्रभवसुराङ्गिरसः । अनुष्टुप्, ८ पङ्क्तिः ।

यस्तं साधिष्ठोऽवस इन्द्र क्रतुष्टमा भर । अस्मभ्यं चर्षणीसहं सस्तिं वाजेषु दुष्टरंम्

१

यदिन्द्र ते चतस्रो यच्छूरं सन्ति तिस्रः । यद् वा पञ्च क्षितीना—मवस्तत् सु न आ भर

२

आ तेऽवो वरण्यं वृषन्तमस्य हूमहे । वृषजूतिर्हि जजिष आभूभिर्निन्द्र तुर्वणिः

३

वृषा ह्यसि राधसे जजिषे वृष्णिं ते शवः । स्वक्षत्रं ते धूषन्मनः सत्राहमिन्द्र पौंस्यम्

४

त्वं तमिन्द्र मर्त्यं—ममित्रयन्तमद्विवः । सर्वरथा शतक्रतो नि याहि शवसस्पते

५

१७४०

त्वामिद् वृत्रहन्तम् जनसो वृक्तबर्हिषः । उग्रं पूर्वाषु पूर्य हवन्ते वाजसातये

६

अस्माकमिन्द्र दुष्टरं पुरोयावानमाजिषु । सयावानं धनेधने वाजयन्तमवा रथम्

७

अस्माकमिन्द्रेहि नो रथमवा पुरंध्या ।

वयं शविष्ठ वार्यं दिवि श्रवो दधीमहि दिवि स्तोमं मनामहे

८

॥ १५१ ॥ ( ऋ० ५।३।१-६ ) त्रिष्टुप्, ३ जगती ।

स आ रमदिन्द्रो यो वसूनां चिकेतद् दातुं दामनो रयीणाम् ।

धन्वचरो न वंसगस्तृपाण—श्चकमानः पिबतु दुग्धमंशुम्

१

आ ते हनू हरिवः शूर शिप्रे रुहत् सोमो न पर्वतस्य पृष्ठे ।

अनु त्वा राजन्नर्वतो न हिन्वन् गीर्भिर्मदेम पुरुहूत विश्वे

२

१७४५

चक्रं न वृत्तं पुरुहूत वेपते मनो भिया मे अमतेरिदं द्विवः ।

रथादधि त्वा जरिता संदावृध कुविञ्चु स्तोपन्मघवन् पुरुवसुः

३

एष ग्रावेव जरिता तं इन्द्रे—यतिं वाचं बृहदांशुषाणः ।

प्र सव्येन मघवन् यंसिं रायः प्र दक्षिणिद्धरिवो मा वि वेनः

४

वृषा त्वा वृषणं वर्धतु द्यौ—वृषा वृषभ्यां वहसे हरिभ्याम् ।

स नो वृषा वृषरथः सुशिप्र वृषक्रतो वृषा वज्रिन् भरं धाः

५

यो रोहितौ वाजिनौ वाजिनीवान् त्रिभिः शतैः सचमानावदिष्ट ।

यूने समस्मै क्षितयो नमन्तां श्रुतरथाय मरुतो दुवोया

६

१७४९

॥ १५२ ॥ ( ऋ० ५।३।१-५ ) ( १७५०-१७६८ ) भौमोऽत्रिः । त्रिष्टुप् ।

सं भानुना यतते सूर्यस्या—ऽऽजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वश्चाः ।

तस्मा अमृधा उपसो व्युच्छान् य इन्द्राय सुनवामेत्याह

१

१७५०

समिन्द्राग्निर्वनवत् स्तीर्णबर्हि—र्युक्तग्रावा सुतसोमो जराते ।  
 ग्रावाणो यस्येषिरं वदुन्त्य—यदध्वर्युर्हविषाव सिन्धुम् २  
 वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति य ईं वहति महिषीमिषिराम् ।  
 आस्यं श्रवस्याद् रथ आ च घोषात् पुरू सहस्रा परिं वर्तयाते ३  
 न स राजा व्यथते यस्मिन्निन्द्र—स्तीवं सोमं पिबति गोसंखायम् ।  
 आ संत्वनैरजति हन्ति वृत्रं क्षेति क्षितीः सुभगो नाम पुष्यन् ४  
 पुष्यात् क्षेमे अभि योगे भवा—त्युभे वृता संयती सं जयाति ।  
 प्रियः सूर्यं प्रियो अग्रा भवाति य इन्द्राय सुतसोमो ददाशत् ५

॥ १५३ ॥ ( ऋ० ५।३८।१-५ ) अनुष्टुप् ।

उरोष्ट इन्द्र राधसो विभी रातिः शतक्रतो । अधा नो विश्वचर्पणे द्युम्ना सुक्षत्र मंहय १ १७५५  
 यदीमिन्द्र श्रवाय्य—मिपं शविष्ठ दधिषे । पप्रथे दीर्घश्रुत्तमं हिरण्यवर्णं दुष्टरम् २  
 शुष्मासो ये ते अद्रिवो मेहना केतसापः । उभा देवावभिष्टये द्विवश्च गमश्च राजथः ३  
 उतो नो अस्य कस्य चिद् दक्षस्य तव वृत्रहन् । अस्मभ्यं नृम्णमा भरा—ऽस्मभ्यं नृमणस्यसे ४  
 नू तं आभिरभिष्टिभि—स्तय शर्मच्छतक्रतो । इन्द्र स्याम सुगोपाः शूर स्याम सुगोपाः ५

॥ १५४ ॥ ( ऋ० ५।३९।१-५ ) अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः ।

यदिन्द्र चित्र मेहना ऽस्ति त्वादातमद्रिवः । राधस्तन्नो विद्वस उभयाहस्त्या भर १ १७६०  
 यन्मन्यसे वरेण्य—मिन्द्र द्युक्षं तदा भर । विद्याम तस्य ते वय—मकूपारस्य वावने २  
 यत् ते वित्सु प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत् । तेन हृब्हा चिदाद्रिव आ वाजं दधि सातये ३  
 महिष्ठं वो मघोनां राजानं चर्पणीनाम् । इन्द्रमुप प्रशस्तये पूर्वीभिर्जुजुषे गिरः ४  
 अस्मा इत् काव्यं वच उक्थमिन्द्राय शंस्यम् ।  
 तस्मा उ ब्रह्मवाहसे गिरो वर्धन्त्यत्रयो गिरः शुम्भन्त्यत्रयः ५

॥ १५५ ॥ ( ऋ० ५।४०।१-४ ) उष्णिक्, ४ त्रिष्टुप् ।

आ याह्याद्रिभिः सुतं सोमं सोमपते पिच । वृषान्निन्द्र वृषभिवृत्रहन्तम् १ १७६५  
 वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः । वृषान्निन्द्र वृषभिवृत्रहन्तम् २  
 वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः । वृषान्निन्द्र वृषभिवृत्रहन्तम् ३  
 ऋजीषी वज्री वृषभस्तुराषाद्—च्छुप्मी राजा वृत्रहा सोमपावा ।  
 युक्त्वा हरिभ्यामुप यासदुर्वाङ् माध्यंदिने सर्वने मत्सदिन्द्रः ४ १७६८



॥ १५६ ॥ ( ऋ० ८।३६।१-७ )

( १७६९ - १७८२ ) श्यावाश्व आत्रेयः । शकरी, ७ महापङ्क्तिः ।

अवितासि सुन्वतो वृक्तर्बर्हिषः पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।

यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते १

प्राव स्तोतारं मध्वन्नव त्वां पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।

यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते २ १७७०

ऊर्जा देवाँ अवस्यो जसा त्वां पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।

यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ३

जनिता द्विवो जनिता पृथिव्याः पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।

यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ४

जनिताश्वानां जनिता गवामसि पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।

यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ५

अत्रीणां स्तोममद्रिवो महस्कृधि पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।

यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ६

श्यावाश्वस्य सुन्वतस्तस्था शृणु यथाशृणो रत्रेः कर्माणि कृण्वतः ।

प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इच्छयाह्य इन्द्र ब्रह्माणि वर्धयन्

७ १७७५

॥ १५७ ॥ ( ऋ० ८।३७।१-७ ) महापङ्क्तिः, १ अतिजगती ।

प्रेदं ब्रह्म वृत्रतूर्येष्वाविथ प्र सुन्वतः शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः १

सेहान उग्र पृतना अभि दुहः शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः २

एकराळस्य भुवनस्य राजसि शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ३

सस्थावाना यवयसि त्वमेक इच्छेचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ४

क्षेमस्य च प्रयुजश्च त्वमीशिषे शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ५ १७८०

क्षत्राय त्वमवासि न त्वमाविथ शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ६

श्यावाश्वस्य रेभतस्तथा शृणु यथाशृणो रत्रः कर्माणि कृण्वतः ।

प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इच्छुषाह्य इन्द्र क्षत्राणि वर्धयन्

७

१७८०

॥ १५८ ॥ ( ऋ० ८।९।१-७ )

( १७८३-१७८९ ) आत्रेयी अपाला । अनुष्टुप्, १-२ पङ्क्ति ।

कन्या उ वारवायती सोममपि सुताविदत ।

अस्तं भरन्त्यब्रवी दिन्द्राय सुनवै त्वा शक्राय सुनवै त्वा

१

असौ य एषि वीरको गृहंगृहं विचाकशत ।

इमं जम्भसुतं पिब धानावन्तं करम्भिणमपूषवन्तमुक्थिनम

२

आ चन त्वा चिकित्सामो ऽधि चन त्वा नेमसि ।

शनैरिव शनकैरिवेन्द्रायेन्दो परि स्रव

३

१७८१

कुविच्छकत् कुवित् करत् कुविन्नो वस्यसस्करत् ।

कुवित् पतिद्विषो यती रिन्द्रेण संगमामहै

४

इमानि त्रीणि विष्टपा तानीन्द्र वि रोहय ।

शिरस्ततस्योर्वरा माविदं म उपोदरे

५

असौ च या न उर्वरा दिमां तन्वं मम

अथो ततस्य यच्छिरः सर्वा ता रोमशा कृधि

६

खे रथस्य खेऽनसः खे युगस्य शतक्रतो ।

अपालामिन्द्र त्रिष्पू ल्यकृणोः सूर्यत्वचम्

७

१७८९

॥ १५९ ॥ ( ऋ० ८।२४।१-२७ )

( १७९०-१८१६ ) विश्वमना वैयश्वः । उष्णिक् ।

सखाय आ शिषामहि ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे

। स्तुष ऊ पु वो नृतमाय धृष्णवं

१ १७९०

शर्वसा ह्यसि श्रुतो वृत्रहत्येन वृत्रहा

। मधैर्मघोनो अति शूर दाशसि

२

स नः स्तवान आ भर रयि चित्रश्रवस्तमम्

। निरके चिद् यो हरिवो वसुर्वदिः

३

आ निरेकमुत प्रियमिन्द्र दधि जनानाम्

। धृषता धृष्णो स्तवमान आ भर

४

न ते स्वयं न दक्षिणं हस्तं वरन्त आमुरः

। न परिबाधो हरिवो गर्विष्टिषु

५

आ त्वा गोभिरिव व्रजं गीर्भिक्रणोम्यद्विवः

। आ स्मा कामं जरितुरा मनः पूण

६ १७९५

विश्वानि विश्वमनसो धिया नो वृत्रहन्तम

। उग्रं प्रणेत रधि पू वंसो गहि

७

वयं ते अस्य वृत्रहन् विद्यामं शूर नव्यसः

। वसोः स्पार्हस्य पुरुहूत राधसः

८

इन्द्र यथा ह्यस्ति ते ऽपरीतं नृतो शवः

। अमृक्ता रातिः पुरुहूत वाशुषे

९

आ वृषस्व महामह महे नृतम राधसे	। हृळहश्चिद् दृष्ट मघवन मघत्तये	१०
नू अन्यत्रा चिद्विष्वस्त्वन्नो जग्मुराशसः	। मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिः	११ १८००
नह्यङ्ग नृतो त्वदुन्यं विन्दामि राधसे	। राये द्युम्नाय शर्वसे च गिर्वणः	१२
एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु	। प्र राधसा चोदयाते महित्वना	१३
उपो हरीणां पतिं दक्षं पुञ्चन्तमब्रवम्	। नूनं श्रुधि स्तुवतो अश्वस्यस्य	१४
नह्यङ्ग पुरा च न जज्ञे वीरतरस्त्वत	। नकीं राया नैवथा न भन्दना	१५
एदु मध्वो मदिन्तरं सिञ्च वाध्वर्यो अन्धसः	। एवा हि वीरः स्तवते सदावृधः	१६ १८०५
इन्द्रं स्थातर्हरीणां नकिंष्टे पूर्व्यस्तुतिम्	। उदानंश शर्वसा न भन्दना	१७
तं वो वाजानां पतिमहमहि श्रवस्यवः	। अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम्	१८
एतो न्विद्वं स्त्वाम सखायः स्तोम्यं नरम्	। कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत्	१९
अगोरुधाय गविषे द्युक्षाय दस्म्यं वचः	। घृतात् स्वादीयो मधुनश्च वोचत	२०
यस्यामितानि वीर्यांश्च न राधः पर्येतवे	। ज्योतिर्न विश्वमभ्यस्ति दक्षिणा	२१ १८१०
स्तुहीन्द्रं व्यश्ववदनामि वाजिनं यमम्	। अर्यो गयं मंहमानं वि दाशुषे	२२
एवा नूनमुप स्तुहि वैर्यश्च दशमं नवम्	। सुविद्रांसं चकृत्यं चरणीनाम्	२३
वेत्था हि निक्कतीनां वज्रहस्त परिवृजम्	। अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव	२४
तद्विन्द्राव आ भर येना दंसिष्ठ कृत्वने	। द्विता कुत्साय शिशथो नि चोदय	२५
तमु त्वा नूनमीमहे नद्यं दंसिष्ठ सन्यसे	। स त्वं नो विश्वा अभिमातीः सक्षणिः	२६ १८१५
य ऋक्षादंहसो मुचद् यो वार्यात् सप्त सिन्धुषु	। वधर्दासस्य तुविनृम्णा नीनमः	२७ १८१६

॥ १६० ॥ ( ऋ० ८।४६।१-२० २९-३१;३३ )

(१८१७-१८४०) वशाऽश्व्यः । गायत्री, १ पादनिचृत्, ५ ककुप्, ७ बृहती, ८ अनुष्टुप्, ९ सतोबृहती, ११-१२ विपरीतोत्तरः प्रगाथः=(बृहती, विपरीता), १३ द्विपदा जगती, १४ बृहती पिपीलिकमध्या, १५ ककुभ्यंकुशिरा, १६ विराद्, १७ जगती, १८ उपरिष्ठाद् बृहती, १९ बृहती, २० विषमपदा बृहती, ३० द्विपदा विराद्, ३१ उष्णिक् ।

त्वावतः पुरुवसो वयमिन्द्र प्रणेतः	। स्मसिं स्थातर्हरीणाम्	१
त्वां हि सत्यमद्विवो विद्म दातारमिषाम्	। विद्म दातारं रयीणाम्	२
आ यस्य ते महिमानं शतमूते शतक्रतो	। गीभिर्गृणान्ति कारवः	३
सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा	। मित्रः पान्त्यद्रुहः	४ १८१०
दधानो गोमदश्ववत् सुवीर्यमादित्यजूत एधते	। सदा राया पुरुस्पृहा	५
तमिन्द्रं दानमीमहे शवसानमभीर्वम्	। ईशानं राय ईमहे	६

तस्मिन् हि सन्त्युतयो विश्वा अभीरिवः सचा ।	
तमा वहन्तु सर्पयः पुरुवसुं मदाय हरयः सुतम	७
यस्ते मवो वरेण्यो य इन्द्र वृत्रहन्तमः ।	
य आवृदिः स्वर्नृभिर्भयः पृतनासु दुष्टरः	८
यो दुष्टरो विश्ववार श्रवाप्यो वाजेष्वस्ति तरुता ।	
स नः शविष्ठ सवना वसो गहि गमेम गोमति व्रजे	९ १८२५
गव्यो षु णो यथा पुरा ऽश्वयोत रथया । वरिवस्य महामह	१०
नहि ते शूर राधसो ऽन्तं विन्दाभि सत्रा ।	
दृशस्या नो मघवन्नू चिदद्विवो धियो वाजेभिराविथ	११
य ऋष्वः श्रावयत्सखा विश्वेत स वेदुं जनिमा पुरुष्टुतः ।	
तं विश्वे मानुषा युगेन्द्रं हवन्ते तविषं यतसुचः	१२
स नो वाजेष्वविता पुरुवसुः पुरःस्थाता मघवा वृत्रहा भुवत	१३
अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम ।	
इन्द्रं नाम श्रुत्यंशाकिनं वचो यथा	१४ १८३०
वृदी रेक्णास्तन्वे वृदिर्वसु वृदिर्वाजेषु पुरुहृत वाजिनम् । नूनमथ	१५
विश्वेषामिरज्यन्तं वसूनां सासह्रांसं चिदस्य वर्षसः । कृपयतो नूनमत्यथ	१६
महः सु वो अरमिषे स्तवामहे मीळहुषं अरंगमाय जग्मये ।	
यज्ञेभिर्गीभिर्विश्वमनुषां मरुतामियक्षसि गार्थे त्वा नमसा गिरा	१७
ये पातर्यन्ते अजमभिर्गिरीणां स्नुभिरेषाम ।	
यज्ञं महिष्वणीनां सुन्नं तुविष्वणीनां प्राध्वरे	१८
प्रभङ्गः दुर्मतीनामिन्द्र शविष्ठा भर ।	
रयिमस्मभ्यं युज्यं चोदयन्मते ज्येष्ठं चोदयन्मते	१९ १८३१
सनितः सुसनितरुग्र चित्र चेतिष्ठ सूनृत ।	
प्रासहा सभ्राट् सहुरिं सहन्तं भुज्युं वाजेषु पूर्यम	२०
अध प्रियमिषिराय षष्टिं सहस्रासनम् । अश्वानामिन्न वृष्णांम्	२१
गावो न यूथमुप यन्ति वधय उप मा यन्ति वधयः	३०
अध यच्चारथे गणे शतमुष्ट्रं अचिक्रदत् । अध श्विनेषु विशतिं शता	३१
अध स्या योषणा मही प्रतीची वशमश्वयम् । अधिरुक्मा वि नीयते	३३ १८४०

॥ १६१ ॥ ( ऋ० ६।१७।१-१५ )

(१८४१-२००५) बार्हस्पत्यो भरद्वाज । त्रिष्टुप्; १५ छिपदा त्रिष्टुप् ।

पिब्रा सोममभि यमुग्र तर्द ऊर्वं गव्यं महिं गृणान इन्द्र ।	
वि यो धृष्णो वधिषो वज्रहस्त विश्वा वृत्रममित्रिया शवोभिः	१
स ई पाहि य ऋजीपी तरुत्रो यः शिप्रवान् वृषभो यो मतीनाम् ।	
यो गोत्रभिद वज्रभृद् यो हरिष्ठाः स इन्द्र चित्रा अभि तृन्धि वाजान्	२
एवा पाहि प्रतथा मन्दतु त्वा श्रुधि ब्रह्म वावृधस्वोत गीर्भिः ।	
आविः सूर्यं कृणुहि पीपिहीषो जहि शत्रूरभि गा इन्द्र तृन्धि	३
ते त्वा मदा बृहदिन्द्र स्वधाव इमे पीता उक्षयन्त द्युमन्तम् ।	
महामनूनं तवसं विभूतिं मत्सरासो जर्हषन्त प्रसाहम्	४
यैभिः सूर्यमुपसं मन्दसानो ऽवासयोऽपं हृळ्हानि दद्रेत् ।	
महामद्विं परि गा इन्द्र सन्तं नुत्था अच्युतं सदसस्पारि स्वात्	५
तव क्रत्वा तव तद् कुंसनाभि रामासु पक्वं शच्या नि दीधः ।	१८४५
और्णोर्दुर उस्त्रियाभ्यो वि हृळ्हो दुर्वाद् गा असृजो अङ्गिरस्वान्	६
प्रप्राथ क्षां महि दंसो व्युर्वीमुष द्यामृष्वो बृहदिन्द्र स्तभायः ।	
अधारयो रोदसी देवपुत्रे प्रत्ने मातरा यही ऋतस्य	७
अध त्वा विश्वे पुर इन्द्र देवा एकं तवसं दधिरे भराय ।	
अदंबो यदुभ्यौहिष्ट देवान् त्वर्षाता वृणत इन्द्रमत्र	८
अध द्यौश्चित् ते अप सा नु वज्राद् द्वितानमद् भियसा स्वस्य मन्योः ।	
अहिं यदिन्द्रो अभ्योहसानं नि चिद् विश्वायुः शयथे जघान	९
अध त्वष्टा ते मह उग्र वज्रं सहस्रभृष्टिं ववृतच्छताश्रिम ।	
निकाममरमणसं येन नवन्तमहिं सं पिणगृजीपिन्	१०
वर्धान् यं विश्वे मरुतः सजोषाः पचच्छतं महिषां इन्द्र तुभ्यम् ।	१८५०
पूषा विष्णुस्त्रीणि सरांसि धावन् वृत्रहणं मदिरमंशुमस्मै	११
आ क्षोवो महि वृतं नदीनां परिष्ठितमसृज ऊर्मिमपाम् ।	
तासामनुं प्रवत इन्द्र पन्थां प्रादयो नीचीरपसः समुद्रम्	१२
एवा ता विश्वा चक्रुवांसमिन्द्रं महामुग्रमजुर्यं संहोदाम् ।	
सुवीरं त्वा स्वायुधं सुवज्रमा ब्रह्म नव्यमवसे ववृत्यात्	१३
स नो वाजाय श्रवस इषे च राये धेहि द्युमतं इन्द्र विप्रान् ।	
भरद्वाजे नृवतं इन्द्र सूरीन् द्विवि च स्मैधि पार्ये न इन्द्र	१४

अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः

१५

१८५५

॥ १६२ ॥ (ऋ० ६।१८।१-१५)

तमुं षुहि यो अभिभूत्योजा वन्वन्नवातः पुरुहूत इन्द्रः ।

अषाञ्छमुग्रं सहमानमाभिर्गीभिर्वेधं वृषभं चर्षणीनाम्

१

स युध्मः सत्वां खजकृत समद्रां तुविभ्रक्षो नदनुमो ऋजीषी ।

बृहद्रेणुश्च्यवनो मानुषीणां मेकः कृष्टीनामभवत् सहावा

२

त्वं ह नु त्यददमायो दस्यूरेकः कृष्टीरवनोरार्याय ।

अस्ति स्विन्नो वीर्यं तत् त इन्द्र न स्विदस्ति तदंतुथा वि वीचः

३

सदिद्धि ते तुविजातस्य मन्ये सहः सहिष्ठ तुरतस्तुरस्य ।

उग्रमुग्रस्य तवसस्तवीयो ऽरधस्य रधतुरो बभूव

४

तन्नः प्रत्नं सख्यमस्तु युष्मे इत्था वदद्भिर्वलमङ्गिरोभिः ।

हन्नच्युतच्युद् दस्मेषयन्तमृणोः पुरो वि दुरो अस्य विश्वाः

५

१८६०

स हि धीभिर्हव्यो अस्त्युग्र ईशानकृन्महति वृत्रतूर्ये ।

स लोकसाता तनये स वज्री वितन्तसाय्यो अभवत् समत्सु

६

स मज्मना जनिम मानुषाणां ममर्त्येन नाम्नाति प्र सस्र ।

स द्युन्नेन स शर्वसोत राया स वीर्येण नृतमः समाकाः

७

स यो न मुहे न मिथू जनो भूत् सुमन्तुनामा चुमुरिं धुनिं च ।

वृणक् पिपुं शम्बरं शुष्णमिन्द्रः पुरां च्यौत्तायं शयथाय नू चित

८

उदावता त्वक्षसा पन्यसा च वृत्रहत्याय रथमिन्द्र तिष्ठ ।

धिष्व वज्रं हस्त आ दक्षिणत्रा ऽभि प्र मन्द पुरुदत्र मायाः

९

अग्निर्न शुष्कं वनमिन्द्र हेती रक्षो नि धक्ष्यशनिर्न भीमा ।

गम्भीरयं ऋष्वया यो रुरोजा ऽध्वानयद् दुरिता दम्भयच्च

१०

१८६५

आ सहस्रं पथिभिरिन्द्र राया तुविद्युन्न तुविवाजेभिरर्वाक ।

याहि सूनो सहसो यस्य नू चिददेव ईशे पुरुहूत योतोः

११

प्र तुविद्युन्नस्य स्थविरस्य घृष्वे दिवो ररपशे महिमा पृथिव्याः ।

नास्य शत्रुर्न प्रतिमानमस्ति न प्रतिष्ठिः पुरुमायस्य सह्योः

१२

प्र तत् ते अद्या करणं कृतं भूत् कुत्सं यद्वायुमतिथिगवर्मस्रै ।

पुरू सहस्रा नि शिशा अभि क्षा मुत् तृवयाणं धृषता निनेथ

१३

अनु त्वाहिंघ्ने अर्धं देव देवा मदनु विश्वे कवितंमं कवीनाम् ।

करो यत्र वरिवो बाधिताय द्विवे जनाय तन्वे गृणानः १४

अनु द्यावापृथिवी तत् त ओजो ऽमर्त्या जिहत इन्द्र देवाः

कृष्वा कृत्नो अकृतं यत् ते अस्त्युक्थं नवीयो जनयस्व यज्ञैः १५ १८७०

॥ १६३ ॥ ( क्र० ६।१९।१-१३ )

महो इन्द्रो नृवदा चर्षणिषा उत द्विवर्हा अमिनः सहोभिः ।

अस्मद्यग्वावृधे वीर्यायो रूः पृथुः सुकृतः कर्तुभिर्भूत् १

इन्द्रमेव धिषणा सातये धाद बृहन्तमृष्वमजरं युवानम ।

अपाळहेन शवसा शूशुवासं सद्यश्चिद् यो वावृधे असांमि २

पृथु करसा बहुला गर्भस्ती अस्मद्यक् सं मिमीहि श्रवांसि ।

युथेव पश्वः पशुपा दमूना अस्मां इन्द्राभ्या ववृत्स्वाजी ३

तं व इन्द्रं चतिनमस्य शकैरिह नूनं वाजयन्तो हुवेम ।

यथा चित पूर्वे जरितार आसुरनेद्या अनवद्या अरिंटाः ४

धृतव्रतो धनदाः सोमवृद्धः स हि वामस्य वसुनः पुरुक्षुः ।

सं जग्मिरे पथ्याऽ रायो अस्मिन् त्समुद्रे न सिन्धवो यादमानाः ५ १८७५

शर्विष्ठं न आ भर शूर शव ओजिष्ठमोजो अभिभूत उग्रम् ।

विश्वा द्युम्ना वृष्ण्या मानुषाणा मस्मभ्यं दा हरिवो मादुयध्यै ६

यस्ते मदः पृतनापाळमृध इन्द्र तं न आ भर शूशुवासंम् ।

येन तोकस्य तनयस्य सातौ मंसीमहि जिगीवांसस्त्वोताः ७

आ नो भर वृषणं शुष्ममिन्द्र धनस्पृतं शूशुवासं सुदक्षम् ।

येन वंसाम् पृतनासु शत्रून् तवोतिभिरुत जामीरजामीन् ८

आ ते शुष्मो वृषभ एतु पश्वा दोत्तरादधरादा पुरस्तात् ।

आ विश्वतो अभि समेत्वर्वा डिन्द्रं द्युम्नं सर्व्वन्द्रेह्यस्मे ९

नृवत् तं इन्द्र नृतमाभिरुती वंसीमहि वामं श्रोमतेभिः ।

ईक्षे हि वस्व उभयस्य राजन् धा रत्नं महि स्थूरं बृहन्तम १० १८८०

मरुत्वन्तं वृषभं वावृधान मकवारिं द्विव्यं शासमिन्द्रम् ।

विश्वासाहमवसे नूतनायो ग्रं सहोदामिह तं हुवेम ११

जनं वज्रिन् महि चिन्मन्यमान मेभ्यो नृभ्यो रन्धया येष्वस्मि ।

अधा हि त्वा पृथिव्यां शूरसातौ हवामहे तनये गोष्वप्सु १२

वयं तं एभिः पुरुहूत सख्यैः शत्रोःशत्रोरुत्तर इत् स्याम ।  
घ्नन्तो वृत्राण्युभयानि शूर राया मदेम बृहता त्वाताः १३

॥ १६४ ॥ ( ऋ० ६।२०।१-१३ ) त्रिष्टुप्, ७ विराट् ।

द्यौरन य इन्द्राभि भूमार्यस्तस्थौ रयिः शवसा पृत्सु जनान् ।  
तं नः सहस्रभरमुर्वरासां दुद्धि सूनो सहसो वृत्रतुरम् १

द्विवो न तुभ्यमन्विन्द्र सत्रा ऽसुर्यं देवेभिर्धायि विश्वम् ।  
अहिं यद् वृत्रमपो वव्रिवांसं हन्नृजीपिन् विष्णुना सचानः २ १८८५

तूर्वन्नोजीयान् तवसस्तवीयान् कृतब्रह्मेन्द्रो वृद्धमहाः ।  
राजाभवन्मधुनः सोम्यस्य विश्वासां यत् पुरां दुर्नुमावत् ३

शतैरपद्रन् पणयं इन्द्रात्र दशाणये कवयेऽर्कसातौ ।  
वधैः शुष्णास्याशुषस्य मायाः पित्वो नारिरेचीत् किं चन प्र ४

महो द्रुहो अपं विश्वायुं धायि वज्रस्य यत् पतने पाद्वि शुष्णः ।  
उरु ष सरथं सारथये क—रिन्द्रः कुत्साय सूर्यस्य सातौ ५

प्र श्येनो न मद्रिमंशुमस्मै शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन् ।  
प्रावन्नमीं साप्यं ससन्तं पूणग्राया समिषा सं स्वस्ति ६

वि पिप्रोरहिमायस्य हृब्हाः पुरां वज्रिच्छवसा न ददः ।  
सुदामन् तद् रेक्णो अप्रमृष्य—मृजिष्वने दात्रं दाशुषे दाः ७ १८९०

स वेतसुं दशमायं दशोणिं तूतुजिमिन्द्रः स्वभिष्टिसुभ्रः ।  
आ तुग्रं शश्वदिभं द्योतनाय मातुर्न सीमुषं सृजा इयर्ध्वं ८

स ई स्पृधो वनते अप्रतीतो बिभ्रद् वज्रं वृत्रहणं गर्भस्तौ ।  
तिष्ठद्धरी अध्यक्षेतेव गते वचोयुजा वहत इन्द्रमृष्वम् ९

सनेम तेऽवसा नव्यं इन्द्र प्र पूरवः स्तवन्त एना यज्ञैः  
सप्त यत् पुरः शर्म शारद्वीर्द—र्द्धन् दासीः पुरुकुत्साय शिक्षन् १०

त्वं वृध इन्द्र पूर्यो भू—वैरिवस्यन्नशने काव्याय ।  
परा नववास्त्वमनुदेयं महे पित्रे ददाथ स्वं नपातम ११

त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमती—ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः ।  
प्र यत् समुद्रमतिं शूर पषिं पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति १२ १८९५

तव ह त्यदिन्द्र विश्वमाजौ सस्तो धुनीचुमुरी या ह सिष्वप् ।  
वृदिपदित् तुभ्यं सोमेभिः सुन्वन् कुभीतिरिधमभृतिः पक्थ्यं किं १३



॥ १६५ ॥ ( ऋ० ६।२।१-८, १०, १२ )

इमा उ त्वा पुरुतमस्य कारो—हव्यं वीर हव्यां हवन्ते ।	
धियो रथेष्ठा मजरं नवीयो रयिर्विभूतिरीयते वचस्या	१
तमु स्तुष इन्द्रं यो विदानो गिर्वीहसं गीर्भिर्यज्ञवृद्धम् ।	
यस्य दिवमति मन्हा पृथिव्याः पुरुमायस्य रिरिचे महित्वम	२
स इत् तमोऽवयुनं तन्वत् सूर्येण वयुनवच्चकार ।	
कदा ते मतां अमृतस्य धामे—यक्षन्तो न मिनन्ति स्वधावः	३
यस्ता चकार स कुहं स्वदिन्द्रः कमा जनं चरति कामुं विश्व ।	
कस्ते यज्ञो मनसे शं वराय को अर्क इन्द्र कतमः स होता	४
इदा हि ते वेविषतः पुराजाः प्रत्नासं आसुः पुरुकृत सखायः ।	१९००
ये मध्यमासं उत नूतनास उतावमस्य पुरुहूत बोधि	५
तं पृच्छन्तोऽवरासः पराणि प्रत्ना तं इन्द्र श्रुत्यानु येमुः ।	
अर्चामसि वीर ब्रह्मवाहो यादेव विद्म तात् त्वां महान्तम्	६
अभि त्वा पाजो रक्षसो वि तस्थे महिं जज्ञानमभि तत् सु तिष्ठ ।	
तव प्रत्नेन युज्येन सस्या वज्रेण धृष्णो अप ता नुदस्व	७
स तु श्रुधीन्द्र नूतनस्य ब्रह्मण्यतो वीर कारुधायः ।	
त्वं ह्याऽपिः प्रदिवि पितृणां शश्वद् बभूय सुहव एष्टौ	८
इम उ त्वा पुरुशाक प्रयज्यो जरितारो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।	
श्रुधी हवमा हुवतो हुवानो न त्वावो अन्यो अमृत त्वदस्ति	१०
स नो बोधि पुरेता सुगेषू—त दुर्गेषु पथिकृद् विदानः ।	१९०५
ये अश्रमास उरवो वहिष्ठा—स्तेभिर्न इन्द्राभि वक्षि वाजम्	१२

॥ १६६ ॥ ( ६।२।१-११ )

य एक इन्द्र्यश्रपणीना—मिन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः ।	
यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान् तस्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान्	१
तमु नः पूर्वं पितरो नवग्वाः सप्त विप्रासो अभि वाजयन्तः ।	
नक्षद्वाभं ततुरिं पर्वतेष्ठा—मद्रोघवाचं मतिभिः शर्विष्ठम्	२
तमीमह इन्द्रमस्य रायः पुरुवीरस्य नूवतः पुरुक्षोः ।	
यो अस्कृधोयुरजरः स्वर्वान् तमा भर हरिवो मावृयध्वं	३

तन्नो वि वोचो यदि ते पुरा चिञ्जरितार आनशुः सुममिन्द्र ।		
कस्ते भागः किं वयो दुध खिद्रः पुरुहूत पुरुवसोऽसुरघ्नः	४	१९२०
तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं रथेष्ठा—मिन्द्रं वेपी वक्वरी यस्य नू गीः ।		
तुविग्राभं तुविकूर्मि रभोदां गातुमिषे नक्षते तुम्रमच्छं	५	
अया ह त्वं मायया वावृधानं मनोजुवां स्वतवः पर्वतेन ।		
अच्युता चिद् वीळिता स्वोजो रुजो वि हृच्छा धृषता विरग्निन	६	
तं वो धिया नव्यस्या शविष्ठं प्रत्नं प्रत्नवत् परितंसयध्वै ।		
स नो वक्षदनिमानः सुवह्नं—द्रो विश्वान्यति दुर्गहाणि	७	
आ जनाय द्रुहणे पार्थिवानि द्विव्यानि दीपयोऽतरिक्षा ।		
तपा वृषन् विश्वतः शोचिषा तान् ब्रह्मद्विषे शोचय क्षामपश्वं	८	
भुवो जनस्य द्विव्यस्य राजा पार्थिवस्य जगतस्त्वेषसंहक् ।		
धिष्व वज्रं दक्षिण इन्द्र हस्ते विश्वा अजुर्य दयसे वि मायाः	९	१९२१
आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृधाम्		
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन् सुतुका नाहुषाणि	१०	
स नो नियुद्धिः पुरुहूत वेधो विश्ववाराभिरा गहि प्रयज्यां ।		
न या अदेवो वरते न देव आभिर्याहि तूयमा मद्रद्यद्रिक्	११	

॥ १६७ ॥ ( ऋ० ६.२३.१-१० )

सुत इत् त्वं निर्मिश्र इन्द्र सोमे स्तोमे ब्रह्माणि शस्यमान उक्थे ।		
यद् वा युक्ताभ्यां मघवन् हरिभ्यां विभ्रद् वज्रं बाह्वोरिन्द्र यासिं	१	
यद् वा द्विवि पार्ये सुष्विमिन्द्र वृत्रहत्येऽवसि शूरसातौ ।		
यद् वा दक्षस्य विभ्युषो अविभ्य—दरन्धयः शर्धत इन्द्र दस्यून्	२	
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं प्रणेनीरुग्रो जरितारमूती ।		
कर्ता वीराय सुष्वय उ लोकं दाता वसुं स्तुवते कीरये चित्	३	१९२०
गन्तेयान्ति सर्वना हरिभ्यां बभ्रिर्वज्रं पपिः सोमं दृदिर्गाः ।		
कर्ता वीरं नर्यं सर्ववीरं श्रोता हवं गृणतः स्तोमवाहाः	४	
अस्मै वयं यद् वावान तद् विविष्म इन्द्राय यो नः प्रदिवो अपस्कः ।		
सुते सोमे स्तुमसि शंसदुक्थे—न्द्राय ब्रह्म वर्धनं यथासत्	५	
ब्रह्माणि हि चकृषे वर्धनानि तावत् त इन्द्र मतिभिर्विविष्मः ।		
सुते सोमे सुतपाः शंतमानि रान्द्र्या क्रियास्म वक्षणाणि यज्ञैः	६	

स नो बोधि पुरोळाशं रराणः पिबन्तु सोमं गोऋजीकमिन्द्र ।  
 एदं बर्हिर्यजमानस्य सीदो—रुं कृधि त्वायत उं लोकम् ७  
 स मन्दस्वा ह्यनु जोषमुग्र प्र त्वा यज्ञास इमे अश्रुवन्तु ।  
 प्रेमे हवासः पुरुहूतमस्मे आ त्वेयं धीरवस इन्द्र यम्याः ८ १९२५  
 तं वः सखायः सं यथा सुतेषु सोमैभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् ।  
 कुवित् तस्मा असति नो भराय न सुष्विमिन्द्रोऽवसे मृधाति ९  
 एवेदिन्द्रः सुते अस्तावि सोमै भरद्वाजेषु क्षयदिन्मघोनः ।  
 असद् यथा जरित्र उत सूरि—रिद्रौ रायो विश्ववारस्य दाता १०

॥ १६८ ॥ ( ऋ० ६।२४।१-१० )

वृषा मद् इंद्रे श्लोक उक्त्वा सचा सोमेषु सुतपा ऋजीषी ।  
 अर्चत्रयो मघवा नृभ्य उक्थे—द्युक्षो राजा गिरामक्षितोतिः १  
 ततुरिर्वीरो नर्यो विचेताः श्रोता हवं गृणत उर्व्यूतिः ।  
 वसुः शंसो नरां कारुधाया वाजी स्तुतो विदथे दाति वाजम २  
 अक्षो न चक्रयोः शूर बृहन् प्र ते मद्वा रिरिचे रोदस्योः ।  
 वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वया व्युत्तयो रुरुहुरिन्द्र पूर्वाः ३ १९३०  
 शर्चीवतस्ते पुरुशाक शाका गवामिव सुतयः संचरणीः ।  
 वत्सानां न तंतयस्त इन्द्र दामन्वन्तो अद्वामानः सुदामन् ४  
 अन्यद्वद्य कर्वरमन्यदु श्वो ऽसच्च सन्मुहुराचक्रिरिन्द्रः ।  
 मित्रो नो अत्र वरुणश्च पूषा ऽर्यो वशस्य पर्येतास्ति ५  
 वि त्वदापो न पर्वतस्य पूष्ठा—दुक्थेभिरिन्द्रानयंत यज्ञैः ।  
 तं त्वाभिः सुष्टुतिभिर्वाजयंत आजिं न जग्मुर्गिर्वाहो अश्वाः ६  
 न यं जरति शरदो न मासा न द्याव इन्द्रमवकृशयंति ।  
 वृद्धस्य चिद् वर्धतामस्य तनूः स्तोमैभिरुक्थैश्च शस्यमाना ७  
 न वीळ्वे नमते न स्थिराय न शर्धते दस्युजूताय स्तवान् ।  
 अज्जा इन्द्रस्य गिरयश्चिद्वृषा गम्भीरे चिद् भवति गाधमस्मै ८ १९३५  
 गम्भीरेण न उरुणामत्रिन् प्रेषो यन्धि सुतपावन् वाजान् ।  
 स्था ऊ पु ऊर्ध्व ऊती अरिषण्य—न्नक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाम् ९  
 सचस्व नायमवसे अभीक इतो वा तमिन्द्र पाहि रिषः ।  
 अमा चैनमरण्ये पाहि रिषो मदेम शतहिमाः सुवीराः १०

॥ १६९ ॥ ( ऋ० ६।२।१-९ )

या तं ऊतिरिवमा या परमा या मध्यमेन्द्रं शुष्मिन्नस्ति ।	
ताभिर्हृषु वृत्रहत्येऽवीर्न एभिश्च वार्जमहान् न उग्र	१
आभिः स्पृधो मिथतीररिषण्यन्नमित्रस्य व्यथया मन्द्युमिन्द्र ।	
आभिर्विश्वा अभियुजो विषूचीरार्याय विशोऽव तारीर्दासीः	२
इन्द्रं जामयं उत येऽजामयो ऽर्वाचीनासो वनुषो युयुञ्जे ।	
त्वमेषां विशुरा शवांसि जहि वृष्ण्यानि कृणुही पराचः	३
शूरो वा शूरं वनते शरीरैस्तनूरुचा तरुषि यत् कृण्वैते ।	
तोके वा गोषु तनये यदृप्सु वि क्रन्दसी उर्वरासु ब्रवंते	४
नहि त्वा शूरो न तुरो न धूष्णुर्न त्वा योधो मन्यमानो युयोध ।	
इन्द्र नकिंष्ट्वा प्रत्यस्त्येषां विश्वा जातान्यभ्यसि तानि	५
स पत्यत उभयोर्नृम्णमयो र्यदी वेधसः समिथे हवन्ते ।	
वृत्रे वा महो नुवति क्षये वा व्यचस्वन्ता यदि वितन्तसंतं	६
अर्धं स्मा ते चर्षणयो यदेजा निन्द्रं त्रातोत भवा वरूता ।	
अस्माकासो ये नृत्मासो अर्य इन्द्रं सूरयो दधिरे पुरो नः	७
अनु ते दायि मह इन्द्रियाय सत्रा ते विश्वमनु वृत्रहत्ये ।	
अनु क्षत्रमनु सहो यजत्रेन्द्रं देवेभिरनु ते नृषह्ये	८ १९४१
एवा नः स्पृधः समजा समत्स्विन्द्रं रारन्धि मिथतीरदेवीः ।	
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो भरद्वाजा उत तं इन्द्र नूनम्	९

॥ १७० ॥ ( ऋ० ६।२।१-८ )

श्रुधी न इन्द्र ह्वयामसि त्वा महो वाजस्य सातो वावृषाणाः	
सं यद् विशोऽर्यन्त शूरसाता उग्रं नोऽवः पार्ये अहन् दाः	१
त्वां वाजी हवते वाजिनेयो महो वाजस्य गर्धस्य सातो ।	
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं तरुत्रं त्वां चष्टे मुष्टिहा गोषु युध्यन्	२
त्वं कविं चौदयोऽर्कसातौ त्वं कुत्साय शुष्णं द्वाशुषे वर्क ।	
त्वं शिरो अमर्मणः पराहन्नतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन्	३
त्वं रथं प्र भरो योधमृष्वमावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम् ।	
त्वं तुग्रं वेतसवे सचाहन् त्वं तुर्जिं गृणन्तमिन्द्र तूतोः	४ १९५०

त्वं तदुक्थमिन्द्र बर्हणां कः प्र यच्छता सहस्रां शूर दधिं । अव गिरेर्दासं शम्बरं हन् प्रावो दिवोदासं चित्राभिरुती	५
त्वं अद्भ्राभिमन्दसानः सोमैर्कुभीतये चुमुरिमिन्द्र सिध्वप् । त्वं रजिं पिठीनसे दशस्यन् षष्टिं सहस्रा शच्या सचाहन्	६
अहं चन तत् सूरिभिरानश्यां तव ज्याय इन्द्र सुम्रमोजः । त्वया यत् स्तवन्ते सधवीर वीगस्त्रिवरूथेन नहुपा शविष्ठ	७
वयं ते अस्यामिन्द्र द्युम्रहंतौ सखायः स्याम महिन प्रेष्ठाः । प्रातर्दनिः क्षत्रश्रीरस्तु श्रेष्ठौ घने वृत्राणां सनये धर्नानाम्	८

॥ १७१ ॥ ( ऋ० ६।२७।१-७ )

किमस्य मदे किम्वस्य पीताविन्द्रः किमस्य सख्ये चकार । रणां वा ये निषद्वि किं ते अस्य पुरा विविद्वे किमु नूतनासः	१	१९५५
सदस्य मदे सद्ररय पीताविन्द्रः सदस्य सख्ये चकार । रणां वा ये निषद्वि सत् ते अस्य पुरा विविद्वे सद् नूतनासः	२	
नहि नु ते महिनः समस्य न मघवन् मघवत्त्वस्य विद्म । न राधसोराधसो नूतनस्येन्द्र नकिर्ददृश इन्द्रियं ते	३	
एतत् त्यत् त इन्द्रियमचेति येनावधीर्वरशिखस्य शेषः । वज्रस्य यत् ते निहतस्य शुष्मात् स्वनाच्चिदिन्द्र परमो वुदारं	४	
वधीदिन्द्रो वरशिखस्य शेषो ऽभ्यावर्तिने चायमानाय शिक्षन् । वृचीवतो यद्भूरियूपीयायां हन् पूर्वे अर्धं भियसापरो दत्	५	
त्रिंशच्छतं वर्मिणं इन्द्र साकं यव्यावत्यां पुरुहूत श्रवस्या । वृचीवन्तः शरवे पत्यमानाः पात्रा भिन्द्वाना न्यर्थान्यायन्	६	१९६०
यस्य गावावरुपा सूयवसू अन्तरू षु चरतो रेरिहाणा । स सृत्रयाय तुर्वशं परादाद् वृचीवतो दैववाताय शिक्षन्	७	

॥ १७२ ॥ ( ऋ० ६।२९।१-६ )

इन्द्रं वा नरः सखायं सेपुर्महो यन्तः सुमतये चक्रानाः । महो हि दाता वज्रहस्तो अस्ति महामुं रण्वमवसे यजध्वम्	१
आ यस्मिन् हस्ते नयां मिमिक्षु रा रथे हिरण्यथे रथेष्ठाः । आ रश्मयो गर्भस्त्योः स्थूरयो राध्वन्नश्वासो वृषणो युजानाः	२

श्रिये ते पादा दुव आ मिमिक्षु—धृष्णुर्वज्री शवसा दक्षिणावान् ।

वसानो अत्कं सुरभिं हृशे कं स्वर्णं नृतविपिरो बभूथ ३

स सोम आमिश्लतमः सुतो भूद् यस्मिन् पक्तिः पच्यते सन्ति धानाः ।

इन्द्रं नरः स्तुवन्तो ब्रह्मकारा उक्था शंसन्तो देववाततमाः ४ १९६५

न ते अन्तः शवसो धायस्य वि तु बाबधे रोदसी महित्वा ।

आ ता सूरिः पृणति तृतुजानो यूथेवाप्सु समीजमान ऊती ५

एवेदिन्द्रः सुहव ऋष्वो अस्तूती अनूती हिरिशिप्रः सत्वा ।

एवा हि जातो असमात्योजाः पुरू च वृत्रा हनति नि दस्यून् ६

॥ १७३ ॥ ( ऋ० ६।३०।१-५ )

भूय इद् वावृधे वीर्यायै एको अजुर्यो दयते वसूनि ।

प्र रिरिचे दिव इन्द्रः पृथिव्या अर्धमिदस्य प्रति रोदसी उभे १

अर्धा मन्ये बृहदसुर्यमस्य यानि दाधार नकिरा मिनाति ।

दिवेदिवे सूर्यो दर्शतो भूद् वि सन्नान्युर्विया सुक्रतुर्धात् २

अद्या चिन्नू चित् तदपो नदीनां यदाभ्यो अरदो गातुमिन्द्र ।

नि पर्वता अन्नसदो न सेदुस्त्वया हृळ्हानि सुक्रतो रजांसि ३ १९७०

सत्यमित् तन्न त्वावां अन्यो अस्तीन्द्र देवो न मर्त्या ज्यायान् ।

अहन्नहिं परिशयानमर्णो ऽवासृजो अपो अच्छा समुद्रम् ४

त्वमपो वि दुरो विषूचीरिन्द्र हृळ्हमरुजः पर्वतस्य ।

राजाभवो जगतश्चर्वणीनां साकं सूर्यं जनयन् द्यामुपासम् ५

॥ १७४ ॥ ( ऋ० ६।३७।१-५ )

अर्वाग्रथं विश्ववारं त उग्रेन्द्र युक्तासो हरयो वहन्तु ।

कीरिश्विन्द्रि त्वा हवते स्वर्वा—नृधीमहिं सधमादस्ते अद्य १

प्रो द्रोणे हरयः कर्मागमन् पुनानास ऋज्यन्तो अभूवन् ।

इन्द्रो नो अस्य पूर्यः पपीयाद् द्युक्षो मदस्य सोम्यस्य राजा २

आसन्नाणासः शवसानमच्छेन्द्रं सुचक्रे रथ्यासो अश्वाः ।

अभि श्रव ऋज्यन्तो वहेयु—नू चिन्नु वायोरमृतं वि दस्येत ३ १९७५

वरिष्ठो अस्य दक्षिणामियतीन्द्रो मघोनां तुविकूर्मितमः ।

यया वज्रिवः परियास्यंहो मघा च धृष्णो दयसे वि सूरिन् ४

इन्द्रो वाजस्य स्थविरस्य दातेन्द्रो गीर्भिवर्धतां वृद्धमहाः ।

इन्द्रो वृत्रं हनिष्ठो अस्तु सत्वा ऽऽ ता सूरिः पृणति तृतुजानः ५

॥ १७५ ॥ ( ऋ० ६।३८।१-५ )

अपादित उदु नश्चित्रतमो महीं भर्षद् द्युमतीमिन्द्रहूतिम् ।  
 पन्यसीं धीतिं दैव्यस्य याम—अनस्य रातिं वनते सुदानुः १  
 दूराच्चिदा वसतो अस्य कर्णा घोषादिन्द्रस्य तन्यति ब्रुवाणः ।  
 एयमेनं देवहूतिर्ववृत्या—न्मद्युगिन्द्रमियमूच्यमाना २  
 तं वो धिया परमया पुराजा—मजरमिन्द्रमभ्यनूष्यकैः ।  
 ब्रह्मा च गिरो दधिरे समस्मिन् महाँश्च स्तोमो अधि वर्धादिन्द्रे ३ १९८०  
 वर्धाद् यं यज्ञ उत सोम इन्द्रं वर्धाद् ब्रह्म गिर उक्था च मन्म ।  
 वर्धाहैनमुषसो यामन्नक्तो—वर्धान् मासाः शरदो द्याव इन्द्रम ४  
 एवा जज्ञानं सहसे असांमि वावृधानं राधसे च श्रुताय ।  
 महामुग्रमवसे विप्र नून—मा विवासेम वृत्रतूर्येषु ५

॥ १७६ ॥ ( ऋ० ६।३९।१-५ )

मन्द्रस्य कवेर्दिव्यस्य वहे—विप्रमन्मनो वचनस्य मध्वः ।  
 अपा नस्तस्य सचनस्य देवे—षो युवस्व गृणते गोअंघ्राः १  
 अयमुज्ञानः पर्याद्रिमुस्त्रा ऋतधीतिभिर्ऋतयुग्युज्ञानः ।  
 रुजदरुगणं वि वलस्य सानुं पर्णाविचोभिरभि योधदिन्द्रः २  
 अयं द्यौतयद्व्युतो व्युक्तून् द्रोपा वस्तोः शरदु इन्दुरिन्द्र ।  
 इमं केतुमदधुर्न चिदह्नां शुचिजन्मन उपसश्चकार ३ १९८५  
 अयं रोचयदुरुचो रुचानोऽ—ऽयं वासयद् व्युतेन पूर्वीः ।  
 अयमीयत ऋतयुगिभ्रश्चैः स्वर्विदु नाभिना चर्षणिप्राः ४  
 नू गृणानो गृणते प्रत्न राज—न्निषः पिन्व वसुदेयाय पूर्वीः ।  
 अप ओषधीरविषा वनानि गा अर्वतो नृनुचसे रिरिहि ५

॥ १७७ ॥ ( ऋ० ६।४०।१-५ )

इन्द्र पिब तुभ्यं सुतो मदाया—ऽव स्य हरी वि मुचा सखाया ।  
 उत प्र गाय गण आ निषद्या—ऽथा यज्ञाय गृणते वयो धाः १  
 अस्य पिब यस्य जज्ञान इन्द्र मदाय ऋत्वे अपिबो विरग्निन् ।  
 तमु ते गावो नर आपो अद्वि—रिन्दुं समह्यन् पीतये समस्मै २  
 समिन्द्रे अग्नौ सुत इन्द्र सोम आ त्वा वहन्तु हरयो वहिष्ठाः ।  
 त्वायता मनसा जोहवीमी—न्द्रा याहि सुवितार्य महे नः ३ १९९०

आ याहि शश्वदुशता ययाथे—न्द्र महा मनसा सोमपेयम् ।  
 उप ब्रह्माणि शृणव इमा नो ऽथा ते यज्ञस्तन्वेऽ वयो धातु ४  
 यदिन्द्र विवि पार्ये यहधग् यद् वा स्वे सदेने यत्र वासि ।  
 अतो नो यज्ञमवसे नियुत्वान् त्सजोषाः पाहि गिर्वणो मरुद्भिः ५

॥ १७८ ॥ ( ऋ० ६।४१।१-५ )

अहेळमान उप याहि यज्ञं तुभ्यं पवन्त इन्द्रवः सुतासः ।  
 गावो न वञ्चिन्स्वमोको अच्छे—न्द्रा गहि प्रथमो यज्ञियानाम् १  
 या ते काकुत् सुकृता या वरिष्ठा यया शश्वत पिबसि मध्व ऊर्मिम ।  
 तया पाहि प्र ते अध्वर्युरस्थात सं ते वज्रा वर्ततामिन्द्र गव्युः २  
 एष द्रुप्सो वृषभो विश्वरूप इन्द्राय वृष्णे समकारि सोमः  
 एतं पिब हरिवः स्थातरुग्र यस्येशिषे प्रदिवि यस्ते अन्नम् ३ १९९५  
 सुतः सोमो असुतादिन्द्र वस्या—नयं श्रेयाञ्चिकितुषे रणाय ।  
 एतं तितिर्व उप याहि यज्ञं तेन विश्वास्तविधीरा पृणस्व ४  
 ह्यामसि त्वेन्द्र याह्यर्वा—डरं ते सोमस्तन्वे भवाति ।  
 शतक्रतो मादयस्वा सुतेषु प्रास्मो अव पृतनासु प्र विश्व ५

॥ १७९ ॥ ( ऋ० ६।४१।१-४ ) अनुष्टुप्, ४ बृहती ।

प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर । अरंगमाय जग्मये ऽपश्वाहध्वने नरं १  
 एमेनं प्रयेतन सोमेभिः सोमपातमम् । अमत्रेभिर्ऋजीषिण—मिन्द्रं सुतेभिरिन्दुभिः २  
 यदीं सुतेभिरिन्दुभिः सोमेभिः प्रतिभूर्पथ । वेदा विश्वस्य मेधिरो धूषत तंतमिदेषंत ३ २०००  
 अस्माअस्मा इदन्धसो ऽध्वर्यो प्र भेरा सुतं । कुवित् समस्य जेन्यस्य शर्धतो ऽभिर्शस्तेग्वस्परंत ४

॥ १८० ॥ ( ऋ० ६।४३।१-४ ) उष्णिक् ।

यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब १  
 यस्य तीव्रसुतं मदं मध्यमन्तं च रक्षसे । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब २  
 यस्य गा अन्तरश्मनो मदे हृळ्हा अवासृजः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ३  
 यस्य मन्दानो अन्धसो माघोनं दधिषे शर्वः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ४ २००५

॥ १८१ ॥ ( ऋ० ६।३१।१-५ )

( २००६-२०१५ ) सुहोत्रो भारद्वाजः । त्रिष्टुप्, ४ शकरी ।

अभूरेको रयिपते रयीणा—मा हस्तयोरधिथा इन्द्र कृष्टीः ।  
 वि तोके अप्सु तनये च सूरे ऽवाचन्त चर्पणयो विवाचः १



त्वद्भियेन्द्र पार्थिवानि विश्वा ऽच्युता चिच्चयावयन्ते रजांसि ।

द्यावाक्षामा पर्वतासो वनानि विश्वं हृळ्हं भयते अज्मन्ना ते २

त्वं कुत्सेनाभि शुष्णामिन्द्रा—ऽशुषं युध्य कुर्यवं गविष्टौ ।

दश प्रपित्वे अध सूर्यस्य मुषायश्चक्रमविवे रपांसि ३

त्वं ज्ञतान्यव शम्बरस्य पुरो जघन्थाप्रतीनि दस्योः ।

अशिक्षो यत्र शच्या शचीवो दिवोदासाय सुन्वते सुतके भरद्वाजाय गृणते वसूनि ४

स संत्यसत्वन महते रणाय रथमा तिष्ठ तुविनृम्ण भीमम् ।

याहि प्रपथिन्नवसोप मदिक प्र च श्रुत श्रावय चर्षणिभ्यः ५ २०१०

॥ १८२ ॥ ( ऋ० ६।३२।१-५ )

अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय ।

विरप्शिने वज्रिणे शंतमानि वचास्यासा स्थविराय तक्षम् १

स मातरा सूर्येणा कवीना—मवासयद् रुजदद्रिं गृणानः ।

स्वाधीभिर्कृकृभिर्वावशान उदुस्रियाणामसृजन्निदानम् २

स वह्निभिर्कृकृभिर्गोषु शश्वन् मितजुभिः पुरुकृत्वा जिगाय ।

पुरः पुरोहा सखिभिः सखीयन् हृळ्हा रुरोज कविभिः कविः सन् ३

स नीव्याभिर्जरितारमच्छा महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः ।

पुरुवीराभिर्वृषभ क्षितीना—मा गिर्वणः सुविताय प्र याहि ४

स सर्गेण शवसा तक्तो अत्यै—रप इन्द्रो दक्षिणतस्तुरापाद् ।

इत्था सृजाना अनपावृदर्थं द्विवेदिवे विविपुरप्रमृष्यम् ५ २०१५

॥ १८३ ॥ ( ऋ० ६।३३।१-५ )

( २०१६-२०२५ ) शुनहोत्रो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

य ओजिष्ठ इन्द्र ते सु नो वृा मदी वृषन्त्स्वभिष्टिर्दास्वान् ।

सौवश्वयं यो वनवत् स्वश्वो वृत्रा समत्सु सासहृदुमित्रान् १

त्वां हीन्द्रावसे विवाचो हवन्ते चर्षणयः शूरसातौ ।

त्वं विप्रभिर्वि पुणीरंशाय—स्त्वोत इत् सनिता वाजमवी २

त्वं तां इन्द्रोभयो अमित्रान् दासा वृत्राण्यार्या च शूर ।

वधीर्वनेव सुधितेभिरत्कै—रा पृत्सु दधि नृणां नृतम ३

स त्वं न इन्द्राकवाभिरूती सखा विश्वायुरविता वृधे भूः ।

स्वर्पाता यदध्वयामसि त्वा युध्यन्तो नेमधिता पृत्सु शूर ४

नूनं न इन्द्रापुराय च स्या भवा मृळीक उत नो अभिष्टा ।  
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मन् द्विवि प्याम पाथं गोषतमाः

५ २०२०

॥ १८४ ॥ ( ऋ० ६।३४।१-५ )

सं च त्वे जग्मुर्गिरं इन्द्र पूर्वीर्वि च त्वद् यन्ति विभ्वो मनीषाः ।

पुरा नूनं च स्तुतय ऋषीणां पस्पृध इन्द्रे अद्युक्थार्का

१

पुरुद्वृतो यः पुरुगूर्त ऋभ्वाँ एकः पुरुप्रशस्तो अस्ति यज्ञः ।

रथो न महे शर्वसे युजानोऽऽस्माभिरिन्द्रो अनुमाद्यो भूत्

२

न यं हिंसन्ति धीतयो न वाणीरिन्द्रं नक्षन्तीवृभि वर्धयन्तीः ।

यदि स्तोतारः शतं यत् सहस्रं गृणन्ति गिर्विणसं शं तदस्मै

३

अस्मा एतद् दिव्यं चैवं मासा मिमिक्ष इन्द्रे न्ययामि सोमः ।

जनं न धन्वन्नाभि सं यदापः सत्रा वावृधुर्हवनानि यज्ञः

४

अस्मा एतन्महाङ्गुषमस्मा इन्द्राय स्तोत्रं मतिभिरवाचि ।

असद् यथा महति वृत्रतूर्य इन्द्रो विश्वायुरविता वृधश्च

५

२०२५

॥ १८५ ॥ ( ऋ० ६।३५।१-५ )

( २०२६-२०३५ ) नरो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

कदा भुवन् रथक्षयाणि ब्रह्म कदा स्तोत्रे सहस्रपोष्यं दाः ।

कदा स्तोमं वासयोऽस्य राया कदा धियः करसि वाजरत्नाः

१

कर्हि स्वित्र तदिन्द्र यन्नृभिर्नृन् वीरैर्वीरान् नीळयासे जयाजीन् ।

त्रिधातु गा अर्धि जयासि गोष्विन्द्रं द्युम्नं स्वर्वद् धेह्यस्मे

२

कर्हि स्वित्र तदिन्द्र यज्जरित्रे विश्वप्सु ब्रह्म कृणवः शविष्ठ ।

कदा धियो न नियुतो युवासे कदा गोमघा हवनानि गच्छाः

३

स गोमघा जरित्रे अश्वश्चन्द्रा वाजश्रवसो अर्धि धेहि पृक्षः ।

पीपिहीषः सुदुर्घामिन्द्र धेनुं भरद्वाजेषु सुरुचो रुरुच्याः

४

तमा नूनं वृजनमन्यथा चिच्छूरो यच्छक्र वि दुरो गृणीषे ।

मा निररं शुक्रदुर्घस्य धेनोराङ्गिरसान् ब्रह्मणा विप्र जिन्व

५

२०३०

॥ १८६ ॥ ( ऋ० ६।३६।१-५ )

सत्रा मदासस्तव विश्वजन्याः सत्रा रायोऽध ये पार्थिवासः ।

सत्रा वाजानामभवो विभक्ता यद् देवेषु धारयथा असुर्यम्

१

अनु प्र येजे जन आजो अस्य सत्रा दधिरे अनु वीर्याय ।	
स्युमगृभे दुधयेऽर्वते च क्रतुं वृञ्जन्त्यपि वृञ्जहत्ये	२
तं सधीचीरूतयो वृष्ण्यानि पौंस्यानि नियुतः सश्चुरिन्द्रम् ।	
समुद्रं न सिन्धव उक्थशुष्मा उरुव्यचसं गिर आ विशान्ति	३
स रायस्वामुप सृजा गृणानः पुरुश्चन्द्रस्य त्वमिन्द्र वस्वः ।	
पतिर्बभूथासमो जनाना—मेको विश्वस्य भुवनस्य राजा	४
स तु श्रुधि श्रुत्या यो दुवोयु—द्यौर्न भूमाभि रायो अर्यः ।	
असो यथा नः शर्वसा चक्रानो युगेयुगे वर्यसा चेकितानः	५ २०३५

॥ १८७ ॥ ( ऋ० ६।४४।१-२४ )

( २०३६-२१०३ ) शंयुर्वाहस्पत्यः । त्रिष्टुप्, १-६ अनुष्टुप्, ७-९ ( ८ वा ) विराद् ।

यो रयिवां रयितमो यां द्युश्चैद्युश्चर्वत्तमः । सोमः सुतः स इन्द्र ते ऽस्ति स्वधापते मर्दः	१
यः शग्मस्तुविशग्म ते रायो कामा मतीनाम् । सोमः सुतः स इन्द्र ते ऽस्ति स्वधापते मर्दः	२
येन वृद्धो न शर्वसा तुरो न स्वाभिरूतिभिः । सोमः सुतः स इन्द्र ते ऽस्ति स्वधापते मर्दः	३
त्यमुं वो अप्रहणं गृणीषे शर्वसस्पतिम् । इन्द्रं विश्वासाहं नरं मंहिष्ठं विश्वर्चषणिम्	४
यं वर्धयंतीद् गिरः पतिं तुरस्य राधंसः । तमिन्द्रवस्य रोदसी वृवी शुष्मं सपर्यतः	५ २०४०
तद् व उक्थस्य बर्हणे—न्द्रायोपस्तुणीषणि ।	
विपो न यस्योतयो वि यद् रोहंति सक्षितः	६
अविद्द दक्षं मित्रो नवीयान् पपानो देवेभ्यो वर्यां अर्चत ।	
ससवान्स्तौलाभिर्धौतरीभि—रुष्या पायुरभवत् सखिभ्यः	७
ऋतस्य पथि वेधा अपायि श्रिये मनांसि देवासो अक्रन ।	
दधानो नाम महो वचोभि—र्वपुर्हेशये वेन्यो व्यावः	८
द्युमर्त्तमं दक्षं धेह्यस्मे सेधा जनानां पूर्वीररातीः ।	
वर्षीयो वर्यः कृणुहि शचीभि—र्धनस्य सातावस्मौ अविद्धि	९
इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन्नभूम वयं दात्रे हरिवो मा वि वेनः ।	
नकिरापिर्दृशे मर्त्यत्रा किमद्ग रंध्रचोर्दनं त्वाहुः	१० २०४५
मा जस्वने वृषभ नो ररीथा मा ते रेवतः सख्ये रिषाम ।	
पूर्वीष्ट इन्द्र निष्पिधो जनेषु जह्यसुष्वीन् प्र वृहापृणतः	११
उदुभ्राणीव स्तनर्यन्नियती—न्द्रो राधांस्यश्व्यानि गव्यां ।	
त्वमसि प्रदिवः कारुधाय मा त्वाद्दामान आ दभन् मघोनः	१२

अध्वर्यो वीर प्र महे सुताना—मिन्द्राय भर स ह्यस्य राजा ।		
यः पूव्याभिरुत नूतनाभि—र्गीभिर्वीवृधे गृणतामृषीणाम्	१३	
अस्य मदे पुरु वर्षीसि विद्रा—निन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघान ।		
तमु प्र हौषि मधुमन्तमस्मै सोमं वीराय शिप्रिणे पिबध्वे	१४	
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं हन्ता वृत्रं वज्रेण मन्दसानः ।		
गन्ता यज्ञं पंगवतश्चिदच्छा वसुधीनामविता कारुधायाः	१५	२०५०
इदं त्यत पात्रमिन्द्रपान—मिन्द्रस्य प्रियममृतमपायि ।		
मत्सद् यथा सौमनसाय देवं व्युस्मद् द्वेषो युयवद् व्यंहः	१६	
एना मंवानो जहि शूर शत्रू—श्नामिमर्जाभि मघवन्नमित्रान् ।		
अभिषेणो अभ्यादेदिशानान् पराच इंद्र प्र मृणा जही च	१७	
आसु प्मा णो मघवन्निद्र पू—त्स्वस्मभ्यं महि वरिवः सुगं कः ।		
अपां तोकस्य तनयस्य जेष इंद्रं सूरीन् कृणुहि स्मा नो अर्धम्	१८	
आ त्वा हरयो वृषणो युजाना वृषरथासो वृषरश्मयोऽत्याः ।		
अस्मत्राश्चो वृषणो वज्रवाहो वृषणे मदाय सुयुजो वहन्तु	१९	
आ ते वृषन् वृषणो द्रोणमस्थु—घृतप्रपो नोर्मयो मदन्तः ।		
इन्द्र प्र तुभ्यं वृषभिः सुतानां वृषणे भरन्ति वृषभाय सोमम्	२०	२०५५
वृषासि द्विवो वृषभः पृथिव्या वृषा सिन्धूनां वृषभः स्तिर्यानाम् ।		
वृषणे त इन्दुवृषभ पीपाय स्वाहू रसो मधुपेयो वराय	२१	
अयं देवः सहसा जायमान इन्द्रेण युजा पृणिमस्तभायत ।		
अयं स्वस्य पितुरायुधानी—न्दुरमुष्णादशिवस्य मायाः	२२	
अयमकृणोदुषसः सुपत्नी—रयं सूर्ये अदधाज्ज्योतिरन्तः ।		
अयं त्रिधातु द्विवि रोचनेषु त्रितेषु विन्दुमृतं निर्गूळहम्	२३	
अयं द्यावापृथिवी वि प्कभाय—द्वयं रथमयुनक् सप्तरश्मिम् ।		
अयं गोषु शर्च्या पक्कमन्तः सोमो दाधार दर्शयन्त्रमुत्सम्	२४	

॥ १८८ ॥ ( ऋ० ६।४।५।१-३० ) गायत्री, २९ अतिनिवृत्त ।

य आनयत् परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम् । इन्द्रः स नो युवा सखा	१	२०६०
अविप्रे चिद् वयो दध—दनाशुना चिदर्विता । इन्द्रो जेता हितं धनम्	२	

महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः	। नास्य क्षीयन्त ऊतयः	३	
सखायो ब्रह्मवाहसे ऽर्चत प्र च गायत	। स हि नः प्रमतिर्मही	४	
त्वमेकस्य वृत्रहन्नविता द्वयोगसि	। उतेदृशे यथा वयम्	५	
नयसीद्वति द्विषः कृणोप्युक्थशंसिनः	। नृभिः सुवीर उच्यसे	६	२०६५
ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं गीभिः सखायमृग्मियम्	। गां न द्रोहसे हुवे	७	
यस्य विश्वानि हस्तयो रूचुर्वसूनि नि द्विता	। वीरस्य पृतनापहः	८	
वि हृळ्हानि चिदद्विवो जनानां शचीपते	। बृह माया अनानत	९	
तमु त्वा सत्य सोमपा इन्द्र वाजानां पते	। अहूमहि श्रवस्यवः	१०	
तमु त्वा यः पुगमिथ्र यो वा नूनं हिते धने	। हव्यः स श्रुधी हर्वम्	११	२०७०
धीभिरवद्विरवतो वाजा इन्द्र श्रवायान्	। त्वया जेष्य हितं धनम्	१२	
अभूरु वीर गिर्वणो महो इन्द्र धने हिते	। भरे वितन्तसाय्यः	१३	
या त ऊतिरमित्रहन् मक्षूजवस्तमासति	। तया नो हिनुही रथम्	१४	
स रथेन रथीतमो ऽस्माकेनाभियुग्वना	। जेषि जिष्णो हितं धनम्	१५	
य एक इत तमु ष्टुहि कृष्ठीनां विचर्षणिः	। पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः	१६	२०७५
यो गृणतामिदासिंथा ऽऽपिरुती शिवः सखा	। स त्वं न इन्द्र मृळ्य	१७	
धिष्व वज्रं गर्भस्त्यो रक्षोहत्याय वज्रिवः	। सामहीष्ठा अभि स्पृधः	१८	
प्रत्नं रयीणां युजं सखायं कीरिचोदनम्	। ब्रह्मवाहस्तमं हुवे	१९	
स हि विश्वानि पार्थिवाँ एको वसूनि पत्यते	। गिर्वणन्तमो अधिगुः	२०	
स नो नियुद्धिरा पृण कामं वाजेभिरश्विभिः	। गोमद्विर्गोपते धृषत्	२१	२०८०
तद् वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने	। शं यद् गवे न शाकिने	२२	
न घा वसुनि यमते दानं वाजस्य गोमंतः	। यत् सीमुप श्रवद् गिरः	२३	
कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गर्भत	। शचीभिरप नो वरत्	२४	
इमा उ त्वा शतक्रतो ऽभि प्र णोनुवुर्गिरः	। इन्द्र वत्सं न मातरः	२५	
दृणाशं सख्यं तव गौरसि वीर गव्यते	। अश्वो अश्वायते भव	२६	२०८५
स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे	। न स्तोतारं निदे करः	२७	
इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः	। वत्सं गावो न धेनवः	२८	
पूरुतमं पूरुणां स्तोतृणां विवाचि	। वाजेभिर्वाजयताम्	२९	
अस्माकमिन्द्र भूतु ते स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः । अस्मान् राये महे हिनु	। अस्मान् राये महे हिनु	३०	

॥ १८९ ॥ ( ऋ० ६।४६।१-१४ ) प्रगाथः ( = विषमा वृहती, समा सतोवृहती ) ।

त्वामिन्द्रि हवामहे साता वाजस्य कारवः ।		
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः	१	२०९७
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महः स्तवानो अद्रिवः ।		
गामश्वं रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे	२	
यः सत्राहा विचर्षणि रिन्द्रं तं हूमहे वयम् ।		
सहस्रमुक्क तुर्विन्मण सत्पते भवां समत्सु नो वृधे	३	
बाधसे जनान् वृष्टभेवं मन्युना वृषीं मीळ्ह ऋचीपम ।		
अस्माकं बोध्यविता महाधने तनूष्वप्सु सूर्ये	४	
इन्द्र ज्येष्ठं न आ भरं ओजिष्ठं पपुरि श्रवः ।		
येनेमे चित्र वज्रहस्त रोदसी ओभे सुशिप्र प्राः	५	
त्वामुग्रमवसे चर्षणीसहं राजन् कुवेपुं हूमहे ।		
विश्वा सु नो विथुरा पिबुना वसां ऽमित्रान्सुपहान् कृधि	६	२०९५
यदिन्द्र नाहुषीष्वां ओजो नृम्णं च कृष्टिषु ।		
यद् वा पञ्च क्षितीनां द्युम्नमा भर सत्रा विश्वानि पौस्या	७	
यद् वा तृक्षौ मघवन् द्रुह्यावा जने यत् पूरौ कच्च वृष्ण्यम् ।		
अस्मभ्यं तद् रिरीहि सं नृपाह्ये ऽमित्रान् पूत्सु तुर्वणे	८	
इन्द्रं त्रिधातु शरणं त्रिवरुथं स्वस्तिमत ।		
हृर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावयां दिद्युमेभ्यः	९	
ये गव्यता मनसा शत्रुमाद्भु रभिप्रघ्नन्ति धृष्णुया ।		
अर्धं स्मा नो मघवन्निन्द्र गिर्वणस्तनृपा अन्तमो भव	१०	
अर्धं स्मा नो वृधे भवेन्द्रं नायमवा युधि ।		
यदुन्तरिक्षे पतर्यन्ति पर्णिनां दिद्युर्वस्तिग्ममूर्धानः	११	२१००
यत्र शूरांसस्तन्वो वितन्वते प्रिया शर्म पितृणाम् ।		
अर्धं स्मा यच्छ तन्वेडं तने च हृर्दि रचितं यावय द्वेषः	१२	
यदिन्द्र सर्गे अर्वतश्चोदयासे महाधने ।		
असमने अध्वनि वृजिने पथि श्येनो इव श्रवस्यतः ।	१३	
सिन्धूरिव प्रवण आशुया यतो यद्वि क्लोशमनु प्वणि ।		
आ ये वयो न वर्वृत्यामिपि गृभीता द्राह्वोर्गविं	१४	२१०३

॥ १९० ॥ ( ऋ० ६।४७।६-१९; २१ ) ( २१०४-२११८ ) गर्गो भारद्वाजः । त्रिष्टुप्; १९ बृहती ।

धूपत् पिब कलशे सोममिन्द्र वृत्रहा शूर समरे वसूनाम् ।		
माध्यंदिने सर्वन आ वृषस्व रयिस्थानो रयिमस्मासु धेहि	६	
इन्द्र प्र णः पुरएतेव पश्य प्र नो नय प्रतरं वस्यो अच्छे ।		
भवा सुपारो अतिपारयो ना भवा सुनीतिरुत वामनीतिः	७	२१०५
उरुं नो लोकमनु नेपि विद्वान् त्स्वर्वज्ज्योतिरभयं स्वास्ति ।		
ऋष्वा त इन्द्र स्थविरस्य बाहू उप स्थेयाम शरणा बृहन्ता	८	
वरिष्ठे न इन्द्र वन्धुरे धा वहिष्ठयोः शतावन्नश्वयोरौ ।		
इषमा वक्षीषां वर्षिष्ठां मा नस्तारिन्मघवन् रायो अर्यः	९	
इन्द्रं मूळ मह्यं जीवातुमिच्छ चोदय धियमयसो न धाराम् ।		
यत् किं चाहं त्वायुरिदं वदामि तज्जुषस्व कृधि मा देववन्तम्	१०	
ज्ञातारमिन्द्रंमवितारमिन्द्रं हवंहवे सुहवं शूरमिन्द्रंम् ।		
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वास्ति नो मघवा धात्विन्द्रः	११	
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः ।		
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम	१२	२११०
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्याऽपि भद्रे सौमनसे स्याम ।		
स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु	१३	
अव त्वे इन्द्र प्रवतो नोमि गिरी ब्रह्माणि नियुतो धवन्ते ।		
उरु न राधः सर्वना पुरुष्यपो गा वज्रिन् युवसे समिन्द्रून्	१४	
क इ स्तवत् कः पृणात् को यजाते यदुग्रमिन्मघवा विश्वहावेत ।		
पादाविव प्रहरन्नन्यमन्यं कृणोति पूर्वमपरं शचीभिः	१५	
शृण्वे वीर उग्रमुग्रं दमायन्नन्यमन्यमतिनेनीयमानः ।		
एधमानद्विळुभयस्य राजा चोष्कूयते विश इन्द्रो मनुष्यान्	१६	
परा पूर्वेषां सख्या वृणक्ति वितर्तुराणो अपरोभिरेति ।		
अनानुभूतीरवधून्वानः पूर्वीरिन्द्रः शरदस्तर्तीति	१७	२११५
रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय ।		
इन्द्रो मायाभिः पुरूरूपं ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश	१८	
युजानो हरिता रथे भूरि त्वष्टेह राजति ।		
को विश्वाहा द्विषतः पक्ष आसत उतासीनेषु सूरिषु	१९	

दिवेदिवे सदृशीरन्यमर्धं कृष्णा असेधदप सद्मनो जाः ।

अहन् वृसा वृषभो वस्नयन्तो दवजे वर्चिनं शम्बरं च

२१

२११८

॥ १९१ ॥ ( ऋ० ७।१।१-२१ ) ( २११९-२२९० ) मैत्रावरुणिवसिष्ठः । त्रिष्टुप ।

त्वे ह यत् पितरंश्चिन्न इन्द्र विश्वा वामा जरितारो असन्वन ।

त्वे गावः सुदुघास्त्वे ह्यश्वास्त्वं वसु देवयते वनिष्ठः

१

राजैव हि जनिभिः क्षेप्येवाऽव द्युभिरभि विदुष्कविः सन् ।

पिशा गिरो मघवन् गोभिरश्वं स्त्वायतः शिशीहि राये अस्मान्

२

२१२०

इमा उ त्वा पस्पृधानासो अत्र मन्द्रा गिरो देवयन्तीरुप स्थुः ।

अर्वाची ते पथ्या राय एतु स्याम ते सुमताविन्द्र शर्मन्

३

धेनुं न त्वा स्यवसे दुदुक्षन्नुप ब्रह्माणि ससृजे वसिष्ठः ।

त्वामिन्मे गोपतिं विश्वं आहा ऽऽ न इन्द्रः सुमतिं गन्त्वच्छ

४

अणींसि चित् पप्रथाना सुदास इन्द्रो गाधान्यकृणोत सुपारा ।

शर्धन्तं शिम्युमुचथस्य नव्यः शापं सिन्धूनामकृणोदशस्तीः

५

पुरोळा इत् तुर्वशो यक्षुरासीद् राये मत्स्यामो निशिता अपीव ।

श्रुष्टिं चक्रुर्भृगवो द्रुह्यवश्च सखा सखायमतरद् विषूचोः

६

आ पक्थासो भलानसो भनन्ता ऽलिनासो विपाणिनः शिवासः ।

आ योऽनयत् सधमा आर्यस्य गव्या तृत्सुभ्यो अजगन् युधा नृन्

७

२१२५

दुराध्योऽ आदितिं सेवयन्तो ऽचेतसो वि जगृभ्रे परुष्णीम् ।

मह्नाविव्यक् पृथिवीं पत्यमानः पशुष्कविरशयच्चार्यमानः

८

इयुरर्थं न न्यर्थं परुष्णीमाशुश्चनेदभिपित्वं जगाम ।

सुदास इन्द्रः सुतुकां अमित्रा नरन्धयन्मानुषे वधिवाचः

९

इयुर्गावो न यवसादगोपा यथाकृतमभि मित्रं चितासः ।

पृश्निगावः पृश्निनिप्रेपितासः श्रुष्टिं चक्रुर्नियुतो रन्तयश्च

१०

एकं च यो विशतिं च श्रवस्या वैकर्णयोर्जनान् राजा न्यस्तः ।

वृस्मो न सद्मन् नि शिशाति बर्हिः शूरः सर्गमकृणोदिन्द्र एषाम्

११

अर्धं श्रुतं कवषं वृद्धमप्स्वन्नु द्रुह्यं नि वृणग्वज्रबाहुः ।

वृणाना अत्र सख्याय सह्यं त्वायन्तो ये अमदुन्ननु त्वा

१२

२१३०

वि सद्यो विश्वा हंहितान्येषा मिन्द्रः पुरः सहसा सप्त दर्दः ।

व्यानवस्य तृत्सवे गयं भाग जेष्मं पूरं विदथे मूधवाचम

१३



नि गव्यवोऽनवो द्रुह्यवश्च षष्टिः शता सुषुपुः षट् सहस्रा । षष्टिर्वीरासो अधि षड् दुवोयु विश्वेदिन्द्रस्य वीर्या कृतानि	१४	
इन्द्रेणैते तृत्सवो वेविषाणा आपो न सृष्टा अध्वन्त नीचीः । दुर्मित्रासः प्रकलविन्मिमाना जहुर्विश्वा नि भोजना सुदासे	१५	
अर्ध वीरस्य शृतपामनिन्द्रं परा शर्धन्तं नुनुदे अभि क्षाम् । इन्द्रो मन्युं मन्युम्यो मिमाय भेजे पथो वर्तनिं पत्यमानः	१६	
आध्रेण चित् तद्रेकं चकार सिंध्यं चित् पेत्वेना जघान । अव स्रक्तीर्वेश्यावृश्चदिन्द्रः प्रायच्छद् विश्वा भोजना सुदासे	१७	२१३५
शश्वन्तो हि शत्रवो रारधुष्टं भेदस्य चिच्छर्धनो विन्दु रन्धिम् । मर्ता एनः स्तुवतो यः कृणोति तिग्मं तस्मिन् नि जहि वज्रमिन्द्र	१८	
आवदिन्द्रं यमुना तृत्सवश्च प्रात्रं भेदं सर्वताता मुषायत । अजासश्च शिग्रवो यक्षवश्च बलिं शीषाणि जभ्रुरश्व्यानि	१९	
न त इन्द्र सुमतयो न रायः संचक्षे पूर्वा उपसो न नूताः । देवकं चिन्मान्यमानं जघन्था—ऽव त्मना बृहतः शम्बरं भेत	२०	
प्र ये गूहादर्ममदुस्त्वाया पराशरः शतयातुर्वसिष्ठः । न तं भोजस्यं सख्यं मृषन्ता—ऽधा सूरिभ्यः सुदिना व्युच्छान्	२१	

॥ १९२ ॥ ( क्र० ७।१९।१-११ )

यस्तिग्मशङ्को वृषभो न भीम एकः कृष्ठीश्च्यावयति प्र विश्वाः । यः शश्वन्तो अदाशुपो गर्गस्य प्रयन्तासि सुष्वितराय वेदः	१	२१४०
त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्यं । दासं यच्छुष्णं कुर्यवं न्यस्मा अरन्धय आर्जुनेयाय शिक्षन्	२	
त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं प्रावो विश्वाभिरूतिभिः सुदासम् । प्र पौरुकुत्सिं त्रसदस्युमावः क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पूरुम्	३	
त्वं नृभिर्नमणो देववीतौ भूरीणि वृत्रा हर्यश्व हंसि । त्वं नि दस्युं चुमुरिं धुनिं चा—ऽस्वापयो दृभीतयं सुहन्तु	४	
तव च्यौत्तानि वज्रहस्त तानि नव यत् पुरो नवतिं च सद्यः । निवेशने शततमाविवेपी—रहश्च वृत्रं नमुचिमुताहन्	५	
सना ता त इन्द्र भोजनानि रातहव्याय दाशुषे सुदासे । वृष्णे ते हरी वृषणा युनज्मि व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक् वाजम	६	२१४५

मा ते अस्यां सहसावन् परिष्ठा—वघाय भूम हरिवः पगद ।		
त्रायस्व नोऽवुकेभिर्वरुथै—स्तव प्रियासः सूरिषु स्याम	७	
प्रियास इत् ते मघवन्नभिष्टौ नरो मदेम शरणे सखायः ।		
नि तुर्वशं नि याद्वं शिशी—ह्यतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन्	८	
सद्यश्चिन्नु ते मघवन्नभिष्टौ नरः शंसन्त्युक्थशासं उक्थ्या ।		
ये ते हवोभिर्वि पर्णीरदाश—न्नस्मान् वृणीष्व युज्याय तस्मै	९	
एते स्तोमा नरां नृतम तुभ्य—मस्मद्यश्चो ददतो मघानि ।		
तेषामिन्द्र वृत्रहृये शिवो भूः सखा च शृगेऽविता च नृणाम	१०	
नू इन्द्र शूर स्तवमान ऊती ब्रह्मजतस्तन्वा वावृधस्व ।		
उप नो वाजान् मिमीह्युप स्तीन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	११	२१५०

॥ १९३ ॥ ( ऋ० ७।२०।२-२० )

उग्रो जज्ञे वीर्याय स्वधावा—श्चक्रिरपो नर्या यत् करिष्यन् ।		
जग्मिर्युवा नृपदंनमवोभि—स्त्राता न इन्द्र एनसो महाश्चित	१	
हन्ता वृत्रमिन्द्रः शूशुवानः प्रावीन्नु वीरो जरितारमृती ।		
कर्ता सुदासे अह वा उ लोकं दाता वसु मुहुरा दाशुषं भूत्	२	
युध्मो अनर्वा खजकृत् समद्वा शूरः सत्राषाड् जनुषेमषाळ्हः ।		
व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजा अधा विश्वं शत्रूयन्तं जघान	३	
उभे चिदिन्द्र रोदसी महित्वा ऽऽ पंप्राथ तविषीभिस्तुविष्मः ।		
नि वज्रमिन्द्रो हरिवान् मिमिक्षन् त्समन्धसा मदेषु वा उवाच	४	
वृषा जजान वृषणं रणाय तमु चिन्नारी नर्यं ससूव ।		
प्र यः सेनानीरध नृभ्यो अस्ती—नः सत्वा गवेर्षणः स धृष्णुः	५	२१५१
नू चित् स भ्रेषते जनो न रेषन् मनो यो अस्य घोरमाविवासात् ।		
यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत् स राय क्रतुपा क्रतेजाः	६	
यदिन्द्र पूर्वा अपराय शिक्ष—न्नयज्जयायान् कनीयसो देष्णम् ।		
अमृत इत् पर्यासीत् दूर—मा चिन्न चिन्न्यं भरा रयिं नः	७	
यस्त इन्द्र प्रियो जनो ददाश—दसन्निके अद्रिवः सखा ते ।		
वयं ते अस्यां सुमतौ चनिष्ठाः स्याम वरुथे अघ्नतो नृपीतौ	८	
एष स्तोमो अचिक्रवुद् वृषां त उत स्तामुमघवन्नक्रापिष्ट ।		
रायस्कामो जरितारं त आगन् त्वमङ्गः शक्र वस्व आ शक्रो नः	९	

स न इन्द्र त्वयताया इषे धा—स्मना च ये मघवानो जुनन्ति ।  
वस्वी पु ते जरित्रे अस्तु शक्ति—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१०

२१६०

॥ १९४ ॥ ( ऋ० ७।२।१-१० )

असावि देवं गोकृजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जुनुषेमुवोच ।

बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञे—बोधो नः स्तोममन्धसो मदेषु

१

प्र यन्ति यज्ञं विपर्यन्ति बर्हिः सोममादो विदथे दुधवाचः ।

न्यु भ्रियन्ते यशसो गृभादा दूरउपव्दो वृषणो नृपाचः

२

त्वमिन्द्र सवित्वा अपस्कः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वाः ।

त्वद् वावक्रे रथ्योऽ न धेना रेजन्ते विश्वा कृत्रिमाणि भीषा

३

भीमो विवेपायुधेभिरेषा—मपांसि विश्वा नर्याणि विद्वान् ।

इन्द्रः पुरो जर्हषाणो वि दूधोत वि वज्रहस्तो महिना जघान

४

न यातव इन्द्र जूजुवुर्नो न वन्दना शविष्ठ वेद्याभिः ।

स शर्धुर्यो विषुणस्य जंतो—र्मा शिश्रदेवा अपि गुर्कतं नः

५

२१६५

अभि क्रत्वंद्र भूरध जमन् न ते विव्यङ् महिमानं रजांसि ।

स्वेना हि वृत्रं शर्वसा जघथ न शत्रुरंते विविदद् युधा ते

६

देवाश्चित् ते असुर्याय पूर्वे ऽनु क्षत्राय ममिरे सहांसि ।

इन्द्रो मघानि दयते विपहो—द्रं वाजस्य जोहुवंत सातो

७

कीरिश्चिद्धि त्वामवसे जुहावे—शानमिन्द्र सोमगस्य भूरः ।

अवो बभूथ शतमूते अस्मे अभिक्षत्तुस्त्वावतो वरूता

८

सखायस्त इन्द्र विश्वह स्याम नमोवृधासो महिना तरुत्र ।

वन्वन्तु स्मा तेऽवसा समीक्रे—ऽभीतिमर्यो वनुषां शवांसि

९

स न इन्द्र त्वयताया इषे धा—स्मना च ये मघवानो जुनन्ति ।

वस्वी पु ते जरित्रे अस्तु शक्ति—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१०

२१७०

॥ १९५ ॥ ( ऋ० ७।२।२-९ ) विराट्, ९ त्रिष्टुप् ।

पिबा सोममिन्द्र मंदतु त्वा यं ते सुषावं हर्यश्वाद्रिः । सोतुर्बाहुभ्यां सुर्यतो नावी

१

यस्ते मद्रो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि । स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु

२

बोधा सु मे मघवन् वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम् । इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व

३

श्रुधी हवं विपिपानस्याद्रे—बोधो विप्रस्यार्चतो मनीषाम् । कृष्वा दुवांस्यन्तमा सचेमा

४

न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुण्डुतिमसुर्यस्य विद्वान् । सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि ५ २१७५

भूरि हि ते सर्वना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते त्वामित । मारे अस्मन्मघवञ्जयोक् कः ६  
 तुभ्येदिमा सर्वना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि । त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि ७  
 नू चिञ्चु ते मन्यमानस्य कृस्मो—दश्रुवन्ति महिमानमुग्र । न वीर्यमिन्द्र ते न राधः ८  
 ये च पूर्व ऋषयो ये च नूत्ना इन्द्र ब्रह्माणि जनयन्त विप्राः ।  
 अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ९

॥ १९६ ॥ ( ऋ० ७।२३।१-६ )

उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्ये—न्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ ।  
 आ यो विश्वानि शर्वसा ततानो—पश्रोता म ईवतो वचांसि १ २१८०  
 अयामि घोष इन्द्र देवजामि—रिरज्यन्त यच्छुरुधो विवाचि ।  
 नहि स्वमायुश्चिकित्ते जनेषु तानीदंहांस्यति पर्यस्मान् २  
 युजे रथं गवेषणं हरिभ्या—मुप ब्रह्माणि जुजुषाणमस्थुः ।  
 वि बाधिष्ट स्य रोदसी महित्वे—न्द्रो वृत्राण्यप्रती जघन्वान् ३  
 आपश्चित् पिप्युः स्तर्यो—इ न गावो नक्षत्रतं जरितारस्त इन्द्र ।  
 याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छा त्वं हि धीभिर्दयसे वि वाजान् ४  
 ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु शुष्मिणं तुविराधसं जरित्रे ।  
 एको देवत्रा दयसे हि मती—नस्मिञ्छूर सवने मादयस्व ५  
 एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठसो अभ्यर्चन्त्यर्केः ।  
 स नः स्तुतो वीरवद् धातु गोमद यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६ २१८५

॥ १९७ ॥ ( ऋ० ७।२४।१-६ )

योनिष्ट इन्द्र सदेने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि ।  
 असो यथा नोऽविता वृधे च ददो वसूनि ममदश्च सोमैः १  
 गृभीतं ते मन इन्द्र द्विबर्हीः सुतः सोमः परिपिक्ता मधूनि ।  
 विसृष्टधेना भरते सुवृक्ति—रियमिन्द्रं जोहुवती मनीषा २  
 आ नो द्विव आ पृथिव्या ऋजीषि—न्निदं बर्हिः सोमपेयाय याहि ।  
 वहन्तु त्वा हरयो मद्यञ्च—माङ्गुषमच्छा तवसं मदाय ३  
 आ नो विश्वाभिरूतिभिः सजोषा ब्रह्म जुषाणो हर्यश्च याहि ।  
 वरीवृजत् स्थविरोभिः सुशिप्रा—ऽस्मे दधद् वृषणं शुष्ममिन्द्र ४  
 एष स्तोमो मह उग्राय वाहे धुरी—इवात्यो न वाजयन्नधायि ।  
 इन्द्र त्वायमर्क ईडे वसूनां विवीव द्यामधि नः श्रोमतं धाः ५ २१९०

एवा न इन्द्र वार्यस्य पूधिं प्र ते महीं सुमतिं वैविदाम ।  
इपं पिन्व मघवंच्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

॥ १९८ ॥ ( ऋ० ७।२५।१-६ )

आ ते मह इन्द्रोत्युग्र समन्यवो यत् समरन्त सेनाः ।

पताति द्विद्युन्नर्यस्य बाह्वोर्मा ते मनो विष्वद्युग्वि चरीत १

नि दुर्ग इन्द्र श्रथिह्यमित्रानभि ये नो मतीसो अमन्ति ।

अरे तं शंसं कृणुहि निनित्सोरा नो भर संभरणं वसूनाम् २

शतं ते शिप्रिन्नृतयः सुदासे सहस्रं शंसा उत रातिरस्तु ।

जहि वर्ध्वनुषो मर्त्यस्याऽस्मे द्युममधि रतं च धेहि ३

त्वावतो हीन्द्र कत्वे अस्मि त्वावतोऽवितुः शूर रातौ ।

विश्वेदहानि तविषीव उग्र ओकः कृणुष्व हग्वो न मर्धीः ४

२१९५

कुत्सा एते हर्यश्वाय शूषमिन्द्रे सहो देवजूतमियानाः ।

सत्रा कृधि सुहना शूर वृत्रा वयं तरुत्राः सनुयाम वाजम् ५

एवा न इन्द्र वार्यस्य पूधिं प्र ते महीं सुमतिं वैविदाम ।

इपं पिन्व मघवंच्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

॥ १९९ ॥ ( ऋ० ७।२६।१-५ )

न सोम इन्द्रमसुतो ममाद् नाब्रह्माणो मघवानं सुतासः ।

तस्मा उक्थं जनये यज्जुजोषन्नृवन्नवीयः शृणवद् यथा नः १

उक्थउक्थे सोम इन्द्रं ममाद् नीथेनीथे मघवानं सुतासः ।

यदीं सबाधः पितरं न पुत्राः समानदक्षा अवसे हवन्ते २

चकार ता कृणवन्नूनमन्या यानि ब्रुवन्ति वेधसः सुतेषु ।

जनीरिव पतिरेकः समानो नि मामृजे पुर इन्द्रः सु सर्वाः ३

२२००

एवा तमाह्रुत शृण्व इन्द्र एको विभक्ता तरणिर्मघानाम् ।

मिथस्तुर ऊतयो यस्य पूर्वीरस्मे भद्राणि सश्रत प्रियाणि ४

एवा वसिष्ठ इन्द्रमृतये नृन् कृष्टीनां वृषभं सुते गृणाति ।

सहस्रिण उषं नो माहि वाजान् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०० ॥ ( ऋ० ७।२७।१-५ )

इन्द्रं नगे नेमर्षिता हवन्ते यत् पार्या युनजते धियस्ताः ।

शूरो नृपाता शवसश्चकान आ गोमति ब्रजे भजा त्वं नः १

य इन्द्र शुष्मो मघवन् ते अस्ति शिक्षा सखिभ्यः पुरुहूत नृभ्यः ।  
 त्वं हि हृच्छहा मघवन् विचेता अपा वृधि परिवृतं न राधः २  
 इन्द्रो राजा जगत्श्र्वर्षणीनामधि क्षमि विषुखुपं यदस्ति ।  
 ततो ददाति द्वाशुषे वसूनि चोदुद् राध उपस्तुतश्चिदुर्वाक् ३ २२०५  
 नू चिन्न इन्द्रो मघवा सहृती वानो वाजं नि यमते न ऊती ।  
 अनूना यस्य दक्षिणा पीपायं वामं नृभ्यो अभिर्वीता सखिभ्यः ४  
 नू इन्द्र राये वरिवस्कृधी न आ ते मनो ववृत्याम मघायं ।  
 गोमदश्वोवद् रथवद् व्यन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५  
 ॥ २०१ ॥ ( ऋ० ७।२८।१-५ )

ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि विद्वा नर्वाञ्चस्ते हरयः सन्तु युक्ताः ।  
 विश्वे चिद्धि त्वा विहवन्त मती अस्माकमिच्छृणुहि विश्वमिन्व १  
 हवं त इन्द्र महिमा व्यानइ ब्रह्म यत् पासि शवसिन्नृपीणाम् ।  
 आ यद् वज्रं दधिषे हस्तं उग्र घोरः सन् क्रत्वा जनिष्ठा अपाच्छहः २  
 तव प्रणीतीन्द्र जोहुवानान् त्सं यन्नू न रोदसी निनेथं ।  
 महे क्षत्राय शवसे हि जज्ञे ऽतुतुजिं चित् तूतुजिरशिश्नत् ३ २२१०  
 एभिर्न इन्द्राहभिर्दशस्य दुर्मित्रासो हि क्षितयः पवन्ते ।  
 प्रति यच्चष्टे अनृतमनेना अर्वा द्विता वरुणो मायी नः सात् ४  
 वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद् ददन्नः ।  
 यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५  
 ॥ २०२ ॥ ( ऋ० ७।२९।१-५ )

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्व आ तु प्र याहि हरिवस्तदोकाः ।  
 पित्रा त्वस्य सुपुतस्य चारोर्ददो मघानि मघवान्नियानः १  
 ब्रह्मन् वीर ब्रह्मकृतिं जुषाणो ऽर्वाचीनो हरिभिर्याहि तूर्यम् ।  
 अस्मिन्नू षु सवने मादयस्वो ब्रह्माणि शृणव इमा नः २  
 का ते अस्त्यरंकृतिः सूक्तैः कदा नूनं ते मघवन् दाशेम ।  
 विश्वा मतीरा ततने त्वाया ऽर्धा म इन्द्र शृणवो हवेमा ३ २२१५  
 उतो घा ते पुरुष्याइ इदासन् येषां पूर्वेषामशृणोर्ऋषीणाम् ।  
 अधाहं त्वा मघवञ्जोहवीमि त्वं न इन्द्रासि प्रमतिः पितेवं ४  
 वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद् ददन्नः ।  
 यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०३ ॥ ( ऋ० ७।३०।१-५ )

आ नो देव शर्वसा याहि शुष्मिन् भवा वृध इन्द्र रायो अस्य ।

महे नृष्णाय नृपते सुवज्र महि क्षत्राय पौर्याय शूर १

हवन्त उ त्वा हव्यं विवाचि तनूषु शूराः सूर्यस्य सातौ ।

त्वं विश्वेषु सेन्यो जनेषु त्वं वृत्राणि रन्धया सुहन्तु २

अहा यदिन्द्र सुदिना व्युच्छान् दधो यत् केतुमुपमं समत्सु ।

न्युष्मिः सीदुदसुरो न होता हुवानो अत्र सुभगाय देवान् ३ २२२०

वयं ते त इन्द्र ये च देव स्तवन्त शूर ददतो मघानि ।

यच्छा सूरिभ्य उपमं वरुथं स्वाभुवो जरणामश्रवन्त ४

वोचेमेदिन्द्रं मघवानमनं महो रायो राधसो यद् ददन्नः ।

यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्टो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०४ ॥ ( ऋ० ७।३१।१-१२ ) गायत्री, १०-१२ विराट् ।

प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत । सखायः सोमपात्रे १

शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः । चकृमा सत्यराधसे २

त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो । त्वं हिरण्ययुर्वसो ३ २२२५

वयमिन्द्र त्वायवो ऽभि प्र णोनुमो वृषन् । विद्धी त्वस्य नो वसो ४

मा नो निदे च वक्तवे ऽर्यो रन्धीररावणे । त्वे अपि क्रतुर्मम ५

त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन् । त्वया प्रति ब्रुवे युजा ६

महाँ उतामि यस्य ते ऽनु स्वधावरी सहः । नम्राते इन्द्र रोदसी ७

तं त्वा मरुत्वती परि भुवद् वाणी सयावरी । नक्षमाणा सह द्युभिः ८ २२३०

ऊर्धवासस्वान्विन्दवो भुवन् दुस्ममुप द्यवि । सं ते नमन्त कृष्टयः ९

प्र वो महे महिवृधं भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् । विशः पूर्वीः प्र चरा चर्षणिप्राः १०

उरुव्यचसे महिने सुवृक्तिमिन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः । तस्य वतानि न मिनन्ति धीराः ११

इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव सूत्रा राजानं दधिरे सहधै । हर्यश्वाय बर्हया समापीन् १२

॥ २०५ ॥ ( ऋ० ७।३२।१-२७ ) २६ पूर्वार्धर्चस्य शक्तिर्वासिष्ठो वा (शाक्यायने ब्राह्मणे); २६-२७

शक्तिर्वासिष्ठो वा (ताण्डके ब्राह्मणे) । प्रगाथः- (बृहती, सतोबृहती), ३ द्विपदा विराट् ।

मो पु त्वा वाघर्तश्चना ऽऽरे अस्मन्नि रीरमन् ।

आरात्ताञ्चित सधमादं न आ गहीह वा सन्नूपं श्रुधि १ २२३५

इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधो न मक्ष आसते ।

इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पावुमा दधुः २

रायस्कामो वज्रहस्तं सुदक्षिणं पुत्रो न पितरं हुवे इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः ।	३	
ताँ आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ श्रवच्छ्रुत्कर्ण ईयते वसूनां नू चिन्नो मर्धिषद् गिरः ।	४	
सद्यश्चिद् यः सहस्राणि शता ददुन्नकिर्दित्सन्तमा मिनत् स वीरो अप्रतिष्कृत इन्द्रेण शूशुवे नृभिः ।	५	
यस्ते गभीरा सर्वनानि वृत्रहन् त्सुनोत्या च धावति भवा वरूथं मघवन् मघोनां यत समजासि शर्धतः ।	६	२२४०
वि त्वाहृतस्य वेदनं भजेमह्या दूणाशां भरा गयम सुनोता सोमपात्रे सोममिन्द्राय वज्रिणे ।	७	
पचता पक्तीरवसे कृणुध्वमित् पूणन्नित पृणते मयः मा स्रेधत सोमिनो दक्षता महे कृणुध्वं राय आतुजे ।	८	
तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवासः कवन्तवे नकिः सुदासो रथं पर्यास न रीरमत ।	९	
इन्द्रो यस्याविता यस्य मरुतो गमत् स गोमति व्रजे गमद् वाजं वाजयन्निन्द्र मर्त्यो यस्य त्वमविता भुवः ।	१०	
अस्माकं बोध्यविता रथानामस्माकं शूर नृणाम उदिह्वस्य रिच्यतेऽशो धनं न जिग्युषः ।	११	२२४५
य इन्द्रो हरिवान् न दभन्ति तं रिपो दक्षं दधाति सोमिनि मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशंसं दधात यजियेष्वा ।	१२	
पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवंत कस्तमिन्द्र त्वावसुमा मर्त्यो दधर्षति ।	१३	
श्रद्धा इत् ते मघवन् पार्ये द्विवि वाजी वाजं सिपासति मघोनः स्म वृत्रहत्येषु चोदय ये ददति प्रिया वसु ।	१४	
तव प्रणीती हर्यश्व सूरिभिर्विश्वा तरेम दुरिता तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम् ।	१५	
सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि नकिष्ठा गोषु वृण्वते त्वं विश्वस्य धनदा असि श्रुतो य ई भवन्त्याजयः ।	१६	२२५०
तवायं विश्वः पुरुहूत पार्थिवो ऽवस्युर्नाम भिक्षते	१७	



यदिन्द्र यावत्स्त्वमेतावद्ब्रह्मीशीय ।

स्तोतारमिद् दिधिषेय रदावसो न पापत्वार्य रासीय १८

शिक्षेयमिन्महयते विवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे ।

नहि त्वदन्यन्मघवन् न आप्यं वस्यो अस्ति पिता चन १९

तरणिरित् सिंषासति वाजं पुरंध्या युजा ।

आ व इंद्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेभिं तष्टेव सुद्धम् २०

न दुष्टुती मर्यो विन्दते वसु न स्रेधन्तं रयिर्नशत् ।

सुशक्तिरिन्मघवन् तुभ्यं मावते कुष्णं यत् पार्थं विवि २१ २२५५

अभि त्वां शूर नोनुमो ऽदुग्धा इव धेनवः ।

ईशानमस्य जगतः स्वर्हेशमीशानमिन्द्र तस्थुषः २२

न त्वावां अन्यो विव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।

अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे २३

अभी षतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कर्नीयसः ।

पुरुवसुर्हि मघवन्त्सनादासि भरेभरे च हव्यः २४

परां णुदस्व मघवन्नमित्रान् त्सुवेदां नो वसू कृधि ।

अस्माकं बोध्यविता महाधने भवां वृधः सखीनाम् २५

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।

शिक्षां णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि २६ २२६०

मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्योऽं माशिवासो अव क्रमुः ।

त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपो ऽति शूर तरामसि २७

॥ २०६ ॥ ( क्र० ७।३१।१-९ ) १-९ वसिष्ठपुत्राः इन्द्रो वा । त्रिष्टुप् ।

श्विन्यञ्चो मा दक्षिणतस्कपर्दा धियंजिन्वासो अभि हि प्रमन्दुः ।

उत्तिष्ठन् वोचे परि बर्हिषो नृन् न मे दूरादवितवे वसिष्ठाः १

दूरादिन्द्रमनयन्ना सुतेन तिरो वैशन्तमति पान्तमुग्रम् ।

पाशद्युन्नस्य वायतस्य सोमात् सुतादिन्द्रोऽवृणीता वसिष्ठान् २

एवेन्न कं सिन्धुमेभिस्ततरेवेन्न कं भेदमेभिर्जघान ।

एवेन्न कं दाशराज्ञे सुदासं प्रावदिन्द्रो ब्रह्मणा वो वसिष्ठाः ३

जुष्टीं नरो ब्रह्मणा वः पितृणा मक्षमव्ययं न किला रिषाथ ।

यच्छक्रीपु बृहता रवेणेन्द्रे शुष्ममदधाता वसिष्ठाः ४ २२६५

उद्द्यामिवेतृष्णजोनाथितासोऽधीधयुर्दाशराज्ञेवृतासः ।	
वसिष्ठस्यस्तुवतइन्द्रोअश्रोदुरुंतृत्सुभ्योअकृणोदुलोकम्	५
वृण्डाद्देवगोअजनासआसन्परिच्छिन्नाभरताअर्भकासः ।	
अभवच्चपुरतावसिष्ठआदितृत्सूनांविशोअप्रथन्त	६
त्रयःकृण्वन्तिभुवनेषुरेतस्तिस्त्रःप्रजाआर्याज्योतिरग्राः ।	
त्रयोघर्मासुषसंसचन्तेसर्वाइततांअनुविदुर्वसिष्ठाः	७
सूर्यस्येववक्षथोज्योतिरेषांसमुद्रस्येवमहिमागभीरः ।	
वातस्येवप्रजवो नान्येनस्तोमोवसिष्ठाअन्वेतवेवः	८
तइन्निण्यंहृदयस्यप्रकेतैःसहस्रवल्शमभिसंचरन्ति ।	
युमेनततंपरिधिंवर्यन्तोऽप्सरसुपसेदुर्वसिष्ठाः	९

२२७०

॥ २०७ ॥ ( ऋ० ७।५।१२-८ ) ( प्रस्वापिनी उपनिषद् ) । २-४ उपरिष्ठाद्बृहती, ५-८ अनुष्टुप् ।

यदर्जुनसारमेयवृतःपिंशङ्गयच्छसे ।	
वीवभ्राजन्तऋष्टयउपस्रक्तेषुबर्षतोनिषुस्वप	२
स्तेनंरायसारमेयतस्करंवापुनःसर ।	
स्तोतृनिन्द्रस्यरायसिकिमस्मान्दुच्छुनायसेनिषुस्वप	३
त्वंसूकरस्यदर्दहि तवदर्दतुसूकरः ।	
स्तोतृनिन्द्रस्यरायसिकिमस्मान्दुच्छुनायसेनिषुस्वप	४
सस्तुमातासस्तुपितासस्तुश्वासस्तुविशपतिः ।	
ससन्तुसर्वेजातयःसस्त्वयमभितोजनः	५
यआस्तेयश्चचरति यश्चपश्यतिनोजनः ।	
तेषांसंहन्मोअक्षाणि यथेदंहर्म्यं तथा	६
सहस्रशृङ्गोवृषभो यःसमुद्राद्बुदाचरत् ।	
तेनांसहस्येनावयं निजनान्स्वापयामसि	७
प्रोष्ठेशयावह्येशया नारीर्यास्तल्पशीर्वीरीः ।	
स्त्रियोयाःपुण्यगन्धास्ताःसर्वाःस्वापयामसि	८

२२७५

॥ २०८ ॥ ( ऋ० ७।९।१ ) त्रिष्टुप् ।

यज्ञेविषो नूषदनेपृथिव्या नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।	
इन्द्राय यत्र सर्वनानि सुन्वे गन्मदाय प्रथमं वयंश्च	१

॥ २०९ ॥ ( ऋ० ७।१८।१-६ )

अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं जुहोतेन वृषभार्य क्षितीनाम् । गौराद् वेदीयाँ अवपानमिन्द्रो विश्वाहेद् याति सुतसोममिच्छन्	१	
यद् दधिषे प्रदिवि चार्वन्नं द्विवेदिवे पीतिमिदस्य वक्षि । उत हृदोत मनसा जुषाण उशन्निन्द्र प्रस्थितान् पाहि सोमान्	२	२२८०
जज्ञानः सोमं सहसे पपाथ प्र ते माता महिमानमुवाच । एन्द्र पपाथोर्वान्तरिक्षं युधा देवेभ्यो वरिवश्रकर्थ	३	
यद् योधया महतो मन्यमानान् त्साक्षाम तान् बाहुभिः शाशदानान् । यद् वा नृभिर्वृत इन्द्राभियुध्यास्तं त्वयाजिं सौश्रवसं जयेम	४	
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार । यदेददेवीरसहिष्ट माया अथाभवत् केवलः सोमो अस्य	५	
तवेदं विश्वमभितः पशव्यं यत् पश्यसि चक्षसा सूर्यस्य । गवामसि गोपतिरेकं इन्द्र भक्षीमहि ते प्रयतस्य वस्वः	६	

॥ २१० ॥ ( ऋ० ७।१०४।८, १६, १९-२२ ) । त्रिष्टुप्; २१ जगती ।

यो मा पाकेन मनसा चरंतमभिचष्टे अनृतेभिर्वचोभिः । आप इव काशिना संगृभीता असन्नस्त्वासंत इन्द्र वक्ता	८	२२८५
यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह । इन्द्रस्तं हंतु महता वधेन विश्वस्य जन्तोर्धमस्पदीष्ट	१६	
प्र वर्तय द्विवो अश्मानमिन्द्र सोमशितं मघवन्सं शिशाधिं । प्राक्तादपाक्तादधरादुदक्ता कृभि जहि रक्षसः पर्वतेन	१९	
एत उ त्वे पतयन्ति श्वयातव इन्द्रं दिप्सन्ति द्विप्सवोऽदाभ्यम् । शिशीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदुशनिं यातुमद्भ्यः	२०	
इन्द्रो यातूनार्मभवत् पराशरो हविर्मथीनामभ्याऽविवासताम् । अभीदु शक्रः परशुर्यथा वनं पात्रेव भिन्दन्सत एति रक्षसः	२१	
उलूकयातुं शुश्रूलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् । सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं हृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र	२२	२२९०

॥ २११ ॥ ( ऋ० ८।६।१-१३ )

( २२९१-२३२० ) प्रियमेध आङ्गिरसः । गायत्री, अनुष्टुम्बुखः प्रगाथः=

( अनुष्टुप्+गायत्र्यौ ) ; १, ४, ७, १० अनुष्टुप् ।

आ त्वा रथं यथोतये सुन्नायं वर्तयामसि । तुविकूर्मिमृतीपह—मिन्द्र शर्विष्ठ सत्पते १	
तुविशुष्म तुविक्रतो शर्चीवो विश्वया मते । आ पंप्राथ महित्वना २	
यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः । हस्ता वज्रं हिरण्ययम् ३	
विश्वानरस्य वस्पति—मनानतस्य शर्वसः । एवैश्च चर्षणीना—मूती हुवे रथानाम् ४	
अभिष्टये सदावृधं स्वर्मीळ्हेषु यं नरः । नाना हवन्त ऊतये ५	२२९५
परोमात्रमृचीषम—मिन्द्रमुग्रं सुरार्धसम् । ईशानं चिद्वसूनाम् ६	
तंतमिद्रार्धसे मह इन्द्रं चोदामि पीतये । यः पूर्व्यामनुष्टुति—मीशं कृष्टीनां नूतुः ७	
न यस्य ते शवसान सख्यमानंश मर्त्यः । नक्तिः शवांसि ते नशत् ८	
त्वोतासस्त्वा युजा ऽप्सु सूर्ये महद्भनम् । जयेम पृत्सु वज्रिवः ९	
तं त्वा यज्ञेभिरीमहे तं गीभिर्गीर्वणस्तम ।	
इन्द्र यथा चिदाविथ वाजेषु पुरुमाय्यम् १०	२३००
यस्य ते स्वादु सख्यं स्वाद्वी प्रणीतिरद्विवः । यज्ञो वितन्तसाय्यः ११	
उरु णस्तन्वेऽ तन उरु क्षयाय नस्कृधि । उरु णो यन्धि जीवसे १२	
उरुं नृभ्य उरुं गर्वं उरुं रथाय पन्थाम् । देववीति मनामहे १३	

॥ २१२ ॥ ( ऋ० ८।६।१-१०, [११ पूर्वार्धः], १३-१८ )

अनुष्टुप्, २ उष्णिक्, ४-६ गायत्री, १६ पङ्क्ति, १७-१८ बृहती ।

प्रप्र वस्त्रिण्डुभमिषं मन्दद्वीरायेन्दवे । धिया वो मेधसातये पुरंध्या विवासति १	
नदं व ओर्दतीनां नदं योयुवतीनाम् । पतिं वो अधन्यानां धेनूनामिषुध्यासि २	२३०५
ता अस्य सूददोहसः सोमं श्रीणन्ति पृश्रयः ।	
जन्मन् क्रेवानां विश—स्त्रिणा रोचने द्विवः ३	
अभि प्र गोपतिं गिरे—न्द्रमर्च यथा विदे । सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ४	
आ हरयः समृजिरे ऽरुषीरधि बर्हिषि । यत्राभि संनवामहे ५	
इन्द्राय गावं आशिरं दुदुहे वज्रिणे मधु । यत् सीमुपहरे विदत् ६	
उद्यद्भ्रस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गन्वहि ।	
मध्वः पीत्वा संचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे ७	२३१०
अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत । अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धुष्णवर्चत ८	

अव॑ स्वरा॒ति गर्ग॑रो गा॒धा परि॑ सनिध्वणत् ।	
पिङ्गा॑ परि॑ चनिष्कदु—दिन्द्रा॒य ब्रह्मोद्य॑तम्	९
आ यत् पत॑न्त्ये॒न्यः सुदु॑घा अन॑पस्फुरः । अप॑स्फुरं॒ गृभाय॑त् सोम॑मिन्द्रा॒य पात॑वे १०	
अपा॑दिन्द्रो॒ अपा॑दुग्नि—विश्वे॑ वे॒वा अ॑मत्सत । (पूर्वा॑र्धः.)	११
यो द्य॑ती॒रफा॑ण॒यत् सुयु॑क्तो॒ उप॑ द्वाशुषे॑ । त॒क्रो ने॒ता तदि॑द्रुपु—रुप॑मा यो अमु॑च्यत १३ २३१५	
अती॑दु॒ शक्र॑ ओ॒हत॑ इन्द्रो॒ विश्वा॑ अति॒ द्विषः॑ ।	
मि॒नत् क॒नीनं॑ ओ॒द्रुनं॑ प॒च्यमानं॑ प॒रो गि॒रा	१४
अ॒र्मको॑ न कु॒मार॑को ऽधि॒ तिष्ठ॑न् नवं रथ॑म् । स प॑क्षन्माहि॒षं मृ॒गं पि॒त्रे मा॒त्रे वि॑भु॒क्तुम् १५	
आ तू सु॑शिप्र दंपते॒ रथं॑ ति॒ष्ठा हि॒रण्य॑रथम् ।	
अर्ध॑ द्यु॒क्षं सं॑चेवहि॒ सहस्र॑पादम॒रुषं॑ स्व॑स्ति॒गाम॑ने॒हस॑म् १६	
तं धे॑मि॒त्था न॑म॒स्विन् उप॑ स्व॒राज॑मासते ।	
अथ॑ चि॒दस्य॑ सु॒धितं॑ यदे॒तव॑ आव॒र्तय॑न्ति द्वा॒वने॑	१७
अनु॑ प्र॒त्नस्यो॑कसः प्रि॒यमे॑धास एषाम् ।	
पूर्वा॑मनु प्र॒यतिं॑ वृ॒क्तवा॑र्हिषो हित॒प्रय॑स आशत १८ २३२०	

॥ २१३ ॥ ( ऋ० ८।७०।१-१५ )

( २३२१-२३३५ ) पुरुहन्मा आङ्गिरसः । बृहती. १-६ प्रगाथः = ( विषमा बृहती, समा सतो बृहती ),  
१२ शंकुमती, १३ उष्णिक्, १४ अनुष्टुप्, १५ पुरउष्णिक् ।

यो राजा॑ च॒र्पणी॑नां या॒ता रथे॑भिरधि॒गुः ।	
विश्वा॑सां तरु॒ता पृ॑त॒नानां॑ ज्येष्ठो॒ यो वृ॑त्रहा गूणे	१
इन्द्रं॑ तं शु॒म्भ पुरु॑हन्मन्न॒वसे॑ यस्य॒ द्विता॑ वि॒धर्तरि॑ ।	
ह॒मता॑य॒ वज्रः॑ प्रति॒ धायि॑ दर्श॒तो म॒हो द्वि॑वे न सूर्यः	२
नकि॑ष्टं कर्मणा न॒श—द्यश्च॑कार॒ सदा॑वृ॒धम् ।	
इन्द्रं॑ न य॒ज्ञैर्वि॑श्व॒गूर्त॑मृ॒भ्वंस—मधृ॑ष्टं धू॒ष्णवो॑जसम्	३
अपा॑ळहमु॒ग्रं पृ॑त॒नासु॑ सासहिं॒ यस्मि॑न् म॒हीरु॑ज्रयः ।	
सं धे॒नवो॑ जा॒यमाने॑ अनोनवु—द्या॒वः क्षामो॑ अनोनवुः	४
यद्वा॒व इन्द्र॑ ते श॒तं श॒तं भूमी॑रु॒त स्युः॑ ।	
न त्वा॑ वज्रि॒न्त्सहस्रं॑ सूर्या॒ अनु॑ न जा॒तम॑ष्ट॒ रोद॑सी	५ २३२५
आ प॑प्राथ॒ महि॑ना वृ॒ष्ण्या वृ॑षन् विश्वा॑ शवि॒ष्ठ श॑र्वसा ।	
अ॒म्माँ अव॑ मघवन् गोम॑ति वृ॒जे वज्रि॑ञ्चि॒त्राभि॑रु॒तिभिः॑	६

न सीमदेव आप—दिषं दीर्घायो मर्त्यः ।	
एतंग्वा चिद्य एतंशा युयोजते हरी इन्द्रो युयोजते	७
तं वो महो महाय्य—मिन्द्रं वानार्यं सक्षणिम् ।	
यो गाधेषु य आरणेषु हव्यो वाजेष्वस्ति हव्यः	८
उदू षु णो वसो महे मृशरव शूर राधसे ।	
उदू षु मह्यौ मघवन् मघत्तय उदिन्द्र श्रवसे महे	९
त्वं न इन्द्र क्रतयु—स्त्वानिदो नि तृम्पसि ।	
मध्ये वसिष्व तुविनृम्णोर्वो—र्नि दासं शिश्रथो हर्थः	१० २३३०
अन्यव्रतममानुष—मयज्वानमदेवयुम ।	
अव स्वः सखा दुधुवीत पर्वतः सुग्नय दस्युं पर्वतः	११
त्वं न इन्द्रासां हस्ते शविष्ठ दावने । धानानां न सं गृभायास्मयु—र्द्विः सं गृभायास्मयुः १२	
सखायः क्रतुमिच्छत कथा राधाम शरस्य । उपस्तुति भोजः सूरियो अह्वयः १३	
भूरिभिः समह ऋषिभि—र्बर्हिष्मद्भिः स्तविष्यसे ।	
यद्वित्थमेकमेकमि—च्छरं वत्सान् पराददः	१४
कर्णगृह्या मघवा शौरदेव्यो वत्सं नस्त्रिभ्य आनयत् । अजां सूरिर्न धातवे १५ २३३५	

॥ २१४ ॥ ( क्र० ८।९।१-९ ) ( २३३६-२३६५ ) तिरुश्चीरगाङ्गिरस । अनुष्टुप ।

आ त्वा गिरो रथीरिवा—ऽस्थुः सुतेषु गिर्वणः ।	
अभि त्वा समनूषते—न्द्रं वत्सं न मातरः	१
आ त्वा शुक्रा अचुच्यवुः सुतासं इन्द्र गिर्वणः ।	
पिबा त्वस्यान्धस इन्द्र विश्वासु ते हितम्	२
पिबा सोमं मदाय क—मिन्द्रं श्येनाभृतं सुतम् ।	
त्वं हि शश्वतीनां पती राजा विशामसिं	३
श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।	
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूधिं मह्यं असि	४
इन्द्र यस्ते नवीयसीं गिरं मन्द्रामर्जीजनत् ।	
चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषाम्	५ २३४०
तमुं ष्टवाम यं गिर इन्द्रमुक्थानि वावूधुः ।	
पुरूण्यस्य पौस्या सिपासन्तो वनामहे	६

एतो न्विन्द्रं स्तवाम् शुद्धं शुद्धेन साम्ना ।	
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वासं शुद्ध आशीर्वांन् ममत्तु	७
इन्द्रं शुद्धो न आ गहि शुद्धः शुद्धाभिरूतिभिः ।	
शुद्धो रथिं नि धारय शुद्धो ममाद्धि सोम्यः	८
इन्द्रं शुद्धो हि नो रथिं शुद्धो रत्नानि वृशुषे ।	
शुद्धो वृत्राणि जिघ्रसे शुद्धो वाजं सिपाससि	९

॥ २१५ ॥ ( ऋ० ८।९६।१-१३, १६-२१ )

[ द्युतानो वा मारुतः । त्रिष्टुप्, ४ विराद्, २१ पुरस्ताज्ज्योतिः । ]

अस्मा उपास आतिरन्त याम्—मिन्द्राय नक्तमूर्ध्याः सुवाचः ।	
अस्मा आपो मातरः सप्त तस्थु—र्तृभ्यस्तराय सिन्धवः सुपाराः	१ २३४५
अतिविद्धा विथुरेणां चिदध्ना त्रिः सप्त सानु संहिता गिरीणाम् ।	
न तद्देवां न मर्त्यस्तुतुर्या—द्यानि प्रवृद्धो वृषभश्चकारं	२
इन्द्रस्य वज्रं आयसो निर्मिश्र इन्द्रस्य बाहोर्भूयिष्ठमोजः ।	
शीर्षन्निन्द्रस्य क्रतवो निरेक आसन्नेषन्त श्रुत्या उपाके	३
मन्ये त्वा यज्ञियं यज्ञियांनां मन्ये त्वा च्यवन्मच्युतानाम् ।	
मन्ये त्वा सवर्नामिन्द्र केतुं मन्ये त्वा वृषभं चर्षणीनाम्	४
आ यद्वज्रं बाहोरिन्द्र धत्से मच्युतमर्हये हन्तवा उ ।	
प्र पर्वता अनवन्त प्र गावः प्र ब्रह्माणां अभिनक्षन्त इन्द्रम्	५
तमुं प्ठवाम् य इमा जजान विश्वा जातान्यवराण्यस्मात् ।	
इन्द्रेण मित्रं दिधिषेम गीर्भिरुपो नमोभिर्वृषभं विशेम	६ २३५०
वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः ।	
मरुद्भिरिन्द्र सरुयं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि	७
त्रिः प्ठिस्त्वां मरुतो वावृधाना उस्मा इव राशयो यज्ञियांसः ।	
उप त्वेमः कृधि नो भागधेयं शुष्मं त एना हविषा विधेम	८
तिग्ममायुधं मरुतामनीकं कस्तं इन्द्र प्रति वज्रं दधर्ष ।	
अनायुधासो असुरा अदेवा—श्चक्रेण तां अपं वप ऋजीपिन्	९
मह उग्राय तवसे सुवृक्तिं प्रेरय शिवतमाय पश्वः ।	
गिर्वाहसे गिर इन्द्राय पूर्वी—र्धेहि तन्वे कृविदुङ्ग वेदत्	१०

उक्थवाहसे विभ्वे मनीषां वृणा न पारमीरया नदीनाम् । नि स्पृश धिया तन्वि श्रुतस्य जुष्टतरस्य कुविदुङ्ग वेदत् तद्विविद्धि यत् त इन्द्रो जुजोषत् स्तुहि सुष्टुतिं नमसा विवास ।	११	२३५५
उप भूष जरितर्मा रुवण्यः श्रावया वाचं कुविदुङ्ग वेदत् अव द्रुप्तो अंशुमतीमतिष्ठ—दियानः कृष्णो दृशभिः सहस्रैः । आवत् तमिन्द्रः शच्या धमन्त—मप स्नेहितीर्नमणा अधत्त त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो जायमानो ऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र । गूळ्हे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजो वज्रेण वज्रिन् धृषितो जघन्थ । त्वं शुष्णस्यावातिरो वधत्रै—स्त्वं गा इन्द्र शच्येदविन्दः त्वं ह त्यदृषभ चर्षणीनां वनो वृत्राणां तविषो बभूथ । त्वं सिन्धूरसृजस्तस्तभानान् त्वमपो अजयो दासपत्नीः स सुक्रतू रणिता यः सुतेष्व—नुत्तमन्युर्यो अहेव रेवान् । य एक इन्नर्यपांसि कर्ता स वृत्रहा प्रतीदुन्यमाहुः स वृत्रहेन्द्रश्र्वर्षणीधृत् तं सुष्टुत्या हव्यं हुवेम । स प्राविता मघवां नोऽधिवक्ता स वाजस्य श्रवस्यस्य दाता स वृत्रहेन्द्रं ऋभुक्षाः सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूव । कृण्वन्नपांसि नर्यां पुरूणि सोमो न पीतो हव्यः सखिभ्यः	१२ १३ १६ १७ १८ १९ २० २१	२३६०

॥ २१६ ॥ ( ऋ० ८ ९८।१-१२ )

( २३६४-२३८३ ) नृमेध आङ्गिरसः । उष्णिक्; ७, १०-११ ककुप, ९, १० पुरउष्णिक् ।

इंद्राय सामं गायत् विप्राय बृहते बृहत् । धर्मकृते विपश्चिते पनस्यवे	१	
त्वमिन्द्रामिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः । विश्वकर्मा विश्वेदेवो महो असि	२	२३६५
विभ्राजन्नयोतिषा स्वपु—रगच्छो रोचनं दिवः । देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे	३	
एन्द्रं नो गाधि प्रियः सत्राजिदगोह्यः । गिरिर्न विश्वतस्पृथुः पतिर्दिवः	४	
अभि हि संत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी । इंद्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः	५	
त्वं हि शश्वतीना—मिद्रं वृतां पुरामसि । हंता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः	६	
अधा हीन्द्रं गिर्वण उप त्वा कामान् महः संसृज्महे । उदेव यंत उदभिः	७	२३७०
वार्षां त्वा यव्याभि—र्वधन्ति शूर ब्रह्माणि । वावृध्वासं चिदद्रिवो दिवेदिवे	८	



युञ्जन्ति हरीं इषिरस्य गार्थयो—रौ रथं उरुयुगे । इंद्रवाहा वचोयुजां	९	
त्वं न इंद्रा भरं ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे । आ वीरं पृतनाषहम्	१०	
त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ । अधा ते सुन्नमीमहे	११	
त्वां शुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्त—मुपं ब्रुवे शतक्रतो । स नो रास्व सुवीर्यम्	१२	२३७५

॥ २१७ ॥ ( ऋ० ८।९९।१-८ ) प्रगाथ = ( विषमा बृहती, समा सतोबृहती ) ।

त्वामिदा ह्यो नरो ऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः ।		
स इंद्र स्तोमवाहसामिह श्रुधु—प स्वसरमा गहि	१	
मत्स्वा सुशिप्र हरिवस्तदीमहे त्वे आ भूपन्ति वेधसः ।		
तव श्रवांस्युपमान्युक्थ्या सुतेष्विन्द्र गिर्वणः	२	
श्रायन्त इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।		
वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम	३	
अनर्शरातिं वसुदामुपं स्तुहि भद्रा इंद्रस्य रातर्यः ।		
सो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो वानार्यं चोदयन्	४	
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्व—भि विश्वा असि स्पृधः ।		
अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्यं तरुष्यतः	५	२३८०
अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा ।		
विश्वास्ते स्पृधः श्रथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि	६	
इत ऊती वा अजरं प्रहेतारमप्रहितम् ।		
आशुं जेतारं हेतारं रथीतम—मर्ततं तुश्यावृधम्	७	
इष्कृत्तारमनिष्कृतं सहस्कृतं शतमूर्तिं शतक्रतुम् ।		
समानमिन्द्रमवसे हवामहे वसवानं वसूजुवम्	८	२३८३

॥ २१८ ॥ ( ऋ० ८।८९।१-७ )

( २२८४-२३९६ ) नृमेध-पुरुमेधावाङ्गिरसौ । १-४ प्रगाथ = ( विषमा बृहती, समा सतोबृहती ), ५-६ अनुष्टुप्, ७ बृहती ।

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहंतमम् ।		
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि	१	
अपाधमद्वभिशास्तीरशस्तिहा ऽथेन्द्रो द्युमन्याभवत् ।		
देवास्त इंद्र सन्त्यायं येमिरे बृहद्भानो मरुद्गण	२	२३८५

प्र व इंद्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चित ।	
वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा	३
अभि प्र भर धृषता धृषन्मनः श्रवश्चित् ते असद्बृहत् ।	
अर्षन्त्वापो जर्वसा वि मातरो हनो वृत्रं जया स्वः	४
यज्जायथा अपूर्व्यं मघवन् वृत्रहत्याय ।	
तत् पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्रा उत द्याम्	५
तत् ते यज्ञो अजायत तदुर्क उत हस्कृतिः ।	
तद्विश्वमभिभूरसि यज्जातं यच्च जन्त्वम्	६
आमासुं पक्रमैर्य आ सूर्यं रोहयो द्विवि ।	
घर्मं न सामन् तपता सुवृक्तिभिर्जुष्टं गिर्वणसे बृहत्	७ २३२०

॥ २१२ ॥ ( ऋ० ८।९०।१-६ ) प्रगाथः = ( विषमा बृहती, समा सतोबृहती ) ।

आ नो विश्वासु हव्य इंद्रः समत्सु भूषतु ।	
उप ब्रह्माणि सर्वानानि वृत्रहा परमज्या ऋचीषमः	१
त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि सत्य ईशानकृत् ।	
तुविद्युन्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शर्वसो महः	२
ब्रह्मा त इंद्र गिर्वणः क्रियन्ते अनतिद्भुता ।	
इमा जुषस्व हर्यश्च योजनेन्द्र या ते अर्मन्महि	३
त्वं हि सत्यो मघवन्नानतो वृत्रा भूरि न्युञ्जसे ।	
स त्वं शविष्ठ वज्रहस्त दाशुषे सर्वाश्च रयिमा कृधि	४
त्वमिन्द्र यशा अस्यूजीषी शवसस्पते ।	
त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इदनुत्ता चर्षणीधृता	५ २३२५
तमुं त्वा नूनमसुर प्रचेतसं राधो भागमिविमहे ।	
महीव कृत्तिः शरणा त इंद्र प्र ते सुम्ना नो अश्रवन्	६ २३२६

॥ २२० ॥ ( ८।९२।१-३३ )

( २३२७-२४२९ ) श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः । गायत्री, ? अनुष्टुप् ।

पान्तमा वो अंधस इंद्रमभि प्र गायत । विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ?	
पुरुहूतं पुरुष्टुतं गाथान्यं सनश्रुतम् । इंद्र इति बवीतन	२
इंद्र इन्द्रो महानां दाता वाजानां नतुः । महौ अभिज्वा यमत्	३
अपादु शिप्र्यन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः । इन्द्रोरिन्द्रो यवाशिरः	४ २४००

तम्बभि प्राचते—न्द्रं सोमस्य पीतये	। तदिन्द्रस्य वर्धनम्	५
अस्य पीत्वा मदानां देवो देवस्यौजसा	। विश्वाभि भुवना भुवत्	६
त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ध्वार्यतम्	। आ च्यावयस्युतये	७
युधं सन्तमनर्वाणं सोमपामनपच्युतम्	। नरमवार्यकृतुम्	८
शिक्षा ण इन्द्र राय आ पुरु विद्रां ऋचीषम	। अवां नः पार्ये धने	९ २४०५
अतश्चिदिन्द्र ण उपा ऽऽ याहि शतवाजया	। इपा सहस्रवाजया	१०
अयाम् धीवतो धियो ऽर्वाङ्घ्रिः शक्र गोदरे	। जयेम पूत्सु वञ्जिवः	११
वयमु त्वा शतक्रतो गावो न यवसेष्वा	। उक्थेषु रणयामसि	१२
विश्वा हि मर्त्यत्वना ऽनुकामा शतक्रतो	। अगन्म वज्रिन्नाशसः	१३
त्वे सु पुत्र शवसो ऽवृत्रन् कामकातयः	। न त्वामिन्द्रातिं रिच्यते	१४ २४१०
स नो वृषन्सनिष्ठया सं घोरया द्रविन्त्वा	। धियाविङ्कि पुरंध्या	१५
यस्ते नूनं शतक्रतु—विन्द्रं द्युन्नितमो मदः	। तेन नूनं मदे मदेः	१६
यस्ते चित्रश्रवस्तमो य इन्द्र वृत्रहन्तमः	। य औजोदातमो मदः	१७
विद्वा हि यस्ते अद्रिव—स्त्वादत्तः सत्य सोमपाः।	विश्वासु दस्म कृष्टिषु	१८
इन्द्राय मद्दने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः	। अर्कमर्चन्तु कारवः	१९ २४१५
यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो रणान्ति सप्त संसदः।	इद्रं सुते हवामहे	२०
त्रिकण्डुकेषु चेतनं देवासो यजमन्तत	। तमिद्रर्धन्तु नो गिरः	२१
आ त्वा विशन्तिवन्दवः समुद्रमिव सिधवः	। न त्वामिन्द्रातिं रिच्यते	२२
विष्यक्थ महिना वृषन् भक्षं सोमस्य जागृवे	। य इन्द्र जठरेषु ते	२३
अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन्	। अरं धामभ्य इद्वः	२४ २४१०
अरमश्वाय गायति श्रुतकक्षो अरं गवे	। अरमिन्द्रस्य धाम्ने	२५
अरं हि ष्मा सुतेषु णः सोमेष्विद्र भूषसि	। अरं ते शक्र वावने	२६
पराकात्ताच्चिद्रिव—स्त्वां नक्षन्त नो गिरः	। अरं गमाम ते वयम्	२७
एवा ह्यासिं वीरयु—रेवा शूर उत स्थिरः	। एवा ते राध्यं मनः	२८
एवा रातिस्तुवीमघ विश्वैभिर्धायि धातुभिः	। अधां चिदिद्र मे सचां	२९ २४१५
मो पु ब्रह्मेव तन्द्रयु—र्भुवो वाजानां पते	। मत्स्वा सुतस्य गोमतः	३०
मा न इन्द्राभ्याइदिशः सूरौ अक्तुष्वा यमन्	। त्वा युजा वनेम तत्	३१
त्वयेदिन्द्र युजा वयं प्रतिं बुवीमहि स्पृधः	। त्वमस्माकं तव स्मसि	३२
त्वामिन्द्रि त्वायवो ऽनुनोनुवतश्चरान्	। सखाय इन्द्र कारवः	३३ २४१९

॥ २२१ ॥ ( ऋ० ८।९३।१-३३ )

( २४३०-२४६२ ) सुकक्ष आङ्गिरसः । गायत्री ।

उद्धेवुभि श्रुतामघं वृषभं नयीपसम् । अस्तारमेषि सूर्य	१	२४३०
नव यो नवति पुरो बिभेद बाह्वोजसा । अहिं च वृत्रहावधीत	२	
स न इन्द्रः शिवः सखा ऽश्वावद्भोमद्यवमत् । उरुधरिव दोहते	३	
यदुद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे	४	
यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे । उतो तत् सत्यमित् तव	५	
ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । सर्वास्तां इन्द्र गच्छसि	६	२४३५
तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे । स वृषा वृषभो भुवत्	७	
इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदे हितः । द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः	८	
गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः । ववक्ष ऋष्वो अस्तृतः	९	
दुर्गे चिन्नः सुगं कृधि गृणान इन्द्र गिर्वणः । त्वं च मघवन् वशः	१०	
यस्य ते नू चिदादिशं न मिनन्ति स्वराज्यम् । न देवो नाधिगुर्जनः	११	२४४०
अधा ते अप्रतिष्कृतं देवी शुष्मं सपर्यतः । उभे सुशिप्र रोदसी	१२	
त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च । परुष्णीषु रुशत पर्यः	१३	
वि यदहेरध त्विषो विश्वे देवासो अक्रमुः । विदन्मृगस्य तो अमः	१४	
आदु मे निवरो भुवद् वृत्रहादिष्ट पौंस्यम् । अजातशत्रुरस्तृतः	१५	
श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्षे चर्षणीनाम् । आ शुषे राधसे महे	१६	२४४५
अया धिया च गव्यया पुरुणामन् पुरुष्टुत । यत् सोमेसोम आभवः	१७	
बोधिन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूयांसुतिः । शृणोतु शक्र आशिषम्	१८	
कया त्वं न ऊत्या ऽभि प्र मन्दसे वृषन् । कया स्तोतृभ्य आ भर	१९	
कस्य वृषा सुते सचा नियुत्वान् वृषभो रणत् । वृत्रहा सोमपीतये	२०	
अभी षु णस्त्वं रयिं मन्दसानः सहस्रिणम् । प्रयन्ता बोधि द्वाशुषं	२१	२४५०
पत्नीवन्तः सुता इम उशन्तो यन्ति वीतये । अपां जग्मिनिचुम्पुणः	२२	
इष्टा होत्रा असृक्षते न्द्रं वृधासो अध्वरे । अच्छावभृथमोजसा	२३	
इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या । वोळ्हामभि प्रयो हितम्	२४	
तुभ्यं सोमाः सुता इमे स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो । स्तोतृभ्य इन्द्रमा वह	२५	
आ ते दक्षं वि रोचना दधद्रत्ना वि द्वाशुषे । स्तोतृभ्य इन्द्रमर्चत	२६	२४५५
आ ते दधामीन्द्रिय मुक्था विश्वा शतक्रतो । स्तोतृभ्य इन्द्र मृळय	२७	

भद्रंभद्रं न आ भरे—षूमर्जं शतक्रतो	। यदिन्द्र मूळयासि नः	२८	
स नो विश्वान्या भर सुवितानि शतक्रतो	। यदिन्द्र मूळयासि नः	२९	
त्वामिद् वृत्रहन्तम सुतार्वन्तो हवामहे	। यदिन्द्र मूळयासि नः	३०	
उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते	। उप नो हरिभिः सुतम्	३१	२४६०
द्विता यो वृत्रहन्तमो विद् इन्द्रः शतक्रतुः	। उप नो हरिभिः सुतम्	३२	
त्वं हि वृत्रहन्तेषां पाता सोमानामसि	। उप नो हरिभिः सुतम्	३३	२४६२

॥ २२२ ॥ ( क्र० १०१८७-९ )

( २४६३-२४६५ ) त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः । त्रिष्टुप् ।

अस्य त्रितः क्रतुना ववे अन्त—रिच्छन् धीतिं पितुरेवैः परस्य ।			
सचस्यमानः पित्रोरूपस्थे जामि ब्रुवाण आयुधानि वेति		७	
स पित्र्याण्यायुधानि विद्रा—निन्द्रेषित आप्त्यो अभ्ययुध्यत् ।			
त्रिशिर्षाणं ससरश्मिं जघन्वान् त्वाष्ट्रस्य चिन्निः संसृजे त्रितो गाः		८	
भूरीदिन्द्रं उदिर्नक्षन्तमोजो ऽवाभिन्त सत्पतिर्मन्यमानम् ।			
त्वाष्ट्रस्य चिद् विश्वरूपस्य गोना—माचक्राणस्त्रीणि शीर्षा परां वर्क		९	२४६५

॥ २२३ ॥ ( क्र० १०१२१-१५ )

( २४६६-२४९० ) ऐन्द्रो विमदः प्राजापत्यो वा, वासुको वसुकृद्वा । पुरस्ताद्बृहती,  
५, ७, ९ अनुष्टुप्, १५ त्रिष्टुप् ।

कुहं श्रुत इन्द्रः कस्मिन्नद्य जने मित्रो न श्रूयते ।			
ऋषीणां वा यः क्षये गुहा वा चकृषे गिरा		१	
इह श्रुत इन्द्रो अस्मे अद्य स्तवे वज्रयुचीषमः ।			
मित्रो न यो जनेष्ववा यशश्चक्रे असाभ्या		२	
महो यस्पतिः शर्वसो असाभ्या महो नृम्णस्य तूतुजिः ।			
भर्ता वज्रस्य धृष्णोः पिता पुत्रमिव प्रियम्		३	
युजानो अश्वा वातस्य धुनीं देवो देवस्य वज्रिवः ।			
स्यन्ता पथा विरुक्मता सृजानः स्तोष्यध्वनः		४	
त्वं त्या चिद् वातस्याश्वागा क्रज्जा त्मना बहध्वै ।			
ययोर्देवो न मर्त्यो यन्ता नकिर्विदार्यः		५	२४७०
अध गन्तोशना पृच्छते वां कर्दथा न आ गृहम् ।			
आ जंगमथुः पराकाद् क्विवश्च गमश्च मर्त्यम्		६	

आ न इन्द्र पृक्षसे ऽस्माकं ब्रह्मोद्यतम् ।		
तत् त्वा याचामहेऽवः शुष्णं यद्धन्नमानुषम्	७	
अकर्मा दस्युरभि नो अमन्तु रन्यवतो अमानुषः ।		
त्वं तस्यामित्रहन् वर्धकृासस्य दम्भय	८	
त्वं न इन्द्र शूर शूरैरुत त्वोतासो बर्हणा ।		
पुरुत्रा ते वि पुतयो नवन्त क्षोणयो यथा	९	
त्वं तान् वृत्रहत्ये चोदयो नृन् कार्पाणे शूर वज्रिवः ।		
गुहा यदी कवीनां विशां नक्षत्रशवसाम्	१०	२४७५
मक्षू ता त इन्द्र वानाप्रस आक्षणे शूर वज्रिवः ।		
यद्ध शुष्णस्य कृम्भयो जातं विश्वं सयावभिः	११	
माकुर्धगिन्द्र शूर वस्वीरस्मे भूवन्नभिष्टयः ।		
व्यव्यं त आसां सुन्ने स्याम वज्रिवः	१२	
अस्मे ता त इन्द्र सन्तु सत्या ऽहिंसन्तीरुपस्पृशः ।		
विद्याम यासां भुजो धेनूनां न वज्रिवः	१३	
अहस्ता यदुपकी वर्धत क्षाः शचीभिर्वेद्यानाम् ।		
शुष्णं परि प्रदक्षिणिद् विश्वायवे नि शिश्रथः	१४	
पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मा रिषण्यो वसवान् वसुः सन् ।		
उत त्रायस्व गृणतो मघोनो महश्च रायो रेवतस्कृधी नः	१५	२४८०
॥ २२४ ॥ ( ऋ० १०।२३।१-७ ) जगती; १, ७ त्रिष्टुप्, ५ अभितारिणी ।		
यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यं विव्रतानाम् ।		
प्र इमश्रु दोर्धुवदूर्ध्वथा भूद् वि सेनाभिर्दयमानो वि राधसा	१	
हरी न्वस्य या वने विदे वस्विन्द्रो मघैर्मघवा वृत्रहा भुवत ।		
ऋभुवाजं ऋभुक्षाः पत्यते शवो ऽव क्षणौमि दासस्य नाम चित्	२	
यदा वज्रं हिरण्यमिदथा रथं हरी यमस्य वहतो वि सूरिभिः ।		
आ तिष्ठति मघवा सनश्रुत इन्द्रो वाजस्य कीर्धश्चवसस्पतिः	३	
सो चिन्नु वृष्टिर्यथाऽं स्वा सचां इन्द्रः इमश्रुणि हरितामि पुष्णुते ।		
अव वेति सुक्षयं सुते मधूदिदूनोति वातो यथा वनम्	४	
यो वाचा विवाचो मृधवाचः पुरू सहस्राशिवा जघान् ।		
तत्तदिवस्य पौंस्यं गृणीमसि पितेव यस्तविषीं वावृधे शवः	५	२४८५

स्तोमं त इन्द्र विमदा अजीजनन्नपूर्व्यं पुरुतमं सुदानवे ।  
 विद्वा ह्यस्य भोजनमिनस्य यदा पशुं न गोपाः करामहे ६  
 मार्किर्न एना सख्या वि रीपुस्तव चेन्द्र विमदस्य च ऋषेः ।  
 विद्वा हि ते प्रमतिं देव जामिवदुस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि ७

॥ २२५ ॥ ( ऋ० १०।२४।१-३ ) आस्तारपङ्क्तिः ।

इन्द्र सोममिमं पिबु मधुमन्तं चमू सुतम् ।  
 अस्मे रयिं नि धारय वि वो मदे सहास्रिणं पुरुवसो विवक्षसे १  
 त्वां यज्ञेभिरुक्थैरुप हव्येभिरीमहे ।  
 शचीपते शचीनां वि वो मदे श्रेष्ठं नो धेहि वार्यं विवक्षसे २  
 यस्पतिर्वार्याणांमसि रधस्य चोदिता ।  
 इन्द्रं स्तोतृणामविता वि वो मदे द्विपो नः पाह्यहसो विवक्षसे ३ २४९०

॥ २२६ ॥ ( ऋ० १०।२७।१-२४ ) ( २४९१-२५२९ ) पेन्द्रो वसुक्रः । त्रिष्टुप् ।

असत् सु मे जरितः साभिवेगो यत् सुन्वते यजमानाय शिक्षम् ।  
 अनाशीर्दामहमस्मि प्रहन्ता संत्यध्वतं वृजिनायन्तमाभुम् १  
 यदीदुहं युधये संनया न्यदेवयून् तन्वाऽं शूशुजानान् ।  
 अमा ते तुम्रं वृषभं पंचानि तीव्रं सुतं पञ्चदशं नि पिञ्चम् २  
 नाहं तं वेदु य इति ब्रवीत्यदेवयून्त्समरणे जघन्वान् ।  
 यदावाख्यतं समरणमृधावदादिद्धं मे वृषभा प्र ब्रुवन्ति ३  
 यदज्ञातेषु वृजनेष्वासं विश्वे सतो मघवानो म आसन् ।  
 जिनामि वेत् क्षेम आ सन्तंमाभुं प्र तं क्षिणां पर्वते पादुगृह्यं ४  
 न वा उ मां वृजने वारयन्ते न पर्वतासो यदुहं मनस्ये ।  
 मम स्वनात कृधुकर्णो भयात् एवेदनु यून् किरगः सर्भेजात ५ २४९५  
 दर्शन्वत्रं शृतपाँ अन्निद्रान् बाहुक्षदुः शरवे पत्यमानान् ।  
 घृषुं वा ये निनिदुः सखायमध्यु न्वेषु पवयो ववृत्युः ६  
 अभूर्वोक्षीर्व्युर् आयुरानद् दर्षन्तु पूर्वा अपरो नु दर्षत् ।  
 द्वे पवस्ते परि तं न भूतो यो अस्य पारे रजसो विवेष ७  
 गावो यवं प्रयुता अर्यो अक्षन् ता अपश्यं सहगोपाश्चरन्तीः ।  
 हवा इदुर्यो अभितः समायन् कियंदासु स्वपतिश्छन्दयाने ८

सं यद्द्वयं यवसादो जनानां महं यवाद उर्वज्रे अन्तः ।		
अत्रा युक्तोऽवसातारमिच्छा दथो अयुक्तं युनजद्ववन्वान्	९	
अत्रेदु मे मंससे सत्यमुक्तं द्विपाच्च यच्चतुष्पात् संसृजानि ।		
स्त्रीभिर्यो अत्र वृषणं पृतन्या दयुद्धो अस्य वि भजानि वेदः	१०	२५००
यस्यानक्षा दुहिता जात्वास कस्तां विद्रां अभि मन्याते अन्धाम् ।		
कृतरो मेनिं प्रति तं मुचाते य ई वहति य ई वा वरेयात्	११	
कियती योषा मर्यतो वधूयोः परिप्रीता पन्यसा वार्येण ।		
भद्रा वधूर्भवाति यत् सुपेशाः स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित्	१२	
पत्तो जंगार प्रत्यञ्चमत्ति शीर्ष्णा शिरः प्रति दधौ वरुथम् ।		
आसीन ऊर्ध्वामुपसिं क्षिणाति न्यङ्कुत्तानामन्वेति भूमिम्	१३	
बृहन्नच्छायो अपलाशो अर्वा तस्थौ माता विषितो अत्ति गर्भः ।		
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरुधः	१४	
सप्त वीरासो अधरादुदाय ब्रूण्टोत्तरात्तात् समजग्मिरन्ते ।		
नव पश्चातात् स्थिविमन्त आयन् दश प्राक् सानु वि तिरन्त्यश्रः	१५	२५०५
दृशानामेकं कपिलं समानं तं हिन्वन्ति क्रतवे पार्याय ।		
गर्भं माता सुधितं वक्षणा स्ववेनन्तं तुपर्यन्ती बिभर्ति	१६	
पीवानं मेषमपचन्त वीरा न्युप्ता अक्षा अनु द्वीव आसन् ।		
द्वा धनुं बृहतीमप्स्वन्तः पवित्रवन्ता चरतः पुनन्ता	१७	
वि क्रौशनासो विष्वञ्च आयन् पचाति नेमो नहि पक्षदुर्धः ।		
अयं मे देवः सविता तदाह द्वृन्न इद्वनवत् सर्पिरन्नः	१८	
अपश्यं ग्रामं वहमानमारा दचक्रया स्वधया वर्तमानम् ।		
सिषक्यर्यः प्र युगा जनानां सद्यः शिक्षा प्रमिनानो नवीयान्	१९	
एतौ मे गावौ प्रमरस्य युक्तौ मो पु प्र संधीमुद्दुरिन्ममन्धि ।		
आपश्चिदस्य वि नशन्त्यर्थं सूरश्च मर्क उपरो बभूवान्	२०	२५१०
अयं यो वज्रः पुरुधा विवृत्तो ऽवः सूर्यस्य बृहतः पुरीपात् ।		
श्रव इद्वेना परो अन्यदस्ति तदव्यथी जरिमाणस्तरन्ति	२१	
वृक्षेवृक्षे निर्यता मीमयद्रौ स्ततौ वयः प्र पतान् पूरुपादः ।		
अथेदं विश्वं भुवनं भयात् इन्द्राय सुन्वदृषये च शिक्षत्	२२	
देवानां माने प्रथमा अतिष्ठन् कून्तत्रदिषामुपरा उदायन ।		
त्रयस्तपन्ति पृथिवीमनूपा द्वा बृबूकं वहतः पुरीपम्	२३	



सा ते जीवार्तुरुत तस्य विद्धि मा स्मैतादृगर्ष गूहः समर्थे ।  
आविः स्वः कृणुते गूहते ब्रुसं स पादुरस्य निर्णिजो न मुच्यते २४

॥ २२७ ॥ ( ऋ० १०।२९।१-८ ) ।

वने न वा यो न्यधायि चाक—ञ्छुचिर्वा स्तोमो भुरणावजीगः ।  
यस्येदिन्द्रः पुरुदिनेषु होता नृणां नर्यो नृतमः क्षपावान् १ २५६५  
प्र ते अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम् ।  
अनु त्रिशोकः शतमावहन्नृन् कुत्सेन रथो यो असत् ससवान् २  
कस्ते मद इन्द्र रन्थो भूद् दुरो गिरो अभ्युग्रो वि धाव ।  
कद्वाहो अर्वागुर्ष मा मनीषा आ त्वा शक्यामुपमं राधो अन्नैः ३  
कहुं द्युन्नमिन्द्र त्वावतो नृन् कया धिया करसे कन्न आगन् ।  
मित्रो न सत्य उरुगाय भूत्या अन्नै समस्य यदसन् मनीषाः ४  
प्रेरय सूरौ अर्थं न पारं ये अस्य कामं जनिधा इव गमन् ।  
गिरश्च ये ते तुविजात पूर्वी—नरं इन्द्र प्रतिशिक्षन्त्यन्नैः ५  
मात्रे नु ते सुमिते इन्द्र पूर्वी द्यौर्मज्मना पृथिवी काव्येन ।  
वराय ते घृतवन्तः सुतासः स्वाद्मन् भवन्तु पीतये मधूनि ६ २५२०  
आ मध्वो अस्मा असिचन्नमत्र—मिन्द्राय पूर्णं स हि सत्यराधाः ।  
स वावृधे वरिमन्त्रा पृथिव्या अभि क्त्वा नर्यः पौंस्यैश्च ७  
व्यानळिन्द्रः पृतनाः स्वोजा आस्मै यतन्ते सग्याय पूर्वीः ।  
आ स्मा रथं न पृतनासु तिष्ठ यं मद्रया सुमत्या चोदयासे ८

॥ २२८ ॥ ( १०।२८।१, ३-५, ७, ९, ११ )

[ १ इन्द्रस्तुषा वसुकपती ऋषिका; ३-५, ७, ९, ११ पेन्द्रो वसुक ऋषिः । ]

विश्वो ह्युन्यो अरिराजगाम ममेदह श्वशुरो ना जगाम ।  
जक्षीयाद्धाना उत सोमं पपीयात् स्वाशितः पुनरस्तं जगायात् १  
अद्रिणा ते मन्दिन इन्द्र तूयान् त्सुन्वन्ति सोमान् पिबसि त्वमेषाम् ।  
पचन्ति ते वृषभाँ अत्सि तेषां पृक्षेण यन्मघवन् हूयमानः ३  
इदं सु मे जरितरा चिकिद्धि प्रतीपं शापं नद्यो वहन्ति ।  
लोपाशः सिंहं प्रत्यश्चर्मत्साः क्रोष्टा वराहं निरतक्त कक्षात् ४ २५२५  
कथा त एतद्ब्रह्मा चिकेतं गृत्सस्य पाकस्तवसो मनीषाम् ।  
त्वं नो विद्धां क्रतुथा वि वोचो यमर्धं ते मघवन् क्षेम्या धूः ५

एवा हि मां तवसं जज्जुरुग्रं कर्मन्कर्मन् वृषणमिन्द्र देवाः ।  
वधीं वृत्रं वज्रेण मन्दसानो ऽपं व्रजं महिना वृशुषे वम् ७  
शशः क्षुरं प्रत्यश्चं जगारा ऽद्रिं लोगेन व्यभेदमारात् ।  
बृहंतं चिद्वहते रंधयानि वयद्वत्सो वृषभं शूशुवानः १  
तेभ्यो गोधा अयथं कर्ष्वेते ऽद्ये ब्रह्मणः प्रतिपीयन्त्यन्नैः ।  
सिम उक्ष्णोऽवसृष्टौ अदन्ति स्वयं बलानि तन्वः शृणानाः ११ २५२९

॥ २२९ ॥ ( क्र० १०।३२।१-९ )

( २५३०-२५४० ) कवष ऐलूषः । जगती, ६-९ त्रिष्टुप् ।

प्र सु गमन्ता धियसानस्यं सक्षणि वरोभिर्वरो अभि पु प्रसीदतः ।  
अस्माकमिन्द्र उभयं जुजोषति यत् सोम्यस्यान्धसो बुबोधति १ २५३०  
वीन्द्र यासि दिव्यानि रोचना वि पार्थिवानि रजसा पुरुष्टुत ।  
ये त्वा वहन्ति मुहुरध्वरो उप ते सु वन्वन्तु वग्वनां अराधसः २  
तदिमे छन्सद्रपुषो वपुष्टरं पुत्रो यज्जानं पित्रोरधीयति ।  
जाया पतिं वहति वग्वनां सुमत् पुंस इन्द्रो वहतुः परिष्कृतः ३  
तदित सधस्थमभि चारु दीधय गावो यच्छासन् वहतुं न धेनवः ।  
माता यन्मन्तुर्युथस्यं पूव्या ऽभि वाणस्यं सप्तधातुरिज्जनः ४  
प्र वोऽच्छा रिरिचे देवयुष्पदमेको रुद्रेभिर्याति तुर्वणिः ।  
जरा वा येष्वमृतेषु व्रावने परि व ऊर्मेभ्यः सिञ्चता मधु ५  
निधीयमानमपगूळहमप्सु प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।  
इंद्रो विद्रौ अनु हि त्वा चक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम् ६ २५३५  
अक्षेत्रवित् क्षेत्रविदुं ह्यप्राद् स प्रैति क्षेत्रविदानुशिष्टः ।  
एतद्वै भद्रमनुशासनस्यो त सुतिं विन्दत्यञ्जसीनाम् ७  
अद्येदु प्राणीदममन्निमाहा ऽपीवृतो अधयन्मातुरूधः ।  
एमेनमाप जरिमा युवान महेळन् वसुः सुमना बभूव ८  
एतानि भद्रा कलश क्रियाम् कुरुश्रवण ददतो मघानि ।  
वान इद्वो मघवानः सो अस्त्वयं च सोमो हृदि यं बिभर्मि ९

॥ २३० ॥ ( क्र० १०।३३।२-३ ) प्रगाथः = ( १ बृहती, ३ सतोबृहती )

सं मां तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पशवः ।

नि बाधते अमतिर्नग्रता जसुर्वेन वेवीयते मतिः २

मूषो न शिक्षा व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो ।

सकृत सु नो मघवन्निन्द्र मृळयाऽर्धा पितेव नो भव

३

२५४०

॥ २३१ ॥ ( ऋ० १०३८।१-५ ) ( २५४१-२५४५ ) मुष्कवानिन्द्रः । जगती ।

अस्मिन् न इन्द्र पृत्सुतौ यशस्वति शिमीवति क्रन्दसि प्राव सातये ।

यत्र गोषाता धृषितेषु खादिषु विष्वक् पतन्ति दिद्यवो नृषाह्ये

१

स नः क्षुमन्तं सदेने व्यूर्णुहि गोअर्णसं रयिमिन्द्र श्रवाप्यम् ।

स्याम ते जयतः शक्र मेदिनो यथा वयमुश्मसि तद्वसो कृधि

२

यो नो दास आर्यो वा पुरुषुताऽदेव इन्द्र युधये चिकेतति ।

अस्माभिष्टे सुषहाः सन्तु शत्रवस्त्वया वयं तान् वनुयाम संगमे

३

यो दुभ्रेभिर्हव्यो यश्च भूरिभिर्यो अभीके वरिवोविन्नुषाह्ये ।

तं विखादे सस्मिमद्य श्रुतं नरमर्वाञ्चमिन्द्रमवसे करामहे

४

स्ववृजं हि त्वामहमिन्द्र शुश्रवा नानुदं वृषभ रधचोदनम् ।

प्र मुञ्चस्व परि कुत्सादिहा गहि किमु त्वावान् मुष्कयोर्बद्ध आसते

५

२५४५

॥ २३२ ॥ ( ऋ० १०।४२।१-११ )

( २५४६-२५७८ ) कृष्ण आङ्गिरसः । त्रिष्टुप ।

अस्तेव सु प्रतरं लायमस्यन् भूषन्निव प्र भरा स्तोममस्मै ।

वाचा विप्रास्तरत् वाचमर्यो नि रामय जरितः सोम इन्द्रम्

१

दोहेन गामुषं शिक्षा सखायं प्र बोधय जरितर्जारमिन्द्रम् ।

कोशं न पूर्णं वसुना न्यूष्टमा च्यावय मघदेयाय शूरम्

२

किमङ्ग त्वां मघवन् भोजमाहुः शिशीहि मां शिशयं त्वां शृणोमि ।

अप्रस्वती मम धीरस्तु शक्र वसुविवुं भर्गमिन्द्रा भरा नः

३

त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र संतस्थाना वि ह्वयन्ते समीके ।

अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान् नासुन्वता सख्यं वष्टि शूरः

४

धनं न स्पन्द्रं बहुलं यो अस्मै तीवान्त्सोमा आसुनोति प्रयस्वान् ।

तस्मै शत्रून्त्सुतुकान् प्रातरहो नि स्वप्ट्रान् युवति हन्ति वृत्रम्

५

२५५०

यस्मिन् वयं दधिमा शंसमिन्द्रे यः शिश्राय मघवा काममस्मे ।

आराच्छित् सन् भयतामस्य शत्रुर्न्यस्मै द्युम्ना जन्या नमन्ताम्

६

आराच्छत्रुमप बाधस्व दूरमुग्रो यः शम्भः पुरुहूत तेन ।

अस्मे धेहि यवमद्वोमदिन्द्र कृधी धियं जरित्रे वाजरत्नाम्

७

प्र यमन्तर्वृषसवासो अगमन् तीवाः सोमा बहुलान्तास इन्द्रम् ।  
 नाहं दामानं मघवा नि यंसन्नि सुन्वते वहति भूरिं वामम् ८  
 उत प्रहामतिदीव्या जयाति कृतं यच्छ्वघ्नी विचिनोति काले ।  
 यो देवकामो न धनां रुणद्धि समित् तं राया सृजति स्वधावान् ९  
 गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।  
 वयं राजभिः प्रथमा धनां न्यस्माकेन वृजनेना जयेम १० २५५५  
 बृहस्पतिर्नः परिं पातु पश्चाद्दुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।  
 इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणातु ११

॥ २३३ ॥ ( ऋ० १०।४३।१-११ ) जगती, १०-११ त्रिष्टुप् ।

अच्छां म इन्द्रं मतयः स्वविदः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूपत ।  
 परिं ष्वजन्ते जनयो यथा पतिं मयं न शुन्ध्युं मघवानमूतये १  
 न घां त्वद्विगर्प वेति मे मनस्त्वे इत कामं पुरुहूत शिश्रय ।  
 राजैव दस्म नि षदोऽधि बर्हिष्यस्मिन्त्सु सोमेऽवपानमस्तु ते २  
 विष्वदिन्द्रो अमतेरुत क्षुधः स इद्रायो मघवा वस्व ईशते ।  
 तस्येदिमे प्रवणे सप्त सिंधवो वयो वर्धति वृषभस्य शुष्मिणः ३  
 वयो न वृक्षं सुपलाशमासदन् त्सोमास इन्द्रं मंदिनश्चमूपदः ।  
 प्रैषामनीकं शवसा दविद्युतद्विदत् स्वर्गमनवे ज्योतिरार्यम् ४ २५६०  
 कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति देवने संवर्गं यन्मघवा सूर्यं जयत् ।  
 न तत् ते अन्यो अनु वीर्यं शकन्न पुराणो मघवन् नोत नूतनः ५  
 विशांविशं मघवा पर्यशायत जनानां धेनां अवचाकंशद् वृषा ।  
 यस्याहं शक्रः सर्वनेषु रण्यति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः ६  
 आपो न सिंधुमभि यत् समक्षरन् त्सोमास इन्द्रं कुत्या इव हृदम् ।  
 वर्धन्ति विप्रा महो अस्य सादने यवं न वृष्टिर्दिव्येन दानुना ७  
 वृषा न क्रुद्धः पतयद्रजःस्वा यो अर्यपत्नीरकृणोदिमा अपः ।  
 स सुन्वते मघवा जीरदानवे ऽविन्दुज्ज्योतिर्मनवे हविष्मते ८  
 उजायतां परशुज्योतिषा सह भूया क्रतस्य सुदुर्घा पुराणवत् ।  
 वि रौचतामरुषो भानुना शुचिः स्वर्णं शुकं शशुचीत सत्पतिः ९ २५६५  
 गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।  
 वयं राजभिः प्रथमा धनां न्यस्माकेन वृजनेना जयेम १०

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चा—दुतोत्तरस्माद्धरादघ्रायोः ।

इंद्रः पुरस्ताद्भुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ११

॥ २३४ ॥ ( क्र० १०१४४१-११ ) जगती, १-३, १०-११ त्रिष्टुप् ।

आ यात्विद्भः स्वपतिर्मदाय यो धर्मणा तूतुजानस्तुविष्मान् ।

प्रत्वक्षाणो अति विश्वा सहांस्य—पारणं महता वृष्णयेन १

सुष्ठामा रथः सुयमा हरी ते मिम्यक्ष वज्रो नृपते गर्भस्तौ ।

शीर्षं राजन्सुपथा याह्यर्वाङ् वर्धाम ते पपुषो वृष्ण्यानि २

एन्द्रवाहो नृपतिं वज्रवाहु—मुग्रमुग्रासस्तविपास एनम् ।

प्रत्वक्षसं वृषभं सत्यशुष्म—मेमस्मत्रा संधमादो वहन्तु ३ २५७०

एवा पतिं द्रोणसाचं सचेतस—मूर्जः स्क्रभं धरुण आ वृषायसे ।

ओजः कृष्व सं गृभाय त्व अप्य—सो यथा केनिपानामिनो वृधे ४

गर्भस्ममे वसून्या हि शंसिषं स्वाशिषं भरमा याहि सोमिनः ।

त्वमीशिषे साम्मिन्ना सत्सि बर्हिष्य—नाधूष्या तव पात्राणि धर्मणा ५

पृथक् प्रार्थन् प्रथमा देवहूतयो ऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा ।

न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुह—मीर्भैव ते न्यविशन्त केपयः ६

एवैवाषागपरं संतु दूढ्यो ऽश्वा येषां दुर्युज आयुयुजे ।

इत्था ये प्रागुपरं संति दावने पुरुणि यत्र वयुनानि भोजना ७

गिरीरञ्जान् रेजमानां आधारयद् द्यौः क्रन्ददन्तरिक्षाणि कोपयत् ।

समीचीने धिपणे वि ष्कभायति वृष्णः पीत्वा मद उक्थानि शंसति ८ २५७५

इमं धिभमि सुकृतं ते अङ्कुशं येनारुजासि मघवच्छफारुजः ।

अस्मिन्सु ते सर्वने अस्त्वोक्तयं सुत इष्टौ मघवन् बोध्याभंगः ९

गोभिष्टरमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।

वयं रजभिः प्रथमा धना—न्यस्माकेन वृजनेना जयेम १०

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चा—दुतोत्तरस्माद्धरादघ्रायोः ।

इंद्रः पुरस्ताद्भुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ११ २५७८

॥ २३५ ॥ ( क्र० १०१४८१-११ )

( २५७९-२६०७ ) वैकुण्ठ इंद्रः । जगती, ७, १०-११ त्रिष्टुप् ।

अहं भुवं वसुनः पूर्यस्पति—रहं धनानि सं जयामि शश्वतः ।

मां हवन्ते पितरं न जंतवो ऽहं दाशुषे वि भंजामि भोजनम् १

अहमिन्द्रो रोधो वक्षो अर्थर्वण—स्त्रिताय गा अंजनयमहेर्गधि ।	
अहं दस्युभ्यः परिं नृम्णमा ददे गोत्रा शिक्षन् दधीचे मातरिश्चने	२ २५८०
मह्यं त्वष्टा वज्रमतक्षदायसं मयि देवासोऽवृजन्नपि क्रतुम् ।	
ममानीकं सूर्यस्येव दुष्टरं मामार्यन्ति कृतेन कर्त्वेन च	३
अहमेतं गव्ययमश्वयं पशुं पुरीषिणं सायकेना हिरण्ययम् ।	
पुरू सहस्रा नि शिक्षामि दाशुषे यन्मा सोमांस उक्थिनो अर्मन्दिपुः	४
अहमिन्द्रो न परां जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन ।	
सोममिन्मां सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिपाथन	५
अहमेताञ्छाश्वसतो द्वाद्वे—न्द्रं ये वज्रं युधयेऽकृण्वत ।	
आह्वयमानां अव हन्मनाहनं हृळ्हा वदन्ननमस्युर्नमस्विनः	६
अभीः दमेकमेको अस्मि निष्पा—ळभी द्वा किमु त्रयः करन्ति ।	
खले न पर्षान् प्रति हन्मि भूरि किं मां निदन्ति शत्रवोऽनिद्राः	७ २५८१
अहं गुङ्गुभ्यो अतिथिग्वमिष्कर—मिषं न वृत्रतुरं विश्वु धारयम् ।	
यत् पर्णयघ्न उत वां करञ्जहे प्राहं महे वृत्रहत्ये अशुश्रवि	८
प्र मे नमीं साप्य इषे भुजे भूद् गवामपे सख्या कृणुत द्विता ।	
द्विद्युं यदस्य समिथेषु मंहय—मादिदेनं शंस्यमुक्थ्यं करम्	९
प्र नेमस्मिन् दृष्टो सोमो अन्त—र्गोपा नेममाविरस्था कृणोति ।	
स तिग्मशृङ्गं वृषभं युयुत्सन् द्रुहस्तस्थो बहुले बद्धो अन्तः	१०
आदित्यानां वसूनां रुद्रियाणां देवो देवानां न मिनामि धाम ।	
ते मां मद्राय शर्वसे ततक्षु—रपराजितमस्तृतमपाळ्हम्	११

॥ २३६ ॥ ( क्र० १०४९।१-११ ) जगती; २,११ त्रिष्टुप ।

अहं दां गृणते पूर्यं वस्व—हं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम् ।	
अहं भुवं यजमानस्य चोक्विता ऽयंज्वनः साक्षि विश्वस्मिन् भेरं	१ २५९०
मां धुरिन्द्रं नाम देवतां द्विवश्च गमश्वापां च जन्तवः ।	
अहं हरी वृषणा विवता रघू अहं वज्रं शर्वसे धृष्णवा ददे	२
अहमत्कं कवये शिक्षथं हर्थे—रहं कुत्सावमाभिरूतिभिः ।	
अहं शुष्णास्य श्रथिता वर्धयमं न यो रर आर्यं नाम दस्यवे	३
अहं पितेव वेतमूरमिष्टये तुष्टं कुत्साय स्मदिभं च रन्धयम् ।	
अहं भुवं यजमानस्य राजनि प्र यद्भरे तुजये न प्रियाधृषे	४

अहं रंधयं मृगयं श्रुतवर्णे यन्माजिहीत वयुना चनानुषक् ।		
अहं वेशं नम्रमायवेऽकरमहं सव्याय पङ्क्तिभिमरन्धयम्	५	
अहं स यो नववास्त्वं बृहद्रथं सं वृत्रेव दासं वृत्रहारुजम् ।		
यद्ब्रधयन्तं प्रथयन्तमानुषग् दूरे पारे रजसो रोचनार्करम्	६	१५९५
अहं सूर्यस्य परिं याम्याशुभिः प्रैतशेभिर्वहमान ओजसा ।		
यन्मा सावो मनुष आहं निर्णिज ऋधक् कृषे दासं कृत्वयं हथैः	७	
अहं सप्तहा नहुषो नहुण्टरः प्राश्नावयं शर्वसा तुर्वशं यदुम् ।		
अहं न्युन्यं सहसा सहस्करं नव वाधतो नवतिं च वक्षयम्	८	
अहं सप्त स्रवतो धारयं वृषा द्रवित्त्वः पृथिव्यां सीरा अधि ।		
अहमणींसि वि तिरामि सुक्रतुं युधा विदुं मनदे गातुमिष्टये	९	
अहं तदासु धारयं यदासु न देवश्चन त्वष्टाधारयद्रुशात् ।		
स्पर्हं गवामूधःसु वक्षणास्वा मधोर्मधु श्वात्रयं सोममाशिरम्	१०	
एवा देवाँ इन्द्रो विव्ये नृन् प्र च्यौत्नेन मघवा सत्यराधाः ।		
विश्वेत् ता ते हरिवः शचीवो ऽभि तुरासः स्वयशो गृणन्ति	११	१६००

॥ २३७ ॥ ( ऋ० १०।५०।१-७ ) जगती, ३, ४ अभिसारिणी, ५ त्रिष्टुप् ।

प्र वो महे मन्दमानायान्धसो ऽर्चा विश्वानराय विश्वाभुवे ।		
इन्द्रस्य यस्य सुमखं सहो महि श्रवो नृम्णं च रोदसी सपर्यतः	१	
सो चिन्नु सख्या नर्यं इनः स्तुतश्चर्कृत्य इन्द्रो मावते नरं ।		
विश्वासु धूर्षु वाजकृत्येषु सत्पते वृत्रे वाप्स्वभि शूर मंदसे	२	
के ते नरं इन्द्र ये त इषे ये ते सुम्नं सधन्यमियक्षान् ।		
के ते वाजायासुर्याय हिन्विरे के अप्सु स्वासूर्वरासु पौंस्यं	३	
भुवस्त्वमिन्द्र ब्रह्मणा महान् भुवो विश्वेषु सर्वनेषु यज्ञियः ।		
भुवो नृश्च्योत्तो विश्वस्मिन् भरे ज्येष्ठश्च मन्त्रो विश्वचर्षणे	४	
अवा नु कं ज्यायान् यजवन्सो महीं त ओमात्रां कृष्टयो विदुः ।		
असो नु कमजरो वर्धाश्च विश्वेदेता सर्वना तूतुमा कृषे	५	१६०५
एता विश्वा सर्वना तूतुमा कृषे स्वयं सूनो सहसो यानि दधिषे ।		
वराय ते पात्रं धर्मणे तना यज्ञो मन्त्रो ब्रह्मोद्यतं वचः	६	
ये ते विप्र ब्रह्मकृतः सुते सचा वसूनां च वसुनश्च द्वावने ।		
प्र ते सुम्नस्य मनसा पथा भुवन् मदे सुतस्य सोम्यस्यान्धसः	७	१६०७

॥ २३८ ॥ ( ऋ० १०।५।१-६ )

( २६०८-२६२१ ) बृहदुक्तयो वामदेव्यः । त्रिष्टुप् ।

तां सु ते कीर्तिं मघवन् महित्वा यत् त्वा भीते रोदसी अह्वयेताम् ।  
 प्रावो देवाँ आतिरो दासमोजः प्रजायै त्वस्यै यदशिक्ष इन्द्र १  
 यदचरस्तन्वा वावृधानो बलानीन्द्र प्रब्रुवाणो जनेषु ।  
 मायेत् सा ते यानि युद्धान्याहुर्नाद्य शत्रुं ननु पुरा विवित्से २  
 क उ नु ते महिमनः समस्याऽस्मत पूर्व ऋषयोऽन्तमापुः ।  
 यन्मातरं च पितरं च साकमर्जनयथास्तन्वपुः स्वायाः ३ २६१०  
 चत्वारिं ते असुर्याणि नामाऽदाभ्यानि महिषस्य सन्ति ।  
 त्वमङ्ग तानि विश्वानि वित्से येभिः कर्माणि मघवञ्चकथं ४  
 त्वं विश्वा दधिषे केवलानि यान्याविर्या च गुहा वसूनि ।  
 काममिन्मे मघवन् मा वि तारीस्त्वमाज्ञाता त्वमिन्द्रासि वृता ५  
 यो अदधाज्ज्योतिषि ज्योतिरन्तर्यो असृजन्मधुना सं मधूनि ।  
 अधं प्रियं शूषमिन्द्राय मन्म ब्रह्मकृतो बृहदुक्थादवाचि ६

॥ २३९ ॥ ( ऋ० १०।५।१-८ )

दूरे तन्नाम गुह्यं पराचैर्यत् त्वा भीते अह्वयेतां वयोधै ।  
 उदस्तभ्राः पृथिवीं द्यामभीके भ्रातुः पुत्रान् मघवन् तित्विषाणः १  
 महत् तन्नाम गुह्यं पुरुस्पृग् येन भूतं जनयो येन भव्यम् ।  
 प्रत्नं जातं ज्योतिर्यदस्य प्रियं प्रियाः समविशन्त पञ्च २ २६१५  
 आ रोदसी अपृणादोत मध्यं पञ्च देवाँ क्रतुशः सप्तसप्त ।  
 चतुस्त्रिंशता पुरुधा वि चण्डे सरूपेण ज्योतिषा विव्रतेन ३  
 यदुष औच्छ्रः प्रथमा विभानामर्जनयो येन पुष्टस्य पुष्टम् ।  
 यत् ते जामित्वमवरं परस्या महन्महत्या असुरत्वमेकम् ४  
 विधुं दद्व्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार ।  
 देवस्य पश्य काव्यं महित्वा ऽद्या ममार स ह्यः समान ५  
 शाकर्मना शाको अरुणः सुपर्ण आ यो महः शूरः सनादनीळः ।  
 यच्चिकेत सत्यमित् तन्न मोघं वसुं स्पार्हमुत जेतोत दाता ६  
 ऐभिर्द्वे वृष्ण्या पौस्यानि येभिरौक्षद् वृत्रहत्याय वज्री ।  
 ये कर्मणः क्रियमाणस्य मह्यं क्रतेकर्ममुदजायन्त देवाः ७ २६२०



युजा कर्माणि जनयन् विश्वौजा अशस्तिहा विश्वमनास्तुराषाट् ।  
पीत्वी सोमस्य दिव आ वृधानः शूरो निर्युधार्धमद् दस्यून्

८ २६२१

॥ २४० ॥ ( ऋ० १०।६०।५ ) ( २६२२ ) बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः गायत्री ।

इन्द्रं क्षत्रासमातिषु रथप्रोष्ठेषु धारय । दिवीव सूर्यं हृशे

५ २६२२

॥ २४१ ॥ ( ऋ० १०।७३।१-११ )

( २६२३-२६३९ ) गौरिवाति. शाकत्यः । त्रिष्टुप् ।

जनिष्ठा उग्रः सहसे त्रुगयं मन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः ।

अवर्धन्नन्द्रं मरुतश्चिदत्रं माता यद्वीरं दूधनद्धनिष्ठा

१

द्रुहो निपत्ता पृशनी चिदेवः पुरू शंसन वावृधुष्ट इन्द्रम ।

अभीवृतेव ता महापदेन ध्वान्तात प्रपित्वादुदरन्त गर्भाः

२

ऋष्वा ते पादा प्र यज्जिगास्यवर्धन् वाजा उत ये चिदत्रं ।

त्वमिन्द्र सालावृकान्तसहस्रमासन् दधिषे अश्विना ववृत्याः

३

२६२५

समना तूर्णिरुप यासि यज्ञमा नासत्या सख्याय वक्षि ।

वसाव्यामिन्द्र धारयः सहस्राः श्विना शूर ददतुर्मघानि

४

मन्दमान क्रतादधि प्रजायै सखिभिरिन्द्र इषिरेभिरथम् ।

आभिर्हि माया उप दस्युमागाः न्मिहः प्र तम्रा अवपत तमांसि

५

सनामाना चिद् ध्वसयो न्यस्मा अवाहन्नन्द्र उषसो यथानः ।

ऋष्वैरगच्छः सखिभिर्निकाभिः साकं प्रतिष्ठा हृद्या जघन्थ

६

त्वं जघन्थ नमुचिं मखस्युं दासं कृष्वान ऋषये विमायम् ।

त्वं चकथ मनवे स्योनान् पथो देवत्राश्रसेव यानान्

७

त्वमतानि पप्रिषे वि नामे शान इन्द्र दधिषे गर्भस्तौ ।

अनु त्वा देवाः शर्वसा मदन्त्युपरिबुधान् वनिनश्चक्रथ

८

२६३०

चक्रं यदस्याप्स्वा निपत्तमुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात् ।

पृथिव्यामतिपितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु

९

अश्वोदियायेति यद्वद्वन्त्योजसो जातमुत मन्य एनम् ।

मन्योरियाय हर्म्येषु तस्थौ यतः प्रजज्ञ इन्द्रो अस्य वेद

१०

वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः ।

अप ध्वान्तमूर्णुहि पृथि चक्षुर्मुग्ध्यस्मान् निधयेव बद्धान्

११

॥ २४२ ॥ ( ऋ० १०।७४।१-६ )

वसूनां वा चकृष इर्यक्षन् धिया वा यज्ञैर्वा रोदस्योः ।		
अर्वन्तो वा ये रयिमन्तः सातौ वनुं वा ये सुश्रुणं सुश्रुतो धुः	१	
हव एषामसुरो नक्षत द्यां श्रवस्यता मनसा निसत् क्षाम् ।		
चक्षाणा यत्र सुविताय देवा द्यौर्न वारोभिः कृणवन्त स्वैः	२	२६३५
इयमेषाममृतानां गीः सर्वतांता ये कृपणन्त रत्नम् ।		
धियं च यज्ञं च साधन्तस्ते नो धान्तु वसव्यमसामि	३	
आ तत् त इन्द्रायवः पनन्ताऽभि य ऊर्व गोमन्तं तितृत्सान् ।		
सकृत्स्वं ये पुरुपुत्रां महीं सहस्रधारां बृहतीं दुदुक्षन्	४	
शचीव इन्द्रमवसे कृणुध्वमनांतं दमयन्तं पृतन्यून ।		
ऋभुक्षणं मघवानं सुवृक्तिं भर्ता यो वज्रं नयं पुरुक्षुः	५	
यद्वावानं पुरुतमं पुराषाळा वृत्रहेन्द्रो नामान्यप्राः ।		
अचेति प्रासहस्पतिस्तुविष्मान् यदीमुश्मसि कर्तवे करत तत्	६	२६३९

॥ २४३ ॥ ( ऋ० १०।८६।१-२३ )

( २६४०-२६६२ ) इन्द्रः; ७, १३, २३ ऐन्द्रो वृषाकपिः २-६, ९-१०, १९-२८ इन्द्राणी । पङ्क्तिः ।

वि हि सोतोरसृक्षत नेन्द्रं देवममंसत ।		
यत्रामदद् वृषाकपिर्रयः पुष्टेषु मत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	१	२६४०
परा हीन्द्र धारवसि वृषाकपेरति व्यथिः ।		
नो अह प्र विन्दस्यन्यत्र सोमपीतये विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	२	
किमयं त्वां वृषाकपिश्चकार हरितो मृगः ।		
यस्मा इरस्यसीदु न्वर्यो वा पुष्टिमद्रसु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	३	
यमिमं त्वं वृषाकपिं प्रियमिन्द्राभिरक्षसि ।		
श्वा न्वस्य जम्भिषदपि कर्णे वराहयु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	४	
प्रिया तष्टानि मे कपिर्व्यक्ता व्यदूदुषत ।		
शिरो न्वस्य राविषं न सुगं दुष्कृते भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	५	
न मत् स्त्री सुभसत्तरा न सुयाशुतरा भुवत् ।		
न मत् प्रतिच्यवीयसी न सक्थ्युग्रमीयसी विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	६	२६४५
उवे अम्ब सुलाभिके यथेवाङ्ग भविष्यति ।		
भसन्मे अम्ब सक्थि मे शिरो मे वीव हृष्यति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	७	

किं सुबाहो स्वङ्गुरे पृथुङ्गो पृथुजाघने ।		
किं शूरपति नस्त्वमभ्यमीषि वृषाकपिं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	८	
अवीरोमिव मामयं शरारुरभि मन्यते ।		
उताहर्मस्मि वीरिणीन्द्रपत्नी मरुत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	९	
संहोत्रं स्म पुरा भारी समनं वाव गच्छति ।		
वेधा ऋतस्य वीरिणीन्द्रपत्नी महीयते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	१०	
इन्द्राणीमासु नारिषु सुभगा महमश्रवम् ।		
नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	११	२६५०
नाहमिन्द्राणि रारण सख्युर्वृषाकपेऋते ।		
यस्येदमप्यं हविः प्रियं देवेषु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	१२	
वृषाकपायि रेवति सुपुत्र आदु सुसुनेपे ।		
घसंत त इन्द्र उक्षणः प्रियं काचित्करं हवि विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	१३	
उक्षणो हि मे पञ्चदश साकं पचंति विंशतिम् ।		
उताहर्मस्मि पीव इदुभा कुक्षी पृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	१४	
वृषभो न तिग्मशृङ्गो ऽन्तर्युथेषु रोरुवत् ।		
मंथस्त इन्द्र शं हृदे यं ते सुनोति भावयु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	१५	
न सेशे यस्य रम्बते ऽन्तरा सक्थ्याऽ कपृत् ।		
सेदीशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	१६	२६५५
न सेशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते ।		
सेदीशे यस्य रम्बते ऽन्तरा सक्थ्याऽ कपृद् विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	१७	
अयमिन्द्र वृषाकपिः परस्वन्तं हतं विदत् ।		
असिं सूनां नवं चरुमादेधस्यान् आचितं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	१८	
अयमैमि विचाकशद् विचिन्वन् दासमार्यम् ।		
पिबामि पाकसुत्वनेो ऽभि धीरमचाकशं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	१९	
धन्वं च यत् कृन्तत्रं च कतिं खित् ता वि योजना ।		
नेदीयसो वृषाकपे ऽस्तमेहिं गृह्णां उप विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	२०	
पुनरेहिं वृषाकपे सुविता कल्पयावहै ।		
य एष स्वप्ननंशानो ऽस्तमेषिं पथा पुन विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	२१	२६६०

यदुदञ्चो वृषाकपे गृहमिन्द्राजगन्तन ।

क्रुं स्य पुल्वघो मृगः कर्मगञ्जनयोपनो विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २२

पशुर्हि नाम मानवी साकं संसूव विंशतिम् ।

मद्रं भलं त्यस्यां अभूद् यस्या उदरमामयद् विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २३ २६६०

॥ २४४ ॥ ( २६६३-२६७९ ) ( क्र० १०।८९।१-४, ६-१८ ) रेणुवैश्वामित्रः । त्रिद्वय ।

इन्द्रं स्तथा नृतमं यस्य महा विबवाधे रोचना वि ज्मो अन्तान् ।

आ यः प्रपौ चर्षणीधृद्वरोभिः प्र सिन्धुभ्यो रिरिचानो महित्वा ?

स सूर्यः पर्युक्त वरांस्येन्द्रो ववृत्याद्रथेव चक्रा ।

अतिष्ठन्तमपस्यं न सर्गं कृष्णा तमांसि त्विष्या जघान २

समानमस्मा अनपावृद्वर्च क्षमया दिवो असमं बह्व नव्यम् ।

वि यः पृष्ठेव जनिमान्यर्य इन्द्रश्चिकाय न सखायमीषे ३ २६६५

इन्द्राय गिरो अर्निशितसर्गा अपः प्रेरयं सर्गरस्य बुध्नात् ।

यो अक्षणेव चक्रिया शचीभिर्विष्वक् तस्तम्भं पृथिवीमुत् द्याम् ४

न यस्य द्यावापृथिवी न धन्व नान्तरिक्षं नाद्रयः सोमो अक्षाः ।

यदस्य मन्युरधिनीयमानः शृणाति वीळु रुजति स्थिराणि ६

जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव रुरोज पुरो अरदृन्न सिन्धून् ।

बिभेद् गिरिं नवमिन्न कुम्भमा गा इन्द्रो अकृणुत् स्वयुग्भिः ७

त्वं ह त्यहणया इन्द्र धीरो ऽसिर्न पर्व वृजिना शृणासि ।

प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम युजं न जनां मिनन्ति मित्रम् ८

प्र ये मित्रं प्रार्यमणं दुरेवाः प्र संगिरः प्र वरुणं मिनन्ति ।

न्यमित्रेषु वधमिन्द्र तुश्रं वृषन् वृषाणमरुषं शिशिहि ९ २६७०

इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे पृथिव्या इन्द्रो अपामिन्द्र इत् पर्वतानाम् ।

इन्द्रो वृधामिन्द्र इन्मेधिराणां मिन्द्रः क्षेमे योगे हव्य इन्द्रः १०

प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र वृधो अहभ्यः प्रान्तरिक्षात् प्र समुद्रस्य धासेः ।

प्र वातस्य प्रथसः प्र ज्मो अन्तात् प्र सिन्धुभ्यो रिरिचे प्र क्षितिभ्यः ११

प्र शोशुचत्या उषसो न केतु रसिन्वा ते वर्ततामिन्द्र हेतिः ।

अश्मेव विध्य दिव आ सृजानस्तपिष्ठेन हेषसा द्रोघमित्रान् १२

अन्वह मासा अन्विद्वानान्यन्वोषधीरनु पर्वतासः ।

अन्विन्द्रं रोदसी वावशाने अन्वार्षो अजिहत जायमानम् १३

कहिं स्वित् सा त इन्द्र चेत्यास—कुघस्य यद् भिनवो रक्ष एषत् ।		
मित्रक्रुवो यच्छसने न गावः पृथिव्या आपृगमुया शयन्ते	१४	२६७५
शत्रूयन्तो अभि ये नस्ततसे महि वार्धन्त ओगणस इन्द्र ।		
अन्धेनामित्रास्तमसा सचन्तां सुज्योतिषो अक्तवस्तां अभि व्युः	१५	
पुरुणि हि त्वा सर्वना जनानां ब्रह्माणि मंदन् गृणतामृषीणाम् ।		
इमामाघोषन्नवसा सहति तिरो विश्वाँ अर्चतो याह्यर्वाङ्	१६	
एवा ते वयमिन्द्र भुञ्जतीनां विद्याम सुमतीनां नवानाम् ।		
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो विश्वामित्रा उत ते इन्द्र नूनम्	१७	
शुनं हुँवम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातो ।		
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	१८	२६७९
॥२४५॥ ( ऋ० १०।९।१६-१२ ) ( २६८०-२६९१ ) वज्रो वैखानसः ।		
कं नश्चित्रामिषण्यसि चिकित्वान् पृथुग्मानं वाश्रं वावृधधै ।		
कत् तस्य दातु शवसो व्युष्टौ तक्षद्रञ्जं वृत्रतुरमपिन्वत्	१	२६८०
स हि द्युता विद्युता वेति सामं पृथुं योनिमसुरत्वा संसाद ।		
स सनीळेभिः प्रसहानो अस्य भ्रातुर्न क्रते सप्तथस्य मायाः	२	
स वाजं यातापदुष्पदा यन् त्स्वर्पाता परि षदत् सनिष्यन् ।		
अनर्वा यच्छतदुरस्य वेदो घ्नच्छिश्रदेवाँ अभि वर्षसा भूत्	३	
स यह्योऽवनीर्गोष्वर्वा ऽऽ जुहोति प्रधन्यासु सस्रिः ।		
अपादो यत्र युज्यासोऽरथा द्रोण्यश्वास ईरते घृतं वाः	४	
स रुद्रेभिरशस्तवार ऋभवा हित्वी गर्यमारेअवद्य आगात् ।		
वश्रस्य मन्ये मिथुना विवर्वा अन्नमभीत्यारोदयन्मुषायन्	५	
स इद् दासं तुवीरवं पतिर्दन् पञ्चक्षं त्रिशीर्षाणं दमन्यत ।		
अस्य त्रितो न्वोजसा वृधानो विपा वराहमयोअग्रया हन्	६	२६८५
स द्रुहणे मनुष ऊर्ध्वसान आ साविषदर्शसानाय शरुम् ।		
स नृतमो नहृषोऽस्मत् सुजातः पुरोऽभिनदर्हन् दस्युहत्ये	७	
सो अभ्रियो न यवस उकुन्यन् क्षयाय गातुं विदन्नो अस्मे ।		
उप यत् सीदुदिन्दुं शरीरैः श्येनोऽयोपाष्टिर्हन्ति दस्यून्	८	
स वार्धतः शवसानेभिरस्य कुत्साय शुष्णं कूपणे परादात् ।		
अयं कविर्मनयच्छस्यमान—मत्कं यो अस्य सनितोत नृणाम्	९	

अयं दृशस्यन्न नर्येभिरस्य वृस्मो देवेभिर्वरुणो न मायी ।		
अयं कनीनं क्रतुपा अवे—द्यमिमीतारुं यश्चतुष्पात्	१०	
अस्य स्तोमैभिरौशिज ऋजिश्वा व्रजं द्रयद् वृषभेण पिपां ।		
सुत्वा यद् यजतो वृीदयद्रीः पुरं इयानो अभि वर्षसा भृत	११	२६९०
एवा महो असुर वक्षथाय वस्रकः पद्भिरुर्ष सर्पदिन्द्रम् ।		
स इयानः करति स्वस्तिमस्मा इपमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः	१२	२६९१

॥ २४६ ॥ ( ऋ० १०।१०३।१-३, ५-११, १३ )

( २६९२-२७०२ ) ऋद्रोऽप्रतिरथः । [ १३ मरुतो वा ] । त्रिष्टुप्, १३ अनुष्टुप् ।

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।		
संकन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत् साकामिन्द्रः	१	
संकन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।		
तदिन्द्रेण जयत् तत् सहध्वं युधो न इषुहस्तेन वृष्णा	२	
स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी संघ्ण्टा स युधु इन्द्रो गणेन ।		
संसृष्टजित् सोमपा बाहुशर्धुर्गु—ग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता	३	
बलविजायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।		
अभिर्वीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्	५	२६९२
गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्मं प्रभूणन्तमोजसा ।		
इमं संजाता अनु वीरयध्व—मिन्द्रं सखायां अनु सं रभध्वम्	६	
अभि गोत्राणि सहसा गार्हमानो ऽद्वयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः ।		
दुश्च्यवनः प्रतनाषाळयुधयोऽं ऽस्माकं सेना अवतु प्र युत्सु	७	
इन्द्रं आसां नेता बृहस्पति—र्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।		
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्	८	
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आकित्यानां मरुतां शधं उग्रम् ।		
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्	९	
उद्धर्षय मघवन्नार्युधा—न्युत् सत्वंनां मामकानां मनांसि ।		
उद्धृत्रहन् वाजिनां वाजिना—न्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः	१०	२७०३
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजे—वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु ।		
अस्माकं वीरा उत्तरे भव—न्त्वस्माँ उ देवा अवता हवेषु	११	

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।

उग्रा वः सन्तु बाहवो ऽनाधृष्या यथासंथ

१३

२७०२

॥ २४७ ॥ ( ऋ० १०।१०४।१-११ )

( २७०२-२७१३ ) अष्टका वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

असावि सोमः पुरुहूत तुभ्यं हरिभ्यां यज्ञमुषं याहि तूयम् ।

तुभ्यं गिरो विप्रवीरा इयाना दधन्विर इन्द्र पिबा सुतस्य

१

अप्सु धूतस्य हरिवः पिबेह नृभिः सुतस्य जठरं पृणस्व ।

मिमिक्षुयमद्रय इन्द्र तुभ्यं तेभिर्वर्धस्व मदमुक्थवाहः

२

प्रोग्रां पीतिं वृष्णा इयमि सत्यां प्रथे सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम् ।

इन्द्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्यां गृणानः

३

२७०५

ऊती शचीवस्तव वीर्येण वयो दधाना उशिज क्रतज्ञाः ।

प्रजार्वादिन्द्र मनुषो दुरोणे तस्थुर्गुणतः सधमाद्यासः

४

प्रणीतिभिष्टे हर्यश्व सुष्टोः सुषुम्नस्य पुरुरुचो जनासः ।

मंहिष्ठाभूतिं वितिरे दधानाः स्तोतार इन्द्र तव सूनुताभिः

५

उप ब्रह्माणि हरिवो हरिभ्यां सोमस्य याहि पीतये सुतस्य ।

इन्द्र त्वा यज्ञः क्षममाणमानद् द्वाश्वौ अस्यध्वरस्य प्रक्रेतः

६

सहस्रवाजमभिमातिषाहं सुतेरणं मघवानं सुवृक्तिम् ।

उप भूपन्ति गिरो अप्रतीतिमिन्द्रं नमस्या जरितुः पनन्त

७

सप्तापो देवीः सुरणा अमृक्ता याभिः सिन्धुमतर इन्द्र पूर्मित ।

नवतिं स्रोत्या नव च स्रवन्ती देवेभ्यो गातुं मनुषे च विन्दः

८

२७१०

अपो महीरभिश्स्तेरमुञ्चो ऽजागरास्वधि देव एकः ।

इन्द्र यास्त्वं वृत्रतूर्ये चकथ ताभिर्विश्वायुस्तन्वं पुपुष्याः

९

वीरेण्यः क्रतुरिन्द्रः सुशस्तिरुतापि धेना पुरुहूतमीदृि ।

आदयद् वृत्रमकृणोदु लोकं संसाहे शक्रः पृतना अभिष्टिः

१०

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रं मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।

शृण्वन्तमग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्

११

२७१३

॥ २४८ ॥ ( ऋ० १०।१०५।१-११ )

( २७१४-२७२४ ) कौत्सो दुर्मित्रः सुमित्रो वा । उष्णिक्; १ गायत्री वा, २, ७ विपीलिकमध्या; ११ त्रिष्टुप् ।

कदा वसो स्तोत्रं हर्यते आवं श्मशा रुध्र्याः । वीर्यं सृतं वाताप्याय १

हरी यस्य सुयुजा विव्रता वे—र्वन्तानु शेपा । उभा रजी न केशिना पतिर्दन्	२	२७१५
अप योरिन्द्रः पापज आ मर्तो न शश्रमाणो विभीवान् । शुभे यद्युयुजे तविषीवान्	३	
सचायोरिन्द्रश्चकृष आँ उपानसः सपर्यन् । नदयोर्विव्रतयोः शूर इन्द्रः	४	
अधि यस्तस्थौ केशवन्ता व्यचस्वन्ता न पुष्ट्यै । वनोति शिप्राभ्यां शिपिणीवान्	५	
प्रास्तौहृष्वौजा ऋष्वेभिस्ततक्ष शूरः शर्वसा । ऋभुर्न क्रतुभिर्मातरिश्वा	६	
वज्रं यश्चक्रे सुहनाय दस्यव हिरीमशो हिरीमान् । अरुतहनुरद्धतं न रजः	७	२७२०
अव नो वृजिना शिशीहृचा वनेमानृचः । नाब्रह्मा यज्ञ ऋधग्जोषति त्वे	८	
ऊर्ध्वा यत् ते त्रेतिनी भूद् यज्ञस्य धूपु सन्नन् । सजूर्नावं स्वयंशसं सचायोः	९	
श्रिये ते पृश्निरुपसेचनी भू—च्छ्रिये दर्विररेपाः । यया स्वे पात्रे सिञ्चस उत	१०	
शतं वा यदस्युयं प्रति त्वा सुमित्र इत्थास्तौद् दुमित्र इत्थास्तौत ।		
आवो यदस्युहृत्ये कुत्सपुत्रं प्रावो यदस्युहृत्ये कुत्सवत्सम्	११	२७२४

॥ २४९ ॥ ( क्र० १०।११।१।१-१० )

( २७२५-२७३४ ) वैरूपोऽष्टादंष्ट । शिष्णुप ।

मनीषिणः प्र भरध्वं मनीषा यथायथा मतयः सन्ति नृणाम् ।		
इन्द्रं सत्यैरेरयामा कृतेभिः स हि वीरो गिर्वणस्युर्विदानः	१	२७२५
ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौत् सं गर्हियो वृषभो गोभिरानट् ।		
उदतिष्ठत् तविषेणा रवेण महान्ति चित् सं विव्याचा रजांसि	२	
इन्द्रः किल श्रुत्या अस्य वेद् स हि जिष्णुः पथिकृत सूर्याय ।		
आन्मेनां कृण्वन्नच्युतो भुवद्भोः पतिर्दिवः सनजा अप्रतीतः	३	
इन्द्रो मह्ना महतो अर्णवस्य व्रताग्निनादङ्गिरोभिर्गृणानः ।		
पुरूणि चिन्नि तताना रजांसि वृधार् यो धरुणं सत्यताता	४	
इन्द्रो दिवः प्रतिमानं पृथिव्या विश्वा वेद् सर्वना हन्ति शुष्णम् ।		
महीं चिद् द्यामातनोत् सूर्येण चास्कम्भं चित् कम्भनेन स्कर्मीयान्	५	
वज्रेण हि वृत्रहा वृत्रमस्त—रदेवस्य शूशुवानस्य मायाः ।		
वि धृष्णो अत्र धृषता जघन्था—ऽथाभवो मघवन् ब्राह्मोजाः	६	२७३०
सचन्त यदुषसः सूर्येण चित्रामस्य केतवो रामविन्दन् ।		
आ यन्नक्षत्रं ददृशे दिवो न पुनर्यतो नकिरन्द्रा नु वेद्	७	
दूरं किल प्रथमा जग्मुरासा—मिन्द्रस्य याः प्रसवे समुरापः ।		
कं स्विवशं कं बुध्न आसा—मापो मध्यं कं वो नूनमन्तः	८	



सृजः सिन्धूरहिना जग्रसानाँ आदिदेताः प्र विविञ्चे जवेन ।		
मुमुक्षमाणा उत या मुमुञ्चे ऽधेदेता न रमन्ते नितिकाः	९	
सधीचीः सिन्धुमुशतीरिवायन् त्सनाज्जार आरितः पूभिदासाम् ।		
अस्तमा ते पार्थिवा वसूँन्यस्मे जग्मुः सूनृता इन्द्र पूर्वाः	१०	२७३४

॥ २५० ॥ ( ऋ० १०।११२।१-१० ) ( २७३५-२७४४ ) वैरूपो नभःप्रभेदनः ।

इन्द्र पिबं प्रतिक्रामं सुतस्य प्रातःसावस्तव हि पूर्वपीतिः ।		
हर्षस्व हन्तवे शूर शत्रूँनुक्थेभिष्टे वीर्याँ प्र ब्रवाम	१	२७३५
यस्ते रथो मनसो जवीयाँनेन्द्र तेन सोमपेयाय याहि ।		
तूयमा ते हरयः प्र द्रवन्तु येभिर्यासि वृषभिमिन्दमानः	२	
हरित्वता वर्चसा सूर्यस्य श्रेष्ठैँ रूपैस्तन्वं स्पर्शयस्व ।		
अस्माभिरिन्द्र सखिभिर्हुवानः सधीचीनो मादयस्वा निषद्य	३	
यस्य त्यत् ते महिमानं मदेँष्विमे मही रोदसी नाविक्ताम ।		
तदोक् आ हरिभिरिन्द्र युक्तैः प्रियेभिर्याहि प्रियमन्नमच्छे	४	
यस्य शश्वत् पपिवाँ इन्द्र शत्रूँननानुकृत्या रण्या चकथ ।		
स ते पुरंधिं तविषीमियति स ते मदाय सुत इँद्र सोमः	५	
इदं ते पात्रं सनवित्तिभिन्द्र पिबा सोममेना शतक्रतो ।		
पूर्ण आहावो मदिरस्य मध्वो यं विश्व इदंभिहयन्ति देवाः	६	२७४०
वि हि त्वामिन्द्र पुरुधा जनासो हितप्रयसो वृषभ ह्वयन्ते ।		
अस्माकं ते मधुमत्तमानीँमा भुवन्त्सर्वना तेषु हर्य	७	
प्र त इन्द्र पूर्व्याणि प्र नूनं वीर्याँ वोचं प्रथमा कृतानि ।		
सतीनमन्युरश्रथायो आद्रिँ सुवेदनामकृणोर्ब्रह्मणे गाम्	८	
नि षु सीदं गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम् ।		
न क्रते त्वत् क्रियते किं चनारे महामकं मघवाञ्छित्रमर्च	९	
अभिख्या नो मघवन् नार्धमानान् त्सखेँ बोधि वसुपते सखीनाम् ।		
रणं कृधि रणकृत् सत्यशुष्मा ऽभक्ते चिदा भजा राये अस्मान्	१०	२७४४

॥ २५१ ॥ ( ऋ० १०।११३।१-१० ) ( २७४५-२७५४ ) वैरूपः शतप्रभेदनः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

तमस्य द्यावापृथिवी सचेतसा विश्वेँभिर्दुँवैरनु शुष्ममावताम् ।		
यदैत कृण्वानो महिमानमिन्द्रियं पीत्वी सोमस्य क्रतुमाँ अवधत	१	२७४५

तमस्य विष्णुर्महिमानमोजसां—ऽशुं दधन्वान् मधुनो वि रंशते ।		
देवेभिरिन्द्रो मघवा स्यावभि—वृत्रं जघन्वां अभवद् वरेण्यः	२	
वृत्रेण यदहिना बिभ्रदायुधा समस्थिथा युधये शंसमाविदे ।		
विश्वे ते अत्रं मरुतः सह त्मना स्वर्धन्नुग्र महिमानमिन्द्रियम्	३	
जज्ञान एव व्यबाधत स्पृधः प्रापश्यद् वीरो अभि पौंस्यं रणम् ।		
अवृश्चदद्विमव सस्यर्दः सृज—दस्तभ्नान्नाकं स्वपस्यया पृथुम्	४	
आदिन्द्रः सत्रा तविधीरपत्यत वरीयो द्यावापृथिवी अबाधत ।		
अवाभरद्भृषितो वज्रंमायसं शेवं मित्राय वरुणाय द्वाशुषे	५	
इन्द्रस्यात्र तविषीभ्यो विरग्निं ऋघायतो अरंहयन्त मन्यवं ।		
वृत्रं यदुग्रो व्यवृश्चदोजसा ऽपो बिभ्रतं तमसा परीवृतम्	६	२७५०
या वीर्याणि प्रथमानि कर्त्वा महित्वेभिर्यतमानौ समीयतुः ।		
ध्वान्तं तमोऽव दध्वसे हत इन्द्रो महा पूर्वहृतावपत्यत	७	
विश्वे देवासो अध वृष्ण्यानि ते स्वर्धयन्त्सोमवत्या वचस्यया ।		
रद्धं वृत्रमहिमिन्द्रस्य हन्मना ऽग्निं जम्भैस्तृप्त्वन्नमावयत्	८	
भूरि दक्षेभिर्वचनेभिर्ऋक्भिः सग्येभिः सग्यानि प्र वीचत ।		
इन्द्रो धुनिं च चुमुरिं च कुम्भय—ऽङ्ग-द्वामनस्या शृणुते वृभीर्तये	९	
त्वं पुरूण्या भरा स्वश्व्या येभिर्मसै निवचनानि शंसन् ।		
सुगेभिर्विश्वा दुरिता तरेम विदो षु ण उर्विया गाधमद्य	१०	२७५४

॥ २५२ ॥ ( ऋ० १०।११६।१-९ )

( २७५५-२७६३ ) स्थारोऽग्नियुत स्थारोऽग्नियुपो वा । त्रिष्टुप् ।

पिबा सोमं महत इन्द्रियाय पिबा वृत्राय हन्तवे शविष्ठ ।		
पिब राये शवसे ह्यमानः पिब मध्वस्तृपदिन्द्रा वृषस्व	१	२७५५
अस्य पिब क्षुमतः प्रस्थितस्ये—न्द्र सोमस्य वरमा सुतस्य ।		
स्वस्तिदा मनसा मादयस्वा—ऽवाचीनो रेवते सौभगाय	२	
ममत्तु त्वा दिव्यः सोम इन्द्र ममत्तु यः सूयते पार्थिवेषु ।		
ममत्तु येन वरिवश्चकथं ममत्तु येन निरिणासि शत्रून्	३	
आ द्विबर्हा अमिनो यात्विन्द्रो वृषा हरिभ्यां परिषिक्तमन्धः ।		
गव्या सुतस्य प्रभृतस्य मध्वः सत्रा खेदामरुशहा वृषस्व	४	

नि तिग्मानि भ्राशयन् भ्राश्या—न्यव स्थिरा तनुहि यातुजूनाम् ।

उग्रार्यं ते सहो बलं ददामि प्रतीत्या शत्रून् विगृहेषु वृश्च ५

व्यधुर्य इन्द्र तनुहि श्रवांस्यो—जः स्थिरेव धन्वन्नोऽभिमातीः ।

अस्मद्गवावृधानः सहोभि—रनिभृष्टस्तन्वं वावृधस्व ६ २७६०

इदं हविर्मघवन् तुभ्यं रातं प्रति सम्राळहृणानो गृभाय ।

तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यं पक्वोऽ—ऽद्वीन्द्र पिब च प्रस्थितस्य ७

अद्वीन्द्रिन्द्र प्रस्थितेमा हवींषि चनो दधिष्व पचतोत सोमम् ।

प्रयस्वन्तः प्रति हर्यामसि त्वा सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ८

प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवचस्यामियामि सिंघाविव प्रेरयं नावमर्कैः ।

अया इव परि चरन्ति देवा ये अस्मभ्यं धनुदा उद्भिदश्च ९ २७६३

॥ २५३ ॥ ( ऋ० १०।१२०।१-२ )

( २७६४-२७७२ ) आथर्वणो बृहद्विः ।

तदिदांस भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनुम्णः ।

सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रू—ननु यं विश्वे मदुन्त्युमाः १

वावृधानः शर्वसा भूर्योजाः शत्रुर्वासाय भियसं दधाति ।

अव्यनच्च व्यनच्च सस्ति सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु २ २७६५

त्वे क्रतुमपि वृश्नन्ति विश्वे द्विर्यदेते त्रिभवन्त्युमाः ।

स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा स—मदः सु मधु मधुनाभि योधीः ३

इति चिद्धि त्वा धना जयन्तं मदमदे अनुमदन्ति विप्राः ।

ओर्जीयो धृष्णो स्थिरमा तनुष्व मा त्वा दभन् यातुधाना दुरेवाः ४

त्वया वयं शाशद्गहे रणेपु प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि ।

चोदयामि त आयुधा वचोभिः सं ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि ५

स्तुषेय्यं पुरुवर्षसमृभ्व—मिनतममाप्त्यमाप्त्यानाम् ।

आ दर्षते शर्वसा सप्त दानून् प्र साक्षते प्रतिमानानि भूरि ६

नि तद्दधिषेऽवरं परं च यस्मिन्नाविथावसा दुरोणे ।

आ मातरां स्थापयसे जिगत्सु अत इनोषि कर्वरा पुरूणि ७ २७७०

इमा ब्रह्म बृहद्विवो विवक्ती—न्द्राय शूषमग्रियः स्वर्षाः ।

महो गोत्रस्य क्षयति स्वराजो दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ८

एवा महान् बृहर्द्विवो अथर्वा ऽवोचत् स्वां तन्व ऽमिन्द्रमिव ।  
स्वसारो मातरिभ्वरीररिप्रा हिन्वन्ति च शर्वसा वर्धयन्ति च १ २७७२

॥ २५४ ॥ (ऋ० १०।१३।१।२-३,६-७) (२७७३-२७७७) सुकीर्तिः काशीवन ।

अप प्राच इन्द्र विश्वाँ अमित्रा नपापाचो अभिभूते नुदस्व ।  
अपोदीचो अप शूराधराच उरौ यथा तव शर्मन् मदेम १  
कुविदुङ्ग यवमन्तो यवं चिद् यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूर्य ।  
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमोवृक्तिं न जग्मुः २  
नहि स्थूर्युतुथा यातमस्ति नोत श्रवो विविदे संगमेषु ।  
गृष्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायंतो वृषणं वाजयन्तः ३ २७७५  
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवाँभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः ।  
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम ६  
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्या ऽपि भद्रे सौमनसे स्याम ।  
स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराच्चिद् द्वेषः सनुतयुयोतु ७ २७७७

॥ २५५ ॥ ( १०।१३।१।२-७ )

( २७७८-२७८४ ) सुदाः पैजवनः । शकरी, ४-६ महापङ्क्ति, ७ त्रिण्डुप् ।

प्रो ष्वस्मै पुरोरथ मिन्द्राय शूषमर्चत ।  
अभीके चिदु लोककृत् संगे समत्सु वृत्रहा ऽस्माकं बोधि चोद्विता  
नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु १  
त्वं सिंधूरवासृजो ऽधराचो अहन्नर्हिम् ।  
अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यासि वार्यं तं त्वा परि ष्वजामहे  
नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु २  
वि षु विश्वा अरातयो ऽर्यो नशंत नो धियः ।  
अस्तासि शत्रवे वधं यो न इन्द्र जिघांसति या ते रातिकृदिर्वसु  
नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ३ २७८०  
यो न इन्द्राभितो जनो वृकायुरादिदेशति ।  
अधस्पदं तमीं कृधि विबाधो असि सासहि नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ४  
यो न इन्द्रामिदासति सनाभिर्यश्च निष्य्यः ।  
अव तस्य बलं तिर महीव द्यौरध त्मना नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ५

वयामिन्द्र त्वायवः सखित्वमा रभामहे ।

ऋतस्य नः पथा नया ऽति विश्वानि दुरिता नभंतामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ६

अस्मभ्यं सु त्वमिन्द्र तां शिक्ष या दोहते प्रति वरं जरित्रे ।

अच्छिद्रोधी पीपयद् यथा नः सहस्रधारा पर्यसा मही गौः

७ २७८४

॥ २५६ ॥ (ऋ० १०।१३४।१-७)

( २७८५-२७९१ ) १-६ (पूर्वार्धस्य) मान्धाता यौवनाश्वः, ६ (उत्तरार्धस्य)-७ गोधा ऋषिका ।

महापङ्क्ति, ७ पंक्तिः ।

उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषा इव ।

महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनां देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् १ २७८५

अव स्म दुर्हणायतो मर्तस्य तनुहि स्थिरम् ।

अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्मां आदिदेशति देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् २

अव त्या बृहतीरिषो विश्वश्चन्द्रा अमित्रहन् ।

शचीभिः शक्र धनुहीन्द्र विश्वाभिरुतिभिर्देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ३

अव यत् त्वं शतक्रतविन्द्र विश्वानि धनुषे ।

रायं न सुन्वते सचा सहस्रिणीभिरुतिभिर्देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ४

अव स्वदा इवाभितो विष्वक् पतन्तु द्विद्यवः ।

दूर्वाया इव तंतवो व्यस्मदेतु दुर्मतिर्देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ५

दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा शक्तिं विभर्षि मंतुमः ।

पूर्वेण मघवन् पदा ऽजो वयां यथा यमो देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ६ २७९०

नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मंत्रश्रुत्यं चरामसि ।

पक्षेभिरपिकक्षेभिरत्राभि सं रभामहे

७ २७९१

॥ २५७ ॥ (ऋ० १०।१३८।१-६) (२७९२-२७९७) अङ्ग औरवः । जगती ।

तव त्य ईन्द्र मुख्येषु वह्नय ऋतं मन्वाना व्यदर्किरुर्वलम् ।

यत्रा दशस्यन्नुषसो रिणन्नपः कुत्साय मन्मन्नह्यश्च दुंसयः १

अवासृजः प्रस्वः श्वश्रयो गिरीनुदाज उस्ना अपिबो मधु प्रियम् ।

अवर्धयो वनिनो अस्य दंससा शुशोच सूर्यं ऋतजातया गिरा २

वि सूर्यो मध्ये अमुचद् रथं द्विवो विद् वासाय प्रतिमानमार्यः ।

ह्रव्हानि पिप्रोरसुरस्य मायिन इन्द्रो व्यास्यच्चकुवाँ ऋजिश्वना ३

अनाधृष्टानि धृषितो व्यास्य—त्रिधीरदेवाँ अमृणदुयास्यः ।		
मासेव सूर्यो वसु पुर्यमा ददे गृणानः शन्नूरशृणाद्विरुक्मता	४	२७९५
अयुद्धसेनो विभ्वा विभिंदुता दाशद् वृत्रहा तुज्यानि तेजते ।		
इंद्रस्य वज्रादविभेदभिश्चथः प्राक्रामच्छुन्धूरजहादुषा अनः	५	
एता त्या ते श्रुत्यानि केवला यदेक एकमकृणोरयजम् ।		
मासां विधानमदधा अधि द्यवि त्वया विभिन्नं भरति प्रधि पिता	६	२७९७

॥ २५८ ॥ (ऋ० १०।१४४।१-६)

( २७९८-२८०३ ) तार्क्ष्यः सुपर्णः, यामायन ऊर्ध्वकृशना वा ।

गायत्री, २ बृहती, ५ सतोबृहती, ६ विष्टारपङ्क्तिः ।

अयं हि ते अमर्त्य इंदुरत्यो न पत्यते । दक्षो विश्वार्युर्वधसे	१	
अयमस्मासु काव्य ऋभुर्वज्रो दास्वते ।		
अयं बिभर्त्यूर्ध्वकृशनं मदं—मृभुर्न कृत्वयं मदम्	२	
घृषुः श्येनाय कृत्वन् आसु स्वासु वंसंगः । अव दीधेदहीशुर्वः	३	२८००
यं सुपर्णः परावर्तः श्येनस्य पुत्र आभरत् । शतचक्रं योऽह्यो वर्तनिः	४	
यं ते श्येनश्चारुमवृकं पदाभर—दरुणं मानमन्धसः ।		
एना वयो वि तार्यार्युर्जावस एना जागार बंधुता	५	
एवा तदिन्द्र इंदुना देवेषु चिद्धारयाते महि त्यजः ।		
क्रत्वा वयो वि तार्यार्युः सुक्रतो क्रत्वायमस्मदा सुतः	६	२८०४

॥ २५९ ॥ (ऋ० १०।१४७।१-५)

( २८०४-२८०८ ) सुवेदाः शैरीषिः । जगती, ५ त्रिष्टुप् ।

श्रत् ते दधामि प्रथमार्य मन्यवे ऽहन्यद् वृत्रं नर्यं विवेरपः ।		
उभे यत त्वा भवतो रोदसी अनु रेजते शुष्मात् पृथिवी चिदद्विवः	१	
त्वं मायाभिरनवद्य मायिनं श्रवस्यता मनसा वृत्रमर्दयः ।		
त्वामिन्नरो वृणते गर्विष्टिषु त्वां विश्वासु हव्यास्विष्टिषु	२	२८०५
ऐषु चाकन्धि पुरुहूत सूरिषु वृधासो ये मघवन्नानशुमंघम् ।		
अर्चन्ति तोके तनये परिष्टिषु मेधसाता वाजिनमह्ये धनं	३	
स इन्द्र रायः सुभृतस्य चाकन—न्मदुं यो अस्य रंह्यं चिक्रेतति ।		
त्वार्धो मघवन् वृश्वध्वरो मक्षू स वाजं भरते धना नृभिः	४	
त्वं शर्धीय महिना गृणान उरु कृधि मघवच्छग्धि रायः ।		
त्वं नो मित्रो वरुणो न मायी पित्वो न दस्म दयसे विभक्ता	५	२८०८

॥ २६० ॥ ( ऋ० १०।१४।१-५ ) ( २८०९-२८१३ ) पृथुर्वैन्यः । त्रिष्टुप् ।

सुप्वाणासं इंद्रं स्तुमसिं त्वा ससवांसश्च तुविनृम्णं वाजम् । आ नो भर सुवितं यस्य चाकन् त्मना तनां सनुयाम त्वोताः	१	
ऋष्वस्त्वमिन्द्रं शूरं जातो दासीर्विशः सूर्येण सह्याः । गुहा हितं गुह्यं गूळहमप्सु बिभ्रुमसिं प्रस्रवणे न सोमम्	२	२८१०
अर्यो वा गिरो अर्भ्यर्चं विद्रा नृषीणां विप्रः सुमतिं चकानः । ते स्याम ये रणयन्त सोमैरेनोत तुभ्यं रथोळ्ह भक्षैः	३	
इमा ब्रह्मेन्द्रं तुभ्यं शंसि दा नृभ्यो नृणां शूरं शवः । तेभिर्भव सक्रतुर्येषु चाकञ्चुत त्रायस्व गृणत उत स्तीन्	४	
श्रुधी हवामिन्द्रं शूरं पृथ्या उत स्तवसे वैन्यस्याकैः । आ यस्ते योनिं घृतवन्तमस्वा रूमिर्न निम्रैर्द्रवयन्त वक्ताः	५	२८१३

॥ २६१ ॥ ( ऋ० १०।१५।१-५ ) ( २८१४-२८१८ ) शासो भारद्वाजः । अनुष्टुप् ।

शास इत्था महौ अस्य मित्रखादो अद्भुतः । न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदा चन	१	
स्वस्तिदा विशस्पतिं वृत्रहा विमृधो वशी । वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अर्भ्यंकरः	२	२८१५
वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज । वि मन्युमिन्द्रं वृत्रहञ्जमित्रस्याभिदासंतः	३	
वि न इन्द्रं मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः । यो अस्मां अभिदासत्यधरं गमया तमः	४	
अपेन्द्रं द्विषतो मनो ऽप जिज्यासतो वधम् । वि मन्योः शर्म यच्छ वरीयो यवया वधम्	५	२८१८

॥ २६२ ॥ ( ऋ० १०।१५।३।१-५ ) ( २८१९-२८२३ ) देवजामय इन्द्रमातरः । गायत्री ।

ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते । भेजानासः सुवीर्यम्	१	
त्वमिन्द्रं नलादाधि सहसो जात ओजसः । त्वं वृषन् वृषेदसि	२	२८२०
त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्यन्तरिक्षमातरिः । उद् द्यामस्तभ्ना ओजसा	३	
त्वमिन्द्रं सजोषसमर्कं बिभर्षि बाहोः । वज्रं शिशान ओजसा	४	
त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा जातान्योजसा । स विश्वा भुव आभवः	५	२८२३

॥ २६३ ॥ (१०।१६०।१-५) (२८२४-२८२८) पूरणो वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

तीव्रस्याभिर्वयसो अस्य पाहि सर्वरथा वि हरीं इह मुञ्च ।		
इन्द्र मा त्वा यजमानासो अन्ये नि रीरमन् तुभ्यमिमे सुतासः	१	
तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु सोत्वासस्त्वां गिरः श्वाभ्या आ ह्वयन्ति ।		
इन्द्रेदमद्य सर्वनं जुषाणो विश्वस्य विद्रां इह पाहि सोमम्	२	१८२५
य उंशता मनसा सोममस्मै सर्वहृदा देवकामः सुनोति ।		
न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति प्रशस्तमिच्चारुमस्मै कृणोति	३	
अनुस्पष्टो भवत्येषो अस्य यो अस्मै रेवान् न सुनोति सोमम् ।		
निररन्तौ मघवा तं दधाति ब्रह्मद्विषो हन्त्यनानुदिष्टः	४	
अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो हवामहे त्वोर्पगन्तवा उ ।		
आभूर्षन्तस्ते सुमतौ नवायां वयमिन्द्र त्वा शुनं हुवेम	५	२८२८

॥ २६४ ॥ (ऋ० १०।१६७।१-२, ४) (२८२९-२८३१) विश्वामित्र-जमदग्नी । जगती ।

तुभ्येदमिन्द्र परि पिच्यते मधु त्वं सुतस्य कलशस्य राजसि ।		
त्वं रयिं पुरुवीरामु नस्कृधि त्वं तर्पः परितप्याजयः स्वः	१	
स्वर्जितं महि मन्द्वानमन्धसो हवामहे परि शक्रं सुतो उर्प ।		
इमं नो यज्ञमिह बोध्या गहि स्पृधो जयन्तं मघवानमीमहे	२	२८३०
प्रसूतो भक्षमकरं चरावपि स्तोमं चेमं प्रथमः सूरिरुन्मृजे ।		
सुते सातेन यद्यागमं वां प्रति विश्वामित्रजमदग्नी दधे	४	२८३१

॥ २६५ ॥ (ऋ० १०।१७१।१-४) (२८३२-२८३५) इटो भार्गवः । गायत्री ।

त्वं त्यमिततो रथमिन्द्र प्रावः सुतावतः । अशृणोः सोमिनो हवम्	१	
त्वं मखस्य दोर्धतः शिरोऽव त्वचो भरः । अगच्छः सोमिनो गृहम्	२	
त्वं त्यमिद्र मर्त्यमास्त्रबुधाय वेन्यम् । मुहुः श्रधा मनस्यवे	३	
त्वं त्यमिद्र सूर्यं पश्चा संतं पुरस्कृधि । देवानां चित् तिरो वशम्	४	२८३५

॥ २६६ ॥ (ऋ० १०।१७९।१-३)

(२८३६-२८३८) क्रमेण शिबिरौशीनरः, काशिराजः प्रतर्दनः, रौहिदश्वो वसुमनाः । त्रिष्टुप्, १ अनुष्टुप् ।

उत् तिष्ठताव पश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम् ।		
यदि भ्रातो जुहोतन यद्यभ्रातो ममत्तन	१	
भ्रातं हविरो ध्विद्र प्र याहि जगाम सूरौ अध्वनो विमध्यम् ।		
परि त्वासते निधिभिः सर्वायः कुलपा न ब्राजपतिं चरंतम्	२	



श्रातं मन्य ऊर्धनि श्रातमग्नौ सुश्रातं मन्ये तहतं नवीयः ।  
माध्यंदिनस्य सर्वानस्य दुग्धः पिबेन्द्र वज्रिन् पुरुकृज्जुषाणः ३ २८३८

॥ २६७ ॥ ( ऋ० १०।१८०।१-३ ) ( २८३९-२८४१ ) जय ऐन्द्रः । त्रिष्टुप् ।

प्र संसाहिषे पुरुहूत शत्रूञ्ज्येष्ठस्ते शुष्मं इह रातिरस्तु ।  
इन्द्रा भर दक्षिणेना वसूनि पतिः सिन्धूनामसि रेवतीनाम् १  
मृगो न भीमः कुचरो गिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः ।  
सूकं संशायं पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताळिह वि मृधो नुदस्व २ २८४०  
इन्द्रं क्षत्रमभि वाममोजो ऽजायथा वृषभ चर्षणीनाम् ।  
अपानुदो जनममित्रयन्तं—मुरुं देवेभ्यो अकृणोरु लोकम् ३ २८४१

॥ २६८ ॥ ( ऋ० १०।४७।१-८ ) ( २८४२-२८४९ ) सप्तगुगंगिरसः । [ वैकुण्ठ इन्द्रः ] ।

जग्भ्मा ते दक्षिणमिद्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम् ।  
विद्महि त्वा गोपतिं शूर गोना—मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः १  
स्वायुधं स्वर्वसं सुनीथं चतुःसमुद्रं धरुणं रयीणाम् ।  
चकृत्यं शंस्यं भूरिवार—मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः २  
सुब्रह्माणं देववन्तं बृहन्तं—मुरुं गभीरं पृथुबुध्नमिन्द्र ।  
श्रुतकृषिमुग्रमभिमातिषाह—मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ३  
सनद्राजं विप्रवीरं तरुत्रं धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।  
दृस्युहनं पूर्भिदमिन्द्र सत्य—मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ४ २८४५  
अश्वान्तं रथिनं वीरवन्तं सहस्रिणं शतिनं वार्जमिन्द्र ।  
भद्रव्रातं विप्रवीरं स्वर्षा—मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ५  
प्र सप्तगुमृतधीतिं सुमेधां बृहस्पतिं मतिरच्छा जिगाति ।  
य आङ्गिरसो नमसोपसद्यो ऽस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ६  
हृक्विस्पृशो मनसा वच्यमाना अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ७  
यत् त्वा यामिं दृष्टि तन्न इन्द्र बृहन्तं क्षयमसमं जनानाम् ।  
अभि तद् द्यावापृथिवी गृणीता—मस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ८ २८४९

॥ २६९ ॥ ( ऋ० १०।११९।१-१३ )

( २८५०-२८६२ ) ऐन्द्रो लवः । [ आत्मा ( इन्द्रः ) ] । गायत्री ।

इति वा इति मे मनो गामश्वं सनुयामिति । कुवित सोमस्यापामिति १ २८५०

प्र वाता इव दोर्धत	उन्मा पीता अयंसत	। कुवित् सोमस्यापामिति	२
उन्मा पीता अयंसत	रथमश्वा इवाशवः	। कुवित् सोमस्यापामिति	३
उर्ष मा मतिरस्थित	वाश्वा पुत्रमिव प्रियम्	। कुवित् सोमस्यापामिति	४
अहं तष्टेव वन्धुरं	पर्यचामि हृदा मतिम्	। कुवित् सोमस्यापामिति	५
नहि मे अक्षिपच्छना	ऽच्छान्तसुः पञ्च कूट्यः	। कुवित् सोमस्यापामिति	६ २८५५
नहि मे रोदसी उभे	अन्यं पक्षं चन प्रति	। कुवित् सोमस्यापामिति	७
अभि द्यां महिना भुव	मभीर्दमां पृथिवीं महीम्	। कुवित् सोमस्यापामिति	८
हन्ताहं पृथिवीमिमां	नि दधानीह वेह वा	। कुवित् सोमस्यापामिति	९
ओषमित् पृथिवीमहं	जङ्घनानीह वेह वा	। कुवित् सोमस्यापामिति	१०
द्विवि मे अन्यः पक्षोऽ	ऽधो अन्यमचीकूपम्	। कुवित् सोमस्यापामिति	११ २८६०
अहमस्मि महामहो	ऽभिनभ्यमुदीषितः	। कुवित् सोमस्यापामिति	१२
गृहो याम्यरंकृतो	द्वेभ्यो हव्यवाहनः	। कुवित् सोमस्यापामिति	१३ २८६२

॥ २७० ॥ ( अथर्व० २।५।१-४ )

( २८६३-२८६६ ) भृगुराथर्वणः । १ उपरिष्ठाच्चिद्रवृहती, २ उपरिष्ठाद् विराड्वृहती,  
३ विराट्पथ्या वृहती, ४ जगती पुरोविराट् ।

इन्द्रं जुषस्व प्र वहा	याहि शूर हरिभ्याम् ।	
पिबा सुतस्य मतेरिह	मधोश्चकानश्चारुर्मदाय	१
इन्द्रं जठरं नव्यो न	पूणस्व मधोर्द्विवो न ।	
अस्य सुतस्य स्वर्णोप	त्वा मदाः सुवाचो अगुः	२
इन्द्रस्तुराषाणिमत्रो	वृत्रं यो जघान यतीर्न ।	
बिभेद वलं भृगुर्न	संसहे शत्रून्मदे सोमस्य	३ २८६५
आ त्वा विशन्तु सुतासं	इन्द्रं पूणस्व कुक्षी विद्धि शक्र धियेह्या नः ।	
श्रुधी हवं गिरो मे	जुषस्वेन्द्रं स्वयुग्भिर्मत्स्वेह महे रणाय	४ + २८६६

॥ २७१ ॥ ( अथर्व० ४।२४।१-७ )

( २८६७-२८७३ ) मृगारः । त्रिष्टुप्, १ शाकरीगर्भा पुरःशकरी ।

इन्द्रस्य मन्महे शश्वदिदस्य	मन्महे वृत्रघ्न स्तोमा उर्ष मेम आगुः ।	
यो व्राशुषः सुकृतो हवमेति	स नो मुञ्चत्वंहसः	१
य उग्रीणामुग्रबाहुर्ययु	र्यो दानवानां बलमारुरोज ।	
येन जिताः सिंधवो येन	गावः स नो मुञ्चत्वंहसः	२

यश्चर्षणिप्रो वृषभः स्वर्विद् यस्मै ग्रावाणः प्रवदन्ति नृम्णम् ।	
यस्याध्वरः सप्तहोता मदिष्ठः स नो मुञ्चत्वंहसः	३
यस्य वशास ऋषभास उक्षणो यस्मै मीयन्ते स्वरवः स्वर्विदे ।	
यस्मै शुक्रः पवते ब्रह्मशुम्भितः स नो मुञ्चत्वंहसः	४ १८७०
यस्य जुष्टिं सोमिनः कामयन्ते यं हवन्त इषुमन्तं गविष्ठौ ।	
यस्मिन्नर्कः शिश्रिये यस्मिन्नोजः स नो मुञ्चत्वंहसः	५
यः प्रथमः कर्मकृत्याय जज्ञे यस्य वीर्यं प्रथमस्यानुबुद्धम् ।	
येनोद्यतो वज्रोऽभ्यायताहिं स नो मुञ्चत्वंहसः	६
यः संग्रामान्नयति सं युधे वशी यः पुष्टानि संसृजति द्वयानि ।	
स्तौमीन्द्रं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः	७ १८७३

॥ २७२ ॥ (अथर्व० ५।२३।१-१३) (२८७४-२८८६) कण्व. । अनुष्टुप्, १३ विराट् ।

ओते मे द्यावापृथिवी ओता देवी सरस्वती । ओतौ म इंद्रश्चाग्निश्च क्रिमिं जम्भयतामिति १  
 अस्पेंद्रं कुमारस्य क्रिमीन्धनपते जहि । हता विश्वा अरांतय उग्रेण वचसा मम २ १८७५  
 यो अक्ष्यौ परिसर्पति यो नासे परिसर्पति । वृतां यो मध्यं गच्छति तं क्रिमिं जम्भयामसि ३  
 सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ कृष्णौ द्वौ रोहितौ द्वौ । बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्च गृध्रः कोकश्च ते हताः ४  
 ये क्रिमयः शितिकक्षा ये कृष्णाः शितिबाहवः । ये के च विश्वरूपास्तान्क्रिमीन्जम्भयामसि ५  
 उत्पुरस्तात्सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा । दृष्टांश्च घ्नन्नदृष्टांश्च सर्वांश्च प्रमृणन्क्रिमीन् + ६  
 येवाषासः कर्कषास एजत्काः शिपवित्नुकाः । दृष्टश्च हन्यतां क्रिमिं—रुतादृष्टश्च हन्यताम् ७ २८८०  
 हतो येवाषः क्रिमीणां हतो नदनिमोत । सर्वांनि मण्मषाकरं हृषवा खल्वो इव ८  
 त्रिशीर्षाणं त्रिकुदुं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम् । शृणाम्यस्य पृष्ठीरपि वृश्चामि यच्छिरः ९  
 अत्रिवद्रुः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्जमदग्निवत् । अगस्त्यस्य ब्रह्मणा सं पिनण्म्यहं क्रिमीन् १०  
 हतो राजा क्रिमीणा—मुतैषां स्थपतिर्हतः । हतो हतमाता क्रिमिं—हतभ्राता हतस्वसा ११  
 हतासो अस्य वेशसो हतासः परिवेशसः । अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हताः १२ २८८५  
 सर्वेषां च क्रिमीणां सर्वासां च क्रिमीणाम् । भिनन्नचश्मना शिरो दहाम्यग्निना मुखम् १३ २८८६

॥ २७३ ॥ (अथर्व० ६।३३।१-३) (२८८७-२८८९) जाटिकायनः । गायत्री, २ अनुष्टुप् ।

यस्येदमा रजो युज—स्तुजे जना वनं स्वः । इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत १  
 नाधृष आ दधृषते धृषाणो धृषितः शवः । पुरा यथा व्यथिः श्रव इन्द्रस्य नाधृषे शवः २  
 स नो ददातु तां रयि—मुरुं पिशङ्गसंहशम् । इन्द्रः पतिस्तुविष्टमो जनेष्वा ३ २८८९

॥ २७४ ॥ ( अथर्व० ६।६६।१-३ ) ( २८९०-२८९५ ) अथर्वा । अनुष्टुप्, १ त्रिष्टुप् ।

निर्हेस्तः शत्रुरभिदासन्नस्तु ये सेनाभिर्युधमायन्त्यस्मान् ।

समर्पयेन्द्र महता वधेन द्रात्वेषामघहारो विविन्द्रः १ २८९०

आतन्वाना आयच्छन्तो ऽस्यन्तो ये च धावथ ।

निर्हेस्ताः शत्रवः स्थनेन्द्रो वोऽद्य पराशरीत् २

निर्हेस्ताः सन्तु शत्रवो ऽङ्गैर्पां म्लापयामसि ।

अथेषामिन्द्र वेदांसि शतशो वि भंजामहे ३

॥ २७५ ॥ ( अथर्व० ६।६७।१-३ ) अनुष्टुप् ।

परि वर्तमानि सर्वत इन्द्रः पृषा च सम्रतुः । मुह्यन्त्वद्यामूः सेना अमित्राणां परस्तराम १

मूढा अमित्राश्रयताशीर्षाण इवाहयः । तेषां वो अग्निमूढानामिन्द्रो हन्तु वरं यम २

एषु नह्य वृषाजिनं हरिणस्या भियं कृधि । पराङ्गमित्र एषं त्वर्वाची गौरुपेतु ३ २८९५

॥ २७६ ॥ ( अथर्व० ६।७५।१-३ ) ( २८९६-२८९८ ) कवन्ध । अनुष्टुप्, ३ पद्यपदा जगती ।

निरमुं नुक् ओकंसः सपतो यः पृतन्यति । नैर्वाध्येन हविषेन्द्र एनं पराशरीत् १

परमां तं परावतमिन्द्रो नुदतु वृत्रहा । यतो न पुनरायति शश्वतीभ्यः समाभ्यः २

एतु तिस्रः परावत एतु पञ्च जना अति ।

एतु तिस्रोऽति रोचना यतो न पुनरायति शश्वतीभ्यः समाभ्या यावत्सूर्या असद्विदि ३ २८९८

॥ २७७ ॥ ( अथर्व० ६।८२।१-३ ) ( २८९९-२९०१ ) मग । अनुष्टुप् ।

आगच्छत आगतस्य नाम गृह्णाम्यायतः । इन्द्रस्य वृत्रघ्नो वन्वे वासवस्य शतक्रतोः १

येन सूर्या सावित्रीमश्विनोहतुः पथा । तेन मामंबवीद्गो जायामा वहतादिति २ २९००

यस्तेऽङ्कुशो वसुदानो बृहन्निन्द्र हिरण्ययः । तेनां जनीयते जायां मद्यं धेहि शचीपते ३ २९०१

॥ २७८ ॥ ( अथर्व० ६।९८।१-३ ) ( २९०२-२९०४ ) अथर्वा । त्रिष्टुप्, २ बृहतीगर्भास्तामपत्कि ।

इन्द्रो जयाति न परां जयाता अधिराजो राजसु राजयाते ।

चक्रत्य ईड्यो वन्द्यश्चोपसद्यो नमस्यो भवेह १

त्वमिन्द्राधिराजः श्रवस्युस्त्वं भूरभिभूतिर्जनानाम् ।

त्वं दैवीर्विश इमा वि राजा ऽऽयुष्मत्क्षत्रमजरं ते अस्तु २

प्राच्या विशस्त्वमिन्द्रासि राजो तोदीच्या विशो वृत्रहन्च्छत्रुहोसि ।

यत्र यन्ति स्रोत्यास्तज्जितं ते दक्षिणतो वृषभ एषि हव्यः ३ २९०४

॥ २७९ ॥ ( अथर्व० ७।३१।१ ) ( २९०५ ) भृग्वङ्गिराः । भुरिक त्रिष्टुप् ।

इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिर्नो अद्य यावच्छ्रेष्ठाभिर्मघवन्दूर जिन्व ।

यो नो द्वेष्यधरः सस्पदीष्ट यमुं द्विष्मस्तमुं प्राणो जहातु १ २९०५

॥ २८० ॥ (अथर्व० ७।५०।१-३,५,८-९)

(२९०६ २९११) अङ्गिराः (कितववधकामः) । अनुष्टुप्, ३ त्रिष्टुप् ।

यथा वृक्षमशानि—विश्वाहा हन्यप्रति । एवाहमद्य कित्वा—नक्षैर्बध्यासमप्रति १  
तुराणाघतुराणां विशामवर्जुपीणाम् । समैतु विश्वतो भगो अन्तर्हस्तं कृतं मम २  
इदं अग्निं स्यावसुं नमोभि—रिह प्रसक्तो वि चयत्कृतं नः ।

रथैग्वि प्र भेर वाजयन्द्भिः प्रदक्षिणं मरुतां स्तोममृध्याम ३ +  
अजैपं त्वा संन्दिखित—मजैपमुत संरुधम । अविं वृको यथा मथ—देवा मथनामि ते कृतम् ५  
कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः ।

गोजिन्द्रूयासमश्वजि—द्धनंजया हिरण्यजित ८ २९१०  
अश्राः फलवतीं युवं वृत्त गां क्षीरिणीमिव ।  
सं मा कृतस्य धारया धनुः स्रात्रेव नद्यत ९ २९११

॥ २८१ ॥ (अथर्व० ७।५।१) (२९१२) भृगुः । विराद् पराङ्णिक ।

ये ते पन्थानोऽव दिवो येभिर्विश्वमैरयः । तेभिः सुमनया धेहि नो वसो १ २९१२

॥ २८२ ॥ (अथर्व० ७।९३।१) (२९१३) भृग्वङ्गिराः । गायत्री ।

इन्द्रेण मन्थुना वय—मभि प्याम प्रतन्यतः । घ्नन्तो वृत्राण्यप्रति १ २९१३

॥ २८३ ॥ (अथर्व० १९।१३।१) (२९१४) अप्रतिरथः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य बाहू स्थविरो वृषाणौ चित्रा इमा वृषभौ परयिष्णु ।  
तौ योक्षे प्रथमो योग आगते याभ्यां जितससुराणां स्वयुर्यत १ × २९१४

॥ २८४ ॥ (अथर्व० १९।१५।२-३) (२९१५-२९१६) अथर्वा । त्रिष्टुप्, ३ पथ्यापङ्क्ति ।

इन्द्रं वयमनूराधं हवामहे ऽनुं गध्यास्म द्विपदा चतुष्पदा ।  
मा नः सेना अररुपीरुपं गु—विपूचीरिन्द्रं द्रुहो वि नाशय २ \* २९१५  
इन्द्रंश्चातोत वृत्रहा परस्फानो वरेण्यः ।

स रक्षिता चरमतः स मध्यतः स पश्वात्स पुरस्तान्नो अस्तु ३ २९१६

॥ २८५ ॥ (अथर्व० २०।२।३) (२९१७) मृत्समदो मेघानिधिर्वा । आर्च्युष्णिक ।

इन्द्रो ब्रह्मा ब्राह्मणात्सुष्टुभः स्वर्कात्तुना सोमं पिबतु ३ २९१७

+ अथर्व० ७।५०।४, ६-७, ऋ० १।१०।२।४, १०।४।२।९-१०, १०।४।३-४।४।१०, दै० [इन्द्रः] ८३०, २५५४-५५, २५६६, २५७७ ।

× अथर्व० १९।१३।२-७, ९-११, ऋ० १०।१०।३।१-३, ५-११, १३, दै० [इन्द्र] २६९२-२७०२ ।

\* अथर्व० १९।१५।१, ४; ऋ० ८।६।१।१३, ६।४।७।८; दै० [इन्द्रः] ५६०, २१०६ ।

॥ २८६ ॥ ( वा० य० १।४ )

सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः ।

इन्द्रस्य त्वा भाग२ सोमेनातंनच्चि विष्णो हव्य२ रक्ष

४ २९१८

॥ २८७ ॥ ( वा० य० ३।४९-५० )

पूर्णां दर्वि परां पत सुपूर्णा पुनरापत ।

वस्नेव विक्रीणावहा ऽइपमूर्ज२ शतक्रतो

४९ +

वेहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे ।

निहारं च हरांसि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा

५० २९२०

॥ २८८ ॥ ( वा० य० ५।२८, ३० )

ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजयां पशुभिर्भूयात ।

घृतेन द्यावापृथिवी पूर्यथामिन्द्रस्य छेदिरसि विश्वजनस्य ह्याया

२८ x

इन्द्रस्य सूरसीन्द्रस्य ध्रुवोऽसि । ऐन्द्रमासि वैश्वदेवमासि

३० २९२०

॥ २८९ ॥ ( वा० य० ७।४, १४-१५, २५ )

उपयामगृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ मघवन् पाहि सोमम् । उरुष्य राय ऽ एषो यजस्व ४

अच्छिन्नस्थ ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य दक्षितारः स्याम ।

सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रो ऽ अग्निः १४

स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वास्तस्मा ऽ इन्द्राय सुतमाजुहोत स्वाहा ।

तृम्पन्तु होत्रा मध्वो याः स्विष्टा याः सुप्रीताः सुहुता यत्स्वाहायाहुतीत् १५ २९२१

ध्रुवं ध्रुवेण मनसा वाचा सोममवन्यामि ।

अथा न ऽ इन्द्र इद्विशो ऽ सपत्नाः समनसस्करंत २५ २९२२

॥ २९० ॥ ( वा० य० ८।३२, ३६ )

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नो भरीमभिः ३२ ::

यस्मान्न जातः परो ऽ अन्यो ऽ अस्ति य ऽ आविवेश भुवनानि विश्वा ।

प्रजापतिः प्रजयां स२रराण२स्त्रीणि ज्योती२पि सचते स पोडुशी ३६ २९२८

+ वा० य० ३।५१-५२; ऋ० १।८२।२-३; अथर्व० ३।७।१०; १८।४।६१; दे० सं० [ इन्द्रः ] ९२६-२७ ।

x वा० य० ५।२९; ऋ० १।१०।१२; दे० सं० [ इन्द्रः ] ६९ ।

\* वा० य० ७।२५; ऋ० १०।१७।३।६; अथर्व० ७।९।४।१ ।

:: वा० य० ८।३३-३५; ऋ० १।१०।३; १।८।४।२-३; साम० १०२९-३०, १३४६; दे० सं० [ इन्द्रः ] ६०, ९३८-३९ ।

॥ २९१ ॥ ( वा० य० १२।६६ )

निवेशनः संगमनो वसूनां विश्वा रूपाभिचण्टे शचीभिः ।

देव ऽ इव सविता सत्यधर्मो न तस्थौ समरे पथीनाम्

६६ [ ] २९२९

॥ २९२ ॥ ( वा० य० १३।१४ )

अग्निर्मूर्धा द्विवः ककुत् पतिः पृथिव्या ऽ अयम् । अपाः रताः सि जिन्वति १४ + २९३०

॥ २९३ ॥ ( वा० १७।२३, ३६, ४४-४५, ५१, ६३ )

वाचस्पतिं विश्वकर्माणमृतये मनोजुवं वाजे ऽ अद्या हुवेम ।

स नो विश्वानि हव्नानि जोषद् विश्वशम्भूरवसे साधुर्कर्मा

२३ ×

बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्रोऽपवाधमानः ।

प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्न्मार्कमेधयिता रथानाम्

३६ \*

अमीषां चित्तं प्रतिन्द्रोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्ये परेहि ।

अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोके रन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्

४४

अवसृष्ट्वा परापत शरव्ये ब्रह्मस शिते । गच्छामित्रान्प्रपद्यस्व मामीषां कञ्चनोच्छिषः ४५

इन्द्रे मं प्रतशं नय सजातानामसद्वशी । समेनं वर्चसा सृज देवानां भागदाऽअसत ५१ २९३५

वाजस्य मा प्रसव उद्गाभेणोदग्रभीत । अधा सपत्नानिन्द्रो मं निग्राभेणार्धरोऽअकः ६३ २९३६

॥ २९४ ॥ ( वा० य० १९।३२, ८०-९५ )

सुरावन्तं बार्हिषदः सुवीरं यज्ञः हिन्वन्ति महिषा नमोभिः ।

दधानाः सोमं द्विवि देवतासु मदेमेन्द्रं यजमानाः स्वर्काः

३२ ::

ससिनं तन्त्रं मनसा मनीषिणं ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति ।

अश्विनां यज्ञः सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिपज्यन्

८०

तदस्य रूपममृतः शचीभिस्तिस्रो दधुर्देवताः सःरराणाः ।

लोमानि शर्षपर्वहुधा न तोक्मभिस्त्वगस्य माः समभवन्न लाजाः

८१

तदश्विनां भिपजा रुद्रवर्तनी सरस्वती वयति पशो ऽ अन्तरम् ।

अस्थि मज्जानं मासरेः कारो तरेण दधतो गवां त्वाचि

८२

२९४०

[ ] क्र० १०।१३९।३ अयर्व० १०।८।४२

+ क्र० ८४४।१६, साम० २७, १५३०, दे० सं० [अग्निः] १३५८ ।

× क्र० १०।८।१।७

. वा० य० १७।३३-४५, ५१, ६३; क्र० १०।१०।३।१-१२, ६।७५।१६, साम० १८४९-१८६१, १८६३; अयर्व० ३।२।५,

१९।६।८, ६।५।२, ६।१७।३, ८।५।२, १०।१३।२-११, दे० सं० [इन्द्रः] २६०, २-२७०१ ।

. वा० य० १९।७।१; क्र० ८।१४।१३; साम० २११, अयर्व० २०।२९।३; दे० सं० [इन्द्रः] ३६६ ।

सरस्वती मनसा पेशलं वसु नासत्याभ्यां वयति दर्शतं वपुः ।	
रसं परिस्रुता न रोहितं नग्नहृर्धीरुस्तसरं न वेमं	८३
पर्यसा शुक्रममृतं जनित्रं सुर्या मूत्राज्जनयन्त रेतः ।	
अपामर्तिं दुर्मतिं बाधमाना ऊर्वधं वातं सव्वं तद्वारात्	८४
इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन सत्यं पुरोडाशेन सविता जजान ।	
यकृतं क्लोमानं वरुणो भिषज्यन् मत्स्ने वायव्यैर्न मिनाति पित्तम्	८५
आन्त्राणि स्थालीर्मधु पिन्वमाना गुदाः पात्राणि सुदुघा न धेनुः ।	
श्येनस्य पत्रं न प्लीहा शचीभि—रासन्दी नाभिरुदरं न माता	८६
कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभि—र्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो ऽ अन्तः ।	
प्लाशिव्यक्तः शतधारः ऽ उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः	८७
मुखं सद्स्य शिरः ऽ इत सतेन जिह्वा पवित्रमश्विनासन्त्सरस्वती ।	२९४५
चप्यं न पायुर्भिपगस्य वालो वस्तिर्न शेषो हरसा तरस्वी	८८
अश्विभ्यां चक्षुरमृतं ग्रहाभ्यां छागेन तेजो हविषा शूतेन ।	
पक्ष्माणि गोधूमैः कुवलैरुतानि पेशो न शुक्रमसितं वसाते	८९
अविर्न मेषो नसि वीर्याय प्राणस्य पन्थाः ऽ अमृतो ग्रहाभ्याम् ।	
सरस्वत्युपवाकैर्व्यानं नस्यानि बर्हिर्बदरैर्जजान	९०
इन्द्रस्य रूपमृषभो बलाय कर्णाभ्यां श्रोत्रममृतं ग्रहाभ्याम् ।	
यवा न बर्हिर्भ्रुवि केसराणि कर्कन्धुं जजे मधुं सारघं मुखात्	९१
आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोमं मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्रलोम ।	
केशा न शीर्षन्यशसे श्रियै शिखा सिं—हस्य लोमं त्विषिरिन्द्रियाणि	९२
अङ्गान्यात्मन् भिषजा तदश्विना—त्मानमङ्गैः समधात् सरस्वती ।	२९५०
इन्द्रस्य रूपं शतमानमायुं—श्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः	९३
सरस्वती योन्यां गर्भमन्त—रश्विभ्यां प्रत्नी सुकृतं चिभर्ति ।	
अपां रसेन वरुणो न साम्ने—न्द्रं श्रियै जनयन्नप्सु राजा	९४
तेजः पशूनां हविरिन्द्रियावत् परिस्रुता पर्यसा सारघं मधुं ।	
अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा सरस्वत्या सुतासुताभ्याममृतः सोमः ऽ इन्दुः	९५
	२९५३

॥२९५॥ (वा० य० २०।३१, ७१-७७, ८०, ९०)

अध्वर्यो ऽ अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्रं ऽ आ नय । पुनाहीन्द्राय पातवे ३१ +



सविता वरुणो दधद् यजमानाय द्वाशुषे । आदत्त नमुचेर्वसु सुत्रामा बलमिन्द्रियम् ७१ २९५५  
 वरुणः क्षत्रमिन्द्रियं भगेन सविता श्रियम् । सुत्रामा यज्ञसा बलं दधाना यज्ञमांशत ७२  
 अश्विना गोभिरिन्द्रियं मश्वंभिर्वीर्यं बलम् । हविषेन्द्रं सरस्वती यजमानमवधयन् ७३  
 ता नासत्या सुपेशसा हिरण्यवर्तनी नरा । सरस्वती हविष्मतीन्द्र कर्मसु नोऽवत ७४  
 ता भिषजा सुकर्मणा सा सुदुघा सरस्वती । स वृत्रहा शतक्रतुरिन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ७५  
 युवः सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा । विपिपानाः सरस्वतीन्द्रं कर्मस्वावत ७६ \* २९६०  
 पुत्रमिव पितरावश्विनो भेन्द्रावथुः काव्यैर्दुः सनाभिः ।

यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नाभिष्णक्

७७

अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् । वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ८०

अश्विनां पिबतां मधु सरस्वत्या सजोषसा ।

इन्द्रः सुत्रामा वृत्रहा जुपन्तां सोम्यं मधुं

९० । २९६३

॥ २९६ ॥ ( वा० य० २६।४-५, १० )

इन्द्र गोमन्निहा याहि पिबा सोमं शतक्रतो । विद्यद्भिर्ग्रावभिः सुतम् ४

इन्द्रा याहि वृत्रहन् पिबा सोमं शतक्रतो । गोमन्निर्ग्रावभिः सुतम् ५

२९६५

महाँर ऽ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु । हन्तुं पाप्मानं योऽस्मान् द्वेष्टि १० § २९६६

॥ २९७ ॥ ( वा० य० २९।५७ )

आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमह्नुभिर्वावदीति ।

समश्वपणाश्वरन्ति नो नरो ऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु

५७ : २९६७

॥ २९८ ॥ ( वा० य० ३३।२७, ७८-७९, ९० )

कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं तं ऽ इत्था ।

सं पृच्छसे समराणः शुभान्नैर्वोचेस्तत्रां हरिवो यत्ते ऽ अस्मे

२७ §

ब्रह्माणि मे मतयः शः सुतासः शुष्मं ऽ इयति प्रभृतो मे ऽ अद्रिः ।

आ शासते प्रति हर्षन्त्युक्थेमा हरीं वहतस्ता नो ऽ अच्छ

७८

\* वा० य० २०।७६ ७७, ऋ० १०।१३१।४-५, अथर्व० २०।१२५।४-५ ।

† वा० य० २०।८७-८९, ऋ० १।३।४-६, साम० १।१४६-४८, अथर्व० २०।८४।१-३, वै० सं० [ इन्द्र. ] १-३ ।

§ वा० य० २६।११।२३, ऋ० ८।८।१, ३।३।५।६; साम० २३६, ६८५, अथर्व० २०।९।१, ४९।४, वै० सं० [ इन्द्र. ] ८९४, १३१७ ।

‡ वा० य० २९।५७, ऋ० ६।४७।३१; अथर्व० ६।१२।५।६ ।

§ वा० य० ३३।१८।२९; ऋ० १।९।१; १०।२।१, १६।५।३-४, ९; ३।३।४।३; ३८, ४, ७।२३।४; ६।६।४, ८।४।५।२; ८।७।१२-१३, १०।५।१।१, ७४।४; साम० १।१७, १८०, १३३९, १३५१, १४८०, १६०२; अथर्व० ४।८।३, ७।२३।४, २०।१।२, ७१।७; वै० सं० [ इन्द्र. ] २१८३; १३४८, २६०१, ४४४, ४८, १३०३, ८२८, २६३७; वै० सं० [ अग्नि ] १४३५-३६

अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावोर ऽ अस्ति देवता विदानः ।

न जायमानो नशते न जातो यानि कर्णिया कृणुहि प्रवृद्ध ७९ २९७०

चन्द्रमा ऽ अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।

रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं हरिरेति कर्निकदत् ९० २९७१

॥ २९९ ॥ ( वा० य० ३५।१८ )

परीमे गामनेपत पर्यग्रिमहपत । देवेष्वक्रत श्रवः क ऽ इमोर ऽ आ दधर्षति १८ × २९७२

॥ ३०० ॥ ( वा० य० ३६।८ )

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नो ऽ अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ८ २९७३

॥ ३०१ ॥ ( वा० य० ३८।२६ )

यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितन्मिथे ।

तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयिं गृह्णाम्यक्षितम् २६ \* २९७४

॥ ३०२ ॥ ( साम० १९० )

क इमं नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात् । स नो वसून्या भरात् १९० २९७५

॥ ३०३ ॥ ( साम० १९६ )

सदा व इन्द्रश्चक्रेषदा उपो नु स सपयन् । न देवो वृतः शूर इन्द्रः १९६ २९७६

॥ ३०४ ॥ ( साम० २०९, २१२ )

अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः । अरं शक्र परमाणि २०९ २९७७

इमे त इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वाः । तेषां मत्स्व प्रभूवसो २१२ २९७८

॥ ३०५ ॥ ( साम० २२६, २३१ )

इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः । हरिवान्तसुतानां सखा २२६

एन्द्र पृक्षु कासु चिन्मृष्णं तनूषु धेहि नः । सत्राजिदुग्र पौंस्यम् २३१ २९८०

॥ ३०६ ॥ ( साम० २९४, २९८ )

इम इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः ।

मधोः पपान उप नो गिरः शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः २९४

॥ वा० य० ३३।५९, ६३-६७, ९५-९६; ऋ० ३।३।१६; ४।७।४, ४।३।२।१, ८।८।१।२-३; ९।१।५-६, साम० १८।१, २५।७, ३१।१, १६।३।७-३८, दै० सं० [ इन्द्रः ] १२।६।५, १४।१।७, १६।४।५, २३।८०-८१, २३।८।५-८६, २६।२।३ ।

× वा० य० ३५।१८, ऋ० १०।१।५।५।५; अथर्व० ६।२।८।२ ।

× वा० य० ३६।४-७, ऋ० ४।३।१।१-३, ८।९।३।१।९; साम० १६।२, ६।८।२-८।४, १।५।८।६; अथर्व० २०।१।२।४।१-३,

दै० सं० [ इन्द्रः ] १६।३०-३२, २४।४।८ ।

\* वा० य० ३८।२६, अथर्व० ४।६।२

१ २ ३ १ २ ३ ३ ३ २ ३ १ २ ३ १ २  
यदिन्द्र शसो अत्रतं च्यावया सदसस्परि ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २  
अस्माकमंशुं मघवन् पुरुस्पृहं वसव्ये अधि बह्ये

२९८

२९८१

॥ ३०७ ॥ ( साम० ३२७ )

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २  
मेडिं न त्वा वज्रिणं भृष्टिमन्तं पुरुधस्मानं वृषभं स्थिरप्सुम् ।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २  
करोष्ययस्तरोपीर्दुवस्यु—रिन्द्र द्युक्षं वृत्रहणं गृणीषे

३२७

२९८३

॥ ३०८ ॥ ( साम० ३३६, ३३७ )

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २  
यो नो वनुष्यन्नभिदाति मर्त उगणा वा मन्यमानस्तुरो वा ।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २  
क्षिधी युधा शवसा वा तमिन्द्रा—भी प्याम वृषमणस्त्वोताः

३३६

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २  
यं वृत्रेषु क्षितिय स्पर्धमाना यं युक्तेषु तुरयन्तो हवन्त ।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २  
यं शूरसातो यमपामुपज्म—न्यं विप्रासो वाजयन्तं स इन्द्रः

३३७

२९८५

॥ ३०९ ॥ ( साम० ४३८, १७६८, ४४४-४४६, १११३-१५ )

३ २ ३ २ ३ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २  
एष ब्रह्मा य ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे

४३८

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ २ ३ २  
उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रायं धीमहे त इन्द्र

४४४

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २  
अर्चन्त्यकं मरुतः स्वका आ स्ताभति श्रुतो युवा स इन्द्रः

४४५

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २  
प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गार्थं गायत यं जुजोषते

४४६

२९८९

॥ ३१० ॥ ( साम० ४४९, ४५३, ४५६, १७७० )

२ ३ १ ३ २ ३ १ ३ २ ३ १ २ ३ १ २  
भगो न चित्रो अग्नि—र्महोनां दधाति रत्नम्

४४९

२९९०

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २  
वि सुतयो यथा पथा इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः

४५३

२ ३ १ २ ३ १ २  
इन्द्रो विश्वस्य राजति

४५६

२९९२

॥ ३११ ॥ ( साम० ५८८ )

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २  
यस्येदमा रजोयुज—स्तुजे जने वनं स्वः । इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत्

५८८

२९९३

॥ ३१२ ॥ ( साम० ६२३-६२५ )

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २  
हरी त इन्द्र श्मशू—ण्युतो ते हरितौ हरी ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २  
तं त्वा स्तुवन्ति कवयः पुरुषासो वनर्गवः

६२३

यद्बर्चो हिरण्यस्य यद्वा वर्चो गवामुत ।

सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा संसृजामसि ६२४

सहस्तन्न इन्द्र दन्द्र्योज ईशे ह्यस्य महतो विरग्निन् ।

क्रतुं न नृम्णं स्थविरं च वाजं वृत्रेषु शत्रून्सहना कृधी नः ६२५ २९९६

॥ ३१३ ॥ ( नाम० ९५२-९५४ )

इन्द्र जुषस्व प्र वहा याहि शूर हरिह ।

पिबा सुतस्य मतिर्न मधोश्चकानश्चारुमदाय ९५२ २९९७

इन्द्र जठरं नव्यं न पूणस्व मधोर्दिवो न ।

अस्य सुतस्य स्वाश्नीप त्वा मदाः सुवाचो अस्थुः ९५३

इन्द्रस्तुरापाणिमत्री न जघान वृत्रं यतिर्न ।

बिभेद् वलं भृगुर्न ससाहे शत्रून्मदं सोमस्य ९५४ २९९९

॥ ३१४ ॥ ( साम० १८६९ )

इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ युवानावनाधृष्यौ सुप्रतीकावसह्यौ ।

तौ युञ्जीत प्रथमौ योग आगते याभ्यां जितमसुराणां सहो महत् १८६९ ३०००

॥ ३१५ ॥ ( साम० १८७१ )

अन्धा अमित्रा भवताशीर्षाणोऽहय इव ।

तेषां वो अग्निनुन्नानामिन्द्रो हन्तु वरंवरम् १८७१ ३००१

इन्द्रसहचारी-देवगणः ।

( १ ) इन्द्राग्नी ।

॥ ३१६ ॥ ( ऋ० १।२।१-६ )

( ३००२-३००७ ) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

इहेन्द्राग्नी उप ह्वये तयोरित् स्तोमंमुश्मसि । ता सोमं सोमपातमा १

ता यज्ञेषु प्र शंसतेन्द्राग्नी शुम्भता नरः । ता गायत्रेषु गायत २

ता मित्रस्य प्रशस्तय इन्द्राग्नी ता हवामहे । सोमपा सोमपीतये ३

उग्रा सन्ता हवामह उपेदं सर्वनं सुतम् । इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ४ ३००५

ता महान्ता सदृस्पती इन्द्राग्नी रक्ष उज्जतम् । अप्रजाः सन्त्वत्रिणः ५

तेन सत्येन जागृतमधि प्रचेतुने पदे । इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ६ ३००७

॥ ३१६ ॥ (ऋ० १।१०८।१-१३)

( ३००८-३०२८ ) कुत्स आंगिरसः । त्रिष्टुप् ।

य इन्द्राग्नी चित्रतमो रथो वा मभि विश्वानि भुवनानि चष्टे ।	
तेना यातं सरथं तस्थिवांसांथा सोमस्य पिवतं सुतस्य	१
यावद्विदं भुवनं विश्वमस्त्युरुव्यचा वरिमता गभीरम् ।	
तावा अयं पातवे सोमो अस्त्वरमिन्द्राग्नी मनसे युवभ्याम्	२
चक्राथे हि सध्यं इनाम भद्रं संधीचीना वृत्रहणा उत स्थः ।	
ताविन्द्राग्नी सध्यंश्चा निपद्या वृणः सोमस्य वृणणा वृषेथाम्	३ ३०१०
समिद्धोऽग्निप्वानजाना यतस्युचा बर्हिर्हृ तिस्तिराणा ।	
तीव्रेः सोमैः परिपिक्तेभिर्वा गेन्द्राग्नी सोमनसायं यातम्	४
यानीन्द्राग्नी चक्रथुर्वीर्याणि यानि रूपाण्युत वृण्यानि ।	
या वां प्रत्नानि सग्न्या शिवानि तेभिः सोमस्य पिवतं सुतस्य	५
यदब्रवं प्रथमं वां वृणानोऽयं सोमो असुरैर्नो विहव्यः ।	
तां सत्यां श्रद्धामभ्या हि यातमथा सोमस्य पिवतं सुतस्य	६
यदिन्द्राग्नी मदथः स्वे दुरोणे यद् ब्रह्मणि राजनि वा यजत्रा ।	
अतः परि वृणणावा हि यातमथा सोमस्य पिवतं सुतस्य	७
यदिन्द्राग्नी यदुपु तुर्वशेषु यद् द्रुह्युष्वनुपु पूरुषु स्थः ।	
अतः परि वृणणावा हि यातमथा सोमस्य पिवतं सुतस्य	८ ३०१५
यदिन्द्राग्नी अवमस्यां पृथिव्यां मध्यमस्यां परमस्यामुत स्थः	
अतः परि वृणणावा हि यातमथा सोमस्य पिवतं सुतस्य	९
यदिन्द्राग्नी परमस्यां पृथिव्यां मध्यमस्यामवमस्यामुत स्थः ।	
अतः परि वृणणावा हि यातमथा सोमस्य पिवतं सुतस्य	१०
यदिन्द्राग्नी द्विवि ष्ठो यत् पृथिव्यां यत् पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु ।	
अतः परि वृणणावा हि यातमथा सोमस्य पिवतं सुतस्य	११
यदिन्द्राग्नी उदिता सूर्यस्य मध्ये दिवः स्वधया मादयेथे ।	
अतः परि वृणणावा हि यातमथा सोमस्य पिवतं सुतस्य	१२
एवेन्द्राग्नी पिवांसां सुतस्य विश्वास्मभ्यं सं जयतं धनानि ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता मदितिः सिंधुः पृथिवी उत द्यौः	१३ ३०२०

॥ ३१८ ॥ ( ऋ० १।१०९।१-८ )

वि ह्यख्यं मनसा वस्य इच्छन्निन्द्राग्नी जास उत वा सजातान् ।	
नान्या युवत् प्रमतिरस्ति मह्यं स वां धियं वाजयन्तीमतक्षम्	१
अश्रवं हि भूरिदावत्तरा वां विजामातुरुत वां घा स्यालात् ।	
अथा सोमस्य प्रयती युवभ्यामिन्द्राग्नी स्तोमं जनयामि नव्यम्	२
मा च्छेन्न रश्मोरिति नार्धमानाः पितृणां शक्तीरनुयच्छमानाः ।	
इन्द्राग्निभ्यां कं वृषणो मदन्ति ता ह्यद्रीं धिषणाया उपस्थे	३
युवाभ्यां देवी धिषणा मदायेन्द्राग्नी सोममुशती सुनोति ।	
तावश्विना भद्रहस्ता सुपाणी आ धावतं मधुना पृङ्गमप्सु	४
युवामिन्द्राग्नी वसुनो विभागे तवस्तमा शुश्रव वृत्रहृत्ये ।	
तावासद्यां बर्हिषि यज्ञे अस्मिन् प्र चर्षणी मादयेथां सुतस्य	५
प्र चर्षणिभ्यः पृतनाहवेषु प्र पृथिव्या रिरिचाथे दिवश्च ।	
प्र सिन्धुभ्यः प्र गिरिभ्यो महित्वा प्रेन्द्राग्नी विश्वा भुवनात्यन्या	६
आ भरतं शिक्षतं वज्रबाहू अस्माँ इन्द्राग्नी अवतं शचीभिः ।	
इमे नु ते रश्मयः सूर्यस्य येभिः सपित्वं पितरो न आसन्	७
पुरंदरा शिक्षतं वज्रहस्तास्माँ इन्द्राग्नी अवतं भरेषु ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	८ ३०२८

॥ ३१९ ॥ ( ऋ० १।१३९।९ ) ( ३०२९ ) परुच्छेषो देवोदासिः । अत्यष्टिः ।

वृध्यद् ह मे जनुषं पूर्वे अङ्गिराः प्रियमेधः कण्ठो अत्रिर्मनुर्विदुस्ते मे पूर्वे मनुर्विदुः ।  
तेषां देवेष्वायतिरस्माकं तेषु नार्भयः । तेषां पदेन मह्या नमे गिरेन्द्राग्नी आ नभे गिरा ९, ३०२९

॥ ३२० ॥ ( ऋ० ३।१२।१-९ ) ( ३०३०-३०३८ ) गाथिनो विश्वामित्रः । गायत्री ।

इन्द्राग्नी आ गतं सुतं गीर्भिर्नभो वरंणयम् । अस्य पातं धियेपिता	१	३०३०
इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः । अया पातमिमं सुतम्	२	
इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे । ता सोमस्येह तुम्पताम्	३	
तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता । इन्द्राग्नी वाजसातमा	४	
प्र वामचन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः । इन्द्राग्नी इष आ वृणे	५	
इन्द्राग्नी नवतिं पुरो व्वासपत्नीरधूनुतम् । साकमेकेन कर्मणा	६	३०३५
इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः । ऋतस्य पथ्याऽनुं	७	
इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च । युवोरप्तूर्यं हितम्	८	

इन्द्राग्नी रोचना द्विवः परि वाजेषु भूपथः । तद् वां चेति प्र वीर्यम् ९ ३०३८

॥ ३२१ ॥ ( ऋ० ५।२७।६ )

(३०३९) त्रैवृष्णस्त्र्यरुणः, पौरुकुन्सखसदस्युः, भारतेऽश्वमेधश्च राजानः(अत्रिभौम इति केचित्)। अनुष्टुप् ।  
इन्द्राग्नी शतदात्रय—श्वमेधे सुवीर्यम् । क्षत्रं धारयतं बृहद् द्विवि सूर्यमिवाजरम् ६ ३०३९

॥ ३२२ ॥ ( ऋ० ५।८६।१-६ ) (३०४०-३०४५) भौमोऽत्रिः । अनुष्टुप्, ६ विराट्पूर्वा ।

इन्द्राग्नी यमवथ उभा वाजेषु मर्त्यम् । हृच्छा चित् स प्र भेदति द्युम्ना वाणीरिव त्रितः १ ३०४०  
या पृतनासु दुष्टरा या वाजेषु श्रवाय्या । या पश्च चर्षणीरभी—न्द्राग्नी ता हवामहे २  
तयोरिदमवच्छर्व—स्तिग्मा द्विद्युन्मघोनोंः । प्रति दुणा गर्भस्त्यो—र्गवां वृत्रघ्न एपते ३  
ता यामेषे रथाना—मिद्राग्नी हवामहे । पती तुरस्य राधसो विद्रांसा गिर्वणस्तमा ४  
ता वृधन्तावनु द्यून् मर्तीय देवावदभा । अर्हन्ता चित् पुरो दुधं—ऽशैव देवावर्वते ५  
एवेन्द्राग्निभ्यामहावि हव्यं शूप्यं घृतं न पूतमद्रिभिः ।

ता सूरिषु श्रवां बृहद् रथिं गूणत्सु दिधृत—मिषं गूणत्सु दिधृतम् ६ ३०४५

॥ ३२३ ॥ ( ऋ० ६।५२।१-१० ) (३०४६-३०७०) वार्हस्पत्यो भरद्वाजः । बृहती, ७-१० अनुष्टुप् ।

प्र नु वोचा सुतेषु वां वीर्याऽ यानि चक्रथुः ।

हतासो वां पितरो देवशत्रव इन्द्राग्नी जीवथो युवम १

बद्धिस्था महिमा वा—मिन्द्राग्नी पनिष्ठ आ ।

समानो वां जनिता भ्रातरा युवं यमाविहेहमातरा २

ओक्निवांसा सुते सचा अश्वा सर्षा इवादने ।

इन्द्रा न्वग्नी अवमेह वज्रिणा वयं देवा हवामहे ३

य इन्द्राग्नी सुतेषु वां स्तवत् तप्वृतावृधा ।

जोषवाकं वदतः पञ्चहापिणा न देवा भसर्थश्चन ४

इन्द्राग्नी को अस्य वां देवो मर्ताश्चिकेतति ।

विषूचो अश्वान् युयुजान ईयत् एकः समान आ रथे ५ ३०५०

इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात् पद्वतीभ्यः । हित्वी शिरो जिह्वया वावदुच्चरत् त्रिंशत् पदा न्यक्रमीत् ६

इन्द्राग्नी आ हि तन्वते नरो धन्वानि बाहोः । मा नो अस्मिन् महाधने परा वर्क्तं गविष्टिबु ७

इन्द्राग्नी तपन्ति मा—ऽघा अर्यो अरातयः । अप द्वेषास्या कृतं युयुतं सूर्यादधि ८

इन्द्राग्नी युवोरपि वसुं दिव्यानि पार्थिवा । आ न इह प्र यच्छतं रथिं विश्वायुपोषसम् ९

इन्द्राग्नी उक्थवाहसा स्तोमेभिर्हवनश्रुता । विश्वाभिर्गीभिरा गत—मस्य सोमस्य पीतये १० ३०५५

॥ ३२४ ॥ ( ऋ० ६।६०।१-१५ ) गायत्री, १-३, १३ त्रिष्टुप्, १४ वृहती, १५ अनुष्टुप् ।

श्रथद् वृत्रमुत संनोति वाजमिन्द्रा यो अग्नी सहुरी सपर्यात् ।	
इरज्यन्ता वसव्यस्य भूरः सहस्तमा सहसा वाजयन्ता	१
ता योधिष्टमभि गा इन्द्र नूनमपः स्वरूपसो अग्न ऊळहाः ।	
दिशः स्वरुषस इन्द्र चित्रा अपो गा अग्ने युवसे नियुत्वान्	२
आ वृत्रहणा वृत्रहभिः शुष्मैरिन्द्र यात नमोभिरग्ने अर्वाक् ।	
युवं राधोभिरकवेभिरिन्द्राऽग्ने अस्मे भवतमुत्तमेभिः	३
ता हुवे ययोरिदं पग्ने विश्वं पुरा कृतम् । इन्द्राग्नी न मर्धतः	४
उग्रा विघनिना मृधं इन्द्राग्नी हवामहे । ता नो मृळात ईदशे	५ ३०६०
हतो वृत्राण्यार्या हतो दासानि सत्पती । हतो विश्वा अप द्विषः	६
इन्द्राग्नी युवामिमेऽग्नेऽभि स्तोमा अनूपत । पिबंतं शंभुवा सुतम्	७
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषं नरा । इन्द्राग्नी ताभिरा गंतम्	८
ताभिरा गच्छतं नरोपेदं सर्वनं सुतम् । इन्द्राग्नी सोमंपीतये	९
तमीळिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत् । कृष्णा कृणोति जिह्वया	१० ३०६५
य इन्द्र आविवांसति सुम्नामिन्द्रस्य मर्त्यः । युम्नाय सुतरा अपः	११
ता नो वाजवतीरिष आशून् पिपृतमर्वतः । इन्द्रमग्निं च वोळहवे	१२
उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधंसः सह माद्रुयधै ।	
उभा द्रुताराविषां रयीणा मुभा वाजस्य सातये हुवे वाम्	१३
आ नो गव्येभिरश्व्यैर्वसव्यैरुप गच्छतम् ।	
सखायौ देवौ सख्यायं शंभुवैन्द्राग्नी ता हवामहे	१४
इन्द्राग्नी शृणुतं हवं यजमानस्य सुन्वतः । वीतं हव्यान्या गतं पिबंतं सोम्यं मधुं	१५ ३०७०

॥ ३२५ ॥ ( ऋ० ७।९३।१-८ ) ( ३०७१-३०९० ) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ । त्रिष्टुप् ।

शुचिं नु स्तोमं नवजातमद्येन्द्राग्नी वृत्रहणा जुषेथाम् ।	
उभा हि वां सुहवा जोहवीमि ता वाजं सद्य उशते धेष्ठा	१
ता सानसी शवसाना हि भूतं साकंवृधा शवसा शूशुवांसा ।	
क्षयन्तौ रायो यवसस्य भूरः पृङ्गं वाजस्य स्थविरस्य वृष्वेः	२
उपो ह यद् विदथं वाजिनो गुर्धीभिर्विप्राः प्रमतिमिच्छमानाः ।	
अर्वन्तो न काष्ठां नक्षमाणा इन्द्राग्नी जोहुवतो नस्ते	३



गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमानं	इंद्रै रयिं यशसं पूर्वभाजम् ।	
इन्द्राग्नी वृत्रहणा सुवज्रा	प्र नो नव्यैभिस्तिरतं देष्णैः	४
सं यन्मही मिथ्यती स्पर्धमाने	तनूरुचा शूरसाता यतैते ।	
अदेवयुं विदथे देवयुभिः	सत्रा हतं सोमसुता जनेन	५ ३०७५
इमाम् पु सोमसुतिमुप न	एन्द्राग्नी सोमनसाय यातम् ।	
नू चिद्धि परिमन्नाथे अस्माना	वां शश्वद्भिर्वृतीय वाजैः	६
सो अग्न एना नमसा समिद्धो	ऽच्छा मित्रं वरुणमिन्द्रं वोचेः ।	
यत् सीमार्गश्चक्रुमा तत् सु मृळ	तदर्यमादितिः शिश्रथन्तु	७
एता अग्न आशुषाणास इष्टी	र्युवोः सचाभ्यश्याम वाजान् ।	
मेन्द्रो नो विष्णुर्मरुतः परि ख्यन्	यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	८

॥ ३२६ ॥ ( क्र० ७।९४।१-१२ ) गायत्री, १२ अनुष्टुप् ।

इयं वामस्य मन्मनं	इन्द्राग्नी पूव्यस्तुतिः	। अभ्राद् वृष्टिर्वाजनि	१
शृणुतं जरितुर्हव	मिन्द्राग्नी वनतं गिरः	। इज्ञाना पिप्यतं धियः	२ ३०८०
मा पापत्वार्य नो नरे	न्द्राग्नी माभिशास्तये	। मा नो रीरधतं निदे	३
इन्द्रे अग्ना नमो बृहत्	सुवृक्तिभेरयामहे	। धिया धेना अवस्यवः	४
ता हि शश्वन्त इळत	इत्था विप्रास ऊतये	। सबाधो वाजसातये	५
ता वां गीर्भिर्विपन्यवः	प्रयस्वतो हवामहे	। मेधसाता सनिप्यवः	६
इन्द्राग्नी अवसा गत	मस्मभ्यं चर्षणीसहा	। मा नो दुःशंस ईशत	७ ३०८५
मा कस्य नो अररुपो	धूर्तिः प्रणद्धर्त्यस्य	। इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम्	८
गोमद्धिरण्यवद् वसु	यद् वामश्वावदीमहे	। इन्द्राग्नी तद् वनेमहि	९
यत् सोम आ सुते नर	इन्द्राग्नी अजांहवुः	। सप्तीवन्ता सपर्यवः	१०
उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा	या मन्दाना चिदा गिरा	। आङ्गपैराविवांसतः	११
ताविद् दुःशंसं मर्त्यं	दुर्विद्रांसं रक्षस्विनम् ।	आभोगं हन्मना हत	मुकुधिं हन्मना हतम् १२३०९०

॥ ३२७ ॥ ( क्र० ८।३८।१-१० ) ( ३०९१-३१०० ) श्यावाश्व आत्रेयः । गायत्री ।

यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा	सस्नी वाजेषु कर्मसु ।	इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्	१
तोशासा रथ्यावाना	वृत्रहणापराजिता	। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्	२
इदं वां मद्गिरं मध्व	धुक्षन्नद्रिभिर्नरः	। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्	३
जुषेथां यज्ञमिष्टये	सुतं सोमं सधस्तुती	। इन्द्राग्नी आ गतं नरा	४
इमा जुषेथां सर्वना	येभिर्हव्यान्यूहथुः	। इन्द्राग्नी आ गतं नरा	५ ३०९५

इमां गायत्रवर्तनि जुपेथां सुष्टुतिं मम	। इन्द्राग्नी आ गतं नरा	६
प्रातर्यावभिरा गतं देवेभिर्जन्यावसू	। इन्द्राग्नी सोमपीतये	७
श्यावाश्वस्य सुन्वतो ऽत्रीणां शृणुतं हवम्	। इन्द्राग्नी सोमपीतये	८
एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः	। इन्द्राग्नी सोमपीतये	९
आहं सरस्वतीवतो—रिन्द्राग्न्योरवो वृणे	। याभ्यां गायत्रमूच्यते	१० ३१००

॥ ३२८ ॥ ( ऋ० ८।४०।१-१२ )

( ३१०१-३११२ ) नाभाकः काण्वः । महापंक्तिः, २ शकरी, १२ त्रिष्टुप् ।

इन्द्राग्नी युवं सु नः सहन्ता दासथो रयिम् ।  
येन हृत्वा समस्वा वीळु चित साहिपीमह्य—ग्निर्वनेव वात इ—न्नभन्तामन्यके समे १  
नहि वां ववयामहे ऽथेन्द्रमिद् यजामहे शविष्ठं नृणां नरम् ।  
स नः कदा चिद्वता गमदा वार्जसातये गमदा मेधसातये नभन्तामन्यके समे २  
ता हि मध्यं भराणा—मिन्द्राग्नी अधिक्षितः ।  
ता उ कवित्वना कवी पृच्छयमाना सखीयते सं धीतमश्रुतं नरा नभन्तामन्यके समे ३  
अभ्यर्च नभाकव—दिन्द्राग्नी यजसा गिरा ।  
ययोर्विश्वमिदं जग—द्वियं द्यौः पृथिवी मह्यु—पस्थे विभूतो वसु नभन्तामन्यके समे ४  
प्र ब्रह्माणि नभाकव—दिन्द्राग्निभ्यामिरज्यत ।  
या सप्तबुधमर्णवं जिह्ववारमपोर्णुत इन्द्र ईशान ओजसा नभन्तामन्यके समे ५ ३१०५  
अपि वृश्च पुराणवद् व्रततेरिव गुप्पित—मोजो वृासस्य दम्भय ।  
वयं तदस्य संभृतं वस्विद्रेण वि भजेमहि नभन्तामन्यके समे ६  
यदिन्द्राग्नी जना इमे विह्वर्यन्ते तना गिरा ।  
अस्माकेभिर्नृभिर्वयं सासह्याम पृतन्यतो वनुयाम वनुष्यतो नभन्तामन्यके समे ७  
या नु श्वेताववो द्विव उच्चरात् उप द्युभिः ।  
इन्द्राग्न्योरनु व्रत—मुहाना यन्ति सिधवो यान्त्सीं बंधादमुञ्चतां नभन्तामन्यके समे ८  
पूर्वीष्ट इन्द्रोपमातयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः सूनो हिन्वस्य हरिवः ।  
वस्वो वीरस्यापृचो या नु सार्धन्त नो धियो नभन्तामन्यके समे ९  
तं शिशीता सुवृक्तिभि—स्त्वेषं सत्वानमृगियम् ।  
उतो नु चिद् य ओजसा शृष्णास्याण्डानि भेदति जेषत् स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे १० ३११०  
तं शिशीता स्वध्वरं सत्यं सत्वानमृत्वियम् ।  
उतो नु चिद् य ओहत आण्डा शृष्णास्य भेदु—त्यजेः स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे ११

एवेन्द्राग्निभ्यां पितृवन्नवीयो मंधातृवदङ्गिरस्वदवाचि ।

त्रिधातुना शर्मणा पातमस्मान् वयं स्याम पतयो रयीणाम्

१२ ३११९

॥ ३२९ ॥ ( ऋ० १०।१६।१-५ )

(३११३-३११७) प्राजापत्यो यक्षमनाशनः, राजयक्षमघ्नं वा । त्रिष्टुप्, ५ अनुष्टुप् ।

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कर्मज्ञातयक्षमादुत राजयक्षमात् ।

ग्राहिर्जग्राह यदि वैतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम्

१

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव ।

तमा हरामि निऋतेरुपस्थादस्पर्षमेनं शतशारदाय

२

सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषा हविषाहर्षभेनम् ।

शतं यथेमं शरदो नयातीद्वो विश्वस्य दुरितस्य पारम्

३

३११५

शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमंताञ्छतमु वसंतान् ।

शतमिन्द्राग्नी संविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः

४

आहर्षिं त्वाविदं त्वा पुनरागाः पुनर्नव । सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् ५ ३११७

॥ ३३० ॥ ( वा० य० १४।११ )

इन्द्राग्नी अव्यथमानामिष्टकां ह हतं युवम् । पृष्टेन द्यावापृथिवी अंतरिक्षं च विवांधसे १+३११८

॥ ३३१ ॥ ( वा० य० १७।६४ )

उद्गमं च निग्राभं च ब्रह्म देवा अवीवृधन् । अधा सपत्नानिन्द्राग्नी मे विपूचीनान्व्यस्यताम् ६ ४ ३११९

॥ ३३२ ॥ ( अथर्व० ७।९७।१-८ )

( ३१२०-३१२७ ) अथर्वा । त्रिष्टुप्, ५ त्रिपदार्थी भुरिग्गायत्री, ६ त्रिपदा प्राजापत्या बृहती,

७ त्रिपदा साम्नी भुरिग्जगती, ८ उपरिष्ठाद्बृहती ।

यदद्य त्वा प्रयति यजे अस्मिन् होताश्चिकित्वन्नवृणीमहीह ।

ध्रुवमयो ध्रुवमुता शविष्ठ प्रविद्वान् यज्ञमुप याहि सोमम्

१

३१२०

समिद्रं नो मनसा नेप गोभिः सं सूरिभिर्हरिवृत्सं स्वस्त्या ।

सं ब्रह्मणा देवाहितं यदस्ति सं देवानां सुमतौ यज्ञिर्यानाम्

२

यानावह उशतो देव देवांस्तान् प्रेरय स्वे अग्ने सधस्थे ।

जक्षिवांसः पपिवांसो मधून्यस्मै धत्त वसवो वसूनि

३

+ वा० य० ३।१३; ७।३१, ऋ० ६।६०।१३; ३।१२।१, सा० ६६९, दे० सं० [इन्द्रः] ३०३३, ३०७१ ।

× वा० य० ३३।६१, ७६, ९३; ऋ० ६।५९।६; ६।६०।५; ७।९४।११; सा० ८५४, २८१; दे० सं० [इन्द्रः] ३०५४, ३०६३, ३०९२ ।

सुगा वो देवाः सदेना अकर्म य आजग्म सर्वने मा जुषाणाः ।

वहमाना भरमाणाः स्वा वसूनि वसुं घर्म दिवमा रोहतानुं ४

यज्ञं यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ । स्वां योनिं गच्छ स्वाहा ५

एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः । सुवीर्यः स्वाहा ६ ३१२५

वषड्हुतेभ्यो वषड्हुतेभ्यः । देवां गातुषिदो गातुं विच्वा गातुमित ७

मनसस्पत इमं नो द्विवि देवेषु यज्ञम् ।

स्वाहा द्विवि स्वाहा पृथिव्यां स्वाहान्तरिक्षे स्वाहा वाते धां स्वाहा ८ ३१२७

॥३३३॥ ( अथर्व० ६।१०४।१-३ ) ( ३१२८-३१३० ) प्रशोचनः । ३ सोम इन्द्रश्च । अनुष्टुप् ।

आदानेन संदानेना—ऽमित्राना द्यामसि । अपाना ये चैषां प्राणा असुनासून्त्समच्छिदन् १

इदमादानमकरं तपसेन्द्रेण संशितम् । अमित्रा येऽत्र नः सन्ति तानग्र आ द्या त्वम् २

ऐनान्द्यतामिन्द्राग्नी सोमो राजा च मेदिनौ ।

इन्द्रो मरुत्वानादानं—ममित्रंभ्यः कृणोतु नः ३ ३१३०

॥३३४॥ ( अथर्व० ७।११०।१-३ ) ( ३१३१-३१३३ ) भृगुः । १ गायत्री, २ त्रिष्टुप्, ३ अनुष्टुप् ।

अग्र इन्द्रश्च दाशुषे हतो वृत्राण्यप्रति । उभा हि वृत्रहन्तमा १

याभ्यामर्जयन्स्वर्ग्य एव यावातस्थतुर्भुवनानि विश्वा ।

प्रचर्षणी वृषणा वज्रबाहू अग्निमिन्द्रं वृत्रहणा हुवेऽहम् २

उप त्वा देवो अग्रभी—च्चमसेन बृहस्पतिः ।

इन्द्रं गीर्भिर्न आ विश यजमानाय सुन्वते ३ ३१३३

## ( २ ) इन्द्रावरुणौ ।

॥ ३३५ ॥ ( ऋ० १।१७।१-९ ) ।

( ३१३४-३१४२ ) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री, ४-५ पादनिचृत् ( ५ हस्रीयसी वा ) गायत्री ।

इन्द्रावरुणयोर्हं सम्राजोरव आ वृणे । ता नो मृळात ईदृशे १

गन्तारा हि स्थोऽवसे हवं विप्रस्य मावतः । धर्तारा चर्षणीनाम् २ ३१३५

अनुकामं तर्पयेथा—मिन्द्रावरुण राय आ । ता वां नेदिष्ठमीमहे ३

युवाकु हि शचीनां युवाकु सुमतीनाम् । भूयाम वाजदात्राम् ४

इन्द्रः सहस्रदात्रां वरुणः शंस्यानाम् । क्रतुर्भवत्युक्थयः ५

तयोरिद्वसा वयं सनेम नि च धीमहि । स्यादुत प्ररेचनम् ६

इन्द्रावरुण वामहं हुवे चित्राय रार्धसे । अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृतम् ७ ३१४०

इन्द्रावरुण नू नुं वां सिपांसन्तीषु धीष्वा । अस्मभ्यं शर्मं यच्छतम् ८	
प्र वामश्रोतु सुष्टुतिरिन्द्रावरुण यां हुवे । यामुधार्थे सधस्तुतिम् ९	३१४२
॥ ३३६ ॥ ( ऋ० ३।६२।१-३ )	
( ३१४३-३१४३ ) गाथिनो विश्वामित्रः । १-३ त्रिष्टुप् ।	
इमा उ वां भूमयो मन्यमाना युवावते न तुज्या अभूवन् ।	
क्रुत्यदिन्द्रावरुणा यशो वां येन स्मा सिनं भरथः सखिभ्यः ?	
अयमु वां पुरुतमो रयीय उच्छ्वत्तममवसे जोहवीति ।	
सजोपाविन्द्रावरुणा मरुद्धि किंवा पृथिव्या शृणुतं हवं मे २	
अस्मे तदिन्द्रावरुणा वसु प्या दुस्मे रयिर्मरुतः सर्ववीरः ।	
अस्मान् वरुत्रीः शरणैरवन्त्वस्मान् होत्रा भारती दक्षिणाभिः ३	३१४५
॥ ३३७ ॥ ( ऋ० ४।४१।१-११ )	
( ३१४६-३१५६ ) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।	
इन्द्रा को वां वरुणा सुम्राप स्तोमो हविष्मां अमृतो न होता ।	
यो वां हृदि क्रतुमां अस्मदुक्तः पस्पशीदिन्द्रावरुणा नमस्वान् १	
इन्द्रा ह यो वरुणा चक्र आपी देवौ मर्तः सख्याय प्रयस्वान् ।	
स हन्ति वृत्रा समिथेषु शत्रू नवोभिर्वा महद्भिः स प्र शृण्वे २	
इन्द्रा ह रत्नं वरुणा धेष्टे तथा नृभ्यः शशमानेभ्यस्ता ।	
यदी सखाया सख्याय सोमैः सुतेभिः सुप्रयसां मादयते ३	
इन्द्रा युवं वरुणा द्विद्युमस्मिन्नोजिष्ठमुग्रा नि वधिष्टं वज्रम् ।	
यो नो दुरेवो वृकतिर्दुभीतिस्तस्मिन् मिमाथामभिभूत्योजः ४	
इन्द्रा युवं वरुणा भूतमस्या धियः प्रेतारा वृषभेव धेनोः ।	
सा नो दुहीयद् यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः ५	३१५०
तोके हिते तनय उर्वरासु सूरौ दृशीके वृषणश्च पौंस्ये ।	
इन्द्रा नो अत्र वरुणा स्यातामवोभिर्दुस्मा परितकभ्यायाम् ६	
युवामिद्धयवसे पूर्याय परि प्रभूती गविषः स्वापी ।	
वृणीमहे सख्याय प्रियाय शूरा मंहिष्ठा पितरैव शंभू ७	
ता वां धियोऽवसे वाजयन्तीराजिं न जग्मुर्युवयूः सुदानू ।	
श्रिये न गाव उप सोममस्थुरिन्द्रं गिरो वरुणं मे मनीषाः ८	
इमा इन्द्रं वरुणं मे मनीषा अगमन्नुप द्रविणमिच्छमानाः ।	
उपेमस्थुर्जोष्टार इव वस्वो रघ्वीरिव श्रवसो भिक्षमाणाः ९	

अश्व्यस्य त्मना रथ्यस्य पुष्टे—नित्यस्य रायः पतयः स्याम ।

ता चक्राणा ऊतिभिर्नव्यसीभि—रस्मत्रा रायो नियुतः सचन्ताम्

१०

३१५५

आ नो बृहन्ता बृहतीभिरूती इन्द्र यातं वरुण वाजसातौ ।

यद् विद्यवः पृतनासु प्रकीळान् तस्य वां स्याम सनितारं अजेः

११

३१५६

॥ ३३८ ॥ ( ऋ० ४।४२।७-१० )

( ३१५७-३१६० ) त्रसदस्युः पौरुकुन्स्यः । त्रिष्टुप् ।

विदुष्टे विश्वा भुवनानि तस्य ता प्र ब्रवीषि वरुणाय वेधः ।

त्वं वृत्राणि शृण्विषे जघन्वान् त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून्

७

अस्माकमत्र पितरस्त आसन् त्सत ऋपयो दौर्गहे ब्रुध्यमानि ।

त आर्यजन्त त्रसदस्युमस्या इन्द्रं न वृत्रतुरमर्धदेवम्

८

पुरुकुत्सानी हि वामदाश—न्द्रव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।

अथा राजानं त्रसदस्युमस्या वृत्रहणं ददथुरर्धदेवम्

९

राया वयं संसवासो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः ।

तां धेनुभिन्द्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम्

१०

३१६०

॥ ३३९ ॥ ( ऋ० ६।६८।१-११ ) ( ३५६१-३१७१ ) वार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप्, ९-१० जगती ।

श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः सजोषा मनुष्वद् वृक्तबर्हिषो यजध्वे ।

आ य इन्द्रावरुणाविषे अद्य महे सुम्नार्य मह आववर्तत

१

ता हि श्रेष्ठा देवताता तुजा शूराणां शविष्ठा ता हि भूतम् ।

मघोनां महिष्ठा तुविशुम्नं ऋतेन वृत्रतुरा सर्वसेना

२

ता गृणीहि नमस्येभिः शूषैः सुम्नेभिरिन्द्रावरुणा चक्राना ।

वज्रेणान्यः शवसा हन्ति वृत्रं सिषक्त्यन्यो वृजनेषु विप्रः

३

ग्राश्च यन्नरश्च वावृधन्त विश्वे देवासो नरां स्वगूर्ताः ।

प्रैभ्य इन्द्रावरुणा महित्वा द्यौश्च पृथिवि भूतगुर्वी

४

स इत् सुदानुः स्ववाँ ऋतावेन्द्रा यो वां वरुण दाशति त्मन् ।

इषा स द्विषस्तरिद् दास्वान् वंसद् रयिं रयिवर्तश्च जनान्

५

३१६५

यं युवं वृश्वध्वराय देवा रयिं धत्थो वसुमन्तं पुरुक्षुम् ।

अस्मे स इन्द्रावरुणावपि प्यात् प्र यो मनक्ति वनुषामशस्तीः

६

उत नः सुत्रात्रो देवगोपाः सूरिभ्य इन्द्रावरुणा रयिः प्यात् ।

येषां शुम्नः पृतनासु साह्वान् प्र सद्यो द्युम्ना तिरते ततुरिः

७

नू न इन्द्रावरुणा गृणाना पूङ्कं रयिं सौश्रवसाय देवा ।		
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्धो ऽपो न नावा दुरिता तरेम	८	
प्र सम्राजे बृहते मन्म नु प्रियमर्च देवाय वरुणाय सप्रथः ।		
अयं य उर्वा महिना महिव्रतः क्रत्वा विभात्यजरो न शोचिषा	९	
इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं सोमं पिबतं मद्यं धृतव्रता ।		
युवो रथो अध्वरं देववीतये प्रति स्वसरमुप याति पीतये	१०	३१७०
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य वृष्णाः सोमस्य वृष्णा वृषेथाम् ।		
इदं वामन्धः परिपिक्तमस्मे आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयेथाम्	११	३१७१

॥३४०॥ ( ऋ० ७।८२।१-१० ) ( ३१७२-३२०१ ) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । जगती ।

इन्द्रावरुणा युवमध्वराय नो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् ।		
दीर्घप्रयज्युमति यो वनुष्यति वयं जयेम पृतनासु दूह्यः	१	
सम्राळ्यः स्वराळ्य उच्यते वा महान्ताविन्द्रावरुणा महावसू ।		
विश्वे देवासः परमे व्योमनि सं वामोजो वृषणा सं बलं दधुः	२	
अन्वपां खान्यतृन्तमोजसा सूर्यमैरयतं क्विवि प्रभुम् ।		
इन्द्रावरुणा मदे अस्य मायिनो ऽपिन्वतमपितः पिन्वतं धियः	३	
युवामिद् युत्सु पृतनासु वह्नयो युवां क्षेमस्य प्रसवे मितज्ञवः ।		
ईशाना वस्वं उभयस्य कारव इन्द्रावरुणा सुहवां हवामहे	४	३१७५
इन्द्रावरुणा यक्विमानि चक्रथुर्विश्वा जातानि भुवनस्य मज्जना ।		
क्षमेण मित्रो वरुणं दुवस्यति मरुद्भिरुग्रः शुभमन्य ईयते	५	
महे शुल्काय वरुणस्य नु त्विष ओजो मिमाते ध्रुवमस्य यत् स्वम् ।		
अजामिमन्यः श्रथयन्तमार्तिरद् दृभ्रेभिरन्यः प्र वृणोति भूर्यसः	६	
न तमहो न दुरितानि मर्त्यमिन्द्रावरुणा न तपः कुतश्चन ।		
यस्य देवा गच्छथो वीथो अध्वरं न तं मर्तस्य नशते परिहृतिः	७	
अवाङ्मना दैव्येनावसा गतं शृणुतं हवं यदि मे जुजोपथः ।		
युवोर्हि सरुयमुत वा यदाप्यं मारुत्किमिन्द्रावरुणा नि यच्छतम्	८	
अस्माकमिन्द्रावरुणा भरेभरे पुरोयोधा भवतं कृष्ट्योजसा ।		
यद् वां हवन्त उभये अध स्पृधि नरस्तोकस्य तनयस्य सातिषु	९	३१८०
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युम्नं यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः ।		
अवधं ज्योतिरदितेऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे	१०	

• ॥३४१॥ ( ऋ० ७।८३।१-१० )

युवां नरा पश्यमानास आप्यं प्राचा गव्यन्तः पृथुपर्शिवो ययुः ।	
दासा च वृत्रा हतमार्याणि च सुदासमिन्द्रावरुणावसावतम्	१
यत्रा नरः समर्यन्ते कृतध्वजो यस्मिन्नाजा भवति किं चन प्रियम् ।	
यत्रा भयन्ते भुवना स्वर्दशस्तत्रा न इन्द्रावरुणाधि वोचतम्	२
सं भूम्या अन्ता ध्वसिरा अदृक्षतेन्द्रावरुणा द्विवि घोष आरुहत ।	
अस्थुर्जनानामुप मामरांतयो ऽर्वागर्वसा हवनश्रुता गंतम्	३
इन्द्रावरुणा वधनाभिरप्रति भेदं वन्वन्ता प्र सुदासमावतम् ।	
ब्रह्माण्येषां शृणुतं हवीमनि सत्या तृत्सूनामभवत् पुरोहितिः	४
इन्द्रावरुणावभ्या तपन्ति माघान्ययो वनुषामरांतयः ।	
युवं हि वस्व उभयस्य राजथो ऽध स्मा नोऽवतं पार्थे द्विवि	५
युवां हवन्त उभयास आजिष्विन्द्रं च वस्वो वरुणं च सातये ।	
यत्र राजभिर्दशभिर्निवाधितं प्र सुदासमावतं तृत्सुभिः सह	६
दश राजानः समिता अयज्यवः सुदासमिन्द्रावरुणा न युयुधुः ।	
सत्या नृणामंभ्रसदामुपस्तुतिर्देवा एषामभवन् देवहृतिषु	७
वाशराज्ञे परियत्ताय विश्वतः सुदास इन्द्रावरुणावशिक्षतम् ।	
श्वित्यञ्चो यत्र नमसा कपदिनी धिया धीवन्तो असंपन्त तृत्सवः	८
वृत्राण्यन्यः समिधेषु जिघ्रते व्रतान्यन्यो अभि रक्षते सदा ।	
हवामहे वां वृषणा सुवृक्तिभिर्स्मे इन्द्रावरुणा शर्म यच्छतम्	९
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युमं यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः ।	
अवधं ज्योतिरदिनेर्कृतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे	१०
॥ ३४२ ॥ ( ऋ० ७।८४।१-५ ) त्रिष्टुप् ।	
आ वां राजानावध्वरे ववृत्यां हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।	
प्र वां घृताचीं बाहोर्दधाना परि त्मना विषरूपा जिगाति	१
युवो सष्ट्रं बृहदिन्वति द्यौर्यौ सेतृभिररज्जुभिः सिनीथः ।	
परि नो हेळो वरुणस्य वृज्या उरुं न इन्द्रः कृणवदु लोकम्	२
कृतं नो यज्ञं विदथेषु चारुं कृतं ब्रह्माणि सूरिषु प्रशस्ता ।	
उपो रयिर्देवजूतो न एतु प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेतम्	३
अस्मे इन्द्रावरुणा विश्ववारं रयिं धत्तं वसुमन्तं पुरुक्षुम् ।	
प्र य आदित्यो अनृता मिनात्यमिता शूरो दयते वसूनि	४

३१८५

३१९०

३१९५



इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत् तोके तनये तूतुजाना ।  
सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ ३४३ ॥ ( ऋ० ७।८५।१-५ )

पूनीषे वामरक्षसं मनीषां सोममिन्द्राय वरुणाय जुह्वत् ।

घृतप्रतीकामुषसं न देवीं ता नो यामन्नुरुण्यतामभीके १

स्पर्धन्ते वा उ देवहूये अत्र येषु ध्वजेषु दिद्यवः पतन्ति ।

युवं ता इन्द्रावरुणावमित्रान् हतं पराचः शर्वा विषूचः २

आर्षिचिद्धि स्वयंशसः सदःसु देवीरिन्द्रं वरुणं देवता धुः ।

कृष्टीरन्यो धारयति प्रविक्ता वृत्राण्यन्यो अप्रतीनि हन्ति ३

स सुक्रतुर्कृतचिदस्तु होता य आदित्य शर्वसा वां नमस्वान् ।

आववर्तदवसे वां हविष्मानसदित स सुविताय प्रयस्वान् ४

३२००

इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत् तोके तनये तूतुजाना ।

सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

३२०१

॥ ३४४ ॥ ( ऋ० ८।५२।१-७ )

( ३२०२-३२०८ ) सुपर्णः काण्वः । जगती ।

इमानि वां भागधेयानि सिंस्रत् इन्द्रावरुणा प्र महे सुतेषु वाम् ।

यज्ञेयज्ञे ह सर्वना भुरण्यथो यत् सुन्वते यजमानाय शिक्षथः १

निष्पिध्वरीरोषधीराप आस्तामिन्द्रावरुणा महिमानमाशत ।

या सिंस्रतु रजसः पारे अध्वनो ययोः शत्रुर्नकिरादेव ओहते २

सत्यं तदिन्द्रावरुणा कृशस्य वां मध्वं ऊर्मि दुहते सप्त वाणीः ।

ताभिर्दुर्वाश्वान्समवतं शुभस्पती यो वामदधो अभि पाति चित्तिभिः ३

घृतप्रुषः सौम्या जीरदानवः सप्त स्वसारः सदन क्रतस्य ।

या ह वामिन्द्रावरुणा घृतश्रुतस्ताभिर्धत्तं यजमानाय शिक्षतम् ४

३२०५

अवोचाम महते सौभंगाय सत्यं त्वेषाभ्यां महिमानमिन्द्रियम् ।

अस्मान् त्विन्द्रावरुणा घृतश्रुतस्त्रिभिः साप्तेभिरवतं शुभस्पती ५

इन्द्रावरुणा यदृषिभ्यो मनीषां वाचो मतिं श्रुतमदत्तमग्रे ।

यानि स्थानान्यसृजन्त धीरा यज्ञं तन्वानास्तपसाभ्यपश्यम् ६

इन्द्रावरुणा सौमनसमहंसं रायस्पोषं यजमानेषु धत्तम् ।

प्रजां पुष्टिं भूतिमस्मासु धत्तं दीर्घायुत्वाय प्र तिरतं न आयुः ७

३२०८

॥ ३४५ ॥ ( वा० य० ८।३७ ) त्रिष्टुप् यजुरन्ता ।

इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च राजा तौ ते भक्षं चक्रतुरग्रऽएतम् ।

तयोरुहमनु भक्षं भक्षयामि वाग्देवी जुषाणा सोमस्य तृप्यतु सह प्राणेन स्वाहा ॥३७॥ ३००९

### ( ३ ) इन्द्र-वायू ।

॥३४६॥ ( ऋ० १।२।४-६ ) ( ३२१०-३२१२ ) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

इन्द्रवायू इमे सुता उप प्रयोभिरा गतम् ।

इन्द्रवो वामुशान्ति हि ४ ३२१०

वायुविन्द्रश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू ।

तावा यातमुप द्रवत् ५

वायुविन्द्रश्च सुन्वत आ यातमुप निष्कृतम् ।

मक्षिपत्था धिया नरा ६ ३२१२

॥३४७॥ ( ऋ० १।२।३।२-३ ) ( ३२१३-३२१४ ) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

उभा देवा दिविस्पृशेन्द्रवायू हवामहे ।

अस्य सोमस्य पीतये २ ३२१३

इन्द्रवायू मनोजुवा विप्रा हवन्त ऊतये ।

सहस्राक्षा धियस्पती ३ ३२१४

॥३४८॥ ( ऋ० १।२।३।५ ४-८ ) ( ३२१५ ३२१९ ) परुच्छेपो देवादासिः । अन्यष्टिः, ७-८ अष्टिः ।

आ वां रथो नियुत्वान् वक्षद्वसे ऽभि प्रयांसि सुधितानि वीतये वायो हव्यानि वीतये ।

पिबन्तं मध्वो अन्धसः पूर्वपेयं हि वां हितम् ।

वायवा चन्द्रेण राधसा गतमिन्द्रश्च राधसा गतम् ४ ३२१५

आ वां धियो ववृत्युरध्वरां उपेममिन्दुं मर्मजन्त वाजिनमाशुमत्यं न वाजिनम् ।

तेषां पिबतमस्मयू आ नो गन्तमिहोत्या ।

इन्द्रवायू सुतानामद्रिभिर्युवं मदाय वाजदा युवम् ५

इमे वां सोमा अप्स्वा सुता इहाध्वर्युभिर्भरमाणा अयंसत वायो शुक्रा अयंसत ।

एते वामभ्यंसृक्षत तिरः पवित्रमाश्वः ।

युवायवोऽति रोमाण्यव्यया सोमासो अत्यव्यया ६

अति वायो ससतो याहि शश्वतो यत्र ग्रावा वदति तत्र गच्छतं गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् ।

वि सूनृता ददृशे रीयते घृतमा पूर्णया नियुता याथो अध्वरमिन्द्रश्च याथो अध्वरम् ७

अत्राह तद् वहिथे मध्व आहुतिं यमश्वत्थमुपतिष्ठन्त जायवो ऽस्मे ते संन्तु जायवः ।  
साकं गावः सुवते पच्यते यवो न ते वायु उप दस्यन्ति धेनवो नाप दस्यन्ति धेनवः ८ ३२१९

॥ ३४९ ॥ ( क्र० २।४१।३ )

( ३२२० ) गृन्समदः शौनकः । गायत्री ।

शुक्रस्याद्य गवाशिर इन्द्रवायू नियुत्वतः । आ यातं पिबतं नरा ३ ३२२०

॥ ३५० ॥ ( क्र० ४।४६।२-७ )

( ३२२१-३२२९ ) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

शतेना नो अभिष्टिभिर्नियुत्वाँ इन्द्रसारथिः । वायो सुतस्य तृम्पतम् २  
आ वाँ सहस्रं हरय इन्द्रवायू अभि प्रयः । वहन्तु सोमपीतये ३  
रथं हिरण्यवन्धुरमिन्द्रवायू स्वध्वरम् । आ हि स्थाथो दिविस्पृशाम् ४  
रथेन पृथुपार्जसा द्वाश्वासमुप गच्छतम् । इन्द्रवायू इहा गतम् ५  
इन्द्रवायू अयं सुतस्तं देवेभिः सजोपसा । पिबतं द्वाशुषो गृहे ६ ३२२५  
इह प्रयाणमस्तु वा मिन्द्रवायू विमोचनम् । इह वाँ सोमपीतये ७

॥ ३५१ ॥ ( क्र० ४।४७।२-४ ) अनुष्टुप् ।

इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां पीतिर्महथः ।  
युवां हि यन्तीन्द्रवो निम्नमापो न सध्वर्यक् २  
वायुविन्द्रश्च शुष्मिणा सरथं शवसस्पती ।  
नियुत्वन्ता न ऊतय आ यातं सोमपीतये ३  
या वाँ सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो द्वाशुषे नरा ।  
अस्मे ता यज्ञवाहसेन्द्रवायू नि यच्छतम् ४ ३२२९

॥ ३५२ ॥ ( क्र० ५।५६।४, ६-७ )

( ३२३०-३२३२ ) स्वस्त्यात्रेयः । गायत्री, ( ६, ७ ) उष्णिक् ।

अयं सोमश्चमू सुतो ऽमत्रे परि पिच्यते । प्रिय इन्द्राय वायवे ४ ३२३०  
इन्द्रश्च वायवेषां सुतानां पीतिर्महथः । ताञ्जुषेथामरेपसावभि प्रयः ६  
सुता इन्द्राय वायवे सोमासो दध्याशिरः । निम्नं न यन्ति सिन्धवोऽभि प्रयः ७ ३२३२

॥ ३५३ ॥ ( क्र० ७।९०।५-७ ) ( ३२३३-३२४२ ) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

ते सत्येन मनसा दीध्यानाः स्वेन युक्तासः क्रतुना वहन्ति ।  
इन्द्रवायू वीरवाहं रथं वा मीशानयोर्भि पृक्षः सचन्ते ५ ३२३३  
ईशानासो ये दधते स्वर्णो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्हिरण्यैः ।  
इन्द्रवायू सूरयो विश्वमायु र्वेद्विर्वीरैः पृतनासु सह्युः ६

अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायु सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।  
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

७

३२३५

॥ ३५४ ॥ ( ऋ० ७।९।१२, ४-७ )

उशन्तां द्रुता न दभाय गोपा मासश्च पाथः शरदश्च पूर्वीः ।

इन्द्रवायु सुष्टुतिर्वामियाना माडीकमीद्वे सुवितं च नव्यम

२

यावत् तरस्तन्वोऽ यावदोजो यावन्नरश्चक्षसा दीर्घानाः ।

शुचिं सोमं शुचिपा पातमस्मे इन्द्रवायु सदतं बर्हिरेदम

४

नियुवाना नियुतः स्पार्हवीरा इन्द्रवायु सरथं यातमर्वाक् ।

इदं हि वां प्रभृतं मध्वो अग्रमध प्रीणाना वि मुमुक्तमस्मे

५

या वां शतं नियुतो याः सहस्रमिन्द्रवायु विश्ववाराः सचन्ते ।

आभिर्यातं सुविदत्राभिरर्वाक् पातं नरा प्रतिभृतस्य मध्वः

६

अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायु सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।

वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

७

३२४०

॥ ३५५ ॥ ( ऋ० ७।९।२२, ४ )

प्र सोतां जीरो अध्वरेष्वस्थात् सोमिन्द्राय वायवे पिबध्वै ।

प्र यद् वां मध्वो अग्रियं भरन्त्यध्वर्यवो देवयन्तः शचीभिः

२

ये वायवं इन्द्रमादनास आदेवासो नितोशनासो अर्यः ।

घ्नन्तो वृत्राणि सूरिभिः प्याम सासह्वांसो युधा नृभिरमित्रान्

४

३२४२

॥ ३५६ ॥ ( वा० य० ३३।८६ )

इन्द्रवायु सुसन्दशा सुहवेह हवामहे ।

यथा नः सर्वे इज्जनोऽनमीवः सङ्गमे सुमनाऽअसत् ॥ ८६ ॥ x

३२४३

॥ ३५७ ॥ ( अथर्व० ३।२०।६ ) वसिष्ठः । पथ्यापङ्क्तिः ।

इन्द्रवायु उभाविह सुहवेह हवामहे ।

यथा नः सर्वे इज्जनः संगत्यां सुमना असहानकामश्च नो भुवत्

६

३२४४

### ( ४ ) इन्द्र-मरुतश्च ।

॥ ३५८ ॥ ( ऋ० १।६।५, ७ ) ( ३२४५-३२४६ ) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

वीलु चिदारुजन्तुभिर्गुहां चिदिन्द्र वह्निभिः । अर्विन्द उस्त्रिया अनु

५

३२४५

इन्द्रेण सं हि वृक्षसे संजग्मानो अविभ्युषा । मन्द्रु समानवर्चसा

७

३२४६

x [ वा० य० ७।८; ३३, ५६, ८६, ऋ० १।२।४, १०।१४।१४, अथर्व० ३।२०।६, ] वै० स० [ इन्द्र. ] ३२१५ ।

द्वै० [ इन्द्र. ] २७

## ( ५ ) मरुत्वानिन्द्रः ।

॥ ३५९ ॥ ( ऋ० १।२३।७-९ ) ( ३२४७-३२४० ) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।  
 मरुत्वन्तं हवामह इन्द्रमा सोमपीतये । सजूर्गणेन तृम्पतु ७  
 इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूर्परातयः । विश्वे मर्म श्रुता हवम् ८  
 हत वृत्रं सुदानव इन्द्रेण सहसा युजा । मा नो दुःशंस ईशत ९ ३२४९

॥ ३६० ॥ ( ऋ० १।२६।१-१५ )

( ३२५०-३२६४ ) इन्द्रः, ३, ५, ७, ९, मरुतः, १३-१५ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

कया शुभा सर्वयसः सनीळाः समान्या मरुतः सं मिमिक्षुः ।  
 कया मनी कुत एतास एते ऽर्चन्ति शुष्मं वृषणो वसूया १ ३२५०  
 कस्य ब्रह्माणि जुजुष्युवानः को अध्वरे मरुत आ वर्तत ।  
 श्येना इव धजतो अन्तरिक्षे केन महा मनसा रीरमाम २  
 कुतस्त्वामिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं त इत्था ।  
 सं पृच्छसे समरणः शुभानि वीचेस्तन्नो हरिवो यत् ते अस्मे ३  
 ब्रह्माणि मे मतयः शं सुतासः शुष्मं इयति प्रभृतो मे अद्रिः ।  
 आ शासते प्रति हयन्त्युक्थे मा हरी वहतस्ता नो अच्छ ४  
 अतो वयमन्तमेभिर्युजानाः स्वक्षत्रेभिस्तन्वुः शुम्भमानाः ।  
 महोभिरेता उष युज्महे न्विन्द्र स्वधामनु हि नो बभूथ ५  
 क्रु स्या वो मरुतः स्वधासीद् यन्मामेकं समधत्ताहित्ये ।  
 अहं ह्युग्रस्तविपस्तुविष्मान् विश्वस्य शत्रोरनमं वधस्नैः ६ ३२५५  
 भूरि चकथ युज्येभिरस्मे समानेभिवृषभ पौस्येभिः ।  
 भूरीणि हि कृणवामा शविष्ठन्द्र क्रत्वा मरुतो यद् वशाम ७  
 वधी वृत्रं मरुत इन्द्रियेण स्वेन भामेन तविषो बभूवान् ।  
 अहमेता मनवे विश्वश्चन्द्राः सुगा अपश्चकर वज्रबाहुः ८  
 अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावा अस्ति देवता विदानः ।  
 न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध ९  
 एकस्य चिन्म विभवुस्त्वोजो या नु दधुष्वान् कृणवै मनीषा ।  
 अहं ह्युग्रो मरुतो विदानो यानि चयमिन्द्र इदीश एषाम् १०  
 अमन्दन्मा मरुतः स्तोमो अत्र यन्मे नरः श्रुत्यं ब्रह्म चक्र ।  
 इन्द्राय वृष्णे सुमंखाय मह्यं सख्ये सखायस्तन्वे तनूभिः ११ ३२६०

एवेदेते प्रति मा रोचमाना अनेद्यः श्रव एषो दधानाः ।		
संचक्षया मरुतश्चन्द्रवर्णा अच्छान्त मे हृदयाथा च नूनम्	१२	
को न्वत्र मरुतो मामहे वः प्र यातन सखीरच्छा सखायः ।		
मन्मानि चित्रा अपिवातर्यन्त एषां भूत नवेदा म क्रतानाम्	१३	
आ यद् दुवस्याद् दुवसे न कारु—रस्माश्चक्रे मान्यस्य मेधा ।		
ओ षु वर्त मरुतो विप्रमच्छे—मा ब्रह्माणि जरिता वो अर्चत्	१४	
एष वः स्तोमो मरुत इयं गी—मन्द्धार्यस्य मान्यस्य कारोः ।		
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्	१५	३०६४

॥ ३६१ ॥ ( ऋ० १।१७।३-६ ) ( ३२६५-३२६८ ) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

स्तुतासो नो मरुतो मृळयन्तु—त स्तुतो मघवा शंभविष्ठः ।		
ऊर्ध्वा नः सन्तु कोम्या वना—न्यहानि विश्वा मरुतो जिगीषा	३	३०६५
अस्माद्गृहं तविषादीपमाण इन्द्राद् भिया मरुतो रेजमानः ।		
युष्मभ्यं हव्या निशितान्यासन् तान्यारे चक्रुमा मृळता नः	४	
येन मानासश्चितर्यन्त उस्मा व्युष्टिषु शवसा शश्वतीनाम् ।		
स नो मरुद्भिर्वृषभ श्रवो धा उग्र उग्रेभिः स्थविरः सहोदाः	५	
त्वं पाहीन्द्र सहीयसो नृन् भवा मरुद्भिरवयातहेळाः ।		
सुप्रकेतेभिः सासहिर्दधानो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्	६	३०६८

### ( ६ ) इन्द्रामरुतौ ।

॥ ३६२ ॥ ( ऋ० ८।१६।१४ )

( ३२६९ ) तिरश्चीराङ्गिरसो, गुतानो वा मारुतः । त्रिष्टुप् ।

द्वप्समपश्यं विषुणे चरन्त—मुपहरे नद्यो अंशुमत्याः ।		
नभो न कृष्णमवतस्थिवांस—मिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ	१४	३०६९

### ( ७ ) इन्द्रासोमौ ।

॥ ३६३ ॥ ( ऋ० २।३०।६ ) ( ३२७० ) गृत्समदः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

प्र हि क्रतुं वृहथो यं वनुथो रध्रस्यं स्थो यजमानस्य चोदौ ।		
इन्द्रासोमा युवमस्माँ अविष्ट—मस्मिन् भयस्थे कृणुतमु लोकम्	६	३०७०

॥ ३६४ ॥ ( ऋ० ६।७२।१-५ ) ( ३२७१-३२७५ ) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रासोमा महि तद् वां महित्वं युवं महानि प्रथमानि चक्रथुः ।		
युवं सूर्यं विविदथुर्युवं स्व—र्विश्वा तमांस्यहतं निदश्व	१	

इन्द्रासोमा वासयथ उपास—मुत् सूर्यं नयथो ज्योतिषा सह ।		
उप द्यां स्कम्भयुः स्कम्भनेना—ऽप्रथतं पृथिवीं मातरं वि	२	
इन्द्रासोमावाहिमपः परिष्ठां हथो वृत्रमनु वां द्यौरमन्यत ।		
प्राणींस्यैरयतं नदीना—मा संमुद्राणि पप्रथुः पुरुणि	३	
इन्द्रासोमा पक्रमामास्वन्त—र्नि गवानिद् दधथुर्वक्षणासु ।		
जगृभथुरनपिनद्धमासु रुशच्चित्रासु जगतीष्वन्तः	४	
इन्द्रासोमा युवमङ्गः तरुत्र—मपत्यसाच्चं श्रुत्यं रराथे ।		
युवं शुष्मं नर्यं चर्षणिभ्यः सं विव्यथुः पृतनापाहमुग्रा	५	३२७५

॥ ३६५ ॥ ( ऋ० १०।८९।५ ) ( ३२७६ ) रेणुर्वेश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

आपान्तमन्युस्तूपलप्रभर्मा धुनिः शिमीवाञ्छरुमाँ ऋजीषी ।		
सोमो विश्वान्यतमा वनानि नार्वाग्निन्द्रं प्रतिमानानि देभुः	५	३२७६

॥ ३६६ ॥ ( ऋ० १०।१२४।९ ) ( ३२७७ ) अग्निः ( सोमेन्द्रौ ) । त्रिष्टुप् ।

बीभत्सूनां सयुजं हंसमाहु—रुपां दिव्यानां सख्ये चरन्तम् ।		
अनुष्टुभमनु चर्चुर्यमाण—मिन्द्रं नि चिक्वुः कवयो मनीषा	९	३२७७

॥ ३६७ ॥ ( अथर्व० ८।४।१-२५ )

( ३२७८-३३०२ ) चातनः । जगती, ८-१४, १६-१७, १९, २२, २४ त्रिष्टुप्, २०; २३ भुरिक्, २५ अनुष्टुप् ।

इन्द्रासोमा तपंतं रक्षं उब्जतं न्यर्षयितं वृषणा तमोवृधः ।		
परां शृणीतमचितो न्योषितं हतं नुदथां नि शिशीतमत्त्रिणः	१	
इन्द्रासोमा समघशांसमभ्युघं तपुयस्तु चरुरग्निमाँ इव ।		
ब्रह्मद्विषं क्रव्यादे घोरचक्षसे द्वेषो धत्तमनवायं किमीदिने	२	
इन्द्रासोमा दुष्कृतो वृत्रे अन्त—रनारम्भणे तममि प्र विध्यतम् ।		
यतो नेषां पुनरेकेश्वनोदयत तद्दामस्तु सहसे मन्युमच्छवः	३	३२८०
इन्द्रासोमा वर्तयतं द्विवो वधं सं पृथिव्या अघशांसाय तर्हणम् ।		
उत्तक्षतं स्वर्धु पर्वतेभ्यो येन रक्षो वावृधानं निजूर्वथः	४	
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्पर्य—ग्नित्सेभिर्युवमश्महन्मभिः ।		
तपुर्वधेभिरजरेभिरत्त्रिणो नि पर्शानि विध्यतं यन्तु निस्वरम्	५	
इन्द्रासोमा परिं वां भूतु विश्वतं इयं मतिः कक्ष्याश्वेव वाजिनां ।		
यां वां होत्रां परिहिनोमि मेधये—मा ब्रह्माणि नृपती इव जिन्वतम्	६	

प्रति स्मरेथां तुजयद्विरेवै—हंतं द्रुहो रक्षसो भङ्गरावतः । इन्द्रासोमा दुष्कृते मा सुगं भूद्यो मा कदा चिदभिदासति द्रुहुः यो मा पाकेन मनसा चरन्त—मभिचष्टे अनृतेभिर्वचोभिः । आप इव काशिना संगृभीता असन्नस्त्वासंत इन्द्र वक्ता	७ ८	३२८५
ये पाकशंसं विहरन्त एवै—र्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधार्मिः । अहये वा तान्प्रददातु सोम आ वा दधातु निःकृतेरुपस्थे यो नो रसं दिप्सति पित्वो अग्ने अश्वानां गवां यस्तनूनाम् । रिपु स्तेन स्तेयकृद्भ्रमेतु नि प हीयतां तन्वाइ तनां च परः सो अस्तु तन्वाइ तनां च तिस्रः पृथिवीरधो अस्तु विश्वाः । प्रति शुष्यतु यशो अस्य देवा यो मा दिवा दिप्सति यश्च नक्तम् सुविज्ञानं चिक्रितुषे जनाय सच्चासच्च वर्चसी पस्पृधात । तथोर्यत्सत्यं यतरदृजीय—स्तदित्सोमोऽवति हन्त्यासंत न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम् । हन्ति रक्षो हन्त्यासद्रदन्त—मुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयात	९ १० ११ १२ १३	३२९०
यदि वाहमनृतदेवो अस्मि मोघं वा देवो अप्यूहे अग्ने । किमस्मभ्यं जातवेदो हृणीषे द्रोघवाचस्ते निःकृतं संचन्ताम् अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि यद्वि वायुस्ततप पूरुषस्य । अधा स वीरैर्दृशभिर्वि यूया यो मा मोघं यातुधानेत्याह यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह । इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेन विश्वस्य जन्तोरंधमस्पृदीष्ट प्र या जिगाति खर्गलेव नक्त—मपं द्रुहस्तन्वं । गूहमाना । वव्रमनन्तमव सा पदीष्ट ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षसं उपव्दैः वि तिष्ठध्वं मरुतो विश्वीइच्छत गृभायत रक्षसः सं पिंनष्टन । वयो ये भूत्वा पतयन्ति नक्तभि—र्ये वा रिपो दधिरे देवे अध्वरे प्र वर्तय द्विवोऽश्मानमिन्द्र सोमशितं मघवन्त्सं शिशाधि । प्राक्तो अपाक्तो अधरादुदुक्तोइ ऽभि जहि रक्षसः पर्वतेन एत उ त्ये पतयन्ति श्वयातव इन्द्रं दिप्सन्ति द्विप्सवोऽदाभ्यम् । शिशीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदृशनिं यातमर्चाः	१४ १५ १६ १७ १८ १९ २०	३२९५



इन्द्रो यातूनामभवत्पराशरो हविर्मथीनामभ्याऽविवांसताम् । अभीदु शक्रः परशुर्यथा वनं पात्रैव भिन्दन्सत एतु रक्षसः	२१	
उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् । सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं हृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र	२२	
मा नो रक्षो अभि नड्यातुमावदपोच्छन्तु मिथुना ये किमीदिनः । पृथिवी नः पार्थिवात्पात्वहंसोऽन्तरिक्षं द्विव्यात्पात्वस्मान्	२३	३३००
इन्द्रं जहि पुमांसं यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम् । विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते हृशन्तसूर्यमुच्चरन्तम्	२४	
प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रंश्च सोम जागृतम् । रक्षोभ्यो वधमस्यतमशानि यातुमञ्च्यः	२५ ×	३३०२

## ( ८ ) इन्द्राविष्णू ।

॥ ३६८ ॥ ( ऋ० १।१५५।१-३ )

( ३३०३-३३०५ ) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती ।

प्र वः पान्तमन्धसो धियायते महे शूराय विष्णवे चार्चत । या सानुनि पर्वतानामदाभ्या महस्तस्थतुरर्वतेव साधुना	१	
त्वेषमित्था समरणं शिमीवतोऽरिन्द्राविष्णू सुतपा वामुरुष्यति । या मर्त्याय प्रतिधीयमानमित् कृशानोरस्तुरसनामुरुष्यथः	२	
ता ईं वर्धन्ति महस्य पौंस्यं नि मातरा नयति रेतसे भुजे । दधाति पुत्रोऽवरं परं पितुर्नाम तृतीयमधि रोचने द्विवः	३	३३०५
॥ ३६९ ॥ ( ऋ० ६।६९।१-८ ) ( ३३०६-३३१३ ) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।		
सं वां कर्मणा समिषा हिंनोमीन्द्राविष्णू अपसस्पारे अस्य । जुषेथां यज्ञं द्रविणं च धत्तमरिष्टैर्नः पृथिभिः पारयन्ता	१	
या विश्वासां जनितारा मतीनामिन्द्राविष्णू कलशा सोमधाना । प्र वां गिरः शस्यमाना अवन्तु प्र स्तोमासो गीयमानासो अर्कैः	२	
इन्द्राविष्णू मदपती मदानामा सोमं यातं द्रविणो दधाना । सं वामञ्जन्वक्तुभिर्मतीनां सं स्तोमासः शस्यमानास उक्थैः	३	
आ वामश्वांसो अभिमातिषाह इन्द्राविष्णू सधमादो वहन्तु । जुषेथां विश्वा हवना मतीनामुप ब्रह्माणि शृणुतं गिरो मे	४	

इन्द्राविष्णु तत् पनयाय्यं वां सोमस्य मदं उरु चक्रमाथे ।		
अकृणुतमन्तारिक्षं वरीयो ऽप्रथतं जीवसे नो रजांसि	५	३३१०
इन्द्राविष्णु हविषा वावृधाना ऽग्राद्धाना नमसा रातहव्या ।		
घृतासुती द्रविणं धत्तमस्मे समुद्रः स्थः कलशः सोमधानः	६	
इन्द्राविष्णु पिबतं मध्वो अस्य सोमस्य दस्रा जठरं पृणेत्याम् ।		
आ वामन्धांसि मदिराण्यग्मन्नुप ब्रह्माणि शृणुतं हवं मं	७	
उभा जिग्यथुर्न परा जयेथे न परा जिग्ये कतरश्चनैनोः ।		
इन्द्रश्च विष्णो यदपस्पृधेथां त्रेधा सहस्रं वि तदैरयेथाम्	८	३३१३
॥ ३७० ॥ ( ऋ० ७।९९।४-६ ) ( ३३१४-३३१६ ) मैत्रावरुणिवसिष्ठः त्रिष्टुप् ।		
उरुं यजायं जक्रथुरु लोकं जनयन्ता सूर्यमुषासमग्निम् ।		
दासस्य चिद् वृषशिप्रस्यं माया जग्नथुर्नरा पृतनाज्येषु	४	
इन्द्राविष्णु हंहिताः शम्बरस्य नव पुरो नवतिं च श्रथिष्टम्		
शतं वर्चिनः सहस्रं च साकं हथो अप्रत्यसुरस्य वीरान्	५	
इयं मनीषा बृहती बृहन्तो रूक्रमा तवसां वर्धयन्ती ।		
ररे वां स्तोमं विदथेषु विष्णो पिबन्तमिषो वृजनेष्विन्द्र	६	३३१६

### ( ९ ) इन्द्राबृहस्पती ।

॥ ३७१ ॥ ( ऋ० ४।४९।१-६ ) ( ३३१७ ३३२४ ) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

इवं वामास्ये हविः प्रियमिन्द्राबृहस्पती । उक्थं मदश्च शस्यते	१	
अयं वां परिं पिच्यते सोमं इन्द्राबृहस्पती । चारुमदाय पीतये	२	
आ न इन्द्राबृहस्पती गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् । सोमपा सोमपीतये	३	
अस्मे इन्द्राबृहस्पती रयिं धत्तं शतग्विनम् । अश्वावन्तं सहस्रिणाम्	४	३३२०
इन्द्राबृहस्पती वयं सुते गीर्भिर्हवामहे । अस्य सोमस्य पीतये	५	
सोममिन्द्राबृहस्पती पिबतं वृशुषो गृहे । मादयेथां तदोकसा	६	

॥ ३७२ ॥ ( ४।५०।१०-११ ) त्रिष्टुप्, १० जगती ।

इन्द्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पते ऽस्मिन् यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू ।		
आ वां विशन्विन्दवः स्वाभुवो ऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यच्छतम्	१०	
बृहस्पत इन्द्र वर्धतं नः सचा सा वां सुमतिर्भूत्वस्मे ।		
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधी र्जजस्तमर्यो वनुषामरातीः	११	३३२४

॥ ३७३ ॥ ( ऋ० ७।९७-९८।१०, ७ ) ( ३३२५ ) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।  
 बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो विव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।  
 धृतं रयिं स्तुवते कीरये चिद् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७ ३३२५

॥ ३७४ ॥ ( ऋ० ८।९६।१५ )

( ३३२६ ) तिरश्चीरगङ्गिरसो, द्युतानो वा मारुतः । त्रिष्टुप् ।

अधं द्रुप्सां अंशुमत्यां उपस्थे धारयत तन्वं तिविषाणः ।  
 विशां अदेवीरभ्यां चरन्ती बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे १५ ३३२६

### (१०) देव-भूमि-बृहस्पतीन्द्राः ।

॥ ३७५ ॥ ( ऋ० ६।४७।२० ) ( ३३२७ ) गर्गो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

अगव्यति क्षत्रमागन्म देवा उर्वी सती भूमिरंहूरणाभूत् ।  
 बृहस्पते प्र चिकित्सा गर्विष्ठा वित्था मते जरित्र इन्द्र पन्थाम् २० ३३२७  
 ॥ ३७६ ॥ ( अथर्व- ७।५१।१ ) ( ३३२८ ) अङ्गिराः । त्रिष्टुप् ।

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चाद्दुतोत्तरस्माद्धरादघायोः ।  
 इंद्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु १ ३३२८  
 ॥ ३७७ ॥ ( अथर्व० २०।१३।१ ) ( ३३२९ ) जगती ।

इन्द्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पते ऽस्मिन्यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू ।  
 आ वां विशन्तिवन्दवः स्वाभुवोऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यच्छतम् १ ३३२९

### (११) इन्द्रापूषणौ ।

॥ ३७८ ॥ ( ऋ० ६।५७।१-६ ) ( ३३३०-३३३५ ) वार्हस्पत्यो भरद्वाजः । गायत्री ।

इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्यायं स्वस्तये । हुवेम वाजसातये १ ३३३०  
 सोममन्य उपासदुत पातवे चम्बोः सुतम् । करम्भमन्य ईच्छति २  
 अजा अन्यस्य वह्नयो हरी अन्यस्य संभृता । ताभ्यां वृत्राणि जिघ्रते ३  
 यद्विन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः । तत्र पूषाभवत् सचा ४  
 तां पूषणः सुमतिं वयं वृक्षस्य प्र वयामिव । इंद्रस्य चा रंभामहे ५  
 उत पूषणं युवामहे ऽभीशूरिव सारथिः । मह्या इंद्रं स्वस्तये ६ ३३३५

॥ ३७९ ॥ ( अथर्व० ६।३।१ ) ( ३३३६ ) अथर्वी । पथ्या बृहती ।

पातं न इंद्रापूषणा ऽदितिः पान्तु मरुतः । अपां नपात्सिंधवः सप्त पातन पातु नो विष्णुरुत द्यौः १३३३६

(१२) ऋणंचयेन्द्रौ ।

॥३८०॥ (ऋ० ५।३०।१२-१५) (३३३७-३३४०) वभ्रुरात्रेयः । त्रिष्टुप ।

भद्रमिदं रुशमा अग्ने अक्रन् गवां चत्वारि ददतः सहस्रा ।	
ऋणंचयस्य प्रयता मघानि प्रत्यग्रभीष्म नृतमस्य नृणाम्	१२
सुपेशसं माव सृजन्त्यस्तं गवां सहस्रं रुशमासो अग्ने ।	
तीवा इंद्रममन्दुः सुतासो ऽक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाः	१३
औच्छ्रत् सा राज्ञी परितक्म्या यां ऋणंचये राजनि रुशमानाम् ।	
अत्यो न वाजी रघुरज्यमानो बभ्रुश्चत्वार्यसनत् सहस्रा	१४
चतुः सहस्रं गव्यस्य पश्वः प्रत्यग्रभीष्म रुशमेष्वग्ने ।	
घर्मश्चित् तप्तः प्रवृजे य आसीदयस्मयस्तम्वादां विप्राः	१५ ३३४०

(१३) इन्द्र ऋभवश्च ।

॥३८१॥ (ऋ० ३।६०।५-७) (३३४१-३३४३) विश्वामित्रो गाथिनः । जगती ।

इंद्रं ऋभुभिर्वाजवद्भिः समुक्षितं सुतं सोममा वृषस्वा गर्भस्त्योः ।	
धियेषितो मघवन् द्वाशुषो गृहे सौधन्वनेभिः सह मत्स्वा नृभिः	५
इंद्रं ऋभुमान् वाजवान् मत्स्वेह नो ऽस्मिन् त्सर्वने शच्या पुरुष्टुत ।	
इमानि तुभ्यं स्वसराणि येमिरे व्रता देवानां मनुषश्च धर्मभिः	६
इंद्रं ऋभुभिर्वाजिभिर्वाजयन्निह स्तोमं जरितुरुपं याहि यज्ञियम् ।	
शतं केतेभिरिषिरेभिरायवे सहस्रणीथो अध्वरस्य होमानि	७ ३३४३

॥३८२॥ (ऋ० ८।९३।३४) (३३४४) सुकक्ष आङ्गिरसः । गायत्री ।

इंद्रं इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम् । वाजी ददातु वाजिनम्	३४ ३३४४
--	---------

(१४) इन्द्रोषसौ ।

॥३८३॥ (ऋ० ४।३०।९-११) (३३४५-३३४७) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

द्विवश्चिद् वा दुहितरं महान् महीयमानाम् । उषासमिन्द्र सं पिणक्	९ ३३४५
अपोषा अनसः सरत् संपिष्टादहं विभ्युषी । नि यत् सीं शिश्रथद् वृषा	१०
एतदस्या अनः शये सुसंपिष्टं विपाश्या । ससारं सीं परावतः	११ ३३४७

(१५) इन्द्राश्रौ ।

॥३८४॥ (ऋ० ४।३२।२३-२४) (३३४८-३३४९) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

कनीनकेव विद्रधे नवे द्रुपदे अर्भके । बभ्रू यामेषु शोभेते	२३
अरं म उषयाम्णे ऽरमनुषयाम्णे । बभ्रू यामेष्वसिधा	२४ ३३४९

## (१६) इन्द्रस्त्वष्टा ।

॥३८५॥ (ऋ० २।३२।२-३) (३३५०-३३५१) गृत्समदः शौनकः । जगती ।

मा नो गुह्या रिपं आधोरहन् दभन् मा न आभ्यो रीरधो दुच्छुनाभ्यः ।		
मा नो वि र्याः सख्या विद्धि तस्य नः सुम्नायता मनसा तत् त्वेमहं	२	३३५०
अहेळता मनसा श्रुष्टिमा वहं दुहानां धेनुं पिण्युषीमसश्चतम् ।		
पद्याभिगशुं वचसा च वाजिनं त्वां हिनोमि पुरुहूत विश्वहां	३	३३५१

## (१७) इन्द्रो गावश्च ।

॥३८६॥ (ऋ० ६।२८।२,८) (३३५२-३३५३) भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । जगती, ८ अनुष्टुप् ।

इन्द्रो यज्वने पृणते च शिक्षत्युपेद् दधाति न स्वं मुषायति ।		
भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम्	२	
उपेदमुपपचनमासु गोपूप पृच्यताम् । उप ऋषभस्य रेतस्युपन्द्र तव वीर्यं	८	३३५३

## (१८) इन्द्राकुत्सौ ।

॥३८७॥ (ऋ० ५।३१।९) (३३५४) अवस्युरात्रेयः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्राकुत्सा वहमाना रथेनाऽऽ वामत्या अपि कर्णे वहन्तु ।		
निः पीमञ्चो धमथो निः पधस्थां न्मघोनो हृदो वरथस्तमांसि	९	३३५४

## (१९) इन्द्रद्यावापृथिव्यः ।

॥३८८॥ (ऋ० १०।५२।१०) (३३५५) बन्धुःश्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गोपायनाः । त्रिष्टुप् (पंक्युत्तरा) ।

समिन्द्रेरय गार्मनङ्गाहं य आवहदुशीनराण्या अनः ।		
भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवि क्षमा रपो मा पु ते किं चनाममत्	१०	३३५५

## (२०) इन्द्रापर्वतौ ।

॥३८९॥ (ऋ० ३।५३।१) (३३५६) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः ।		
वीतं ह्यन्यार्यध्वरेषु देवा वर्धथां गीर्भिरिळ्या मदन्ता	१	३३५६

## (२१) इन्द्रः, सोमो, ब्रह्मणस्पतिर्दक्षिणा च ।

॥३९०॥ (ऋ० १।१८।४-५) (३३५७-३३५८) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

स घां वीरो न रिष्यति यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः । सोमो हिनोति मर्त्यम्	४	
त्वं तं ब्रह्मणस्पते सोम इन्द्रश्च मर्त्यम् । दक्षिणा पात्वंहसः	५	३३५८

## (२२) इन्द्राब्रह्मणस्पती ।

॥३०१॥ (ऋ० २।२४।१२) (३३५९) गृत्समदः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

विश्वं सत्यं मघवाना युवोरिदा—पंश्चन प्र भिनन्ति व्रतं वाम् ।

अच्छेन्द्राब्रह्मणस्पती हविर्नो ऽन्नं युजेव वाजिना जिगातम् १२ ३३५०

॥३०२॥ (ऋ० ७।९७।३,९) (३३६०-३३६१) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

तमु ज्येष्ठं नमसा हविर्भिः सुशेवं ब्रह्मणस्पतिं गृणीषे ।

इन्द्रं श्लोको महि दैव्यः सिषक्तु यो ब्रह्मणो देवकृतस्य राजा ३ ३३६०

इयं वां ब्रह्मणस्पते सुवृक्ति—ब्रह्मेन्द्राय वाजिणे अकारि ।

अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधी—र्जजस्तमर्या वनुषामरातीः ९ ३३६१

## (२३) दुन्दुभीन्द्रौ ।

॥३०३॥ (ऋ० ६।४७।३१) (३३६२) गगो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद् दुन्दुभिर्वावदीति ।

समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरा ऽस्मार्कमिन्द्र रथिनो जयन्तु ३१ ३३६०

## (२४) इन्द्रसूर्यादयः ।

॥३०४॥ (अथर्व० १९।७०।१) (३३६३) ब्रह्मा । गायत्री ।

इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम् । सर्वमार्युर्जीव्यासम् १ ३३६३

# इन्द्रदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

## ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

- [३] १।३।६ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
उन्द्रा य हि त्वुजान उप ब्रह्माणि हरिवः ।  
सुते दधिष्व नश्वन ।  
( २७०८ ) १०।१०४।६ ( अष्टको वैश्वामित्र । उन्द्र )  
उप ब्रह्माणि हरिवो हरिभ्यां सोमस्य याहि  
पातये सुतस्य ।
- [४] १।४।१ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
सुदुषामिव गोदुहे ।  
जुहुमसि ।  
( ५१८ ) ८।५२ ( वाल्गमिन्य ४ ) । ४ ( आयु काण्व । उन्द्र )  
सुदुषामिव गोदुहे जुहुमसि ।
- [६] १।४।३ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
विद्याम सुमतीनाम् ।  
( २६७८ ) १०।८९।१७ ( ऋण्वश्वामित्र । उन्द्र )  
विद्याम सुमतीना नवानाम् ।
- [७] १।४।४ यन्ते सन्विभ्य आ वरम् ।  
९।४।५२ ( अयाम्य आङ्गिरस । पवमान सोम )  
देवान् सन्विभ्य आ वरम् ।
- [९] १।४।६ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
स्थामदिन्द्रस्य शर्मणि ।  
८।४।५ ( त्रित आण्व । आदित्या )
- [११] १।४।८ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
प्रावो वाजषु वाजिनम् ।  
( १०८९ ) १।१७६।५ ( अगस्त्यो मन्त्रावरुण । उन्द्र )
- [१३] १।४।१० ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
यो रायोऽवनिर्महान्सुपारः सुन्वतः सखा ।  
तस्मा इन्द्राय गायत ।  
( १९७ ) ८।३२।१३ ( मेवातिथि काण्व । उन्द्र )  
यो रायोऽवनिर्महान्सुपारः सुन्वत सखा ।  
तमिन्द्रमभि गायत ।  
( १७ ) १।५।४ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
तस्मा इन्द्राय गायत ।
- [१४] १।५।१ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
इन्द्रमभि प्र गायत ।  
( २३९७ ) ८।९२।१ ( ध्रुतकक्ष मूकधो वा आङ्गिरसः । उन्द्र )
- [१५] १।५।२ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
पुरुतम पुरुणामीशानं वार्याणाम् ।  
इन्द्र सोमे सचा सुते ।  
( २०८८ ) ६।४।२९ ( अयुर्बाहस्पत्य । उन्द्र )  
पुरुतम पुरुणा ।  
१।२४।३ ( शुन अप आजार्गति कृत्रिमो देवगतो  
वैश्वामित्रो वा । गविता )  
ईशान वार्याणाम् ।  
( अग्नि १४२२ ) ८।७१।१३ ( मुर्दानि-पुरुमीकहावाङ्गि-  
रमौ, तयोर्वान्यतर । अग्नि )  
ईशे यो वार्याणाम् ।  
१०।९।५ ( त्रिशिरसन्वाङ्गि मिन्युर्वाप आम्बरीषो वा । आपः )  
ईशाना वार्याणां ।  
( ४७१ ) ८।४।२९ ( त्रिगोक काण्व । उन्द्र )  
इन्द्र सोमे सचा सुते ।
- [१७] १।५।४ ( १३ ) १।४।१०
- [१८] १।५।५ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये  
सोमासो दध्याशिरः ।  
( २४५१ ) ८।२३।२२ ( मूकध आङ्गिरस । उन्द्र )  
सुता इम उयन्तो यन्ति वीतये ।  
१।२३।७।२ ( पञ्चरूपो देवोदाभि । मित्रावरुणां )  
सोमासो दध्याशिरः ।  
५।५।१७ ( स्वग्यात्रेय । विश्वेदेवा )  
सोमासो दध्याशिरः ।  
( २२३८ ) ७।३२।४ ( वमिष्टो मन्त्रावरुण । उन्द्र )  
९।२२।३ ( अमित काश्यपो देवलो वा । पवमान सोम )  
९।६३।१५ ( निध्रुवि काश्यप । पवमानः सोम )  
९।१०।१।१२ ( मनु सावरुण । पवमानः सोम )
- [२१] १।५।८ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
त्वां सोमा अवीत्रधन्स्वामुक्था यतकनो ।  
त्वां वर्धन्तु नो गिरः ।  
( अग्नि १३६१ ) ८।४।१९ ( विरूप आङ्गिरस । अग्नि )  
त्वामग्ने नर्नाषिणस्त्वां हिन्वन्ति चित्रिभि ।  
त्वां वर्धन्तु नो गिरः ।

- [२३] १।५।१० ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
ईशानो यवया वधम् ।  
(२८१८) १०।१५२।५ ( शासो भारद्वाज । उन्द्र )  
वरीयो यवया वधम् ।
- [३०] १।७।३ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र )  
आ सूर्य रोहयद्विवि ।  
... ऐरयत् ।  
(२३९०) ८।८९।७ ( नमेष-पुरुमेधावादिगो । उन्द्र )  
ऐरय आ सूर्य रोहयो दिवि ।  
९।१०७।७ ( सप्तर्षयः । पवमान गोमः )  
आ सूर्य रोहयो दिवि ।  
(अभिः १७०६) १०।१५६।४ ( भेतुराज्ञेयः । अभि )  
आ सूर्य रोहयो दिवि ।
- [३१] १।७।४ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
उग्र उग्रामिरूतिभिः ।  
(१००४) १।१०९।५ ( पञ्चल्लपो देवादागिः । उन्द्र )  
उग्रामिरूतिभिः ।
- [३५] १।७।८ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र )  
ईशानो अप्रतिष्कृतः ।  
(९४३) १।८४।७ ( गौतमो राष्ट्रगणः । उन्द्र )  
ईशानो अप्रतिष्कृतः ।
- [३६] १।७।९ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र )  
य एवाश्र्वर्षीनां ।  
(१०८६) १।१७६।२ ( अगस्त्यो मन्त्रावरुणः । उन्द्र )
- [३७] १।७।१० ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र )  
हवामहे जनेभ्यः ।  
अस्माकमस्तु केवल ।  
(अभि १९१५) १।१३।१० ( मेधातिथि काण्व । त्वरा )  
ह्वये ।  
अस्माकमस्तु केवलः ।
- [४१] १।८।४ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
सासह्याम पृतन्यतः ।  
(३१०७) ८।४०।७ ( नाभाकः काण्व । उन्द्रामी )  
सासह्याम पृतन्यतो ।  
९।६१।२९ ( अमहीयुराङ्गिरसः । पवमान गोम )
- [४२] १।८।५ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र )  
द्यौर्न प्रथिता शव ।  
(५४४) ८।५६। ( बालगिन्यं ८ ) । १ ( प्रपत्रः काण्व । उन्द्र )
- [४४] १।८।७ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र )  
समुद्र इव पिन्वते ।

- (२९२) ८।१२।५ ( पर्वतः काण्वः । उन्द्र )
- [५०] १।९।३ स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे ।  
(अभिः ८६५) ५।१४।६ ( सतभंग आत्रेय । अभि )  
स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम् ।
- [५३] १।९।६ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
राये रमस्वतः ।  
तुविद्युन्न यशश्चत ।  
(अभि ५९९) ३।१६।६ ( उक्तोक्तः काण्व । अभि )  
यं राया भयमा गज मयोभुना तुविद्युन्न यशस्वता ।
- [५५] १।९।८ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र )  
अस्मे धेहि श्रवो वृद्ध ।  
(अभिः ८७) १।४४।२ ( प्रमथ्य काण्व । अभि अधिना, उपा )  
(६०९) ८।६५।९ ( प्रगाथ काण्व । उन्द्र )
- [५७] १।९।१० ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
इन्द्राय शूपमर्चति ।  
१०।९६।२ ( प्रगाथ काण्व । गर्वर्षिवाग्निन्द्र । परि )  
इन्द्राय शूप इविवन्मर्चति ।  
(२७७८) १०।१३३।२ ( मदा पञ्चवन । उन्द्र )
- [६१] १।१०।४ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र )  
ब्रह्म च नो वगो संनन्द यज्ञ च वर्धेय ।  
१०।१४।१६ ( अभिन्नापमः । विद्येदेवाः )  
ब्रह्म यज्ञ च वर्धेय ।
- [६२] १।१०।५ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र )  
उक्थमिन्द्राय शस्य ।  
(१७६४) ५।३९।५ ( अत्रिसोम । उन्द्र )
- [६४] १।१०।७ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । उन्द्र )  
इन्द्र त्वादातमिद्यशः ।  
कृणुष्व राधो अद्रिव ।  
(१३६९) ३।४०।६ ( वित्रामित्रो गांगिन । उन्द्र )  
इन्द्र त्वादातमिद्यशः ।  
(५८९) ८।६४।१ ( प्रगाथ काण्व । उन्द्र )  
कृणुष्व . . .
- [६५] १।१०।८ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । उन्द्र )  
ऋचायमाणमिन्वतः ।  
जेष स्वर्तीरपः ।  
(१०८५) १।१७६।१ ( अगस्त्यो मन्त्रावरुण । उन्द्र )  
ऋचायमाण इन्वति ।  
(३११०) ८।४०।१० ( नाभाकः काण्व । उन्द्रामी )  
तं शिशीता मृत्कृत्विगस्त्वेष स्पृशानमृगिमयम् ।



- उतो नु चिच्च ओजसा शुष्णस्याण्डानि भेदति  
जेपस्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे ॥  
(३१११) ८।४०।११ (नामाक. काण्व. । उन्द्राग्नी )  
तं शिशीता स्व वर सत्यं सश्वानमृन्वियम् ।  
उतो नु चिच्च ओहत आपडा शुष्णस्य भेदत्यज्ञैः  
स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे ॥  
[६७] १।१०।१० ( मयुञ्छन्दा वेद्यामित्रः । उन्द्र )  
वृषन्तमस्य हूमह ऊतिं ।  
(१७३८) ५।३५।३ ( प्रभवसुराङ्गिरसः । उन्द्र )  
वृषन्तमस्य हूमहे ।  
[७०] १।११।१ ( जेता माधुञ्छन्दसः । उन्द्र )  
रथीतमं रथीनां ।  
(४४९) ८।४५।७ ( त्रिजोक्त. काण्व. । उन्द्र )  
रथीतमो रथीनाम् ।  
[७१] १।११।२ ( जेता मा मुञ्छन्दसः । उन्द्र )  
जेतारमपराजितम् ।  
(अभिः ९१६) ५।२५।६ ( वसुधव आत्रेया । अभिः )  
१।११।८ ( जेता माधुञ्छन्दसः । उन्द्र )  
इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमा अनृषत ।  
(६२८) ८।७६।१ ( कुरुमुनि काण्वः । उन्द्र )  
इन्द्रमीशानमोजसा ।  
(३०६२) ६।६०।७ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उन्द्राग्नी )  
युवामिमेऽभि स्तोमा अनृषत ।  
१।१५।१ ( मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र. [ऋतुदेवता] )  
स्वा विशन्विन्वन्द्व. ।  
(२४१८) ८।९०।२२ ( श्रुतकक्षः सकक्षो वा  
आङ्गिरसः । उन्द्र. )  
आ स्वा ... ।  
[८०] १।१६।३ ( मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र )  
इन्द्रं प्रातर्हवामह इन्द्रं प्रयत्यध्वरं ।  
इन्द्र सोमस्य पीतये ।  
(१६०) ८।३।५ ( मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र )  
इन्द्रमिदेवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरं ।  
इन्द्रं सर्माके वनिनो हवामह इन्द्रं वनस्य सानये ।  
(१३८५) ३।४२।४ ( विश्वामित्रो गाथिनः । उन्द्र )  
इन्द्र सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे ।  
(४०८) ८।१७।१५ ( हरिभ्रिचिठि काण्वः । उन्द्र )  
इन्द्र सोमस्य पीतये ।  
(२४०१) ८।९०।५ ( श्रुतकक्षः सकक्षो वा आङ्गिरसः । उन्द्र )  
इन्द्र सोमस्य पीतये ।

- (९८६) ८।९७।१२ ( रेभः काश्यपः । उन्द्रः )  
इन्द्र सोमस्य पीतये ।  
९।१२।२ ( अभिनः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
इन्द्र सोमस्य पीतये ।  
[८१] १।१६।४ ( मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र )  
उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र ।  
(१३८०) ३।४०।१ ( विश्वामित्रो गाथिनः । उन्द्र )  
उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम् ।  
हरिभ्यां ।  
१।७।३ ( गार्हपत्य आत्रेयः । मित्रावरुणां )  
उप न सुतमा गत ।  
[८२] १।१६।५ ( मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र )  
आ गलुपेद सवन सुतम् ।  
(३००५) १।२१।४ ( मेधातिथिः काण्व. । उन्द्राग्नी )  
उपेद सवन सुतम् ।  
इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ।  
(३०६४) ६।६०।९ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उन्द्राग्नी )  
आ गच्छत नरेपेद सवनं सुतम् ।  
इन्द्राग्नी ।  
[८३] १।१६।६ उम सोमास इन्द्रव ।  
९।४६।३ ( अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
एते सोमास इन्द्रवः ।  
[८५] १।१६।८ ( मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र )  
वृत्रहा सोमपीतये ।  
(२४४९) ८।९३।२० ( मुकक्ष आङ्गिरसः । उन्द्र )  
[८६] १।१६।९ ( मेधातिथिः काण्व. । उन्द्र )  
मेमं न काममा पृण ।  
(५९४) ८।६४।६ ( प्रगावः काण्व. । उन्द्र )  
अग्माकं काममा पृण ।  
[६८८-६९१] १।२८।१-४ शुन जेप आजीगर्तिः स कृत्रिमौ  
विश्वामित्रो देवगतः । उन्द्र )  
उल्लुखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्लुलः ।  
[६९२] १।२९।१ ( शुन. जेप आजीगर्तिः । उन्द्र )  
अनाशस्ताह्व स्मसि ।  
आ तू न इन्द्र शंसय ।  
२।४१।१६ ( गुन्समदः शौनकः । सरस्वती )  
अप्रशास्ताह्व स्मसि प्रशाम्निम् ।  
[६९३] १।२९।२ ( शुन जेप आजीगर्तिः । उन्द्र )  
शिप्रिन् वाजानां पते ।  
आ तू न इन्द्र शंसय ।

- (२०६९) ६।४।१० ( द्रुमुवाहृम्पत्यः । उन्द्रः )  
इन्द्र वाजानां पते ।
- [७०५] १।३०।७ ( शुन शेष आजागर्गिः । उन्द्र )  
सखाय इन्द्रमृतये ।
- (४१७) ८।२।९ ( सोमार्गः काण्व. । उन्द्रः )
- [७०६] १।३०।८ ( शुन शेष आजागर्गिः । उन्द्र )  
सहस्रिणीभिरुतिभिः ।
- (२७८८) १०।१३।४ ( पर्वार्व ) मानवाना योवनाथः । उन्द्र )
- [७०७] १।३०।९ ( शुन शेष आजागर्गिः । उन्द्रः )  
अनु प्रन्तस्यौकसो । य ते पूर्व ॥
- (२३२०) ८।६९।१८ ( प्रियमन आङ्गिरसः । उन्द्र )  
अनु प्रन्तस्यौकसः । पूर्वा ।
- [७०८] १।३०।१० ( शुन शेष आजागर्गिः । उन्द्र )  
सखे वसो जरितुभ्यः ।
- (१४३९) ३।५।१६ ( विश्वामित्रो गार्थिनः । उन्द्रः )  
सखे वसो जरितुभ्यो वयो धाः ।
- (अभि १४१७) ८।७।१९ ( मुदार्ति-पुर्मार्कहावाङ्गिरसा  
तयार्वान्यतरः । अभिः )
- [७१५] १।३२।१ ( हिगण्यस्तृप आङ्गिरसः । उन्द्र )  
इन्द्रस्य तु वीर्याणि प्र वोच ।
- (१२१९) १।२।३ ( गुत्समद. शौनकः । उन्द्र )  
इन्द्रस्य वोचं प्र कृतानि वीर्यां ।
- [७१७] १।३२।३ ( हिगण्यस्तृप आङ्गिरसः । उन्द्रः )  
त्रिकटुकैष्वपिबस्सुतस्य ।  
अहश्रेनं प्रथमजामहीनाम् ।
- (११६२) २।१।१ ( गुत्समद. शौनकः । उन्द्रः )  
त्रिकटुकैष्वपिबस्सुतरयाग्य मदे अहिमिन्द्रो जघान ।
- [७१८] १।३२।४ आसूर्य जनयन्वामुषास ।  
(१९७२) ६।३०।५ साक सूर्य -- ।
- [७१९] १।३२।५ अहिः शयत उपपृक्पृथिव्याः ।  
(२६७५) १०।८९।१४ पृथिव्या आपृगमुया शयन्ते ।
- [७२६] १।३२।१२ ( हिगण्यस्तृप आङ्गिरसः । उन्द्र )  
अवासृजः सर्तवे सप्त मिन्धून् ।  
(११३३) २।१२।१२ ( गुत्समद. शौनकः । उन्द्रः )  
अवासृजत् सर्तवे -- ।
- [७२९] १।३२।१५ अराक्ष नेमि. परि ता वभव ।  
(अभिः ३१३) १।१४।१९ ( दाघतमा आंचल्यः । अभि )  
अराक्ष नेमिः परिभरजायथा ।
- [७३४] १।३३।५ प्र यद्वो हरिवः स्थातरुम् ।  
(१९९५) ६।४।३ एतं पिब हरिवः स्थातरुम् ।

- [७४१] १।३३।१२ ( हिगण्यस्तृप आङ्गिरसः । उन्द्रः )  
यावत्तरो मघवन यावदोजो ।  
(३२३७) ७।९।१४ ( नमिष्ठा मंत्रीवर्गिः । उन्द्रवाय )  
यावत्तरस्तन्वोऽ यावदोजो ।
- [७४३] १।३३।१४ ( हिगण्यस्तृप आङ्गिरसः । उन्द्रः )  
आवः कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन् प्रावो युध्यन्त  
वृषभ दशद्युम् ।  
(१०७३) १।१७।५ ( अगर्गो मेत्रावरुण । उन्द्र )  
वह कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन् ।  
(१९५०) ६।२६।४ ( भरद्वाजो वार्हगपताः । उन्द्रः )  
आवो युध्यन्तं वृषभ दशद्युम् ।
- [७४७] १।५।३ ( मव्य आङ्गिरसः । उन्द्रः )  
त्व गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरपोत् ।  
९।८६।२३ ( वृक्षियाऽजा । पवमान गोम. )  
गोम गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप ।
- [७५०] १।५।६ अग्न्योऽतिथिगवाय शम्बरम् ।  
(१०१७) १।१३०।७ अतिथिगवाय शम्बरम् ।
- [७५२] १।५।१८ गार्गो मय यजमानस्य चोदिता ।  
(२५९०) १०।४९।१ ( वेनुष्ठ उन्द्र. । उन्द्रः )  
अह मुध यजमानस्य चोदिता ।
- [७५७] १।५।१३ ( मव्य आङ्गिरसः । उन्द्रः )  
-- सुन्वते ।  
विश्वेत्ता ते सवनेषु प्रवाच्या ।  
(९९६) ८।१००।६ ( नेमा गार्गव । उन्द्रः )  
विश्वेत्ता ते सवनेषु प्रवाच्या . सुन्वते ।  
१०।३९।४ ( घोषा काश्रावना । अर्चिना )  
विश्वेत्ता वा सवनेषु प्रवाच्या ।
- [७६०] १।५२।१ उन्द्र ववृत्त्यामवसे सुवृक्तिभिः ।  
१।१६।१ ( अगर्गो मेत्रावरुण. । मन्त. )  
मय ववृत्त्यामवसे -- ।
- [७६१] १।५२।२ उन्द्रा यद्वृत्रमवधीन्नदीवृतम् ।  
(३१३) ८।१२।२६ यदा वृत्रनदीवृतं शकसा वृत्रिन्नवधी ।
- [७६४, ७७३] १।५२।५, १४ अभि (१४ नोन) स्ववृष्टि मदे  
भस्य युध्यतो ।
- [७७४] १।५२।१५ ( मव्य आङ्गिरसः । उन्द्रः )  
विश्वे देवासो अमदक्षनु स्वा ।  
(८४५) १।१०३।७ ( कुत्स आङ्गिरसः । उन्द्रः )
- [७८५] १।५३।११ ( मव्य आङ्गिरसः । उन्द्रः )  
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्रावीय आयुः  
प्रतरं दधानाः ।

- (अग्नि १६७३) १०।११५८ (उपमनुतो वाष्टिष्टव्य । अग्नि )  
 [७८८] १।५४।३ स्वक्षत्र यस्य मृतो धृषन्मनः ।  
 (१७३९) ५।३५ ४ स्वक्षत्र त धृषन्मनः ।  
 [७८९] १।५४।४ (मव्य आदित्यस्य । इन्द्रः)  
 त्व मित्रो बृहत् गानु कोपयो ऽव त्मना धृषता  
 शम्बरं भिनत् ।  
 (२१३८) ७ १८।२० (वसिष्ठो मन्त्रावरुणः । इन्द्रः)  
 आय त्मना बृहत् शम्बर भेत् ।  
 [७९६] १।५४।११ (मव्य आदित्यस्य । इन्द्रः)  
 रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरीन् राये ।  
 १०।६१।२२ (नागानोऽष्टो मानवः । विद्येदेवा )  
 — सूरीन् ।  
 [७९८] १।५५।२ (मव्य आदित्यस्य । इन्द्रः)  
 इन्द्रः सोमस्य पीतये तृपायते ।  
 (२९९) ८।१०।१० (पर्वत वण्य । इन्द्रः)  
 इन्द्रः सोमस्य पीतये ।  
 [८०३] १।५६।२ (मव्य आदित्यस्य । इन्द्रः)  
 समुद्र न सचरणे सनिष्यवः ।  
 ४।५५।६ (वामदेवो गौतमः । विद्येदेवाः)  
 [८०८] १।५६।४ इन्द्र मियकस्युषस न सूर्यः ।  
 ९।८४।२ (प्रजापानर्वाच्यः । पवमानः सोमः)  
 इन्द्रः सिषकस्युषस न सूर्यः ।  
 [८०९] १।५६।५ (मव्य आदित्यस्य । इन्द्रः)  
 अहन् वृत्र निरपामौञ्जो अर्णवम् ।  
 १।८५।९ (गौतमो राहृगणः । मन्तः)  
 अहन् वृत्र निरपामौञ्जदर्णवम् ।  
 [८६०] १।६१।५ अग्ना इतु ससिमिव श्रवस्या ।  
 ९।९६।१६ (पर्वतनो देवोदासि । पवमानः सोमः)  
 अग्नि वाज ससिरिव श्रवस्या ।  
 [८७३] १।६२।२ (नोधा गौतमः । इन्द्रः)  
 येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञा अर्चन्तो आदित्यस्यो  
 गा अविन्दन् ।  
 ९।७७।३९ (पराशरः शाकल्यः । पवमानः सोमः)  
 येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञा स्वविदो अग्नि  
 गा अदिसुण्णन ।  
 [८७४] १।६२।३ (नोधा गौतमः । इन्द्रः)  
 बृहस्पतिभिर्नदग्नि विदद्वाः ।  
 १०।६८।११ (अयारय आदित्यस्यः । बृहस्पति )  
 [८८३] १।६२।१२ (नोधा गौतमः । इन्द्रः)  
 शिक्षा शचीस्तव नः शचीवभिः ।

- (१३०) ८।२।१५ (मधार्निधिः काण्वः  
 प्रियमेधश्चादित्यस्यः । इन्द्रः )  
 शिक्षा शचीवः शचीभिः ।  
 [८९१] १।६३।७ (नोधा गौतमः । इन्द्रः)  
 यदो राजन वरिवः पूर्वे कः ।  
 (१५५३) ४।२१।१० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)  
 सम्राडदन्ता वृत्र वरिवः पूर्वे कः ।  
 [९००-९१६] १।८०।१-१६ अर्चन्ननु स्वराज्यम् ।  
 [९०५] १।८०।६ (गौतमो राहृगणः । इन्द्रः)  
 जिघ्रते वज्रेण शतपर्वणा ।  
 (२४८) ८।६।६ (वल्गुः काण्वः । इन्द्रः)  
 वज्रेण शतपर्वणा । शिरा विभद ॥  
 (६२९) ८।७६।२ (कुरुमुनिः काण्वः । इन्द्रः)  
 आभिर्नित्तरः ।  
 वज्रेण शतपर्वणा ।  
 (२३८६) ८।८९।३ (त्र्यम्ब-पुष्पेधार्वाङ्गस्य । इन्द्रः)  
 वृत्र हनति वृत्रा अतक्रतुर्नज्रेण शतपर्वणा ।  
 [९०७] १।८०।८ महत् इन्द्र वीर्यं ।  
 (५३९) ८।५५। (बालः ७) १ भर्गदिन्द्रस्य वीर्यम् ।  
 [९०८] १।८०।९ (गौतमो राहृगणः । इन्द्रः)  
 इन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् ।  
 (२३१२) ८।६९।९ (प्रियमेध आदित्यस्य । इन्द्रः)  
 [९०९] १।८०।१० महत्तदस्य पौंस्यं ।  
 (५८०) ८।६३।२ (प्रयागः काण्वः । इन्द्रः)  
 मनुषे तदस्य पौंस्यम् ।  
 [ ] १।८०।१० (गौतमो राहृगणः । इन्द्रः)  
 वृत्र जघन्वो असृजद् ।  
 (१५१५) ४।१८।७ (वामदेवो गौतमः अदितिः  
 ऋषिकः । इन्द्रः, वामदेवः )  
 ... असृजद्भि सिन्धून् ।  
 (१५२९) ४।१९।८ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)  
 [९२०] १।८१।५ आ प्रौ पाथिवं रजो ।  
 ६।६१।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सरस्वती )  
 आपमुषी पाथिवान्युरु रजो अन्तरिक्षम् ।  
 [ ' ] १।८१।५ (गौतमो राहृगणः । इन्द्रः)  
 न त्वावो इन्द्र कश्चन न जातो न जनिष्यते ।  
 (२२५७) ७।३२।२३ (वसिष्ठो मन्त्रावरुणः । इन्द्रः)  
 न त्वावो अन्यो दिव्यो न पाथिवो न जातो  
 न जनिष्यते ।

- [९२०] १।८।१।५ अति विश्व ववक्षिथ ।  
(८३५) १।१०२।८ अतीर्तं विश्व भुवन ववक्षिथ ।
- [९२३] १।८।१।८ अया नोऽविता भव ।  
१।९।१।९ ( गौतमो गृह्यगणः । गोमः )  
तामिनोऽविता भव ।
- [९२४] १।८।१।९ ( गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः )  
विश्व पुष्यन्ति वार्यम् ।  
अदाशुषां नेषा नो वेद आ भर ।  
(आमः ८०६) ५।६।३ ( वसुश्रुत आत्रेयः । आमः )  
विश्व —  
(२७७९) १०।१३३।२ ( मुदा. पैजवन । इन्द्रः )  
विश्वं पुष्यसि वार्यं ।  
(४५७) ८।४५।१५ ( त्रिगोक. काण्व । इन्द्रः )  
अदाशुरि ... ।  
तस्य नो वेद आ भर ।
- [९२५-२९] १।८।२।१-५ योजा त्विन्द्र ते हरी ।
- [९२६] १।८।२।२ ( गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः )  
विप्रा नविष्टया मती ।  
८।२५।२४ ( विश्वमना वेपथुः । मित्रावरुणा )
- [९२७] १।८।२।३ ( गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः )  
सुमंहश त्वा वयं ।  
१०।१५८।५ ( चक्षु गोर्थ । सूर्य )
- [९३१] १।८।२।१ अध्वानि प्रथमो गोषु गच्छति ।  
२।२५।४ ( गन्धमद. शानकः । ब्रह्मणर्षनिः )  
ग सन्वाभि प्रथमो गोषु गच्छति ।
- [९३८] १।८।४।२ ऋषाणा च स्तुतीरुप ।  
(३९७) ८।१७।४ ( दर्गिम्बिठिः काण्व. । इन्द्रः )  
अस्माकं सुहृतीरुप ।
- [९३९] १।८।४।३ ( गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः )  
अर्वाचीनं सु ते मनो प्रावा कृणोतु वसुना ।  
(१३३५) ३।३७।२ ( विश्वामित्रो गार्गीय । इन्द्रः )  
अर्वाचीनं सु ते मन ।  
इन्द्र कृणवन्तु ... ।
- [९४०] १।८।४।४ ( गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः )  
हममिन्द्र सुतं पिब ।  
(२७८) ८।६।३६ ( वन्मः काण्व । इन्द्रः )
- [९४३] १।८।४।७ ( गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः )  
वसु मर्ताय दाशुषे ।  
९।९।८।४ ( अम्बरीषो वार्षागिरिः ऋजिश्वा भारद्वाजश्च ।  
पवमानः गोमः )

- [९४३] १।८।४।७ ईशानो अप्रतिष्कृत उन्ने अरुग ।  
(३५) १।७।८ ( मधुच्छन्ता वश्वामित्र । इन्द्रः )  
ईशानो अप्रतिष्कृतः ।
- [९४५] १।८।४।९ ( गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः )  
सुतावो आविवासति ।  
(९७९) ८।९७।४ ( रेम. मययाः । इन्द्रः )  
सुतावो आ विवासति ।
- [९४६ ९४८] १।८।४।१०-१२ वस्वीरनु स्वराज्यम् ।
- [९४७] १।८।४।११ ( गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः )  
ता अस्य पृथानायुव. सोम श्रीणन्ति पृथय ।  
(२३०६) ८।६।९।३ ( पिथमेव आश्विनः । इन्द्रः )  
ता अस्य सन्दीप्या सोमं श्रीणन्ति पृथय ।
- [९४९] १।८।४।१३ जधान नवतीर्नव ।  
९।६।१।१ ( अमरायुर्गाऽमर्या । पवमानः गोमः )  
अवाहन्नवतीर्नव ।
- [९५०] १।८।४।१४ ( गौतमो गृह्यगणः । इन्द्रः )  
पर्वतेष्वपश्रितम् ।  
५।६।१।१९ ( श्यावायुः शत्रुघ्नः । र. ज्ञानतमः )
- [९५५] १।८।४।१९ न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्दिता ।  
(६२५) ८।६।६।३ ( जाल पायाय । इन्द्रः )  
नहि त्वदन्य पुद्गत कश्चन मघवन्नस्ति मर्दिता ।
- [९५७-९७१] १।१००।१-१५ (वार्षागिरिः ऋषाणाऽम्बराण-  
सहदेव-अथमान-मगधय । इन्द्रः )  
मरत्वान्नो भवम्विन्द्र ऊती ।
- [९६७] १।१००।११ ( ऋषाणाऽम्बराण० । इन्द्रः )  
अपा तोकस्य तनयस्य जेषे ।  
(२०५३) ६।४।१।८ ( ययुर्वर्हस्पतिः । इन्द्रः )
- [९६८] १।१००।१२ ( ऋषाणाऽम्बराण० । इन्द्रः )  
सहस्रचेताः शतनीथ ऋश्वा ।  
(आमः १६३१) १०।६।९।७ ( समिन्त्रो वा. ययु. । आमः )  
सहस्रन्तरा. शतनीथ ऋश्वा ।
- [९७१] १।१००।१५ आपश्चन शवसो अन्तमापु ।  
१।१६।७।९ ( अगम्या मेत्रावरुणः । मरुतः )  
आरात्ताश्चिच्छवसो अन्तमापु ।
- [९७५] १।१००।१९ ( ऋषाणाऽम्बराण० । इन्द्रः )  
(८३८) १।१०२।११ ( कुप्य आत्रेयः । इन्द्रः )  
विश्वहन्द्रो अधिवक्ता नो अम्बपरिहृता.  
सनुयाम वार्जम् ।  
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदिनिः सिन्धुः  
पृथिवी उत द्यौ ॥

- [ ८२३ ] १।१०१।१-७ मरुत्वन्त सख्याय हवामहे ।  
 [ ८२४ २५ ] १।१०१।८-९ त्वाया इविश्रुकुमा गत्यगधः ।  
 ( ९ ब्रह्मवाहः )  
 [ ८३१ ] १।१०२।४ ( कुम्भ आङ्गिरसः । इन्द्रः )  
 अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगं कृधि प्र अत्रणा  
 मघवन् वृण्या रुज ।  
 ( २०५३ ) ६।४४।१८ ( अयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )  
 मघवसिन्द्र प्रत्यः।स्मभ्यं महि वरिवः सुगं कः।  
 [ ८३५ ] १।१०२।८ अतीव विश्व भुवन ववाक्षिथ ।  
 ( ९२० ) १।८१।५ ( गोनमो गहृगणः । इन्द्रः )  
 अति विश्वं ववाक्षिथ ।  
 [ ' ] १।१०२।८ ( कुम्भ आङ्गिरसः । इन्द्रः )  
 अशत्रुसिन्द्र जनुषा सनादसि ।  
 ( ४२१ ) ८।२१।१३ ( मोभर्गि काण्वः । इन्द्रः )  
 अनापिरिन्द्र— ।  
 ( २७७९ ) १०।१३३।२ ( सुदाः पजवनः । इन्द्रः )  
 अशत्रुसिन्द्र जजिषे ।  
 [ ८३८ ] १।१०२।११ = ( ९७५ ) १।१००।१९  
 [ ८४० ] १।१०३।२ ( कुम्भ आङ्गिरसः । इन्द्रः )  
 स धारयत् पृथिवीं पप्रथश्च ।  
 ( ११६३ ) २।१५।२ ( गुत्समदः गौनकः । इन्द्रः )  
 [ ८४५ ] १।१०३।७ = ( ७७४ ) १।५२।१५  
 [ ८४७ ] १।१०४।१ ( कुम्भ आङ्गिरसः । इन्द्रः )  
 योनिष्ठ इन्द्र निषदे अकारि तमा ।  
 ( २१८६ ) ७।२४।१ ( वरिगणो मैत्रावरुणि । इन्द्रः )  
 — इन्द्र मदेने अकारि तमा ।  
 [ ८५४ ] १।१०४।८ ( कुम्भ आङ्गिरसः । इन्द्रः )  
 मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा मा ।  
 ७।४६।४ ( वरिगणो मैत्रावरुणिः । रुद्रः )  
 मा नो वधी रुद्र मा परा दा मा ।  
 [ ८५५ ] १।१०४।९ उरुव्याचा जठर आ वृषस्व ।  
 १०.९६।१३ ( वरुगाङ्गिरसः, सर्वहरिवो ऐन्द्रः । हरि )  
 मत्रा वृषजठर आ वृषस्व  
 [ १००६ ] १।१२९।२ पृक्षमस्यं न वाजिरम् ।  
 ( ३२१६ ) १।१३५।५ ( परुच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रवायु )  
 आजुमस्य— ।  
 [ १००९ ] १।१२९।३ ( परुच्छेपो देवोदासि । इन्द्रः )  
 मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः सुसृष्टीकाय  
 सप्रथः ।

- १।१३६।६ ( परुच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ )  
 मित्राय वोचं वरुणाय मीळहुषे सुसृष्टीकाय मीळहुषे ।  
 [ १००४ ] १।१२९।५ उग्रामिह्रमोतिभिः पश्य— ( ३१ ) १।७ ४  
 [ १००८ ] १।१२९।९ ( परुच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रः )  
 त्वं न इन्द्र राया परीणसा ।  
 अभिष्टिभिः सदा पाह्यभिष्टिभिः ।  
 ( १६४१ ) ४।३१।१२ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रः )  
 इन्द्र राया परीणसा ।  
 ( ९८१ ) ८।९७।६ ( रभः काश्यपः । इन्द्रः )  
 १०।२३।११ ( तान्वः पार्थः । विश्वेदेवा )  
 अभिष्टये सदा पाह्यभिष्टये ।  
 [ १०११ ] १।१३०।१ ( परुच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रः )  
 महिष्ठ वाजसातये ।  
 ८।४।१८ ( देवातिथिः काण्वः । पृषा )  
 अस्माकं — मव महिष्ठो वाजसातये ।  
 ( ८९९ ) ८।८८।६ ( नोधा गौतमः । इन्द्रः )  
 [ १०१६ ] १।१३०।६ ( परुच्छेपो देवोदासि । इन्द्रः )  
 — वाच — रथं न धीरः स्वपा अतक्षिषुः ।  
 ( अग्निः ७७७ ) ५।२।११ ( कुमार आत्रेयः, वृषो वा  
 जान उभौ वा, २ वृषो जानः । अग्निः )  
 — स्तोमं — रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् ।  
 ( १६८१ ) ५।२९।१५ ( गौर्विवातिः शाक्यः । इन्द्रः )  
 ब्रह्म ।  
 रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् ।  
 [ १०१७ ] १।१३०।७ अतिथिगवाय शम्बर ।  
 पश्य— ( ७५० ) १।५१।६  
 [ १०१८ ] १।१३०।८ ( परुच्छेपो देवोदासि । इन्द्रः )  
 न्यर्क्षोसानमोषति ।  
 ( २९६ ) ८।१२।९ ( पर्वतः काण्वः । इन्द्रः )  
 [ १०१९ ] १।१३०।९ ( परुच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रः )  
 उशना यत् परावतो ।  
 ८।७।२६ ( पुनर्वन्मः काण्वः । मरुत )  
 [ १०२१ ] १।१३१।१ = ( ३०९ ) ८।१२।२२  
 देवासो दधिरे पुरः ।  
 ( अग्निः ८७१ ) ५।१६।१ ( पुरुगत्रेयः । अग्निः )  
 मर्तासो दधिरे पुरः ।  
 ( ३१२ ) ८।१२।२५ देवास्त्वा दधिरे पुरः ।  
 [ १०२४ ] १।१३१।४ पुरो यद्विद् शारदीरवातिरः ।  
 ( १०७० ) १।१७४।२ = ( १८९३ ) ६।२०।१०  
 सप्त यत्पुरः शर्म शारदीर्वर्त ।

- [१०२८] १।१३२।१ (परुच्छेपो देवोदासि । इन्द्रः)  
इन्द्रस्वोता सासङ्ग्राम पृतन्यतो वनुयाम वनुष्यतः ।  
(३१०७) ८।४०।७ (नाभाकः काण्वः । इन्द्राग्नी )  
सासङ्ग्राम— ।
- [१०३१] १।१३२।४ यदङ्गिरोभ्योऽवृणोरप व्रजम् ।  
(७४७) १।५१।३ त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप ।
- [१०३२] १।१३२।५ (परुच्छेपो देवोदासि । इन्द्रः)  
धीतयो देवाँ अरुच्छा न धीतयः ।  
१।१३२।१ (परुच्छेपो देवोदासिः । विश्वेदेवा )
- [१०४०] १।१३३।७ (परुच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रः )  
सहस्रा वाज्यवृत्तः ।  
(१९७) ८।३२।१८ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः )
- [१०४१] १।१३९।६ (परुच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रः )  
सुमृत्कीको न आ गहि ।  
१।९।११ (गोतमो राङ्गण । गोमः )  
सुमृत्कीको न आ विथ ।
- [१०४२] १।१६७।१ सहस्रिण उप नो यन्तु वाजाः ।  
(२२०२) ७।२६।५ —नो माहि वाजान् ।
- [१०४७] १।१६९।५ ते पु णो मरुतो मृलयन्तु ।  
(३२६५) १।१७।१३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः ।  
मरुत्वानिन्द्रः)  
मृतासो नो मरुतो मृलयन्तु ।
- [१०५५] १।१७०।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
स्वमीशिषे वसुपते वसुनां ।  
(अग्निः १४१६) ८।७।१८ (सुदीनि-पुरुमीळहावाङ्गिर्मौ,  
तयोर्वाङ्ग्यतरः । अग्निः )  
स्वमीशिषे वसुनाम् ।
- [१०७०] १।१७४।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
मुध्रवाच सप्त यस्पुः शर्म शारदीर्दर्व ।  
(१८९३) ६।२०।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )  
सप्त यस्पुः शर्म शारदीर्दर्वेन् दामी पुरुकुत्साय ।
- [१०७३] १।१७४।५ = (७४३) १।३३।१४  
[ ] १।१७४।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
प्र सुरश्रकं बृहतादभीके ।  
(१४७८) ४।१६।१२ (वामदेवो गोतमः । इन्द्रः )
- [१०७६] १।१७४।८ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
ननमो वधरदेवस्य पीयोः ।  
(१२०५) २।१९।७ (गुत्समदः शौनकः । इन्द्रः )
- [१०७७] १।१७४।९ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
(१८९५) ६।२०।१२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

- स्वं धुनिरिन्द्र धुनिमतीर्कणोरपः सीरा न स्रवंतीः ।  
प्र यत्समुद्रमति शूर पशि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्मि ॥
- [१०८०] १।१७५।२ त्रया मदो वरेण्यः ।  
(१८२४) ८।४६।८ यत्ने मदो वरेण्य ।
- [१०८१] १।१७५।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
महावान दस्युमव्रतम् ।  
९।४।१२ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः गोमः )  
साह्यसो दस्युमव्रतम् ।
- [१०८३] १।१७५।५ शुक्तिमन्तमो हि ते मदो बुमिन्तम उत क्रतु  
(अग्निः २८०) १।२७।९ (परुच्छेपो देवोदासिः । अग्निः )
- [१०८४] १।१७५।६ =  
(१०९०) १।१७६।६ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मयद्वापो न  
तृप्यते बभूथ । तामनु स्वा निविद् जोहवीमि  
विद्यामेष वृजनं जीरदानुम् ॥
- [१०८५] १।१७६।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः । )  
इन्द्रमिन्दो वृषा विश ।  
९।२।१ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः गोमः )
- [ ] १।१७६।१ ऋवायमाण इन्वसि ।  
(६५) १।१०।८ —मिन्वतः ।
- [१०८६] १।१७६।२ = (३६) १।७।९  
[ ] १।१७६।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
यवं न चर्षकृद् त्रया ।  
१।२३।१५ (मेधातिथिः काण्वः । पवा )
- [१०८७] १।१७६।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
यस्य विश्वानि हस्तयोः ।  
(२०६७) ६।४५।८ (अयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )
- [१०८९] १।१७६।५ = (११) १।४।८
- [१०९०] १।१७६।६ = (१०८४) १।१७५।६
- [१०९१] १।१७७।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
राजा कृशीनां पुरुहन् इन्द्रः ।  
(१४९२) ४।१७।५ (वामदेवो गोतमः । इन्द्रः )
- [ ] १।१७७।१ युक्त्वा हरी त्रपणा याव्यर्वाञ्च ।  
(१७६८) ५।४०।४ युक्त्वा हरिभ्यामुप यागद्वौञ्च ।
- [१०९३] १।१७७।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
सुतः सामः परिषिक्ता मधूनि ।  
(२१८७) ७।२४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )
- [१०९५] १।१७७।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो ।

(१९४६) ६।२५।९ ( भग्टाजो वार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

एवा . . . इन्द्र ।

विद्याम ।

(२६७८) १०।८९।१७ ( रेणुवैश्वामित्रः । इन्द्रः )

एवा इन्द्र ।

विद्याम . . . ।

## ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[ ११०० ] २।११।२ ( गृत्समदः शानकः । इन्द्रः )

सजो मर्दिगिन्द्र परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वा ।

( २१६३ ) ७।२१।३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )

सोचिनवा अपमवः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वा ।

[ ११०४-५ ] २।११।४-५ ( गृत्समदः शानकः । इन्द्रः )

दासीर्विशः सूर्येण सख्याः ॥४॥

गहा हित गुह्य गृह्णहमासु ॥५॥

( १३६० ) ३।३९।६ ( विश्वामित्रो गांभिनः । इन्द्रः )

गुहा हिते— ।

( २८१० ) १०।१४।२ ( प्रयुचन्थः । इन्द्रः )

दासी— ।

गुहा— ।

[ ११११ ] २।११।११ ( गृत्समदः शानकः । इन्द्रः )

पिवापिबेदिन्द्र शूर सोम ।

( २४८० ) १०।२२।१५ ( विभद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा

यमुकृद्धा वामुकः । इन्द्रः )

[ ' ] २।११।११ मदन्तु त्वा मन्दिनः सुताम ।

१।१३।४ ( परुच्छेपो देवोदासि । वायु )

मदन्तु त्वा मन्दिनो वार्यविन्द्रवो ।

[ ११२१ ] २।११।२१- ( ११७१ ) २।१५।१० = ( ११८० ) २।१६।९

= ( ११८९ ) २।१७।९ = ( ११९८ ) २।१८।९

= ( १२०६ ) २।१९।९ = ( १२१६ ) २।२०।९

( गृत्समदः शानकः । इन्द्रः )

नून मा ते प्रति वर जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा

मघोनी ।

शिक्षा स्तोत्रभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वेदेम

विद्ये सुवीराः ॥

[ ११२४ ] २।१२।३ यो हन्वाहिमरिणान सप्त सिन्धुन् ।

( १५९९ ) ४।२८।१ = १०।६७।१२ ( अयाम्य आगिरमः ।

बृहस्पति )

अहन्नहिम ।

[ ११३३ ] २।१२।१० य मत् रश्मिर्बृषभस्तुविष्मान् ।

( अग्निः १७६० ) ४।५।३ ( वामोदेवो गांतमः । वैश्वानरोऽग्नि )

सहस्रेता बृषभस्तुविष्मान् ।

[ ' ] २।१२।१० - ( ७२६ ) १।३२।१०

[ ११३५ ] २।१२।१४ ( गृत्समदः शानकः । इन्द्रः )

पचन्त यः शसन्त यः शशमानमूती ।

( १२१० ) २।२०।३ ( गृत्समदः शानकः । इन्द्रः )

य शसन्त यः शशमानमूती पचन्त ।

[ ११३६ ] २।१२।१५ ( गृत्समदः शानकः । इन्द्रः )

वय न इन्द्र विश्वह प्रियास ।

८।४।१४ ( प्रगाथो घोरः काण्वः । गोम )

वय सोमस्य विश्वह प्रियास ।

[ ] २।१२।१५ सुवीरामो विदधमा वदेम ।

१।११।२५ ( कक्षावान आग्निजो देधतममः । अश्विनो )

[ ११३८-४० ] २।१३।२-४ यस्ताकृणोः प्रथम सास्युक्थयः ।

[ ११४५ ] २।१३।९ ( गृत्समदः शानकः । इन्द्रः )

एकस्य श्रुतो यद्ध चोदमाविथ ।

( १६७ ) ८।३।१२ ( मे यातिथिः काण्वः । इन्द्रः )

अग्री नो अस्य यद्ध पौरमाविथ ।

[ ११४९ ] २।१३।१३ =

( ११६१ ) २।१४।१२ ( गृत्समदः शानकः । इन्द्रः )

अस्मभ्य तद्वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते

वसव्यम् । इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु धन् बृहद्वेदेम

विद्ये सुवीराः ॥

[ ११५० ] २।१४।१ ( गृत्समदः शानकः । इन्द्रः )

अध्वर्यवो भग्नेन्द्राय सोमम् ।

१०।३०।१५ ( कवप णेक्य । आपः अपानपान वा )

अध्वर्यवः सुनुतेन्द्राय सोमम् ।

[ ११५१ ] २।१४।२ ( गृत्समदः शानकः । इन्द्रः )

अध्वर्यवो— ।

तस्मा एत भरत तद्वशार्थे ।

२।३७।१ ( गृत्समदः शानकः । द्रविणोदा कृतवध )

— अ वर्यवः— ।

तस्मा एत भरत तद्वशो दधि ।

[ ११५९ ] २।१४।१० ( गृत्समदः शानकः । इन्द्रः )

सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् ।

— दित्यन्तम् ॥

( १९०६ ) ६।२३।९ ( भग्टाजो वार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

सोमे— । — सुविम ॥

- [११६१] २।१४।१२ = (११४९) २।१३।१३  
 [११६२] २।१।१ = (७१७) १।३।२।३  
 [११६३] २।१।२ = (८४०) १।१०।३।२  
 [११६३-७०] २।१।२-९ सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार।  
 [११७१] २।१।१० = (११२१) २।११।२१  
 [११८०] २।१।१९ = (११२१) २।११।२१  
 [११८४] २।१।४ (गुणमदः शानक । इन्द्र )  
 अधा यो विश्वा भुवनाभि मजन्मना ।  
 रोदसी ।  
 १।११०।९ ( अथगणत्वगण त्रयदग्गु. पास्कुम्भ्य ।  
 पवमान सोम )  
 अध रोदसी दमा च विश्वा भुवनाभि मजन्मना ।  
 [११८६] २।१।६ - (११२१) २।१।२१  
 [११९२] २।१।३ ( गुणमदः शानक । इन्द्र )  
 हरी . ।  
 सो बहवो नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ।  
 (१३१६) ३।३।५ ( विश्वामित्रो गाथिन. । इन्द्र )  
 . मा हरी नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ।  
 यन्वता ।  
 [११९६] २।१।७ ( गुणमदः शानक । इन्द्र )  
 ब्रह्मा हरी ... ।  
 अस्मिन्नु सवने मादयस्व ।

- (२१८४) ७।२३।५ ( वसिष्ठो मंत्रावरुणिः । इन्द्र )  
 अस्मिन् ... ।  
 (२२१४) ७।२९।२ ( वसिष्ठो मंत्रावरुणिः । इन्द्र. )  
 ब्रह्मकृति हरिभिः ... ।  
 अस्मिन्नु षु सवने मादयस्वोप त्रद्वारिणि ।  
 [११९८] २।१।९ = (११२१) २।१।२१  
 [१२०५] २।१।७ = (११७६) १।१।७।८  
 [१२०७] २।१।९ = (११२१) २।१।२१  
 [१२१०] २।२।३ = (११३५) २।१।१।४  
 [१२१२] २।२।५ ( गुणमदः शानक । इन्द्र. )  
 अश्वस्य चिच्छिन्नश्चत् पूर्यारिणि ।  
 (अग्नि ९७२) ६।४।३ ( मग्नाजो वार्हगप्य. । अग्नि )  
 [१२१६] २।२।९ = (११२१) २।१।२१  
 [१२१८] २।२।२ ( गुणमदः शानक । इन्द्र )  
 अषाढहाय सहमानाय वेधसे ।  
 ७।४।१ ( वसिष्ठो मंत्रावरुणिः । इन्द्र. )  
 अषाढहाय— ।  
 [१२१९] २।२।३ = (७१५) १।३।२।१  
 [१२२३-२५] २।२।१-३ सैन सश्वदेवो देव सव्यमिन्द्र  
 सत्य इन्दुः ।  
 [१२२६] २।२।४ दिवि प्रवाच्यं कृतम् ।  
 १।१०।१।६ ( जित आच्यः, गुणम आदिगग्गो वा । विश्वेदेवा )  
 दिवि प्रवाच्यं कृतः ।

## ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

- [१२३९] ३।३।२ अथगण वृष्णे सवना कृतेमा ।  
 (अग्नि ४६६) ३।१।२० ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्निः )  
 महान्ति वृष्णे सवना कृतेमा ।  
 [१२५०] ३।३।१७ ( विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्र )  
 इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरुणि ।  
 (१२८९) ३।३।८ = (१३०६) ३।३।६  
 [१२५४] ३।३।१७ ( विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः )  
 ब्रह्मद्विषे तपुषि हतिमस्य ।  
 ६।५।३ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवा. )  
 [१२५७] ३।३।२० = (१४३२) ३।५।४  
 ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )  
 इमं काम मन्दया गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राघसा पप्रथश्वा  
 स्वयं चो मतिभिस्तुभ्य विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकामो  
 अकन ।

- [१२५८] ३।३।२१ ( विश्वामित्रो गाथिन. । इन्द्रः )  
 अस्मभ्यं सु मघवन् बोधि गोदाः ।  
 (१२७३) ३।३।१४ ( कुशिको षोषारथिः विश्वामित्रो  
 गाथिनो वा । इन्द्र. )  
 अस्माक सु मघवन् बोधि गोपाः ।  
 (१५६४) ४।२।१० ( वामदेवो गाँतमः । इन्द्र )  
 अस्माक सु मघवन् बोधि गोदाः ।  
 [१२५९] ३।३।२२ = (१२८१) ३।३।२२ = (१२९८)  
 ३।३।१७ = (१३११) ३।३।११ = (१३२२)  
 ३।३।११ = (१३३३) ३।३।११ = (१३५४)  
 ३।३।१० = (१३६३) ३।३।९ = (१३९८)  
 ३।४।८ = (१४२३) ३।४।५ = (१४२८)  
 ३।४।५ = (१४३३) ३।५।५ = (२६७९)  
 ६।८।१।६



= (२७१३) ३३१०४।११ ( विश्वामित्रोः गाथिनः । इन्द्रः )

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं  
वाजसातौ ।

भृश्वन्तमुग्रमूतये समस्तु प्रन्तं वृत्राणि संजितं  
धनानाम् ॥

[ १२६७ ] ३।३।१।८ ( कुञ्जिक षेपीरगिः विश्वामित्रो गाथिनो वा ।  
इन्द्रः )

प्रतिमानं विश्वावेदं जनिमा हन्ति शुष्णम् ।

( २७२९ ) १०।११।१।५ ( अष्टादशो वैरूप । इन्द्रः )

प्रतिमानं विश्वावेदं सवना हन्ति शुष्णम् ।

[ १२६८ ] ३।३।१।९ = ( अग्निः २०३ ) १।७२।९  
( पराशर जाकृत्यः । अग्निः )

[ १२७३ ] ३।३।१।१४ = ( १२५८ ) ३।३०।२१

[ १२७५ ] ३।३।१।१६ = ( अग्निः ४५१ ) ३।१।५  
( विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः )

[ १२७६ ] ३।३।१।१७ ( कुञ्जिक षेपीरगिः विश्वामित्रो गाथिनो वा ।  
इन्द्रः )

अनु कृष्णे वसुधितौ जिहति ।

४।४।३ ( वामदेवो गौतमः । वायुः )

वसुधितौ येमते ।

[ १२७७ ] ३।३।१।१८ = ( अग्निः ४६५ ) ३।१।१९  
( विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः )

[ १२८० ] ३।३।१।२१ ( कुञ्जिक षेपीरगिः विश्वामित्रो गाथिनो वा ।  
इन्द्रः )

गोपति ।

दुरश्च विश्वा अचूणोदप स्वाः ।

( २७७१ ) १०।१२०।८ ( वृत्रहिव आपर्वणः । इन्द्रः )

गोत्रस्य दुरश्च ।

[ १२८१ ] ३।३।१।२२ = ( १२५९ ) ३।३०।२२

[ १२८५ ] ३।३।१।२४ अमर्मणो मन्यमानस्य मर्म ।

( १७०९ ) ५।३।५ अमर्मणो विद्विदस्य मर्म ।

[ १२८८ ] ३।३।१।७ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )

इन्द्रं बृहन्तमृष्वमजरं युवानम् ।

( १८७२ ) ६।१९।२ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

इन्द्रं बृहन्त ।

६।४९।१० ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः )

बृहन्तमृष्वमजरं सुपुत्रम् — ।

[ १२८९ ] ३।३।१।८ = ( १२५० ) ३।३०।१३

[ " ] ३।३।१।८ दाधार यः पृथिवीं यामुतेमाम् ।

( १३०८ ) ३।३।८ समान यः ।

[ १२९२ ] ३।३।१।११ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )

अहन्नहिं परिशयानमर्षः ।

( १५२३ ) ४।१९।२ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रः )

अवासृजन्त ।

अहन्नहिं ।

( १९७१ ) ६।३०।४ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

अहन्नहिं परिशयानमर्षोऽवासृजो ।

[ १२९८ ] ३।३।१।७ = ( १२५९ ) ३।३०।२२

[ १३०२ ] ३।३।१।२ = ( अग्निः १७१९ ) १।५९।५

( नोधा गौतमः । अग्निवैश्वानरः )

[ १३०५ ] ३।३।१।५ = ( अग्निः १९५ ) १।७२।१

( पराशर जाकृत्यः । अग्निः )

[ १३०६ ] ३।३।१।६ = ( १२५० ) ३।३०।१३

[ १३०७ ] ३।३।१।७ = ( अग्निः १७२१ ) १।५९।५

[ १३०८ ] ३।३।१।८ = ( अग्निः २५१ ) १।७९।८

( गौतमो राष्ट्रगणः । अग्निः )

[ " ] ३।३।१।८ = ( १२८९ ) ३।३।८

[ १३११ ] ३।३।१।११ = ( १२५९ ) ३।३०।२२

[ १३१२ ] ३।३।१।२ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )

याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छ ।

... इन्द्र ... ।

( २१८३ ) ७।२।३ ( वमिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )

इन्द्र ।

याहि ... ।

[ १३१५ ] ३।३।१।४ = ( अग्निः ५७३ ) ३।२९।१६

( विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः )

[ १३१६ ] ३।३।१।५ = ( ११९२ ) २।१८।३

[ १३१७ ] ३।३।१।६ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )

अस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्या ।

१०।१४।५ ( यमो वैवस्वतः । यमः )

... निषद्या ।

[ १३२२ ] ३।३।१।११ = ( १२५९ ) ३।३०।२२

[ १३२४ ] ३।३।१।२ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )

इन्द्रं पिव वृषधूतस्य वृष्णः ।

( १३९७ ) ३।४३।७ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )

[ १३२९ ] ३।३।१।७ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )

समुद्रेण सिन्धवो यादमाना इन्द्राय सोमं

सुषुतं भरन्तः ।

( १८७५ ) ६।१९।५ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

समुद्रे न सिन्धवो यादमानाः ।

- १०३०१३ ( कवच ऐल्पः । आपः अपानपात्वा )  
 इन्द्राय सोम सुषुतं भरमती ।  
 [१३३३] ३३३११ = (१२५९) ३३३०२२  
 [१३३५] ३३३०२ = (९३९) १८४३  
 [१३३८] ३३३०५ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र )  
 इन्द्रं वृत्राय हन्तवे ।  
 (३०९) ८११२२ ( पवन काण्वः । इन्द्र )  
 ९१६१२२ ( अमहीयुगाङ्गिरसः । पवमान सोमः )  
 [१३४१] ३३३०८ पाहि । इन्द्र सोमं शतक्रतो ।  
 (६३४) ८१७६७ इन्द्र ... पिवा सोमं ।  
 [१३४४] ३३३०११ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र )  
 अर्वावतो न आ गच्छथो शक्र परावत ।  
 इन्द्रेह तत आ गहि ।  
 (१३७१) ३३४०८ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र )  
 अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन ।  
 (१३७२) ३३४०९  
 परावतमर्वावतम् ।  
 इन्द्रेह तत आ गहि ।  
 [१३५२] ३३३८८ हिरण्ययीममति यामशिश्नेत् ।  
 ७३८११ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सविता )  
 [१३५४] ३३३१० = (१२५९) ३३३०२२  
 [१३६०] ३३३९६ = (११०५) २११५  
 [१३६३] ३३३९९ = (१२५९) ३३३०२२  
 [१३६७] ३३४०४ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र )  
 इन्द्र सोमा. सुता इमे ।  
 (१३८६) ३३४०५ इन्द्र सोमाः सुता इमे ।  
 [१३६९] ३३४०६ = (६४) ११०१७  
 [१३७१] ३३४०८ = (१३४४) ३३३०११  
 [१३७२] ३३४०९ = (१३४४) ३३३०११  
 [१३७४] ३३४१२ = (अग्नि. १९१०) ११३५  
 [१३७८] ३३४१६ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र ) =  
 (२०८६) ६१४५२७ ( अयुर्वाहस्पत्यः । इन्द्र )  
 स मन्द्रस्वा खन्धसो राधसे तन्वा महे ।  
 न स्तोतारं निदे कर. ।  
 [१३७९] ३३४१७ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र )  
 वयमिन्द्र स्वायवो । वसो ।  
 (२२६६) ७३११४ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्र )  
 वयमिन्द्र स्वायवो । वसो ।  
 (२७८३) १०१३३६ ( सुदाः पञ्चवन । इन्द्र )  
 वयमिन्द्र स्वायवः । ।

- [१३८१] ३३४१९ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र )  
 वहतामिन्द्र केशिना ।  
 (३९५) ८११७२ ( इरिम्बिाठः काण्वः । इन्द्र )  
 [१३८२] ३३४२१ = (८१) ११६१४  
 [१३८५] ३३४२४ = (८०) ११६३  
 [१३८६] ३३४२५ = (१३६७) ३३४०४  
 [१३८७] ३३४२६ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र )  
 विद्या हि त्वा धनजय ।  
 अधा ते सुस्रमीमहे ।  
 (४५५) ८१४५१३ ( त्रियोक काण्वः । इन्द्र )  
 विद्या .. ।  
 (अग्निः १३८८) ८१७५१६ ( विष्प आङ्गिरसः । अग्निः )  
 विद्या हि.. ।  
 अधा ते सुस्रमीमहे ।  
 (२३७४) ८१९८११ ( वृमव आङ्गिरसः । इन्द्र )  
 [१३८९] ३३४२८ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र )  
 सोम चोदामि पीतये ।  
 (२२९७) ८१६८७ ( पियमथ आङ्गिरसः । इन्द्र )  
 इन्द्र चोदामि पीतये ।  
 [१३९३] ३३४३३ इन्द्र देव हरिभिर्याहि तूयम् ।  
 (२२१४) ७३२९२ अर्वाचानो हरिभिः— ।  
 [१३९६] ३३४३६ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र )  
 आ त्वा ब्रह्मन्तो हरयो युजाना वहन्तु ।  
 (२०५४) ६१४४१९ ( शयुर्वाहस्पत्यः । इन्द्र )  
 आ त्वा हरयो वृषणो युजाना ।  
 वहन्तु ।  
 [१३९७] ३३४३७ = (१३२४) ३३३१२  
 [१३९८] ३३४३८ = (१२५९) ३३३०२२  
 [१३९९] ३३४४१ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र )  
 जुषाण इन्द्र हर्गभिर्न आ गहि ।  
 ८१३१३३ ( नागद काण्व । इन्द्र )  
 इन्द्र सप्तभिर्न ।  
 [१४०२] ३३४४४ = १४९१४ ( प्रस्कण्वः काण्वः । उषा )  
 [१४१०] ३३४६२ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र )  
 एको विश्वस्य भुवनस्य राजा जनान् ।  
 (२०३४) ६३३६४ ( नरो भारद्वाजः । इन्द्र )  
 जनानामेको— ।  
 [१४१५] ३३४७२ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र )  
 सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा  
 शूर विद्वान् ।

- (१४५२) ३।५२।७ अपपमद्भिः सगणो मरुद्भिः ।  
 [१४१६] ३।४७।३ ( विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः )  
 पाहि सोममिन्द्र देवेभि सखिभि सुतं नः ।  
 (१४४१) ३।५१।८ पाहि सोमं मरुद्भिरिन्द्र सखिभिः  
 सुत नः ।  
 [१४१८] ३।४७।५ ( विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः ) =  
 (१८८१) ६।१९।११ ( भग्द्राजो बार्हस्पत्य । इन्द्रः )  
 मरुवन्तं वृषभ वावृधानमकवारि दिव्य शासमिन्द्रम् ।  
 विश्वासाहमवसे नूतनाथोम्र सहोदामिह त हुवेम ॥  
 [१४२२] ३।४८।४ ( विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः )  
 यथावशं तन्व चक्र एषः ।  
 ७।१०।१३ ( वामिष्टो मैत्रावरुणः । [ व्राष्टकामः ]  
 कुमार आंग्रयो वा । पञ्जन्य )  
 [१४२३] ३।४८।५ = (१२५९) ३।३०।२२  
 [१४२८] ३।४९।५ = (१२५९) ३।३०।२२  
 [१४३०] ३।५०।२ ( विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः )  
 हरयः सर्गप्र पिबा त्वऽस्य सुपुतस्य चारोः ।  
 (२२१३) ७।२९।१ ( वामिष्टो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
 . हरिवः ।  
 पिबा ।  
 [१४३२] ३।५०।४ = (१२५७) ३।३०।२०  
 [१४३३] ३।५०।५ = (१२५९) ३।३०।२२  
 [१४३८] ३।५१।५ ( विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः )  
 पूर्वार्ग्य निष्पिधो मत्स्येषु ।  
 (२०४६) ६।४४।११ ( ज्येष्ठाहस्पत्य । इन्द्रः )  
 पूर्वाष्ट इन्द्र निष्पिधो जनेषु ।  
 [१४३९] ३।५१।६ = (७०८) १।३०।१०  
 [१४४१] ३।५१।८ = (१४१६) ३।४७।३  
 [१४४३] ३।५१।१० ( विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः )  
 सुतं . ।  
 पिबा त्वऽस्य गिर्वणः ।  
 (११२) ८।१२।६ ( मधार्तिथि-मैत्र्यातिथा काण्व । इन्द्रः )  
 पिबा त्वऽस्य गिर्वणः सुतस्य ।  
 [१४४६] ३।५२।१ ( विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः )

### ऋग्वेदस्य चतुर्थ मण्डलम् ।

- [१४७१] ४।१६।५ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रः )  
 उभे भा पप्रौ रोदसी महिष्वा ।  
 ३।५४।१५ ( प्रजापतिवैश्वामित्रः, प्रजापतिवान्यो वा ।  
 विश्वेदेवाः )

- धानावन्त करम्भिनमपूपवन्तमुक्थिनम् ।  
 (१७८४) ८।११।२ ( अपाला आत्रेयी । इन्द्रः )  
 [१४४८] ३।५२।३ ( विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः )  
 (१६६०) ४।३२।१६ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रः )  
 जोषयासे गिरश्च न । वधूयुरिव योषणाम् ।  
 ३।६२।८ ( विश्वामित्रो गाथिनः । प्रषा )  
 जुषस्व गिरं । वधूयुरिव योषणाम् ।  
 [१४५२] ३।५२।७ = (१४१५) ३।४७।२  
 [१४५५] ३।५३।३ ( विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः )  
 एदं बर्हिर्यजमानस्य सीदा ।  
 (१२२४) ६।२३।७ ( भग्द्राजो बार्हस्पत्य । इन्द्रः )  
 [१४५७-५८] ३।५३।५-६ यत्रा रथस्य बृहतो निधान ।  
 [१४५९] ३।५३।७ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )  
 .. अंगिरसो ... दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।  
 ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ।  
 १०।६७।२ ( अयाम्य आगिर्यम् । बृहस्पतिः )  
 दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।  
 अंगिरसो  
 ७।१०।३।१० ( वामिष्टो मैत्रावरुणः । मण्डकाः । पञ्जन्यरतुनि-  
 महृष्टा )  
 ददतः शतानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ।  
 [१४६४] ३।५३।१२ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )  
 य इमे रोदसी उभे ।  
 (२५२) ८।६।१७ ( वन्य काण्व । इन्द्रः )  
 रोदसी मही ।  
 ९।१८।५ ( अमित काश्यपो देवलो वा । पवमानः गौतमः )  
 रोदसी मही ।  
 [१४६५] ३।५३।१३ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )  
 ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे ।  
 (१७९०) ८।२४।१ ( विश्वमना वेथव । इन्द्रः )  
 [ ] ३।५३।१३ ( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )  
 करदिवः सुराधसः ।  
 १।२३।६ ( मधार्तिथि काण्व । मित्रावरुणो )  
 करतां न. सुराधसः ।

- [१४७२] ४।१६।६ विश्वानि शक्रा नर्याणि विद्वान् ।  
 (२१६४) ७।२१।४ अपामि विश्वा ।  
 [ ' ] ४।१६।६ = (अग्निः ६४१) ४।१।१५  
 ( वामदेवो गौतमः । अग्निः )

- [१४७८] ४।१६।१२ = (१०७३) १।१७४।५  
 [१४८६] ४।१६।२० ब्रह्माकर्म भृगवो न रथम् ।  
 १०।३९।१४ (घोषा काक्षावता । अश्विनौ )  
 अतक्षाम भृगवो ... ।  
 [१४८७] ४।१६।२१ = (१५०८) ४।१७।२१  
 ( वामदेवो गौतमः । इन्द्र. ) =  
 (१५३२) ४।१९।११ = (१५४३) ४।२०।११ =  
 (१५५४) ४।२१।११ = (१५६५) ४।२२।११ =  
 (१५७६) ४।२३।११ = (१५८७) ४।२४।११  
 नृ द्युत इन्द्र नू गृणान इष जरित्रे नद्योऽ न पीपेः ।  
 अकारिते हरिवो ब्रह्म नव्य धिया स्याम रथ्यः सदासाः ।  
 ४।५६।४ ( वामदेवो गौतमः । यावापृथिवी )  
 नू ।  
 धिया स्याम रथ्य सदासाः ।  
 [१४८८] ४।१७।१ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्र )  
 सृजः सिन्धूरहिना जग्रसानान् ।  
 (२७३३) १०।११।१९ ( अष्टाष्टो वैष्णवः । इन्द्र. )  
 [१४९०] ४।१७।३ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रः )  
 वधीद् वृत्रं वज्रेण मन्दसानः ।  
 (२५२७) १०।२८।७ ( वसुकृ कृपिः । इन्द्र )  
 वधी वृत्र वज्रेण मन्दसानः ।  
 [१४९२] ४।१७।५ = (१०९१) १।१७७।१  
 [१४९४] ४।१७।७ न्व प्रति प्रवत आशयानमहि वज्रेण  
 मघवन् वि वृश्च ।  
 (१५२४) ४।१९।३ सत प्रति प्रवत आशयानमहि  
 वज्रेण वि णिणा अपर्वन ।  
 [१५०१] ४।१७।१४ त्वचो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।  
 (अग्नि. ६३७) ४।१।११ ( वामदेवो गौतमः । अग्नि. )  
 महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।  
 [१५०३] ४।१७।१६ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रः )  
 गन्धन्त इन्द्र सख्याय विप्रा भश्चायन्तो वृषण वाजयन्त ।  
 (२७७५) १०।१३।३ ( मुर्कतिः काक्षावत । इन्द्रः )  
 [१५०८] ४।१७।२१ = (१४८७) ४।१६।२१  
 [१५१२] ४।१८।४ नही न्वस्य प्रतिमानमस्ति ।  
 (१८६७) ६।१८।१२ नास्य शत्रुर्न प्रतिमानमस्ति ।  
 [१५१३] ४।१८।५ आ रोदसी अपृणाजायमानः ।  
 (अग्निः ४८१) ३.६।२ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
 आ रोदसी अपृणा जायमानः ।  
 [१५१५] ४।१८।७ = (९०९) १।८०।१०  
 [१५१९] ४।१८।११ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रः )  
 दै० [इन्द्रः] ३०

- वृत्रमिन्द्रो.. हनिष्यन्मस्ये विष्णो वितर वि क्रमस्व ।  
 (९९९) ८।१००।१२ ( नेमो भार्गव । इन्द्र )  
 सस्ये विष्णो वितर वि क्रमस्व ।  
 हनाव वृत्र... ।  
 [१५२३] ४।१९।२ = (१२९२) ३।३०।११  
 [१५२४] ४।१९।३ = (१४९४) ४।१७।७  
 [१५२६] ४।१९।५ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्र )  
 त्व वृत्रो अणिण इन्द्र मिन्धन् ।  
 (३१५७) ४।४२।७ ( त्रमदग्य पौत्रकुम्भ्य । इन्द्रा इम्भ्या )  
 [१५२९] ४।१९।८ = (९०९) १।८०।१०  
 [१५३२] ४।१९।११ = (१४८७) ४।१६।२१  
 [१५३५] ४।२०।३ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्र. )  
 पुरो दधत मनिष्यमि क्रतु न ।  
 (१७०२) ५।३१।११ ( अवगुगत्रेय. । इन्द्र )  
 [१५३६] ४।२०।६ उद्वेव कोश वसुना न्यृष्टम् ।  
 (२५४७) १०।४२।२ कोश न पर्ण वसुना ।  
 [१५४३] ४।२०।११ = (१४८७) ४।१६।२१  
 [१५५३] ४।२१।१० = (८९१) १।६३।७  
 [ ] ४।२१।१० ( वामदेवो गौतमः । इन्द्र )  
 भक्षीय तद्वसो दैव्यस्य ।  
 ५।५७।७ ( ग्यावाश्व आत्रेय । मरुत. )  
 भक्षीय वोऽवसो दैव्यस्य ।  
 [१५५४] ४।२१।११ = (१५४३) ४।२०।११  
 [१५५७] ४।२२।३ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्र )  
 महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः ।  
 (२०१४) ६।३०।४ ( मुनेत्रो भार्गव. । इन्द्र )  
 [१५५९] ४।२२।५ = (७५७) १।५१।१३  
 [१५६३] ४।२२।९ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्र )  
 जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्य ।  
 (२१९४) ७।२५।३ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्र )  
 [१५६४] ४।२२।१० = (१२५८) ३।३०।२१  
 [१५६५] ४।२२।११ = (१४८७) ४।१६।२१  
 [१५६८] ४।२३।४ = (३२६२) १।१६।१३  
 [१५७६] ४।२३।११ = (१४८७) ४।१६।२१  
 [१५७९] ४।२४।३ रिषिकवांसस्तन्वः कृण्वत ग्राम ।  
 (अग्नि १९९) १।७७।५ ( पराशर आक. य. । अग्नि. )  
 कृण्वत स्वाः ।  
 [ " ] ४।२४।३ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रः )  
 वि ह्यन्ते यर्माके ।  
 उभयासो नरस्तोकस्य तनयस्य सासौ ।

- (३१८०) ७।८२।९ (वासिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)  
हवन्त उभये स्पृष्टि नरस्तोकस्य तनयस्य सातिषु ।
- [१५८७] ४।२४।११ = (१४८७) ४।१६।२१
- [१५९१] ४।२५।४ ( वामदेवो गौतम । इन्द्रः )  
ज्योक्पश्यात् सूर्यमुच्चरन्तम् ।  
य इन्द्राय सुनवामेत्याह ।  
६।५।२।५ ( ऋजिदवा भारद्वाज. । विश्वेदेव. )  
पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।  
(३३०१) ७।१०४।२४ (वासिष्ठो मैत्रावरुणि ।  
(रक्षोहर्णा) इन्द्रामे मों)  
मा ते इशान्सूर्यमुच्चरन्तम् ।  
१०।५९।४ ( वन्धु. श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुगोपायना. ।  
निर्ऋतिः सोमश्च )  
पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।  
१०।५९।६ ( वन्धु. श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुगोपायना. ।  
अमुनाति. )  
ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तम् ।  
(१७५०) ५।३७।१ ( अग्निभोमः । इन्द्रः )  
य इन्द्राय सुनवामेत्याह ।  
[१५९२] ४।२५।५ उर्वम्मा अदितिः शर्म यंसत् ।  
१।१०७।२ ( कुन्स आङ्गिरसः । विश्वेदेवा. )  
आङ्गिर्यना अदिति शर्म यंसत् ।  
१५९७] ४।२६।२ मम देवामो अनु केतमायन् ।  
(अग्नि. १५२६) १०।६।७ (त्रित आण्यः । अग्निः)  
न ते देवामो ।  
१६०४] ४।२९।१ ( वामदेवो गौतम । इन्द्र )  
तिरश्चिदर्यः सवना पुन्यि ।  
(६०४) ८।६६।१२ (कलि पाणाय. । इन्द्र )  
तिरश्चिदर्यः सवना वमो गहि ।  
[१६२५] ४।३०।२० ( वामदेवो गौतम । इन्द्र )  
शतमश्मन पुराम् ... ।  
दिवोदासाय दाशुषे ।  
(अग्नि १०४६) ६।१६।५ (भग्वाजो बार्हृगपत्य । अग्निः)  
दिवोदासाय सुन्वते ।  
... दाशुषे ।  
(२००९) ६।३१।४ ( सुहोत्रो भारद्वाज । इन्द्रः )  
शतानि .. पुरो... ।  
दिवोदासाय सुन्वते सुनके ।  
[१६२६] ४।३०।२१ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रः )  
अस्वापयो दभीतये... हथैः ।

- (२१४३) ७।१९।४ ( वासिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्र )  
अस्वापयो दभीतये सुहन्तु ।  
[१६२८] ४।३०।२३ करिष्या इन्द्र पौंस्यम् ।  
(१७५) ८।३।२० = (१८२) ८।३।३ कृषे तदिन्द्र पौंस्यम् ।  
[१६३३] ४।३१।४ अभी न आ ववृस्त्व ।  
१०।८।३।६ ( मन्युस्तापम । मन्यु )  
मन्यो वज्रिभ्रभि मामा ववृस्त्व ।  
[१६४०] ४।३१।११ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्र )  
सखयाय स्वस्तये ।  
(३३३०) ६।५।७।१ (भग्वाजो बार्हृगपत्यः । इन्द्राप्रुषणो )  
[१६४१] ४।३१।१२ = (१००८) १।१२९।९  
[१६४५] ४।३२।१ महान् महीभिरुतिभि ।  
(अग्नि ४६५) ३।१।१९ ( विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि )  
[१६५२] ४।३२।८ ( वामदेवो गौतम । इन्द्र )  
न त्वा वरन्ते अन्यथा यहिस्ससि स्तुतो मघम् ।  
स्तोतृभ्य इन्द्र गिर्वणः ।  
(३५७) ८।१४।४ ( गौपृत्तयश्वसुक्तिनौ काण्वानौ । इन्द्र )  
न ते वर्तास्ति ।  
यहिस्ससि स्तुतो मघम् ।  
(१८६) ८।३२।७ ( मेधातिथि काण्व । इन्द्र )  
स्तोतार इन्द्र गिर्वणः ।  
[१६५३] ४।३२।९ अभि त्वा गौतमा गिरा ।  
(अग्नि २३९) ०।१७८।१ ( गौतमो गृहृगणः । अग्नि )  
[१६५५] ४।३२।११ ( वामदेवो गौतम । इन्द्र )  
वेधसो ... ।  
सुतोष्विन्द्र गिर्वणः ।  
(२३७७) ८।९९।२ ( नृमेध आगिरस । इन्द्र )  
वेधसः ।  
सुतोष्विन्द्र गिर्वणः ।  
[१६५६] ४।३२।१२ ( वामदेवो गौतम । इन्द्र. )  
पेषु धा वीरवचनाः ।  
५।७९।६ ( सत्यश्रवा आत्रेय । उषा )  
[१६५७] ४।३२।१३ ( वामदेवो गौतम । इन्द्र )  
(६०७) ८।६५।७ ( प्रगाथ काण्व । इन्द्र )  
यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम् ।  
तं त्वा वयं हवामहे ।  
(अग्निः १३३२) ८।४३।२३ ( विरूप आङ्गिरस । अग्निः )  
तं त्वा वयं हवामहे ।  
[१६६०] ४।३२।१६ = (१४४८) ३।५२।३

## ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[१६६७] ५।२९।१ श्री रोचना दिव्या धारयन्त ।

२।२७।९ ( कूर्मो गार्त्ममदो, गृत्समदो वा । आदित्यः )

[१६६९] ५।२९।३ अहजहि पवित्रो इन्द्रो अस्य ।

( १६९२ ) ५।३०।११ पुग्दरः पवित्रो इन्द्रो अस्य ।

[१६७५] ५।२९।१० ( गौरिवीनि शाक्यः । इन्द्रः )

नि हुयोण आवृणङ् मृधवाचः ।

( १७१२ ) ५।३२।८ ( गानुरात्रेयः । इन्द्रः )

—मृधवाचम् ।

[१६७८] ५ २९।१२ दशगवांसो अभ्यर्चन्त्यकैः ।

६।५०।१५ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः )

भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यकैः ।

[१६७९] ५।२९।१३ वीर्या मघवन्त्या चकर्थ ।

( १६९८ ) ५।३१।६ प्र नतना मघवन्त्या चकर्थ ।

[१६८९] ५।३०।८ ( बभ्रुगात्रेयः । इन्द्रः )

शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन् ।

( १८८९ ) ६।२०।६ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

[१६९२] ५।३०।११ = ( १६६९ ) ५।२९।३

[३३३८] ५।३०।१३ ( बभ्रुगात्रेयः । ऋणचयेन्द्रो )

अकतोऽयुष्टौ परितकम्यायाः ।

( १९३६ ) ६।२४।९ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

— परितकम्यायाम् ।

[१६९५] ५।३१।३ = ( अग्निः ६३९ ) ४।१।३

( वामदेवो गौतमः । अग्निम् )

[१६९६] ५।३१।४ अवर्धयन्नहये हन्तवा उ ।

( २३४९ ) ८।९६।५ मन्च्युतमहये हन्तवा उ ।

[१६९८] ५।३१।६ ( अवस्युगात्रेयः । इन्द्रः )

प्र ते पूर्वाणि करणानि वोच प्र नूतना मघवन्त्या चकर्थ ।

( २२८३ ) ७।९८।५ ( वसिष्ठो भेजावरुणिः । इन्द्रः )

प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार ।

[१७०२] ५ ३१।११ = १।१२।१३ ( कक्षीवान् आंगिजो

देषेतमसः । विश्वेदेवा इन्द्रो वा )

[ " ] ५।३१।११ = ( १५३५ ) ४।२०।३

[१७०९] ५।३२।५ = ( १२८५ ) ३।३२।४

[१७११] ५।३२।७ ( गानुरात्रेयः । इन्द्रः )

इन्द्रो .. महते .. वधः । विश्वस्य जन्तोरधमं चकार ।

( २२८६ ) ७ १०४।१६ ( वसिष्ठो भेजावरुणिः । इन्द्रः )

इन्द्रः... महता वधेन विश्वस्य जन्तोरधममानीष्ट ।

[१७१२] ५।३०।८ = ( १६७६ ) ५।२९।१०

[१७२१] ५।३३।५ ( मवरुणः प्राजापत्यः । इन्द्रः )

वय ते त इन्द्र ये च नर ।

( २२२१ ) ७।३०।४ ( वसिष्ठो भेजावरुणिः । इन्द्रः )

—ये च देव ।

[१७३३] ५।३४।७ वि दागोष भजति सूनर वसु ।

१।४०।४ ( कण्वो घोरः । ब्रह्मणस्पतिः )

[१७३६] ५।३५।१ ( प्रभवसुगादिगम् । इन्द्रः )

यस्ते साधिष्टोऽवस ।

अस्मभ्य चर्षणीसहम् ।

( ५३१ ) ८।५३ ( बालः ) ७ ( मेय काण्वः । इन्द्रः )

यस्ते साधिष्टोऽवसे ।

( ३०८५ ) ७।९४।७ ( वसिष्ठो भेजावरुणिः । इन्द्राग्नी )

अस्मभ्य चर्षणीसहा ।

[१७३७] ५।३५।२ ( प्रभवसुगादिगम् । इन्द्रः )

यदिन्द्र ।

यद्वा पञ्च क्षितीनाम् आ भर ।

( २०९६ ) ६।४६।७ ( अयुवोर्हस्पत्यः । इन्द्रः )

यदिन्द्र ... ।

यद्वा पञ्च क्षितीनां युग्रमा भर ।

[१७३८] ५ ३५।३ = ( ६७ ) १।१०।१०

[१७३९] ५ ३५।४ = ( ७८८ ) १।५४।३

[१७४०] ५।३५।५ एवं तमिन्द्र मर्यम् ।

( २८३४ ) १०।१७।३ एवं त्वमिन्द्र मर्यम् ।

[१७४१] ५।३५।६ ( प्रभवसुगादिगम् । इन्द्रः )

त्वमिद् वृत्रदन्तम जनासो वृक्तवर्हिष ।

हवन्ते वाजसातये ।

( २७९ ) ८।६।३७ ( वसु काण्वः । इन्द्रः )

त्वमिद् ।

हवन्ते ... ।

( ४२८ ) ८।३४।४ ( नीपानिधिः काण्वः । इन्द्रः )

हवन्ते ।

( ३३३० ) ६।५७।१ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणौ )

हवेम वाजसातये ।

८।९।३३ ( गयकर्णः काण्वः । अश्विनो )

हवेय वाजसातये ।

[ " ] ५।३५।६ = ३।५९।९ ( विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः )

- [१७४०] ५।३५।७ ( प्रभवमुराक्षिरसः । इन्द्र )  
पुरोयावानमाजिषु ।  
वाजयन्तम् ।  
( अग्नि १४६१ ) ८।८४।८ ( उग्रना काव्य । अग्नि )  
पुरो ।  
... ..वाजिनम् ।
- [१७५०] ५।३७।१ = ( १५९१ ) ४।२५।४  
[१७५४] ५।३७।५ ( अग्निभोमः । इन्द्र )  
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति ।  
( अग्नि १५९८ ) १०।४५।१० ( वृष्यप्रिर्भालन्दनः । अग्निः )  
प्रिय सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति ।
- [१७५७] ५।३८।३ = १।२५।२० ( शुन जेप आर्जागर्ति । वरुणः )  
[१७६०] ५।३९।३ आ वाज दधि सातये ।  
१।६८।७ ( वृष्यप्रिर्भालन्दनः । पवमानः सोम. )  
वृभिर्यतो वाजमा दधि ... ।
- [१७६३] ५।३९।४ महिष्ठ यो मघोना ।  
- ८।१।२० ( आमन्न ण्योगिः । आमन्न )

- महिष्ठामो मघोनाम् ।  
[१७६४] ५।३९।४ = ( ६२ ) १।१०।५  
[ " ] ५।३९।५ = ( अग्निः ९०२ ) ५।२२।४  
( विश्वामासा आत्रेय । अग्नि )  
[१७६५] ५।४०।१ ( अग्निभोमः । इन्द्र )  
आ याहि सोमं सोमपते पिब ।  
( ४११ ) ८।२१।३ ( सोभरिः काण्वः । इन्द्रः )  
आ याहीम ।  
सोमं सोमपते पिब ।  
[ " ] ५।४०।१-३ वृषान्निन्द्र वृषान्निन्द्रहन्तम् ।  
[१७६६-६७] ५।४०।२-३ ( अग्निभोमः । इन्द्रः )  
वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो भय सुतः ॥३॥  
वृषा त्वा वृषण हुवे वृषिञ्चिन्नाभिरुतिभिः ॥ ४ ॥  
( ३५२-५३ ) ८।१३।३२-३३ ( नारदः काण्वः । इन्द्रः )  
वृषा ग्रावा ... .. ॥३२॥  
वृषा त्वा ॥३३॥  
[१७६८] ५।४०।४ = ( १०९१ ) १।१७।७।१

## ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

- [१८५७] ६।१८।२ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र )  
स युध्म मन्वा खजकृत्समद्वा ।  
( २६५३ ) ७।२०।३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्र )  
युध्मो अनर्वा खजकृत्समद्वा ।
- [१८६७] ६।१८।२ = ( १५१२ ) ४।१८।४  
[१८७१] ६।१९।१ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र )  
उरः पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ।  
७।६२।१ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । सूर्यः )  
कन्वा कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ।
- [१८७२] ६।१९।२ = ( १२८८ ) ३।३२।७  
[१८७३] ६।१९।३ = ३।५४।२० ( प्रजापतिर्वैश्वामित्रः,  
प्रजापतिर्वान्यो वा । विश्वेदेवा )
- [१८७५] ६।१९।५ = ( १३२९ ) ३।३६।७  
[१८७७] ६।१९।७ = ( १५७९ ) ४।२४।३  
[१८७८] ६।१९।८ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र )  
वृषणं ... धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।  
येन वंसाम पृतनासु शद्वृत् ।  
( २८४५ ) १।०४।७।४ ( सप्तगुरांगिरसः । इन्द्रो वैवृष्टः )  
धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।  
.. वृषणं ।

- ( अग्निः १४०० ) ८।६०।१२ ( मर्गः प्रागाधः । अग्निः )  
येन वंसाम पृतनासु शर्धतः ।  
[१८७९] ६।१९।९ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )  
इन्द्रं युञ्जि स्वर्बद्धेहास्मे ।  
( २०२७ ) ६।३५।२ ( नरो भरद्वाजः । इन्द्रः )
- [१८८१] ६।१९।११ = ( १४१८ ) ३।४७।५  
[१८८८] ६।२०।५ = ( १६०० ) ४।२८।२  
[१८८९] ६।२०।६ = ( १६८९ ) ५।३०।८  
[१८९३] ६।२०।१० = ( १०७० ) १।१७।४।२  
[१८९५] ६।२०।१२ = ( १०७७ ) १।१७।४।९  
[१९०५] ६।२१।१० जरितारो अभ्यर्चन्त्यकैः ।  
६।५०।१५ ( ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवा )  
भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यकैः ।
- [१९०८] ६।२२।२ = ( अग्निः ९७९ ) ६।५।१ ( भारद्वाजो  
बार्हस्पत्यः । अग्नि )
- [१९२०] ६।२३।३ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )  
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमम् ।  
... .. कीरये ।  
( २०५० ) ६।४४।१५ ( शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )  
पाता .. । ... कारुधायाः ।

[१९२०] द्वा२३।३ दाता वमु स्तुवते कीरये यत् ।  
(३३२५) ७.९७।१० धत्तं रथि स्तुवते कीरये चित ।

[१९२४] द्वा२३।७ = (१४५५) ३।५३।३

[१९२६] द्वा२३।९ = (११५९) २।१४।१०

[१९३६] द्वा२४।९ = (३३३८) ५।३०।१३

[१९४१] द्वा२५ ४ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

तोके वा गोषु तनये यदाम् ।

द्वा६।८ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । मन्तः )

. यमाम् ।

[१९४६] द्वा२५।९ = (१०९५) १।१७७।५

[ " ] द्वा२५।९ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र )

एवा नः ।

विद्याम वस्तोरत्रसा गृणन्तो भरद्वाजा उत त  
इन्द्र नूनम् ।

(२६७८) १०।८९।१७ ( रेणुवधामित्रः । इन्द्र )

एवा ते ।

गृणन्तो विश्वामित्रा उत ... ।

[१९४८] द्वा२६।२ = (अग्निः ९९९) द्वा१०।६ ( भरद्वाजो  
बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

[१९४९] द्वा२६।३ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

अतिथिग्रत्राय क्षस्य करिष्यन् ।

(२१४७) ७।१९।८ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )

[१९५०] द्वा२६।४ = (७४३) १।३३।१४

[१९५५-५६] द्वा२७ १-२ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र )

किमस्य मदे किमस्य पीताविन्द्रः किमस्य सख्ये चकार ।

रणा वा ये निषदि किते अस्य पुरा विविद्रे किमु नूननास ॥१

सदस्य सदस्य ... सदस्य ... ।

... सन् सदु ... ॥२॥

[१९५७] द्वा२७।३ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

नहि नु ते महिमनः समस्य ।

(२६१०) १०.५४।३ ( बृहदुक्थो वामदेव्यः । इन्द्रः )

क उ नु ते महिमनः समस्य ।

[१९६४] द्वा२९।३ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र )

वसानो अत्कं सुरभिं दसो कं स्वर्णं नृताविषिरो वभथ ।

१०।१२३।७ ( वेनो भार्गवः । वेनः )

स्वर्णं नाम जनत प्रियाणि ।

[१९७१] द्वा३०।४ = (२२९२) ३।३२।११

[१९७२] द्वा३०।५ = (७१८) १।३२।४

२००९] द्वा३१।४ = (१६२५) ४।३०।२०

२०११] द्वा३२।१ महे वीराय तवसे तुराय ।

द्वा४९।१२ ( ऋजिस्वा भारद्वाजः । विधेदेवाः )  
प्र वीराय प्र तवसे तुराय ।

[२०१४] द्वा३२।४ = (१५५७) ४.२२।३

[२०१७] द्वा३३।२ ( शुनहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः )

त्वोत ह्यसनिता वाजमर्वा ।

७।५६।२३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुत )

मरुद्विरित्सनिता वाजमर्वा ।

[२०२०] द्वा३३।५ ( शुनहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः )

ननं न इन्द्रः . ।

इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मन् ।

(३१६८) द्वा६८।८ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणौ )

नू न इन्द्र... ।

इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मो ।

[२०३४] द्वा३६।४ = (१४१०) ३।४६।२

[१९९१] द्वा४०।४ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

याहि ।

उप ब्रह्मणि ऋगव इमा नः ।

(२२१४) ७।२९।२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्र )

याहि ।

उप— ।

[१९९२] द्वा४०।५ = ४।३४।७ ( वामदेवो गौतमः । ऋभवः )

[१९९५] द्वा४१।३ = (७३४) १।३३।५

[१९९९] द्वा४२।२ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

सोमेभिः सोमपातमम् ।

(३०७) ८।१२।२० ( पर्वतः काण्वः । इन्द्र )

[२००२-५] द्वा४३।१-४ अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ।

[२०३६-३८] द्वा४४।१-३ सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति

स्वधापते मद्ः ।

[२०४०] द्वा४४।५ = (३०४३) ५।८६।४

[ " ] द्वा४४।५ ( श्युर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

रोदसी देवी शुण्ठं सपर्यतः ।

(२४४१) ८।९३।१२ ( सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः )

देवी शुण्ठं सपर्यतः ।

रोदसी ।

[२०४४] द्वा४४।९ = १।१२०।९ ( कुत्स आङ्गिरसः । ऋभवः )

[२०४५] द्वा४४।१० श्युर्बार्हस्पत्यः । इन्द्र )

किमङ्ग रश्चोदनं त्वाहुः ।

(६६३) ८।८०।३ ( एकधूर्नोपसः । इन्द्रः )

किमङ्ग रश्चोदनः ।

[२०४६] द्वा४४।११ = (१४३८) ३।५७।५



- [२०४९] द्वा४४।१४ ( संयुर्बाह्रस्पत्यः । इन्द्रः )  
इन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघान ।  
सोमं वीराय शिषिणे पिबत्यै ।  
( २१८२ ) ७।२३।३ ( वमिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )  
इन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघन्वान् ।  
( २०३ ) ८।३२।२४ ( मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः )  
सोम वीराय शिषिणे ।
- [२०५०] द्वा४४।१५ = ( १९२० ) द्वा२३।३  
[ " ] द्वा४४।१५ = ( १४९० ) ४।१७।३  
[२०५१] द्वा४४।१६ = २।३३।२ ( गृन्ममदः औनकः । इन्द्रः )  
[२०५२] द्वा४४।१७ एना मन्दानो जहि शूर शत्रून् ।  
( २७३५ ) १०।११।२।१ हर्षस्व इन्तवे शूर शत्रून् ।
- [२०५३] द्वा४४।१८ = ( ८३१ ) १।१०।२।४  
[ " ] द्वा४४।१८ = ( ९६७ ) १।१००।१।१  
[२०५४] द्वा४४।१९ = ( १३९६ ) ३।४३।६  
[२०५५] द्वा४४।२० घृतपुषो नोर्मयो मदन्तः ।  
१०।६।८।१ ( अयाम्य आङ्गिरसः । बृहस्पतिः )  
गिरिभ्रजो नोर्मयो मदन्तः ।
- [२०५६] द्वा४४।२१ ( संयुर्बाह्रस्पत्यः । इन्द्रः )  
वृषा सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।  
वराम् ॥  
( अग्निः १७९५ ) ७।५।२ ( वमिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः )  
नेता सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।  
वरेण ।
- [२०५८] द्वा४४।२३ अयं सूर्ये अदधाज्ज्योतिरन्तः ।  
( २६१३ ) १०।५।४।६ यो अदधाज्ज्योतिषि ज्योतिरन्तः  
[२०६१] द्वा४५।३ ( संयुर्बाह्रस्पत्यः । इन्द्रः )  
महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तय ।  
( ३०८ ) ८।१२।२१ ( पर्वतः काण्वः । इन्द्रः )  
( ३१०९ ) ८।४०।९ ( नामाकः काण्वः । इन्द्राग्नी )  
पूर्वीरुतः प्रशस्तयः ।
- [२०६७] द्वा४५।८ = ( १०८७ ) १।१७।६।३  
[२०६९] द्वा४५।१० = ( ६९३ ) १।२९।२  
[ " ] द्वा४५।१० ( संयुर्बाह्रस्पत्यः । इन्द्रः )  
तम् वाजानां पते ।  
अहूमहि श्रवस्यवः ।  
( १८०७ ) ८।२४।१८ ( विश्वमना वैश्यवः । इन्द्रः )  
तं ... वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः ।
- [२०७६] द्वा४५।१७ ( संयुर्बाह्रस्पत्यः । इन्द्रः )  
स त्व न इन्द्रं मृक्य ।

- ( ६६२ ) ८।८०।२ ( एकयुर्नोधमः । इन्द्रः )  
[२०७९] द्वा४५।२० = ( अग्निः १०६१ ) द्वा१६।२०  
( भरद्वाजो बार्हरपत्यः । अग्निः )  
[२०८१] द्वा४५।२२ पुरुहताय सस्वने ।  
( ४६३ ) ८।४५।२१ पुरुवृम्णाय सस्वने ।  
[२०८४] द्वा४५।२५ इमा उ त्वा शतक्रतो ।  
( २४०८ ) ८।९२।१२ वयमु त्वा शतक्रतो ।  
[ " ] द्वा४५।२५ = ( १३७७ ) ३।४।५ ( संयुर्बाह्रस्पत्यः । इन्द्रः )  
... षोणुवुर्गिरः ।  
इन्द्र वस्सं न मातरः ।
- [२०८६] द्वा४५।२७ = ( १३७८ ) २।४।६  
[२०८७] द्वा४५।२८ ( संयुर्बाह्रस्पत्यः । इन्द्रः )  
वस्सं गावो न वेनवः ।  
९।१२।२ ( अमितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
गावो वस्सं न मातरः ।
- [२०८८] द्वा४५।२९ = ( १५ ) १।५।२  
[२०८९] द्वा४५।३० ( संयुर्बाह्रस्पत्यः । इन्द्रः )  
अस्माकं भूतु .. स्तोमो वाहिष्ठी अन्तमः ।  
८।५।१८ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )  
अस्माकं स्तोमो वाहिष्ठी अन्तमः ।  
भूतु ।
- [२०९२] द्वा४६।३ ( संयुर्बाह्रस्पत्यः । इन्द्रः )  
इन्द्र तं हूमहे वयम् ।  
( ५०९ ) ८।५।१ ( वाल०३ ) ५ ( श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः )  
[ " ] द्वा४६।३ = ( अग्निः ८३४ ) ५।९।७ ( गय आत्रेयः । अग्निः )
- [२०९३] द्वा४६।४ ( संयुर्बाह्रस्पत्यः । इन्द्रः )  
बावमे जनान ।  
अस्माकं ध्यविता महाधने ।  
( २२५९ ) ७।३२।२५ ( वमिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )  
णुदस्व ... अमित्रान् ।  
अस्माकं बोध्यविता महाधने ।
- [२०९६] द्वा४६।७ ( संयुर्बाह्रस्पत्यः । इन्द्रः )  
यदिन्द्र नाहुषीषां कृष्टिषु ।  
( २६६ ) ८।६।२४ ( वत्सः काण्वः । इन्द्रः )  
यदिन्द्र नाहुषीषा ।  
... विश्व ।
- [ " ] द्वा४६।७ = ( १७३७ ) ५।३५।२  
[२०९८] द्वा४६।९ छर्दियच्छ मघदस्यश्च मघं च ।  
९।३२।६ ( शावाश्व आत्रेयः । पवमानः सोमः )  
मघदस्यश्च मघं च ।

- [२१०५] ६।४७।७ ( गगो भारद्वाजः । इन्द्रः )  
 प्र नो नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।  
 (अग्निः १५९७) १०।४५।९ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः)  
 प्र त नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।  
 (अग्निः १४१४) ८।७।६ सुदीतिः पुरुमीकहावागिरसां  
 तयोर्वान्यतरः । अग्निः )  
 प्र णो नय वस्यो अच्छ ।
- [२११०] ६।४७।१२ ( गगो भारद्वाजः । इन्द्रः )  
 (२७७६) १०।१३।१।६ (मुकीतिः काधावतः । इन्द्रः )  
 इन्द्रः सुत्रामा स्वर्वा अवोभिः सुसूलीको भवतु विश्ववेदाः ।  
 बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्वाम ॥
- [ ' ] ६।४७।१२ = (२७७६) १०।१३।१।६ = (अग्नि ६४६)  
 ४।१।२० ( वामदेवो गौतम अग्निः )
- [ ' ] ६।४७।१२ = (२७७६) १०।१३।१।६ = ४।५१।१०  
 . ( वामदेवो गौतमः । उपाः )

- [२१११] ६।४७।१३ = (२७७७) १०।१३।१।७ = (अग्निः ४६७)  
 ३।१।२१ ( विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः )
- [ ' ] ६।४७।१३ ( गगो भारद्वाजः । इन्द्रः ) =  
 (२७७७) १०।१३।१।७ ( मुकीतिः काधावतः इन्द्रः )  
 तस्य वय सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्वाम ।  
 स सुत्रामा स्वर्वा इन्द्रो अस्मे आराचिद् द्वेषः सनुतर्युयोत ।  
 ७।५८६ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । मरुतः )  
 आराचिद् द्वेषो वृष्णो युयोत ।  
 १० ७७।६ ( ग्यूसर्गिसमर्भागवः । मरुतः )  
 आराचिद् द्वेषः सनुतर्युयोत ।
- [३३२७] ६।४७।२० = १।९।१।२३ (गौतमो राहृगणः । सोमः)  
 ६।४७।२८ ( गगो भारद्वाजः । रयः )  
 देव रथ प्रति हव्या गृभाय ।  
 १।९।१।४ (गौतमो राहृगणः । सोमः)

## ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

- [२१३०] ७।१८।१२ त्वायन्तो ये भमदञ्जनु त्वा ।  
 (७७४) १।५२।१५ ( सव्य आगिरमः । इन्द्रः )  
 विश्वे देवासो भमदञ्जनु त्वा ।
- [२१३८] ७।१८।२० = (७८९) १।५४।४  
 (८४५) १।१०३।७ ( कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः )
- [२१४३] ७।१९।४ भूराणि वृत्रा हर्यश्व हंसिः ।  
 (२१७२) ७।२२।२ येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि ।
- [ ' ] ७।१९।४ = (१६२६) ४।३०।२१
- [२१४७] ७।१९।८ = (१९४९) ६।२६।३
- [२१५३] ७।२०।३ = (१८५७) ६।१८।२
- [ ' ] ७।२०।३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
 व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजा ।  
 (२५२२) १०।२९।८ ( वसुक्त ऐन्द्रः । इन्द्रः )  
 व्यानकिन्द्रः पृतनाः स्वोजाः ।
- [२१६०] ७।२०।१० = (२१७०) ७।२१।१० ( वसिष्ठो  
 मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
 स न इन्द्र त्वयत्ताया हृषे धार मना च ये मघवानो जुनन्ति।  
 वस्यो षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः
- [२१६३] ७।२१।३ = (११०२) २।११।२
- [२१६४] ७।२१।४ = (१४७२) ४।१६।६
- [२१७०] ७।२१।१० = (२१६०) ७।२०।१०
- [२१७२] ७।२२।२ = (२१४३) ७।१९।४

- [२१७९] ७।२२।९ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
 अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि ।  
 (२४८७) १०।२३।७ ( विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा  
 वसुकृद्धा वामुकः । इन्द्रः )
- [२१८२] ७।२३।३ = (२०४९) ६।४४।१४
- [२१८३] ७।२३।४ = (१३१२) ३।३५।१
- [२१८४] ७।२३।५ = (११९६) २।१८।७
- [२१८५] ७।२३।६ यूय पात स्वस्तिभिः सदा नः ।  
 ९।९७।३, ६ ( इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठः । पवमानः गोमः )
- [ ' ] ७।२३।६ = ६।५०।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाज । विश्वेदेवाः)
- [ ' ] ७।२३।६ = १।१९०।८ (अगमन्यो मैत्रावरुणः । बृहस्पतिः)
- [२१८६] ७।२४।१ = (८४७) १।१०।४।१
- [२१८७] ७।२४।२ = (१०९३) १।१७।७।३
- [२१८८] ७।२४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
 आ नो दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन् ।  
 ८ ७९।४ ( कृन्वुर्भागवः । सोमः )  
 दिव आ ।
- [२१८९] ७।२४।४ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )  
 आ नो विश्वाभिरुतिभिः ।  
 ८।८।१ = ८।८।१८ ( सध्वंगः काण्वः । अधिर्ना )  
 आ वां विश्वाभिरुतिभिः ।

८।८७।३ ( कृष्ण आङ्गिरसो युम्नाको वा वासिष्ठः  
प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अधिर्ना )

भावां विश्वामिहृतिभिः ।

[२१९१] ७।२४।६ = (२१९७) ७।२५।६  
( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )

एवान इन्द्र वार्यस्य पृथिं प्रते मर्ही सुमतिं वेविदाम ।  
इषं विन्व मघवज्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।

[२१९४] ७।२५।३ = (२५६३) ४।२२।९

[२१९७] ७।२५।६ = (२१९९) ७।२४।६

[२२०२] ७।२६।५ = (१०४२) १।१६७।१

[२२१२] ७।२८।५ = (२२१७) ७।२९।५ =

(२२२२) ७।३०।५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )

वोचेमेदिन्द्र मघवानमेन महो रायो राघसो यदक्षः ।

यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्टो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

[२२१३] ७।२९।१ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )

अयं सोम इन्द्र तुभ्य सुन्वे ।

९८८।१ ( उग्रना काव्यः । पवमानः सोमः )

[ " ] ७।२९।१ = (१४३०) ३।५०।२

[२२१४] ७।२९।२ = (१३९३) ३।४३।३

[ " ] ७।२९।२ = (११६६) २।१८।७

[ " ] ७।२९।२ = (१९९१) ६।४०।४

[२२१७] ७।२९।५ = (२२१२) ७।२८।५ = (२२२२) ७।३०।५

[२२२१] ७।३०।४ = (१७२१) ५।३३।५

[२२२२] ७।३०।५ = (२२१२) ७।२८।५ = (२२१७) ७।२९।५

[२२२६] ७।३१।४ = (१३७७) ३।४१।७

[२२३४] ७।३१।२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )

इन्द्र वाणीरनुत्तमन्युमत्र ।

(३०९) ८।२१।२२ ( पवतः काण्वः । इन्द्रः )

इन्द्र वाणीरनुत्तमता समोजमे ।

[२२३६] ७।३२।२ इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा ।

(२६०७) १०।५०।७ ये ते विप्र ब्रह्मकृतः ... ।

[२२३८] ७।३२।४ = (१८) १।५।५

[२२४०] ७।३२।६ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )

सुनोत्या च धावति ।

८।३१।५ ( मनुवैवस्वतः । विश्वेदेवाः )

सुनुत भा च धावतः ।

[२२४२] ७।३२।८ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )

सुनोता ... सोममिन्द्राय वज्रिणे ।

९।३०।६ ( बिदुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

९।५१।२ ( उचव्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

... सोममिन्द्राय वज्रिणे ।

... सुनोता ... ।

[२२४४] ७।३२।१० = १।८६।३ ( गातमो राहूगण । मरुतः )

[२२४५] ७।३२।११ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )

अस्माकं बोध्यविता रथानाम् ।

१०।१०३।३ ( अप्रतिरथ ऐन्द्रः । वृहरपतिः )

अस्माकमेधविता रथानाम् ।

[२२५६] ७।३२।२२ अभि त्वा शू नोनुमः ।

... इन्द्र ... ।

(१३०) ८।२१।५ अभि त्वां इन्द्र नोनुमः ।

[२२५७] ७।३२।२३ = (९२०) १।८१।५

[२२५९] ७।३२।२५ अमित्रान्सुवेदा नो वसू कृषि ।

६।४८।१५ ( शंयुर्वाहरपत्यः । मरुतः )

करसुवेदा नो वसू करत् ।

[२२७८] ७।७७।१ नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।

१।१५४।५ ( दार्घनमा औचथ्यः । विष्णुः )

नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।

[२२७९] ७।९८।१ जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम् ।

( अग्निः १७११ ) १०।१८७।१ ( वत्स आमनेयः । अग्निः )

वृषभाय क्षितीनाम् ।

[२२८१] ७।९८।३ = ( अग्निः १७२१ ) १।५९।५ ( नोधा

गातमः वैश्वानरोऽग्निः )

[२२८३] ७।९८।५ = (१६९८) ५।३१।६

[३३२५] ७।९८।१० = (३३२५) ७।९७।२०

वृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्त्रो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।

धस्त रथिं स्तुवते कीरथे चिथय पात स्वस्तिभिः सदा नः ।

[२२८६] ७।१०४।१६ = (१७११) ५।३२।७

[२२८७] ७।१०४।१९ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )

प्राक्कादपाक्कादधरादुदक्काद् ।

( अग्नि १८४८ ) १०।८७।२१ ( पायुर्भारद्वाजः ।

रक्षोहाग्निः )

पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्कात् ।

[२२८८] ३२९७] ७।१०४।२० नूनं सृजदशानि यातुमज्यः ।

(३३०२) ७।१०४।२५ अशानिं यातुमज्यः ।

## ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[८९] ८।१।३ ( मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वः । इन्द्रः )

नाना हवन्त ऊतये ।

अस्माकं ... ।

(३८०) ८।१५।१२ ( गोधूतयध्वसूक्तिर्ना काण्वायनो ।

इन्द्रः )

नाना ... अस्माकेभिः ... स्वर्जय ।

- (२२९५) ८६८५ ( प्रियमेध आद्विरसः । इन्द्रः )  
स्वर्मांकेषु ।  
नाना ... ।
- [९०] ८११४ ( मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ । इन्द्र )  
उप क्रमस्व पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमृतये ।  
( अग्निः १४०६ ) ८१६०।१८ ( भर्गः प्रागाथः । अग्निः )  
इषण्यया नः पुरुरूपमा भर वाजं — ।
- [९८] ८११२२ ( मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ इन्द्रः )  
इष्कर्ता विहृतं पुनः ।  
८१२० २६ ( सोमरिः काण्वः । मरुत )
- [१०३] ८१११७ सोमा हि सोममद्विभिः ।  
९।३४।३ ( त्रित आण्य । पवमान सोम )  
सुन्वन्ति सोममद्विभिः ।
- [१०८] ८११२२ = ( अग्निः १०७ ) १।४५।८  
( प्रस्कण्व काण्व । अग्नि )
- [११०] ८११२४ = ( ३२२२ ) ४।४६।३ ( वामदेवो गातम ।  
इन्द्रवाय )
- [१११] ८११२५ ( मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ । इन्द्र )  
त्रिवक्ष्णस्य पीतये ।  
८।३५।२३ ( श्यावाथ आत्रेय । अश्विनौ )
- [११२] ८११२६ = ( १४४३ ) ३।५१।२०
- [१३०] ८।२।१५ = ( ८८३ ) १।६२।२२
- [१४७] ८।२।३२ ( मेधातिथि काण्वः , प्रियमेधश्चाद्विरसः । इन्द्र )  
इन्द्रः पुरु पुरुहूतः ।  
महान् महीभिः शचीभिः ।  
( ३८८ ) ८।१६।७ ( इरिर्भिर्बाठः काण्वः । इन्द्र )
- [१५६] ८।३।१ ( मेध्यातिथि काण्वः । इन्द्र )  
आपिनो बोधि सधमाद्यो वृधे ।  
( ५३५ ) ८।५४ ( बाल० ६ ) । ५ ( मार्तारश्वा काण्वः ।  
इन्द्र )
- तेन नो बोधि— ।
- [१५९] ८।३।४ समुद्र इव पप्रथे ।  
१०।६२।९ ( नाभानेदिष्ठो मानव । सावणेर्दानस्तुति )  
वि सिन्धुरिव पप्रथे ।
- [१६०] ८।३।५ = ( ८० ) १।१६।३
- [१६१] ८।३।६ इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिरे ।  
( ३१५-१७ ) ८।१२।२८-३० आदिने विश्वा- ।  
९।८६।३० ( पृथ्वियोऽजा । पवमान . सोम )  
तुभ्येमा विश्वा— ।  
१०।५६।५ ( बृहदुक्थो वामदेव्यः । विदेवेदेवाः )  
६० [ इन्द्रः ] ३१

- तनृषु विश्वा भुवना नि येमिरे ।  
[१६२] ८।३।७ = ( अग्निः २४४६ ) १।१९।९  
( मेधातिथि काण्व । अग्निर्मरुतथ )
- [ ' ] ८।३।७ ( मेध्यातिथिः काण्वः इन्द्र )  
समीचीनास ऋभव समस्वरन् ।  
( ३१९ ) ८।१२।३२ ( पर्वतः काण्व । इन्द्र )  
समीचीनासो अस्वरन् ।
- [१६३] ८।३।८ ( मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः )  
अनु ध्रुवन्ति पूर्वथा ।  
( ३७४ ) ८।१५।६ ( गोप्रकल्पश्चमूर्त्तानो काण्वायना । इन्द्र )
- [१६७] ८।३।१२ = ( ११४५ ) २।१३।९
- [१७०] ८।३।१५ ( मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्र )  
गिरः स्तोमास ईरते ।  
वाजयन्तो रथाइव ।  
( आमः १३१० ) ८।४३।१ ( विरूप आर्जस्य । आम )  
गिरः— ।  
९।६७।१७ ( जमदग्निर्भर्गवः । पवमान रामः )  
वाजयन्तो— ।
- [१७२] ८।३।१७ ( मेध्यातिथि काण्वः । इन्द्र )  
युक्त्वा..... हरी . परावतः ।  
उग्र ऋष्वेभिरा गहि ।  
( ४९१ ) ८।४९ ( बाल० १ ) । ७ ( प्रस्कण्व काण्वः । इन्द्र )  
यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे यद्वा पृथिव्यामधि ।  
..महेमत उग्र उग्रेभिरा गहि ।  
( ५०१ ) ८।५० ( बाल० २ ) । ७ ( पृथिव्यु काण्व । इन्द्र )  
यद्ध नूनं परावति यद्वा पृथिव्या दिवि ।  
युजान हरिभिर्महेमत ऋष्व ऋष्वेभिरा गहि ।
- [१७५] ८।३।२० ( मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः )  
कृषे तदिन्द्र पौरुष्यम् ।  
( १८२ ) ८।३२।३ ( मेधातिथि काण्वः । इन्द्र )
- [२२९] ८।४।१ ( देवातिथिः काण्व । इन्द्रः )  
यदिन्द्र प्रागप्रागुदङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः ।  
( ६०१ ) ८।६५।१ ( प्रगाथ काण्वः । इन्द्र )
- [२३०] ८।४।२ इन्द्र मादयसे सचा ।  
( ५१५ ) ८।५२ ( बाल० ४ ) । १ आयो मादयसे सचा ।
- [२४०] ८।४।२२ ( देवातिथिः काण्वः । इन्द्रः )  
यत्रा सोमस्य नृस्पसि ।  
तस्येहि प्र द्रवा पिब ।  
( ५२८ ) ८।५३ ( बाल० ५ ) । ४ ( मे यः काण्वः । इन्द्रः )  
यत्रा— ।

- (५९८) ८।६।१० ( प्रगाथाः काण्वः । इन्द्र )  
तस्थहि— ।
- [२४२] ८।४।१४ अवाञ्छत्या ससयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप  
१।४।७।८ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अधिनो )  
अवाञ्छा वा ससयोऽध्वरश्रियो ।
- [२४३] ८।६।१ ( वत्स काण्वः । इन्द्रः )  
पजन्यो वृष्टिमोद्भव ।  
१।२।९ ( मेधातिथि काण्वः । पवमानः सोम )
- [२४५] ८।६।३ = ( आम ९६ ) १।४।४।११  
( प्रस्कण्व काण्वः । आग्नि )
- [२४६] ८।६।४ ( वत्स काण्वः । इन्द्र )  
समुद्रायं व सिन्धवः ।  
( आर्त्त १३६७ ) ८।४।४।२५ ( विरूप आर्त्तः । आग्नि )
- [२४८] ८।६।३ = ( ९०५ ) १।८।०।६
- [२५१] ८।६।९ ( वत्स काण्वः । इन्द्र )  
राधि गोमन्तमश्विनम् ।  
९।६।१।२ ( नमर्त्तमर्भागवः । पवमान सोम )  
९।६।३।१२ ( निरुक्चि काश्यपः । पवमानः सोम )
- [२५५] ८।६।१३ ( वत्स काण्वः । इन्द्र )  
वृत्र पर्वशो मज्ज ।  
८।७।२३ ( पुनर्वत्स काण्वः । मरुत )  
वि वृत्र पर्वशो ययु ।
- [२५६] ८।६।१४ ( वत्स काण्वः । इन्द्र )  
वृत्रा ह्यम शृण्विषे ।  
( २२९ ) ८।३३।१० ( मेधातिथि काण्वः । इन्द्र )  
वृत्रा ह्यम शृण्विषे परावति ।
- [२५७] ८।६।१५ ( वत्स काण्वः । इन्द्र )  
यव नान्तरिक्षणि वज्रिणम् ।  
विश्वचन्तः ममय ।  
( ३११ ) ८।२।२।४ ( पर्वत काण्वः । इन्द्र )  
विविक्तो रोदसा नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् ।
- [२५९] ८।६।१७ = ( १४६४ ) ३।५।३।१२
- [२६१] ८।६।१९ घृत्तु दुहत् आशिरम् ।  
१।१३।६।६ ( परुच्छेपा देवोदासिः । वायु )  
घृत्तु दुहत् आशिरम् ।
- [२६३] ८।६।२१ कण्वा उक्थेन वावृधु ।  
( २८५ ) ८।६।४।३ कण्वा उक्थेन ।
- [२६५] ८।६।२३ ( वत्स काण्वः । इन्द्र )  
आ न इन्द्र महीमिषम् ।

- ९।६।५।१३ ( मृगुर्वारुणिर्जमटाभिर्भागवो वा ।  
पवमानः सोम )
- आ न इन्द्रो महीमिषम् ।
- [२६६] ८।६।२४ = ( अग्निः ८१० ) ५।६।१०  
( वसुश्रुत आत्रेय । आग्नि )
- [ " ] ८।६।२४ = ( २०९६ ) ६।४।६।७
- [२६७] ८।६।२५ ( वत्स काण्वः । इन्द्रः )  
यदिन्द्र मृळयासि न ।  
( ४७५ ) ८।४।५।३३ ( त्रिगोक काण्वः । इन्द्र )
- [२६८] ८।६।२६ ( वत्स काण्वः । इन्द्र )  
यदङ्ग त्रिषीयस ।  
८।७।२ ( पुनर्वत्स काण्वः । मरुत )  
यदङ्ग त्रिषीयसो ।
- [२७१] ८।६।२९ चिकिन्वो अत्र पश्यति ।  
१।२।५।११ ( शुन जेप आजागर्तः । वरुण )  
चिकिन्वो आभि पश्यति ।
- [२७४] ८।६।३२ इमा म इन्द्र सुधुतिम् ।  
( ३१८ ) ८।१२।३१ इमां न इन्द्र...।
- [२७६] ८।६।३४ ( वत्स काण्वः । इन्द्रः )  
भापो न प्रवता यतीः ।  
( ३२८ ) ८।१३।८ ( नागदः काण्वः । इन्द्र )  
९।२।४।२ ( आर्त्तः काश्यपो देवलो वा ।  
पवमानः सोमः )
- [२७७] ८।६।३५ ( वत्स काण्वः । इन्द्र )  
इन्द्रमुकथानि वावृधु समुद्रमिव सिन्धवः ।  
( २३४१ ) ८।९।५।६ ( निरुक्चि काश्यपः । इन्द्रः )  
इन्द्रमुकथानि वावृधुः ।  
( २४१८ ) ८।९।२।२२ ( श्रुतकक्षः मुकक्षो वा आर्त्तः ।  
इन्द्रः )
- समुद्रमिव सिन्धवः ।  
९।१०।१।६ ( शक्तिवर्गमिष्टः । पवमान सोमः )  
समुद्रमिव सिन्धवः ।
- [२७८] ८।६।३६ = ( ९४० ) १।८।४।४
- [२७९] ८।६।३७ = ( १७४१ ) ५।३।५।६
- [ " ] ८।६।३७ = ३।५।९।९ ( विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः )
- [ " ] ८।६।३७ = ( १७४१ ) ५।३।५।६ =  
( ४२८ ) ८।३।४।४ हवन्त वाजसातये ।  
( ३३३० ) ६।५।७।१ हुवेम वाजसातये ।  
८।९।१३ ( शशकर्णः काण्वः । अधिनो )  
हुवेय वाजसातये ।

- [२८०] ८।६।३८ ( वत्सः काण्वः । इन्द्र )  
अनु त्वा रोदसी उभे ।  
(६३८) ८।७।११ ( कुरुमुनिः काण्वः । इन्द्र )
- [२८१] ८।६।३९ मन्त्रस्वा सु स्वर्णरे ।  
(६०२) ८।६।५२ मादयासे स्वर्णरे ।  
(अग्निः२४४७) ८।१०३।१४ (सोमार्गः काण्वः । अमामरुतः)  
मादयस्व स्वर्णरे ।
- [२८३] ८।६।४१ ईशान ओजसा ।  
(३१०५) ८।४।०।५ इन्द्र ईशान ओजसा ।
- [२८७] ८।६।४५ ( वत्स काण्वः । इन्द्र ) =  
(२०९) ८।३।३० ( मेघानिधिः काण्वः । इन्द्र )  
अवाञ्छ त्वा पुरुषुव प्रियमेधन्तुता हरी ।  
सोमपेयाय वक्षतः ।  
(३६५) ८।१४।१२ (गोषुक्यश्वसृक्तिनो काण्वायनो । इन्द्रः)
- [२९१] ८।१२।४ = (३०४।५) ५।८।६।६
- [२९२] ८।१२।५ = (४४) १।८।७
- [ " ] ८।१२।५ ( पर्वतः काण्वः । इन्द्र )  
इन्द्र विश्वाभिरुतिभिर्ववक्षिय ।  
(१९१) ८।३२।१२ ( मेघानिधिः काण्वः । इन्द्रः )  
इन्द्रो विश्वाभिरुतिभिः ।  
(५५२) ८।६।१।५ ( भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः )  
इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।  
(२७८७) १०।१३।४।३ (मान्वाला यौवनाश्वः । इन्द्रः )  
यचीभि शक्र इन्द्र विश्वाभिरुतिभि ।
- [२९५] ८।१२।८ यदि प्रवृद्ध ससपते ।  
(२४३४) ८।९।३।५ यद्वा प्रवृद्ध ससपते ।
- [२९६] ८।१२।९ = (१०१८) १।१३।०।८
- [२९७] ८।१२।१० इयं त ऋत्विवावती ।  
(६६७) ८।८०।७ इयं वीर्कृत्विवावती ।
- [२९८] ८।१२।११ ( पर्वतः काण्वः । इन्द्र )  
ऋतु पुनीत आनुषक् ।  
(५३०) ८।५३ ( बाल० ५ ) ।६ ( मे यः काण्वः । इन्द्रः )  
ऋतु पुनत आनुषक् ।
- [२९९] ८।१२।१२ = (७९८) १।५।५ २
- [३०१] ८।१२।१४ उत स्वराजे अदिति ।  
७।६।६।६ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्यः )
- [ " ] ८।१२।१४ ( पर्वतः काण्वः । इन्द्रः )  
पुरुप्रशस्तमृतय ऋतम्य यत ।  
(अग्निः १४१८) ८।७।१।१० (मुदीनि-पुरुमीच्छावाङ्गिरस्यौ  
तयोर्वान्यतरः । अग्निः)

- ... .. पुरुप्रशस्तमृतये ।
- [३०६] ८।१२।१० ( पर्वतः काण्वः । इन्द्रः )  
देवदेवं वोऽवम इन्द्रमिन्द्र गृणीषणि ।  
८।२७।१३ ( मनुववस्वतः । विद्युत्पा )  
वोऽवसे देव देवमिमिषे ।  
गृणन्तो ।
- [३०७] ८।१२।२० = (१९०९) ६।४।२।२
- [३०८] ८।१२।२१ = (२०६०) ६।४।५।२
- [३०९] ८।१२।२२ = (१३३८) ३।३।७।५
- [ " ] ८।१२।२० - (१००१) १।६।३।१।१
- [ " ] ८।१२।२२ = (२०३४) ७।३।१।१०
- [३१०] ८।१२।२३ = (३०५५) ६।५।९।१०
- [३११] ८।१२।२४ = (२५७) ८।६।१।५
- [३१२] ८।१२।२५ = (३०९) ८।६।२।०
- [३१२-३१४] ८।१२।२५-२७ आदिते हर्यता हरी पवक्षतुः ।
- [३१३] ८।१२।२६ = (७६१) ६।५।२।०
- [३१४] ८।१२।२७ = १।२।२।१८ (मेघानिधि काण्वः । विष्णुः )  
त्रीणि पदा वि चक्रमे ।
- [३१५] ८।१२।२८ ( पर्वतः काण्वः । इन्द्र )  
वावृधाते दिवेदिवे ।  
(५२६) ८।५३ ( बाल० ५ ) ।० ( मे यः काण्वः । इन्द्रः )  
वावृधानो दिवेदिवे ।
- [३१५-१७] ८।१२।२८-३० आदिते विश्वा भुगताणि  
यमिरे ।
- [३१८] ८।१२।३१ = (२७४) ८।६।३।०
- [३१९] ८।१२।३० = (१६२) ८।३।७
- [३२०] ८।१२।३३ = (अग्नि १७५५) ३।०।६।३ ( विश्वाभिना  
गायिनः । वैश्वानरगोऽग्निः )  
सुवीर्यं स्वश्वयं ।
- [३२१] ८।१३।१ = (२९८) ८।६।२।१
- [३२४] ८।१३।४ ( नारदः काण्वः । इन्द्रः )  
मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजमि ।  
(३७३) ८।१५।५ ( गोषुक्यश्वसृक्तिनो काण्वायनो । इन्द्रः )
- [३२६] ८।१३।६ = २।५।४
- [३२७] ८।१३।७ = (३०८०) ७।९।४।०
- [३२८] ८।१३।८ = (२७३) ८।६।३।४
- [३३०] ८।१३।१० = ८।५।५ ( ब्रह्मानिधिः काण्वः । अश्विनो )  
गन्तारा दाशुषो गृहम् ।
- [३३१] ८।१३।११ ( नारदः काण्वः । इन्द्रः )  
अश्वेभिः प्रुषितासुभिः ।

८।८७।५ ( कृष्ण आङ्गिरसो, शुभ्रीको वा वासिष्ठः प्रियमेध  
आङ्गिरसो वा । अश्विनौ )

[ ३३० ] ८।१३।१२ ( नारद काण्व । इन्द्रः )

इन्द्र शविष्ठ सस्यते ।

( २०९१ ) ८।६।१ ( प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः )

[ " ] ८।१३।१२ ( ३०४५ ) ५।८।६

[ " ] ८।१३।१२ = ७।८।१।६ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । उषा )

श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुध्वनम् ।

[ ३३३ ] ८।१३।१३ = ( १३९९ ) ३।४।१

[ ३३४ ] ८।१३।१४ ( नारदः काण्वः । इन्द्रः )

मस्त्वा सुतस्य गोमतः ।

( २४२६ ) ८।९।३० ( श्रुतकक्षः मुकक्षो वा आङ्गिरसः ।  
इन्द्रः )

[ " ] ८।१३।१४ = ( अग्नि १९१८ ) १।१४।२।१ ( दीर्घतमा  
औचथ्यः । आप्रीसक्तं [ इभः ममिद्धोऽमिनवो ] )

तन्तु तनुष्व पुर्य ।

[ ३३५ ] ८।१३।१५ ( नारदः काण्वः । इन्द्रः )

यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन् ।

( ९७९ ) ८।९।७।४ ( रेमः काश्यपः । इन्द्रः )

[ ३३७ ] ८।१३।१८ तमिद्विप्रा अवस्यवः ।

९।१७।७ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )

धीभिर्विप्रा अवस्ववः ।

९।६३।२० ( निःर्हाव काश्यपः । पवमानः सोमः )

[ ३३८ ] ८।१३।१८ ( नारदः काण्वः । इन्द्रः )

( २४१७ ) ८।९।२।१ ( श्रुतकक्षः मुकक्षो वा आङ्गिरसः ।  
इन्द्रः )

त्रिकट्टकेषु चेतनं देवासो यज्ञमरन्त ।

तमिद्वर्धन्तु नो गिरः सदावृधम् ।

९।६१।१४ ( अमर्हायुराङ्गिरसः पवमानः सोमः )

तमिद्वर्धन्तु नो गिरो ।

[ ३३९ ] ८।१३।१९ शुचिः पावक उच्यते सो अद्भुतः ।

( अग्निः १९२० ) १।१४।२।३ ( दीर्घतमा औचथ्यः ।  
आप्रीसक्तं [ नराणामः ] )

शुचिः पावको अद्भुतः ।

[ ३४५ ] ८।१३।२५ धुक्षस्त्र विप्युषीमिषम् ।

८।७।३ ( पुनर्वस्य काण्वः । मरुतः )

धुक्षन्त ... ।

[ ३४७ ] ८।१३।२७ ( नारदः काण्वः । इन्द्रः )

इह त्या सधमाथा ।

( २०८ ) ८।३।२९ ( मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः )

( २४५३ ) ८।९।२।४ ( सुकभ आङ्गिरसः । इन्द्रः )

[ ३५१ ] ८।१३।३१ ( नारदः काण्वः । इन्द्रः )

वृषायमिन्द्र ते रथ उतो ते वृषणा हरी ।

वृषा त्वं शतक्रतो वृषा हवः ।

( २२० ) ८।३।१।१ ( मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः )

वृषा रथो मघवन वृषणा हरी वृषा त्वं शतक्रतो ।

[ ३५२ ] ८।१३।३२ = ( १७६६ ) ५।४।२

[ ३५३ ] ८।१३।३३ = ( १७६७ ) ५।४।३

[ ३५६ ] ८।१४।३ = ( अग्नि ९२४ ) ५।२६।५ ( वस्यव  
आत्रेयाः । अग्निः )

[ ३५७ ] ८।१४।४ = ( १६५२ ) ४।३।८

[ ३५९ ] ८।१४।६ ( गोप्रकल्पश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः )

ते वय विश्वा धनानि जिग्मुषुः ।

ऊर्तमिन्द्रा वृणीमहे ।

९।६५।९ ( अगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः )

ते... वयं विश्वा धनानि जिग्मुषुः ।

सखित्वमा वृणीमहे ।

[ ३६० ] ८।१४।७ ( गोप्रकल्पश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः )

व्यश्नन्तरिक्षमतिरन् ।

( २८२१ ) १०।१५।३ ( देवजामय इन्द्रमातरः । इन्द्रः )

व्यश्नन्तरिक्षमतिरः ।

[ ३६५ ] ८।१४।१२ = ( २८७ ) ८।६।४५

[ ३६९ ] ८।१५।१ ( गोप्रकल्पश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः )

तम्बभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुहूतं ।

इन्द्रं... .. ॥

( २४०१ ) ८।९।५ ( श्रुतकक्षः मुकक्षो वा आङ्गिरसः ।  
इन्द्रः )

तम्बभि प्रार्चतेन्द्रं . ।

( २३९८ ) ८।९।२ पुरुहूतं पुरुहूतं ... .. ।

इन्द्रं ... ।

[ ३७१ ] ८।१५।३ एको वृत्राणि जिहसे ।

( २३४४ ) ८।९।९ शुद्धो वृत्राणि जिहसे ।

[ ३७३ ] ८।१५।५ = ( ३२४ ) ८।१३।४

[ ३७४ ] ८।१५।६ = ( १६३ ) ८।३।८

[ ३८० ] ८।१५।१२ = ( ८९ ) ८।१।३

[ ३८१ ] ८।१५।१३ = ७।५।२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वास्तोष्पतिः )

विश्वा रूपाण्याविशन् ।

[ " ] ८।१५।१३ ( गोप्रकल्पश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः )

इन्द्रं जैत्राय हर्षया शचीपतिम् ।

९।११।३ ( अनानतः पारुच्छेपिः । पवमानः सोमः )

इन्द्रं जैत्राय हर्षयन् ।

- [३८२] ८१६।१ = (अग्निः ५०९) ३।१०।१  
(विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः )  
(२७८५) १०।१३४।१ (मान्धाता यौवनाश्व । उन्द्रः )  
सन्नजं चर्षणीनाम् ।
- [३८८] ८।१६७ = (१४७) ८।२।३२  
[३९२] ८।१६।११ ( इरिम्बिठिः काण्वः । उन्द्रः )  
इन्द्रो विश्वा अति द्विवः ।  
(२३१६) ८।६९।१४ ( प्रियमेध आङ्गिरस । उन्द्रः )
- [३९४] ८।१७।१ एवं बर्हि सद्यो मम ।  
(अग्निः ५२९) ३।२४।३ ( विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः )
- [३९५] ८।१७।२ = (१३८१) ३।४।१।९  
[३९६] ८।१७।३ ( इरिम्बिठिः काण्वः । उन्द्रः )  
सुतावन्तो हवामहे ।  
(५१०) ८।५१(वाल० २)।६ ( श्रुष्टिगुः काण्व । उन्द्रः )  
(५६१) ८।६१।१४ ( अर्गः प्रागाथः । इन्द्रः )  
(२४५९) ८।९३।३० ( मुकक्ष आङ्गिरसः । उन्द्रः )
- [३९७] ८।१७।४ अम्माकं सुष्टीरूप ।  
(९३८) १।८४।२ ऋषीणा च स्तुतीरूप ।
- [४०१] ८।१७।८ = ६।५६।२ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा )  
इन्द्रो वृत्राणि जिघ्रते ।
- [४०३] ८।१७।१० = (३५६) ८।१४।३ =  
(अग्निः ९२४) ५।२६।५ ( वस्यव आत्रेयाः । अग्निः )  
(३०७०) ६।६०।१५ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इंद्रामी )
- [४०४] ८।१७।११ ( इरिम्बिठिः काण्व । उन्द्रः )  
एहीमस्य द्रवा पिब ।  
(६००) ८।६४।१२ ( प्रगाथ काण्व । उन्द्रः )  
एहीमिन्द्र द्रवा पिब ।
- [४०८] ८।१७।१५ = (८०) १।१६।३  
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
- [४११] ८।२१।३ = (१७६५) ५।४०।१
- [४१२] ८।२१।४ = १।१४।१ ( मेधातिथिः काण्वः । विश्वेदेवाः )
- [४१३] ८।२१।५ = (२२५६) ७।३२।२२
- [४१७] ८।२१।९ = (७०५) १।३०।७
- [४१९] ८।२१।११ ( सोमरिः काण्व । इन्द्रः )  
त्वया ह स्विष्टुजा वषं ।  
(अग्निः १४६५) ८।१०२।३ ( प्रयोगो भार्गव पावको-  
ऽग्निर्बार्हस्पत्यो वा गृहपति-यविष्ठौ सहसः पुत्रौ-  
ऽन्यतरो वा । अग्निः )
- [४२१] ८।२१।१३ = (८३५) १।१०२।८
- [१७९०] ८।२४।१ = (१४६५) ३।५३।१३

- [१७९२] ८।२४।३ = (अग्निः २०) १।१२।११  
( मेधातिथि काण्व । अग्निः )
- [१७९७] ८।२४।८ ( विश्वमना वैयश्वः । उन्द्रः )  
विषाम शूर नव्यसः ।  
वसोः .. ... ।  
(५०३) ८।५०(वाल० २)।९ ( पुष्टिगु काण्वः । उन्द्रः )  
वसो विश्वाम ... ... ।
- [१८०२] ८।२४।१३ = (३०७०) ६।६०।१५
- [१८०७] ८।२४।१८ = (२०६९) ६।४५।१०
- [१८०८] ८।२४।१९ ( विश्वमना वैयश्वः । उन्द्रः )  
एतो निवन्दं स्वाम ।  
(६७३) ८।८१।४ ( कुमादी काण्व । उन्द्रः )  
(२३४२) ८।९५।७ ( तिरथीगङ्गिरसः । उन्द्रः )
- [१८१] ८।३२।२ ( मेधातिथि काण्व । उन्द्रः )  
वधीदुग्धो रिणन्नपः ।  
९।१०९।२२ ( अग्रयो थिण्या तेश्वरा । पवमान सोमः )  
श्रीणन्नुग्धो रिणन्नपः ।
- [१८२] ८।३२।३ = (१७५) ८।३।२०
- [१८६] ८।३२।७ = (१६५२) ४।३२।८
- [१९१] ८।३२।१२ = (२९२) ८।१२।५
- [१९२] ८।३२।१३ = (१३) १।४।१०
- [ " ] ८।३२।१३ = (१३) १।४।१० = (१७) १।५।४
- [१९७] ८।३२।१८ = (१०४०) १।१३३।७
- [२०१] ८।३२।२२ धेना इन्द्रावचाकशात् ।  
(२५६२) १०।४३।६ जनाना धेना भवचाकशात् वृवा ।
- [२०२] ८।३२।२३ = (३२२७) ४।४७।२  
( वामदेवो गौतमः । उन्द्रवायू )
- [२०३] ८।३२।२४ = (२०४९) ६।४४।१४  
( शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )
- [२०६] ८।३२।२७ = १।३७।४ ( कण्वो घौरः । मरुतः )
- [२०८] ८।३२।२९ ( मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः ) =  
(२४५३) ८।९३।२४ ( मुकक्ष आङ्गिरसः । उन्द्रः )  
इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेता ।  
बोळशामभि प्रयो हितम् ॥
- [ " ] ८।३२।२९ = (२४५३) ८।९३।२४  
= (३४७) ८।१३।२७
- [२०९] ८।३२।३० = (२८७) ८।६।४५
- [ " ] ८।३२।३० = (२८७) ८।६।४५  
= (३६५) ८।१४।१२



- [२१२] ८३३३ ( मे-यातिथिः काण्वः । इन्द्रः )  
मक्षु गोमन्तभीमहे ।  
(८९५) ८८८२ ( नोधाः गौतमः । इन्द्रः )
- [२१९] ८३३१० ( मे-यातिथिः काण्वः । इन्द्रः )  
सत्यमिथा वृषेदसि ।  
९६४२ ( कश्यपो मारुत्वः । पवमानः सोमः )  
सत्य व्रपन वृषेदसि ।
- [२२०] ८३३११ = (३५१) ८१३३१  
[२२४] ८३३१५ ( मे-यातिथिः काण्वः । इन्द्रः )  
मदाय छुक्ष सोमपा ।  
(६१८) ८३६६ ( कलिः प्रागाथ । इन्द्रः )
- [४२५-३९] ८३३१-१५ दिवो अमुष्य शामतो दिव  
यय दिवावसो ।
- [४२८] ८३३१४ = (१७४१) ५३५६  
[४३१] ८३३१७ ( नीपातिथिः काण्वः । इन्द्रः )  
सहस्रोत्ते शतामघ ।  
९६२१४ ( जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः )  
सहस्रोतिः शतामघो ।
- [४३२] ८३३१८ आ त्वा होता मजुर्हितः ।  
( अग्निः १९०९ ) ११३१४ ( मेधातिथिः काण्वः ।  
आर्षास्क्तं [ टळ ] )  
असि होता ।  
११४११ ( मेधातिथिः काण्वः । विधेदेवाः )  
न्वं होता ... ।  
( अग्निः १०५० ) ६१६१९ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः )
- [४३५] ८३३११ आ नो याहुपश्रुति ... ।  
८८५ ( सर्वसः काण्वः । अश्विनौ )  
आ नो यातमपश्रुति ।
- [४३७] ८३३१३ ( नीपातिथिः काण्वः । इन्द्रः )  
समुद्रस्याधि विष्टप ।  
(९८०) ८१७५ ( रेभः काश्यपः । इन्द्रः )  
..... विष्टपि ।  
९१२१६ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
.. विष्टपि ।  
९१०७१४ ( सप्तर्षयः । पवमानः सोमः )  
... विष्टपि मनीषिणो ।
- [१७६९-७४] ८३६१२-६ पिबा सोमं मदाय कं शतक्रनो ।  
यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृत्तना  
उरु ज्रयः समस्तुजिन्मरुवाँ इन्द्र सरपते ।
- [१७७२] ८३६४ ( श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्रः )

- जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।  
९१९६५ ( प्रतर्दनो दैवोदासिः । पवमानः सोमः )
- [१७७५] ८३६१७ = (१७८२) ८३७७  
( श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्रः )  
श्यावाश्वस्य सुन्वतस्तथा [८३७१७ रेभस्तथा ]  
शृणु यथाशृगोरत्रेः कर्माणि कृण्वतः ।  
म त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्द्रवाह्य इन्द्र ब्रह्माणि ।  
[ ८३७७ धत्राणि ] वर्धयन् ।  
(३०९८) ८३८८ ( श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्राभी )  
श्यावाश्वस्य सुन्वतो ।
- [१७७६-८१] ८३७११-६ इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।  
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ।
- [१७८२] ८३७१७ = (१७७५) ८३६१७  
[ " ] ८३७१७ = (१७७५) ८३६१७  
= (३०९८) ८३८८
- [४४६] ८४५१४ ( त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः )  
जात पृच्छद्भि मातरम् ।  
क उग्राः के ह शृण्विरे ।  
(६४०) ८७७१ ( कुरुमतिः काण्वः । इन्द्रः )  
जजानो... वि पृच्छदिति मातरम् ।  
क ।
- [४४९] ८४५१७ = (७०) ११११  
[४५२] ८४५१० ( त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः )  
अरं ते शक्र दावने ।  
(२४२२) ८१२१६ ( मृतकक्ष मुकक्षो वा आङ्गिरसः । इन्द्रः )
- [४५३] ८४५११ अर्नश्चिद्यन्तो भद्रिवः ।  
(५५१) ८६१४ मक्षु चिद्यन्तो... ।
- [४५५] ८४५१३ = (१३८७) ३४२६  
[४५७] ८४५१५ = (९२४) १८१९  
[४६३] ८४५२१ स्तोत्रमिन्द्राय गायत ।  
(२३८४) ८८९१ बृहदिन्द्राय गायत ।  
[ " ] ८४५२१ = (२०८१) ६४५२२  
[४७१] ८४५२९ = (१५) १५१२  
[४७५] ८४५३३ = (२६७) ८६१५  
[४८२-८४] ८४५४०-४२ वसु र्पाई तदा भर ।  
[१८१९] ८४६३ ( वसोऽश्व्यः । इन्द्रः )  
शतमूले शतक्रनो ।  
गीर्भिगृणन्ति कारवः ।  
(२३८३) ८१९१८ ( रुमेथ आङ्गिरसः । इन्द्रः )  
शतमूर्तिं शतक्रनुम् ।

(५३३) ८।५४ (वाल० ६)।१ (मानरिवा काण्व । इन्द्रः)  
गोभिः . ... ।  
[१८२२] ८।४६।६ = ६।५४।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पषा)  
ईशान राय ईमहे ।  
[१८२४] ८।४६।८ (वशोऽऽव्य । इन्द्रः)  
यस्ते मद्दो वरेण्यो य इन्द्र वृत्रहन्तमः ।  
९।६१।१९ (अमर्हीयुरागिरमः । पवमानः सोम )  
यस्ते मद्दो वरेण्य ।  
(२४१३) ८।९२।१७ (श्रुतकक्ष मुकक्षो वा आगिरमः ।  
इन्द्रः)  
यस्ते य इन्द्रवृत्रहन्तम ।  
य मद् ।  
[१८२५] ८।४६।९ (वज्रोऽऽव्यः । इन्द्र )  
गभम गोमति व्रजे ।  
(५०९) ८।५१ (वाल० ३)।५ (श्रुष्टिगु काण्व । इन्द्रः)  
[१८२९] ८।४६।१३ पुरः म्याता मघवा वृत्रहा भुवन् ।  
(२४८२) १०।२३।२ इन्द्रो मघैर्मघवा ।  
[१८३६] ८।४६।२० = ८।२२।२ (गोभिरः काण्वः । अश्विनौ।)  
भुज्यु वाजेषु पृथर्म ।  
[४८५] ८।४९(वाल० १)।१ (प्रस्कण्व काण्व । इन्द्रः)  
अभि प्र ... इन्द्रमर्चं यथा विदे ।  
(२३०७) ८।६९।४ (प्रियमेध आङ्गिरमः । इन्द्रः )  
अभि प्र ... इन्द्रमर्चं यथा विदे ।  
[४८९] ८।४९(वाल० १)।५ (प्रस्कण्वः काण्व । इन्द्रः )  
आ न. धियानो अश्वो ।  
यं ते स्वदावन्स्वदयन्ति धेनव ।  
(४९९) ८।५०(वाल० २)।५ (पुष्टिगुः काण्व । इन्द्र )  
आ नः ... इयानो अश्वो ।  
यं ते स्वदावन्स्वदयन्ति गर्तय ।  
[४९०] ८।४९।(वाल० १)।६ (प्रस्कण्वः काण्व । इन्द्रः )  
उग्रं वीरं ... विभूतिम् ।  
उद्गीव वज्रिन्नवतो न सिञ्चते ।  
(५००) ८।५०(वाल० २)।६ (पुष्टिगुः काण्व । इन्द्रः )  
वीरमुग्र ... विभूतिम् ।  
उद्गीव वज्रिन्नवतो वसुत्वना ।  
[४९१] ८।४९(वाल० १)।७ = (१७२) ८।३।१७  
[४९३] ८।४९(वाल० १)।९ (प्रस्कण्व काण्व । इन्द्रः )  
एतावतस्त ... ।  
यथा प्रावो मघवन् मेऽयातिथि यथा ।  
(५०३) ८।५०(वाल० २)।९ (पुष्टिगुः काण्व । इन्द्रः )

एतावतस्ते ... ।  
यथा प्राव एतयं कृन्व्य धेन यथा ।  
[४९४] ८।४९(वाल० १)।१० (प्रस्कण्व. काण्वः । इन्द्रः )  
यथा कण्वे मघवन् व्रमदस्यवि ।  
यथा गोशर्ये अमनोऋजिश्चनि ... गोमद् ।  
(५०४) ८।५०।(वाल० २)।१० (पुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः )  
यथा कण्वे मघवन् मेधे अ-वरे ।  
यथा गोशर्ये अगिषामो अद्विवो गात्र ।  
[४९९] ८।५०(वाल० २)।५ = (४८९) ८।४९(वाल० १)।५  
[५००] ८।५०(वाल० २)।६ = (४९०) ८।४९(वाल० १)।६  
[५०१] ८।५०(वाल० २)।७ = (१७२) ८।३।१७  
[५०३] ८।५० (वाल० २)।९ = (१७९७) ८।२४।८  
[ " ] ८।५० (वाल० २)।९ =  
(४९३) ८।४९ (वाल० १)।९  
[५०४] ८।५० (वाल० २)।१० =  
(४९४) ८।४९ (वाल० १)।१०  
[५०५] ८।५१ (वाल० ३)।१ (श्रुष्टिगुः काण्व ।  
इन्द्रः )  
यथा मनौ सावर्णो सोममिन्द्रापिबः सुतम् ।  
(५१५) ८।५२(वाल० ४)।१ (आयुः काण्वः । इन्द्रः )  
यथा मनौ विवस्वति सोम शक्रापिबः सुतम् ।  
[५०९] ८।५१ (वाल० ३)।५ = (२०९२) ६।४६।३  
[ " ] ८।५१ (वाल० ३)।५ = (१८२५) ८।४६।९  
[५१०] ८।५१ (वाल० ३)।६ (श्रुष्टिगु काण्वः । इन्द्रः )  
यस्मै त्वं वसो दानाय जिश्रिभि स रायस्पोषमश्नुते ।  
तं त्वा वयं मघवन्नन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ।  
(५२०) ८।५२(वाल० ४)।६ (आयुः काण्वः । इन्द्रः )  
यस्मै त्वं वसो दानाय मंहमे स रायस्पोषमिन्वति ।  
(५६१) ८।६१।१४ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः )  
तं त्वा वयं..... ।  
[ " ] ८।५१ (वाल० ३)।६ = (५६१) ८।६१।१४  
= (३९६) ८।१७।३  
[५१५] ८।५२(वा.३० ४)।१ यथा मनौ. .सोमं शक्रापिब सुतम् ।  
. .इन्द्र... सचा ।  
(५०५) ८।५१ (वा.३० ३)।१ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः )  
यथा मनौ ..सोममिन्द्रापिबः सुतम् ।  
मघवन् सचा ।  
[ " ] ८।५२ (वाल० ४)।१ = (२३०) ८।४।२  
[५१७] ८।५२ (वाल० ४)।३

- विष्णुस्त्रीणि पदा वि चक्रम ।  
 १।२२।१८ ( मेधानिधि काण्व । विष्णु )  
 त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णु ।  
 [५१८] ८।५।२ ( बाल० ४ ) । ४ जुहूमसि श्रवस्यवः ।  
 ( ४ ) १।४।१ जुहूमसि यविद्याव ।  
 [५१९] ८।५।२ ( बाल० ४ ) । ५ ( आयुः काण्वः । इन्द्र )  
 महौ उग्र ईशानकृत् ।  
 ( ६०५ ) ८।६।५ ( प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः )  
 [५२०] ८।५।२ ( वा० ४ ) । ६  
 यस्मै त्व वसो दानाय महसे स रायस्पोषमन्वात ।  
 ( ५१० ) ८।५।२ ( बाल० ३ ) । ६  
 ... दानाय शिक्षसि स रायस्पोषमन्नुते ।  
 [ " ] ८।५।२ ( बाल० ४ ) । ६ ( आयुः काण्व । इन्द्रः )  
 वस्यवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ।  
 ( ५५७ ) ८।६।१० ( भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः )  
 [५२४] ८।५।२ ( बाल० ४ ) । १० सं क्षोणी समु सूर्यम् ।  
 ८।७।२२ ( पुनर्वन्मः काण्वः । मरुतः )  
 [५२५] ८।५।३ ( बाल० ५ ) । १ ईशानं राय ईमहे ।  
 ६।५।४।८ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा )  
 [५२६] ८।५।३ ( वा० ५ ) । २ = ( ३१५ ) ८।१।२८  
 [ " ] ८।५।३ ( बाल० ५ ) । २ वाजयन्तो हवामहे ।  
 ( अग्निः १२२२ ) ८।१।१९ ( वत्सः काण्वः । अग्निः )  
 [५२७] ८।५।३ ( बाल० ५ ) । ३ ये परावति सुन्वरे जनेष्वा ये  
 अर्वावतीन्दवः ।  
 ( २४३५ ) ८।९।३।६ ये सोमाम परावति ये अर्वावति  
 सुन्वरे ।  
 ९।६।२।२ ( ऋग्वर्षाणि जर्मदाभिर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः )  
 [५२८] ८।५।३ ( बाल० ५ ) । ४ = ( २४० ) ८।४।१२  
 यत्रा सोमस्य तृष्पसि ।  
 [५३०] ८।५।३ ( बाल० ५ ) । ६ = ( २९८ ) ८।१।१।११  
 क्रतुं पुन ( नी ) त आनुषक् ।  
 [५३१] ८।५।३ ( बाल० ५ ) । ७ = ( १७३६ ) ५।३।५।१  
 यस्ते साधिष्ठोऽवसे ।  
 [५३३] ८।५।४ ( बाल० ६ ) । १ = ( १८१९ ) ८।४।३।३  
 गीभिर्गृणन्ति कारवः ।  
 [५३५] ८।५।४ ( बाल० ६ ) । ५ = ( १५६ ) ८।३।१  
 नो बोधि सधमाद्यो वृधे ।  
 [५३६] ८।५।४ ( बाल० ६ ) । ६ ससर्वांसो वि ऋषिबरे ।  
 ( अग्निः ७०९ ) ४।८।६ ( वामदेवो गीतमः । अग्निः )  
 [५३७] ८।५।४ ( बाल० ६ ) । ७ धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ।

- ८।७।३ ( पुनर्वत्सः काण्वः । मरुत )  
 धुक्षन्त ।  
 [५३८] ८।५।४ ( बाल० ६ ) । ८ वय त इन्द्र स्तोमैर्विधिधेम ।  
 ( अग्निः ७९६ ) ५।४।७ ( वसुरहत आत्रेयः । अग्निः )  
 वयं ते अग्न उक्थैर्विधिधेम ।  
 ( अग्निः ११७५ ) ७।१।४।२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । अग्निः )  
 वयं ते अग्ने समिधा विधिधेम ।  
 [५४४] ८।५।६ ( वा० ८ ) । १ = ( ४२ ) १।८।५  
 घौर्न प्रथिना शवः ।  
 [५५१] ८।६।१।४ मक्ष् चिद् यन्तो भद्रिवः ।  
 ( ४५३ ) ८।४।५।११ शनैश्चिद् यन्तो भद्रिवः ।  
 [५५२] ८।६।१।५ = ( २९२ ) ८।१।५।५ इन्द्र विश्वाभिरुत्तिभिः ।  
 [५५३] ८।६।१।६ ( भर्गः प्रागाथ । इन्द्रः )  
 उत्सो देव हिरण्ययः ।  
 ९।१०।७।४ ( यत्पर्षयः पवमान सोमः )  
 [५५७] ८।६।१।१० = ( ५२० ) ८।५।२ ( बाल० ४ ) । ६  
 स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ।  
 [५६०] ८।६।१।१३ ( भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः )  
 वि द्विषो वि ऋधो जहि ।  
 ( २८१६ ) १०।१।५।३ ( शासो भारद्वाज । इन्द्रः )  
 वि रक्षो वि ऋधो जहि ।  
 [५६१] ८।६।१।१४ = ( ३९६ ) ८।१।७।३ सुतावन्तो हवामहे ।  
 [५६६-७७] ८।६।१।१-१२ भद्रा इन्द्रस्य रातयः ।  
 [५६९] ८।६।२।४ इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।  
 ५।७।३।१० ( पार आत्रेयः । अधिर्ना )  
 इमा ब्रह्माणि.. ।  
 [५७९] ८।६।३।२ उक्था ब्रह्म च शंस्या ।  
 ( ४७ ) १।८।१० स्तोम उक्थं च शंस्या ।  
 [५८०] ८।६।३।३ = ( ९०९ ) १।८।०।१०  
 [५८३] ८।६।३।६ कृतानि कर्त्वानि च ।  
 १।२।५।११ ( शुनः शेष आर्जागतिः । वरुणः )  
 कृतानि या च कर्त्वा ।  
 [५८६] ८।६।३।९ उरु क्रमिष्ट जीवसे ।  
 १।१।५।४ ( दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः )  
 [५८९] ८।६।४।१ = ( ६४ ) १।१०।७  
 [५९२] ८।६।४।४ ओभे पृणासि रोदसी ।  
 ( अग्निः १६८५ ) १०।१।४।२ ( पावकोऽग्निः । अग्निः )  
 पृणासि रोदसी उभे ।  
 [५९४] ८।६।४।६ = ( ८६ ) १।१।९

- [५९५] ८।६४।७ ब्रह्मा कस्तं सपर्यति ।  
८।७।१० (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)  
ब्रह्मा को वः सपर्यति ।
- [५९८] ८।६४।१० = (२४०) ८।४।१२  
[६००] ८।६४।१२ = (४०४) ८।१७।११  
[६०१] ८।६५।१ = (२२९) ८।४।१  
[६०२] ८।६५।२ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)  
नादयासे स्वर्णरे ।  
(अग्निः २४४७) ८।१०३।१४ (सोमार्गः काण्वः ।  
अमामरुतः)  
मादयस्व स्वर्णरे ।
- [६०३] ८।६५।३ = (८०) १।२६।३  
[६०५] ८।६५।५ = (५१९) ८।५२ (वाल् ० ०) ५  
[६०६] ८।६५।६ प्रयस्वन्तो हवामहे ।  
(अग्नि ८९३) ५।२०।३ (प्रयस्वन्त आत्रेयाः । आमिः)  
[ " ] ८।६५।६ इदं नो बर्हिंरासवे ।  
(अमि १९१२) १।१३।७ (मेधातिथि काण्वः ।  
आप्रीसूक्तं = [उषामानक्ता] )
- [६०७] ८।६५।७ = (१६५७) ४।३२।१३  
तं त्वा वयं हवामहे ।  
[ " ] ८।६५।७ = (१६५७) ४।३२।१३ = (अमि १३३२)  
८।४३।१३ (विरूप आगिरसः । अमिः)  
[६०८] ८।६५।८ इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्नद्विभिर्नरः ।  
(३०९३) ८।३८।३ (शावाश्र आत्रेयः । इन्द्रार्मा)  
इदं वा मदिंरं मध्वधुक्ष० ।
- [६०९] ८।६५।९ = (५५) १।९।८  
असे धेहि श्रवो वृहत् ।
- [६१२] ८।६५।१२ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)  
श्रवो देवेष्वक्रन ।  
१०।६२।७ (नाभावेदिष्टो मानवः । विश्वेदेवाः)
- [६१८] ८।६६।६ = (२२४) ८।३३।१५  
मदाय शुक्ष सोमपाः ।
- [६२०] ८।६६।८ सेमं नः स्तोमं जुजुषाण भा गहि ।  
(८२) १।१६।५ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
- [६२४] ८।६६।१२ = (१६०४) ४।२९।१  
[६२५] ८।६६।१३ = (९५५) १।८४।१९  
[२२९१] ८।६८।१ = (३३२) ८।१३।१२  
इन्द्र शविष्ठ सपते ।
- [२२९५] ८।६८।५ = (८९) ८।१।३ नाना हवन्त ऊतये ।  
[२२९७] ८।६८।७ = (१३८९) ३।४२।८  
दे० [इन्द्रः] ३२

- इन्द्रं (सोम) चोदामि पीतये ।  
[२२९९] ८।६८।९ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)  
जयेम पृसु वज्रिवः ।  
(२४०७) ८।९१।११ (श्रुतकथः मुकलो वा आगिरसः ।  
इन्द्रः)
- [२३०४] ८।६९।१ प्र वस्त्रिष्टुभमिप ।  
८।७।१ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)  
प्र यद्वस्त्रिष्टुभमिपं ।
- [२३०६] ८।६९।३ = (९४७) १।८४।११  
ता अस्य ... सोमं श्रीणन्ति पृश्रयः ।  
[ " ] ८।६९।३ त्रिषत्रा रोचने दिव ।  
१।१०५।५ (त्रित आत्यः, कुन्म आगिरसो वा । विश्वेदेवाः)
- [२३०७] ८।६९।४ = (४८५) ८।४९ (वाल् ० १) ११  
इन्द्रमर्चं यथा विदे ।
- [२३०९] ८।६९।६ दुदुहे वज्रिणे मधु ।  
८।७।१० (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
- [२३१०] ८।६९।७ = (३२१८) १।१३।५७  
(परुच्छेपो देवोदामिः । इन्द्रवायुः)
- [२३१२] ८।६९।९ = (९०८) १।८।९ इन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् ।  
[२३१३] ८।६९।१० = ९।१।९ (मधुच्छन्दा वेश्यामित्रः ।  
पवमानः सोमः )
- सोममिन्द्राय पातवे ।  
९।४।४ (द्विरण्यस्तृप आगिरसः । पवमानः सोमः )  
९।२४।३ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
सोममिन्द्राय पातवे ।
- [२३१६] ८।६९।१४ = (३९२) ८।१६।११  
इन्द्रो विश्वा भति द्विपः ।
- [२३१७] ८।६९।१५ अर्भको न कुमारकः ।  
८।३०।१ (मनुर्ववस्वतः । विश्वेदेवाः )
- [२३१८] ८।६९।१६ स्वस्तिगामनेहसम् ।  
६।५।१।१६ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः )
- [२३१९] ८।६९।१७ तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।  
(अमि ७४) १।३६।७ (कण्वो घोरः । अमिः )
- [२३२०] ८।६९।१८ = (७०७) १।३०।९ अनु प्रत्यस्यकसः ।  
[२३२३] ८।७०।३ न किष्टं कर्मणा नशत् ।  
८।३।१।७ (मनुर्ववस्वतः । दम्पत्याशिपः )
- [६२८] ८।७६।१ = (७७) १।१।८ इन्द्रमीशानमोजया ।  
[६२९] ८।७६।२ = (९०५) १।८।६ वज्रेण शतपर्वणा ।  
[६३२] ८।७६।५ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः )  
इन्द्रं गीर्भिर्हवामहे ।

- (८९४) ८१८८१ ( नोधा गौतम । इन्द्रः )  
इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ।  
[ ६३३ ] ८१७६१ मरुत्वन्तं हवामहे ।  
( ३२४७ ) १२३१७ ( मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः )  
[ ] ८१७६१ = १२२११  
[ ६३४ ] ८१७६७ पिवा सोमं शतक्रनो ।  
( १३४१ ) ३३७८ इन्द्र सोमं शतक्रनो !  
[ ६३६ ] ८१७६९ सुतं सोम दिविष्टिषु ।  
१२६१४ ( गोतमो गङ्गागणः । मरुतः )  
सुतः सोमो दिविष्टिषु ।  
[ , ] ८१७६९ ( कुरुगुति काण्वः । इन्द्रः )  
वज्र शिक्षान भोजसा ।  
( २८२२ ) १०१५३४ ( देवजामय इन्द्रमातरः । इन्द्रः )  
[ ६३८ ] ८१७६११ = ( २८० ) ८१६३८ अनुत्वा रोदसी उभे ।  
[ ६४० ] ८१७७१ = ( ४४६ ) ८१४५४ क उग्रा के ह शृण्वरे ।  
[ ६४७ ] ८१७७८ तेन स्तोतृभ्य आ भर ।  
( आग्निः ८०१-१० ) ५१६१२-१० ( तमुद्रुत आत्रेयः । आग्निः )  
दृष स्तोतृभ्य आ भर ।  
[ ६५८ ] ८१७८८ ( कुरुगुति काण्वः । इन्द्रः )  
विश्वा च सोम सौभगा ।  
९१४२ ( ऋण्यरत्न आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
९१५५१ ( अवन्यार काश्यपः । पवमानः सोम )  
सोम विश्वा च सौभगा ।  
[ ६६१-६७ ] ८१८०१-२ = ( २०७६ ) ६४५१७  
स ख न इन्द्र मृलय ।  
[ ६६३ ] ८१८०३ = ( २०४५ ) ६४५१०  
किमङ्ग रध्वोदनः ( ००० ) ।  
[ ६६७ ] ८१८०७ = ( २९७ ) ८१२११०  
इय री ( त ) ऋत्विष्यावती ।  
[ ६७३ ] ८१८१४ = ( १८०८ ) ८१२४१९ एतो निवन्द्रं स्ववाम  
[ ६८० ] ८१८२२ तीव्राः सोमाम आ गहि ।  
१२३११ ( मेधातिथिः काण्वः । वायुः )  
[ ६८१ ] ८१८२३ भुवा त इन्द्र शं हदे ।  
( २६५४ ) १०१८६१५ ( इन्द्राणां । इन्द्रः )  
मंथस्त इन्द्र शं हदे ।  
[ ६८३ ] ८१८२५ तुभ्यायमद्भिभिः सुता ।  
११३५२ ( परुच्छेपो देवोदासिः । वायुः )  
तुभ्यायं सोम परिपृतो अद्भिभिः ।  
[ ६८५-८७ ] ८१८२७-९ पिबेदस्य स्वमीशिषे ।  
[ ६८७ ] ८१८२९ ( कुमीदी काण्वः । इन्द्रः )

- तिरो रजांस्यस्पृतम् ।  
९१३८ ( शुनःशेष आजीगर्तिः, स देवरातः  
कृत्रिमो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः )  
तिरो रजांस्यस्पृतः ।  
[ ८९४ ] ८१८८१ अभि वरसं न स्वसरेषु धेनवः ।  
( अग्निः ३८६ ) २१२१२ ( युत्समदः शौलकः । अग्नि )  
अग्ने वरसं न स्वसरेषु धेनवः ।  
[ " ] ८१८८१ = ( ६३२ ) ८१७६५  
इन्द्रं गीर्भिर्न ( ०ह ) वामहे ।  
[ ८९५ ] ८१८८२ = ( २१२ ) ८१३३२ मधू गोमन्तमीमहे ।  
[ ८९९ ] ८१८८६ = ( १०११ ) ११३०१  
मंहिष्ठो ( ०ष्ठ ) वाजसातये ।  
[ ९३८४ ] ८१८९१ = ( ४६३ ) ८१४५२१  
बृद्धि ( स्तोत्रमि ) न्द्राय गायत ।  
[ ९३८५ ] ८१८९२ ( नृमेध-पुस्मेधावाङ्गिरसौ । इन्द्र )  
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ।  
( २३६६ ) ८१८९३ ( नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः )  
[ ९३८६ ] ८१८९३ = ( ९०५ ) ११८०६ वज्रेण शतपर्बणा ।  
[ ९३९० ] ८१८९७ = ( ३० ) ११७३  
आ सूर्यं रोहयो ( रोहयद् ) दिवि ।  
[ ९३९५ ] ८१९०५ त्वामिन्द्र यशा असि ।  
( आग्नि १२९९ ) ८१२३३० ( विश्वमना वैयथः । आग्निः )  
अग्ने त्वं यशा असि ।  
[ १७८४ ] ८१९१२ = ( १४४६ ) ३१५२१  
धानावन्तं कर्मिभणमपूपवन्तमुक्थिनम् ।  
[ १७८५ ] ८१९१३ ( अपाला आत्रेयाः । इन्द्रः )  
इन्द्रायेन्द्रो परि स्रव ।  
९११०६४ ( चक्षुर्मानवः । पवमानः सोम )  
[ ९३९७ ] ८१९२१ = ( १४ ) ११५१  
इन्द्रमभि प्र गायत ।  
( ३६९ ) ८१९५१ तम्त्रभि प्र गायत ।  
[ ९३९८ ] ८१९२२ = ( ३६९ ) ८१९५१  
पुरुहूतं पुरुष्टुतं ।  
[ ९४०१ ] ८१९२५ तम्त्रभि प्र गायत ।  
( ३६९ ) ८१९५१ तम्त्रभि प्रार्चत ।  
[ " ] ८१९२५ = ( ८० ) ११६३  
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।  
[ ९४०२ ] ८१९२६ ( धृतकक्षो सुकक्षो वा आङ्गिरसः । इन्द्रः )  
अस्य पीत्वा मदानाम् ।

- ९।२३।७ ( असितः काश्यपो देवलो वा ।  
पवमानः सोमः )
- [२४०७] ९।२२।११ = (२२९९) ८।६।८।९  
जयेम वृत्सु बज्रिवः ।
- [२४०८] ८।२२।१२ = (२०८४) ६।४।५।२६  
वयमु ( इमा उ ) स्वा शतक्रतो ।
- [ " ] ८।२२।१२ गावो न यवसेव्वा ।  
१।९।१।३ ( गौतमो राह्वगणः । सोम )
- [२४१०, २४१८] ८।२२।१४, २२ न स्वामिन्द्राति रिच्यते ।
- [२४१३] ८।२२।१७ = (१८२४) ८।४।६।८  
य इन्द्र वृत्रहन्तम् ।
- [२४१६] ८।२२।२० यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो ।  
१।१३।९।३ ( परुच्छेपो देवोदामि । अश्विनो )  
युवोर्बिश्वा ।
- [२४१७] ८।२२।२१ = (३३८) ८।१३।१८  
त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमस्तत ।  
तमिद्वर्धन्तु नो गिरः (सदावृषम्) ॥  
९।६।१।१४ (अमर्होयुरागिरसः । पवमानः सोमः)
- [२४१८] ८।२२।२२ भा स्वा विश्वन्विन्दवः ।  
१।१।५।१ (मेधातिथिः काण्वः । ऋतव [इन्द्र ])
- [ " ] ८।२२।२२ = (२७७) ८।६।३।५ समुद्रमिव सिन्धवः ।
- [२४२१] ८।२२।२५ (धृतकक्षः मुकक्षो वा आगिरसः । इन्द्र )  
अरमिन्द्रस्य धाम्ने ।  
९।२४।५ (अमितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
- [२४२२] ८।२२।२६(४५२) ८।४।५।१० अरं ते शक्र दावने ।
- [२४२६] ८।२२।३० = (३३४) ८।१३।१४  
मस्वा सुतस्य गोमतः ।
- [२४३२] ८।२३।३ (मुकक्ष आगिरस । इन्द्रः)  
अश्वान्नोमघवमत् ।  
९।६।९।८ (हिरण्यस्तूप आगिरसः । पवमानः सोमः)  
अश्वान्नोमघवमत् सुवीर्यम् ।
- [२४३४] ८।२३।५ यद्वा प्रवृद्ध सत्यते ।  
(२९५) ८।१२।८ यदि प्रवृद्ध ... ।
- [२४३५] ८।२३।६ (मुकक्ष आगिरस । इन्द्रः)  
ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे ।  
९।६।५।२२ ( ऋग्वारुणिर्जमदमिर्भार्गवो वा ।  
पवमानः सोमः )
- [२४४०] ८।२३।११ न मिनन्ति स्वराज्यम् ।  
५।८।२।२ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)
- [२४४१] ८।२३।१२ = (२०४०) ६।४।४।५

- देवी शुष्म सपर्यतः ।
- [२४४८] ८।२३।१९ कथा स्तोत्रभ्य आ भर ।  
(अग्नि. ८०१-१०) ५।६।१-१० (वमुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
- [२४४९] ८।२३।२० = (८५) १।१६।८ वृत्रहा सोमपीतये ।  
एषं स्तोत्रभ्य आ भर ।
- [२४५१] ८।२३।२२ उग्रन्तो यन्ति वीतये ।  
(१८) १।५।५ शुन्वयो यन्ति ... ।
- [२४५३] ८।२३।२४ = (२०८) ८।२२।२९  
वोळहामभि प्रयो हितम् ।
- [ " ] ८।२३।२४ = (२०८) ८।३।२।२९ = (३४७) ८।१३।२७  
इह त्या सधमाथा ।
- [२४५४] ८।२३।२५ = (१३६७) ३।४।०।४  
तुभ्य (इन्द्र) सोमा सुता इमे ।
- [२४५५] ८।२३।२६ दधद्रस्ना वि दाशुषे ।  
(अग्नि ७५१) ४।१५।३ (वामदेवो गोतमः । अग्नि )  
दधद्रस्नानि दाशुषे ।  
९।३।६ (अनु. शेष आजीर्गति. य देवगत. कृत्रिमो वेश्वा-  
मित्र. । पवमान सोम )
- [२४५७-५९] ८।२३।२८-३० = (२६७) ८।६।२।५  
यदिन्द्र मृळयासि नः ।
- [२४५८] ८।२३।२९ स नो विश्वान्या भर ।  
(अग्निः १७१६) १०।१९।१।२ (संवनन आर्गिरसः । अग्नि )  
स नो वसून्या भर ।
- [२४५९] ८।२३।३० = (३९६) ८।१७।३  
सुतावन्तो हवामहे ।
- [२४६०-६२] ८।२३।३१-३३ उप नो हरिमिः सुवम् ।
- [२३३६] ८।२५।१ = (२०८४) ६।४।५।२५ इन्द्र वन्म न भातर ।
- [२३३७] ८।२५।२ सुतास इन्द्र गिर्वणः ।  
(१६५५) ४।३।२।१ सुतेष्विन्द्र ... ।
- [२३३८] ८।२५।३ ( निरश्वीगाङ्गिरसः । इन्द्रः )  
इन्द्र ... .. ।  
एवं हि शश्वतीनां पती ।  
(२३६९) ८।२८।६ ( तुमेव आर्गिरसः । इन्द्र )  
... शश्वतीनामिन्द्र ।  
... पतिः ।
- [२३४१] ८।२५।६ = (२७७) ८।६।३।५ इन्द्रमुक्त्वानि वावृषुः ।
- [ " ] ८।२५।६ ( निरश्वीगाङ्गिरसः । इन्द्र )  
सिषासन्तो वनामहे ।  
९।६।१।११ (अमर्होयुराङ्गिरसः । पवमान सोम )
- [२३४२] ८।२५।७ = (१८०८) ८।०।४।१०

- [२३४३] ८।९।८ शुद्धो रथिं नि धारय ।  
१।३०।२२ ( शुनः शेष आजीगर्तिः । उषा )  
अग्ने रथिं . ।
- [२३४४] ८।९।९ = (३७१) ८।१।३  
शुद्धो ( एको ) वृत्राणि जिघ्रसे ।
- [ " ] ८।९।९ शुद्धो वाजं सिषाससि ।  
९।२३।६ ( काश्यपोऽग्निनो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
उन्ने वाजं सिषाससि ।
- [२३४९] ८।९।५ = (१६९६) ५।३।१४ अहये हन्तवा उ ।
- [२३५१] ८।९।७ ( निरश्वीराङ्गिरसो, द्युतानो वा मारुतः । इन्द्रः )  
अथेमा विश्वाः पृतना जयासि ।  
१०।५२।५ ( अग्नि सौचीकः । विश्वे देवाः )  
... जयाति ।
- [२३५६] ८।९।१२ स्तुहि सुष्टुति नमसा विवास ।  
५।८३।१ ( भौमोऽग्नि । पर्जन्य )  
स्तुहि पर्जन्यं नमसाविवास ।
- [२३६३] ८।९।२१ ( निरश्वीराङ्गिरसो द्युतानो वा मारुतः । इन्द्रः )  
सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूव ।  
( अग्नि १५२६ ) १०।६।७ ( त्रिन आत्यः । अग्नि )  
... बभूय ।
- [९७९] ८।९।४ = (३३५) ८।१३।१५  
यच्छक्रासि परावति यदवावति वृत्रहन् ।
- [ " ] ८।९।४ = (९४५) १।८।४ सुतावो भा विवामति ।
- [९८०] ८।९।५ = (४३७) ८।३।१३  
समुद्रम्याधि विष्टपि ( ०५ ) ।
- [ " ] ८।९।५ यदन्तरिक्ष भा गहि ।  
५।७३।१ ( पार आत्रेयः । अधिर्ना )  
... गतम् ।
- [९८१] ८।९।६ = (१६४१) ४।३।१२ = (१००८) १।१२९।९  
एवं न इन्द्र राया परीणसा ।  
( १००९ ) १।१२९।१० एव न इन्द्र राया तरुष्या ।
- [९८२] ८।९।७, ७ मा न इन्द्र परा वृणक् ।
- [९८३] ८।९।८ अस्ते इन्द्र सचा सुते ।

- [९८६] ८।९।११ = (८०) १।१६।३ इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
- [९९०] ८।९।१५ कदा न इन्द्र राय भा दशस्येः ।  
७।३७।५ ( वासिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वेदेवाः )
- [२३६५] ८।९।२ ( नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः )  
स्वामिन्द्राभिभूरसि ।  
( २८२३ ) १०।१५३।५ ( देवजामय इन्द्रमातरः । इन्द्रः )
- [ " ] ८।९।२ त्वं सूर्यमरोचयः ।  
९।६३।७ ( निरश्विः काश्यपः । पवमानः सोम )  
यथा सूर्यमरोचयः ।
- [२३६६] ८।९।३ ( नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः )  
विभ्राजओतिषा स्वशरगच्छो रोचनं दिवः ।  
१०।१७०।४ ( विभ्राद् सौर्यः । सूर्यः )
- [ " ] ८।९।३ = (२३८५) ८।८।२  
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ।
- [२३६९] ८।९।६ = (२३३८) ८।९।३
- [२३७४] ८।९।११ = (१३८७) ३।४२।६  
अथा ते सुहृमीमहे ।
- [२३७५] ८।९।१२ स नो रास्व सुवीर्यम् ।  
( अग्निः ८५८ ) ५।१३।५ ( सुतंभर आत्रेय । अग्निः )
- [२३७७] ८।९।२ = (१६५५) ४।३२।११  
सुतेष्विन्द्र गिर्वेणः ।
- [२३८३] ८।९।८ = (१८१९) ८।४।३
- [९९२] ८।८००।२ ( नेमो भार्गवः । इन्द्रः )  
मधुनो भक्षमग्ने ।  
दक्षिणतः.....मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरिः ।  
१०।८३।७ ( मनुस्तापसः । मनुः )  
दक्षिणतो भवा मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरिः ।  
... मध्वो अग्रम् ।
- [९९४] ८।१००।४ विश्वा जानान्यभ्यस्मि मङ्गा ।  
२।२८।१ ( कुर्मो गार्त्समदो, गृत्समदो वा । वरुणः )  
विश्वानि सान्यभ्यस्तु मङ्गा ।
- [९९९] ८।१००।१२ = (१५१९) ४।१।११  
सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व ।

### ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

- [२४६७] १०।२२।२ यशश्चक्रे असाम्या ।  
१।२५।१५ ( शुनःशेष आजीगर्ति । वरुणः )
- [२४७३] १०।२२।८ वधर्दासस्य दम्भय ।  
( ३१०६ ) ८।४०।६ ( नाभाकः काण्वः । इन्द्रार्मा )  
ओजो दामस्य दम्भय ।

- [२४८०] १०।२२।१५ = (११११) २।११।११  
पिबापिबेदिन्द्र झरं सोमं ।
- [ " ] १०।२२।१५ ( विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा  
वासुकः । इन्द्रः )  
उत त्रायस्व गृणतो मघोनः ।

- (२८१२) १०।१४८।४ ( पृथुर्वैन्यः । इन्द्रः )  
—गृणत उत स्तीन् ।
- [२४८२] १०।२३।२ = (१८२९) ८।४६।२३  
मघवा वृत्रहा भुवत् ।
- [२४८४] १०।२३।४ वातो यथा वनम् ।  
५।७८।८ ( सप्तवधिरात्रेयः । अश्विनौ )
- [२४८७] १०।२३।७ = (२१७९) = ७।२२।९  
अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि ।
- [२४८८] १०।२४।१ = (३२४) ८।१७।१  
इन्द्र सोमं ( पिबा ) इमं पिब ।
- [ " ] १०।२४।१ अस्मे रयिं नि धारय ।  
१।३०।२२ ( शुनः श्रेप आजीर्गतिः । उषा )
- [२४८९] १०।२४।२ श्रेष्ठं नो धेहि वार्यं विवक्षमे ।  
( अग्निः ६१९ ) ३।२१।२ ( गाथी कौशिक । अग्निः )  
श्रेष्ठ नो धेहि वार्यम् ।
- [२४९१] १०।२७।१ यत् सुन्वते यजमानाय शिक्षम् ।  
( ३२०२ ) ८।५९ ( बाल०११ ) । १ ( सुपर्णः काण्वः ।  
इन्द्रावरुणौ ) ... यजमानाय शिक्षथ ।
- [२४९७] १०।२७।७ ( वसुक ऐन्द्रः । इन्द्र )  
यो अस्य पारे रजसो विवेष ।  
( अग्नि १७१५ ) १०।१८७।५ ( वत्स आत्नेयः । अग्निः )  
... रजसः ।
- [२५०३] १०।२७।१३ ( वसुक ऐन्द्रः । इन्द्र )  
न्यङ्कुत्तानामन्वेति भूमिम् ।  
( अग्निः १६९४ ) १०।१४२।५ ( मारिसृक्कः । अग्नि )  
..... न्वेषि भूमिम् ।
- [२५०४] १०।२७।१४ अन्यस्था वरुं रिहती मिमाय कया  
भुवा नि दधे धेनुरुधः ।  
३।५५।१३ ( प्रजापतिर्वैश्वामित्र , प्रजापतिर्वाच्यो वा ।  
विश्वेदेवाः )
- [२५११] १०।२७।२१ श्रव इदेना परो अन्यदस्ति ।  
१०।३१।८ ( कवष ऐल्लषः । विश्वेदेवाः ।  
नेतावदेना परो अन्यदस्ति ।
- [२५२७] १०।२८।७ वर्धी वृत्रं वज्रेण मन्दसानो ।  
( १४९० ) ४।१७।३ वर्धीद् वृत्रं वज्रेण मन्दसानः ।
- [२५२२] १०।२९।८ व्यानकिन्द्रः पृतनाः स्त्रोजा ।  
( २१५३ ) ७।२०।३ व्यास इन्द्रः ... ।
- [२५३५] १०।३२।६ . प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।  
इन्द्रो विद्वां अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्ने  
अनुशिष्ट आगाम् ॥

- ( अग्नि ७७४ ) ५।२।८ ( कुमार आत्रेयः, वृशो वा  
जानः, उभौ वा । अग्निः )
- [२५३९] १०।३३।२ सं मा तपन्यमितः सपत्नीरिव पर्श्वः ।  
१।१०।५।८ [ पर्वार्धः ] ( त्रित आण्यः, कुत्स आगिरसो  
वा । विश्वेदेवाः )
- [२५४०] १०।३३।३ मूषो न शिक्षा व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं  
ते शतक्रतो ... ।  
१।१०।५।८ [ उत्तरार्ध ] ( त्रित आण्यः, कुत्स  
आगिरसो वा । विश्वेदेवाः )
- [२५४२] १०।३८।२ रयमिन्द्र श्रवाच्यम् ।  
९।६३।२३ ( निरुचिः काश्यप । पवमानः सोम )  
रयिं सोम श्रवाच्यम् ।
- [२५४४] १०।३८।४ अर्वाञ्जमिन्द्रमवसे करामहे ।  
८।२२।३ ( सोभारिः काण्वः । अश्विनौ )  
अर्वाञ्चीना स्ववसे करामहे ।
- [२५४७] १०।४२।२ कोशं न पूर्णं वसुना न्यृष्टम् ।  
( १५३५ ) ४।४०।६ उद्रेव कोशं वसुना न्यृष्टम् ।
- [२५५३] १०।४२।८ मुन्वते वहति भूरि वामम् ।  
१।१२४।१२ ( कक्षीवान् औशिशो दैर्घतमस । उषा )  
स ते वहसि भूरि वामम् ।
- [२५५५] १०।४२।१० = ( २५६६ ) १०।४३।१० =  
( २५७७ ) १०।४४।१० ( कृष्ण आगिरसः । इन्द्रः )  
गोभिष्टेरमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।  
वयं राजभि प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजने ना जयेम ।
- [२५५६] १०।४२।११ = ( २५६७ ) १०।४३।११ =  
( २५७८ ) १०।४४।११ ( कृष्ण आगिरसः । इन्द्रः )  
वृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादवायोः ।  
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ।
- [२५६२] १०।४३।६ = ( २०१ ) ८।३२।२२  
धेना इन्द्रावचाकशात् ।
- [२५६६-६७] १०।४३।१०-११ =  
( २५५५-५६ ) १०।४२।१०-११
- [२५७७-७८] १०।४४।१०-११ =  
( २५५५-५६ ) १०।४२।१०-११
- [२५८२] १०।४८।४ पुरु सहस्रा नि शिक्षामि ।  
१०।२८।६ ( इन्द्र ऋषिः । वसुको देवता )
- [ " ] १०।४८।४ यन्मा सोमास उक्थिनो अमन्दिषुः ।  
४।४२।६ ( त्रसदस्यु पौरकुत्स्यः । आत्मा )  
यन्मा सोमासो ममदन्यदुक्थ ।



[२५९०] १०४९।१ अहं भुवं यजमानस्य चोदिता ।  
(७५२) १।५१।८ शक्नी भव यजमानस्य चोदिता ।

[२६०७] १०।५०।७ ये ते विप्र ब्रह्मकृतः सुते सचा ।  
(२२३६) ७।३२।२ इमे हि ते ब्रह्मकृतः ।

[ " ] १०।५०।७ मदे सुतस्य सोम्यस्यान्धसः ।  
१०।९४।८ (अर्बुद. काद्रवेयः सर्पः । प्रावाणः)  
त ऊ सुतस्य ... ।

[२६१०] १०।५४।३ = (१९५७) ६।२७।३  
क उ (नहि) जु ते महिमनः समस्य ।

[२६१३] १०।५४।६ = (२०५८) ६।४४।२३

[२६१७] १०।५५।४ महन्महत्या असुरस्वमेकम् ।  
३।५५।१-२३ ( प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा ।  
विश्वेदेवा )

महद्देवानामसुरस्वमेकम् ।

[२६३८] १०।७४।५ शचीव...अनानतं दमयन्तं पृतन्यून ।  
(अग्निः१८०६)७।६।४(वासिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः)

[ " ] १०।७४।५ ऋभुक्षणं मघवानं सुबृक्षित ।  
(२७०९) १०।१०।७ सुतरेण मघवानं सुबृक्षिम् ।

[२६४०-६२] १०।८६।१-२३ विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ।

[२६४४] १०।८६।५ न सुगं दुष्कृते भुव ।  
(३२८४) ७।१०।७ ( वासिष्ठो मैत्रावरुणि । (राक्षोघ्न) ।  
इन्द्राभ्योर्मा )

[२६५४] १०।८६।१५ = (६८१) ८।८२।३

[२६५५-५६] १०।८६।१६-१७ अन्तरा सक्थ्याः कपृत् ।

[ " ] १०।८६।१६-१७ निवेदुषो विजृम्भते ।

[२६६४] १०।८९।२ कृष्णा तमांसि त्विया जघान ।  
९।६६।२४ ( गतं वैश्वानमाः । पवमानः सोम. )  
कृष्णा तमांसि जघनत् ।

[२६६९] १०।८९।८ प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम . .  
मिनन्ति मित्रम् ।

(अग्निः१७६१) ४।५।४(वामदेवो गौतमः । वैश्वानरोऽग्निः)  
प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया मित्रस्य ।

[२६७५] १०।८९।१४ = (७१९) १।३२।५

[२६७६] १०।८९।१५ शत्रूयन्तो अभि ये न तस्तस्त्रे ।  
४।५०।२ (वामदेवो गौतमः । बृहस्पति )  
बृहस्पते अभि ... ।

[ " ] १०।८९।१५ ( रेणुवैश्वामित्रः । इन्द्रः )  
अन्धेनामिन्नास्तमसा सचन्तां ।

१०।१०३।१२ ( अप्रतिरथे ऐन्द्रः । अप्वा देवी )

[२६७८] १०।८९।१७ = (६) २।४।३ विद्याम सुमतीनाम् ।

[ " ] १०।८९।१७ = (१९४६) ६।२५।९  
विद्याम वस्तोरवसा गुणन्तो ।

[२६७९] १०।८९।१८ = (१२५९) ३।३०।२२

[२७०८] १०।१०।६ उप ब्रह्माणि हरिवः ।  
१।४।६ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । विश्वेदेवाः )

[ " ] १०।१०।६ दाशौ अस्यध्वरस्य प्रकेतः ।  
(अग्निः११६६)७।११।१(वासिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः)  
महा अस्यध्वरस्य ।

[२७०९] १०।१०।७ = (२६३८) १०।७४।५

[२७१३] १०।१०।११ = (१२५९) ३।३०।२२

[२७२८] १०।११।४ इन्द्रो मङ्गा महतो अर्णवस्य ।  
१०।६७।१२ (अयास्य आत्रिरस । बृहस्पति )

[२७२९] १०।११।५ = (१२६७) ३।३१।८  
विश्वा वेद सवना (जनिमा) हन्ति शुष्णम् ।

[२७३३] १०।११।९ = (१४८८) ४।१७।१  
सृजः सिन्धूरहिना जग्रसानां (०नान्)

[२७३५] १०।११।१ = (२०५२) ६।४४।१७  
हन्तवे (जहि) शूर शत्रून् ।

[२७४२] १०।११।८ = (१६९८) ५।३१।६

[२७५९] १०।११।५ भवस्थिरा तनुहि यातुजनाम् ।  
.....शत्रून् ... ।

(अग्नि १८१७) ४।४।५ (वामदेवो गौतमः । राक्षोहाग्निः)

[२७६१] १०।११।७

तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यं पक्वोऽ... पिब... ।  
२।३६।५ ( गुत्समदः शौनक. । ऋतुदेवता  
[ इन्द्रोभश्च ] )

तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यमाभृतः... पिब ।

[२८५०-६२] १०।११।१-३ कुवित् सोमस्यापामिति ।

[२८५१-५२] १०।११।२-३ उन्मा पीता अयंसत ।

[२८६२] १०।११।१३ देवेभ्यो हव्यवाहनः ।

(अग्निः ५०५) ३।९।६ ( विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः )  
देवेभ्यो हव्यवाहन ।

(अग्निः १८५७) १०।११।८।५ (उरुक्षय आमहीयवः ।  
रक्षोहाग्नि )

(अग्निः१६९८)१०।१५०।१ (मृळीको वासिष्ठ. । अग्नि. )

[२७७५] १०।१३।१३ = (१५०३) ४।१७।१६  
अश्वायन्तो वृषव वाजयन्तः ।

[२७७६] १०।१३।१६ = (२११०) ६।४७।१२

[ " ] १०।१३।१६ सुमृळीको भवत्तु विश्व (जात) वेदाः ।  
(अग्निः६४६) ४।१।२० ( वामदेवो गौतम. । अग्निः )

- [२७७६] १०।१३१।६ सुवीर्यस्य पतयः स्याम ।  
 ४।५१।१० ( वामदेवो गौतमः । उषाः )  
 ९।८९।७ ( उशना काव्यः । पवमानः सोमः )  
 ९।९५।५ ( प्रस्कण्वः काण्वः । पवमानः सोमः )
- [२७७७] १०।१३१।७ = (२१११) ६।४७।१३  
 [ " ] १०।१३१।७ तस्य वयं सुमत्तौ यन्त्रियस्यापि भद्रे  
 सौमनसे स्याम ।  
 (अग्निः४६७) ३।१।२१ ( विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः )  
 = ३।५९।४ ( विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः )  
 = १०।१४।६ ( यमो वैवस्वतः । अङ्गिरः पित्रथर्वमृगुसोमा )
- [ " ] १०।१३१।७ = (२१११) ६।४७।१३  
 आराशिद् द्वेषः सनुतयुंयोतु ।  
 ७।५८।६ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः )  
 आराशिद् द्वेषो वृषणो युयोत ।  
 १०।७७।६ ( स्यूमरश्मिर्भागवः । मरुतः )
- [२७७८] १०।१३३।१ = (५७) १।९।१० =  
 १०.९६।२ ( बरुाङ्गिरसः, सर्वहरिर्वा ऐन्द्रः । हरिः )
- [२७७८-८३] १०।१३३।१-६ नभन्तामन्यकेषां ज्याका  
 अधि धन्वसु ।
- [२७७९] १०।१३३।२ = (८३५) १।१०२।८ = (४२१) ८।२१।१३  
 [ " ] १०।१३३।२ विश्वं पुण्यसि वार्यम् ।  
 (९२४) १।८१।९ विश्वं पुण्यन्ति वार्यम् ।  
 (अग्निः८०६) ५।६।६ ( वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः )
- [२७८०] १०।१३३।३ अयो नशन्त नो धियः ।  
 ९।७९।१ ( कविर्भागवः । पवमानः सोमः )
- [२७८१] १०।१३३।४ ( सुदा. पैजवनः । इन्द्रः )  
 यो न.....आदिदेशति ।  
 अधस्पदं तमी कृधि ।  
 (२७८६) १०।१३४।२ ( मान्धाता यौवनाश्वः । इन्द्र )  
 अधस्पदं तमी कृधि यो अस्माँ आदिदेशति ।
- [२७८३] १०।१३३।६ = (१३७९) ३।४१।७ वयमिन्द्र त्वायवः ।  
 [ " ] १०।१३३।६ सखित्वमा रभामहे ।  
 ९।६१।४ ( अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 सखित्वमा वृणीमहे ।  
 ९।६५।९ ( मृगुवार्णिर्जमदग्निर्भागवो वा । पवमानः सोमः )
- [२७८४] १०।१३३।७ सहस्रधारा पयसा मही गौः ।  
 १०।१०१।९ ( बुधः सौम्यः । विश्वेदेवा, ऋत्विग वा )
- [२७८५] १०।१३४।१ = (अग्निः ५०९) ३।१०।१  
 ( विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः )

- [२७८५-९०] १०।१३४।१-६ देवो जनिश्वजीजनङ्गा  
 जनिश्वजीजनत् ।
- [२७८६] १०।१३४।२ = (२७८१) १०।१३३।४  
 [ " ] १०।१३४।२ यो अस्माँ आदिदेशति ।  
 ९।५२।४ ( उचथ्य आङ्गिरगः । पवमानः सोमः )
- [२७८७] १०।१३४।३ = (२९२) ८।१२।५ = (१९१) ८।३२।२ =  
 (१७७६) ८।३७।१ = (५५२) ८।६१।५
- [२७८८] १०।१३४।४ = (७०६) १।३।०।८  
 [२८०७] १०।१४७।४ मक्ष स वाजं भरते धना नृभिः ।  
 १।६४।१३ ( नोधा गौतमः । मरुतः )  
 अर्वाङ्गिर्वाजं भरते... ।  
 २।२६।३ ( गुत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः )  
 पुत्रैर्वाजं भरते... ।
- [२८१०] १०।१४८।२ = (११०४) २।११।४  
 दासीर्विंशः सूर्येण सहाः ।
- [ " ] १०।१४८।२ = (११०५) २।११।५  
 गुहा हितं गुह्य गूळइमप्सु ।
- [२८१२] १०।१४८।४ = (२४८०) १०।२२।१५  
 उत त्रायस्व गृणत (०णतो) ।
- [२८१६] १०।१५२।३ = (५६०) ८।६१।१३  
 वि रक्षो (द्विषो) वि मृधो जहि ।
- [२८१८] १०।१५२।५ = (२३) १।५।१०  
 वरीयो (ईशानो) यवया वधम् ।
- [२८२०] १०।१५३।२ = (२१९) ८।३३।१० =  
 ९।६४।२ ( कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः )
- [२८२१] १०।१५३।३ = (३६०) ८।१४।७  
 इयन्तरिक्षमतिर (०मतिरन्) ।
- [२८२२] १०।१५३।४ = (६३६) ८।७६।९  
 वज्रं शिशान भोजसा ।
- [२८२३] १०।१५३।५ = (२३६५) ८।९।८।२ त्वमिन्द्राभिभूरसि ।
- [२८२४] १०।१६०।१ = (११९२) २।१।३  
 [२८२८] १०।१६०।५ अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो ।  
 (१५०३) ४।१७।१६ = (२७७५) १०।१३१।३  
 अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ।
- [२८३४] १०।१७१।३ त्वं त्वमिन्द्र मर्त्यम् ।  
 (१७४०) ५।३।५।५ त्वं तमिन्द्र मर्त्यम् ।
- [२८४०] १०।१८०।२ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।  
 १।१५४।२ ( दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः )
- [३३५७] १।१८।४ सोमो हिनोति मर्त्यम् ।  
 (३३५८) सोम.. मर्त्यम् ।

- [३३५८] १।१८।५ सोम इन्द्रश्च मस्यम् ।  
४।३७।६ ( वामदेवो गौतमः । ऋभवः )  
यूयमिन्द्रश्च मस्यम् ।
- [३३५७] १।२३।७ ( मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः )  
मरुत्वन्तं हवामह इन्द्रमा सोमपीतये ।  
(६३३) ८।७६।६ ( कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः )  
इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना मरुत्वन्तं हवामहे ।  
अस्य सोमस्य पीतये ।
- [३३५८] १।२३।८ ( मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः ) =  
२।४१।१५ ( गृत्समद शौनकः । विश्वेदेवा )  
इन्द्रजेष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः ।  
विश्वे मम श्रुता हवम् ।
- [३३५९] १।२३।९ ( मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः )  
... युजा ।  
मा नो दुःशंस ईशत ।  
२।२३।१० ( गृत्समद शौनकः । बृहरपतिः )  
... युजा । मा नो दुःशंसो अभिदिप्सुरीशत ।  
(३०८५) ७।९४।७ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्राग्नी )  
मा नो दुःशंस ईशत ।  
१०।२५।७ ( विमद ऐन्द्रः प्राजापत्या वा वसु-  
कृदा वासुकः । सोमः )  
मा नो दुःशंस ईशता विवक्षसे ।
- [३३६४] १।१७।१ ( मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रावरुणौ )  
ता नो मृळात ईदशे ।  
४।५७।१ ( वामदेवो गौतमः । धेत्रपतिः )  
स नो मृळातीदशे ।  
(३०६०) ६।६०।५ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी )
- [३३६५] १।१७।२ हवं विप्रस्य मावतः ।  
( अग्निः १९१९ ) ( दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रासूक्तं  
[तनूनपातः])  
१।१४।२ यज्ञं विप्रस्य ... ।
- [ " ] १।१७।२ ( मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रावरुणौ )  
धर्तारा चर्षणीनाम् ।  
५।६७।२ ( यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ )
- [३३०५] १।१५।३ ( दीर्घतमा औचथ्यः । इन्द्राविष्णुः )  
दधाति पुत्रोऽवरं परं पितुर्नाम तृतीयमधि रोचने दिवः ।  
९।७५।२ ( कविर्भागवतः । पवमानः सोमः )  
दधाति पुत्रः पित्रोरपीष्यं १ नाम ... ।
- [१५७५] ४।२३।१० ऋताय पृथ्वी बहुले गभीरे ।  
१०।१७८।२ ( अरिष्टनेमिस्तार्क्ष्यः । तार्क्ष्यः )

- उवां न पृथ्वी बहुले गभीरे ।
- [३००४] १।२१।३ ( मेधातिथिः काण्वः । इन्द्राग्नी )  
इन्द्राग्नी ता हवामहे ।  
सोमपा सोमपीतये ।  
(३०४१) ५।८६।२ ( अत्रिर्भौमः । इन्द्राग्नी )  
इन्द्राग्नी ताहवामहे ।  
(३०६९) ६।६०।१४ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी )  
इन्द्राग्नी ता हवामहे ।  
(३३१९) ४।४९।३ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती )  
सोमपा सोमपीतये ।
- [३००५] १।२१।४ = (८९) १।१६।५  
इपेदं सवनं सुतम् ।
- [३००६] १।२१।५ इन्द्राग्नी रक्ष उब्जतम् ।  
७।१०४।१ इन्द्रामोमा तपतं रक्ष उब्जत ।
- [३००७] १।२१।६ ( मेधातिथिः काण्वः । इन्द्राग्नी )  
इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ।  
(३०८६) ७।९४।८ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी )
- [३००८] १।१०८।१ ( कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी )  
अभि विश्वानि भुवनानि चष्टे ।  
७।६१।१ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मित्रावरुणौ )  
अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे ।
- [३००८] १।१०८।१ = (३०१३-१९)  
१।१०८।६-१२ अथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ।  
(३०१२) १।१०८।५ तेभिः सोमस्य ... ।
- [३०१०] १।१०८।३ ( कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी )  
वृष्णः सोमस्य वृष्णा वृषेधाम् ।  
(३१७१) ६।६८।११ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणौ )
- [३०११] १।१०८।४ ( कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी )  
पन्द्राग्नी सौमनसाय यातम् ।  
(३०७६) ७।९३।६ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी )
- [३०१४-१९] १।१०८।७-१२ अतः परि वृष्णावा हि यातम् ।
- [३०१९] १।१०८।१२ ( कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी )  
मप्ये दिवः स्वधया मादयेथे ।  
१०।१५।१४ ( शङ्खो यामायनः । पितरः )  
.....स्वधया मादयन्ते ।
- [३२१३] १।२३।२ उभा देवा दिविस्पृशा ।  
१।२२।२ ( मेधातिथिः काण्वः । अधिनौ )
- [ ' ] १।२३।२ = १।२२।१ = (३३२१) ४।४९।५  
= (३०५५) ६।५९।१०  
= (६३३) ८।७६।६

अस्य सोमस्य पीतये ।

१।२२।१ ( मेधातिथिः काण्वः । अध्विनां )

५।७।१।३ ( बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ )

८।९४।१०-१२ ( बिन्दुः पूतदधो वा आङ्गिरसः ।

मरुतः )

[ ३२१५ ] १।१३५।४ ( परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू )

अभि प्रयांसि सुधितानि वीतय वायो हव्यानि वीतये ।

( अग्निः १०८५ ) ६।१६।४४

( भग्द्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः )

अभि प्रयांसि वीतये ।

[ " ] १।१३५।४ वायवा चंद्रेण राधसा गतम् ।

४।४८।१-४ ( वामदेवो गौतमः । वायुः । )

वायवा चंद्रेण रथेन ।

[ ३२१६ ] १।१३५।५ आशुमखं न वाजिनम् ।

( १००१ ) १।१२९।२ पृक्षमखं ... ।

[ ३२१७ ] १।१३५।६ ( परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू )

तिरः पवित्रमाशवः ।

९।६२।१ ( जामदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोम )

इन्द्रवस्तिरः..... ।

५।६७।७ ( गौतमो राहूगणः । पवमानः सोमः )

इन्द्रवस्तिरः. ... ।

[ ३२१८ ] १।१३५।७ ( परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू )

गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् ।

( ३३१९ ) ४।४९।३ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती )

( २३१० ) ८।६९।७ ( प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः )

गृहमिन्द्रश्च गन्वहि ।

[ १५९९ ] ४।२८।२ ( वामदेवो । गौतमः । इन्द्रः इन्द्रासोमौ वा )

अहन्नहिमरिणाःसप्त सिन्धून् ।

१०।६७।१२ ( अयाम्य आङ्गिरसः । वृहस्पतिः )

[ १६०० ] ४।२८।२ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रः इन्द्रासोमौ वा )

महो ब्रुहो अप विश्वायु धायि ।

( १८८८ ) ६।२०।५ ( भग्द्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )

[ ३१५० ] ४।४१।५ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ )

धियः.... ।

सा नो ब्रुहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः ।

१०।१०।१।९ ( बुधः सौम्यः । विश्वेदेवा, ऋत्विग वा )

धियम्.... ।

सा नो . . ।

[ ३१५१ ] ४।४१।६ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ )

सुरो वशीके वृषणश्च पौंस्ये ।

दे० [ इन्द्रः ] ३३

१०।९२।७ ( शार्यातो मानवः । विश्वेदेवाः )

[ ३१५२ ] ४।४१।७ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ )

वृषीमहे सख्याय प्रियाय ।

९।६६।१८ ( जनं वेखानमाः । पवमानः सोमः )

वृषीमहे सख्याय ।

[ ३१५५ ] ४।४१।१० ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ )

निखस्य रायः पतयः स्याम ।

( अग्नि ११४० ) ७।४७ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । अग्निः )

[ ३१५७ ] ४।४२।७=( १५२६ ) ४।१९।५

खं वृत्रो अरिणा इन्द्र सिन्धून् ।

[ ३१५९ ] ४।४२।९ हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।

१।१५३।१ ( दाघेतमा आंचय । मित्रावरुणौ )

हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः ।

[ ३२२१ ] ४।४६।२ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू )

नियुत्वा इन्द्रसारथिः ।

४।४८।२ ( वामदेवो गौतमः । वायु )

[ ३२२२ ] ४।४६।३ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू )

सहस्रं हरय ।

वहन्तु सोमपीतये ।

( ११० ) ८।१।२४ ( मैत्रातिथि-मैत्र्यार्तिथा काण्वो । इन्द्र )

सहस्रं ।

हरय वहन्तु सोमपीतये ।

[ ३२२३ ] ४।४६।४ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू )

रथं हिरण्यवन्धुरम् ।

आ हि स्थायो द्विविस्पृशम् ।

८।५।२८ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अध्विनां )

रथं . . ।

आ ... . ।

[ ३२२४ ] ४।४६।५ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू )

रथेन पृथुपाजसा ।

८।५।२ ( ब्रह्मातिथि काण्व । अध्विनां )

[ " ] ४।४६।५ दाश्यांसमुप गच्छतम् ।

१।४७।३ ( प्रस्कण्वः काण्वः । अध्विनां )

[ ३२२५ ] ४।४६।६ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू )

पिबतं दाशुषो गृहे ।

( ३३२२ ) ४।४९।६ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती )

८।२२।८ ( सोभार काण्वः । अध्विनां )

[ ३२२७ ] ४।४७।२ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू )

इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां पीतिमर्हथः ।

मिस्त्रमापो न सध्वयक् ।

- (३२३१) ५।५१।६ ( स्वस्त्यात्रेय । इन्द्रवायू )  
इन्द्रश्च वायवेषां सुताना पीतिमर्हथः ।  
(२०२) ८।३२।२३ ( मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः )  
निम्नमापो न सध्व्यक ।  
[३२२८] ४।४७।३ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू )  
आ यातं सोमपीतये ।  
८।२२।८ ( गोमरिः काण्वः । अश्विनौ )  
[३२२९] ४।४७।४ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू )  
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा ।  
(३०६३) ६।६०।८ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी )  
[३३१७] ४।४९।१ उक्थं मदश्च कश्यते ।  
१।८।६।४ ( गोतमो राहुगणः । मरुतः )  
[३३१९] ४।४९।३ = (३२१८) १।१३।५७  
गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् ।  
[ " ] ४।४९।३ = (३००४) १।२१।३ सोमपा सोमपीतये ।  
[३३२०] ४।४९।४ रथिं धत्तं वसुमन्तं शतग्विनम् ।  
१।१५।५ ( दीर्घतमा औचथ्यः । यावापृथिर्वा )  
[३३२१] ४।४९।५ = १।२२।१ ( मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ )  
अस्य सोमस्य पीतये ।  
[३३२२] ४।४९।६ = (३२२५) ४।४६।६ पिबतं दाशुषो गृहे ।  
८।२२।८ ( गोमरिः काण्वः । अश्विनौ )  
[३३२४] ४।५०।११ ( वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती )  
अविष्ट धियो जिगृतं पुरंधीर्जज्ञस्तमर्यो वनुषामराती ।  
७।३४।५ = ७।६।५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ )  
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधीः ।  
(३३६१) ७।९।९ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावृहस्पती )  
[३२३१] ५।५१।६ सुतानां पीतिमर्हथः ।  
१।३४।६ ( परुच्छेपो देवोदासिः । वायु )  
सोमानां प्रथमः पीतिमर्हसि सुतानां पीतिमर्हसि ।  
(३२२७) ४।४७।२ सोमानां पीतिमर्हथः ।  
[३२३२] ५।५१।७ ( स्वस्त्यात्रेय । इन्द्रवायू )  
सुता इन्द्राय वायवे ।  
९।३३।३ ( त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः )  
सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुत्यः ।  
सोमा अर्षन्ति विष्णवे ।  
९।३३।२ ( त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः )  
सुत... ..।  
सोमो अर्षति... ..।  
९।६।२० ( नृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः )  
अग्ना इन्द्राय . . ।

- सोमो... ।  
[३२३२] ५।५१।७ = (१८) १।५।५ सोमासो दध्याशिरः ।  
[३०४१] ५।८।२ ( अत्रिभौमः । इन्द्राग्नी )  
श्रवाचया ।  
या पञ्च चर्षणीरभि ।  
(अग्निः ११७८) ७।१।२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नि )  
यः पञ्च चर्षणीरभि ।  
९।१०।१९ ( नहुषो मानवः । पवमानः सोमः )  
... श्रवाचयम् ।  
यः पञ्च चर्षणीरभि ।  
[ " ] ५।८।२ = (३००४) १।२१।३ इन्द्राग्नी ता हवामहे ।  
[३०४३] ५।८।४ ता वामेषे रथानाम् ।  
५।६।३ ( रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
[ " ] ५।८।४ ( अत्रिभौमः । इन्द्राग्नी )  
इन्द्राग्नी हवामहे ।  
पती तुरस्य राधसो ।  
(३०६०) ६।६०।५ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी )  
इन्द्राग्नी हवामहे ।  
(२०४०) ६।४४।५ ( शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः )  
पतिं तुरस्य राधसः ।  
[३०४५] ५।८।६ ( अत्रिभौमः । इन्द्राग्नी )  
घृतं न पूतमद्रिभिः ।  
सूरिषु श्रवो... ..रथिं गृणत्सु दिधृतम् ।  
(२९१) ८।१२।४ ( पर्वतः काण्वः । इन्द्रः )  
घृतं न पूतमद्रिवः ।  
(३३२) ८।१३।१२ ( नारदः काण्वः । इन्द्रः )  
रथिं गृणत्सु धारय ।  
श्रवः सूरिभ्यो ... ।  
[३३३०] ६।५७।१ वयं सकृदाय स्वस्तये ।  
(१६४०) ४।३१।११ अरमो... ..सकृदाय स्वस्तये ।  
[ " ] ६।५७।१ = (१७४१) ५।३।६  
हुवेम (हवन्ते) वाजसातये ।  
[३०४८] ६।५९।३ इन्द्रा न्वग्नी अवसे ।  
५।४।४ ( सदापृण आत्रेयः । विश्वेदेवाः )  
[३०५२] ६।५९।७ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी )  
मा नो अस्मिन् महाधने परा वक्तं गविष्टिषु ।  
(अग्निः १३८४) ८।७।१२ ( विरूप आत्रिरसः । अग्निः )  
—परा वग्भौरभृद्यथा ।  
[३०५३] ६।५९।८ अथा अर्यो अरातयः ।  
६।४८।१६ ( शंयुर्बार्हस्पत्यः [ नृणपाणिः ] । पूषा )

- [३०५४] ६।५९।९ रवि विश्वाद्युषसम् ।  
(अभिः २५२) १।७९।९ (गोतमो राहूगणः । अभिः )
- [३०५५] ६।५९।१० ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी )  
स्तोमेभिर्हवनश्रुता ।  
गोर्भिरा गतम् ।  
८।८।७ ( सन्वंसः काण्वः । अश्विनौ )  
भा . . गतम् ।  
धिभिः ... .स्तोमेभिर्हवनश्रुता ।  
(३१०) ८।१२।२३ ( पर्वत काण्वः । उन्द्रः )  
स्तोमेभिर्हवनश्रुतम् ।
- [ " ] ६।५९।१० = १।२२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ )
- [३०६०] ६।६०।५ = (३०४३) ५।८६।४
- [ " ] ६।६०।५ = (३१३४) १।१७।१
- [३०६२] ६।६०।७ = (७७) १।११।८
- [३०६३] ६।६०।८ = (३२२९) ४।४७।४
- [३०६४] ६।६०।९ = (८२) १।१६।५
- [ " ] ६।६०।९ = (३०७७-७९) ८।३८।७-९  
इन्द्राग्नी सोमपीतये ।
- [३०६९] ६।६०।१४ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी )  
आ नो गन्धेभिरश्चैर्वसचै ररूप गच्छतम् ।  
८।७३।१४ (गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा । अश्विनौ )  
आ नो गन्धेभिरश्चैः सहसैरुप गच्छतम् ।
- [ " ] ६।६०।१४ = (३००४) १।२१।३
- [३०७०] ६।६०।१५ = ६।५४।६ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा )
- [ " ] ६।६०।१५ पिबतं सोम्यं मधु ।  
७।७४।२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अश्विनौ )  
८।५।११ ( ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ )  
८।८।१ ( सन्वंसः काण्वः । अश्विनौ )  
८।३५।२२ (शावाश्व आत्रेयः । अश्विनौ )  
(१८०२) ८।२४।१३ पिबति सोम्यं मधु ।
- [३१६२] ६।६८।२ शरणां यविष्ठा ता हि भूतम् ।  
(३०७२) ७.९३।२ ता सानसी शवसाना हि भूतं ।
- [३१६४] ६।६८।४ द्यौश्च पृथिवि भूतसुर्वी ।  
१।०।९३।१ (तान्वः पार्थ्यः । विश्वेदेवा )  
महि यावापृथिवी भूतसुर्वी ।
- [३१६६] ६।६८।६ = १।१५९।५ ( दीर्घतमा औचथ्यः ।  
यावापृथिवी )
- [३१६८] ६।६८।८ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणौ )  
अपो न नावा दुरिता तरेम ।  
७।६५।३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मित्रावरुणौ )

- [३१७१] ६।६८।११ = (३०१०) १।१०।८।३  
[ " ] ६।६८।११ = ६।५२।१३ ( ऋजिश्वा भारद्वाज ।  
विश्वेदेवाः )
- [३३०९, ३३१२] ६।६९।४, ७ उप ब्रह्माणि शृणुतं गिगे  
( ७ हवं ) मे ।
- [३२७२] ६.७२।२ ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । उन्द्राग्नी )  
उत्सूयं नयथो ।  
... अप्रथतं पृथिवीं मातरं वि ।  
१०।६२।३ ( नामानेदिष्टो मानवः । विश्वेदेवा )  
सूर्यमारोहयन् . अप्रथन् पृथिवीं मातरं वि ।
- [३२७४] ६।७२।४ उन्द्राग्नीमा पक्वमामास्वन्तः ।  
२।४०।२ ( गुत्समदः शौनकः । योमापुपर्णा )  
आभ्यामिन्द्र पक्वमामास्वन्तः ।
- [३२७५] अपत्यसाचं श्रुत्यं रराथे ।  
१।११।७।२३ ( कक्षीवान औगिजः दीर्घतमः । अश्विनौ )  
रराथाम् ।
- [३१७२] ७।८२।१ विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् ।  
(अभिः २४७२) १।९३।८ (गोतमो राहूगणः । अर्गनापिर्मा )
- [३१७८] ७।८२।७ न तमंहो न दुरितानि ... कुतश्चन ।  
२।२३।५ ( गुत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पति )
- [३१८०] ७।८२।९ = (१५७९) ४।२४।३
- [३१८१] ७।८२।१० = (३१९१) ७।८३।१०  
( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । उन्द्रावरुणौ )  
अस्ते इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा युञ्जं यच्छन्तु महि  
शर्म सप्रय ।  
अवध उयोतिरदितेऋतावृधो देवस्य श्लोक सवितुर्मनामहे ॥
- [३१९२] ७.८४।१ = १।१५३।१ ( दीर्घतमा औचथ्यः ।  
मित्रावरुणौ )
- [ " ] ७।८४।१ दधाना परि त्मना विषुरुपा जिगानि ।  
(अग्नि ८६९) ५।२५।४ (वरुण आगिर्ममः । अग्निः )
- [३१९३] ७।८४।२ परि नो हेळो वरुणस्य वृज्याः ।  
२।३३।१४ ( गुत्समदः शौनकः । रुद्र )
- [३१९४] ७।८४।३ = ७।५८।३  
( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मरुतः )
- [३१९५] ७.८४।४ = १।१५९।५ ( दीर्घतमा औचथ्यः ।  
यावापृथिवी )
- [३१९६] ७।८४।५ = (३२०१) ७.८५।५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि ।  
इन्द्रावरुणौ )
- इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत्तोके तनये त्तुजाना ।  
सुरगनासो देववीर्ति गमेम यूयं पात स्वन्तिभिः सदा नः ॥

- [३१९६] ७।८४।५ तोके तनये तूतुजाना ।  
७।६७।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अश्विनौ)
- [३२३४] ७।९०।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रवायू )  
गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्हिरण्यै ।  
१०।१०८।७ (पणयोऽमुराः । सर्मा देवता)  
गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्मृत्युः ।
- [३२३५] ७।९०।७=(३२४०) ७।९१।७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।  
इन्द्रवायू )  
अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।  
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
- [३२३७] ७।९१।४ = (७४१) १।३३।२२  
[३२४०] ७।९१।७ = (३२३५) ७।९०।७  
[३०७२] ७।९३।२ = (३१६२) ६।६८।२  
[३०७६] ७।९३।६ = (३०११) १।१०८।४  
[३०७७] ७।९३।७ = १।१७९।५ ( अगस्त्यशिष्यः । रतिः )  
[३०७८] ७।९३।८ = १।१६२।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्वः)  
[३०८०] ७।९४।२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रार्मा )  
शृणुत जरितुर्हवम् ।  
(३२७) ८।१३।७ ( नारद काण्व । इन्द्रः )  
शृणुषी जरितुर्हवम् ।  
८।८५।४ ( कृष्ण आङ्गिरसः । अश्विनौ )  
[ " ] ७।९४।२ ईशाना पिष्यतं धियः ।  
५।७१।२ ( बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
[३०८१] ७।९४।३ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रार्मा )  
मा नो रीरधतं निदे ।  
८।८।१३ ( सन्धम. काण्वः । अश्विनौ )  
[३०८३] ७।९४।५ = (अग्निः ८६२) ५।१४।३  
( मृतंभर आत्रेयः । अग्निः )  
[ " ] ७।९४।५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रार्मा )  
सबाधो वाजसातये ।  
(अग्निः १४५३) ८।७४।१२ ( गोपवन आत्रेयः । अग्निः )  
[३०८४] ७।९४।६ = (अग्नि ८९३) ५।२०।३  
( प्रयस्वन्त आत्रेयाः । अग्निः )  
[३०८५] ७।९४।७ = (१७३६) ५।३५।१  
[ " ] ७।९४।७ = (३२४९) १।२३।९  
[३०८६] ७।९४।८ = १।१८।३ (मेधातिथिः काण्वः । ब्रह्मणस्पतिः )  
[ " ] ७।९४।८ = (३००७) १।२१।६  
[३३६१] ७।९७।२ = (३३२४) ४।५०।११  
[३३२५] ७।९७।१० = (३३२५) ७।९८।७  
( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राबृहस्पती )

- बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्यो विद्वद्यस्येनाये उत पार्थिवस्य ।  
धत्तं रथिं स्तुवते कीरये धिधूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
- [३३२५] ७।९७।१० = (१९२०) ६।२३।३  
[३३१४] ७।९९।४ उरु यज्ञाय चक्रथुरु लोकम् ।  
(अग्निः २४७०) १।९३।६ (गोतमो राहूगणः । अग्नीषोर्मा)  
[३०९१-९३] ८।३८।१-३ इन्द्रार्मा तस्य बोधतम् ।  
[३०९२] ८।३८।२ = (३०३३) ३।१२।४  
[३०९३] ८।३८।३ ( श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्रार्मा )  
इदं वा मदिरं मध्वधुक्षन्नाद्रिभिर्नरः ।  
(६०८) ८।६५।८ ( प्रगाथ. काण्वः । इन्द्रः )  
इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्नाद्रिभिर्नरः ।  
[३०९४] ८।३८।४ = ५।७२।३ ( बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ )  
[३०९४-९६] ८।३८।४-६ इन्द्रार्मा भा गतं नरा ।  
[३०९७] ८।३८।७ = ५।५१।३ ( स्वस्त्यात्रेयः । विश्वेदेवाः )  
[३०९७-९९] ८।३८।७-९ = (३०६४) ६।६०।९  
[३०९८] ८।३८।८ = (१७७५) ८।३६।७  
[३०९९] ८।३८।९ ( श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्रार्मा )  
एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।  
इन्द्रार्मा सोमपीतये ।  
८।४२।६ (नाभाक काण्वः अर्चनाना आत्रेयो वा । अश्विनौ)  
एवा ... .. ।  
नामत्या सोमपीतये ।  
[३१००] ८।३८।१० इन्द्रान्योरवो वृणे ।  
८।९४।८ ( बिन्दुः पृतदक्षो वा, आङ्गिरसः । मरुतः )  
देवोनामवो वृणे ।  
[३१०५] ८।४०।५ = (७७) १।११।८  
[३१०६] ८।४०।६ ओजो दासस्य दम्भय ।  
[३१०७] ८।४०।७ = (१०) १।४।७  
[ " ] ८।४०।७ = (१०२८) १।१३।१  
[३१०९] ८।४०।९ = (२०६२) ६।४५।३  
[३११०-११] ८।४०।१०-११  
उतो न विद्य ओजसा ( ११ ओहते )  
[३११०] ८।४०।१० क्षुणस्याण्डानि भेदति ।  
(३१११) ८।४०।११ भाण्डा क्षुणस्य भेदति ।  
[ " ] ८।४०।१० = (६५) १।१०।८  
[३११२] ८।४०।१२ वयं स्याम पतयो रथीणाम् ।  
४।५०।६ ( वामदेवो गौतमः । बृहस्पतिः )  
[५३९] ८।५५ ( वाल्म० ) । १ ( कृष्णः काण्वः । इन्द्रः प्रस्कण्वश्च )  
राधस्ते दस्यवे वृक ।

(५४४) ८।५६ (वाल०८) । १ (पृषधः काण्वः । उन्द्रः)  
 प्रति ते दस्यवे वृक राधो ।  
 [३२०२] ८।५९ (वाल०११) । १ (सुपर्णः काण्व । उन्द्रावरुणौ)  
 यत्सुन्वते यजमानाय शिक्षथः ।  
 (२४९१) १०।२७।१ (वसुक ऐन्द्रः । उन्द्रः )  
 ... शिक्षम् ।  
 [३२०३] ८।५९ (वाल०११) । २ = १।८५।२  
 (गोतमो राहुगणः । मरुतः)  
 [३२०४] ८।५९ (वाल०११) । ३ = १।४७।५  
 (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)  
 [३२०८] ८।५९ (वाल०११) । ७ (सुपर्णः काण्व ।  
 इन्द्रावरुणौ )  
 रायस्पोषं यजमानेषु धत्तम् ।  
 १०।१७।९ (देवध्रवा यामायनः । सरस्वती )  
 ... . धेहि ।  
 (अग्निः १६८२) १०।१२२।८ (चित्रमहा वासिष्ठ ।  
 अग्निः )  
 ... . धारय ।

[३३४४] ८।९३।३४ ऋभुक्षणमृभुं रथिम् ।  
 ४।३७।५ (वामदेवो गौतमः । ऋभवः)  
 ऋभुमृभुक्षणो रथि ।  
 [३३२६] ८।९६।१५ विशो भदेवीरभ्यादे चरन्तीः ।  
 ६।४९।५ (ऋजिश्वा भारद्वाज । विश्वेदेवः)  
 विश आदेवीरभ्यश् ध्रुवाम ।  
 [२८४२-४९] १०।४७।१-८ अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रथि दाः।  
 [२८४५] १०।४७।४ = (१८७८) ६।१९।७  
 [२६९१] १०।९९।१२ इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः ।  
 (अग्निः १५८०) १०।२०।१० (विमड ऐन्द्रः, प्राजापत्यो  
 वा, वसुकृद्वा वामुकः । अग्निः)  
 [२७७१] १०।१२०।८ = (१२८०) ३।३१।२१  
 दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ।  
 [२७७२] १०।१२०।९ द्विन्वन्ति च शवसा वर्षयन्ति च ।  
 (अग्निः ८४६) ५।११।५ (सुतंभग् आत्रेयः । अग्निः)  
 पृणन्ति शवसा ।

## सूचना

पुनरुक्त-मंत्रसूची को निम्नलिखित विधिसे देखना चाहिये—

(१) चतुष्कोण [ ] कंसमें जो अंक है वह मंत्रोंका 'क्रमांक' है। उसके साथके अंक ऋग्वेदादिके विभागोंके दर्शक हैं।

(२) गोल कंस ( ) में पूर्व भाये मंत्रोंके क्रमांक हैं और उनके साथवाले अंक ऋग्वेदादिके दर्शक हैं।

(३) जहां तहां आवश्यक पुनरुक्त मंत्रभाग दिया है। एक बार दिया पुनः नहीं दिया है। पुनः पुनः पुनरुक्त मंत्रभाग नहीं दिया, केवल उसके स्थानका ही निर्देश किया है— जैसा— [२७७१] १०।१२०।८=(१२८०) ३।३१।२१ इसका अर्थ यह है कि यह मंत्र क्रम "[१२८०] पृ० २३०" पर देखिये। इन दो मंत्रोंमें "...गोपति... दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ।" इतना मंत्रभाग पुनरुक्त हुआ है, पर दूसरे मंत्रमें 'गोत्र' शब्द है, 'गोपति' नहीं है। इस तरह सर्वत्र समझना चाहिये।





भवस्यवः न वयुनानि २,१९,८; १२०६ गृहसमदाः मन्म ।  
 अविता यथा नः ७,२४,१; २१८६ एवा नः वसुनि ददः ।  
 अवीराम् इव १०,८६,९; २६४८ माम् अभिमन्यते ।  
 अशनिः न ६,८,१०; १८६५ भीमा हेतिः ।  
 अशनिः यथा अथ०७,५०,१; २९०६ कितवान् अप्रति ।  
 अशन्या इव वृक्षम् २,१४,२; ११५१ वृत्रं जघान ।  
 अशनिमान् इव द्यौः ४,१७,१३; १५०० समोहं रेणुं ह्यति ।  
 अशीर्षाणः इव अथ. ६,६७,२; २८९४ अमित्रा. अहयः ।  
 अशीर्षाणः अहयः साम १८७१; ३००१ अमित्राः अन्धाः ।  
 अश्मा इव २,३०,४; १२३० वीरान् तपुषा विध्य ।  
 अश्मा इव १०,८९,१२; २६७३ द्रौघ मित्रान् आविध्य ।  
 अश्मना इव पूर्वाः २,१४,६; ११५५ शम्बरस्य पुरः विभेद ।  
 अश्वः न निकः ८,२,२; ११७ धूत सोमः वारैः परिपूतः ।  
 अश्वः न द्वियानः ८,४९,५; ४७९ स्तोमम् उप आ द्रवत् ।  
 अश्वा इव वाजिना ७,१०४,६; अथ. ८,४,६; ३२८३ मतिः ।  
 अश्वासः न ८,५५,४; ५४२ यूयम् चङ्क्रमत ।  
 अश्वः क्रन्दत(लुप्तोपमा) १,१७३,३; १०५८ अग्नि. क्रन्दति ।  
 अश्वीर इव जामाता ८,२,१०; १३५ अस्सत् आरे सायं ।  
 असिः न पर्व १०,८९,८; २६६९ त्वम् वृजिना शृणासि ।  
 अस्ता इव ४,३१,१३; १६४२ वजान् अपा वृधि ।  
 अस्ता इव ६,२०,९; १८९२ हरी अधि तिष्ठत् ।  
 अस्ता इव १०,४२,१; २५४६ सु प्रतरं लायं अस्यन् ।  
 अह इव ८,९६,१९; २३६१ रेवान् ।  
 अहा विश्वा इव सूर्यम् १,१३०,२; १०१२ ते मदाय त्वा ।  
 अहोभिः इव द्यौः १,१३०,१०; १०२० दिवोदासेभिः ।  
 आजि न अश्वाः ६,२४,६; १९३३ गिर्वाहः त्वा जग्मुः ।  
 आजिम् न ४,४१,८; ३१५३ युवयूः धियः वां जग्मुः ।  
 आपः न १,६३,८; ८९२ इयं परिउमन् पीपयः ।  
 आपः न ८,३३,१; २१० वृक्षवर्हिष ।  
 आपः न अनु ओक्यं सर ८,४९,३; ४८७ राधसे पृणन्ति ।  
 आपः न तृष्यते १,१७५,६; १०८४ जरितृभ्यः मय इव बभूथ ।  
 " १,१७६,६; १०९० " " "  
 आपः न देवीः १,८३,२; ९३२ होत्रियं देवासः उप यन्ति ।  
 आपः न द्वीपम् १,१६९,३; १०४५ प्रयासि दधति ।  
 आपः न निम्नम् ४,४७,२; ३२२७ इन्द्रवः युवाम् ।  
 आपः न निम्नम् ८,३२,२३; २०२ मे गिरः त्वा यच्छन्तु ।  
 आपः निम्नेव १,५७,२; ८१२ हविमन्तः सवनासं वाजन्ते ।  
 आपः न पर्वतस्य पृष्ठान् ६,२४,६; १९३३ उक्येभिः यज्ञैः ।  
 आपः न प्रवताः ८,६,३४; २७६ इन्द्रं वनन्वती मतिः ।  
 आपः न प्रवताः ८,१३,८; ३२८ सूनुताः यतीः क्रीळन्ति ।

आप. न सिन्धुम् १०,४३,७; २५६३ सोमासः इन्द्रम् ।  
 आपः न सृष्टाः ७,१८,१५; २१३३ तृसवः नीचीः ।  
 आपः न उर्वीः काकुदः १,८,७; ४४ एवा इन्द्रस्य ।  
 आपः इव काशिना ७,१०४,८. २२८५ असतः वक्ता असन्  
 संगृभीता अथ. ८,४,८; ३२८५ अस्तु ।  
 आपः न धायि ८,५०,३; ४९७ सवन् मे आ वसो ।  
 आशु न रश्मिम् ४,२२,८; १५६२ शुशुचानस्य ।  
 इन्द्रम् न ४,४२,८; ३१५८ वृत्रतुरम् आ अपजन्त ।  
 इन्द्रं न चितयन्तः १,१३१,२; १०२२ आयवः यज्ञैः ।  
 इषम् न १०,४८,८; २५८६ वृत्रतुरम् विशु धारयम् ।  
 उग्रं न वीरम् ८,४९,६; ४९० विभूतिं उपसेदिम ।  
 उत्सम् न २,१६,७; ११७८ वयं इन्द्रं सिचामहे ।  
 उदा इव यन्ता ८,९८,७; २३७० उप त्वा कामान् ।  
 उद्रा इव कोशम् ४,२०,६; १५३८ वसुनान्यृष्टं वज्रं ।  
 उद्भिः नवाजिन्म् २,१३,५; ११४१ देवाः देवं स्तोमेभिः ।  
 उद्धीन् इव गर्भारान् ३,४५,३; १४०६ त्वं क्रतुं पुष्यसि ।  
 उद्री इव ८,४९,६; ४९० अवतः न सिञ्चते ।  
 उद्री इव अवतः ८,५०,६; ५०० वसुवना सदा पीपेथ ।  
 उप इव दिवि ८,३,२१; १७६ धावमानम् विश्वेषां ममा ।  
 उरा न वृकः ८,३४,३; ४२७ नेमिः एषां विधुनुते ।  
 उरुधारा इव ८,९,३; २४३२ इन्द्रः नः दोहते ।  
 उशती इव ५,३२,१०; १७१४ गातुः इन्द्राय येमे ।  
 उशतीः इव १०,१११,१०; २७३४ सध्रीचीः सिन्धुम् आषन् ।  
 उशनाः इव ४,१६,२; १४६८ वेधाः असुयाय मन्मशंसति ।  
 उषा. इव १०,१३४,१; २७८५ रोदसी आपप्राथ ।  
 उषसम् न ७,८५,१; ३१९७ पृतप्रतीकां देवीम् ।  
 उषसम् न सूर्यः १,५६,४; ८०८ इन्द्रं देवी तविषी सिषक्ति ।  
 उषसः न ७,१८,२०; २१३८ रायः सुमतयः न संक्षे ।  
 उषसः न केतुः १०,८९,१२; २६७३ हेतिः असिन्वा वर्तताम् ।  
 उस्ता इव राशयः ८,९६,८; २३५२ मरुतः त्वा वावृधानाः ।  
 ऊधः न ८,२,१२; १२७ नम्राः जरन्ते ।  
 ऊधः गोः पयसा यथा २,१४,१०; ११५९ इन्द्रं सोमेभिः ।  
 ऊर्जं न विश्वध क्षरथ्यै १,६३,८; ८९२ यया ममन्म अस्मभ्यं ।  
 ऊर्ध्वम् न यवेन २,१४,११; ११६० इन्द्रं सोमेभिः आपणीत ।  
 ऊर्ध्वः इव ३,३०,१९; १२५६ अस्मे कामः पप्रथे ।  
 ऊर्णावानं न १,१६९,७; १०४९ पृतनायन्तं सगैः पतयन्त ।  
 क्रमुः न १०,१०५,६; २७१९ क्रतुभिः मातरिश्वा ।  
 क्रश्यः न तृष्यन् ८,४,१०; २३८ अप पानम् आ गहि ।

ओकः न ४, १६, १५; १४८१ रणवः ।  
 ओकः न जानती १, १०४, ५, ८५ २ दस्योः सदनं अच्छा गात् ।  
 ओपशाम् इव १, १७३, ६; १०६१ इन्द्रः याम् भर्ति ।  
 कृष्वा. इव ८, ३, १६; १७१ इन्द्रं सोमेभिः महयन्ते ।  
 कनीनका इव ४, ३२, २३; ३३४८ कमनीयी ।  
 कविः न निष्पम् ४, १६, ३, १४६९ विदधानि साधन् ।  
 कारं न ५, २९, ८; १६७४ इन्द्राय भरं अहन्त ।  
 कारुः उक्थ्यः [इव] १ ८३, ६; ९३६ यत्र प्रावा वदति ।  
 किरणाः न १, ६३, १; ८८५ गिरयः अन्वा दृढहासः ऐरयन् ।  
 कुलपाः न ब्राजपतिम् १०, १७९, २; २८३७ सखायः चरन्तं ।  
 कुन्याः इव हृदम् ३, ४५, ३; १४०६ सोमाः स्वाम्प्र भाशत ।  
 " " " १०, ४३, ७; २५६३ सोमासः इन्द्रं अभि ।  
 कृतं न शमी देवने १०, ४३, ५, २५६१ संवर्गं यत् मघवा ।  
 कोशं न पूर्णं वसुना १०, ४२, २; २५४७ न्यृष्टं इन्द्रं ।  
 क्रिबिम् यथा १, ३०, १; ६२९ इन्द्रं इन्दुभिः आसिञ्चे ।  
 क्षप्र इव १, १३०, ४; १०१४ इन्द्रः वज्रं संदयत् ।  
 क्षाः न १, १३३, ६; १०३९ षोः भीषान् शुशोच ।  
 क्षुद्रम् इव १, १२९, ६; १००५ अवशांस. अवतरं अव स्वयेत् ।  
 क्षुम्पम् इव १, ८४ ८, ९४४ मत्तं पदा अस्फुरत् ।  
 क्षुल्लकाः इव अथर्वं ५, २३, १२; २८८५ क्रिमयः हताः ।  
 क्षोणयः यथा १०, २२, ९; २४७४ पूर्वतः स्वां पुरुत्रा वि ।  
 क्षोणीः इव १, ५७, ४; ८१४ त्वं नः वचः हर्यं ।  
 खले न पर्षान् १०, ४८, ७, २५८५ अहम् भूरि प्रति हन्मि ।  
 खर्गका इव ७, १०४, १७; ३२२४ तन्वं गूहमाना ।  
 अथ ८, ४, १७;  
 गृधम् यथा ८, ४५, १३; ४५५ तथा त्वां वयं विप्र ।  
 गर्भं न माता ३, ४६, ५; १४१३ सोमं चावापृथिवी ।  
 गर्भधिम् इव कपोतः १, ३०, ४; ७०२ अयम् उ ते समतसि ।  
 गवे न श्वाकिने ६, ४५, २२; २०८१ पुरुहूताय शम् गाय ।  
 गर्वां व्रजम् इव १, १३०, ३; १०१३ वज्री सोमं अविन्दत् ।  
 गवाम् इव स्तुतयः ६, २४, ४; १९३१ ते शाकाः संचरणीः ।  
 गावः न यवसात् ७, १८, १०; २१२८ चितासः मित्रम् ।  
 गावः न यूथम् ८, ४६, ३०; १८३८ वध्रयः मा उप यन्ति ।  
 गावः न यवसेषु ८, २२, १२; २४०८ त्वा उक्थेषु ।  
 गाम् न ८, १, २; ९० इन्द्रं शांसत ।  
 गाम् इव भोजसे ८, ६५, ३; ६०३ सोमस्य त्वा आ हुवे ।  
 गाम् न वोहसे ६, ४५, ७ २०६६ सखायं गीर्भिः हुवे ।  
 गाम् क्षीरिणाम् इव अथ ७, ५०, ९; २९११ फलवतीं युवं ।

गाः न १, ६१, १०; ८६५ इन्द्रः अवनीः अमुञ्चत् ।  
 गाः इव सुगोपाः ३ ४५, ३; १४०६ स्वम् क्रतुं पुष्यसि ।  
 गावः न ६, ४१, १; १९९३ स्वम् ओकः अच्छ आ गहि ।  
 गावः न धेनवः वत्सम् । ६, ४५, २८; २०८७ गिरः सुते ।  
 गिरिः न ४, २०, ६; १५३८ स्वतवान् ऋषवः इन्द्रः ।  
 गिरिः न भुज्म ८, ५०, २; ४९६ मघवस्तु पिन्वते ।  
 गिरिः न विश्वतस्पतिः ८, ९८, ४ २३६७ विश्वतस्पृथुः ।  
 गिरिम् न ८, ८८, २; ८९५ इत्रं ईमहे ।  
 गिरिं न वेनाः १, ५६, २; ८०६ विदथस्य नू सदः ।  
 गिरेः इव ८, ४९, २; ४८६ अंस्य रसाः प्र पिन्वरे ।  
 गोभिः इव व्रजम् ८, २४, ६; १७९५ त्वा गीर्भिः आ वृणोमि ।  
 गोः न १, ६१, १२; ८६७ पर्वं तिरश्चा वि रदा ।  
 गौः रुवत् ( लुप्तोपमा ) १, १७३, ३; १०५८ ( अग्निः ) ।  
 गौः इव ८, ३३, ६, २१५ पुरुहूतः ऋषा शाकिनः ।  
 गौरः न १, १६, ५; ८२ तृषितः (सोमं) पिब ।  
 गौरः यथा ८, ४५, २४; ४६६ तथा सरः पिब ।  
 गौरः यथा अपा कृतं ८, ४, ३, २३१ तथा आपिस्वे नः प्रपिस्वे ।  
 ग्रावा इव ५, ३६, ४; १७४७ जरिता ते वाचं ह्यर्ति ।  
 घृनेन इव १, ६३, ५; ८८९ अभित्रान् भथिहि ।  
 घर्मम् न सामन् ८, ८९, ७; २३२० जुष्टम् बृहत् तपत् ।  
 घृणात् न १, १३३, ६; १०३९ षोः भीषां शुशोच ।  
 घृतम् न ८, १२, ४; २९१ इमं स्तोत्रं अभिष्टये ।  
 घृतं न ८, १२, १३; ३०० ऋतस्य आसनि पिष्ये ।  
 घृतं न पूतं अत्रिभिः ५, ८६, ६; ३०४५ इन्द्राग्निभ्यां हृष्यं ।  
 घृतप्रुषः न ऊर्मयः ६, ४४, २०; २०५५ वृषणः द्रोणं ।  
 चक्रं न वृत्तम् ४, ३१, ४; १६३३ अर्बतः नः चर्षणीनाम् ।  
 " " ५, ३६, ३; १७४६ मे मनः मिया वेपते ।  
 चक्रं न वर्ति एतशम् ८, ६, ३८, २८० रोदसी त्वा अनु ।  
 विश्वा चक्रा इव ४, ३०, २; १६१० कृष्टयः ते अनु सत्रा ।  
 चक्रिया इव ४, ३०, ८; १६८९ मरुत्यः रोदसी ।  
 चन्द्रमा इव अप्सु ८, ८२, ८; ६८६ सोमः चमूषु ददशे ।  
 चञ्जीषः न १, १००, १२; ९६८ शवसा पाञ्चजम्यः ।  
 चर्म इव ८, ६, ५; २४७ रोदसी समवर्तयत् ।  
 जघना इव द्वौ १, २८, २; ६८९ अधिषवण्या कृता ।  
 जघन्थ यथा धृषता २, ३०, ४; १२३० अस्माकं शत्रुं जहि ।  
 जगं न धन्वन् अभि ६, ३४, ४; २०२४ सत्रा वापुषुः ।  
 जनयः न १, ६२, १०; ८८९ स्वसारः पत्नीः दुवस्यन्ति ।  
 जनयः न गर्भम् ४, १९, ५; १५२६ अद्रयः अभि प्र वृष्टुः ।  
 जनयः यथा पतिम् १०, ४३, १; २५५७ मघवानं मतवः ।

जनीः इव ८, १७, ७; ५१० सोमः त्वा अभि संवृतः ।  
जनीः इव एकः पतिः ७, २६, ३; २२०० सर्वाः पुरः सुसमानः ।  
जनिधा इव १०, २९, ५; २५१९ अस्य कामं गमन् ।  
जामिवत् १०, २३, ७; २४८७ ते प्रमति विद्या हि ।  
जिन्नयः न ४, १९, २; १५२३ देवाः त्वां अवास्तृजन्त ।  
जुष्टां न इयेनः वसतिम् १, ३३, २; ७३१ इन्द्र उत इव ।  
जूः न वस्त्रैः २, १४, ३; ११५२ इन्द्रं सोमैः आ ऊर्णन् ।  
जेन्वम् यथा १, १३०, ६; १०१६ वाजिनं शुम्भन्त ।  
जोष्टारः इव वस्त्र ४, ४१, ९; ३१५४ मनीषां इन्द्रं वरुणं ।  
ज्योतिः न ८, २४, १; १८१० दक्षिणा विश्वं अभि ।  
तष्टा इव ३, ३८, १; १३४५ मनीषां अभि दीधय ।

” १, ६१, ४; ८५९ अहं स्तोमं सं हिनोमि ।  
तष्टा इव सुद्रवंनेमिम् ७, ३२, २०; २२५४ इन्द्रं गिरा ।  
तष्टा इव बन्धुरम् १०, ११९, ५; २९५४ अहं मतिं पर्यचामि ।  
तीर्थे न अर्थः १, १६९, ६; १०४८ पृथुबुध्नासः एता ।  
तीर्थे न तातृषाणम् ओकः १, १७३, ११; १०६६ यज्ञः क्रन्धन् ।  
तुजये न १०, ४९, ४; २५९३ यजमानाय प्रिया प्र भरे ।  
तूर्णांशं न गिरेः अधि ८, ३२, ४; १८३ हुवे सुशिप्रम् ।  
त्वष्टा न वृष्टं वनिनः १, १३०, ४; १०१४ शवसा (शत्रून्) ।  
दक्षिणया इव भोजिष्ठया १, १६२, ४; १०४६ वयं रातिं ।  
दस्मः न सद्यन् ७, १८, ११; २१८९ इन्द्रं सर्गं अकृणात् ।  
दिवः न १, १००, ३; ९५९ इन्द्रस्य पन्थासः दुषानाः ।  
दिवः न १, १००, १३; ९६९ त्वेष शिमीवान् रवथः ।  
दिवः न ६, २०, २; १८८५ असुर्थं विश्वं तुभ्यम् अनु ।  
दिवः ,, अथर्व. २, ५, २; २८६४ मधोः पृणस्व ।  
दिवः ,, साम. ९५३; २९९८ ,, ,,  
दिवः न वृष्टिम् ८, १२, ६; २९३ प्रथयन् ववक्षिथ ।  
दिवे न सूर्यः ८, ७०, २; २३२२ दर्शतः हस्ताय वज्रः ।  
दिवि इव ७, २४, ५; २१९० घाम् अधि नः श्रोमतं धा ।  
दिवि इव सूर्यं वृषे १०, ६०, ५; २६२२ असमातिषु क्षत्र ।  
दिवि तारः न ८, ५५, २; ५४० श्वेतासंः उक्षण रोचन्ते ।  
दिश्या इव अशानिः १, १७३, ३; १०८७ यः असाधुकं तं ।  
दीर्घः न अध्वा मिधं १, १७३, ११; १०६६ यज्ञः जुहुराणः ।  
दुषा इव ८, ५०, ३; ४२७ दाशुपे उप ।  
दुर्गे दुरोणे क्रवान् ४, २८, ३; १६०१ यातां सहस्त्रा ।  
दुर्मदासः न सुरायाम् ८, २, १२; १२७ ह्यसु पीतासः ।  
दुर्थः न धूपः १, ५१, १४; ७५८ पज्रेषु स्तोमः ।  
दूतः न १, १७३, ३; १०५८ रोदसी अन्तः चरत् ।  
दूर्वायाः इव तन्तवः १, १३४, ५; २७८९ दिघवः विघ्नक् ।

दै० [इन्द्रः] ३४

दुषदा इव ७, १०४, २२; अथ० ८, ४, २२; ३२९९ रसः प्रमृण ।  
देव इव सावेता वा० य० १२, ६६; २९२९ सत्यधर्मा इन्द्रः ।  
द्यौः न १, ८, ५; ४२ शव प्रथिना [ युष्यताम् । ]  
द्यौः न ४, २१, १; १५४४ अभिभूति क्षत्रं पुष्यात् ।  
द्यौ न ६, २०, १; १८८४ यः अभि भूम ।  
द्यौः न ६, ३६, ५; २०३५ दुवोयुः अर्थः रायः अभिभूम ।  
द्यौ न ८, ५६, १; ५४४ शवः प्रथिनः ।  
द्यावः न १, ५१, १; ७४५ ( कर्माणि ) मातृषा विचरन्ति ।  
द्यावः न धूम्रैः ४, १६, १९; १४०५ वयम् अर्थः मदेम ।  
द्याम् इव उपरि वर्षिष्ठम् ३, ३१, १५; १६४४ देवेषु अस्माकं ।  
दृणा न पारं नदीनाम् ८, ९६, ११; २३५५ उक्थ वाहसे विभ्रैः ।  
धनं न जिग्युषः ७, ३२, १२; २२९६ अस्य अंश उत्र रिच्यते ।  
धनं न स्पन्दम् १०, ४२, ५; २५५० सोमान् बहुलं आसुनोति ।  
धन्वा इव ३, ४५, १; १४०४ तान् अति इहि ।  
धन्वचर न वंसगः ५, ३६, १; १७४४ रथीणां दामन आगमन् ।  
धर्म इव सूर्यम् ८, ६, २०; २६२ प्रस्व त्वा गर्भं अचक्रिन् ।  
धानानाम् न ८, ७०, १२; २३३२ आसां हस्ते नः दावने ।  
धिषणा इव ३, ४९, ४; १४२७ भागं वाजं विभक्त ।  
धुरि इव ७, २४, ५; २१९० एष स्तोमः उग्राय अधायि ।  
धेनु न वत्स यवसस्य पिप्युषी २, १६, ८; ११७९ सं बाधात् ।  
धेनवः यथा यवसम् ३, ४५, ३; १४०६ तथा त्वं सोमान् ।  
धेनवः संपृक्ता मध्वा सारघेण ८, ४, ८; २३६ न सोमा वर्धन्ते ।  
धेनुं न सूर्यवसे ७, १८, ४; २१२२ ब्रह्माणि त्वा उप ससृजे ।  
धेनुः इव मनवे १, १३०, ५; १०१५ अस्मदर्थे समानं ।  
धेनूनां न [पयः] १०, २२, १३; २४७८ [स्तुतीनां] भुजः ।  
नदं न भिन्नम् १, ३२, ८; ७२२ शयानं आपः अति यन्ति ।  
नद्यः न ४, १६, २१; १४८७ जरित्रे ह्यं पीपे ।  
,, ४, २४, ११-१५८७ ,,  
(सूक्तान्ते अष्टवारंः पुनरुक्तः) १४८७-१५८७  
नभ न ८, ९६, १४; ३२६९ कृष्ण अवनस्थिवांसं इष्यामि ।  
नभन्वान्वक्त्राः ४, १९, ७; १५२८ ध्वस्त्राः युवती प्र अपिन्धत् ।  
नरां न शंसैः १, १७३, ९; १०६४ स्मिष्टयः वयं असाम ।  
नरां न विष्पधांसः १, १७३, १०; १०६५ अस्माकं शसैः ।  
नवं इत् न कुम्भम् १०, ८९, ७; २६६८ गिरि विभेद ।  
नद्यः न । अथ० २, ५, २; २८६४ इन्द्रं जठरं पृणस्व ।  
नद्यं न । साम० ९५३; २९९८ जठरं पृणस्व ।  
नावम् न पर्वणिम् १, १३१, २; १०२२ इन्द्रं श्वस्य धुरि ।  
नावम् न समने २, १६, ७; ११७८ वचस्पुवं सवनेषु ।  
नावा इव यान्तम् ३, ३२, १४; १२९५ इन्द्रं उभये हवन्ते ।

नासत्या इव १,१७३,४; १०५९ सुगम्य इन्द्र. ।  
 निधया इव १०,७३,११; २६३३ अस्मान् सुसुगिध ।  
 निम्नम् न १,३०,२; ७०० समाशिरां सहस्रं पदुरीयते ।  
 निम्नम् न सिधव ५,५१,७, ३२३२ प्रयः युवाम् अभि ।  
 निष्ठा इव ८,१,१३, ९९ वयं मा भूम ।  
 नृपती इव ७,१०४,६; अथ ८,४,६; ३२८३ इमा ब्रह्माणि ।  
 नृवत् ४,२२,४; १५५४ वाताः परिउमन् नो नुवन्त ।  
 पक्षा इव इयेनम् ८,३४,९; ४३३ मदर्युता हरी त्वा ।  
 पणिना इव गावः १,३२,११, ७२५ आपः निरुद्धाः ।  
 पतिं न परनीः उशतीः १,६२,११; ८८२ मनीषा त्वा ।  
 पत्नीभिः न नृवणः २,१६,८; ११७९ ते सुमातिभि ।  
 पदा इव पिप्रतीं जामिम् ८,१२,३१; ३१८ विप्रः धीभिः ।  
 पदा पूर्वेण अजः वयां यथा १०,१३४,६; २७९० तथा यम ।  
 परशुः यथा वनम् ७,१०४,२१, अथ ८,४,२१; ३२९८ रक्षसः ।  
 परश्वा इव १,१३०,४; १०१४ (अस्मद् द्वेषिणः) निवृश्चसि ।  
 परिधीन् इव प्रित १,५२,५; ७६४ वलस्य परिधीन् ।  
 परिपन्थी इव १,१०३,६; ८४४ अयज्वनः वद विभजन् ।  
 पर्जन्यः वृष्टिमान् इव ८,६,१; २४३ इन्द्रः भोजसा महान् ।  
 पर्वतः न १,५२,२; ७६१ धरुणेषु अच्युतः ।  
 पशुं न गोपा १०,२३,६; २४८६ भोजनः (प्रासये) वयं ।  
 पशुम् पृष्टीवन्तः यथा ८,४५,१६, ४५८ सोमिनः तथा ।  
 पात्र न शोचिषा १,१७५ ३; १०८१ सहावान् दस्युं ।  
 पात्रा भिन्दाना ६,२७,६; १९६० वृचीवन्तः न्यथानि ।  
 पात्रा इव ७,१०४,२१; अ० ८,४,२१; ३२९८ रक्षसः भिन्दन् ।  
 पात्रस्य इव १,१७५,१; १०७९ (त्वया) महा अपायि ।  
 पादौ इव ६,४७,१५; २११३ प्रहरन् अन्यं कृणोति ।  
 पितृवत् ८,४२,१२; ३११२ नवीय अवाचि ।  
 पिता इव १,१०४,९; ८५५ इन्द्र नः नृणुहि ।  
 पिता इव ३,४९,३; १४२६ चारुः सुहवः च ।  
 पिता इव ८,२१,१४; ४२२ त्वम् समूहस्य आत् इत् ।  
 पिता इव ७,२९,४; २२१६ त्वं नः प्रमतिः असि ।  
 पिता इव १०,२३,५; २४८५ यः तविपीं शवः वावृषे ।  
 पिता इव १०,३३,३; २५४० इन्द्र त्वं नः भव ।  
 पिता इव १०,४९,४, २५९३ अहम् वेतसून् अभिष्टये ।  
 पिता यथा पुत्रेभ्यः ७,३२,२६; २२६० इन्द्र नः क्रतुम् ।  
 पितरौ इव शम्भु ४,४१,७, ३६५२ युवां सख्याय ।  
 पितरं न पुत्रासः १,१३०,१ १०११ वयं मंहिष्ठं त्वा ।  
 पितरं न पुत्राः ७,२६,२; २१९९ सबाधः समान दक्षाः ।  
 पितरं न १०,४८,१, २५७९ जन्तवः माम् हवन्ते ।

पुत्रः न पितरम् ७,३२,३; २२३७ रायस्कामः सुवसिष्ठं हुवे ।  
 पुत्रः न पितुः ३,५३,२; १४५४ सिचम् स्वादिष्ट्या गिरा ।  
 पुत्रम् इव प्रियं पिता १०,२२,३; २४६८ इन्द्रः [नःभवत्] ।  
 पुर एता इव ६,४७,७; २१०५ इन्द्र नः पश्य ।  
 पुाम् न ८,३२,५; १८४ अश्वस्य ब्रजम् दर्षसि ।  
 पुाम् न धृष्णु ८,६९,८; २३११ प्रियमेघालः इन्द्रं प्र अर्चत ।  
 यथाचित् आविधवाजेषु ८,६८,१०; २३०० तथा माम् ।  
 पूर्वथा १,८०,१६; ९१५ उक्त्वा इन्द्रं समतात ।  
 पूर्वपाः इव ८,१,२६; ११२ अस्य सुतस्य आ पिष ।  
 पृष्ठा इव १०,८९,३; २६६५ इन्द्रः जनिमानि विचिकाय ।  
 प्र इव १,१०३,७; ८४५ तत् वीर्यं चकथं ।  
 प्रय न १,६१,१; ८५६ इमं स्तोमं प्रहर्षि ।  
 प्रय इव १,६१,२; ८५७ अंस्ये आंगूषं भराभि ।  
 प्रवतः न ऊर्मि ६,४७,१४, २११२ ब्रह्माणि त्वा अवधवन्ते ।  
 वृहिं न १,६३,७, ८९१ सुदासे अंहो यत् वृथा वकं ।  
 ब्रह्मा इव तन्द्रयुः ८,९२,३०; २४२६ मा सु भवः ।  
 भृगाः न १,६२,७; ८७८ मेने परमे व्योमन् ।  
 भगः न ३,४९,३; १४२६ कारे मतीनां हव्य ।  
 भगः न ५,३३,५; १७२१ हव्यः, चारुः ।  
 भगम् न ८,६१,५; ५५२ वसुविदं त्वा अनुचरामसि ।  
 भगं न कारिणम् ८,६६,१; ६१३ अध्वरे इन्द्रं हुवे ।  
 भागम् इव ८,९०,६; २३९६ प्रचेतसं त्वा राधः ईमहे ।  
 भीमं न गाम् ८,८१,३; ६७२ दिस्सन्तं त्वा न चारयन्ते ।  
 भूषत् इव १०,४२,१, २५४६ अस्मै स्तोमं आ भर ।  
 भृगुः न । अथ० २,५,३; २८६५ इन्द्रः बलं विभेद ।  
 " साम० ९५४; २९९९ " ।  
 भृगवः रथं न ४,१६,२०; १४८६ इन्द्राय ब्रह्म अकर्म ।  
 भृतिं न ८,६६,११; ६२३ वयं ते ब्रह्माणि प्र भरामसि ।  
 भृष्टिः न गिरेः १,५६,३; ८०७ इन्द्रस्य शवः पौंस्ये ।  
 भृषा इव निष्पपी १,१०४,५, ८५१ चर्कतात् इत् नः ।  
 मधौ न मक्षः ७,३२,२; २२३६ इमे ब्रह्मकृतः सुते सखा ।  
 मनुषा इव १,१३०,९; १०१९ विश्वा सुमनानि तुर्वणिः ।  
 मनुषवत् ६,६८,१, ३१६१ वृत्रवर्हिषः यजध्ये ।  
 मंधातृवत् ८,४०,१२; ३११२ नवीयः अवाचि ।  
 मर्तः न १०,१०५,३; २७१६ शश्रमाणः विभीवान् इन्द्रः ।  
 मर्ताय [ मर्तायिव ] ५,८६,५ ३०४४ ता अनु धून् ।  
 मर्यः न योषाम् । ४,२०,५; १५३७ इन्द्रं अष्ठा ।  
 मर्यं न क्षुण्ड्युम् १०,४३,१; २५५७ सद्यवान् मे ।

महान् इव युवजानिः ८, २, १९; १३४ असमान् मा भमि ।  
 मही इव ८, ९०, ६; २३९६ ते कृत्तिः शरणा ।  
 मही इव घोः १०, १३३, ५; २७८२ तस्य बलं भव तिर ।  
 मातुः न सीम् ६, २०, ८; १८९१ उप सृज ह्यध्वै ।  
 मासा इव सूर्यः १०, १३८, ४; २७९५ पुर्य वसु भा वदे ।  
 मित्रः न १०, २२, १; २४६६ इन्द्रः जने भ्रूयते ।  
 मित्रः न १०, २२, २; २४६७ इन्द्रः जनेषु असाम्या ।  
 मित्रः न १०, २९, ४; २५१८ नः कत् भागन् ।  
 मित्रः न । पाम, २५४, २९९९ इन्द्रः वृत्रं जघान ।  
 मित्रायुवः न पूर्वतिम् १, १७३, १०; १०६५ मध्यायुवः ।  
 मूषः न शिखा १०, ३३, ३; २५४० ते स्तोतारं मा आध्वः ।  
 मृगः न १, १७३, २; १०५७ अक्ष. ( सन् ) अति ।  
 मृगः न कुचर. १०, १८०, २; २८४० इन्द्र. भीमः ।  
 मृगः न वारणः दाना ( नि ) ८, ३३ ८; ३१७ त्वं पुरुषा ।  
 मृगः न हस्ती ४, १६, १४; १४८० त्रिषोऽघाणः भीमः ।  
 मृगं न प्राः ८, २, ६; १२१ यत् ईम् अस्वत् अन्ये मृगयन्ते ।  
 मृगं न ८, १, २०; १०६ अहं गिरा भूर्णि त्वा मा सुकुषम् ।  
 यथा मेधिरा आहुवन्त ८, ३८, ९; ३०२९ एवावाम् ।  
 यजमानः न होता ४, १७, १५; १५०२ कृष्णः ईम् अजिघर्ति ।  
 यतिः न । साम० २, ५४; २९९९ इन्द्र वृत्रं जघान ।  
 यतीः न । अध० २, ५, ३; २८६५ " " " "  
 यवम् न १, १७६, २; १०८६ इन्द्रः वृषा चक्रवत् ।  
 यवं न पश्यः भा वदे ८, ६३, ९; ५८६ अस्य वृष्णः भोदने ।  
 यवं न वृष्टिः १०, ४३, ७; २५६३ विप्राः अस्य महः ।  
 यवं यथा गोभिः श्रीणन्तः ८, २, ३; ११८ वयं तथा तं ।  
 यवमन्तः यवं चित् यथा १०, १३१, २; २७७४ इह एषां ।  
 युजं न २०, ८९, ८; २६६९ जना मित्रं प्र मिनन्ति ।  
 युजा इव वाजिना अक्षं २, २४, १२; ३३५२ नः हविः ।  
 यूथा इव वंसगः १, ७, ८; ३५ वृषा कृष्टाः भोजसा इयति ।  
 यूथा इव पश्वः ५, ३१, १; १६९३ इन्द्र ( शत्रुसैन्यानि ) ।  
 यूथा इव पश्वः पशुया. ६, १९, ३; १८७३ दमूना वाजौ ।  
 यूथा इव अप्सु ६, २९, ५; १९६६ समीजमानः ऊती ।  
 हरीः इव प्रवणे १, ५२, ५; ७६४ ऊतयः स्ववृष्टिं ।  
 हरीः इव अवसः ४, ४१, ९; ३१५४ प्रविणं इच्छमानाः ।  
 हरी न १०, १०५, २; २७१५ यस्य हरी केशिना ।  
 हथः न ३, ४२, ४; १४३७ वायुः रजसस्पृष्ट ऊर्ध्वं ।  
 हथः न महे ६, ३४, २; २०२२ इन्द्रः अनुमाद्यः ।  
 हथाः इव ४, १९, ५; १५२६ अन्नयः साकं प्र ययुः ।  
 हथाः इव वाजयन्तः ८, ३, १५; १७० अक्षितोतयः ।

रथं न १, ६१, ४; ८५९ अस्मै स्तोमं सं हिनोमि ।  
 रथं न ५, २९, १५; १६८१ स्वपाः भद्रा सुकृता अतक्षम् ।  
 रथं न पृतनासु १०, २९, ८. २५३२ अस्मान् भातिष्ठ ।  
 रथं न धीरः १, १३०, ६; १०१६ आयवः ते इमां वाचं ।  
 रथम् यथा ८, ६८, १; २२९१ तथा त्वाम् सुन्नाय भावर्त - ।  
 रथम् इव अथाः १०, ११९, ३; २८५२वीताः उत् मा अयं ।  
 रथान् इव १, १३०, ५; १०१५ नद्यः समुद्रं असृजः ।  
 रथान् इव ८, १२, ३; २९० येन सिन्धुम् प्रचोदयः ।  
 रथान् इव वाजयतः १, १३०, ५; १०१५ नद्यः समुद्रं अक्ष्ण ।  
 रथैः इव । अथ. ७, ५०, ३; २९०८ वाजयद्भिः प्र भेर सोमम् ।  
 रथे न पादम् ७, ३२, २; २२३६ जरितारः इन्द्रे कामं वधुः ।  
 रथीः इव ८, २५, १; २३३६ सुनेषु भा त्वा गिरः अस्थुः ।  
 रथ्यः न धेनाः ७ २१, ३; २१६३ रेजन्ते विश्वा कृत्रिमाणि ।  
 रथ्या इव ३, ३६, ६; १३२८ आपः समुद्रं जग्मुः ।  
 रथ्या चक्रा इव १०, ८९, २; २६६४ सूर्यः वरांसि उह ।  
 रथ्मं न जित्रयः ८ ४५, २०, ४६२ वय त्वा आ ररभ्मा ।  
 रथिम् न १०, १३४, ४; २७८८ सुन्वते सचा ऊतिभि ।  
 रथिम् इव पृष्ठं प्रथवन्तं २, १३, ४; ११४० पुष्टिं प्रजाभ्यः ।  
 रथीन् यमितवा इव १, २८, ४; ६९ यत्र मन्यां विश्वधते ।  
 राजा इव १०, ४३, २; २५५८ बर्हिषि अधि निषद् ।  
 राजा इव जनिभिः ७, १८, २; २१२० शुभि. त्वं क्षेषि ।  
 राजा इव सत्पतिः १, १३०, १; १०११ विदधानि अच्छ ।  
 रिष्टं न यामन् १, १३१, ७; १०२७ विश्वा दुर्मतिः अप भूत ।  
 वंशम् इव १, १०, १; ५८ ब्रह्माणः त्वा उद् येमिरे ।  
 वंसगः न १, ५५, १; ७९७ इन्द्रः वज्र शिशिते ।  
 वंसगः तातृषाणः १०, १३०, २; १०१२ इन्द्र स्तोमं पिब ।  
 वज्रः न संभृतः ८, ९३, ९; २४३८ सचलः अनपश्युतः ।  
 वत्सं न मातरः ३, ४१, ५; १३७७ मतयः इन्द्रं रिहन्ति ।  
 वत्सं न मातरः ६, ४५, २५, २०८४ गिरः त्वा अभि प्र णो नुमः ।  
 वत्सं न मातरः ८, ९५, १; २३३६ गिरः त्वा समनृषत ।  
 वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ८, ८८, १; ८९४ इन्द्रं गीर्भिः ।  
 वत्सानां न तन्तयः ६, २४, ४; १९३१ ते दामन्वन्त ।  
 वधूयुः इव ३, ५२, ३; १४४८ नः गिरः जोषय.से ।  
 वधूयुः इव योषणाम् ४, ३२, १६; १६६० " "  
 वना इव सुधितेभिः ६, ३३, ३; २०१८ पृासु अस्त्रैः वधीः ।  
 वना इव अग्निः ८, ४०, १; ३१०१ येन वृक्षा समस्तु ।  
 वना इव स्वधितिः १०, ८९, ७; २६६८ इन्द्रः वृत्रं जघान ।  
 वनानि न ८, १, १३; २९ प्रजहितानि अमन्महि ।  
 वने न वायो न्यधायि १०, २९, १; २५१५ वां स्तोमः शुधिः ।  
 वयः न स्वसराणि २, १९, २; १२०० नदीनां प्रयापि ।

वयः न वचुंतति आमिवि ६, ४६, १४, २१०३ बाहोः गवि ।  
 वयः न अस्तम् ८, ३, २३; १७८ वक्ष्यः तुग्न्यं धुरं ।  
 वयः यथा ८, २१, ५, ४१३ तथा वयं मघौ सीदन्तः ।  
 वयः न वृक्षं १०, ४३, ४, २५६० सोमासः इन्द्रं ।  
 वया इव ८, १३, १७; ३३७ इन्द्र क्षोणीः अवर्धयन् ।  
 वयाः इव ८, १३, ६, ३२६ गिरः अनु रोहते ।  
 वयाम् इव वृक्षस्य ६, ५७, ५, ३३३४ इन्द्रस्य सुमतिं ।  
 वराः इव १, ८३, २, २३२ देवासः ब्रह्ममियं जोषयन्ति ।  
 वरुणः न १०, ९९, १०, २६८९ दस्मः मायी ।  
 वरुणः न १०, १४७, ५, २८०९ दस्मः त्वं मायी ।  
 वस्त्रा इव ५, २९, १५; १६८१ अहं भद्रा सुकृता अतक्षम् ।  
 वस्त्रा इव गध्या ८, १, १७; १०३ वासयन्तः नरः ।  
 वहतुं न धेनवः १०, ३२, ४, २५३३ सधस्थं अभिचारु ।  
 वाचं न वेधसाम् १, १२९, १, १००० अस्माकं (हविः) ।  
 वाजम् न जिग्युषे ६, ४६, २; २०९१ रथ्य अश्व संकिर ।  
 वानं न गध्यम् ४, १६, ११; १४७७ ऋत्रा ।  
 वाजयुः न रथम् २, २०, १, १२०८ ते वयः प्र भ्रामहे ।  
 वाणीः इव त्रितः ५, ८६, १, ३०४० स वृकहा चित् युष्मा ।  
 वातः न जूनः स्तनयज्ञिः ४, १७, १२; १४९९ सः अस्य शुष्मं ।  
 वातः यथा वनं १०, २३, ४; २४८४ इन्द्रः सुते मधु उत् ।  
 वाताः इव ८, ४९, ८, ४९२ प्रसक्षिणः हरयः ।  
 वाताः इव प्रबोधतः १०, ११९, २; २८५१ उत् मा पीता ।  
 वायुः न नियुतः ३, ३५, १; १३१२ रथे युज्यमाना हरी ।  
 वायुः न नियुतः ७, २३, ४; २१८३ नः अच्छा आ याहि ।  
 वारं न वातः तत्रिषीभिः ४, १९, ४; १५२५ इन्द्रः शवसा ।  
 वासी इव प्राची सुन्वते ८, १२, १२, २९९ सनिः मित्रस्य ।  
 वाश्राः इव धेनवः १, ३२, २; ७१६ आपः समुद्रं अव जग्मुः ।  
 वाश्रा पुत्र इव प्रियम् १०, ११९, ४; २८५३ मतिः मा उप ।  
 विम् न पाशिनः ३, ४५, १; १४०४ त्वां केचित् मा ।  
 वितत यथा रजः १, ८३, २; २३२ देवासः अब पश्यन्ति ।  
 विदध्यः न सत्राद् ४, २१, २; १५४५ ऋतुः कृष्टीः अभ्यस्ति ।  
 विदे यथा ८, ४९, १; ४८५ सुराधसम् इन्द्रम् अर्चं ।  
 विः इव १०, ८६, ७, २६४६ (मेपिता) हृष्यति ।  
 विषः नः ६, ४४, ६; २०४१ यस्य उतयः ।  
 बी इव आजन्तः ७, ५५, २; २२७१ ऋधयः उप स्रक्षु ।  
 वृकः यथा अविम् । अथ. ७, ५०, ५; २९१० एव ते कृतं ।  
 वृक्षः न एकः ४, २०, ५, १५३० नवेभिः ऋषिभिः ।  
 वृक्षस्य तु वयाः ६, २४, ३; १९३० ते उतयः वि रूढुः ।  
 वृक्षाः इव ८, ४, ५; २३३ ते पृतनायवः नि येमिरे ।  
 वृजनम् न १, १७३, ६; १०६१ इन्द्रः भूमां संविच्ये ।

वृत्रः इव दासम् १०, ४९, ६; २५९५ प्रहम् वृहद्रथं ।  
 वृषभः न भीमः तिग्मशृगः ७, १९, १; २१४० एकः विश्वाः ।  
 वृषभः न १०, १०३; १; २६८२ भीमः इन्द्रः ।  
 वृषभः न तिग्मशृगः १०, ८६, १५; २६५४ मन्थः ते इन्द्र ।  
 वृषभा इव धेनोः ४, ४१, ५; ३१५० अस्याः धियः युवां ।  
 वृषभा इव ६, ६४, ४; २०९३ मन्थुना मनुष्यान् बाधसे ।  
 वृषभं यथा अवक्रक्षिणम् ८, १, २, ९० तथा इन्द्रं शंसत ।  
 वृषा न क्रुद्धः १०, ४३, ८; २५६४ इन्द्रः रज सु आपतयत् ।  
 वृष्णे न ८, ३४, ५; ४२९ सुतानां ते पूर्वपायप दधामि ।  
 वृषायुधः न वध्रयः १, ३३, ६; ७३५ निरष्टाः इन्द्रात् प्रवक्रिः ।  
 वृष्टिः इव अभात् ७, ९४, १; ३०७९ पूर्वस्तुतिः मन्मनः ।  
 वेः न १०, ३३, २, २५३९ अमतिः नम्रता नि बाधते ।  
 वेः न गर्भम् १, १३०, ३; १०१३ इन्द्रः गुहा निहितं ।  
 वेनः न ८, ३, १८; १७३ हवं शृणु धी ।  
 व्रजं न गावः ५, ३३, १०, १७२६ रायः प्रयता अपि रमन् ।  
 व्रततेः इव पुराणवत् ८, ४०, ६; ३१०६ अपि वृक्ष गुणितम् ।  
 व्यथिः यथा । अथ. ६, ३३, २; २८८८ इन्द्रस्य श्रवः नाध्वे ।

शची इव १०, ७४, ५, २६३८ इन्द्रं अवसे कृणुध्वम् ।  
 शतानीका इव ८, ४९, २; ४८६ छण्युया प्र जिगाति ।  
 शवः ते यथा अपरीतम् ८, २४, ९; १७९८ तथा दाशुषे राति ।  
 शसने न गावः १०, ८९, १४; २६७५ पृथिव्याः आपृक् ।  
 शाखा न पका १, ८, ८; ४५ अस्य दाशुषे सूनृता ।  
 शार्याते सुतस्य यथा अपिब. ३, ५१, ७; १४४० तथा इह ।  
 शिशुम् न मातरा ८, ९९, ६; २३८१ क्षोणी तुरयन्तं अनु ।  
 शुन्धुः परिपदाम् ८, २४, २४, १८१३ निर्ऋतीनां परिवृजं ।  
 शोचि न अग्ने ८, ६, ७, २४९ दियुतः धीतयः विपाम् ।  
 शमशा (लुप्तोपमा) १०, १०५, १; २७१४ (अवरुध्यच) कदा ।  
 श्वेतः न १, ३२, १४, ७२८ स्रवन्तीः रजांसि अतिरः ।  
 श्वेनान् इव श्रवस्यतः ६, ४६, १३; २१०२ महाधने सर्गे ।  
 श्वेनान् इव अन्तरिक्षे १, १६५, २; ३२५१ महा मनसा ।  
 श्रायन्तः इव सूर्यम् ८, ९९, ३; २३७८ विश्वा इत् इन्द्रस्य ।  
 श्वियेन गावः सोमम् ४, ४१, ८; ३१५३ मे मनीषाः इन्द्रं ।  
 श्वनी इव ३, १२, ४; ११२५ [ इन्द्रः ] लक्षं जिगीवान् ।  
 श्वनी इव ४, २०, ३; १५३५ धनानां सनये आजिं जयेम ।  
 श्वनी इव निवताचारन् ८, ४५, ३८; ४८० एवारे वृषभा ।

सत्पतिः इव १, १३०, १; १०११ इन्द्रं विदधानि आ याहि ।  
 सदसो न भूम ४, १७, ४; १४९१ य ईम् जजान अनपशुतम् ।  
 सघ इव मानैः २, १५, ३; ११६४ इन्द्रः प्राचः वि सिम्साय ।  
 सपत्नीः इव १०, ३३, २; २५३९ पशवः माम् अभितः ।

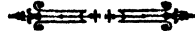
ससिम् इव १,६१,५; ८६० अस्मै श्रवस्या जुह्वा समजे ।  
ससी इव आदने ६,५९,३; ३०४८ ओकिवांसा सुते सचा ।  
समना इव केतुः १,१०३,१; ८३९ अस्य अन्यत् इदम् ।  
समना इव वपुष्यतः ८,६२,९; ५७४ कृणवन् मानुषा युगा ।  
समुद्रः न १,३०,३; ७०१ अस्य षदरे व्यचः दधे ।  
समुद्रः इव १,८,७, ४४ अस्य स्रुता दाशुषे ।  
समुद्रः इव ८,३,४, १५९ सहस्रकृतः अयं पप्रथे ।  
" " ८,१२,५, २९२ पिन्वते इमं जुषस्व ।  
समुद्रं न सिन्धवः ६,३६,३, २०३३ उक्थ शुष्मा गिरः ।  
समुद्रम् इव सिन्धवः ८,६,३५; २७६ उक्थानि इन्द्रं ।  
" " " ८,९२,२२, २४१८ त्वा इन्द्रवः ।  
समुद्रं न स्रवतः ३,४६,४, १४१२ सोमासः इन्द्रं आविशन्ति ।  
समुद्रं न सुन्धवः स्वाः १,५२,४; ७६३ सन्न बर्हिषः दिवि यम् ।  
समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः १,५६,२, ८०६ गूर्तयः परीणसः ।  
समुद्राय इव सिन्धवः ८,६,४; २४६ अस्य मन्थवे विशाः ।  
समुद्रे न सिन्धवः ६,१९,५; १८७५ अस्मिन् पथ्याः रायः ।  
सरः न ८,१,२३, १०९ सोमेभिः उरु स्फिरं आ प्रासि ।  
ससताम् इव १,५३,१; ७७५ इन्द्रः नू चित् रत्नं अवियत् ।  
सहवत्सा न धेनुः १,३२,९; ७२३ उत्तरासु अधरः पुत्रः ।  
सिंहः न १,१७४,३; १०७१ अपांसि वस्तोः रक्षः ।  
सिंहः न ४,१६,१४; १४८० आयुधानि बिभ्रत् भीमः त्वम् ।  
सिन्धवः न २,११,१; ११०१ वसूयवः त्वाम् ऊर्जं ।  
सिन्धुं यथा आपः अभितः १,८३,१; ९३१ भवीयसा वसुना ।  
सिन्धुन् इव प्रवणे ६,४६,१४; २१०३ आयुया यतः यदि ।  
सिन्धौ इव नावम् १०,११६,९; २७६३ [अहम् इन्द्राग्नी] ।  
सीराः न स्रवन्तीः १,१७४,९; १०७७ धुनिः त्वं धुनिमतीः ।  
" " ६,२०,२; १८९५ " " ।  
सुतेषु यथा १,१०,५; ६२ तथा नः सख्येषु सुतेषु च ।  
सुदुषाम् इव गोदुहे १,४,१; ४ सुरूपकृतं ऊतये जुहूमसि ।  
सुदुषाम् इव गोदुहः ८,५२,४; ५१८ तं त्वा वयम् ।  
सुदृशी इव पुष्टिः ४,१६,१५; १४८१ रणवः (भवसि) ।  
सुयतः न अर्वा ७,२२,१; २१७१ सोतुः बाहुभ्यां यं ते ।  
सुवृभिः न १,१००,५; ९६१ रुद्रेभिः ऋत्वास इन्द्रः ।  
सुरिः न घातवे अजाम् ८,७०,१५, २३३५ मघवा वत्सं नः ।  
सूर्यः न २,११,२०; ११२० इन्द्रः चक्रं अवर्तयत् ।  
" " ८,१२,७; २९४ इन्द्रः रोदसी अवर्धयत् ।

सूर्यः इव ८,६,१०, २६२ अहम् अजनि ।  
सूर्यः रश्मिम् यथा ८,३२,२३, २०२ तथा मे गिरः त्वा ।  
सूर्यम् इव दिवि ५,२७,६; ३०३९ शतदाग्निं अश्रमेधे ।  
सूर्यस्य इव १,१००,२; ९५८ इन्द्रस्य यामः अनासः ।  
" " १०,४८,३, २५८१ मम अनीकं दुस्तरम् ।  
सूर्याः इव ८,३,१६; १७१ भृगवः स्तोमेभिः महयन्ते ।  
" " ८,३४,१७, ४४१ रघुवपदः आजन्ते ।  
सृण्यः न जेता ४,२०,५, १५३७ यः ऋषिभिः बिररप्यो ।  
सेक्ता इव कोशम् ३,३२,१५; १२९६ सिसिचे पिबध्वै ।  
सोमः न पीतः ८,९६,२१; २३६३ नयां अपांसि कृणवन् ।  
सोमः न पृष्ठे पर्वतस्य ५,३६,२, १७४५ ते हन् सिमे ।  
स्कन्धामि इव कुविशेन १,३२,५, ७१९ इन्द्रः वज्रेण वृत्रं ।  
स्तनं न मध्वः १,१६९,४, १०४६ त्वां वाजैः पीपयन्त ।  
स्तर्यः न गावः ७,२३,४, २१८३ आप चित् पिप्युः ।  
स्थिरा इव धन्वनः १०,११६,६, २७६० अभिमातीः भोजः ।  
स्थूरं न कश्चित् ८,२१,१; ४०९ वयं त्वां वाजे चित्रं ।  
स्नात्वा इव धनुः । अथ०७,५०,९, २९११ कृतस्य धारया ।  
स्वर्दी इव वंसग ८,३३,२, २११ सुतं तृषाणः ओकः ।  
स्वर् न ४,२३,६, १५७१ गो चित्रतमं वपुः आ इवे ।  
स्वर् न ६,२९,३; १९६४ इशे कं नृतो इविरः बभूथ ।  
स्वर् न १०,४३,९, २५६५ शुक्रं शुश्रुचीत सप्तपतिः ।  
स्वर् न । अथ०२,५,२, २८६४ उप त्वा मदाः सुवाचः अगुः ।  
स्वर् न । साम०९,५३; २९९८ उप त्वा मदाः सुवाचः अशुः ।  
स्वर् मीलदे न च ४,१६,१५, १४८१ तवने चकानाः ।  
स्वानः न अर्वा १,१०४,१; ८४७ तम् (योनिम्) ।  
स्वेदा इव १०,१३४,५, २७८९ दिद्यवः विष्वक् अभितः ।  
हंसा इव ३,५३,१०; १४६२ हे कुशिकाः श्लोकं कृणुथ ।  
हरितः न १,५७,३, ८१३ यस्य ज्योतिः श्रवसे अकारि ।  
हरितः न सूर्यम् १,१३०,२, १०१२ त्वा (अन्धाः) आ ।  
हर्म्यम् यथा हृदं ७,५५,६, २२७५ तथा तेषां अक्षाणि ।  
हृद्यः न १,१२९,६, १००५ इषत्रान् मन्म रेजति ।  
हिन्वानं न बाजयुम् ८,१,१९, १०५ शक्रः पुंन विश्व ।  
होता इव ८,१२,३३; ३२० पूर्वं चित्तये प्राधरे ।  
होता न अमृतः ४,४१,१, ३१४६ वां सुस्रम् कः स्तोमाः ।  
हृदा इव ३,२६,८; १३३० सोमधानाः कुक्षयः ।  
हृदं न ऊर्मयः १,५२,७; ७६६ ब्रह्माणि त्वां न्यृषन्ति ।





# दैवत-संहितान्तर्गत- इन्द्रमन्त्राणां सूची ।



अकर्मा दस्युरभि	२४७३	अतीहि मन्युषाविणं	२००	अथ स्या ते चर्षणयो	१९४४
अकारि त इन्द्र गोतमेभि०	८९३	अतृष्णुवन्त वियतमबुध्य०	१५२४	अथ स्या नो वृधे	२१००
अक्षन्मीमदन्त	९२६	अत्रा वि नेमिरेषामुरां	४२७	अथ स्या योषणा	१८४०
अक्षाः फलवतीं शुत्रं	२९११	अत्राह गोरमन्वत	९५१	अधाकृणोः पृथिवीं	११४१
अक्षितोतिः सनेदिमं	२२	अत्राह तद् वहेथे	३२१९	अधाकृणोः प्रथमं	११८३
अक्षेत्रवित् क्षेत्रविदं	२५३६	अत्राह ते हरिवस्ता	१५६१	अधा ते अप्रतिष्कृतं	२४४१
अक्षोदयच्छवसा	१५२५	अत्रिवद्भः क्रिमयो	२८८३	अधा मन्ये बृहदसुर्यम्	१९६९
अक्षो न चक्रयोः	१९३०	अत्रीणां स्तोममद्रिवो	१७७४	अधा मन्ये श्रत् ते	८५३
अगच्छदु विप्रतम०	१२६६	अत्रेदु मे मंससे	२५००	अधा यो विश्वा	११८४
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्	१३४३	अथा ते अन्तमानां	६	अधा हीन्द्र गिर्षणः	२३७०
अगव्युति क्षेत्रमागन्म	३३२७	अददा अर्भा महते	७५७	अधि द्वयोरदधा	९३३
अगोरुधाय गविषे	१८०९	अदर्वरुसमसृजो	१७०५	अधि यस्तस्यौ केशवन्ता	२७१८
अग्न इन्द्रश्च दाशुषे	३१३१	अदोदिष्ट वृत्रहा	१२८०	अधि सानौ नि जिहते	९०५
अग्निर्जज्ञे जुह्वा	१२६२	अद्रीदिन्द्र प्रस्थितेमा	२७६२	अध्वर्यवः कर्तना	११५८
अग्निर्न शुष्कं	१८६५	अद्या चिन्नु चित्	१९७०	अध्वर्यवः पयसोध्वर्यधा	११५९
अग्निर्मूर्धा दिवः	२९३०	अद्याषा श्वःश्च इन्द्र	५६४	अध्वर्यवा तुहि विन्च	२०३
अग्नान्यासमन् भिषजा	२९५१	अद्या सुरीय यदि	३२९२	अध्वर्यवो भरतेन्द्राय	११५०
अच्छा कविं नृमणो	१४७५	अद्येदु प्राणीदम०	२५३७	अध्वर्यवो य उरणं	११५३
अच्छा च स्वैना नमसा	४१४	अत्रिणा ते मन्दिनः	२५२४	अध्वर्यवो य शतं	११५५
अच्छा म इंद्रं मतयः	२५५७	अद्रोव सत्यं तव	१२९०	अध्वर्यवो य शतमा	११५६
अच्छा यो गन्ता नाधमान	१६०७	अधः पश्यस्व मोपरि	२२८	अध्वर्यवो य स्वभं	११५४
अच्छिन्नस्य ते देव	२९२४	अध क्रवा मघवन्	१६७१	अध्वर्यवो यस्तरः	११५७
अजा अन्यस्य बह्वयो	३३३२	अध गमन्तोशना पृच्छते	२४७१	अध्वर्यवो यो अपो	११५१
अजातशत्रुमजरा	१७२७	अध उमो अध वा दिवो	१०४	अध्वर्यवो यो दिव्यस्य	११६०
अजा वृत इन्द्र	१०७१	अध ते विश्वमनु	८१२	अध्वर्यवो यो हमीकं	११५२
अजिरासो हरयो	४९२	अध स्वष्टा ते मह	१८५०	अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं	२२७९
अजैषं त्वा संक्लिषितम्	२९०९	अध त्वा विश्वे पुर	१८४८	अध्वर्यो अत्रिभिः	२९५४
अतः समुद्रमुद्धतश्चिकित्वाँ	२७१	अध त्विषीमाँ	१२२४	अध्वर्यो ब्रावया त्वं	२३९
अतश्चिदिन्द्र ण उपा	२४०६	अध यौक्लित् ते	१८४९	अध्वर्यो वीर प्र	२०४८
अति वायो ससतो याहि	३२१८	अध द्रव्यो अंशुमस्या	३३२६	अनर्शरातिं वसुदामुप	२३७९
अतिविद्धा दिधुरेणा	२३४६	अध प्रियसिषिराय	१८३७	अनवस्ते रथमन्वाय	१६९६
अतिष्ठन्तीनामनिवेशानानां	७२४	अध चकारये गणे	१८३९	अनाष्टहानि ष्वितो	२७९५
अतीदु शक्र भोहत	२३१६	अध श्रुतं कवचं	२१३०	अनाजुदो वृषभो	१२२०

अनुकामं तर्पयेथाम्	३१३६	अपाद्यस्यान्धसो मदाय	११९९	अभि सिध्मो अजिगादस्य	७४२
अनु कृष्णे वसुधित्ती	१२७६	अपिबत् कहुवः सुतम्	४६८	अभि स्वरन्तु ये तव	३४८
अनु ते दायि मह इन्द्रियाय	१९४५	अपि वृश्च पुराणवद्	३१०६	अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य	७६४
अनु ते शुभं तुरधन्तमीवतु	२३८१	अपूर्व्यां पुरुतमान्यस्मै	२०११	अभि हि सत्य सोमपा	२३६८
अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्तु	२९७०	अपेन्द्र त्रिपतो मनो	२८१८	अभी३दमेकमेको	२५८५
अनुत्तमा ते मघवन्	३२५८	अपो महीरभिवास्तेः	२७११	अभी न आ ववुस्त्व	१६३३
अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणं	६३८	अपो यदाद्रिं पुरुहूतं	१४७४	अभी मयन्वन्स्वभिष्टिमूतयो	७४६
अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं	२८०	अपो वृत्रं वज्रिवांसं	१४७३	अभी षतस्तदा भरेन्द्र	२२५८
अनु त्वाहिमे अध देव	१८६९	अपोषा अनसः सरत्	३३४३	अभी पु णः सखीनाम्	१६३२
अनु चावापृथिवी	१८७०	अप्तूर्ये मरुत आपिरेषो	१४४२	अभी पु णस्त्वं रयि	२४५०
अनु द्वा जहिता नयो	१६२४	अप्रक्षितं वसु विभर्षिं	८०४	अभूरु वीर गिर्वणो	२०७२
अनु प्रत्नस्यौकस प्रिय०	२३२०	अप्रामिसत्य मघवन्	५५१	अभूरुको रयिपते	२००६
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे	७०७	अप्सु धूतस्य हरिवः	२७०४	अभूर्वौक्षीर्यु१ आयुरानइ	२४९७
अनु प्र येजे जन आजो	२०३२	अभि कण्वा अनूपत	२७६	अभ्यर्चं नभाकवद्	३१०४
अनु यदीं मरुतो	१६६८	अभि क्रवेन्द्र भूरध	२१६६	अभ्रातृयो अना त्वम्	४२१
अनुव्रताय रन्धयन्	७५३	अभिख्या नो मघवन्	२७४४	अमन्दन्मा मरुतः	३२६०
अनुस्पष्टो भवत्येषो	२८२७	अभि गन्धर्वमत्तुणद्	६४४	अमन्महीदनाशवो	१००
अनु स्वधामक्षरन्नापो	७४०	अभि गोत्राणि सहसा	२६९७	अमाजूरिच पित्रोः	११८७
अनेहसं वो हवमानमूतये	४९८	अभि जैत्रीरसचन्त	१२६३	अमीषां चित्तं प्रति	२९३३
अनेहसं प्रतरणं	४८८	अभि तष्टेव दीधया	१३४५	अभ्यक् सा त इन्द्रः	१०४५
अन्धा अभिप्रा भवता	३००१	अभि त्यं मेषं पुरुहूतम्	७४५	अयं यज्ञो देवया	१०९४
अन्यदद्य कर्षरमन्यदु	१९३२	अभि त्वा गोतमा गिरा	१६५३	अयं यो वज्रः पुरुधा	२५११
अन्यव्रतममनुषम्	२३३१	अभि त्वा पाजो रक्षसो	१९०३	अयं रोचयदरुचो	१९८६
अन्वपां खान्यतृन्तम्	३१७४	अभि त्वा पूर्वपीतय	१६२	अयं वां परि विच्यते	३३१८
अन्वह मासा अन्विह्नानि	२६७४	अभि त्वा वृषभा सुते	४६४	अयं वृतश्चातयते	१४९६
अन्वेको वदति यद्	११३९	अभि त्वा शूर नोनुमो	२२५६	अयं शृण्वे अध	१४९७
अप प्राच इन्द्र विश्वाँ	२७७३	अभि छां महिना भुवम्	२८५७	अयं सहस्रमृषिभिः	१५९
अप योरिन्द्रः पापज	२७१६	अभि द्युन्नानि वनिन	१३७०	अयं सोम इन्द्र तुभ्यं	२२१३
अपस्त्रिदेव विश्वो	१२७५	अभि प्र गोपतिं गिरा	२३०७	अयं सोमश्चमू सुतो	३२३०
अपह्यं ग्रामं वहमानम्	२५०९	अभि प्र दद्गुर्जनयो	१५२६	अयं ह येन वा इदं	६३१
अपाः सोममस्तमिन्द्र	१४५८	अभि प्र भर घृषता	२३८७	अयं हि ते अमर्त्य	२७९८
अपादहस्तो अपृतन्यद्	७२१	अभि प्र वः सुराधसम्	४८५	अयं चक्रमिषणत्	१५०१
अपादित उदु	१९७८	अभिभुवेऽभिभङ्गाय	१२१८	अयं त इन्द्र सोमो	४०४
अपादिन्द्रो अपादग्निः	२३१४	अभि वङ्गय ऊतये	३०२	अयं त एमि तन्वा	९९१
अपादु शिऽयन्धसः	२४००	अभि वो वीरमन्धसो	१८३०	अयं ते अस्तु हर्यतः	१३९९
अपाधमदभिवास्तीः	२३८५	अभि व्रजं न तरिन्वे	२६७	अयं ते मानुषे जने	५९८
अपामतिष्ठदरुणङ्करं	७९५	अभिऽलरया सिदद्विव.	१०३५	अयं ते शर्यणावति	५९९
अपामूर्मिर्मदञ्जिव	३६३	अभिष्टने ते अद्रिवो	९१३	अयं ते स्तोमो अद्रियो	८४
अपां केनेन नमुचेः	३६६	अभिष्टये सदावृधं	२२९५	अयं दशस्यन्नयैभिरस्य	२६८९

अयं दीर्घाय चक्षसे	३५०	अर्चा शक्राय शाकिने	७८७	अवासृजन्त जिन्नयो	१५२३
अयं देवः सहसा	२०५७	अर्णासि चित् पप्रथाना	२१२३	अवितासि सुन्वतो	१७६९
अयं द्यावापृथिवी	२०५९	अर्धं वीरस्य श्रुतपाम्	२१३४	अविदद् दक्षं	२०४२
अयं द्योतयदद्युतो	१९८५	अभर्को न कुमारको	२३१७	अविन्दद् दिवो	१०१३
अयमकृणोदुषसः	२०५८	अर्यो वा गिरो अभ्यर्च	२८११	अविप्रे चिद् वयो	२०६१
अयमस्मासु काव्यः	२७९९	अर्वन्तो न श्रवसो	३२३५; ३२४०	अविप्रो वा यदविघद्विप्रो	५५६
अयमस्मि जरितः	९९४	अर्वाप्रथं विश्ववारं	१९७३	अविर्न मेषो नसि	२९४८
अयमिन्द्र वृषाकपिः	२६५७	अर्वाडेहि सोमकामं	८५५	अवीरामिव मामयं	२६४८
अयमिन्द्रो मरुत्सखा	६२९	अर्वाङ् नरा दैव्येनावसा	३१७९	अवीवृधन्त गोतमा	१६५६
अयमु ते समतसि	७०२	अर्वाचीनं सु ते	१३३५	अवोचाम महते	३२०६
अयमु त्वा विचर्षणे	४००	अर्वाचीनो वसो	१६५८	अश्रवं हि भूरिदावत्तरा	३०२२
अयमु वां पुरुतमो	३१४४	अर्वाञ्चं त्वा पुरुहूत	२०९; २८७	अश्वदियायेति	२६३९
अयमुशानः पर्यद्रिसुखा	१९८४	अर्वाञ्चं त्वा सुखे	१३८१	अश्वान्तो गव्यन्तो	२८२८
अयमेमि विचाकशद्	२६५८	अर्वावतो न आ गहि	१३७१	अश्वान्वि प्रथमो	९३१
अयं पन्था अनुवित्तः	१५०९	अर्वावतो न आ गद्यथो	१३४४	अश्वान्वन्तं रथिनं	२८४६
अया धिया च गव्यया	२४४६	अलानृणो वरु	१२४७	अश्विना गोभिरिन्द्रियं	२९५७
अयाम धीवतो धियो	२४०७	अवंशे द्यामस्तभायद्	११६३	अश्विना तेजसा	२९६२
अयामि घोष इन्द्र	२१८१	अवक्रक्षिणं वृषभं	८८	अश्विना पिबतां	२९६३
अया वाजं देवहितं	१८५५	अव क्षिप दिवो	१२३१	अश्विभ्यां चक्षुरमृतं	२९४७
अया ह त्वं मायया	१९१२	अव चष्ट ऋचीषमो	५७१	अश्वी रथी सुरूप इत्	२३७
अयुजो असमो नृभिरकः	५६७	अव रमना भरते	८४९	अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र	७२६
अयुजन्त इन्द्र	१०४४	अव त्या बृहतीरिषो	२७८७	अश्व्यस्य रमना	३१५५
अयुद्ध इद् युधा	४४५	अव त्वे इन्द्र प्रवतो	२११२	अषाङ्मुमं पृतनासु	२३२४
अयुद्धसेनो विभवा	२७९६	अवद्यमिव मन्यमाना	१५१३	असत् सु मे जरितः	२४९१
अयुयुत्सन्नवद्यस्य	७३५	अव द्रप्सो अंशुमती	२३५७	असम क्षत्रमसमा	७९३
अयोद्धेव दुर्मद	७२०	अव नो वृजिना	२७२१	असाम यथा सुवखाय	१०६४
अरं हि ष्मा सुतेपु	२४२२	अव यत् त्वं शतक्रतविन्द्र	२७८८	असावि देवं गोक्रजीकं	२१६१
अरं कृण्वन्तु वेदि	१०५४	अवर्त्या शुन आन्प्राणि	१५२१	असावि सोम इन्द्र	९३७
अरं क्षयाय नो महे	३८१	अवर्मह इन्द्र दादहि	१०३९	असावि सोमः पुरुहूत	२७०३
अरं त इन्द्र कुक्षये	२४२०	अवसृष्टा परा पत	२९३४	असिक्न्यां यजमानो	१५०२
अरं त इन्द्र श्रवसे	२९७७	अव स्य दुर्हणायतो	२७८६	असि हि वीर सेन्यो	९१७
अरमयः सरपस	११४८	अव स्य शूराध्वनो	१४६८	असुन्वन्तं समं	१०८८
अरमश्वाय गायति	२४२१	अव स्वरति गर्गरो	२३१२	असुन्वामिन्द्र संसदं	३६८
अरं म वृक्षयाग्ने	३३४९	अव स्वेदा इवाभितो	२७८९	असूत पूर्वो वृषभो	१३४९
अरोरवीद् वृषणो	१११०	अवाचचक्षं पदमस्य	१६८३	असौ च या न	१७८८
अर्चत प्रार्थत प्रियमेधासो	२३११	अवा तु कं ज्यायान्	२६०५	असौ य एषि वीरको	१७८४
अर्चद् वृषा वृषभिः	१०५७	अवा नो वाजयुं रथं	६६६	असृममिन्द्र ते	५१
अर्चन्त्यर्कं मरुतः	२९८८	अवासां मघवअहि	१०३६	अस्तावि मम्म पूर्यं	५२३
अर्चा दिवे बृहते	७८८	अवासृजः प्रस्वः	२७९३	अस्तेषु सु प्रतरं	२५४६

अस्मभ्यं सु स्वमिन्द्र	२७८४	अस्मे हन्द्रावृहस्पती	३३२०	अहं तष्टेव वन्पुरं	२८५४
अस्मभ्यं तद वसो	११४९; ११६१	अस्मे हन्द्रावरुणा विश्वारं	३१९५	अहं दां गुणते	२५९०
अस्मभ्यं तो अपा	१६४२	अस्मे हन्द्रो वरुणो	३१८१, ३१९१	अहञ्जहि परिक्षायानम्	१२९२
अस्माअस्मा ह्दन्धसो	२००१	अस्मे तदिन्द्रावरुणा	३१४५	अहञ्जहि पर्वते	७१६
अस्मा इत् काव्यं	१७६४	अस्मे ता त हन्द्र	२४७८	अहञ्जिन्द्रो अदददग्निः	१६०१
अस्मा इदु मादिचद्	८६३	अस्मं धेहि श्रवो वृहद्	५५	अहन् वृत्रं वृत्रतर	७१९
अस्मा इदु त्यदनु	८७०	अस्मे प्र यन्धि मघवन्	१३३२	अहन् वृत्रमृचीपम	२०५
अस्मा इदु त्यमुपम	८५८	अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि	१५६३	अहमत्क कवये	२५९२
अस्मा इदु स्वष्टा	८६१	अस्मै भीमाय नमसा	८१३	अहमस्मि महामहो	२८६१
अस्मा इदु प्र तवसे	८५६	अस्मै वयं यद	१२२२	अहमिच्छि पितृप्परि	२५२
अस्मा इदु प्र भरा	८६७	अस्य त्रितः क्रतुना	२४६३	अहमिन्द्रो न परा	२५८३
अस्मा इदु प्रथ इव	८५७	अस्य पिब क्षुमत	२७५६	अहमिन्द्रो रोधो	२५८०
अस्मा इदु ससिमिव	८६०	अस्य पिब यस्य	१९८९	अहमेतं गव्ययमश्न्य	२५८२
अस्मा इदु स्तोम	८५९	अस्य पीत्वा मदानां	२४०२	अहमेताञ्जाश्रमतो	२५८४
अस्मा उपास आतिरन्त	२३४५	अस्य पीत्वा शतक्रानां	११	अहं पितव वेतस्म	२५९३
अस्मा एतद् दिव्यार्चैव	२०२४	अस्य मदे पुरु	२०४९	अह पुरो मन्द्रमानो	१५९८
अस्मा एतन्महाङ्गृष	२०२५	अस्य मन्दानो मध्वो	१२००	अहं प्रनेन मज्जता	२५३
अस्माक व हन्द्रम्	१००३	अस्य वृष्णो व्योदन	५८६	अहं भुवं वसुतः	२५७९
अस्माकं शिमिणीनां	७०९	अस्य श्रवो नद्यः	८२९	अहं भूमिमद्दामार्थाय	१५९७
अस्माकं सु रथं पुर	४५१	अस्य सुवानस्य	११२०	अहं मनुर्भवं सूर्यश्चाहं०	१५९६
अस्माकं त्वा मतीनाम्	१६५९	अस्य स्तोमैभिरौशिज	२६२०	अहस्ता यदपदी	२४७९
अस्माकं त्वा सुतो	२८४	अस्येदिन्द्रो वावृधे	१६३	अहा यदिन्द्र सुदिना	२२२०
अस्माकं पृष्ण्या	१६४३	अस्येदु त्वेषसा	८६६	अहितेन चिदर्वता	५५८
अस्माकमप्र पितर	३१५८	अस्येदु प्र वृहि	८६८	अहेकता मनसा श्रुष्टि	३३५१
अस्माकमयान्तम	२२४	अस्येदु भिया गिरयश्च	८६९	अहेकमान उप याहि	१९९३
अस्माकमित्पु शृणुहि	१५६४	अस्येदु मातु सवनेषु	८६२	अहेर्यातार कमपश्य	७०८
अस्माकमिन्द्रः समृतेपु	२७०१	अस्येदेव प्र रिचि	८६४	आकरे वसोर्जरिता	१४३६
अस्माकमिन्द्र भूतु	२०८९	अस्येदेव शवसा	८६५	आ क्षोदो महि वृतं	१८५२
अस्माकमिन्द्र दुष्टा	१७४२	अस्येन्द्र कुमारस्य	२८७५	आगच्छत आगतस्य	२८९९
अस्माकमिन्द्रावरुणा	३१८०	अस्त्रायद् दभीतये	१६२६	आ घ त्वावान् रमना	७१२
अस्माकमिन्द्रेहि	१७४३	अहं रन्ध्रयं मृगयं	२५९४	आ घा गमद्यदि श्रवत्	७०६
अस्माकमुत्तमं कृधि	१६४४	अहं सस स्रवतो	२५९८	आ घा ये अग्निमिन्धते	४४३
अस्माकेभि सस्वभि.	१२३४	अहं ससहा नहुपो	२५९७	आ च त्वामेता वृषणा	१३९४
अस्मादहं तविषा०	३२६६	अहं स यो नववास्त्रं	२५९५	आ चन त्वा चिकिरिमासो	१७८५
अस्माँ अवन्तु ते	१६३९	अहं सूर्यस्य परि	२५९६	आ चर्षणिप्रा वृषभो	१०९१
अस्माँ अविद्धि विश्वेन्द्र	१६४१	अहं हि ते हरिवो	५३२	आ जनाप वृङ्गणे	१९१४
अस्माँ इहा वृणीष्व	१६४०	अहं गुङ्गुभ्यो अतिथिरवं	२५८६	आजितुरं सत्पति	५३०
अस्मान्सु तत्र चोदय	५३	अहं च त्वं च वृत्रहन्	५७६	आजिपते नृपते	५३६
अस्मिन् न ह्द्रे पृथ्वीतौ	२५४१	अहं चन तत् सूरिभि	१९५३	आ त ह्द्रे महिमानं	६०४
अस्मै ह्द्रे सचा सुते	९८३	अहं तदासु धारयं	२५९९		

आ त एता वचोयुजा	४८१	आ स्वा वहन्तु हरयो	७८	आ नो दिव आ पृथिव्या	२१८८
आ तत् त इन्द्रायवः	२६३७	आ स्वा विशन्तु सुतास	२८६६	आ नो देव शवसा	२२१८
आतन्वाना आयच्छतो	२८९१	आ स्वा विशन्त्वाशवः	२०	आ नो बृहन्ता	३१५६
आतिष्ठन्त परि त्रिम्भे	१३४८	आ स्वा विशस्विन्दवः	२४१८	आ नो भर दक्षिणेनाऽभि	६७५
आ तिष्ठ रथ वृषण	१०९३	आ स्वा शुक्रा असुच्यवुः	२३३७	आ नो भर भगमिन्द्र	१२५६
आ तिष्ठ वृत्रहन्	९३९	आ स्वा सहस्रमा .	११०	आ नो भर वृषणं	१८७८
आ तू गहि प्र तु	३३४	आ स्वा सुतास इन्द्रो	४८७	आ नो भर व्यञ्जनं	६५२
आ तू न इंद्र कौशिक	६८	आ स्वा हरयो वृषणो	२०५४	आ नो यज्ञं नमोवृष्ट	१३९३
आ तू न इंद्र क्षुमन्त	६७०	आ स्वा होता मनुहितो	४३२	आ नो याहि परावतो	२७८
आ तू न इन्द्रमश्रग	१३७३	आ त्वेता नि षीदत	१४	आ नो याहि महेमते	४३१
आ तू न इन्द्र वृत्रहन्	१६४५	आदङ्गिराः प्रथमं	९३४	आ नो याहि सुतावतो	३९७
आ तू भर माकिरेतन्	१३३१	आ दस्युष्वा मनसा	१४७६	आ नो याष्पपश्रुत्युक्थेपु	४३५
आ तू सुशिप्र दपते	२३१८	आदानेन संदानेन	३१२८	आ नो विश्वभिरूर्तभिः	२१८९
आ तू षिञ्ज कण्वमंतं	१३७	आदित् ने अस्य	१०२५	आ नो विश्वासु हव्य	२३९१
आ ते दक्षं वि रोचना	२४५५	आदित् प्रत्नस्य रेतसो	२७२	आ नो विश्वेषां	५२७
आ ते दधामीद्वियम्	२४५६	आदित्यानां वसूनां	२५८९	आन्त्राणि स्थालीर्मधु	२९४४
आ ते मह इन्द्रोऽयुम	२६९२	आदित् साप्तस्य	५४३	आ पक्यासो भलानसो	२१२५
आ ते वृषन् वृषणो	२०५५	आदिद्ध नेम इद्रियं	१५८१	आ प्रमाथ महिना	२३२६
आ तेऽवो वरेण्य	१७३८	आदिन्द्र सत्रा तविषी	२७४९	आ प्रौ पथिचं रजो	९२०
आ ते शुष्मो वृषभ	१८७९	आदीं शवस्यज्जवीट	६४१	आपश्चित् पिप्यु स्तयां	२१८३
आ ते सपर्यं जवसे	१४३०	आदु मे निवरो	२४४४	आपश्चिद्धि स्वयशसः	३१९९
आ ते मिञ्जाभि कुक्षयोरनु	३९८	आदु नु ते अनुकृतु	५८२	आपान्तमन्युः	३२७६
आ ते हन् हग्विः	१७४५	आदु रोदसी वितर	१६७०	आपुर्गो अस्य कलशः	१२९६
आत्मनुपन्थेन	२९५०	आ द्वाभ्यां हरिभ्यामिन्द्र	११९३	आपो न देवीरुप	९३२
आत्मा पितुस्तनूर्वास	१७९	आ द्विबर्हा अमिनो	२७५८	आपो न लिधुमभि	२५६३
आ त्वश्व सश्वस्तुति	१०२	आध्रैग चित् तद्रेक	२१३५	आ प्र द्रव परावतो	६७९
आ त्वश्व सबर्दुषां	९६	आ न इन्द्र पृक्षसे	२४७२	आ प्र द्रव हरिवो	१६९४
आ त्वशत्रवा गहि	६८२	आ न इन्द्र महीमिषं	२६५	आ बुन्द्रं वृत्रहा	४४६
आ स्वा कण्वा इहावसं	४२८	आ न इन्द्रावृहस्पती	३३१९	आ भरतं शिक्षतं	३०२७
आ स्वा गिरो रथीरिव	२३३६	आ न इन्द्रो दूरादा	१५३३	आभिः स्पृधो मिथती.	१९३९
आ स्वा गीर्भर्महामुरु	६०३	आ न इन्द्रो हरिभिः	१५३४	आ मध्वो अस्मा	२५२१
आ स्वा गोभिरिव	१७९५	आ नः सहस्रशो	४३९	आ मन्द्रैरिन्द्र	१४०४
आ स्वा प्राया वदञ्जिह	४२६	आ नस्तुज रथि	१४०७	आमासु पकर्मरय	२३९०
आ स्वा वृद्धतो हरयो	१३९६	आ नस्ते गन्तु	१०८०	आमूरज प्रत्यावर्तयेमा. २९६७; ३३६२	
आ स्वा ब्रह्मयुजा	३९५	आ नः स्तुत उप	१६०४	आ य सोमेन जटरम्	१७२८
आ स्वा मदच्युता	४३३	आ नः स्तोममुप	४८९	आयं जना अभिचक्षे	१७०३
आ स्वा रथ यथोतये	२२९१	आ निरेकमुत	१७९३	आ यत् पतन्त्येन्यः	२३१३
आ स्वा रथे हिरण्यये	१११	आ नो गन्थान्प्रदश्या	४३८	आ यदिन्द्रश्च दद्वहे	४४०
आ स्वा रम्भं न जिन्नयो	४६२	आ नो गन्थेभिः	३०६९	आ यद् दुवः शतक्रतवा	७१३
		आ नो गोप्रा दर्दहि	१२५८	आ यद् दुवस्याद्	३२६३

आ यद्धरी इन्द्र	८८६	आ संयतमिन्द्र	१९१६	इन्द्र ऋभुभिर्वाजिभि	३३४३
आ यद्वज्रं बाह्वोरिन्द्र	२३४९	आ सत्यो यातु मघवाँ	१४६७	इन्द्र ऋभुमान् वाजवान्	३३४२
आयन्तारं महि स्थिरं	१९३	आसन्नाणासः शवसानम्	१९७५	इन्द्र ओषधीरसना	१३६०
आ यन्मा वेना	९९५	आ सहस्रं पथिभिर्दिन्द्र	१८६६	इन्द्रं वयं महाधन	३२
आ यं पृणन्ति दिवि	७६३	आसु षमा णो मघवन्नित्त्र	२०५३	इन्द्र वयमनूपाध	२९१५
आ यास्मिन् हस्ते नयाँ	१९६३	आ स्म/ रथ वृषपाणेषु	७५६	इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर	३३६
आ यस्य ते महिमान	१८१९	आहं सरस्वतीवत्	३१००	इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव	२०३४
आ याव्दिन्द्र स्वपतिः	२५६८	आ हरयः ससृजिरे	२३०८	इन्द्रं विश्वा अत्रीवृधन्	७०
आ याव्दिन्द्रो दिव आ	१५४६	आहार्यं त्वाविदं त्वा	३११७	इन्द्रं वृत्राय हन्तवे	३०९; १३३८
आ याव्दिन्द्रोऽवम	१५४४	आ हि षमा याति	१६०५	इन्द्र वो नरः सखपाय	१९६२
आ याहि कृणवाम	५६९	इच्छन्ति त्वा सोम्यामः	१२३८	इन्द्र वो विश्वनस्परि	३७
आ याहि पर्वतेभ्यः	४३७	इच्छन्ति देवा सुमन्त्रं	१३३	इन्द्र गोमस्य पीतये	१३८५
आ याहि पूर्वैरिति	१३९२	इच्छन्नश्वस्य यच्छिराः	९५०	इन्द्रं स्तवा नूतमं थस्य	२६६३
आ याहि शश्वदुगता	१९९१	इत ऊनी वो अजर	२३८२	इन्द्रः किल श्रुत्या अस्य	२७२७
आ याहि सुवुमाहि	३९४	इति चिद्धि त्वा धना	२७६७	इन्द्रः पूर्वैर्दामिरात्	१२०१
आ याहीम इंदवो	४११	इति वा इति मे मनो	२८५०	इन्द्रः स दामने	२४३७
आ याह्यद्विभिः सुत	१७६५	इतो वा सातिमीमहे	२७	इन्द्रः समस्तु यजमानमार्ग	१०१८
आ याह्यर्यं आ परि	४३४	इथा धीवन्नमद्रिव	१५५	इन्द्रः सहस्रदाज्ञां	३१३८
आ याह्यर्वाडुव	१३९१	इथा हि सोम इ-मदे	९००	इन्द्रः सुतेषु सोमेषु	३२१
आराच्छत्रमप वाधस्त	२५५२	इदं वसो सुतमन्धः	११६	इन्द्रः सुत्रामा स्वत्रो	२११०; २७७६
आ रोदसी अपृणानोत	२६१६	इदं वामास्ये हविः	३३१७	इन्द्रः सुत्रामा हृदयेत	२९४३
आर्चसन्न मरुतः	७७४	इदं वां मदिंरं मधु	३०९३	इन्द्रः सुशिपो मघवा	१२४०
आ व इन्द्रं क्रिदि	६९९	इदं सु मे जरितरा	२५२५	इन्द्रः सूर्यस्य रश्मिभिः	२९६
आ वः कुलमिन्द्र	७४३	इद हविर्मघवन्	२७६१	इन्द्र स्पळन वृत्रहा	५६२
आ व. शमं वृषभं	७४४	इदं ह्यन्वोजसा सुत	१४४३	इन्द्रः स्वर्षा जनयन्	१३०४
आवदिन्द्रं यमुना	२१३७	इदं ते पात्रं सनवित्त	२७४०	इन्द्रः स्वाहा पिबतु	१४२९
आ वां रथो नियुत्वात्	३२१५	इदं ते सोम्यं मधु	६०८	इन्द्रं क्रतुं न-आ भर	२२६०
आ वां राजानावध्वरे	३१९२	इदं त्यत् पात्रम्	२०५१	इन्द्रं क्रतुधिद सुत	१३६५
आ वां सहस्र हरय	३२२२	इदं नमो वृषभाय	७५९	इन्द्रं क्षत्रमभि वाममोजो	२८४१
आ वां धियो ववृःयुः	३२१६	इदमादानमकरं	३१२९	इन्द्र क्षत्रापमातिषु	२६२२
आ वामश्वसो अभिमातिषाह	३३०९	इदा हि ते वेविषतः	१९०१	इन्द्र गोमन्निडा याहि	२९६४
आ विशत्या त्रिशता	११९४	इनोत पृच्छ जनिमा	१३४६	इन्द्रं गृणीष उ स्तुये	६०५
आ वृत्रहणा वृत्रहभिः	३०५८	इन्द्र आमां नेता वृःस्पतिः	२६९८	इन्द्रं कामा वसूयन्तो	१४८१
आ वृषस्व पुरुवसो	५५०	इन्द्र आशाभ्यस्परि	१२३७	इन्द्र जठरं नव्य	२९९८
आ वृषस्व महामह	१७९९	इन्द्र इत् सोमपा	११९	इन्द्रं जठरं नद्यो	२८६४
आत्रो यस्य द्विवर्हसो	१०८९	इन्द्र इद्वयोः सचा	२९	इन्द्रं जहि पुमांसं वातुधान	३३०१
आशीत्या नवम्या	११९५	इन्द्र इक्का महानां	२३९९	इन्द्रं जामय उत	१९४०
आहुः शिशानो वृषभो	२६९२	इन्द्र इषे ददातुं न	३३४४	इन्द्र जीव सूर्यं जीव	३३६३
आभृत्कणं श्रुधी हव	६६	इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिह्यो	२९७९	इन्द्रं जुषस्व प्र वहा	२८६३; २९९७
		इन्द्र ऋभुभिर्वाजिभिः	३३४१		

इंद्र ज्येष्ठ न भा	२०९४	इन्द्र यथा ह्यस्ति	१७९८	इंद्राग्नी अन्यथमानाम्	३११८
इन्द्र ज्येष्ठा मरुद्गणा	३२४८	इन्द्र यस्ते नवीयसीं	२३४०	इन्द्राग्नी आ गतं	३०३०
इन्द्र तुभ्यमिदं द्विवो	९०६	इन्द्र वाजेषु नोऽव	३१	इन्द्राग्नी आ हि तन्वते	३०५२
इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन्	२०४५	इन्द्रवायू अयं	३२२५	इन्द्राग्नी उक्थवाहसा	३०५५
इन्द्र त्रिधातु शरण	२०९८	इन्द्रवायू इमे सुता	३२१०	इन्द्राग्नी जरितुः	३०३१
इन्द्र त्वयवितेदमीत्या	३४६	इन्द्रवायू उभाविह	३२४४	इन्द्राग्नी तपन्ति	३०५३
इन्द्र त्वा वृषभ वय	१३६४	इन्द्रवायू मनोजुवा	३२१४	इन्द्राग्नी तविषाणि	३०३७
इन्द्र त्वोतास आ वय	४०	इन्द्रवायू सुसन्दशा	३२४३	इन्द्राग्नी नवतिं	३०३५
इन्द्र दह्य यामकोशा	१२५२	इन्द्र शविष्ठ सत्पते	३३२	इन्द्राग्नी यमवथ	३०४०
इन्द्र दह्यस्व पूरमि	६६७	इन्द्र शुद्धो न भा	२३४३	इन्द्राग्नी युवं सु न	३१०१
इन्द्र नेत्रीय पृदिहि	५२९	इन्द्र शुद्धो हि नो	२३४४	इन्द्राग्नी युवामिमे	३०६२
इन्द्रं तं शुम्भ पुरुडन्	२३२२	इन्द्रश्च मृळयाति नो	१२३६	इन्द्राग्नी युवारपि	३०५४
इन्द्र नरो नेमधिता	२२०३	इन्द्रश्च वायवेषां	३२२७, ३२३१	इन्द्राग्नी रोचना	३०३८
इन्द्र पिब तुभ्यं	१९८८	इन्द्रश्च रुम्नाद् वरुणश्च	३२०९	इन्द्राग्नी शतदाज्ञि	३०३९
इन्द्र पिब प्रतिकाम	२७३५	इन्द्रश्च सोमं पिबत	३३२३, ३३२९	इन्द्राग्नी दृणुतं	३०७०
इन्द्र पिब वृषभ्रतस्य	१३९७	इन्द्रश्चिद् घा तदन्नवीत्	२२६	इन्द्राग्नीमासु नारिषु	२६५०
इन्द्र पिब म्वधया	१३२१	इन्द्र भ्रुधि सु मे	६८४	इन्द्रा नु पृषणा वयं	३३३०
इन्द्र प्र णः पुरण्तेव	२१०५	इन्द्र भ्रष्टानि द्रविणानि	१२२२	इन्द्रापर्वता बृहता	३३५६
इन्द्र प्र णो धितायानं	१३६६	इन्द्र सोम सोमपते	१२८२	इन्द्रावृहस्पती वयं	३३२१
इन्द्र प्र णो रथमव	६६४	इन्द्र सोममिम पिब	२४८८	इन्द्राय गात्र आशिरं	२३०९
इन्द्र प्रेही पुरस् वं	४०२	इन्द्र सोमाः सुता इमे	१३६७, १३८६	इन्द्राय गिरो अनिशित	२६६६
इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा	१६८१	इन्द्रस्तुजो बर्हणा	१३०५	इन्द्राय नूनमर्चंतोकथानि	९४१
इन्द्रमग्नि कविच्छदा	३०३२	इन्द्रस्तुराषाणिमत्रो	२८६५, २९९९	इन्द्राय मद्रने सुतं	२४१५
इन्द्र मरुत्व इह	१४४०	इन्द्रस्नातो न वृत्रहा	२२१६	इन्द्राय साम गायत	२३६४
इन्द्रमिथा गिरो	१३८४	इन्द्र स्थातर्हरीणां	१८०६	इन्द्राय सु मद्रिन्तमं	१०५
इन्द्रमित् केशिना	३६५	इन्द्रस्य कर्म सुकृता	१२८९	इन्द्राय सोमाः प्रदिवो	१३२४
इन्द्रमिद्राथिनो	२८	इन्द्रस्य तु वीर्याणि	७१५	इन्द्राय हि घौरसरो	१०२१
इन्द्रमिद् देवतातय	१६०	इन्द्रस्य बाहू स्थविरी	२९१४, ३०००	इन्द्रा याहि चित्रभानो	१
इन्द्रमिद्धरी वहतो	९३८	इन्द्रस्य मन्महे शश्वद्रिद्	२८६७	इन्द्रा याहि तूतुजान	३
इन्द्रमिद् विमहीनां	२८६	इन्द्रस्य रूपमृषभो	२९४९	इन्द्रा याहि धियेषितो	२
इन्द्रमीशानमोजसाभि	७७	इन्द्रस्य वज्र आयसो	२३४७	इन्द्रा याहि वृत्रवन्	२९६५
इन्द्रमुक्थानि वावृधुः	२७७	इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य	२६९९	इन्द्रा युव वरुणा	३१४९, ३१५०
इन्द्र मृळ म्हा	२१०८	इन्द्रस्य स्यूरसोन्द्रस्य	२९२२	इन्द्रावरुण नू तु	३१४१
इन्द्रमेव धिषणा	१८७२	इन्द्रस्याङ्गिरसां	८७४	इन्द्रावरुणयोरहं	३१३४
इन्द्रं परेऽवरे मध्यमाम	१५९५	इन्द्रस्यात्र तविषीभ्यो	२७५०	इन्द्रावरुण वामहं	३१४०
इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना	६३३	इन्द्राकुत्सा वहमाना	३३५४	इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य	३१७१
इन्द्रं प्रातर्हवामह	८०	इन्द्रा को वां वरुणा	३१४६	इन्द्रावरुणा यदिमामि	३१७६
इन्द्रं मतिर्हृद् आ	१३५५	इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप	३०३६	इन्द्रावरुणा यदपिभ्यो	३२०७
इन्द्र य उ नु ते अस्ति	६७७	इन्द्राग्नी अपादियं	३०५१	इन्द्रावरुणा युवं	३१७२
		इन्द्राग्नी अवसा	३०८५		

इन्द्रावरुणा वधनाभि	३१८५	इन्द्रो ब्रह्मा बाह्यगात्	२९१७	इमा उ वां भृमयो	३१४३
इन्द्रावरुणावभ्या तपति	३१८६	इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र ऋषिरिन्द्रः	३८८	इमो सुपूर्वा धियं	२८५
इन्द्रावरुणा सुतपाविमं०	३१७७	इन्द्रो मदाय वावृधे	९१६	इमां गायप्रवर्तनिं	३०९६
इन्द्रावरुणा सौमनसं	३२०८	इन्द्रो मधु संभृतमुत्थियायां	१३६०	इमा जुषेधां सवना	३०९५
इन्द्राविष्णु तत् पनयायं	३३१०	इन्द्रो महां सिन्धुमाशया	११०९	इमा धाना घृतस्नुवो	७९
इन्द्राविष्णु दहिताः	३३१५	इन्द्रो मह्हा महतो	२७२८	इमानि त्रीणि त्रिष्टपा	१७८७
इन्द्राविष्णु पिबतं	३३१२	इन्द्रो मह्हा रोदसी	१६१	इमानि वां भागधेयाणि	३२०२
इन्द्राविष्णु मदपती	३३०८	इन्द्रो यज्वने षृणते	३३५२	इमां त इन्द्र सुष्टुतिं	३१८
इन्द्राविष्णु हविषा	३३११	इन्द्रो यातूनामभवत् २२८९; ३२२८	३२२८	इमां ते वियं प्रभरे	८२८
इन्द्रासोमा तपत्	३२७८	इन्द्रो यातोऽवसितस्य	७२९	इमां ते वाच वसूयंत	१०१६
इन्द्रासोमा दुष्कृतो	३२८०	इन्द्रो रथाय प्रवत्	१६९३	इमां म इन्द्र सुष्टुतिं	२७४
इन्द्रासोमा पक्कामामासु	३२७४	इन्द्रो राजा जगतः	२२०५	इमा ब्रह्म बृहद्विो	२७७१
इन्द्रासोमा परि वां	३२८३	इन्द्रो वाजस्य स्थविरस्य	१९७७	इमा ब्रह्म ब्रह्मवाह.	१३७५
इन्द्रासोमाः महि	३२७१	इन्द्रो विश्वस्य राजति २९७३; २९९२	२९९२	इमा ब्रह्मेन्द्र तुभ्यं	२८१२
इन्द्रासोमा युवमङ्ग	३२७५	इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः	१३०३	इमासु पु सोमसुतिमुप	३०७६
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो	३२८१	इन्द्रो वृत्रस्य तविषीं	९०९	इमामू पु प्रभृतिं	१३२३
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्परि	३२८२	इन्द्रो वृत्रस्य दोधत.	९०४	इमास्त इन्द्र पृथ्व्यां	२६१
इन्द्रासोमावहिमपः	३२७३	इन्द्रो हर्यतमर्जुनं	१४०३	इमे चित् तव मन्यवे	९१०
इन्द्रासोमा वासयथ	३२७२	इम इन्द्र मदाय ते	२९८१	इमे त इन्द्र ते वय	८१४
इन्द्रासोमा समधशंसं	३२७३	इम इन्द्राय सुन्दिरे	२२३८	इमे त इन्द्र सोमाः	२९७८
इन्द्रा इ यो वरुणा	३१४७	इम उ त्वा पुरुशाक	१९०५	इमे त इन्द्र सोमास्तीव्रा	१२५
इन्द्रा इ रत्नं वरुणा	३१४८	इम उ त्वा वि चक्षते	४५८	इमे भोजा अङ्गिरसो	१४५९
इन्द्रियाणि शतक्रुतो	१३४२	इमं यज्ञं स्वमस्माकमिन्द्र	१५३५	इमे वां सोमा आस्वा	३२१७
इन्द्रे अग्ना नमो	३०८२	इमं स्तोममभिष्टये	२९१	इमे सोमास इन्द्रवः	८३
इन्द्रेण मन्युना	२९१३	इम कामं मंदया १२५७; १४३२	१२५७; १४३२	इमे हि ते कारवो	१७३
इन्द्रेण रोचना दिवो	३६२	इमं जुषस्व गिर्वणः	२९२	इमे हि ते ब्रह्मकृाः	०२३६
इन्द्रेण स हि दक्षसे	३२४६	इमं नरं पर्वतास्तुभ्यमाप	१३१९	इयं वामस्य मन्मन	३०७२
इन्द्रेणैते तुःसवो	२१३३	इमं तु मायिनं हुव	६२८	इयं वां ब्रह्मगस्पते	३३६१
इन्द्रेमं प्रतरां नय	२९३५	इममिन्द्र गवाशिर	१३८८	इयं त इन्द्र गिर्वणो	३२४
इन्द्रे विश्वानि वीर्यां	५८३	इममिन्द्र सुनं पिब	९४०	इयं त ऋत्विद्यावती	२९७
इन्द्रेहि मत्स्यंधसो	४८	इमं विभर्मिं सुकृतं	२५७६	इयमिन्द्रं वरुणमष्ट ३१९६; ३२०१	३१९६; ३२०१
इन्द्रो अङ्ग महद्	१२३५	इमा अभि प्र णोलुमो	२४९	इयसु ते अनुष्टुतिः	५८५
इन्द्रो अश्यापि	७५८	इमा अस्य प्रतूनयः	३४९	इयमेषाममृतानां	२६३६
इन्द्रो अस्मां अरद्	१२२९	इमा इन्द्रं वरुण मे	३१५४	इयं मनीषा बृहती	३३१६
इन्द्रो जयाति न परा	२९०२	इमा उ त्वा पस्पृधानासो	२१२१	इवा मन्दस्त्रादु तेऽरं	६८१
इन्द्रोपिभिर्बहुलाभिर्नो	२९०५	इमा उ त्वा पुरुतमस्य	१८९७	इष्कर्तारमनिष्कृतं	२३८३
इन्द्रो वधीचो अस्थभिः	९४९	इमा उ त्वा पुरुवसो	१५८	इष्टा होत्रा असृक्षन्	२४५२
इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे	२६७१	इमा उ त्वा शतक्रतो	२०८४	इह त्या सधमाया युजानः	३४७
इन्द्रो दिवः प्रतिमानं	२७२९	इमा उ त्वा सुनेसुने	२०८७	इह त्या सधमाया हरी२०८; २४५३	३४७
इन्द्रो वीर्घाय चक्षम	३०				



इह त्वा गोपरीणसा	४६६	उत दासं कौलितरं	१६१९	उद्यत् सहः सहस	१६९५
इह प्रयाणमस्तु	३२२६	उत दासस्य वार्चिनः	१६२०	उद्यद्विद्रो महते	१७११
इह श्रुत इद्रो अस्मे	२४६७	उत न कर्णशोभना	६५३	उद्यद्ब्रह्मस्य विष्टपं	२३१०
इहि तिस्र परावत	२०१	उत न पितुमा भर	१८७	उद् वृह रक्षः	१२५४
इहेन्द्राग्नी उप ह्ये	३००२	उत न. सुमात्रो देवगोपाः	३१६७	उन्मा पीता अयंसत	२८५२
इक्षे रायः क्षयस्य	१५४०	उत न सुभगो	९	उप क्रमस्वा भर	६७६
इङ्गयंतीरपस्युव	२८१९	उत नूनं यदिन्द्रियं	१६२८	उप त्वा कर्मन्नुतये	४१०
इहे अग्नि स्वावम्	२९०८	उत नो गोमतस्कृधि	१८८	उप त्वा देवो अग्रभी०	३१३३
इयुरथं न न्यर्थं	२१२७	उत प्रहामतिदीव्या	२५५४	उप नः सवना	५
इयुर्गावो न यवसाद्	२१२८	उत ब्रह्मगया वयं	२७५	उप न सुतमा गहि सोम	१३८२
ईशानासो ये दधते	३२३४	उत ब्रह्माणो मस्तो	१६६९	उप नः सुतमा गहि हरिभि	८१
उक्थउक्थे सोम	२१९९	उत ब्रुवन्तु नो निदो	८	उप नो हरिभिः सुत	२४६०
उक्थं चन शस्यमानम्	१२९	उत माता महिषमन्ववेन	१५१९	उप प्रक्षे मधुमति	२९८७
उक्थमिन्द्राय शंस्यं	६२	उत शुष्णस्य धृष्णुया	१६१८	उप प्रेन कुशिकाश्चनय	१४६३
उक्थवाहसे विभ्रे	२३५५	उत मिन्धु विबाहय	१६१७	उप ब्रह्म वावाता	२४२
उक्थेभिवृत्रहन्तमा	३०८९	उत स्मा सद्य इत्	१६३७	उप ब्रह्माणि हरिवो	२७०८
उक्थेपिवन्तु शू	११०३	उत स्मा हि त्वामाहु	१६३६	उपम त्वा मबोनां	५२५
उक्ष्णो हि मे पञ्चदश	२६५३	उत स्वराज्ञे अदितिः	३०१	उप मा मतिरस्थित	२८५३
उग्रं युयुज्म पृथनासु	५५९	उताभये पुरुहूत	१२४२	उपयामगृहीतोऽसि	२९२३
उग्रं न वीरं नमसोप	४९०	उतो घा ते पुरूष्याः	२२१६	उप यो नमो नमसि	१५४८
उग्रबाहुर्ग्रहकृत्वा	५५७	उतो नो अस्य कस्य	१७५८	उपस्थाय मातरमञ्ज	१४२१
उग्रस्तुराषालभि	१४२२	उतो नो अस्या उषसो	१०२६	उपहो गिरीणां संगथे	२७०
उग्रा विघनिना मृश	३०६०	उतो पतिर्य उच्यते	३२९	उपाजिरा पुरुहूताय	१३१३
उग्रा सन्ता हवामह	३००५	उत् तिष्ठताव पश्यत	२८३६	उपेदमुपपर्चनं	३३५३
उग्रेष्विन्तु शू	१११७	उत् तिष्ठन्नोजसा सह	६३७	उपेदं धनदामप्रतीतं	७३१
उग्रो जज्ञे वीर्याय	२१५१	उत् ते शतान्मघवन्तुष	८३४	उपो नयस्व वृषणा	१३१४
उज्जातमिन्द्र ते शव	५७५	उत् त्वा मन्वन्तु स्तोमाः	५८९	उपो षु शृणुहि गिरो	९२५
उज्जायतां परशुज्योतिषा	२५६५	उत्पुस्तासूर्यं पति	२८७९	उपो ह यद् विदथ	३०७३
उत ऋतुभिर्ऋतुपाः	१४१६	उत् पूषणं युवामहे	३३३५	उपो हरीणां पति	१८०३
उत ते सुष्टुता हरी	३४३	उद्भ्राणीव स्तनयन्	२०४७	उभयं शृगवञ्च न	५४८
उत स्यदाश्वभ्यं	२६६	उदावता त्वक्षसा	१८६४	उभा जिरयथुर्न परा	३३१३
उत स्यं पुत्रमग्रवः	१६२१	उदिन्वस्य रिच्यते	२२४६	उभा देवा दित्रिस्पृशा	३२१३
उत स्या तुर्षशायद्	१६२२	उद् तु स्ये मधुमत्तमा	१७०	उभा वामिन्द्राग्नी	३०६८
उत स्या सद्य आर्या	१६२३	उद् तु ब्रह्माण्यैरत	२१८०	उभे चिदिद्र रोदसी	२१५४
उत स्ये मा ध्वन्यस्य	१७२६	उद् तु षु णो वसो महे	२३२९	उभे पुनामि रोदसी	१०३४
उत स्ये मा पौरुकुस्यस्य	१७२४	उद् गा आजदङ्गिरोभ्य	३६१	उभे यदिद्रोदसी	२७८५
उत स्ये मा मारुताश्वस्य	१७२५	उद् ग्रामं च निग्राभ	३११९	उहं यज्ञाय चक्रधुर	३३१४
उत स्यं मघवऋष्टुणु	४४८	उद्देदभि श्रुतामर्षं	२४३०	उहं गभीरं जनुषाभ्युग्रं	१४१२
उत त्वा बधिरं वयं	४५९	उद्द्यामिवेत् तृपगजो	२२६६	उह णस्तन्वे तन	२३०२

उरु नभ्य उरुं गत्र	२३०३	एतदस्या अनःशये	३३४७	एवा ता विश्वा	१८५३
उरुं नो लोकमनु	२१०६	एतद् घेदुत वीर्यं भिन्द्र	१६१६	एवा ते गृत्समदाः	१२०६
उरुव्यचसे महिने	२२३३	एता भग्न आशुषाणास	३०७८	एवा ते वयभिन्द्र	२६७८
उरोष्ट इन्द्र राधसां	१७५५	एता अर्षत्यलला भवंती	१५१४	एवा ते हारियोजना	८७१
उल्लक्यातु शुशुल्लक्यातुं	२२९०, ३२९९	एता च्यौत्नानि ते कृता	६४८	एवा त्वामिन्द्र वज्रिन्नत्र	१५२२
उवे अम्य सुलाभिके	२६४६	एता त्या ते श्रुत्यानि	२७९७	एवा देवो इन्द्रो	२६००
उशाना यत् सहस्यै.	१६७५	एतानि भद्रा कलश	२५३८	एवा न इन्द्र वार्यस्य	२१९१, २१९७
उशाना कृता न	३२३६	एतायामोप गन्वत	७३०	एवा न इन्द्रोतिभिरव	१७२३
उशान्तु पु णः सुमना	१५३६	एतावतस्त ईमह	४९३	एवा न इन्द्रो मघवा	१५०७
ऊती शचीवस्तव	२७०६	एतावतस्त्रे वसो	५०३	एवा नः स्पृधः समजा	१९४६
ऊर्जा देवो अवस्योजसा	१७७१	एता विश्वा चक्रुवो	१६८०	एवा नूनमुप स्तुहि	१८१२
ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये	७०४	एता विश्वा सवना	२६०६	एवा नृभिर्दिद्रः	१०९९
ऊर्ध्वा यत् ते त्रेनिनी	२७२२	एतु तिस्र परावत	२८९८	एवा पति द्रोणसाच	२५७१
ऊर्ध्वासस्त्वान्निन्द्रवो	२२३१	एतं त इन्द्र जंतवो	९२४	एवा पाहि प्रन्था	१८४३
ऊर्ध्वा हि ते दिवेदिवे	४५४	एते स्तोमा नरां नृतम	२१४०	एवा महान् बृहद्विवो	२७७२
ऊर्ध्वा ह्यस्थादध्यन्तरिक्षं	१२२९	एतो निवन्द्रं स्तवाम शुद्ध	२३४२	एवा महो असुर	२६९१
ऋजीषी वज्री वृषभः	१७६८	एतो निवन्द्रं स्तवाम सखाय	१८०८	एवा रातिस्तुवीमघ	२४२५
ऋतं येमान ऋतमिद्	१५७५	एतो निवन्द्र स्तवामेशान	६७३	एवारे वृषभा सुतेऽसिन्वन्	४८०
ऋतं देवाय कृण्वते	१२२७	एतौ मे गावो प्रमरस्य	२५१०	एवा वसिष्ठ इन्द्रमृतये	२२०२
ऋतस्य दृळ्शा धरुणानि	१५७४	एदु मध्वो मदिन्तरं	१८०५	एवा वस्त्र इन्द्रः	१५५३
ऋतस्य पथि वेधा	२०४३	एना मंदानो जहि	२०५२	एवा वामह ऊतये	३०९९
ऋतस्य हि शुसुध	१५७३	एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत	१८०२	एवा सत्यं मघवाना	१६०३
ऋतस्य हि सदसो	२७२६	एन्द्र नो गधि प्रियः	२३६७	एवा हि ते त्रिभूतय	४६
ऋतुर्जनित्री तस्या	११३७	एन्द्र पृष्ठु कासु	२९८०	एवा हि तं शं सवना	१०६३
ऋभुक्षण न वर्तव	४७१	एन्द्र याहि पीतये	२२२	एवा हि त्वामृतथा	१७१६
ऋश्यो न तृष्यन्नवपानमा	२३८	एन्द्र याहि मस्त्र	१०९	एवा हि मां तवस	२५२७
ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक	२८३	एन्द्र याहि हरिभिरुप	४२५	एवा ह्यसि वीरधुरेवा	२४२४
ऋष्वस्वमिन्द्र शूर	२८१०	एन्द्र याद्युप नः	१०११	एवा ह्यस्य काम्या	४७
ऋषवा ते पादा प्र	२६२५	एन्द्रवाहो नृपति	२५७०	एवा ह्यस्य सूनता	४५
एकं च यो विशन्ति	२१२९	एन्द्र सानसिं रयि	३८	एवेदिन्द्रं वृषण	२१८५
एकं नु त्वा सन्पतिं	१७६५	एभिर्द्युभिः सुमना	७७८	एवेदिन्द्रः सुते	१९२७
एकया प्रतिप्रापिबत्	६४३	एभिर्न इन्द्राहभिर्दशस्य	२२११	एवेदिन्द्र सुहव	१९३७
एकरालस्य भुवनस्य	१७७८	एभिर्नृभिर्दिन्द्र	१४८५	एवेदिन्द्राय वृषभाय	१४८६
एकस्य चिन्मं विभ्रवस्त्वोजः	३२५९	एमाशुमाशवे	१०	एवेदेते प्रति मा	३२६१
एको द्वे वसुमती	१२४८	एमेन सृजता सुतं	४९	एवेदेश तुनिकूर्मिर्वाजां	१४६
एत उ त्थे पतयन्ति	२२८८, ३२९७	एमेनं प्रत्येतन	१९९९	एवेन्द्राग्निभ्यामहावि	३०४५
एतत् त इन्द्र वीर्यं	५३३	एवा जज्ञानं सहसे	१९८२	एवेन्द्राग्निभ्यां पितृव०	३११२
एतत् त्यत् त इन्द्र वृषण	९७३	एवा त इन्द्रोचथ महेम	१२०५	एवेन्द्राग्नी पपिवांसा	३०२०
एतत् त्यत् त इन्द्रियमचेति	१९५८	एवा तदिन्द्र इन्दुना	२८०३	एवेन्नु कं सिन्धुमे०	२२६४

एवैवापागपरे संतु	२५७४	कथा शृणोति ह्यमान	१५६८	किं नो भ्रातरगस्य	१०५३
एष एतानि चकारंद्रो	१४२	कथा सबाधः शशमानो	१५६९	किमङ्ग एवा मघवन्	२५४८
एष प्रावेव जरिता	१७४७	कथो नु ते परि चराणि	१६७९	किमङ्ग रभचोदन	६६३
एष ते यज्ञो यज्ञपते	३१२५	कदा चन प्रयुच्छस्युभे	५२१	किमयं त्वां वृषाकपिः	२६४२
एष द्रप्सो वृषभो	१९९५	कदा चन स्तरीरसि	५११	किमस्य मदे किम्बस्य	१९५५
एष प्र पूर्वारिव तस्य	८०५	कदा त इन्द्र गिर्वण	३४२	किमादमत्रं सरुधं	१५७१
एष ब्रह्मा य ऋग्विय	२९८६	कदा भुवन् रथशयाणि	२०२६	किमादुतासि वृत्रहन्	१६१५
एष नः स्तोमो भरुत	३२६४	कदा मर्तमराधस	९४४	किमु प्त्रिदस्यै निविदो	१५१५
एष स्तोम इन्द्र	१०६८	कदा वसो स्तोत्रं	२७१४	कियती योषा मर्यता	२५०२
एष स्तोमो अचिक्रद्	२१५२	कदु शुक्रमिन्द्र	२५१८	कियत् स्वदिन्द्रो	१४९९
एष स्तोमो मह उम्राय	२१९०	कदु स्तुवन्त ऋतयन्त	१६९	कीरिशिञ्चि त्वाभवसे	२१६८
एह हरी ब्रह्मयुजा शरमा	१४२	कदू न्व १स्याकृन्	६२१	कुतस्त्वामिन्द्र माहिनः	२९६८, ३२५२
एहि प्रेहि क्षयो	५९२	कदू महीरथृष्टा	६२२	कुत्सा एते हर्षश्याय	२१९६
एहि स्तोमो अभि स्वरा	६१	कनीनकेव विद्रधे	३३४८	कुत्साय शुष्णमशुषं	१४७८
ऐनान्यतामिद्राग्नी	३१३०	क ते दाना असक्षत	५९७	कुम्भो वनिर्घुञ्जिता	२९४५
ऐभिर्ददे वृषया	२६२०	कन्नयो अतसीनां	१६८	कुविच्छकत् कुवित्	१७८६
ऐषु चाकन्धि पुरुहुत	२८०६	कं नश्चित्रमिपण्यसि	२६८०	कुवित्सस्य प्र हि	२०८३
ऐषु नख वृषाजिन	२८९५	कन्या वारवायती	१७८३	कुविदङ्ग यवमन्तो	२७७४
ओकिवांसा सुते	३०४८	कया तच्छृण्वे शच्या	१५४१	कुविन्मा गोपां करसे	१३९५
ओजस्तदस्य तिस्रिष	२४७	कया त्वं न ऊत्या	२४४८	कुह श्रुत इन्द्र. कस्मिन्नय	२४६६
ओते मे थावापृथिवी	२८७४	कया नश्चित्र आ	१६३०	कृगोत्स्यस्मै वरिवो	१५८२
ओ ये नर इन्द्रमृतये	८४८	कया शुभा सवयसः	३२५०	कृन् न श्रमी वि	२५६१
ओपमित् पृथिवीमहं	२८५९	कर्णगुह्या मघवा	२३३५	कृतं नो यज्ञ विद्येषु	३१२४
ओषु प्र याहि वाजंभिर्मा	१३४	कहिं स्वित् तदिन्द्र यजरित्रे	२०२८	कृन् मे दक्षिणे हस्ते	२९१०
ओ सुष्टुत इन्द्र	१०९५	कहिं स्वित् तदिन्द्र यन्नुभिर्नृन्	२०२७	केतुं कृणवन्नकेतवे	२६
ओच्छत् सा रात्री	३३३९	कहिं स्वित् सा त इन्द्र	२६७५	के ते नर इन्द्र ये	२६०३
क इमं दशभिर्ममेन्द्रं	१५८६	कविर्न निणयं विदधानि	१४६९	को अग्निमीष्टे हविषा	९५४
क इमं नाहुषीष्वा	२९७५	कस्मिन्द्र त्वावसुमा	२२४८	को अघ नयो देवकामः	१५८८
क इं वेद सुते सषा	२१६	कस्ते मद इन्द्र रस्यो	२५१७	को अघ युङ्क्ते धुरि	९५२
क इं स्ववत् कः	२११३	कस्ते मातरं विधवामचक्र०	१५२०	को अस्य वीरः सधमा०	१५६७
क इषते तुज्यते	९५३	कस्त्वा सस्यो मदानां	१६३१	को अस्य शुष्मं तविषीं	१७१३
क उ नु ते महिमान.	२६१०	कस्य ब्रह्मणि जुजुष्युवा	३२५१	को देवानामवो अद्या	१५९०
ककुहं चित् त्वा कवे	४५६	कस्य वृषा सुते सषा	२४४९	को नानाम वचसा	१५८९
कण्वा इन्द्रं यदक्रन	२४५	कस्य स्वित् सवनं	५९६	को नु मर्यां भमिथित.	४७९
कण्वा ह्य भृगवः	१७१	का ते अस्वरंकृतिः	२२१५	को न्वन्न मरुतो	३२६२
कण्वास इन्द्र ते	२७३	का सुष्टुतिः शवसः	१५७७	क्रतूयन्ति क्षितयो	१५८०
कण्वेभिर्धृष्णावा	२१२	कि स ऋधक् कृणवद्	१५१२	क्रव इत् पूर्णसुदरं	६५७
कथा कदस्या उषसो	१५७०	किं सुवाहो स्वर्गुरे	२६४७	क्रवा महौ अनुष्वधं	९१९
कथा त एतदहमा	२५२६	किं ते कृणवन्ति कीकटेषु	१४६६	क्रीळन्त्यस्य सन्तना	३२८
कथा महामघवत्	१५६६	कि न इन्द्र जिषांससि	१०५२		

कःस्य वीरः को अपश्यदिन्द्रं	१६८२	गोभिर्यदीमन्ये	१२१	तं वो धिया नव्यस्या	१९१३
कःस्य वृषभो युवा	५२५	गोभिष्टरेमामतिं	२५५५, २५६६, २५७७	तं वो धिया परमया	१९८०
कःस्या वो मरुतः	३२५५	गोमद्विरपयवद्	३०८७	त वो महो महाद्य०	२३२८
केयथ केदसि पुरुत्रा	९३	ग्राश्च यन्नरश्च	३१६४	तं वो वाजानां पति०	१८०७
क्षत्राय त्वमवसि	१७८१	घृतमुषः सौम्या	३२०५	तं शिशीता सुवृक्तिभिः०	३११०
क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं	१५००	घृषुः श्वेनाय कृःवन	२८००	त शिशीता स्वध्वर	३१११
क्षेमस्य च प्रयुजश्च	१७८०	चकार ता कृगवन्नूनमन्या	२२००	त सध्रीवीरूनयो	२०३३
खे रथस्य खेऽनसः	१७८२	चक्र यदस्याः स्वा	२६३१	तं सुष्टुत्या विवासे	३८४
गन्तारा हि स्थोऽवसे	३१३५	चक्र न वृत्त पुरुहूत	१७४६	तं स्या रथं मघवन्	८३०
गन्तेयान्ति सवना	१९२१	चक्राणास परीणहं	७३७	त हि स्वराज्य वृषभ	५४९
गमद् वाजं वाजयन्निन्द्र	२२४५	चक्राथे हि सध्रयः ङ्ङनाम	३०१०	तक्षद् यत् त उशाना	७५४
गमन्नस्ये वसुन्या	२५७२	चतु सहस्र गव्यस्य	३३४०	त गूर्तयो नेमन्निव.	८०६
गम्भीरो उदधीरिव	१४०६	चत्वारि ते असुर्याणि	२६११	त वेमिस्था नमस्विन	२३१९
गम्भीरण न	१९३६	चन्द्रमा ऽ अस्वन्तरा	२९७१	ततुर्वीरो नयो	१९२९
गभो यज्ञस्य देवयुः	२९८	चर्षणीष्टं मघवान०	१४३४	तत् त इन्द्रिय परम	८३९
गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र	१२८३	जगुभमा ते दक्षिणमिद्र	२८४२	तत् तु प्रयः प्रन्थया	१०३०
गव्यं त इन्द्रं	१५०३	जघन्वाँ इन्द्र	१०७४	तत् ते यज्ञो अजायत	२३८९
गव्यो षु णो यथा	१८२६	जघन्वाँ उ हरिभिः	७६७	तत् त्वा यामि सुवीर्यं	१६४
गाथश्चवस सर्पात्	१५३	जघान वृत्र स्वधि०	२६६८	तत्रो अपि प्राणीयत	५४७
गायत् साम नभन्यं	१०५६	जज्ञान एव व्यबाधत	२७४८	तथा तदस्तु सोमपा.	७१०
गायति त्वा गायत्रिणो	५८	जज्ञान. सोम सहसे	२२८१	तद्द्या चित् त उक्थिनो	३७४
गावो न यूथमुप	१८३८	जज्ञानो नु शतकनुर्धि	६४०	तदश्विना भिपजा	२९४०
गावो यवं प्रयुता	२४९८	जज्ञानो हरितो	१४०२	तदस्यै नव्यमङ्गिर०	११८१
गिरश्च यास्ते गिर्वाह	१४५	जनं वज्रिन् महि	१८८२	तदस्य रूपममृत	२९३९
गिरा वज्रो न संभृतः	२४३८	जनिता दिवो जनिता	१७७२	तदस्येद पश्यता भृरि	८४३
गिरिर्न य. स्वतर्वा	१५३८	जनिताश्वानां जनिता	१७७३	तदिन् सधस्थमभि	२५३३
गिरीरज्रान् रेजमानो	२५७५	जनिष्ठा उग्र सहसे	२६२३	तदिदास भुवनेषु	२७६४
गिर्वेणः पाहि नः	१३६२	जयेम कारे पुरुहूत	४२०	तदिद् रुद्रस्य चेतति	३४०
गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान	३०७४	जायेदस्त मघवन्-सेदु	१४५६	तदिन्द्र प्रेव वीर्यं	८४५
गुहा सतीरुष त्मना	२५०	जुष्टी नरो ब्रह्मगा व	२२६५	तदिन्द्राव आ भर	१८१४
गुहा हित गुह्यं	११०५	जुषेथां यज्ञमिष्टये	३०९४	तदिन्नु ते करण द्रुम	१६९९
गृणानो अङ्गिरोभिर्दस्य	८७६	जंता नृभिरिन्द्रः	१०९८	तदिन्वस्य वृषभस्य	१३५१
गृणे तदिद्र ते शव	५७३	ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय	१३८	तदिन्वस्य सवितुः	१३५२
गृभीतं ते मन इन्द्र	२१८७	ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी	१३६२	तदिन्मे छन्त्सद्रुपयो	२५३२
गृष्टिः सस्रव स्थविर	१५१८	ज्योतिर्वृणीत तमसो	१३६१	तदु प्रयक्षतपमस्य	८७७
गृहो याम्यरंकृतो	२८६२	त इन्निष्यं हृदयस्य	२२७०	तदूचुषे मानुषेमा	८४२
गोजिता बाहु अमितक्रतुः	८३३	त इन्वस्य मधुमद्	१२८५	तद्धाना अवस्यवो	५८७
गोत्रभिद् गोविद्	२६९६	तं व इन्द्रं चतिनमस्य	१८७४	तद् व उक्थस्य	२०४१
गोभिर्मिभुं	१४३१	त वः सखायः	१९२६	तद् विविडिड यत्	२३५६
		तं वो दस्मृतीषह	८९४	तद् वो गाय सुते सचा	२०८१

तंतमिद्राधसे मह	२२९७	तमु वृद्धि यो अभि०	१८५६	ता ह्ं वर्धन्ति मद्यस्य	३३०५
त ते मदं गुणीमसि	३७२	तमु वृद्धीं यो	१०६०	तां सु ते कीर्ति मघवन्	२६०८
तं ते यवं यथा गोभिः	११८	तमु स्तुष इन्द्रं त	१२११	ता कर्मापतरास्मै	१०५९
तं स्वा मरुत्वती	०२३०	तमु स्तुष इन्द्र यो	१८९८	ता गृगीहि नमस्येभिः	३१६३
तं स्वा यज्ञेभिरीमहे	२३००	तमूतयो रणयञ्छूरसातौ	९६३	ता तू त इन्द्र महतो	१५५९
त स्वा विश्वारा	७०८	तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं	१९११	ता तू ते सत्या तुविनृष्ण	१५६०
त स्वा वाजेषु वाजिन	१२	तं पृच्छन्तोऽवरासः	१९०२	ता ते गृणन्ति वेधसो	१६५५
तं स्वा हविष्मतीर्विश	२६९	तन्वभि प्र गायत	३६९	तां भाशिरं पुरोकाशभिर्द्रेमं	१२६
तन्नः प्रन रुख्यमस्तु	१८६०	तन्वभि प्रार्चतेन्द्रं	२४०१	ता नासत्या सुपेशसा	२९५८
तन्नो वि वोचो	१९१०	तयो रिदमवच्छव०	३०४२	ता नो वाजवतीरिष	३०६७
तन्म ऋतमिन्द्र शूर	९९०	तयो रिदवसा वयं	३१३९	ताभिरा गच्छतं	३०६४
तमङ्गिरस्वन्नमसा	१२७८	तरणि वो जनानां	४७०	ता भिषजा सुकर्मणा	२९५९
तमद्य राधसे महे	६००	तरणिरित् सिषासति	२२५४	ता महान्ता सदस्वती	३००६
तमपसन्त शवस	९६४	तराभिर्वो विद्वद्भुमिन्द्रं	६१३	ता मित्रस्य प्रशस्तय	३००४
तमर्केभिस्त सामभिस्तं	३९०	तव ऋवा तव तद्	१८४६	तां पूष्णः सुमतिं वय	३३३४
तमस्य द्यावापृथिवी	२७४५	तव च्योःनानि वज्रहस्त	२१४४	ता यज्ञेषु प्र शंसते०	३००३
तमस्य विष्णुर्महिमान०	२७४६	तव त्य इन्द्र सख्येषु	२७९२	ता योषिष्टमभि	३०५७
तमहे वाजसातय	३२३	तव त्यदिन्द्रियं बृहत्	३७५	ता वां गीभिर्विपन्यवः	३०८४
तमा नूनं वृजनमन्यथा	२०३०	तव त्यन्नयं नृतोऽप	१२२६	ता वां धियोऽवसे	३१५३
तमिच्छयौःनैरार्यन्ति	३८७	तव त्विषो जनिमन्	१४८९	ता वामेषे रथाना०	३०४३
तमित् सखित्व इमहे	६३	तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं	३७६	ताविद् दु शंसं मर्यं	३०९०
तमिद् धनेषु हितेषु	३८६	तव प्रणीतीन्द्र जोहुवा०	२२१०	ता वृधन्तावतु	३०४४
तमिद् व इन्द्रं सुहवं	१४८२	तव ह त्यदिन्द्र	१८९६	ता सानशी शवसाना	३०७२
तमिद् विप्रा भवस्यवः	३३७	तवायं सोमस्व०	१३१७	ता हि मध्यं भराणा०	३१०३
तमिन्द्रं जोहवीमि	९८८	तवाहं शूर रातिभिः	७५	ता हि शश्वन्त ईकत	३०८३
तमिन्द्र वाजयामसि	२४३६	तवेद विश्वमभितः	२२८४	ता हि श्रेष्ठा देवताता	३१६९
तमिन्द्र दानमीमहे	१८२२	तवेदिन्द्र प्रणीतिपूत	२६४	ता हुत्रे ययोरिदं	३०५९
तमिन्द्र मदमा	१३८३	तवेदिन्द्रावमं वसु	२२५०	तिग्ममायुधं मरुता०	२३५३
तमिन्नरो वि ह्वयंते	१५७९	तवेदिन्द्राहमाशसा	६६०	तिग्मा यदन्तरशनिः	१४८३
तमीळित्व यां अर्चिषा	३०६५	तवेद्दु ता. सुकीर्तयो	४७५	तिष्ठा सु कं मघवन्	१४५४
तमीमह इन्द्रमस्य	१९०९	तस्मा अग्निर्भरितः शर्म	१५९१	तिष्ठा हरी रथ	१३१२
तमीमहे पुरुष्टुत	३४४	तस्मिन्ना वेशया	१०८६	तीव्रस्याभिवयसो	२८२४
तमु उषेष्ठं नमसा	३३६०	तस्मिन् हि सन्त्यूयतो	१८२३	तीव्रा सोमास भा गहि	६८०
तमु स्वा नूनमसुर	२३९६	तस्मै तवस्यमनु	१२१५	तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे	३४
तमु स्वा नूनमीमहे	१८१५	तस्य वज्रः क्रन्दति	९६९	तुभ्यं सुतास्तुभ्यसु	२८२५
तमु स्वा यः पुरासिथ	२०७०	तस्य वयं सुमतौ	२१११; २७७७	तुभ्यं सोमाः सुता इमे	२४५४
तमु स्वा सत्य सोमपा	२०६९	तस्येदिह स्तवथ	१५४५	तुभ्यं ब्रह्माणि गिर	१४३९
तमु नः पूर्वे पितरो	१९०८	ता अस्य नमसा सहः	९४८	तुभ्यायमग्निभिः सुतो	६८३
तमु ष्टवाम य इमा	२३५०	ता अस्य पशनायुवः	९४७	तुभ्येदमिन्द्र परि विष्यते	२८२९
तमु ष्टवाम यं गिरः	२३४१	ता अस्य सूदयोहसः	२३०६		

तुभ्येदिन्द्र मरुत्वते	६३५	त्रिंशच्छतं वर्मिण	१९६०	एव हि ष्मा च्यावयन्नच्युता०	१२४१
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये०	१३८९	त्रिः षष्टिस्त्वा मरुतो	२३५२	एवं हि सत्यो मघवन्	२३९४
तुभ्येदिमा सवना	२१७७	त्रिकद्रुकेषु चेतनं	३३८, २४१७	एवं हि स्तोमवर्धन	३६४
तुभ्येदेते बहुला	७९४	त्रिकद्रुकेषु महिषो	१२२३	एव ह्येक ईशिष इन्द्र	१६५१
तुभ्येदेते मरुतः	१६८७	त्रिविष्टिधातु प्रातिमानमोजस०	८३५	एवं ह्येहि चेरवे विदा	५५४
तुरण्यवो मधुमन्तं	५१४	त्रीशीर्षाणं त्रिककुदं	२८८२	एवं करजमुत पर्णय	७८२
तुराणामतुराणां	२९०७	त्रीणि राजाना विद्यथे	१३५०	एवं कवि चोदयोऽर्कसातो	१९४९
तुरीयं नाम यज्ञियं	६६९	त्री यच्छता महिषाणामघो	१६७४	एवं कृत्सं शुष्णहृत्पेष्वाविथा०	७५०
तुविशं ते सुकृतं	६५०	त्र्यर्थमा मनुषो	१६६७	एव कुत्सेनाभि	२००८
तुविश्रीवो वपोदर.	४०१	एव रथ प्र भरो	१९५०	एव गोत्रमङ्गितोभ्योऽवृगोरपो	७४७
तुविश्रुप्तम तुविक्रतो	२२९२	एव राजेन्द्र ये च	१०६९	एवं जघन्थ नमुचि	२६२९
तुतुजानो महेमते	३३१	एव वर्मांसि सप्रथः	२२२८	एवं जिगेथ न धना	८३७
तूर्वन्नोजीथान् तवस०	१८८६	एव वलस्य गोमतो	७४	एवज्जियेन्द्र पार्थिवानि	२००७
तृतीये धानाः सवने	१४५१	एव विश्वस्य धनदा	२२५१	एवं तदुक्थमिन्द्र	१९५१
तेजः पशूनां हवि०	२९५३	एवं विश्वा दाधिषे	२६१२	एवं तमिन्द्र पर्वत न	७९९
ते स्वा मदा भमदन्	७८०	एवं वृथा नद्य इन्द्र	१०१५	एव तमिन्द्र पर्वतं महासुहं	८१६
ते स्वा मदा इद्र	२१८४	एवं वृध इन्द्र पूष्यो	१८९४	एवं तमिन्द्र मर्त्य०	१७४०
ते स्वा मदा वृहविद्र	१८४४	एव वृषा जनानां	३७८	एव तमिन्द्र वावृषानो	१०२७
तेन सत्येन जागृत०	३००७	एव शतान्यव शम्बरस्य	२००९	एवं त ब्रह्मगस्पते सोम	३३५८
तेन स्तोतृभ्य आ भर	६४७	एवं शर्धाय महिना	२८०८	एवं तौ इन्द्रोभयो	२०१८
तेभ्यो गोधा अयथ	२५२९	एवं श्रद्धाभिर्मन्दसान	१९५२	एवं तान् वृत्रहृत्पे	२४७५
ते सत्येन मनसा	३२३३	एवं सत्य इन्द्र धृष्णुरातान्	८८७	एवं तू न इन्द्र	१०४६
तोके हिते तनय	३१५१	एव सद्यो अपिषो	१२९१	एव त्यमिततो रथमिन्द्र	२८३२
तोशा वृत्रहणा	३०३३	एवं सिध्वावासृजो	२७७९	एवं त्यमिन्द्र मर्त्य०	२८३४
तोशासा रथयावाना	३०९२	एवं सुतस्य पीतये	१९	एवं त्यमिन्द्र सूर्यं	२८३५
एवं सु मेघं महया	७६०	एवं सूकरस्य दर्दहि	२२७३	एवं त्या चिद वातस्त्राश्रगा	२४७०
एवं श्वित् पर्वत गिरि	५९३	एवं ह स्यत् ससभ्यो	२३५८	एवं त्यां न इन्द्र देव	८९२
एवं चिदर्णं मधुपं	१७१२	एवं ह स्यदप्रतिमानमोजो	२३५९	एवं दाता प्रथमो	२३९२
एवं चिदस्य क्रतुभि०	१७०९	एवं ह स्यदिन्द्र तुष्टमात्रः	२१४१	एवं दिवो धरुगं धिष	८१०
एवं चिदिस्था कल्पयं	१७१०	एवं ह स्यदिन्द्र चोदीः	८८८	एव दिवो वृहत्.	७८९
एवं चिदेषां स्वधया	१७०८	एवं ह स्यदिन्द्र सस	८९१	एवं धुनिरिन्द्र	१०७७, १८९५
एवमु वः सत्रासाहं	२४०३	एवं ह स्यदिन्द्रारिषण्यन्	८८९	एव धृणो धृता	२१४२
एवमु वो अप्रहण	२०३९	एव ह स्यदृगया	२६६९	एवं न इन्द्र क्रतयु०	२३३०
एवस्य चिन्महतो	१७०७	एा ह स्यद् वृषभ	२३६०	एवं न इन्द्र स्वाभिकृती	१२०९
एव इन्द्रस्य सोमाः	१२२	एवं ह नु स्यददमायो	१८५८	एवं न इन्द्र राया तरुषसोमं	१००९
एवः कृणवन्ति भुवनेषु	२२६८	एवं हि न. पिता वसो	२३७४	एवं न इन्द्र राया परीणसा	१००८
एवः कोशासः श्रोतन्ति	१२३	एवं हि राधस्पते	५६१	एवं न इन्द्र वाजयुस्त्वं	२२२५
एवाता नो बोधि ददशान	१५०४	एवं हि वृत्रहृत्पेष्वां	२४६२	एवं न इन्द्र शूर	२४७४
एवातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं	२१०९	एवं हि शम्भतीनामिन्द्र	२३६९	एवं न इन्द्रा भर	२३७३

स्वं न इन्द्रासां हस्ते	२३३२	स्वं महौ इन्द्र तुभ्यं	१४४८	स्वे विश्वा तविषी	७५१
स्व नः पश्चादधरादुत्तरान्	५६३	स्वं महौ इन्द्र यो ह	८८५	स्वेषमिस्था समरणं	३३०४
स्व नृभिर्नृमणो देववीतौ	२१४३	स्वं महिमवनिं	१५२७	स्वे सु पुत्र शवसे	२४१०
स्व नो अस्या अमनेरुत	६२६	स्वं मायाभिरनवद्य	२८०५	स्वे ह यत् पितरश्चिन्न	२११९
स्वमङ्ग प्र शसिषो	९५५	स्वं मायाभिरप	७४९	स्वोतासस्त्वा युजा	२२९९
स्वमघ प्रथमं जायमानो	१४९४	स्वया वयं मघवन्निन्द्र	११००	स्वोनासां मघवन्निन्द्र	१६८८
स्वमपामपिधानावृणोरपा०	७४८	स्वया वय मघवन् पूर्वं	१०२८	दृण्डा इवद् गोभजनास	२२६७
स्वमपो यद्वे तुर्वशाया०	१७००	स्वया वयं शाशग्रहे	२७६८	ददी रेक्णस्तन्वे	१८३१
स्वमपो यद् वृथ	१२८७	स्वया ह स्विद् युजा	४१९	दधानो गोमदश्ववत्	१८२१
स्वमपो वि दुरो	१९७२	स्वयेदिन्द्र युजा वयं	२४२८	दधामि ते मधुनो	९९२
स्वमस्साकमिन्द्र	१०७८	स्वां यज्ञेभिरुक्थैरुप	२४८९	दधामि ते सुतानां	४२९
स्वमस्य पारे रजसो	७७१	स्वां वाजी हवते	१९४८	दधिष्वा जठरे सुतं	१३६८
स्व मानेभ्य इन्द्र	१०५०	स्वां विष्णुर्बृहन्	३७७	दध्यङ् ह मे जनुषं	३०२९
स्वमाविथ नर्य	७९१	स्वां शुक्तिमन् पुरुहूत	२३७५	दनो विश इन्द्र	१०७०
स्वमाविथ सुश्रवसं	७८४	स्वां सुतस्य पीतये	१३९०	दभ्र चिद्धि त्वावतः	४७४
स्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वाभि	२३८०	स्वां स्तोमा अवीवृधन्	२१	दभ्रेभिर्दिचच्छशीयांसं	१६४७
स्वमिन्द्र बलादधि	२८२०	स्वां ह त्यदिन्द्रार्णसातौ	८९०	दर्शन्वन्न श्रुतर्षां	२४९६
स्वमिन्द्र यशा अम्यृजीषी	२३९५	स्वां हि सत्यमाद्रिवो	१८१८	दश ते कलशानां	१६६३
स्वमिन्द्र सजोषम०	२८२२	स्वां हींश्द्रावसे	२०१७	दश महां पौतक्रतः	५४५
स्वमिन्द्र स्वत्रितवा	२१६३	स्वां जना ममसत्ये०	२५४९	दश राजानः समिता	३१८८
स्वमिन्द्राधिराज	२९०३	स्वां देवेषु प्रथमं	८३६	दशानामेकं कपिलं	२५०६
स्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा	२८२३	स्वामिच्छवसस्पते	२६३	दस्मो हि ऽमा वृषणं	१००२
स्वमिन्द्राभिभूरसि स्वं	२३६५	स्वामिदा ह्यो नरो	२३७६	दस्यूच्छिष्यैश्च	९७४
स्वमिन्द्रासि वृत्रहा	२८२१	स्वामिद्धि त्वायवो	२४२९	दाता मे पृषतीनाम	६१०
स्वमीशिषे वसुपते	१०५५	स्वामिद्धि हवामहे	२०९०	दादहाणो वज्रमिन्द्रो	१०१४
स्वमीशिषे सुतानामिन्द्र	५९१	स्वामिद्यवयुर्मम	६५९	दाना मृगो न वारणः	२१७
स्वमुस्मो ऋतुभि०	१७०६	स्वामिद् वृत्रहन्तम	२७९, १७४१	दानाय मनः सोमपावन्नस्तु	८०३
स्वमेकस्य वृत्रह०	२०६४	स्वमिद् वृत्रहन्तम सुतावन्तो	२४५९	दाशाराज्ञे परियत्ताय	३१८९
स्वमेतदधारयः कृष्णासु	२४४२	स्वामुग्रमवसे	२०९५	दासपरन्वीरहिगोपा	७२५
स्वमेताङ्गनराज्ञो	७८३	स्वा युजा तव तत	१५९२	द्विदक्षन्त उषसो	१२५०
स्वमेतान् रुदतो	७३६	स्वा युजा नि खिदत्	१६००	द्विवश्विदस्य वरिमा	७९७
स्व पाहीन्द्र सहीयसो	३२६८	स्वायेन्द्र सोमं सुषुमा	८२५	द्विवश्विदा पूर्व्यां	१३५६
स्वं पिप्रुं मृगयं	१४७९	स्वावतः पुरुवसो	१८१७	द्विवश्विद् वा दुहितरं	३३४५
स्वं पुर इन्द्र चिकिदेना	९८९	स्वावतो हीन्द्र ऋत्वे	२१९५	द्विवि मे अन्यः पक्षोऽ	२८६०
स्व पुरं चरिण्वं	११४	स्वे इन्द्राप्यभूय	१११२	द्विवेदिवे सदशीरन्यमर्षं	२११८
स्वं पुरुण्या भरा	२७५४	स्वे ऋतुमपि वृञ्जित	२७६६	द्विवो न तुभ्यमन्विन्द्र	१८८५
स्व पुरू सहस्राणि	५५५	स्वमेतानि पभिषे	२६३०	द्विवो न यस्य रेतसो	९५९
स्व भुव प्रतिमान	७७२	स्वे राय इन्द्र तोशतमाः	१०४७	द्विवो मानं नोत्सदन्	५७९
स्वं मखम्य दोधत	२८३३	स्वे वसुनि संगता	६५८	द्विशः सूर्यो न मिनाति	१२४९

दीर्घं हाङ्कुशं यथा	२७२०	धेनुं न त्वा सूयवसे	२१२१	न दुष्टुती मर्यो विन्दते	२२५५
दीर्घस्ते भस्वङ्कुशो	४०३	धेनुष्ट इन्द्र सूनुता	३५६	न चाव इंद्रमोजसा	२५७
दुराध्वो अदिनि	२१२६	ध्रुवं ध्रुवेण मनसा	२९२६	न नूनमस्ति नो	१०५१
दुरो भस्वस्य दुर	७७६	ध्रुवासि ध्रुवोऽयं	२९२१	न नूनं ब्रह्मणामृणं	१९५
दुर्गे चिन्न सुगं कृधि	२४३९	नकिः परिष्टिर्मघवन्	८९९	न पञ्चाभिर्दशभिर्वष्टयारभं	१७३१
दूणाशं सख्यं तव	२०८५	नकिः सुदासो रथं	२२४४	न पातो दुर्गहस्य	६१२
दूरं किल प्रथमा	२७३२	नकिरस्य शचीनां	१९४	न पापासो मनामहे	५५८
दूराच्चिद्रा वसतो	१९७९	नकिरिन्द्र स्वदुत्तरो	१६०९	न म इंद्रेण सख्यं	११९७
दूरादिन्द्रमनयन्ना	२२६३	नकिरेषां निन्दिता	१३५८	न मत् स्त्री सुभसत्तरा	२६४५
दूरे तन्नाम गुह्यं	२६१४	नकिर्देवा मिनीमसि	२७९१	न मा तमन्न	१२३२
देवदेवं वोऽवस	३०६	नकिष्ट कर्मणा नश०	२३२३	न यं विविक्तो रोदसी	३११
देवानां माने प्रथमा	२५१३	नकिष्ट्वद् रथीतरो	२४२	न यं शुक्रो न दुराशीर्न	१२०
देवाश्चिन ते असुर्याय	२१६७	नक्षद्धाता परि	१०५८	न यं हिंसन्ति धीतयो	२०२३
देवी यदि तविषी	८०८	नक्षन्त इंद्रमवसे	५३४	न यं जरन्ति शरदो	१९३४
देहि मे ददामि ते	२९२०	न क्षोणीभ्यां परिभ्वे	११७४	न यं दुध्रा वरन्ते	६१४
दोहेन गामुप शिक्षा	२५४७	नकीं वृधीक इंद्र ते	६५४	नयसीद्विति द्विष.	२०६५
द्यामिन्द्रो हरिधायमं	१४०१	नकीमिन्द्रो निकर्तये	६५५	न यस्य ते शवसान	२२९८
द्यावा चिदस्मै	११३४	नकी रेवन्तं सख्याय	४२२	न यस्य देवा देवता	९७१
द्युक्षं सुदानु तविषीभिरावृत्तं	८९५	न घा त्वद्रिगप वेति	२५५८	न यस्य द्यावापृथिवी भनु	७७३
द्युमत्तमं दक्षं	२०४४	न घा राजेन्द्र आ	१०९७	न यस्य द्यावापृथिवी न	२६६७
द्युम्नेषु प्रतनाज्ये	१३४०	न घा वसुर्नि यमते	२०८२	न यस्य वर्ता जुनुषा	१५३९
द्यौर्न य इन्द्राभि	१८८४	न घेमन्यदा पपन	१३२	न यातव इंद्र	२१६५
द्यौश्चिदस्यामर्वा	७६९	न जामये तान्वो	१२६१	न ये दिवः पृथिव्या	७३९
द्रप्समपश्यं विपुणे	३२६९	न त इद्र सुमतयो	२१३८	न रेवता पणिना	१५९४
द्रुहं जिषांसन् ध्वरसमानिन्द्रां	१५७२	न तं जिनन्ति बहवो	१५२२	नववामः सुतसोमाम	१६७८
द्रुहो निषत्ता पृशनी	२६२४	न तमंहो न दुरितानि	३१७८	नव यदस्य नवर्ति	१६७२
द्विता यो वृत्रहन्तमो	२४६१	न ते अंतः शवसो	१९६६	नव यो नवर्ति	२४३१
द्विता वि वत्रे सनजा	८७८	न ते गिरो अपि मृष्ये	२१७५	न वा उ मां वृजने	२४९५
धनं न स्पन्द्र बहुलं	२५५०	न ते त इंद्राभ्य०	१७१९	न वा उ सोमो वृजिनं	३२९०
धन्व च यत् कृन्तन्नं	२६५९	न ते दूरे परमा	१२३९	न वीळवे नमते	१९३५
धर्ता दिवो रजसस्पृष्ट	१४२७	न ते वर्तास्ति राधस	३५७	न वेपसा न तन्यतेन्द्रं	९११
धानावन्तं करम्भिण०	१४४६	न ते सर्व्यं न दक्षिणं	१७९४	न स राजा व्यथते	१७५३
धिषा यदि धिषण्यतः	१५४९	न त्वा गभीरः	१२९७	न सीमदेव आपदिषं	२३२७
धिषत्र वज्रं गभस्वो	२०७७	न त्वा देवाम आशत	९८४	न सेशे यस्य रम्बते	२६५५
धिषत्रा शवः शूर	१११८	न त्वा बुद्दन्तो भद्रयो	८२६	न सेशे यस्य रोमशं	२६५६
धीभिरर्धञ्जिर्वतो	२०७१	न त्वा वरन्ते अन्यथा	१६५२	न सोम इंद्रमसुतो	२१९८
धृतरतो धनदाः	१८७५	न त्वावो अन्यो दिव्यो	२२५७	नहि ते शूर राधसो	१८२७
धृषत्तश्चिद् धृषन्मनः	५७०	नदं व ओदतीनां	२३०५	नहि त्वा रोदसी उभे	६५
धृषत् पित्र कलशे	२१०४	नदं न भिन्नममुया	७२२	नहि त्वा शर देवा	६७२



नहि त्वा ज्ञारो न	१९४२	नि षीमिदन्न गुह्या	१३४७	पन्य भा दर्दिरेच्छता	१९७
नहि तु ते महिमनः	१९५७	नि पु सीद गणपते	२७४३	पन्य इदुप गायत	१९६
नहि तु यादधीमसीदं	९१४	नि पू नमातिमतिं	१००४	पन्यं पन्यमित् सोतार	१४०
नहि मे अक्षिपञ्चान०	२८५५	नि त्वापया मिथूदशा	६९४	पपृक्षेणमिन्द्र	१७२२
नहि मे रोदसी उभे	२८५६	नि ष्वररोषधीराप	३२०३	पप्राथ क्षां महि	१८४७
नहि वां वत्रयामहे	३१०२	नि सर्वसेन इतुधीरस	७३२	पयसा शुक्रमसृतं	२९४२
नहि षस्तव नो मम	२२५	नि सामनामिषिरामिद्र	१२४६	परः सो अस्तु तन्वा	३२८८
नहि ष्मा ते शतं चन	१६३८	नीचावया अभवद्	७२३	परमां तं परावत०	२८९७
नहि स्थूयंतुथा	२७७५	न अन्यत्रा चिदद्रिव०	१८००	पराकात्ताश्चिदद्रिवस्त्वां	२४२३
नद्याः कृत्तु त्वदन्यं	१८०१	न ह्यथा ते पूर्वथा	१०३१	परा चिच्छीर्षा ववृजुस्त	७३४
नद्याः पुरा चन	१८०४	न ह्यद्र राये वरीव०	२२०७	परा गुदस्व मघवजमित्रान्	२२५३
नद्याः न्यं बलाकरं	६६१	नू इंद्र शूर स्ववमान	२१५०	परा पूर्वेषां सख्या	२११५
नाष्टष भा दष्टषते	२८८८	नू गृणानो गृणते	१९८७	परायतीं मातर०	१५११
नाना हि त्वा हवमाना	८३२	नू चित् स श्रेषते	२१५६	परा याहि मघवञ्चा	१४५७
नामानि ते शतक्रनो	१३३६	नू चिन्न इंद्रो मघवा	२२०६	परा हीन्द्र धावलि	२६४१
नास्मै विष्णुञ्च तन्यतु.	७२७	नू चिन्तु ते मन्यमानस्य	२१७८	परि त्वा गिर्वणो गिर	६२
नाहं तं वेद य इति	२४९३	नू त आभिरभिष्टिभि०	१७५९	परि यदिन्द्र रोदसी	७३८
नाहमतो निरया	१५१०	नूना इदिन्द्र ते	४१५	परि वत्मानि सर्वत	२८९३
नाहमिद्राणी रारण	२६५१	नू न इंद्रावरुणा गुणाना	३१६८	परीं घृणा चरति	७६५
निखातं चिद्यः पुरुसंभृतं	६१६	नूनं सा ते प्रति ११२१; ११७१; ११८०		परीमे गामनेषत	२९७२
नि गव्यता मनसा	१२६८	११८९; ११९८; १२०७; १२१६		परेहि विप्रमस्तृत०	७
नि गव्यवोऽनवो	२१३२	नूनं तदिन्द्र दद्वि	३२५	परोमात्रमृचीषम०	२२९६
नि तदधिषेऽवरं	२७७०	नूनं न इंद्रापराय	२०२०	परो यत् त्वं परम	१६८६
नि तिग्मानि भ्राशयन्	२७५९	नू एत इंद्र नू १४८७; १५०८; १५३२.		पहुर्हं नाम मानवी	२६६२
नि दुर्ग इंद्र अधि०	२१९३	१५४३; १५५४ १५६५ १५७६ १५८७		पात न इंद्रापूषणा०	३३३६
निधीयमानमपगू०	२५३५	नृगामु त्वा नृतमं	१४३७	पाता वृत्रहा सुतमा	१४१
नि पर्वतः साद्यप्रयुच्छन्	११०८	नृभिर्धृतः सुतो	११७	पाता सुतमिन्द्रो अस्तु १९२०; २०५०	
नि यद् वृणक्षि	७९०	नृवत् त इंद्र नृतमाभिरुती	१८८०	पान्तमा वो अंधत	२३९७
नियुवाना नियुतः	३२३८	नेमिं नमन्ति चक्षसा	२८७	पारावतस्य रातिषु	४४२
नि येन मुष्टिहृषया	३९	न्यर्जुदस्य विष्टपं	१८२	पाषंदाणः प्रस्कणवं समसादय	५०६
निरमयो हरुचुर्निरु	१७५	न्यस्मै देवी स्वधिति०	१७१४	पाहि गायान्धसो मद	२१३
निरसुं नुद ओकसः	२८९६	न्याविध्यदिलीबिशास्य	७४१	पाहि न इंद्र सुष्टुत	१०१०
निराविध्यद् गिरिभ्य	६४५	न्यू षु वाचं प्र महे	७७५	पित्रे चिच्छकुः सदनं	१२७१
निरिन्द्र वृहतीभ्यो	१७४	पृताति कुण्डणाद्या	६९७	पिपीळे अंशुर्मद्यो	१५६२
निरिन्द्र भूम्या अधि	९०३	पतिर्भव वृत्रहन्सूनतानां	१२७७	पिव स्वधैनवानामुत	१९९
निर्हस्तः शत्रुरभिदास०	२८९०	पत्तो जगार प्रत्यञ्चमसि	२५०३	पिवा त्वस्य गिर्वणः	११२
निर्हस्ताः संतु शत्रवो	२८९२	पत्नीवन्त सुता इम	२४५१	पिवापिबेदिन्द्र शूर ११११, २४८०	
निवेशनः संगमनो	२९२९	पदा पणीरराधसो	५२०	पिवा वर्षस्व तव	१३२५
नि शुष्ण इद्र धर्गासिं	२५६			पिवा सुतस्य रसिनो	१५६

पिषा सोममभि	१८४१	पौरौ अश्वस्य पुरुकृद्	५५३	प्रमंगं दुर्मतीनामिन्द्र	१८३५
पिषा सोममिन्द्र मंदतु	२१७१	प्र कृतान्यृजीषिणः	१८०	प्रभङ्गी शूरो मघवा	५६५
पिषा सोममिन्द्र सुवान	१०१२	प्र घा न्वस्य महतो	११६२	प्रभर्ता रथं गव्यन्तमपाकाब्धि	१५०
पिषा सोमं मदाय	२३३८	प्र चक्रे सहसा सहो	२३३	प्र मंहिष्ठाय वृहते	८११
पिषा सोमं महत	२७५५	प्र चर्षणिभ्यः पृतना०	३०२६	प्र मन्दिने पितुमदर्चता	८१७
पिबेदिन्द्र मरुसखा	६३६	प्रजाभ्यः पुष्टिं	११४०	प्र मन्महे शवसानाय	८७२
पिषाङ्गभृष्टिमभृष्टं	१०३८	प्रजामृतस्य पिप्रतः	२४४	प्र मात्राभी रिरिचं	१४११
पीवानं मेघमपचन्त	२५०७	प्रणीतिमिष्टे हर्यश्व	२७०७	प्र मे नमी साय	२५८७
पुत्रमिव पितरा०	२९६१	प्रणेतारं वस्यो भच्छा	३९१	प्र यत् सिन्धव	१३२८
पुनरेहि वृषाकपे	२६६०	प्र त इन्द्रः पूव्याणि	२७४२	प्र यद्विस्था महिना	१०६१
पुनीषे वामरक्षसं	३१२७	प्र तन् ते अद्या करणं	१८६८	प्र यन्ति यज्ञ विप०	२१६२
पुरंदारा शिक्षतं	३०२८	प्र तद् वोचयं	१००५	प्र यमन्तवृषसवासो	२५५३
पुरां भिन्दुयुवा	७३	प्र तमिन्द्र नशीमहि	२५१	प्र या जिगाति खर्गलेव	३२९४
पुरा संवाधादभ्या	११७९	प्रति घोराणामेता०	१०४९	प्र ये गृहादममदुस्त्वाया	२१३९
पुरुकुत्सानी हि	३१५९	प्रति चक्ष्व वि चक्षेत्रेन्द्रश्व	३३०२	प्र ये मित्रं प्रार्यमणं	२६७०
पुरुष्टतस्य धामभिः	१३३७	प्रति ते दस्यवे वृक	५४४	प्र यो ननक्षे अभ्योजसा	५१२
पुरुहृतं पुरुष्टुतं	२३९८	प्रति त्वा शवसी	४४७	प्र व इन्द्राय वृहते	२३८६
पुरुहृतो यः पुरुगूर्तं	२०२२	प्रति धाना भरत	१४५३	प्र व इन्द्राय मादन	२२२३
पुरुणि हि त्वा सवना	२६७७	प्रति प्र याहीन्द्र	१०४८	प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय	२९८९
पुरुतमं पुरुणां स्तोतृणां	२०८८	प्रति यत् स्या नीथादर्शि	८५१	प्र व उग्राय निष्टुरे	२०६
पुरुतमं पुरुणामीशान	१५	प्रति श्रुताय वो धृषत्	१८३	प्र व पान्तमन्वसो	३३०३
पुरु यत् त इन्द्र सन्त्युक्था	१७२०	प्रति स्मरेथां तुजय०	३२८४	प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय	११७२
पुरोळा इत् तुर्वशो	२१२४	प्र तुविष्टुस्य	१८६७	प्रवता हि क्रतूनामा	१६३४
पुरोळाशं सनश्रुत	१४४९	प्र ते अश्रोतु कुक्ष्योः	१४४५	प्र वर्तय दिवो अश्मा०२२८७; ३२९६	३२९६
पुरोळाशं च नो घसो	१४४८, १६६०	प्र ते अस्या उपसः	२५१६	प्रवाच्यं शश्वधा	१३००
पुरोळाशं नो अन्धस	६५१	प्र ते नावं न समने	११७८	प्र वाता इव दोधत	२८५१
पुरोळाशं पचयं	१४४७	प्र ते पूर्वाणि करणानि	१५३१; १६९८	प्र वामर्चन्त्युक्थिनां	३०३४
पुष्यात् क्षेमे अभि	१७५४	प्र ते बभ्रू विचक्षण	१६६६	प्र वामभ्रोतु सुष्टुति०	३१४२
पूर्णा दर्वि परा	२९१२	प्र ते वोचाम वीर्यां	१६५४	प्र वीरमुग्र विविचि	५००
पूर्वीरस्य निषिधो	१४३८	प्रसं रथीणां युजं	२०७८	प्र बोऽष्ठा रिरिचे	२५३४
पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो	७२	प्रसवज्जनया गिरः	३२७	प्र वो महे मन्दमाना०	२६०१
पूर्वीरुषसः शरदश्च	१५२९	प्रत्यस्मै पिपीषते	१९९८	प्र वो महे महि नमो	८७३
पूर्वीभिद्धि त्वे तुविकूर्मिन्नाशसो	६२४	प्र तु वयं सुते या	१६८४	प्र वो महे महिवृधे	२२३२
पूर्वीष्टे इन्द्रोपमातयः	३१०९	प्र तु वोचा सुतेषु वां	३०४६	प्र ससगुमृतधीतिं	२८४७
पूषणवते ते चक्रमा	१४५२	प्र नूनं धावता	९९७	प्र सत्राजं चर्षणीनामिन्द्रं	३८२
पूषक् प्रायन् प्रथमा	२५७३	प्र नेमस्मिन् ददशे	२५८८	प्र सत्राजे वृहते मन्म	३१६९
पृथू करन्ना बहुला	१८७३	प्रम वक्षिष्टुभमिषं	२३०४	प्र ससाहिधे पुरुहृत	२८३९
पृथाकुसालुर्धजतो	४०८	प्रमा वो अस्मे	१००७	प्र सु गमन्ता धियसानस्य	२५३०
पृषधे मेध्ये मातरिश्वनीन्द्र	५१६	प्र ब्रह्माणि नभाकव०	३१०५	प्र सु श्रुतं सुराधसमर्चा	४९५

प्र सु स्तोमं भरत	९९३	वृषदुक्थं हवामहे	१८९	भूरिकर्मणे वृषभाय	८४४
प्र सू त इन्द्र प्रवता	१२४३	वृहत् स्वश्रन्द्रममवद्	७६८	भूरि चकर्थ युध्येभिरस्ते	३२५६
प्रसृतो भक्षमकर	२८३१	वृहदिन्द्राय गायत	२३८४	भूरिभिः समह	२३३४
प्र सोता जीरो अध्वरेषु	३२४१	वृहन्त इन्नु यं	१११६	भूरित इंद्र वीर्यं	८१५
प्र स्तोषदुप गालिषच्छषत्	६७४	वृहन्नच्छायो अपलाशो	२५०४	भूरि दक्षेभिर्वचने०	२७५३
प्र हि क्रतुं वृहथो	३२७०	वृहन्निदिभ्य एषां	४४४	भूरिदा भूरि देहि	१६६४
प्र हि रिरिक्ष भोजसा	८९८	वृहस्पत इन्द्र वधंतं	३३२४	भूरिदा ह्यसि श्रुतः	१६६५
प्र शोशुचया उषसो	२६७३	वृहस्पतिर्नः परि	२५५६, २५६७; २५७८; ३३२८	भूरि हि ते सवना	२१७६
प्र श्येनो न मदिरमंशुमसै	१८८९	वृहस्पते तपुषाश्वेव	१२३०	भूरीदिन्द्र उदिनक्षन्त०	२४६५
प्राक्तभ्य इन्द्रः प्र	२६७२	वृहस्पते परिदीया	२९३२	भूरिदिन्द्रस्य वीर्यं	५३९
प्राग्भुवो नभन्वो	१५२८	वृहस्पते युवमिन्द्रश्च	३३२५	भूमिश्रित् वासि	१६४६
प्राच्या दिशस्त्वमिन्द्रासि	२९०४	बोधो सु मे मघवन्	२१७३	भोजं त्वामिन्द्र वयं	११८८
प्रातर्यावभिरा गतं	३०९७	बोधिन्मना इदस्तु	२४४७	मंहिष्ठं वो मघोनां	१७६३
प्राता रथो नवो	११९०	ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा	१३१५	मक्षु ता त इन्द्र दाना०	२४७६
प्रान्यश्चक्रमवृहः	१६७६	ब्रह्मन् वीर ब्रह्मकृतिं	२२१४	मखस्य ते तविषस्य	१३०२
प्राव स्तोतारं मघवन्नव	१७७०	ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि	२२०८	मघोनः स वृत्रहल्पु	२२४९
प्रास्तौहस्वौजा ऋषेभि०	२७१९	ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं	२०६६	मतयः सोमपामुहं	१३७७
प्रासै गायत्रमर्चत	९४	ब्रह्माणस्त्वा वयं	३९६	मसि नो वस्यहृष्टय	१०८५
प्रिया तष्टानि मे	२६४४	ब्रह्माणि मे मतयः शं	२९६९; ३२५३	मत्स्यपायि ते महः	१०७९
प्रियास इत् ते	२१४७	ब्रह्माणि हि चकृषे	१९२३	मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः	५०
प्रेता जयता नर	२७०२	ब्रह्मा त इंद्र गिर्वणः	२३९३	मत्स्वा सुशिप्र हरि०	२३७७
प्रेदं ब्रह्म वृत्रतूर्येष्वाविथ	१७७६	भृगो न चित्रो अग्नि०	२९९०	मदेनेषितं मदमुप्रमुप्रेण	१०७
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा	२२८३	भद्रमिदं रशमा	३३३७	मदेमदे हि नो ददियूथा	९२२
प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवच०	२७६३	भद्रंभद्रं न आ भरेषमूर्जं	२४५७	मनसस्पत हंमं नो	३१२७
प्रेरय सूरौ अर्थं	२५१९	भद्रा ते हस्ता सुकृतोत	१५५२	मनीषिणः प्र भरध्व	२७२५
प्रेष्टभीहि ष्टण्णुहि	९०२	भवा वरुथं मघवन्	२२४१	मनुष्वदिन्द्र सवनं	१२८६
प्रो अस्मा उपस्तुतिं	५६६	भिनत् पुरो नवतिमिन्द्र	१०१७	मन्त्रमखवं सुधित	२२४७
प्रोम्रां पीतिं वृष्ण	२७०५	भिनद् गिरि शवसा	१४९०	मन्द्न्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवो	२३२
प्रो द्रोणे हरयः	१९७४	भिनद् वलमङ्गिरोभि०	११६९	मन्दमान क्रतादधि	२६२७
प्रोष्टेशया वष्टेशया	२२७७	भिन्धि विश्वा अप	४८२	मन्दस्वा सु स्वर्णर	२८१
प्रो ष्वस्मै पुरोरथ०	२७७८	भीमो विवेषायुधे०	२१६४	मन्दिष्ट यदुशाने	७५५
बृहत्स्थिमा महिमा	३०४७	भुवस्त्वामिन्द्र ब्रह्मणा	२६०४	मन्द्रस्य कवेर्दिव्यस्य	१९८३
बृहत्विषयाय धाम्न	५८८	भुवो जनस्य दिव्यस्य	१९१५	मन्ये त्वा यज्ञियं	२३४८
बृहत्विषयाय स्वपत्याय	९३६	भुवोऽविता वामदेवस्य	१४८४	ममन्न ते मघवन्	१५१७
बृहत्विषयायः स्वविरः	२६९५	भूय इद् वावृधे	१९६८	ममन्न त्वा युवतिः	१५१६
बाधसे जनान् वृषभेव	२०९३	भूयसा वस्त्रमचरत्	१५८५	मम ब्रह्मेन्द्र	११९६
विभया हि त्वावत	४७७	भूयाम ते सुमती	१५७	ममत्तु त्वा दिव्यः	२७५७
बीभस्वनां सजुजं	३२७७	भूयामो यु त्वावतः	१६५०	मम त्वा सूर उदिते	११५
				मरुवन्तं वृषभं	१४१८; १८८१

मरुत्वन्तं हवामह	३२४७	मा ते अस्यां सहसावन्	२१४६	मो षु ब्रह्मैव तन्द्रयु०	२४२६
मरुत्वन्तमृजीषिण०	६३२	मा ते गोदत्र निरराम	४२४	मो षु त्वा वावतश्चना०	२२३५
मरुत्वाँ इन्द्र मीद्वः	६३४	मा ते राधांसि मा त	९५६	मो पू ण इन्द्रात्र	१०६७
मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो	१४१४	मा ते हरी वृषणा	१३१६	मो ष्वः घ दुर्हणावान्	१३५
मरुत्वोत्रस्य वृजनस्य	८२७	मा त्वा मूरा अविष्यवो	४६५	य आनयत् परावतः	२०६०
मह उग्राय तवसे	२३५४	मा त्वा सोमस्य गल्दया	१०६	य आयुं कुत्समतिथिगवर्दयो	५२६
महः सु षो अरमिषे	१८३३	मात्रे नु ते सुमिते	२५२०	य आस्ते यश्च चरति	२२७५
महत् तक्षाम गुह्य	२६१५	मादयस्व सुते सचा	९२३	य इद्ध आविवासति	३०६६
महश्चित् त्वमिन्द्र	१०४३	मादयस्व हरिभिर्ये	८२६	य इन्द्र चमसेष्वा	६८५
महाँ अमश्रो वृजने	१३२६	माध्यदिनस्य सवनस्य	१४५०	य इन्द्र यतयस्त्वा	२६०
महाँ असि महिष	१४१०	मा न इन्द्र पीयत्नवे	१३०	य इन्द्र शुष्मो मघवन्	२२०४
महाँ इन्द्र परश्च	४२	मा न इन्द्र परा	९८२	य इन्द्र सस्त्यवतो	९७८
महाँ इन्द्रो नृवदा	१८७१	मा न इंद्राभ्यादिशः	२४२७	य इन्द्राय सुवनत्	१५८३
महाँ इन्द्रो य ओजसा	२४३	मा न एकस्मिन्नागसि	४७६	य इन्द्र सोमपातमो	२८८
महाँ २ ऽ इद्रो वज्रहस्तः	२९६६	मा नो अज्ञाता वृजना	२२६१	य इन्द्राग्नी चित्रतमो	३००८
महाँ उग्रो वावृषे	१३२७	मा नो अस्मिन् मघवन्	७८६	य इन्द्राग्नी सुतेषु वां	३०४९
महाँ उतासि यस्य	२२२२	मा नो गुह्या रिप	३३५०	य इमे रोदसी उभे	१४६४
महाँ ऋषिर्देवजा	१४६१	मा नो निदे च वक्तवे	२२२७	य इमे रोदसी मही	२५९
महान्तं महिना वयं	३१०	मा नो मतां अभि	२३	य उकथा केवला दधे	५१७
महि क्षेत्रं पुरु	१२७४	मा नो मर्धारा भरा	१५४२	य उकथेभिर्न विन्धते	५०७
महि ज्योतिर्निहितं	१२५१	मा नो रक्षो अभि नञ्या०	३३००	य उग्र सन्ननिष्टृतः	२१८
महि महे तवसे	१७१७	मा नो वधीरिन्द्र मा	८५४	य उग्रीणासुप्रबाहुर्ययुषीं	२८६८
मही द्यौः पृथिवी च	२९९७	मां धुरिन्द्रं नाम	२५९१	य उह्वीन्द्र देवगोपाः	७८५
मही यदि धिषणा	१२७२	मा पापस्वाय नो	३०८१	य उद्र फलिगं भिनन्त्यश्क्	२०४
महीरस्य प्रणीतयः	३०८; २०६२	मा भूम निष्टया इवेन्द्र	९९	य उशता मनसा सोममस्मै	२८२६
महे चन त्वामद्रिवः	९१	मा भेम मा श्रमिष्मोप्रस्य	२३५	य ऋक्षादहसो	१८१६
महे शुक्राय वरुणस्य	३१७७	मायाभिरिन्द्रमायिनं	७६	य ऋज्जा वातरंहसो	४४१
महो हुहो अप विश्वायु	१८८८	मायाभिरुत्सिसृप्तत	३६७	य ऋते चिद् गास्पदेभ्यो	१५४
महोभिरेतां उप	३२५४	मारे अस्मद् वि मुमुचो	१३८०	य ऋते चिदभिःश्रिषः	९८
महो महानि	१३०६	मा सख्युः शूनमा	४७८	य ऋषः श्रावयत्सखा	१८२८
महो यस्पतिः शवसो	२४६८	मा सोमवद्य आ भागुर्वी	६६८	य एक इच्छयावयति	१४९२
मह्यं त्वष्टा वज्रमत०	२५८१	मा त्वेधत सोमिनो	२२४३	य एक इत् तमु	२०७५
मह्या ते सख्यं वशिभ	१२७३	मिहः पावकाः प्रतता	१२७९	य एक इद्धव्यश्रवणीना०	१९०७
मा कस्य नो अरुषो	३०८६	मुखं सदस्य शिर ऽ इत्	२९४६	य एक इद् विदयते	९४३
माकिर्न एना सख्या	२४८७	मुञ्चामि त्वा हविषा	३११३	य एकश्रवणीनां	३६
माकुड्यगिन्द्र शूर	२४७७	मुषाय सूर्य कवे	१०८२	य एको अस्ति	११३
मा चिदन्वद् वि शंसत	८७	मूढा अभिन्नाश्रता०	२८९४	य भोजिष्ठ इन्द्र तं सु	२०१६
मा ष्टेद्य रश्मीरिति	३०२३	मूषो न शिक्षा व्यदन्ति	२५४०	यं युवं दाश्वध्वराय	३१६६
मा जस्वने वृषभ	२०४६	मृगो न भीमः कुचरो	२८४०	यं वर्धयतीद्	२०४०
मा ते अमाजुरो यथा	४२३	मेडिं न त्वा वज्रिणं	२९८३		

य विप्रा उक्थवाहसो०	३००	यज्ञे दिवो नृषदने	२२७८	यदाङ्गि वात्याजिकृदिन्द्रः	४४९
यं वृत्रेषु क्षितिय	२९८५	यज्ञेन गातुमन्तुरो	१२२१	यदा ते माहृतीर्विश०	३१६
य सुपर्णः परावत०	२८०१	यज्ञेनेन्द्रमवसा	१२९४	यदा ते विष्णुरोजसा	३१४
य सोममिन्द्र पृथिवी०	१४१३	यज्ञैरथर्वा प्रथमः	९३५	यदा ते हर्यता हरी	३१५
यं स्मा पृच्छन्ति	११२६	यज्ञो हि त इन्द्र	१२९३	यदा वज्रं हिरण्यमिदधा	२४८३
यः कृक्षिः सोमपातम	४४	यज्ञो हि ष्मेन्द्रं	१०६६	यदा वृत्रं नदीवृत्तं	३१३
यः कृन्तदिद् वि	४७२	यत् इन्द्र भयामहे	५६०	यदा समर्थं इयचे०	१५८४
यः पुष्पिणीश्च	११४३	यत् तुवत् सूर	९७	यदा सूर्यमसु दिवि	३१७
यः पृथिवीं व्यथमानाम०	११२३	यत् ते दिस्सु प्रारध्यं	१७६२	यदि क्षितायुर्थदि	३११४
यः प्रथम कर्मकृत्याय	२८७२	यत् त्वा यामि दद्धि	२८४९	यदिन्द्र चित्र मेहना	१७६०
यः शक्रो मृक्षो अश्वयो	६१५	यत् पाञ्चजन्यया	५८४	यदिन्द्र ते चतस्रो	१७३७
यः शग्मस्तुविशग्म	२०३७	यत्र प्रावा पृथुबुध	६८८	यदिन्द्र दिवि पार्थे	१२९२
यः शम्बरं पर्वतेषु	११३२	यत्र देवां ऋघायतो	१६१३	यदिन्द्र नाहुषीर्वा	२०९६
यः शश्वतो महेतो	११३१	यत्र द्वाविष्व जघनाधिष्वपया	६८९	यदिन्द्र पूर्वां भपराय	२१५७
यः शूरोभिर्हव्यो यश्च	८२२	यत्र नार्यपच्यवमुपच्यवं	६९०	यदिन्द्र पृतनाजये	३१२
यः संस्थे चिच्छतक्रुरादीं	१९०	यत्र मन्थां विवधते	६९१	यदिन्द्र प्रागपागुदङ्	२२९; ६०१
यः संग्रामाञ्जयति	२८७३	यत्र शूरासस्तन्वो	२१०१	यदिन्द्र मन्त्रशस्त्रः	३८०
यः सप्तारिर्मर्षुपभ०	११३३	यत्रा नरः समयन्ते	३१८३	यदिन्द्र यावतस्त्र०	२२५२
यः सत्राहा विचर्षणि०	२०९२	यत्रोत बाधितेभ्य०	१६१२	यदिन्द्र राधो भस्ति	५३५
य सुन्वते पचते	११३६	यत्रोत मर्त्याय	१६१४	यदिन्द्र शासो भव्रतं	२९८२
यः सुन्वन्तमवति	११३५	यत् सानोः सानुमारुहद्	५९	यदिन्द्र सर्गे भवत०	२१०२
यः सुपच्यः सुदक्षिण	२१४	यत् सोम आ सुते	३०८८	यदिन्द्राग्नी भवमस्यां	३०१६
य सृबिन्दमनर्शानि	१८१	यत् सोममिन्द्र	३०३	यदिन्द्राग्नी उदिता	३०१९
यं क्रन्दसी संयती	११२९	यथा कण्वे मघवन्	५०४	यदिन्द्राग्नी जना	३१०७
यच्चिद्धि ते अपि	४६१	यथा गौरो भपा कृतं	२३१	यदिन्द्राग्नी दिवि	३०१८
यच्चिद्धि त्वा जना	८९	यथा मनौ विष्वस्वति	५१५	यदिन्द्राग्नी परमस्यां	३०१७
यच्चिद्धि शश्वतामर्सान्द्र	६०७, १६५७	यथा मनौ सांवरणौ	५०५	यदिन्द्राग्नी मद्यः	३०१४
यच्चिद्धि सत्य सोमपा	६९२	यथा वृक्षमशानि	२९०६	यदिन्द्राग्नी यदुषु	३०१५
यच्छक्रासि परावति	३३५; ९७९	यथा पूर्वैभ्यो जरितृभ्य १०८४; १०९०	४९४	यदिन्द्राहं यथा	३५४
यच्छुश्रूया इमं हवं	४६०	यथा प्रावो मघवन्	४९४	यदिन्द्राहन् प्रथमजामहीना	७१८
यजध्वेनं प्रियमेधा	१५२	यदङ्ग तविषीयस	२६८	यदिन्द्रो अनयम्रितो	३३३३
यजाम इक्षमसा	१२८८	यदचरस्तन्वा वावृधानो	२६०९	यदिज्ञिन्द्र पृथिवी	७७०
यजामह इन्द्रं	२४८१	यदज्ञातेषु वृजनेऽवासं	२४९४	यदि प्रवृद्ध सत्यते	२९५
यजायथा अपूर्व्यं	२३८८	यदद्य कञ्च वृत्रहन्नुद्गा	२४३३	यदि मे रारणः सुत	१८५
यजायथास्तदहस्य	१४२०	यदद्य त्वा प्रयति	३१२०	यदि मे सख्यमावरं	३४१
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्	३५८	यदन्तस परावत०	१३७२	यदि वाहमनृतदेवो	३२९१
यज्ञ यज्ञ गच्छ	३१२४	यद्वज्रं प्रथमं	३०१३	यदि स्तोमं मम	१०१
यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा	३०९१	यद्वर्जुन सारमेय	२२७१	यदीं सुतास इन्द्रवो	४९७
यज्ञेभिर्ज्ञवाहसं	३०७	यदस्य धामनि प्रिये	३१९	यदीं सोमा बभूधृता	१६९२
		यदस्य मन्युरध्वनीद्	२५५	यदीदहं युषये संनया०	२४९२

बदीमिन्द्र अवाच्यमिधं	१७५६	यस्त इन्द्र महीरपः	२५८	यस्य छावापृथिवी	८१९
बदी सुतेभिरिन्दुभिः	२०००	यस्ता चकार स	१९००	यस्य द्विबर्हसो	३७०
बहुदञ्जो वृषाकपे	२६६१	यस्मिन्मशृङ्गो वृषभो	२१४०	यस्य मंदानो अन्धसो	२००५
बहुदीरत आजयो	२१८	यस्ते अनु स्वधामसत्	१४४४	यस्य वशास ऋषभास	२८७०
बहुष भौष्णः प्रथमा	२६१७	यस्तेऽङ्कुशो वसुदानो	२९०१	यस्य विश्वानि हस्तयो	१०८७
बद् दधिषे प्रदिवि	२२८०	यस्ते चित्रश्रवस्तमो	२४१३	यस्य विश्वानि हस्तयोरुचु०	२०६७
बद् दधिषे मनस्यसि	४७३	यस्ते नूनं शतक्रत	२४१२	यस्य शश्वत् पपिवाँ	२७३९
बद् छाव इन्द्र ते	२३२५	यस्ते मदः पृतनाषाळमृध	१८७७	यस्य संस्थे न वृषवते	१७
यद् नूनं परावति	५०१	यस्ते मदो युज्यश्चाररस्ति	२१७२	यस्याजस्र शवसा	९७०
यद् नूनं यद्वा यज्ञे	४९१	यस्ते मदो वरेण्यो	१८२४	यस्यानक्षा दुहिता	२५०१
यद् स्या त इन्द्र	१०९६	यस्ते रथो मनसो	२७३६	यस्यानासः सूर्यस्येव	९५८
बद् योधया महतो	२२८२	यस्ते रेवाँ अदाशुरिः	४५७	यस्यानूना गभीरा	३८५
यद्दूर्ध्वो हिरण्यस्य	२९९५	यस्ते शृङ्गवृषो	४०६	यस्यामितानि वीर्याँ	१८१०
यद्वा वृक्षौ मघवन्	२०९७	यस्ते साधिष्टोऽवस	१७३६	यस्यायं विश्व आर्यो	५१३
यद्वा दक्षस्य विभ्युषो	१९१२	यस्ते साधिष्टोऽवसे	५३१	यस्यावधीत् पितरं	१७३०
यद्वा प्रबुद्ध सत्पते	२४३४	यस्पतिर्वार्याणामसि	२४९०	यस्याश्वासः प्रदिसि	११२८
यद्वा प्रस्रवणे दिवो	६०२	यस्मा अन्ये दशप्रति	१७८	यस्येदमा रजो युज०	२८८७; २९९३
यद्वा मरुत्वः परमे	८२४	यस्मा अर्कं सप्तशीर्षाणमानुचु०	५०८	र्यो आभजो	१३२०
यद्वा रुमे रुगमे	२३०	यस्मादिन्द्राद् बृहत	११७३	या इन्द्र प्रस्वस्वा	२६२
यद्वावन्ध पुरुष्टुत	६१७	यस्मान्न ऋते विजयन्ते	११३०	या इन्द्र भुज आभरः	२७६
यद्वावान पुरुतमं	२६३९	यस्मान्न जातः परो०	२९२८	या त ऊतिरभिन्नहन्	२०७३
यद्वा शक्र परावति	३०४	यस्मिन्नुक्तानि रण्यन्ति	३८३	या त ऊतिरवमा	१९३८
यद्वासि रोचने दिवः	९८०	यस्मिन् वयं दधिमा	२५५१	या ते काकुत् सुकृता	१९२४
यद्वासि सुन्वतो वृधो	३०५	यस्मिन् विश्वा अधि	२४१६	यानावह उशतो देव	३१२२
यद्दीळाविन्द्र यत्	४८३	यस्मिन् विश्वा अर्षण्य	१४८	यानीन्द्रामी चक्रथुर्वीर्याणि	३०१२
बद् वृत्रं तव चाशानिं	९१२	यस्मै त्व मघवर्क्षिद्र	५२२	या नु श्वेताववो	३१०८
यं ते इयेनः पदाभरत्	६८७	यस्मै त्वं वसो दानाय	५१०; ५२०	या पृतनासु दुष्टरा	३०४१
यं ते इयेनश्वा०	२८०२	यस्मै धायुरदधा	१२४४	याभ्यामजयन्स्व ऋषभ	३१३२
यं ते स्वादावन्स्वदन्ति	४९९	यस्य गा अन्तरइमनो	२००४	यामथर्वा मनुष्यिता	९१५
यं त्वं रथमिन्द्र	१०००	यस्य गावावरुषा	१९६१	यावती छावापृथिवी	२९७४
यज्ञ इन्द्रो जुजुषे	१५५५	यस्य जुष्टि सोमिनः	१८७१	यावत् तरस्तन्त्रो	३२३७
यं नु नकिः पृतनासु	१४२५	यस्य तीव्रसुतं	२००३	यावदिदं भुवन	३००२
यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र	१७६१	यस्य ते नू चिदादिशं	२४४०	या वाँ सन्ति पुरुस्पृहो	३०६३, ३२२९
यमा चिदत्र	१३५७	यस्य ते महिना महः	२२९३	या वाँ शतं नियुतो	३२३९
यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं	९७७	यस्य ते विश्वमानुषाँ	४८४	या विश्वासां जनितारा	३३०७
यमिमं त्वं वृषाकपिं	२६४३	यस्य ते स्वादु सख्यं	२३०१	या वीर्याणि प्रथमानि	२७५१
यं मे दुरिन्द्रो मरुतः	१७६	यस्य त्वच्छम्बरं	२००२	या वृत्रहा परावति	४६७
यस्त्वैणिप्रो वृषभः	२८६९	यस्य त्वत् ते महिमानं	२७३८	यासां तिस्रः पञ्चाशतो	१०३७
यश्चिद्वि त्वा बहुम्ब	९४५	यस्य त्वमिन्द्र रजोमेधु	५१८	यामि कुत्सेन सरथ०	१४७७
यज्ञ इन्द्र प्रिवो जनो	२१५८			युक्तस्ते अस्तु वृक्षिण	९२९

युक्ष्वा हि केशिना हरी	६०	येन उयोतींष्यायवे	३७३	यो नो वनुष्यन्नाभिदाति	२९८४
युक्ष्वा हि वृत्रहन्तम	१७२	येन मानासश्चितयन्त	३२६७	यो भोजनं च दयसे	११४२
युजं हि मामकृथा	१६८९	येन वृद्धो न शवसा	२०३८	यो मा पाकेन मनसा २२८५; ३२८५	
युजा कर्माणि जनयन्	२६२१	येन सिन्धुं महीरपो	२९०	यो मायातुं यातुधाने० २२८६; ३२९३	
युजानो अश्वा वातस्य	२४६९	येन सूर्या सावित्री	२९००	यो रध्रस्य चोदिता	११२७
युजानो हरिता रथे	२११७	येना दशरवमध्रिगुं	२८९	यो रथिबो रथिन्तमो	२०३६
युजे रथ गवेषण	२१८२	येना समुद्रमसृजो	१६५	यो राजा चर्षणीनां	२३२१
युञ्जन्ति ब्रह्ममरुषं	२४	येनेमा विश्वा च्यवना	११२५	यो रायोऽवनिर्महान्	१३; १९२
युञ्जन्ति हरी इपि	२३७२	ये पाकशंसं विहरन्त	३२८६	यो रोहितौ वाजिनौ	१७४२
युञ्जन्त्यस्य काम्या	२५	ये पातयन्ते अउमभि०	१८३४	यो वाचा विवाचो	२४८५
युधा युधमुप घेदेषि	७८१	येभिः सूर्यमुषसं	१८४५	यो विश्वस्य जगत	८२१
युधेन्द्रो मङ्गा	१३०७	ये वायव इंद्रमादनास	३२४२	यो विश्वान्यभि व्रता	२०७
युधमं सन्तमनर्वाणं	२४०४	येवाषास कऋषास	२८८०	यो वृत्राय सिनमत्रा०	१२२८
युधमस्य ते वृषभस्य	१४०९	ये सोमासः परावति	२४३५	यो वेदिष्ठो अयथिष्वश्वावन्तं	१३९
युधमो अनर्वा खज	२१५३	यो अक्षयौ परिसर्पति	२८७६	यो व्यंसं जाहृषाणेन	८१८
युनक्ति ते ब्रह्मणा	९३०	यो अदधाज्जयोतिषि	२६१३	यो व्यतीरफाणयत्	२३१५
युयोप नाभिरपरस्यायोः	८५०	यो अप्सु चन्द्रमा इव	६८६	यो हस्वाहिमरिणात्	११२४
युवं सुराममश्विना	२९६०	यो अर्यो मर्तभोजनं	९२१	रथ हिरण्यवन्धुर०	३२२३
युवं तमिद्रापर्वता	१०३३	यो अश्वानां यो गवां	८२०	रथिरासो हरयो	५०२
युवं प्रतनस्य साधथो	१३५३	यो अस्मै घ्नस उत	१७२९	रथेन पृथुपाजसा	३२२४
युवां हवन्त उभयास	३१८७	यो गृणतामिदासिथा०	२०७६	रथेष्टायाध्वर्यवः	२४१
युवाकु हि शचीनां	३१३७	योगेयोगे तवस्तरं	७०५	रपत् कविरिन्द्रार्कसातो	१०७५
युवां नरा पश्यमानास	३१८२	यो जात एव प्रथमो	११२२	राजेव हि जनिभिः	२१२०
युवामिन्द्रयवसे	३१५२	यो दध्नेभिर्हृष्यो	२५४४	रायस्कामो वज्रहस्तं	२२३७
युवामिद्र युःसु	३१७५	यो दुष्टरो विश्ववार	१८२५	राया वयं ससर्वापो	३१६०
युवामिन्द्राभी वसुनो	३०२५	यो देवो देवतमो	१५५७	रारन्धि सवनेषु	१३७६
युवाभ्यां देवी	३०२४	योद्धासि ऋत्वा शवसोत	८९७	रासि क्षयं रासि	१११४
युवो राष्ट्रं बृहदिन्वति	३१९३	यो धृषितो योऽवृत्तो	२१५	रुद्राणामेति प्रदिशा	८२३
ये क्रिमयः शितिकक्षा	२८७८	यो न इदमिदं पुरा	४१७	रूपरूपं प्रतिरूपो	२११६
ये गव्यता मनसा	२८९९	यो न इंद्राभितो	२७८१	रूपरूपं मघवा	१४६०
ये च पूर्वं ऋषयो	२१७९	यो न इंद्राभिदासति	२७८२	रेवतीर्नः सधमाद	७११
ये चाकनन्त चाकनन्त	१७०४	यो नः शश्वत् पुराविथा०	६६२	रेवो इद् रेवत	१२८
ये ते पन्थानोऽव	२९१२	यो नार्मरं सहवसुं	११४४	रोहिच्छावावा	९७२
ये ते विप्र ब्रह्मकृनः	२६०७	योनिष्ठ इंद्र निषदे	८४७	रोहितं मे पाकस्यामा	१७७
ये ते वृषणो वृषभास	१०९२	योनिष्ठ इंद्र सदने	२१८६	सृजं यश्चक्रे सुहनाय	२७२०
ये ते शुभ्रं ये	१२८४	यो नो दाता वसूनामिन्द्रं	५०९	वज्रेण हि वृत्रहा	२७३०
ये ते सन्ति दशग्विनः	९५	यो नो दाता स नः	५१९	वधीं वृत्रं मरुत	३२५७
ये स्वामिन्द्रं न	२५४	यो नो दास भार्यो वा	२५४३	वधीदिन्द्रो वरशिखस्य	१९५९
ये स्वाहिहृष्ये मघवन्	१४१७	यो नो देवः परावतः	२९३	वधीर्हि दस्युं धनिनं	७३३
		यो नो रसं दिप्तति	३२८७	वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति	१७५२

बनीवानो मम कृतास	२८४८	वस्यां इन्द्रासि मे	९२	वि न इन्द्र मृधो जहि	२८१७
घने न वा यो न्यधायि	२५१५	वह कुत्समिन्द्र	१०७३	वि पिप्रोरहिमायस्य	१८९०
घनेम तद्धोत्रया	१००६	वहन्तु त्वा रथेष्ठाया	२२३	विभ्राजज्जयोतिषा	२३६६
घनोति हि सुन्वन्	१०४०	वाचमष्टापदीमहं	६३९	वि यद्देहेरध त्विषो	२४४३
घन्नीभिः पुत्रममुवो	१५३०	वाचस्पतिं विश्वकर्मां०	२९३१	वि यत् तिरो धरुणमच्युतं	८०९
वयं शूरेभिरस्तृभिः	४१	वाजस्य मा प्रसव	२९३६	वि यद् वरांसि पर्वतस्य	१५५१
वयं हित्वा बन्धुमन्तमबन्धवो	४१२	वाजेषु सासहिर्भव	१३३९	वि यो रराश ऋषिभिः०	१५३७
वयः सुपर्णा उप सेदुः	२६३३	वातस्य युक्तान्सु०	१७०१	वि रक्षो वि मृधो	२८१६
वयं घ त्वा सुतावन्त	२१०	वामं वाम त आदुरे	१६२९	विवेष यन्मा धिषणा	१२९५
वयं घा ने अपिष्मसि	१८६	वायविन्द्रश्च चेतथ०	३२११	विवक्ष्य महिना	२४१९
वयं घा ते अपूर्व्येन्द्र	६२३	वायविन्द्रश्च शुग्मिणा	३२२८	विशंविशं मघवा	२५६२
वयं घा ते त्वे हृद्विन्द्र	६२५	वायविन्द्रश्च सुन्वत	३२१२	विशं सत्यं मघवाना	३३५९
वयं जयेम स्वया	८३१	वार्णा त्वा यन्याभिः	२३७१	विश्वजिते धनजिते	१२१७
वयं त इन्द्र स्तोमेभिर्विधेम	५३८	वार्हहत्याय शवसे	१३३४	विश्वामित् सवनं	८५
वयं त एभिः पुरुहूत	१८८३	वावृधान उप घवि	२८२	विश्वस्मात् सीमधमाँ	१६०२
वयं ते अस्य वृत्रहन्	१७९७	वावृधानः शवसा	२७६५	विश्वो अर्यो विपश्चितो	६०९
वयं ते अस्यामिन्द्र	१९५४	वावृधानस्य ते वयं	३५९	विश्वा पृतना अभिभूतरं	९८५
वयं ते त इन्द्र ये	१७२१, २२२१	वावृधानो मरुत्सखेन्द्रो	६३०	विश्वा द्वेषांसि जहि	५२८
वयं ते वय इन्द्र	१२०८	वास्तोष्पते ध्रुवा	४०७	विश्वानरस्य वस्पति०	२२९४
वयमिन्द्र त्वे सचा	१६४८	वि क्रोशनासो विव्वञ्च	२५०८	विश्वानि विश्वमनसो	१७९६
वयमिन्द्र त्वायवः	२७८३	वि चिद् वृत्रस्य दोधतो	२४८	विश्वानि शक्रो नर्याणि	१४७२
वयमिन्द्र त्वायवो	२२२६	वि जानीह्यार्यान् ये	७५२	विश्वामित्रा भरासत	१४६५
वयमु त्वा शतक्रनो	२४०८	वि तर्ह्यन्ते मघवन्	९०	विश्वा रोधांसि	१५५८
वयमिन्द्र त्वायवो	१३७९	वि तिष्ठध्व मरुतो	३२९५	विश्वा हि मर्यस्वना	२४०९
वयमु त्वा तदिदर्था	१३१	वि ते वज्रासो अस्थिरक्षवतिं	९०७	विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता	८३८, ९७५
वयमु त्वा दिवा सुते	५९४	वित्वक्षणः समृतौ	१७३२	विश्वे चनेदना त्वा	१६११
वयमु त्वामपूर्यस्थूरं	४०९	वि त्वदापो न पर्वतस्य	१९३३	विश्वे त इन्द्र वीर्यं	५७२
वयमेनमिदा ह्यो	६१९	वि त्वा ततन्ने मिथुना	१०२३	विश्वेत् ता ते	९९६
वधो न वृक्षं सुपलाश०	२५६०	विद् यद्दी सरमा	१२६५	विश्वेत् ता विष्णुराभर	६४९
वरिष्ठे न इन्द्र	२१०७	विदुष्टे अस्य वीर्यस्य	१०२४	विश्वेदनु रोधना	११४६
वरिष्ठो अस्य दक्षिणामियतीन्द्रो	१९७६	विदुष्टे विश्वा भुवनानि	३१५७	विश्वे देवासो अध	२७५२
वरुणः क्षत्रमिन्द्रियं	२९५६	वि दृढहानि चिद्विबो	२०६८	विश्वेषामिरज्यन्तं	१८३२
वर्धस्वा सु पुरुष्टुत	३४५	विद्या सखिस्वसुत	४१६	विश्वेषु हि त्वा	१०२२
वर्धाद् यं यज्ञ	१९८१	विद्या हि त्वा तुविकूर्मिं	६७१	विश्वे ह्यस्मै यजताय	११७५
वर्धान् यं विश्वे	१८५१	विद्या हि त्वा धनंजयं वाजेषु	१३८७	विश्वो ह्यभ्यो भरिराजगाम	२५२३
ववक्ष इन्द्रो अमित०	१४७१	विद्या हि त्वा धनंजयमिन्द्र	४५५	वि पु विश्वा अभियुजो	४५०
ववक्षुरस्य केतव	२९४	विद्या हि त्वा वृषन्तमं	६७	वि पु विश्वा भरातयो	२७८०
ववक्षुतेभ्यो ववक्षुतेभ्यः	३१२६	विद्या हि यस्ते आद्रिव०	२४१४	वि पू चर स्वधा	१९८
वसुनां वा चर्कष	२६३४	विद्या ह्यस्य वीरस्य	१३६	विषूचो अश्वान्	३०५०
वसोरिन्द्रं वसुपतिं	५६	विधुं दद्राणं ममने	२६१८		



वि पू मृधो जनुषा	१६८८	वेथा हि निर्कन्तीनां	१८१३	शास इथा महौ अस्य०	२८१४
विपूवृदिन्द्रो भमतेरुत	२५५२	वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं	२२१२; २२१७; २२२२	शासद् वाङ्मूर्तुहितु०	१२६०
विष्पधंसो नरां	१०६५	व्यभन्तरिक्षमतिन्मदे	३६०	शिक्षा ण इन्द्र राय	२४०५
वि सद्यो विश्वा दंहिता०	२१३१	व्यन्तिवन्नु येषु	१११५	शिक्षेयमस्मै दिस्सेयं	३५५
वि सूर्यो मध्ये	२७९४	व्यथर्थ इन्द्र तनुहि	२७६०	शिक्षेयमिन्महयते	२२५३
वि स्तुतयो यथा पथा	२९९१	व्यानलिन्द्रः पृतनाः	२५२२	शिमिन् वाजानां	६९३
वि हि स्वामिन्द्र	२७४१	शंसा महामिन्द्रं	१४२४	शुक्रस्याथ गवाशिर	३२२०
वि हि स्रोतोरसृक्षत	२६४०	शंसावाध्वर्यो प्रति	१४५५	शुचिं नु स्तोमं	३०७१
वि ह्यख्यं मनसा	३०२१	शंसेदुक्थं सुदानव	२२२४	शुचिरसि पुरुनिःष्ठाः	१२४
वीन्द्र यासि दिव्यानि	२५३१	शग्धी न इन्द्र यत्	१६६	शुनं हुवेम मघवान० १२५९; १२८१;	१२५९; १२८१;
वीरेण्यः क्रतुरिन्द्र	२७१२	शग्धी नो अस्य यद्	१६७	१२९८; १३११; १३२२; १३३३; १३५४;	१३६३; १३९८; १४२३; १४२८; १४३३;
वीळु चिदारुजन्तुभि०	३२४५	शग्ध्युःषु शचीपत	५५२	२६७९; २७१३	
वीळी सतीरभि	१२६४	शचीव इन्द्र पुरुकृद्	७७७	शुभ्रं नु ते शुभ्रं	११०४
वृरुश्विदस्य वारण	६२०	शचीव इन्द्रमवसे	२६३८	शुष्णं पिप्रुं कुयवं	८४६
वृक्षेवृक्षे नियता	२५१२	शचीवतस्ते पुरुशाक	१९३१	शुष्मासो ये ते अद्रिवो	१७५७
वृज्याम ते परि द्विषो	४५२	शतं वा यः शुचीनां	७००	शुष्मिन्तमं न ऊतये	१३४१
वृत्रखाद्यो वल्लरुजः	१४०५	शतं वा यस्य दश	११४५	शुष्मिन्तमो हि ते	१०८३
वृत्रस्य स्वा श्वसथा०	२३५१	शतं वा यदस्युयं	२७२४	शूरो वा शूरं वनते	१९४१
वृत्राण्यन्यः समिथेषु	३१९०	शतं वेणूळत शुनः	५४१	शृणुतं जरितुर्हव०	३०८०
वृत्रेण यदहिना	२७४७	शतं इत्रेतास उक्षणी	५४०	शृण्वे वीर उग्रमुग्रं	२११४
वृषणस्ते अभीशवो	२२०	शतक्रतुमर्णवं	१४३५	शेवारे वार्यां पुरु	१०८
वृषभो न तिग्मशृङ्गो	२६५४	शतं जीव शरदो	३११६	शेषन् नु त इन्द्र	१०७२
वृषसिद्ध वृषपाणाल	१०४१	शतेना नो अभिष्टि०	३२२१	अथद् वृत्रमुत	३०५६
वृषाकपायि रेवति	२६५२	शतं ते शिमिन्नुतयः	२१९४	इयावाश्वस्य रेभत०	१७८२
वृषा प्रात्रा वृषा	३५२, १७६६	शतब्रह्म ह्युस्त्वव	६४६	इयावाश्वस्य सुन्वत०	१७७५
वृषा जजान वृषणं	२१५५	शतमइमन्मयीनां	१६२५	इयावाश्वस्य सुन्वतो	३०९८
वृषा ते वज्र उत	११७७	शतं मे गर्दभानां	५४६	श्रुत् ते दधामि प्रथमाय	२८०४
वृषा स्वा वृषणं वर्धतु	१७४८	शतानीका हेतयो	४९६	श्रवच्छुर्कणं ह्ययते	२२३९
वृषा स्वा वृषणं हुवे	३५३; १७६७	शतानीकेव प्र	४८६	श्रातं हविरो षिंत्रद्	२८३७
वृषा न क्रुद्धः पतय०	२५६४	शतैरपद्रन् पणय	१८८७	श्रातं मन्य ऊधनि	२८३८
वृषा मद इन्द्रे	१९२८	शत्रूयन्तो अभि ये	२६७६	श्रायन्त इव सूर्य	२३७८
वृषायमाणोऽवृगीत	७१७	शनैश्चिद् यन्तो	४५३	श्रावयेदस्य कर्णा	१६०६
वृषायमिन्द्र ते रथ	३५१	शवस्त ह्यसि श्रुतो	१७९१	श्रिये ते पादा दुव	१९६४
वृषा यूथेव वंसगः	३५	शविष्ठं न आ भर	१८७६	श्रिये ते पृश्निरुपसेचनी	२७२३
वृषा वृषान्धि	१५५६	शशः क्षुरं प्रत्यञ्जं	२५२८	श्रुतं वो वृत्रहन्तमं	२४४५
वृषासि दिवो	२०५६	शश्वदिन्द्र पोप्रुथन्निर्जिगाय	७१४	शुधी न इन्द्र ह्यवामसि	१९४७
वृषा सोता सुनोतु	२२१	शश्वन्तो हि शत्रवो	२१३६	शुधी हवं विपिपान०	२१७४
वृषा ह्यमि राधसे	१७३९	शाकमना शाको अरुणः	२६१९	शुधी हवं तिरश्चया	२३३९
वृष्णं कोश पवते	११७६	शाधिगो शाधिपूजनाऽयं	४०५	शुधी हवामिन्द्र	११०१; २८१३
वृष्णे यत् ते वृषणो	१६९७				

श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः	३१६१	स वेदुतासि वृत्रहन्	१६२७	सदिद्धि ते तुविजातस्य	१८५९
श्रित्यञ्चो मा दक्षिणतः	२२६२	सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे	५४	सद्येव प्राचो वि	११६४
स आ गमदिन्द्रो	१७४४	सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रैः	१२५३	सद्यश्चिन्तु ते मघवन्	२१४८
स इत् तमोऽवयुनं	१८९९	सचन्त यदुषस	२७३१	सद्योजुवस्ते वाजा	६७८
स इत् सुदानुः स्ववाँ	३१६५	सचस्व नायमवसे	१९३७	सद्यो ह जातो	१४१९
स इद् दासं तुवीरवं	२६८५	सचायोरिन्द्रश्रकृष	२७१७	स द्रुह्णे मनुष	२६८६
स इद् वने नमस्युभिर्वचस्यते	८००	सचा सोमेषु पुरुहूत	६१८	स धारयत् पृथिवीं	८४०
स इन्दु रायः सुभृतस्य	२८०७	सं च स्वे जग्मुर्गिर	२०२१	सध्रीचीः सिन्धुमुशतीरिवायन्	२७३४
स इन्महाभि समिथानि	८०१	सं षोदय चित्रमर्वाग्	५२	सध्रीमा यन्ति	११३८
स इषुहस्तैः स नि०	२६९४	स जातुभर्मा अद्धान	८४१	स न इन्द्रः शिवः	२४३२
स ईं पाहि य ऋजीषी	१८४२	स जातेभिर्वृत्रहा	१२७०	स न इन्द्र त्वयताया २१६०;	२१७०
स ईं महीं धुनिमेतो०	११६६	स जाभिभिर्यत्	९६७	स नः क्षुमन्तं सद्ने	२५४२
स ईं स्पृधो वनते	१८९२	सजोषा इन्द्र सगणो	१४१५	स नः पमिः पारयाति	३९२
सं यजनान् ऋतुभिः	१०३२	सतः सतः प्रतिमानं	१२६७	स नः शक्रश्चिदा	१९१
सं यजनौ सुधनौ	१७३४	स तुर्वणिर्महाँ अरेणु	८०७	स नः सोमेषु सोमपाः	९८१
सं यत् त इन्द्र मन्यवः	१६३५	स तु श्रुधि श्रुत्या	२०३५	स न स्तवान	१७९२
सं यद्वयं यवसादो	२४९९	स तु श्रुधीन्द्र नूतनस्य	१९०४	स नश्चित्राभिरद्विवो	१६४९
सं यन्मदाय श्रुषिमण	७०१	सत्तो होता न ऋत्विग्य	१३७४	सनद्वाजं विप्रवीरं	२८४५
सं यन्मही मिथती	३०७५	सत्य तत् तुर्वशे	४६९	सना ता त इन्द्र भोजनानि	२१४५
सं वां कर्मणा समिषा	३३०६	सत्यं तदिन्द्रावरुणा	३२०४	सना ता त इन्द्र नभ्या	१०७६
सं होत्रं स्म पुरा	२६४९	सत्यमित् तन्न	१९७१	सनात् सनीळा अवनीरवाता	८८१
सः स्तोम्यः स हव्यः	३८९	सत्यमिस्था वृषेदसि	२१९	सनादेव तव रायो	८८३
संक्रन्दनेनानिमिषेण	२६२३	सत्यमिद् वा उ तं वयमिन्द्रं	५७७	सनाद् दिवं परि	८७९
सखाय आ शिषामहि	१७९०	स त्वं न इन्द्र धियसानो	१७१८	सनामाना चिद् भवसयो	२६२८
सखायः ऋतुमिच्छत	२३३३	स त्वं न इन्द्र वाजेभि०	३९३	सनायते गोतम	८८४
सखायस्त इद्र	२१६९	स त्वं न इन्द्र सूर्ये	८५२	सनायुवो नमसा०	८८२
सखायो ब्रह्मवाह से	२०६३	स त्वं न इन्द्राकषाभिरुती	२०१९	सनितः सुसनितरुप्र	१८३६
सखा सख्ये अपचत्	१६७३	स त्वं नश्चित्र	२०२१	सनिता विप्रो अर्वद्भिर्हन्ता	१५१
सखा ह यत्र सखिभि०	१३५९	स त्वामदद् वृषा	९०१	सनिर्मित्रस्य पप्रथ	२९९
सखीयतामविता	१५०५	सत्रा ते अनु कृष्टयो	१६१०	स नीन्याभिर्जरितारमच्छा	२०१४
सखे विष्णो वितरं	९९९	सत्रा त्वं पुरुष्टुतं	३७९	सनेम तेऽवसा	१८९३
सख्ये त इन्द्र वाजिनो	७१	सत्रा मदासस्तव	२०३१	सनेम ये त	१११९
स गोमघा जरित्रे	२०२९	सत्रा यदीं भार्वरस्य	१५५०	सनेमि सख्यं स्वपस्यमानः	८८०
स गोरश्वस्य वि व्रजं	१८४	सत्रासाहं वरेण्यं	१३०८	स नो ददातु तां रथि०	२८८९
स ग्रामेभिः सनिता	९६६	सत्रासाहो जनभक्षो	१२१९	स नो नव्येभिवृषकर्मन्नुकथैः	१०२०
स घा तं वृषणं रथमधि	९२८	सत्रा सोमा अभवन्नस्य	१४९३	स नो नियुञ्जि. पुरुहूत	१९१७
स घा नो योग आ	१६	सत्राहणं दाष्टिधि	१४९५	स नो नियुञ्जिरा पृण	२०८०
स घा राजा सत्पतिः	७९२	सदस्य मदे सद्दस्य	१९५६	स नो बोधि पुराता	१९०६
स घा धीरो न रिष्यति	३३५७	सदा व इन्द्रश्रकृषदा	२९७६	स नो बोधि पुरोकाशं	१९२६

स नो युवेन्द्रो	१२१०	समिन्द्रेय गामनड्वाह	३३५५	स वृत्रहेद्रश्वर्षणीष्टन्	२३६२
स नो वाजाय श्रवस	१८५४	समिन्द्रो गा भजयत्	१४९८	स वेतसुं दशमायं	१८९१
स नो वाजेष्वविता	१८२९	समिन्द्रो रायो	५२४	सव्यामनु रिफयं	२३६
स नो विश्वान्या भर	२४५८	समी रेभासो अस्वरन्निन्द्रं	९८६	स ब्राधतः शवसाने०	२६८८
स नो वृषन्सनिष्ठया	२४११	समीं पणेरजति	१७३३	स शेवृधमधि धा	७९६
स नो वृषन्नमुं चरु	३३	समुद्रे अन्त शयत	९९८	स भ्रुधि यः स्मा	१००१
सन्ति ह्यार्य आशिष	५३७	समुद्रेण सिन्धवो	१३२९	स सख्यसखन्	२०१०
स पश्यत उभयोर्नुमृगमयोर्यदी	१९४३	समोहे वा य आशत	४३	ससन्तु त्या अरातयो	६९५
स पर्वतो न धरुणेऽत्रच्युतः	७६१	संपश्यमाना अमदक्षति	१२६९	स सर्गेण शवसा तक्तो	२०१५
स पित्र्याण्यायुधानि	२४६४	सं भानुना यतते	१७५०	स सव्येन यमति	९६५
स पूषो महानां वेनः	५७८	सं भूम्या अन्ताध्वसिरा	३१८४	ससानार्थो उत	१३०९
सप्त वीरासो अधरादुदाय	२५०५	सं मा तपन्त्यभित.	२५३९	स सुक्रतुर्ऋतचिदस्तु	३२००
ससापो देवीः सुरणा	२७१०	सम्राळन्य स्वराळन्य	३१७३	स सुक्रन् रणिता	२३६१
ससी चिद् वा मदच्युता	२२७	स यङ्गयोऽऽवनीर्गोष्वर्वा	२६८३	स सुन्वत इंद्रः	१२०३
स प्रत्यथा कविवृध	५८१	स युध्मः सत्वा खजकृत्	१८५७	स सुष्टुभा स स्तुभा	८७५
स प्रथमे व्योमनि	३२२	स यो न मुहे	१८६३	स सूनुभिर्न रुद्रेभिर्ऋग्ना	९६१
स प्रथमो बृहस्पति०	२९२५	स यो वृषा वृष्ण्येभिः	९५७	स सूर्यः पर्युक्	२६६४
स प्रबोहहृन्	११६५	स रथेन रथीतमो	२०७४	स सोम भामिश्रुनमः	१९६५
स प्राचीनान्	११८५	स रन्धयत् सदिवः	१२०४	सस्तु माता सस्तु पिता	२२७४
स भूतु यो ह प्रथमाय	११८२	सरस्वति त्वमस्माँ	१२३३	सस्थावाना यवयसि	१७७९
स मज्जना जनिम	१८६२	सरस्वती मनसा	२९४१	सहदानुं पुरुहूत	१२४५
समत्र गावोऽभितो०	१६९१	सरस्वती योन्यां	२९५२	स ह श्रुत इन्द्रो	१२१३
समस्तु त्वा शूर	१०६२	स राजसि पुरुष्टुत	३७१	सहस्रज इंद्र	२९९६
समना तूर्णिरुप यासि	२६२६	स रायस्त्वामुप	२०३४	सहस्रं व्यतीनां	१६६१
समनेव वपुष्यतः	५७४	स रुद्रेभिरशस्तवार	२६८४	सहस्रं साकमचंत	९०८
स मन्दस्वा ह्यनु	१९२५	सरूपैरा सु नो गहि	४३६	सहस्रं त इंद्रोतयो	१०४२
स मन्दस्वा ह्यन्धसो	१३७८; २०८६	सरूपौ द्वौ विरूपौ	२८७७	सहस्रवाजमभिमातिषाहं	२७०९
स मन्युं मर्याना०	६५६	सर्वं परिक्रोशं जहि	६९८	सहस्रशृङ्गो वृषभो	२२७६
स मन्युमीः समदनस्य	९६२	सर्वेषां च क्रिमीणां	२८८६	सहस्रसामाग्निवाशिं	१७३५
समस्य मन्यवे विशो	२४६	सं वज्रशृद् दस्तुहा	९६८	सहस्राक्षेण शतशरदेन	३११५
स मातरा सूर्येणा	२०१२	स वङ्किभिर्ऋक्वभिर्गोषु	२०१३	सहस्रा ते शता	१६६२
समानमस्मा अनपा०	२६६५	स वाजं यातापदुष्पदा	२६८२	सहस्रेणैव सचते	२३४
स माहिन् इन्द्रो	१२०१	स वावशान इह	१४४१	सहस्रे ष्वतीनामधि	६११
समित् तान् वृत्रहाखिदत्	६४२	सविता वरुणो	२९५५	सहावा पृत्सु	१४२६
समिद्धामिर्वनवत्	१७५१	स विद्वाँ अङ्गिरोभ्य	५८०	स हि धीभिर्हव्यो	१८६१
समिद्धे अग्नौ	१९९०	स विद्वाँ अपगोहं	११६८	स हि शुता विद्युता	२६८१
समिद्धेऽवग्निव्यानजाना	३०११	स वीरो अप्रतिष्कृत	२२४०	स हि द्वरो द्वरिषु	७६२
समिन्द्र गर्दभं मृण	६९६	स वृत्रहस्ये हव्यः	१५७८	स हि विश्वानि पार्थिवो	२०७९
समिन्द्र नो मनसा	३१२१	स वृत्रहेंद्र ऋभुक्षाः	२३६३	स हि श्रवस्यु सदनानि	८०२
समिन्द्र राया समिषा	७७९	स वृत्रहेंद्रः कृष्णयोनीः	१२१४	साकं जातः क्रतुना	१२२५

सा ते जीवातुरुह	२५१४	सेमं नः स्तोममा	८२	स्वयुरिन्द्र स्वराळसि	१४०८
सा विश्वायुः सा	२९१८	सेहान उग्र पृतना	१७७७	स्वरन्ति त्वा सुते नरो.	२११
सास्मा भर प्रथमं	११९१	सो अग्र एना नमसा	३०७७	स्वर्जित महि	२८३०
सास्मा भरं बाहुभ्यां	११८६	सो अङ्गिरसामुचथा	१२१२	स्वर्जेषे भर	१०२९
सिन्धूरिव प्रवण	२१०३	सो अङ्गिरोभिरङ्गिरस्तमो	९६०	स्वार्थद् वेदि सुहृतीक०	१४७०
सीदन्तस्ते वयो यथा	४१३	सो अप्रतीनि	१२०२	स्ववृज हि त्वामह०	२५४५
सीसेन तन्त्र मनसा	२९३८	सो अभ्रियो न यवस	२६८७	स्वस्तये वाजिभिश्च	१२५५
सुगा वो देवाः सदना	३१२३	सो अर्णवो न नद्यः	७९८	स्वास्तिदा विशस्पति	२८१५
सुत इत् त्वं निमिश्च	१९१८	सो चिन्नु वृष्टिर्यथा	२४८४	स्वादवः सोमा आ	१४३
सुत सोमो असुतादिन्द्र	१९९६	सो चिन्नु सरुया	२६०२	स्वादुष्टे अम्नु संसुदे	३९९
सुतपात्रे सुता इमे	१८	सोता हि सोममद्रिभि०	१०३	स्वादोरित्या विपृततो	९४६
सुता इन्द्राय वायवे	३२३२	सोदञ्च सिन्धुमरि०	११६७	स्वायुध स्ववम	२८४३
सुतावन्तस्त्वा	६०६	सोम इद्रः सुतो अस्तु	६२७	हंसा इव कृणुय	१४६२
सुतेसुते न्योकसे	५७	सोममन्य उपासदत	३३३१	हत वृत्र मुदानव	३२४९
सुदेवा स्थ काण्वायना	५४२	सोममिन्द्राबृहस्पती	३३२२	हतागो अस्य वेशसो	२८८५
सुनीथो घा स मर्यो	१८२०	स्तवा नु त इन्द्र	११०६	हतो यवापः क्रिमीणां	२८८१
सुनोता सोमपात्रे	२२४२	स्तीर्णं ते बहिः	१३१८	हतो राजा क्रिमीणा०	२८८४
सुपेशसं माव सृजन्त्यस्तं	३३३८	स्तुत इन्द्रो मघवा	१५०६	हतो वृत्रापयार्या	३०६१
सुप्रवाचनं तव	११४७	स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति	१४४	हन्ता वृत्र दक्षिणेनेन्द्र.	१४७
सुप्राप्य प्राणुषालेष	१५९३	स्तुतासो नो मरुतो	३२६५	हन्ता वृत्रभिद्र.	२१५२
सुप्रह्माणं देववन्त	२८४४	स्तुषेद्यं पुरुवर्ष०	२७६२	हन्ताहं पृथिवीमिमां	२८५८
सुरावन्तं बर्हिषदे	२९३७	स्तुहि श्रुत विपश्चितं	३३०	हन्तो नु किमाससे	६६५
सुरूपकृन्नुमृतये	४	स्तुडीन्द्रं व्यश्वव०	१८११	हरित्स्वता वर्चसा	२७३७
सुविज्ञानं चिकितुषे	३२८९	स्तेनं राय सारमेय	२२७२	हरी त इद्र इमश्रु०	२९९४
सुविवृतं सुनिरजमिन्द्र	६४	स्तोता यत् ते अनुव्रत	३३२	हरी नु क रथ	११९२
सुवीरस्ते जनिता	१४९१	स्तोता यत् ते विचर्षणि०	३२६	हरी नु त इद्र वाजयन्ता	११०७
सुवीर्यं स्वशयं	३२०	स्तोमं त इद्र	२४८६	हरी न्वस्य या वने	२४८२
सुष्टामा रथ सुयमा	२५६९	स्तोमासस्त्वा गौरिबीते	१६७७	हरी यस्य सुयुजा	२७१५
सुष्वाणास इन्द्रं स्तुमसि	२८०९	स्तोत्रं राधानां पते	७०३	हर्यन्नुषममर्चयः	१४००
सुसंहशं त्वा वयं	९२७	स्तोत्रमिन्द्राय गायत	४६३	हर्यश्वं सस्पतिं चर्षणीमह	४१८
सूर उपाके तन्वं१	१४८०	स्त्रियो हि दास आयुधानि	१६९०	हव एषामसुरो	२६३५
सूरश्चक्रं प्र बृहजात	१०१९	स्थिरं मनश्चकृषे	१६८५	हवं त इद्र महिमा	२००९
सूरश्चिद् रथं	१७०२	स्थूरस्य रायो बृहतो	१५४७	हवन्त उ त्वा हव्यं	२२१२
सूर्यस्येव वक्षथो	२२६९	स्पर्धन्ते वा उ	३१९८	हवे त्वा सूर उदिते	३३३
सूर्यो रश्मिं यथा सृजा	२०२	स्म'पुरन्धिर्न आ	४३०	हसु पीतासो युध्यन्ते	१२७
सृजः सिन्धूरहिना	२७३३	स्याम ते त इद्र	१११३	हदं न हि त्वा	७६६
सृजो महीरिन्द्र	११०२	स्वमेनाभ्युपया सुसुरि	११७०	हदा इव कुक्षय	१३३०
सेमं नः काममा पृण	८६	स्वयं चित् स मन्यते	२४०	ह्यामसि त्वेन्द्र	१२९७

# दैवत-संहितान्तर्गत--इन्द्रदेवतायाः गुणबोधक-पदानां सूची ।

अंहरणा [ भूमिः ] ६, ४७, २०, ३३२७  
 अकल्पः १, १०२, ६; ८३३  
 अकवारिः ३, ४७, ५, १४१८ । ६, १९, ११; १८८१  
 अकामकर्शनः १, ५४, २, ७७६  
 अक्षिता [ त ] वसुः ८, ४९ ६; ४९०  
 अक्षितोतिः १, ५, ९, २२१४, १७, १६, १५०३। ६, २४, १; १९२८  
 अगोरुधः ८, २४, २०, १८०९  
 अगोह्यः ८, ९८, ४, २३६७  
 अगो अरिः ८, २, १४; १२९  
 अग्नि ५, ३४, ९, १७३५  
 अघ्नन् ७, २०, ८, २१५८  
 अङ्गिरस्तमः १, १३०, ३; १०१३  
 अङ्गिरस्तमः अङ्गिरोभिः १, १००, ४; ९६०  
 अङ्गिरसां उचथा जुजुष्वान् २, २०, ५, १२१२  
 अङ्गिरस्वान् २, ११, २०; ११२० । ६, १७, ६, १८४६  
 अङ्गिरोभिः गृणान् ४, १६, ८, १४७४  
 अच्युतः १०, १११, ३, २७२७  
 अच्युतच्युत् २, १२, ९; ११३० । ६, १८, ५; १८६०  
 अच्युतानि क्यावयन् ३, ३०, ४; १२४१  
 अच्युतानां च्यवनः ८, ९६, ४; २३४८  
 अजरः ३, ३२ ७, १२८८। ६, १९, २, १८७२। २१ १; १८९७।  
 २२, ३, १९०९ । ३८, ३, १९८० । ८, ६, ३५; २७७। ९९, ७;  
 २३८२ । १०, ५०, ५; २६०५ । [वरुणः] ६, ६८, ९; ३१६९  
 अजानशत्रु ५, ३४, १, १७२७ । ८, २३, १५; १४४४  
 अजुरः ८, १, २; ८८  
 अजुर्यः २, १६, १; ११७२। ६, १७, १३; १८५३ । २२, ९; १९१५।  
 ३०, १; १९६८ । ८, १३, २३, ३४३  
 अजूर्यत् ३, ४६, १; १४०९  
 अतसाद्यः २, १९, ४; १२०२  
 अतिनेनीयमान अनयं अनयम् ६, ४७, १६; २११४  
 अतिपान्तम् (द्विती०) वैशन्तम् ७, ३३, २; २२६३  
 अतूर्त्त ८, ५, ७; २३८७  
 अत्कं वसानः ४, १८, ५; १५१३ । ६, २९, ३; १९६४

अदकधः ८, ७८, ६; ६५६  
 अदथा (यौ) [ इन्द्राग्नी ] ५, ८६, ५; ३०४४  
 अदयः १०, १०३, ७, २६२७  
 अदाभ्यः ७, १०४, २०; २२८८ । ८, ६१, १२; ५५९ । अथर्वं  
 ८, ४, २०, ३२९७  
 अदृष्टहा । अथर्वं ५, २३, ६; २८७९  
 अद्भुतः ८, १३, १९; ३३९ । १०, १५२, १; २८१४  
 अद्भिः ४, २१, ६; १५४२। ५, ३८, ३; १७५७। १, १०९, ३, ३०२३  
 अद्भिवत् १, १०, ७, ६४ । ११, ५, ७४ । ८०, ७, ९०६। ८०,  
 १४; ९१३ । १२२, १०, १०, १००९, १००९ । १३३, २, ६, ६;  
 १०३५, १०३९-३९। ३, ३७, ११; १३४४। ४१, १; १३७३ ।  
 ४, ३२, ५; १६४९ । ५, ३५, ५; १७४० । ३६, ३; १७४६ ।  
 ३९, १, ३; १७६०, १७६२। ६, ४५, ९, २०६८। ४६, २, २०९१।  
 ७, २०, ८; २१५८ । ८, १, ५, १३; ९१, ९९ । २, ४०, १५५ ।  
 ६, २२, २६४। १२, ४; २९१ । १३, २६, ३४६ । १५, ४; ३७२ ।  
 २१, ७, ४१५ । २४, ६, ११, १७९५, १८०० । ३६, ६; १७७४ ।  
 ४५, ११, ४५३। ४६, २, ११, १८१८, १८२७। ५०, १०, ५०४ ।  
 ६१, ४, ५५१ । ६२, ११, ५७६ । ६४, १; ५८९ । ६८, ११;  
 २३०१ । ७६, ८; ६३५ । ९२, १८, २४१४ । २७, २४२३ ।  
 ९७, ९; ९८४ । ९८, ८, २३७१ । १०, १४७, १; २८०४  
 अद्रोघः ३, ३२, ९; १२९०  
 अद्रोघनाक् ६, २२, २; १९०८  
 अधिराजः । अथर्वं ६, ९८, १-२, २९०२-३  
 अधिवक्ता १, १००, १९; ९७५। १०२, ११, ८३८। ८, ९६, २०;  
 २३६२  
 अधृष्टः ८, ६१, ३; ५५० । ७०, ३; २३२३  
 अध्रिगुः १, ६१, १; ८५६ । ६, ४५, २०; २०७९ । ८, ७०, १;  
 २३२१ । ९३, ११; २४४०  
 अध्वरः ८, ६३, ६; ५८३  
 अनपच्युतः ८, ९२, ८; २४०४ । ९३, ९; २४३८  
 अनर्वा ४, १७, २०, १५०७ । ७, २०, ३; २१५३ । ८, ९२, ८;  
 २४०४ । १०, ९९, ३, २६८२  
 अनर्वारातिः ८, ९९, ४; २३७९

अनवद्यः १, १२९, १, १, १०००, १०००। १०, १४७, २, २८०५  
 अनाधृष्यः ४, १८, १०, १५१८  
 अनानतः ६, ४५, ९; २०६८। ८, ६४, ७, ५९५। ९०, ४;  
 २३९४। १०, ७४, ५; २६३८  
 अनानुदः २, २१, ४; १२२०। १०, ३८, ५, २५४५  
 अनानुदिष्ट (ब्रह्मद्विषः हन्ति) १०, १६०, ४, २८२७  
 अनापिः जनुषा ८, २१, १३. ४२१  
 अनामृणः १, ३३, १. ७३०  
 अनाभयिन् (यी) ८, २, १, ११६  
 अनिमृष्टः १०, ११६, ६. २७६०  
 अनिमानः ६, २२, ७, १९१३  
 अनिमिषः १०, १०३, १, २, २६२२-९३  
 अनिष्कृतः ८, ९९, ८; २३८३  
 अनिष्टु (नि स्तुतः) ८, ३३, ९; २१८  
 अनुत्तमन्युः ७, ३१, १२, २२३४। ८, ६, ३५, २७७  
 अनुत्तमन्युः सुतेषु ८, ९६, १९ २३६१  
 अनुमाद्यः ६, ३४, २, २०२२  
 अनुस्पष्टः (अस्य य सोम सुनोति) १०, १६०, ४, २८२७  
 अनूनः ६, १७, ४; १८४४  
 अनूगचः। अथर्व० १९, १५, २. २९१५  
 अनूर्मिः ८, २४, २२ १८११  
 अनुतुषाः ३, ५३, ८, १४६०  
 अनेद्य ८, ३७, १-६, १७७६-८१  
 अन्तमः ६, ४६, १०; २०९९। ८, १३, ३ ३२३  
 अन्तमः आपिः ८, ४५, १८, ४६०  
 अन्तरा भरः ८, ३२, १२, १९१  
 अन्तरिक्षमाः १, ५२, २; ७४६  
 अपङ्गुंराणः ५, २९, ४, १६७०  
 अपबाधमान. अभिप्राञ् [बृहस्पतिः] य० १७, ३६, २९३२  
 अपराजित १ ११, २ ७१। १०, ४८, ११; २५८९। [इन्द्राग्नी]  
 ३, १२, ४, ३०३३। ८, ३८, २. ३०९२  
 अपरीतः ५, २९, १४, १६८०  
 अपः रिषत्-न् ८, ३२, २; १८१  
 अपर्षता गोनाम् ४, २०, ८, १५४०  
 अपालि कर्ता ८, ९६, १९; २३६१  
 अपां जग्मि ८, ९३, २२, २४५१  
 अपामजः ३ ४५, २, १४०५  
 अपार. ४, १७, ८, १४९५। ८, ६, २६. २६८  
 अपू(पु)रुषस १, १३३, ६. १०३९  
 अपूर्वः ८, २१, १. ४०९। ६६, ११; ६२३। ८९, ५: २३८८

अप्पुर. ३, ५१, ३. १४३६  
 अप्रति. ५, ३२, ३, १७०७  
 अप्रतिधृष्टमावाः १, ८४, २, ९३८  
 अप्रतिष्कृत १, ७, ६, ८. ३३ ३५। ८४, ७ ९४३। १३ ९४९।  
 ८, ९७, १३, ९८८  
 अप्रतीतः १, ३३, २ ७३१। १३३, ६ १०३९। ५, ३२, ९  
 १७१३। ६, २०, ९, १८९२। १०, १०४, ७; २७०९।  
 १११, ३; २७२७  
 अप्रतीतः त्रिभुवनः ३, ४६, ३, १४११  
 अप्रमङ्गी ८, ४५, ३५; ४७७  
 अप्रहा-ह-न् ६, ४४, ४; २०३९  
 अप्रहित ८, ९९, ७, २३८२  
 अप्रामिसत्यः ८, ६१, ४, ५५१  
 अप्सुजित् ८, १३, २, ३२२। ३६, १ ६, १७६६ ७४  
 अबधिरः ८, ४५, १७. ४५९  
 अबिभीवान् १, ६, ७, ३२४६  
 अबिजत् २, २१, १, १२१७  
 अभयंकर ८, १, २, ८८। १०, १५२, २; २८१५  
 अभिख्याता ४, १७, १७, १५०४  
 अभिगाहमान गोत्राणि सहसा १०, १०३, ७; २६९७  
 अभिभङ्गः २, २१, २, १२१८  
 अभिभू २, २१, २, १२१८। ८, ९७, ९. ९८४। ९८, २,  
 २३६५। १०, १५३, ५; २८२३  
 अभिभू विश्वम् ८, ८९, ६, २३८२.  
 अभिभूतरः ८, ९७, १०; ९८५  
 अभिभूतिः ६, १९, ६, १८७६। ८, १६, ८, ३८९। १०,  
 १३१, १; २७७३  
 अभिभूतिः जनानाम्। अथर्व० ६, ९८, २; २९०३  
 अभिभूयोजाः ३, ३४, ६, १३०६। ४८, ४; १४२२। ६,  
 १८, १; १८५६  
 अभिभूयसः ८, १७, १५; ४०८  
 अभिमातिषा-स-हः १०, ४७, ३, २८४४। १०, ४, ७;  
 २७०९  
 अभिमातिहन्-हा ३, ५१, ३; १४३६  
 अभित्रीर १०, १०३, ५; २६९५  
 अभिषा-सा-चः ३, ५१, २, १४३५  
 अभिष्टिः पृथनाः ३, ३४, ४; १३०४  
 अभिष्टिः महान् १, ९, १; ४८  
 अभिष्टिकृत् ४, २०, १; १५३३  
 अभिष्टिषाः २, २०, २; १२०९

अभिसम्बन्धः १०, १०३, ५, २६९५  
 अभीरुः ४, २९, २, १६०५  
 अभीर्वा. ८, ४६, ६, १८२२  
 अभ्रातृव्यः ८, २१, १३; ४२१  
 अभमत्र १, ६१, ९, ८६४  
 अभमत्रः वृजने ३, ३६, ४, १३२६  
 अभमत्रिन् (त्री) ६, २४, ९, १९३६  
 अभमर्त्यः १, १२९, १०, १००९। १७५, २, १०८०। ३, ५१, १; १४३४  
 अभमितक्रतुः १, १०२, ६, ८३३  
 अभिमताजाः १, ११४, ७३  
 अभिमित्रखाद १०, १५२, १; २८१४  
 अभिमित्रहन् (हा) ६, ४५, १४; २०७३। १०, २२, ८; २४७३। १३४, ३, २७८७  
 अभिमिन. १०, ११६, १४, २७५८  
 अभिमिन. सहोभि ६, १९, १; १८७१  
 अभ्यक्तः सनात् ८, २, ३१, १४६  
 अभ्युतः ५, ३१, १३, १७०४। ६, २१, १; १९०५। ७, २०, ७; २१५७  
 अभ्युध् ८, ८०, २; ६६२  
 अभ्यामन् ८, ५२, ५; ५१९  
 अभ्यास्यः १, ६२, ७, ८७८। ८, ६२, २; ५६७  
 अभ्युजः ८, ६२, २; ५६७  
 अभ्युद्धसेनः १०, १३८, ५, २७९६  
 अभ्युध्य १०, १०३, ७; २६९७  
 अभ्योपाष्टिः १०, ०९, ८, २६८७  
 अरकृत् ८, १, ११, ९६  
 अरंकृतः १०, ११९, १३, २८६२  
 अरगमः ६, ४२, १, १९९८। ८, ४६, १७; १८३३  
 अरध्रः ६, १८, ४, १८५९  
 अरि भगोः ८, १२, १४; १२९  
 अरिषण्यन् दृढस्य चिन् १, ६३, ५; ८८९  
 अरिष्टः ५, ३१, १; १६९३  
 अरिष्ट-स्तु-तः ८, १, २२, १०८  
 अरीढः ४, १८, १०, १५१८  
 अरुणः १, १३०, ९, १०१९  
 अरुतहनुः १०, १०५, ७, २७२०  
 अरुहाहा १०, ११६, ४, २७५८  
 अरुषः १, ६, १; २४। १०, ४३, ९; २५६५  
 अरुषमौ [इन्द्रवायू] ५, ५१, ६; ३९३१  
 अर्क १, १०, १; ५८

अर्चय्य ६, २४, १; १९२८  
 अर्णवः ३, ५१, २, १४३५  
 अर्भके [इन्द्राभौ] ४, ३२, २३; ३३४८  
 अर्य १, ३३, ३; ७३२। ८१, ९; ९२४। ३, ४३, २, १३९२।  
 ४, १६, १७; १४८३। २४, ८, १५८४। २९, १, १६०४।  
 ७, ३१, ५, २२२७। ८, २, २३, १३८। ३४, १०; ४३४।  
 ५४, ७; ५३७। ६३, ७; ५८४। ६५, ९; ६०९। १०, ८९,  
 ३, २६६५। ११६, ६; २७६०। १४८, ३; २८११  
 अर्वा-र्वा १०, २९, ४, २६८३  
 अर्वा-च-र्वाक् ८, ४, १४, २४२। ६, ४५, २८७ ३२, ३०; २०९  
 अर्वाचीन ४, २४, १; १५७७। ७, २९, २; २२१४। १०,  
 ११६, २; २७५६  
 अर्हस्विनि-व्यणि १, ५६, ४; ८०८  
 अर्हन्ता-(न्तौ) [ इन्द्राभौ ] ५, ८६, ५; ३०४४  
 अर्कक्षिन्-क्षी ८, १, २; ८८  
 अर्वा-न् ३, ४६, ४, १४१२  
 अर्वाध्वानः अनानुभूतीः ६, ४७, १७; २११५  
 अर्वाणि राय. १, ४, १०; १३। ८, ३२, १३; १९२  
 अर्वायातहेळाः [ मरुत ] १, १७१, ६, ३२६८  
 अर्वायाता दुर्मतीनां सदमित् १, १२९, ११; १०१०  
 अर्वास्युः ४, १६, ११; १४७७  
 अर्वाहन्ता दुष्प्राव्यः अर्वाच्यः ४, २५, ६; १५९३  
 अर्वात् ६, १८, १; १८५६  
 अर्वायक्रतु ८, ९२, ८, २४०४  
 अर्वािता १, १२९, १०; १००९। ६, ३३, ४, २०१९। ३४, ५,  
 २०२५। ४७, ११ २१०९। ७, ३२, ११, २२४५। ३२, २५;  
 २२५९। ८, १३, १५, २६; ३३५, ३४६। २१, २, ४१०  
 अर्वािता एकस्य द्वयो ६, ४५, ५, २०६४  
 अर्वािता कारुधायोः ६, ४४, १५; २०५०  
 अर्वािता जरितृणाम् ४, ३१, ३; १६३२  
 अर्वािता नृणाम् ७, १९, १०, २१४९  
 अर्वािता रथानाम् [ वृद्धस्पतिः ] यं १७, ३६; २९३२  
 अर्वािता वामदेवस्य धीनाम् ४, १६, १८, २०, १४८४, १४८६  
 अर्वािता वाजेषु ८, ४६, १३, १८२९  
 अर्वािता विधन्तम् ८, २, ३६; १५१  
 अर्वािता सखीयताम् ४, १७, १८; १५०५  
 अर्वािता सुन्वत वृक्तवर्हिषः ८, ३६, १; १७६९  
 अर्वािता स्तोत्राणाम् १०, २४, ३; २४९०  
 अर्वादीधयुः ४, ३१, ७, १६३६  
 अर्वाह्यतक्रतुः १, ६३, २ ८८६

अवृकः ४, १६, १८, १४८४  
 अवृकतमः विश्वघ १, १७४, १०; १०७८  
 अवृतः ८, ३२, १८; १९७ । ३३, ६, १०, २१५, २१९  
 अशत्रुः १, १०२, ८, ८३५ । ८, ९२, ४; ६८२ । १०, १३३, २;  
 २७७९  
 अशस्तवारः १०, ९९, ५, २६८४  
 अशस्तिहा ८, ८९, २; २३८५ । ९९, ५, २३८० । १०, ५५, ८;  
 २६२१  
 अश्मानं विभ्रत् ४, २२, १, १५५५  
 अश्वजित् २, २१, १; १२१७  
 अश्वपतिः ८, २१, ३; ४११  
 अश्वयु १, ५१, १४, ७५८  
 अश्वसातमः १, १७५, ५; १०८३  
 अश्वः भव अश्वायते ६, ४५, २६; २०८५  
 अश्वानां जनिता ८, ३६, ५; १७७३  
 अश्वानां पति १, १०१, ४ ८२०  
 अश्वान् १०, ४७, ५, २८४६  
 अश्व्यः ८, ६६, ३; ६१५  
 अषाढः २, २१, २, १२१८ । ६, १८, १, १८५६ । ७, २०, ३,  
 २१५३ । २८, २, २२०९ । ८, ३२, २; २०६। ७०, ४, २३२४ ।  
 १०, ४८, ११; २५८२  
 असमः ६, ३६, ४; २०३४ । ८, ६२, २, ५६७  
 असमष्ट काश्यः २, २१, ४; १२२०  
 असमाख्योजाः ६, २९, ६; १९६७  
 असुतानाम् ईशिषे ८, ६४ ३, ५९१  
 असुन्वतः विषुणः ५, ३४, ६, १७३२  
 असुरः १, ५५, ३, ७८८ । १७४, १, १०६९ । ३, ३८, ४; १३४८ ।  
 ८, ९०, ६; २३९६ । १०, ९९, १२; २६२१  
 असुरहा ६, २२, ४, १९१०  
 असुर्यः ४, १६, २; १४६८ । ७, २२, ५; २१७५ । १०, १०५, ११,  
 २७२४  
 अस्कृधोयु ६, २२, ३; १९०९  
 अस्तु [-स्ता] ८, २३, १; २४३० । १०, १०३, ३, २६२४  
 अस्ता अद्रिम् १, ६१, ७; ८६२  
 अस्तृत १, ४, ४, ७। ८, ९३, ९, १५, २४३८, २४४४। १०, ४८,  
 ११; २५८९  
 अस्त्रा ८, ६३, ४; ५८१  
 अस्त्रयुः १, १३१ ७. १०२७, ३, ४१, ७; १३७९ । [इन्द्रवायु]  
 १ १३५, ५; ३२६६  
 अस्त्रिधा [ इन्द्राश्चौ ] ४, ३२, २४; ३३४९  
 अहसनः ८ ६१, ९; ५५६

अहिहन् [ हा ] २, १९, ३; १२०१ । ३०, १; १२२७  
 अह्लमानः ६, ४१, १; १९९३  
 अह्मगान १०, ११६, ७, २७६१  
 अहयः ८, ७०, १३; २३३३  
 आकरः वस्व. ५, ३४, ४, १७३०  
 आकरः सहात्रा ८, ३३, ५, २१४  
 आकाशयः ४, २९, ५; १६०८ \*  
 आखंडलः ८, १७, १२, ४०५  
 आजिकृत् ८, ४५, ७, ४४९  
 आजितुरः ८, ५३, ६, ५३०  
 आजिपतिः ८, ५४, ६, ५३६  
 आज्ञाता १०, ५४, ५; २६१२  
 आतपः चर्षणीनाम् १, ५६, १, ७९७  
 आदारिन्-री ८, ४५, १३, ४५५  
 आदित्यः [ वरुण. ] ७, ८४, ४; ३१९५ । ७, ८५, ४; ३२००  
 आदुहिः ४, ३०, २४; १६२९  
 आनजाना ( नौ ) [ इंद्राप्ती ] १, १०८, ४, ३०११  
 आपान्तमन्युः [ सोम. ] १०, ८९, ५, ३२७६  
 आपिः ३, ५१, ६; १४३९ । ५१, ९; १४४२ । ४, १७, १७,  
 १५०४। ६, २१, ८; १९०४। ६, ४५, १७, २०७६। ८, ३, १, १५६  
 आपिः अन्तमः ८, ४५, १८, ४६०  
 आप्यः आप्यानाम् १०, १२०, ६, २७६९  
 आपुरिः ८, ९८, १०. ९८५  
 आयतः विश्वासु गीर्षु ८, ९२, ७, २४०३  
 आयन्ता ८, ३२, १४; १९३  
 आयसः १, ५७, ३; ८०७  
 आयुधा विभ्रत् १०, ११३, ३; २७४७  
 आरितः १, १०१, ४, ८२० । ८, ३३, ५, २१४। १०, १११,  
 १०, २७१४  
 आरितः विष्णु २, २१, ३; १२१९  
 आरुजू द्रवहा चित् ८, ४५, १३, ४५५  
 आरुजन्तु [ मरुत् ] १, ६, ५; ३२४५  
 आरे अवद्यः १०, ९९, ५; २६८४  
 आर्यः ५, ३४, ६, १७३२  
 आविष्कृणान ओजः ४, १७, ३; १४९०  
 आशुः १, ४, ७, १०। ८, ९९, ७, २३८२। १०, १०३, १, २६९२  
 आश्रुत्कर्णः १, १०, ९, ६६  
 आसीनः हर्यतस्य ष्टे ८, १००, ५; २९५  
 आहुवः ८ ३२, १९; १९८



इच्छन् सुतसोमम् ७, ९८, १; २२७९  
 इनः २, २०, २; १२०९ । ७, २०, ५; २१५५ । ८, ३३, ५,  
 २३४ । १०, ५०, २, २६०२  
 इनः वसुन १, ५४, २; ७७६  
 इनतम ३, ४९, २; १४२५ । १०, १२०, ६; २७६९  
 इन्द्रज्येष्ठाः [ मरुद्गणाः ] १, २३, ८, ३२४८  
 इन्द्रसारथि [ वायु. ] ४, ४६, २; ३२२१  
 इन्द्रियः ४, २४, ५; १५८१  
 इन्द्रिय प्रबुवाणः जनेषु १, ५६, ४; ८००  
 इन्वन् दानं गवा ५, ३०, ७, १६८८  
 इथानः २, २०, ४, १२११ । ७, २९, १; २२१३  
 इरज्यन्त विश्वेषां वसूनाम् ८, ४६, १६, १८३२  
 इरज्यन्तम् भूरेः वसव्यस्य [ इन्द्राग्नी ] ६, ६०, १; ३०५६  
 इरज्यति एकः चर्षणीनाम् १, ७, ९, ३६  
 इरज्यति एक पञ्चक्षितीनाम् १, ७, ९, ३६  
 इरज्यति एकः वसूनाम् १, ७, ९, ३६  
 इषां दाता ८, ४६, २; १८१८  
 इषितः धिया ३, ६०, ५, ३३४१  
 इषिरः १, १२९, १, १०००  
 इषुमान् । अथर्व० ४, २४, ५; २८७१  
 इषुः तव शतब्रह्मः सहस्रपणी एक इत् ८, ७७, ७, ६४६  
 इषुहस्तः १०, १०३, २; २६९३  
 इष्णानः आयुधानि १, ६१, १६, ८६८  
 इक्षे वस्व. उभयस्य ६, १९, १०; १८८०  
 इक्ष्य ४, २४, २, १५७८ । ८, ३४, ८; ४३२ । अथर्व०  
 ६, ९८, १; २९०२  
 ईशानः १, ५, १०; २३ । ७, ८, ३५ । ११, ८; ७७ । ६१,  
 ६, १२, १५; ८६१, ८६७, ८७० । ८४, ७; ९४३ । १७५,  
 ४; १०८२ । १०, ७३, ८, २६३० । [ इन्द्राग्नी ] ७, २४, २,  
 ३०८० । [ इन्द्रवायु ] ७, ९०, ५, ३२३३  
 ईशानः अस्य जगत. ७, ३२, २२; २२५६  
 ईशानः एकः ओजसा ८, ६, ४१; १८३ । ७६, १; ६२८ ।  
 ८, ४०, ५; ३१०५  
 ईशान तस्वेषु ७, ३२, २२; २२५६  
 ईशानः भूरे ओजसा ८, ३२, १४. १९३  
 ईशानः राय. ८, ४६, ६; १८२२ । ५३, १; ५२५  
 ईशानः वसूनाम् ८, ६८, ६, २२९६  
 ईशानः वस्वः ८, ८१, ४; ६७३ । [ इन्द्रावरुणौ ] ७, ८२, ४;  
 ३१७५  
 ईशानः वार्याणां पुङ्गवाम् १, ५, २; १५

ईशानः विश्वस्य ओजसा ८, १७, ९; ४०२  
 ईशानः हयोः ४, १६, ११; १४७७  
 ईशानकृत् १, ६१, ११, ८६६ । २, १७, ४; ११८४ । ६,  
 १८, ६, १८६१ । ८, ५२, ५; ५१९ । ६५, ५, ६०५ । ९०,  
 २. २३९२  
 ईशिषे स्वम् १०, ४४, ५; २५७२  
 ईशिषे असुतानाम् ८, ६४, ३; ५९१  
 ईशिषे अस्य ( सोमस्य ) ८, ८२, ७, ८, २; ६८५ ८६-८७  
 ईशिषे क्षेमस्य प्रयुजस्व ८, ३७, ५; १७८०  
 ईशिषे सुतानाम् ८, ६४, ३; ५९१  
 ईशे कृष्टीनां पूर्व्या अनुष्टुतिम् ८, ६८, ७, २२९७  
 ईशे दिव. पृथिव्याः अपाम् पर्वतानाम् वृधाम् मेधिराणाम्  
 १०, ८९, १०, २६७१  
 ईशे विश्वस्य करणस्य एकः १, १००, ७, ९६३  
 ईशे स्थूरस्य रायः वृहत. ४, २१, ४; १५४७  
 ईशे वस्व. रायः १०, ४३, ३, २५५९

उक्थवर्धनः ८, १४, ११, ३६४

उक्थवाहस्-हाः ८, ९६, ११, २३५५ । १०, १०४, २, २७०४ ।  
६, ५९, १०; ३०५५

उक्थः २, १३, २, १२, ११३७, ११४८ । ३, ५१, १, १४३४

उक्थ शस्यानाम् [ वरुणः ] १, १७, ५; ३१३८

उक्षितः २, १६, १; ११७२

उमः १, ७, ४; ३१ । ३३, ५ ७३४ । ५१, ११; ७५५ ।

५६, ३, ७९९ । १००, १२, ९६८ । १०२, १०; ८३७ ।

१२९, ५, १००४ । १३०, ७; १०१७ । ३, ३०, ३, २२;

१२४०, १२५९ । ३१, २२, १२८१ । ३२, १७ १२९८ ।

३४, ११, १३११ । ३५, ११, १३२२ । ३६, ११, १३३३ ।

३८, १०, १३५४ । ३९, ५, १३२७ । ४६, १; १४०९ ।

२७, ५; १४१८ । ४८, ४; १४२२ । ३९, २; १३६३ । ४३, ८;

१३९८ । ४८, ५, १४२३ । ४९, ५, १४२८ । ५०, ५;

१४३३ । ४, १६, २०; १४८६ । २०, १, ६-७. १५३३, ३८-

३९ । ४, २२, २, १५०६ । २३, ७, १५७२ । २४, ४; १५८० ।

५, ३२, २, ८, १७०६, १२ । ३५, ६; १७४१ । ६, १७, १;

१०, १३; १८४१, ५०, ५३ । १९, ११, १८८१ । १८, १, ४, ६;

१८५६, ५९, ६१ । २३, ३, ८; १९२०, २५ । २५, १; १९३८ ।

३७, १; १९७३ । ३८, ५; १९८२ । ४१, ३; १९९५ ।

६, ४६, ६; २०९५ । ७, २०, १; २१५१ । २२, ८; २१७८ ।

२४, ५; २१९० । २५, १, ४; २१९२, ९५ । २८, २; २२०९ ।

३३, २, २२६३ । ८, १, २७; ११३ । ३, १७; १७२ ।

४, ७, २३५ । ६, १४, १८, २५६, २६० । २१, २; ४१० । २४, ७;  
 १७९६ । ३२, २, २७; १८१, २०६ । ३३, ९; २१८ । ३३, १०,  
 २१९ । ३७, २; १७७७ । ४५, ३५, ४७७ । ४६, २०, १८३६ ।  
 ४९, ७; ४९१ । ५०, ६, ५०० । ५२, ५, ५, ५१९, ५१९ ।  
 ६१, १२, ५५९ । ६५, ५; ६०५ । ६८, ६, २२९६ । ७०, ४,  
 २३२४ । ९६, १०; २३५४ । ९७, १०, १३; ९८५, ९८८ ।  
 १०, २९, ३; २५१७ । ४४, ३, २५७० । ७३, १, २६२३ ।  
 ८९, १८; २६७९ । १०३, ५, २६९५ । १०४, ११; २७१३ ।  
 ११३, ३, ६; २७४७, २७५० । ११६, ५; २७५९ । १२०, १,  
 २७६४ । ४७, ३; २८४४ । ७, ८२, ५, ३१७६ । साम०  
 २३१, २९८० । [इन्द्रासौ] १, २१, ४, ३००५ । ऋ०६, ६०, ५,  
 ३०६० । [इन्द्रः] ऋ० १, १६५, ६, १०, ३२५५, ३२५९ ।  
 १, १७१, ५; ३२६७ । [इन्द्रासौ] ६, ७२, ५, ३२७५  
 उग्रः जनुषा ३ ४६, २, १४१०  
 उग्रधन्वा १०, १०३, ३; २६९४  
 उग्रबाहुः ८, ६१, १०; ५५७ । अ० ४, २४, २, २८६८  
 उग्राः [मरुतः] १, १७१, ५; ३२६७  
 उत्तरः ८, १४, १५, ३६८  
 उत्तरः विश्वस्मात् १०, ८६, १, २३; २६४०, २६६२  
 उत्सः हिरण्यय ८, ६१, ६; ५५३  
 उद्यन्ता गिरः १, १७८, ३; १०९८  
 उद्वा-इ-वृषाणः ४, २०, ७, १५३९ । २९, ३; १६०६  
 उपदधानः आशून् धुरि ४, २९, ४, १६०७  
 उपमः मघोनाम् ८, ५३, १; ५२५  
 उपमानां प्रथमः ८, ६१, २; ५४९  
 उपसद्यः । अथर्व० ६, ९८, १; २९०२  
 उपस्तभायन् ४, २१, ५, १५४८  
 उभयस्य राजा ६, ४७, १६; २११४  
 उभयाविन्-वी ८, १, २, ८८  
 उराणः समस्तु सताम् १, १७३, ७; १०६२  
 उरुः २, १३, ७; ११४३ । २२, १, १२१३ । ३, ४१, ५,  
 १३७७ । ४६, ४; १४१२ । ६, १९, १; १८७१ । ८, ६५, ३;  
 ६०३ । १०, ४७, ३, २८४४  
 उरुक्रमः ८, ७७, १०; ६४९ । [इन्द्राविष्णु] ७, ९९, ६, ३३१६  
 उरुगायः १०, २९, ४; २५१८  
 उरुग्रायाः ८, ६, २७, २६९  
 उरुधारा ८, १, १०; ९६  
 उरुन्यस-चाः १, १०४, ९, ८५५ । ६, ३६, ३; २०३३ ।  
 ७, ३१, ११; २२३३ । ८, २, ५, १२० । ३, ५०, १, १४२९  
 उरुसाः ४, १६, १८; १४८४

उर्वराजित् २, २१, १; १२१७  
 उर्वरापतिः ८, २१, ३, ४११  
 उर्वा [भूमिः] ६, ४७, २०; ३३२७  
 उर्व्युतिः ६, २४, २, १९२९  
 उशान् १, १०१, १०; ८२६ । ३, ४३, ७; १३९७ । ४, २०, ४,  
 १५३६  
 उशान् सोमम् सोमान् ४, २४, ६, १५८२ । ७, ९८, २; २२८०  
 उशधक् ३, ३४, ३, १३०३  
 ऊर्ध्वः रथः न ३, ४९, ४, १४२७  
 ऊर्ध्वसानः इहणे मनुषे १०, ९९, ७; २६८६  
 ऋग्मी ऋग्मिभिः १, १००, ४, ९६०  
 ऋग्मियः १, ९, २, ५६ । ५१, १, ७९५ । ६२, १; ८७२ ।  
 ६, ४५, ७, २०६६ । ८, ४०, १०, ३११०  
 ऋघायन् १०, ११३, ६, २७५०  
 ऋवायमाणः १, १०, ८, ६५ । ६१, १३; ८६८ । १७६, १, १०८५  
 ऋवावान् ३, ३०, ३; १२४० । ४, २४, ८; १५८४  
 ऋवीषमः १, ६१, १, ८५६ । ६, ४६, ४; २०९३ । ८, ३२, २६;  
 २०५ । ६२, ६, ५७१ । ६८, ६; २२९६ । ९०, १; २३९१ ।  
 ९२, ९; २४०५ । १०, २२, २; २४६७  
 ऋजीषः १, ३२, ६, ७२०  
 ऋजीषिन्-षी ३, ३२, १; १२८२ । ३६, १०; १३३२ ।  
 ४३, ५; १३९५ । ४६, ३, १४११ । ५०, ३; १४३१ ।  
 ४, १६, १, ५; १४६७, १४७१ । ५, ४०, ४, १७६८  
 ऋजीषिन् ६, १७, २, १०, १८४२, ५० । १८, २; १८५७ ।  
 २०, २, १८८५ । २४, १; १९२८ । ४२, २, १९९९ ।  
 ७, २४, ३; २१८८ । ८, ३२, १; १८० । ३३, १२; २२१ ।  
 ७६, ५, ६३२ । ८, ९०, ५; २३९५ । ९६, ९, २३५३ ।  
 [सोम] १०, ८९, ५; ३२७६  
 ऋजुक्रतुः १, ८१, ७, ९२२  
 ऋजसानः ४, २१, ५, १५४८  
 ऋणकान्तिः ८, ६१, १२, ५५९  
 ऋणयाः ४, २३, ७, १५७२  
 ऋतम् ४, २३, ८, १०; १५७३ ७४-७५ । ८, ६, १०, २५२  
 ऋतं कृण्वन् २, ३०, १; १२२७  
 ऋतपाः ७, २०, ६; २१५६  
 ऋतस्य प्रजा ८, ६, २; २४४  
 ऋतयुः ८, ७०, १०; २३३०  
 ऋतावत्-वा ३, ५३, ८; १४६०  
 ऋतावृधा (धौ) [इन्द्रासौ] ६, ५९, ४; ३०४९ । [सविता]  
 ७, ८२, १०; ३१८१ । ७, ८३, १०; ३१९१

ऋतीष-तिस-दः ८, ४५, ३५; ४७७ । ६८, १; २२९१ ।  
 ८८, १, ८९४  
 ऋतुपाः ३, ४७, ३; १४१६ । १०, ९९, १०; २६८९  
 ऋतेजाः ७, २०, ६, २१५६  
 ऋत्विजा [इन्द्राग्नी] ८, ३८, १; ३०९१  
 ऋत्विगः ८, ६३, ११; ५८८ । ८, ४०, ११; ३१११  
 ऋभुः १०, २३, २; २४८२ । १४४, २; २७९८  
 ऋभुक्षाः १, ६३, ३, ८८७ । ८, ४५, २९, ४७१ । ९६, २१,  
 २३८३ । १०, २३, २; २४८२ । ७४, ५; २६३८  
 ऋभुमान् ३, ५२, ६; १४५१ । ६०, ६; ३३४२  
 ऋभुष्टिरः ८, ७७, ८; ६४७  
 ऋभ्रवः १०, १२०, ६, २७६९  
 ऋभ्रवा १, १००, १२, ९६८ । ६, ३४, २; २०२२ । ८, ७०, ३,  
 २३२३  
 ऋभ्रवा रुद्रेभिः १, १७०, ५; ९६१ । १०, ९९, ५; २६८४  
 ऋषि ५, २९, १; १६६७ । ८, ६, ४१, २८३ । १६, ७; ३८८  
 ऋषिचोदनः ८, ५१, ३, ५०८  
 ऋषीबस्-वान् ८, २, २८, १४३  
 ऋषवः १, ८१, ४, २१९ । २, २१, ४, १२२१ । ३, ३२ ७;  
 १२८८ । ३५, ८, १३१९ । ४, १९, १, १५२२ । २०, ६,  
 ९; १५३८, १५४१ । २३, १; १५६६ । ३३ ३, १७१९ । ६,  
 १९, २; १८७२ । २९, ६; १९६७ । ८, ४६, १२; १८२८ ।  
 ५०, ७, ५०१ । ९३, ९; २४३८ । १०, १४८, २; २८१०  
 ऋष्वौजा १०, १०५, ६; २७१९  
 एकः ५, ३२, ९, ११; १७१३, १७१५ । ६, १८, ३; १८५८ ।  
 ८, २, ३१; १४६ । १०, १३८, ६; २७९७  
 एकः आजिषु ४, १७, ९, १४९६  
 एकः ईशानः ओजसा ८, ६, ४१, २८३  
 एकः चर्षणीनाम् १, १७६, २; १०८६ । ३, ३०, ४-५; १२४१-४२  
 एकराट् अस्य भुवनस्य ८, ३७, ३; १७७८  
 एकवीरः १०, १०३, १; २६९२  
 एधमानद्विर् ६, ४७, १६; २११४  
 एनः १, १७३, ९; १०६४  
 एवया त्वत् न ८, २४, १५; १८०४  
 ओजः आविष्कृवानः ४, १७, ३; १४९०  
 ओजः उशमानः ४, १९, ४; १५२५  
 ओजसा एकः ईशानः ८, ६, ४१; २८३  
 ओजसा महान् ८, ६, १, २६; २४३, २६८  
 ओजसा सार्कं जातः २, २२, ३; १२२५

ओजस्वान् ८, ७६, ५; ६३२  
 ओजः मिमान २, १७, २; ११८२  
 ओजिष्ठः १, १२९, १०; १००९ । ८, ९३, ८; २४३७ । ९७,  
 १०; ९८५ । १०, ७३, १, २६२३  
 ओजीयान् ६, २०, ३; १८८१ । १०, १२०, ४, २७६७  
 ओदतीनां नदः ८, ६९, २, २३०५  
 ककुब्-प् ८, ४५, १४, ४५६  
 ककुब् [अग्निः] वा० य० १३, १४; २९३०  
 कण्वमत्-मान् ८, २, २२, १३७  
 कनीन ३, ४८, १; १४१९ । ८, ६९, १४; २३१६ । १०,  
 ९९, १०; २६८९  
 कर्ता अपांसि ८, ९६, १९; २३६१  
 कर्ता ज्योतिः समस्तु ८, १६, १०; ३९१  
 कर्ता पितृणाम् ४, १७, १७; १५०४  
 कर्ता वीर नयं सर्ववीरम् ६, २३, ४; १९२१  
 कर्ता समदनस्य १, १००, ६; ९६२  
 कर्ता सुदासे लोकम् ७, २०, २, २१५२  
 कर्मणः धर्ता विश्वस्य १, ११, ४, ७३  
 कवासखः ५, ३४, ३, १७२९  
 कविः १, ११, ४, ७३ । १७४, ७; १०७५ । १७५, ४; १०८२ ।  
 ३, ४२, ६; १३८७ । ४, २५, २; १५८९ । ६, ३२, ३, २०१३ ।  
 ७, १८, २, २१२० । ८, ४५, १४; ४५६ । १०, ९९, ९;  
 २६८८ । ८, ४०, ३, ३१०३  
 कविच्छदा (दौ) [इन्द्राग्नी] ३, १२, ३; ३०३२  
 कविवृधः प्रानथा ८, ६३, ४, ५८१  
 कवीनां कवितमः ६, १८, १४, १८६९  
 कामी २, १४, १, ११५०  
 कारुघायाः ३, ३२, १०; १२९१ । ६, २४, २; १९२९  
 काव्यः १०, १४४, २; २७९८  
 कियेधाः १, ६१, ६, १२; ८६१, ८६७  
 कीज ८, ६६, ३, ६५५  
 कीरिचोदनः ६, ४५, १९, २०७८  
 कृणवत् मालुषायुगा ८, ६२, ९; ५७४  
 कृणवन् पुरुणि नर्या अपांसि ८, ९६, २१; २३६३  
 कृणवन् साधु ८, ३२, १०; १८९  
 कृणवानः मायाः ३, ५३, ८; १४६०  
 कृतब्रह्मा ६, २०, ३, १८८१  
 कृतुः ६, १८, १५; १८७० । ८, १६, ३; ३८४  
 कृष्टीनां पतिः ६, ४५, १६; २०७५  
 कृष्टीनां राजा १, १७७, १; १०९७ । ४, १७, ५, १४९२

केतुः सत्वनाम् ८, ९६, ४, २३४८  
 केवलः १, ७, १०, ३७ । ४, २५, ७; १५२४  
 कौशिकः १, १०, ११; ६८  
 क्रतुः १०, १०४, १०, २७१२  
 क्रतु युञ्जन्तमः ते १, १७५, ५, १०८३  
 क्रतुः सहस्रदात्राम् १, १७, ५, ३१३८  
 क्रतुना साक जातः २, २२, ३, १२२५  
 क्रतुमान् १, ६१, १२; ८८३ । १०, ११३, १; २७४५  
 क्रतुम् शीर्षणि भरति २, १६, २; ११७३  
 क्त्वा योद्धा ८८८, ४, ८९२  
 क्षपावान् १०, २९, १, २५१५  
 क्षपां वस्ता ३, ४९, ४, १४२७  
 क्षममाणः १०, १०४, ६, २७०८  
 क्षयः मानस्य ८, ६३, ७, ५८४  
 क्षयत् मघोनः ६, २३, १०; १९२८  
 क्षेमस्य त्राम् १, १००, ७; ९६३  
 क्षोभणः चर्षणीनाम् १०, १०३, १, २६९०  
 खजकृत् ६, १८, २; १८५७ । ७, २० २, १७२३ । ८, १, ७, ९३  
 खजंकरः १, १०२, ६; ८३३  
 गणपतिः १०, ११२, ९, २७४३  
 गन्ता १, ९, ९, ५६  
 गभीरः ३, ४६, ४, १४१२ । १०, ४७, ३; २८४४  
 गम्भीरः २, २१, ४, १२२०  
 गवां जनिता ८, ३६, ५, १७७३  
 गवां पतिः १, १०१४; ८२० । ३, ३१, ४, १२६३  
 गविषे (चतुः) ८, २४, २०, १८०९  
 गवेषणः १, १३२, ३; १०३० । ७, २०, ५; २१५५ । २३, ३; २८१२ । ८, १७, १५; ४०८  
 गन्धुः १, ५१, १४; ७५८ । ७, ३६, ३, २२२५  
 गाथभवाः ८, २, ३८; १५३  
 गाथान्वः ८, ९२, २; २३९८  
 गायत्रवेपसु-पाः ८, १, १०; ९६  
 गार्ह्यः १०, १११, २, २७२६  
 गिर्वणस्-णा १, ५, ७, १०, २०, २३ । १०, १२; ६९ । ११, ६, ७५ । ६२, १, ८७२ । ३, ४०, ६; १३६९ । ४१, ४, १३७६ । ५१, १०; १४४३ । ४, ३२, ८, ११; १६५२, १६५५ । ६, ३२, ४, २०१४ । ३४, ३; २०२३ । ४०, ५, १९९२ । ४५, १३, २०७२ । ४५, २८; २०८७ । ४६, १०; २०९९ । ८, १, २६, ११२ । २, २, ७, १४२ । ३, १८; १७३ । १२, ५,

२९२ । १३, ४, २२, ३२४, ३४० । २४, १२, १८०१ । ३० ७; १८६ । ४९, ३, ४८७ । ५१, ६; ५१० । ५२, ८; ५२० । ६१, १४; ५६१ । ८२, ७; २३९० । ९०, ३; २३९३ । ९३, १०, २४३९ । ९५, १; २३३६ । ९५, २ २३३७ । ९८, ७; २३७० । ९९, २, २३७७ । साम० २९४, २०, ८१ गिर्वणस्तमः ६, ४५, २०; २०७९ । ८, ६८, १०; २३०० । ५, ८६४; ३०४३  
 गिर्वणस्तुः १०, १११, १, २७०५  
 गिर्वाहस्य-हा १, ३०, ५, ७०३ । ६१, ४, ८५२ । १३९, ६, १०४१ । ६, २१, २, १८०, ८ । २४, ६; १९३३ । ८, २, ३०, १४५ । ९६, १०, २३५४  
 गीभिः श्रुत ८, २, २७, १४०  
 गीर्षु आयत. विश्वासु ८, ९२ ७; २४०३  
 गर्तः १, १७३, २ १०५७  
 गर्तश्रवाः १, ६१, ५; ८६०  
 गृणानः ६, ३२, २, २०१२ । ३६, ४; २०३४ । ८, ९३, १०, २४३९ । १०, १३८४, २७९५ । १४७, ५; २८०८  
 गृणाना [ इन्द्रावरुणौ ] ६, ६८, ८; ३१६८  
 गृणान अंगिरोभिः २, १५, ८, ११६९ । ४, १६, ८ १४७४ । १०, १११, ४, २७२८  
 गृणानः अंगूषेभिः ४, २९, १; १६०४  
 गृणान. विश्वाभिः धीभि शच्या १०, १०४, ३, २७०५  
 गुत्सः ३४८, ३, १४२१ । १०, २८, ५, २५२६  
 गोजित् २, २१, १; १२१७  
 गोत्रभिद ६, १७, २; १८४२ । १०, १०३, ६, २६९६  
 गोत्राणि सहसा अभिगाहमानः १०, १०३, ७, २६९७  
 गोदत्र. ८, २१, १६, ४२४  
 गोदा. ३, ३०, २१, १२५८ । ४, २२, १०; १५६४  
 गोनाम् अपवर्ता ४, २०, ८; १५४०  
 गोपति. १, १०१, ४, ८२० । ३, ३०, २१, १२५८ ३१, २९, १२८० । ४, २४, १, १५७७ । ३०, २२, १६२७ । ६, ४५, २९; २०८० । ७, १८, ४; २१२२ । ८, २९, ३; ४११ । ६९ ४; २३०७ । १०, ४७, १; २८४२  
 गोपति गवाम् एकः ७, ९८, ६; २०८४  
 गोपतिः विश्वस्य ८, ६२, ७, ५७०  
 गोपाः ३, ३१, १४, १२७३ । [ इन्द्रवायु ] ७, ९१, २, ३०३६  
 गोमान् ४, ३२, ७; १६५१ । य० २६, ४; २९६४  
 गोविद् ८, ५३, १, ५२५ । १०, १०८, ५-६, २६९५ ९६  
 गोषणः [ गोसनः ] ४, ३२, २२, १६६६  
 गौः गव्यते असि ६, ४५, २६, २०८५

गमन्ता अध १०, २२, ६, २४७१  
 घनः वृत्राणाम् १, ४, ८, ११, ३, ४९, १, १४२४। ८, ९६, १८, २३६०  
 घनाघन १०, १०३, १, २६९२  
 घृतासुती [ इन्द्राधिष्णू ] ६, ६९, ६, ३३११  
 घृष्टुः १०, २७, ६, २४९६ । १४४, ३, २८००  
 घृष्टिः ३, ४६, १, १४०९ ६, १८, १२, १८६७  
 घोर. ७, २८, २, २२०९  
 घ्नन् वृत्राणि ३, ३०, २२, १२५८। ३१, २२, १२८१। ३२, १७, १२९८। ३४, ११, १३११। ३५, ११, १३२०। ३६, ११, १३३३। ३८, १०, १३५४। ३९, ९, १३६३। ४३, ८, १३९८। ४८, ५, १४२३। ४९, ५, १४२८। ५०, ५, १४३३  
 चक्रमान ५, ३६, १, १७४४  
 चक्रानः शवसा ६, ३६, ५, २०३५ । ७, २७, १, २०३३  
 चक्रानः सुमतिम् १०, १४८, ३, २८११  
 चक्रवम् वान विश्वा ६, १७, १२, १८५३  
 चक्रमासजः ५, ३४, ६, १७३२  
 चक्राणा [ इन्द्रावरुणौ ] ४४०, १० ३१५५  
 चक्रिः १, ९, २, ४९  
 चत्विजः ६, १९, ४, १८७४  
 चतु समुद्रः १०, ४७, २, २८४३  
 चन्द्रबुधः १, ५२, ३, ७६२  
 चन्द्रवर्णा [ मरुतः ] १, १६१, १२, ३०६१  
 चरन् १, ६, १ २४  
 चर्च्यमाणः अनुष्टुभम् अनु १०, १२४, ९, ३२७७  
 चक्रयः १०, ५०, २, २६०२ । १७, २, २८४३ । अथ० ६, ९८, १, २९०२  
 चक्रुत्य चरणीनाम् ८, २४, २३, १८१२  
 चर्षणी [ इन्द्राग्नी ] १, १०९, ५, ३०२५  
 चर्षणिप्रा. १, १७७, १, १०९१। ३, ३४, ७, १३०७। ६, १९, १, १८७१। ३९, ४, १९८६। ७, ३१, १०, २२३२। अ० ४, २४, ३, २८६९  
 चर्षणा ३, ३७, ४, १३३७ । ५१, १, १४३४। ४, १७, २०, १५०७। ८, ९६, २०, २३६२। १०, ८९, १, २६६३  
 चर्षणीसहः ६ ४६, ६, २०९५ । ८, १, २, ८८। २१, १०, ४१८। ७, ९४, ७, ३०८५  
 चर्षणीनाम् एकः १, १७६, २, १०८६  
 चर्षणीना धर्तारा [ इन्द्रावरुणौ ] १, १७, २ ३१३५  
 चर्षणीनां राजा ७, २३, ३, २२०५ । ८, ७०, १, २३२१  
 चपणीनां वृषभः ६, १८, १, १८५६। ८, ९६, ४, १८, २३४८-६०

चर्षणीनां सम्राट् ८, १६, १, ३८२  
 चारुः ३, ४९, ३, १४२६  
 चिकित् ८, ५१, ३, ५०७  
 चिकित्त्रः साम० २९४ २९८१  
 चिकित्त्वान् १, १६०, १, १०४३। ३, ४४, २, १४००। ४, १६, २, १४६८। २९, २, १६०५। ८, ६, २९, २७१। ९५, ५, २४०। १०, ९९, १, २६८०। अथ० ७, ९७, १, ३१२०  
 चित्रः ४, ३१, १, १६३०। ३२, २, १६४६। ५, ३९, १, १७६०। ६, ४६, २, ५, २०९१, २०९४। ७, २०, ७, २१५७। ८ ४६, २०, १८३६। ९७, १५, ९९०। [मरुतः] १, १६५, १३, ३२६२  
 चित्रतमः ६, ३८, १, १९७८  
 चित्रभानुः १, ३, ४, १  
 चेकितानः युगेयुगे वयसा ६, ३६, ५, २०३५  
 चेतिष्ठः ८, ४६, २०, १८३६  
 चोदप्रवृद्धः १, १७४, ६, १०७४  
 चोदिता रधस्य १०, २४, ३, २४९०  
 चोदौ रधस्य [ इन्द्रासोमी ] २, ३०, ६, ३२७०  
 च्यवनः २, २१, ३, १२१९। ६, १८, २, १८५७  
 च्यवनः अच्युतानाम् ८, ९६, ४, २३४८  
 च्यवनः विभूतद्युम्नः ८, ३३, ६, २१५  
 च्यावयन् अच्युतानि ३, ३०, ४, १२४१  
 च्यौतन विश्वस्मिन् भरे नृन् १०, ५०, ४, २६०४  
 छन्दुः हर्यतः १, ५५, ४, ८००  
 जग्मिः ६, ४२, १, १९२८। ७, २०, २, २१५१। ८, ४६, १७, १८३३  
 जनसहः २, २१, ३, १२१९  
 जनभक्षः २, २१, ३, १२१९  
 जनयोपनः १०, ८६, २२, १६६१  
 जनानां तरणिः ८ ४५, २८, ४७०  
 जनानां राजा ८, ६४, ३, ५९१  
 जनाषाट् १, ५४, ११, ७९६  
 जनिता १, १२९, ११, १०१०। ८, ९९, ५, २३८०  
 जनिता अश्वानाम् ८, ३६, ५, १७७३  
 जनिता गवाम् ८, ३६, ५, १७७३  
 जनिता दिवः ८, ३६, ४, १७७२  
 जनिता पृथिव्याः ८, ३६, ४, १७७२  
 जनिता सूर्यस्य ३, ४९, ४, १४२७  
 जनिता मतीनाम् [ इन्द्राधिष्णू ] ६, ६९, २, ३३०७

जनुषां राजा ४, १७, २०; १५०७  
जज्ञान ३, ४४, ४; १४०२ । ६, ३८, ५; १९८२  
जज्ञानः सद्यः ८, ९६, २१; २३६३  
जयत्-न् १०, १०३, ६; २६९६  
जयन् प्रमृणः [बृहस्पतिः] वा० य० १७ ३६, २९३२  
जयन् धना १०, १२०, ४; २७६७  
जयन् स्पृधः १०, १६७, २; २८३०  
जरमाणः सुवृक्तिभिः दिवेदिवे ३, ५१, १; १४३४  
जरयन् २, १६, १; ११७२  
जरिता वसोः ३, ५१, ३; १४३६  
जह्वाण ७, २१, ४; २१६४  
जागृविः ८, ९२, २३; २४१९  
जातः ३, ५१, ८; १४४१  
जातः सहसे सनादेव ४, २०, ६; १५३८  
जातुभर्मा १, १०३, ३; ८४१  
जायमान. प्रथमम् ४, १७, ७; १४९४  
जायमान सन्तभ्यः भशत्रुभ्यः ८, ९६, १६; २३५८  
जारः १०, ४२, २; २५४७ । १०, १, १०; २७३४  
जिह्वमान. वृत्रा ३, ३०, ४; १२४१  
जिष्णुः ६, ४५, १५; २०७४ । १०, १११, ३; २७२७  
जीरदालुः ८, ६२, ३; ५६८ [१०३, २; २६९३  
जुजुषाण ७, २३, ३; २१८९  
जुजुषाणः स्तोमम् ८, ६३, ८; ६२०  
जुजुष्वान् ८, ६४, ८; ५२६  
जुषाणम् २, १४, ९; ११५८ । ८, १३, १३; ३३३ । १०,  
१७९, ३; २८३८  
जुषाणः ब्रह्म ७, २४, ४; २१८९  
जुषाणः ब्रह्मकृतिम् ७, २९, २ २२१४  
जुषाणः सवनम् १०, १६०, २; २८२५  
जुषाणः हृदा मनसा उत ७, ९८, २; २२८०  
जुषाणः होतुः यज्ञम् ४, २३, १; १५६६  
जुष्टतरः ८, ९६, ११; २३५५  
जेता १, ११, २, ७१ । २, ४१, १२; १२३७ । ८, ९९, ७, २३३०  
जेता पृ-सु १, १७८, ३; १०९८  
जेन्यावस् [इन्द्राग्नी] ८, ३८, ७; ३०९७  
जोहूत्रः २, २०, ३; १२१०  
ज्यायस्-यान् ३, ३८, ५; १३४९ । १०, ५०, ५; २६०५  
ज्येष्ठ. [ब्रह्मगस्वति.] ७, ९७, ३; ३३६०  
ज्येष्ठ. गातुभिः १, १००, ४; ९६०  
ज्येष्ठः वृषभाणाम् ८, ५३, १; ५०५

ज्येष्ठतमः २, १६, १; ११७२  
ज्येष्ठराजः ८, १६, ३; ३८४  
ज्योतिषा विभ्राजत ८ ९८, ३ २३६६  
तक्त. शवसा अभ्यः ६, ३२, ५. २०१५  
ततुरिः ६, २२, २; १९०८ । २४, २, १९२९.  
ततृदान ४, २८, ५; १६०३  
ततान भा विश्वानि शवसा ७, २३, १; २१८०  
तत् [बर्हि] ओकाः ३, ३५, ७. १३१८  
तत् [रथ] सिन १, ६१, ४; ८५९  
तत् [सोम] कामः २, १४, २, ११५१  
तनु ८, ९६, १०, २३५४  
तनूयाः ४, १६, २०, १४८६ । ६, ४६, १०, २०९०.  
तनूरुवा (चौ) [इन्द्राग्नी] ७, ९३, ५, ३०७५  
तन्वे इच्छमान ४, १८, १०, १५१८  
तन्वं ८, ६८, ७; २२९७  
तमसः विहन्ता ववत्रुवाशित् १, १७३, ५, १०६०  
तरणिः ७, २६, ४, २२०१  
तरणि जनानाम् ८, ४५, २८, ४७०  
तरणि पृ-सु ३, ४९, ३; १४२६  
तरदृष्टेषाः १, १००, ३, ९५९  
तरस्वी ८, ९८, १०; ९८५  
तरुना पृतनाना विश्वामाम् ८, ७०, १, २३२१  
तरुना वाजयम् १, १२९, २. १००१  
तरुत्र १, १७४, १. १०६९ । २, १११, १५-१६. ३१२५-१६ ।  
३, ३०, ३, १२४० । ६, १७, २, १८४२ । २६, २, १०४८ ।  
१०, ४७, ४, २८४५  
तरुत्रः महिना ७, २१, ९, २१६९  
तरुण्यतः ८, ९९, ५; २३८०  
तवस्-से (चतु०) १, ५१, १५; ७५९ । ५८, १८, ११ ।  
६१, १, ८५६ । ५, ३३, १; १७१७ । ६, १७, ४, ८, १८४४-  
१८४८ । १८, ४, १८५९ । ३२, १, २०११ । ८, ९३, १०.  
२३५४ । ९८, १०, ९८५ । १०, २५, ५, २५२६  
तवसः तवीयान् ६, २०, ३; १८८६  
तवस्तः १, ३०, ७; ७०५  
तवस्तमा (मा) [इन्द्राग्नी] १, १०९, ५, ३०२५  
तवागा ४, १८, १०; १५१८  
तविष ३, ३४ २; १३०२ । ८, १५, १, ३६९ । ४३, १२,  
१८२८ । ९६, १८, २३६० । १, १६५, ६, ८, ३२५५,  
३२५७ । १, १७१, ४, ३०६६

नविषीवान् ४, २०, ७, १५३९ । ७, २५, ४, २१९५ ।  
 १०, १०५, ३; २७१६  
 नविषीमि आवृतः १, ५१, २; ७४६ । ८, ८८, २, ८९५  
 नव्यान् ३, ३२, ११, १२९२  
 तस्थिवम-वान् ३, ३८, ९, १३५३  
 तिग्मायुध. २, ३०, ३; १२२९  
 तिन्त्रिषाण. १०, ५५ १, २६१४  
 तिल्लिराणा (णा) बहि [इन्द्रावर्णो] १, १०८, ४, ३०११  
 तुग्नावृत् ८, ४५, २९, ४७१ । ८, ९२, ७ २३८०  
 तुजत्-न १, ६१, ६; ८६१  
 तुजा [इन्द्रावर्णो] ६, ६८, २; ३१६२  
 तुम्रः ३, ५०, १ १४२९ । ४, १७, ८, १४९५ । १८, १०, १५१८  
 मुरः १, ६१, ६, १३, ८५६, ८६८ । ६, १८, ४, १८५९ ।  
 ३२, १; २०११ । ७, २२, ५, २१७५ । ८, ७८, ७, ६५७  
 तुग्न ६, १८, ४, १८५९  
 तुगापाट [साह] ३, ४८, ४, १४२२ । ५, ४०, ४, १७६८ ।  
 ६, ३०, ५, २०१५ । १०, ५५, ८, २६२१ । अथ० २, ५, ३  
 २८६५ । साम० ९५४, २९९९  
 तुगीयादित्य ८, ५२ ७; ५२१  
 तुर्वाणि १, ५७, ३; ८०७ । ६१, ११, ८६६ । १३०, ९, ९,  
 १०१९, १०१९ । ५, ३५, ३, १७३८ । १०, ३२, ५, २५३४  
 तुर्वाणि घृतन्यून ४, २०, १; १५३३  
 तुविकर्मि ३, ३०, ३, १२४० । ६, २२, ५, १९११ । ८, २, ३१,  
 १४६ । १६, ८; ३८९ । ६८, १, २२९१ । ८०, २; ६७१  
 तुविकर्मिन-मीं ८, ६६, १२; ६२४  
 तुविकर्मितम ६, ३७, ४; १९७६  
 तुविक्रतु ८, ६८, २, २२९२  
 तुविष्माम. ६, २२, ५, १९११  
 तुविष्मि २, २१, २, १२१८  
 तुविष्माव. ८, १७, ८, ४०१ । ६४, ७ ५९५  
 तुविजात. १, १३१, ७; १०२७ । ३, ३२, ११ १२९२ ।  
 ६, १८, ४, १८५९ । १०, २९, ५, २५१९  
 तुविदेष्ण ८, ८१, २; ६७१  
 तुविद्युम्नः १, ९, ६, ५३ । ४, २१, २; १५०५ । ६, १८, ११-१२,  
 १८६६-६७ । ८, ९०, २; २३९०  
 तुविनृम्णः ४, २२, ६, १५६० । ६, ३०, ५; २०१० ।  
 ६, ४६, ३, २०९२ । ८, २४, २७, १८१६ । ७०, १०, २३३० ।  
 १०, १४८, १, २८०९  
 तुविप्रतिः १, ३०, ९; ७०८  
 तुविषाध १, ३२, ६; ७२०  
 तुविष्मात्रः अयोमि ८, ८१, २, ६७१

तुविमृक्षः ६, १८, २; १८५७  
 तुविशाधा ४, २१, २; १५४५  
 तुविशाम ६, ४४, २, २०३७  
 तुविशुष्मः [इन्द्रावर्णो] २, २२, १; १२२३ । ८, ६८, २;  
 २२९२ । ६, ६८, २; ३१६२  
 तुविष्टमः अथ० ६, ३३, ३; २८८९  
 तुविष्मान् १, ५५, १; ७९७ । २, १२, १२, ११३३ । ४, २९,  
 ३; १६०६ । ७, २०, ४; २१५४ । १०, ४४, १, २५६८ ।  
 ७४, ६; २६३९ । १, ६६५, ६, ३२५५  
 तुविष्वाणिः (स्वनिः) २, १७, ६; ११८६  
 तुवी [वि] मघ १, २९, १-७, ६९२ ९८ । ८, ६१, १८;  
 ५६५ । ८१, २; ६७१ । ९२, २९; २४२५  
 तुतुजानः १, ३, ६, ३ । ६१, १२; ८६७ । ६, ३७, ५; १९७७ ।  
 ८, १३, ११; ३३१ । १०, ४४, १, २५६८  
 तुतुजिः ४, ३२, २, १६४६ । १०, २२, ३; २४६८  
 तुर्णि ३, ५१, २; १४३५  
 तुर्त्यः ८, ९९, ५; २३८०  
 तुर्वन् ६, २०, ३; १८८६  
 तुर्वन् श्रवस्यानि १, १००, ५, ९६१  
 तुपल प्रभर्मा [सोमः] १०, ८९, ५; ३२७६  
 तुषत् २, २२, १ १२२३  
 तुषाणः ५, ३६, १, १७४४  
 तोकसाता ६, १८, ६, १८६१  
 तोदः ४, १६, ११, १४७७  
 तोशा(शौ)[इन्द्रावर्णो] ३, १२, ४, ३०३३ । ८, ३८, २, ३०९२  
 त्यागः ४, २४, ३, १५७९  
 त्रदः ८, ४५, २८, ४७०  
 त्रा ४, २४, ३; १५७६  
 त्रा क्षेमस्य १, १००, ७, ९६३  
 त्राता १, १२९, १०; १००९ । १७८, ४, ११०० । ६, २५, ७;  
 १९४४ । ६, ४७, ११; २१०९  
 त्राता त्रिमस्य मावन १, १२९, ११; १०१० । ७, २०, १;  
 २१५१ । ४, १७, १७; १५०४ । अथ० १९, १५, ३; २९१६  
 त्रिससैः सत्त्वभिः [ उपेतः ] १, १३३, ६; १०३९  
 त्वष्टा ६, ४७, १९, २११७  
 त्वा प्रति कश्चन न ८, ६४, २; ५९०  
 त्विषीमान् १, ५६, ५; ८०१ । २, २२, २; १२२४  
 त्वेषः १, १००, १३; ९६९ । ८, ४०, १०, ३११०  
 त्वेषनृम्ण १०, १२०, १; २७६४  
 त्वेषसंहक ६, २२, ९; १९१५

दंसना ८, १, २७, ११३ । ८८, ४; ८९७  
 दसनावान् १, ३०, १६, ७१४ । ३, ३९, ४, १३५८  
 दसिष्ठः ८, २४, २५-२६ । १८१४-१५  
 दक्षं पृञ्चत् ८, १४, १४, १८०३  
 दक्षाय्य भरहृतये प्रतूर्तये (च) १, १२९, २, १००१  
 दक्षिणावान् ३, ३९, ६, १३६०  
 दत्-न् १०, १०५, २, २७१५  
 ददत् विप्रेभ्यः मघा ५, ३२, १२, १७६६ =  
 ददिः गाः ६, २३, ४; १९२१  
 ददशानः ४, १७, १७, १५०४  
 दधन् पुरः ५, ३१, ११, १७०२  
 दधानः पुरुणि नयां ३, ३४, ५, १३०५  
 दधानः सत्रा शवांसि ८, ९७, १२, ९८७  
 दधाना द्रविणः [इन्द्राविष्णु] ६, ६२, ३, ३३०८  
 दधष वाजेषु ३, ४२, ६; १३८७  
 दध्वणिः ८, ६१, ३, ५५०  
 दध्ववान् ४, २२, ५; १५५९ । ५, २९, १४, १६८०  
 दध्वन्-ध्वा ६, ४२, १; १९९८  
 दमयन् पृतन्यून् १०, ७४, ५; २६३८  
 दमायन् ६, ४७, १६, २१६४  
 दमिता अभिक्रतूनाम् ३, ३४, १०, १३१०  
 दमिता विश्वस्य ५, ३४, ६, १७३२  
 दमूना ३, ३१, १६; १५७५ । ६, १९, ३, १८७३  
 दम्पतिः ८, ६९, १६, २३१८  
 दम्भयन् धुनिम् १०, ११३, ९; २७५३  
 दयते एकः देवत्रा मर्तान् ७, २३, ५; २१८४  
 दयमान महो धनानि १, १३०, ७, १०१७  
 दयमान सेनाभिः १०, २३, १; २४८१  
 दरीमन् दुर्भतीनाम् १, १२९, ८, १००७  
 दर्ता पुराम् १, १३०, १०, १०२० । ८, ४, ६, २३६९  
 दर्भा पुराम् १, ६१ ५, ८६० । १३३, ६, १०३३ । ३४५, २;  
 १४०५  
 दशमः ८, २४, २३; १८१२  
 दशस्यन् दाशुषे १, ६१, ११, ८६६  
 दशम् १, ६२, ५-६, ११-१२, ८७६-७७, ८८२-८३; १२९, ३,  
 १००२ । ५ ३१, ७, १६९९ । ३४, १, १७२७ । ६, १८, ५,  
 १८६० । ७, २२, ८; २१७८ । ३१, ९; २२३१ । ८, ४५, ३५;  
 ४७७ । ८८, १; ८९४ । ९२, १८, २४६४ । १०, ९९, १०;  
 २६८९ । १४७, ५; २८, ८  
 दक्षतमः २, २०, ६; १२१३

दस्यवर्चाः १, १७३, ४, १०५९  
 दस्युहत्याय उपप्रयन् १, १०३, ४; ८४२  
 दस्युहा १, १००, १२; ९६८ । ६, ४५, २४, २०८३ । ८, ७६, ११;  
 ६३८ । ७७, ३, ६४२ । १०, ४७, ४, २८४५  
 दस्योः हन्ता ८, ९८, ६; २३६९  
 दस्ता [इन्द्राविष्णु] ६, ६९, ७; ३३१२  
 दाता ४, १, ७, १६३६ । ६, २३, ३, १९२० । ८, ३३, ८ २१७ ।  
 ५२, ५, ५१९ । १०, ५४, ५, २३१२  
 दाता हषाम् ८, ४६, २, १८४८ । ६, ६०, १३ ३०६८  
 दाता प्रथमः ८, ९०, २ २३९२  
 दाता मघानि ४, १७, ८, १४९५  
 दाता मह ६, २९, १ १९६२  
 दाता महानां वाजानाम् ८, ९२, ३ २३९९  
 दाता रयीणाम् ८, ४६, २ १८५८ । ६, ६०, १३, ३०६८  
 दाता तसु दाशुषे ७, २०, २; २१५२  
 दाता वसूनाम् ८, ५१, ५ ५०९  
 दाता वाजस्य श्रवस्यस्य ८, ९६, २०, २३६२  
 दाता विश्ववारस्य रायः ६, २३, १० १९२७  
 दाता स्तुवते काम्यं वसु २, २२, ३, १२२५  
 दाता स्थविरस्य वाजस्य ६, ३७, ५, १९७७  
 दा [द] दृढाणः १, १३०, ४ १०१४  
 दाष्टि ४, १७, ८, १४९५  
 दानः ७, २७, ४; २२०६  
 दानवान् ८, ३२, १२ १९१  
 दामनः रयीणाम् ५, ३६, १ १७४४  
 दाशुषः भयर्वं ४, २४, १, २८६७  
 दामने कृत. ८, २३, ८, २४३७  
 दाशत् १०, १३८, ५; २७९६  
 दाश्वान् ८, ४९, २ ४८६ । १०, १०४, ६; २७०८  
 दिस्सन् ८, ८१, ३; ६७२  
 दिवक्षा ३, ३०, २१, १२५८  
 दिवः अमुष्य शासतः ८, ३४, १-१५, ४२५ ४३९  
 दिवः जनिता ८, ३६, ४; १७७२  
 दिवः दुहिता [उपाः] ४, ३०, ९, ३३४५  
 दिवः पतिः ८, १३, ८, ३९८ । ९८, ४-६, २३६७-६९  
 दिवः मूर्धा [अग्नि] वा० य० १३, १४, २९३०  
 दिव मानः ८, ६३, २; ५७९  
 दिवा वसुः ८, ३४, १ १५ ४२५-४३९  
 दिविस्पृशा [इन्द्रवायु] १, २३, २; ३२६३  
 दिवे (चतुर्धा षोः) १, ५५, ३; ७८८



दिव्यः ३,४७,५. १४१८। ६,१९,११; १८८१  
 दीर्घानः ३,३१,१५, १२७४  
 दीर्घायु ८,७०,७. २३२७  
 दुग्धः १,५७,३; ८०७। २,१२,१५ ११३६  
 दुरः अश्वस्य १,५४,२ ७७६  
 दुरः गोः १,५४,२; ७७६  
 दुरः यवस्य १,५४,२; ७७६  
 दुरोषाः ४,२१,६; १५४९  
 दुर्मतीनां प्रभङ्गः ८,४६,१९; १८३५  
 दुर्हणावान् ८,२,२०; १३५  
 दुःख्यवन. १०,१०३,२,७. २६९३,२६९७  
 दुष्टरा (रौ) [इन्द्राग्नी] ५,८६,२, ३०४२  
 दुष्टरीतुः २,२१,२, १२१८  
 दुहिता दिवः [उपाः] ४,३०,९, ३३४५  
 कृणाश. ७,३२,७; २२४१  
 कृता उशन्ता [इन्द्रवायु] ७,९१,२; ३२३६  
 हकडा ७,२७,२; २२०४  
 हकडा चित् ८,२४,१०; १७९९  
 हकडा चित् आरुज ३,४५,२, १४०५  
 देवः १,६३,८; ८९२। ८४,१९,९५५। १२९,१०,१०१०।  
 १६९७,८, १०५०। १७३,१३,१०६८। २,११,१३,१११३।  
 १२,१, ११२२। १३,५, ११४१। १९,५, १२०३।  
 २०,६,१२१३। २२,१-३,१२२३-२५। ३,३३,६,१२९९।  
 ४,१७,५,१४९२। २२,३,१५५७। २३,४-५, १५६९-७०।  
 ५,३३,३, १७१९। ६,१८,१४, १८६९। ३९,१,१,  
 १९८३,१९,८३। ७,३०,४, २०२१। ८,१,२२-२३,  
 १०८-९। २,७, १२२। १२,६,१५,१९. २९३,३०२,३०६।  
 ५१,७, ५११। ६१,६,५५३। ६५,४,६०४। ९३,११,  
 २४४०। १०,२३,७, २४८७। ८६,१; २६४०। १०४,९,  
 २७११। सामं १९६, २९७६। ऋ० ५,८६,५, ३०४४।  
 [इन्द्राग्नी] ६,५९,४-५; ३०४९-५०। ६,६०,१४,  
 ३०६९। अथ० ७,९७,३; ३१२२  
 देवः [वरुण.] ६,६८,९, ३१६९  
 देवतमः ४,२२,३, १५५७  
 देवम्रा [अग्निः वि०] ८,३४,८, ४३२  
 देवः देवस्य ८,९२,६, २४०२। १०,२२,४, २४६९  
 देववत्-वान् १०,४७,३; २८४४  
 देवौ [इन्द्रावरुणौ] ४,४१,२; ३१४७। [इन्द्रापर्वातौ] ३,५३,१  
 ३३५६।  
 देवग ३,३०,१९; १२५६  
 दोषतः वध २,२१,४, १२००

दोषुवत् मश्रु १०,२३,१, २४८१  
 दुक्ष ६,२४,१, १९२८। ३७,२; १९७४। ८,२४,२०;  
 १८०९। ६६,६, ६१८। ८८,२; ८९५  
 द्युमत्-मान् १,६२,१२, ८८३। ६,१७,४; १८४४।  
 द्युमत्तमः १,५४,३; ७७७  
 द्युम्नी ८,८९,२, २३८५। ९३,८, २४३७  
 द्युपः ८,१७,१४; ४०७  
 द्युपदे [इन्द्राग्नी] ४,३२,२३ ३३४८  
 द्युः हरिषु १,५२,३; ७६२  
 द्विवर्हस्-र्हाः ६,१९,१, १८७१। ७,२४,२, २१८७।  
 ८,१४,२; ३७०। १०,११३,४; २७५८  
 धनजित् २,२१,१, १२२७  
 धनजय ३,४२,६, १३८७। ८,४५,१३, ४५५  
 धनदा. १,३३,२; ७३१। ६,१९,५, १८७५  
 धनदाः विश्वस्य-श्रुतः ७,३२,१७; २२५१  
 धनपतिः अथर्व० ५,२३,२, २८७५  
 धनस्पृत् ३,४६,२, १४१०। ८,५०,६, ५००। १०,४७,४;  
 २८४५  
 धनानां सजित. ३,३०,२२. १२५९। ३१-३२,२२,१७,  
 १२८१,१२९८। ३४-३६,११. १३११,१३२२,१३३३।  
 ३८-३९,१०,९; १३५४,१३६३। ४३,८, १३९८।  
 ४८-५०,५; १४२३, १४२८, १४३३। १०, ८९, १८,  
 २६७९। १०४,११; २७१३  
 धनुः ते तुविधम् ८,७७,११, ६५०  
 धरुण रयीणाम् १०,४७,२; २८४३  
 धर्तारा चर्षणीनाम् [इन्द्रावरुणौ] १,१७,२; ३१३५  
 धर्ता धनानाम् १,१०३,५, ८३२  
 धर्ता दिवो रजस ३,४९,४, १४२७  
 धर्ता विश्वस्य कर्मणः १,११,४ ७३  
 धर्मकृत् ८,९८,१; २३६४  
 धामन् ८,६३,११; ५८८  
 धामसाचः ३,५१,२; १४३५  
 धायु ३,३०,७; १२४४  
 धियसानः नः५,३३,२, १७१८  
 धियस्पती [इन्द्रवायु] १,२३,३; ३२१४  
 धीत ८,३,१६; १७१  
 धीति ऋतस्य सादसः १०,१११,२, २७२६  
 धीरः १,६२,१२, ८८३। ५,२९,१; १६६७। १०, ८९, ८, २६६९  
 धुनि १,१७४,९; १०७७। ५,३४,५८; १७३१-३४।  
 ६,२०,१२, १८९५। [मोमः] १०, ८९, ५, ३०७६

धुनी वातस्य १०, २२, ४; २४६२  
 धृतप्रतः [इन्द्रावरुणौ] ६, १९, ५; १८७५ । ८, ९७, ११,  
 ९८६ । ६, ६८, १०, ३१७०  
 धृषत् १, ५५, ३-४, ७८८-७८९ । ६, ४५, २१; २०७० ।  
 ८, २१, २ ४१०  
 धृषन्मना १, ५२, १२, ७७१ । ६२, ५, ५७० । ८, ८९, ४, २३८७  
 धृषमाणः १, ५२, ५, ७६४  
 धृषितः ८, ३३ ६ २१५ । ९६, १७, २३५९ । १०, ११३, ५,  
 २७४२ । १३८, ४, २७९५  
 धृष्णः ७, १९, ३; २१४०  
 धृष्णु १, ३०, १४, ७१२ । ६३, ३; ८८७ । ८४, १, ९३७ ।  
 २, १६, ४; ११७५ । ३, ५२, ८, १४५३ । ४, १६, ७, १४७३ ।  
 २२, ५; १५५९ । ६, १७, १, १८४१ । २१, ७; १९०३ ।  
 २९, ३, १२६४ । ३७, ४, १९७६ । ७, २०, ५, २१५५ ।  
 ८, २४, १, ४, १७२०, १७९३ । ३३, ३, २१२ । ४५, १४;  
 ४५६ । ७८, ३, ६५३ । ८१, ७, ६७६ । १०, १०३, ३,  
 २६९३ । १११, ६, २७३० । १२०, ४; २७६७ ।  
 धृष्णुया ४, ३०, १३, १६१८ । ६, ४६, २, २०९१  
 धृष्णुवोजा. ८, ७०, ३; २३२३  
 धेनुः ८, १, १०, ९६  
 धेनूनां भद्रयानां पति ८, ६९, २, २३००  
 नक्षत्राभः ६, २२, २, १९०८  
 नदः भोदतीनाम् ८, ६९, २; २३०५  
 नद योयुवतीनाम् ८, ६९, २; २३०५  
 नदनुमान् ६, १८, २; १८५७  
 नपात् ४, ३२, २२, १६६६  
 नमस्यः । अथ० ६, ९८, १, २९०२  
 नरः ३, ५१, २; १४३५ । ४, २५, ४; १५९१ । ६, ४४, ४;  
 २०३२ । ८, ४०, २, ३१०२ । ८, १६, १, ३०२ । २७, १९;  
 १८०८ । ९२, ८; २४०४  
 नरा [इन्द्राग्नी] ६, ६०, ८९; ३०६३-६४ । ७, २४, ३;  
 ३०८१ । ८, ३८, ५-६, ३०९५-९६ । ८, ४०, ३, ३१०३ ।  
 [इन्द्रावरुणौ] ७, ८२, ८, ३१७९ । ७, ८३, १, ३१८२ ।  
 [इन्द्रवायु] ७, ९१, ६; ३२३९  
 नरे (चतुर्थी) ६, ४२, १, १९९८  
 नर्यः १, ६३, ३; ८८७ । ४, २५, ४; १५९१ । २९, २,  
 १६०५ । २४, २, १९२९ । ७, २०, १; २१५१ । ५; २०५५ ।  
 २५, १; २१२२ । १०, २९, १, २५१५ । ५०, २, २६०२ ।  
 नर्यापसः ८, ९३, १, २४३०  
 नर. [मरुतः] १, १६५, ११, ३२६०

नवः ८, २४, २३, १८१२ । [इन्द्राग्नी] ४, ३२, २३; ३३४८  
 नविष्टः ५, ३२, ११, १७१५  
 नवीयम-वान् २, १९, ८ १२०६ । ३, ३६, ३ १३२५ ।  
 ६, २१, १, १८९७ । ६, ४४, ७, २०४२ । १०, २७, १९ २४०९  
 नवेदाः ऋतानाम् ४, २३, ४, १५६९  
 नव्य. ६, १७, १ १८५३ । ७, १८, ५, २१०३ । ८, १६, १  
 ३८२ । २४, ८, २६, १७२७, १८१५  
 नहुष नहुषः १०, ४९, ८ २५९७  
 नाम बिभ्रत् श्रुत्यम् ५, ३०, ५; १६८६  
 नामा ते चत्वारि असुर्याणि १०, ५४, ४; २६११  
 निचुम्पुण ८, ९३, २२, २४५१  
 निमेषमान दिवेदिवे ८, ४, १०; २३८  
 नियन्ना सूनृतानां शचीनाम् ८, ३२, १५, १९४  
 नियुत्वस्त्वान् १, १०१, ९, ८२५ । ६, ४०, ५ १९९२ ।  
 ८, ९३, २०; २४४९ । ६, ६०, २, ३०५७ । [इन्द्रवायु] २,  
 ४१, ३; ३२२० । [वायुं] ४, ४६, २, ३२२१ । ४, ४७, ३,  
 ३२२८ । ७, ९१, ५; ३२३८  
 नियुत्वान् वसुभि. ३, ४९, ४, १४२७  
 निवर. ८, ९३, १५; २४४४  
 निवेशन. [अग्नि] वा०य० १२, ६६; २९२९  
 निशितः सोमसुद्धि ४, २४, ८, १५८४  
 निष्टुर ८, ३२, २७ २०६  
 नृजित् २, २१, १, १२१७  
 नृतम ३, ३०, २२ १२५२ । अथमत्रः द्वादशकृत्व ३, ५०, ५;  
 १४३३ । पुनरपि च १०, ८९, १८, २६७९ । १०४, ११, २७१३ ।  
 इत्यादिस्यलेषु पुनरुक्त. । ३, ४९, २ १४२५ । ४, १७, ११,  
 १४९८ । २०, २; १४५६ । ६, १८, ७; १८६२ । ८, २४,  
 १-१०; १७९०-९९ । १०, २९, १ २; २५१५-१६ । ८९, १  
 २६६३  
 नृतमः नृणाम् ४, २५, ४, १५८९ । ६, ३३, ३; २०१८  
 नृतम नराम् ७, १९, १० २१४९  
 नृतमः शाकै ४, १७, ११; १७९८  
 नृतुः २, २२, ४; १२२६ । ८, २४, १२, १८०१ । ६८, ७;  
 २२९७ । ९२, ३; २३९९ । १, १३०, ७, १०१७  
 नृपतिः १, १०२, ८, ८३५ । ४, २०, १, १५३३ । ७, ३०, १;  
 २२१८ । ८, ५४, ६; ५३६ । १०, ४४, २ ३, २५६९ ७०  
 नृपाता नराम् १, १७४, १०; २०७८  
 नृमणः १, ५१, ५, १०, ७४२, ७५४ । ४, १६, ९, १ ६७५ ।  
 ७, १९, ४; २१४३ । ८, ९६, १३; २३५७  
 नृमणः २, १२, १, ११२२ । अथ० ४, २४, ३, २८६९

नृवत् वान् ६,२२,३, १९०९  
 नृषात्ता ७,२७,१, २२०३  
 नृषाह. ८,१६,१, ३८०  
 नेमिः ८,९७,१२ ९८७  
 न्यष्टः वसुना १०,४२,२ २५४७  
 न्योकाः १,९,१०, ५७  
 पणि. ८,४५,१४; ४५६  
 पति. १,५४,२; ७७६ । ६१,२; ८५७ । ३,३९,१; १३५५ ।  
 ४,१६,७. १४७३ । ८,१३,९ ३२०. । ८०,९; ६६९ ।  
 १०,७४,६, २६३९ । ९९,६, २६८५ । १०५,२, २७१५ ।  
 अथर्व० ६,३३,३, २८८९  
 पति. अघ्न्यानां धेनुनाम् ८,६९,२; २३०५  
 पति. कृष्टीनाम् ६,४५,१६, २०७५ । ८,१३,९, ३२९  
 पतिः जनानाम् ६,३४,४, २०३४  
 पतिः दिवः ८,१३,८; ३२८ । ९८,४,५,६; २३६७ ६८-६९ ।  
 १११,३; २७२७  
 पति. पृथिव्याः [अग्नि] वा० य० १३,१४; २९३०  
 पतिः राधस तरस्य ६,४४,५, २०४५ । ५,८६,४ ३०४३  
 पति. राधानाम् ३,५१,१०; १४४३  
 पतिः वाजरथ दीर्घश्रवसः १०,२३,३; १४८३  
 पतिः वाजानाम् ६,४५,१०; २०६९ । ८,२४,८, १८०७ ।  
 ९२,३, २४२६  
 पतिः वार्याणाम् १०,२४,३; २४९०  
 पतिः विश्वस्य जगतः प्राणत. १,१०१,५; ८०१  
 पतिः विश्वानरस्य अनानतस्य शवसः ८,६८,४; २०९४  
 पतिः शवसः मह. १०,२२,३, २४६८  
 पति. शश्वतीनाम् ८,९५,३, २३३८  
 पति सिन्धूनां रेवतीनाम् १०,१८०,१; २८३९  
 पतिः सूनुनां गिराम् ३,३१,१८, १२७७  
 पतिः सोमानाम् ८,९३,३३; २४६२  
 पतिः हरीणाम् ८,२४,१४; १८०३  
 पथिकृत् ६,२१,१२ १९०६  
 पथिकृत् सूर्याय १०,१११,३; २७२७  
 पनस्य ८,९८,१, २३६४  
 पनीयान् १,५८,३; ८१३  
 पन्य ३,३६,३; १३२५ । ८,३२,१७-१८. १९६ १९७  
 पपानः मधो साम० २९४; २९८१  
 पपिः सोमम् ६,२३,४; १२२१  
 पपिवान् ५,२९,३, १६६९  
 पपिवान् सुतस्य ५,२९,२, १६६८

पपुरिः ४,२३,३, १५६८  
 पप्रिः ८,१६,११; ३९२  
 पप्रिः अन्धसः १,५२,३; ७६२  
 परः १,८,५,४२ । २,१३,१०; ११४६ । ५,३०,५, १६८६ ।  
 ८,६९,१४, २३९६ । १०,८,७, २४६३  
 परम. ५,३०,५; १६८६  
 परमज्या ८,९०,१, २३९९  
 परस्था ८,६१,१५, ५६२  
 परस्फानः अथ० १९,१५,३, २९१६  
 पराददिः १,८१,२; २१७  
 पराशर. यातूनाम् ७,१०४,२१; २०८९  
 परिप्रीत. वार्येण पन्यसा १०,२७,१२, २५००  
 परुष्णीं ऊर्णाम् उषमाणः ४,२२,२ १५५६  
 परोमात्र ८,६८,६, २२९६  
 पर्वतेष्ठाः ६,२२,२; १९०८  
 पाञ्चजन्यः ५,३२,११, १७१५  
 पाञ्चजन्यः शवसा १,१००,१२; ९६८  
 पात् वैशान्तं पान्तम् (द्वि०) अति ७,३३,२, २२६३  
 पाता ८,२,२६; १४१  
 पाता नराम् २,२०,३, १२१०  
 पाता सुतम् ६,२३,३; १९२० । ४४,१५; २०५०  
 पादाः ते ऋष्या १०,७३,३; २६२५  
 पावकः ८,१३,१९; ३३९  
 पिता ३,३६,१२; १२७१ । ४,१७,१७, १५०४ । ८,६,१०;  
 २५२ । ५२,५, ५१९।९८,११. २३७४।१०,८,७ २४६३ ।  
 २२,३, २४६८  
 पितृमः पितृणाम् ४,१७,१७; १५०४  
 पितृणा कर्ता ४,१७,१७; १५०४  
 पिपीषत् ६,४२,१, १९२८  
 पिशंगरातिः ५,३१,२; १६९४  
 पीत्वी सोमस्य १०,५५,८, २६२१ । ११३,१, २७४५  
 पुत्रः शवसः ८२०,२, २३९२  
 पुर. स्थाता ८,४६,१३, १८२९  
 पुर पता ६,२९,१२; १९०६  
 पुरन्दर १,१०२,७; ८३४ । २,२०,७; १२१४ । ५,३०,  
 ११, १६८२ । ८,१,७-८, ९३-९४। ६१,८,१०; ५५५,५५७  
 पुरन्दरा (रौ) [हन्द्राम्नी] १,१०९ ८; ३०२८  
 पुरां भिन्दु. १,११,४; ७३  
 पुरां भेत्ता ८,१७,१४; ४०७  
 पुराजाः ३,३१,१९; १२७८ । ६,३८,३; १९८१

पुराषाट-साह १०, ७४, ६, २६३९  
 पुरुकृत् १, ५४, ३, ७७७ । २, १३, ८, ११४४ । ६, २१, ५, १९०१ । ८, ६१, ६, ५५३ । १०, १७९, ३, २८३८  
 पुरुक्षुः ४, २९, ५, १६०८ । ६, २२, ३, १९०९ । १०, ७४, ५, २६३८  
 पुरुक्षुः वामस्य वसुन. ६, १९, ५ १८७५  
 पुरुगूर्त. ६, ३४, २; २०२२  
 पुरुणामन् नामन् ८, ९३, १७, २४४६  
 पुरुतमः १, ५, २, १५ । ३, ३९, ७, १३६१  
 पुरुत्मा ८, २, ३८; १५३  
 पुरुत्रा ८, ३३, ८, २१७  
 पुरुत्रः ६, १८, ९; १८६४  
 पुरुधप्रतीकः ३, ४८, ३; १४०१  
 पुरुधस्मन् साम० ३२७, २९८३  
 पुरुनि. विभू १, १०, ५. ६२  
 पुरुनृमण ८, ४५, २१; ४६३  
 पुरुप्रशस्तः ६, ३४, २, २०२२  
 पुरुभोजाः ८, ८८, २; ८९५  
 पुरुमायः ३, ५१, ४, १४३७ । ६, १८, १२; १८६७ । २१, ७  
 १८९८ । २२, १; १९०७  
 पुरुन् १०, १०४, ५; २७०७  
 पुरुवर्षस्-पांः १०, १२०, ६, २७६९  
 पुरुवारः उक्तैः ४, २१, ५; १५४८  
 पुरुवीर ६, २२, ३, १९०९  
 पुरुशाकः ३, ३५, ७, १५१८ । ६, २१, १०, १९०५ । २४, ४; १९३१ । ७, १९६, २६४५  
 पुरुष्टु [स्तु] तः १, ११, ४; ७३ । ५८, ४; ८१४ । १०२, ३; ८३० । ३, ३७, ४, १३३७ । ४५, ५; १४०८ । ५२, ६, १४५१ । ४, २१, १०; १५५३ । ५, ३४, १, १७२७ । ८, १३, २४-२५ ३४४-४५ । १५, १, ३, ११; ३६९, ३७१, ३७९ । ३२, ३०; २०९ । ३३, ६; २१५ । ४६, १२, १८२८ । ६२, ७, ५७२ । ६६, ५; ६१७ । ७६, ७; ६३४ । ९२, २, २३९८ । ९३, १७, २४४६ । १०, ३२, २; २५३१ । ३८, ३; २५४३ । ३, ६०, ६, ३३४२ ।  
 पुरुहूतः १, ३०, १०, ७०८ । ५१, १; ७४५ । ६३, २, ८८६ । १००, ६, ११, १८; २६२, ९६७, ९७४ । १०४, ७; ८५३ । ११४, ३; १०७१ । १७७, १; १०९१ । ३, ३०, ५, ७, ८, १०; १२४२, १२४४-४५, ४७ । ३२, १६. १२९७ । ३५ २; १३१३ । ३७, ५; १३३८ । ४०, २, १३६५ । ५१, १; १४३४ । ५१, ८; १४४८ । ४, १६, ८; १४७४ । १७, ५; १४९२ । २०, ५, ७.

१५३७, ३९ । ५, ३०, १; १६८२ । ३१, ४. १६९६ । ३६, २-३; १७४५-४६ । ६, १८, १, ११; १८५६, १८६६ । १९, १३, १८८३ । २१, ५, १२०१ । २२, ४, ११; १९१०, १७ । २३, ८; १९२५ । २४, ३; १९३० । २७, ६, १९६० । ३४, २, २०२२ । ४५, २२, २०८१ । ४७, ११ २१०९ । ७, २४, १, २१८६ । २५, ७, २२०४ । ३२, १७, २०, २६; २०५१, ५४, ६० । ८, १४, १; ३६९ । १६, ११, ३९२ । २१, १२, ४२० । २४, ८-९, १७९७-९८ । ४६, १५, १८३१ । १०, ४२, १०, २५५५ । ४३, २, १०; २५५८, २५६६ । ४४, १०, २५७७ । १०, ४, १, १०, २७०३, २७१२ । १४७, ३; २८०६ । १८०, १ २८३९ । ८, ६६, ६, ११, १३, ६१८, ६२३, ६२५ । ९७, २, २३९८ । ९८, १२, २३७५ । २, ३२, ३; ३३५१  
 पुरुहूतः पुरु ८, २, ३२, १४७ । १६, ७, ३८८  
 पुरुतमः पुरुणाम् ६, ४५, २२, २०८८  
 पुरुवसुः १, ८१, ८, ९२३ । ६, २२, ४, १९१० । ८, १, १२; ९८ । ३, ३. १५८ । ३२, ११; १९० । ४६, १, ७ १३. १८१७, १८२३, १८२९, ४६, १३; १८२९ । ४९, १. ४८५ । ५२, ५, ५१९ । ६१, ३, ५५०  
 पुरुवसु सनात ७, ३२, २४, २०५८  
 पुरोभू. ३, ३१, ८; १२६७  
 पुरोयुध. १, १३२, ६, १०३३  
 पुरोयोधः ७, ३१, ६; २०२८ । [इन्द्रावरणा] ७, ८२, ९, ३१८०  
 पुरोहा ६, ३२, ३, २०१३  
 पुरोहित. विश्वस्मा कर्मणे १, ५६, ३; ७९९  
 पू. त्वम् असि ८, ८० ७ ६५७  
 पूर्णबन्धुर. १, ८२, ३ ९२७  
 पूर्मित ३, ३४, १; १३०१ । ५१, २ १४३५ । ८, ३३, ५, २१४ । १०, ४७, ४; २८४५ । १११, १०, २७३४ । १०४, ८; २७१०  
 पूर्मित्तमः ८, ५३, १; ५२५  
 पूर्व. ३, ३८, ५. १३४९  
 पूर्वजा ८, ६, ४१, २८३  
 पूर्वयावा क्षितीना मानुषीणां त्रिशा दूर्वानाम् ३, ३४, २ ३३०२  
 पूर्व्यः ३, ३२, १०, १२९१ । ५, ३५, ६; १७४१ । ६, २०, ११; १८९४ । ३७, २, १९७४ । ८, ३, ७, ११, १६२, १६६  
 पूर्व्य. महानाम् ८, ६३, १, ५७८  
 पूषणवान् ३, ५२, ७, १४५२ । १, ८२, ६, ९३०  
 पूषणानयः [मरुद्गा.] १, २३, ८; ३२४८  
 पूञ्चन् दक्षम् ८, २४, १४; १८०३  
 पृत्तानां तरुता विश्वासाम् ८, ७०, १, १३२१

पृतनापाट १,१७५ २;१०८० । ६,१९,७,१८७७ । ४५,८,  
 २०६७ । १०,१०३,७, २६९७  
 पृतनासु सासहि. ८,७०,४; २३२४  
 पृथिव्या जनिता ८,३६,४, १७७०  
 पृथिव्याः पति. [अग्नि] वा० य० १३,१४, २९३०  
 पृथु २,२१,४. १२२० । ६ १९,१ १८७१  
 पृथुजराः ३,४९,२, १४२५  
 पृथुबुध १०,४७,३; २८४४  
 पृदाकुमानु ८,१७,१५, ४०८  
 पृष्ट ३,४९,४, १४२७  
 पौर अश्वस्य ८,३१,६, ५५३  
 प्रकृत अप्तरस्य १०,१०४,६, २७०८  
 प्रखादः १,१७८,४ १०९८  
 प्रचर्षणी [इन्द्राग्नी] अथ० ७,११०,२, ३१३२  
 प्रचेता. ७,३१,१० २२३२ । ८,९०,६, २३९६  
 प्रजा क्रतस्य ८,६,२; २४४  
 प्रजानन् ३,३५,४,८; १३१५,१३१९  
 प्रणेता ३,३०,१८,१२५५ । ८,२४,७,१७९६ । ४६,१;१८१७  
 प्रणेता वस्य. अच्छ ८,६६,१०; ३९६  
 प्रणेनीः ६,२३,३ १०,२०  
 प्रतिमानम् ओजस. १,१०२,८ ८३५  
 प्रतिमानम् सत. सत. ३,३१,८, १२६७  
 प्रतः १,६१,२, ८५७ । ३,४२,९, १३९० । ६,२२,७,  
 १९१३ । ३९,५ १९८७ । ४५,६९, २०७८ । ८,६,३०; २७२  
 प्रचक्ष्ण -क्षरम् [हिं०] १०,४४,१,२५६८ । ४४,३,२५७०  
 प्रथम. ५,३१,१; १६९३  
 प्रथम उपमानाम् ८,६१,२, ५४९  
 प्रथमः जातः एव २,१२,१; ११२२  
 प्रथमः दाता ८,९०,२, २३२२  
 प्रथमः ब्रह्मणे १,१०१,५, ८२१  
 प्रथमः यजियानाम् ६ ४१,१; १९९३  
 प्रथम जायमानः ४,१७,७, १४२४  
 प्रथिव. १,५४,२, ७७६ । ३,५१,४, १४३७ । ६,२३,५;  
 १९२२ । ४४,१२; २०४७  
 प्रदिशमानः क्रतेन ३,३१,२१; १२८०  
 प्रपन्थितम् १,१७३,७, १०६२  
 प्रद्युत्राणः जनेषु बलानि १०,५४,२; २६०९  
 प्रभङ्गः दुर्मतीनाम् ८,४६,१९; १८३५  
 प्रभङ्गी ८,६१,१८, ५६५  
 प्रभ जन् मेनाः [बृहस्पतिः] वा० य० १७,३६; २९३२

प्रभर्ता १,१७८,३, १०९८ । ८,२,३५; १५०  
 प्रभूवसुः १,५८,४; ८१४ । ८,४५,३६; ४७८ । साम०  
 २१२, २९७८  
 प्रमतिः ४,१६,१८, १४८४ । ६,४५,४; २०६३ । ७,२९,  
 ४; २२१६  
 प्रमथिन् ६,३१,५; २०१०  
 प्रमरः १०,२७ २०, २५१०  
 प्रमिनातः १०,२७,१९; २५०९  
 प्रमृग्णन् ओजसा १०,१०३,६ २६९६  
 प्रयज्युः ६,२१,१०, १९०५ । २२,११; १९१७  
 प्रयन्ता ८,९३,२१, २४५०  
 प्रया[य] वयन् भन्यान् ३,४८,३; १४२१  
 प्ररिका क्षमः द्विः च १,१००,१५; ९७१  
 प्रवयाः २,१७,४, ११८४  
 प्रविद्वान् अथर्व० ७,९७,१; ३१२०  
 प्रवीरः १०,१०३,५, २६९५  
 प्रवृद्धः १,३३,३. ७३२ । ८,६,३३; २७५ । १२,८; २९५।  
 ७७,३, ६४२। ९३,५, २४२४। ९६,२; २३४६ । वा० य०  
 ३३.७९; २९७० । ऋ० १,१६५,९; ३२५८  
 प्रवेपनी ५,३४,८; १७३४  
 प्रशर्धः ८,४,१, २२९  
 प्रसन्निन् ८,३२,२७; २७६  
 प्रसाहः ६,१७,४; १८४४  
 प्रहावान् समिधेषु ४,२०,८; १५४०  
 प्रहेतु-ता ८ ९९,७, २३८२  
 प्रचामन्युः ८,६१,९. ५५६  
 प्राविता ८,९६,२०; २३६२  
 प्राशुषाट ४,२५,६; १५९३  
 प्रासहः १,१२९,४,४। १००३,१००३ । १०,७४,६; २६३९।  
 ८ ४६,२०; १८३६  
 प्रिय ८,५०,३; ४७७ । ९८ ४; २३६७  
 प्रेतारा (रौ) धिय. [इन्द्रावरुणौ] ४,४१,५; ३१५०  
 प्रीणाना [इन्द्रवायु] ७,९१,५; ३२३८  
 प्रथुमान् ८,२१,४; ४१२  
 वग्निः वज्रम् ६,२३,४; १९२१  
 वरु [इन्द्राग्नी] ४,३२,२३-२४; ३३४८-४९  
 बर्हणा १,५५,३, ७८८ । ५७,५; ८०९  
 बहिः ओकाः [तद्दोका] ३,३५ ७, १३१८  
 बलविज्ञायः १०,१०३,५; २६९५  
 बहुलाभिमानः १०,७३,१; २६२३

बाहुवर्षी १०, १०३, ३; २६९४  
 बाहूतेरण्यौ संस्कृते ८, ७७, ११; ६५०  
 बाह्वीजा १०, १११, ६; २७३०  
 बृहदुक्तः ८, ३२, १०; १८९  
 बृहत्-न् १, ९, १०; ५७ । ५५, ३, ७८८ । ५८, १, ८११ ।  
 २, १६, २; ११७३ । ३, ३२, ७, १२०८ । ४, १७, ६, १४९३ ।  
 ६, १८, २; १८७२ । २४, ३; १९३० । ८, ८९, ३, २३८६ ।  
 ९८, १; २३६४ । १०, ४७, ३, २८४४ । [ हन्द्रावरुणौ ]  
 ४, ४१, १०; ३१५६ । [ वरुणः ] ६, ६८, ९, ३१६९ ।  
 [ हन्द्राविष्णु ] ७, ९९, ६; ३३१६  
 बृहद्विषः ४, २२, ५; १६०८  
 बृहद्भानुः ८, ८९, २; २३८५  
 बृहद्भिः- द्वये (चतु०) १, ५७, १, ८११  
 बृहद्भेणुः ६, १८, २; १८५७  
 बृहच्छवाः १, ५४, ३; ७८८  
 बृहत्स्रतिः २, ३०, ४ १२३०  
 ब्रह्मः १, ६, १; २४  
 ब्रह्मन्- ह्या ६, ४५, ७; २०६६ । ७, २२, २; २२१४ । ८,  
 १६, ७; ३८८ । अथ २०, २, ३; २९१७  
 ब्रह्मजुतः ३, ३४, १, १३०१ । ७, १२, ११; २१५०  
 ब्रह्मवाहसु-हाः १, १०१, ९, ८२५ । ५, ३४, १; १७२७ । ३९, ५,  
 १७६४ । ६, २१, ६; १९०२ । ६, ४५, ४, ७; २०६३, २०६६  
 ब्रह्मवाहस्तमः ६, ४५, १९, २०७८  
 ब्रह्मपंशितः [ ह्रुः ] वा० य० १७, ४५; २९३४  
 भृगः २, ११, २१, ११२१ । १५, १० ११७१ । १६, ९;  
 ११८० । १७, ७; ११८७ । १७, २, ११८९ । १८, ९; ११९८ ।  
 १९, ९; १२०७ । २०, २; १२१६ । ३, ३६, ५; १३२७  
 भद्रकृत् स्तोत्राणाम् ८, १४, ११, ३६४  
 भद्रवातः १०, ४७, ५, २८४६  
 भद्रहस्ता (स्त्री) [ हन्द्राप्ती ] १, १०९, ४, ३०२४  
 भर्ता धृत्वाः वज्रस्य १०, २२, ३; २४६८  
 भर्ता वज्रं नयम् १०, ७४, ५; २६३८  
 भार्गवः ४, २१, १०; १५५०  
 भिन्दुः पुराम् १, ११, ४, ७३  
 भीमः १, ५६, १; २७ । ५८, ३, ८१३ । ८१, ४; ९१९ ।  
 १००, १२, ९६८ । ४, २०, ६; १५३८ । ७, २१, ४; २१६४ ।  
 १०, १८०, २; २८४०  
 भुवनिः १, ५७, १; ८०५  
 भुवनस्य एकस्य ८, ३७, ३; १७७८  
 भूरिकर्मा १, १०३, ५; ८४३

भूरिगुः ८, ६२, १०; ५७५  
 भूरिदाः ४, ३२, १९, २०, २१; १६६३-६४-६५  
 भूरिदासः ३, ३४, १, १३९९  
 भूरिदावत्तरो [ हन्द्राप्ती ] १, १०९, ९; ३०२२  
 भूरिवारः १०, २७, २; २८४३  
 भूः ईशानः ८, ३३, १४ १९३  
 भूर्गोसुतिः ८, ९३, १८, २४४०  
 भूमि ४, ३२, २; १६४६  
 भृष्टिमान् साम० ३२७; २९८३  
 भेत्ता पुराम् ८, १७, १४, ४०७ ।  
 भोजः २, १४, १०; ११५९ । २, १७, ८, ११८८ । ८, ७०, १३,  
 २३३३ । १०, ४२, ३; २५४८  
 भ्राता ३, ५३, ५ १४५७  
 भ्रातरा (रौ) [ हन्द्राप्ती ] ६, ५९, २; ३०४७  
 भ्रातृवन् तिग्मानि आश्रयानि १०, ११६, ५, २७५९  
 भृष्टिष्ठः १, ३०, २, ९९९ । ५०, १, ७४५ । ५८, १ ८११ ।  
 ६१, ३; ८५८ । १३०, १, १०११ । ६, ४४, ४, २०३९ ।  
 ८, १, २, ८८ । १५, १० ३७८ । १६, १; ३८२ । ८८, ६,  
 ८२९ । ९७, १३, ९८८ । [ हन्द्रावरुणौ ] ४, ४१, ७, ३१५२  
 भृष्टिष्ठरातिः १, ५२, ३; ७६२  
 भृष्टिष्ठः मघोनाम् ५, ३९ ४; १७६३ । [ हन्द्रावरुणौ ] ६, ६८, २,  
 ३१६०  
 मघवन १, ३२, ३, १३, ७१७, ७२७ । ३३, १२, १५; ७४१, ४४ ।  
 ५२, ११, ७०० । ५५, १; ७८६ ५६, ४, ८०० । ८२, १, ३,  
 ९२५, ९२७ । ८४, १९; ९५५ । १०२, ३, ३-४, ७, १०,  
 ८३०-३०-३१, ३४, ३७ । १०३, २, ४, ८४०, ४२ । १०४, ५, ८,  
 ८५१, ५४ । १३२, १, १०२८ । १३३, ३; १०३६ । १७३, ५,  
 १०६० । १७४, १, ७, १०६९, १०७५ । १७८, ५, ११०० ।  
 ३, ३०, ३, ५, १६, २१, २२, १२४०, १२४२, १२५३, ५८, ५९ ।  
 ३१, १४, १९, २२, १२७३, ७८, ८१ । ३२, १, १७, १२८२, ५८ ।  
 ३४-३५, ११, १३११, १३२२ । ३६, १० ११; १३३२-३३ ।  
 ३८, १०, १३५४ । ३९, ९, १३६३ । ४३, ५, ८; १३९५,  
 १३९८ । ४७, ४, १४१७ । ४८-५०, ५; १४२३, १४२८,  
 १४३३ । ५१, १; १४३४ । ५३, २, ४, ५, ८, ६४ १४५४,  
 ५६, ५७, ६०, ६६ । ४, १६, १९, १२, १४६७, ७५, ८५ ।  
 १७, ५, ७, ८, ९, ११, १३, १३, १२, २०; १४९७, १४, १५, १६,  
 १४९८, १५००, १५००, १५०६-७ । १८, ९; १५१७ ।  
 २०, २; १५३४ । २२, १; १५५५ । २०, १५६४ ।  
 ४, २४, २; १५७८ । २८, ५; १६०३ । २९, ५; १६०८ । ३०, ७;  
 १६१५ । ३१, ७; १६३३ । ५, २९, ५-६, ८; १६७ १७७, ७४ ।

३०, ३, ७, १६८४, ८८ । ३१, १, ६; १६९३, ९८ । ३४, २-३; १७२८ २९ । ३६, ३, ४, १७४६-१७४७ । ६, १९, १, १८७१ । २१, ६; १९०० । २३, १ १९१८ । २४, १; १९२८ । २७, ३, १९५७, ४४, १०, १७, १८, २०४५, ५२, ५३। ४६, ८, १०, २०९७, ९९ । ४७ ९, ११, १५, २१०७, २, १३ । ७, १८, २, २१२० । १९, ८, ९, २१४७-४८ । २०, ९; २१५९। २२, ३, ६; २१७३, ७६। २६, १, २ २१९८-९९। २७, २, २, ४; २२०४, ४, ६। २८, ५, २२१२ । २९ १, ३, ४, ५, २२१३, १५, १६, १७। ३०, ५, २२२२ । ३२, ७, १४, १५, २२४१, ४८, ४९। ३२, १९, २१, २३, २४, २५, २२५३, ५५, ५७, ५८, ५९। ३३, ५, २२८३, १०४, १०; २२८७ । ८, १, ४, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८ १६९, ७२, ७३। ४, ४, १०, २३२, ३८। २१, १०, ४१८। २४, १०, १६; १७९९, १८००। ३२, ८, १८७। ३३, ३, २, ११, १३, २१२, १८, २०, २२। ३६, २ १७७० । ४५, ६ ४४८ । ४६, ११, १३ १८२७, २९ । ४७, १, ९, १०, ४८५, ९३, ९४ । ५०, १० ५०४ । ५१, १, ६, ७ ५०५, १०, ११। ५२, ५, ८; ५२९ २२ । ५३, १, ५२५ । ५४, ७; ५३७ । ६१, १, ४, ७, १३, १४, १८, ५४८ ५१, ५४, ६०, ६१, ६५ । ६२, १०; ५७५। ६५, १०; ६१० । ६६, १३; ६२५ । ७०, ६, ९, १५; २३२६, २९, ३५ । ७८, १०; ६६० । ८८, ६, ८१९ । ८९, ५, २३८८ । ९०, ४; २३९४ । ९३, १०; २४३९ । ९६, २० २३६२ । ९७, १, ८, १३, ९७६, ८३, ८८ । १००, ६; ९९६ । १०, २३, २, ३, २४८२-८३। २८, ३, २५२४ । ५; २५२६ ३३, ३; २५४० । ४२, ३, ८; २५४८, ५३ । ४३, १, ३, ५, ५, ६ ८; २५५७, ५९, ६१, ६१, ६२, ६४ । ४४, ९, ९; २५७६-७६ । ४९ ११, २६०० ५४, १, ४, ५; २६०८, ११, १२ । ५५, १, २६१४ । ७४, ५; २६३८ । ८९, १८; २६७९ । १०३, १०; २७०० । १०४, ७, ११; २७०९, १३ । १११, ६; २७३० । ११२, ९, १०; २७४३, २७४४ । ११३, २, २७४६ । ११६, ७, ७, २७६१, २७६१ । १३४, ६; २७९० । १०, १४७, ३; २८०६ । १४७, ४, ५, २८०७-८ । १६०, ४, २८२७ । १६७, २; २८३० । अथ० ७, ३१, १, २९०५ । वा० य० ७, ४ २९२३ । २०, ७७; २९६१ । ३३, ७९; २९७० । साम० २९८, २९८२ । ऋ० ५ ८६, ३; ३०४२। १, १६५ ९; ३२५८ । १, १७१, ३, ३२६५ । अथर्व० ८, ४, १९; ३२९६ । ऋ० ३, ६०, ५, ३३४१ । [ इन्द्राग्रहाण-प्यती ] २, २४ १२, ३३५९

मघोनां उपम ८, ५३, १, ५२५  
मघोनां महिष्ठ. ५, ३९ ४. १७६३  
मतिः (ते- संबो०) ८, ६८, २; २२९२  
मत्वः ३, ३४, २, १३०२  
मथायन् नमुचेः शिरः ५, ३०, ८; १६८९  
मदः श्रुग्मिन्तमः ते १, १७५, ५. १०८३  
मदच्युत् १, ५१, २; ७४६  
मदपती मदानाम् [इन्द्राग्रिण्] ६, ६९, ३; ३३०८  
मदवृद्धः १, ५२, ३, ७६२  
मदिन्तमः ८, १३, २३; ३४३  
मदे हितः ८, ९३ ८, २४३७  
मद्य ८, २, २५; १४०  
मद्भने (चतुर्थी) ८, २२, १०, २४१५  
मनस्वान् २, १२, १; ११२२  
मनुर्हितः [ अग्नि ] ८, ३४, ८, ४३०  
मनोजुवः वा० य० १७, २३; २९३१ । [ इन्द्रवायु ]  
ऋ० १, २३, ३, ३२१४  
मनोः वृधः ८, ९८, ६, २३६९  
मन्तुमन् (म- सं ) १०, १३४, ६; २७९०  
मन्त्रः १०, ५०, ४; २६०४  
मन्दङ्गीरः ८, ६९, १; २३०४  
मन्दमान १०, ५०, १, २६०१ । ७३, ५; २६२७ । ११२, २; २७३६  
मन्दमानः १, १०, ११; ६८ । १००, १४; ९७० । १३१, ४; १०२४। २, ११, ३, १५, १७, ११०३, १५, १७। ३०, ५; २२३१ । ४, २६, ३; १५९८। २९, १, १६०४। ४, ३२, १०; १६५४। ५, २९, २; १६६८। ६, २६, ६; १९५२। ४, १७, ३; १४९०। ६, १७, ५, १८४१। ६, ४४, १५, २०५०। ८, ४९, ४ ४८८ । ९३, २१, २४५० । [ इन्द्रावृहस्पती ] ४, ५०, १०; ३३२३ । अथ० २०, १३, १, ३३२९  
मन्दमान सुस्वनिभिः ४, २९, २; १६०५  
मन्दानः १, ८०, ६; ९०५। ८२, ४, ९२९। २, १९, २, १२०० । ३, ५०, ३, १४३१। ५ ३२, ६, १७१०। ८, १३, ४; ३२४ । १५, ५; ३७३ । ३२, ५, १८४ । ३३, ७; २१६ । ८८, १; ८९४ । ४५, ३१; ४७३ । १९, १६७, २; २८३० । ७, ९४, ११, ३०८९  
मन्व [ इन्द्रामरुतः ] १, ६, ७ ३२४६  
मन्दिन्-न्दी १, ९, २, ४२  
मन्दिष्टः साम० २२६; २९७९  
मन्द्रः १०, ७३, १, २६०३

मन्यमानः ७, २२, ८, २१७८  
 मन्युः अथ० ७, ९३, १ २९१३  
 मन्युमीः १, १००, ६, ९६२  
 मरुतां वेधाः १, १६९, १; १०४३  
 मरुत्वान् १, ९०, ११, ९१० । १००, १-१५, ९५७-९७१ ।  
 १०१, १-७, ८; ८१७-८२३, ८२४ । ३, ३५ ७, १३१८ ।  
 ४७, १, ५; १४१४, १८३, ५०, १; १४२९ । ५१ ७, १४४० ।  
 ४, २१, ३; १५४६ । ६, १९, ११; १८८१ । ८, ३६, १-६;  
 १७६९-१७७४। ७६, १, ५-८, ६२८, ६३२ ६३५। ९, २३, ७;  
 ३२४७  
 मरुत्सखा ८, ७६, २, ३, ९, ६२९ ६३०, ६३६  
 मर्हिता १, ८४, १९, ९५५ । ४, १७, १७; १५०४ । १८, १३,  
 १५२१ । ८, ६६, १३; ६२५ । ८०, १; ६६१  
 मर्यत् १०, २७, १२; २५०२  
 महः १, १०२, १, ८२८ । ३, ३४, ६, १३०६ । ६, २९, १;  
 १९६२ । ६, ४६, २; २०९१ । ८, १६, ३, ३८४ १०, २२, ३;  
 २४६८ । ९९, १२; २६९१ । १२०, ८; २७७१  
 महो (चतु०) १, ६२, २, ८७३ । ५, ३३, १; १७१७ ।  
 ६, ३२, १; २०११ । ७, २४, ५; २१०० । ३१, १०; २२३२ ।  
 ८ ९६, १०, २३५४ । १०, ५०, १; २६०१ [विष्णुः] १, १५५, १;  
 ३३०३ ।  
 महाम् [हि०] २, २२, १ १२२३ । ३, ४९ १ १४२४ ।  
 ४, १७, ८; १४९५ । ४, १९, १; १५२२ । ६, १७, १३;  
 १८५३ । ४, २३, १ १५६६ । ६, ३८, ५ १९८२ । ६, २९ १;  
 १९६२ । ६, १७, ४, १८४४ । ८, ६५, ३ ६०३  
 महान् १, ४, १०; १३ । ८, ५; ४२ । ५७, ३ ८०७ । ६३, १  
 ८८५ । २, १५, १, ११६२ । ३, ३१, १८ १२७७ । ३६, ४, ५  
 १३२६-२७ । ४६, १, २ १४०९-१० । ४, १७, १ १४८८ ।  
 २१, ६, १५४९ । २२, १, ५, १५५५, १५५९ । ४, ३०, ९  
 ३३४५ । ४, ३२, १ १६४५ । ७, ३१, ७ २२२९ । ८, १, २७  
 ११३ । ६, ४५, १३ २०७२ । ८, १३, १ ३२१ । ३२, १३,  
 १९२ । ५२, ५, ५१९ । ६४, २ ५९० । ६५, ४ ६०५ ।  
 ९२, ३, २३९९ । ९५, ४; २३३९ । ९८, २ २३६५ ।  
 वा०य० २६, १०, २९६६ । १, २१, ५, ३००६ । [इन्द्रावरुणौ]  
 ७, ८२, २ ३१७३  
 महान् भोजसा ८, ६ १, २६ २४३, २६८ । ३३, ८ २१७  
 महान् क्वा १, ८१, ४; ९१९  
 महान् ब्रह्मणा १०, ५०, ४ २६०४  
 महान् महिना ८, १२, २३ ३१०  
 महान् महीभिः शचीभि ८, ३० १४७ । १६, ७, ३८८

महान् महीनाम् १०, १३४, १ २७८५  
 महानां दाता ८, ९२, ३ २३९९  
 महानां पति ८, ९३, ३१ २४६०  
 मह दाता ६, २९, १ १९६२  
 महः क्षयस्य ८, ६१, १४, ५६१  
 महः धृष्ण्या ६, ४६, २ २०९१  
 मह राघस्य ८, ६१, १४ ५६१  
 महामहः ८, २४, १० १७९९ । ३३, १५ २०४ । ४६, १०,  
 १८२६ । १०, ११९, १२, २७६१  
 महायय. ८, ७०, ८, २३२८  
 महावध. ५, ३४, २, १७२८  
 महावसू [इन्द्रावरुणौ] ७, ८२, २; ३१७३  
 महावीर १, ३२, ६, ७२०  
 महाव्रातः ३, ३०, ३ १०४०  
 महाहस्ती ८, ८१, १ ८७०  
 महिः ८, १७, १४, ४०७ । १०, १६७, २, २८३०। ७, ९३, ५;  
 ३०७५  
 महित्वा सिन्धुभ्य रिरिचान १०, ८०, १ २६६३  
 महिन. ६, २६, ८, १९५४  
 महिने [चतुर्थां] ७, ३१, ११, २२३३  
 महिवृध् ७, ३१, १०, २२३२  
 महिघ्न [वरुणः] ६, ६८, ९, ३१६९  
 महिषः १०, ५४, ४, २६११  
 महीयमाना [उषाः] ४, ३०, ९, ३३४५  
 महेमते ८, १३, ११, ३३१ । ३४, ७ ४३१ । ४९, ७, ४९१।  
 ५० ७, ५०१  
 मातश्चिन्-श्वा १०, १०५, ६; २७१९  
 माता स्वम् ८, ९८, ११; २३७४  
 मानः दिवः ८, ६३, २, ५७९  
 मानस्य क्षयः ८, ६३, ७; ५८४  
 मानुषः १, १८४, २०; ९५६ । २, ११, १०; १११०  
 मानुषीणाम् एक. ६, १८, २, १८५७  
 मायाः कृण्वान ३, ५३, ८; १४६०  
 मायी ७, २८, ४, २२११ । ८, ७६, १; ६२८ । १०, १४७,  
 ५, २८०८  
 माहिन १, ६१, १; ८५६ । २, १९, ३; १२०१ । वा० य०  
 ३३, २७ २९६८ । १, १६५, ३, ३०५२  
 माहिनावान् ३, ३२, ४; १३५८  
 मित्रः ६, ४४, ७; २०४२ । अथर्व० २, ५, ३, २८६५  
 मित्रपतिः १, १७०, ५, १०५५



मित्रस्यः सनिः ८, १२, १२; २९९  
 मिमान भोजः २, १७, २; ११८२  
 मिमिक्षुः ३, ५०, ३; १४३१  
 मीढ्वस्-ड्वान् ८, ४६, १७, १८३३ । ७६, ७ ६३४  
 मुनीनां सखा ८, १७, १४, ४०७  
 मुष्कयोः बद्धः १०, ३८, ५; २५४५  
 मूर्धां दिव -[अग्नि] वा० य० १३, १४; २९३०  
 मृक्षः ८, ६६, ३; ६१५  
 मृळीक ६, ३३, ९; २०२०  
 मेडिः साम० ३२७, २९८३  
 मेधिरः १, ६१, ४; ८५९ । ६, ४२, ३; २०००  
 मेघः १, ५१, १, ७४५ । ५२, १, ७६० । ८, ९७, १२, ९८७  
 मेघः भूतः ८, २, ४०, १५५  
 मेहनावान् ३, ४९, ३; १४२६  
 म्रक्षक्त्वा ८, ६१, १०, ५५७  
 यजतः २, १६, ४, ११७५ । २१, १ १३१७ । ८, १५, ४०८  
 यजत्रः १, १२९, ७, १००६ । ३, ३५, १०; १३२१ । ६, २५, ८; १९४५  
 यज्ञवाहम्-हाः ८, १२, २०, ३०७ । [इन्द्रवायु] ४, ४७, ४; ३२२९  
 यज्ञवृद्धः ६, २१, २; १८२८  
 यज्ञियः ३, ३२, ७, १२, १२८८, १२९३ । ६, ४७, १३, २१११ । ८, ९७, १३, ९८८  
 यज्ञिय विश्वेषु सवनेषु १०, ५०, ४, २६०४  
 यज्ञियानां यज्ञियः ८, ९६, ४, २३४८  
 यजत्र वृधः ८, ३२, १८; १९७  
 यतंकरः ५, ३४, ४; १७३०  
 यतस्तुचा (चौ) [इन्द्रामी] १, १०८, ४; ३०११  
 यमः ८, २४, २२; १८११  
 यमी [इन्द्रामी] ६, ५९, २, ३०४७  
 यशः ५, ३२, ११; १७१५ । ८, ६१, ५, ५५२ । ९०, ५, २३९५  
 यद्मः ८, १३, २४; ३४४  
 यातयन् ऋतुधा ५, ३२, १२, १७१६  
 याता रथेभिः ८, ७०, १, २३२१  
 यादमानः शश्वत् शश्वत् उतिभिः ३, ३६, १; १३२३  
 युगा मानुषा कृण्वन् ८, ६२, ९; ५७४  
 युजः १, ७, ५; ३२ । १२२, ४, ४; १००३, १००३  
 युजम् रथीणाम् (द्वि०) ६, ४५, १९; २०७८  
 युजानः अश्वा १०, २२, ४; २४६९  
 युजान हरिभिः ८, ५०, ७; ५०१  
 युजानः हरितः रथे ६, ४७, १९; २११७

युज् (जा-वृत्ती०) १, २३, ९, ३२४९  
 युष्कार १०, १०३, २; २६९३  
 युधः १०, १०३, ३; २६९४  
 युधमः २, २१, ३, १२१९ । ३, ४६, १; १४०९ । ६, १८, २; १८५७ । ७, २०, ३; २१५३ । ८, १, ७, २३ । ९२, ८; २४०४  
 युवा १, ६१, ४; ७३ । २, १६, १; ११७२ । २०, ३; १२१० । ३, ३२, ७, १२८८ । ४६, १, १४०९ । ६, १२, २, १८७२ । ४५, १; २०६० । ७, २०, १, २१५२ । ८, ४५, १, २, ३; ४४३-४४-४५ । ६४, ७; ५९५ । साम० ४४५; २९८८ । [मरुत] १, १६५, २, ३२५१  
 योद्धा क्रत्वा ८, ८८, ४, ८९७  
 योद्धा शवसा ८, ८८, ४, ८९७  
 योधीयान् प्रतीचक्षित् १, १७३, ५; १०६०  
 योयुवतीनां नदः ८, ६९, २; २३०५  
 रक्षिता चरमतः मध्यतः पश्चात् पुरस्तात् अथ० १९, १५, ३; २९१६  
 रक्षोहा [बृहस्पतिः] वा० य० १७, ३६; २९३२  
 रणकृत् १०, ११२, १०; २७४४  
 रणिता ८, ९६, १२; २३६१  
 रथः १, ५५, ३, ७८८  
 रथयावाना [इन्द्रामी] ८, ३८, २; ३०९२  
 रथयुः १, ५१, १४, ४५८  
 रथिन्-थी १०, ४७, ५; २८४६  
 रथिरः ३, ३१, २०; १२७९  
 रथीतमः ६, ४५, १५, २०७४ । ८, ६१, १२; ५५९ । ८, ९९, ७; २३८२  
 रथीतमः रथीनाम् १, ११, १; ७० । ८, ४५, ७; ४४९  
 रथेभिः याता ८, ७०, १; २३२१  
 रथेष्ठाः १, १७३, ४, ५, १०५९-६० । ६, २१, १, १८९७ । २२, ५; १९११ । २९, २; १९६३ । ८, ४, १३; २४१ । ३३, १४; २२३  
 रथोच्छा १०, १४८, २, २०११  
 रथ्यः हरीणाम् विव्रतानाम् १०, २३, १; २४९०  
 रदावसुः ७, ३२, १८; २२५२  
 रधचोदः २, २१, ४; १२२०  
 रधचोदनः ६, ४४, १०; २०४५ । ८, ८०, ३; ६६३ । १०, ३८, ५, २५४५  
 रधस्य चोदिता २०, २४, ३; २४९०  
 रभसः ३, ३१, १२; १२७१  
 रथिपतिः ६, ३१, १; २००६

रथिवस्-वान् १,१२९,७; १००६ । ६,४४,१, २०३६  
 रथीणां दाता ८,४६,२; १८१८  
 रथीणां युज्-क् ६,४५,१९, २०७८  
 रराणः ६,२३,७; १९२४ । ३९,५, १९८७  
 रवथः १,१००,१३, ९६९  
 राजसि विश्वस्य परमस्य ७,३२,६६; २२५०  
 राजा १,६३,७, ८९१ । १७४,१, १०६९ । १७८,२,  
 १०९७ । ४,१९,१०,१५३१ । ५,३६,२; १७४५ । ४०,४,  
 १७६८ । ६,१९,१०; १८८० । २४,१; १९२८ । ४६,६;  
 २०९५ । ७,३१,१२; २२३४ । ८,२७,१५; ९९० ।  
 १०,४४,२ २५६९ । [हृन्द्वावरुणौ] ७,८४,१, ३१९२ ।  
 [वरुण] वा० य० ८,३७, ३२४९  
 राजा अवसितस्य शवस्य शृङ्गिणः १,३२,१५; ७२९  
 राजा उभयस्य ६,४७,१६, २१४  
 राजा कृष्टीनाम् १,१७७,१, १०९१ । ४,१७,५, १४९२  
 राजा क्षम्यस्य २,१४,११; ११६०  
 राजा चर्षणीनाम् १,३२,१५, ७२९ । ५,३९,४; १७६३ ।  
 ७,२७,३; २२०५ । ८,७०,१; २३२१  
 राजा जगतः चर्षणीनाम् ६,३०,५; १९७२ । ७,२७,३; २२०५  
 राजा जनानाम् ८,६४,३, ५९१  
 राजा अनुषाम् ४,१७,२०; १५०७  
 राजा दिव्यस्य वस्वः २,१४,११, ११६०  
 राजा पार्थिवस्य २,१४,११; ११६० । ६,२२,९; १९१५  
 राजा प्रदिशः सुतानाम् २,४७,१, १४१४  
 राजा ब्रह्मण देवकृतस्य ७,९७,३, ३३६०  
 राजा भुवः दिव्यस्य जनस्य ६,२२,९; १९१५  
 राजा मदस्य सोम्यस्य ६,३७,२; १९७४  
 राजा मधुनः सोम्यस्य ६,२०,३; १८८६  
 राजा विशः अथ० ६,९८,२, २९०३  
 राजा प्राच्याः विशः अथ० ६,९८,३; २९०४  
 राजा उद्रीच्या विशः अथ० ६,९८,३; २९०४  
 राजा विशाम् ८,९५,३; २३३८  
 राजा विश्वस्य भुवनस्य एकः ३,४६,२; १४१० । ६,३४,४,  
 २०३४  
 राजा विश्वस्य स्पृहयाच्यस्य ८,९७,१५, ९९०  
 राजा हिरण्ययीनाम् ८,६५,१०; ६१०  
 रातिः सहस्रदाना [हृन्द्मस्य] ३,३०,७, १२४४  
 रातयः यस्य सहस्रम् १,११,८, ७७  
 रातहृद्या नमसा [हृन्द्मविष्णु] ६,६९,६, ३३११  
 राधानां पतिः १,३०,५, ७०३ । ३, ५१,१०; १४४३

राया नकिः त्वत् ८,२४,१५; १८०४  
 रायः अवनि ८,३२,१३, १९२  
 रायः ईशानः ८,४६,६, १८२२ । ५३, १, ५२५  
 रायः विभक्ता ४,१७,११; १४९८  
 रायः वृधः ७,३०,१; २२१८  
 रायस्वतिः ८,६१,१४; ५६१  
 रिणन् भपः ८,३२,२; १८१  
 रिरिचानः सिन्धुभ्यः महित्वा प्र १०,८९,१; २६६३  
 रिरिचि भक्तुभ्यः दिवः अन्तरिक्षात् प्र १०,८९,११; २६७२  
 रुवानः ६,३९,४, १९८६  
 रुजन् गोत्राणि ४,१६,८, १४७३  
 रेवत्-वान् १,४,२; ५ । ६,४४,२१, २०४६ । ८; २,११,  
 १२६ । ४५.१५, ४५७  
 रोचना [नौ] दिवः [हृन्द्माम्] ३,१२,९, ३०३८  
 रोचमानः ३,४६,३ १४११ । [मरुत] १,१६१,१२; ३२०१  
 रोचवत्-वना १,५४,५; ७९०  
 लोकाकृत् १०,१३३,१, २७७८  
 वंमगः १,१३०,२ १०१२ । १०,१४४,३, २८००  
 वक्ता नकिः न दात् इति ८,३२,१५, १९४  
 वक्षणि वाकस्य ८,६३,४, ५८१  
 वज्रः दास्वने १०,१४४,२, २७९८  
 वज्रं बाह्योः दधान ४,२२,३; १५५७  
 वज्रं गिज्ञानः भोजसा ८,७६,९; ६३६  
 वज्रम् [वज्रधारिणम्] १०,४८,६; २५८४  
 वज्रं हस्ते भरति २,१६,२; ११७३  
 वज्रदक्षिणः १, १०१,१, ८१७ । १०,२३,१; २४८१  
 वज्रबाहु १, ३२, १५; ७२९ । १७४, ५; १०७३ ।  
 २,१२,१२-१३; ११३३-३४ । ३,३३,६ १२९९ । ४,२०,१;  
 १५३३ । २९, ४, १६०७ । ८,१८,१२, २१३० । २३,६;  
 २१८५ । १, १६५, ८; ३२५७ । १०, ४४, ३, २५७० ।  
 १०३,६; २६२६ । [हृन्द्माम्] १,१०९,७; ३००७ [हृद्माम्]  
 अथ० ७,११०,२; ३१३२  
 वज्रभृत् १,१००,१२, ९६८ । ६,१७,२, १८४२  
 वज्रहस्त १,१७३,१०; १०६५ । २,१२,१३; ११३४ ।  
 १९, २, १२०० । ३,३२,३; १२८४ । ५,३३,३; १७१९ ।  
 ६,१७,१, १८४१ । ६,२२,५, १९११ । २९,१; १९६२ ।  
 ४६,५; २०९४ । ७,१९,५, २१४४ । २१,४; २१६४ ।  
 ३२,३-४; २२३७-३८ । ८,२,३, १४६ । २४,२४; १८१३ ।  
 ९०,४; २३९४ । १०,४७,१, २८४२ । वा० य० २६,१०;  
 २९६६ । १,१०९,८; ३०२८

वज्रिन-त्री १,७,२,५,७. २९,३२,३४ । ८,५; ४२ ।  
 ११,४, ७३ । ३०,११-१२, ७०९-१० । ३२,१; ७१५ ।  
 ५२,५; ७६४ । ६३,४-५,७, ८८८ ८९,८९१ । ८०,  
 १-२,७,११, ९००-१ ६,१० । ८२,६, ९३० । १०३,३,४;  
 ८४१-४२ । १३०, ३; १०१३ । १३१, ६, १०२६ ।  
 ३,४६,१ १४०९ । ५३,१३; १४६५ । ४,१९,१, १५२२ ।  
 २०,२,३, १५३४-३५।५,२९,१४, १६८०।३०,१,१६८२ ।  
 ३२,२,४, १७०६,८।३६,५. १७४८।४०,३,४; १७६७ ६८ ।  
 ६,१८,६; १८६१ । १९,१२; १८८२ । २२,७; १८९० ।  
 २२,१०; १९१६ । २९,३, १९६४ । ३२,१; २०११ ।  
 ४१,१; १९९३ । ४७,१४, २११२ । ७,३२,८, २२४२ ।  
 ८,१,८, ९४। २,१७, १३२।६,१५, २५७। ६,४०; २८२ ।  
 १२.२४,२६; ३११,३१३ । १३,१३; ३५३।२१,८ ४१६ ।  
 २४,१ १७२० । ३३,४; २१३ । ४५,८; ४५० । ४९,३,६;  
 ४८७,४९० । ५०,६; ५०० । ६६,४,७ ६१६,६१९ ।  
 ६९,६; २३०२ । ७०,५,६; २३२५-२६ । ९२,१३, २४०९ ।  
 ९६,१७, २३५९ । २७,१३,१४,१५; ९८८-८९-९० ।  
 ९९,१; २३७६ । १०,२२,२; २४६७ । ५५,७, २६२० ।  
 १७९,३, २९३८ । ७,९७,९; ३३६१ । साम० ३२७.२९८३ ।  
 ऋ० [इन्द्राग्नी] ६,५९,३, ३०४८  
 वज्रिवम-वान् ८,३७,१-६; १७७६-८१ । ६६,६,११  
 ६१८,६२३। ६८,९, २२९९ । ९२,११; २४०७ । १०,२२,  
 ४,१०,११,१२,१३; २४६२.२४७५-७६-७७-७८  
 वध असुन्वतः वीळीश्रित १,१०१,४; ८२०  
 वध दौधतः २,२१,४, १२२०  
 वनिष्ठः ७,१८,१; २११९९  
 वन्दनश्रुत् १,५६,७, ८०३  
 वन्दनेष्टा. १,१७३,९; १०६४  
 वन्धाः अथ० ६,९८,१, २९०२  
 वन्धुरेष्टाः ३,४३,१; १३२१  
 वन्वत्-न् २,२१,१२, १२१८ । ६,१८,१; १८५६  
 वपुः ४,२३,९; १५७४  
 वपोदरः ८,१७,८; ४०१  
 वयोधाः ३,३१,१८; १२७७ । ४२,३. १४२६ । ४,१७,  
 १७; १५०४  
 वरः १०,२२,६ २५२०  
 वरिवस्कृत् ८,१६,६. ३८७  
 वरिवोवित् १०,३८,४; २५०४  
 वरिष्ठः ८,९७, १०; ९८५  
 वरीयान् अताश्रित् सदसः ३,३६,६; १३२८

वरुण [देवता] ७,२८,४, २२११  
 वरुता २,२०,२; १२०९ । ६,२५,७; १२४४  
 वरुथम् ७ ३२,७, २२४१  
 वरेण्यः ३,३४,८, १३०८। ८,६१,१५,५६२। १०,११३,२,  
 २७४६ । अथ० १९,१५,३; २९१६  
 वर्णः १,१०४,२, ८४८  
 वर्षणीतिः ३,३४,३; १३०३  
 वर्म त्वम् असि ७,३१,६, २२२८  
 वलंरुजः ३,४५,२, १४०५  
 वनाः ८,९३,१०, २४३५  
 वशिन्-शी १,१०१,४, ८२० । ८,१३,९; ३२९ ।  
 १०,१०३,३, २६९४।१५२,२, २८१५। अथ० ४, २४, ७, २८७३  
 वसवान् १,१७४,१; १०६९। ८,९९,८, २३८३। १०,२२,  
 १५, २४८०  
 वसिष्ठः ७,३३,१-९; २०६२-७०  
 वसु १,१०,४; ६१। ३०,१०, ७०८ । ८४,२०; ९५६ ।  
 १२९,११,११ १०१० १०। २,१३,१३, ११४९। १४,१२  
 ११६१ । ३४१,७. १३७९ । ५१,६, १४३९ । ४,३२,१४,  
 १५५८ । ६,२४,२ १९३९ । ४५,२३, २०८२ । ४६,६;  
 २०९५ । ७,३१,३,४, २२२५-२६ । ८,१,६, २९, ९२, ११५ ।  
 २,१, ११६ । २१,८, ४१६ । २४,७,८; १७२६-१७९७ ।  
 ३३,२, २११ । ४६,९, १८२५ । ५०, ३, ४, ९; ४९७ ९८, ५०३ ।  
 ५१,६; ५१० । ५२,६,८, ५२०, ५२२; ६६,१२, ६२४ ।  
 ७०,९; २३२९ । ७८,३; ६५२ । ९८,११, २३७४ ।  
 १०,२२, १५, २४८० । ३८,२; २५४२ । १०५,१, २७१४ ।  
 अथ० ७,५५,१, २९१२  
 वसु इयमानः १,१०,६ ६३  
 वसुदाः ८,९९,४; २३७९  
 वसुनः पुर्यः पतिः १०,४८,१; २५७९  
 वसुपतिः १,९,९, ५६ । ३,३०,१९; १२५६ । ८,५२,६;  
 ५२० । ६१,१०; ५५७ । १०,११२,१०; २७४४  
 वसुपतिः वसूनाम् १,१७०,५,१०५५ । ३,३६,९; १३३१ ।  
 ४,१७,६; १४९३ । १०,४७,१; २८४२  
 वसुभिः नियुक्त्वान् ३,४९,४. १४२७  
 वसुविद् ८,६१,५, ५५२  
 वसूनां ईशानः ८,६८,६; २२९६  
 वसूनां दाता ८,५१,५; ५०९  
 वसूनां विश्वेषां हरज्यन् ८,४६,१६; १८३२  
 वसूयुः १,५१,१४,७५८ । ८,९९,८, २३८३ । १०,२७,१२;  
 २५०२

वस्ता क्षपाम् ३, ४९, ४; १४२७  
 वस्यः ७, ३२, १२; २२५३  
 वस्यान् ८, १, ६, ९२  
 वस्व. अर्णवः १, ५१, १ ७४५  
 वस्वः आकर ५, ३४, ४; १७३०  
 वस्वः हृशः ८, १४, १; ३५४  
 वस्वः हृशान ८, ८१, ४; ६७३  
 वस्व. सम्भर. ४, १७, ११, १७९८  
 वस्वः सम्राट् ४, २१, १०, १५५३  
 वह्निः २, २१, २; १२१८ । [मरुतः] १, ६, ५, ३२४५  
 वह्निः संवरणेषु ४, २१ ६; १५४९  
 वाकस्य वक्षणिः ८, ६३, ४; ५८१  
 वाघत नान्यः खल ८, ७८ ४; ६५४  
 वाचं जनयन् यजध्वं ४, २१, ५; १५४८  
 वाचस्पति वा० य० १७, २३; २९३१  
 वाज १०, २३, २, २४८२ । ४७ ५; २८४६  
 वाजदा [इन्द्रवायु] १, १३५, ५; ३२१६  
 वाजदावा मघोनाम् ८, २, ३४; १४९  
 वाजपतिः साम० २२६; २९७२  
 वाजयन् ८ ९८, १२, २३७५  
 वाजयन्ता (तौ) ६, ६०, १, ३०५५  
 वाजयुः ७, ३१, ३, २२२५  
 वाजवान् ३, ५२, ६; १४५१ । ६०, ६, ३३४२  
 वाजं सनिता ४, १७, ८, १४९५  
 वाजमातमा (मौ) [इन्द्रामा] ३, १२, ४; ३०३३  
 वाजानां पतिः १, ११, १; ७० । २९, २; ६९३। ६, ४५, १०, २०६९ । ८, २४, १८, १८०७ । ९२, ३०, २४२६  
 वाजिन्-जी १, ४, ९; १२ । १७६, ५; १०८९ । ६, २४, २; १२२९ । ८, ५२, ४, ५१८ । २, ३८; १५३। १४, ६; २५९ । १६, ३, ३८४ । २४, २२; १८११ । ३२, १८; १२७ । १०, १०३, ५; २६९५ । ८, २३, ३४; ३३४४। २, ३२, ३; ३३५१ ।  
 वाजिनीवसुः ३, ४२, ५, १३८६। [इन्द्रवायु] १, २, ५; ३२११।  
 वाजेषु अविता ८, ४६, १३; १८२९  
 वामनीतिः ६ ४७, ७; २१०५  
 वार्याणां पति १०, २४, ३; २४९०  
 वावशान ३, ५१, ८; १४४१ । ६, ३२, २; २०१२  
 वावशानः सोमम् ३, ३५, ९; १३२०  
 वावृधानः १, १३१, ७, १०२७। २, ११, ४, २०; ११०४. २० । १९, १; ११९९ । ४, २१, २; १५४४ । ३, ५१, १, १४३४ । ६, १९, ११; १८८१ । ३८, ५, १९८२ । ८, ६, ४०; २८२ ।  
 वै० [इन्द्रः] ४१

७६, ३, ६३०  
 वावृधान उक्थैः २, ११, २; ११०२  
 वावृधानः ओजसा ३, ४५, ५; १४०८  
 वावृधानः तन्वा ३, ३४, १, १३०१ । १०, ५४, २ २६०९  
 वावृधान द्विवेदिवे ८, ५३, १; ५२६  
 वावृधान शवमा १०, १२०, २, २७६५  
 वावृधानः सहोभि १०, ११६, ६; २७६०  
 वावृधानः हविषा [इन्द्राविष्णु] ६, ६९, ६, ३३११  
 वावृधेन्य ८, २४, १८ १८०७  
 वावृध्वान् ८, ९५, ७, २३४२ । ९८, ८, २३७१  
 वासयन्तः गव्या वस्त्रा इव [मरुतः] ८, १, १७; १०३  
 वास्तोष्पतिः ८, १७, १४; ४०७  
 विश्वु भारित २, २१, ३, १२१९  
 विप्र. १, ४, ४ ७  
 विघनिना (नौ) [इन्द्राम्नी] ६, ६०, ५, ३०६०  
 वासवः अथ० ६, ८२, १; २८९९  
 विचक्षणः १, १०१, ७, ८२३ । ४ ३२, २२, १६६६  
 विचर्षणि २, २२, ३, १२२५। ४१, १०, १२; १२३५ १२३७ । ६, ४५, १६, २०७५ । ४६, ३, २०९२ । ८, १७, ७, ४०० । ३३, ३, २१२ । ९८, १०; २३७३  
 विचेता ६, २४, २; १९२९ ७, २७, २, २२०४ । ८, ४६, १४; १८३०  
 विजानन् ३, ३२, ७, १३६१  
 वितन्तमाययः ६, १८, ६; १८६१ । ४५, १३; २०७२  
 वितर्तुराण. ६, ४७, १७, २११५  
 वित्वक्षण. ५, ३४, ६, १७३०  
 विद् १०, १३८, ३; २७९४  
 विदथस्य पतिः १, ५७, २, ८०६  
 विदयमानः ३, ३४, १ १३०१  
 विद्वसु ३, ३४, १, १३०१। ५, ३९, १, १७६०। ८, ६६, १, ६१३  
 विदानः ६, २१, २, १२; १८९८, १९०६ । १०, १११, १, २७२५। वा० य० ३३, ७९, २९७०। ऋ० १, १६५, ९, १०; ३२५८, ३२५९  
 विद्वधे [इन्द्राश्वौ] ४, ३२, २३, ३३४८  
 विद्वान् १, १०३, ३; ८४१ । २, ३०, २, १२२८ । ३, ३५, ४, १३१५ । ३, ३५, ८; १३१९ । ४४, २; १४०० । ४७, २, १४१५ । ५२, ७; १४५२। ४, ३०, १७, १६२२। ५, ३०, ३; १६८४। ६, ४७, ८; २१०६। ७ ९८, १, २२०८। ८, ३३, ३, ५८० । १०, ३२, ६; २५३५ । १४८, ३; २८११ । ५, ८६, ४; ३०४३

विद्वान् अपांनि विश्वा नर्याणि ७,२०,४; २१६४  
 विद्वान् विश्वानि नर्याणि ४,१६,६; १४७२  
 विद्वान् विश्वस्य १०,१६०,२, २८२५  
 विद्वान् विश्वानि ६,४२,१; १९९८  
 विद्वेषण ८,१,२, ८८  
 विधत्तु-र्ता ८,७०,२, २३२२  
 विपश्चित् १,४४; ७ । ८,३३,१०, ३३० । ९८,१; २३६४  
 विपानः ८,६,२२, २७१  
 विप्रः १,५१,१, ७४५ । १३०,६; १०१६ । ४,१९ १०;  
 १५३१ । ५,३१,७; १६९९ । ६ ३५,५; २०३० । ८,२,३६;  
 १५१ । ६,२८, २७० । ९८,१, २३६४ । १०,५०,७;  
 २६०७ । सामं ४४६, २९८९  
 विप्रतम. ३,३१,७, १२६६  
 विप्रतम. कवीनाम् १०,११२,९, २७४३  
 विप्रवीरः १० ४७ ४,५, २८४५, २८४६  
 विवाधः १०,१३३,४. २७८१  
 विभक्ता भागं वाजंम् ३,४९,४, १४२७  
 विभक्ता मघानाम् ७,२६,४; २२०१  
 विभक्ता राय. ४,१७,११; १४९८  
 विभन्जनुः ४,१७,१३, १५००  
 विभावसु ८,९३,२५, २४५४  
 विभीषण. ५,३४,६; १७३२  
 विभु. (+चे-चतु०) ८,९६,११; २३५५  
 विभूतिः ६,१७,४, १८४४ । ८ ४९,६, ४९० । ५०,६,५००  
 विभ्राजन् ज्योतिषा ८ ९८,३. २३६६  
 विभ्रतष्टः ३ ४९,१ १४२४  
 विमृव १०,१५२,२, २८१५  
 विरप्शान् षी ३,३६ ४; १३२६ । ४,१७,२०. १५०७ ।  
 २०,२; १५३४ । ६,२२,६; १९१२ । ३२,१, २०११ ।  
 ४०,२; १९८९ । ८ ७६ ५, ६३२ । १०,११३ ६; २७५० ।  
 गामं ६२५, २९९६  
 विविचिः ८,५०,६; ५००  
 विशस्पतिः १०,१५२,२, २८१५  
 विशां राजा ८,९५,३; २३३८  
 विश. राजा अथर्वं ६,९८,२; २९०३  
 विशपतिः ३,४०,३, १३६६  
 विश्रुत. १,६२,१; ८७२  
 विश्व अभिभू जात जन्वम् ८,८९,६, २३८९  
 विश्व. ८,३,१६; १७१  
 विश्वकर्मा ८,९८,२; २३६५ । वा० य० १७,२३; २९३१

विश्वगूर्तः १,६१,९; ८६४ । ८,१,२२; १०८ । ७०,३; २३२३  
 विश्वचर्षणिः १,९,३; ५० । ५,३८,१; १७५५ । ६,४४ ४;  
 २०३९ । ८,५३,६; ५३० । १०,५०,४; २६०४  
 विश्वजन्म्या १,१६९,८; १०५०  
 विश्वजित् २,२१,१; १२१७  
 विश्वतस्पृथुः ८,९८,४; २३६७  
 विश्वतः ८,९९,५, २३८०  
 विश्वतोषीः ८,३४,६; ४३०  
 विश्वहृष्टः अथर्वं ५,२३,६; २८७९  
 विश्वदेवः ८ ९८,२, २३६५  
 विश्वमनाः १०,५५,८; २६२१  
 विश्वमिन्व ७,२८,१; २२०८  
 विश्वरूपः ३,३८ ४, १३४८  
 विश्ववारः १,३०,१०, ७०८ । ८,४६,९, १८२५  
 विश्ववेदाः ६,४७,१२; २११० । १०,१३१,६; २७७६  
 विश्वव्यचाः ३,४६,४; १४१२  
 विश्वशम्भूः वा० य० १७,२३, २९३१  
 विश्वस्य गोपतिः ८,९२,७; ५७२  
 विश्वस्य विद्वान् १०,१६०,२; २८२५  
 विश्वानरः १०,५०,१, २६०१  
 विश्वाभूः १०,५०,१; २६०१  
 विश्वायुः १,१२९,४; १००३ । ३,३१,१८, १२७७ ।  
 ६,३३,४. २०१९ । ३४,५; २०२५ । ८,२,४, ११९  
 विश्वासाहः ३,४७,५, १४१८ । ६,१९,११; १८८१ ।  
 ४४,५; २०३९ । ८,२२,१; २३९७  
 विश्वास्तु समस्तु हृष्य ८,९०,१; २३९१  
 विश्वौजा १०,५५,८; २६२१  
 विशुण. असुन्वतः ५,३४,६, १७३२  
 विष्णुः १ ६१,७; ८६२ । ८,१२,२७; ३१४ । ७७,१०;  
 ६४९ । १००,१२, ९९९ । १०,१४८,३; २८११  
 विहन्ता वज्रुषशित् तमसः १,१७३,५; १०६०  
 विहृष्यः पुरुषा २,१८,७; ११९६  
 वीरः १,३०,५; ७०३ । ६१,५; ८६० । ८१,२; ९१७ ।  
 २,१३,११; ११४७ । १४,१; ११५० । ३,५१,४, १४३७ ।  
 ४,२४,१; १५७७ । २५,६; १५९३ । ५,३०,१, १६८२ ।  
 ६,२१,१, १८२७ । २१,६; १९०२ । ३२,१, २०११ ।  
 ४४,१४; २०४९ । २४,२; १९२९ । ४५,८, १३, २६;  
 २०६७, ७२, ८५ । ४७,१६, २११४ । ७,२०,२, २१५२ ।  
 २९,२; २२१४ । ८,२,२१,२३,२५; १३६, १३८, १४० ।  
 ३२,२४, २०३ । ३३,१६; २२५ । ४६,१४, १८३० ।

५०, ६; ५०० । १०, १०३, ७; २६९७ । १११, १; २७२५ ।  
 ११३, ४; २७४८ । ८, ४०, ९; ३१०२  
 वीरकः ८, ९१, २; १७८४  
 वीरतमः नृगाम् ३, ५२, ८; १४५३  
 वीरतरः ८, २४, १५; १८१४  
 वीरयु ८, ९२, १८; २४२४  
 वीरवत्-वान् १०, ४७, ५. २८४६  
 वीरेण्यः १०, १०४, १०; २७१२  
 वीर्याणि करिष्यन् ८, ६२, ३; ५६८  
 वीर्यैः साकं वृद्ध. २, २२, ३. १२२५  
 वीळितः २, २१, ४, १२२०  
 वीर्याणि विश्वानि यस्मिन् अधि संभृता [नि] २, १६, २. ११७३  
 वृजन. १, १०१, ११; ८२७  
 वृत्तंचयः २, २१, ३. १२१९  
 वृत्रह्लाद ३, ४५, २, १४०५  
 वृत्रघ्नः अथ० ४, २४ १, २८६७  
 वृत्रहन्ता ४, २१, १०; १५५३ । १७, ८; १४९५ । ८, २,  
 ३२, ३६, १४७, १५१  
 वृत्रतुरा [इन्द्रावरुणौ] ६, ६८, २, ३१६२  
 वृत्रहन्-हा १, १६, ८; ८५ । ८१, १; ९१६ । ८४, ३; ९३९ ।  
 २, १२, ७; १२१४ । ३, ४०, ८; १३७१ । ३०, ५; १२४२ ।  
 ३१, ११, १४, १८, २१, १२७०, ७३, ७७, ८० । ४१, ४;  
 १३७६ । ४७, २; १४१५ । ५२, ७, १४५२ । ४, ३०, १, ७,  
 १६०९, १५ । ३२, १, १९, २१; १६४५, १६६३, ६५ ।  
 ५, ३८, ४; १७५८ । ४०, ४, १७६८ । ६, ४५, ५, २०६४ ।  
 ४७, ६; २०९४ । ७, ३१, ६, २२२८ । ३२, ६, २२४० ।  
 ८, १, १४, १०० । २, २६, १४१ । ४, ११; २३९ । ६, ४०;  
 २८२ । १३, १५, ३३५ । १७, ९, ४०२ । २४, ८, १७९७ ।  
 ३२, ११; १९० । ३३, १, १४, २१०, २२३ । ३७, १-६;  
 १७७६-१७८१ । ४५, ४, २५, ४४६, ४६७ । ४६, १३ १८२९ ।  
 ५४, ५; ५३५ । ६१, १५, ५६२ । ६२, ११; ५७६ । ६४, ९;  
 ५९७ । ६६, ३ ११; ६१५, ६२३ । ७०, १; २३२१ ।  
 ७७, ३; ६४२ । ७८, ७, ६५७ । ८२, १; ६७९ । ८९, ३;  
 २३८६ । ९०, १; २३९१ । ९२, २४; २४२० । ९३, २,  
 ४, १५, १८, २०, ३३, २४३१, ३३, ४४, ४७, ४९, ६२ ।  
 ९६, १९, २१, २३६१-६३ । ९७, ४, ९७९ । १०, २३, २;  
 २४८२ । ७४, ६, २६३९ । १०३, १०; २७०० । १११, ६,  
 २७३० । १३३, १, २७७८ । १३८, ५; २७९६ । १५२, २, ३;  
 २८१५-१६ । १५३, ३, २८२२ । अथ० ६, ७५, २; २८९७ ।  
 ८२, १; २८९९ । ६, ९८, ३; २९०४ । १९, १५, ३;

२९१६ । वा० य० २०, ७५; २९५९ । २०, ९०; २९६३ ।  
 २६, ५, २९६५ । साम० ३२७, २९८३ । [इन्द्राग्नी]  
 १, १०८, ३; ३०१० । ३, १२, ४; ३०३३ । ६, ६०, ३;  
 ३०५८ । ७ ९३, १, ४; ३०७१, ३०७४ । ७, ९४, ११,  
 ३०८९ । ८, ३८ २, ३०९२ । अथर्व० ७, १३०, २; ३१३०  
 वृत्रहा भरेभरे १, १०० २, ९५८  
 वृत्रहा वृत्रहल्येन ८, २४, २, १७९१  
 वृत्रहन्तमः ५, ३५, ६; १७४१ । ४०, १३, १७६५ ६७ ।  
 साम० ४४६; २९८९  
 वृत्रा जिघ्रमानः ३, ३०, ४, १२४१  
 वृत्राणि घ्नन् ३, ३०, २२; १२५९ । ५०, ५, १४३३ ।  
 द्वादशकृत्य पुनरुक्त मन्त्रः १०, ८९, १८; २६७९ ।  
 १०४, ११. २७१३  
 वृत्राणां घनः ८, ९६, १८; २३६०  
 वृथाषाट् १, ६३, ४, ८८८  
 वृद्धः ३, ३२, ७, १२८८ । ४, १९, १, १५२२ । ६, २४, ७; १९३४  
 वृद्धमहाः ६, २०, ३, १८८६ । ३७, ५; १९७७  
 वृद्धायुः १, १०, १२, ६९  
 वृधः ६, ३४, ५, २०२५ । ७, ३२, २५, २०५९  
 वृधः यजत्रनः ८, ३३, १८, १९७७  
 वृधः मनोः ८, ९८, ६, २३६९  
 वृधः प्र अक्तुभ्यः अहभ्यः अन्तरिक्षात् १०, ८९, ११; २६७२  
 वृधन्ता (नौ) अनुद्यन् [इन्द्राग्नी] ५, ८६, ५. ३०४४  
 वृध रायः ७, ३०, १; २२१८  
 वृध सुन्वतः ५, ३४, ६; १७३२ । ८, ९८, ५, २३६८  
 वृधानः १, ५६, ६, ८०२ । १०, ५५, ८, २६२१  
 वृधन्-वा १, ७, ६, ८; ३३, ३५ । १६, १, ७८ । ५४, २;  
 ७८७ । ५५, ४; ८०० । १००, १, १७, ९५७, ९७३ । १०१, १,  
 ८१७ । १०३, ६, ८४४ । १०४, ७, ८५३ । १३३, ५, ६,  
 १०२५-२६ । १३२, ६; १०४१ । १७५, १; १०७९ ।  
 १७६, २, १०८६ । २, ११, ९, १०, ११०९-१० । १४, १,  
 ११५० । १७, ८, ११८८ । ३, ३०, २; १२३९ । ४, १६, ३, ००,  
 १४६९, ८६ । १७, १६ १५०३ । २१, ७, १५५० । २२, २, ६,  
 १५५६, १५६० । २४, ८, १५८४ । ४, ३०, १०; ३३४६ ।  
 ५, ३१, ५, १६९७ । ३३, २; १७१८ । ३५, ४, १७३९ ।  
 ३६ ५, ५, ५, १७४८-४८-४८-४८; ५ ४०, १, २, ३, ३, ३;  
 १७६५-६७; ६, २२, ८; १९१४ । ३३, ९; २०१६ ।  
 ४४, २०, २१; २०५५-५६ । ७ १९, ६; २१४५ । २०, ५;  
 २१५५ । २३, ६; २१८५ । ३१, ४; २२२६ । ८, १, १,  
 ८७ । ४, ७, ८, २३५-३६ । ६, ४०, २८२ । १३, ३१-३३,

२५१-५३ । १५,१०, ३७८ । ३३,१०,११,१२,१८;  
 ३१९,२०,२१,२७ । ६१,११, ५५८ । ६३,९; ५८६ ।  
 ६४,८; ५९६ । ७०,६, २३२६ । ९२,१५ २३, २४११,  
 २४१९ । ९३, ७, १९, २०, २४३६, २४४८, २४४९ ।  
 [इन्द्रावरुणौ] ६ ६८,११; ३१७१ । ७,८२,२; ३१७३ ।  
 [मरुताः] १,१६५,१, ३२५० । [इन्द्रासोमौ] अथर्व०  
 ८,४,१; ३२७८ । १,१६५,११, ३२६० । १० ४३,६;  
 २५६२ । ४९,९ २५९८ । ८९,९, २६७० । १०,१२३ २,९;  
 २६९३,९२ । ११६,४, २७५८ । १५३, २; २८२० ।  
 १५२,२, २८१५ । [इन्द्रासोमौ] १,१०८,३; ३०२० । ७-१२,  
 ३०१४-१९ । अथ० ७,११०,२; ३१३२  
 वृष इति परावति अर्वावति श्रुतः ८,३३,१०, २१९  
 वृषकर्मा १,६३ ४, ८८८ । १३०,१०, १०२०  
 वृषक्रतुः ५,३६,५; १७४८ । ६,४५,१६; २०७५  
 वृषजृतिः ५,३५,३, १७३८ । ८,३३,१०; २१२  
 वृषणवसू [इन्द्रावृष्टःसती] ४, ५०, १०, ३३२३ । अथर्व०  
 २०,१३,१; ३३२९  
 वृषणवान् १,१७३,५, १०६०  
 वृषन्तम १,१०,१०,१०; ६७,६७ । १००,२; ९५८ ।  
 ५,३५,३, १७३८ । ६,५७ ४, ३३३३  
 वृषपर्वा ३,३, २, १३२४  
 वृषप्रभर्मा ५,३२,४, १७०८  
 वृषमना १,६३ ४, ८८८ । ४,२२,६; १५६० ।  
 वृषरथः ५,३६,५; १७४८  
 वृषाकपिः १०,८६,१-२३, २६४०-२६६२  
 वृषायमाण १,३२,३, ७१७  
 वृषिणः १,१०,२, ५९  
 वृषण्यावान् ६,२२,१; १९०७  
 वृष्येभिः समोकाः १,१००,१; ९५७  
 वृषा दिव ६,४४,२१, २०५६  
 वृषा वृषभिः १,१००,४, ९६०  
 वृषा सिन्धुनाम् ६,४४,२१; २०५६  
 वृषभः १,९,४, ५१ । ३३,१०; ७३९ । ५१,१५; ७५९ ।  
 ५५,२ ३; ७८७-८८ । १०३ ६, ८४४ । १७७,१; १०९३ ।  
 २,१२,१२; ११३३ । १६,४,५ ५,६; ११७५ ११७६,७६  
 ७७ । २२,४, १२२० । ३,३०,३ ९,२१; १२४०,४६,५८  
 ३१,१८, १२७७ । ३५,३; १३१४ । ३६,५ १३२७ ।  
 ३८,५,७; १३४९,५१ । ४०,१; १३६४ । ४३ ६, १३९६ ।  
 ४६,१,५, १४०९,१३ । ४७,१,५; १४१४,१४१८ । ४८,१,  
 ४४१९ । ५० १ १४२९ । ४,६६,२०; १४८१ । १७,८; १४९५ ।

१८ १०; १५१८ । २४,५ १५८१ । ३०,१९,२२; १६२४,२७ ।  
 ५,३०,११; १६९२ । ३२,६; १७१० । ४०,४, १७६८ ।  
 ६,१९,११; १८८१ । २२,१; १९०७ । ३२,४; २०१४ ।  
 ४४,११,२०-२१; २०४६,२०५५-५६ । ४७,२१; २११८ ।  
 ७,२६,५, २२०२ । ८,१,२; ८८ । २१,४,११; ४१२,४१९ ।  
 ४५,२२ ३८, ४६४,४८० । ६१,२, ५४९ । ६४ ७, ५९५ ।  
 ९३,१७,२०, २४३०,३६,४९ । ९६,२,६; २३४६,२३५० ।  
 १०,३८,५; २५४५ । ४३,३, २५५९ । ४४,३; २५७० ।  
 ११२,७, २७४१ । १३१,३, २७७५ । अथर्व० ४,२४,३;  
 २८६९ । ६,९८,३; २९०४ । साम० ३२७; २९८३ । ऋ०  
 १,१६५,७; ३२५६ । १,१७१,५; ३२६७  
 वृषभः क्षितीनाम् ७,९८ १; २२७९  
 वृषभः चर्षणीनाम् ६, १८, १; १८५६ । ८, ९६, ४,१८;  
 २३४८,२३६०  
 वृषभः जनानाम् १,१७७,१; १०९१  
 वृषभः पृथिव्याः ६,४४,२१; २०५६  
 वृषभः मतीनाम् ६,१७,२, १८४२ । १०,१८०,३; २८४१  
 वृषभः स्तियानाम् । ६,४४,२१; २०५६  
 वृषभाणां ज्यष्ठ ८,५३ १; ५२५  
 वृषभाजः २,१६,५; ११७६  
 वेद् विश्वा जनिमा ८ ४६,१२ १८२८  
 वेदिष्ठः ८,२ २४; १३९  
 वेदीयस्-वान् गौरात् अवपानम् ७,९८,१; २२७९  
 वेधाः २,२१,२, १२१८ । ६,२२,११; १९१७ । १०,१४४,१;  
 २७९८  
 वेधाः मरुताम् १,१६२,१; १०४३  
 वेनः ८,६३,१; ५७८  
 व्रतपा देवानाम् १०,३२,६; २५३५  
 शंसः ६,२४,२, १९२२  
 शंस्यः १०,४७ २; २०४३  
 शस्यानां उक्थ्य [वरुणः] १,१७ ५ ३१३८  
 शक्तीवसु-वान् ५,३१ ६; १६९८  
 शक्र १,१०,५ ६; ६२,६३ । ५५ २; ७८७ । ६२,४;  
 ८७५ । १०४,८, ८५४ । १७७,४; १०९४ । ३,३५,१०;  
 १३२१ । ३७,११, १३४४ । ४,१६,६; १४७२ । ५,३४,३;  
 १७२२ । ६,३५,५; २०३० । ४७,११, २१०९ । ७,२०,९;  
 २१५९ । ७ १०४,२०-२१, २२८८-८९ । ८,१,१९; १०५ ।  
 २,२३; १३८ । १२,१७; ३०४ । १३,१५; ३३५ । ३२,१२;  
 १९१ । ४५,१०; ४५२ । ५०,१; ४९५ । ५२,१; ५१५

द्वि, ३; द्वि, ५ । द्वि, १४; २३२६ । ७८, ५; द्वि, ५ । ९२, १, १७८३ । ९२, ११, २६; २४०७, २२ । ९३, १८; २२४७ । ९७, ४, १४; ९७९, ८९ । १०, ४३, द्वि; २५६२ । १०४, १०; २७१२ । १३४, ३; २७८७ । १६७, २; २८३० । अथर्वं २, ५, ४. २८६६ । ८, ४, २१. ३२९८ । सामं २०९; २९७७  
 शशिष्ठ ४, २०, ९; १५४२  
 शशीपतिः ४, ३०, १७, १६२२ । ३१, ७, १८३६ । द्वि, ४५, ९ २०६८ । ८, १४, २; ३५५ । १५, २३; ३८१ । ३७, १ द्वि; १७७६ १७८१ । द्वि, ५; ५५२ । द्वि, ८; ५७३ । १०, २४, २ २४८९ । अथर्वं द्वि, ८२, ३; २९०१  
 शशीभिः महान् महीभि ८, १६, ७; ३८८ । २, ३२, १४७  
 शशीवस्-वान् १, २९, २, द्वि, ३ । ५४, ३; ७७७ । ५५, २; ७८७ । द्वि, १२, ८३ । ३, ५३, २; १४५४ । ४, २२, २, १५५६ । द्वि, २४, ४, १९३१ । ३१, ४, २००९ । ८, २, १५, २८. ३९, १३०, १४३, १५४ । द्वि, २; २२९२ । १०, ४९, ११; २६०० । १०४, ४, २७०६  
 शतक्रतुः १, ४, ८-९, ११-१२ । ५, ८; २१ । १०, १; ५८ । १६, ९, ८६ । ३०, १, द्वि, १५, ६९९, ७०४, १३ । ५१, २; ७४६ । ५५, द्वि; ७९१ । ८२, ५; ९२९ । २, १६, ८, ११७९ । २२ ४; १२२६ । ३, ३७, २, ३, द्वि ८९; १३३५-३६, ३९, ४१ ४२ । ४२, ५; १३८६ । ५१, २; १४३५ । ४, ३०, १६; १६२ । ५, ३५, ५; १७४० । ३८, १, ५; ७५५, ५९ । द्वि, ४१, ५; १९९७ । ४५, २५, २०८४ । ७, ३१, ३; २२२५ । ८, १, ११; ९७ । ३२, ११; १९० । ३३, ११, १४, २२०, २३ । ३६, १-६; १७६९-७४ । ५२, ४, द्वि, ५१८, ५२० । ५३ २; ५२६ । ५४, ८; ५३८ । ६१, ९, १०, १८; ५५६, ५७, द्वि । ७६, ७; ६३४ । ७७, १; ६४० । ८०, १; ६६१ । ८९, ३, २३८६ । ९१, ७; १७८९ । ९२, १, १२, १३, १६; २३९७, २४०८-९, १२ । ९३ २७, २८, २९, ३०, २४५६-५७, ५८, द्वि । ९८, १०, ११, १२ २३७३-७४-७५ । ९९, ८; २३८३ । १० ३३, ३; २५४० । ११२, द्वि; २७४० । १३४, ४, २७८८ । अथर्वं द्वि, ८२, १; २८९९ । वा०यं ३, ४९. २२१९ । २०, ७५, २९५९ । २६, ४ ५ २९६४-६५  
 शतनीथः १, १००, १२. ९६८  
 शतमथ्युः १०, १०३, ७, २६९७  
 शतमूर्तिः १, १०२, द्वि, ८३३ । १३०, ८ १०१८ । ७, २१, ८, २१६८ । ८, २, २२, २६. १३७, १४१ । ९९, ८ २३८३  
 शतामघः ८, १, ५; ९१ । ३३, ५. २१४ । ३४, ७. ४३१ । ४६, ३; १८१९  
 शतावान् द्वि ४७, ९, २१०७

शतिन्-ती १०, ४७, ५; २८४६  
 शत्रुः १०, १२०, २ २७६५  
 शत्रुह अथर्वं द्वि, ९८, ३ २९०४  
 शन्तमः ८, ३३, १५ २२४ । ५३, ५ ५२९  
 शम्भविष्टः १, १, ७१, ३ ३०६५  
 शम्भू [इन्द्रावरुणौ] ४, ४१, ७ ३१५२  
 शम्भुवा (वा) [इन्द्रामी] द्वि, ६०, ७, ३०६२ । १४, ३१६०.  
 शरः ८, ७०, १३, १४ २३३३, २३३४  
 शरव्यः [हृषुः] वा० यं १७, ४५; २९३४  
 शरुमान् [सोम.] १०, ८९, ५ ३०७६  
 शर्धनीतिः ३, ३४, ३; १३०३  
 शवस्-सा द्वि, २९, ३, १९६४ । ७, ३०, १, २२१८ । ८, १, २१ १०७ । १०, ७३, ८ २६३०  
 शवसः पतिः १, ११, २; ७१ । १३१, ४, १०२४ । ३, ४१, ५; १३७७ । ५, ३५ ५; १७४० । द्वि, ४४, ४; २०३९ । ८, द्वि, २१; २६३ । ४५, २०; ४६२ । ९०, २, ५, २३९२. ९५ । ९२, १४; २४१० । ९७, द्वि, ९८१ । [इन्द्रवायु] ४, ४७ ३; ३२२८  
 शवस सूनुः १ द्वि, ९; ८८० । ४, २४, १. १५७७  
 शवसानः १ द्वि, १, २, १३; ८७२, ७३, ८४ । द्वि, ३७, ३; १९७५ । ८, २, २२; १३७ । ४६, द्वि; १८२२ । द्वि, ८; २२९८ । ७, ९३, २ ३०७२  
 शवसा चक्रानः ७, २७, १. २२०३  
 शवसा योद्धा ८, ८८, ४; ८९७  
 शवसा श्रुतः ८, २४, २; १७९१  
 शवसावन् १, द्वि, ११, ८८२  
 शवसिन् ७, २८, २; २२०९  
 शवसी [इन्द्रमाता] ८ ४५, ५, ४४७ । ७७, २; ६६१  
 शविष्ठ १ ८०, १. ९०० । ८४, १, १९, ९३७, ९५५ । ५, २९, १३. १५; १६७९, ८१ । ३५, ८ १७४३ । ३८, २, १७५६ । ८, ४०, २, ३१०२ । [इन्द्रावरुणौ] द्वि, ६८, २; ३१६२ । द्वि, २२, २, ७. १९०८, १३ । २६, ७; १९४३ । ३५, ३; २०२८ । ७, २१, ५; २१६५ । ८, द्वि, ३१; २७३ । १२, १, २८८ । १३, १२, ३३२ । ३३, १३; २२२ । ४६, ९ १९; १८२५, ३५ । द्वि, १; ५४८ । द्वि, ४; ५६२ । ६६, १२, १४; ६२४, २६ । द्वि १, २२९१ । ७०, द्वि, १२; २३२६, ३२ । ९०, ४, २३९४ । ९७, १४, ९८९ । १०, ११६, १ २७५५ । १, १६५, ७; ३२५६ । अथं ७, ९७, १; ३१२०  
 शश्वतां साधारणः ४, ३२, १३; १६५७ । ८, द्वि, ७; ६०७  
 शश्वतीनां पतिः ८, २५, ३; २३३८  
 शर्यमानः १०, ८९, ९; २६८८



नाकिन् -की १, ५१, ८; ७५२ । ५५, २; ७८७ । ३, ५१, २;  
 १४३५ । ६, ४५, २२, २०८१ । ८, ४६, १४, १८३०  
 नाचिगुः ८, १७, १२, ४०५  
 नाचिपूजन ८, १७, १२; ४०५  
 नाशदानः १, ३३, १३, ७४२  
 नासः ३, ४७, ५; १४१८ । ६, १९, ११, १८८१  
 नासत दिवः असुव्य ८, ३४, १-१५; ४२५-४३९  
 शिक्षानरः १, ५४, २; ७७६ । ४, २०, ८, १५४०  
 निप्रवान् ६, १७ २, १८२२  
 निमिन्-प्री १, २९, २; ६९३ । ८२, ४, ९१९ । ८, ३२, ७,  
 २१६ । ६१, ४; ५५१ । ९२, ४, २४४०  
 निमिणीवान् १०, १०५, ५; २७१८  
 निमीवान् १, १००, १३; ९६९ । [लोमः] १०, ८९, ५; ३२७६  
 निवः २, २०, ३, १२१० । ६, ४५, १७; २०७६ । ८, ६३, ४,  
 ५८१ । ९३, ३, २४३२  
 निवतमः ८, ९६, १०; २३५४  
 निशयः (यम्-द्वि०) १०, ४२, ३; २५४८  
 निशानः १०, १०३, १, २६९२  
 निशान. वज्रम् ८, ७६, ९; ६३६ । १०, १५३, ४; २८२२  
 नीष्णाशीर्णोपवाच्यः १, १३२, २; १०२९  
 शुचिः ८, १३, १९; ३३९ । १०, ४३, ९; २५६५  
 शुचिपा [इन्द्रवायु] ७, ९१, ४, ३२३७  
 शुद्ध ८, ९५, ७, ८, ९; २३४२-४३ ४४  
 शुभ्यु १०, ४३, १, २५५७  
 शुन. ३, ३०, २२; १२५९ । द्वादशकृत्वः पुनरुक्तः  
 ३, ५०, ५, १४३३ । १० ८९, १८; २६७९ । १०, ४, ११,  
 २७१३ । १६०, ५; २८२८  
 शुभस्पती [इन्द्रावरुणौ] ८, ५९, ३; ३२०४ । ५, ३२०६  
 शुभः २, ११, ४; ११०४  
 शुभमः १, १००, २; ९५८  
 शुभम ज्येष्ठं ते १०, १८०, १, २८३९  
 शुभिमन्-ष्मी १, १७३, १२, १०६७ । ४, २२, १, ४, १५५५,  
 ५८ । ५, ४०, ४; १७६८ । ६, २५, १; १९३८ । ७, ३०, १;  
 २२१८ । ८, १३, ३; ३२३ । ९८, १२; २३७५ । १०, ४३, ३;  
 २५५९ । [इन्द्रवायु] ४ ४७, ३; ३२२८  
 शुभिमन्तमः शुभिमि. १, १३३, ६, १०३९  
 शूरः १, ११, ६; ७५ । २९, ४; ६९५ । ३२, १२, ७२६ ।  
 ६३, ४, ८८८ । ८१ ८, ९२३ । १०३, ६; ८४४ । १२९,  
 ३, ५; १००२, ४ । १३१, ७; १०२७ । १३२, ५, ६; १०३२,  
 ३३ । १३३, ६, ६ १०३९, ३९ । १७३, ५; १०६० । १७६,

७, १०६२ । १७४, ९; १०७७ । १७५, ३, १०८१ । १७८,  
 ३; १०९८ । २, ११, २, ३, ५, ११, १७, १८; ११०२, ३, ५,  
 ११, १७, १८ । १७, २; ११८२ । १८, ७, ११९६ । १९, ८;  
 १२०६ । ३० १०; १२३४ । ३, ३०, ११, १२४८ ।  
 ४७, २; १४१५ । ५१, ७, १२, १४५, ५२ । ४, १६, २, ७;  
 १४६८, ७३ । २१, १, ११५५४ । २२, ५; १५५९ ।  
 ३२, २१; १६६५ । ५, ३५, २; १७३७ । ३६, २; १७४५ ।  
 ३८, ५; १७५९ । ६, १९, ६, १३; १८७६, ८३ । २०, १२;  
 १८९५ । २४, ३, १९३० । २६, ५; १९५१ । ३३, ३, ४;  
 २०१८-१९ । ३५, ५, २०३० । ४४, १७. २०५२ ।  
 ४७, ६, ११; २१०४, ९ । ७, १८, ११, २१२९ । १९, १०,  
 ११, २१४९, ५० । २०, ३; २१५३ । २१, ३; २१६३ ।  
 २२, ७; २१७७ । २३, ५; २१८४ । २५ ४, ५; २१९५,  
 ९६ । २७, १; २२०३ । ३०, १४; २२१८, २१ । ३२,  
 ११, २२, २७, २२४५, ५६, ६१ । ८, १, १४, १०० । २, ९,  
 २५ ३६, १२४, ४०, ५१ । २१, ८; ४१६ । २४, २, ८;  
 ७९१, ९७ । ३२, ५; १८४ । ३४, १४, ४३८ । ४५, ३, ३४,  
 ४४५, ७६ । ४६, २१. १८२७ । ४७, ३, ४८७ । ५०, ९;  
 ५०३ । ६१, ५, १८, ५५२, ६५ । ६२, ११, ५७६ । ६३,  
 ११; ५८८ । ६६, ५, ६१७ । ७०, ९, २३२९ । ७८, १, ४;  
 ६५१, ५४; ८१, ३, ६७२ । ९२, २८, २४२४ । ९८ ८;  
 २३७१ । ९७, १५ ९९० । १०, २२, ९, १०, ११, १२, १५;  
 २४७४, ७५, ७६, ७७ ८० । ४२, २, ४, २५४७, ४९ । ५०, २;  
 २६०२ । ५५, ८; २६२१ । ७३, ४; २६२६ । १०५, ४, ६;  
 २७१७, १२ । ११२, १, २७३५ । १३१, १, २७७३ ।  
 १४८ २, ४, ५, २८१० १२, १३ । ४७ १; २८४२ । अथर्व०  
 ७ ३१ १; २९०५ । २, ५, १; २८६३ । साम० १२६,  
 २९७६ । २०९. २७७ । ९५२; २९२७ । ऋ० ४, ४१,  
 ७; ३१५२  
 शूरः [वरुणः] ७ ८४ ४, ३१९५ । [विष्णुः] १, १५५, १; ३३०३  
 शूरसाता [इन्द्राग्नी] ७, ९३, ५; ३०७५  
 शूश्रुवम्-वांसम् (द्वि०) ६, १९, २; १८७२ । ७, २३, २; ३०७२  
 शूश्रुवानः ७, २० २; २१५२ । १०, ४७, ४, २८४५  
 शृंगवृषः नपात् ८, १७ १३; ४०६  
 शृणु (स्तुतिम्) ३, ३०, २२; १२५९ । ३१, २२; १२८१ ।  
 १०, १०४ ११; २७१३  
 शथनः २, २१ ४; १२२०  
 शमश्रु ऊर्ध्वथा दोषुवत् १०, २३, ९, २४८१  
 श्रद्धधानः ओजः १, १०३, ३; ८४१  
 श्रवयन् २, १३, १२; ११४८

श्रवस्काम ८, २, ३८, १५३  
 श्रवस्यन् १, १७७, १, १०९१  
 श्रवस्युः १, ५६, ६, ८०२ । अथ० ६, ९८ २, २९०३  
 श्रवाख्या (उयौ) वाजेषु [इन्द्राग्नी] ५, ८६, २, ३०४१  
 श्रवोजित् पृतनासु ८, ३२, १४; १९३  
 श्रावयस्सखा ८, ४६, १२; १८२८  
 श्रितः इमश्रुषु ८, ३३, ६; २१५  
 श्रियः वसानः ३, ३८, ४, १३४८  
 श्रिय विद्याः यस्मिन् अधि ८, ९२, २०; २४१६  
 श्रुतः १, ५४, २; ७८३ । ५६ ८; ८०४ । २, २०, ६, १२१३ ।  
 ३, ४६, १, १४०९ । ४, ३०, २, १६१० । ८, २, १३; १२८ ।  
 १३, १०, ३३० । ५०, १, ४९५ । ६२, ९, ५७४ । ९६, १;  
 २३५५ । १०, २२, १२, २४६६-६७ । ३८, ४, २५४४ ।  
 साम० ४४५, २९८८  
 श्रुतऋषिः १०, ४७, ३; २८४४  
 श्रुतः गीर्भिः ८, २, २७, १४२  
 श्रुतः पुरुत्रा ४, ३२, २१; १६६५  
 श्रुतः शवसा ८, २४, २, १७९१  
 श्रुता [त] मवः ८, ९३, १, २४३०  
 श्रुत्कर्णः ७, ३२, ५, २२३९ । ८, ४५, १७, ४५९  
 श्रुत्यः ८, ४६, १४, १८३०  
 श्रुत्यं नाम बिभ्रत् ५, ३०, ४; १६८६  
 श्रेष्ठा [इन्द्रावरुणौ] ६, ६८, २; ३१६२  
 श्रोता ६, २३, ४; १९२१ । १४, २; १९२९  
 श्लोकी ८, ९३, ८; २४३७  
 श्वेनौ [इन्द्राग्नी] ८, ४०, ८, ३१०८  
 षाट् १, ६३, ३; ८८७  
 षोडशी-बिन् वा०य० २६, १०; २९६६  
 स्मराराणः ८, ३२, ८, १८७  
 संवनन ८, १, २, ८८  
 संविद्यानः भोजसा शवोभिः १, १३०, ४, १०१४  
 संसदः सप्त यस्मिन् रणन्ति ८, ९२, २०, २४१६  
 संसृष्टजित् १०, १०३, ३; २६९४  
 संस्कृतः रणाय ८, ३३, ९; २१८  
 संस्त्रया १०, १०३, ३; २६९४  
 सक्तुः १०, १४८, ४; २८१२  
 सक्षणिः ८, ७०, ८, २३२८  
 सक्षणिः अभिमातीः ८, २४, २६, १८१५  
 सखा १, ३०, १०, ११, १२; ७०८-९-१० । ५४, २; ७७६ ।

१२९, ४; १००३ । २, २०, ३; १२१० । ३, ३१, ८, १२६७ ।  
 ३९, ५; १३५९ । ४३, ४; १३९४ । ५१, ६; १४३९ ।  
 ४, १७, १८, १५०५ । ४, ३१, १, १६३० । ६, ३३, ४, २०१९ ।  
 ४५, १, ७, १७, १९, २०६० ६६, ७६, ७८ । ७, १९, १०  
 २१४९ । ८, २, २७, ४०; १४२, १५५ । १३, ३; ३२३ ।  
 ६१, ११, ५५८ । ९३, ३, २०३२ । १००, १२; ९९९ ।  
 १०, ४२, २, ११; २५४७, ५६ । ४३, ११; २५६७ । ४४, ११;  
 २५७८ । ११२, १०; २७४४ । ६, ६०, १४; ३०६९  
 सखाय. [मरुतः] १, १६५, ११, १३, ३२६०, ३२६२  
 सखा मे ८, १००, २, ९९२  
 सखा अवृक ४, १६, १८; १४८४  
 सखा घृ. १०, २७, ६, २४९६  
 सखा मुनीनाम् ८, १७, १४; ४०७  
 सखा सखिभि १, ८४, ४; ९६०  
 सखा सुतानाम् साम० २२६ २९७९  
 सखा सुन्वतः १, ४, १०; १३ । ८, ३२, १३; १९२  
 सखा सोम्यानाम् ४, १७, १७, १५०४  
 सखीयन् अगिरोभिः ३, ३१ ७; १२६६  
 सखीयताम् अविता ४, १७, १८; १५०५  
 संक्रन्दन १०, १०३, १, २, २६९२-९३  
 संगमनः वसूनाम् [अग्निः] वा० य० १२, ६६, २९२९  
 सचेता १, ६१, १०, ८६५  
 साजित्त्वाना (नौ) [इन्द्राग्नी] ३, १२, ४, ३०३३  
 संचकानः ५, ३०, ७; १६८८  
 सञ्जग्मानः [मरुद्गणः] १, ६, ७; ३२४६  
 सत् (सन्) ८, ४५, १७ ४५९  
 सत् सत. अतिमानम् ३, ३१, ८; १२६७  
 सतीनमन्युः १०, ११२ ८, २७४२  
 सतीनसत्त्वा १, १००, १, ९५७  
 सत्पतिः १, ११, १, ७० । ५४, ६, ७८० । १००, ६, ९६२ ।  
 १७४, १; १०६९ । ३, ३४, ७; १३०७ । ४०, ४; १३६७ ।  
 ५, ३२, ११; १७१५ । ६, २६, २, १९४९ । ४६, १, ३;  
 २०९०, ९२ । ८, २, ३८, १५३ । १२, ८, १८, २९५, ३०५ ।  
 १३, १२, ३३२ । २१, १०, ४१८ । ३६, १-६, १७६९-७४ ।  
 ५३, ६; ५३० । ६१, १७; ५६४ । ६८, १, २२९१ । ६९ ४;  
 २३०७ । ९३, ५; २४३४ । १०, ८, ९, २३६५ । ४३, ९;  
 २५६५ । ५०, २, २६०२ । वा०य०३३, २७; २९६८ । ऋ०  
 ६, ६०, ६; ३०६१ । १, १६५, ३, ३२५२  
 सत्यः १, २९, १; ६९२ । ६३, ३; ८८७ । १७४, १, १०६९ ।  
 २, १२, १५; ११३६ । १५, १; ११६२ । २२, १-३, १२२३-२५ ।

४,२१,१०; १५५३ । ६, २२, १; १९०७ । ४५,१०;  
 २०६९ । ८२,३६; १५१ । १६,८, ३८९ । ९०,२,४  
 २३९२,९४ । ९२,१८; २४१४ । ९८,५; २३६८ । १०,४७,  
 ४, २८४५ । ८,४०,१०; ३११०  
 सत्यताता १०,१११,४; २७२८  
 सत्यधर्मा [अग्नि] वा० य० १२,६६, २९२९  
 सत्यमद्वा ८,२,३७, १५२  
 सत्ययोनिः ४,१९,२; १५२३  
 सत्यराधस्व धा. १,१०१,८, ८२४ । ४,२४,२. १५७८ ।  
 २९,१. १६०४ । ७,३१,२; २२२४ । १०,२९,७; २५२१ ।  
 ४९,११, २६००  
 सत्यश्रुतमः १,५१,१५; ७५९ । ५८,१, ८११ । १०३,६;  
 ८४२ । ३,३०,२१; १२५८ । १०,४४,३. २५७० । ११२,  
 १०; २७४४  
 सत्यसत्त्वन् ६,३१५, २०१०  
 सत्यस्य सूनुः ८,६९,४; २३०७  
 सत्राकरः १,१७८,४, १०९९  
 सत्राजित् २,२१,१; १२१७ । ८,९८,४, २३६७ । साम०  
 २३१; २९८०  
 सत्रादावन्-वा १,७,६, ३३  
 सत्रासाह-षाट् २,२१,२-३; १२१८-१९ । ३,३४,८; १३०८ ।  
 ५१,३; १४३६ । ७,२०,३, २१५३ । ८,९२,७, २४०३  
 सत्राहन्-हा । ४,१७,८; १४९५ । ६,४६,३; २०९६  
 सत्वन्-त्वा १,१७३,५; १०६० । ६,१८,२; १८५७ ।  
 २२,१; १९०७ । २९,६; १९६७ । ३७,५; १९७७ । ४५,  
 २२; २०८१ । ७,२०,५, २१५५ । ८,१६,८; ३८९ ।  
 ४५,२१; ४६३ । ८,४०,१०-११; ३११०-३१११  
 सत्वनां केतुः ८,९६,४, २३४८  
 सदस्पती [इन्द्राग्नी] १,२१,५, ३००६  
 सदावृषः ४,३१,१; १६३० । ५,३६,३, १७४६ । ८,१३,  
 १८; ३३८ । ६८,५, २२९५ । ७०,३; २३२३  
 सदिवः २,१९,६; १२०४  
 सद्यो जज्ञानः हव्यः ८,९६,२१; २३६३  
 सद्यो जातः ८,७७,८; ६४७  
 सद्यो ह जातः ३,४८,१; १४१९  
 सधमाद्यः ८,३,१; १५६ । ५४,५; ५३५ । ९७,७; ९८२  
 सधवीर. ६,२६,७, १९५३  
 सधस्तुती [इन्द्राग्नी] ८ ३८,४; ३०२४  
 सनजाः १०,१११,३; २७२७  
 सनहाजः १०,४७,४; २८४५

सनश्रुतः ३,५२,४,१४४९ । ८,९२,२,२३९८ । १०,२३,३;  
 २४८३  
 सनात् २,१६,१; ११७२ । ८,२,३१,१४६ । २१,१३; ४२१  
 सनात् अमृक्तः ८,२,३१, १४६  
 सनात् पुरूवसु ७,३२,२४, २२५८  
 सनिमित्तस्य ८,१२,१२; २९९  
 सनितृ-ता १,३०,१६, ७१४ । १००,९,१०, ९६५-६६ ।  
 ८,२,३६, १५२ । ४६,२०; १८३६ । ६१,१२; ५५९  
 सनिता वाजम् ४,१७,८; १४९५  
 सनीळाः [मरुतः] १,१६५,१, ३२५०  
 सन्धाता सन्धिम् ८,१,१२; ९८  
 सपर्यन् १०,१०५,४; -७१७  
 ससरश्मिः २,१२,१२; १६३३  
 ससहा १०,४९,८, २५९७  
 सप्रथः ७,३१,६, २२२८  
 सबर्हुषः [धेनु रूपः इन्द्र] ८,१,१०; ९६  
 सबलः ८,९३,९; २४३८  
 समः ६,२७,३, १९५७  
 समत्-न् ७,२०,३; २१५३  
 समत्सु हव्य विश्वास्तु ८,९०,१, ३९१  
 समहनस्य कर्ता १,१०० ६; ९६२  
 समराणः वा० य० ३३,२७,२९६८ । ऋ० १,१६५,३; ३२५२  
 समर्थ ५,३३,१; १७१७  
 समह (संबो०) ८,७०,१४; २३३४  
 समानः १,१३१,२; १०३२ । ४,३०,२२; १६२७ । ८,९९,८;  
 २३८३ । ८,४५,२८; ४७०  
 समानवर्चसा [इन्द्रामरुतः] १,६,७, ३२४६  
 समिथेषु प्रहावान् ४,२०,८; १५४०  
 समुद्रव्यचस्-चाः १,११,१; ७०  
 समुद्रिय १,५६,२; ७९८  
 सम्भरः वस्वः ४,१७,११; १४९८  
 सम्भृतऋतुः १,५२,८; ७६७  
 सम्भुताश्च ८,३४,१२; ४३६  
 संमिश्र ८,६१,१८; ५६५  
 सम्राट् ४,१९,२, १५२३ । ८,४६,२०; १८३६ । १०,११६ ७;  
 २७६१ । वा० य० ८,३७, ३२०९ [इन्द्रावरुणौ] १,१७,१;  
 ३१३४ । [वरुणः] ६ ६८,९, ३१६९ । ७,८२,२; ३१७३  
 सम्राट् वर्षणीनाम् ८,१६,१; ३८२  
 सम्राट् महः दिवः पृथिव्याश्च १,१००,१, ९५७ । १०,  
 १३४,१; २७८५

सम्नात् वस्त्रः ४,२१,१०; १५५३  
 सरणयन् ३,३१,१८; १२७७  
 सरस्वतीवन्तौ [हम्बाम्नी] ८,३८,१०; ३१००  
 सर्वसेनः ५,३०,३; १८८४। [हम्बावरुणौ] ६,६८,२; ३१६२  
 सवनं जुषाण. ३,३२,५; १२८६  
 सवयसः (मरुतः) १,१६५,१; ३२५०  
 सविता २,३०,१; १२२७। ३,३३,६; १२९९। ३८,८; १३५२  
 सभ्यत् (ते-चतुर्थी) २,१६,४; ११७५  
 ससवान् ६,४४,७; १०४२  
 ससवान् देवीः अपः स्वः च ३,३४,८; १३०८  
 ससहान् पश्य 'सासहान्' ।  
 सस्त्रि १०,३८,४; २५४४ । [हम्बाम्नी] ८,३८,१; ३०९१  
 सस्त्रिः १०,९९,४; २६८३  
 सस्थायाना त्वं एक इत् यवयसि ८,३७,४; १७७९  
 सहः १,५७,२; ८०६  
 सहः दधिषे भोजिष्ठम् ८,४,१०. २३८  
 सहः दधिषे ज्येष्ठम् ८,४,४; २३२  
 सहः महः तन्वी भरति २,१६,२; ११७३  
 सहमान. २,२१,२; १२१८। ६,१८,१; १८५६ । १०,  
 १०३,५; २६९५  
 सहमानः वृण्येभिः अन्यान् ३,४६,२; १४१०  
 सहसान ४,१७,३; १४२०  
 सहस सूनुः ६,१८,११; १८९६ । २०,१; १८८४ । १०,  
 ५०,६; २६०६  
 सहसावन् ७,१९,७; २१४६  
 सहस्कृतः ८,९९,८; २३८३  
 सहस्कृतः सहस्र ऋषिभि ८,३,४; १५९  
 सहस्रचेताः १,१००,१२; ९६३  
 सहस्रणीयः ३,६०,७; ३३४३  
 सहस्रदासां क्रतुः १,१७,५; ३१३८  
 सहस्रमुक्कः ६,४६,३; २०९२  
 सहस्रमूर्तिः १,५२,२; ७६१  
 सहस्रवाजः १०,१०४,७; २७०९  
 सहस्राक्षा [हम्बवायु] १,२३,३; ३२१४  
 सहस्रिन्-स्त्री १०,४७,५; २८४६  
 सहस्रोतिः ८,३४,७; ४३१  
 सहस्रमा (मौ) [हम्बाम्नी] ६,६०,१; ३०५६  
 सहावान् १,१७५,२,३; १०८०-८१ । ३,४२,३; १४२६ ।  
 ६,१८,२; १८५७  
 सहिष्ठः ६,१८,४; १८५९  
 द्वै० [हम्बः] ४२

सहीयस्-यान् १,६१,७; ८६२  
 सहुरिः २,२१,३; १२१२। ४,२२,९; १५६३। ६,६०,१; ३०५६  
 सहोजाः १०,१०३,५; २६९५  
 सहोदाः १,१७४,१.१०; १०६९.७८ । ३,३४,८; १३०८ ।  
 ४७,५; १४१८ । ६,१७,१३; १८५३ । १९,११, १८८१ ।  
 १,१७१,५; ३२६७  
 सत्यु ६,१८,१२; १८६७  
 साक जातः भोजसा २,२२,३; १२२५  
 साक जातः क्रतुना २,२२,३; १२२५  
 साकं वृधा (धौ) [हम्बाम्नी] ७ ९३,२; ३०७२  
 साकं वृद्ध. वीर्यैः २,२२,३. १२२५  
 साधारणः शश्वताम् ४,३२.१३; १६५७ । ८,६५,७; ६०७  
 साधुकर्मा वा० य० १७,२३; २९३१  
 साधु कृषवन् ८,३२.१०. १८२  
 सानसिः १,१७५ २, १०८०। २,१,२,४१०। ७,९३,२,३०७२  
 सासहानः १,१३१,४; १०२४  
 सासहिः १०,१३३,४. २७८१ । १,१७१,६; ३२६८  
 सासहिः पृतनासु १,१०२,९; ८३६ । ८,६१,१२; ५५९ ।  
 ७०,४; २३२४  
 सासहिः पृसु ८,६१,३; ५५०  
 सासहिः पौस्येभिः १,१००,३; २५९ । ३०२,१, ८२८ ।  
 ८,१२,९. २९६  
 सासहिः मृधः २,२२,३; १२२५  
 सासहिः वाजेषु ३,३७,६; १३३९  
 सासहान् ८,४६,१६; १८३२  
 सासहान् वृषाद्ये भिमित्रान् १,१००,५; ९६१  
 सासहान् युधा भिमित्रान् ८,१६,१०. ३९१  
 साहान् २,१२,६; १२१३  
 सिम १,१०२,६; ८३३  
 सिषासन् १,१३०,३; १०१३ । ५,३१,१, १६९३  
 सुकर्माणां [अभिनी] वा० य० २०,७५, २२५९  
 सुकृत् ३,३१,७; १२६६  
 सुकृतः ६,१९,१; १८७१  
 सुकृत १,५,६; १९ । ५१,१३; ७५७ । ५६६, ८०२ ।  
 ३,४९,१; १४२४ । ६,३०,२,३; १९६९-७० । ८,१,१८;  
 १०४ । ३३,५,१३; २१४,२२२  
 सुकृत ८,५४ ६, ५३६ । ९६,१९, २३६१ । १०,४९,९,  
 २५९८ । १४४,६; २८०३  
 सुक्षत्रः ५,३२,५; १७०९ । ३८,१; १७५५  
 सुस्तरथः ५,३०,१; १६८२

सुगम्यः १, १७३, ४, १०५९  
 सुजातः १०, ९९, ७, २६८६  
 सुतक्रि (क-मबो०) ६, ३१, ४, २००९  
 सुतपाः ४, २५, ७, १५९४ । ६, २३, ६; १९२३ । २४, १;  
 १९२८ । ८, २, ४, ११९ । [इन्द्रावरुणौ] ६, ६८, १०, ३१७०  
 सुतपागान् ६, २४, ९, १९३६ । ८, २, ७, १२२  
 सुतसोमम् इच्छन् ५, ३०, १; १६८२ । ७, ९८ १, २२७९  
 सुतानाम् क्षीणधे ८ ६४, ३, ५९१  
 सुतेरणः १०, १०४, ७, २७०९  
 सुत्रामा ६, ४७, १२, १३, २११०-११ । १०, १३१, ६, ७,  
 २७७६-७७ । ग० य० १९, ८५, २९४३ । २०, ७१, ७२  
 ९०; २९५५, २९५६, २९६३  
 सुदसा १, ६२, ७, ९, ८७८, ८० । ३, ३२, ८; १२८९  
 सुदक्षः १, १०१, ९, ८२५ । १०, ४७, ४; २८४५  
 सुदक्षिणः ७ ३२, ३, २२३७ । ८, ३३, ५; २१४  
 सुदाः ८, ७८, ४, ६५४  
 सुदानुः ६, ३८, १, १९७८ । ७ ३१, २, २२२४ । ८, ८८, २,  
 ८९५ । [इन्द्रावरुणौ] ४, ४१, ८, ३१५३ । [मरुद्गणाः] १, २३, २,  
 ३२४९  
 सुदामन्-मा ६, २०, ७; १८९०  
 सुदुधा [धेनुरूपा इन्द्र] ८, १, १०, ९६ । [सरस्वती] वा० य०  
 २०, ७५, २९५२  
 सुदृक ४, २३, ६, १५७१  
 सुनीतिः ६, ४७, ५; २१०५  
 सुनीधः १०, ४७, ३; २८४३  
 सुन्वतः वृधः ५, ३४, ६, १७३२  
 सुन्वतः सखा ८, ३२, १३; १९२  
 सुपाणिः ३, ३३, ६, १२९९  
 सुपारः १, ४, १०, १३ । ३, ५०, ३; १४३१ । ६, ४७, ७,  
 २१०५ । १, १०९, ४, ३०२४ । ८, १३ २, ३२२ । ३२, १३, १९२  
 सुपेनासौ [अश्विनौ] वा० य० २०, ७४, २९५८  
 सुपाव्य २ १३, ९, ११४५  
 सुप्रकेताः [मरुतः] १, १७१, ६, ३२६८  
 सुवाहुः ८, १७, ८, ४०१  
 सुमह्या १०, ४७, ३, २८४४  
 सुमखः १, १६५, १०, ३२६०  
 सुमतिं चकानः १०, १४८, ३, २८११  
 सुमतिः भद्रा अस्य ३, ३०, ७, १२४४  
 सुमनाः ३, ३५, ६, ८, १२१७ १२ । ४, २०, ४; १५३६  
 सुमन्नुनामा ६, १८, ८; १८६३

सुमृलीकः १, १३९, ६; १०४१ । ६ ४७, १२; २११० ।  
 १०, १३१, ६, २७७६  
 सुयज्ञः २, २१, ४; १२२०  
 सुराधाः ४, १७, ८; १४९५ । ८ १४, १२; ३६५ । ४९, १;  
 ४८५ । ५०, १, ४९५  
 सुरूपकृन्तुः १, ४, १, ४  
 सु आः १, १०० १८, ९७४ । ४, १७, ८; १४९५ । ६, १७,  
 १३; १८५३ । ७, ९३, ४; ३०७४ । ७, ३०, १; २२१८  
 सुवह्ना ६, २२, ७; १९१३  
 सुविद्वान् ८, २४, २३, १८१२  
 सुवीरः ६, १७ १३; १८५३ । ४५ ६; २०६५  
 सुवृक्तिः १०, ७४, ५; २६३८ । १४०, ७; २७०९  
 सुवेदाः ७, ३३, २५, २२५९  
 सुशस्त्रिः १० १०४, १०, २७१२  
 सुशिमः १, ९, ३, ५० । १०१, १०; ८२६ । २, १२, ६;  
 ११२७ । ३, ३०, ३, १२४० । ३२, ३, १२८४ । ५०, २;  
 १४३० । ५, ३६, ५, १७४८ । ६ ४६, ५; २०९४ । ७ २४,  
 ४; २३८९ । ८, २१, ८; ४१६ । ३२, ४, १८३ । ६६, २, ४,  
 ४, ६१४, १६, १६ । ६९, १६; २३१८ । १३, ३२; २४४१ ।  
 ९९ २, २३७७  
 सुशंवः [ब्रह्मणस्पतिः] ७, ९७, ३; ३३६०  
 सुश्रवस्तमः १, १३१, ७; १०२७ । ३, ४५, ५; १४०८ । ८,  
 १३, २; ३२२ । ४५ ८, ४५०  
 सुश्रवस्यः १ १७८, ४; १०९९  
 सुश्रुत ३, ३६ १; १३२३  
 सुषण्यः ८, ३३, ५; २१४  
 सुषाः ८ ७८, ४, ६५४  
 सुषुम्नः १०, १०४, ५, २७०७  
 सुष्टु १०, १०४, ५; २७०७  
 सुष्टुतः १, १२९, ११; १०१० । १७७, ५; १०९५ । ४, २४,  
 २; १५७८ । ८, ६, १२; २५४  
 सुष्टुतिः ८, ९६, १२, २३५६  
 सुष्टुभः ब्रह्मणात् अथर्व० २०, २ ३; २९१७  
 सुमहशः १, ८२, ३; ९२७ । [इन्द्रवायु] वा० य० ३३, ८६;  
 ३२४३  
 सुमनिता ८, ४६, २०; १८३६  
 सुहवः ३ ४९, ३; १४२६ । ४ १६, १६; १४८२ । ६, २१, ८;  
 १९०४ । २९, ६; १९६७ । ४७, ११; २१०९ । [इन्द्राग्नी]  
 ७, ९३, १, ३०७१ । [इन्द्रावरुणौ] ७, ८२, ४; ३१७५ । [इन्द्रवायु]  
 वा० य० ३३, ८६; ३२४३ । अथर्व० ३, २०, ६; ३२४४

सुहार्दः ८, २, ५; १२०  
 सुतुः १, १०३, ४; ८४२  
 सुतुः सत्यस्य ८, ६९, ४; २३०७  
 सुतुतः ८, ४६ २०, १८३६  
 सुतुतानां गिरां पतिः ३, ३१, १८; १२७७  
 सूरः ८ ६, २५; २६७  
 सूरिः ६ २३, १०, १९२८ । ३७, ५; १९७७ । ८, ७०, १३; २३३३  
 सूर्यः ४, ३१, १५; १६४४ । ८, ९३, १, ४, २४३०, ३३ । १०, ८९, २; २६६४  
 सूर्यस्य जनिता ३, ४९ ४, १४२७ ।  
 सृजानः अध्वनः १० २२, ४; २३६९  
 सृष्टकरस्नः ८ ३२ १०, १८९  
 सेनानी ७, २०, ५; २१५५  
 सेन्यः १, ८१, २; ९१७  
 सेन्यः विश्वेषु जनेषु ७, ३०, २; २२१९  
 सेहानः अभिद्रुङ्कः घृतना ८, ३७, २; १७७७  
 सेहानः उरुज्जयः ८, ३६ १-६, १७६९-१७७४  
 सेहानः विश्वा घृतना ८ ३६, १-६, १७६९-१७७४  
 सोमः ८, ७८, ८, ६५८  
 सोमकाम १, १०४, ९; ८५५  
 सोमपतिः ३, ३२, १; १२८२ । ५, ४०, १; १७६५ । ८, २१, ३; ४११  
 सोमपाः १, १०, ३; ६० । २९, १; ६९२ । ३०, ११-१२; ७०९ १० । २, १२, १३; ११३४ । ३, ३९, ७; १३६१ । ४१, ५; १३७७ । ४, ३२, १४; १६५८ । ६, ४५, १०, २०६९ । ८, २, ४; ११९ । १४, १५, ३६८ । १७, ३; ३९६ । ३२, ७; १८६ । ३३, १५, २२४ । ६६, ६, ६१८ । ९, ८, १८; २४०४ १४ । ९७, ६. ९८१ । ९८, ५; २३६८ । १०, १०३, ३; २६९४ । १५२, २; २८१५ । [इन्द्रावृङ्कस्वती] ४, ४९, ३; ३३१९ ।  
 सोमपातमः ६, ४२, २, १९९९ । ८ ६, ४०; २८२ । १२, १, २०; २८८, ३०७  
 सोमम् जडरे भरति २, १६, २, ११७३  
 सोमपावन्-वा १, ५६, ७, ८०३ । ५, ४०, ४; १७६८ । ७, ३१, १; २२२३ । ३२ ८; २२४२ । ८, ७८, ७, ६५७  
 सोमम् उशान् ४, २४, ६; १५८२  
 सोमवृङ्कः ३, ३९, ७; १३६१ । ६, १९, ५; १८७५  
 सोमस्य पीत्वी १०, ११३, १; २७४५  
 सोमानां पाता ८, ९३, ३३; २४६२

सोमिन् ८, ६२, १; ५६६  
 सोम्यः ४, २५ २; १५८८, ९३, ८; २४३७, ९५, ८; २३४३  
 स्तवमानः ७, १९, ११. २१५० । ८, २४, ४. १७९३  
 स्तवान् २, १९, ५; १२०३ । २०, ५; १२१२, २४, ८, १९३५  
 स्तवान् ३ ४०, ३; १३६६, ६, ४६, २; २०९१, ८, २४, ३; १७९०  
 स्तुतः ८ १४, ४; ३५७ । १० ५०, २; २६०२  
 स्तुष्वय १०, १२० ६, २७६२  
 स्तोतृणाम् आवता १०, २४, ३; २४९०  
 स्तोत्र हयन् १०, १०५, १; २७१४  
 स्तोमवर्धनः ८, १४, ११. ३६४  
 स्तोमवाहाः ६, २३, ४; १९२१  
 स्तोमं जुजुषाणः ८, ६६, ८. ६२०  
 स्तोम्यः ८, १६, ८; ३८९ । २४, १९. १८०८  
 स्थिरः ३ ४६, १, १४०९ । ४ १८, १०; १५१८ । ६, ६८, १२; १८६७ । ३२, १; २०११ । ४७, ८, २१०६ । १०, १०३, ५, २६९५ । १. १७१, ५; ३२६७  
 स्थाना ६, ४१, ३; १९९५  
 स्थाना रथस्य ३, ४५, २ १४०५  
 स्थाना हरीणाम् ८, २४, १७, १८०६ । ३३, १२; २२१ । ४६, १, १८१७  
 स्थिरः २ ४१, १०; १२३५ । ३, ३०, २; १२३९ । ८, ३३, ९; २१८ । ९२, २८, २४२४  
 स्थिरः कर्मणि कर्मणि १, १०१, ४, ८२०  
 स्थिरः घृतनासु ८ ३२, १४; १९३  
 स्थिरास्तु साम० ३२७, २९८३  
 स्पद् ८, ६१, १५, ५६२  
 स्पर्धमाने मिथती [इन्द्राणी] ७, ९, ३, ५. ३०७५  
 स्पर्हः ८, २४, ८; १७२७  
 स्पर्हाराधाः ४, १६, १६, १४८२  
 स्पृधानः ३, ३१ ४, १२६३  
 स्पृधरन्धि ८ ३४, ६, ४३०  
 स्पृष्टिः ३, ४५, ५; १४०८  
 स्यन्ता १०, २२, ४, २४६९  
 स्वतव ६, २२, ६, १९१२  
 स्वदावन् ८ ५०, ५; ४९९  
 स्वधापतिः ६, ४४, १, २, ३; २०३६-३७-३८  
 स्वधावान् १, ६३, ६; ८९० । १७३, ६; १०६१ । २, १२, ६; १२१३ । ३, ३५, ३; १३१४ । ४७, ८; १३८० । ४, २०, ४; १५३६ । ५, ३२, १०; १७१४ । ६, १७, ४, १८४४ ।

२१,३; १८९९ । ७,२०,१; २१५१ । ८,४९,५; ४८९ ।  
 १०,४२,९; २५५४  
 स्वपति १०,४४,१; २५६८  
 स्वपस्यमानः १,६२,९; ८८०  
 स्वभिष्टि १,५१,२, ७४६  
 स्वभिष्टिसुन्नः ६,२०,८, १८९१  
 स्वभूयोजाः १,५२,१२; ७७१  
 स्वय गानुः ४,१८,१०; १५१८  
 स्वयशस्तरः ३,४५,५, १४०८  
 स्वयुः ३,४५,५, १४०८  
 स्वराट् १,५१,१५, ७५९ । ६१,९, ८६४ । ३,४५,५, १४०८ ।  
 ४६,१; १४०९ । ४९,२, १४२५ । ८,१२,४, ३०१ ।  
 ६१,२; ५४९ । ६९,१७; २३१९ । ८१,४, ६७३ । ७,  
 ८२,२; ३१७३  
 स्वरिः १,६१,२; ८६४  
 स्वरोचिः ३,३८,४, १३४८  
 स्वजित् २ २१,१; १२१७ । १०,१६७,२; २८३०  
 स्वर्हक् ७ ३२,२२, २२५६  
 स्वर्पतिः ८,९,७,११; ९८६  
 स्वर्वाङ् ६,२२,३, १९०२ । ८,९,७,१; ९८६  
 स्वर्विद् १,५२,१, ७६० । ३,५१,२; १४३५ । अथर्व० ४,  
 २४,३,४, २८६९-२८७०  
 स्वर्षा १,६१,३; ८५८ । १००,१३; ९६९  
 स्वर् जितं येन मरुत्वता ८,७६,४; ६३१  
 स्ववसः १०,४७,२; २८४३  
 स्ववान् ६,४७,१२,१३, २११०-११ । १०,१३१,६,७;  
 १२७६-७७  
 स्ववृज् १० ३८,५, २५४५  
 स्वश्वः ४,२९,२; १६०५ । ५,३३,३; १७१९  
 स्वश्वयु ८,४५,७; ४४९  
 स्वस्तिदाः १०,११६,२; २७५६ । १५२,२; २८१५  
 स्वापिः ८ ५३,५, ५२९  
 स्वायुधः ६,१७,१३, १८५३ । १०,४७,२; २८४३  
 स्वावसुः [अग्निः] अथ० ७,५०,३; २९०८  
 स्वोजाः ६,२२,६,१२-१२,७,२०,३, २१५३ । १०,२९,८; २५२२  
 ह्यन्ता दस्योः ८,९८,६; २३६९  
 ह्यन्ता पापस्य रक्षसः १,१२९,११; १०१०  
 ह्यन्ता वृत्रम् ४,१७,८, १४९५ । २१,१०; १५५३ । ६,  
 ४४,१५,२०५० । ७,२०,२, २१५२ । ८,२,३, ३६, १४७, १५१  
 हरि ३,४४,३; १४०१

हरित ३ ४४,४ १४०२  
 हरिवान्-वः [संबो०] १,३,६; ३ । ८१४; ९१९ । १६७,  
 १, १०४२ । १७३,१३, १०६८ । १७४,६; १०७४ ।  
 १७५,१; १०७९ । ३,३०,२; १२३९ । ४७,४; १४१७ ।  
 ५१,६; १४३९ । ५२,७, १४५२ । ४,१६,२१; १४८७ ।  
 १९,२; १५३० । २२,७; १५६१ । ५,३१,२; १६९४ ।  
 ३६,२,४; १७४५,४७ । ६,१९,६; १८७६ । २२,३, १९०९ ।  
 ४१,३; १९९५ । ४४,१०, २०४५ । ७,१९,७; २१४६ ।  
 २०,४; २१५४ । २५,४; २१९५ । २९,१; २२१३ । ३२,  
 १२, २२४६ । ८,२,१३; १२८ । २१,६; ४१४ । २४,३,  
 ५; १७९२,९४ । ५३,८; ५३२ । ६१,३; ५५० । ९९,२;  
 २३७७ । १०,४९,११; २६०० । १०४,२,६, २७०४,८ ।  
 वा० य० ३३,२७; २९६८ । साम० २२६, २९७९ । ऋ० ८,  
 ४०,९; ३१०९ । अथ० ७,९७,२, ३१२१ । ऋ० १,१६५,  
 ३; ३२५२  
 हरिमियः ३,४१,८; १३८०  
 हरिष्ठाः ३,४९,२; १४२५ । ६,१७,२; १८४२  
 हरिभ्याम् ईयमान ५,३०,१, १६८२  
 हरिभिः युजानः ८,५०,७, ५०१  
 हयोः ईशानः ४,१६,११, १४७७  
 हरीणां पतिः ८,२४,१४; १८०३  
 हरीणां स्थाता ८,२४,१७; १८०६ । ३३,१२; २२१ ।  
 ४६,१ १८१७  
 हर्यत् ३,४४,२,२, १४००, १४००  
 हर्यत् १,५८,२; ८१२  
 हर्यत् स्तोत्रम् १०,१०५,१, २७१४  
 हर्यश्वः ३,३१,३; १२६२ । ३२,५; १२८६ । ३६,४,९;  
 १३२६,३१ । ४४,२,४; १४००,२ । ५२,७; १४५२ ।  
 ७,१९,४, २१४३ । २१,१, २१६१ । २२,१, २, २१७२ ७३ ।  
 २४,४, २१८२ । २५,५; २१९६ । ३१,१, १२, २२२३, ३४ ।  
 ३२,१५; २२४९ । ८,२१,१०; ४१८ । ५३,२; ५२६ ।  
 ६६,४, ६१६ । २० ३, २३९३ । १०, १०४, ३, ५; २७०५, ७  
 हवनश्रुतः ८, १२, २३, ३१० । [इन्द्राग्नी] ६, ५९, १०; ३०५५ ।  
 [इन्द्रावरुणौ] ७, ८३, ३; ३१८४  
 हवनश्रुतः वाजेषु १, १०, १०, ६७  
 हवमानः अनेहसम् ८, ५०, ४; ४९८  
 हविषमती [सरस्वती] वा० य० २०, ७४; २९५८  
 हव्यः १, ३३, २; ७३१ । १००, १; ९५७ । ८, १६, ८, ३८९ ।  
 ९६, २०-२१; २३६२-६३ । अथ० ६ ९८, ३; २९०४  
 हव्यः आरणेषु ८, ७०, ८; २३२८

हव्यः एकः इत् ६, २२, १; १९०७  
हव्यः गाधेषु ८, ७०, ८, २३२८  
हव्यः दम्भेभिः भूरिभि च १०, ३८, ४; २५४४  
हव्यः धीभिः ६, १८, ६; १८६१  
हव्यः नृभिः विश्वधा ७, २२, ७; २१७७  
हव्यः भगो न ३, ४९, ३; १४२६  
हव्यः भरेभरे ७, ३२, २४; २२५८  
हव्यः वाजेषु ८, ७०, ८, २३२८  
हव्यः वृत्रहृये ४, २४, २; १५७८  
हव्यः शूरेभिः भीरुभिः च १, १०१, ६; ८२२  
हव्यः समस्तु विश्वासु ८, ९०, १; २३९१  
हव्यवाहनः देवेभ्य १०, ११९, १३; २८६२  
हिरण्ययः १, ७, २; २९ । ८, ६६, ३; ६१५  
हिरण्ययः उत्सः ८, ६१, ६; ५५३  
हिरण्ययुः ७, ३०, ३; २२०५

हिरण्यवर्णः ५, ३८, २; १७५६  
हिरण्यवर्तनी [अश्विनी] वा० य० २०, ७४, २९५८  
हिरण्ययीनां राजा ८, ६५, १०, ६१०  
हिरिशिप्रः ६, २९, ६; १९६७  
हिरीमशाः १०, १०५, ७; २७२०  
हिरीमान् १०, १०५, ७, २७२०  
हुवानः अस्माभि साविभिः १०, ११२, ३; २७३७  
हुवानः देवान् [अभिः] ७, ३०, ३; २२२०  
ह्यते य धावद्भि जिग्युभिः च १, १०१, ६; ८२२  
ह्यमानः १, १०४, ९; ८५५ । १०, २८, ३; २५२४ । ११६, १;  
२७५५  
ह्यमानः सोतृभिः ४, २९, २; १६०५  
होता ८ ३४, ८; ४३२ । २९, ७, २३८२  
होता असुरो न ७, ३०, ३; २२२०

(१) रथे-छटाः । [इन्द्रस्य रथः ।]

अनपच्युतः ४, ३१, १४, १६४३  
अनेहाः ८ ६९, १६; २३१८  
अरुष ८, ६९, १६, २३१८  
अश्वयुः ४, ३१, १४; १६४३  
इष्टिभिः मतिभिः रथाः २, १८, १; ११९०  
उरु ८, ९८, ९, २३७२  
उरुयुगः ८, ९८, ९; २३७२  
ऋभ्वसम् (द्वि०) १, ५६, १; ८०५  
गत्रेषण ७, २३, ३, २१८२  
गन्धयुः ४, ३१, १४; १६४३  
गोविद् १, ८२, ४, ९२८  
चतुर्युगः २, १८, १; ११९०  
चिकेतति यः हारियोजन पूर्ण पात्रम् १, ८२, ४; ९२८  
चित्रतमः १ १०८, १; ३००८  
जवीयान् मनसः १०, ११२, २, २७३६  
जैत्रः १, १०२, ३; ८३०  
त्रिकटाः २, १८, १, ११९०  
द्विविष्टृक् ४, ४६, ४, ३२२३  
धुमान् ४, ३१, १४; १६४३  
धुक्षः ८, ६९, १६, २३१८

द्रोणः ६, ४४, २; २०५५  
धृष्णुया [=धृष्णुः] । ४, ३१, १४; १६४३  
नवः २, १८, १, ११९०  
नाभिः ६, ३९, ४; १९८६  
परिभवे न पर्वतैः समुद्रैः २, १७, ३; ११७४  
पृथुपाजम् ४, ४६, ५; ३२२४  
प्रवता [तृतीया] १, १७७, ३; १०९३  
बृहन् ३, ५३, ५, ६ १४५७-१४५८  
भीमः ६, ३१, ५; २०१०  
मतिभिः रथा २, १८, १; ११९०  
मनसः जवीयान् १०, ११२, २; २७३६  
मनुष्यः २, १८, १; ११९०  
युक्तः दक्षिणः उतसभ्य १, ८२, ५; ९२९  
रथाः मतिभि. इष्टिभिः २, १८, १, ११९०  
वज्री ८, ३३, ४; २१३  
वन्धुरः ६, ४७, ९; २१०७  
वरिष्ठः ६, ४७, ९; २१०७  
विश्ववार ६, ३७, १; १२७३  
वीरवाहः ७, ९०, ५; ३२३३  
वृषा १, ८२, ४; ९२८ । १७७, ३; १०९३ । २, १६, ६; ११७७



८, ३३, ११; २२०  
 वृषभः १, ५४, ३; ७८८  
 सप्तसद्विमः २, १८, १; ११९०  
 समुद्रैः न पवित्रे २, १७, ३; ११७४  
 संमिश्रः हयोः ८, ३३, ४; २१३  
 सन्निः २, १८, १; ११९०  
 सहस्रपाद ८, ६९, १६; २३१८  
 सुखः ३, ३५, ४, १३२५ । ४१, ९; १३८२  
 सुखतमः १, ६६, २; ७९  
 सुचक्र ६, ३७, ३, १९७५  
 सुष्ठा (स्था) मा १०, ४४, २; २५६९

स्थिरः ३, ३५, ४; १३१५  
 स्वध्वरः ४, ४६, ४; ३२२३  
 स्वविद् ६, ३९, ४, १९८६  
 स्वर्षाः २, १८, १; ११९०  
 स्वस्तिगा ८, ६९, १६; २३१८  
 हरितः ३, ४४, १; १३९९  
 हरियोगः १, ५६, १; ८०५  
 हयोः (संमिश्र) ८, ३३, ४; २१३  
 हिरण्ययः १, ५६, १; ८०५ । ६, २९, २; १९६३ । ८, १, २४, २५;  
 ११०, १११ । ८, ३३, ४; २१३ । ६९, १६; २३१८  
 हिरण्यवन्धुरः ४, ४६, ४; ३२२३

## (२) वज्र-बाहुः । [ इन्द्रस्य वज्रम् । ]

अंकुशः अथर्वं ६, ८२, ३; २९०१  
 अशनिम् तपिष्ठाम् ३, ३०, १६; १२५३  
 अश्मा ४, २२, १; १५५५  
 आयसः १, ८०, १२, ९११ । ८१, ४, ९१९ । ८, ९६, ३ २३४७  
 आयुधम् ३, ५४, ४; १४००  
 आयुधानि ४, १६, १४; १४८०  
 चक्रम् ८, ९६, ९; २३५३  
 चतुराश्रिम् ४, २२, २; १५५६  
 चरता युधेन ३, ३२, ६; १८०७  
 तपिष्ठाम् (अशनिम्) ३, ३०, १६; १२५३  
 तपुविम् हेतिम् ३, ३०, १७; १२५४  
 तिग्मम् १, १३०, ४; १०१४  
 तूर्णु विश्वासां पुराम् ६, २०, ३; १८८६  
 दर्शत ८, ७०, २; ३२२  
 धुमन्तम् ५, ३१, ४, १६९६  
 निमिश्रः ८, ९६, ३; २३४७  
 न्युष्टम् वसुना ४, २०, ६, १५३८  
 पर्वतेन ६, २२, ६; १९१२  
 प्रत्नेन ६, २१, ७; १९०३  
 मद्च्युतम् ८, ९६, ५; २३४७  
 मनोजुवा ६, २२, ६; १९१२  
 महः ८, ७०, २; ३२२  
 महता वधेन ५, ३२, ८; १७१२

युज्येन ६, २१, ७, १९०३  
 वज्रासः १, ८०, ८; २०७  
 वधम् १, ५५, ५ ८०१ । १७४, ८, १०७६ । ५, ३४, २; १७२८  
 वधेन ४, १८, ९; १५१७  
 वधेन चरता ३, ३२, ६; १२८७  
 वधेन महता ५, ३२, ८; १७१२  
 वसुना (न्युष्टम्) ४, २०, ६, १५३८  
 वसुदानः अथर्वं ६, ८२, ३; २९०१  
 वृत्रहनम् ६, २०, ९; १८९२  
 वृषा १, १३१, ३; १०२३  
 वृषभिधम् ४, २२, २, १५५६  
 ज्ञातपर्वणा ८, ८९, ३; २३८६  
 शताश्रिम् ६, १७, १०, १८५०  
 श्रयिता १, ५७, २, ८१२  
 सूक्या १, ८०, ६; ९०५ । ६, २१, ७, १९०३  
 सत्त्वा भुवम् १, १३१, ३ १०२३  
 सहस्रशृष्टिम् १, ८०, १२; ९११ । ५, ३४, २; १७२८ । ६,  
 १७, १०, १८५०  
 सायकम् १, ८४, ११, ९४७  
 स्थविरम् ४, २०, ६; १५३८  
 स्वपस्तमम् १, ६१, ६; ८६१  
 स्वर्थम् १, ६१, ६; ८६१  
 हरिम् ३, ४४, ४; १४०२  
 हरितम् ३, ४४, ४; १४०२

हर्यंतः १,५७,२, ८१२

अथर्वं ६,८२,३, २९०१

हिरण्ययः १,५७,२, ८१२ । ८,६८,३, २२०३ ।

हेतिम् (तपुषिम्) ३,३०,१७, १२५४

(३) वज्र-बाहुः । [इन्द्रस्य बाहु ।]

अनाष्टय्यौ साम० १८६९; ३०००

अमङ्गौ साम० १८६९, ३०००

उपाकौ १,८१,४, ९१९

चित्रौ अथर्वं १९,१३,१; २९१४

गोजिता १,१०२,६, ८३३

पारयिष्णू अथर्वं १९,१३,१; २९१४

युवानौ साम० १८६९ ३०००

वृषभौ अथर्वं १९,१३,१; २९१४

वृषाणौ अथर्वं १९,१३,१; २९१४

सुप्रतीकौ साम० १८६९; ३०००

स्थविरौ अथ० १९,१३,१, २९१४ । साम० १८६९; ३०००

सद्येन यमति ग्राधतश्चित् दक्षिणे सगृभीता कृतानि १, १००,९; ९६५

(४) हर्यश्वः । [इन्द्रस्य अश्वौ ।]

अजिरा ३,३५,२, १३१३

अत्याः १,१७७,२; १०९२

अध्वरश्रियः ८,४,१४, २४२

अन्तमा. १,१६५,५, ३२५४

अभिमातिवाहः ६,६९,४; ३३०९

अर्चन्तः ८,९२,११; २४०७ । १०,७४,१; २६३४ । १०५,२; २७१५

अर्वाञ्चः १,५५,७; ८०३ । ७,१८,१; २२०८

अशीतिः २,१८,६; ११९५

अश्रमासः ६,२१,१२; १९०६

अश्यासः ६,२९,२; १९६३ । ८,१,९; ९५

अष्टौ २,१८,४; ११९३

अस्मन्नाः १०,४४,३; २५७०

अस्मन्नाञ्चः ६,४४,१९; २०५४

आशबः २,१६,३; ११७४ । ३,३५,४, १३१५ । ४,२९,४; १६०७ । १०,४९,७; २५९६

आसन्नाणासः ६,३७,३; १९७५

इन्द्रबाहा ( द्विव० ) ८,९८,९; २३७२

उग्रमासः १०,४४,३, २५७०

उरथः ६,२१,१२, १९०६

ऋज्यन्तः ६,३७,२; १९७४

कञ्जा [ द्विवचनम् ] १,१७४,५; १०७३

कतयुजः ६,३९,४; १९८६

एतग्वा [ द्विव० ] ८,७०,७; २३२७

एतशा । द्विव० ] ८,७०,७, २३२७

काम्या [ द्विव० ] १,६,२, २५

केता [ द्विव० ] १,५५,७, ८०३

केतू सूर्यस्य २,११,६; ११०६

केशवन्ता [ द्विव० ] १०,१०५,५, २७१८

केशिनः १,८२,६; ९३० । ८,१,२४; ११० । १०,१०५,२; २७१५

गृभस्थयोः रश्मय ६,२९,२; १९६३

गावौ [ द्विव० ] १०,२७,२०; २५१०

घृतस्नु [ द्विव० ] ३,४१,९; १३८१

चत्वारः २,१८,४, ११९३

चत्वारिंशत् २,१८,५; ११९४

जूञ्जुवानास ५,२९,९; १६७५

तपुष्या [ पुःपा ] ३,३५,३; १३१४

तविषासः १०,४४,३, २५७०

तौलाभिः [ तृ० स्त्री० ] ६,४४,७; २०४२

त्रिंशत् २,१८,५; ११९४

दृश २,१३,९; ११४५ । १८,४; ११९३

दशग्विनः ८,१,९; ९५

दुर्युजः १०,४४,७, २५७४

शुशा [ द्विव० ] १,१००,१६; ९७२

द्वी २,१८,४; ११९३  
 धुनी (वातस्य) १०,२२,४, २४६९  
 धृष्णू [द्विव०] १,६,२, २५  
 धौतरीभि. [स्त्री० तृ०] ६,४४,७; २०४२  
 नदी १०,१०५,४; २७१७  
 नवति: २,१८,६. ११९५  
 नियुत: ६,२२,११, १९१७ । ३६,३, २०३३ । ४५,२१,  
 २०८० । ७,१८,१०; २१२८ । ९१,५,६; ३२३८-३२३९ ।  
 ४,४७,४; ३२२९  
 नृमणः वातस्य १,५१,१०, ७५४  
 नृवाहसा [द्विव०] १,६,२, २५  
 पञ्चाशत् २,१८,५, ११९४  
 पर्णिना [द्विव०] ८,१,११, ९७  
 पुनानासः ६,३७,२; १९७४  
 पुरुस्पृहः ४,४७,४; ३२२९  
 पृथ्निगावः ७,१८,१०; २१२८  
 पृथ्निनिषेवित्तासः ७,१८,१०; २१२८  
 प्रिया [द्विव०] ३,४३,१; १३९१ । १० ११२,४; २७३८  
 प्रियमेधस्तुता [द्विव०] ८,६,४५; २८७ । ३२,३०, २०९  
 प्रैतशाः १०,४९,७; २५९६  
 ब्रम्हू [द्विव०] ४,३२,२२, १६६२  
 बृहन्तः ३,४३,६, १३९६  
 ब्रह्मणायुक्ता [द्विव०] १,८४,३; ९३२  
 ब्रह्मयुजा १,१७७,२; १०९२ । ३,३५,४; १३१५ । ८,१,  
 २४; ११० । २,२७; १४२  
 ब्रह्मच्युता [द्विव०] १,८१,३; ९१८  
 मनोयुजः १,५१,१०, ७५४  
 मन्द्रा १,१००,१६; ९७२ । ३,४५,१, १४०४  
 मयूररोमाणः-ममिः [तृ०] ३,४५,१, १४०४  
 मयूरकोप्या ८,१,२५; १११  
 मरुतः सखायः ५,३१,१०; १७०२  
 मूराः वृषभस्य ३,४३,६; १३९६  
 युक्ता ब्रह्मणा [द्विव०] १,८४,३, ९३२  
 युक्तासः ३,५३,४; १४५६ । ४,३२,१७; १६६१ । ६,  
 २३,१, १९१८ । ६,३७,१, १९७३ । ७,२८,१; २२०८ ।  
 १०,२७,२०; २५१० । ११२,४; २७३८  
 युजानाः १,१७७,२; १०९२ । ३,४३,६; १३९६ । ६,  
 २२,२; १९६३ । ४४,१२; २०५४  
 रघू [द्विव०] १०,४९,२; २५९१

रघुद्रुवः ८,१,९; ९५  
 रजी (न) (महान्ती) १०,१०५,२; २७१५  
 रथ्यास ६,३७,३; १९७५  
 रन्तयः ७,१८,१०; २१२८  
 रयिमन्तः १०,७४,१; २६३४  
 रश्मयः गभस्वयोः ६,२२,२; १९६३  
 रामभः ३,५३,५, १४५७  
 रोहितः १,१००,१६; ९७२ । ५,३६,६ १७४९  
 लुलामी [स्त्री०] १,१००,१६ ९७२  
 वंक् [द्विव०] १,५१,११; ७५५ । ८,१,११; ९७  
 वंक्तरा [द्विव०] १,५१,११, ७५५  
 वचोयुजा [द्विव०] ६,२०,९; १८९२ । ८,९८,९; २३७२  
 वहिष्ठाः ६,२१,१२; १९०६ । ४०,३; १९९० । ४७,९;  
 २१०७  
 वाजाः ३,५३,५-६; १४५७-५८ । ५,३६,६; १७४९ । ६,  
 ४५,२१, २०८० । ८,२४,१८; १८०७  
 वातस्य (समानवे गौ) १,१७४,५, १०७३  
 वातस्य धुनी १०,२२,४; २४६९  
 वातस्य नृमणः १,५१,१०; ७५४  
 वातस्य पर्णिना ८,१,११; ९७  
 वातस्य युक्ताः ५,३१,१०; १७०२  
 वावाता ८,४,१४, २४२  
 वाहः ३,५०,४; १४३२ । ५३,३, १४५५  
 विंशतिः २,१८,५; ११९४  
 विम्रता (द्विव०) १,६३,२; ८८६ । १०,२३,१, २४८१ ।  
 ४९,२, २५९१ । १०५,२,४; २७१५,२७१७  
 विश्वा २,१८,७; ११९६  
 विश्ववाराः ६,२२,११; १९१७ । ७,९१,६; ३२३९  
 वीतपृष्ठा ८,६,४२; २८४ । ३,३५,५; १३१६  
 वृषणा (द्विव०) १,१७७,१,३, १०९१,१०९३ । २,१६,  
 ६; ११७७ । ३,३५,३,५; १३१४,१६ । ४३,४, १३९४ ।  
 ५,३६,५, १७४८ । ६,२२,२, १९६३ । ४४,१९,१९;  
 २०५४,५४ । ७ १९,६; २१४५ । ८,१,९; ९५ । ३३,११;  
 २२० । ४,११, १४; २३९,२४२ । १०,४९,२,२५९१ ।  
 ११२,२, २७३६  
 वृषभासः १,१७७,२; १०९२  
 वृषभस्य (मूराः) ३,४३,६; १३९६  
 वृषरथासः १,१७७,२; १०९२ । ६,४४,१९; २०५४  
 वृषरश्मयः ६,४४,१९; २०५४  
 वयचस्वन्ता १०,१०५,५; २७१८

व्यतीनाम् ४,३२,१७; १६६१  
 ज्ञागमा ८,२,२७; १४२  
 ज्ञातम्-ज्ञातानि २,१८,६; ११९५ । ४,२९,४; १६०७ । ७,  
 ९१,६; ३२३९ । ८,१,२४; ११०  
 ज्ञातिनः ८,१,९; ९५  
 ज्ञातिपृष्ठा (द्विव०) ८,१,२५; १११  
 ज्ञोपा १०,१०५,२; २७१५  
 ज्ञोणा १,६,१; २५ । ३,३५,३; १३१४ । ८,१,९; ९५,  
 ३यावा १,१००,१६; ९७२  
 ज्ञृ २,१८,४; ११९३  
 ज्ञृष्टिः २,१८,५; ११९४  
 ज्ञृत्वाया (द्विव०) ३,३५,४; १३१५ । ४३,१,४, १३९६, ९४ ।  
 ६,४०,१; १९८८  
 ज्ञृत्मानो जिभि ज्ञैः ५,३७,६; १७४९  
 ज्ञृत्मादः ३,३५,४; १३१५ । ४३,६; १३९६ । ६,३७,१,  
 १ १९७३, १९७३ । ६९,४; ३३०९ । १०,४४,३ २५७०  
 ज्ञृत्माद्या ८,३२,२९, २०८ । ९३,२४, २४५३  
 ज्ञृत्सतिः २,१८,५; ११९४  
 ज्ञृत्सयः सप्तौ ८,४,१४; २४२ । ३,३५,२, १३१३ । ८,  
 ४६,७; १८२३  
 ज्ञृत्सथा (द्विव०) १०,१६०,१; २८२४  
 ज्ञृत्स्याः ५,२९,९, १६७५  
 ज्ञृत्स्यम्-ज्ञाणि ४,२९,४; १६०७ । ३२,१७, १६६१ ।  
 ७,९१,६; ३२३९ । ८,१,२४, ११०

सहस्रिणः ८,१,९; ९५  
 सुधुरा (द्विव०) ३,४३,४, २३९४  
 सुमदंशुः (की०) १,१००,१६; ९७०  
 सुयमा (द्विव०) १०,४४,२; २५६९  
 सुयुजः ५,३१,१०; १७०१ । ६,४४,१९, २०५४ । १०,  
 १०५,२, २७१५  
 सुरथाः २,१८,५; ११९४  
 सुविदन्नाः ७,९१,६, ३०३९  
 सुसंमृष्टासः ३,४३,६, १३९६  
 स्थूरय ६,२९,२; १९६३  
 स्थूमन्यू १,१७४ ५, १०७३  
 स्वङ्गा ३,४३,४, १३९४  
 ह्री-हरयः १,५,४, १७ । ६,२; २५ । ७,२, २९ । ५५,  
 ७; ८०३ । १,१७४,४, १०७२ । १७७,१,३,४ १०९१,  
 ९३-९४ । २,११,६, १२०६ । १६,६; ११७७ । १८,३,  
 ४, ११९२-९३ । ३,३५,१; १३१२ । ८,१,२४,२५; ११०-  
 १११ । २,२७, १४२ । ३३,२९,३०; २०८-९ । ३३,११,  
 २२० । ४,११,१४, २३९, २४२ । ६,३६; २७८ । ६,४२,  
 २८४ । ६,४५, २८७ । ९३,२४, २४५३ । २४,१७, १८०६  
 हरिता [द्विव०] ६,४७,१९; २११७  
 हरितौ (द्विव०) साम० ६२३; २९९४  
 हर्यती (द्विव०) ८,६,३६; २७८  
 हिरण्यकेइया (द्विव०) ८,३२,२९, २०८ । ९३,२४, २४५३

(५) इन्द्राणी । [इन्द्रपत्नी।]

इन्द्रपत्नी १०,८६,९; २६४८ । १०; २६४९  
 इन्द्राणी १०,८६,११-१२; २६५०-२६५१  
 इन्द्रतस्य वेधाः १०,८६,१०; २६४९  
 पृथुजाघनिः १०,८६,८; २६४७  
 पृथुष्टुः १०,८६,८; २६४७  
 प्रतिच्यवीयसि १०,८६,६; २६४५  
 भावयुः १०,८६,१५; २६५४  
 रेवती १०,८६,१३; २६५२  
 वीरिणी १०,८६,९-१०, २६४८-२६४९  
 वृषाकपायी १०,८६,१३; २६५२  
 द्वै० [इन्द्रः] ४३

इन्द्रपत्नी १०,८६,८; २६४७  
 संहोत्रं समनं गच्छति १०,८६,१०; २६४९  
 सक्थि उद्यमीयसी १०,८६,६; २६४५  
 सुवृत्रा १०,८६,१३; २६५२  
 सुबाहुः १०,८६,८; २६४७  
 सुभगा १०,८६,११; २६५०  
 सुभसन्तरा १०,८६,६; २६४५  
 सुयाश्रुतरा १०,८६,६; २६४५  
 सुलाभिका १०,८६,७; २६४६  
 सुस्तुषा १०,८६,१३; २६५२  
 स्वङ्गुरा १०,८६,८; २६४७

## इन्द्र-देवतायाः विभिन्नरूपत्वम् ।

अग्निरूपी १, ६, १, २४  
 अन्तरात्मा १०, २४, २४; २५, १४  
 अभयंकरः ८, ६१, १३; ५६०  
 आदित्यरूपी १, ६, १; २५ । १, ६, ३; २६ । १०, २७, १३-  
 १४. २५०३-२५०४  
 कालात्मक १०, ५५, ५; २६१८  
 कृशवालय-असुर-नाशकः १, १०४, ३-४; ८४९-८५०  
 ज्येष्ठः १०, ५०, ४, २६०४  
 ज्ञाता ६, ४७, ११; २१०९ । ७, १९, ७; २१४६  
 नक्षत्ररूपी १, ६, १, २४  
 पर्जन्यरूपी ८, ६९, २; २३०५  
 पुरोलाभाहः ३, ५२, १-८ । १४४६-१४५३  
 पृषण्वान् १, ८२, ६; ९३०  
 प्रजापतिरूपी १०, २७, १५; २५०५  
 प्रदाता ८, १७, १०; ४०३ । ४, २१, ९. १५५२  
 भूरिदा ४, ३२, १९-२१; १६६३-१६६५  
 मरुत्वान् ८, ६३, १०, ५८७ । १, १०१, १-११; ८१७ ८२७  
 १, १००, १-१९, ९५७-९७५ । १, १२९, १; १००० । २,  
 २१, १-२१, ११०१-११२१ । ३, ३२-१-१७, १२८०-१२९८ ।

३, ३५, १-११; १३१२-१३२२ । ३, ४७, १-५, १४१४-१४१८ ।  
 ३, ५०, १-५; १४२९-१४३३ । ३, ५१, ७-९, १४४०-१४४२ ।  
 ४, २१, ३; १५४६ । ५, २९, १-१५; १६६७-१६८१ । ५,  
 ३०, १-११; १६८२-१६९२ । ५, ३१, १-१३; १६९३-१७०४ ।  
 ८, ६, १-७; १७६२-१७७५ । ६, १९, १-१३; १८७१-१८८३ ।  
 ६, २०, १-१२; १८९७-१९०६ । ६, ४०, ५; १९९२ । ७,  
 ३२, १०; २२४४ । ८, ६८, १-१३; २२९१-२३०३ । १०,  
 ७३, १-११; २६२३-२६३३  
 सुक्कवान् १०, ३८, १-५; २५४१-२५४५  
 यज्ञमार्गामभिज्ञः १, १७३, ११; १०६६  
 रक्षोहा १, १२९, ११; १०१० । ३, ३०, १५-१७; १२५२-१२५४  
 वायुरूपी १, ६, १, २४  
 सरस्वतीवन्तौ [इन्द्रामी] ८, ३८, १० ३१००  
 सुत्रामा ८, ४७, १२, १३; २११०, २१११  
 सुपर्णात्मकः १०, ५५, ६; २६१९  
 सूर्यात्मा ८, ६, २९, ३०, २७१, २७२ । १, ८३, ५; ९३५ ।  
 ३, ३९, ७; १३६१ । ८, ६९, २, २३०५ । १०, ५५, ३, २६१६ ।  
 १०, १११, ७; २७३१  
 स्त्रीरूपी ८, ३३, १९; २२८

## इन्द्रदेवताया गुणबोधक-सामासिक-पदानां उत्तरपद-सूची ।

सहस्र - भक्षि [क्षा] १, २३, ३, ३२१४  
 अन् - अनुदः [अनानुद] २, २१, ४. १२२०  
 अन् - अनुदिष्टः [अनानुदिष्ट] १०, १६०, ४ २८२७  
 वृषभ - भक्ष. २, १६, ५, ११७६  
 गाथा - अन्यः ८, ९२, २, २३९८  
 अन् - अपच्युतः ८, ९२, ८; २४०४  
 नर्थ - अपसः ८, ९३, १; २४३०  
 अयस् - अपाष्टिः [अयोपाष्टिः] १०, ९९, ८; २६८७  
 बहुक - अभिमानः १०, ७३, १, २६२३  
 सु - अभिष्टिः १, ५१, २; ७४६  
 सु - अभिष्टिसुम्नः ६, २०, ८; १८९१  
 अ - कव-भरिः ३, ४७, ५; १४१८  
 सु - भरिः १, ६१, ९; ८६४  
 अन् - अर्वा ४, १७ २०; १५०७  
 सु - अर्वा ६, २२, ३; १९०९  
 अन् - अर्शरातिः ८, ९२ ४; २३७९  
 सु - अर्-सन् [स्वर्षा] १, ६१, ३; ८५८

अन् - अवघ. १, १२९, १; १०००  
 सु - अवसः १०, ५७, २; २८४३  
 प्र - अविता ८, ९६, २०; २३६२  
 सु - प्र-अव्यः २, १३, ९; ११४५  
 सम्भृत - अश्वः ८, ३४, १२; ४३६  
 सु - अश्वः ४, २९, २; १६०५  
 हरि - अश्वः ३, ३१, ३; १२६०  
 सु - अश्वयुः ८, ४५, ७; ४४९  
 तव - आगस् ४, १८, १०; १५१८  
 पर - आददिः १, ८१, २; ९१७  
 तुरीय - आदित्यः ८, ५२, ७, ५२१  
 अन् - आष्टयः ४, १८, १०; १५१८  
 अन् - आनतः ६, ४५, ९; २०६८  
 अन् - आपिः ८, २१, १३; ४२१  
 सु - आपिः ८, ५३, ५; ५२९  
 अन् - आम्णः १, ३३, १; ७३०  
 अस्कथ - आयुः [अस्कथोयुः] ६, २२, ३; १९०९

दीर्घ - आयुः ८, ७०, ७; २३२७  
 वृद्ध - आयुः १, १०, १२; ६९  
 तिरम - आयुधः २, ३०, ३; १२२९  
 सु - आयुधः ६, १७, १३; १८५३  
 प्र - भागुषाद् ४, २५, ६; १५९३  
 अन् - आभयी ८, २, १; ११६  
 चक्रम् - आरूज ५, ३४, ६; १७३२  
 घृत - आसुती ६, ६९, ६; ३३११  
 भूरि - आसुतिः ८, ९३, १८; २४४०  
 अ -- प्रति-इतः १, ३३, २; ७३१  
 वेद -- इष्टः [ वेदिष्टः ] ८, २, २४; १३९  
 षाची -- इष्टः [ षाचिष्टः ] ४, २०, ९; १५४२  
 शवस् -- इष्टः [ शविष्टः ] १, ८०, १; ९००  
 शम्भू -- इष्टः [ शम्भविष्टः ] १, १७१, ३; ३२६५  
 सहस् -- इष्टः [ सहिष्टः ] ६, १८, ४; १८५९  
 प्रशस्य -- ईयस् [ ज्यायस्-यान् ] ३, ३८, ५; १३४९  
 वृद्ध -- ईयस् [ ज्यायस्-यान् ] " " "  
 तवस् -- ईयस् [ तवीयस्-यान् ] ६, २०, ३; १८८६  
 वेद -- ईयस् [ वेदीयस्-यान् ] ७, ९८, १; २२७९  
 सहस् -- ईयस् [ सहीयस्-यान् ] १, ६१, ७; ८६२  
 वन -- इष्टः [ वनिष्टः ] ७, १८, १; १८१९  
 वर -- इष्टः [ वरिष्टः ] ८, ९७, १०; ९८५  
 वृषद् -- उक्तः ८, ३२, १०; १८९  
 वपा - उद्धरः ८, १७, ८; ४०१  
 अक्षित -- ऊति. १, ५, ९; २२  
 उर्वी -- ऊतिः ६, २४, २; १९२९  
 शतम् -- ऊति. १, १०२, ६; ८३३  
 सहस्र -- ऊति. ८, ३४, ७; ४३१  
 सहस्रम् -- ऊतिः १, ५२, २; ७६१  
 अन् -- ऊनः ६, १७, ४; १८४४  
 अन् -- ऊर्मिः ८, २४, २२; १८११  
 अन् -- ऋतुपाः ३, ५३, ८; १४६०  
 श्रुत - ऋषिः १०, ४७, ३; २८४४  
 मि - ऋष्टः १०, ४२, २; २५४७  
 पुरस् - एता ६, २१, १२; १९०६  
 तत् - ( बर्हिः ) - ओकस् ३, ३५, ७; १३१८  
 नि - ओकस् १, ९, १०; ५७  
 अभिभूति - ओजस् ३, ३४, ६; १३०६  
 अभित - ओजस् १, ११, ४; ७३  
 असमाति - ओजस् ६, २९, ६; १९६७  
 द्वै० [इन्द्रः] ४३ ४

ऋष्व - ओजस् १०, १०५, ६; २७१९  
 छण्णु - ओजस् ८, ७०, ३; २३२३  
 बाहु - ओजस् १०, १११, ६; २७३०  
 विश्व - ओजस् १०, ५५, ८; २६२१  
 सु - ओजस् ६, २२, ६; १९१२  
 स्वधृति - ओजस् १, ५२, १२; ७७१  
 दूर् - ओषस् ४, २१, ६; १५४९  
 रथ - ओळहा. १०, १४८, ३; २८११  
 वृषा - कपिः १०, ८६, १; २६४०  
 अभयम् - करः ८, १, २. ८८  
 खजम् - करः १, १०२, ६; ८३३  
 यतम् - करः ५, ३४, ४; १७३०  
 सत्रा - करः १, १७८, ४; १०९९  
 सृप्र - करस् ८, ३२, १०; १८९  
 आश्रुत् - कर्ण १, १०, ९; ६६  
 श्रुत् - कर्णः ७, ३२, ५; २२३९ । ८, ४५, १७; ४५९  
 भूरि - कर्मन् [ मां ] ३, १०३, ५; ८४३  
 विश्व - कर्मन् [ मां ] ८, ९८, २; २३६५  
 वृष - कर्मन् [ मां ] १, ६३, ४; ८८८  
 अकाम - कर्शनः १, ५४, २; ७७६  
 अ - कल्प. १, १०२, ६; ८३३  
 अ - कवारि ३, ४७, ५; १४१८  
 अ - कामकर्शनः १, ५४, २; ७७६  
 ऋण - कातिः ८, ६१, १२; ५५९  
 तत् - (=सोम) - कामः २, १४, १; ११५०  
 श्रवस् - कामः ८, २, ३८; २५३  
 सोम - कामः १, १०४, ९; ८५५  
 युत् - कारः १०, १०३, २; २६९३  
 आ - काव्यः ४, २९, ५; १६०८  
 अ-समष्ट - काव्यः २, २१, ४; १२२०  
 अप्रति - कुतः [ अप्रतिक्कुतः ] १, ७, ६; ३३  
 तुवि - कूर्मिः ३, ३०, ३; १२४०  
 तुवि - कूर्मितमः ६, ३७, ४; १९७६  
 अभिष्टि - कृत् ४, २०, १; १५३३  
 अरम् - कृत् ८, १, ११; ९६  
 भाजि -- कृत् ८, ४५, ७; ४४९  
 ईशान -- कृत् १, ६१, २१; ८६६  
 खज - कृत् ६, १८, २; १८५७  
 धर्म -- कृत् ८, ९८, १; २३६४  
 पथि -- कृत् ६, २१, १२; १९०६

पुरु -- कृत् १, ५४, ३; ७७७  
 भद्र -- कृत् ८, १४, ११; ३६४  
 रण -- कृत् १०, ११२, १०; २७४४  
 लोक -- कृत् १०, १३३, १; २७७८  
 वरिवस् -- कृत् ८, १६, ६; ३८७  
 सु -- कृत् ३, ३१, ७; १२३६  
 भ -- निस-कृतः [निष्कृतः] ८, २९, ८; २३८३  
 अरम् -- कृतः १०, ११९, १३; २८६२  
 दामने -- कृतः ८, ९३, ८; २४३७  
 सम् -- कृत [संस्कृतः] ८, ३३, ९; २१८  
 सहस् -- कृतः ८, ९९, ८; २३८३  
 सु -- कृतः ६, १९, १; १८७१  
 सुरूप -- कृतः १, ४, १; ४  
 अक्ष -- कृत्वः ८, ६१, १०; ५५७  
 प्र -- केतः १०, १०४, ६; २७०८  
 सुप्र -- केता. १, १७१, ६; ३२६८  
 अमितः -- कृतः १, १०२, ६; ८३३  
 अवार्य -- कृतः ८, ९२, ८; २४०४  
 अविहर्यत -- कृतः १, ६३, २; ८८६  
 क्रतु -- कृतः १, ८१, ७; ९२२  
 तुवि -- कृतः ८, ६८, २; २२९२  
 वृष -- कृतः ५, ३६, ५; १७४८  
 दात -- कृतः १, ४, ८; ११  
 स -- कृतः १०, १४८, ४; २८१२  
 सम्भृत -- कृतः १, ५२, ८; ७६८  
 सु -- कृतः १, ५, ६; १९  
 सम् -- कन्दनः १०, १०३, १; २६९२  
 उरु -- क्रमः ८, ७७, १०; ६४९  
 सुत -- क्रि ६, ३१, ४; २००९  
 धु -- क्षः ६, २४, १; १९२८  
 स -- क्षणिः ८, ७०, ८; २३२८  
 सु -- क्षत्रः ५, ३२, ५; १७०९  
 क्रतु -- क्षाः १, ६३, ३; ८८७  
 दिव -- क्षाः ३, ३०, २१; १२५८  
 अ -- क्षितोतिः १, ५, ९; २२  
 अ -- क्षितवसुः ८, ४९, ६; ४९०  
 पुरु धु ४ २९, ५; १६०८  
 अमित्र -- खादः १० १५२, १; २८१४  
 प्र -- खादः १, १७८, ४; १०९८

वृत्र -- खादः ३, ४५, २; १४०५  
 अभि -- ख्याता ४, १७, १७; १५०४  
 अरम् -- गमः ६, ४२, १; १९९८  
 स्वयम् -- गातुः ४, १८, १०; १५१८  
 उरु -- गायः १०, २९, ४; २५१८  
 अधि -- गो [गु] १, ६१, १; ८५६  
 नाचि -- गो [गुः] ८, १७, १२; ४०५  
 भूरि -- गो [गुः] ८, ६२, १०; ५७५  
 पुरु -- गूर्तः ६, ३४, २; २०२२  
 विश्व -- गूर्तः १, ६१, ९; ८६४  
 अ -- गोष्ठाः ८, ९८, ४; २३६७  
 तुवि -- ब्राभः ६, २२, ११; १९११  
 तुवि -- मिः २, २१, २; १२१८  
 तुवि -- मीव. ८, १७, ८; ४०१  
 घन -- घनः [घनाघनः] १०, १०३, १; २६९२  
 अ -- मन् ७, २०, ८; २१५८  
 अपूरुष -- मः १, १३३, ६; १०३९  
 सम् -- चकानः ५, ३०, ७; १६८८  
 वि -- चक्षणः १, १०१, ७; ८२३  
 वृत्तम् -- चयः २, २१, ३; १२१९  
 वि -- चर्षणिः २, २२, ३; १२२५  
 विश्व -- चर्षणिः १, ९, ३; ५०  
 प्र -- चेताः ७, ३१, १०; २२३२  
 वि -- चेता. ६, २४, २; १९२९  
 स -- चेताः १, ६१, १०; ८६५  
 सहस्र -- चेताः १, १०, १२; ९६३  
 रध -- चोदः २, २१, ४; १२२०  
 ऋषि -- चोदनः ८, ५१, ३; ५०८  
 कीरि -- चोदनः ६, ४५, १९; २०७८  
 रध -- चोदनः ६, ४४, १०; २०४५  
 दुस् -- द्यवनः १०, १०३, २; २६९३  
 अद्युत -- द्युत् २, १२, ९; ११३०  
 मद -- द्युत् १, ५१, २; ७४६  
 अ -- द्युतः १० १११, ३; २७२७  
 अनप -- द्युतः ८, ९२, ८; २४०४  
 कवि -- ष्छदा ३, १२, ३; ३०३२  
 सद्यः -- जज्ञानः ८, ९६, २१; २३६३  
 पाञ्च -- जन्यः ५, ३२, ११; १७१५  
 विश्व -- जन्याः १, १६९, ८; १०५०  
 धनम् -- जयः ३, ४२, ६; १३८७

अ - जरः ३, ३२, ७; १२८८  
 अप - जर्गुराणः ५, २९, ४; १६७०  
 ऋते - जाः ७, २०, ६; २१५६  
 पुरा - जाः ३, ३१, १९; १२७८  
 पूर्वं - जाः ८, ६, ४१; २८३  
 सन - जाः १०, १११, ३; २७२७  
 सहस् - जाः १०, १०३, ५; २६९५  
 तुवि - जातः १, १३१, ७; १०२७  
 सद्यः - जातः ८, ७७, ८; ६४७  
 सु - जातः १०, ९९, ७; २६८६  
 म - जानन् ३, ३५, ४; १३२५  
 वि - जानन् ३, ३९, ७; १३६१  
 तुतु - जानः (तूतुजान) १, ३, ६; ३  
 तुतु - जिः (तूतुजिः) ४, ३२, २; १६४६  
 अपरा -- जित् [ता] ३, १२, ४; ३०३३  
 अप् [ब्] -- जित् २, २१, १; १२१७  
 अप्सु -- जित् ८, १३, २; ३२२  
 अश्व -- जित् २, २१, १; १२१७  
 उर्वरा -- जित् २, २१, १; १२१७  
 गो -- जित् २, २१, १; १२१७  
 धन -- जित् २, २१, १; १२१७  
 नृ -- जित् २, २१, १; १२१७  
 विश्व -- जित् २, २१, १; १२१७  
 अवस् -- जित् ८, ३२, १४; १९३  
 संसृष्ट -- जित् १०, १०३, ३; २६९४  
 सत्रा -- जित् २, २१, १; १२१७  
 स्वर -- जित् २, २१, १; १२१७  
 स - जित्त्वाना ३, १२, ४; ३०३३  
 अ - जुगः ८, १, २; ८८  
 अ - जुर्धः २, १६, १; ११७२  
 मनः -- जुवा १, २३, ३; ३२१४  
 ऋक्ष -- जूतः ३, ३४, १; १३०१  
 वृष -- जूतिः ५, ३५, ३; १७३८  
 अ -- जूर्धत् ३, ४६, १; १४०९  
 परम -- ज्या ८, ९०, १; २३९९  
 उरु -- ज्ञयाः ८, ६, २७; २६९  
 पृथु -- ज्ञयाः ३, ४९, २; १४२५  
 इन्द्र -- ज्येष्ठा १, २३, ८; ३२४८  
 अङ्गिरस् - तमः १, २३०, ३; १०१३  
 अणुक -- तमः १, १७४, १०; १०७८

इन्द्र - तमः ३, ४९, २; १४२५  
 कवि - तमः ६, १८, १४; १८६९  
 गिर्वणस् - तमः ६, ४५, २०; २०७९  
 चित्र - तमः ६, ३८, १; १९७८  
 ज्येष्ठ - तमः २, १६, १; ११७२  
 तवस् - तमा १, १०९, ५; ३०२५  
 तुविकूर्मि - तमः ६, ३७, ४; १९७६  
 दस्य -- तमः २, २०, ६; १२१३  
 देव -- तमः ४, २२, ३; १५५७  
 धुमत् -- तमः १, ५४, ३; ७७७  
 पितृ -- तमः ४, १७, १७; १५०४  
 पुरु -- तमः १, ५, २; १५  
 मघवत् -- तम ८, ५४, ५; ५३५  
 मदिन् -- तमः ८, १३, २३; ३४३  
 रथी -- तम ६, ४५, १५; २०७४  
 वाजसा -- तमा ३, १२, ४; ३०३३  
 विप्र -- तमः १०, ११२, ९; २७४३  
 वीर -- तमः ३, ५२, ८; १४५३  
 वृषन् -- तमः १, १०, १०; ६७  
 शम् -- तम ८, ३३, १५; २२४  
 शिव - तम ८, ९६, १०; २३५४  
 शुष्मिन् -- तमः १, १३३, ६; १०३९  
 सहस् -- तमौ ६, ६०, १; ३०५६  
 सुश्रवस् - तमः १, १३१, ७; १०२७  
 सोमपा -- तम ६, ४२, २; १९९९  
 वृत्रहन् -- तम ५, ३५, ६; १७४१  
 अभिभू -- तरः ८, ९७, १०; १८५  
 उत् -- तरः ८, १४, १५; ३६८  
 जुष्ट -- तर ८, ९६, ११; २३५५  
 तवस् -- तरः १, ३०, ७; ७०५  
 वीर -- तरः ८, २४, १५; १८१४  
 स्व यशम् -- तरः ३, ४५, ५; १४०८  
 दुस् (ष्) - तरां (रौ) ५, ८६, २; ३०४१  
 वि - तन्तत्साद्यः ६, १८, ६; १८६  
 सु - तपाः ४, २५, ७; १५९४  
 दुस् - तरितु २, २१, २; १२१८  
 ति - तर्गुराणः ६, ४७, १७; २११५  
 स्व - तवः ६, २२, ६; १९१२  
 विभु (भ्र) - तष्टः ३, ४९, १; १४२४  
 सत्य - ताता १०, १११, ४; २७२८



भव -- तुरः ३, ५१, ३, १४३६  
 आजि -- तुर ८, ५३, ६; ५३०  
 निस् -- तुरः [निष्टुरः] ८, ३२, २७; २०६  
 भ -- त्तः ८, ५, ७; २३८७  
 पुरु -- त्मा ८, २, ३८; १५३  
 भम -- त्रः ३, ३६, ४; १३२६  
 तरु -- त्रः १, १७४, १, १०६२  
 यज -- त्रः १, १२९, ७, १००६  
 देव - त्रा ८, ३३, ८; ४३२  
 पुरु -- त्रा ८, ३३, ८; २१७  
 सु - त्रामन् ६, ४७, १२, २११०  
 वि - त्वक्षणः ५, ३४, ६, १७३२  
 प्र - त्वक्षाणः १०, ४४, १; २५६८  
 सु - दंसाः १, ६२, ७; ८७८  
 सु - दक्षः १, १०१, ०, ८२५  
 वज्र - दक्षिणः १, १०१, १; ८१७  
 सु - दक्षिणः ७, ३२, ३, २२३७  
 गो - दत्रः ८, २१, १६, ४२४  
 पुरु - दत्रः ६, १८, ९, १८३४  
 पर - आ ददि १, ८१, २; ९१७  
 उप - दधानः ४, २९, ४; १६०७  
 भ - दध ८, ७८, ६; ६५६  
 भ - दभा [भौ] ५, ८६, ५, ३०४४  
 भ - दयः १०, १०३, ७, २६९७  
 वि - दयमान ३, ३४, १, १३०१  
 पुरम् - दर. १, १०२, ७, ३४  
 गो - दा ३, ३०, २१, १२५८  
 धन - दा. १, ३३, २, ७३१  
 भूरि - दाः ४, ३२, १९, १६९३  
 वसु - दाः ८, ९३, ४; २३७९  
 वाज - दा १, १३५, ५; ३२१६  
 सहस् - दाः १, १७४, १, १०६९  
 सु - दा ८, ७८, १०; ६५४  
 स्वस्ति - दाः १०, ११६, २; २७५६  
 भूरि - दात्रः ३, ३४, १; १३९१  
 जीर - दातुः ८, ६२, ३; ५६८  
 सु - दातुः ६, ३८, १; १९७८  
 नक्षत्र - दाभः ६, २२, २; १९०८  
 भ - दाभ्यः ७, १०४, २०; २२८८  
 सु - दामन् ६, २०, ७; १८९०

वाज - दावन् ८, २, ३४; १४९  
 सत्रा - दावन् १, १७, ६; ३३  
 स्व - दावन् ८, ५०, ५; ४९९  
 प्र - दिवः १, ५४, २; ७७६  
 वृहत् - दिवः ४, २९, ५; १६०८  
 स - दिवः २, १९, ६; १२०४  
 प्र - दिशमानः ३, ३१, २१; १२८०  
 रमत् - दिष्टिः ३, ४५, ५; १४०८  
 भ - वि - दीधयुः ४, ३१, ७; १६३६  
 सबर् - दुघः ८, १, १०; ९६  
 सु - दुवा ८, १, १०; ९६  
 भा - दुरिः ४, ३०, २४; १६२९  
 सु - दृक् ४, २३, ६; १५७१  
 स्वर - दृक् ७, ३२, २२; २२५६  
 विश्व - देवः ८, ९८, २, २३६५  
 तुवि - देष्णः ८, ८१, २; ६७१  
 तुवि - द्युमनः १, ९, ६; ५३  
 भ - द्रोघः ३, ३२, ९; १२९०  
 भ - द्रोघवाक् ६, २२, २, १९०८  
 पृथमान - द्विट् ६, ४७, १६; २११४  
 तरन् - द्वेष १, १००, ३; ९५९  
 वि - द्वेषणः ८, १, २; ८८  
 उग्र - धन्वा १०, १०३, ३; २६९४  
 वि - धर्ता ८, ७०, २; २३२२  
 वयस् - धाः ३, ३१, १८; १२७७  
 सम् - धाता ८, १, १२; ९८  
 कारु - धायाः ३, ३२, १०; १२९१  
 उरु - धार ८, १, १०; ९६  
 विश्वतम् - धीः ८, ३४, ६; ४३०  
 भव - ध्वजानः ६, ४७, १७; २११५  
 वर्षणी - धृत् ३, ३७, ४; १३३७  
 भ - धृष्ट. ८, ६१, ३; ५५०  
 अन-आ- धृष्य. ४, १८, १०, १५१८  
 भ - ध्वरः ८, ६३, ६; ५८३  
 दुर - नशः (दूणाशः) ७, ३२, ७; २२४१  
 भन् - आ - नतः ६, ४५, ९; २०६८  
 ऋगवृषो - नपात् ८, १७, १३; ४०६  
 विश्व [श्वा] - नरः १०, ५०, १; २६०१  
 शिक्षा - नरः १, ५४, २; ७७६  
 पुरु - ना [णा] मन् ८, ९३, १७; २४४६

भ - निभृष्टः १०, ११६, ६; २७६०  
 भ - निमिषः १० १०३, १, २; १६९२-२३  
 भ - निष्कृतः ८, ९९, ८; २३८३  
 भ - निःस्तुत [निष्टृतः] ८, ३३, ९; २१८  
 पुरु - निषिषधः १, १०, ५; ६२  
 सेना - नी ७, २०, ५; २१५५  
 वर्ष - नीतिः ३, ३४, ३; १३०३  
 वाम - नीतिः ६, ४७, ७; २१०५  
 शर्ष - नीतिः ३, ३४, ३; १३०३  
 सु - नीतिः ६, ४७, ५; २१०५  
 शत - नीथ १, १००, १२; ९६८  
 सहस्र - नी [णी]थः ३, ६०, ७, ३३४३  
 सु - नीथः १०, ४७, २, २८४३  
 स - नीळाः १, १६५, १; ३२५०  
 तुवि - नृम्णः ४, २२, ६; १५६०  
 त्वेष - नृम्णः १०, १२०, १; २७६४  
 पुरु - नृम्णः ८, ४५, २१, ४६३  
 प्र - ने[णे]ता ३, ३०, १८; १२५५  
 अ - नेषः ८, ३७, १-६; १७७६-१७८१  
 प्र - ने[णे]नीः ६, २३, ३; १९२०  
 भति - नेनीयमानः ६, ४७, १६; २११४  
 अश्व - पतिः ८, २१, ३; ४११  
 आजि - पतिः ८, ५४, ६; ५३६  
 उर्वरा - पति ८, २१, ३; ४११  
 गण - पतिः १०, ११२, ९; २७४३  
 गवाम् - पतिः १, १०१, ४, ८२०  
 गो - पतिः १, १०१, ४; ८२०  
 दम् - पतिः ८, ६९, १६; २३१८  
 धियः - पती १, २३, ३; ३२१४  
 नृ - पतिः १, १०२, ८; ८३५  
 वृहत् - पतिः [वृहस्पतिः] २, ३०, ४; १२३०  
 मित्र - पतिः १, १७०, ५, १०५५  
 रयि - पतिः ६, ३१, १; २००६  
 रायस् - पतिः ८, ६१, १४; ५६१  
 मद - पती ६, ६९, ३; ३३०८  
 वसु - पतिः १, ९, ९; ५६  
 वासोस् - पति ८, १७, १४; ४०७  
 विशस् - पतिः १०, १५२, २; २८१५  
 विश् - पतिः ३, ४०, ३; १३६६  
 शची - पतिः ४, ३०, १७; १६२२  
 शबसस् - पतिः १, ११, २; ७१

सत् - पतिः १, ११, १; ७०  
 सोम - पतिः ३, ३२, १; १२८२  
 स्वधा - पतिः ६, ४४, १; २०३६  
 स्व - पतिः १०, ४४, १; २५६८  
 स्वर् - पतिः ८ ९८, ११; २८६  
 प्र - पन्थितमः १, १७३, ७; १०६२  
 अ - पराजितः १, ११, ६; ७१  
 अ - परीतः ५, २९, १४; १६८०  
 वृष - पत्वा ३, ३६, २; १३२४  
 अभिष्टि - पाः २, २०, २; १२०९  
 अन् - ऋतुः पाः ३, ५३, ८; १४६०  
 ऋत - पाः ७, २०, ६; २१५६  
 ऋतु - पाः ३, ४७, ३; १४१६  
 गो - पाः ३, ३१, १४; १२७३  
 तनु [नृ] - पा ४, १६, २०; १४८६  
 परस् - पाः ८, ६१, १५, ५६२  
 अत - पाः १०, ३२, ६; २५३५  
 शुचि - पा ७, ९१, ४; ३२३७  
 सोम - पाः १, १०, ३; ६०  
 सु - पाणि ३, ३३, ६; १२९९  
 सोम - पातमः ६, ४२, २, १९९९  
 नृ - पाता १, १७४, १०; १०७८  
 अति - पान् [नाम् द्वि०] ७, ३३, २; २२६३  
 अ - पारः ४, १७, ८; १४२५  
 सु - पारः १, ४, १०; १३  
 सुत - पावन् ६, २४, ९, १९३६  
 सोम - पावन् १, ५६, ७; ८०३  
 समत् - पुरन्धिः ८, ३४, ६; ४३०  
 शचि - पूजनः ८, १७, १२; ४०५  
 अ - पूरुषज्ञः १, १३३, ६; १०३९  
 अ - पूर्यः ८, २१, १; ४०९  
 निचान्त - पृणः [निचुम्पुणः] ८, ९३, २२; २४५१  
 विश्वतस् - पृथुः ८, ९८, ४; २३६७  
 वृष - प्रभर्मा ५, ३२, ४; १७०८  
 अ - प्रतिः ५, ३२, ३; १७०७  
 तुवि - प्रतिः १, ३०, २; ७०८  
 अ - प्रतिष्टशवाः १, ८४, २; ९३८  
 अ - प्रतिष्कृतः १, ७, ६; ३३  
 पुरुष - प्रतीकः ३, ४८, ३; १४२१  
 अ - प्रतीत १, ३३, २; ७३१  
 सु - प्रकेताः १, १७१, ६; ३२६८

स - प्रथः ७, ३१, ६; २२२८  
 भ - प्रभङ्गी ८, ४५, ३५; ४७७  
 लृपल - प्रभर्मा १०, ८९, ५; ३२७६  
 चोद - प्रबुद्धः १, १७४, ६; १०७४  
 पुरु - प्रशस्तः ६, ३४, २; २०२२  
 भ - प्रहन् ६, ४४, ४; २०३९  
 भ - प्रहित ८, ९९, ७; २३८२  
 अन्तरिक्ष - प्राः १, ५२, २; ७४६  
 वर्षाणि - प्राः १, १७७, १; १०९१  
 भ - प्रामि-सत्यः ८, ६१, ४; ५५१  
 सु - प्राव्यः २, १३, ९; ११४५  
 हरि - प्रियः ३, ४१, ८; १३८०  
 अ - बधिरः ८, ४५, १७; ४५९  
 पूर्ण - बन्धुरः १, ८२, ३; ९२७  
 द्वि - बर्हाः ६, १९, १; १८७१  
 स - बलः ८, ९३, ९; २४३८  
 तुवि - बाध १, ३२, ६; ७२०  
 वि - बाध १०, १३३, ४; २७८१  
 उग्र - बाहुः ८, ६१, १०; ५५७  
 वज्र - बाहुः १, ३२, १५; ७२९  
 सु - बाहुः ८, १७, ८; ४०१  
 भ - बिभीवान् १, ६, ७; ३२४७  
 चन्द्र - बुध्नः १, ५२, ३; ७६२  
 पृथु - बुध्नः १०, ४७, ३; २८४४  
 कृत - ब्रह्मा ६, २०, ३; १८८१  
 सु - ब्रह्मा १०, ४७, ३; २८४४  
 प्र - ब्रुवाणः १०, ५४, २; २६०९  
 वि - भक्ता ३, ४९, ४; १४२७  
 जम - भक्षः २, २१, ३; १२१९  
 भभि - भङ्गः २, २१, २; १२१८  
 प्र - भङ्गः ८, ४६, १९; १८३५  
 भ-प्र - भङ्गी ८, ४५, ३५; ४७७  
 प्र - भङ्गी ८, ६१, १८; ५६५  
 वि - भङ्गजनुः ४, १७, ३; १५००  
 भ - भयङ्करः ८, १, २; ८८  
 अन्तरा - भरः ८, ३२, २२; १९१  
 सम् - भरः ४, १७, ११; ४९८  
 प्र - भर्ता १, १७८, ३; १०९८  
 जात् - भर्मा १, १०३, ३; ८४१  
 वृष-प्र - भर्मा ५, ३२, ४; १७०८  
 विज - भागुः १, ३, ४; १

बृहत् - भागुः ८, ८९, २; २३८५  
 गोत्र - भित् ६, १७, २; १८४२  
 पुर [ पुर ] - भित् ३, ३४, १; १३०१  
 पुर [ पुर ] - भित्तमः ८, ५३, १८; ५२५  
 भ - भीरुः ४, २९, २; १६०५  
 भ - भीर्वः ८, ४६, ६; १८२२  
 वि - भीषणः ५, ३४, ६; १७३२  
 वि - भुः ८, ९६, ११; २३५५  
 भद् - भुतः ८, १३, १९; ३३९  
 भभि - भूः २, २१, २; १२१८  
 पुरम् - भूः ३, ३१, ८; १२६७  
 विश्व [ श्वा ] - भूः १०, ५०, १; २६०१  
 शम् - भूः (वौ) ६, ६०, ७; ३०६२  
 भभि - भूतरः ८, ९७, १०; २८५  
 भभि - भूतिः ६, १९, ६; १८७६  
 वि - भूतिः ६, १७, ४; १८४४  
 भभि - भूत्योजाः ३, ३४, ६; १३०६  
 स्व - भूत्योजाः १, ५२, १२; ७७१  
 भभि - भूयस ८, १७, १५; ४०८  
 प्र - भूयसुः १, ५८, ४; ८१४  
 वज्र - भृत् १, १००, १२; ९६८  
 सम् - भृतकनुः १, ५२, ८; ७६७  
 सम् - भूताश्वः ८, ३४, १२; ४३६  
 पुरु - भोजाः ८, ८८, २; ८९५  
 वि - भ्राजत् ८, ९८, ३; २३६६  
 भ - भ्रातृभ्यः ८, २१, १३; ४२१  
 सु - मखः १, १६५, ११; ३२६०  
 तुवि [ वी ] - मघः १, २९, १; ६९२  
 शत [ ता ] - मघः ८, १, ५; ९१  
 श्रुत [ ता ] - मघः ८, ९३, १; २४३०  
 प्र - मतिः ४, १६, १८; १४८४  
 महे - मतिः ८, १३, ११; ३३११  
 भ - मन्त्रिन् ६, २४, ९; १९३६  
 प्र - मथिन् ६, ३१, ५; २०१०  
 स - मद् ७, २०, ३; २१५३  
 सत्य - महन् ८, २, ३७; १५२  
 नृ - मनः [ णः ] १, ५१, ५; ७४९  
 विश्व - मनाः १०, ५५, ८; २६२१  
 वृष - मनाः १, ६३, ४; ८८८  
 सु - मनाः ३, ३५, ६; १२१७

अनुत्त - मन्थुः ७, ३१, १२; २२३४  
 आपान्त - मन्थुः १०, ८९, ५; ३२७६  
 प्राचा - मन्थु ८, ६१, ९; ५५६  
 शत - मन्थुः १०, १०३, ७; २६९७  
 सतीन - मन्थुः १०, ११२, ८; २७४२  
 प्र - मरः १०, २७, २०; २५१०  
 भ - मर्यः १, १२९, १०; १००९  
 स - मर्यः ५, ३३, १; १७१७  
 महा - महः ८, २४, १०; १७९९  
 बृद्ध - महाः ६, २०, ३; १८८६  
 स - महः ८, ७०, १४; २३३४  
 अभि - मातिषाहं १०, ४७, ३; २८४४  
 अभि - मातिहन्-हा ३, ५१, ३; १४३६  
 परस् - मात्रः ८, ६८, ६; २२९६  
 तुवि - मात्रः ८, ८१, २; ६७१  
 अनु - माद्यः ६, ३४, २; २०२२  
 सध - माद्यः ८, ३, १; १५६  
 प्रति - मानम् १, १०२, ८; ८३५  
 अनि - मान ६, २२, ७; १९१३  
 पुरु - मायः ३, ५१, ४; १४३७  
 भ - मित्रकतुः १, १०२, ६; ८३३  
 भ - मितौजाः १, ११, ४; ७३  
 भ - मित्रखादः १०, १५२, १; २८१४  
 भ - मित्रहन्-हा ६, ४५, १४; २०७३  
 भ - मिनः १०, ११६, १४; २७५८  
 प्र - मिनानः १०, २७, १९; २५०९  
 विश्व - मित्व ७, २८, १; २२०८  
 सम् - मिष्ठः ८, ६१, १८; ५६५  
 मन्थु - मी १, १००, ६; ९६२  
 सहस्र - मुक्कः ६, ४६, ३; २०९२  
 भ - मृक्तः ८, २, ३१; १४६  
 तुवि - मृक्षः ६, १८, २; १८५७  
 प्र - मृणन् १०, १०३, ६; २६९६  
 भ - मृतः ५, ३१, १३; १७०४  
 भ - मृधः ८, ८०, २; ६६२  
 वि - मृधः १, १५२, २; २८१५  
 सु - मृळीकः १, १३९, ६; १०४१  
 सु - यज्ञः २, २१, ४; १२२०  
 प्र - यज्युः ६, २१, १०; १९०५  
 उद् - यन्ता १, १७८, ३; १०९८

प्र - यन्ता ८, ९३, २१; २४५०  
 प्र - य [या] वयन् ३, ४८, ३; १४२१  
 स्व - यशस्तरः ३, ४५, ५; १४०८  
 ऋण - या ४, २३, ७; १५७२  
 भव - याता १, १२९, ११; १०१०  
 भ - वामन् ८, ५२, ५; ५१९  
 पूर्व - यावा ३, ३४, २; १३०२  
 रथ - यावाना ८, ३८, २; ३०९२  
 भ - यास्यः १, ६२, ७; ८७८  
 भवस् - युः ४, १६, ११; १४७७  
 भश्च - युः १, ५१, १४; ७५८  
 भस्म - युः १, १३१, ७; १०२७  
 ऋत - युः ८, ७०, १०; २३३४  
 गिर्वणस् - युः १०, १११, १; २७२५  
 गो [गव्] - युः १, ५१, १४; ७५८  
 रथ - युः १, ५१, १४; ७५८  
 वसु [सु] - युः १, ५१, १४; ७५८  
 वाज - युः ७, ३१, ३; २२२५  
 विश्व [ष्वा] - युः १, १२९, ४; १००३  
 वीर - युः ८, २२, २८; २४२४  
 श्रवस् - यु १, ५६, ६; ८०२  
 स्व - युः ३, ४५, ५; १४०८  
 सु भश्च - यु ८, ४५, ७; ४४९  
 हिरण्य - युः ७, ३०, ३; २२२५  
 भ - युजः ८, ६२, २; ५६७  
 पुरस् - युधः १, १३२, ६; १०३३  
 भ - युद्धसेनः १०, १३८, ५; २७९६  
 भ - युध्यः १०, १०३, ७; २६९७  
 सत्य - योनिः ४, १२, २; १५२३  
 पुरस् - योधः ७, ३१, ६; २२२८  
 सुते - रणः १०, १०४, ७; २७०९  
 वृष - रथ ५, ३६, ५; १७४८  
 सुख - रथः ५, ३०, १; १६८२  
 भ - रधः ६, १८, ४; १८५९  
 वि - रक्षिन् ३, ३६, ४; १३२६  
 सम् - रराणः ८, ३२, ८; १८७  
 सप्त - रश्मिः २, १२, १२; ११३३  
 एक - राज् - ट् ८, ३७, ३; १७७८  
 सम् - राज् - ट् ४, १९, २; १५२३

स्व - राज - २, ५१, १५; ७५९  
 ज्येष्ठ - राज: ८, १६, ३; ३८४  
 अनर्श - राति: ८, ९९, ४; २३७९  
 पिशाङ्ग - राति: ५, ३१, २; १६९४  
 मंहिष्ठ - राति: १, ५२, ३; ७६२  
 पूष - रातय: १, २३, ८; ३२४८  
 सत्य - राध: १, १०१, ८; ८२४  
 तुवि - राधा: ४, २१, २; १५४५  
 सु - राधा ४, १७, ८; १४९५  
 स्पर्ह - राधा. ४, १६, १६; १४८२  
 बृहत् - रि: १, ५८, १; ८११  
 प्र - रिक्का १, १००, १५; ९७१  
 अ - रिष्ट: ५, ३१, १; १६९३  
 अ - रीळ्ह: ४, १८, १०; १५१८  
 पुरु - रुच १०, १०४, ४; २७०७  
 तनू - रुचा (चौ) ७, ९३, ५; ३०७५  
 वलं - रुज: ३, ४५, २; १४०५  
 अ - रुतहनु: १०, १०५, २७; २७२०  
 अ - रुष: १, ६, १; २४  
 विश्व - रूप: ३, ३८, ४; १३४८  
 सु - रूपकृतु: १, ४, १; ४  
 बृहत् - रेणु ६, १८, २; १८५७  
 स्व - रोचि ३, ३८, ४; १३४८  
 अ - रेपसौ ५, ५१, ६; ३२३१  
 अधि - वक्ता १, १००, १९; ९७५  
 सु - वज्र: १, १००, १; ९७४  
 अन् - अ - वद्य. १, १२९, १; १०००  
 महा - वध: ५, ३४, २; १७२८  
 सम् - वनन ८, १, २; ८८  
 प्र - वया २, १७, ४; ११८४  
 स - वयस १, १६५, १; ३२५०  
 नि - वर. ८, ९३, १५; २४४४  
 वरुम - वर्चा: १, १७३, ४; १०५९  
 समान - वर्चसा १, ६, ७; ३२४६  
 हिरण्य - वर्ण: ५, ६८, २; १७५६  
 चन्द्र - वर्णा: १, १६१, १२; ३२६१  
 अप - वर्ता (गोनाम्) ४, २०, ८; १५४०  
 उक्थ - वर्धन: ८, १४, ११; ३६४  
 स्तोम - वर्धन. ८, १४, ११; ३६४  
 पुरु - वर्पा: १०, १२०, ६; २७६९

उद् - व [वा] वृषाण: ४, २०, ७; १५३९  
 भक्षित - वसु: ८, ४९, ६; ४२०  
 दिवा - वसु: ८, ३४, १; ४२५  
 पुरु [क] - वसु: १, ८१, ८; ९२३  
 रद [दा] - वसु: ७, ३२, १८; १२५२  
 वाजिनी - वसु: ३, ४२, ५; २३८६  
 विदद् - वसु: ३, ३४, १; १३०१  
 त्रिभा - वसु: ८, ९३, २५; २४५४  
 वृषन् - वसु ४, ५०, १०; ३३२३  
 सु - वहा ६, २२, ७; १९१३  
 अद्रोघ - वाक् ६, २२, २; १९०८  
 सनात् [नत्] - वाज: १०, ४७, ४; २८४५  
 सहस्र - वाजा: १०, १०४, ७; २७०९  
 अ - वात: ६, १८, १; १८५६  
 अद्र - वात: १०, ४७, ५; २८४६  
 अ-शस्त - वार. १०, ९९, ५; २६८४  
 पुरु - वार: ४, २१, ५; १५४८  
 भूरि - वार. १०, २७, २; २८४३  
 विश्व - वार: १, ३०, १०, ७०८  
 अ - वार्यकृतु: ८, ९२, ८; २४०४  
 हव्य - वाहन: १०, ११९, १३; २८६२  
 अह - वाहस्-हा: १, १०१, ९; ८२५  
 यज्ञ - वाहस्-हा: ८, १२, २०; ३०७  
 स्तोम - वाहस्-हा: ६, २३, ४; १९२१  
 अह - वाहस्तम: ६, ४५, १९; २०७८  
 उक्थ - वाहस् ८, २६, ११; २३५५  
 गिर - वाहस् १, ३०, ५; ७०३  
 बल - विज्ञाय: १०, १०३, ५; २६९५  
 गो - विद् ८, ५३, १; ५२५  
 वरिवस् - विद् १०, ३८, ४; २५०४  
 वसु - विद् ८, ६१, ५; ५५२  
 स्वर - विद् १, ५२, १; ७६०  
 अ - विदीधयु: ४, ३१, ७, १६३६  
 सु - विद्वान् ८, २४, २३; १८१२  
 सम् - विद्यान: १, १३०, ४; १०१४  
 अ - विहर्षकृतु: १, ६३, २; ८८६  
 अभि - वीर: १०, १०३, ५, २६९५  
 एक - वीर: १०, १०३, १; २६९२  
 पुरु - वीर: ६, २२, ३; १९०९  
 प्र - वीर: १०, १०३, ५; २६९५

मन्दन् - वीरः ८, ६९, १; २३०४  
 महा - वीरः १, ३२, ६; ७२०  
 विप्र - वीरः १०, ४७, ४; २८४५  
 मध - वीरः ६, २६, ७, १९५५  
 सु - वीरः ६, १७, १३; १८५३  
 सु - वृक्तिः १०, ७४, ५; २६३८  
 अ - वृकः ४, १६, १८; १४८४  
 अ - वृकतम १, १७४, १०; १०७८  
 म्व - वृज् १०, ३८, ५, २५४५  
 अ - वृतः ८, ३२, १८; १९७  
 महि - वृध ७, ३१, १०; २२३२  
 कवि - वृधः ८, ६३, ४; ५८१  
 नुद्य - वृधः [इया] ८, ४५, २; ४७१  
 सधा - वृधः ४, ३१, १, १६३०  
 साकम् - वृधा (धौ) ७, ९३, २; ३०७२  
 प्र - वृद्ध १, ३३, ३, ७३२  
 मद - वृद्धः १, ५२, ३, ७६२  
 यज्ञ - वृद्धः ६, २१, २; १८९८  
 सोम - वृद्धः ३, ३९, ७; १३६१  
 शृंग - वृषो नपान ८, १७, १३, ४०६  
 न - वेदाः ४, २३, ४ १५६९  
 विश्व - वेदा. ६, ४७, १२; २११०  
 सु - वेदाः ७, ३३, २५ २२५९  
 प्र - वेपनी ५, ३४, ८; १७३४  
 गायत्र - वेपाः ८, १, १०; ९६  
 उरु - व्यचा. ३, ५०, १, १४२९  
 विश्व - व्यचा ३, ४६, ४; १४१२  
 समुद्र - व्यचाः १, ११, १, ७०  
 घृत - व्रत. ६, १९, ५; १८७५  
 महा - व्रातः ३, ३०, ३, १२४०  
 उरु - शांसः ४, १६, १८; १४८४  
 तुवि - शग्मः ६, ४४, २; २०३७  
 अजान - शत्रुः ५, ३४, १; १७२७  
 अ - शत्रुः १, १०२, ८; ८३५  
 प्र - शर्भः ८, ४, १; २२९  
 बाहु - शर्षा १०, १३०, ३; २६९४  
 अप्रतिघृष्ट - शवाः १, ८४, २; ९३८  
 अ - शस्तवारः १०, ९९, ५; २६८४  
 अ - शस्त्रिहा ८, ८९, २, २३८५  
 सु - शस्त्रिः १०, १०४, १०; २७१२

पुरु - शाकः ३, ३५, ७; १५१८  
 सु - शिप्रः १, ९, ३; ५०  
 हिरि - शिप्रः ६, २९, ६; १९६७  
 नुवि - शुष्मः २, २२, १; १२२३  
 सत्य - शुष्मः १, ५१, १५ ७५९  
 गाध - श्रवाः ८, २, ३८ १५३  
 गृत् - श्रवा १, ६१, ५, ८६२  
 बृहन - श्रवाः १, ५४, ३; ७८८  
 सु - श्रवम्ममः १, १३१, ७, १०२७  
 सु - श्रवस्यः १, १७८, ४; १०९९  
 वन्दन - श्रुत् १, ५६, ७, ८०३  
 वि - श्रुत १, ६२, १; ८७२  
 मन - श्रुतः ३, ५२, ४; १४४९  
 सु - श्रुतः ३, ३६, १, १३२३  
 हवन - श्रुत ८, १२, २३, ३१०  
 आ - श्रुकर्णः १, १०, ९; ६६  
 प्र - सक्षिन् ८, ३२, २७; २७६  
 कव [वा] - सगः ५, ३४, ३ १७२९  
 मरुन् - सग्वा ८, ७६, २; ६२९  
 श्रावयन् - सग्वा ८, ४६, १२; १८२८  
 अप्रामि - सत्य ८, ६१, ४, ५५१  
 अभि - सत्त्वः १०, १०३, ५, २६९५  
 सतीन - सत्त्वा १, १००, १; ९५७  
 सत्य - सत्त्व ६, ३१, ५; २०१०  
 गो - मन [गोषण ४, ३२, २२, १६६६  
 सु - मनिता ८, ४६, २०, १८३६  
 त्वेष - सटक् ६, २२, ९; १९१५  
 सु - सटश. १, ८२, ३; ९२७  
 अ - समः ६, ३६, ४, २०३४  
 अ - समाति ओजा ६, २९, ६, १९६७  
 चतुः - समुद्रः १०, ४७, २; २८४३  
 सु - स-[ष]-व्यः ८, ३३, ५; २१४  
 अभिमाति - सह [पाह] १०, १०४, ७; २७०९  
 ऋति - सहः [ऋतीषह] ८, ४५, ३५; ४७७  
 चर्पणी - सहः ६, ४६, ६; २०९५  
 जनम् - सहः २, १, २३, १२१९  
 नृ - सहः [नृषाहः] ८, १६, १; ३८२  
 प्र - सहः [प्रसाहः] ८, १७, ४; १८४४  
 प्रा - सहः १, १२९, ४- १००३  
 विश्व - सहः [विश्वसाह] ३, ४७, ५; १४१८  
 तुरा - साह [तुराघाट] ३, ४८, ४; १४२२

पुरा - साह् [पुराषाट्] १०, ७४, ६; २६३९  
 पृतना - साह् [पृतनाषाट्] १, १७५, २; १०८०  
 प्र-भाशु - साह [षाट्] ४, २५, ६; २५९३  
 वृथा - साह् [षाट्] १, ६३, ४. ८८८  
 सत्रा - साह [षाट्] २, २१, २, ३; १०१८-२९  
 अभि - सा [षा] च ३, ५१, २; १४३५  
 धाम - साच: ३, ५१, २. १४३५  
 अश्व - सातमः १, १७५, ५ १०८३  
 लोक - साता ६, १८, ६; १८६१  
 नृ - साता ७, २७, १; २२०३  
 शूर - साता ७, ९३, ५. ३०७५  
 ऊर्ध्व - सान १०, ९०, ७ २६८६  
 ऋज - सान: ४, २१, ५. १५४८  
 पृदाकु - सानु: ८, १७, १५; ४०८  
 मन्द - सान: १, १०, ११. ३८  
 सु - सा: [षा:] ८, ७८, ४, ६५४  
 इन्द्र - सारथि ४ ४६, २. ३२२१  
 पुरु - निम्-सि [षि] च १, १०, ५; ६२  
 अ - सोढ [अषाळः।] २, २१, २; १०१८  
 सु - सु [षु] म् १०, १०४, ५; २७०७  
 सु-अभिष्टि - सुम्न: ६ २० ८, १८९१  
 अ - सुर १, ५५, ३ ७८८  
 शवस - सनु: १, ६२, ९; ८८०  
 सहस - सनु: ६, १८, ११; १८९६  
 सम - सृष्टजित् १०, १०३, २; २६९४  
 अयुद्ध - सेन १०, १३८, ५. २७२६  
 सर्व - सेन: ५, ३०, ३; १६८४  
 सु - स्तु [ष्टु:] १०, १०४, ५; २७०७  
 भरि - स्तु [ष्टु] त: ८, १, २२. १०८  
 पुरु - स्तु [ष्टु] तः १, ११, ४; ७३  
 सु - स्तु [ष्टु] तः १, १२९, ११. १०१०  
 सध - स्तुती ८, ३८, ४. ३०९४  
 सु - स्तु [ष्टु] ति ८, ९६, १२; २३५६  
 अ - निस्-स्तु [ष्टु] त: ८, ३३, २, २१८  
 अ - स्तृत: १, ४, ४; ७  
 पर्वते - स्था [ष्ठा:] ६, २२, २; १९०८  
 रथे - स्था: [ष्ठा:] १, १७३, ४, १०५९  
 वन्दने - स्था [ष्ठा:] १, १७३, ९; १०६४  
 चम्पुरे - स्था: [ष्ठा:] ३, ४३, १; १३९१  
 हरि - स्था. [ष्ठा:] ३, ४९, १. १४२५  
 पुरस् - स्थाता ८, ४६, १३; १८२९

ऋशु - स्थि [ष्ठी] र: ८, ७७, ८; ६४७  
 अनु - स्पष्टः १०, १६०, ४, २८२७  
 धन - स्पृत् ३, ४६, २; १४०६  
 दिवि - स्पृशा १, २३, २; ३२१३  
 मम् - सष्टा १०, १०३, ३; २६९४  
 यत - सुचा [चौ] १, १०८, ४; ३०११  
 अर्हति - स्व [ष्वा] नि: [गि:] १, ५६, ४: ८०८  
 तुषि - स्व [ष्वा] नि [गि:] २, १७, ६. ११८३  
 भ-प्र - हन् [हा] ६, ४४, ४; २०३९  
 अरुण - हन् [हा] १०, ११६, ४; २७५८  
 अशस्ति - हन् [हा] ८, ८९, २, २३८५  
 असुर - हन् [हा] ६, २२, ४, १९१०  
 अहि - हन् [हा] २, १९, ३; १२०१  
 इत्यु - हन् [हा] १, १००, १२, ९६८  
 पुर: - हन् [हा] ६, ३२, ३; २०१३  
 वृत्र - हन् [हा] १, १६, ८; ८५  
 सत्रा - हन् [हा] ४, १७, ८; १४९५  
 सप्त - हन् [हा] १०, ४९, ८; २५९७  
 अरुत - हनु: १०, १०५, ७; २७२०  
 अव - हन्ता ४, २५, ६; १५९३  
 वि - हन्ता १, १७३, ५, १०६०  
 वृत्र - हन्ता ४, २१, १०; १५५३  
 वृत्र - हन्तमः ५, ३५, ६, १७४१  
 अर - हरिस्वनि: १, ५६, ४, ८०८  
 सु - हव: ३, ४२, ३, १४२६  
 वि - हव्य: २, १८, ७, ११२६  
 रात - हव्याद्, ६९, ६, ३३११  
 इषु - हस्ता: १०, १०३, २ २६९३  
 वज्र - हस्ता: १, १७३, १०; १०६५  
 भद्र - हस्ता १, १०९, ४. ३०२४  
 महा - हस्ती ८, ८१, १, ८७०  
 सु - हार्द: ८, २, ५; १२०  
 प्र - हाकान् ४, २०, ८, १५४०  
 अ-प्र - हित: ८, ९९, ७; २३८२  
 पुरस् - हित: १, ५६, ३, ७९९  
 पुरु - हूत: १, ३०, १०; ७०८  
 अ - हृणान: १०, ११६, ७; २७११  
 प्र - हेता ८, ९७ ७; २३८२  
 अवयात - हेळा: १, १७१, ६, ३२६८  
 अ - हेळमान: ६, ४१, १; १९९३  
 अ - हव: ८, ७०, १३; २३३३



# दैवत-संहिता ।

( ३ )

## सोमदेवता ।

सम्पादक

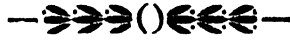
भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,  
स्वाध्याय-मण्डल, औंध ( जि० सातारा )

संवत् १९९९, शके १८६४, सन् १९४२



मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवलेकर, B. A  
स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, भौध ( जि० सातारा )

# सोमदेवता का परिचय ।



## अमरकोश में सोम ।

सोम के नाम अमरकोश में निम्नलिखित दिये हैं—

हिमांशुः चन्द्रमाः चन्द्रः इन्दुः कुमुदवान्धवः १३  
विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुः ओषधीशः निशापतिः ।  
अञ्जः जैवातृकः सोमः ग्लौः मृगांकः कलानिधिः १४  
द्विजराजः शशधरः नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।

( अमरकोश १३ )

ये बीस नाम सोम के अर्थात् 'चांद' के दिये हैं । तथा इसी कोश में 'वत्सादिनी, छिन्नरुहा, गुडूची, तंत्रिका, अमृता, जीवंतिका, सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी' ( अमर० २।४।८३ ) ये नौ नाम सोमवल्ली के दिये हैं । पर ये गुडूची नामक वल्ली जो वृक्षोंपर उगती और बढ़ती है, उस वल्ली के हैं । इसको मराठी में 'गुळ-वेल' और हिंदी में 'गुडच' बोलते हैं ।

इन नामों में 'जीवंतिका, अमृता' ये नाम इसमें जीवनीय गुण हैं, इस बात के सूचक हैं । यह गुण सोम में है, इसलिये सोम के और इन के अर्थ समान हैं । सोम के ऊपर दिये नामों में 'जैवातृकः' में दीर्घ जीवन का भाव है और 'सुधांशु' ( सुधा-अंशु ) अमृत किरणवाला इसमें अमृत का भाव है । इस तरह गुडच के ये नाम और सोम के—चांद के ये नाम सदृशार्थक हैं ।

इन नामों में अमरकोश में दिये नाम चन्द्रमा के ( चांद के ) हैं, सोम औषधि के नहीं, तथा जो सोमवल्ली के नाम अमरकोश में हैं, वे भी सोम औषधि के नहीं । अर्थात् अमरकोश के समय सोम औषधि का कोई महत्त्व नहीं रहा था । अथवा वह सोमवल्ली मिलती नहीं होगी । सोम का महत्त्व चरक सुश्रुत के समय था । क्योंकि चरक सुश्रुत में सोम औषधिका अच्छा वर्णन है, पर उस वल्ली के लिये अमरकोश में स्थान भी नहीं है ।

जो चन्द्रमा के नाम ( चांद के नाम ) अमरकोश में हैं, वे साक्षात् अथवा भावार्थ से वेद में आये सोमवल्ली के

नामों के समान ही अर्थवाले हैं । यह एक बड़ा भारी विचार करनेयोग्य विषय है, जिसे हम यहाँ संक्षेप से देते हैं । अमरकोश में दिये चांद के नाम वेद में सोम-वल्ली के लिये प्रयुक्त हुए नाम ही हैं—

१ सोम— यह नाम वेद में सोम औषधि के लिये है जैसा—

'सोमो वीरुधामधिपतिः ।'

( अथर्व. ५।-४।७ )

'अपाम सोमं०' । ( ऋ. १।४।८।३ )

२ इन्दुः— यह नाम वेद में सोमवल्लीका है, जैसा—  
'इन्द्राय इन्दो परिस्त्रव ।'

( ऋ० ९।११२-११३ )

'इन्दुः पुनानः ।' ( ऋ० ९।१०९।३ )

'सोम' और 'इन्दु' ये दो नाम अनेक वार सोम-वर्णन में वेद में प्रयुक्त हुए हैं । वैसे अन्य नाम नहीं, पर अन्य नाम भी अर्थ के द्वारा वेद में हैं—

३. द्विजराजः— 'सोमराजानो ब्राह्मणाः ।

( तै० ब्रा० १।७।४।२; १।७।६।७ )

'सोमो अस्माकं ब्राह्मणानां राजा ।'

( वा. यजु. ९।१०; १०।२।८; श. ब्रा. ५।४।२।३ )

ब्राह्मणों का ( द्विजों का ) राजा सोम है । इस तरह द्विजराज शब्द यजुर्वेद वाज० सहिता के तथा ब्राह्मणों के वर्णन से सिद्ध होता है ।

४. अंशु— उक्त शब्दों में 'हिमांशु, सुधांशु, शुभ्रांशुः' में 'अंशुः' शब्द है, वेद में यह 'अंशु' पद सोम औषधि का वाचक है । उदाहरण— 'अंशुं दुहन्ति' ( ऋ० ५। ७।२।६ ) 'अंशुं दुहन्ति उक्षणं गिरिष्ठा'

( ऋ० ०।०।१४ )

५ चन्द्रः- ऋग्वेद में 'पवमानस्य जंघतो हरेः चन्द्रा असृक्षत' ( ऋ० १।६६।२५ ) में 'चन्द्र' पद सोमवाचक है। ( पवमानस्य हरेः ) छानने जानेवाले हरे रग के सोम के ( चन्द्रा ) चमकनेवाले प्रवाह प्रवाहित होते हैं। यह सोम का वर्णन है। सोम की धाराएँ चमकती हैं, यह वर्णन सोम का है और वह 'चन्द्र' शब्द से हुआ है।

६. ओषधीशः- ऋग्वेद में १।१।४।२ में इस अर्थ का वर्णन है। 'सोमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधां पतिः। यहां के 'वीरुधां-पतिः' और 'ओषधीश' का अर्थ एक ही है। 'वीरुधां अधिपतिः' ( अथर्व० ५।२४।७ )

७. अब्जः- ऋ. १. ६।१० में सोमको 'सिन्धुमातर' कहा है। सिन्धु के 'जल से उत्पन्न' यह इसका अर्थ है और वही 'अब्ज' पद का अर्थ है। ऋ० १।६।२।४ में 'अप्सु दक्षो गिरिष्ठाः' कहा है। पर्वत पर जलस्थान में बलवर्धक सोम रहता है, ऐसा वर्णन है। तथा ऋ० १।८।५।१० में 'अप्सु द्रुपंसं वावृधानं' अर्थात् 'जलोंमें बढने-वाला सोम है' ऐसा कहा है। इस तरह का वर्णन 'अब्ज' पद का भाव ही बताता है।

८. जैवातृकः- इस पद का अर्थ 'जीवनवर्धक' है। जो दीर्घ जीवन बनाता है। यह भाव 'जीवसे' शब्द से सोम के वर्णन में वेद में है- ( ऋ. १।६६।३० में ) 'यस्य ते युञ्जवन् पयः पवमान आभृतं दिवः। तेन नो मृड जीवसे ॥' सोमका तेजस्वी रस स्वर्ग से ( आकाश से, पहाड़ की चोटी से ) लाया है, उससे ( नः जीवसे ) हमारा दीर्घ जीवन कर और हमें ( मृड ) सुखी कर।' यहां सोम का जीवनीय गुण

बताया है। ऋ. १।११।०।११ में 'इन्दुः वयोधाः' सोमरस दीर्घ आयु देनेवाला है, ऐसा कहा है। इस वर्णन में जीवनीय भाव स्पष्ट है।

९. कलानिधिः- यह भाव 'इन्दु' का ( ऋ. १।११।२ ) सूक्त के चारों मंत्रों में है। यह बात इसी भूमिका के अन्त में बतायी है। वहां पाठक अवश्य देखें।

१०. सुधांशुः- 'सुधा' का अर्थ 'अमृत' है। यह अमृत शब्द वेद में सोम के लिये आता है। 'दिवः पीयूषं सोमं' ( ऋ. १।५।१।२, १।११।०।८ ) यहां पीयूष शब्द सोमके लिये आया है, जो अमृत और सुधा का वाचक है। ऋ. १।९७।३२ में 'शुक्रो भासि अमृतस्य धाम' मंत्र में सोम को 'अमृत का धाम' कहा है। 'अमृत' सुधावाचक ही पद है, वैसा ही 'पीयूष' भी है।

११. शुभ्रांशुः- ऋ १।६६।२।६ में 'पवमानः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः' कहा है। ऋ. १।६३।२।६ में 'शुभ्राः अस्त्रमिन्दवः' तथा ऋ. १।६३।५ में 'शुभ्रं अन्धः' ये सोम के वर्णन हैं। इनमें यह सोम 'शुभ्र' है, ऐसा ही कहा है। वही भाव 'शुभ्रांशु' पद का है।

१२. मृगांकः- सोम को मृग की उपमा ऋग्वेद १।३।२।४ में 'मृगो न तक्तो' और १।९।२।६ में 'मृगो न महिषो वनेषु।' इन मंत्रों में दी है। मृग के साथ साम्य यहां बताया है। वही साम्य चन्द्र पर के मृगचिह्न में है।

इस तरह अमरकोश के लौकिक संस्कृतमें आये 'चांद' वाचक बीस नामों में से तीन नाम तो स्पष्ट ही वेद में सोमऔषधिवाचक हैं और नौ नाम अर्थ की अथवा उपमा की दृष्टि से आये हैं, यह बात ऊपर बतायी है।

शेष नामों में 'हिम, कुमदबांधव, विधु, निशापति, लौ, चाशधर, नक्षत्रेश, क्षपाकर' इन आठ नामों का

सम्बन्ध वेद में देखने में हमें अभी तक सफलता नहीं हुई । तथापि इन में से चारपाँच नामों का सम्बन्ध वेद में दोख सकता है, ऐसी हमें आशा है । अब अन्यान्य कोशों में चान्द के अन्यान्य जो नाम आते हैं, उनका विचार करते हैं—

शाशी, हिमश्रुतिः ( शब्दार्णव ) ये नाम अधिक हैं, पर इन का भाव पूर्व नामों में है । तथा संस्कृत भाषा की चना ऐसी है कि, और भी नाम बनाये जा सकते हैं । अतः इस तरह बनाये जानेवाले नामों का विचार करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है ।

### निघण्टु में सोम ।

निघण्टु में 'पद्' नामों में ( ४-२ में ) सोमो अक्षाः, ( ४-३ में ) सोमानम्, ( ५-५ में ) सोमः, ये तीन नाम दिए हैं । 'पद्' नामों में ये नाम रखे गए हैं, इसलिए निघण्टुकार इन का अर्थ कुछ भी नहीं देते हैं । अतः निघण्टु में 'सोम' का अर्थ निश्चित नहीं है । निघण्टु के इन पदों के अर्थ निरुक्त में दिए हैं, अतः हम अब इनका निरुक्त देखते हैं । निरुक्तकार इस तरह कहते हैं—

### निरुक्तमें सोम ।

' आ तु षिञ्च हरिमी द्रोणुपस्थे वाशीभिस्त-  
क्षताश्मन्मयीभिः ॥ ( ऋ० १०।१०।१० )

' आसिञ्च हरिं द्रोणुपस्थे द्रुममयस्य । हरिः  
सोमो हरितवर्णः । अयमर्पातरो हरिरेतस्मा-  
देव । वाशीभिस्तक्षताश्मन्मयीभिः, वाशीभि-  
रश्ममयीभिरिति वा, वाग्भिरिति वा । '

( निरु० नै० ४।३।१९ )

' ( ई हरि ) इस सोम को ( द्रो. उपस्थे आसिञ्च )  
लकड़ी के बर्तन में सिञ्चित करो, ( अश्मन्मयीभि वाशीभिः  
नक्षत ) और पाषाण से निर्मित खरल से उसको कूटो । '

यहाँ हरि पद् सोम औषधि का वाचक है, क्योंकि यह औषधि हरे रंग की होती है । इस तरह निरुक्तकार सोम का नाम ' हरि ' है, ऐसा कहकर, वह औषधि हरे रंगकी है, ऐसा भी कहते हैं । वह सोम वनस्पति लकड़ी के फटेपर रखकर पत्थरों से कूटी जाती है, ऐसा भी यहाँ कहा है । और भी देखिए—

' न यस्य द्यावापृथिवी न धन्व नान्तरिक्षं  
नाद्रयः सोमो अक्षाः । ' ( ऋ० १०।८।१६ )  
अश्रोतेरित्येवमेकं । 'अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः ।  
सोमो दुग्धाभिरक्षाः । ' ( ऋ० १।१०।७।९ )  
क्षियतिनिगमः पूर्व, क्षरतिनिगम उत्तर-  
इत्येके । अनूपे गोमान् गोभिर्यदा क्षियत्यथ  
सोमो दुग्धाभ्यः क्षरति । सर्वे क्षियतिनिगमा  
इति शाकपूणिः ॥ ( निरु० ५।१।३ )

' जिसके पास द्युलोक, पृथ्वी, मरुदेश, अन्तरिक्ष अथवा पर्वत नहीं पहुँच सकते, पर सोम ही ( अक्षाः ) पहुँचता है । यहाँ ' अक्षा ' रूप ' अश् ( अश्रुति ) का है, ऐसा कई कहते हैं । ( अनूपे ) उत्तम जलवाले देश में ( गोमान् गोभिः अक्षाः ) गौओका स्वामी गौओके साथ जाकर निवास करता है और ( सोम ) सोमरस ( दुग्धाभिः अक्षाः ) दुही हुई गौओ के दूध के साथ मिला दिया जाता है । यहाँ पहिली ' अक्षा ' क्रिया ' क्षि ( निवासे ) ' इस धातु से बनी है और दूसरी ' क्षर ( सचलने ) ' धातु से बनी है । जलपूर्ण देश में गौरक्षक जब रहता है, तब सोम गोदुग्धके साथ मिलाया जाता है । शाकपूणि ऋषिके मत से ' अक्षाः ' क्रियाका सर्वत्र अर्थ निवास करना ही है ।

यहाँ गोदुग्ध के साथ साथ सोम मिलाया जाता है, यह बात कही है । और देखिए—

' सोमानं 'का अर्थ ' सातारं ' अर्थात् ' सोमका रस निकालनेवाला ' बताया है । ( निरुक्त० नै० ६।३।१० )  
आगे निरुक्त में

' औषधिः सोमः सुनांतेः यदेनमभिषुण्वन्ति । '  
( निरु० १।१।२२ )

' सोम औषधि है, जिस का रस निकाला जाता है । निरुक्त में सोम का इतना ही आशय दिया है । सोम का अर्थ चन्द्र आदि जो निरुक्त ने बताया है, वह अन्यत्र भी है । निघण्टु में जो सोमवाचक तीन पद दिए हैं, उन के अर्थ जो निरुक्तकारने दिये हैं, वे ये हैं । अब हम ब्राह्मण-ग्रन्थों में दिए सोम के अर्थ देखते हैं—

### ब्राह्मण-ग्रन्थों में सोम ।

स्वा वे म एषेति तस्मात्सोमो नाम ।

( शं० ब्रा० ३।१।४।२२ )

- ज्योतिः सोमः ।  
 ( श. ब्रा. ५।१।२।१०, ५।१।५।२८ )
- श्रीर्वै सोमः । ( श. ब्रा. ४।१।३।९ )
- सोम राज्यं । ( श. ब्रा. १।१।३।३३ )
- राजा वै सोमः । ( श. ब्रा. १।४।१।३।१२ )
- सोमो राजा राजपति । ( तै. ब्रा. २।५।७।३ )
- सोमो राजा चंद्रमाः ॥ ( कौ. ब्रा. ४।४; ७।१०,  
 श. ब्रा. १।०।४।२।१ )
- वृत्रो वै सोम आसीत् । ( श. ब्रा. ३।४।३।१३;  
 ३।९।४।२, ४।२।५।१।५ )
- पितृलोकः सोमः । ( कौ. ब्रा. १।६।५ )
- पितृदेवत्यो वै सोमः । ( श. ब्रा. २।४।२।१।२;  
 ३।२।३।१७, ४।४।२।२ )
- संवत्सरो वै सोमः पितृमान् । ( तै. ब्रा. १।६।८।२;  
 १।६।१।५ )
- संवत्सरो वै सोमो राजा । ( कौ. ब्रा. ७।१० )
- ऋतवो वै सोमस्य राज्ञो राजभ्रातरः ।  
 ( ऐ. ब्रा. १।१३ )
- सोमो हि प्रजापतिः । ( श. ब्रा. ५।१।५।२।६;  
 ५।१।३।७ )
- श्येनोऽसीति सोमं आह । ( गो. पू. ५।१२ )
- सोमो राजा अप्सरसो विशः ।  
 ( श. ब्रा. १।३।४।३।८ )
- विष्णुः सोमः । ( श. ब्रा. ३।३।४।२।१, ३।६।३।१९ )
- वायुः...सोमः । ( श. ब्रा. ७।३।१।१ )
- सम्राडसीति सोमं...आह । ( गो. पू. ५।१३ )
- सोमः सर्वा देवताः । ( श. ब्रा. १।६।३।२।१;  
 ऐ. ब्रा. २।३ )
- सोमो वा इन्दुः । ( श. ब्रा. २।२।३।२।३; ७।५।२।१।९ )
- सोमो रात्रिः । ( श. ब्रा. ३।४।४।१।५ )
- सोमो वै पर्णः । ( श. ब्रा. ६।५।१।१ )
- सोमो वै पलाशः । ( कौ. ब्रा. २।२; श. ब्रा.  
 ६।६।३।७ )
- पशुः वै...सोमः । ( श. ब्रा. ५।१।३।७; १।२।७।२।२ )
- सोमो वै दधि । ( कौ. ब्रा. ८।९ )
- स्वरोऽस्मीति सोमं आह । ( गो. पू. ५।१४ )
- यजमानः... सोमः । ( तै. ब्रा. १।३।३।५ )
- वर्चः सोमः । ( श. ब्रा. ५।२।५।१०-११ )
- सोमो वै भ्राद् । ( श. ब्रा. ३।२।४।९ )
- क्षत्रं सोमः । ( ऐ. ब्रा. २।३।८, कौ. ब्रा. ७।१०, ९।५;  
 १०।५, १।२।८; श. ब्रा. ३।४।१।१०,  
 ३।९।३।३।७; ५।३।५।८ )
- यशो वै सोमः । ( श. ब्रा. ४।२।४।९, ऐ. ब्रा. १।१३;  
 तै. ब्रा. २।२।८।८ )
- यशो वै सोमो राजा अन्नद्यम् । ( कौ. ९।६ )
- प्रजापतेर्वा एते अन्धसी यत्सोमश्च सुरा च ।  
 ( श. ब्रा. ५।१।२।१० )
- अन्नं सोम । कौ. ब्रा. ९।६, श. ब्रा. ३।३।४।२।८;  
 तां ब्रा. ६।६।१; श. ब्रा. ३।९।१।८  
 ७।२।२।११, तै. ब्रा. १।३।३।२ )
- हविर्वै देवानां सोमः । ( श. ब्रा. ३।५।३।२ )
- हरिः...सोम । ( श. ब्रा. १।२।८।२।१२ )
- प्राणः सोम । ( श. ब्रा. ७।३।१।२, ४।५. तां. ब्रा.  
 ९।९।१-५, कौ. ब्रा. ९।६ )
- रेतः सोम । ( कौ. ब्रा. १।३।७; तै. ब्रा. २।७।४।१,  
 श. ब्रा. ३।३।२।१, ३।३।४।२।८;  
 ३।४।३।११ )
- सोमस्य प्रिया तन् . सुवर्णं ।  
 ( तै. ब्रा. १।४।७।४-५ )
- शत्रुः सोमः । ( तां. ब्रा. ६।६।९ )
- सोम इव गंधेन ( भृयासं ) । ( म. ब्रा. २।४।१।४ )
- रसः सोम । ( श. ब्रा. ७।३।१।३ )
- सर्वं हि सोमः । ( श. ब्रा. ५।५।४।१।१ )
- गिरिषु हि सोमः । ( श. ब्रा. ३।३।४।७ )
- सोमो वै राजौषधीनाम् । ( कौ. ब्रा. ४।१२; तै. ब्रा.  
 ३।९।१।७।१ )
- सोमराजानो ब्राह्मणा । ( तै. १।७।४।२; १।७।१।७ )
- सोमो वै ब्राह्मणः । ( तां. ब्रा. २।३।१।६।५ )
- प्रतीची दिक् । सोमो देवता । ( तै. ब्रा. ३।१।१।५।२ )
- उत्तरा ह वै सोमो राजा । ( ऐ. ब्रा. १।८ )
- सोमः पयः । ( श. ब्रा. १।२।७।३।१३ )
- आपः सोमः सुतः । ( श. ब्रा. ७।१।१।२।२ )

आपो हि...सोमस्य लोकः ( श. ब्रा. ४।४।५।२१ )

वैराजः सोमः । ( ऋ. ब्रा. १।६; श. ब्रा. ३।३।२।१७  
३।१।४।१९ )

पुमान् वै सोमः स्त्री सुरा । ( तै. ब्रा. १।३।३।४ )

सौमायनो बुध । ( ता. ब्रा. २।४।१।८।६ )

प्रजापति सोमाय राक्षे दुहितरं प्रायच्छत्  
सूर्या सावित्रीम् । ( ऐ. ब्रा. ४७ )

दीक्षा सोमस्य राज्ञः पत्नी । ( गो. उ. २।९ )

पूर्वलिखित ब्राह्मणग्रन्थों के वचनों से सोम के ये अर्थ  
दीखते हैं— ज्योति, श्री, राज्य, राजा, राजपति, चन्द्रमा,  
वृत्र, पितृलोक, पितृदेवता, सवस्वर, प्रजापति, इधेन, विष्णु,  
वायु, सम्राट्, संपदेवता, इन्दु, रात्री, पर्ण ( पत्ता ),  
पलाश, पशु, दही, स्वर, यजमान, वर्च ( तेज ), आट्  
( तेज, प्रकाश ), क्षत्र, यज्ञ, अन्न, हवि, प्राण, रेत,  
सुवर्ण, शुक्र, रस, सर्व ( सब कुछ ), ब्राह्मण, दूध, जल ये  
इतने सोम के अर्थ हैं ।

इसके अतिरिक्त सोमके विषय में निम्नलिखित बातें  
उक्त वचनों में कहीं हैं— ( १ ) ऋतु सोम के भाई है,  
( २ ) सोम राजा है और उसकी प्रजाएं असुराए हैं, ( ३ )  
सोम ओषधियोंका राजा है, ( ४ ) ब्राह्मणों का राजा  
सोम है, ( ५ ) सोम ब्राह्मण ही है, ( ६ ) आप् ( जल )  
सोम का स्थान है, ( ७ ) सोम और सुरा भाईबहिन  
हैं, ( ८ ) बुध सोम का पुत्र है, ( ९ ) प्रजापतिने सोम-  
राजा को अपनी पुत्री सूर्यासावित्री दी थी, ( १० ) सोम  
की पत्नी दीक्षा है । ( ११ ) उत्तर दिशा का सोम राजा  
है, ( १२ ) पश्चिम दिशा सोम की दिशा है । ( १३ )  
सोम का राज्य वैराज्य है । इत्यादि बातें यहाँ कही हैं ।  
इन का संबंध और आशय ब्राह्मणग्रन्थों को देखकर और  
विचार कर छूटकर निकालना चाहिए ।

सोम का अर्थ ' स + उमा ' ( उमया ब्रह्मविद्या  
सहितः सोमः ) विद्या, ब्रह्मविद्या से जो युक्त, इन विद्याओं  
में जो प्रवीण है, वह सोम कहलाता है । यह भी एक  
सोम है । इस सोम का ज्ञानरस विद्यार्थी या ब्रह्मचारी  
प्राप्त करते और वे ही सेवन करते हैं ।

सोम परमात्मा है, उससे अमृतरस प्राप्त होता है, जो जीव-  
न्मुक्त अथवा मुक्त होते हैं, वे इस सोमरसका सेवन करते हैं ।

इस तरह अन्यान्य अर्थ विचार करनेवाले पाठक स्वयं  
जान सकते हैं, इन अर्थों का बतानेवाला मंत्रभाग सोम के  
इन मंत्रों में पाठक देख सकते हैं ।

उक्त सत्र अर्थों में मुख्य अर्थ और गौण अर्थ इस तरह  
भेद करना चाहिए । सोमरस अन्न है, वह वीर्यवर्धक, रेत  
बढानेवाला, बल, भोज, तेज की वृद्धि करनेवाला है, इस  
तरह इनकी सगति लगायी जा सकती है । दूध और दहीके  
साथ मिलाकर यह सोम पिया जा सकता है, इत्यादि  
बातें इस सगति से मालूम होंगी ।

### सोम के उत्पत्तिस्थान ।

पर्वतों पर के त्रलयुक्त स्थलों में शायद सोम की पैदा-  
इश होती होगी । इसी कारण से उसे ' पर्वतावृध्,  
गिरिष्ठा ' कहते थे । मौजवत्, शर्यणावत्, आर्जी-  
कीया, सुपोमा तथा सिन्धु स्थानों में सोम की उत्पत्ति  
होती थी ।

साधारण रूप से यो उल्लेख पाया जाता है कि, उपरि-  
निर्दिष्ट स्थलोंमें सोम का जन्म हुआ करता है, परन्तु यद्यपि  
सभी स्थानों के बारे में निश्चिन रूप से नहीं कहा जा  
सकता है, तो भी निस्सन्देह बहुतसी जगह पर्वतों एवं  
नदियों से निगडित है । हिमालय का ही एक विभाग  
' मूजवान् ' नाम से विभ्रुत है और तैत्तिरीय आरण्यक  
में दी हुई ' शर्यणावत् ' की चहारदीवारी से ज्ञात  
होता है कि, हिमालय की तराई में तथा कुहक्षेत्र के ऊपरी  
विभाग में शर्यणावत् नामक एक झील विद्यमान था ।  
' आर्जीकीया ' तथा ' सुपोमा ' तो स्पष्टतया नदियाँ  
हैं । ये भी पंजाब के पार्वतीय प्रान्त में ही थीं । कह नहीं  
सकते कि, वर्तमानकाल में ये नदियाँ किम नाम से  
विख्यात हैं ।

### द्युलोक तथा सोम ।

द्युलोक से पर्जन्यद्वारा सोम भूलोकपर आता है, ऐसा  
वर्णन बहुधा दीख पडता है और इस का अर्थ अनेक  
स्थलोंपर यों किया जाता है कि, ऊँची जगह लटका कर  
रखी हुई छलनी से सोम धाराप्रवाही रूप में नीचे आ  
गिरता है । सोम के विषय में कहा है कि, प्रारभ में वह  
द्युलोक में था और पश्चात् वह भूमिपर उतर आया ( ९-

६१-१० ) दिव पुत्र- दिवः शिशुः नाम उसे दिया गया है । एक जगह उसे पर्जन्यपुत्र कहा है ( ९-८२-३ ) । सच पूछा जाय, तो सोम का शुलोक से संबंध उस का पर्वत की चोटीपर होना सिद्ध करता है । पर्वत की चोटी आकाश में होती है, वहां से यह लाया जाता है ।

### सोम का स्थान ।

सोम पर्वतपर होता है, यह बात निम्नलिखित मंत्र में कही है-

परि सुवानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षा ।

( ऋ० ११८।१ )

' ( गिरि-स्था. ) पर्वतपर रहनेवाले सोमका रस छाननेके के लिए ( पवित्र ) छाननीपर रक्ता है । '

यहां ' गिरि-स्थाः ' यह सोम का विशेषण घताना है कि सोम पर्वतपर रहता है । हिमवान् के मौजवान् पर्वतपर सोमवह्नी उगती है, इसलिए ' मौजवान् सोम ' कहते हैं ।

एतं उ त्वं दश क्षिपो मृजन्ति सिंधुमातरं ॥

( ऋ० १।६१।७ )

' उस ( सिंधु-मातरं ) सिंधुनदी के पुत्र सोम को दश अगुलियों पीस कर रस निकालती हैं । ' इस मन्त्र से पता लगता है कि, सिंधु के पाम सोमवह्नी का स्थान है ।

असावि अंशुः मदाय अप्सु दक्षो गिरिष्ठाः ।

( ऋ १।६२।८ )

' पर्वतपर रहनेवाला सोम ( दक्ष ) बलवर्धक है, वह ( अप्सु ) जलस्थान में भी होता है, यह ( मदाय ) हर्ष बढ़ाता है । इस ( अंशु ) सोम का ( असावि ) रस निकालते हैं । ' तथा--

परि द्युक्षं सहसः पर्वतावृधं । ( ऋ १।७१।४ )

' यहाँ सोम को ( पर्वत-वृधं ) पर्वत पर उगनेवाला और ( द्यु-क्षं ) आकाश में रहनेवाला कहा है । ' अर्थात् ऊंची से ऊंची पहाड़ की चोटी पर जो सोम उगता है, वह श्रेष्ठ है । हिमालय की १६०००फीट से ऊंचे स्थान पर जो सोम मिलता है, वह उत्तम है, १२०००फीट से ऊंचे स्थान पर जो मिलता है, वह मध्यम और इससे कम ऊंचाई पर मिलनेवाला कनिष्ठ समझा जाता है । आज भी यह सोम

मिलता है, इसकी इसी तरह उत्कृष्टता समझी जाती है ।

राजा सिन्धूनां अवसिष्ट वासः । ( ऋ. १।८१।२ )

' सिन्धुओं का वस्त्र ( राजा ) सोम राजाने परिधान किया है । ' यहाँ सपूर्ण सिन्धुसरितों के मध्य प्रदेश में अर्थात् पहाड़ों पर सोम होता है, ऐसा भाशय कदाचित् होना संभव है ।

शर्यणावति सोमं इन्द्रः पिबतु वृत्रहा ॥ १ ॥

आर्जीकात् सोम मीदव ॥ २ ॥

( ऋ. १।११३।१-२ )

शर्यणावती नदी के पाम, तथा ऋजीक के स्थान के पास ' सोम ' होता है । यहा विचार करना चाहिये कि, क्या सोम के स्थान का निर्णय करने के लिये ये दो पद सहायक हो सकते हैं ?

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः । ( अथर्व. ३।२७।४ )

' उत्तरदिशा का अधिपति सोम है ' इससे सोम उत्तर दिशा में है, ऐसा प्रतीत होता है । उत्तरदिशा में हिमालय में सोम है ।

### पर्वत पर सोम ।

यह सोम पहाड़ पर होता है, इस विषयमें कहा है—  
परि सुवानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमः ।

( ऋ १।१८।१ )

असावि अंशुर्मदाय अप्सु दक्षो गिरिष्ठाः ।

( ऋ. १।६२।४ )

वेना दुहन्ति उक्षणं गिरिष्ठां । अप्सु द्रप्सं ॥

( ऋ. १।८५।१० )

अंशं दुहन्ति उक्षणं गिरिष्ठां । ( ऋ. १।९५।४ )

यह सोमवह्नी ( गिरि-स्थः ) पहाड़ों पर होती है, उसको पर्वत मे लाकर उसका रस निकालते हैं, तथा—

पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे । ( ऋ. १।८२।३ )

' इस ( महिषस्य पर्णिनः ) पत्नीवाले बलशाली सोम का पिता पर्जन्य है और ( गिरिषु क्षयं ) पर्वतों पर इस का निवास है । ' इससे सोम पर्वतों पर होता है, यह सिद्ध है और इसको ' दिव्य ' कहा है, इसलिये कि यह ऊंचे पर्वतों के शिखरों पर होता है ।

### पत्तों के साथ सोम ।

सोमवह्नी पत्तों के साथ होती है, ऐसा वर्णन कई मंत्रों में दीखता है—

सोमो वीरुधां अधिपति । ( अथर्व ५।२४।७ )  
दिव्याः सुपर्णाः मधुमन्त इन्द्रवो मदिन्तमासः  
परि कोशमासते । ( ऋ. १।८६।१ )  
दिवः सुपर्णो अव्यथिर्भरत् ॥ ( ऋ. १।४८।३ )  
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षत क्षां सोमः ( ऋ. १।७१।९ )  
नाके सुपर्ण उपपत्तिवासं ॥ ( ऋ. १।८५।११ )  
युजान इन्द्रो हरितः सुपर्ण्यः ॥ ( ऋ. १।८६।३७ )  
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि सोम ॥ ( ऋ. १।९७।३३ )  
सोमस्य पर्ण सह उग्रं आगन् । ( अथर्व. ३।५।४ )

इतने मंत्रों में यह ( सोमः इन्द्रुः ) सोमवह्नी ( हरितः सुपर्ण ) हरे रंगवाली सुन्दर पत्तोंवाली होती है, तथा यह ( दिव्यः = दिवि भव ) पहाडकी चोटीपर, जैसी कि स्वर्ग में होने के समान उच्च गिरिशिखरपर, होती है, ऐसा कहा है ।

### सोम का वर्ण ।

कुछ कुछ हरा, तनिक सौवला और लालिमायुक्त ऐसा भौंति भौंति का वर्णन किया हुआ है, तथा इसे सुपर्ण नाम भी दिया गया है, जिस से अनुमान किया जा सकता है कि, वह अच्छे पत्तों से युक्त होगा । उसी प्रकार ऐसा भी बखान किया है कि, वह तिनकों से पूर्ण रहता है । हरित शब्द से बहुधा उस के रंग का वर्णन किया हुआ है ।

### सोम में विद्यमान गुण ।

सोम की सराहना करते समय बतलाया है कि, उस में भौंति भौंति के गुण छिपे पड़े हैं । इन सब गुणों में उल्साह एवं उमंग बढ़ाने की उस की शक्ति प्रमुखतया प्रेक्षणीय है । युद्धों में अनिवार्यतया उस का उपयोग किया जाता था । एक बार सोमरस का सेवन कर चुकनेपर इन्द्र को किसी से भी परास्त होने की संभावना नहीं रहा करती थी । अन्य देवतागण भी यथोचित सोमरस का पान करते थे । साधारणतया वर्णन पढ़ने से प्रतीत होता है कि सोमरस का पान करना, वैदिक समय अतिसामान्य बात

थी । विशेषतया युद्ध के अवसरपर आवंश एवं जोशीला भाव पैदा करने के लिए सोम का प्रमुख उपयोग किया जाता था । सोमरस में बुद्धि बढ़ाने की भी क्षमता थी, इस का यत्रतत्र वर्णन किया हुआ पाया जाता है । सोम का पान कर लेनेपर उमंग एवं उल्साह की मात्रा बढ जाती थी और प्रतिभा का नवनवोन्मेष प्रतिपल प्रस्फुटित हुआ करता था । वक्तृता एवं स्तुतिपाठ से मानो बाढसी आती थी । अनेक स्थानोंपर कहा है कि, सोम आनन्द बढ़ाने में सर्वोपरि है । ' कुविन्सोमस्यापामिति ' ( ऋ० १०-११९ ) आदि सूक्त पढ़ने से पता लगता है कि, सोम में उल्साहकता का अंश कहाँतक था । इसके अतिरिक्त ऐसा भी दर्शाया है कि, वैदिक देवता तथा ऋषि सोम के बारे में अतीव लोलुप थे ।

उसी प्रकार उम में साधारण रोग हटाने की भी योग्यता होगी । परन्तु उसके प्रमुख आलोचनाय गुण बुद्धि बढ़ाना और उल्साहित कर देना है, क्योंकि ऐसी प्रभावशालिता के न रहते उस विषयमें इतनी आसक्ति होना, अमभव है ।

### स्वर्गीय अमृत ।

दिवः पीयूषं उत्तमं सोमं इन्द्राय पातव ।  
सुनोता मधुमन्तमम् । ( ऋ. १।५१।२ )  
दिव पीयूषं पूर्य्यं । ( ऋ. १।११।०।८ )

' इन्द्र के पान करने के लिये मधुर सोमरस निकाल दें । यह ( दिवः उत्तम पीयूषं ) स्वर्ग का उत्तम अमृत-रस है । ' तथा—

त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ।

( ऋ. १।१०६।८ )

' सब देव ( अमृताय ) अमृतलाभ के लिये आनन्द से ( पपुः ) पीते हैं ।

### वीर्यवर्धक सोम ।

( सोम ) प्रजावत् रेत आभर । ( ऋ. १।६०।४ )  
' हे सोम ! तू ( प्रजावत् रेत. ) जिमसे प्रजा उत्पन्न हो सकती है, जिमसे सतान उत्पन्न हो सकता है, ऐसा वीर्य हमारे शरीरमें ( आ भर ) भर दे । '

इस वर्णन में सोम का वीर्यवर्धक गुण बताया है ।



महां अस्मि सोम ज्येष्ठ उग्राणां इन्द्र अजिष्ठः ।

( ऋ १।६६।१६ )

‘हे सोम ! तू वीरोंमें श्रेष्ठ और बड़ा बलवान् वीर है ।’

सोमरस पीनेसे वीर्य बढ़ता है, यह बात निम्नलिखित मंत्र में कही है-

( सोमा- ) वर्धन्तो अस्य वीर्यम् । ( ऋ १।८।१ )

**सोम तारुण्य देता है ।**

सोम तारुण्य ( जवानी ) देता है, इस विषय में कहा है-

महे युवानं आ दधु । इन्द्रं० ( ऋ १।१।५ )

‘ ( इन्द्र ) सोम ( युवान ) तारुण्य देनेवाला है, हम-लिये ( महं आ दधु ) बड़े कार्य के लिये उस सोम का हम धारण करते हैं ।’

**बल की वृद्धि ।**

सोम बल की वृद्धि करता है, इस विषय में कहा है-

सहो नं सोम पृत्सु धाः । ( ऋ. १।८।८ )

‘ हे सोम ! तू ( पृत्सु ) युद्धप्रसंगों में ( न ) हमारे अन्दर का ( सहः धा. ) सामर्थ्य बढ़ाओ ।’

**सोम का विद्युत्तेज ।**

आ यो गोभिः सृज्यते ओषधीष्वा देवानां सुस्र  
इषयन्नुपावसुः । आ विद्युता पवते धारया  
सुत इन्द्रं सोमो मादयन् दैव्यं जनम् ॥

( ऋ १।८।३ )

‘ ( य- ) जो सोम ( गोभिः ) गोदुग्धके साथ ( ओष-धीषु आ सृज्यते ) औषधियों के रसों में उण्डेला जाता है, जो ( उपावसुः ) धन के साथ देवों को सुख देता है तथा ( इन्द्र ) इन्द्र को और ( दैव्य जन ) दिव्य मानव को ( मादयन् ) हर्षयुक्त करता है, वह ( सुतः ) सोमरस ( विद्युता धारया ) बिजली जैसी चमकीली धारा से ( आ पवते ) छाना जाता है, शुद्ध किया जाता है ।’

सोमरस की धारा अंधेरे में बिजली के समान चमकती है । यह इस रस की विशेषता है । अनेक औषधिरसों से इसका मिश्रण भी करते हैं, इसी को मसालेदार सोमरस बोलते हैं । गोदुग्ध तो इस में मिलाया जाता है ।

**सोम से सबको लाभ ।**

स न पवस्व, शं गवे, शं जनाय, शं अर्वतं ।  
शं राजन् ओषधीभ्यः ॥ ( ऋ. १।१।३ )

‘ सोमरस से हमारा, गौओं का, लोगों का, घोड़ों का और औषधियों का ( शं ) कल्याण होता है ।’ अर्थात् सोम से औषधियां वीर्यवती होती हैं, मनुष्य हृष्टपुष्ट होते हैं तथा गौवें और घोड़े भी आरोग्यसंपन्न होते हैं ।

यहां गौओ के खाने में सोम आता था, यह बात स्पष्ट है । जो गौ सोम खाती है, उसके दूध में सोमरस के गुण आते हैं, यह बात स्मरण रखनेयोग्य है । इस तरह सोम का सेवन बड़ा लाभदायी है ।

**सोम की रुचि ।**

साधारण ढग से सोम जिह्वा को कैसे लगता था, इसका स्पष्ट बखान करना अति कठिन जान पड़ता है । कारण यही है कि, इस भाँति की वस्तुओं की साधारण रुचि नहीं बतलायी जाती है, अपितु उस वस्तु की ओर जो भाँति तीव्र आकर्षण अपने अतस्तल में उत्पन्न होता है, उसी के अनुसार वर्णन का सिलसिला प्रचलित होता है !

सोम का वर्णन यो किया है कि-

‘ इवादुः किलायं मधुमानुतायं तीव्रः किलायं ’  
( ऋ० ६-४७-१ )

तो भी यह कुछ कुछ तीक्ष्ण, स्वादवाली वस्तु हो । उस में दूध, शहद आदि चीजों की मिलावट करके ही विशेष ढग की मधुरिमा से युक्त कर देते थे ।

**सोम तथा सुरा ।**

ऋग्वेदकाल में भी सोम सुरा से सुतरां विभिन्न वस्तु थी, ऐसा प्रतिपादन करने के लिए पर्याप्त आधार है ।

ऋत्सु पीतासो युध्यंते दुर्मदासो न सुरायां ।

( ऋ० ८।२।१२ )

यहाँपर सेवन की हुई सुरा से दुर्मद होते हैं, ऐसा वर्णन है और कहा है कि, मद्यसेवन से जो नशा मालूम पड़ना है, वह दुर्मद है ।

सुरा मन्युर्विभीदको अचित्ति ॥ ( ऋ० ७-८६-६ )

‘ मद्य, क्रोध तथा घृतक्रीडा के साधन पाप की ओर ले

चलनेवाले हैं ।' जैसे वर्णन सुराका यज्ञोपर किया गया है, वैसे सांम का बखान कहीं भी नहीं किया है, उल्टे सभी जगह इस के विपरीत चित्रण किया है ।

अतः ऐसा कह सकते हैं कि, उस समय सोम तथा सुरा दोनों ही अत्यंत विभिन्न वस्तुएं थी और मद्य के द्वारा उत्पादित मतवालेपन में बहुत ही बुरे गुण थे । इस के सिवा, भाग चलकर वाङ्मय में एवं सौत्रामणियाग में मद्य की विभिन्न प्रणाली बतलाई है । अतः ऐसा कहने में कोई आपत्ति नहीं उठाई जा सकती है कि, सोम सुरासे विभिन्न एवं पृथक् अन्य कोई भानददायक वस्तु थी ।

### सोम तैयार करने की प्रणाली ।

प्रारम्भ में ब्राह्मण से यज्ञशाला के बाहर सोमवल्ली खरीद लेनी चाहिए और उसे यज्ञशाला ले जाकर उस पर पानी का छिड़काव कर चुकने पर ठीक प्रकार से रखना चाहिए, ताकि वह सूखने न पाय । इस के पश्चात् फलक पर सोम रखा जाय । सोम कूटने के दो तख्ते, जो कि ३६ अंगुलियों लम्बाई में और १८ अंगुल चौड़ाई में रहे, 'अभिषवण फलक' नाम से ज्ञात हैं, अर्थात् यदि दोनों समीप समीप रखे जाय, तो 'समभुज चतुष्कोण' की निर्मित होती है, जिसकी प्रत्येक रेखा ३६ अंगुलियों से परिमित हो जाती है । उस पर सोमवल्ली रखी जाय । पश्चात् ग्रावासे उसे कूटना प्रारम्भ करे । यह ग्रावा पत्थर की बनी रहती है और इस का ऊपरी हिस्सा पतला तथा निम्नविभाग मोटा रहता है । कूटते समय मंत्र पढ़ते पढ़ते कुछ थोड़ा जल डालना पड़ता है । तदुपरान्त कूटी हुई वह सोमवल्ली आधवनीय नामक वर्तन में, जो अनुकूलता के अनुसार मिट्टी का या धातु का बनाया जाता है, डालनी चाहिए । यथेष्ट जल डाल कर उसे अच्छी तरह रगड़ कर जलमें मिला दे । पानी में जब सोमवल्ली का रस मिश्रित हो जाय, तब निचोड़कर अवशिष्ट अशको बाहर निकाल दे, जिसे ऋजीष नाम दिया गया है । अब छानने के लिए अधिषवण पर रंगरेज के यहाँ की तिपाईं जैसे एक चौकी रख कर उस पर 'दशापवित्र' नामक एक छानने का वस्त्र बाँधकर रखना चाहिए, यही छाननी है । जलमिश्रित सोम अब आधवनीय पात्र में से उस पर ऊँढलना चाहिए । पवित्र के नीचे एक छोटासा छेद बनना-

कर उसमें से ऊनी धागा इस तरह डाला जाय कि, पनली धारा गिरने लगे । अब सोम टपकने लगता है, जिसे पात्र में ले लिया जाय । 'ग्रह, चमस' ये नाम पात्रों के हैं । उस सोम को विभिन्न देवताओं को लक्ष्यमें रखकर अग्निमें आहुति के रूप में डाल चुकने पर, सभामण्डप में होम करनेवाले एव वषट्कार करनेवाले, उद्गाता, यजमान, ब्रह्मा तथा अन्य सदस्य क्रमशः सोमरस का पान करे ।

इस सोमरस में देवताभेद के अनुसार दुग्ध, तधि, स्वर्णधूलि एव घृत डालकर अर्पण करने की प्रथा है ।

आश्वलायन श्रौतसूत्र ६-८-५ में कहा है कि, सोमवल्ली न मिलने की दशासे 'पूतिक' अथवा 'फाल्गुन' नामक वनस्पति का उपयोग करना चाहिए । 'अनधिगमं पूतिकान् फाल्गुनानि ।'

वर्तमानकाल में कहीं कहीं होनेवाले सोमयाग के सोम की यह दशा या कृति है ।

हिरण्यकेशीय श्रौतसूत्र में भी लगभग इसी तरह की प्रणाली बखानी गयी है, ( देखिए ८-३-४ ) । सोम कूटते समय ग्रावा से कितने आघात दिये जाय, फलक कैसे रखा जाय, आदि बातें भी बारीकी से बतलाई गई हैं ।

### छलनी कैसे रहे ?

'दशापवित्र' या 'पवित्र' शब्द से सोम का विशुद्ध करना सर्वत्र निर्दिष्ट किया हुआ है । अवि, अव्य, अविमय जैसे विशेषणोंसे ज्ञात होता है कि, वह छलनी भेड़ के उन से बनायी जाती थी । निश्चित रूप से कह नहीं सकते कि, वह बुनी गयी थी या नहीं, परन्तु एक स्थान पर कहा गया है कि, उस का वर्ण श्वेत था । आधुनिक सोमयाग में उन की बनायी छलनी नहीं रहती है, केवल स्वच्छ, सुफेद कपडा रहता है, जिस पर तनिक उन केवल शास्त्रविधि के लिए लगाया जाता है । 'हर्रांसि' पद से दीख पड़ता है, उस के अंचल लटकते थे ।

### सोमरस की छाननी ।

सोमरस छानने की छाननी बकरी के ऊनकी की जाती थी । इस का नाम 'पवित्र' होता था । इस का वर्णन ऐसा आता है-

अव्यो वारे महीयते । सोमो यः सुक्रतुः कविः॥  
( ऋ. १।१२।४ )

रसो । अव्यो वारं वि पवमान धावति ।  
( ऋ. १।७४।९ )

‘ ( अव्य वारे ) बहरी के उनकी छाननी पर सोम महत्त्व का स्थान प्राप्त करता है । ’ यह सोम यज्ञको संपन्न करनेवाला और काव्य की स्फूर्ति बढ़ाता है ।

वि वारं अव्यं आशवः । ( ऋ. १।१३।६ )

‘ ( अव्यं वार ) बकरी के उनकी छाननीसे ( आशवः ) क्षीघ्र प्रवाहित होनेवाले सोमरस नीचे चूते है, नीचे के पात्र में प्रवाहित होते है । ’ तथा—

वि वारं अव्यं अर्षति । ( ऋ. १।६१।१७ )

‘ बकरी के उनकी छाननी पर सोम रखते है । ’

( असितः काश्यपो देवलः । गायत्री । )

ऋभुर्न रथ्यं नवं दधाता केतं आदिशे ।

शुक्राः पवध्वं अर्णसा ॥ ( ऋ. १।२।१।६ )

‘ ( ऋभु ) कारीगर जैसा नवीन ( रथ्यं ) रथको जोतने-वाले घांटे को सिखाता है, वैसा ( आदिशे केतं दधात ) धर्म का आदेश देने के लिये ज्ञान दीजिये और हे सोम की रसधाराओं ! तुम बड़े वेगसे स्वच्छ हो । ’ अर्थात् छाननी से शुद्ध हो ।

शुम्भमान ऋतायुभिः मृज्यमानो गभस्त्योः ।

पवते वारे अव्यये । ( ऋ. १।३।६।४; १।६।४।५ )

असृग्रं वारे अव्यये ॥ ( ऋ. १।६।६।११ )

‘ ( ऋत-आयुभिः ) सत्य धर्म पालन करनेवाले याज्ञ-कोने शुद्ध किया, किरणों से पवित्र बना ( अव्यये वारे ) बकरी की छाननी से ( पवते ) अर्थात् पवित्र होता है, छाना जाता है । ’

स न ऊर्जे वि अव्ययं पवित्रं धाव धारया ।

( ऋ. १।४।१।४ )

प्र मुधान इन्दुरक्षा पवित्रमत्यव्ययम् ।

( ऋ. १।६।६।२८ )

पवित्रं अति गाहते । रक्षोहा वारं अव्ययम् ।

( ऋ. १।६।७।२० )

पवस्य सोम अव्यो वारे परिधाव । ( ऋ. १।८।६।४८ )

‘ यह सोमरस ( अव्यय पवित्र ) बकरी के उनसे बनी

छाननी के पास ( धारया विधाव ) रस की धारा के साथ जाता है । ’

रोमाण्यव्या समया वि धावति । ( ऋ. १।७।५।४ )

सो अर्ष इंद्राय पीतये तिरो रोमाणि अव्यया ।

( ऋ. १।६।२।८ )

अर्षति तिरो वाराण्यव्यया । ( ऋ. १।६।५।४ )

‘ इद्र के पीने के लिये उस रस को छानने के लिये ( अव्यया ) बकरी के ( रोमाणि तिरः ) बाल तिरछे रखने चाहिये और उस छाननी से रस छानना चाहिये । ’

उन एक दूसरे पर ऐसी रखना चाहिये, जिस से वह छाननीसी बने । अथवा उन का बुना कपडा कम्बल जैसा लेना चाहिये । तिरछे बाल हों, ऐसी छाननी बने ।

### तीन छाननियाँ ।

सोम छानने के लिये एक के ऊपर एक ऐसी कुल तीन छाननियाँ होती थीं, ऐसा निम्न लिखित मंत्र से दीखता है—

सं त्री पवित्रा विततानि पेषि अनु एकं धावसि

पूयमानः । ( ऋ. १।९।७।५५ )

‘ ( त्री पवित्रा विततानि ) तीन छाननियाँ फैली रखी हैं, उनमें से क्रमपूर्वक ( एक अनु धावसि ) एक के पीछे एक पर सोम दौड़ता है, ’ अर्थात् तीनों में से क्रमपूर्वक छाना जाता है ।

ये तीन छाननियाँ एक दर्भ की, एक उनकी और तीसरी ( दशा-पवित्र ) कबल की होगी, ऐसा हमारा अनुमान है, अथवा तीनों उनकी ही होंगी । इस विषय में निश्चय करने के लिये अधिक खोज की आवश्यकता है ।

अव्यो वारेभिः पवते सोमो गव्ये अधि त्वचि ।

( ऋ. १।१०।१।१६ )

अव्यो वारेभिः पवते । ( ऋ. १।१०।८।५ )

‘ सोमरस ( गव्ये त्वचि अधि ) गौके चर्म पर ( अव्यः वारेभिः ) बकरी के उनकी छाननियों से ( पवते ) छाना जाता है ।

नूनं पुनानो अबिभिः परिस्रव अदग्धः सुरभितरः ।

सुते चित् त्वा अप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो

गोभिदत्तरम् । ( ऋ. १।१०।७।२ )

‘ सोम रस को ( भविभि. पुनानः ) बकरी के उनकी छाननी से छानते हैं, तब यह (सुरभितरः) अधिक सुधास-से पूर्ण बनता है। रस ( सुते ) निकालते ही ( अप्सु ) पानी में स्वच्छ करते हैं, ( उत्तरं ) पश्चात् ( गोभि श्रीणन्तः ) गौके दूध के साथ मिलाते हैं। इस ( अन्धसा मदाम ) अन्न से हम आनदित होते हैं ।’

यहां ‘ भवि ’ शब्द बकरी के उनकी छाननी के लिये और ‘ गो ’ पद दूध के लिये आया है ।

( असितः काश्यपो देवलो वा । गायत्री । )

यं अत्यं इव वाजिनं मृजन्ति योपणां दश ।

वने क्रीळन्तं अत्यविम् ॥ ( ऋ १।६।५ )

‘ ( वने ) वन के काष्ठ से निर्मित पात्र में ( अत्यवि क्रीळन्त ) छाननी से खेलनेवाले जैसे सोम को ( अत्यं वाजिन इव ) घुडदौड़ के घोड़े की सेवा करने के समान ( दश योषणः ) दस स्त्रियां अर्थात् दस अंगुलियां (मृजन्ति) शुद्ध करती हैं ।’

दस अंगुलियां सोमरस निकालती हैं और उसको छाननी पर रख कर स्वच्छ करती हैं। यहां ( वाजिन दश योषणः मृजन्ति ) किसी घुडसवार-अश्ववीर-को दस स्त्रियां स्नानादि से सेवा करती है, वैसे सोम की सेवा दस अंगुलियां करती हैं, यह उपमा है ।

गौका चर्म ।

एष सोमो अधि त्वचि गवां क्रीळत्यद्रिभिः ॥२९॥

यस्य ते गुञ्जवत्पय पवमानाभृतं दिवः ॥३०॥

( ऋ १।६६ )

द्युमन्तं शुष्मं उत्तमं । ( ऋ ३।६।३ )

‘ यह सोम ( गवां त्वचि ) गौके चमड़े पर ( अद्रिभिः क्रीडति ) पत्थरों के साथ खेलता है । इस सोम का तेजस्वी चमकीला दूध जैसा रस स्वर्ग से ही लाया है, ऐसा प्रतीत होता है ।’

गौके अथवा बैल के किवा गधे के चमड़े पर फलक रखकर, उस फलक पर सोमवली पत्थरो से कूट कर रस निकालते हैं । और वह कूटा हुआ सोम दस अंगुलियो से, दोनों हाथों से निचाँडकर उनकी छाननी से छाना जाता है । यह रस स्वयं ( द्युमन्त ) चमकीला श्रेतसा रहता है । यह वनस्पति भी रात में चमकती है । इस से अनुमान

होता है कि, इसमें कुछ विशेषता है । तथा-

आ योनिः सोमः सुकृतं निर्षादति

गव्ययी त्वग्भवति निर्णिगव्ययी ॥ ( ऋ १।७०।७ )

‘ सोम अपने स्थान पर रहता है, अर्थात् छाना जानेके समय छाननी पर बैठता है । वहां ( गव्ययी त्वक् ) गवय का चर्म तथा ( अव्ययी ) बकरी का चर्म उसके ढक्कन होते हैं ।’ तथा-

अद्रयस्त्वा वासति गारधि त्वचि अप्सु त्वा

हस्तैर्दुदुर्मुनीपिणः ॥ ( ऋ १।७१।४ )

‘ सोम को हाथों से ( अप्सु ) पानी में रखकर हिलाकर धोते हैं, और ( गो त्वचि अधि ) गाय के चर्म पर रखकर ( अद्रय ) पत्थर कूटते हैं ।’

इससे स्पष्ट हो जाता है कि, सोमवली लाते ही पर्याप्त जल में वह रखकर हिला हिलाकर अच्छी तरह धोते हैं । इसके बाद चमड़े पर फलक रखकर उस पर वह सोमवली रखकर पत्थरो से कूटते हैं । रस निचोड़ने योग्य होते ही उनकी छाननी पर रखकर दसो अंगुलियों से दबाते हैं, जिस से सब रस बर्तन में इकट्ठा होता है ।

सोम के साथ मिलानेयोग्य वस्तुएँ ।

सोम तैयार करते समय उसमें दूध, दधि, घृत, मधु, जल एव भूने सत्तु या गेहूँ का भाटा डालते थे। इसीलिए उसे ‘ यवाशिर, गवाशिर, ज्याशिर ’ आदि नाम प्राप्त हुए। संभवतः इस भाँति मिलावट होने के फलस्वरूप उसमें अतिरिक्त मिठास पैदा होती होगी । कई स्थानों पर सोम को मधु, मधुवत्, पीयूष संबोधित किया गया है ।

सोम में दूध आदि मिलाया जाता था, इसका वर्णन पाठक निम्नलिखित मंत्रों में देख सकते हैं-

सोम में दूध मिला दो ।

( असितः काश्यपो देवलो वा । गायत्री । )

तं गोभिर्बृषणं रसं मदाय देववीतये ।

सुतं भ्राय सं सृज ॥ ( ऋ १।६।६ )

‘ वह सोमरस ( मदाय ) हर्ष उत्पन्न करनेवाला बनने के लिये ( देववीतये ) देवों के अर्पण के लिये तथा ( भ्राय ) पोषक अन्न बनने के लिये ( गोभि. सं सृज )

गौओं के दूध के साथ मिला दो, जिस से वह (वृषण) वीर्यवर्धक, बलवर्धक बनेगा ।'

'यहां (गोभि स सृज) गौओंके साथ इसे छोड़ दो, ' ऐसा कहा है । इसका अर्थ ' गौका दूध सोममें मिलाओ ' ऐसा है । यह लुप्तनद्धित प्रक्रिया पाठक अवश्य देखें ।

' गौ ' का ही अर्थ दूध, दही, मखन, घृत, छाउ आदि गोविकार है । इन में से दूध, दही और घी सोमरस में मिलाते हैं ।

( असितः काश्यपो देवलो वा । गायत्री । )

राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिः अञ्जते ।

( ऋ १११०३ )

आ यो गोभिः सृज्यते ओषधीषु । ( ऋ. १।८४।३ )

' राजालोग जैसे ( प्रशस्तिभिः ) स्तुतियों से उत्साहित होते हैं, वैसा ही ( सोमास. ) सोमरस ( गोभिः ) गौओं के दूधसे ( अञ्जते ) शोभित होते हैं । '

यहां ' गौ ' का अर्थ ' गौदुग्ध ' है । तथा-

अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिथ्रियुः ।

देवं देवाय देवयु ॥ ( ऋ १।११।२ )

' ( अथर्वाणः ) अथर्वविधि से यज्ञ करनेवाले याजक एक ( देव ) ईश्वर की प्राप्ति की इच्छा से ( मधुना ) मधु सोमरस के साथ ( पय ) गौका दूध ( अभि अशिथ्रियु. ) मिला देते हैं । '

यहां सोमरस के साथ, दूध और मधु-शहद मिलाने की विधि है ।

### सोमरस में शहद मिलाओ ।

सोमरस के साथ शहद मिलाने के विषय में निम्न-लिखित मंत्र देखो-

हस्तच्युतेभिः अद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन ।

मधौ आ धावता मधु ॥ ५ ॥

नमसेत् उप सीदत दधेत् अभि श्रीर्णातन ॥ ६ ॥

( ऋ. १।११ )

' हाथोंसे पत्थरोंद्वारा कूट कर सोमरस निकाल कर उस को ( पुनीतन ) छानो । उस में ( मधु ) शहद ( आ धावता ) मिलाओ । तथा ( दध्ना इत् ) दही के साथ ( अभि श्रीर्णातन ) मिला दो । '

जिन्वन् कोशं मधुभ्युतम् । ( ऋ १।१२।६ )

' शहद से युक्त रस का खजाना सोमरस है । '

अस्य शुष्मिणो रसे विश्वे देवा अमत्सत ।

यदी गाभिर्वसायते ॥ ( ऋ. १।१४।३ )

यद् गोभिर्वासयिष्यसे ( ऋ. १।६६।१३ )

' ( शुष्मिणः रसे ) बल बढ़ानेवाले सोमरस में जब ( गोभि. वसायते ) गौओं का दूध मिलाया जाता है, तब वह पेय सब देवों को आनन्द देनेवाला बनता है । '

गा कृण्वानो निर्णिजम् । ( ऋ. १।१४।५ )

' गौका दूध उस सोमरस को ( निर्णिज ) उत्तम सुन्दर रूप देता है । ' तथा-

अति श्रिती तिरश्चता गव्या जिगाति अण्व्या ।

( ऋ १।१४।६ )

' ( अण्व्या ) सूक्ष्म छिद्रवाली छाननी से ( तिरश्चता ) तिरछा होकर ( गव्या जिगाति ) गौके दूध के साथ मिश्रित होने के लिये जाता है । ' अर्थात् छाना जाने के बाद उस में गौदुग्ध मिलाया जाता है ।

### सोममें दही मिला दो ।

एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः ।

विपा व्यानशुः धिया ॥ ( ऋ १।२२।३ )

' ये पवित्र शुद्ध हुए सोमरस ( दधि-भाशिर ) दही के साथ मिलाये जाते हैं । ज्ञान के साथ बुद्धिको बढ़ाते हैं । ' यहां सोमरस का दही के साथ मिश्रण बताया है ।

अभि गावो अधन्विषुः । पुनानाः ० ॥ २ ॥

इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिधावसि ॥ ५ ॥

शुचिः पावक उच्यसे सोमः सुतस्य मध्वः ।

देवावीः अघशंसहा ॥ ७ ॥ ( ऋ १।२४ )

' सोमरस छाना जानेके बाद ( गाव ) गौका दूध उस में मिलाते हैं । पहिले पत्थरों से कूट कर रस निकालते हैं, पश्चात् छानते हैं । यह रस ( देवावी ) देवत्व देनेवाला और ( अघ-शंस-हा ) पापप्रवृत्ति का विनाशक है । '

अत्यो न गोभिः अज्यतं । ( ऋ. १।३२।३ )

' जिस तरह घोडा घुड़दौड़में जाता है, उस तरह सोमरस ( गोभिः अज्यते ) गौओं के साथ अर्थात् गौदुग्ध के साथ जाता है, अर्थात् मिलता है । ' यथा-

अभि गावो अनूषत योषा जारं इव प्रियम् ।

अगन् आर्जि यथा हितम् ॥ ( ऋ. १।३२।५ )

‘जिम तरह ( योषा ) न्नी ( प्रिय जारं ) प्रिय के पास जाने की इच्छा करती है, अथवा जिस तरह ( हितं आजि ) हितकारी युद्ध में वीर योद्धा ( भगन् ) जाते हैं, उस तरह सोमरस के पास ( गाव. अभि अनूरत ) गौत्रे अर्थात् गो-दुग्ध जाता है ।’

यो अत्य इव मृज्यते गोभिर्मदाय हर्यतः ॥

( ऋ. १।४३।१ )

‘जो सोम ( अत्य. इव ) नपल घोड़े के समान वेगसे ( गोभिः ) गौओं के साथ ( मृज्यते ) मिलाया जाता है, शुद्ध करके मिश्रित किया जाता है ।’ तथा-

आ धावत सुहृन्त्यः शुक्रा गृभ्णीत मन्थिना ।  
गोभिः श्रीणीत मत्सरम् ॥ ( ऋ. १।४६।४ )

‘( सुहृन्त्य. ) कुशल लोग यहां भावें, मन्थनपात्र मे सोमरस को रखे और उस के साथ ( गोभिः श्रीणीत ) गो-दुग्ध मिला दे ।’

स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः ।

( ऋ. १।५.०।५ )

‘वह हर्षवर्धक सोमरस ( गोभिः अञ्जान ) गौके दूध के साथ मिलता है, मिश्रित होता है ।’

यहां ‘गौ’ पद का अर्थ ‘दूध, दहि, घी’ आदि हैं, यह बात भूलना नहीं चाहिये ।

उपो षु जातं अप्त्तुरम् । गोभिर्भंगं परिष्कृतम् ।

( ऋ. १।६।१।३ )

‘( अप्त्तुरं ) जल के पास त्वरा से जानेवाला सोमरस ( गोभिः भंगं ) गौओं के दूध के साथ मिलाया जाता है और वह ( परिष्कृतं ) परिशुद्ध किया गया है ।’

यहां गोदुग्ध के साथ सोमका मिलान होनेका वर्णन है और उसके पूर्व जलके साथ मिलनेका भी है, अर्थात् सोम के साथ प्रथम जल मिलाकर छाना जाता है और पश्चात् दूध मिलाकर पिया जाता है ।

शुभ्रं अन्धः देववातं अप्सु धूनः नृभि सुतः ।

स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥ ( ऋ. १।६२।५ )

‘देवोंके लिए प्रिय यह सोमरस ( शुभ्रं अन्ध ) शुभ्रवर्ण का अन्न है । ( अप्सु धूनः ) जलों से प्रथम धोकर रस निकालते हैं और पश्चात् ( गाव पयोभिः स्वदन्ति ) गौवें

अपने दूध से उस का स्वाद बढ़ा देती है ।’

अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षति ।

( ऋ. १।६२।२३ )

‘सोमरस ( गव्यानि वीतये ) गौके दूध, दही आदि गौसे उत्पन्न पदार्थों के साथ मिलकर पौरुष बढ़ाता हुआ, स्वयं पवित्र हुआ प्रवाहित होता है ।’

यहां ‘गव्यानि’ शब्द है । गौ से उत्पन्न दूध, दही, छाछ, मखन, घृत आदि पदार्थ गव्य कहलाते हैं । ये सोमरस के साथ मिलाए जाते हैं । मखन मिलाने का उल्लेख किसी जगह नहीं है । ‘गवाशिरः’ और ‘दध्याशिरः’ इन शब्दों से दूध और दही के साथ सोम मिलाया जाता था, यह बात स्पष्ट हो जाती है ।

सोमा. शुक्रा गवाशिरः । ( ऋ. १।६४।४८ )

‘सोमरस वीर्यवर्धक है, जब वह गौके दूध के साथ पिया जाता है ।’

अद्भिर्गोभिर्मृज्यते अद्भिः सुत । पुनान इन्दुः ॥

( ऋ. १।६७।९ )

‘( अद्भिः सुतः ) पत्थरों से कूट कर निकाला हुआ ( सुत इन्दुः ) सोमरस ( पुनानः ) पवित्र बनता हुआ, छाननी से छाना जाकर ( अद्भिः ) जलों से तथा ( गोभिः ) गौओंके दूध से मिश्रित किया जाता है ।’

त्रिः अस्मै सप्त धेनवो दुदुहे सत्यां आशिरं ।

( ऋ. १।७०।१ )

अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते ।

( ऋ. १।८६।२१ )

‘इक्कीस गौओंका दूध इस सोमके लिए निकाला जाता है ।’ इक्कीस गौओंका दूध कितने सोम में मिलाया जाता था, इस का पता नहीं चलता । पर यज्ञ में १८ ऋत्विज, २३ देव और कुछ सदस्य इतने पीनेवाले हैं । इक्कीस गौओं का दूध २०० सेर होगा । इस में कितना सोम होगा, इस का प्रमाण निश्चित नहीं है । अन्य वचनों के विचार से इस विषय में निर्णय करना चाहिए ।

परि घुक्षं सहसः पर्वतावृधं मध्वः सिंचन्ति

हर्म्यस्य सक्षणिम् । आ यस्मिन् गावः सुहुताद्

ऊधनि मूर्धञ्छ्रीणन्ति अत्रियं वरीमभिः ॥

( ऋ. १।७।४ )

‘ ( सु-क्षं पर्वता-वृध ) सुलोकमें रहनेवाला, पहाड़ोंपर उगनेवाला ( सहसः मध्वः ) बलवर्धक मधु जिसमें मिला है, उस सोममें ( सुहुतादः गाव ) उत्तम भक्ष्य खानेवाली गौवे (ऊधनि) अपने दुग्धाशयमें स्थित दूधसे (श्रीणन्ति) मिश्रण करती है, अर्थात् सोममें दूध मिलाया जाता है । ’

यहां सोममे दूध मिलाने का वर्णन स्पष्ट है ।

हरिं मृजन्त्यरुषो न युज्यते सं धेनुभि कलशे  
सोमो अज्यते ॥ ( ऋ० १।७२।१ )

‘ ( हरिं ) हरे रंग का सोम कूटकर उसका रस निकाला जाता है और ( कलशे सोम ) बर्तन में वह सोमरस रखकर ( धेनुभि सं अज्यते ) गौओंके दूध से मिश्रण किया जाता है । ’

प्र सोमस्य पवमानस्य ऊर्मयः इन्द्रस्य यन्ति  
जठरं सुपेशसः । दध्ना यदी उर्न्नीता यशसा  
गवां दानाय शूरं उदमन्दिषु सुताः ॥

( ऋ० १।८।१।१ )

‘ सोमरस की छानी जानेवालीं लहरियां सुन्दर इन्द्रके पेटमें ( जठरं यन्ति ) जाती हैं । जब ( गवां दध्ना ) गौवों के दही से सोमरस मिश्रित होता है, तब वह रस शूर को अधिक उत्तेजित करता है । ’ तथा-

अभि त्यं गावः पयसा पयोवृधं सोमं श्रीणन्ति ।

( ऋ० १।८।४।५ )

‘ ( गाव ) गौवे उस ( पयोवृध सोम ) दूध से बढाये जानेवाले सोमरस को ( अभि श्रीणन्ति ) अच्छी तरह मिला देती है । ’

सोमरस के साथ दूध अच्छी तरह मिलाया जाता है, पश्चात् हवन करते और नतर पीते हैं ।

रसाय्यः पयसा पिन्वमानः ईरयन्नेषि मधु-  
मन्तं अंशुम् । ( ऋ १।९७।१४ )

‘ रसवाला सोम दूध के साथ मिला हुआ मधुर बनता है । ’ तथा-

अभि श्रीणन् पयः पयसाभि गोनां ।

( ऋ १।९७।४३ )

‘ सोम का ( पयः ) दूध अर्थात् रस ( गोनां पयसा ) गौओं के दूध के साथ मिलाया जाता है । ’

एते सोमा विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः ।

( ऋ १।१०।१।१२ )

‘ यह सोमरस दही के साथ मिलाया है । ’

गोभिष्टे वर्णं अभि वासयामसि । ( ऋ. १।१०।४।४ )

‘ ( गोभि ) गौके दूध से सोम के रंग का पोषण करते हैं । ’ यहां ( Dressing ) अन्न सिद्ध करना यह अर्थ ‘ अभिवासयामसि ’ का है । मसाले वगैरह डालकर सिद्ध करते हैं ।

मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिः उत्तरं ॥ २ ॥

अनृपे गोमान् गोभिरक्षाः, सोमो दुग्धाभिरक्षाः ९  
अंशाः पयसा मदिरो, न जागृविः

अच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥ १२ ॥

अपो वसानः परि गोभिः उत्तरः ॥ १८ ॥

देवानां सोम पवमान निष्कृतं

गोभिः अज्जानो अर्षसि ॥ २२ ॥

गाः कृण्वानो न निर्णिजम् ॥ २६ ॥

( ऋ. १।१०७ )

गौके दूध के साथ सोमरस का मिलान होता है । यह भाव इन सब मंत्रों में है । यहां ‘ गौ ’ शब्द ही ‘ दूध ’ के लिये आया है ।

पिबन्ति अस्य विश्वेदेवासो गोभिः श्रितस्य

नृभिः सुतस्य । अद्भिः मृजानः गोभि श्रीणानः ।

( ऋ. १।१०९।१५-१६ )

‘ सब देव सोम ऐसा पीते हैं कि, जो अच्छी तरह छाना है और दूध के साथ मिलाया है । ’ सोम ‘ उग्र ’ ( ऋ. १।१०९।२२ ) है, इसलिये दूध के साथ मिलाकर उसकी उग्रता कम की जाती है । उसकी उग्रता के कारण सोमरस दूध, दही की मिलावट के बिना पिया नहीं जा सकता ।

सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः ।

( ऋ. १।९१।१८ )

‘ सोमरस के साथ दूध मिला जावे, तथा ( वाजाः ) अन्न भी मिलाया जावे । ’ सत् का आटा अथवा अन्य कोई खाद्य हो, वह सोम के साथ मिलाकर खाया जावे ।

अभि त्वं गावः पयसा पयोवृधं सोमं श्रीणन्ति  
मतिभिः स्वर्विदम् । धनंजयः पवते कृत्वो रसो  
विप्रः कविः काव्येना स्वर्चनाः ॥ ( ऋ १।८।४।५ )  
( त्वं पयोवृधं ) उस दूध से बढ़ाये जानेवाले और  
( मतिभिः स्वर्विदं ) बुद्धियों से स्वर्ग को प्राप्त करनेवाले  
( सोमं ) सोम को ( गावः पयसा अभिश्रीणन्ति ) गौंवे  
दूध के साथ मिला देती है । वह ( रसः ) सोमरस धन  
को जीतनेवाला, ( कृत्वो ) कर्म की शक्ति बढ़ानेवाला,  
ज्ञान बढ़ानेवाला, काव्य की स्फूर्ति देनेवाला ( स्वर्चनाः )  
अपने प्रकाशको ( पवते ) छाना जाने के समय बढ़ाता है ।  
सोमरस दूध से बढ़ाया जाता है । इस से बुद्धि बढ़ती  
है, उत्साह बढ़ता है । और कर्मशक्ति भी बढ़ती है । जो  
कहते हैं कि सोम मद्य है, वे यहां देख कि, सोम का  
रस छाना जाने के बाद ही उसमें दूध मिलाया जाता है  
और हवन होते ही पीया जाता है । इसलिये इसका मद्य  
बन जाने की संभावना ही नहीं है ।

( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री । )

इमं अघ्न्या श्रीणन्ति धेनुवः सोमम् । ( ऋ १।१।९ )  
' इस सोम के साथ अवध्य गौवे ( अपने दूध को )  
मिलाती हैं । ' यहां ' धेनु ' शब्द का ही अर्थ ' धेनु का  
दूध ' है । यह वेद की भाषा की पद्धति है । इसी तरह  
गोवाचक शब्द गौसे उत्पन्न दूध, दही आदि के लिये  
प्रयुक्त होते हैं । लौकिक संस्कृत में ऐसे प्रयोग नहीं होते,  
यह बात ध्यान में धारण के योग्य है ।

( मेधातिथिः काण्वः । गायत्री । )

महान्तं त्वा महीनां आपो अर्षन्ति सिंधवः ।  
यद् गोभिः वासयिष्यसे ॥ ( ऋ. १।२।४ )  
' ( यत् ) जब ( गोभिः ) गौके दूध के साथ ( वास-  
यिष्यसे ) मिलाया जाता है, तब हे सोम ! ( त्वा ) तेरे  
साथ ( सिंधवः आपः ) नदियों के जल ( अर्षन्ति ) मिलते  
हैं । ' अर्थात् सोम के साथ जल भी मिलाया जाता है  
और दूध भी मिलते हैं । यह दूध गौका ही दूध है ।  
सोम औषधि से रस निकालने के समय थोड़ा पानी  
उसमें मिलाते हैं, जिस से अच्छा रस निकल आता है ।  
जब रस निकल आता है तब उस के साथ गौओं का दूध  
मिलाया जाता है । तब वह पीनेयोग्य होता है ।

इतने मंत्रों के विचार से निश्चित होता है कि, सोम  
रस में किन वस्तुओं का मिलान होता है ?

### वैद्यशास्त्र में सोम ।

वैद्यशास्त्र की अत्यन्त प्राचीन मानी हुई सुश्रुत संहिता  
में सोमरसायन के विषय में एक अध्याय पाया जाता है ।  
इस में सोमवल्ली का वर्णन किया है । ईसा के पूर्व पांच  
से छे, दसवीं शत.ब्दी तक के काल में सुश्रुत का अस्तित्व  
माना गया है । इतने प्राचीन काल के ग्रंथ में सोम का जो  
वर्णन दिया गया है, उस के सहारे उस काल में भी सोम  
की जानकारी कितनी विद्यमान थी, इस का स्पष्टीकरण  
बहुत कुछ हो सकता है ।

ब्रह्मादयोऽसृजन् पूर्वममृतं सोमसंज्ञितम् ।  
जरासृत्युविनाशाय विधानं तस्य वक्ष्यते ॥ ३ ॥  
एक एव खलु भगवान् सोमः स्थाननामाकृति-  
वीर्यविशेषैश्चतुर्विंशतिधा भिद्यते ॥ ४ ॥

' बुढ़ापा और मौत को नष्ट करने के लिए पहले ब्रह्मा  
आदिकोंने अमृत बना डाला, जिसे सोम कहते हैं । इसी  
के बारे में अब कहा जायगा । '

' यद्यपि सोम एक ही है, तो भी जगह, नाम, शकल  
सुरत एवं विशिष्ट शक्तियों में विभिन्नता होने से २४  
प्रकारों में विभक्त हुआ, ऐसा प्रतीत होता है । '

१ २ ३ ४  
अंशुमान् मुञ्जवांश्चैव चन्द्रमा रजतप्रभः ।  
५ ६ ७ ८  
दूर्वासोमः कर्नायांश्च श्वेताक्षः कनकप्रभः ॥५॥  
९ १० ११ १२  
प्रतानवान् तालवृन्तः करवीरोंऽशवानपि ।  
१३ १४ १५  
स्वयंप्रभो महासोमो यश्चापि गरुडाहृतः ॥६॥  
१६ १७ १८ १९ २०  
गायत्र्यस्त्रैष्टुभः पाङ्क्तो जागतः शांकरस्तथा ।  
२१ २२  
अग्निष्टोमो रैवतश्च यथोक्त इति संज्ञितः ॥७॥  
२३ २४  
गायत्र्या त्रिपदा युक्तो यश्चोडुपातिरुच्यते ।  
एते सोमाः समाख्याता वेदोक्तैर्नामभिः शुभैः ॥८॥



सर्वेषामेव चैतपामेको विधिरुपासने ।

सर्वे तुल्यगुणाश्चैव विधानं तेषु वक्ष्यते ॥९॥

“अशुमान से ले, उडुपति तक के सोम वेद में कहे हुए अच्छे नामों से विख्यात है । इन सबों के गुण समान हैं और तैयार करने का ढंग भी एकसा है ।”

अतोऽन्यतमं सोममुपयुयुधुः सर्वोपकरण  
परिचारकोपेतः प्रशस्तदेशे त्रिवृतमागारं कार-  
यित्वा हृतदोषः प्रतिसंस्पृभक्तः प्रशस्तेषु  
तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रेषु अंशुमन्तमादाया-  
ध्वरकल्पेनाहतमभिपुतमभिहुतं, चान्तरागारे  
कृतमंगलः सोमकंदं सुवर्णसूच्या विदार्य,  
पयो गृह्णीयात् सौवर्णे पात्रेऽञ्जलि मात्रं,  
ततः सकृदेवोपयुञ्जीत..... ॥१०॥

पश्चात् इय के परिणाम का वर्णन किया है और सोम का लक्षण कहा है ।

सर्वेषामेव सोमानां पत्राणि दश पंच च ।

तानि शुक्ले च कृष्णे च जायन्ते निपतन्ति च ॥

एकैकं जायते पत्रं सोमस्याहरहस्तदा ।

शुक्लस्य पौर्णमास्यां तु भवेत् पंचदशच्छदः ॥२१॥

शीर्यते पत्रमेकैकं दिवसे दिवसे पुनः ।

कृष्णपक्षक्षये चापि लता भवति केवला ॥२२॥

१ २ ३ ४

अंशुमानाज्यगन्धस्तु कन्दवान् रजतप्रभः ।

५

६

७

कदल्याकारकन्दस्तु मुंजवांल्लग्नच्छदः ॥२३॥

८

९

चन्द्रमाः कनकाभासो जले चरति सर्वदा ।

१०

११

गरुडाहतनामा च श्वेताक्षश्चापि पाण्डुरौ ॥२४॥

सर्पनिर्मोकसदृशौ तौ वृक्षाग्रावलंबिनौ ।

तथान्यैर्मण्डलैश्चित्रैश्चित्रिता इव भान्ति ते ।

सर्वे एव तु विज्ञेया सोमाः पंचदशच्छदाः ।

क्षारिकन्दलतावन्तः पत्रैर्नानाविधैः स्मृताः ॥२६॥

( सुश्रुतस० अ० २९ )

“सभी सोमों के पंद्रह पत्तियों होती हैं, जो शुक्लपक्ष में बढ़कर कृष्णपक्ष में गिर जाती हैं । गिर चुकने पर प्रति दिन

एक एक पत्ता उत्पन्न होता है और पूर्णिमा के दिन सोम-लता पंद्रह पत्तियों से युक्त होती है । पश्चात् प्रतिदिन एक एक पत्ती झड़ने लगती है और अमावास्या के दिन निरी लता ही शेष रहती है । ये सभी सोम भौति भौतिके रहने पर भी १५ पत्तियों से युक्त रहते हैं और सभी में दूधसा रस, कन्द, लता और विविध पत्तियों पाई जाती हैं ।”

सोम की उत्पत्ति के स्थानों का भी वर्णन वहाँ पर किया है ।

हिमवत्यर्बुदे सह्ये महेन्द्रमलये तथा ।

श्रीपर्वते देवगिरौ गिरौ देवसहे तथा ॥२७॥

पारियात्रे च विन्ध्ये देवसुन्दे-हृदे तथा ।

उत्तरेण वितस्तायाः प्रवृद्धा ये महीधराः ॥२८॥

पंच तेषामधो मध्ये सिन्धुनामा महानदः ।

हठवन् प्लवते तत्र चन्द्रमाः सोमसत्तमः ॥२९॥

तस्योद्देशेषु चाप्यस्ति मुंजवानंशुमानपि ।

काश्मीरेषु सरो दिव्यं नाम्ना क्षुद्रकमानसं ॥३०॥

गायत्र्यस्त्रैष्टुभ पांक्तो जागतः शांकरस्तथा ।

अत्र सन्त्यपरे चापि सोमाः सोमसमप्रभाः ॥३१॥

( सुश्रुतसंहिता अ० २९ )

“नीचे लिखे हुए स्थलों में सोम की उत्पत्ति होती है- हिमवान्, अर्बुद, सह्य, महेन्द्र, मलय, श्रीपर्वत देवगिरी, देवसह, पारियात्र, विन्ध्य, देवसुन्द ताळाब, वितस्ता नदी के उत्तर में जो बडेबडे पहाड है । सिन्धुनद में और काश्मीर में जो क्षुद्रक मानस नामक सुन्दर झील है, वहाँ पर अन्य कई सोम जो चाँद के समान चमकीले हैं, पाये जाते हैं ।

यहाँ पर सोम के चौबीस प्रकार होते हैं, ऐसा कह कर वे सभी नाम वेदाविहित हैं, ऐसा प्रतिपादन किया है, पर स्वयं ऋग्वेद में ही वास्तव में दो और पर्याय के ढंग से पांच नाम पाये जाते हैं ।

ध्यान में रखनेयोग्य विशेष उल्लेख है कि, सोम कन्द के रूप में पाया जाता है, और केले के कन्दवत् कन्दस्वरूप सोम यह वर्णन नया और सोम के स्वरूप को समझने के लिए अधिक उपयुक्त है ।

उसी प्रकार सभी सोमवल्लियों को पद्रह पत्तियाँ रहती हैं और चंद्र की क्षयवृद्धिके समान एक एक पत्ती क्रम से घटती और बढ़ती जाती है । प्रत्येक प्रकार का सोम पद्रह पत्तियों से युक्त रहता है और वह गोंद, कन्द तथा वल्लिके रूप में प्रकट होता है ।

सोम के जन्मस्थानों का वर्णन करते समय सभी प्रांतों के स्थलों का उल्लेख किया है । पानीपर तैरनेवाला, वृक्षसे लटकनेवाले और भूमिपर उगनेवाला सोम बतलाया है ।

सुश्रुतसंहिता में यह कल्पना कि, चन्द्रमा की कलाओं के समान ही घटबढ़नेवाली पत्तियों से युक्त सोमवल्ली रहती है, हमें देखने मिलती है । सोमरस के लिए सुवर्ण का बर्तन और सोमकद को फोड़ने के लिए सोने की सूई ये बातें भी ऋग्वेद में सोम तथा सुवर्ण का जो संबंध प्रस्थापित हुआ, पाया जाता है, उस पर प्रकाश डालने-वाली हैं । इससे शका होती है कि, उन दिनों में भी क्या सोम इतनी दुर्लभ वस्तु थी । हाँ, ऋग्वेद में कई जगह सोमलता का स्पष्ट निर्देश किया गया है । सोमलता के सभी विशेष गुण चन्द्रमा में पाये जाते हैं । चन्द्रमा की बढ़ीकत मन हर्षित हो उठता है, उमंग की मात्रा बढ़ जाती है, समुद्र के जल की तरंग कीसी उठान होती है, विषयवासना उद्दीप्त हो जाती है, निद्रा अच्छी तरह आती है, वनस्पतियाँ बढ़ने लगती हैं, मानव के दिल को हराभरा कर वह उसे युद्धादि कार्यों को अधिक सुचारु रूप से निभाने में प्रवृत्त करता है । चन्द्रमा एव सोमलता में उपर्युक्त सभी बातें समान रूप से पाई जाती हैं । इन सब बातों को ध्यान में रखकर चन्द्रमा तथा सोमवनस्पति के मध्य अभिन्न एकता मानने की ओर प्रवृत्त होना अत्यंत स्वाभाविक जान पड़ता है ।

स्वर्ग से जब श्येन सोम को ले आ रहा था, तब धनु-धारी कृशानु नामक एक गन्धर्व ने उसे एक बाण मारा ।

( ऋ० ४-२७ )

पुराणों में अमृत लाने के संबंध में कथा पाई जाती है, ऋग्वेद में अनेक जगह उल्लेख मिलता है कि, श्येन अर्थात् बाजपक्षी स्वर्गसे सोम को भूमिपर लाया ।

( देखो ऋग्वेद ३-४३-७, ४-२६-६; ८-९५-३ )

❀

कुछ स्थानोंपर ऋग्वेद में सोम को श्येनाभ्रुव भी कहा है ( ऋ० १-८०-२, ८-९५-३ ) । पर काव्यमय भाषामे अग्नि एव इन्द्र के लिए भी श्येन शब्द प्रयुक्त हुआ है ।

## चन्द्रमा तथा सोम ।

अर्वाचीन साहित्य में सोम से चन्द्रमा का बोध हुआ करता है, परन्तु ऋग्वेद में सोम का अर्थ चन्द्रमा करनेके लिये बहुत उपयुक्त स्थान पाये जाते हैं । चन्द्रमा प्रतिदिन घटता जाता है और देवतागण उसकी कलाओं का भक्षण करते हैं । पश्चात् वह फिर बढ़ता है, जब कि उसे सूर्य की सहायता प्राप्त होती है । छान्दोग्य उपनिषद् ( ५।१०।१ ), ऐतरेय ब्राह्मण ( ७।११ ) तथा शतपथ ब्राह्मण ( १।६।४।५ ) में सोम का अर्थ किया है चन्द्र । कौपीतकी ब्राह्मण के कथनानुसार ( ७।४०।४।४ ) यज्ञ में जिस लता या रस का ग्रहण करना हो, वह चन्द्रदेवता का प्रतीक है, ऐसा समझना चाहिए । ब्राह्मणग्रंथों में सभी जगह यों कहा है कि, पितर एव देवतागण भक्षण करने में प्रवृत्त होते हैं, इसलिए चन्द्रमा का क्षय या घटाव होता है । ऋग्वेद के सूर्याविवाहसूक्त ( १०।८५ ) से स्पष्ट है, सोम तथा चन्द्रमा की अभिन्नता से लोग परिचित थे और इसी सूक्त में उल्लेख पाया जाता है, नक्षत्रों के मध्य में सोम बैठा हुआ है । भागे चलकर कहा है कि, जो सोम ब्राह्मणों को ज्ञात है, उसे सोई नहीं ग्याता है और जिसे वे निचो-उते हैं, वह अन्य ही है । चन्द्रमा का मोक्ष केवल ब्राह्मणों को ही ज्ञात है, इससे ज्ञात होता है, यह धारणा उन दिनों रूढ नहीं थी ।

इस के सिवा ऐसा भी उल्लेख पाया जाता है कि, सोम के कारण समुद्रमें जल चढ़ आता है । उसी के कारण रात्रियों का निर्माण होता है । इस से ज्ञात होता है, सोमलता एव चन्द्रमा की अभिन्नता चित्रित की गयी हो ।

ब्राह्मणसदृश ग्रन्थों में और भागे दी हुई सहितानर्गत आख्यायिका में सोम का अर्थ स्पष्टतया चन्द्रमा ऐसा किया है ।

ऋग्वेद के अष्टम मंडल के ९१ सूक्त में वृद्ध कुमारी अपाला के जो मन्त्र हैं, उन से प्रतीत होता है, इद्र सोम को पाने के लिए कितना लालायित रहा करता था ।

### सोम किस समय विनष्ट हुआ होगा ?

अब यह एक जटिल समस्या उठ खड़ी होती है कि, यह इतना सुपरिचित सोम कब और कैसे विलुप्त हुआ होगा ? जिम सोम का सदैव उपयोग किया जाता था, जो हिमालयके मूजवत् पर्वतशिखर पर उत्पन्न होता था, तथा हिमाचल की तराइयों में विद्यमान शर्यणावत झील में पैदा होता था, वही सुतरां अलभ्य हो, यहाँ तक कि, उस के सम्बन्ध में सामान्य कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, इतना ही नहीं, अपितु ब्राह्मणग्रंथों में उस के प्रतिनिधि की योजना करनी पड़ी। यह अत्यन्त आश्चर्यजनक एवं विचारणीय घटना है।

शतपथ ब्राह्मण में ( ४-५-१०, १ से ६ ) स्पष्ट शब्दों में सोम के प्रतिनिधि का निर्देश किया हुआ है। परन्तु ऐतरेय ब्राह्मण ( ३५-३७ ) तथा तैत्तिरीय संहिता में उस के अलभ्यपन की सूचना मिलती है। सोम मोल लेने के अवसरपर उसे पाने के लिए छीनाझपटी करनी पड़ती थी, आदि बातों से साफ साफ पता चलता है कि, ब्राह्मणकाल में ही सोम दुर्लभ एवं अप्राप्य बन बैठा था।

यज्ञ के अतिरिक्त सोम का पान न किया जाय, यदि यज्ञ में सोम की त्रुटि प्रतीयमान हो, तो क्या किया जाय, उस के चुरा लेने पर क्या करना चाहिए, इत्यादि तैत्तिरीय ब्राह्मण में जो चर्चा की गयी है, उस से पता चलता है कि, सोम उस काल में प्रचुर मात्रा में नहीं उपलब्ध होता था।

यद्यपि ऋग्वेद में उल्लेख पाया जाता है कि, प्रतिदिन तीन बार सोम का त्रिपुलतया उपयोग किया जाता था।

### सोम के सम्बन्ध में विविध कल्पनाएँ।

अर्वाचीन युग में सोम के बारे में भौतिभौति की धारणाएँ प्रचलित हैं। तैत्तिरीय संहिता के भाग्यभाषानुवाद में ए. बी. कीथ महोदय सोम को सुरासदृश पदार्थ समझते हैं। वाट महोदय के कथनानुसार अफगानिस्थान के दाख का आसव ही सोमरस है। रायस की धारणा है कि, गन्ने का रसही सोमरस है। हिल ब्रण्डट् कहता है, सोम एक तरह का शहद है। मधुरता के लिए जैसे अमृत, सुन्दरता का ज्यों कामदेव और सुख का प्रतीक जिस प्रकार

स्वर्ग माना जाता है, उसी प्रकार सर्वोपरि पीनेयोग्य वस्तु का प्रतीक सोम है, ऐसी कुछ लोगों की राय है।

शतपथ ब्राह्मण में सोमके प्रतिनिधिके रूपमें दूर्वादलका उल्लेख किया है, ( ४. ५. १० १ से ६ ) पर सुश्रुतसंहिता में उसे सोमके ही एक प्रकार के रूप में निर्दिष्ट किया है।

सोम तैयार करते समय उसमें सुवर्ण की धूलि डालते हैं। नवम मडल में भी सोम एव कांचन का संबंध प्रदर्शित किया है। सायणाचार्यजीने उसका विभिन्न अर्थ प्रस्तुत कर दिखाया है— हिरण्मये कोशे, तस्य हिरण्मयत्वं हिरण्यपाणिरभिषुणाति इति हिरण्यसंबंधात् ( ९-१-२, ९-७५-३ )। सुश्रुत-संहितामें सोमविषयक जो अवतरण दिया जा चुका है, उस में सोम कन्द को तोड़ने के लिए सोने की सूई और सोमरस को रखने के लिए सुवर्ण का बना हुआ बर्तन सूचित किया है।

### पञ्चजनों को प्रिय सोम।

गिरा यदी सबन्धवः पञ्च व्राता अपस्यवः ।  
परिष्कृण्वन्ति धर्णासिम् ॥ ( ऋ ९।१४२ )

( सबन्धवः ) आपस में भाई भाई के समान बर्तनेवाले ( पंच व्राताः ) चार वर्ण और पांचवां निषाद ये पांच प्रकार के लोग ( धर्णासि ) सब के भारक सोम को ( गिरा परिष्कृण्वन्ति ) स्तुति से शोभित करते हैं।

( मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । गायत्री )

रक्षोहा विश्वर्षणिः अभि योनिं अयोहतं ।  
द्रुणा सधस्थं आसदत् ॥ ( ऋ ९।१४२ )

यह सोम ( रक्षो-हा ) राक्षसों का नाश करनेवाला, ( विश्व-र्षणिः ) सब मानवों का हितकारी है। वह सोम ( अयोहत ) लोहे की कूटनी से कूटने के अथवा ( द्रुणा ) लकड़ी के दण्डे से कूटने के ( सधस्थं योनिं ) अपने निज स्थान के पास अथवा अपने खरल में ( अभि-आ-सदत् ) प्राप्त हुआ है।

यहां सोम को ' रक्षो-हा ' कहा है। सोम औषधि है। औषधि से जिन राक्षसों का नाश होता है, वे राक्षस रोगों के उत्पादक कृमि हैं। इस विषय में ' वैदिक चिकित्साशास्त्र ' नामक पुस्तक में तथा ' औषधि '

देवता के मंत्रों के विवरण में पाठक विस्तार से देख सकते हैं ।

यह सोम ' विश्व-वर्षणि ' है, सब मानवों का हितकारी है । क्योंकि रोगनिवारण और बलवर्धन करके दीर्घायु और उत्साह बढ़ाने के गुण इस औषधि में है और सब मानवों का हित करनेवाले है ।

यह खरल में रखकर प्रथम लोहे की कुटणी से अथवा लकड़ी के दण्डे से कूटा जाता है । यहां ' अय. ' का अर्थ ' सुवर्ण ' मान कर कई लोग सुवर्ण से कूटा हुआ सोम अर्थात् सुवर्ण के आभूषण हाथ में धारण करके कूटा हुआ सोम ऐसा इसका अर्थ करते हैं । इसी तरह ' द्रुणा ' का अर्थ भी दूसरा ही करते हैं, पर वह दूर का सम्बन्ध होता है ।

यह सोम रोगोत्पादक क्रमियों का नाशक है, यह चिकित्सा की बात यहां स्पष्ट कही है ।

### वीर सोम ।

( अवत्सारः काश्यपः । गायत्री )

यो जिनाति, न जीयते हन्ति शत्रुं अभीत्य ।

स पवस्व सहस्रजित् ॥ ( ऋ. १।५।४ )

जो सोम शत्रु को जीतता है, पर कभी शत्रुओं से पराभूत नहीं होता, यह सोम शत्रु का नाश करता है, वह सहस्रों शत्रुओं को जीतनेवाला है, वह स्वयं पवित्र होता है ।

यहां सोम की ' वीर ' विभूति का वर्णन है, तथा-  
पवस्व गोजित् अश्वजित् विश्वजित् सोम  
रण्यजित् । प्रजावत् रत्न आभर ॥ ( ऋ. १।५।११ )

हे सोम वीर ! तू गौंको, घोड़ों को, सब शत्रु को, युद्ध को जीतनेवाला है । तू विजय करके प्रजा के साथ रत्न हमें ला दे ।

( गोतमो राहूगणः । त्रिष्टुप् )

सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तं आशुं सोमो वीरं  
कर्मण्यं ददाति । सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृ-  
श्रवणं यो ददाशत् अस्मै ॥ २० ॥

अषाळहं युत्सु पृतनासु परिं स्वर्षामप्सां वृज-  
नस्य गोपाम् । भरेपुजां सुक्षितिं सुश्रवसं  
जयन्तं त्वामनु मदेम सोम ॥ २१ ॥

( ऋ १।११ )

सोम गौ, चपल घोड़े, वीर और ( कर्मण्यं ) पुरुषार्थी ( सादन्य ) घर का यश बढ़ानेवाले, ( विदथ्यं ) युद्ध में प्रवीण, ( सभेय ) सभा में संमान प्राप्त करनेयोग्य, ( पितृ-श्रवण ) पिता की कीर्ति बढ़ानेवाले पुत्र को ( ददाति ) देता है ।

( अ-साळह ) युद्ध में अजिब्य, ( पृतनासु परिं ) सम्राज्यों में से पार पहुंचानेवाला, ( स्वर्षां अप्सां ) जलों को प्राप्त करनेवाला, ( वृजनस्य गोपां ) पाप से बचाने-वाला ( भरेपुजां ) सपत्तियों में उत्पन्न हुआ ( सु-क्षितिं ) उत्तम घरों से युक्त, ( सुश्रवस ) यशस्वी ( जयन्तं ) विजयी तुझ को देखकर, हे सोम ! हम आनन्दित होंगे ।

### सर्वविजयी ।

गोजिघ्रः सोमो रथजित् हिरण्यजित् स्वर्जिद्-  
द्विजित् पवते सहस्रजित् । यं देवासश्चक्रिरे  
पीतये मदं स्वादिष्टं द्रप्सं अरुणं मयोभुवम् ॥

( ऋ १।७।४ )

यह सोम गौ, रथ, सुवर्ण, स्वर्ग, जल और सहस्रों पदार्थों को जीतनेवाला है, यह सोम ( पवते ) छाना जा रहा है । इस स्वादु ( मद ) आनन्दवर्धक ( अरुण मयो-भुव ) लाल वर्णवाले सुखकारक ( द्रप्सं ) प्रवाही पेय को देवोंने ( पीतये ) पीने के लिये अपना पेय बनाया । इस तरह का यह उत्तम पेय है ।

### प्रभावी वीर ।

शूरग्रामः सर्ववीरः सहावान् जेता पवस्व  
सनिता धनानि । तिग्मायुध-क्षिप्रधन्वा समस्तु  
अषाळहः साहान् पृतनासु शत्रून् ॥

( ऋ १।९।३ )

( शूरग्राम ) शूरो के संघों का चालक, ( सर्ववीरः ) सर्व धीरों को पास रखनेवाला, ( सहावान् ) शक्तिमान्, ( जेता ) विजयी, ( धनानि सनिता ) धनों को जीत कर

बांटनेवाला, ( तिम-भायुधः ) तीक्ष्ण शस्त्रों को पास रखनेवाला, ( क्षिप्र-धन्वा ) धनुष्य को शीघ्र सज्ज करनेवाला ( समस्तु असाहः ) युद्धों में शत्रु को असह्य होनेवाला ( साहान् ) शत्रु के हमले होने पर अपने स्थान को न छोड़नेवाला यह वीर है ।

सोमरस का सेवन करनेवाला वीर कैसा प्रभावी होता है, यह इम मंत्र में कहा है ।

### शूर वीर ।

प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते  
अस्य सेना । भद्रान्कृष्वन्निन्द्रहवान् सखिभ्य  
आ सोमो वक्ष्या रभसानि धत्ते ॥ ( ऋ० १।१६।१ )

( सेनानी. शूरः ) सेना चलानेवाला शूर वीर ( गव्यन् ) गौवों की प्राप्ति की इच्छा करके ( रथानां अग्रे प्र एति ) रथों के अग्रभाग में जाता है, तब ( अस्य सेना हर्षते ) इसकी सेना आनन्दित होती है । ( सखिभ्यः ) अपने मित्रों के लिए ( भद्रान् कृष्वन् ) कल्याणकारक कर्म करता हुआ यह वीर ( रभसानि वक्ष्यानि भा धत्ते ) पक्के रंगके वस्त्र धारण करता है ।

जो वीर सेनाके भागे चलता है, उसपर सैनिक सतुष्ट रहते हैं । यह अपने लोगों को आनन्द देता है और पक्के वस्त्र धारण करता है ।

( अमहीयुगंगिरस । गायत्री )

अया वीती परि स्रव यस्त इन्द्रो मदेष्वा ।

अवाहन् नवतीर्नव ॥ ( ऋ० १।६।११ )

हे सोम ! तू इस तरह प्रवाहयुक्त ( परिस्त्रव ) हो ।

तेरे आनन्द से आनन्दित होकर इन्द्रने असुरोंके ( नवती नव ) न्यानवे नगर तोड़ डाले ( अर्थात् असुरों के कीलों का नाश किया ।

( असितः काश्यपः । गायत्री )

पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदसि ।

यदा ऋष्वन्ति वेधसः ( ऋ० १।७।५ )

‘ ( पवमानः ) शुद्ध होनेवाला सोम ( विश. राजा इव ) प्रजाओं में जैसा राजा बैठता है, वैसा अपने ( स्पृध ) स्पर्धा करनेवालों के ऊपर ( अभि सीदसि ) बैठता है, जब ( वेधस ) ज्ञानी लोग ( ऋष्वन्ति ) उसे ऊपर लाते हैं । ’

जिस तरह राजा उच्च स्थानपर विराजता है और अन्य लोग नीचे बैठते हैं, और शत्रुओं को भगाया जाता है, उस तरह सोम छाननी के ऊपर विराजता है और उस का रस नीचे जाता है ।

( हिरण्यस्तूप आंगिरस । गायत्री )

सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रव ॥०॥ १

सना ज्योतिः सना हवः विश्वा च सोम  
सौभगा ॥०॥ २

सना दक्षं उत क्रतुं अप सोम मृधो जहि ॥०

अथा नो वस्यसकृधि ॥ ३॥ ( ऋ० १।१।१-३ )

‘ हे सोम ! हमारे लिए ( महिश्रवः ) बड़ा यज्ञ ( जेषि ) जय करके प्राप्त कराओ । हमें प्रकाश, आत्मबल, और ( विश्वा सौभगा ) सब प्रकार के सौभाग्य दो । तथा हमें ( दक्षं ) चातुर्य, ( क्रतु ) कर्तृत्व दो और ( मृध. अप जहि ) शत्रुओं का नाश कर हमें ( वस्यस. कृधि ) श्रेय से युक्त कर ।

( भजीगतिः शुनःशेषः । गायत्री )

एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सस्वभिः ।

पवमानः सिषासति ॥ ( ऋ० १।३।४ )

‘ ( शूरः सस्वभि यन् इव ) वीर अपने सैनिकों के साथ शत्रुपर हमला करने के लिए जाने के समान यह ( पवमानः ) शुद्ध होनेवाला सोम ( विश्वानि वार्या ) सब स्वीकार करनेयोग्य धन ( सिषासति ) जीत कर प्राप्त करता है ।

( मेधातिथिः काण्व । गायत्री । )

गोषा इन्द्रो नृपा असि अश्वसा वाजसा उत ।

आत्मा यज्ञस्य पूर्यः ॥ ( ऋ० १।२।१० )

‘ हे ( इन्द्रो ) सोम ! तू ( पूर्यः यज्ञस्य आत्मा ) तू यज्ञ का पुरातन आत्मा है, वह तू ( गो-षा ) गौ देनेवाला, ( नृ-पा ) वीर पुरुष देनेवाला, ( अश्व-सा ) घोड़े देनेवाला और ( वाज-सा ) अन्न अथवा बल देनेवाला है । ’

### शत्रुनाश ।

सोम राक्षसों, असुरों, द्वेषियों और शत्रुओं को दूर करता है, इस विषय में कहा है-

जहि विश्वा अप द्विषः । इन्दो ! ( ऋ. ९.८-७ )  
' हे सोम ! तू सब द्वेषियों का नाश कर । '

पवमान ! विश्वा अप द्विषो जहि ।

( ऋ. ९-१३-७ )

उप शिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रुरुप ।

पवमान विदा रयिम् ॥ ६ ॥

नि शत्रोः सोम वृष्ण्यं नि शुष्मं नि वयः तिर ।

दूरे वा सतो अन्ति वा ॥७॥ ( ऋ. ९-१९ )

( अप-तस्थुषः ) जो दूर है, वे हमारे ( उपशिक्ष ) पास आ जाय, हमारे मित्र बने, शत्रुओं में ( भियस आ धेहि ) भय बढे, क्योंकि हे सोम ! तू ( रयि विद् ) धन देनेवाला, विजय देनेवाला तू ही है । ( शत्रोः वृष्ण्यं ) शत्रु का बल घटाओ, ( शुष्म नि ) शत्रु सामर्थ्य नष्ट कर, ( वयः नितिर ) शत्रु का आयु तथा उत्साह दूर कर, फिर वे शत्रु हम से दूर हों वा पास हो ।

सोम पवित्रे अर्षति

निघ्नन् रक्षांसि देवयुः । ( ऋ. ९-१७-३; ९-५६-१ )

सोम ( पवित्रे ) छाननी पर पहुँचता है और ( रक्षांसि ) राक्षसों का ( निघ्नन् ) नाश करता है और ( देव-युः ) देवता के साथ सम्बन्ध जोड़ता है । तथा-

यत् ते शुष्मासः अस्थू रक्षो भिन्दन्तः अद्रिवः ।

नुदस्व या परिस्पृधः । ( ऋ. ९-५३-१ )

जो सोम के ( शुष्मास ) बल है, वे ( रक्षः भिन्दन्तः ) राक्षसों का नाश करते हैं और ( परि-स्पृध ) स्पर्धा करनेवाले शत्रुओं को ( नुदस्व ) दूर भगाते हैं ।

अपघ्नन् पर्वते मृधो अप सोमो अरावणः ।

( ऋ. ९-६१-२५ )

यह सोम ( मृधः ) शत्रुओं का और ( अ-रावणः ) खानेवालों का, दूसरों को न देते हुए स्वयं भोगियों का नाश करता है ।

वेति द्रुहो, रक्षसः पाति, जागृविः ।

( ऋ. ९-७१-१ )

' द्रोही शत्रुओं को भगाता है और राक्षसों से रक्षा करता है, ऐसा प्रभाववान् जागृत सोम यह है ।

सोमः सुषुतः परिस्रव अप भमीवा भवतु रक्षसा सह ॥

( ऋ. ९-८५-१ )

' सोमरस निकाला है । यह ( भमीवा ) आमजन्य रोगबीज ( रक्षसा सह अप ) रोगकृमियों के साथ दूर करता है ।

यहां ' रक्षस ' का अर्थ ' रोगबीजरूप सूक्ष्म कृमि ' यह निश्चित हुआ, क्योंकि ये राक्षस ( भमीवा ) आमसे उत्पन्न हुए रोगबीजों के साथ दूर होते हैं । इसलिये आमजन्य रोगबीज और रोगकृमिरूप राक्षस साथ रहनेवाले रोगोत्पादक सूक्ष्म बीज है ।

रुजा दळ्हा चिन् रक्षस सदांसि ।

( ऋ. ९-९१-४ )

' राक्षसों के सुदृढ स्थानों का नाश कर ' यह वर्णन चिकित्सा की दृष्टि से स्थायी रोगबीजों के नाश का भाव बताता है ।

सनेमि कृध्यस्मदा रक्षसं कंचिदत्रिणम् ।

अपादेवं द्वयुं अंहो युयोधि नः ( ऋ. ९।१०४-६ )

सनेमि त्वमस्मादां अदेवं कंचिदत्रिणम् ।

साह्नां इन्दो परिबाधो अप द्वयुम् ॥

( ऋ. ९-१०५-६ )

( अत्रिण रक्षसं ) खानेवाले राक्षस अर्थात् रोगबीज को ( अ-देवं ) इंद्रियों के घातक ( द्वयु अंहः ) शत्रु की सहायक होनेवाले पापी को ( नः युयोधि ) हम से दूर कर । सोम यह सब करता है ।

यहां ' अत्रिन् ' का अर्थ रुधिर अथवा मांस खानेवाले रोगबीजरूपी कृमि है, ' रक्षम् ' भी वैसे ही रोग बढानेवाले है, ( अ-देवं ) देव इंद्रियां हैं, उन की क्षीणता करनेवाले रोगबीज हैं, ( अंहः ) पाप से होनेवाले रोगबीज हैं, ( द्वयुः ) दोनों घातक साधनों का समान प्रयोग करनेवाले रोगबीज हैं । इन का नाश सोमरस करता है ।

( दृढच्युतः आगस्थः गायत्री )

विश्वा रूपाणि आविशन् पुनानः याति हर्यतः ।

यत्र अमृतास आसते ॥ ( ऋ. ९-२५-४ )

यह सोम ( पुनानः ) छाना जाने के बाद अनेक रूपों में प्रविष्ट होता है, जहां अमर देव रहते हैं ।

अमर देवताओं के अश सब अवयवों और इन्द्रिय-स्थानों में रहते हैं । सोमरस पीने के बाद वह उन इंद्रियों में पहुंचता है और उनको उत्तेजित करता है । यही भाव निम्नलिखित मंत्र में है—

एष सूर्यमरोचयत् पवमानो विचर्षणिः ।

विश्वा धामानि विश्वचित् ॥ ( ९-२८-५ )

यह सोमरस विशेष स्फूर्ति देनेवाला है, उसने सूर्य को प्रकाशित किया और सब धामों को उत्तेजित किया है । देवों के जो जो स्थान-इन्द्रियस्थान हमारे शरीर में है, वहां जाकर यह उत्तेजना देता है । शरीर में सूर्य नेत्रस्थान में है । उसे इस की उत्तेजना मिलती है ।

सोमरस वज्र जैसा है ।

आत् सोम इन्द्रियो रसः वज्रः सहस्रसा भुवत् ॥

( ऋ. ९-४७-३ )

यह सोमरस ( इन्द्रियः ) इंद्र के लिये अथवा इन्द्रियों की शक्ति बढ़ाने के लिये है, यह सहस्र शक्तिवाले वज्र जैसा सामर्थ्य बढ़ानेवाला है ।

कलावान् सोम ।

नानानं वा उ नो धियो, वि व्रतानि जनानाम् ।  
तक्षा रिष्टं, रुतं भिषक्, ब्रह्मा सुन्वन्तं इच्छति०॥१॥  
जरतीभिः ओषधीभिः पर्णेभिः शकुनानाम् ।  
कर्मारो अश्मभिः द्युभिः, हिरण्यवन्तं इच्छति० ॥२॥  
कारुः अहं, ततो भिषक्, उपलप्रक्षिणी नना ।  
नानाधियो वसूयवो, अनु गा इव तस्थिम० ॥३॥  
अश्वो वोळ्हा सुखं रथं, हसनां उपमन्त्रिणः ।  
शेषो रोमण्वन्तौ भेदौ, वार इन्मण्डूक इच्छति ।  
इन्द्राय इन्दो परिस्त्रव ॥ ४ ॥ ( ऋ. ९-११२ )

( नः धियः नानानं ) हमारी बुद्धियां विविध हैं, तथा ( जनानां व्रतानि वि ) लोगों के कर्म भी विभिन्न हैं । ( तक्षा रिष्टं ) तरवाण साफ लकड़ी चाहता है, ( भिषक् रुतं ) वैद्य रोगी को दृढता है, ( ब्रह्मा सुन्वन्तं इच्छति ) याजक यज्ञकर्ता की इच्छा करता है ॥१॥ ( जरतीभिः ओषधीभिः ) परिपक्व औषधियों के साथ वैद्य, ( शकुनानां पर्णेभिः ) पक्षियों के विविध रंगों के पंखों के साथ कारी-

गर, ( द्युभिः अश्मभिः कर्मारः ) चमकीले रत्नों के साथ सुनार ( हिरण्यवन्तं इच्छति ) धनिक को चाहता है ॥२॥ भै स्वय ( कारुः अहं ) कारीगर हूं, ( ततः भिषक् ) मेरा पिता वैद्य है, ( नना उपलप्रक्षिणी ) मेरी माता चक्री पीसती है, हम सब ( नानाधियः ) विविध प्रकार की बुद्धियों से युक्त हैं, पर सब ( वसूयवः ) धन कमाने के इच्छुक हैं, ( गाः इव अनुत्स्थिम ) गौवों के समान अनुकूलता से इकट्ठे रहते हैं और अपने काम का अनुष्ठान करते हैं ॥३॥ ( वोळ्हा अश्वः ) रथ खींचनेवाला घोड़ा ( सुखं रथ ) सुख से खींचा जानेवाला रथ चाहता है, ( उपमन्त्रिण हसनां ) साथ काम करनेवाले हंसी खेल करना चाहते हैं, ( शेषः रोमण्वन्तौ भेदौ ) तरुण तरुणी को चाहता है, ( मण्डूकः वार इच्छति ) मेडक जल चाहता है । हे ( सोम ) कलावान् पुरुष ! ( इन्द्राय ) परम ऐश्वर्यवान् के लिये ही ( परिस्त्रव ) चारों ओर से अपने कला-रम का प्रवाह पहुंचाओ ।

‘ सोम, इन्दु ’ का पर्याय ‘ कलानिधि, कलावान् ’ है । जो कलाओं से ( Arts & Crafts से ) युक्त होता है, वह कलावान् अर्थात् कारीगर कहलाता है । सोम का यह कलावान् ( Artist ) अर्थ यहां लेना चाहिये । हे इंद्रो, सोम=कलानिधि कारीगर ! तू ( इन्द्राय ) इंद्र के लिये अर्थात् ( इदि परमैश्वर्ये ) परम ऐश्वर्यवान् के लिये उस परम धनी के उपयोग में आनेवाले पदार्थ निर्माण करने के हेतु से अपनी कला का प्रवाह ( परिस्त्रव ) प्रवाहित करो ।

इस अर्थ को लेकर पूर्वोक्त चारों मंत्रों का अर्थ किया जाय, तो अर्थ की ठीक संगति लगती है । सब युरोपीयन पंडित लिखते हैं कि, यह मंत्रभाग ‘ इन्द्रायैन्दो परिस्त्रव ’ यह इन चार मंत्रों में अप्रासंगिक है । देखिये—

The hymn appears to be an old popular song transformed into an address to soma, by attaching to each stanza a refrain which has no connection with the subject of the song. ( R. T. H. Griffith, Rig Veda Vol. II, Page 380 )

इसी तरह मराठी अनुवादकर्ता श्री सिद्धेश्वरशास्त्री

चित्रावजीने भी यह मन्त्रभाग प्रसंगहीन है, ऐसा लिखा है । ये सब विद्वान् इन चार मंत्रों के इस मन्त्रभाग को अप्रासंगिक कहते हैं । पर हमारा विश्वास है कि, 'सोम' के श्लेष अर्थ से यह मन्त्रभाग यहाँ सुसंगत है । तर्खाण, सुनार, लुहार, वैद्य, विद्वान्, तथा अन्यान्य लोग अपनी कारीगरी का प्रवाह पेश्वर्धवान् के पास पहुंचा देवे ।

जब 'कारीगर' ही सोम होगा, तो उसका सोमरस कारीगरी अथवा 'कुशलता' होगी, ब्रह्मा जब सोम कहलायेगा, तब उसका सोमरस 'ब्रह्मज्ञान' होगा । जब वैद्य सोम होगा, तब उसका सोमरस 'चिकित्सा' होगा । इस तरह अन्यान्य श्लेषार्थों के विषय में जानना चाहिये ।

आशा है कि, पाठक इस तरह इन सोमसूक्तों में जो अन्यान्य श्लेषादि अर्थ हैं, उनका विचार करे और ज्ञान प्राप्त करे ।

### पुरातन पिता ।

पवित्रवन्तः परिवाचं आसते पितैषां प्रन्नो  
अभिरक्षति व्रतम् । महः समुद्रं वरुणस्तिरो  
दधे धीरा इत् छेकुर्धरुणेष्वारभम् ॥

( ऋ. १।७३।३ )

( पवित्रवन्त वाचं परि आसते ) सोम को छाननेवाले स्तुति करते हुए बैठते हैं, इस समय ( एषां प्रन्नः पिता ) इनका पुरातन पिता ( व्रत अभिरक्षति ) यज्ञ की रक्षा करता है । ( वरुण ) वरुणने ( मह समुद्र तिरो दधे ) बड़े अन्तरिक्षरूपी महासागर को ढांक दिया है, अर्थात् उसने सब आकाश व्याप लिया है, ( धीराः इत् शेकु ) बुद्धिमान् ज्ञानीहि समर्थ हुए और उन्होंने ने ( धरुणेषु भारभं ) आधारों पर सोमरस छानने का कार्य किया है ।

यज्ञ में ऋत्विज सोमरस छानते हैं, वेदमंत्रों से स्तुति होती रहती है । सर्वव्यापक ईश्वर की भक्ति चलती है । ऐसे समय सोमरस छाना जाकर तैयार होता है ।

### प्रभु के गुप्त दूत ।

सहस्रधारेऽव ते समस्वरन् दिवो नाके मधु-  
जिह्वा असञ्चतः । अस्य स्पशो न निमिषन्ति  
भूर्णयः पदे पदे पाशिनः सन्ति सेतव ॥

( ऋ. १।७३।४ )

( ते असञ्चत. मधुजिह्वाः ) वे रस पृथक् होकर तथा मधुर बनकर ( सहस्रधारे अव समस्वरन् ) हजारों धाराओं द्वारा नाद करते हुए नीचे चूते थे ! ( अस्य भूर्णयः स्पश ) इसके पार्थिव सेवक ( न निमिषन्ति ) कभी आंख बंद करके चुप नहीं रहते, प्रस्युत ( पदे पदे ) प्रतिपद में ( पाशिनः ) हाथ में पाश लिये ( सेतवः सन्ति ) मर्यादा बांधकर रहने हैं ।

सोमरस की धाराएं छाननी के नीचे सहस्रों धाराओं से गिरती हैं । मानो ये परमेश्वर की मधु जिह्वाये ही हैं । इसी प्रभु के हजारों गुप्त दूत हाथ में पाश लिये, दुष्टों को पकड़ने के लिये, आख न बंद करते हुए चारों ओर पद-पद में खडे हैं, इन्होंने अपनी मर्यादा निश्चित की है, उसके बाहर जो जाना है, उसे वे अपने पाशों से बांध देते हैं ।

### तप का महत्त्व ।

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि  
विश्वत । अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते श्रुतास  
इद् वहन्तस्तत् समासत ॥ ( ऋ. १।८३।१ )

हे ( ब्रह्मणस्पते ) ज्ञान के स्वामिन् ! ( ते पवित्र वितत ) तेरा पवित्रता का साधन कैला है । तू सब का ( प्रभु ) स्वामी, प्रभु, होकर ( गात्राणि विश्वत. परि एपि ) सब अवयवों, सब वस्तुओं में व्यापक होता है । ( अ-तप्त-तनूः ) जिसने तप नहीं किया, वे ( तत् आमः न अश्नुते ) उस सुख को प्राप्त नहीं कर सकते, पर ( श्रुतासः इत् ) जो परिपक्व हुए हैं, वे सत्पुरुष ( वहन्तः तत् ) उसे धारण करते हुए ( स आसत ) मिलकर बैठते हैं, अर्थात् वे ही आनन्द लाभ करते हैं ।

प्रभु परमेश्वर सर्वत्र है, उसका पवित्रता का साधन सर्वत्र है । पर जो तप नहीं करते, वे उसे प्राप्त नहीं कर सकते, जो तप करके परिपक्व बनते हैं, वे उसको अच्छी तरह धारण करते हैं ।

### त्रिभुवनों का अधिष्ठाता ।

आ य तस्थौ भुवनान्यमर्त्यो विश्वानि सोमः  
परि तान्यर्षति ।

कृण्वन् संचृतं विचृतं अभिष्टय इन्दुः सिषक्ति  
उपसं न सूर्य ॥ ( ऋ. १।८४।२ )



( य. सोम ) जो सोम ( विश्वानि भुवनानि ) सब भुवनो का (आ तस्यौ) अधिष्ठाता हुआ है, वह (अमर्त्यः) अमर सोम ( तानि परि अर्षति ) उन भुवनों के चारों ओर रहता है। यह प्रभु सब के ( अभिष्टये ) हित के लिये ( सच्चतं विचृत कृण्वन् ) संयोग और वियोग करता है, वही जैसा सूर्य उपाके साथ आता है, वैसा वह भी सब के साथ रहता है ।

यहां सर्वव्यापक प्रभुको सोम कहा है, क्योंकि जैसा इस सोमवल्ली के रम पीने से आनन्द प्राप्त होता है, उसी तरह प्रभुका भक्तिरस पीनेसे परम आनन्द प्राप्त होता है ।

### देवों के गुह्य नाम ।

हरिः सृजानः पथ्यां ऋतस्य इयति वाचं अरि-  
तेषु नावम् ।

देवो देवानां गुह्यानि नामा आविष्कृणोति  
बर्हिषे प्रवाचे ॥ ( ऋ. ९-९५-२ )

( अरिता नाव इव ) मल्लाह नौका को चलाता है, ( सृजान ) वैसा ( हरिः सृजान ) हरे रंग के पत्तोंवाला सोम ( ऋतस्य पथ्यां ) सत्य के मार्ग को प्रेरित करनेवाले ( वाच इयति ) सन्देशवाणी को चलाता है । यह देवों के सब गुप्त नामों का ( बर्हिषे प्रवाचे ) यज्ञ में प्रवक्ता के लिये ( आविष्कृणोति ) प्रकट करता है ।

सोम से सोमयाग सिद्ध होता है, जो सत्यधर्म का प्रवर्तक है। देवों की गुह्य शक्तियां उन के नामों से प्रकट कर के वह सोम इस यज्ञद्वारा गुप्त ज्ञान का आविष्कार करता है ।

### उन्नति की इच्छा ।

अजीतये अहतये पवस्व स्वस्तये सर्वतातये  
बृहते । तदुशन्ति विश्व इमे सखायः तदहं  
वश्मि पवमान सोम ॥ ४ ॥ ( ऋ. ९, १६ )

( अ-जीतये ) पराभव न होने के लिये अर्थात् विजय के लिये ( अ-हतये ) अमरपन के लिये, ( स्वस्तये ) कल्याण के लिये, ( सर्वतातये ) सर्वत्र फैलने के लिये ( बृहते ) महत्त्व के लिये ( इमे विश्वे सखायः ) ये सब मित्र ( उशन्ति ) इच्छा करते हैं, ( तत् अहं वश्मि ) मैं भी यही चाहता हूँ ।

सब लोग अपना विजय, अमरपन, कल्याण, विस्तार और महत्त्व चाहे। कभी इस के विपरीत, हीन अवस्था न चाहे ।

( २१०१ ) सहस्रों का नेता ।  
ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्रणीथः  
पद्वीः कवीनाम् । तृतीयं धाम महिषः सिषा-  
सन् त्सोमो विराजं अनु राजति षुप् ॥

( ऋ. ९-९६-१८ )

( ऋषि-मनाः ) ऋषि के समान मनवाला, ( ऋषिकृत् ) ऋषियों का निर्माण करनेवाला, ( स्वर्षा ) तेजस्वी ( सहस्र-नीथः ) हजारों का नेता, ( कवीनां पद-वी ) कवियों का मार्गदर्शक है, वह ( तृतीयं धाम सिषासन् ) तृतीय धाम में विराजने की इच्छा करता हुआ ( महिषः ) महनीय होकर वह सोमवीर ( विराजं अनुराजति ) विशेष तेजस्वी होने के लिये प्रकाशता है ।

### सरलता, सत्य और श्रद्धा ।

ऋतं वदन् ऋतद्युम्न सत्यं वदन् सत्यकर्मन् ।

श्रद्धां वदन् सोम राजन् धात्रा सोम परिष्कृतः ॥

( ऋ. ९-११३-४ )

हे ( ऋत-द्युम्न ) सत्य के तेज से युक्त ! तू सरल बोलता है, ( हे सत्य-कर्मन् ) तव्य कर्म करनेवाले ! तू सत्य बोलता है, हे सोम राजन् ! तू श्रद्धायुक्त भाषण करता है, हे सोम ! ( धात्रा ) धाताने तुझे ( परिष्कृतः ) सुसंस्कृत बनाया है ।

इस मंत्रमें सरलता, सत्य और श्रद्धा का महत्त्व कहा है ।

### यम का राज्य ।

यत्र राजा वैवस्वतो यत्रावरोधनं दिवः ।

यत्रामूर्यङ्गरीरापः तत्र माममृतं कृधि ॥

( ऋ. ९-११३-८ )

जहां विवस्वान का पुत्र ( यम ) राज्य करता है, जहां ( दिवः अवरोधनं ) शुलोक का न दीखनेवाला स्थान है, जहां ये पानी के प्रवाह चलते हैं, वहां ( मां अमृतं कृधि ) मुझे अमर कर ।

यत्रानुकामं चरणं त्रिनाके त्रिदिवे दिवः ।

लोका यत्र ज्योतिष्मन्तः तत्र माममृतं कृधि ॥

( ऋ. ९।११३।९ )

( दिवः त्रिनाके त्रिदिवे ) शुलोक के तीसरे विभाग में ( यत्र ) जहां ( अनुकामं चरणं ) इच्छा के अनुसार गमन किया जा सकता है, जहां ( ज्योतिष्मन्त. लोकाः ) तेजस्वी लोक हैं, वहां मुझे अमर कर ।

यत्र कामा निकामाश्च यत्र ब्रह्मस्य विष्टपम् ।  
स्वधा यत्र च तृप्तिश्च तत्र माममृतं कृधि ॥  
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ।  
कामस्य यत्रासाः कामाः तत्रमाममृतं कृधि ॥

( ऋ. १।११३।१०-११ )

( यत्र ) जहां ( कामा निकामाः ) सकाम कर्म करनेवाले और निष्काम कर्म करनेवाले, ( यत्र ब्रह्मस्य विष्टपं ) जहां मूल आधार का स्थान है, जहां ( स्वधा ) अपनी धारक शक्ति और अपनी तृप्ति प्रकट होती है, वहां मुझे अमर कर ।  
जहां आनन्द, उल्हास, हर्ष और प्रमोद होते हैं, जहां ( कामस्य कामाः आसाः ) वासना के भी सब काम सफल होते हैं, वहां मुझे अमर कर ।

अनेक सूर्य हैं ।

सप्त दिशो नाना सूर्याः सप्त होतारो ऋत्विजः ।  
देवा आदित्या ये सप्त तेभिः सोमाभि रक्ष नः ।

( ऋ. १।११४।२ )

( सप्त दिशः ) सातों दिशाओं में नाना सूर्य हैं, यज्ञ में सात ऋत्विज हैं, आदित्य देव भी सात हैं, हे सोम ! इन सब से हमारी रक्षा कर ।

( प्रगाथो घौरः । त्रिष्टुप् । )

अपाम सोमं अमृता अभूम अगन्म ज्योतिः ।  
अविदाम देवान् । किं नूनमस्मान् कृणवदरातिः  
किमु धूर्तिः अमृत मर्त्यस्य ॥ ( ऋ. ८।४८।३ )

( सोमं अपाम ) हमने सोमरस पीया है, ( अमृता अभूम ) हम अमर हुए हैं, ( ज्योतिः अगन्म ) हमने प्रकाश प्राप्त किया है, ( देवान् अविदाम ) हमने देवों को जान लिया है, अब ( अराति किं नु कृणवत् ) शत्रु हमारा क्या करेगा? ( धूर्ति किं उ ) धूर्त भी हमारा क्या करेगा ?

सोमकी कथाएँ ।

सोम के संबंध में कुछ कथाएँ नीचे बानगी के तौरपर दी जाती हैं—

( १ ) सोम का क्षय से पीड़ित होना ।

तैत्तिरीय संहिता में निम्नलिखित प्रकार यह कथा दीखती है—

प्रजापतेस्त्रयस्त्रिंशद् दुहितर आसन्, ताः सोमाय राक्षेऽददात्, तासां रोहिणीमुपैत्, ता ईष्यन्तीः पुनरगच्छन्, ता अन्वैत्, ता पुनरयाचत, ता अस्मै न पुनरदात्, सोऽब्रवीत्, ऋतमपीप्व यथा समवच्छ, उपैष्यामि, अथ ते पुनः दास्यामि इति, स ऋतमामीत्, ता अस्मै पुनरदात्, तासां रोहिणीमेवोपैत्, तं यक्ष्म आच्छेत्, राजानं यक्ष्म आरदिति, तद्राजयक्ष्मस्य जन्म । वरं वृणामहे, समावच्छ एव न उपाय इति, तस्मा एतमादित्यं चरुं निरवपन् तेनैवैनं पापात् स्वामादमुञ्चन् ॥ ( तै० सं० २।३.५ )

प्रजापति की तैत्तीस कन्याओं का व्याह सोमराजा से निष्पन्न हुआ, पर सोम रोहिणी से अधिक प्रेम करने लगे, जिस के फलस्वरूप अन्य बहनें क्रुद्ध हो, पिता के निकट चली गयीं । जब सोम शपथ खा चुका कि, मैं अब सब पर समान रूप से प्रेम करूँगा, तभी प्रजापति ने उन्हें सोमके निकट लौट जाने दिया । सोम का स्वभाव उर्ध्व का त्यो रहा और अतिविषयलंपटता के कारण राजयक्ष्मा नामक दुर्धर रोग से वह पीड़ित हो गया । अब सोम अन्य स्त्रियों से क्षमा की याचना करने लगा । उन्होंने ने उसे प्रणवञ्ज करा के रोग हटाने के लिए आदित्य को आहुतियाँ दे दीं जिस पर आदित्य ने उसे रोगमुक्त कर दिया ।

( २ ) शंड, मर्क एवं सोम ।

बृहस्पतिर्देवानां पुरोहित आसीत्, शण्डामर्कां असुराणां, ब्रह्मण्वन्तो देवा आसन्, ब्रह्मण्वन्तो असुराः, ते अन्योन्यं नाशक्नुवन्नभिभवंतु, ते देवाः शण्डामर्कावुपामन्त्रयन्त, तावव्रतां, वरं वृणावहे, ग्रहावेव नावशापि गृह्यतामिति, ताभ्यामेतौ शुक्रामन्थिनौ अगृह्णन्, ततो देवा अभवन् पराऽसुरा ॥ ( तै सं. ६।४।१० )

जिस प्रकार देवताओं के बृहस्पति उसी प्रकार असुरों के बुद्धिमान् पुरोहित शंड एवं मर्क नामक थे । जब दोनों दलों में एक भी परास्त न हो रहा था, तो देवताओं ने

सोम का प्रलोभन देकर शट तथा मर्क को अपने दल में मिला लिया । अब असुरों की हार हुई । आगे चलकर जब देवों ने यज्ञ का प्रारम्भ किया, तब पूर्वपचनानुसार शुक्र तथा मांथी नामक बर्तनों में रखा हुआ सोमरस पीने को मिलेगा, इस भाशा से शट तथा मर्क उस यज्ञ भूमि में आ उपस्थित हुए । पर जो देव उन विश्वासघातियों को प्रवेश देने के विरुद्ध थे, उन्होंने दोनों को अपमानित कर वहाँ से हटाया । ( तै स ६-४-१० )

### ( ३ ) सावित्री का सोम से व्याह ।

सोम को पैदा कर चुकने पर प्रजापति ने तीनों वेदों का सृजन किया, पर सोमने वे वेद अपनी हथेलीमें ढक दिये । प्रजापति की दुहिता सावित्री चाहती थी कि, सोम उसका पति बने । पर सोम श्रद्धानामक प्रजापति की अन्य कन्या पर मुग्ध हुआ । अपने पिता के निकट चले जाकर सावित्री ने सोम से पाणिग्रहण करने की अपनी अभिलाषा व्यक्त कर दी । प्रजापति भली भौंति जानते थे कि, सोम किस पर आसक्त है । अतः उसने वशीकरणप्रयोग करने की इच्छा से स्थागरवनस्पति के सौरभपूर्ण चूर्ण को अभिमंत्रित कर उसके माथे पर निलक के रूप में अंकित किया । सावित्री के सोम के निकट चले जाने पर उसे देख कर सोम मंत्रमुग्ध हो, उससे चाटुकारिता की बात करने लगा । सोम के सचेव प्रेम की ठीक ठीक जाँच करवाने के हेतु उसने सोम से कहा कि, यदि वह एकनिष्ठ रहेगा और अपनी मुष्टि में छिपायी वस्तु को उसे साफ साफ बतलायेगा, तो ही वह उसके निकट आयेगी । सोम प्रेम से पागल बन चुका था, इसलिए ये सारी बातें उसने चुपचाप मान लीं और अपने हाथ में विद्यमान तीनों वेद सहर्ष उसे प्रदान किये । दोनों का विवाह पूर्ण हुआ और वे सुखपूर्वक जीवन बिताने लगे । जो स्त्रियाँ चतुर हों, उनकी दशा सावित्री जैसे हुआ करती है । ( तै. ब्राह्मण २-३-११ )

### ( ४ ) गायत्री सोम लायी थी ।

सोमो वै राजा गन्धर्वेषु आसीत्, तं देवाश्च ऋषयश्चाभ्यध्यायन्, कथमयमस्मान्सोमो राजागच्छेदिति ? सा वागव्रीत्, स्त्रीकामा वै गंधर्वा, मयैव स्त्रीभृतया एणध्वमिति । नेति देवा अब्रुवन्, कथं वयं त्वद्वेते स्यामेति ?

साव्रवात्कीणीतैव, यर्हि वाव वो मयार्थो भविता, तर्ह्येव वोऽहं पुनरागन्तासीति, तथेति । गन्धर्वेषु हि तर्हि वाग्भवति... ० ॥

( ऐ. ब्रा १।२७ )

सभी देवता तथा ऋषि आदि सोचने लगे कि, किस भौंति सोम अपने यज्ञमें उपस्थित किया जाय, क्योंकि वह गन्धर्वों में रहता था । सोमरस पाने के लिए देवता अत्यधिक लालायित हो उठे थे, अतः वे खूब प्रयत्न करने लगे । उन्हें विदित हुआ कि गन्धर्व नारियों को बहुत चाहते हैं । उन्होंने वाणी को गन्धर्वों के निकट भेज दिया । वह गायत्रीसदृश छन्दों के रूप में पहुँचकर और पंछी का रूप धारण कर वहाँ से सोम लायी । इयनपंछी पैर में रख सोम लाया आदि कथाएँ, इसी तरह की हैं । अतः सोमाहरणविषयक सूक्तों को सौपर्णसूक्त कहने की प्रणाली है । ( ऐतरेय ब्रा० १.२७; ३.२५, २-२५; १.१२ )

### ( ५ ) सोम के लिए घुडदौड़ ।

देवा वै सोमस्य राज्ञोऽप्रपेये न समपादयन्, अहं प्रथमः पिबेयं, अहं प्रथमः पिबेयं, इत्येवाकामयन्त । ते संपादयन्तोऽब्रुवन्, हन्ताजिमयाम, स यो न उज्जेष्यति, स प्रथमः सोमस्य पास्यतीति, तथेति । त आजिमयुः, तेषामार्जियतामभिसृष्टानां वायुसुखं प्रथमः प्रत्यपद्यत, अथेन्द्रोऽथ मित्रावरुणावदिवनौ । सो वेदिन्द्रो वायुमुद्वेजयतीति, तमनुपरापतत्, ... .. ते एवामेते यथाजितं भक्षा इन्द्रवायव्योः प्रथमोऽयमित्रावरुणयोरथादिवनो स एव इन्द्रतुरीयो ग्रहो गृह्यते०

( ऐ० ब्रा० २।२५ )

एक समय यज्ञमें सोमरसके सेवनार्थ देवतागणमें प्रतिद्वन्द्वता होने लगी । उन्होंने ठान लिया कि, घुडदौड़ में जिसे सफलता मिलेगी, वही सोमपान करे । अन्तमें इन्द्र एवं वायु प्रथम श्रेणीमें आये, पश्चात् मित्रावरुण इत्यादि वर्णन है । ईशान्य दिशा सोमापहरण के लिए अच्छी, क्योंकि उसी दिशा में देवतागण असुरोंपर विजयी हुआ ।

( ऐ० ब्रा० २-२५ )

### ( ६ ) विश्वन्तर का सोमयज्ञ ।

ऐतरेय ब्राह्मण में ( १५-२७ ) सोम के बारेमें एक

समस्कृतिजनक कथा है, जिसमें चार वर्णोंके लिए चार विभिन्न सोमों का प्रतिपादन किया है । संक्षेप में वह यों है—

विश्वंतरो ह सौषघ्नानः श्यापर्णान् परिच-  
क्षाणो विश्यापर्णं यज्ञमाजन्हे, तद्धानुबुध्य  
श्यापर्णास्तं यज्ञमाजग्मुस्ते ह तदन्तर्वेद्यासां  
चक्रिरे । तान्ह दृष्ट्वाच, पापस्य वा इमे  
कर्मणः कर्तार आसतेऽपूर्तायै वाचो वदितारो  
यच्छ्यापर्णा इमानुत्थापयतेमे मेऽन्तर्वेदि-  
मासिषतेति, तथेति, तानुत्थापयांचक्रुस्ते  
होत्थाप्यमाना रुरुविरे; ये तेभ्यो भूतवी-  
रेभ्य .. कस्वित्सोऽस्माकास्ति वीरो य  
इमं सोमपीथमभिजेप्यर्ताति, अयमहमस्मि  
वो वीर इति होवाच रामो भार्गवेयो  
तेषां होत्तिष्ठतामुवाचापि नु राजन्निथं विदं  
वेदेरुत्थापयन्तीति यस्त्वं कथं वेत्थ ब्रह्म-  
बन्धविति ॥

यत्रेन्द्रं देवताः पर्यवृञ्चन् .. तत्रेन्द्रः सोम-  
पीथेन व्याधृत, इन्द्रस्यानु क्षत्रं सोमपीथेन  
व्याधृत.. तद्वृथद्धमेवाद्यापि क्षत्रं सोमपीथेन,  
स यस्तं भक्षं विद्याद्यः क्षत्रस्य सोमपीथेन  
व्युद्धस्य, येन क्षत्रं समृध्यते, कथं तं वेदेरुत्था-  
पयन्तीति, वेत्थ ब्राह्मण त्वं तं भक्षाम् । वेद-  
हीति तं वै नो ब्राह्मण ब्रहीति तस्मै वै ते  
राजन्निथि होवाच । यदि सोमं ब्राह्मणानां  
स भक्षो ब्राह्मणांस्तेन भक्षेण जिन्विष्यसि  
ब्राह्मणकल्पस्ते प्रजायामाजनिष्यत आदाय्या-  
पाय्यावसायी यथाकामप्रयाप्यो यदा वै क्षत्रि-  
याय पापं भवति.. ईश्वरो हास्माद्वितीयो वा

अथ यदि दधि वैश्यानां स भक्षो वैश्यांस्तेन  
भक्षेण जिन्विष्यसि, . यद्यपः शूद्राणां स  
भक्षः शूद्रांस्तेन भक्षेण जिन्विष्यसि... अथा-  
स्यैष स्वो भक्षो न्यग्रोधस्यावगोधाश्च फलानि  
चादुम्बराण्याश्चत्थानि... श्यापर्ण उ मे यज्ञ  
इति एतमु हैव प्रोवाच ॥

( ऐ० ब्रा० ७।२७-३४ )

यज्ञमें श्यापर्णों की ओर ध्यान न देकर विश्वन्तरने  
विश्यापर्णों को बुलवाया, पर यज्ञ का समाचार पाकर

श्यापर्ण भी अनाहूत होते हुए भी वहाँ जा बैठे । जब  
नरेश उन्हें हटाने लगा, तो खलबली मचने लगी । श्यापर्ण  
ने प्रश्न उठाया, क्या कोई उनमें शूर वीर नहीं, जो राजाको  
अपने अधीन कर लेगा । राम भार्गवेय नामक एक नव-  
युवक आगे बढ़कर राजा से पूछने लगा—

“ क्या तू मुझ जैसे ज्ञानी का भी तिरस्कार करता है ?

“ अरे पागल ! भला तू क्या जानता है ?

“ लेकिन क्या तू सुननेयोग्य दशा में है ?

“ सुननेयोग्य कौनसी बात तुम्हारे समीप है ?

“ बिना सुने कैसे वह समझ में आयेगी ?

“ क्या तू जानता है, इन्द्र को सोम देना निषिद्ध हुआ  
है ?

“ नहींजी । इन्द्र को सोम देना क्यों रोक दिया ?

“ उसने पाँच अपराध किये हैं इसलिए ।

“ यदि इन्द्रको सोम नहीं, तो उसके अनुयायी-क्षत्रि-  
योंको वह कैसे भला मिल सकता है ?

“ हाँ, बिलकुल ठीक । अब आगे किसी को सोम  
नहीं ।

“ पर इन्द्र जैसा वीर बिना सोम पिथे कैसे रहेगा ?  
वह यज्ञ में बलान् घुसकर सोम पी जाता है ।

“ महाराज ! हम क्षत्रिय भला उस योग्यता को क्या  
जाने ?

“ पर बिना सोम के क्षत्रियों को स्फूर्ति कैसे आयेगी ?

“ क्षत्रियों के बल को बढ़ानेवाला सोम मुझे विदित है ।

“ कहिए श्रीमन् ! हम क्षत्रियों का उद्धार कीजिए ।

“ सोमवल्ली केवल ब्राह्मणों के उपयोग के लिए ही है ।

यदि तुम सोमवल्ली का उपयोग करने लगोगे, तो तुम्हारी  
प्रजा ब्राह्मणों के समान दानप्रतिग्रह लेनेवाली, घूमने-  
वाली, गरीब तथा युद्धकार्य के लिए अत्यंत निरुपयुक्त बन  
जायगी ।

“ फिर क्षत्रियों का बडप्पन अक्षुण्ण कैसे रहेगा ?

“ वैश्यों का सोम दधि है । उसे खाने से क्या वैश्य  
जैसी सन्तान होगी ?

“ इस भाँति दुर्बलता, परमात्मा करे, हमारी संतान  
को कभी न आ जाय ।

“ शूद्र जाति के लिए जल ही सोम है । उस का उप-  
योग करनेपर दासमनोवृत्ति एवं चाटुकारिता से पूर्ण

प्रजा का उत्पादन होगा ।

“ छी छी । ऐसा पतन हमारा कभी न होवे ! ! !

“ यदि सच्चा क्षत्रिय उत्पन्न हो, ससारपर उसे अपनी धाक जमाकर बैतानी हो, तो बडकी शाखाएँ, औदुंबर, पिंपल या लक्षपेटों से यज्ञ किया जाय । आया समझ में ?

“ महाराज ! यह कहकर आपने क्षत्रियजातिपर बडा भारी उपकार किया है । अब आप श्यापर्णसहित मेरे यज्ञ में आ जाँँ और उसे यथावत् पूरा कर लेंवें ।

पश्चात् श्यापर्ण यज्ञ में आएँ और उन्होंने यज्ञकी पूर्णता निष्पन्न कर दी ।

इस कथा से भी सोम के बारे में उस समय क्या दशा थी, इसपर अच्छा प्रकाश पडता है ।

### सोम की कथाओं का मनन ।

ऊपर सोम की छः कथाएँ दी हैं । पर ये सब सोम-वह्नी की नहीं हैं । पहिली कथा सोम की अर्थात् चन्द्रमा की है । यह एक लाक्षणिक कथा है । बहु स्त्रीसेवन से क्षयरोग होने की सम्भावना होती है । इत्यादि भाव इस कथा से मिलता है । सूर्यप्रकाश क्षयरोग का निवारण करता है, यह भी इस में तात्पर्य है । अर्थात् यह कथा सोमवह्नी की नहीं है ।

दूसरी ' शण्ड-मर्क ' की कथा है । असुरों में जब तक ब्रह्मविद्या थी, ( ब्रह्मण्वन्तः ) तबतक वे परास्त नहीं हुए, जब असुरोंने ब्रह्मविद्या-वेदविद्या का त्याग किया, यज्ञ करना छोड दिया, तब देवोंने असुरों को परास्त किया । इस से ब्रह्मविद्या, वेदविद्या, यज्ञविद्या, और सोमविद्या से विजय प्राप्त हो सकता है, यह सिद्ध किया है ।

इन विद्याओं में विजय की बातें हैं, इनको यथावत् जानने से और योग्य अनुष्ठान से विजय प्राप्त हो सकता है । विजय के इच्छुक इस का अवश्य विचार करें ।

तीसरी कथा सावित्री के विवाह की है । सावित्री सविता की पुत्री सोम से अर्थात् चन्द्रमा से ब्याही है । यह सूर्यासावित्री के विवाह का कथाभाग ऋ० १०।८५ और अथर्व. १४।१ में है । पर इसमें और इस तै० ब्रा० की कथा में थोडासा हेरफेर है । वास्तव में यह कथा केवल रूपकात्मक है । प्रेमपूर्वक विवाह किस तरह करना चाहिये, इस का उपदेश इस कथा से मिलता है । यह सोम चन्द्रमा है और इस सोम का सोम-औषधि से कोई

सम्बन्ध नहीं है ।

चतुर्थ कथा गायत्री सोम लायी, यह है । यहां गायत्री छंद के मंत्र सोमको यज्ञशाला में लाने के समय पडे जाते हैं, इस विधि पर यह कथा रची है । यत्न कर के धार्मिक इष्ट की प्राप्ति करनी चाहिये, यही उपदेश इस कथा से मिलता है ।

पांचवी कथा घुडदौड में प्रथम आनेवालों को सोम पीने के लिये दिया जाता है । इस भाव की है । बडे परिश्रम होने पर पीनेयोग्य सोमपान है, यह इस से सिद्ध होता है । श्रमपरिहार करनेवाला पेय सोमपान है ।

छठी कथा में क्षत्रियों की उन्नति का विचार किया है । ब्राह्मणों जैसे नरम मनवाले क्षत्रिय न हों, प्रस्थुत क्षत्रिय वीरवृत्तिवाले स्वराज्य बढानेवाले बने । यह इस कथा का आशय स्पष्ट है । सोमपान ऐसे क्षत्रिय करें कि, जो वीरक्षत्रिय है । उक्त कथाओंमें इससे अधिक कुछ उपदेश होंगे, तो उस का आविष्कार खोजपूर्वक करना चाहिये । सोमसावित्री के विवाह का मूल वेद में हमें मिला है । अन्य कथाओं का मूल वेद के मंत्रभाग में कहां है और उस का वहां आशय क्या, यह देखना चाहिये । अन्य कथाओं का मूल संहिता के मंत्रों में आवश्य होगा, ऐसा हमारा ख्याल है । यह एक खोज करनेयोग्य विषय है ।

### आगे का कर्तव्य ।

सोम के विषय में ये संहिता के मंत्र हमने पाठकों के सामने रखे हैं । भूमिका में कुछ वक्तव्य जो इस समय रखनेयोग्य प्रतीत हुआ, वह इस लेखद्वारा पाठकों के सन्मुख रख दिया है ।

मंत्रों के अर्थों की परिपूर्ण संगति लगाने के बाद और जो वक्तव्य होगा, वह विस्तारपूर्वक पाठकों के सन्मुख रखा जायगा । वेदका विषय बहुत ही खोज होनेके बाद सुव्यवस्था से पाठकों के सन्मुख प्रकट होगा, तब तक जितना व्यक्त हो रहा है, उतना ही हम प्रकट कर रहे हैं ।

यहां जो वेदविद्या के विषय में प्रेम रखते हैं, उन पर एक बडी भारी जिम्मेवारी है, वह यह है कि, वे एक ४।५ औषधिविद्याविशारद विद्वानों का मण्डल कायम करें कि, जो सोम की खोज करें । यह खोज घर में बैठते हुए नहीं हो सकती है । इस के लिये कई वर्ष हिमालय में गुजारने होंगे । मूंजवान् आदि पर्वतशिखरों पर जाकर सुधृत में

कहे चिन्हों से युक्त २४ प्रकार के सोम का पता लगाना चाहिये । कई क्षुद्र सोम तो अन्य पर्वतों पर भी मिल सकते हैं । जो मुख्य और श्रेष्ठ सोम है, वह हिमालय की उंची से उंची चोटी पर प्राप्त होगा । इस कार्य के लिये सहस्रों रु० का व्यय हो जाय, तो कोई अधिक नहीं है । हमने इस व्यय का अदाजा लगाया नहीं है, पर पांच औषधिशालाञ्ज अच्छे उत्साही पुरुष पांच वर्ष खोज करते रहे और अविरत परिश्रम करते रहे, तो दस हजार रु. से कम व्यय नहीं होगा । सभव है कि, प्रथम वर्ष ही इस औषधि का पता लगे और अधिक व्यय करना न पड़े । पर करना पड़े तो उस व्यय के प्रबन्ध का विचार पहिले से ही करके रखना चाहिये ।

वेद की मुख्य वस्तु 'सोम औषधि' है । यह शत-पथ, ऐतरेय के समय से दुष्प्राप्य हुई थी । तब से इतने राजा, महाराजा सनातनधर्म में हुए, पर किसी ने दस-बीस हजार रु. इस खोज के लिये खर्च नहीं किये । इस समय बड़े बड़े पुरंधर वैद्य भारत में विद्यमान हैं, वे आर्य-वैद्यक के औषध बनाते और लाखों रु. कमाते भी हैं । पर आर्यवैद्यक में जो जीवनीय औषध है, उनमें से बहुत से औषध दुष्प्राप्य मानकर ही वे च्यवनप्राश आदि पाक बनाते हैं और भोले लोग उन का सेवन करते हैं । पर सामूहिक रूप से उक्त औषधियों को प्राप्त करने का यत्न ये वैद्य नहीं करते । यदि करेंगे, तो हिमालय उक्त औषधियाँ उनको अवश्य प्रदान करेगा ।

सोम औषधि के कई प्रकार हैं । सुश्रुत ने तो २४ प्रकार के सोम बताये हैं । पत्तों का रस और कन्द का रस या दुग्ध लेने की विधि ऊपर बताई है । सोमरस में सुवर्ण का वर्ल या बारीक चूर्ण जो रस के साथ मिल सकता है, सेवन करने की विधि पूर्वस्थान में बताई है । सोम कूटनेके समय कूटनीके नीचे लोहे की कूटनी पर सोने का आवरण होना चाहिये, ऐसा प्रतीत होता है । यह विधि अन्वेष्ट्य है, पर इतनी बात सत्य है कि, सोमरस के साथ अल्प अंश से सुवर्ण का सेवन होता था ।

सोम के कन्द का रस निकालने के लिये सोने की सुई लेनी है और उस से कन्द में सुराख निकाल कर वह दूध या रस सुवर्ण के पात्र में लेने का है । यह दूध के

साथ तथा शहद के साथ सेवन करना होता है । यहां सुवर्ण का प्रयोग विशेष महत्त्व का है । निरर्थक नहीं ।

यह सोमरस दीर्घायु, बल, आरोग्य, भोज, उत्साह, रोगदूरीकरण की शक्ति, वीर्यवृद्धि, शुक्र-शोणित वृद्धि करके नवजीवन देनेवाला है । वेद जो कई नई बातें बताता है, उनमें से सोम औषधि का स्थान बड़ा प्रमुख है । इस सोम पर इतना बड़ा काव्य वेद में मिलता है, वेदमंत्रों की पूर्ण सख्या के करीब दसवा भाग अकेले सोमदेवता के लिये वेद में रखा है । वेद की दृष्टि से इस का इतना महत्त्व है । अतः इस औषधि की खोज होना अत्यंत आवश्यक है ।

इस खोज के लिये जो भी धन लगे, वैदिकधर्मियों को लगाना चाहिये और सोम वनस्पति की प्राप्ति अवश्य करनी चारिये । हिमालयमें तथा जहां जहां सोम मिलता है, ऐसा आर्थग्रंथोंमें लिखा है, वहां जाकर खोज करनेसे पांच-दस वर्षोंके यत्नसे निःसंदेह यह औषधि प्राप्त होगी ।

इस समय जर्मनों ने तथा अन्यान्य खोजकर्ताओं ने एक प्रकार की सोम करके वनस्पति प्राप्त की है और वह सैकड़ों मन प्रतिवर्ष हिमालय से यूरोप में जाती भी है । इसका सत् निकाल कर वह बाजारों में बहुत ही मूल्य से बिकता है । इस विषय में हम चाहते हैं कि, निश्चित रूप से हमें ज्ञान हो, पर इस समय वह हमें नहीं मिल सकता, जब उस ज्ञान की प्राप्ति होनेयोग्य समय आवेगा, उस समय हम इस संबंध का संपूर्ण ज्ञान पाठकोंके सम्मुख रखेंगे । यह यूरोप में भेजी जानेवाली वनस्पति काश्मीर से लेकर ब्रह्मदेश तक व्यापनेवाले हिमालय की चोटी से प्राप्त होती है और इसका गुण भी नष्टारुण्य देना है, अर्थात् जीवनीय गुण इसमें है ।

यदि युरोपीयन लोग ऐसी वनस्पतियों की खोज हिमालय में कर सकते हैं, तो वेद को अपना धर्मग्रंथ माननेवाले भारतीय विद्वान् क्यों नहीं कर सकते ? यह उत्तरदायित्व भारतीयों पर है, इतना पाठकों से निवेदन करके इस भूमिका की समाप्ति करते हैं ।

औध, ( जि. सातारा )

निवेदनकर्ता

ता २२।७।४२.

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर,  
अध्यक्ष - स्वाध्याय-मंडल, औध



# सोम-देवता का परिचय।

१ अमरकोश में सोम ।	पृष्ठांक ३	३४ वीर सोम ।	पृष्ठांक २१
२ निघण्टु में सोम ।	५	३५ सर्वविजयी ।	११
३ निरुक्त में सोम ।	११	३६ प्रभावी वीर ।	११
४ ब्राह्मण ग्रंथों में सोम ।	११	३७ शूर वीर ।	२२
५ सोम के उत्पत्ति-स्थान ।	७	३८ शत्रुनाश ।	११
६ युलोक तथा सोम ।	११	३९ सोमरस वज्र जैसा है ।	२४
७ सोम का स्थान ।	८	४० कलावान् सोम ।	११
८ पर्वत पर सोम ।	११	४१ पुरातन पिता ।	३५
९ पत्नों के साथ सोम ।	९	४२ प्रभु के गुप्त दूत ।	११
१० सोम का वर्ण ।	११	४३ तप का महत्त्व ।	११
११ सोम में विद्यमान गुण ।	११	४४ त्रिभुवनों का अधिष्ठाता ।	११
१२ स्वर्गीय अमृत ।	११	४५ देवों के मुख्य नाम ।	२६
१३ वीर्यवर्धक सोम ।	११	४६ उन्नति की इच्छा ।	११
१४ सोम तारुण्य देता है ।	१०	४७ सहस्रों का नेता ।	११
१५ बल की वृद्धि ।	११	४८ सरलता, सत्य और श्रद्धा ।	११
१६ सोम का विद्युत्तेज ।	११	४९ यम का राज्य ।	११
१७ सोम से सबको लाभ ।	११	५० अनेक सूर्य हैं ।	२७
१८ सोम की रुचि ।	११	५१ सोम की कथाएँ ।	११
१९ सोम तथा सुरा ।	११	५२ सोम का क्षय से पीड़ित होना ।	११
२० सोम तैयार करने की प्रणाली ।	११	५३ शंभ, मर्क एवं सोम ।	११
२१ छलनी कैसे रहे ?	११	५४ सावित्री का सोम से ब्याह ।	२८
२२ सोमरस की छाननी ।	११	५५ गायत्री सोम लायी थी !	२९
२३ तीन छाननियाँ ।	१२	५६ सोम के लिये घुड़दौड़ ।	११
२४ गौका चर्म ।	१३	५७ विश्वन्तर का सोमयज्ञ ।	११
२५ सोम के साथ मिलानेयोग्य वस्तुएँ ।	११	५८ सोम की कथाओं का मनन ।	३०
२६ सोम में दूध मिला दो ।	११	५९ भागे का कर्तव्य	११
२७ सोम में शहद मिला दो ।	१४	<b>सोम-देवता के मंत्र ।</b>	
२८ सोम में दही मिला दो ।	११	१ पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।	पृष्ठ ७७-९५
२९ वैद्यशास्त्र में सोम ।	१७	२ उपमा-सूची ।	९६-९९
३० षण्ड्यमा तथा सोम ।	१९	३ वर्णानुक्रम-सूची ।	१००-११०
३१ सोम किस समय बिनष्ट हुआ होगा ?	२०	४ गुणबोधक-पदसूची ।	१११-१३४
३२ सोम के सम्बन्ध में विविध कल्पनाएँ ।	११	५ निपात-देवतानां वर्णानुक्रमसूची ।	१३४-१३५
३३ पञ्च जनों को प्रिय सोम ।	११	६ ऋग्वेदीय-सर्वाणामनुक्रमणिक-देवता-तद्विशेष-सूची	१३६



# सोमदेवता-मंत्रों की ऋषिसूची ।

मधुच्छंदा वैश्वामित्रः । १-१० ।  
 रेणुर्वैश्वामित्र । ६२०-२९ । ऋषभो वैश्वामित्रः । ६३०-३८ ।  
 प्रजापतिवैश्वामित्रो वाच्यो वा । २५६-५९ ।  
 विश्वामित्रो गाथिनः । ५८०-८२; ११२४-२६ ।  
 विश्वामित्र-जमदग्नी । १२३९ । मेघानिधिः काण्वः । ११-२० ।  
 मेघ्यातिथिः काण्वः । २९०-३०७ ।  
 कण्वो घौरः । ८२३-२७; १०९८-११०० ।  
 प्रगाथो घौर काण्व । ११३५ ४२ । प्ररुण्वः काण्व ८२८-३० ।  
 पर्वतनारदो काण्वो । ९७४-८५ ।  
 शून-शेष आजीगतिः, कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । २१-३० ।  
 हिरण्यस्तूप आंगिरस । ३१४० । ६१०-१९ ।  
 नृमेध आंगिरसः । २०६-११; २१८-२३ ।  
 मियमेघ आंगिरस । २१२-१७ । बिंदुरांगिरसः । २२४-२९ ।  
 प्रभूवसुरांगिरसः । २५४-६५ । रहृगण आंगिरस । २६६-७७ ।  
 वृहन्मतिरांगिरसः । २७८-८२ । अयास्य आंगिरसः ३०८-३२५ ।  
 उचथ्य आंगिरसः । ३४१-५५ । अमहीयुरांगिरसः । ३८८-४१७ ।  
 पवित्र आंगिरसः । ५८९-९९, ६४८-५६; ७०६-१० ।  
 हरिमंत आंगिरस । ६३९-४७ । कुस आंगिरसः । १०१-१४ ।  
 उरुरांगिरसः । १०२९-३० । ऊर्ध्वसद्या आंगिरसः । १०३३-३४ ।  
 कृतयशा आंगिरसः । १०३५-३६ । क्षिप्रुरांगिरसः । १०७९-८२ ।  
 गृत्समद आंगिरसः । १२१७-२२ ।  
 आसित काश्यपो देवलो वा । ४१-१९३ ।  
 दळ्हच्युत भागस्यः । ३९४-९२ ।  
 इधमवाहो दार्ढच्युत । २००-२०५ ।  
 गोतमो राहृगणः । २३०-३५; ५७४-७६; ११०१-२३ ।  
 श्यावाश्व आश्रयः । २३६-४१ ।  
 श्रित आप्यः । २४२-५३; ९६०-६७ ।  
 द्वित ,, । ९६८-७३ ।  
 कविर्भागवः । ३२६-४०; ६६६-२० ।  
 जमदग्निर्भागवः । ४१८-४७, ५८३-८५, ११५२ ।  
 बेनो भागवः । ७१६-२७ । कृन्तुर्भागवः । ११५०-५८ ।  
 अवत्सारः काश्यपः । ३५६-८७ । निधुधिः काश्यपः । ४४८-७७ ।  
 काश्यपो मारीचः । ४४८-५०७, ५७१-७३; ८०६-१७ ।  
 १०८३-२७ । रेभसून् काश्यपौ । ९२७-४३ ।  
 शृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भागवो वा । ५०८-३७ ।  
 क्षत वैखानसा । ५३८-५५, ५५९-६७ ।  
 अग्निः पवमानः । ५५६-५८ । अग्निर्भौमः । ५७७-७९ ।  
 भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । ५६८-७०; १२२३-२६ ।

वासिष्ठो मैत्रावरुणिः । ५८६ ८८; ८००-८०५, ८५७-५९;  
 ११३२-३४, १२२९ । वासिष्ठ इंद्रप्रमतिः । ८६०-६२ ।  
 वासिष्ठो वृषगणः । ८६३-६५ । वासिष्ठो मन्युः । ८६६-६८ ।  
 वासिष्ठ उपमन्यु । ८६९-७१ । वासिष्ठो व्याघ्रपाद् ८७२-७४ ।  
 वासिष्ठः शक्तिः ८७५-७७; १०२८; १०३९-४१ ।  
 वासिष्ठः कर्णश्रुद् । ८७८-८० । वासिष्ठो मृळीक । ८८१-८३ ।  
 वासिष्ठो वसुक । ८८४-८६ । वसुप्रिर्भालदनः । ६००-६०९ ।  
 कक्षीवान्देर्घतमसः । ६५७-६५ । वसुभारद्वाजः । ६९१-७०५ ।  
 ऋजिश्वा भारद्वाजः । १०३१-३२ । गर्गो भारद्वाजः । ११२७-३१ ।  
 पायुर्भारद्वाजः । १२२७-२८ । वाच्यः प्रजापतिः । ७११-१५ ।  
 अकृष्टा माषा । ७२८-७३७ । अकृष्टामाषाद्यस्त्रयः । ७५८-६७ ।  
 सिकता निवावरी । ७३८-४७ । पृथिव्योऽजा । ७४८-५७ ।  
 भौमोऽग्निः । ७६८-७२ । गृत्समदः शौनकः ७७३-७५ ।  
 उशना काश्यः । ७७६ ९९ । नोधा गौतम । ८१८-२२ ।  
 दैवोदासिः प्रतर्दन । ८३३-५६ । दैवोदासि परुच्छेपः । १२१६ ।  
 पराशरः शाक्यः । ८८७ ९०० । गौरवतिः शाक्यः । १०२६-२७ ।  
 अम्बरीषो वार्षांगिरः, ऋजिश्वा भारद्वाजश्च । ९१५-२६ ।  
 अन्धीगुः श्यावाश्वि । ९४४-४६ ।  
 ययातिर्नाहुषः । ९४७-४९ । नहुषो मानवः । ९५०-५२ ।  
 चक्षुर्मानवः । ९८९-९१ । मनुः सांवरणः । ९५३-५५ ।  
 मनुराप्सवः । ९९२-९९४ ।  
 अग्निश्चाक्षुषः । ९८६-८८, ९२५-९९ ।  
 सप्तर्षयः ( १ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, २ काश्यपो मारीचः,  
 ३ गोतमो राहृगणः, ४ भौमोऽग्निः, ५ विश्वामित्रो गाथिनः,  
 ६ जमदग्निर्भागवः ७ मैत्रावरुणिवसिष्ठः ) १०००-१०२५ ।  
 ऋणंचयो राजर्षिः । १०३७-३८ ।  
 अग्नेयो धिष्ण्या ऐश्वर्यः । १०४२-६३ ।  
 त्र्यरुणक्षौवृष्णः असदस्यु पौरुकुस्यः । १०६४-७५ ।  
 अनानतः पारुच्छेपिः । १०७६-७८ । ब्रह्मा ११८९ ।  
 ऐन्द्रो विमदः, प्राजापत्यो वा । ११६०-७० ।  
 सूर्यो सावित्री ऋषिका । ११७१-७५; १२३८ ।  
 अथर्वा । ११७६-८६; ११९०; १२४४-६० ।  
 बृहदिवोऽथर्वा । ११८७ । शुक्र । ११८८ । बृहच्छुक्रः १२६१ ।  
 वैश्वस्वतो यमः । १२३० । देवश्रवा यामायन । १२३१ ।  
 मथितो यामायनः, शृगुर्वारुणिर्वा, भागवदस्यवनो  
 वा । १२३४ । पतिवेदनः । १२३५; १२४३ ।  
 बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायना । १२३६-३७ ।  
 चातनः । १२४०-४१ । शृग्वंगिराः । १२४२ ।



# दैवत-संहिता ।

[ ऋग्यजुःसामाथर्वणा संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दधतानुसारेण सम्यग् निर्मिताः । ]

## ३ सोमदेवता ।

॥ १ ॥ ( ऋ ९ । १ । १- १० )

( १—१० ) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

स्वादिष्टया मदिष्टया	पर्वस्व सोम धारया	। इन्द्राय पातवे सुतः	१
रक्षोहा विश्वर्षणि	रभि योनिमयोहतम्	। द्रुणां सधस्थमासदत्	२
वरिवोधातमो भव	मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः	। पर्षि राधो मघोनाम्	३
अभ्यर्ष महानां	देवानां वीतिमन्धसा	। अभि वाजमुत श्रवः	४
त्वामच्छा चरामसि	तदिदर्थं दिवेदिवे	। इन्द्रो त्वे न आशसः	५ ५
पुनार्ति ते परिस्रुतं	सोमं सूर्यस्य दुहिता	। वारंण शश्वता तना	६
तमीमर्षीः समर्य आ	गृभ्णन्ति योषणो दश	। स्वसारुः पार्ये दिवि	७
तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो	धमन्ति बाकुरं दार्तिम्	। त्रिधातु वारणं मधु	८
अभीष्टममर्ष्या उत	श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्	। सोममिन्द्राय पातवे	९
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा	विश्वा वृत्राणि जिघ्रते	। शूरां मघा च मंहते	१० १०

॥ २ ॥ ( ऋ ९ । २ । १—१० )

( ११—२० ) मघातिथिः काण्व ।

पर्वस्व देववीरति	पवित्रं सोम रंध्या	। इन्द्रमिन्द्रो वृषा विश	१
आ वच्यस्व महि प्सरो	वृषेन्दो घुम्रवत्तमः	। आ योनिं धर्णासिः सदः	२
अधुक्षत प्रियं मधु	धारां सुतस्य वेधसः	। अपो वमिष्ट सुक्रतुः	३
महान्तं त्वा महीर	न्वापो अर्षन्ति सिन्धवः	। यद्रोभिर्वासयिष्यसे	४
समुद्रो अप्सु मामृजे	विष्टम्भो धरुणो दिवः	। सोमः पवित्रं अस्मयुः	५ १५
अचिक्रदद् वृषा हरि	र्महान् मित्रो न दर्शतः	। सं सूर्येण रोचते	६
गिरस्त इन्दु ओजसा	मर्ष्यन्तै अपस्युवः	। याभिर्मदाय शुभ्रसे	७ १७

तं न्वा मदाय घृध्वय उ लोककृन्नुमीमहे । तव प्रशस्तयो महीः	८	
अस्मभ्यमिन्दविन्द्रयुर्मध्वः पवस्व धारया । पर्जन्यां वृष्टिमाँ इव	९	
गोपा इन्दो नृपा अस्यश्चसा वाजसा उत । आत्मा यज्ञस्य पूर्यः	१०	२०

॥ ३ ॥ ( ऋ ९।३।१—१० )

( २१—३० ) आजीगर्तिः गुनःशपः कृत्त्रिमाँ वैश्वामित्रो देवरात ।

एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयति । अभि द्रोणान्यासदम्	१	
एष देवो विषा कृतो ऽति ह्यरांसि धावति । पवमानो अदाभ्यः	२	
एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः । हर्गिवाजाय मृज्यते	३	
एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः । पवमानः सिषासति	४	
एष देवो रथर्यति पवमानो दशस्यति । आविकृणोति वग्वनुम्	५	२५
एष विप्रंगभिष्टुतो ऽपो देवो वि गाहते । दधद् रत्नानि दाशुषं	६	
एष दिवं वि धावति तिरो रजांमि धारया । पवमानः कर्निकदत्	७	
एष दिवं व्यासरत तिरो रजांस्यस्पृतः । पवमानः स्वध्वरः	८	
एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः । हरिः पवित्रे अर्षति	९	
एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः । धारया पवते सुतः	१०	३०

॥ ४ ॥ ( ऋ ९।४।१—१० )

( ३१—४० ) हिरण्यसृप आङ्गिरसः ।

सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः । अथा नो वस्यसस्कृधि	१	
सना ज्योतिः सना स्वर्षे विश्वा च सोम सौभगा । अथा नो वस्यसस्कृधि	२	
मना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि । अथा नो वस्यसस्कृधि	३	
पवीदारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे । अथा नो वस्यसस्कृधि	४	
त्वं सूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः । अथा नो वस्यसस्कृधि	५	३५
तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक् पश्येम सूर्यम् । अथा नो वस्यसस्कृधि	६	
अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विर्वहसं रयिम् । अथा नो वस्यसस्कृधि	७	
अभ्यर्षानपच्युतो रयिं समत्सु सासहिः । अथा नो वस्यसस्कृधि	८	
त्वां यज्ञैरवीवृधन् पवमान त्रिधर्मणि । अथा नो वस्यसस्कृधि	९	
रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर । अथा नो वस्यसस्कृधि	१०	४०

॥ ५ ॥ ( ऋ ९ । ६ । १-९ )

(४१-१९३) अस्मिन् काश्यपो देवलो वा ।

मन्द्रया सोम धारया	वृषा पवस्व देवयुः	। अच्यो वारंष्वस्मयुः	१
अभि त्वं मद्यं मदु-	मिन्दुविन्द्र इति क्षर	। अभि वाजिनो अब्रतः	२
अभि त्वं पृथ्व्यं मदं	सुवानो अर्ष पवित्र आ	। अभि वाजमुत श्रवः	३
अनु द्रप्सास इन्द्रव	आपो न प्रवतास्रन	। पुनाना इन्द्रमाशत	४
यमन्यामिव वाजिनं	मृजन्ति योषणो दश	। वने क्रीळन्तमत्यविम्	५
तं गोभिवृषणं रसं	मदाय देववीतये	। सुतं भगाय सं मृज	६
देवो देवाय धारये-	न्द्राय पवते सुतः	। पयो यदस्य पीपयन्	७
आत्मा यज्ञस्य रंहा	सुष्वाणः पवते सुतः	। प्रलं नि पाति काच्यम्	८
एवा पुनान इन्द्रयु-	मदं मदिष्ट वीतये	। गुहां चिद दधिपे गिरः	९

॥ ६ ॥ ( ऋ ९ । ७ । १-९ )

अमृग्रमिन्द्रवः पथा	धर्मन्तस्य सुश्रियः	। विदाना अस्य योजनम्	१
प्र धारा मध्वो अग्रियो	महीरपो वि गाहते	। हविर्हविष्पु वन्द्यः	२
प्र युजो वाचो अग्रियो	वृषाव चक्रदुद् वने	। सन्नाभि सन्यो अध्वरः	३
परि यत् काच्या कवि-	र्नृम्णा वमानो अर्षति	। स्वर्वाजी सिपासति	४
पवमानो अभि स्पृथो	विशो राजैव सीदति	। यदीमृष्वन्ति वेधमः	५
अच्यो वारे परि प्रियो	हरिर्वनेषु सीदति	। रंभो वनुष्यते मती	६
स वायुमिन्द्रमश्विना	साकं मदेन गच्छति	। रणा यो अस्य धर्मभिः	७
आ मित्रावरुणा भगं	मध्वः पवन्त ऊर्मयः	। विदाना अस्य शकमाभिः	८
अम्भ्यं रोदमी रयिं	मध्वो वाजस्य मातये	। श्रवो वसनि सं जितम्	९

॥ ७ ॥ ( ऋ ९ । ८ । १-९ )

एते सोमा अभि प्रिय-	मिन्द्रस्य काममक्षरु	। वर्धन्तो अस्य वीर्यम्	१
पुनानासंश्वमृषदो	गच्छन्तो वायुमश्विना	। ते नो धान्तु सुवीर्यम्	२
इन्द्रस्य सोम राधसे	पुनानो हार्दिं चोदय	। ऋतस्य योनिमासदम्	३
मृजन्ति त्वा दश क्षिपो	हिन्वन्ति सप्त धीतयः	। अनु विप्रा अमादिषुः	४
द्वेभ्यस्त्वा मदाय कं	सृजानमति मेप्यः	। सं गोभिर्वासयामसि	५

पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः	। परि गव्याऽन्यव्यत	६
मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः	। इन्दो सखायमा विश	७ ६५
वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्रं पृथिव्या अधि	। सहो नः सोम पुत्सु धाः	८
नृचक्षमं त्वा वयमिन्द्रपीतं स्वर्विदम्	। भक्षीमहि प्रजामिषम्	९

॥ ८ ॥ ( ऋ ९ । ९ । १—९ )

परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नृप्त्योर्हितः	। सुवानो याति कविक्रतुः	१
प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहं	। वीत्यर्ष चनिष्ठया	२
स सनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत्	। महान् मही क्रतावृधा	३ ७०
स सप्त धीतिभिर्हितो नद्यो अजिन्वदद्रुहः	। या एकमर्क्षि वावृधुः	४
ता अभि सन्तमन्तं महे युवानमा दधुः	। इन्दुमिन्द्र तव व्रते	५
अभि वह्निरमर्त्यः सप्त पश्यति वार्वहिः	। क्रिविर्देवीरतर्पयत्	६
अवा कल्पेषु नः पुमस्तमांसि सोम योध्या	। तानि पुनान जङ्घनः	७
नू नव्यमे नवीयसे सूक्ताय साधया पथः	। प्रत्नवद् रोचया रुचः	८ ७५
पवमान महि श्रवो गामश्च रासि वीरवत्	। सना मेधां सना स्वः	९

॥ ९ ॥ ( ऋ ९ । १० । १—९ )

प्र स्वानासो रथा इवाऽर्वन्तो न श्रवस्यवः	। सोमासो राये अक्रमुः	१
हिन्वानासो रथा इव दधन्विरे गर्भस्त्योः	। भरांसः कारिणामिव	२
राजानो न प्रशस्तिभिः सोमामो गोभिरञ्जते	। यज्ञो न सप्त धातृभिः	३
परि सुवानाम इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा	। सुता अर्पन्ति धारया	४ ८०
आपानासो विवस्वतो जनन्त उपसो भगम्	। स्ररा अण्वं वि तन्वते	५
अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः	। वृष्णो हरस आयवः	६
समीचीनास आसते होतारः सप्तजामयः	। पदमेकस्य पिप्रतः	७
नाभा नाभि न आ ददे चक्षुश्चित् सूर्ये सचा	। कवेरपत्यमा दुहे	८
अभि प्रिया दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहाहितम्	। सूरः पश्यति चक्षसा	९ ८५

॥ १० ॥ ( ऋ ९ । ११ । १—९ )

उपासै गायता नरः पवमानायेन्दवे	। अभि देवा इयक्षते	१
अभि ते मधुना पयो ऽथर्वाणो अशिश्रयुः	। देवं देवार्य देवयु	२
स नः पवस्व शं गत्रे शं जनाय शमवते	। शं राजन्नाषधीभ्यः	३ ८८

बभ्रवे नु स्वतवसे ऽरुणाय दिविस्पृशे	। सोमाय गाधमर्चत	४
हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन	। मधावा धावता मधुं	५ ९०
नमसेदुर्ष सीदत दुधेदुभि श्रीणीतन	। इन्दुमिन्द्रे दधातन	६
अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोमं शं गवे	। देवेभ्यो अनुकामकृत्	७
इन्द्राय सोमं पातवे मदाय परि पिच्यमे	। मनश्चिन्मनसस्पतिः	८
पवमान सुवीर्यं रयिं सोमं रिरीहि नः	। इन्द्राविन्द्रेण नो युजा	९

॥ ११ ॥ ( ऋ ९ । १० । १-९ )

सोमा असुग्रमिन्दवः सुता क्रतस्य मादने	। इन्द्राय मधुमत्तमाः	१ ९५
अभि विप्रा अनृषत गावो वत्सं न मातरं	। इन्द्रं सोमस्य पीतये	२
मदच्युत् क्षेति सादने मिन्धोरूर्मा विपश्चित्	। सोमो गौरी अधि श्रितः	३
दिवो नाभा विचक्ष्णो ऽव्यो वरि महीयते	। सोमो यः सुकृतः कविः	४
यः सोमः कलशेष्वाँ अन्तः पवित्र आहितः	। तमिन्दुः परि षस्वजे	५
प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि	। जिन्वन् कोशं मधुश्रुतम्	६ १००
नित्यंस्तोत्रो वनस्पतिर्धनामन्तः संवर्द्धधः	। हिन्वानो मानुषा युगा	७
अभि प्रिया दिवस्पदा सोमो हिन्वानो अर्पति	। विप्रस्य धारया कविः	८
आ पवमान धारय रयिं महस्र्वर्चसम्	। अस्मे इन्दो स्वाभुवम्	९

॥ १२ ॥ ( ऋ ९ । १३ । १-९ )

सोमः पुनानो अर्पति सहस्रधारो अन्याविः	। वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम्	१
पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत	। सुष्वाणं देववीतये	२ १०५
पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः	। गृणाना देववीतये	३
उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः	। द्युमदिन्दो सुवीर्यम्	४
ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम्	। सुवाना देवास इन्दवः	५
अत्या हियाना न हेतुभि रमृग्रं वाजसातये	। वि वारमव्यमाशवः	६
वाश्रा अर्षन्तीन्दवो ऽभि वत्सं न धेनवः	। दुधन्विरे गर्भस्तयोः	७ ११०
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमान कनिक्कदन्	। विश्वा अप द्विषो जहि	८
अपघ्नन्ता अरावणः पवमानाः स्वर्दशः	। योनावृतस्य मीदत	९

॥ १३ ॥ ( ऋ ९ । १४ । १-८ )

परि प्रासिष्यदत् कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः	। कारं विभ्रत् पुरुस्पृहम्	१
गिरा यदी सबन्धवः पञ्च त्राता अपस्यवः	। परिष्कृष्वन्ति धर्णमिम्	२ ११४

आदस्य शुष्मिणो रसे	विश्वे देवा अमन्सत	। यदी गोभिर्वसायते	३	११५
निरिणानो वि धावति	जहच्छयीणि तान्वा	। अत्रा सं जिघ्रते युजा	४	
नमीभिर्यो विवस्वतः	शुभ्रो न मामृजे युवा	। गाः कृण्वानो न निर्णिजम्	५	
अतिं श्रिती तिरश्वता	गव्या जिगात्यण्व्या	। वग्नुर्मियति सं विदे	६	
अभि क्षिपः समरगत	मर्जयन्तीरिपस्पतिम्	। पृष्ठा गृभ्णत वाजिनः	७	
परिं दिव्यानि मर्मशद	विश्वानि सोम पार्थिवा	। वसूनि याह्यस्मयुः	८	१२०

॥ १४ ॥ (क ९ । १५ । १८)

एष धिया यान्यण्व्या	शरो रथेभिराशुभिः	। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्	१	
एष पुरू धियायते	बृहते देवतातये	। यत्रामृतास आमंत	२	
एष हितो वि नीयते	ऽन्तः शुभ्रावता पथा	। यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः	३	
एष शृङ्गाणि दोधुव	च्छिशीते यृधयोऽु वृषा	। नृम्णा दधान ओजमा	४	
एष रुक्मिभिरीयते	वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः	। पतिः सिन्धनां भवन्	५	१२५
एष वसूनि पिबुना	परुषा ययिवा अति	। अब शार्देषु गच्छनि	६	
एतं मृजन्ति मर्ज्य	मुष द्रोणेष्वायवः	। प्रचक्राणं महीरिपः	७	
एतमु न्यं दश क्षिपो	मृजन्ति सप्त धीतयः	। स्वायुधं मदिन्तमम्	८	

॥ १५ ॥ (क ९ । १६ । १-८)

प्र ते सोतारं ओण्योऽु	रसं मदाय घृष्वये	। मर्गो न तक्त्येतशः	१	
क्रत्वा दक्षस्य रथ्य	मपो वर्मानमन्धसा	। गोषामण्वेषु सश्विम	२	१३०
अनप्तमप्सु दुष्टरं	सोमं पवित्र आ संज	। पुनीहीन्द्राय पार्तवे	३	
प्र पुनानस्य चेतसा	सोमः पवित्रे अर्षति	। क्रत्वा सधस्थमासदत्	४	
प्र त्वा नमोभिरिन्द्रव	इन्द्र सोमा असृक्षत	। महे भराय कारिणः	५	
पुनानो रूपे अव्यये	विश्वार् अर्षन्नाभि श्रियः	। शरो न गोषु तिष्ठति	६	
दिवो न सानु पिप्युपी	धारा सुतस्य वेधसः	। वृथा पवित्रे अर्षति	७	१३५
त्वं सोम विपश्चितं	तना पुनान आयुषु	। अच्यो वारं वि धावमि	८	

॥ १६ ॥ (क ९ । १७ । १-८)

प्र निम्नेनेव सिन्धवो	घ्नन्तो वृत्राणि भूर्णयः	। सोमा असृग्रमाशवः	१	
अभि सुवानास इन्द्रवो	वृष्टयः पृथिवीभिव	। इन्द्रं सोमासो अक्षरन्	२	१३८

अत्यूर्मिर्मत्सरो मदुः	सोमः पवित्रे अर्पति	। विघ्नन् रक्षासि देवयुः	३	
आ कलशेषु घावति	पवित्रे परि पिच्यते	। उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते	४	१४०
अति त्री सोम रोचना	रोहन् न भ्राजसे दिवम्	। इष्णन्त्स्यं न चोदयः	५	
अभि विप्रा अनपत	मूर्धन् यज्ञस्य कारवः	। दधानाश्चक्ष्मि प्रियम्	६	
तमु त्वा वाजिनं नरां	धीभिर्विप्रा अवस्यवः	। मृजन्ति देवतातये	७	
मधोर्धारा मजु क्षर	तीव्रः सधस्थमासदः	। चारुर्कृताय पीतये	८	

॥ १७ ॥ ( ऋ ९ । १८ । १-७ )

परि सुवानो गिरिष्ठाः	पवित्रे सोमो अक्षाः	। मदेपु सर्वधा असि	१	१४१
त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु	प्र जातमन्धसः	। मदेपु सर्वधा असि	२	
तव विश्वं मजोषमो	देवामः पीतिमाशत	। मदेपु सर्वधा असि	३	
आ यो विश्वानि वार्या	वसूनि हस्तयोर्दधे	। मदेपु सर्वधा असि	४	
य इमे रोदसी मही	सं मातरं व दोहने	। मदेपु सर्वधा असि	५	
परि यो रोदसी उभे	सद्यो वाजेभिरर्षति	। मदेपु सर्वधा असि	६	१४२
स शुष्मी कलशेषा	पुनानो अचिक्रदत्	। मदेपु सर्वधा असि	७	

॥ १८ ॥ ( ऋ ९ । १९ । १-७ )

यत् सोम चित्रमुक्थ्यं	दिव्यं पार्थिवं वसु	। तन्नः पुनान आ भर	१	
युवं हि स्थः स्वर्पती	इन्द्रश्च सोम गोपती	। इज्ञाना पिप्यतं धियः	२	
वृषा पुनान आयुषु	स्तनयन्नार्धि बर्हिषि	। हरिः सन् योनिमासदत्	३	
अवावशन्त धीतयो	वृषभस्याधि रेतसि	। सूनोर्वत्सस्यं मातरः	४	१४५
कुविद् वृषण्यन्तीभ्यः	पुनानो गर्भमादधत्	। याः शुक्रं दुहते पयः	५	
उर्ष शिक्षापतस्थुषां	भियसमा धेहि शत्रुषु	। पवमान विदा रयिम्	६	
नि शत्रोः सोम वृष्ण्यं	नि शुष्मं नि वयस्तिर	। दूरे वा सतो अन्ति वा	७	

॥ १९ ॥ ( ऋ ९ । २० । १-७ )

प्र कविर्देववीतये	ऽव्यो वारंभिरर्षति	। माह्वान् विश्वा अभि स्पृधः	१	
स हि ष्मा जरितृभ्य आ	वाजं गोमन्तमिन्वति	। पवमानः सहस्त्रिणम्	२	१६०
परि विश्वानि चेतसा	मृशसे पवसे मती	। स नः सोम श्रवां विदः	३	
अभ्यर्ष बृहद् यशो	मघर्वद्भ्यो ध्रुवं रयिम्	। इषं स्तोतृभ्य आ भर	४	१६२



त्वं राजेव सुत्रतो	गिरः सोमा विवेशिथ	। पुनानो वहे अद्भुत	५
स वहिरप्सु दुष्टरो	मुज्यमानो गभस्त्योः	। सोमश्चमूषु सीदति	६
क्रीळर्मखो न मह्युः	पवित्रं सोम गच्छसि	। दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्	७ १६५

॥ २० ॥ ( ऋ ९ । २१ । १-७ )

एते धावन्तीन्दवः	सोमा इन्द्राय घृष्वयः	। मत्सरासः स्वविदः	१
प्रवृण्वन्तो अभियुजः	सुष्वये वरिवोविदः	। स्वयं स्तोत्रे वयस्कृतः	२
वृथा क्रीळन्त इन्दवः	सधस्थमभ्येकामित्	। सिन्धोरूमा व्यक्षरन्	३
एते विश्वानि वार्या	पवमानास आशत	। हिता न मत्स्यो रथे	४
आस्मिन् पिशङ्गमिन्दवो	दधाता वेनमादिशे	। यो अस्मभ्यमरावा	५ १७०
ऋभुर्न रथ्यं नवं	दधाता केतमादिशे	। शुक्राः पवध्वमर्णसा	६
एत उ त्ये अवीवशन्	काष्ठां वाजिनो अकृत	। मतः प्रासाविषुर्मतिम्	७

॥ २१ ॥ ( ऋ ९ । २२ । १-७ )

एत सोमास आशवो	रथा इव प्र वाजिनः	। सर्गाः सृष्टा अहेषत	१
एते वाता इवोरवः	पर्जन्यस्येव वृष्टयः	। अग्रेरिव भ्रमा वृथा	२
एते पूता विपश्चितः	सोमासो दध्याशिरः	। विपा व्यानशुर्धियः	३ १७५
एते मृष्टा अमन्याः	ससुवांसो न शश्रमुः	। इयक्षन्तः पथो रजः	४
एते पृष्ठानि रोदसो	विप्रयन्तो व्यानशुः	। उतेदमुत्तमं रजः	५
तन्तुं तन्वानमुत्तम	मनु प्रवत आशत	। उतेदमुत्तमाय्यम्	६
त्वं सोम पणिभ्य आ	वसु गव्यानि धारयः	। ततं तन्तुमचिक्रदः	७

॥ २२ ॥ ( ऋ. ९ । २३ । १-७ )

सोमा असृग्रमाशवो	मधोर्मदस्य धारया	। अभि विश्वानि काव्या	१ १८०
अनु प्रत्नास आयवः	पदं नवीयो अक्रमुः	। रुचे जनन्त सूर्यम्	२
आ पवमान नो भरा	ऽर्यो अदाशुषो गयम्	। कृधि प्रजावतीरिषः	३
अभि सोमास आयवः	पवन्ते मद्यं मदम्	। अभि कोशं मधुश्रुतम्	४
सोमो अर्षति धर्णसि	र्दधान इन्द्रियं रसम्	। सुवीरो अभिशस्तिपाः	५
इन्द्राय सोम पवसे	देवेभ्यः सधमाद्यः	। इन्द्रो वाजं सिषाससि	६ १८५
अस्य पीत्वा मदाना	मिन्द्रो वृत्राण्यप्रति	। जघान जघनञ्च नु	७ १८६

॥ २३ ॥ ( ऋ ९ । २४ । १-७ )

प्र सोमासो अधन्विषुः	पर्वमानास इन्द्रवः	। श्रीणाना अप्सु मृञ्जत	१
अभि गावो अधन्विषु-	रापो न प्रवता यतीः	। पुनाना इन्द्रमाशत	२
प्र पर्वमान धन्वसि	सोमेन्द्राय पातवे	। नृभिर्यतो वि नीयसे	३
त्वं सोम नृमादनः	पर्वस्व चर्षणीसहे	। सस्त्रियो अनुमाद्यः	४ १९०
इन्दो यदाद्रिभिः सुतः	पवित्रं परिधार्वसि	। अरमिन्द्रस्य धाम्ने	५
पर्वस्व वृत्रहन्तमो-	क्थेभिरनुमाद्यः	। शुचिः पावको अद्भुतः	६
शुचिः पावक उच्यते	सोमः सुतस्य मध्वः	। देवावीरघशं सहा	७ १९३

॥ २४ ॥ ( ऋ ९ । २५ । १-६ ) ( १९४-१९९ ) दृळ्हच्युत आगस्त्यः ।

पर्वस्व दक्षसाधनो	देवेभ्यः पीतये हरे	। मरुद्भ्यो वायवे मदः	१
पर्वमान धिया हितोऽ	ऽभि योनिं कर्निक्रदत्	। धर्मणा वायुमा विश	२ १९५
सं देवैः शोभते वृषा	कविर्योनावधि प्रियः	। वृत्रहा देववीतमः	३
विश्वा रूपाण्याविशन्	पुनानो याति हर्यतः	। यत्रामतास आसते	४
अरुषो जनयन् गिरः	सोमः पवत आयुषक्	। इन्द्रं गच्छन् कविक्रतुः	५
आ पर्वस्व मदिन्तम	पवित्रं धारया कवे	। अर्कस्य योनिमासदम्	६ १९९

॥ २५ ॥ ( ऋ ९ । २६ । १-६ ) ( २००-२०५ ) इधमवाहो दाढच्युतः ।

तममृक्षन्त वाजिन-	मुपस्थे अदितेरधि	। विप्रासो अण्व्यां धिया	१ २००
तं गावो अभ्यनृषत	सहस्रधारमक्षितम्	। इन्दुं धर्तारमा दिवः	२
तं वेधां मेधयाह्यन्	पर्वमानमधि द्यवि	। धर्णासि भरिधायसम्	३
तमह्यन् भुरिजोधिया	संवसानं विवस्वतः	। पतिं वाचो अदाभ्यम्	४
तं सानावधि जामयो	हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः	। हर्यतं भूरिचक्षसम्	५
तं त्वां हिन्वन्ति वेघसुः	पर्वमान गिरावृधम्	। इन्दुविन्द्राय मत्सरम्	६ २०५

॥ २६ ॥ ( ऋ ९ । २७ । १-६ ) ( २०६-२११ ) नृमेध आङ्गिरसः ।

एष कविरभिष्टुतः	पवित्रे अधि तोशते	। पुनानो मन्नप सिधः	१
एष इन्द्राय वायवे	स्वर्जित् परि पिच्यते	। पवित्रे दक्षसाधनः	२
एष नृभिर्वि नीयते	दिवो मूर्धा वृषा सुतः	। सोमो वनेषु विश्ववित्	३
एष गव्युरचिक्रदत्	पर्वमानो हिरण्ययुः	। इन्दुः सत्राजिदस्ततः	४ २०९

एष सूर्येण हासते	पर्वमानो अधि द्यवि	। पवित्रं मत्सरो मदः	५	२१०
एष शुष्मसिष्यद	दन्तरिक्षे वृषा हरिः	। पुनान इन्दुरिन्द्रमा	६	२११

॥ २७ ॥ ( ऋ ९ । २८ । १—६ ) ( २१२—२१७ ) प्रियमेध आङ्गिरसः ।

एष वाजी हितो नृभि	विश्वविन्मनसस्पतिः	। अव्यो वारं वि धावति	१	
एष पवित्रं अक्षरत्	सोमो देवेभ्यः सुतः	। विश्वा धामान्याविशन्	२	
एष देवः शुभायते	अधि योनावमर्त्यः	। वृत्रहा देववीतमः	३	
एष वृषा कर्निक्रदद्	दुशभिर्जामिभिर्द्युतः	। अभि द्रोणानि धावति	४	२१५
एष सूर्यमरोचयत्	पर्वमानो विचर्षणिः	। विश्वा धामानि विश्ववित्	५	
एष शुष्मदाभ्यः	सोमः पुनानो अर्षति	। देवावीरघशंसहा	६	२१७

॥ २८ ॥ ( ऋ ९ । २९ । १—६ ) ( २१८—२२३ ) नृमेध आङ्गिरस ।

प्रास्य धारा अक्षरन्	वृष्णाः सुतस्यौजसा	। देवा अनु प्रभूषतः	१	
मसि मृजन्ति वेधमो	गुणन्तः कारवो गिरा	। ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम्	२	
सुपहा सोम तानि ते	पुनानाय प्रभूषमो	। वर्धो समुद्रमुक्थ्यम्	३	२२०
विश्वा वसूनि संजयन्	पर्वस्व सोम धारया	। इनु द्वेषांसि सुध्यक्	४	
रक्षा सु नो अररूपः	स्वनान् समस्य कस्य चित्	। निदो यत्र मुमुन्महे	५	
एन्दो पार्थिवं रयिं	दिव्यं पर्वस्व धारया	। द्युमन्तं शुष्ममा भर	६	२२३

॥ २९ ॥ ( ऋ ९ । ३० । १—६ ) ( २२४—२२९ ) विन्दुराङ्गिरसः ।

प्र धारा अस्य शुष्मिणो	वृथा पवित्रं अक्षरन्	। पुनानो वाचमिष्यति	१	
इन्दुर्हियानः सातृभि	मृज्यमानः कर्निक्रदत्	। इयति वशुभिन्द्रियम्	२	२२५
आ नः शुष्मं नृपाद्यं	वीरवन्तं पुरुस्पृहम्	। पर्वस्व सोम धारया	३	
प्र सोमो अति धारया	पर्वमानो असिष्यदत्	। अभि द्रोणान्यासदम्	४	
अप्सु त्वा मधुमत्तमं	हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः	। इन्दविन्द्राय पीतये	५	
सुनाना मधुमत्तमं	सोममिन्द्राय वज्रिणं	। चारुं शर्षाय मत्सरम्	६	२२९

॥ ३० ॥ ( ऋ ९ । ३१ । १—६ ) ( २३०—२३५ ) गोतमो राहूगण ।

प्र सोमासः स्वाध्यः	पर्वमानासो अक्रमुः	। रयिं कृष्वन्ति चेतनम्	१	२३०
दिवस्पृथिव्या अधि	भवेन्दो द्युम्वर्धनः	। भवा वाजानां पतिः	२	
तुभ्यं वाता अभिप्रिय	स्तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः	। सोम वर्धन्ति ते महः	३	२३२

आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे ४  
 तुभ्यं गावो घृतं पयो बभ्रौ दुदुहे अक्षितम् । वर्षिष्ठे अधि सान्वि ५  
 स्वायुधस्य ते मतो भुवनस्य पते वयम् । इन्द्रो सखित्वमुष्मभि ६ २३५

॥ ३१ ॥ ( ऋ ९ । ३२।१-६ ) ( २३६—२४१ ) इयावाश्व आत्रयः ।

प्र सोमांसो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनः । सुता विदथे अक्रमुः १  
 आदीं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वत्याद्रिभिः । इन्द्रमिन्द्राय पीतये २  
 आदीं हंसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम् । अन्थो न गोभिर्ज्यते ३  
 उभे सौमावचाकशन् मृगो न तक्तो अर्षमि । मीदश्रुतस्य योनिमा ४  
 अभि गावो अनृपत् योषां जारमिव प्रियम् । अगन्नाजिं यथा हितम् ५ २४०  
 अस्मे धेहि धुमद् यशो मघवञ्जश्च मर्ह्यं च । सनिं मेधामुत श्रवः ६ २४१

॥ ३२ ॥ ( ऋ ९ । ३३।१-६ ) ( २४२—२५३ ) त्रित आण्यः ।

प्र सोमांसो विपश्चितो ऽपां न यन्त्यूर्मयः । वनानि महिषा इव १  
 अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया । वाजं गोमन्तमक्षरन् २  
 सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमा अर्षन्ति विष्णवे ३  
 तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः । हरिरिति कर्निक्रदत् ४ २४५  
 अभि ब्रह्मीरनृपत् यद्हीर्कृतस्य मातरः । मर्मज्यन्ते दिवः शिशुम् ५  
 रायः समुद्रांश्चतुरो ऽस्मभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व महस्मिणः ६

॥ ३३ ॥ ( ऋ ९ । ३४।१-६ )

प्र सुवानो धारया तनन्दुर्हिन्वानो अर्षति । रुजद् दृक्का व्योजमा १  
 सुत इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमो अर्षति विष्णवे २  
 वृषाणं वृषभिर्यतं सुन्वन्ति सोममद्रिभिः । दुहन्ति शकमना पयः ३ २५०  
 भुवत् त्रितस्य मज्यो भुवदिन्द्राय मत्सरः । स रूपरज्यते हरिः ४  
 अभीमृतस्य विष्टपं दुहते पृश्निमातरः । चारुं प्रियतमं हविः ५  
 समैनमहुता इमा गिरो अर्षन्ति मस्रुतः । धेनूर्वाश्रो अवीवशत् ६ २५३

॥ ३४ ॥ ( ऋ ९ । ३५।१-६ ) ( २५४—२६५ ) प्रभूवसुगाङ्गिरस ।

आ नः पवस्व धारया पवमान रयिं पृथुम् । यया ज्योतिर्विदासि नः १  
 इन्द्रो समुद्रमीङ्गय पवस्व विश्वमेजय । रायो धर्ता न ओजमा २ २५५

त्वया वीरेण वीरवो	ऽभि ष्याम पृतन्यतः	। क्षरा णो अ॒भि वार्ये॑म्	३
प्र वाजमिन्दुरिष्यति	सिषासन् वाजसा ऋषिः	। व्र॒ता वि॒दान आयु॑धा	४
तं गीभिर्वाचमीङ्ख्यं	पु॒नानं वा॑सयामसि	। सोमं॑ जन॒स्य गो॑पतिम्	५
विश्वो यस्य व्रते जनों	दा॒धार॒ धर्म॑ण॒स्पतेः	। पु॒नान॑स्य॒ प्र॒भूव॑सोः	६

॥ ३५ ॥ ( ऋ ९ । ३६ । १—६ )

असर्जि रथ्यो यथा	प॒वित्रे॑ च॒म्वोः सु॒तः	। का॒ष्मिन् वा॒जी न्य॑क्रमीत्	१	२६०
स वह्निः सोम जागृविः	पव॑स्व दे॒ववी॑रति	। अ॒भि को॑शं मधु॒श्रुत॑म्	२	
स नो ज्योतीषि पृथ्य	पव॑मान॒ वि रो॑चय	। क्र॒त्वे द॑क्षाय नो हिनु	३	
शुम्भमानं क्रतायुभिः	मृ॒ज्यमा॑नो ग॒भस्त्योः	। पव॑ते वारे॒ अव्ये॑	४	
स विश्वा दाशुषे वसु	सोमो॑ दि॒व्यानि॑ पार्थि॒वा	। पव॑ता॒मान्तरि॑क्ष्या	५	
आ दिवस्पृष्टमश्वयुः	गै॒व्ययुः सोम॑ रोहासि	। वी॒रयुः शं॑वसस्पते	६	२६५

॥ ३६ ॥ ( ऋ ९ । ३७ । १—६ ) ( २६६—२७७ ) रङ्गण आङ्गिरसः ।

स सुतः पीतये वृषा	सोमः प॒वित्रे॑ अर्षति	। वि॒घ्नन् र॑क्षांसि दे॒वयुः	१	
स प॒वित्रे॑ विचक्ष्णो	हरि॑रर्षति धर्णा॒सिः	। अ॒भि यो॑निं क॒निक॑दत्	२	
स वाजी रोचना दिवः	पव॑मानो वि धा॒वति	। र॒क्षोहा॑ वारं॒मव्यय॑म्	३	
स त्रितस्याधि सानवि	पव॑मानो अरोचयत्	। जा॒मिभिः॑ सूर्ये॒ सह	४	
स वृत्रहा वृषा सुतो	वरि॑वोविददाभ्यः	। सोमो॑ वाजमिवासरत्	५	२७०
स देवः कविनेपितोऽ	ऽभि द्रो॑णानि धावति	। इन्द्रु॑रिन्द्राय॒ मंहना॑	६	

॥ ३७ ॥ ( ऋ. ९ । ३८ । १—६ )

एष उ स्य वृषा रथो	ऽव्यो वारे॑भिरर्षति	। गच्छ॑न् वाजं॒ सह॑स्त्रिणम्	१	
एतं त्रितस्य योषणो	हरि॑ं हिन्वन्त्यद्रिभिः	। इन्द्रु॑मिन्द्राय॒ पीतये॑	२	
एतं त्यं हरितो दश	मृ॒ज्यन्ते॑ अप॒स्युवः	। या॒भिर्मदा॑य॒ शुम्भ॑ते	३	
एष स्य मानुषीष्वा	श्ये॑नो न वि॒क्षु सी॑दति	। गच्छ॑ञ्जारो न योषितम्	४	२७५
एष स्य मद्यो रसो	ऽव॑ चष्टे दिवः शिशुः	। य इन्द्रु॑र्वार॒मावि॑शत्	५	
एष स्य पीतये सुतो	हरि॑रर्षति धर्णा॒सिः	। क्रन्द॑न् यो॒निम॑भि॒ प्रिय॑म्	६	२७७

॥ ३८ ॥ ( ऋ ९ । ३९ । १—६ ) ( २७८—२८९ ) बृहन्मतिराङ्गिरसः ।

आशुरर्षे बृहन्मते	परि॑ प्रियेण॒ धाम्ना॑	। यत्र॑ दे॒वा इति॑ ब्रवन्	१	
परिष्कृष्वन्निकृत्तं	जना॑य या॒तय॑न्निषः	। वृष्टि॑ दिवः परि॑ स्रव	२	२७९

सुत एति पवित्र आ	त्विषिं दधान ओजसा	। विचक्षाणो विरोचयन्	३	२८०
अयं स यो दिवस्परि	रघुयामा पवित्र आ	। सिन्धोरूमा व्यक्षरत्	४	
आविवासन् परावतो	अथो अर्वावतः सुतः	। इन्द्राय सिच्यते मधु	५	
समीचीना अनूषत	हरिं हिन्वन्त्याद्रिभिः	। योनावृतस्य सीदत	६	

॥ ३९ ॥ ( ऋ. ९ । ४० । १-६ )

पुनानो अक्रमीदुभि	विश्वा मृधो विचर्षणिः	। शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः	१	
आ योनिमरुणो रुहद्	गमदिन्द्रं वृषा सुतः	। ध्रुवे सदसि सीदति	२	२८५
नू नो रयिं महामिन्द्रो	ऽस्मभ्यं सोम विश्वतः	। आ पवस्व सहस्रिणम्	३	
विश्वा सोम पवमान	द्युम्नानीन्दुवा भर	। विदाः सहस्रिणीरिषः	४	
स नः पुनान आ भर	रयिं स्तोत्रे सुवीर्यम्	। जरितुर्वधया गिरः	५	
पुनान इन्दुवा भर	सोम द्विबर्हसं रयिम्	। वृषन्निन्दो न उक्थ्यम्	६	२८९

॥ ४० ॥ ( ऋ ९ । ४१ । १-६ ) ( २९०-३०७ ) मेध्यातिथि काण्व ।

प्र ये गात्रो न भूर्णय	स्त्वेपा अयासो अक्रमुः	। घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम्	१	२९०
सुव्रितस्य मनामहे	ऽति सेतुं दुराव्यम्	। साहांसो दस्युमव्रतम्	२	
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः	पवमानस्य शुष्मिणः	। चरन्ति विद्युतो दिवि	३	
आ पवस्व महीमिषं	गोमदिन्द्रो हिरण्यवत्	। अश्वाद् वाजवत् सुतः	४	
स पवस्व विचर्षण	आ मही रोदसी पृण	। उपाः सूर्यो न रश्मिभिः	५	
परि णः शर्मयन्त्या	धारया सोम विश्वतः	। सरा रसेव विष्टपम्	६	२९५

॥ ४१ ॥ ( ऋ ९ । ४२ । १-६ )

जनयन् रोचना दिवो	जनयन्नप्सु सूर्यम्	। वसानो गा अपो हरिः	१	
एष प्रत्नेन मन्मना	देवो देवेभ्यस्परि	। धारया पवते सुतः	२	
बावृधानाय तूर्वीये	पवन्ते वाजसातये	। सोमाः सहस्रपाजसः	३	
दुहानः प्रलामित् पर्यः	पवित्रे परिं षिच्यते	। ऋन्दन् देवाँ अजीजनत्	४	
अभि विश्वानि वार्या	ऽभि देवाँ ऋतावृधः	। सोमः पुनानो अर्षति	५	३००
गोमन्नः सोम वीरव	दश्वावद् वाजवत् सुतः	। पवस्व बृहतीरिषः	६	

॥ ४२ ॥ ( ऋ ९ । ४३ । १-६ )

यो अत्य इव मृज्यते	गोभिर्मदाय हर्यतः	। तं गीभिर्वीसयामसि	१	
तं नो विश्वा अवस्युवो	गिरः शुम्भन्ति पूर्वथा	। इन्द्रमिन्द्राय पीतर्ये	२	३०३

पुनानो याति हर्यतः सोमो गीर्भिः परिष्कृतः । विप्रस्य मेघ्यातिथेः	३
पर्वमान विदा रयि—मस्मभ्यं सोम सुश्रियम् । इन्दो सहस्रवर्चसम्	४ ३०५
इन्दुरत्यो न वाजसृत् कर्निक्रन्ति पवित्र आ । यदक्षरति देव्युः	५
पर्वस्व वाजमातये विप्रस्य गृणतो वृधे । सोम रास्व सुवीर्यम्	६ ३०७

॥ ४३ ॥ ( ऋ ९ । ४४ । १—६ ) ( ३०८—३२५ ) अयास्य आङ्गिरस ।

प्र ण इन्दो महे तर्न ऊर्भि न विभ्रदर्पमि । अभि देवा अयास्यः	१
मती जुष्टो धिया हितः सोमो हिन्वे परावति । विप्रस्य धारया कविः	२
अयं देवेषु जागृविः सुत एति पवित्र आ । सोमो याति विचर्षणिः	३ ३१०
स नः पवस्व वाज्यु—श्चक्राणश्चारुमध्वरम् । बर्हिष्मो आ विवासति	४
स नो भगाय वायवे विप्रवीरः सदावृधः । सोमो देवेष्वायमत्	५
स नो अद्य वसुचये क्रतुविद् गातुवित्तमः । वाजं जेपि श्रवो बृहत	६

॥ ४४ ॥ ( ऋ ९ । ४५ । १—६ )

स पवस्व मदाय कं नृचक्षा देववीतये । इन्दुविन्द्राय पीतये	१
स नो अर्षाभि दूत्यं त्वमिन्द्राय तोशमे । देवान्त्सग्विभ्य आ वरम्	२ ३१५
उत त्वामरुणं वयं गोभिरङ्गमो मदाय कम् । वि नो राये दुरो वृधि	३
अत्यु पवित्रमक्रमीद् वाजी धुरं न यामनि । इन्दुदेवेषु पत्यते	४
समी सखायो अस्वरन् वने क्रीळन्तमत्यविम् । इन्दुं नावा अनृषत	५
तया पवस्व धारया यया पीतो विचक्षमे । इन्दो स्तोत्रे सुवीर्यम्	६

॥ ४५ ॥ ( ऋ ९ । ४६ । १—६ )

असृग्रन् देववीतये स्त्यासः कृत्व्या इव । क्षरन्तः पर्वतावृधः	१ ३२०
परिष्कृतास इन्दवो योषेव पित्र्यावती । वायुं सोमो असृक्षत	२
एते सोमास इन्दवः प्रयस्वन्तश्चमू सुताः । इन्द्रं वर्धन्ति कर्माभिः	३
आ धावता सहस्तयः शुक्रा गृभ्णीत मन्थिना । गोभिः श्रीणीत मत्सरम्	४
स पवस्व धनंजय प्रयन्ता राधसो महः । अस्मभ्यं सोम गातुवित्	५
एतं मृजन्ति मर्ज्यं पर्वमानं दश क्षिपः । इन्द्राय मत्सरं मदम्	६ ३२५

॥ ४६ ॥ ( ऋ ९ । ४७ । १—५ ) ( ३२६—३४० ) कविर्भागवः ।

अया सोमः सुकृत्यया महाश्रिदुभ्यवर्धत । मन्द्रान उद् वृषायते	१
कृतानीदस्य कर्त्वा चेतन्ते दस्युतर्हणा । ऋणा च धृष्णुश्चयते	२ ३२७

आत् सोमं इन्द्रियो रसो	वन्नः सहस्रसा भुवत् ।	उक्थं यदस्य जायते	३
स्वयं कविर्विधतरि	विप्राय रत्नमिच्छति	। यदी मर्मज्यते धियः	४
सिषासतू रयीणां	वाजेष्वर्षितामिव	। भरेषु जिग्युषामसि	५ ३३०

॥ ४७ ॥ ( ऋ ९ । ४८ । १-५ )

तं त्वां नृम्णानि विभ्रतं	सुधस्थेषु महो दिवः ।	चारुं सुकृत्ययंमहे	१
संवृक्तधृष्णमुक्थयं	महामहित्रतं मदम्	। शतं पुरो रुरुक्षणम्	२
अतस्त्वा रयिमभि	राजानं सुकृतो दिवः ।	सुपर्णा अव्यथिर्भरत्	३
विश्वस्मा इत् स्वर्हेशे	साधारणं रजस्तुग्म्	। गोपामृतस्य विर्भरत्	४
अधा हिन्वान इन्द्रियं	ज्यायो महित्वमानशे	। अभिष्टिकृद् विचर्षणिः	५ ३३५

॥ ४८ ॥ ( ऋ ९ । ४९ । १-५ )

पवस्व वृष्टिमा सु नो	ऽपामूर्मि दिवस्परि	। अयक्ष्मा बृहतीरिषः	१
तया पवस्व धारया	यया गावं इहागमन्	। जन्यास उप नो गृहम्	२
घृतं पवस्व धारया	यज्ञेषु देववीतमः	। अस्मभ्यं वृष्टिमा पव	३
स न ऊर्जे व्युव्ययं	पवित्रं धाव धारया	। देवासः शृणवन् हि कम्	४
पवमानो असिष्यदुद्	रक्षांस्यपजङ्गनत्	। प्रत्नवद् रोचयन् रुचः	५ ३४०

॥ ४९ ॥ ( ऋ ९ । ५० । १-५ ) ( ३४१ ३५५ ) उचथ्य आङ्गिरसः ।

उत् ते शुष्मास ईरते	सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः	। वाणस्य चोदया पविम्	१
प्रसवे त उदीरते	निस्रो वार्चो मखस्युवः	। यदव्य एपि सानवि	२
अव्यो वारे परि प्रियं	हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः	। पवमानं मधुश्रुतम्	३
आ पवस्व मदिन्तम	पवित्रं धारया कवं	। अर्कस्य योनिमासदम्	४
स पवस्व मदिन्तम	गोभिरञ्जानो अक्तुभिः	। इन्द्रविन्द्राय पीतये	५ ३४५

॥ ५० ॥ ( ऋ ९ । ५१ । १-५ )

अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं	सोमं पवित्र आ सृज	। पुनीहीन्द्राय पातवे	१
दिवः पीयूषमुत्तमं	सोममिन्द्राय वज्जिणे	। सुनोता मधुमत्तमम्	२
तव त्य इन्दो अन्धसो	देवा मधोवर्ष्यश्रते	। पवमानस्य मरुतः	३
त्वं हि सोम वर्धयन्तसुतो	मदाय भूर्णये	। वृषन्तस्तोतारमृतये	४
अभ्यर्ष विचक्षण	पवित्रं धारया सुतः	। अभि वाजमुत श्रवः	५ ३५०



॥ ५१ ॥ ( ऋ ९ । ५२ । १—५ )

परिं द्युक्षः सनद्रंयि—भरद्वाजं नो अन्धसा	। सुवानो अर्ष पवित्र आ	१
तर्ष प्रत्नेभिरध्वभि—रव्यो वारे परिं प्रियः	। सहस्रधारो यात् तना	२
चरुर्न यस्तमीङ्खये—न्दो न दानमीङ्खय	। वधैर्वधस्त्रवीङ्खय	३
नि शुष्ममिन्दवेषां पुरुहूत जनानाम्	। यो अस्माँ आदिदेशति	४
शतं न इन्द ऊतिभिः सहस्रं वा शुचीनाम्	। पवस्व मह्यद्रयिः	५ ३५५

॥ ५२ ॥ ( ऋ ९ । ५३ । १—४ ) ( ३५६—३८७ ) अवन्सारः काश्यपः ।

उत् ते शुष्मासो अस्थ रक्षां भिन्दन्तां अद्रिवः	। नुदस्व याः परिस्पृधः	१
अया निजग्निरोजसा रथसङ्गे धने हिते	। स्तवा अर्षिभ्युषा हृदा	२
अस्य व्रतानि नाधृपे पवमानस्य दूढ्या	। रुज यस्त्वा पृतन्यति	३
तं हिंन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम्	। इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्	४

॥ ५३ ॥ ( ऋ ९ । ५४ । १—४ )

अस्य प्रतामनु द्युतं शुक्रं दुदुहे अहयः	। पयः सहस्रसामृषिम्	१ ३६०
अयं सूर्य इवोपट—ग्यं सरांसि धावति	। सप्त प्रवत आ दिवम्	२ -
अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरिं	। सोमो देवो न सूर्यः	३
परिं णो देववीतये वाजाँ अर्षसि गोमंतः	। पुनान इन्दविन्द्रयुः	४

॥ ५४ ॥ ( ऋ ९ । ५५ । १—४ )

यवैयवं नो अन्धसा पुष्टंपुष्टं परिं स्रव	। सोम विश्वा च सौभगा	१
इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः	। नि बर्हिषि प्रिये संदः	२ ३६५
उत नो गोविदश्चवित् पवस्व सोमान्धसा	। मक्षूर्तमेभिरहभिः	३
यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्यं	। स पवस्व सहस्रजित्	४

॥ ५५ ॥ ( ऋ. ९ । ५६ । १—४ )

परि सोमं ऋतं बृह—दाशुः पवित्रै अर्षति	। विघ्नन् रक्षांसि देवयुः	१
यन् सोमो वाजमर्षति शतं धारा अपस्युवः	। इन्द्रस्य सख्यमाविशन्	२
अभि त्वा योर्षणो दश जारं न कन्यानृषत	। मृज्यसे सोम सातये	३ ३७०
त्वमिन्द्राय विष्णवे स्वादुरिन्दो परिं स्रव	। नृन्स्तोतृन् पाह्यंसः	४ ३७१

॥ ५६ ॥ ( ऋ. ९ । ५७ । १-४ )

प्र ते धारा असृशतो दिवो न यन्ति वृष्टयः । अच्छा वाजं सहस्रिणम्	१
अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति । हरिस्तुज्ञान आयुधा	२
स मर्मज्ञान आयुभि—रिभो राजेव सुव्रतः । श्येनो न वंसु पीदति	३
स नो विश्वा दिवो वसू—तो पृथिव्या अधि । पुनान इन्दुवा भर	४ ३७५

॥ ५७ ॥ ( ऋ. ९ । ५८ । १-४ )

तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः । तरत् स मन्दी धावति	१
उस्रा वेदु वसूनां मर्तस्य देव्यवसः । तरत् स मन्दी धावति	२
ध्वस्रयोः पुरुषन्त्यो—रा सहस्राणि दबहे । तरत् स मन्दी धावति	३
आ ययोस्त्रिशतं तना सहस्राणि च दबहे । तरत् स मन्दी धावति	४

॥ ५८ ॥ ( ऋ. ९ । ५९ । १-४ )

पवस्व गोजिदश्वजिद् विश्वजित् सोम रण्यजित् । प्रजावद् रत्नमा भर	१ ३८०
पवस्वाञ्जो अदाभ्यः पवस्वांषधीभ्यः । पवस्व धिपर्णाभ्यः	२
त्वं सोम पवमानो विश्वानि दुरिता तर । कविः सीदु नि बर्हिषि	३
पवमान स्वर्विदो जायमानोऽभवो महान् । इन्दो विश्वा अभीदसि	४

॥ ५९ ॥ ( ऋ. ९ । ६० । १-४ ) गायत्री, ३ पुरउष्णिक् ।

प्र गायत्रेण गायत् पवमानं विचर्षणिम् । इन्दुं सहस्रचक्षसम्	१
तं त्वा सहस्रचक्षस—मथो सहस्रभर्णसम् । अति वारमपाविषुः	२ ३८५
अति वारान् पवमानो असिष्यदत् कलशां अभि धावति । इन्द्रस्य हाद्यां विशन्	३
इन्द्रस्य सोम राधसे शं पवस्व विचर्षणे । प्रजावद् रेत आ भर	४ ३८७

॥ ६० ॥ ( ऋ. ९ । ६१ । १-३० ) ( ३८८-४१७ ) अमहीयुराङ्गिरस ।

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा । अवाहन् नवतीर्नधं	१
पुरः सद्य इत्थार्धिये दिवोदासाय शम्बरम् । अध त्यं तुर्वशं यदुम्	२
परि णो अश्वमश्वविद् गोमदिन्दो हिरण्यवत् । क्षरां सहस्रिणीरिषः	३ ३९०
पवमानस्य ते व्रयं पवित्रमभ्युन्दुतः । सखित्वमा वृणीमहे	४
ये तै पवित्रमूर्मयो ऽभिक्षरन्ति धारया । तेभिर्नः सोम मृळ्य	५
स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम् । ईशानः सोम विश्वतः	६
एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम् । समादित्येभिरख्यत	७ ३९४

३० [सोमः] ३

समिन्द्रेणोत वायुना	सुत एति पवित्र आ	। सं सूर्यस्य रुद्रिभिः	८	३९५
स नो भगाय वायवे	पूष्णे पवस्व मधुमान्	। चारुमित्रे वरुणे च	९	
उच्चा ते जातमन्धसो	दिवि षड्म्या ददे	। उग्रं शर्म महि श्रवः	१०	
एना विश्वान्यर्य आ	द्युम्नानि मानुषाणाम्	। सिषासन्तो वनामहे	११	
स न इन्द्राय यज्यत्रे	वरुणाय मरुद्भ्यः	। वरिवोवित् परिं स्रव	१२	
उपो षु जातमप्तुरं	गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्	। इन्दुं देवा अयासिषुः	१३	४००
तामिद् वर्धन्तु नो गिरो	वत्सं संशिश्र्वरीरिव	। य इन्द्रस्य हृदंसनिः	१४	
अपीं णः सोमं शं गवे	धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्	। वर्धा समुद्रमुक्थ्यम्	१५	
पर्वमानो अजीजनद्	दिवश्चित्रं न तन्यतुम्	। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत्	१६	
पर्वमानस्य ते रमो	मदो राजन्नदुच्छुनः	। वि वारमव्यमर्षति	१७	
पर्वमान रसस्तव	दक्षो वि राजति द्युमान्	। ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे	१८	४०५
यस्ते मदो वरण्य	स्तेना पवस्वान्धसा	। देवावीरधशंसहा	१९	
जग्निर्वृत्रममित्रियं	सस्तिर्वाजं दिवेदिवे	। गोषा उ अश्रसा आसि	२०	
संमिश्रो अरुषो भव	सूपस्थाभिर्न धेनुभिः	। सीदञ्छद्येनो न योनिमा	२१	
स पवस्व य आविथे	न्द्रं वृत्राय हन्तवे	। वत्रिवांसं महीरपः	२२	
सुवीरासो वयं धना	जयेम सोम मीदवः	। पुनानो वर्ध नो गिरः	२३	४१०
त्वोनामस्तवावमा	स्याम वन्वन्त आसुरः	। सोमं व्रतेषु जागृहि	२४	
अपघ्नन् पवते मृधो	ऽप सोमो अराव्णः	। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्	२५	
महो नो राय आ भर	पर्वमान जही मृधः	। रास्वेन्दो वीरवद् यशः	२६	
न त्वा शतं चन हृतो	राधो दित्सन्तमा भिनन्	। यत् पुनानो मखस्यसे	२७	
पवस्वेन्दो वृषा सुतः	कृधी नो यशसो जने	। विश्वा अप द्विषो जहि	२८	४१५
अस्य ते सरुये वयं	तवेन्दो द्युम्न उत्तमे	। सासह्याम पृतन्यतः	२९	
या ते भीमान्यायुधा	तिग्मानि सन्ति धूर्वणे	। रक्षां समस्य नो निदः	३०	४१७

॥ ६१ ॥ ( ऋ ९ । ६० । १-३० ) ( ४१८-४७ ) जमदग्निर्भागवः ।

एते असृग्रमिन्दव	स्तिरः पवित्रमाशवः	। विश्वान्यभि सौभगा	१	
विघ्नन्तो दुरिता पुरु	सुगा तोकाय वाजिनः	। तना कृण्वन्तो अर्वते	२	
कृण्वन्तो वरिवो गवे	ऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम्	। इळांमस्मभ्यं संयतम्	३	४२०
असाव्यंशुर्मदाया	ऽऽसु दक्षो गिरिष्ठाः	। श्येनो न योनिमासदत्	४	४२१

शुभ्रमन्धो देववात—मप्सु धूतो नृभिः सुतः	स्वदान्ति गावः पयोभिः	५
आदीमश्वं न हेतारो ऽशूशुभन्नमृताय	मध्वो रसं सधमादे	६
यास्ते धारा मधुश्रुतो ऽसृग्रमिन्द ऊतये	तामिः पवित्रमासदः	७
सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो रोमाण्यव्यया	सीदन् योनावनेष्वा	८ ४०५
त्वमिन्दो परि स्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः	वरिवोविद् घृतं पर्यः	९
अयं विचर्षणिर्हितः पर्वमानः स चैतति	हिन्वान आप्यं बृहत्	१०
एष वृषा वृषव्रतः पर्वमानो अशस्तिहा	कर्द् वसनि दाशुर्ष	११
आ पवस्व सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम्	पुरुश्वन्द्रं पुरुस्पृहम्	१२
एष स्य परि षिच्यते मर्मृज्यमान आयुभिः	उरुगायः कृविकंतुः	१३ ४२०
सहस्रोतिः शतामघो विमानो रजसः कविः	इन्द्राय पवते मर्दः	१४
गिरा जात इह स्तुत इन्दुरिन्द्राय धीयते	विर्योना वसताविव	१५
पर्वमानः सुतो नृभिः सोमो वार्जमिवासरत्	चमृषु शकमनासदम्	१६
तं त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे रथे युञ्जन्ति यातवे	ऋषीणां सप्त धीतिभिः	१७
तं सौतारो धनस्पृत—माशुं वाजाय यातवे	हरिं हिनोत वाजिनम्	१८ ४२५
आविशन् कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नाभि श्रियः	शूरो न गोषु तिष्ठति	१९
आ त इन्दो मदाय कं पयो दुहन्त्यायवः	देवा देवेभ्यो मधु	२०
आ नः सोमं पवित्र आ सृजता मधुमत्तमम्	देवेभ्यो देवश्रुत्तमम्	२१
एते सोमा असृक्षत गृणानाः श्रवसे महे	मदिन्तमस्य धारया	२२
अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि	सनद्वाजः परि भव	२३ ४३०
उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः	गृणानो जमदग्निना	२४
पर्वस्व वाचो अग्रियः सोमं चित्राभिरूतिभिः	अभि विश्वानि काव्या	२५
त्वं समुद्रिया अपो ऽग्रियो वाच ईरयन्	पर्वस्व विश्वमेजय	२६
तुभ्येमा भुवना कवे महिन्ने सोम तस्मिरे	तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः	२७
प्र ते दिवो न वृष्टयो धारा यन्त्यसश्चतः	अभि शुक्रामुपस्तिरम्	२८ ४४५
इन्द्रायेन्दुं पुनीतनो—ग्रं दक्षाय साधनम्	ईशानं वीतिराधसम्	२९
पर्वमान ऋतः कविः सोमः पवित्रमासदत्	दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्	३० ४४७

॥ ६२ ॥ ( क्र. ९ । ६३ । १-३० ) ( ४४८-४७७ ) निधुविः काश्यपः ।

आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्यम् । अस्मे श्रवांसि धारय	१	
इषमूर्जं च पिन्वस इन्द्राय मत्सरिन्तमः । चमूष्वा नि षीदसि	२	
सुत इन्द्राय विष्णवे सोमः कलशे अक्षरत् । मधुमाँ अस्तु वायवे	३	४५०
एते असृग्रमाश्रवो ऽति ह्वरांसि बभ्रवः । सोमां ऋतस्य धारया	४	
इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । अपन्ननो अरावणः	५	
सुता अनु स्वमा रजो ऽभ्यर्पन्ति बभ्रवः । इन्द्रं गच्छन्त इन्दवः	६	
अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः । हिन्वानो मानुषीरपः	७	
अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे	८	४५५
उत त्या हरितो दश सूरों अयुक्त यातवे । इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन्	९	
परीतो वायवे सुतं गिर इन्द्राय मत्सरम् । अव्यो वारेषु सिञ्चत	१०	
पवमान विदा रयि—मस्मभ्यं सोम दुष्टरम् । यो दूणाशो वनुष्यता	११	
अभ्यर्ष सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम् । अभि वाजमुत श्रवः	१२	
सोमो देवो न सूर्यो ऽद्रिभिः पवते सुतः । दधानः कलशे रसम्	१३	४६०
एते धामान्यार्या शुक्रा ऋतस्य धारया । वाजं गोमन्तमक्षरन्	१४	
सुता इन्द्राय वज्रिणे सोमासो दध्याशिरः । पवित्रमत्यक्षरन्	१५	
प्र सोम मधुमत्तमो राये अर्ष पवित्र आ । मद्रो यो देववीतमः	१६	
तमी मृजन्त्यायवो हरिं नदीपु वाजिनम् । इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्	१७	
आ पवस्व हिरण्यव—दश्वावत् सोम वीरवत् । वाजं गोमन्तमा भर	१८	४६५
परि वाजे न वाजयु—मव्यो वारेषु सिञ्चत । इन्द्राय मधुमत्तमम्	१९	
कृविं मृजन्ति मज्यं धीभिर्प्रा अत्रस्यवः । वृषा कर्निकदर्पति	२०	
वृषणं धीभिरप्तुरं सोममृतस्य धारया । मती विप्राः समस्वरन्	२१	
पवस्व देवायुष—गिन्द्रं गच्छतु ते मदः । वायुमा रोह धर्मणा	२२	
पवमान नि तोशसे रयिं सोम श्रवाण्यम् । प्रियः समुद्रमा विश	२३	४७०
अपन्नन् पवसे मृधः ऋतुवित् सोम मत्सरः । नुदस्वादैवयुं जनम्	२४	
पवमाना असृक्षत् सोमाः शुक्रास इन्दवः । अभि विश्वानि काव्या	२५	
पवमानास आश्रवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः । मन्तो विश्वा अप द्विषः	२६	
पवमाना दिवस्प—र्यन्तरिक्षादसृक्षत । पृथिव्या अधि सान्वि	२७	४७४

पुनानः सोम धारये—न्दो विश्वा अप सिधः	। जहि रक्षांसि सुक्रतो	२८	४७५
अपघ्नन्त्सोम रक्षसो ऽभ्यर्ष कनिक्रदत्	। द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम्	२९	
अस्मे वसूनि धारय सोम दिव्यानि पार्थिवा	। इन्दो विश्वानि वार्या	३०	४७७
॥ ६३ ॥ (ऋ ९ । ६४ । १-३०) ( ४७८—५०७ ) कश्यपो मारीचः ।			
वृषा सोम द्युमाँ अस्मि वृषा देव वृषव्रतः	। वृषा धर्माणि दधिषे	१	
वृष्णास्ते वृष्ण्यं शत्रो वृषा वनं वृषा मदः	। सत्यं वृषन् वृषेदसि	२	
अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः	। वि नो राये दुरो वृधि	३	४८०
असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया	। शुक्रासो वीरयाशर्वः	४	
शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गर्भस्त्योः	। पर्वन्ते वारो अच्यये	५	
ते विश्वा द्वाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा	। पर्वन्तामान्तरिक्ष्या	६	
पर्वमानस्य विश्ववित् प्र ते सर्गा अमृक्षत	। सूर्यस्येव न रश्मयः	७	
केतुं कृण्वन् दिवस्पदि विश्वा रूपाभ्यर्षसि	। समुद्रः सोम पिन्वसे	८	४८५
हिन्वानो वाचमिष्यसि पर्वमान विधर्मणि	। अक्रान् देवो न सूर्यः	९	
इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मती	। सृजदश्वं रथीरिव	१०	
ऊर्मिर्यस्ते पवित्र आ देवावीः पर्यक्षरत्	। सीदन्नृतस्य योनिमा	११	
स नो अर्ष पवित्र आ मदो यो देववीतमः	। इन्दुविन्द्राय पीतये	१२	
इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः	। इन्दो रुचाभि गा इहि	१३	४९०
पुनानो वरिवस्कृष्यूर्ज जनाय गिर्वणः	। हरे सृजान आशिरम्	१४	
पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम्	। द्युतानो वाजिभिर्यतः	१५	
प्र हिन्वानास इन्दुवो ऽच्छा समुद्रमाशर्वः	। धिया जूता असृक्षत	१६	
मर्मृजानास आयत्रो वृथा समुद्रमिन्दवः	। अगमन्नृतस्य योनिमा	१७	
परि णो याह्यस्मयुर्विश्वा वसून्योर्जसा	। पाहि नः शर्म वीरवत्	१८	४९५
मिमाति वह्निरेतशः पदं युजान ऋक्भिः	। प्र यत् समुद्र आहितः	१९	
आ यद् योनिं हिरण्ययमाशुर्कृतस्य सीदति	। जहात्यप्रचेतसः	२०	
अभि वेना अनूषते यक्षन्ति प्रचेतसः	। मज्जन्त्याविचेतसः	२१	
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः	। ऋतस्य योनिमासदम्	२२	
तं त्वा विप्रा वचोविदुः परिष्कृण्वन्ति वेधसः	। सं त्वा मृजन्त्यायवः	२३	५००

रसं ते मित्रो अर्यमा	पिबन्ति वरुणः कवे	। पर्वमानस्य मरुतः	२४
त्वं सोम विपश्चितं	पुनानो वार्चमिष्यसि	। इन्दो सहस्रभर्णसम्	२५
उतो सहस्रभर्णसं	वाचं सोम मखस्युर्वम्	। पुनान इन्दुवा भर	२६
पुनान इन्दवेषां	पुरुहूत जनानाम्	। प्रियः समुद्रमा विश	२७
दविद्युतत्या रुचा	परिष्टोभन्त्या कृपा	। सोमाः शुक्रा गवाशिरः	२८ ५०५
हिन्वानो हेतुर्भिर्यत	आ वाजं वाज्यक्रमीत्	। सीदन्तो वनुषो यथा	२९
ऋधक् सोम स्वस्तये	संजग्मानो दिवः कविः	। पर्वस्व सूर्यो दृशे	३० ५०७

॥ ६४ ॥ ( ऋ ९ । ६५ । १—३० ) ( ५०८—५३७ ) भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भागवो वा ।

हिन्वन्ति सूरमुस्यः	स्वसारो जामयस्पतिम्	। महामिन्दुं महीयुवः	१
पर्वमान रुचारुचा	देवो देवेभ्यस्परि	। विश्वा वसून्या विश	२
आ पर्वमान सुष्टुतिं	वृष्टिं देवेभ्यो दुर्वः	। इषे पर्वस्व संयतम्	३ ५१०
वृषा ह्यसि भानुना	द्युमन्तं त्वा हवामहे	। पर्वमान स्वाध्यः	४
आ पर्वस्व सुवीर्यं	मन्दमानः स्वायुध	। इहो ष्विन्दुवा गहि	५
यदाङ्घ्रिः परिषिच्यसे	मृज्यामानो गर्भस्त्योः	। द्रुणा सधस्थमश्रुषे	६
प्र सोमाय व्यश्ववत्	पर्वमानाय गायत	। महे सहस्रचक्षसे	७
यस्य वर्णं मधुश्रुतं	हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः	। इन्दुमिन्द्राय पीतये	८ ५१५
तस्य ते वाजिनो वयं	विश्वा धनानि जिग्युषः	। सखित्वमा वृणीमहे	९
वृषां पर्वस्व धारया	मरुत्वते च मत्सरः	। विश्वा दधान ओर्जसा	१०
तं त्वा धर्तारमोण्योऽः	पर्वमान स्वर्दृशम्	। हिन्वे वाजेषु वाजिनम्	११
अथा चित्तो विपानया	हरिः पर्वस्व धारया	। युजं वाजेषु चोदय	१२
आ न इन्दो महीमिषं	पर्वस्व विश्वदर्शतः	। अस्मभ्यं सोम गातुवित्	१३ ५२०
आ कलशा अनृषते	इन्दो धाराभिरोर्जसा	। एन्द्रस्य पीतये विश	१४
यस्य ते मद्यं रसं	तीव्रं दुहन्त्यद्रिभिः	। स पर्वस्वाभिमातिहा	१५
राजा मेधाभिरीयते	पर्वमानो मनावधि	। अन्तरिक्षेण यातवे	१६
आ न इन्दो शतग्विनं	गवां पोषं स्वद्व्यम्	। वहा भगन्तिमूतये	१७
आ नः सोम सहो जुवो	रूपं न वर्चसे भर	। सुष्वाणो देववीतये	१८ ५२५
अर्षा सोम द्युमत्तमो	ऽभि द्रोणानि रोरुवत्	। सीदन्त्येनो न योनिमा	१९ ५२६

अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः	। सोमो अर्षति विष्णवे	२०	
इषं तोकाय नो दधे दुसभ्यं सोम विश्वतः	। आ पवस्व सहस्रिणाम्	२१	
ये सोमांसः परावति ये अर्वावति सुन्विरे	। ये वादः शर्यणावति	२२	
य आर्जिकेषु कृत्वंसु ये मध्ये पस्त्यानाम्	। ये वा जनेषु पञ्चसु	२३	५३०
ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम्	। सुवाना देवास इन्दवः	२४	
पवते हर्यतो हरिर्गृणानो जमदग्निना	। हिन्वानो गोरधि त्वचि	२५	
प्र शुक्रासो वयोजुवो हिन्वानासो न समयः	। श्रीणाना अप्सु मृज्जत	२६	
तं त्वा सुतेष्वाभुवो हिन्विरे देवतांतये	। स पवस्वानया रुचा	२७	
आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे	। पान्तमा पुरुस्पृहम्	२८	५३५
आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणाम्	। पान्तमा पुरुस्पृहम्	२९	
आ रयिमा सुचेतुनमा सुक्रतो तनूष्वा	। पान्तमा पुरुस्पृहम्	३०	५३७

॥ ६५ ॥ ( ऋ ९ । ६६ । १-३० )

( ५३८-५६७ ) शत वैखानाः । १९-२१ अग्निः पवमानः । गायत्री, १८ अनुष्टुप् ।

पवस्व विश्वर्षणे ऽभि विश्वानि काव्या	। सखा सखिभ्य ईडधः	१	
ताभ्यां विश्वस्य राजसि ये पवमान धामनी	। प्रतीची सोम तस्थतुः	२	
परि धामानि यानि ते त्वं सोमासि विश्वतः	। पवमान क्रतुभिः कवे	३	५४०
पवस्व जनयन्निषो ऽभि विश्वानि वार्यी	। सखा सखिभ्य ऊतये	४	
तव शुक्रासो अर्चयो दिवस्पृष्टे वि तन्वते	। पवित्रं सोम धामभिः	५	
तवेमे सप्त सिन्धवः प्रशिषं सोम सिन्वते	। तुभ्यं धावन्ति धेनवः	६	
प्र सोम याहि धारया सुत इन्द्राय मत्सरः	। दधानो अक्षिति श्रवः	७	
समु त्वा धीभिरस्वरन् हिन्वतीः सप्त जामयः	। विप्रमाजा विवस्वतः	८	५४५
मृजन्ति त्वा समग्रवो ऽव्ये जीरावधि ष्वणि	। रेभो यदुज्यसे वने	९	
पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा अमृक्षत	। अर्वन्तो न श्रवस्यवः	१०	
अच्छा कोशं मधुश्रुतमसृग्रं वारं अव्यये	। अवावशन्त धीतयः	११	
अच्छा समुद्रमिन्दुवो ऽस्तं गात्रो न धेनवः	। अगमन्नृतस्य योनिमा	१२	
प्र ण इन्दो महे रण आपो अर्षन्ति सिन्धवः	। यद् गोभिर्वासयिष्यसे	१३	५५०
अस्य ते सख्ये वयमियक्षन्तस्त्वोतयः	। इन्दो सखित्वमुदमसि	१४	
आ पवस्व गर्विष्ठये महे सोम नृचक्षसे	। एन्द्रस्य जठरं विश	१५	५५२



महाँ असि सोम ज्येष्ठ उग्राणामिन्दु ओजिष्ठः। युध्वा सञ्छ्वञ्जिगेथ	१६	
य उग्रेभ्यश्चिदोजीयाञ्छ्वरैभ्यश्चिच्छ्वरतरः । भुरिदाभ्यश्चिन्महीयान्	१७	
त्वं सोम सूर एष—स्तोकस्य माता तनूनाम् । वृणीमहे सरुयाय वृणीमहे युज्याय	५५५	
अग्न आयुषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनाम्	१९	
अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयम्	२०	
अग्ने पवस्व स्वपा असे वर्चः सुवीर्यम् । दधद् रयि मयि पोषम्	२१	
पवमानो अति स्त्रिधो ऽभ्यर्षति सुष्टुतिम् । सूरु न विश्वदर्शतः	२२	
स मर्मज्ञान आयुभिः प्रयस्वान् प्रयसे हितः। इन्दुरत्यो विचक्षणः	२३	५६०
पवमान ऋतं बृहच्छुक्रं ज्योतिरजीजनत् । कृष्णा तमामि जङ्घनत्	२४	
पवमानस्य जङ्घतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत । जीरा अजिरशोचिषः	२५	
पवमानो रथीतमः शुभ्रोभिः शुभ्रशस्तमः । हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः	२६	
पवमानो व्यश्रवद् रश्मिभिर्वाजसातमः । दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्	२७	
प्र सुवान इन्दुरक्षाः पवित्रमत्यव्ययम् । पुनान इन्दुरिन्द्रमा	२८	५६५
एष सोमो अधि त्वचि गवां क्रीळत्यद्रिभिः। इन्द्रं मदाय जोहुवत्	२९	
यस्य ते द्युम्वत् पयः पवमानाभृतं दिवः । तेन नो मृळ जीवसे	३०	५६७

॥ ६६ ॥ ( ऋ. ९ । ६७ । १—३० )

( ५६८—५९९ ) १—३ भरद्वाजो बार्हस्पत्य , ४—६ कश्यपो मारीचः, ७—९ गोतमो राह्वगणः, १०—१९ अत्रिभौमः, १३—१५ विश्वामित्रो गाथिन , १६—१८ जमदग्निर्भार्गवः, १९—२१ वसिष्ठो मैत्रावरुणिः, २२—३२ पवित्र आङ्गिरसो वा वसिष्ठो वा उभौ वा। पवमानः सोमः, १०—१२ पवमानः पूषा वा, २३—२७ पवमानोऽग्निः, २५ पवमानः सविता वा, २६ पवमानाग्निसवितारः, २७ विश्वे देवा वा, ३१—३२ पावमान्यध्येता । गायत्री, १६—२८ नित्यङ्घ्रिपदा गायत्री, ३० पुरउष्णिक्, २७, ३१, ३२, अनुष्टुप् ।

त्वं सोमासि धारयु—र्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे । पवस्व मंहयद्रयिः	१	
त्वं सुतो नृमादनो दधन्वान् मत्सरिन्तमः । इन्द्राय सूरिरन्धसा	२	
त्वं सुञ्वाणो अद्रिभि—रभ्यर्ष कर्निक्रदत् । द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम्	३	५७०
इन्दुर्हिन्वानो अर्षति तिरो वाराण्यव्यया । हरिर्वाजमचिक्रदत्	४	
इन्दो व्यव्यमर्षसि वि श्रवांभि वि सौभगा । वि वाजान्तसोम गोमंतः	५	
आ न इन्दो शतग्विनं रयिं गोमन्तमश्विनम् । भरा सोम सहस्रिणम्	६	
पवमानासु इन्दव—स्तिरः पवित्रमाश्वः । इन्द्रं यामेभिराशत	७	५७४

ककुहः सोम्यो रस	इन्दुरिन्द्राय पृष्यः	। आयुः पवत आयवे	८	५७५
हिन्वन्ति सूरमुस्यः	पर्वमानं मधुश्चुतम्	। अभि गिरा समस्वरन्	९	
अविता नो अजाश्वः	पृषा यामनियामनि	। आ भक्षत् कन्यासु नः	१०	
अयं सोमः कपर्दिने	घृतं न पवते मधु	। आ भक्षत् कन्यासु नः	११	
अयं त आघृणे सुतो	घृतं न पवते शुचि	। आ भक्षत् कन्यासु नः	१२	
वाचो जन्तुः कवीनां	पर्वस्व सोम धारया	। देवेषु रत्नधा असि	१३	५८०
आ कलशेषु धावति	श्येनो वर्म वि गाहते	। अभि द्रोणा कर्निक्रदत्	१४	
परि प्र सोम ते रसो	ऽसर्जि कलशै सुतः	। श्येनो न तक्ता अर्षति	१५	
पर्वस्व सोम मन्दय	न्निन्द्राय मधुमत्तमः		१६	
असृग्रन् देववीतये	वाजयन्तो रथा इव		१७	
ते सुतासो मदिन्तमाः	शुक्रा वायुमसृक्षत		१८	५८५
ग्राव्णा तुन्नो अभिष्टुतः	पवित्रं सोम गच्छसि	। दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्	१९	
एष तुन्नो अभिष्टुतः	पवित्रमति गाहते	। रक्षोहा वारमव्ययम्	२०	
यदन्ति यच्च दूरके	भयं विन्दति मामिह	। पर्वमान वि तजहि	२१	
पर्वमानः सो अद्य नः	पवित्रेण विचर्षणिः	। यः पोता स पुनातु नः	२२	
यत् ते पवित्रमर्चिष्य	ग्ने विततमन्तरा	। ब्रह्म तेन पुनीहि नः	२३	५९०
यत् ते पवित्रमर्चिव	द्ग्रे तेन पुनीहि नः	। ब्रह्मसर्वेः पुनीहि नः	२४	
उभाभ्यां देव सवितः	पवित्रेण सवेन च	। मां पुनीहि विश्वतः	२५	
त्रिभिष्टं देव सवित	र्वर्षिष्ठैः सोम धामाभिः	। अग्ने दक्षः पुनीहि नः	२६	
पुनन्तु मां देवजनाः	पुनन्तु वसवो धिया ।		२७	
विश्वे देवाः पुनीत मा	जातवेदः पुनीहि मा		२७	
प्र प्यायस्व प्र स्यन्दस्व	सोम विश्वेभिरंशुभिः	। देवेभ्य उत्तमं हविः	२८	५९५
उप प्रियं पनिप्रतं	युवानमाहुतीवृधम्	। अगन्म विभ्रतो नमः	२९	
अलाय्यस्य परशुर्ननाश	तमा पवस्व देव सोम	। आखुं चिदेव देव सोम	३०	
यः पावमानीरध्ये	त्यृषिभिः संभृतं रसम् ।			
सर्वं स पूतमश्नाति	स्वदितं मातरिश्चना		३१	५९८

- पावमानीर्यो अध्ये—त्यृषिभिः संभृतं रसम् ।  
 तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदुकम् ३२ ५९९
- ॥ ६७ ॥ ( ऋ ९ । ६८ । १—१० ) ( ६००—६०९ ) वत्सप्रिर्भालन्दनः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।  
 प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दुवो ऽसिंष्यदन्त गाव आ न धेनवः ।  
 बर्हिषदो वचनावन्त ऊर्धभिः परिस्रुतमुस्त्रिया निर्णिजं धिरे १ ६००  
 स रोरुवदाभि पूर्वा अचिक्रद—दुपारुहः श्रथयन्त्स्वादते हरिः ।  
 तिरः पवित्रं परियन्तुरु जगो नि शर्याणि दधते देव आ वरम् २  
 वि यो ममे यम्या संयती मदः साकंवृधा पर्यसा पिन्वदक्षिता ।  
 मही अपारे रजसी विवेविद—दभिव्रजन्नक्षितं पाज आ ददे ३  
 स मातरा विचरन् वाजयन्नपः प्र मेधिरः स्वधया पिन्वते पदम् ।  
 अंशुर्यवेन पिपिशे यतो नृभिः सं जामिभिर्नसते रक्षते शिरः ४  
 सं दक्षेण मनसा जायते कवि—ऋतस्य गर्भो निहितो यमा परः ।  
 यूना ह सन्ता प्रथमं वि जज्ञतु—गुहा हितं जनिम नेममुद्यतम् ५  
 मन्द्रस्य रूपं विविदुर्मनीषिणः श्यनो यदन्धो अभरत् परावतः ।  
 तं मर्जयन्त सुवृधं नदीष्वौ उशन्तमंशुं परियन्तमृगिम्यम् ६ ६०५  
 त्वां मृजन्ति दश योषणः सुतं सोम ऋषिभिर्मतिभिर्धातिभिर्हितम् ।  
 अव्यो वारैभिरुत देवहृतिभि—र्नृभिर्यतो वाजमा दधि सातये ७  
 परिप्रयन्तं वय्यं सुषंसदं सोमं मनीषा अभ्यनृषत स्तुभः ।  
 यो धारया मधुमाँ ऊर्मिणा दिव इयति वाचं रयिषाळमर्त्यः ८  
 अयं दिव इयति विश्वमा रजः सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ।  
 अद्भिर्गोभिर्मृज्यते अद्रिभिः सुतः पुनान इन्दुर्वरिवो विदत् प्रियम् ९  
 एवा नः सोम परिषिच्यमानो वयो दधच्चित्रतमं पवस्व ।  
 अद्रेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम् १० ६०९
- ॥ ६८ ॥ ( ऋ ९ । ६९ । १—१० ) ( ६१०—६१९ ) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । जगती, ९-१० त्रिष्टुप् ।  
 इषुर्न धन्वन् प्रति धीयते मति—र्वत्सो न मातुरुषं सज्यर्धनि ।  
 उरुधारेव दुहे अग्र आय—त्यस्य व्रतेष्वपि सोम इष्यते १ ६१०  
 उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु मन्द्रार्जनी चोदते अन्तरासनि ।  
 पवमानः संतनिः प्रमृतामिव मधुमान् द्रुप्तः परि वारमर्षति २ ६११

अव्ये वधूयुः पवते परि त्वच्चि श्रुतीते नप्तीरदितेऋतं यते ।	
हरिरक्रान् यजतः सैयतो मदो नृम्णा शिशानो महिषो न शोभते	३
उक्षा मिमाति प्रति यन्ति धेनवो देवस्य देवीरुपं यन्ति निष्कृतम् ।	
अत्यक्रमीदर्जुनं वारमव्ययमत्कं न निक्तं परि सोमो अव्यत	४
अमृक्तेन रुशता वासमा हरिरमत्यो निर्णिजानः परि व्यत ।	
दिवस्पुष्टं बर्हणा निर्णिजे कृतोपस्तरणं चम्बोर्नभस्मयम्	५
सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयिलवो मत्सरासः प्रसुपः साकर्मारते ।	
तन्तुं ततं परि सर्गास आशत्रो नेन्द्रादृते पवते धाम किं चन	६ ३१०
सिन्धोरिव प्रवणे निम्न आशत्रो वृषच्युता मदासो गातुमाशत ।	
शं नो निवेशे द्विपदे चतुष्पदे ऽस्मे वाजाः सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः	७
आ नः पवस्व वसुमद्विरण्यवदश्वावद् गोमद् यवमत् सुवीर्यम् ।	
यूयं हि सोम पितरो मम स्थनं दिवो मूर्धानः प्रस्थिता वयस्कृतः	८
एते सोमाः पवमानास इन्द्रं रथा इव प्र ययुः सातिमच्छ ।	
सुताः पवित्रमतिं यन्त्यव्यं हित्वी वृत्रिं हरितो वृष्टिमच्छ	९
इन्द्रविन्द्राय बृहते पवस्व सुमृळीको अनवद्यो रिशादाः ।	
भरा चन्द्राणि गृणते वसूनि देवैर्घावापृथिवी प्रावतं नः	१० ३१९

॥ ६९ ॥ ( ऋ ९ । ७० । १-१० ) ( ६२०-६२९ ) रेणुर्वंश्वामित्रः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुहे सत्यामाशिरं पूव्यं व्यामनि ।	
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारुणि चक्रे यदृतेरवर्धत	१ ६२०
म भिक्षमाणो अमृतस्य चारुण उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे	
तेजिष्ठा अपो महना परि व्यत यदी देवस्य श्रवसा सदां विदुः	२
ते अस्य सन्तु केतवोऽमृत्यवो ऽदाभ्यासो जनुषां उभे अनु ।	
योभिर्नृम्णा च देव्यां च पुनत आदिद् राजानं मनना अगृम्णत	३
स मृज्यमानो दशभिः सुकर्मभिः प्र मध्यमासु मातृषु प्रमे सचा ।	
व्रतानि पानो अमृतस्य चारुण उभे नृचक्षा अनु पश्यते विशीं	४
स मर्मजान इन्द्रियाय धार्यस ओभे अन्ता रोदसी हर्षते हितः ।	
वृषा शुष्मेण बाधते वि दुर्मती रादेदिशानः शर्यहेव शुरुधः	५ ६२४

स मातरा न ददृशान उस्त्रियो नानददेति मरुतामिव स्वनः ।	
जानन्नृतं प्रथमं यत् स्वर्णरं प्रशस्तये कर्मवृणीत सुक्रतुः	६ ६२५
रुवति भीमो वृषभस्तविष्यया शृङ्गे शिशानो हरिणी विचक्षणः ।	
आ योनिं सोमः सुकृतं नि षीदति गव्ययी त्वग् भवति निर्णिगव्ययी ७	
शुचिः पुनानस्तन्वमरेपस—मव्ये हरिर्न्यधाविष्ट सानेवि ।	
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवं त्रिधातु मधु क्रियते सुकर्मभिः	८
पवस्व सोम देववीतये वृषे—न्द्रस्य हादिं सोमधानमा विश	
पुरा नो बाधाद् दुरितातिं पारय क्षेत्रविद्धि दिश आहा विष्टच्छते	९
हितो न सप्तिराभि वाजमर्षे—न्द्रस्येन्दो जठरमा पवस्व	
नावा न सिन्धुमतिं पपि विद्धा—ञ्छरो न युध्यन्नवं नो निदः स्पः	१० ६२९

॥ ७० ॥ ( ऋ ९ । ७१ । १—९ ) ( ६३०—६३८ ) ऋषभो वैश्वामित्रः । जगती, ९ त्रिष्टुप् ।

आ दक्षिणा सृज्यते शुष्म्याइसदं वेति द्रुहो रक्षसः पाति जागृविः ।	
हरिरोपशं कृणुते नभस्पय उपस्तिरे चम्बोइब्रह्म निर्णिजे	१ ६३०
प्र कृष्टिहेव शूष एति रोख—दसुर्ये वर्ण नि रिणीते अस्य तम् ।	
जहाति वत्रि पितुरेति निष्कृत—मुपप्रुतं कृणुते निर्णिजं तना	२
अद्रिभिः मुतः पवते गभस्तयो—वृषायते नभसा वेपते मती ।	
म मौदते नसंते साधते गिरा नैनिके अप्सु यजते परीमणि	३
परिं युक्षं सहसः पर्वतावृधं मध्वः सिञ्चन्ति हर्म्यस्य सक्षणिम् ।	
आ यस्मिन् गावः सुहुताद् ऊर्धनि मृधच्छीणन्त्यग्रियं वरीमभिः	४
समी रथं न भुरिजौरहेषत् दश स्वसारो अदितेरुपस्थ आ ।	
जिगादुप जयति गोरपीच्यं पदं यदस्य मतुथा अजीजनन्	५
श्येनो न योनिं सदनं धिया कृतं हिरण्ययमासदं देव एषति ।	
ए रिणन्ति बहिषि प्रियं गिरा ऽश्वो न देवाँ अप्येति यज्ञियः	६ ६३५
परा व्यक्तो अरुषो दिवः कवि—वृषा त्रिपृष्ठो अनविष्ट गा अभि ।	
सहस्रणीतिर्यतिः परायतीं रेभो न पूर्वीरुषसो वि राजति	७
त्वेपं रूपं कृणुते वर्णो अस्य स यत्राशयत् समृता सेधति स्त्रिधः ।	
अप्सा याति स्वधया दैव्यं जनुं सं सुष्टुती नसंते सं गोअग्रया	८ ६३७

- उक्षेवँ यूथा परियन्मरावी—दधि त्विषीरधित् सूर्यस्य ।  
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षत क्षां सोमः परि ऋतुना पश्यते जाः ९ ६३८
- ॥ ७१ ॥ ( ऋ ९ । ७२ । १-९ ) ( ६३९-६४७ ) हरिमन्त आङ्गिरस । जगती ।  
हरिं मृजन्त्यरुषो न युज्यते सं धेनुभिः कलशे सोमो अज्यते ।  
उद् वाचमीरयति हिन्वते मती पुरुष्टुतस्य कति चित् परिप्रियः १  
साकं वदन्ति बहवो मनीषिण इन्द्रस्य सोमं जठरे यदादुहूः ।  
यदी मृजन्ति सुगमस्तयो नरः मनीळाभिर्दशभिः काम्यं मधुं २ ६४०  
अरममाणो अत्यति गा अभि सूर्यस्य प्रियं दुहितुस्तिरो रवंम् ।  
अन्वस्मै जोषमभग्द् विनंगृसः सं द्वयीभिः स्वसृभिः क्षेति जामिभिः ३  
नृधृतो अद्रिषुतो बर्हिषि प्रियः पतिर्गवां प्रदिव इन्दुर्कृत्विर्यः ।  
पुरंधिवान् मनुषो यज्ञसाधनः शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते ४  
नृवाहुभ्यां चोदितो धारया मुतोऽनुष्वधं पवते सोम इन्द्र ते ।  
आप्राः ऋतून्समजैरध्वरे मतीर्वेन द्रुपच्चम्बोऽुरासद्दरिः ५  
अंशुं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितं कवि कवयोऽपसो मनीषिणः ।  
समी गावो मतयो यन्ति मयतं ऋतस्य योना सदने पुनर्भुवंः ६  
नामा पृथिव्या धरुणो महो दिवोऽपामूमो सिन्धुष्वन्तरक्षितः ।  
इन्द्रस्य वज्रो वृषभो विभूवसुः सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ७ ६४५  
स तू पवस्व परि पार्थिवं रजः स्तोत्रे शिक्षन्नाध्वन्वते च सुक्रतो ।  
मा नो निर्भाग वसुनः सादनस्पृशो रधि पिशङ्गं बहुलं वसीमहि ८  
आ तू न इन्दो शतदात्वश्व्यं सहस्रदातु पशुमद्विरण्यवत् ।  
उप मास्व बृहती रेवतीरिषो ऽधि स्तोत्रस्य पवमान नो गहि ९ ६४७
- ॥ ७२ ॥ ( ऋ ९ । ७३ । १-९ ) ( ६४८-६५६ ) पवित्र आङ्गिरसः ।  
स्रक्वे द्रुपस्य धमतः समस्वर—नृतस्य योना समरन्त नाभणः ।  
त्रीन्स मूर्धो असुरश्चक्र आरभे सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन् १  
सम्यक् सस्यञ्चो महिषा अहेपत् सिन्धोरुर्मावधि वेना अवीविपन् ।  
मधोर्धाराभिर्जनयन्तो अर्कमित् प्रियामिन्द्रस्य तन्वमवीवृधन् २ ६४९

पवित्रवन्तः परि वाचमासते पितृषां प्रतो अभि रक्षति व्रतम् । महः समुद्रं वरुणस्तिरो दधे धीरा इच्छैर्कुर्धरुणेष्वारभम्	३	६५०
सहस्रधारेऽव ते समस्वरन् दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः । अस्य स्पशो न नि मिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवः	४	
पितृमार्तुरध्या ये समस्वरञ्च शोचन्तः संदहन्तो अव्रतान् । इन्द्रं द्विष्टामर्षं धमन्ति मायया त्वचमसिक्तीं भूमनो दिवस्परि	५	
प्रत्नान्मानादध्या ये समस्वरञ्छ्लोकयन्त्रासो रभसस्य मन्तवः । अपानक्षामो बधिरा अहासत ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः	६	
सहस्रधारे वितते पवित्र आ वाचं पुनन्ति कवयो मनीषिणः । रुद्रास एषामिषिरासो अद्रुहः स्पशः स्वश्चः सुदृशो नृचक्षसः	७	
ऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुस्त्री ष पवित्रा हृद्यन्तरा दधे । विद्वान्त्स विश्वा भुवनाभि पश्यत्यवाजुष्टान् विध्यति कर्ते अव्रतान्	८	६५५
ऋतस्य तन्तुर्विततः पवित्र आ जिह्वाया अग्रे वरुणस्य मायया । धीराश्चित् तत् समिनेक्षन्त आशताऽत्रा कर्तमव पदात्यप्रभुः	९	६५६

॥ ७३ ॥ ( ऋ ९ । ७४ । १-९ ) ( ६५७-६६५ ) कक्षीवान् वैर्धनमस । जगती, ८ त्रिष्टुप् ।

शिशुर्न जातोऽव चक्रदुद् वने स्वर्ग्युर्द वाज्यरुषः सिषासति । दिवो रेतसा सचते पयोवृधा तमीमहे सुमती शर्म सप्रथः	१	
दिवो यः स्क्रम्भो धरुणः स्वातत आपृणो अंशुः पर्येति विश्वतः सेमे मही रोदमी यक्षदावृता समीचीने दाषार समिषः कविः	२	
महि प्सरः सुकृतं सोम्यं मधुर्वी गव्युतिरदितेऋतं यते । ईशे यो वृष्टेरित उस्त्रियो वृषा ऽपां नेता य इतर्कतिर्ऋग्मियः	३	
आत्मन्वन्नभो दुह्यते घृतं पर्य ऋतस्य नाभिरमृतं वि जायते । समीचीनाः सुदानवः प्रीणन्ति तं नरो हितमव मेहन्ति परवः	४	६६०
अरावीदंशुः सचमान उर्मिणा देवाव्यं मनुषे पिन्वति त्वचम् । दधाति गर्भमदितेरुपस्थ आ येन तोकं च तनयं च घामहे	५	
सहस्रधारेऽव ता असश्चतस्त्वृतीयै सन्तु रजसि प्रजावतीः । चतस्रो नाभो निर्हिता अबो दिवो हविर्भरन्त्यमृतं घृतधृतः	६	६६२

श्वेतं रूपं कृणुते यत् सिषासति सोमो मीद्वो असुरो वेद भूमनः ।  
 धिया शमी सचते सेमभि प्रवद् दिवस्क्वन्धमव दर्षदुद्रिणम् ७  
 अधं श्वेतं कलशं गोभिरक्तं कार्ष्मन्ना वाज्यं क्रमीत् ससवान् ।  
 आ हिंन्विरे मनसा देवयन्तः कक्षीवते शतहिमाय गोनाम् ८  
 अङ्घ्रिः सोमं पपृचानस्य ते रसो ऽव्यो वारं वि पवमान धावति ।  
 स मृज्यमानः कृविभिर्मदिन्तम् स्वदस्वेन्द्राय पवमान पीतये ९ ६६५

॥ ७४ ॥ ( ऋ ९ । ७५ । १-५ ) ( ६६६-६९० ) कविर्भागवः । जगती ।

अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यद्दो अधि येषु वर्धते ।  
 आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद् विचक्षणः १  
 ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः ।  
 दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यं नाम तृतीयमधि रोचने दिवः २  
 अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदु—भृभिर्येमानः कोश आ हिरण्यये ।  
 अभीमृतस्य दोहना अनृषता—ऽधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजति ३  
 अद्रिभिः सुतो मतिभिश्चनोहितः प्ररोचयन् रोदसी मातरा शुचिः ।  
 रोमाण्यव्या समया वि धावति मधोर्घारा पिन्वमाना दिवेदिवे ४  
 परि सोमं प्र धन्वा स्वस्तये नृभिः पुनानो अभि वासयाशिरम् ।  
 ये ते मदा आहनसो विहायस—स्तेभिरिन्द्रं चोदय दातवे मधम् ५ ६७०

॥ ७५ ॥ ( ऋ ९ । ७६ । १-५ )

धर्ता दिवः पवते कृत्वयो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः ।  
 हरिः सृजानो अत्यो न सत्त्वभि—वृथा पाजांसि कृणुते नदीष्वा १  
 शूरो न धत्त आयुधा गभस्तयोः स्वपुः सिषासन् रथिरो गविष्ठिषु ।  
 इन्द्रस्य शुष्ममीर्यन्नपस्युभि—रिन्दुहिंन्वानो अज्यते मनीषिभिः २  
 इन्द्रस्य सोमं पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्वा विश ।  
 प्र णः पिन्व विद्युदुभ्रेव रोदसी धिया न वाजाँ उप मासि शश्वतः ३  
 विश्वस्य राजा पवते स्वर्दशं ऋतस्य धीतिमृषिषाळवीवशत् ।  
 यः सूर्यस्यासिरेण मृज्यते पिता मतीनामसमष्टकाव्यः ४  
 वृषेव युथा परि कोशमर्ष—स्यपामुपस्थे वृषभः कर्निक्रदत् ।  
 स इन्द्राय पवसे मत्सरिन्तमो यथा जेषाम सभिथे त्वोतयः ५ ६७५



॥ ७६ ॥ ( ऋ ९ । ७७ । १—५ )

एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रदु—दिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टरः ।	
अभीमृतस्य सुदुर्घा घृतश्रुतो वाश्रा अर्षन्ति पर्यसेव धेनवः	१
स पूर्यः पवते यं दिवस्परि श्वेनो मथायदिषितस्तिरो रजः ।	
स मध्व आ युवते वेर्विजान इत् कृशानोरस्तुर्मनसाह विभ्युषा	२
ते नः पूर्वास उपरास इन्दवो महे वाजाय धन्वन्तु गोमते ।	
ईक्षेण्यासो अह्यो न चारवा ब्रह्मब्रह्म ये जुजुषुर्हविर्हविः	३
अयं नो विद्वान् वनवद् वनुष्यत इन्दुः सत्राचा मनसा पुरुष्टुतः ।	
इनस्य यः सदेने गर्भमादधे गवामुरुञ्जमभ्यर्षति व्रजम्	४
चक्रिर्दिवः पवते कृत्व्यो रसो महां अदब्धो वरुणो हुरुग्यते ।	
असावि मित्रो वृजनेषु यज्ञियो ऽत्यो न यूथे वृषयुः कर्निक्रदत्	५ ६८०

॥ ७७ ॥ ( ऋ ९ । ७८ । १—५ )

प्र राजा वाचं जनयन्नासिष्यद—दुपो वसानो अभि गा इयक्षति ।	
गृभ्णार्ति रिप्रमविरस्य तान्वा शुद्धो देवानामुप याति निष्कृतम्	१
इन्द्राय सोम परि विच्यसे नृभिर्नृचक्षा ऊर्मिः कविरज्यसे वने ।	
पूर्वीर्हि ते स्रुतयः सन्ति यातवे सहस्रमश्वा हरयश्चमूषदः	२
समुद्रिया अप्सरसो मनीषिण—मासीना अन्तराभि सोममक्षरन् ।	
ता ई हिन्वन्ति हर्म्यस्य सक्षणिं याचन्ते सुम्रं पवमानमक्षितम्	३
गोजिन्नः सोमो रथजिद्विरण्यजित् स्वर्जिद्विजित् पवते सहस्रजित् ।	
यं देवासश्चक्रिरे पीतये मदं स्वादिष्ठं द्रप्समरुणं मयोभुवम्	४
एतानि सोम पवमानो अस्मयुः सत्यानि कृण्वन् द्रविणान्यर्षसि ।	
जहि शत्रुमन्तिके दूरके च य उर्वी गव्यूतिमभयं च नस्कृधि	५ ६८५

॥ ७८ ॥ ( ऋ ९ । ७९ । १—५ )

अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र सुवानासो बृहदिवेषु हरयः ।	
वि च नशन् न इषो अरातयो ऽर्यो नशन्त सनिषन्त नो धियः	१
प्र णो धन्वन्त्विन्दवो मदच्युतो धना वा येभिरर्वतो जुनीमसि ।	
तिरो मर्तस्य कस्य चित् परिहृति वयं धनानि विश्वधा मरेमहि	२ ६८७

उत स्वस्या अरात्या अरिर्हि ष उतान्यस्या अरात्या वृको हि षः ।  
 धन्वन् न तृष्णा समरीत ताँ अभि सोमं जहि पवमान दुराध्यः ३  
 द्विवि ते नाभा परमो य आददे पृथिव्यास्ते रुरुहुः सान्वि क्षिपः  
 अद्रयस्त्वा वप्सति गोरधि त्वच्युप्सु त्वा हस्तैर्दुहुर्मनीषिणः ४  
 एवा त इन्दो सुभ्रं सुपेशसं रसं तुज्जन्ति प्रथमा अभिश्रियः ।  
 निर्दनिदं पवमान नि तारिष आविस्ते शुष्मां भवतु प्रियो मर्दः ५ ३९०

॥ ७९ ॥ ( ऋ ९ । ८० । १-५ ) ( ६९१-७०५ ) वसुर्भारद्वाजः ।

सोमस्य धारा पवते नृचक्षस ऋतेन देवान् हवते दिवस्परि ।  
 बृहस्पते रवथेना वि दिद्युते ममुद्रामो न सर्वनानि विव्यचुः १  
 यं त्वा वाजिन्नघ्न्या अभ्यनूषताऽयोहतं योनिमा रोहसि द्युमान् ।  
 मघोनामार्युः प्रतिरन् महि श्रव इन्द्राय सोम पवसे वृषा मर्दः २  
 एन्द्रस्य कुक्षा पवते मदिन्तम ऊर्ज वसानः श्रवसे सुमङ्गलः ।  
 प्रत्यङ् स विश्वा भुवनाभि पप्रथे क्रीळन् हरिगर्त्यः स्यन्दते वृषा ३  
 तं त्वा देवेभ्यो मधुमत्तमं नरः सहस्रधारं दुहते दश क्षिपः  
 नृभिः सोम प्रच्युतो ग्रावाभिः सुतो विश्वान् देवाँ आ पवस्वा सहस्रजित् ४  
 तं त्वा हस्तिनो मधुमन्तमद्रिभिर्दुहन्त्यप्सु वृषभं दश क्षिपः ।  
 इन्द्रं सोम मादयन् दैव्यं जनं सिन्धोरिवोर्मिः पवमानो अर्षसि ५ ३९१

॥ ८० ॥ ( ऋ. ९ । ८१ । १-५ ) जगती, ५ त्रिष्टुप् ।

प्र सोमस्य पवमानस्योर्मय इन्द्रस्य यन्ति जठरं सुपेशसः ।  
 द्रुधा यदीमुन्नीता यशसा गवाँ दानाय शरमुदमन्दिषुः सुताः १  
 अच्छा हि सोमः कलशाँ असिष्यदुदत्यो न वोळ्हा रघुवर्तनिर्वृषा ।  
 अथा देवानामुभयस्य जन्मनो विद्वाँ अश्रोत्यमुत इतश्च यत् २  
 आ नः सोम पवमानः किरा वस्विन्दो भवं मघवा राधसो महः ।  
 शिक्षा वयोधो वसवे सु चेतुना मा नो गर्यमारे अस्मत् परा सिचः ३  
 आ नः पूषा पवमानः सुरातयो मित्रो गच्छन्तु वरुणः सजोषसः ।  
 बृहस्पतिर्मरुतो वायुरश्विना त्वष्टा सविता सुयमा सरस्वती ४  
 उभे द्यावापृथिवी विश्वमिन्वे अर्यमा देवो अदितिर्विधाता ।  
 भगो नृशंस उर्वन्तरिक्षं विश्वे देवाः पवमानं जुषन्त ५ ७००

॥ ८१ ॥ ( ऋ ९ । ८२ । १-५ ) जगती ।

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दुस्मो अभि गा अचिक्रदत् ।  
 पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदम् १  
 कविर्वेधस्या पर्येषि माहिन्मत्यो न मृष्टां अभि वाजमर्षसि ।  
 अपभेधन् दुरिता सोम मृळय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम् २  
 पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिवु क्षयं दधे ।  
 स्वसार आपो अभि गा उतासरन् त्सं ग्रावभिर्नसते वीते अश्वरे ३  
 जयेव पत्यावधि शेवं मंहमे पत्राया गर्भ शृणुहि ब्रवीमि ते ।  
 अन्तर्वाणीषु प्र चरा सु जीवसे ऽनिन्द्यो वृजनं सोम जागृहि ४  
 यथा पूर्वैभ्यः शतसा अमृधः सहस्रसाः पर्यया वाजमिन्दो ।  
 एवा पवस्व सुविताय नव्यसे तव व्रतमन्वापः सचन्ते ५ ७०५

॥ ८२ ॥ ( ऋ. ९।८३।१-५ ) ( ७०६-७१० ) पवित्र आङ्गिरसः ।

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।  
 अतप्ततनूनं तदामो अश्रुते श्रुतास इद् वहन्तस्तत् समाशत १  
 तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचतो अस्य तन्तत्रो व्यस्थिरन् ।  
 अवन्त्यस्य पशितारमाशवां दिवस्पृष्ठमधि तिष्ठन्ति चेतसा २  
 अरुरुचदुपसः पृश्निरग्रिय उक्षा विभर्ति भुवनानि वाजयुः ।  
 मायाविनां ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः ३  
 गन्धर्व इत्था पदमस्य रक्षति पार्ति देवानां जनिमान्यद्भुतः ।  
 गुभ्णाति रिपुं निधयां निधापतिः सुकृत्तमा मधुनो भक्षमाशत ४  
 हविर्हविष्मो महि सन्न दैव्यं नभो वसानः परि यास्यध्वरम् ।  
 राजा पवित्ररथो वाजमारुहः सहस्रभृष्टिर्जयसि श्रवो बृहत् ५ ७१०

॥ ८३ ॥ ( ऋ ९ । ८४ । १-५ ) ( ७११-७१५ ) वाच्य प्रजापतिः ।

पवस्व देवमार्दनो विचर्षणि रप्सा इन्द्राय वरुणाय वायवे ।  
 कृधी नो अद्य वरिवः स्वस्तिमदुरुक्षितौ गृणीहि दैव्यं जनम् १  
 आ यस्तस्थौ भुवनान्यमत्यो विश्वानि सोमः परि तान्यर्षति ।  
 कृण्वन्त्संचृतं विचृतमभिष्टय इन्दुः सिषक्त्युषसं न सूर्यः २ ७१२

आ यो गोभिः सृज्यत ओषधीष्वा देवानां सुम्न इषयन्नुपावसुः ।  
 आ विद्युता पवते धारया सुत इन्द्रं सोमो मादयन् दैव्यं जनम् ३  
 एष स्य सोमः पवते सहस्रजि—द्विन्त्रानो वाचमिपिरामुषुर्बुधम् ।  
 इन्दुः समुद्रमुदियति वायुभि—रेन्द्रस्य हादिं कलशेषु मीदति ४  
 अभि त्यं गात्रः पर्यसा पयोवृधं सोमं श्रीणन्ति मतिभिः स्वविदम् ।  
 धनंजयः पवते कृत्वयो रसो विप्रः कविः काव्येना स्वर्चनाः ५ ७१५

॥ ८४ ॥ ( ऋ ९ । ८५ । १—१२ ) ( ७१६—७२७ ) वेनो भार्गवः । जगती. ११—१२ त्रिष्टुप् ।

इन्द्राय सोम सुपुतः परिं स्रवा—ऽपामीवा भवतु रक्षमा सह ।  
 मा ते रसस्य मत्सत द्रयाविनो द्रविणस्वन्त इह सन्त्विन्दवः १  
 अस्मान्सर्मयें पवमान चोदय दक्षो देवानामसि हि प्रियो मदः ।  
 जहि शत्रूरभ्या भन्दनायतः पिबेन्द्र सोममव नो मृधो जहि २  
 अदब्ध इन्दो पवसे मदिन्तम आत्मेन्द्रस्य भवमि धासिरुत्तमः ।  
 अभि स्वरन्ति बहवो मनीषिणो राजानमस्य भुवनम्य निसते ३  
 सहस्रणीथः शतधारो अद्भुत इन्द्रायेन्दुः पवते काम्यं मधुं ।  
 जयन् क्षेत्रमभ्यर्षा जयन्नप उरुं नो गातुं कृणु सोम मीद्वः ४  
 कर्निकदत् कलशे गोभिरज्यसे व्युव्ययं समया वारमर्षसि ।  
 मर्मज्यमानो अत्यो न सानसि—रिन्द्रस्य सोम जठरे समक्षरः ५ ७२०  
 स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने ।  
 स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमां अदाभ्यः ६  
 अत्यं मृजन्ति कलशे दश क्षिपः प्र विप्राणां मतयो वाच ईरते ।  
 पवमाना अभ्यर्षन्ति सुष्टुति—मेन्द्रं विशन्ति मदिरास इन्दवः ७  
 पवमानो अभ्यर्षा सुवीर्यं—मुर्वी गव्यूतिं महि शर्म सप्रथः ।  
 माकिर्नो अस्य परिष्पृतिरीशते—न्दो जयेम त्वया धनं धनम् ८  
 अधि घामस्थाद् वृषभो विचक्षणो ऽरुरुचद् वि दिवो रंचना कविः ।  
 राजा पवित्रमत्येति रोरुवद् दिवः पीयूषं दुहते नृचक्षसः ९  
 दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतो वेना दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् ।  
 अप्सु द्रप्सं वावृधानं समुद्र आ सिन्धोरूर्मा मधुमन्तं पवित्र आ १० ७२५

नाकै सुपर्णमुपपत्तिवासं गिरो वेनानामकृपन्त पूर्वाः ।  
 शिशुं रिहन्ति मतयः पतिम्रतं हिरण्ययं शकुनं क्षामणि स्थाम् ११  
 ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाकै अस्थाद् विश्वा रूपा प्रतिचक्षाणो अस्य ।  
 भानुः शुक्रेण शोचिषा व्यद्यौत् प्रारुरुचद् रोदसी मातरा शुचिः १२ ७२७

॥ ८५ ॥ ( ऋ ९ । ८६ । १—४८ )

( ७२८—७७५ ) १—१० अकृष्टा मापा , ११—२० सिकता निवावरी, २१—३० पृथिव्योऽजाः  
 ३१—४० अकृष्टामाषादयस्त्रयः, ४१—४५ भौमोऽग्निः, ४६—४८ गृत्समदः शानकः । जगती ।

प्र त आशवः पवमान धीजवो मदा अर्षन्ति रघुजा इव त्मना ।  
 दिव्याः सुपर्णा मधुमन्त इन्दवो मदिन्तमासः परि कोशमासते १  
 प्र ते मदासो मदिरास आशवो ऽसृक्षत रथ्यासो यथा पृथक् ।  
 धेनुर्न वत्सं पर्यसाभि वज्रिण—मिन्द्रमिन्दवो मधुमन्त ऊर्मयः २  
 अत्यो न हियानो अभि वाजमर्ष स्वर्वित् कोशं दिवो अद्रिमातरम् ।  
 वर्षा पवित्रे अधि सानो अव्यये सोमः पुनान इन्द्रियाय धायसे ३ ७२०  
 प्र त आश्विनीः पवमान धीजुवो दिव्या असृग्रन् पर्यसा धरीमणि ।  
 प्रान्तर्ऋषयः स्थाविरीरसृक्षत ये त्वा मृजन्त्यृषिपाण वेधसः ४  
 विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोस्ते सतः परि यन्ति केतवः ।  
 व्यानशिः पवसे सोम धर्मभिः पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ५  
 उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः ।  
 यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः सत्ता नि योना कलशेषु सीदति ६  
 यज्ञस्य केतुः पवते स्वध्वरः सोमो देवानामुप याति निष्कृतम् ।  
 सहस्रधारः परि कोशमर्षति वर्षा पवित्रमत्येति रोरुवत् ७  
 राजा समुद्रं नद्योर्ह वि गाहते ऽपामूर्मि संचते सिन्धुषु श्रितः ।  
 अध्यस्थात् सानु पवमानो अव्ययं नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवः ८ ७३५  
 दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदुद् द्यौश्च यस्य पृथिवी च धर्मभिः ।  
 इन्द्रस्य मुखं पवते विवेविदुत् सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ९  
 ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः ।  
 दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यं मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः १० ७३७

अभिक्रन्दन् कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो विचक्षणः । हरिर्मित्रस्य सदेनपु सीदति मर्मजानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा	११	
अग्रे सिन्धूनां पवमानो अर्ष-त्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छति । अग्रे वाजस्य भजते महाधनं स्वायुधः सोतृभिः पयते वृषा	१२	
अयं मतवाञ्छकुनो यथा हितो ऽर्ष्ये मसार पवमान ऊमिणा । तव क्रत्वा रोदसी अन्तरा क्रे शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते	१३	७४०
द्रापिं वसानो यजतो दिविस्पृश-मन्तरिक्षप्रा भुवनेष्वर्पितः । स्वर्जज्ञानो नभसाभ्यंक्रमीत् प्रलमस्य पितरमा विवासति	१४	
सो अस्य विशे महि शर्म यच्छति यो अस्य धाम प्रथमं व्यानशे । पदं यदस्य परमे व्योमन् यतो विश्वा अभि सं याति संयतः	१५	
प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं मखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरम् । मर्ये इव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयाज्ञा पथा	१६	
प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवसनेष्वक्रमुः । सोमं मनीषा अभ्यर्णुवत् स्तुभो ऽभि धेनवः पर्यसेमशिश्रयुः	१७	
आ नः सोम संयन्तं पिप्युषामिष-मिन्दो पवस्व पवमानो अस्त्रिधम् । या नो दोहते त्रिरहन्नसंश्रुषी क्षुमद् वाजवन्मधुमत् सुवीर्यम्	१८	७४५
वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नः प्रतरीतोषसो दिवः । क्राणा सिन्धूनां कलशां अवीवश-दिन्द्रस्य हाद्यांविशन् मनीषिभिः	१९	
मनीषिभिः पवते पूर्यः कवि-र्नृभिर्यतः परि कोशां अचिक्रदत् । त्रितस्य नाम जनयन् मधु क्षर-दिन्द्रस्य वायोः मख्याय कर्तवे	२०	
अयं पुनान उषसो वि रौचय-द्वयं सिन्धुभ्यो अभवद् लोककृत् । अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते चारुं मत्सरः	२१	
पवस्व सोम दिव्येषु धामसु सृजान इन्दो कलशे पवित्र आ । सीदुभिन्द्रस्य जठरे कनिक्रद-न्नृभिर्यतः सूर्यमारोहयो दिवि	२२	
अद्रिभिः सुतः पवसे पवित्र आँ इन्द्रविन्द्रस्य जठरेष्वविशन् । त्वं नृचक्षां अभवो विचक्षण सोम गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप	२३	७५०

त्वां सोमं पर्वमानं स्वाध्यो ऽनु विप्रासो अमदन्नवस्यवः ।	
त्वां सुपर्ण आभरद् दिवस्परीन्दो विश्वाभिर्मतिभिः परिष्कृतम्	२४
अव्यै पुनानं परि वारं ऊर्मिणा हरिं नवन्ते अभि सप्त धेनवः ।	
अपामुपस्थे अध्यायवः कविमृतस्य योना महिषा अहेषत	२५
इन्दुः पुनानो अर्ति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे ।	
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कवि—रत्यो न क्रीळन् परि वारंमर्षति	२६
असश्वतः शतघारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदुन्युवः ।	
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः	२७
तवेमाः प्रजा दिव्यस्य रेतसस्त्वं विश्वस्य भुवनस्य राजसि ।	
अथेदं विश्वं पवमान ते वशे त्वमिन्दो प्रथमो धामघा असि	२८ ७५५
त्वं समुद्रो असि विश्ववित् कवे तवेमाः पञ्च प्रदिशो विधर्मणि ।	
त्वं द्यां च पृथिव्यां चार्ति जग्निषे तव ज्योतीषि पवमान सूर्यः	२९
त्वं पवित्रे रजसो विधर्मणि देवेभ्यः सोम पवमान पूयसे ।	
त्वामुशिजः प्रथमा अगृभ्णत तुभ्येमा विश्वा भुवनानि येमिरे	३०
प्र रेभ एत्यति वारंमव्ययं वृषा वनेष्वव चक्रदुद्धरिः	
सं धीतयो वावशाना अनूषत शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्रतम्	३१
स सूर्यस्य रश्मिभिः परि व्यत तन्तुं तन्वानस्त्रिवृतं यथा विदे ।	
नयन्नृतस्य प्रशिषो नवीयसीः पतिर्जनीनामुप याति निष्कृतम्	३२
राजा सिन्धूनां पवते पतिर्दिव क्रतस्य याति पथिभिः कर्निक्रदत् ।	
सहस्रघारः परि पिच्यते हरिः पुनानो वाचं जनयन्नुपावसुः	३३ ७६०
पर्वमान महर्णो वि धावसि सरो न चित्रो अव्ययानि पव्यया ।	
गर्भस्तिपूतो नृभिरद्रिभिः सुतो महे वाजाय धन्याय धन्वसि	३४
इपमूर्जं पवमानाभ्यर्षसि श्येनो न वंसु कलशेषु सीदसि ।	
इन्द्राय मद्रा मद्यो मदः सुतो दिवो विष्टम्भ उपमो विचक्षणः	३५
सप्त स्वसारो अभि मातरः शिशुं नवं जज्ञानं जेन्यं विपश्चितम् ।	
अपां गन्धर्व दिव्यं नृचक्षसं सोमं विश्वस्य भुवनस्य राजसे	३६
ईशान इमा भुवनानि वीयसे युजान इन्दो हरितः सुपर्णः ।	
तास्ते क्षरन्तु मधुमद् घृतं पयस्तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः	३७ ७६४

त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पवमान वृषभ ता वि धावसि ।		
स नः पवस्व वसुमद्विरण्यवद् वयं स्याम भुवनेषु जीवसे	३८	७६५
गोवित् पवस्व वसुद्विरण्यविद् रेतोधा इन्दो भुवनेष्वर्षितः ।		
त्वं सुवीरो असि सोम विश्ववित् तं त्वा विप्रा उप गिरेम आसते	३९	
उन्मध्व ऊर्मिर्वनना अतिष्ठिप—दपो वसानो महिषो वि गाहते ।		
राजा पवित्ररथो वाजमारुहत् सहस्रभृष्टिर्जयति श्रवां बृहत्	४०	
स भन्दना उर्दियति प्रजावती—विश्रायुर्विश्वाः मुभरा अर्हदिवि ।		
ब्रह्म प्रजावद् रयिमश्वपस्त्यं पीत इन्दुविन्द्रमम्मभ्यं याचतात्	४१	
सो अग्रे अह्नां हरिर्हर्यतो मदुः प्र चेतसा चेतयते अनु द्युभिः ।		
द्वा जना यातयन्नन्तरीयते नरा च शंसं दैव्यं च धर्तरी	४२	
अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जते ।		
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमांसु गृभ्णते	४३	७७०
विपश्चिते पवमानाय गायत मही न धागत्यन्धो अर्षति ।		
अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वच—मत्यो न क्रीळन्नसरद् वृषा हरिः	४४	
अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते विमानो अह्नां भुवनेष्वर्षितः ।		
हरिर्धृतस्नुः सुदृशीको अर्णवो ज्योतीरथः पवते गाय ओक्यः	४५	
असर्जि स्कम्भो दिव उद्यतो मदुः परि त्रिधातुर्भुवनान्यर्षति ।		
अंशुं रिहन्ति मतयः पर्निमतं गिरा यदि निर्णिजमृग्मिणो ययुः	४६	
प्र ते धारा अत्यण्वानि मेघ्यः पुनानस्य संयतो यन्ति रंहयः ।		
यद् गोभिरिन्दो चम्बोः समज्यस आ सुवानः सोम कलशेषु सीदसि ४७		
पवस्व सोम क्रतुविन्न उक्थ्यो ऽव्यो वारे परि धाव मधुं प्रियम् ।		
जहि विश्वान् रक्षस इन्दो अत्रिणो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	४८	७७५
॥ ८६ ॥ (ऋ ९ । ८७ । १-९) ( ७७६—७९९ ) उशना काव्यः । त्रिष्टुप् ।		
प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद् नृभिः पुनानो आभि वाजमर्ष ।		
अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तो ऽच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति	१	
स्वायुधः पवते देव इन्दु—रशस्तिहा वृजनं रक्षमाणः ।		
पिता देवानां जनिता सुदक्षो विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः	२	७७७



ऋषिर्विप्रः पुरएता जनाना—मृधुर्धर उशना काव्येन ।	
स चिद् विवेदु निहितं यदासा—मपीच्यं गुह्यं नाम गोनाम्	३
एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णे परि पवित्रे अक्षाः ।	
सहस्रसाः शतसा भूरिदावा शश्वत्तमं बर्हिरा वाज्यस्थात्	४
एते सोमा अभि गव्या सहस्रा महे वाजायामृताय श्रवांसि ।	
पवित्रेभिः पर्वमाना असृग्र—ञ्छवस्यवो न पृतनाजो अत्याः	५ ७८०
परि हि ष्मा पुरुहूतो जनानां विश्वासं भोजना पूयमानः ।	
अथा भर श्येनभृत प्रयांसि रथं तुज्ञानो अभि वाजमर्ष	६
एष सुवानः परि सोमः पवित्रे सगो न सृष्टो अदधावदवी ।	
तिग्मे शिशानो महिषो न शृङ्गे गा गव्यन्नभि शूरो न सत्वा	७
एषा रथौ परमादन्तरद्रेः कूचित् सतीरुर्वे गा विवेद ।	
दिवो न विद्युत् स्तनयन्त्यभ्रैः सोमस्य ते पवत इन्द्र धारा	८
उत स्म राशिं परि यासि गोना—मिन्द्रेण सोम सरथं पुनानः ।	
पूर्वीरिषो बृहतीर्जीरदानो शिक्षा शचीवस्तव ता उपष्टुत्	९

॥ ८७ ॥ ( ऋ ९ । ८८ । १—८ )

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे तुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि ।	
त्वं ह यं चकृषे त्वं ववृष इन्द्रं मदाय युज्याय सोमम्	१ ७८५
स ई रथो न भूरिषाळयोजि महः पुरूणि सातये वस्रनि ।	
आदीं विश्वा नहुष्याणि जाता स्वर्षाता वन ऊर्ध्वा नवन्त	२
वायुर्न यो नियुत्वाँ इष्टयामा नासत्येव हव आ शंभविष्टः ।	
विश्ववारो द्रविणोदा इव त्मन् पूषेव धीजवनोऽसि सोम	३
इन्द्रो न यो महा कर्माणि चक्रि—हन्ता वृत्राणामसि सोम पूभित् ।	
पैद्वो न हि त्वमहिनाम्नां हन्ता विश्वस्यासि सोम दस्योः	४
अग्निर्न यो वन आ सृज्यमानो वृथा पाजांसि कृणुते नदीषु ।	
जनो न युध्वा महत् उपब्दि—रियतिं सोमः पर्वमान ऊर्मिम्	५
एते सोमा अति वाराण्यव्या दिव्या न कोशासो अभ्रवर्षाः ।	
वृथा समुद्रं सिन्धवो न नीचीः सुतासो अभि कलशाँ असृग्रन्	६ ७९०

शुष्मी शर्धो न मारुतं पवस्वा—सर्नभिश्स्ता दिव्या यथा विट् ।  
 आपो न मक्षू सुमतिर्भवा नः सहस्राप्साः पृतनापाण्ण यज्ञः ७  
 राज्ञो जु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद्भीरं तव सोम धाम ।  
 शुचिधर्मसि प्रियो न मित्रो दुक्षार्यो अर्थमेवांसि सोम ८

॥ ८८ ॥ ( ऋ ९ । ८९ । ६—७ )

प्रो स्य वह्निः पृथ्याभिरस्यान् दिवो न वृष्टिः पर्वमानो अक्षाः ।  
 सहस्रधारो असदुक्त्युस्मे मातुरुपस्थे वन आ च सामः १  
 राजा सिन्धूनामवसिष्ट वासं क्रतम्य नावमारुहद् रजिष्ठाम् ।  
 अप्सु द्रप्तो वावृषे श्येनजृता दुह ई पिता दुह ई पितुर्जाम् २  
 सिंहं नसन्त मध्वो अयामं हरिमरुषं दिवो अस्य पतिम् ।  
 शूरो युत्सु प्रथमः पृच्छते गा अस्य चक्षसा परिं पात्युक्षा ३ ७९०  
 मधुपृष्ठं घोरमयासमश्रं रथं युञ्जन्त्युरुचक्र क्रुण्वम् ।  
 स्वसार ई जामयो मर्जयन्ति सर्नाभयो वाजिनमूर्जयन्ति ४  
 चतस्र ई घृतदुहः सचन्त समाने अन्तर्धरुणे निषत्ताः ।  
 ता ईमर्षन्ति नमसा पुनाना—स्ता ई विश्वतः परिं पन्ति पूवीः ५  
 विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्या विश्वा उत क्षितयो हस्ते अस्य ।  
 असत् त उत्सो गृणते नियुत्वान् मध्वो अंशुः पवत इन्द्रियाय ६  
 वन्वन्नवातो अभि देववीति—मिन्द्राय सोम वृत्रहा पवस्व ।  
 शग्धि महः पुरुश्चन्द्रस्य रायः सुवीर्यस्य पतंगः स्याम ७ ७९९

॥ ८९ ॥ ( ऋ ९ । ९० । १—६ ) ( ८००—८०५ ) वासिष्ठो मैत्रावरुणि ।

प्र हिंन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनिष्यन्नयासीत् ।  
 इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरुदधानः १ ८००  
 अभि त्रिपुष्टं वृषणं वयोधा—माङ्गुषाणामवावशन्त वाणीः ।  
 वना वसानो वरुणो न सिन्धून् वि रत्नधा दयते वार्याणि २  
 शूरग्रामः सर्ववीरः सहात्रा—ञ्जेता पवस्व सर्निता धनानि ।  
 तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्व—षाळहः साह्वान् पृतनास शत्रून् ३  
 उरुगव्युतिरभयानि कृण्व—न्तसर्माचीने आ पवस्वा पुरंधी ।  
 अपः सिषासन्नुषसः स्वर्गाः सं चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान् ४ ८०३

मत्सि सोम वरुणं मत्सि मित्रं मत्सीन्द्रमिन्द्रो पवमान विष्णुम् । मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि महामिन्द्रमिन्द्रो मदाय एवा राजैव क्रतुमां अमेन विश्वा घनिघ्नद् दुरिता पवस्व । इन्द्रो सूक्ताय वचसे वयो धा यूयं पात स्वास्तिभिः सदा नः	५ ६	८०५
॥ ९० ॥ ( ऋ ९ । ९१ । १-६ ) ( ८०६—८१७ ) कश्यपो मारीच । असर्जि वक्त्रा रथ्ये यथाजौ धिया मनोतां प्रथमो मनीषी । दश स्वसारो अधि सानो अव्ये ऽजन्ति वह्निं सदनान्यच्छ वीती जनस्य दिव्यस्य कव्ये—रधिं सुवानो नहुष्येभिरिन्दुः । प्र यो नृभिरमृतो मर्त्येभि—र्मृजानोऽविभिर्गोभिरद्भिः वृषा वृष्णे रोह्वदंशुरस्मै पवमानो रुशदीर्ते पयो गोः । सहस्रमृका पथिभिर्वचावि—दध्वस्मभिः सरो अण्वं वि याति रुजा दृब्हा चिद् रक्षमः सदांसि पुनान इन्द्र उर्णुहि वि वाजान् । वृश्चोपरिष्ठात् तुजता वधेन ये अन्ति दूरादुपनायमेषाम् स प्रतनवन्नव्यसे विश्ववार सूक्ताय पथः कृणुहि प्राचः । ये दुष्पहासो वनुषा बृहन्त—स्तोस्ते अश्याम पुरुकृत् पुरुक्षो एवा पुनानो अपः स्वर्गा अस्मभ्यं तोका तनयानि भूरिं । शं नः क्षेत्रमुरु ज्योतीषि सोम ज्योङ्गनः सूर्यं दृश्ये रिरिहि	१ २ ३ ४ ५ ६	८१०
॥ ९१ ॥ ( ऋ ९ । ९२ । १-६ ) परि सुवानो हरिरंशुः पवित्रे रथो न सर्जि सनये हियानः । आपच्छ्लोकमिन्द्रियं पूयमानः प्रति देवाँ अजुषत् प्रयोभिः अच्छा नृचक्षा असरत् पवित्रे नाम दधानः कविरस्य योनौ । सीदन् होतवु सदाने चमूपू—पेमग्मन्नृषयः सप्त विप्राः प्र सुमेधा गातुविद् विश्वदेवः सोमः पुनानः सद एति नित्यम् । भुवद् विश्वेषु काव्येषु रन्ता ऽनु जनान् यतते पञ्च धीरः तव त्ये सोम पवमान निण्ये विश्वे देवास्त्रय एकादशासः । दश स्वधाभिरधि सानो अव्ये मृजन्ति त्वा नद्यः सप्त यद्हीः तन्न सत्यं पवमानस्यास्तु यत्र विश्वे कारवः संनसन्त । ज्योतिर्यदहे अकृणोद् लोकं प्रावन्मनुं दस्यवे करभीकम्	१ २ ३ ४ ५	८१५ ८१६

परि सन्नैव पशुमान्ति होता राजा न मत्यः समितीरियानः । सोमः पुनानः कलशा अयासीत् सीदन् मृगो न महिपो वनेषु	६	८१७
॥ ९२ ॥ ( ऋ. ९।९३।१-५ ) ( ८१८-८२२ ) नोधा गांतमः । साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारे दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः । हरिः पर्यद्रवजाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वात्री	१	
सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो वृषा दधन्वे पुरुवारो अङ्घ्रिः । मर्यो न योषामभि निष्कृतं यन्मं गच्छते कलश उम्रियाभिः	२	
उत प्र पिप्य ऊध्रधन्याया इन्दुर्धाराभिः मचते सुमेधाः । मूर्धानं गावः पर्यसा चमूष्वाभि श्रीणन्ति वसुभिर्न निकैः	३	८२०
स नो देवेभिः पवमान रदेन्दो रयिमश्विनै वावशानः । रथिरायतामुशती पुग्धि रस्मय्रगा दावने वसूनाम्	४	
न नो रयिमुप मास्व नृवन्तं पुनानो वाताप्यं विश्वश्चन्द्रम् । प्र वन्दितुरिन्दो तार्यायुः प्रातर्मक्षु धियावसुर्जगम्यान्	५	८२०
॥ ९३ ॥ ( ऋ. ९।९४।१-५ ) ( ८२३-८२७ ) कण्वो वौरः । अधि यदस्मिन् वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः । अपो वृणानः पवते कवीयन् व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म	१	
द्विता व्यूर्वन्नमृतस्य धाम स्वविदे भुवनानि प्रथन्त । धियः पिन्वानाः स्वसरे न गावः क्रतायन्तारभि पावश्च इन्दुम्	२	
परि यत् कविः काव्या भरते शरो न रथो भुवनानि विश्वा । देवेषु यशो मर्तीय भूषन् दक्षाय रायः पुरुभूपु नच्यः	३	८२५
श्रिये जातः श्रिय आ निरियाय श्रियं वर्यो जरितृभ्यो दधाति । श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ	४	
इषमूर्जेमभ्यर्षाश्चं गा मुरु ज्योतिः कृणुहि मत्सि देवान् । विश्वानि हि सुषहा तानि तुभ्यं पवमान वाधसे सोम शत्रन्	५	८२७
॥ ९४ ॥ ( ऋ. ९।९५।१-५ ) ( ८२८-८३२ ) प्रस्कण्वः काण्वः । कनिंक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन् वनस्य जठरे पुनानः । नृभिर्धतः कृणुते निर्णिजं गा अतो मतीर्जनयत स्वधाभिः	१	८२८

हरिः सृजानः पृथ्यामृतस्ये—र्यतिं वाचमरितेव नावम् ।	
देवो देवानां गुह्यानि नामा—ऽऽविष्कृणोति बृहिषि प्रवाचे	२
अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ ।	
नमस्यन्तीरुषं च यन्ति सं चा ऽऽ च विशन्त्युशतीरुशन्तम्	३ ८३०
तं मर्मज्ञानं महिषं न साना—वंशुं दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् ।	
तं वावज्ञानं मतयः सचन्ते त्रितो विभतिं वरुणं समुद्रे	४
इष्यन् वाचमुपवक्तेव हातुः पुनान इन्द्रो वि प्या मनीषाम्	
इन्द्रश्च यत् क्षयथः मौभगाय सुवीर्यस्य पतयः स्याम	५ ८३२
॥ ९५ ॥ ( ऋ. ९ । ९६ । १—२४ ) ( ८३३—८५६ ) दैवादासिः प्रतर्दन ।	
प्र मैनानीः शरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना ।	
भद्रान् कृण्वन्निन्द्रहवान्त्सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते	१
ममस्य हरिं हरयो मृजन्त्य—श्चह्यैरनिशितं नमोभिः ।	
आ तिष्ठति रथमिन्द्रस्य सर्वा विद्रो एना सुमतिं यात्यच्छ	२
स नो देव देवताते पवस्व महे सोम पसरस इन्द्रपानः ।	
कृण्वन्नपो वर्षयन् ग्रामुतेमा—मुरोग नो वरिवस्या पुनानः	३ ८३५
अजीतयेऽहतये पवस्व स्वस्तये सर्वतातये बृहते ।	
तदृशन्ति विश्व इमे सखाय—स्तदुहं वग्भि पवमान सोम	४
सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।	
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितो विष्णोः	५
ब्रह्मा देवानां पदुवीः कवीना—मृपिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम् ।	
इयेनो गृध्राणां स्वर्धितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्	६
प्रावीविषद्राच ऊर्मि न सिन्धु—र्गिरः सोमः पवमानो मनीषाः ।	
अन्तः पश्यन् वृजनेमावरा—ण्या तिष्ठति वृषभो गोषु जानन्	७
स मत्सरः पृत्सु वन्वन्नवातः महस्त्रेता अभि वाजमर्ष ।	
इन्द्रायेन्द्रो पवमानो मनी—प्यंशोरूमिमीरय गा इष्यन्	८ ८४०
परि प्रियः कलशं देववात इन्द्राय सोमो रण्यो मदाय ।	
सहस्रधारः शतवाज इन्दु—वीजी न समिः समना जिगाति	९ ८४१

स पूव्यो वसुविज्ञायमानो मृजानो अप्सु दुदुहानो अद्रौ । अभिश्स्तिपा भुवनस्य राजा विदद् गातुं ब्रह्मणे पूयमानः	१०	
त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः वन्वन्नवातः परिधीरपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवा नः	११	
यथार्पवशा मनवे वयोधा अमित्रहा वरिवोविद्धविष्मान् । एवा पवस्व द्राविणं दधान् इन्द्रे सं तिष्ठ जनयायुधानि	१२	
पवस्व सोम मधुमाँ कृतावा ऽपो वसानो अधि सानो अव्ये । अव द्रोणानि घृतवान्ति सीद मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः	१३	८४५
वृष्टिं दिवः शतधारः पवस्व महस्रसा वाजयुदुववीतौ । सं मिन्धुभिः कलशै वावशानः समुन्नियाभिः प्रतिग्न न आयुः	१४	
एष स्य सोमो मतिभिः पुनानो ऽत्यो न वाजी तरतीदरातीः । पयो न दुग्धमदितेरिषिर—मुर्विव गातुः सुयमो न वोऽह्ना	१५	
स्वायुधः सोतृभिः पूयमानो ऽभ्यर्ष गुह्यं चारु नाम । अभि वाजं सप्तिरिव श्रवस्या ऽभि वायुमभि गा देव सोम	१६	
शिशुं जज्ञानं हर्षतं मृजन्ति शुम्भन्ति वह्निं मरुतो गणेन । कविर्गीभिः काव्येना कविः सन् त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन्	१७	
ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्पाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम् । तृतीयं धाम महिषः सिषासन् त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप्	१८	८५०
चमृषच्छयेनः शकुनो विभ्रत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि विभ्रन् । अपामूर्मि सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति	१९	
मर्थो न शुभ्रस्तन्वं मृजानो ऽत्यो न सृत्वा सनये धनानाम् । वृषेव यूथा परि कोशमर्षन् कर्निक्रदच्चम्बोऽरा विवेश	२०	
पवस्वेन्दो पवमानो महोभिः कर्निक्रदत् परि वाराण्यर्ष । क्रीळञ्चम्बोऽरा विश पूयमान् इन्द्रं ते रसो मदिरो ममत्तु	२१	
प्रास्य धारा बृहतीरसुग्रन्नक्तो गोभिः कलशाँ आ विवेश । सामं कृष्वन्त्सामन्यो विपश्चित् क्रन्दन्नेत्यभि सख्युर्न जामिम्	२२	
अपघ्नन्नेषि पवमान शत्रून् प्रियां न जारो अभिगीत् इन्दुः । सीदन् वनेषु शकुनो न पत्वा सोमः पुनानः कलशेषु सत्ता	२३	८५५

आ ते रुचः पवमानस्य सोम योषेव यन्ति सुदुघाः सुधाराः ।

हरिरानीतः पुरुवारो अप्सव चिक्रदत् कलशं देवयूनाम्

२४ ८५६

॥ ९६ ॥ ( ऋ ९ । ९७ । १—५८ )

(८५७—९६४) १—३ मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः, ४—६ वासिष्ठ इन्द्रप्रमति . ७—९ वासिष्ठो वृषगणः,  
१०—१२ वासिष्ठो मन्युः, १३—१५ वासिष्ठ उपमन्युः, १६—१८ वासिष्ठो व्याघ्रपाद्, १९—२१  
वासिष्ठः शक्तिः, २२—२४ वासिष्ठः कर्णश्रुद्, २५—२७ वासिष्ठो मृळीकः, २८—३०  
वासिष्ठो वसुक्रः, ३१—४४ पराशर शाक्यः, ४५—५८ कुत्स आङ्गिरसः ।

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम् ।

सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सन्न पशुमान्ति होता १

भद्रा वस्त्रा समन्याइ वसानो महान् कविर्निवर्चनानि शंसन् ।

आ वच्यस्व चम्बोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ २

समु प्रियो मृज्यते सानो अच्ये यशस्तरो यशसां क्षैतो अस्मे ।

अभि स्वर धन्वा पूयमानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ३

प्र गायताभ्यर्चाम देवान् त्सोमं हिनोत महते धनाय ।

स्वादुः पवाते अति वारमव्यमा सीदाति कलशं देवयुर्नः ४ ८६०

इन्दुदेवानामुप सख्यमायन् त्सहस्रधारः पवते मदाय ।

नृभिः स्तवानो अनु धाम पूर्वमगन्निद्रं महते सौभगाय ५

स्तोत्रे राये हरिरर्षा पुनान इन्द्रं मदी गच्छतु ते भराय ।

देवैर्याहि सरथं राधो अच्छा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

प्र काव्यमुशनैव बुवाणो देवो देवानां जनिमा विवाक्ति ।

महित्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ७

प्र हंसासस्तृपलं मन्युमच्छामादस्तं वृषगणा अयासुः ।

आङ्गय्यं पवमानं सखायो दुर्मर्षं साकं प्र वदन्ति वाणम् ८

स रैहत उरुगायस्य जति वृथा क्रीळन्तं मिमते न गावः ।

परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा हरिर्दृष्टे नक्तमृजः ९ ८६५

इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन् मदाय ।

हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातीर्वरिवः कृण्वन् वृजनस्य राजा १०

अध धारया मध्वा पृचानस्तिरो रोमं पवते अद्रिदुग्धः ।

इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय ११ ८६७

अभि प्रियाणि पवते पुनानो देवो देवान्त्स्वेन रसेन पृञ्चन् । इन्द्रुर्धर्माण्युतथा वसानो दश क्षिपां अव्यत सानो अव्ये	१२	
वृषा शोणो अभिकनिक्रदुद् गा नदयन्नेति पृथिवीमुत घाम् । इन्द्रस्येव वयुरा शृण्व आजौ प्रचेतयन्नर्षति वाचमेमाम्	१३	
रसाय्यः पर्यसा पिन्वमान इरयन्नेपि मधुमन्तमंशुम् । पवमानः संतनिर्मेषि कृण्वनिन्द्राय सोम परिषिच्यमानः	१४	८७०
एवा पवस्व मदिरो मदायो दग्राभस्य नमयन् वधस्तः । परि वर्ण भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोम सिक्तः	१५	
जुष्टी न इन्दो सुपथा सुगा न्युरौ पवस्व वरिवांसि कृण्वन् । घनव विष्वग् दुरितानि विघ्नन्नाधि ष्णुना धन्व सानो अव्ये	१६	
वृष्टिं नो अर्ष दिव्यां जिगत्सु मिळावतीं शंगयीं जीरदानुम् । स्तुकेव वीता धन्वा विचिन्वन् वन्धूरिमां अवरौ इन्दो वायुन्	१७	
ग्रन्थि न वि ष्य ग्रथितं पुनान ऋजुं च गातुं वृजिनं च सोम । अत्यो न ऋदो हरिरा सृजानो मर्यो देव धन्व पस्त्यावान्	१८	
जुष्टो मदाय देवतात इन्दो परि ष्णुना धन्व सानो अव्ये । सहस्रधारः सुरभिरदग्धः परि स्रव वाजसातौ नृषह्ये	१९	८७५
अरुशमानो येऽरथा अयुक्ता अत्यासो न संसृजानास आजौ । एते शुक्रासो धन्वन्ति सोमा देवामस्तां उप याता पिबर्धय	२०	
एवा न इन्दो अभि देववीतिं परि स्रव नभो अर्णश्चमूषु । सोमो अस्मभ्यं काम्यं बृहन्तं रथि ददातु वीरवन्तमुग्रम्	२१	
तक्षद् यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य वा धर्मेणि क्षोरनीके । आदीमायन् वरमा वावशाना जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम्	२२	
प्र दानुदो दिव्यो दानुपिन्व ऋतमृताय पवते सुमेधाः । धर्मा भुवद् वृजन्त्यस्य राजा प्र रश्मिभिर्दशभिर्भारि भूम	२३	
पवित्रेभिः पवमानो नृचक्षा राजा देवानामुत मर्त्यानाम् । द्विता भुवद् रथिपती रथिणा मृतं भरत् सुभृतं चार्विन्दुः	२४	८८०
अर्वा इव श्रवसं सातिमच्छेन्द्रस्य वायोरभि वीतिमर्ष । स नः सहस्रा बृहतीरिषो दा भवा सोम द्रविणोवित् पुनानः	२५	८८१



देवाव्यो नः परिषिच्यमानाः	क्षयं सुवीरं धन्वन्तु सोमाः ।	
आयज्यवः सुमति विश्ववारा	होतारो न दिवियजो मन्द्रतमाः	२६
एवा देव देवताते पवस्व	महे सोम पसरसे देवपानः ।	
महश्चिद्धि प्ममिं हिताः समर्ये	कृधि सुष्ठाने रोदसी पुनानः	२७
अश्वो न क्रदो वृषभिर्युजानः	मिहो न भीमो मनसो जवयिान् ।	
अर्वाचीनैः पथिभिर्ये रजिष्ठा	आ पवस्व सौमनसं न इन्दा	२८
शतं धारा देवजाता असृग्रन्	त्सहस्रमेनाः क्वयो मृजन्ति ।	
इन्दो सनित्रं दिव आ पवस्व	पुरएतामि महतो धनस्य	२९ ८८५
दिवो न सर्गा अससृग्रमह्नां	गजा न मित्रं प्र मिनाति धीरः ।	
पितुर्न पुत्रः ऋतुभिर्यतान	आ पवस्व विशे अस्या अजीतिम्	३०
प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन्	वारान् यत् पृतो अत्येष्यव्यान् ।	
पवमान पवसे धाम गानां	जज्ञानः सूर्यमपिन्वो अकंः	३१
कर्निकदुदनु पन्थामृतस्य	शुक्रो वि भास्यमृतस्य धाम ।	
स इन्द्राय पवसे मत्सरवान्	हिन्वानो वाचं मतिभिः कवीनाम्	३२
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि सोम	पिन्वन् धाराः कर्मणा देववीतौ ।	
एन्दो विश कलशं सोमधानं	क्रन्दन्निहि सूर्यस्योप रश्मिम्	३३
तिस्रो वाच ईरयति प्र वहि	ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् ।	
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः	सोमं यन्ति मतयो वावशानाः	३४ ८९०
सोमं गावो धेनवो वावशानाः	सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः ।	
सोमः सुतः पूयते अज्यमानः	सोमं अर्कास्त्रिष्टुभः सं नवन्ते	३५
एवा नः सोम परिषिच्यमान	आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति ।	
इन्द्रमा विश बृहता रवेण	वर्धया वाचं जनया पुरंधिम्	३६
आ जागृविर्विप्रं ऋता मतीनां	सोमः पुनानो असदच्चमूषु ।	
सपन्ति यं मिथुनासो निकामा	अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः	३७
स पुनान उप सरे न धातो	भे अप्रा रोदसी वि ष आवः ।	
प्रिया चिद् यस्य प्रियसास उती	स तू धनं कारिणे न प्र यंसत्	३८
स वर्धिता वर्धनः पूयमानः	सोमो मीद्वं अभि नो ज्योतिषावीत् ।	
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः	स्वर्विदो अभि गा अद्रिमुष्णन्	३९ ८३५

अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्म—ञ्जनयन् प्रजा भुवनस्य राजा ।	
वृषां पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत् सोमो वावृधे सुवान इन्दुः	४०
मुहत् तत् सोमो महिषश्चकारा—ऽपां यद् गर्भोऽवृणीत देवान् ।	
अदघ्नादिन्द्रे पवमान ओजो ऽजनयत् सूर्ये ज्योतिरिन्दुः	४१
मत्सि वायुमिष्टये राधसे च मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः ।	
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम	४२
ऋजुः पवस्व वृजिनस्य हन्ता ऽपामीवां बाधमानो मृधश्च ।	
अभिश्चीणन् पयः पर्यसाभि गोना—मिन्द्रस्य त्वं तव वयं सखायः	४३
मध्वः स्रद्धं पवस्व वस्व उत्सं वीरं च न आ पवस्वा भगं च ।	
स्वदुस्वेन्द्राय पवमान इन्दो रयिं च न आ पवस्वा समुद्रात्	४४ ९००
सोमः सुतो धारयात्यो न हित्वा मिन्धुर्न निम्नमभि वाज्यक्षाः ।	
आ योनिं वन्यमसदत् पुनानः समिन्दुर्गोभिंसरत् समद्भिः	४५
एष स्य तै पवत इन्द्र सोम—श्चमूषु धीरं उशते तवस्वान् ।	
स्वर्चक्षा रथिरः सत्यशुष्मः कामो न यो देवयतामसर्जि	४६
एष प्रत्नेन वयसा पुनान—स्तिरो वर्षासि दुहितुर्दधानः ।	
वसानः शर्म त्रिवरूथमप्सु होतेव याति समनेषु रेभन्	४७
नृ नस्त्वं रथिरो देव सोम परिं स्रव चम्बोः पूयमानः ।	
अप्सु स्वादिष्टो मधुमां ऋतावा देवो न यः संविता सत्यमन्मा	४८
अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानोऽभि मित्रावरुणा पूयमानः ।	
अभी नरं धीजवनं रथेष्ठा—मभीन्द्रं वृषणं वज्रवाहुम्	४९ ९०५
अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षा—ऽभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः ।	
अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्या ऽभ्यश्चान् रथिनो देव सोम	५०
अभी नो अर्ष दिव्या वस्त्र—न्याभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः	
अभि येन द्रविणमश्रवाप्ता—ऽभ्यार्वियं जमदग्निवन्नः	५१
अया पवा पवस्वैना वस्त्रनि मांश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व ।	
ब्रह्माश्चिदत्र वातो न जूतः पुरुमेधश्चित् तर्कवे नरं दात्	५२
उत्त न एना पवया पवस्वा—ऽधि श्रुते श्रवाद्यस्य तीर्थे ।	
षष्टिं सहस्रा नैगुतो वस्त्रनि वृक्षं न पृक्तं धूनवद् रणाय	५३ ९०९

महामे अस्य वृषनामं शूषे माँश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे । अस्वापयन्निगुतः स्नेहयन्त्रा—ऽपामित्राँ अपाचितो अचेतः	५४	९१०
सं त्री पवित्रा विततान्येष्य—न्वेकं धावासि पूयमानः । असि भगो असि दात्रस्य दाता ऽसि मघवा मघवञ्जय इन्दो	५५	
एष विश्ववित् पवते मनीषी सोमो विश्वस्य भुवनस्य राजा । द्रुप्साँ इरयन् विदथेष्विन्दु—वि वारमव्यं समयाति याति	५६	
इन्दुँ रिहन्ति महिषा अदब्धाः पदे रेभन्ति क्वयो न गृध्राः । हिन्वान्ति धीरा दशभिः क्षिपाभिः समञ्जते रूपमपां रसेन	५७	
त्वया वयं पर्वमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम् शश्वत् । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	५८	९१४

॥ ९७ ॥ ( ऋ ९ । ९८ । १-१२ )

( ९१५-९२६ ) अम्बरीषो वार्षागिरः, ऋजिश्वा भारद्वाजश्च । अनुष्टुप्, ११ बृहती ।

अभि नो वाजसातमं रथिमर्षं पुरुस्पृहम् । इन्दोँ सहस्रभर्णमं तुविद्युमं विम्वासहम् १	९१५
परि ष्य सुवानो अव्ययं रथे न वर्माव्यत । इन्दुराभि द्रुणाँ हितो हियानो धाराभिरक्षाः २	
परि ष्य सुवानो अक्षा इन्दुरव्ये मदच्युतः । धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा नैति गव्ययुः ३	
स हि त्वं देव शश्वते वमु मतीय दाशुषे । इन्दोँ सहस्रिणं रथिं शतात्मानं विवाससि ४	
वयं ते अम्य वृत्रहन् वमो वस्वः पुरुस्पृहः । नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुम्रस्याग्निगो ५	
द्विर्यं पञ्च स्वयंशसं स्वसारो अद्रिसंहतम् । प्रियमिन्द्रस्य काम्यं प्रस्नापर्यन्त्युमिर्णम् ६	९२०
परि त्यं हर्यतं हरिं वभ्रुं पुनन्ति वारेण । यो देवान् विश्वाँ इत् परि मदेन सह गच्छति ७	
अस्य वो ह्यवमा पान्तो दक्षसाधनम् । यः सूरिषु श्रवो बृहद् दुधे स्वर्णं हर्यतः ८	
स वाँ यज्ञेषु मानवी इन्दुर्जनिष्ठ रोदसी । देवो देवी गिरिष्ठा अस्त्रेधन् तं तुविष्वाणि ९	
इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे । नरे च दक्षिणावते देवाय सदनासदे १०	
ते प्रत्नामो व्युष्टिषु सोमाः पवित्रे अक्षरन् । अपप्रोथन्तः सनुतर्हुराश्वितः प्रातस्ताँ अप्रचेतसः ११	९२५
तं संखायः पुरोरुच्यं यूयं वयं च सूरयः । अद्याम वाजगन्ध्यं सनेम वाजपस्त्यम् १२	९२६

॥ ९८ ॥ ( ऋ ९ । ९९ । १-८ ) ( ९२७-९३४ ) रेभसून् काश्यपौ । अनुष्टुप्, १ बृहती ।

आ हर्यताय धृष्णवे धनुस्तन्वन्ति पौंस्यम् । शुक्राँ वयन्त्यसुराय निणिजं विषामग्रे महीयुवः १	
अध क्षपा परिष्कृतो वाजाँ अभि प्र गाहते । यदीं विवस्वतो धियो हरिँ हिन्वान्ति यातवे २	
तमस्य मर्जयामसि मदो य इन्द्रपातमः । यं गाव आसभिर्दुधुः पुरा नूनं च सूरयः ३	
तं गार्थया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत । उतो कृपन्त धीतयो देवानाँ नाम् बिभ्रतीः ४	९३०

तमुक्षमाणमव्यये वारं पुनन्ति धर्णसिम् । दूतं न पूर्वचित्तय आ शासते मनीषिणः ५  
 स पुनानो मदिन्तमः सोमश्चमूषु सीदति । पशौ न रेत आदधत् पतिर्वचस्यते धियः ६  
 स मृज्यते सुकर्मभिर्देवो देवेभ्यः सुतः । विदे यदासु संददिर्महीरपो वि गाहते ७  
 सुत इन्दो पवित्र आ नृभिर्यतो वि नीयमे । इन्द्राय मत्सरिन्तमश्चमूषा नि पीदसि ८ १३४

॥ ९९ ॥ ( ऋ. ९ । १०० । १-९ ) ( ९३५-९४३ ) रेभसून् काश्यपौ । अनुष्टुप् ।

अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः १ ९३५  
 पुनान इन्द्रवा भरं सोमं द्विबर्हसं रयिम् । त्वं वसूनि पुष्यसि विश्वानि दाशुषां गृहे २  
 त्वं धियं मनोयुजं सृजा वृष्टिं न तन्यतुः । त्वं वसूनि पार्थिवा दिव्या च सोम पुष्यमि ३  
 परिं ते जिग्युषो यथा धारा सुतस्य धावति । रहंमाणा व्यव्ययं वारं वाजीव सानमिः ४  
 क्रत्वे दक्षाय नः कवे पर्वस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतो मित्राय वरुणाय च ५  
 पर्वस्व वाजसातमः पवित्रे धारया सुतः । इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तमः ६ ९४०  
 त्वां रिहन्ति मातरो हरिं पवित्रं अद्रुहः । वत्सं जातं न धेनवः पर्वमान विधर्मणि ७  
 पर्वमान महि श्रवं श्वित्रेभिर्यासि रश्मिभिः । शर्धन् तमांसि जिघ्रसे विश्वानि दाशुषां गृहे ८  
 त्वं द्यां च महिषत पृथिवीं चार्तिं जभ्रिये । प्रतिं द्रापिममुञ्चथाः पर्वमान महित्वना ९ ९४३

॥ १०० ॥ ( ऋ. ९ । १०१ । १-१६ )

( ९४४-९५९ ) १-३ अन्धीगुः इयावाश्वि, ४-६ ययातिनीहुषः, ७-९ नहुषो मानवः, १०-१२

मनुः सांवरणः, १३-१६ वेद्वामिश्रो वाच्यो वा प्रजापति । अनुष्टुप्, ९-३ गायत्री ।

पुरोजिती वो अन्धसः सुतार्य मादयित्वे । अप श्वानं शथिष्टन सखायो दीर्घजिह्वयम् १  
 यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः । इन्दुरश्रो न कृत्व्यः २ ९४५  
 तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया । यजं हिन्वन्त्याद्रिभिः ३  
 सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः । पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः ४  
 इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन् । वाचस्पतिर्मग्वस्यते विश्वस्येशान् ओजसा ५  
 सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीड्स्वयः । सोमः पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ६  
 अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति । पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यक्यद् रोदसी उभे ७ ९५०  
 समु प्रिया अनूषत गात्रो मदाय घृष्वयः । सोमांसः कृण्वते पथः पर्वमानास इन्दवः ८  
 य ओजिष्ठस्तमा भरं पर्वमान श्रवाय्यम् । यः पञ्च चर्षणीरभि रयिं येन वनामहै ९  
 सोमाः पवन्त इन्दवो ऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः । मित्राः सुत्राना अरेपसः स्वाध्यः स्वविदः १०  
 सुत्राणासो व्यद्रिभिश्चिताना गोरधिं त्वचि । इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन् वसुविदः ११ ९५४

एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः । सूर्यासो न दर्शतासो जिगत्तवो ध्रुवा घृते १२ ९५५  
 प्र सुन्वानस्यान्धमो मतो न वृत तद् वचः । अप श्वानमराधसं हता मुखं न भृगवः १३  
 आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः । सरञ्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम् १४  
 स वीरो दक्षसाधनो वि यस्तस्तम्भ रोदसी । हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम् १५  
 अव्यो वारैभिः पवते सोमो गव्ये अधि त्वचि । कर्निकदुद वृषा हरि—ग्निद्रस्याभ्येति निष्कृतम् ९५९

॥ १०१ ॥ ( ऋ ९ । १०२ । १—८ ) ( ९६०—९६७ ) त्रित आप्त्यः। उष्णिक् ।

क्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् । विश्वा परि प्रिया भुवदधं द्विता १ ९६०  
 उप त्रितस्य पाष्योर्—रभक्त यद् गुहा पदम् । यज्ञस्य सप्त धामभिरधं प्रियम् २  
 त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्टेरेया रयिम् । मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः ३  
 जज्ञानं सप्त मातरां वेधामशासत श्रिये । अयं ध्रुवो रयीणां चिकेत यत् ४  
 अस्य व्रते सजोषसो विश्वं देवासो अद्रुहः । स्पार्हा भवन्ति रन्तयो जुषन्त यत् ५  
 यमी गर्भमृतावृधो ह्ये चारुमजीजनन् । कविं महिष्ठमध्वरे पुरुस्पृहम् ६ ९६५  
 समीचीने अभि त्मना यही क्रतस्य मातरां । तन्वाना यज्ञमानुषम् यदञ्जते ७  
 कत्वां शुक्रैर्भिरक्षभि—र्ऋणोरपं व्रजं दिवः । हिन्वन्नृतस्य दीधितिं प्राध्वरे ८ ९६७

॥ १०२ ॥ ( ऋ ९ । १०३ । १—६ ) ( ९६८—९७३ ) द्वित आप्त्यः ।

प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उद्यतम् । भूतिं न भरा मतिभिर्जुजौषते १  
 परि वाराण्यव्यया गोभिरञ्जानो अर्षति । त्री षधस्थां पुनानः कृणुते हरिः २  
 परि कोशं मधुश्रुतं—मव्यये वारं अर्षति । अभि वाणीर्ऋषीणां सप्त नृषत ३ ९७०  
 परि णेता मतीनां विश्वदेवो अदाभ्यः । सोमः पुनानश्चर्वाविशद्द्वरिः ४  
 परि दैवीरनु स्वधा इन्द्रेण याहि सरथम् । पुनानो वाघद् वाघद्विरमर्त्यः ५  
 परि समिर्न वाजयु—देवो देवेभ्यः सुतः । व्यानाशिः पवमानो वि धावति ६ ९७३

॥ १०३ ॥ ( ऋ ९ । १०४ । १—६ ) ( ९७४—९८५ ) पर्वतनारदौ काण्वौ, काश्यपौ शिखण्डिन्यावत्सरसौ वा ।

सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत । शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये १  
 समी वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम् । देवाव्यं मदमभि द्विशवसम् २ ९७५  
 पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्धीय वीतये । यथा मित्राय वरुणाय शंतमः ३  
 अस्मभ्यं त्वा वसुविदं—मभि वाणीरनूषत । गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि ४  
 स नो मदानां पत इन्दो देवत्सरा असि । सखेव सख्ये गातुवित्तमो भव ५  
 सनेमि कृष्यस्मदा रक्षसं कं चिद्व्रिणम् । अपादेवं द्वयुमंहो युयोधि नः ६ ९७९

॥ १०४ ॥ ( ऋ ९ । १०५ । १-६ )

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत । शिशुं न यज्ञैः स्वदयन्त गूर्तिभिः १ १८०  
 सं वत्स इव मातृभि—रिन्दुर्हिन्वानो अज्जते । देवावीर्मदो मतिभिः परिकृतः २  
 अयं दक्षाय साधनो ऽयं शर्धाय वीतये । अयं देवभ्यो मधुमत्तमः सुतः ३  
 गोमन्त्र इन्द्रो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धन्व । शुचिं ते वर्णमधि गोषु दीधरम् ४  
 स नो हरीणां पत इन्द्रो देवप्सरस्तमः । सखैव सख्ये नयो रुचे भव ५  
 सनेमि त्वमस्मदाँ अदेवं कं चिदत्रिणाम् । साह्यो इन्द्रो परि बाधो अपं द्रयुम् ६ १८५

॥१०५॥ ( ऋ ९ । १०६ । १-१४ ) ( ९८६-९९९ ) १-३, १०-१४ अग्निश्चाक्षुषः, ४-६ चक्षुमानव ७-९ मनुरापस्व ।

इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः । श्रुष्टी जातास इन्द्रवः स्वविदः १  
 अयं भराय सानसि—रिन्द्राय पवते सुतः । सोमो जेत्रस्य चेतति यथा विदे २  
 अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं गृष्णीत सानसिम् । वज्रं च वृषणं भरत् समप्सुजित् ३  
 प्र धन्वा सोम जागृवि—रिन्द्रायेन्द्रो परि स्रव । द्युमन्तं शुष्ममा भरा स्वविदम् ४  
 इन्द्राय वृषणं मदं पवस्व विश्वदर्शतः । सहस्रयामा पथिकृद् विचक्षणः ५ १९०  
 अस्मभ्यं गातुवित्तमो देवेभ्यो मधुमत्तमः । सहस्रं याहि पथिभिः कर्निकदत् ६  
 पवस्व देववीतय इन्द्रो धाराभिरोजसा । आ कलशं मधुमान्तसोम नः सदः ७  
 तव द्रप्सा उदग्रुत् इन्द्रं मदाय वावृधुः । त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ८  
 आ नः सुतास इन्द्रवः पुनाना धावता रयिम् । वृष्टिद्यात्रो रीत्यापः स्वविदः ९  
 सोमः पुनान ऊर्मिणा ऽव्यो वारं वि धावति । अग्ने वाचः पवमानः कर्निकदत् १० १९५  
 धीभिर्हिन्वन्ति वाजिनं वने क्रीळन्तमत्यविम् । अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन् ११  
 असाजि कलशाँ अभि मीळहे सप्तिर्न वाजयुः । पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत् १२  
 पवते हर्यतो हरि—रति ह्वरांसि रंक्षा । अभ्यर्षन्स्तोतृभ्यो वीरवद् यशः १३  
 अया पवस्व देवयु—र्मधोर्धारां असृक्षत । रेभन् पवित्रं पयंषि विश्वतः १४ १९९

॥ १०६ ॥ ( ऋ ९ । १०७ । १-२६ )

( १०००—१०२५ ) सप्तर्षयः ( १ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, २ कश्यपो मारीचः, ३ गोतमो राङ्गण, ४ भौमोऽग्नि, ५ विश्वामित्रो गाथिनः, ६ जमदग्निर्भागवः, ७ मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः ) । प्रगाथः = ( १, ४, ६, ८—१०, १२, १४, १७ बृहती, २, ५, ७, ११, १३, १५, १८ सतोबृहती ); ३, १६ छिपदा विराट्, १९—२६ प्रगाथः = विषमा बृहती, समा सतोबृहती ) ।

परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः ।

द्रुधन्वाँ यो नयो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः

१ १०००

नूनं पुनानोऽविभिः परिं स्रवा—ऽदब्धः सुरभिर्तरः ।	
सुते चित् त्वाप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिरुत्तरम्	२
परिं सुवानश्चक्षसे देवमादनः ऋतुरिन्दुर्विचक्षणः	३
पुनानः सोम धारया ऽपो वर्मानो अर्षसि ।	
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदु—स्युत्सो देव हिरण्ययः	४
दुहान ऊर्ध्वदिव्यं मधु प्रियं प्रतं सधस्थमासदत् ।	
आपृच्छथं धरुणं वाज्यर्षति नृभिर्धृतो विचक्षणः	५
पुनानः सोम जागृवि—रव्यो वारे परिं प्रियः ।	
त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तमो मध्वा यज्ञं मिमिक्ष नः	६ १००५
सोमो मीढ्वान् पवते गातुविचम ऋषिविप्रो विचक्षणः ।	
त्वं कविरभवो देववीतम आ सूर्यं रोहयो दिवि	७
सोम उ पुत्राणः सोतुभि—रधि णुभिरवीनाम् ।	
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया	८
अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः ।	
समुद्रं न संवरणान्यगमन् मन्दी मदाय तोशते	९
आ सोम सुवानो अद्रिभि—स्तिरो वाराण्यव्यया ।	
जनो न पुरि चम्बोर्विशद्गरिः सदो वनेषु दधिषे	१०
स मामृजे तिरो अण्वानि मेष्यो मीळहे समिर्न वाज्युः ।	
अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः सोमो विप्रैभिर्ऋक्भिः	११ १०१०
प्र सोम देववीतगे सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा ।	
अंशोः पर्यसा मदिरो न जागृवि—रच्छा कोशं मधुश्रुतम्	१२
आ हर्यतो अर्जने अत्के अव्यत प्रियः सनुर्न मर्ज्यः ।	
तमीं हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गभस्तयोः	१३
अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् ।	
समुद्रस्याधि विष्टपि मनीषिणो मत्सरासः स्वविदः	१४
तरत् समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत् ।	
अर्षन्मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान ऋतं बृहत्	१५
नृभिर्येमानो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः समुद्रियः	१६ १०१५

इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वन्तं सुतः ।	
सहस्रधारो अत्यव्यमर्षति तमी मृजन्त्यायवः	१७
पुनानश्चमू जनयन् मतिं कविः सोमो देवेषु रण्यति ।	
अपो वसानः परि गोभिरुत्तरः सीदन् वनेष्वच्यत	१८
तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिव ।	
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधीरति ताँ इहि	१९
उताहं नक्तमुत सोम ते दिवा सख्याय बभ्र ऊर्धनि ।	
घृणा तपन्तमति सूर्य परः शंकुना इव पत्तिम	२०
मृज्यमानः सुहस्त्य समुद्रे वाचमिन्वासि ।	
रथि पिशङ्ग बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि	२१ १०२०
मृजानो वारो पवमानो अव्यये वृषाव चक्रदो वनं ।	
देवानां सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो अर्षसि	२२
पवस्व वाजसातये ऽभि विश्वानि काव्या ।	
त्वं समद्रं प्रथमो वि धारयो देवेभ्यः सोम मत्सरः	२३
स तू पवस्व परि पार्थिवं रजां दिव्या च सोम धर्मभिः ।	
त्वां विप्रांसो मतिभिर्विचक्षण शुभ्रं हिन्वन्ति धीतिभिः	२४
पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया ।	
मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हया मेधामभि प्रयांसि च	२५
अपो वसानः परि कोशमर्षतीन्दुर्हियानः सोतर्भिः ।	
जनयञ्ज्योतिर्मन्दना अवीवशद् गाः कृण्वानो न निर्णिजम्	२६ १०२५

॥ १०७ ॥ ( ऋ. ९ । १०८ । १-१६ )

(१०२६-१०४१) १-२ गौरिवीति शाक्यः, ३, १४-१६ शक्तिर्वासिष्ठ, ४-५ ऊरुराङ्गिरस, ६-७

ऋजिष्वा भारद्वाजः, ८-९ ऊर्ध्वसन्ना आङ्गिरस, १०-११ कृतयशा आङ्गिरसः, १२-१३

ऋणचयो राजर्षिः । काकुभ. प्रगाथः = ( विपमा ककुप्, समा सतोवृहती ),

१३ यवमध्या गायत्री ।

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः । महि द्युक्षतमो मदः	१
यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायते ऽस्य पीता स्वर्दिदः ।	
स सुप्रकेतो अभ्यर्षपीदिषो ऽच्छा वाजं नैतशः	२
त्वं स्युङ्ग दैव्या पवमान जनिमानि द्युमत्तमः । अमृतत्वार्य घोषयः	३ १०२८



येना नवग्वो दुध्यङ्घ्रपोर्णते	येन विप्रास आपिरं ।	
देवानां सुप्ते अमृतस्य चारुणो	येन श्रवांस्थानशुः	४
एष स्य धारया सुतो ऽव्यो वारोभिः पवते मदिन्तमः ।	क्रीळङ्गुर्मिरपामिव	५ १०३०
य उस्त्रिया अप्या अन्तरश्मनो	निर्गा अकृन्तदोर्जसा ।	
अभि व्रजं तलिषे गव्यमश्वयं	वर्माव धृष्णवा रुज	६
आ सोता परि पिञ्चता—ऽश्वं न स्तोममसुरं रजस्तुरम् ।	वनकृक्षयुद्रुतम्	७
सहस्रधारं वृषभं पयोवृधं	प्रियं देवाय जन्मने ।	
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे	राजा देव ऋतं बृहत्	८
अभि द्युम्नं बृहद् यश इषस्पते दिदीहि देव देव्युः ।	वि कोशं मध्यमं युव	९
आ वच्यस्व सुदक्ष चग्रवाः सुतो	विशां वह्निर्न विस्पतिः ।	
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपां	जिन्वा गविष्टये धियः	१० १०३५
एतमु त्यं मदुच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवो दुहुः ।	विश्वा वसूनि विश्रतम्	११
वृषा वि जज्ञे जनयन्नमर्त्यः	प्रतपञ्ज्योतिषा तमः ।	
स सुष्टुतः कविभिर्निर्णिजं दधे	त्रिधात्वस्य दंससा	१२
स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता	य इळानाम् । सोमो यः सुक्षितीनाम्	१३
यस्य न इन्द्रः पिवाद् यस्य मरुता	यस्य वार्यमणा भगः ।	
आ येन मित्रावरुणा करामह	एन्द्रमवसे महे	१४
इन्द्राय सोम पातवे	नृभिर्यतः स्वायुधो मदिन्तमः ।	१५ १०४०
इन्द्रस्य हार्दिं सोमधानमा विश	समुद्रमिव सिन्धवः ।	
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे	दिवो विष्टम्भ उत्तमः	१६ १०४१
॥ १०८ ॥ (क्र. ९ । १०९ । १—२२) (१०४२—१०६३) अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वरय । द्विपदा विराट् ।		
परि प्र धन्वेन्द्राय सोम	स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय	१
इन्द्रस्ते सोम सुतस्य पेयाः	ऋत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः	॥१॥ २
एवामृताय महे क्षयाय	स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः	३
पवस्व सोम महान्तसमुद्रः	पिता देवानां विश्वाभि धाम	॥२॥ ४ १०४५
शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम	दिवे पृथिव्यै शं च प्रजायै	५
दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः	सत्ये विधर्मन् वाजी पवस्व	॥३॥ ६
पवस्व सोम द्युम्नी सुधारो	महामवीनामनु पूर्यः	७ १०४८

नृभिर्येमानो जज्ञानः पूतः	क्षरद् विश्वानि मन्द्रः स्वर्वित्	॥४॥ ८	
इन्दुः पुनानः प्रजासुराणः	करद् विश्वानि द्रविणानि नः	९	१०५०
पर्वस्व सोम क्रत्वे दक्षाया	ऽश्वो न निकतो वाजी धनाय	॥५॥ १०	
तं ते सोतारो रमं मदाय	पुनन्ति सोमं महे द्युम्नाय	११	
शिशुं जज्ञानं हरिं मृजन्ति	पवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम्	॥६॥ १२	
इन्दुः पविष्ट चारुमदाया	ऽपामुपस्थे कविर्भगाय	१३	
विभति चारिन्द्रस्य नाम	येन विश्वानि वृत्रा जघानं	॥७॥ १४	१०५५
पिबन्त्यस्य विश्वे देवासो	गोभिः श्रितस्य नृभिः सुतस्य	१५	
प्र सुवानो अक्षाः सहस्रधार	स्तिरः पवित्रं वि वारमव्यम्	॥८॥ १६	
स वाज्यक्षाः सहस्रेता	अद्भिर्मृजानां गोभिः श्रीणानः	१७	
प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा	नृभिर्येमानो अद्रिभिः सुतः	॥९॥ १८	
असजिं वाजी तिरः पवित्र	मिन्द्राय सोमः सहस्रधारः	१९	१०६०
अञ्जन्त्येनं मध्वो रसेने	न्द्राय वृष्ण इन्दुं मदाय	॥१०॥ २०	
देवेभ्यस्त्वा वृथा पाजसे	ऽपो वमानं हरिं मृजन्ति	२१	
इन्दुरिन्द्राय तोशते नि तोशते	श्रीणन्नुग्रो रिणन्नपः	॥११॥ २२	१०६३

॥ १०९ ॥ ( ऋ ९ । ११० । १-१२ ।

( १०६४ - १०७५ ) ऽयरुणस्त्रैवृष्णः, त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः॥ १-३ पिपीलिकमध्या अनुष्टुप्.

४-९ ऊर्ध्वबृहती, १०-१२ विराट् ।

पर्यु षु प्र धन्त्र वाजसातये	परिं वृत्राणि सक्षणिः ।		
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईयसे		१	
अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि	महे समर्यराज्ये ।		
वाजां अभि पवमान प्र गाहसे		२	१०६५
अजीजनो हि पवमान सूर्ये	विधारं शकर्मना पयः ।		
गोजीरया रंहमाणः पुरंध्या		३	
अजीजनो अमृत मर्त्येष्वं	ऋतस्य धर्मममृतस्य चारुणः ।		
सदासरो वाजमच्छा सनिष्यदत्		४	
अभ्यभि हि श्रवसा ततर्दिथो	त्सं न कं चिज्जनपानमक्षितम् ।		
शर्याभिर्न भरमाणो गभस्तयोः		५	१०६८

आर्दीं के चित् पश्यमानासु आप्यं वसुरुचो दिव्या अभ्यनूषत ।	
वारं न देवः संविता व्यूर्णते	६
त्वे सोम प्रमा वृक्तबर्हिषो महे वाजाय श्रवसे धियं दधुः ।	
स त्वं नो वीर वीर्याय चोदय	७ १०७०
दिवः पीयूषं पूर्य्य यदुक्थ्यं महो गाहाद् दिव आ निरधुक्षत ।	
इन्द्रमभि जायमानं समस्वरन्	८
अथ यदिमे पवमानु रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मज्मना ।	
यूथे न निःष्ठा वृषभो वि तिष्ठसे	९
सोमः पुनानो अव्यये वारे शिशुर्न क्रीळन् पवमानो अक्षाः ।	
सहस्रधारः शतवाज् इन्दुः	१०
एष पुनानो मधुमां क्रतावेन्द्रायेन्दुः पवते स्वादुरुर्मिः ।	
वाजसनिर्वरिवोविद् वयोधाः	११
स पवस्व सहमानः पृतन्यून त्सेधन् रक्षांस्यप दुर्गहाणि ।	
स्वायुधः सासह्वान्तसोम शत्रून्	१२ १०७५

॥ ११० ॥ ( ऋ ९ । १११ । १—३ ) ( १०७६—१०७८ अनानतः पारुच्छेपिः । अत्यष्टिः ।

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति स्वयुग्वभिः सरो न स्वयुग्वभिः ।	
धारां सुतस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः ।	
विश्वा यद् रूपा परिंयात्यृक्भिः मत्तास्येभिर्ऋक्भिः	१
त्वं त्यत् पणीनां विदो वसु संमातृभिर्मर्जयासि स्व आ दमं क्रतस्य धीतिभिर्दमे ।	
परावतो न साम तद् यत्रा रणन्ति धीतर्यः ।	
त्रिधातुभिररुषीभिर्वयो दधे रोचमानो वयो दधे	२
पूर्वामनु प्रदिशं याति चेकितत् सं रश्मिभिर्भयतते दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथः ।	
अगमन्नूक्तानि पौंस्येन्द्रं जैत्राय हर्षयन् ।	
वज्रश्च यद् भवथो अनपच्युता समत्स्वनपच्युता	३ १०७८

॥ १११ ॥ ( ऋ ९ । ११२ । १—४ ) ( १०७९—१०८२ ) शिशुराङ्गिरसः । पङ्क्तिः ।

नानानं वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम् ।	
तक्षा रिष्टं रुतं भिषग् ब्रह्मा सुन्वन्तमिच्छतीन्द्रायेन्द्रो परिं स्रव	१ १०७९

जरतीभिरोषधीभिः पर्णेभिः शुकुनानाम् ।	
कार्मारो अश्माभिर्घुभिर्हिरण्यवन्तमिच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव	२ १०८०
कारुरहं ततो भिषगुपलप्राक्षिणीं नना ।	
नानाधियो वसुयवो ऽनु गा इव तस्थिमेन्द्रायेन्दो परि स्रव	३
अश्वो वोळ्हा सुखं रथं हसनामुपमन्त्रिणः ।	
शेषो रोमण्वन्तो भेदौ वारिन्मण्डूक इच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव	४ १०८१
॥ ११२ ॥ ( ऋ ९ । ११३ । १—११ ) ( १०८३-१०९७ ) कश्यपो मारीचः ।	
शूर्यणावति सोममिन्द्रः पिबतु वृत्रहा ।	
बलं दधान आत्मनि करिष्यन् वीर्यं महदिन्द्रायेन्दो परि स्रव	१
आ पवस्व दिशां पत आर्जीकात् सोम मीद्वः ।	
ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा सुत इन्द्रायेन्दो परि स्रव	२
पर्जन्यवृद्धं महिषं तं सूर्यस्य दुहिताभरत् ।	
तं गन्धर्वाः प्रत्यगृभ्णन् तं सोमे रसमादधु रिन्द्रायेन्दो परि स्रव	३ १०८५
ऋतं वदन्नतद्युम्न सत्यं वदन्तसत्यकर्मन् ।	
श्रद्धां वदन्तसोम राजन् धात्रा सोम परिष्कृत इन्द्रायेन्दो परि स्रव	४
सत्यमुग्रस्य बृहतः सं स्रवन्ति संस्रवाः ।	
सं यन्ति रसिनो रसाः पुनानो ब्रह्मणा हर इन्द्रायेन्दो परि स्रव	५
यत्र ब्रह्मा पवमान छन्दस्यांश्च वाचं वदन् ।	
ग्रावणा सोमै महीयते सोमै नानन्दं जनयन्निन्द्रायेन्दो परि स्रव	६
यत्र ज्योतिरजसं यस्मिन् लोके स्वर्हितम् ।	
तस्मिन् मां धेहि पवमाना ऽमृतं लोके अक्षित इन्द्रायेन्दो परि स्रव	७
यत्र राजा वैवस्वतो यत्रावरोधनं दिवः ।	
यत्रामूर्यह्वतीरापस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव	८ १०९०
यत्रानुकामं चरणं त्रिनाके त्रिदिवे दिवः ।	
लोका यत्र ज्योतिष्मन्तस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव	९
यत्र कामा निकामाश्च यत्र ब्रह्मस्य विष्टपम् ।	
स्वधा च यत्र तृप्तिश्च तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव	१०
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ।	
कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव	११ १०९३

॥ ११३ ॥ ( ऋ. ९ । ११४ । १-४ )

य इन्द्रोः पवमानस्या—ऽनु धामान्यक्रमीत् ।

तमाहुः सुप्रजा इति यस्ते सोमार्विधन्मन इन्द्रायेन्द्रो परि स्रव १

ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमैः कश्यपोद्धयन् गिरः ।

सोमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधां पति—रिन्द्रायेन्द्रो परि स्रव २ १०९५

सप्त दिशो नानासूर्याः सप्त होतार ऋत्विजः ।

देवा आदित्या ये सप्त तेभिः सोमाभि रक्ष न इन्द्रायेन्द्रो परि स्रव ३

यत् ते राजञ्छृतं हवि—स्तेन सोमाभि रक्ष नः ।

अरातीवा मा नस्तारी—न्मो च नः किं चनामम—दिन्द्रायेन्द्रो परि स्रव ४ १०९७

॥ ११४ ॥ ( ऋ. १ । ४३ । ७-९ )

( १०९८—११०० ) कण्वो घांगः । गायत्री, ९ अनुष्टुप् ।

अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम् । महि श्रवस्तुविनृम्णम् ७

मा नः सोमपरिवाधो मारातयो जुहुरन्त । आ न इन्द्रो वाजै भज ८

यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन् धामन्नृतस्य ।

मूर्धा नाभा सोम वेन आभूषन्तीः सोम वेदः ९ ११००

॥ ११५ ॥ ( ऋ. १ । ९१ । ६-२३ )

( ११०१—११२३ ) गोतमो राहगणः । त्रिष्टुप्; ५—१६ गायत्री; १७ उष्णिक ।

त्वं सोम प्र चिकितो मनीषा त्वं रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम् ।

तव प्रणीती पितरो न इन्द्रो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः १

त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भु—स्त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः ।

त्वं वृषा वृषत्वेर्भर्महित्वा द्युम्नेभिर्द्युमन्यभवो नृचक्षाः २

राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद् गभीरं तव सोम धाम ।

शुचिष्मसि प्रियो न मित्रो दक्षार्या अर्यमेवासि सोम ३

या ते धामानि दिवि या पृथिव्यां या पर्वतेष्वोषधीष्वामु ।

तेभिर्ना विश्वैः सुमना अहेळन् राजन्त्सोम प्रति हव्या गृभाय ४

त्वं सोमासि सत्पति—स्त्वं राजोत वृत्रहा । त्वं भद्रो असि क्रतुः ५ ११०५

त्वं च सोम नो वशा जीवातुं न मरामहे । प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः ६ ११०६

त्वं सोमं महे भगं	त्वं यूनां ऋतायते	। दक्षं दधासि जीवसे	७
त्वं नः सोम विश्वतो	रक्षां राजन्नघायतः	। न रिष्येत् त्वावंतः सखा	८
सोम यास्ते मयोभ्रुव	उतयः सन्ति द्वाशुषे	। ताभिर्नोऽविता भव	९
इमं यज्ञमिदं वचो	जुजुषाण उपागहि	। सोम त्वं नो वृधे भव	१० १११०
सोमं गीभिष्ट्रा वयं	वर्धयामो वचोविदः	। सुमृळीको न आ विश	११
गयस्फानो अमीवहा	वसुवित् पुष्टिवर्धनः	। सुमित्रः सोम नो भव	१२
सोमं रारन्धि नो हृदि	गात्रो न यवसेष्व	। मर्य इव स्व ओक्ये	१३
यः सोम सख्ये तव	रारणद् देव मर्त्यः	। तं दक्षः मचते कविः	१४
उरुष्या णो अभिशस्तेः	सोम नि पाह्यंहमः	। सखा सुशेव एधि नः	१५ १११५
आ प्यायस्व समेतु ते	विश्वतः सोम वृष्ण्यम्	। भवा वाजस्य संगथे	१६
आ प्यायस्व मदिन्तम	सोम विश्वेभिरंशुभिः	। भवा नः सुश्रवस्तमः सखा वृधे	१७
सं ते पयांसि ममं	यन्तु वाजाः	सं वृष्णयान्यभिमातिषाहः ।	
आप्यायमानो अमृताय	सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व		१८
या ते धामानि हविषा	यजन्ति ता ते विश्वा परिभूरस्तु यज्ञम् ।		
गयस्फानः प्रतरणः	सुवीरो ऽवरिहा प्र चरा सोम दुर्यान्		१९
सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं	सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति ।		
सादुन्यं विदुभ्यं समेयं	पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै		२० ११२०
अपाळ्हं युत्सु पृतनासु	पिप्रिं स्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम् ।		
भरेषुजां सुक्षितिं सुश्रवसं	जयन्तं त्वामनु मदेम सोम		२१
त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वा	स्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः ।		
त्वमा तंतन्थोर्वृन्तरिक्षं	त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ		२२
देवेन नो मनसा देव सोम	रायो भागं सहसावन्नभि युष्य ।		
मा त्वा तनदीशिषे वर्यस्यो	भयेभ्यः प्र चिकित्सा गविष्टौ		२३ ११२३
॥ ११६ ॥ ( ऋ ३ १६२ । १३-१५ )			
( ११२४-११२६ ) गाथिनो विश्वामित्र । गायत्री ।			
सोमो जिगति गातुविद्	देवानामिति निष्कृतम् । ऋतस्य योनिमासदम्		१३
सोमो अस्मभ्यं द्विपदे	चतुष्पदे च पशवे । अनमीवा इषस्करत्		१४ ११२५
अस्माकमायुर्वर्धय	न्नभिमातीः सहमानः । सोमः सधस्थमासदत्		१५ ११२६

॥ ११७ ॥ ( ऋ ६ । ४७ । १—५ )

( ११२७-११३१ ) गगो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

स्वादुक्किलायं मधुमाँ उतायं तीव्रः किलायं रसवाँ उतायम् ।	
उतो न्वस्य पपिवांसमिन्द्रं न कश्चन सहत आहवेषु	१
अयं स्वादुरिह मदिष्ठ आस यस्येन्द्रो वृत्रहर्त्ये ममादं ।	
पुरूणि यश्च्यौला शम्बरस्य वि नवति नव च देह्ये हन्	२
अयं मे पीत उदियति वाचमयं मनीषामुशतीमजीगः ।	
अयं पळुर्वीरमिमीत धीरो न याभ्यो भुवनं कच्चनारे	३
अयं स यो धरिमाणं पृथिव्या वर्ष्माणं दिवो अकृणोदयं सः ।	
अयं पीयूषं तिसृषु प्रवत्सु सोमो दाधारोर्वृन्तरिक्षम्	४ ११३०
अयं विदच्चिदृशीकिमर्णः शुक्रसन्नानामुपसामनीके ।	
अयं महान् महता स्कम्भने नोद् घामस्तभ्नाद् वृषभो मरुत्वान्	५ ११३१

॥ ११८ ॥ ( ऋ ७ । १०४ । ९, १२-१३ )

( ११३२-११३४ ) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ ।

ये पाकशंसं विहरन्त एवैर्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधाभिः ।	
अहये वा तान् प्रददातु सोम आ वा दधातु निर्कतेरुपस्थे	९
सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासञ्च वचमी पस्पृधाते ।	
तयोर्यत् सत्यं यतरदृजीयस्तदित् सोमोऽवति हन्त्यासत्	१२
न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम् ।	
हन्ति रक्षो हन्त्यासद् वदन्त मुभाविन्द्रस्य प्रसितौ गयते	१३ ११३४

॥ ११९ ॥ ( ऋ ८ । ४८ । १-१५ )

( ११३५-११४९ ) प्रगाथो घौरः काण्वः । त्रिष्टुप्, ५ जगती ।

स्वादोरभक्षि वयसः सुमेधा स्वाध्यो वरिबोवित्तरस्य ।	
विश्वे यं देवा उत मर्त्यासो मधुं भ्रुवन्तो अभि संचरन्ति	१ ११३५
अन्तश्च प्रागा अदितिर्भवास्य वयाता हरसो दैव्यस्य ।	
इन्दुविन्द्रस्य सख्यं जुषाणः श्रौष्टीव धुरमनु राय क्रध्याः	२
अपाम सोमममृता अभूमा गन्म ज्योतिरविदाम देवान् ।	
किं नूनमस्मान् कृणवदरानिः किमु धूर्तिरमृत मर्त्यस्य	३ ११३७

शं नो भव हृद आ पीत इन्दो पितेवं सोम सूनवे सुशेवं । सखेव सख्य उरुशंस धीरः प्र ण आयुर्जावसे सोम तारीः	४
इमे मा पीता यशसं उरुप्यवो रथं न गावः समनाह पर्वसु । ते मा रक्षन्तु विस्रसंश्चरित्रा दुत मा भामाद् यवयन्त्विन्देवः	५
अग्निं न मा मथितं सं दिदीपः प्र चक्षय कृणुहि वस्यसां नः । अथा हि ते मद्र आ सोम मन्ये रेवा इव प्र चरा पुष्टिमच्छ	६ ११४०
इषिरेण ते मनसा सुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येव रायः । सोमं राजन् प्र ण आयुषि तारी रहानीव सूर्यो वासगणि	७
सोमं राजन् मृळ्या नः स्वस्ति तवं स्मसि व्रत्याइस्तस्य विद्धि । अलतिं दक्ष उत मन्युरिन्दो मा नो अयो अनुकामं परा दाः	८ ११४२
त्वं हि नस्तन्वंः सोम गोपा गात्रेगात्रे निपसत्था नृचक्षाः । यत् ते वयं प्रमिनाम व्रतानि स नो मृळ सुपखा देव वस्यः	९
ऋदूदरेण सख्या सचेय यो मा न रिष्येद्धर्यश्च पीतः । अयं यः सोमो न्यधाप्यस्मे तस्मा इन्द्रं प्रतिरमेम्यायुः	१०
अप त्या अस्थुरनिगा अमीवा निरत्रसन् तमिषीचिरभैषुः । आ सोमो अस्मां अरुहद् विहाया अगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः	११ ११४५
यो न इन्दुः पितरो हन्सु पीता ऽमर्त्यो मर्त्या आविवेश । तस्मै सोमाय हविषा विधेम मृळीके अस्य सुमतौ स्याम	१२
त्वं सोम पितृभिः संविदानो ऽनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ । तस्मै त इन्दो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम्	१३
त्रातारो देवा अधि वोचता नो मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः । वयं सोमस्य विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम	१४
त्वं नः सोम विश्वतो वयोधा स्त्वं स्वविदा विशा नृचक्षाः । त्वं न इन्द्र ऊतिभिः सजोषाः पाहि पश्चातादुत वा पुरस्तात्	१५ ११४९

॥ १२० ॥ ( ऋ ८ । ७९ । १-९ )

( ११५०-११५८ ) कृत्तुर्भागव. । गायत्री, ९ अनुष्टुप ।

अयं कृत्तुरगृभीतो विश्वजिदुद्धिदित् सोमः । ऋषिर्विप्रः काव्येन	१ ११५०
अभ्यूर्णोति यन्नमं भिषक्ति विश्वं यत् तुरम् । प्रेमन्धः ख्यान्निः श्रोणो भूत् २	११५१



त्वं सोम तनूकृद्भयो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्यः । उरु यन्तासि वरूथम् ३  
 त्वं चित्ती तव दक्षैर्दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन् । यावीरघस्य चिद् द्वेषः ४  
 अर्थिनो यन्ति चेदर्थं गच्छानिद् दुदुषो रातिम् । ववृज्युस्त्वृष्यतः कामम् ५  
 विदद् यत् पूर्य नष्ट—सुदीमृतायुमीरयत् । प्रमायुस्तारीदतीर्णम् ६ ११५५  
 सुशेवो नो मृळयाकु—रदसकतुरवातः । भवा नः सोम शं हृदे ७  
 मा नः सोम सं वीविजो मा वि वीभिषथा राजन् । मा नो हार्दिं त्विषा वधीः ८  
 अव यत् स्वे सधस्थे देवानां दुर्मतीरिक्षे ।  
 राजन्नप द्विषः सेध मीद्वो अप स्निधः सेध ९ ११५८

॥ ११५१ ॥ ( ऋ. ८ । १०१ । १४ )

( ११५९ ) जमदग्निर्भागवः । त्रिष्टुप ।

प्रजा ह तिस्रो अत्यायमीयुर्न्या अर्कमभितो विविश्रे ।  
 बृहद् तस्यो भुवनेध्वन्तः पर्वमानो हरित आ विवेश १ ११५९

॥ ११२२ ॥ ऋ १० । २५ । १-११ ।

( ११६०-११७० ) ऐन्द्रो विमद् , प्राजापत्यो वा, वासुको वसुकुट्टा । आस्तारपङ्क्तिः ।

भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम् ।  
 अधा ते सख्ये अन्धसो वि वो मदे रणन् गावो न यवसे विवक्षसे १ ११६०  
 हृदिस्पृशस्त आसते विश्वेषु सोम धामसु ।  
 अधा कामा इमे मम वि वो मदे वि तिष्ठन्ते वसुयवो वीवक्षसे २  
 उत व्रतानि सोम ते प्राहं मिनामि पाक्या ।  
 अधा पितेव सूनवे वि वो मदे मृळा नो अभि चिद् वधाद् विवक्षसे ३  
 समु प्र यन्ति धीतयः सर्गोसोऽवतां इव ।  
 क्रतुं नः सोम जीवसे वि वो मदे धारया चमसां इव विवक्षसे ४  
 तव त्ये सोम शक्तिभिर्निकामासो व्यृण्विरे ।  
 गृत्संस्य धीरास्तवसो वि वो मदे व्रजं गोमन्तमश्विनं विवक्षसे ५  
 पशुं नः सोम रक्षसि पुरुत्रा विष्टितं जगत् ।  
 समाकृणोपि जीवसे वि वो मदे विश्वा संपश्यन् भुवना विवक्षसे ६ ११६५  
 त्वं नः सोम विश्वतो गोपा अदाभ्यो भव ।  
 सेध राजन्नप स्निधो वि वो मदे मा नो दुःशंस ईशता विवक्षसे ७ ११६६

त्वं नः सोम सुक्रतुर्वयोधेयाय जागृहि ।	
क्षेत्रवित्तो मनुषो वि वो मदे द्रुहो नः पाह्यहंसो विवक्षसे	८
त्वं नो वृत्रहन्तमेन्द्रस्येन्दो शिवः सखा ।	
यत् सीं हवन्ते समिथे वि वो मदे युध्यमानास्तोकमातां विवक्षसे	९
अयं व स तुरो मद इन्द्रस्य वर्धत प्रियः ।	
अयं कक्षीर्वतो महो वि वो मदे मतिं विप्रस्य वर्धयद् विवक्षसे	१०
अयं विप्राय दाशुषे वाजा इयति गोमतः ।	
अयं सप्तभ्य आ वरं वि वा मदे प्रान्धं श्रोणं च तारिपद् विवक्षसे	११ ११७०

॥ १२३ ॥ ( ऋ. १० । ८५ । १ । ५ )

( ११७१-११७५ ) सूर्या सावित्री ऋषिका । अनुष्टुप् ।

सत्येनोत्तमिता भूमिः सूर्येणोत्तमिता द्यौः ।	
ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अधि श्रितः	१
सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही ।	
अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः	२
सोमं मन्यते पपिवान् यत् संपिषन्त्योषधिम् ।	
सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्यांश्नाति कश्चन	३
आच्छद् विधानैर्गुपितो बर्हितैः सोम रक्षितः ।	
ग्राव्णामिच्छुष्वन् तिष्ठमि न ते अश्नाति पार्थिवः	४
यत् त्वा देव प्रपिबन्ति तत् आ प्यायसे पुनः ।	
वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः	५ ११७५

॥ १२४ ॥ ( अथर्व० ३ । ५ । १-८ )

( ११७६-११८६ ) अथर्वा । अनुष्टुप्, १ पुरोऽनुष्टुप्त्रिष्टुप्, ४ त्रिष्टुप्, ८ विराडुरोबृहती ।

आयमगन् पर्णमणिर्वली बलेन प्रमृणन्त्सपत्नान् ।	
ओजो देवानां पय ओषधीनां वर्चसा मा जिन्वत्वप्रयावन्	१
मयिं क्षत्रं पर्णमणे मयिं धारयताद् रयिम् ।	
अहं राष्ट्रस्याभीवर्गे निजो भूयासमुत्तमः	२
यं निदधुर्वनस्पतौ गुह्यं देवाः प्रियं मणिम् ।	
तमस्मभ्यं सहायुषा देवा ददतु भर्तवे	३ ११७८

- सोमस्य पर्णः सह उग्रमागन्निन्द्रेण दुत्तो वरुणेन शिष्टः ।  
 तं प्रियासं बहु रोचमानो दीर्घायुत्वार्यं शतशारदाय ४  
 आ मारुक्षत् पर्णमणिर्महा अरिष्टतातये ।  
 यथाहमुत्तरोऽसांन्यर्यम्ण उत संविदः ५ ११८०  
 ये धीवानो रथकाराः कर्मारो ये मनीषिणः ।  
 उपस्तीन् पर्णं मह्यं त्वं सर्वान् कृण्वभितो जनान् ६  
 ये राजानो राजकृतः सूता ग्रामण्यश्च ये ।  
 उपस्तीन् पर्णं मह्यं त्वं सर्वान् कृण्वभितो जनान् ७  
 पर्णोऽसि तनूपानः सयोनिर्वीरो वीरेण मया ।  
 संवत्सरस्य तेजसा तेन बध्नामि त्वा मणे ८ ११८३  
 ॥ १२५ ॥ ( अथर्व० ५ । २४ । ७ ) अतिशक्ती ।  
 सोमो वीरुधामधिपतिः स मावतु ।  
 अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां  
 चित्त्यामस्यामाकृत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा ७ ११८४  
 ॥ १२६ ॥ ( अथर्व० ६ । ६ । २—३ ) अनुष्टुप् ।  
 यो नः सोम सुशंसिनो दुःशंसं आदिदेशति ।  
 वज्रेणास्य मुखे जहि म संपिष्टो अपायति २ ११८५  
 यो नः सोमाभिदासति सनाभिर्यश्च निष्टयः ।  
 अप तस्य बलं तिर महीव द्यौर्विघ्नमना ४ ११८६  
 ॥ १२७ ॥ ( अथर्व० ५ । ३ । ७ ) ( ११८७ ) बृहद्विवोऽथर्वा । त्रिष्टुप् ।  
 तिस्रो देवीर्महि नः शर्म यच्छत प्रजायै नस्तन्वेरे यच्च पुष्टम् ।  
 मा हास्महि प्रजया मा तनूभिर्मा रंधाम द्विषते सोम राजन् ७ ११८७  
 ॥ १२८ ॥ ( अथर्व० ४ । ४० । ४ ) ( ११८८ ) शुक्रः । त्रिष्टुप् ।  
 य उचरतो जुह्वति जातवेदु उदीच्या दिशोऽभिदासन्त्यस्मान् ।  
 सोममृत्वा ते पराश्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि ४ ११८८  
 ॥ १२९ ॥ ( अथर्व० ५ । २६ । १० ) ( ११८९ ) ब्रह्मा । द्विपदा प्राजापत्या बृहती ।  
 सोमो युनक्तु बहुधा पर्यास्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा १० ११८९

॥ १३० ॥ ( अथर्व० ६ । ८९ । १ ) ( ११९० ) अथर्वा । अनुष्टुप् ।

इदं यत् प्रेण्यः शिरो दुत्तं सोमेन वृष्ण्यम् ।

ततः परि प्रजातेन हार्दिं ते गोचयामसि

१ ११९०

॥ १३१ ॥ ( ११९१-११९३ ) ( वा० यजु० ४ । १६ उत्तगार्धः, २४, २७ )

रास्वेयत् सोमा भूयो भर देवो नः सविता वसोर्दाता वस्वदात् १६

एष ते गायत्रो भाग इति मे सोमाय ब्रूतादेष ते त्रैष्टुभो भाग इति मे सोमाय  
ब्रूतादेष ते जागतो भाग इति मे सोमाय ब्रूतच्छन्दोनामानांश्च साम्राज्यं गच्छति  
मे सोमाय ब्रूतादास्माकोऽसि शुक्रस्ते ग्रह्यो विचितस्त्वा विचिन्यन्तु २४

मित्रो न एहि सुमित्रध इन्द्रस्योरुमाविश दक्षिणमुशन्नुशन्तं स्योनः स्योनम् ।

स्वान् भ्राजाङ्घारि बम्भारि हस्त सुहस्त कृशानवेते वः सोमक्रयणास्तान्

रक्षध्वं मा वो दभन्

२७ ११९३

॥ १३२ ॥ ( ११९४ ) ( वा० यजु० ५ । ७ )

अंशुरंशुष्टे देव सोमाप्यायतामिन्द्रायैकधनविदे ।

आ तुभ्यमिन्द्रः प्यार्यतामा त्वमिन्द्राय प्यायस्व ।

आप्याययास्मान्तसखीन्तसन्या मेधया स्वस्ति ते देव सोम सुत्यामशीय ।

एष्टा रायः प्रेषे भगाय ऋतमृतवादिभ्यो नमो द्यावापृथिवीभ्याम्

७ ११९४

॥ १३३ ॥ ( ११९५-१२०० ) ( वा० यजु० ६ । २५-२६, ३०-३३, ३५-३६ )

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा ।

ऊर्ध्वमिममध्वरं दिवि देवेषु होत्रा यच्छ

२५ ११९५

सोमं राजन् विश्वास्त्वं प्रजा उपावरोह विश्वास्त्वां प्रजा उपावरोहन्तु ।

शृणोत्वग्निः समिधा हवं मे शृण्वन्त्वापो धिषणाश्च देवीः ।

श्रोतां ग्रावाणो विदुषो न यज्ञं शृणोतु देवः सविता हवं मे स्वाहा २६

इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवत इन्द्राय त्वादित्यवत इन्द्राय त्वाभिमातिघ्ने ।

श्येनाय त्वा सोमभृतेऽग्रये त्वा रायस्पोषदे

३२

यत् ते सोम दिवि ज्योतिर्यत् पृथिव्यां यदुरान्तरिक्षे ।

तेनास्मै यजमानायोरु राये कृध्यधि दात्रे वाचः

३३

मा भेर्मा संविकथा ऊर्जे धत्स्व धिषणे वीड्वी सती वीडयेथामूर्जे दधाथाम् ।

पाप्मा हतो न सोमः

३५ ११९९

प्रागपागुदगधराक सर्वतस्त्वा दिश आधावन्तु ।

अम्ब निष्पर समरीर्षिदाम

३६ १२००

॥ १३४ ॥ ( १२०१ ) ( वा० यजु० ७ । १४ )

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम ।

मा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा म प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः

१४ १२०१

॥ १३५ ॥ ( १२०२—१२०८ ) ( वा० य० ८ । १, ९, २५-२६, ४८—५० )

उपयामगृहीतोऽभ्यादित्येभ्यस्त्वा ।

विष्णं उरुगायैष ते सोमस्तथ रक्षस्व मा त्वा दभन्

१

उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतिसुतस्य देव सोम त

इन्द्रोरिन्द्रियावतः पत्नीवतो ग्रहोर ऋध्यासम् ।

अहं परस्तादहमवस्ताद् यदुन्तरिक्षं तद् मे पिताभूत् ।

अहथ सूर्यमुभयतो ददर्शा—ऽहं देवानां परमं गुहा यन्

९

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।

यज्ञस्य त्वा यज्ञपते सूक्तोक्ता नमोवाके विधेम यत् स्वाहा

२५

देवीराप एष वो गर्भस्तथ सुप्रातथ सुभृतं विभृत ।

देव सोमैष ते लोकस्तस्मिच्छं च वक्ष्व परि च वक्ष्व

२६ १२०५

ब्रेशीनां त्वा पत्मन्नाधूनोमि कुकूनानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि भुन्दनानां त्वा

पत्मन्नाधूनोमि मदिन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि मधुन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि

शुक्रं त्वा शुक्र आधूनो—म्यहो रूपे सूर्यस्य रश्मिषु

४८

ककुभथ रूपं वृषभस्य रोचते बृहच्छुक्रः शुक्रस्य पुरोगाः सोमः सोमस्य पुरोगाः ।

यत्ते सोमादाभ्यं नाम जागृधि तस्मै त्वा गृह्णामि तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा॥४९

उशिक् त्वं देव सोमाग्नेः प्रियं पाथोऽपीहि वशी त्वं देव सोमेन्द्रस्य प्रियं पाथोऽपी-

ह्यस्मत्सखा त्वं देव सोम विश्वेषां देवानां प्रियं पाथोऽपीहि

५० १२०८

॥ १३६ ॥ ( १२०९ ) ( वा० य० १९ । ७२ )

सोमो राजामृतं सुत ऋजीषेणाजहान्मृत्युम् ।

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पथोऽमृतं मधु७२ १२०९

॥ १३७ ॥ ( १२१० ) ( वा० य० २० । १९ )

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।

सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि  
यं च वयं द्विष्मः

१९ १२१०

॥ १३८ ॥ ( १२११-१२१४ ) साम० १३००-१३०३ )

पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः ।

ऋषिभिः संभृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृतं हितम् ॥ ३ ॥ १३००

पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथा अमुम् ।

कामान्तसमर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृताः ॥ ४ ॥ १३०१

येन देवाः पावित्रेणा—ऽऽत्मानं पुनते सदा ।

तेन सहस्रधारेण—पावमानीः पुनन्तु नः ॥ ५ ॥ १३०२

पावमानीः स्वस्त्ययनी—स्ताभिर्गच्छति नान्दनम् ।

पुण्याश्च भक्षान् भक्षय—न्यमृतत्वं च गच्छति ॥ ६ ॥ १३०३ १२१४

॥ १३९ ॥ ( ऋ १० । १२४ । ६ ) ( १२१५ ) अग्नि-वरुण-सोमाः । त्रिष्टुप ।

इदं स्वरिदमिदांस वाम—मयं प्रकाश उर्वर्तुन्तरिक्षम् ।

हनाव वृत्रं निरेहि सोम हविष्ट्वा सन्तं हविषा यजाम ६ १२१५

### सोमसहचारी देवगणः ।

( १ ) सूर्यरोदसीमित्रवरुणरुद्रेंद्राग्न्यर्यमभगसोमाः ।

॥ १४० ॥ ( ऋ १ । १३६ । ६ ) ( १२१६ ) परुच्छेपो देवोदासिः । अत्यष्टि ।

नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां मित्राय वोचं वरुणाय मीळहुषे सुमृळीकार्य मीळहुषे ।

इन्द्रमग्निमुप स्तुहि द्युक्षमर्यमणं भगम् ।

ज्योग् जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि ६ १२१६

## (२) सोमापूषणौ, ६ (अन्त्योऽर्धर्चस्य) अदितिः ।

॥ १४१ ॥ ( ऋ. २ । ४० । १-६ )

(१२१७-१२२२) गृत्समद् (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पद्मचाद्) भार्गव शौनकः । त्रिष्टुप् ।

सोमापूषणा जनना रयीणां	जनना दिवो जनना पृथिव्याः ।	
जातौ विश्वस्य भुवनस्य गोपौ	देवा अकृण्वन्नमृतस्य नाभिम्	१
इमौ देवौ जायमानौ जुषन्ते	मौ तमांसि गूहतामजुष्टा ।	
आभ्यामिन्द्रः पक्वामास्वन्तः	सोमापूषभ्यां जनदुस्त्रियासु	२
सोमापूषणा रजसो विमानं	सप्तचक्रं रथमविश्वमिन्वम् ।	
विष्वृत्तं मनसा युज्यमानं	तं जिन्वथो वृषणा पञ्चरश्मिम्	३
दिव्येभ्यः सदनं चक्र उच्चा	पृथिव्यामन्यो अध्येन्तरिक्षे ।	
तावत्सभ्यं पुरुवारं पुरुक्षुं	रायस्पोषं वि ध्यतां नाभिस्मे	४ १२२०
विश्वान्यन्यो भुवना जजान	विश्वमन्यो अभिचक्षाण एति ।	
सोमापूषणावर्तं धियं मे	युवाभ्यां विश्वाः पृतना जयेम	५
धियं पूषा जिन्वतु विश्वमिन्वो	रयिं सोमो रयिपतिर्दधातु ।	
अवतु देव्यदितिरनर्वा	बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	६ १२२२

## (३) सोमारुद्रौ ।

॥ १४२ ॥ ( ऋ. ६ । ७४ । १-४ )

(१२२३-२६) भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप् ।

सोमारुद्रा धारयेथामसुर्यं	प्र वामिष्टयोऽरमभुवन्तु ।	
दमेदमे सप्त रत्ना दधाना	शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे	१
सोमारुद्रा वि बृहत्तं विष्वची	ममीवा या नो गर्यमाविवेश ।	
आरे बाधेथां निर्ऋतिं पराचै	रस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु	२
सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे	विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम् ।	
अवं स्यतं मुञ्चतं यन्नो अस्ति	तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत्	३ १२२५
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ	सोमारुद्राविह सु मृळतं नः ।	
प्र नो मुञ्चतं वरुणस्य पाशाद्	गोपायते नः सुमनस्यमाना	४ १२२६

## (४) ब्राह्मण-पितृ-सोम-द्यावापृथिवी-पूषाणः ।

॥ १४३ ॥ ( ऋ ६ । ७५ । १० )

( १२२७ ) पायुर्भारद्वाजः । जगती ।

ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा ।  
पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा मार्किर्नो अघशंस ईशत

१० १२२७

## (५) वर्म-सोम-वरुणाः ।

॥ १४४ ॥ ( १२२८ ) ( ऋ० ६ । ७५ । १८ ) पायुर्भारद्वाज । त्रिष्टुप् ।

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्रा राजामृतेनानु वस्ताम् ।  
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु

१८ १२२८

## (६) अग्नीद्रमित्रावरुणाश्विभगपूषब्रह्मणस्पतिसोमरुद्राः ।

॥ १४५ ॥ ( ऋ० ७ । ४१ । १ )

( १२२९ ) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । जगती ।

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।  
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम

१ १२२९

## (७) अङ्गिरःपित्रथर्वभृगुसोमाः ।

॥ १४६ ॥ ( ऋ. १० । १४ । ६ )

( १२३० ) वैवस्वतो यम । त्रिष्टुप् ।

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः ।  
तेषां वयं सुमृतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम

६ १२३०

## (८) आपः सोमो वा ।

॥ १४७ ॥ ( ऋ. १० । १७ । ११-१३ )

( १२३१-१२३३ ) देवश्चवा यामायनः । त्रिष्टुप् १३ अनुष्टुप् पुरस्ताद्बृहती वा ।

द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमाँ अनु धू—निमं च योनिमनु यश्च पूर्वेः ।  
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः

११ १२३१



यस्ते द्रप्सः स्कन्दति यस्ते अंशुर्बाहुच्युतो धिषणाया उपस्थात् ।  
 अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात् तं ते जुहोमि मनसा वर्षत्कृतम् १२  
 यस्ते द्रप्सः स्कन्नो यस्ते अंशुर्वाश्च यः परः सूचा ।  
 अयं देवो बृहस्पतिः सं तं सिञ्चतु राधसे १३ १२३३

## (९) अग्नीषोमौ ।

॥ १४८ ॥ ( ऋ० १० । १९ । १ उत्तरार्धः )

( १२३४ ) मथितो यामायनः, भृगुर्वाणिवर्वा, भार्गवश्च्यवनो वा । अनुष्टुप् ।  
 अग्नीषोमा पुनर्वसू अस्मे धारयतं रयिम् । १ १२३४

॥ १४९ ॥ ( अथर्व २ । ३३ । ३ )

( १२३५ ) पतिवदन. । त्रिष्टुप् ।

इयमग्ने नारी पतिं विदेष्ट सोमो हि राजा सुभगां कृणोति ।  
 सुवाना पुत्रान् महिषी भवति गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु २ १२३५

## (१०) निऋतिसोमौ ।

॥ १५० ॥ ( ऋ० १० । ५९ । ४ )

( १२३६ ) बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गोपायनाः । त्रिष्टुप् ।

मो षु णः सोम मृत्यवे परा दाः पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।  
 द्युभिहितो जरिमा सू नो अस्तु परातरं सु निऋतिर्जिहीताम् ३ १२३६

## (११) पृथिवीद्वयन्तरिक्षसोमपूषपथ्यास्वस्तयः ।

॥ १५१ ॥ ( ऋ० १० । ५९ । ७ )

( १२३७ ) बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गोपायना । त्रिष्टुप् ।

पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम् ।  
 पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यांश्च या स्वस्तिः ७ १२३७

## (१२) सोमार्कौ ।

॥ १५२ ॥ ( ऋ० १० । ८५ । १८ )

( १२३८ ) सूर्या सावित्री ऋषिका । जगती ।

पूर्वापरं चरतो मायथैतौ शिशू क्रीळन्तौ परि यातो अध्वरम् ।  
 विश्वान्युन्यो भुवनाभिचष्ट क्रतूरन्यो विदधजायते पुनः १८ १२३८

(१३) सोम-वरुण-बृहस्पति-अनुमति-मघवत्-धातु-विधातारः ।

॥ १५३ ॥ ( ऋ १०।१६७।३ )

( १२३९ ) विश्वामित्र-जमदग्नी । जगती ।

सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मणि बृहस्पतेरनुमत्या उ शर्मणि ।  
तवाहमद्य मघवन्नुपस्तुतौ धातुर्विधातः कलशां अभक्षयम्

३ १२३९

(१४) बृहस्पतिः, अग्नीषोमौ च ।

॥ १५४ ॥ ( अथर्व० १।८।१-२ ,

(१२४०-१२४१) चातनः । अनुष्टुप् ।

इदं हविर्यातुधानान् नदी फेर्नमिवा वहत् ।

य इदं स्त्री पुमानकं—रिह स स्तुवतां जनः

१ १२४०

अयं स्तुवान आगमं—दिमं स्म प्रति हयत ।

बृहस्पते वशे लब्ध्वा ऽग्नीषोमा वि विध्यतम्

२ १२४१

(१५) अग्निः, आपः, ओषधयः, सोमः ।

॥ १५५ ॥ ( अथर्व० २।१०।२ )

(१२४२) भृग्वङ्गिराः । सप्तपदाष्टिः ।

शं ते अग्निः सहाङ्गिरस्तु शं सोमः सहौषधीभिः ।

एवाहं त्वां क्षेत्रिया—भिर्भेत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।

अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥२॥ १२४२

(१६) सोमः, अर्यमा, धाता ।

॥ १५६ ॥ ( अथर्व० २।३६।२ )

(१२४३) पतिवेदनः । अनुष्टुप् ।

सोमजुष्टं ब्रह्मजुष्टं—मर्यम्णा संभृतं भगम् ।

धातुर्देवस्य सत्येनं कृणोमि पतिवेदनम्

२ १२४३

(१७) वरुणः, सोमः, इन्द्रः ।

॥ १५७ ॥ ( अथर्व० ३।३।३ )

( १२४४-१२६० ) अथर्वा । चतुष्पदा भुरिक्पङ्क्ति ।

अद्भ्यस्त्वा राजा वरुणो ह्ययतु सोमस्त्वा ह्ययतु पर्वतेभ्यः ।

इन्द्रस्त्वा ह्ययतु विद्भ्य आभ्यः इयेनो भूत्वा विश आ पतेमाः

३ १२४४

(१८) सोमः, सविता, आदित्यः, अग्निः ।

॥ १५८ ॥

( १२४५ ) ( अथर्व० ३ । ८ । ३ ) जिष्टुप् ।

हुवे सोमं सवितारं नमोभिर्विश्वानादित्यो अहमुत्तरत्वे ।

अयमग्निर्दीदायद् दीर्घमेव संजातैरिद्वोऽप्रतिब्रुवाद्भिः

३ १२४५

(१९) सोमः, स्वजः, अशनिः ।

॥ १५९ ॥

( १२४६ ) ( अथर्व० ३।२७।४ ) पञ्चपदा ककुम्मतीगर्भाऽष्टिः ।

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योरेस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः

४ १२४६

(२०) आपः, सोमः ।

॥ १६० ॥ ( १२४७ ) ( अथर्व० ४ । ४ । ५ ) अनुष्टुप् ।

अपां रसः प्रथमजो ऽथो वनस्पतीनाम् ।

उत सोमस्य भ्राता ऽस्युतार्शमसि वृष्यम्

५ १२४७

(२१) सोमः, वनस्पतिः ।

॥ १६१ ॥ ( १२४८-१२४९ ) ( अथर्व० ६ । २ । १-२ ) परोष्णिक् ।

इन्द्राय सोममृत्विजः सुनोता च धावत ।

स्तोतुर्यो वचः शृणवद्भवं च मे

१

आ यं विशन्तीन्दवो वयो न वृक्षमन्धसः ।

विरंश्निन् वि मृधो जहि रक्षस्विनीः

२ १२४९

## (२२) द्यावापृथिवी, ग्रावा, सोमः, सरस्वती, अग्निः ।

॥१६२॥ (१२५०) (अथर्व० ६।३।२) जगती ।

पातां नो द्यावापृथिवी अभिष्टये पातु ग्रावा पातु सोमो नो अंहसः ।  
पातुं नो देवी सुभगा सरस्वती पात्वग्निः शिवा ये अस्य पायवः २ १२५०

## (२३) सोमः, अदितिः ।

॥१६३॥ (१२५१-१२५२) (अथर्व० ६।७।१-२) १ निचृत्, २ गायत्री ।

येन सोमादितिः पथा मित्रा वा यन्त्यद्रुहः ।  
तेना नोऽवसा गृहि १  
येन सोम साहन्त्या—सुरान् रन्धयामि नः ।  
तेना नो अधि वोचत २ १२५२

## (२४) द्यावापृथिवी, सोमः, सविता, अन्तरिक्षं, सप्तऋषयः ।

॥१६४॥ (१२५३) (अथर्व० ६।४०।१) जगती ।

अभयं द्यावापृथिवी इहास्तु नो ऽभयं सोमः सविता नः कृणोतु ।  
अभयं नोऽस्तूर्वाऽन्तरिक्षं सप्तऋषीणां च हविषाभयं नो अस्तु १ १२५३

## (२५) अग्निः, इन्द्रः, सोमः ।

॥ १६५ ॥ ( १२५४ ) ( अथर्व० ६।५८।३ ) । अनुष्टुप् ।

यशा इन्द्रो यशा अग्नि—र्यशाः सोमो अजायत ।  
यशा विश्वस्य भूतस्या—ऽहमस्मि यशस्तमः ३ १२५४

## (२६) सविता, सोमः, वरुणः ।

॥ १६६ ॥ ( १२५५ ) ( अथर्व० ६।६८।३ ) अतिजगतीगर्भा त्रिष्टुप् ।

येनावपत् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्  
तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्य गोमानश्चवानयमस्तु प्रजावान् ३ १२५५

(२७) सांमनस्यम्, वरुणसोमोऽग्निर्बृहस्पतिवसवः ।

॥१६७॥ (१२५६—१२५७) (अथर्व० ६ । ७३ । १—२) १ भुरिक् २ त्रिष्टुप् ।

एह यातु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु ।

अस्य श्रियमुपसंयातु सर्वं उग्रस्य चेतुः संमनसः सजाताः १

यो वः शुष्मो हृदयेष्वन्तराऽऽकृतिर्या वो मनसि प्रविष्टा ।

तान्त्मीवियामि हविषा घृतेन मरिं सजाता र्मतिर्वो अस्तु २ १२५७

(२८) इन्द्रः, सोमः, सविता च ।

॥१६८॥ (१२५८—१२६०) (अथर्व० ६ । ९९ । १—३) अनुष्टुप्, ३ भुरिर्बृहती ।

अभि त्वेन्द्र वरिमतः पुरा त्वांहरुणाद्भुवे ।

ह्याभ्युग्रं चेतारं पुरुर्णामानमेकजम् १

यो अद्य सेन्यो वधो जिघांसन्न उदीरते ।

इन्द्रस्य तत्र बाहू संमन्तं परि दद्यः २

परि दद्य इन्द्रस्य बाहू संमन्तं त्रातुस्त्रायतां नः ।

देवं सवितः सोमं राजन् त्मुमनसं मा कृणु स्वस्तये ३ १२६०

(२९) द्यौः, पृथिवी, शुक्रः, सोमः, अग्निः, वायुः, सविता ।

॥१६९॥ (१२६१) (अथर्व० ६ । ५३ । १) बृहच्छुक्रः । जगती ।

द्यौश्च म उदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणया पिपर्तु ।

अनु स्वधा चिकित्तां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भर्गश्च १ १२६१

# सोमदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।



## ऋग्वेदस्य नवमं मण्डलम् ।

[१] ९।१।१ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः )

पवस्व सोम धारया ।

इन्द्राय पातवे सुतः ।

(२२१)९।२९।४ ( नृमेध आदिरस । पवमानः सोमः )

पवस्व ।

(२२६)९।३०।३ ( विन्द्रादिरस । पवमानः सोमः )

पवस्व... ।

(५८०)९।६७।१३ ( विश्वामित्रो गायिनः । पवमानः सोमः )

पवस्व... ।

(९३९)९।१००।५ ( रेभसन काश्यपो । पवमानः सोमः )

इन्द्राय ।

[३] ९।१।३ = (अभिः १२६३) ८।१०३।७

पर्षि राधो मघोनाम् ।

[४] ९।१।४ ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः )

अभ्यर्ष... ।

अभि वाजमुत श्रवः ।

(४३)९।६।३ (अमितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )

अभि .अर्ष ।

अभि ।

(३५०)९।५१।५ ( उच्य आदिरस । पवमानः सोमः )

अभ्यर्ष... ।

अभि ।

(४५९)९।६३।१२ ( निश्वविः काश्यपः । पवमानः सोमः )

अभ्यर्ष । अभि... ।

[१०] ९।१।१० ( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः )

अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ।

(९८८)९।१०६।३ ( अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः )

[११] ९।२।१ ( मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः )

पवस्व देववीरति ।

(२६१)९।३६।२ ( प्रभूवसुरादिरसः । पवमानः सोमः )

[१.] ९।२।१ = ( इन्द्र १०८५) १।१७६।१

( अगस्त्यो मेधावर्णिः । इन्द्रः )

इन्द्रमिन्द्रो वृषा विश ।

[१३] ९।२।३ ( मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः )

धारा सुतस्य वेधसः ।

(१३५)९।१६।७ (अमितः काश्यपो देवलो वा ।

पवमानः सोमः )

[१४] ९।२।४ ( मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः )

आपो अर्पन्ति सिन्धवः ।

यद्गोभिर्वासयिष्यसे ।

(५५०)९।६६।६३ ( शतं वैश्वानगा । पवमानः सोमः )

[१६] ९।२।६ अचिक्रद् वृषा हरिः ।

(९५९)९।१०१।१६ कनिक्रद् वृषा हरिः ।

[१७] ९।२।६ सं सूर्येण रोचन्ते ।

८।९।१८ ( शशकर्म काण्वः । अश्विनो )

[१७] ९।२।७ ( मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः )

मर्मृज्यन्ते अपस्युवः ।

याभिर्मदाय शुम्भसे ।

(२७४)९।३८।३ ( रङ्गण आदिरसः । पवमानः सोमः )

मर्मृ ।

शुम्भते ।

[१९] ९।२।९ = ( इन्द्र २४३ ) ८।६।१

पर्जन्यो वृष्टिर्मा इव ।

[२०] ९।२।१० अस्यश्वसा वाजसा उत ।

६।२३।१० ( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । प्रपा )

धियमश्वसां वाजसामुत ।

[२१] ९।२।१० आत्मा यज्ञस्य पूर्यः ।

( अभिः ५२० ) ३।११।३ केतुयज्ञस्य पूर्यः ।

[२१] ९।३।१ ( शुनः शेष आजीगर्तिः, स देवगतः कृत्रिभो

वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः )

अभि द्रोणान्यासद्म् ।

(२२७) ९।३०।४ ( विन्दुराजगिरसः । पवमानः सोम )

[२६] ९।३।६ = ( अभिः ७।५१ ) ४।१।५३

दधद्रत्नानि दाशुषे ।

[२७] ९।३।७ ( शुनःशेष आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो  
वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः )

पवमानः कनिकदन् ।

( १११ ) ९।१३।८ ( अभितः कश्यपो देवलो वा ।  
पवमानः सोमः )

[२८] ९।३।८ व्यासरत्तिरो रजांस्यस्पृतः ।

( दन्द्रः ६८७ ) ८।८२।९ पदाभरत्तिरो रजांस्यस्पृतम् ।

[२९] ९।३।९ ( शुनःशेष आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो  
वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः )

एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः ।

( २९७ ) ९।४।२ ( मे यानिधि काण्व ।  
पवमानः सोमः )

एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि ।

( ९३३ ) ९।९।७ ( रेभसून् काश्यपो । पवमानः सोमः )

देवो देवेभ्यः सुतः ।

( ९७३ ) ९।१०।३।६ ( द्वित आत्स्य । पवमानः सोमः )

देवो देवेभ्यः सुतः ।

[३०] ९।३।१० ( शुनःशेष आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो  
वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः )

धारया पवते सुतः ।

( २९७ ) ९।४।२ ( मे यानिधि काण्व । पवमानः सोमः )

[३१] ९।४।१ ( हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

सना . पवमान महि श्रवः ।

( ७६ ) ९।९।९ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )

पवमानः ।

सना ।

( ९४२ ) ९।१००।८ ( रेभसून् काश्यपो । पवमानः सोमः )

पवमानः... ।

३१-४०] ९।४।१-१० अथा नो वस्यन्मस्कृधि ।

३१] ९।४।२ सना ज्योतिः सना स्वः ।

( ७६ ) ९।९।९ सना मेधं सना स्वः ।

„] ९।४।२ = ( इन्द्रः ६५८ ) ८।७८।८

विश्व्वा च सोमः सौभगा ।

[३३] ९।४।३ सना दक्षमुत क्रतुम् ।

( ११६० ) १०।२।१ मनो दक्षमुत क्रतुम् ।

[३४] ९।४।४ = ( ९ ) ९।१।९ सोममिन्द्राय पातवे ।

[३५-३६] ९।४।५-६ तव क्रवां तवोतिभिः ।

[३७] ९।४।७ ( हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
सोम द्विवर्हसं रयिम् ।

( २८९ ) ९।४।०।६ ( बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

( ९३६ ) ९।१००।२ ( रेभसून् काश्यपो । पवमानः सोमः )

[३९] ९।४।९ ( हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
पवमान विधर्मणि ।

( ४८६ ) ९।६।९ ( काश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः )

( ९४१ ) ९।१००।७ ( रेभसून् काश्यपो । पवमानः सोमः )

( अभिः १९८३ ) ९।५।३ रयिर्वि राजति शुमान् ।

( ४०५ ) ९।६।१।८ दक्षो वि राजति शुमान् ।

( अभिः १९८४ ) ९।५।४ = ( अभिः १९३४ ) १।१८८।४

( अभिः १९८८ ) ९।५।८ = ( अभिः १९७० ) ५।५।७

[४२-४३] ९।६।२-३ अभि त्वं मयं ( रेपूर्व्यं ) मदम् ।

[४३] ९।६।३ = ( ४ ) ९।१।४ अभि वाजमुत श्रवः ।

[ . ] ९।६।३ ( आगतः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
सुवानो अर्प पवित्र आ ।

( ३५१ ) ९।५।१।१ ( उच्चथ आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

[४४] ९।६।४ ( अभितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )

आपो न प्रवतासग्नः ।

पुनाना इन्द्रमाशतः ।

( १८८ ) ९।२।२ ( अभितः काश्यपो देवलो वा ।

पवमानः सोमः )

आपो न प्रवता यतीः ।

पुनाना . ।

[४५] ९।६।५ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )

वने श्रीळन्तमस्यविम् ।

( ३१८ ) ९।४।५।५ ( अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

अस्वरज वने ।

( ९९६ ) ९।१०६।११ ( अग्निश्वाक्षुषः । पवमानः सोमः )

वने... ।

अस्वरन् . ।

[४७] ९।६।७ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )

इन्द्राय पवते सुतः ।

- (४३१)९।६२।१४ ( जमदग्निर्भागवः । पवमान सोमः )  
 .. मद् ।  
 (९८७)९।१०६।२ ( अभिनश्चाश्रुषः । पवमान सोमः )  
 (१०१६)९।१०७।१७ ( सप्तर्षयः । पवमान सोमः )  
 ...मद् ।  
 [५१]९।७।२ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
 महारपो वि गाहते ।  
 (९३३)९।९९।७ ( रेभसृ काश्यपो । पवमान सोमः )  
 [५२]९।७।३ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
 वृषाव चक्रद् वने ।  
 (१०२१)९।१०७।२० ( सप्तर्षयः । पवमान सोमः )  
 ...चक्रद् वने ।  
 [५३,९।७।४ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
 नृम्णा वसानो अर्षति ।  
 स्वर्वाजी सिषासति ।  
 (४४०)९।६२।२३ ( जमदग्निर्भागवः । पवमान सोमः )  
 नृम्णा पुनानो अर्षति ।  
 (६५७)९।७७।१ ( कर्षीवान्दर्धतमसः । पवमान सोमः )  
 स्वर्ष्यहाज्यरुष सिषासति ।  
 [५५]९।७।६ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः )  
 अद्यो वारे परि प्रियो ।  
 (३४३)९।५०।३ ( उच्चथ आङ्गिरसः । पवमान सोमः )  
 प्रियम् ।  
 (३५२)९।५२।२ ( उच्चथ आङ्गिरसः । पवमान सोमः )  
 (१००५)९।१०७।६ ( सप्तर्षयः । पवमान सोमः )  
 [६१]९।८।३ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः )  
 इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो ।  
 (३८७)९।६०।४ ( अवत्सार काश्यपः । पवमान सोमः )  
 राधसे पवस्व ।  
 [.,.]९।८।३=(११२४)३।६२।१३ ऋतस्य योनिमासदसु  
 [६७]९।८।९ = ७।९६।६ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणि । सरस्वान )  
 [७६]९।९।९ = (३१)९।४।१ भक्षीमहि प्रजामिषम् ।  
 [.,.]९।९।९ = (३२)९।४।२  
 [७७]९।१०।१ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः )  
 अर्षन्तो न श्रवस्यवः ।  
 (५४७)९।६६।१० ( शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः )  
 [७८]९।१०।२ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
 दधान्विरे गभस्त्यो ।

- (११०)९।१३।७ ( असितः काश्यपो देवलो वा ।  
 पवमानः सोमः )  
 [९३]९।११।८ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः )  
 इन्द्राय सोम पातवे परि पिच्यसे ।  
 (९२४)९।९८।१० ( अम्बरीषो वार्षागिरः, ऋजिश्वा  
 भारद्वाजश्च । पवमानः सोमः )  
 (१०४०)९।१०८।१५ ( शक्तिर्वागिरः । पवमानः सोमः )  
 [.,.]९।११।८ मर्ताध्वन्मनसस्पतिः ।  
 (२१२)९।२८।१ विश्वविन्मनसस्पतिः  
 ९५]९।१२।१ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
 इन्द्राय मधुमत्तमाः ।  
 (४६६)९।६३।१९ ( निर्वृत्तवः काश्यपः । पवमानः सोमः )  
 ..मधुमत्तमम् ।  
 (५८३)९।६७।१६ ( जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः )  
 ..मधुमत्तमः ।  
 [९६]९।१२।२ = (इन्द्र २०८४)६।४५।२५  
 = (इन्द्र १३७७)३।४१।५  
 गावो वत्सं न मातरः ।  
 (इन्द्र २०८७)६।४५।२८ वत्स गावो न धेनुवः ।  
 [.,.]९।१२।२ = (इन्द्र ८०)१।१६।३=(इन्द्र.१३८५)३।४२।४  
 = (इन्द्र.४०८)८।१७।१५ = (इन्द्र २४०१)८।९२।५  
 = (इन्द्र.९८६)८।९७।११  
 इन्द्रं सोमस्य पीतये ।  
 [१००]९।१२।६ ( अभिन काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
 प्र वाचमिन्दुरिष्यति ।  
 (२५७)९।३५।४ ( प्रभृमसुगङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 प्र वाजमिन्दुरिष्यति ।  
 [.,.]९।१२।६(इन्द्र ४३७)८।३४।१३  
 समुद्रस्याधि विष्टपि (०५.) ।  
 [१०१]९।१२।७ = (११०६)१।९।१६  
 नित्य (प्रियं०) स्तोत्रो वनस्पतिः ।  
 [१०२]९।१२।८(असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
 सोमो हिन्वानो अर्षति ।  
 विप्रस्य धारया कविः ।  
 (३०९)९।४४।२ ( अयाग्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 सोमो हिन्वं परावति । विप्रस्य ।  
 [१०४]९।१३।१(असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
 सोमः पुनानो अर्षति ।



(२१७)१।२८।६ (प्रियमेध आङ्गिरस ।  
पवमानः सोमः )  
(३००)१।४२।५ (मेत्यातिथिः काण्वः । पवमान सोमः)  
(१५०)१।१०।७ (नहुषो मानव । पवमान सोमः )  
[१०५]१।१३।२ सुष्वाणं देववीतये ।  
(५२५)१।६।१८ सुष्वाणो देववीतये ।  
[१०६]१।१३।३ ( असित काश्यपो देवलो वा ।  
पवमान सोमः )  
पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः।  
(२९८)१।४२।३ (मेत्यातिथि काण्व । पवमान सोमः )  
पवन्ते वाजसातये ।  
सोमा ... ।  
(३०७)१।४३।६ (मेत्यातिथि काण्वः । पवमान सोमः )  
पवस्व वाजसातये ।  
(१४०)१।१००।६ (रभसुनू काश्यपो । पवमान सोमः)  
पवस्व वाजसातये ।  
(१०२२)१।१०७।२३ ( सप्तर्षयः । पवमान सोमः )  
पवस्व वाजसातये ।  
[१०७]१।१३।४ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः )  
पवस्व बृहतीरिष । सुवीर्यम् ।  
(३०१)१।४२।६ ( मेत्यातिथि काण्वः । पवमान सोमः )  
पवस्व ।  
[११०]१।१३।७ = ( इन्द्र २०८४ ) ६।४५।२५  
= ( इन्द्र १३७७ ) ३।४१।५  
अभि ( इन्द्र ) वत्सं न धेनव ( मातर ) ।  
[ ,, ]१।१३।७ = ( ७८ ) १।१०।२ दधन्विरे गभस्त्वो ।  
[१११]१।१३।८ = ( २७ ) १।३।७  
पवमान(०नः) कनिकदत् ।  
[ ,, ]१।१३।८ ( अमित काश्यपो देवलो वा ।  
पवमानः सोमः )  
विश्वा अप द्विषो जहि ।  
(३८९)१।६।१२८ ( अमहायुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
[११२]१।१३।९ ( असित काश्यपो देवलो वा ।  
पवमानः सोमः )  
अपघ्नन्तो अरावणः ।  
योनावृतस्य सीदत ।

(४५२)१।६३।५ (निधुवि. काश्यप. । पवमानः सोमः )  
अपघ्नन्तो अरावणः ।  
(२८३)१।३९।६ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमान सोमः )  
योनावृतस्य सीदत ।  
[११५]१।१४।३ = ( इन्द्र २३१४ ) ८।६९।११  
विश्वे देवा अमन्सत ।  
[११७]१।१४।५ (अमित. काश्यपो देवलो वा । पवमान. सोमः )  
गाः कृष्वानो न निर्णिजम् ।  
(७५३)१।८६।२६ (पृथिव्योऽजा । पवमान सोमः)  
गाः कृष्वानो निर्णिजं न ।  
(१०२५)१।१०७।२६ (सप्तर्षयः । पवमान सोमः )  
गाः कृष्वानो न निर्णिजम् ।  
[१२१]१।१५।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)  
गच्छन्नन्द्रस्य निष्कृतम् ।  
(४१२)१।६।१२५ (अमहायुराङ्गिरस । पवमान सोमः)  
[१२३]१।१५।३ एष हितो वि नीयते ।  
(२०८)१।२७।३ एष तृभिर्वि नीयते ।  
[१२७]१।१५।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान. सोमः)  
एतं सृजन्ति मर्ज्यम् ।  
(३२५)१।४६।६ (अयास्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)  
[१२८]१।१५।८ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)  
एतसु त्वं दश क्षिपो सृजन्ति ।  
(३९४)१।६।१७ (अमहायुराङ्गिरस. । पवमान. सोमः )  
[१३१]१।१६।३=१।२८।९ (शुन शेष आजिगतिः। प्रजापतिः  
हरिश्चन्द्र. चर्म सोमो वा)  
सोमं पवित्र आ सृज ।  
[ ,, ]१।१६।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)  
सोमं पवित्र आ सृज ।  
पुनीहीन्द्राय पातवे ।  
(३४६)१।५।१।१ (उक्थ्य आङ्गिरस । पवमान सोमः )  
सोमं... ।  
पुनीही ।  
[१३२]१।१६।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः)  
सोमः पवित्रे अर्षति ।  
(१३९)१।१७।३ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)  
सोमः... । विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ।

(२६६) ९।३७।१ (रुद्रगण आङ्गिरस्यः । पवमान सोमः)  
सोमः— ।

विघ्न— ।

[१३४] ९।१६।६ (अग्निः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)  
विश्वो अर्षन्नभि श्रिय ।

शूरो न गोषु तिष्ठति ।

(४३६) ९।६२।१९ (जमदग्निर्भागवः । पवमान सोम )

[१३५] ९।१६।७ = (१३) ९।२।३ धारा सुतस्य वेधस ।

[१३६] ९।१६।८ (अग्निः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोमः)  
एवं सोम विपश्चित पुनान ।

अव्यो वारं वि धावति ।

(५०२) ९।६४।२५ (कश्यपो मार्गचः । पवमानः सोमः)  
एव सोम विपश्चितं पुनानो ।

(२१२) ९।२८।१ (पियमेध आङ्गिरस्यः । पवमानः सोम )  
अव्यो वार वि धावति ।

(९९५) ९।१०६।१० (अग्निश्चाशुपः । पवमान सोमः)  
पुनान अव्यो वारं वि धावति ।

(६६५) ९।७४।९ (कर्षावान्देघेतमगः । पवमानः सोमः)  
अव्यो वारं वि पवमान धावति ।

[१३७] ९।१७।१ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)  
सोमा असुप्रमाशवः ।

(१८०) ९।२३।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

[१३९] ९।१७।३ = (१३२) ९।१६।४ सोमः पवित्र अर्षति ।

[ " ] ९।१७।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोम )  
सोमः पवित्रे अर्षति ।

विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ।

(२६६) ९।३७।१ (रुद्रगण आङ्गिरस्यः । पवमान सोमः)

(३६८) ९।५६।१ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)  
आशुः पवित्रे अर्षति ।

विघ्नन्— ।

[१४०] ९।१७।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोम )  
आ कलशेषु धावति पवित्रे परि षिच्यते ।

(५८१) ९।६७।१४ (विश्वामित्रो गाथिनः । पवमानः सोमः)  
— धावति ।

(२९९) ९।४२।४ (मेध्यानिधिः काण्वः । पवमानः सोम )  
पवित्रे परि षिच्यते ।

[१४३] ९।१७।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)  
धीभिर्विप्रा अवस्यव ।

मृजान्ति. . . ।

दे० [सोमः] ११

(४६७) ९।६३।२० (नि रवि काश्यपः । पवमानः सोम )  
मृजान्ति. . . धीभिर्विप्रा अवस्यव ।

[१४४] ९।१७।८ = १।६३७।२ (पम्च्छपो देवोदागिः । मित्रावरुणो)  
चारुर्कृताय पीतये ।

[१४५-५१] ९।१८।१-७ मदेषु सर्वधा असि ।

[१४९] ९।१८।५ = (उन्द्र १४६४) ३।५३।१०  
( विश्वामित्रो गाथिनः । उन्द्रः )

य इमे रोदमी मत्वा ( उभे ) ।

[१५२] ९।१९।१ तन्नः पुनान आ भर ।

( अग्निः २० ) १।१२।११ ग नः ग्नवान आ भर ।

[१५३] ९।१९।२ = ५।७।२ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणा)  
ईशाना पिपयतं धियः ।

[१५५] ९।१९।४ (अग्निः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)  
अवावशन्न धीतयो ।

(५४८) ९।६६।११ (अनं वैश्वानरा । पवमानः सोमः )

[१५७] ९।१९।६ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमान सोम )  
पवमान विदा रयिम् ।

(३०५) ९।४३।४ (मे यानिधि काण्वः । पवमान सोम )

(४५८) ९।६३।११ ( नि रवि काश्यपः । पवमानः सोम )

[१५९] ९।२०।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोम )  
अव्यो वारंभिरर्षति ।

(२७२) ९।३८।१ (रुद्रगण आङ्गिरस्यः । पवमानः सोम )

[१६४] ९।२०।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमान सोम )  
मृज्यमानो गभस्त्यो ।

सोमश्चमूषु सीदति ।

(२६३) ९।३६।४ (प्रभवसुर्गाङ्गिरस्यः । पवमान सोम )  
मृज्यमानो— ।

(४८२) ९।३४।५ ( काश्यपो मार्गचः । पवमानः सोमः )  
मृज्यमाना गभस्त्योः ।

(५१३) ९।३५।६ ( मृगुर्गार्गणजमदग्निर्भागवो वा ।  
पवमानः सोमः )

(९३९) ९।९९।६ (रेभृगु काश्यपो । पवमान सोम )  
सोमश्चमूषु सीदति ।

[१६५] ९।२०।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोम )  
पवित्रं सोम गच्छमि ।

दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ।

(५८६) ९।६७।१९ (विश्वामित्रो गाथिनः । पवमानः सोमः )

(४४७) ९।६२।३० (जमदग्निर्भागवः । पवमान सोमः)  
सोमः पवित्रम् ।

दधत्— ।

- ( ५६४ ) ९।६६।२७ ( शतं वैखानसा । पवमानः सोम )  
दधन् ।
- [ १६६ ] ९।२१।१ ( अमित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोम )  
मत्परास. स्वर्विदः ।
- ( १०१३ ) ९।१०७।१४ ( सप्तर्षयः । पवमानः सोमः )
- [ १७५ ] ९।२२।३ ( अमित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
एते पूता विपश्चित्त. सोमामो दध्याशिरः ।
- ( ९५५ ) ९।१०१।१२ ( मनु भावरणः । पवमानः सोमः )
- [ " ] ९।२२।३ = ( इन्द्र १८ ) १।५।५ = ( इन्द्रः २२३८ ७. ३२।४  
= १।१३७।२ ( परच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ )  
= ५।५१।७ ( स्वस्त्यात्रेयः । विश्वे देवाः )  
सोमामो दध्याशिरः ।
- [ १८० ] ९।२३।१ = ( १३७ ) ९।१७।१ सोमा असृग्प्रमाशय ।
- [ " ] ९।२३।१ ( अमित. काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
आभि विश्वानि काव्या ।
- ( ४४२ ) ९।६२।२५ ( जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोम )
- ( ७२ ) ९।६३।२५ ( निरुवि काश्यपः । पवमानः सोम )
- ( ५३८ ) ९।६६।१ ( शत वैखानसा । पवमानः सोमः )
- [ १८३ ] ९।२३।४ ( अमित. काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोम )  
आभि सोमास आयबः पवन्ते मद्य मदम् ।  
आभि कोश मधुश्चुनम् ।
- ( १०१३ ) ९।१०७।१४ ( सप्तर्षयः । पवमानः सोमः )  
आभि सोमाम ... ।
- ( २६१ ) ९।३६।२ ( प्रभृवमुराङ्गिरस । पवमानः सोमः )  
आभि कोश मधुश्चुनम् ।
- [ १८४ ] ९।२३।५ सोमो अर्षति घर्णसिः ।
- ( २६७ ) ९।३७।२ = ( २७७ ) ९।३८।६ हरिरर्षति ।
- [ १८५ ] ९।२३।६ = ( इन्द्र २३४४ ) ८।९५।९  
इन्द्रो ( शुद्धो ) वाजं सिषासति ।
- [ १८६ ] ९।२३।७ = ( इन्द्र २४०२ ) ८।९२।६  
अस्य पीत्वा मदाना ।
- [ १८७ ] ९।२४।१ ( असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोम )  
प्र पवमानास इन्द्रवः ।  
श्रीणाना अण्डु मृज्जत ।
- ( ५७४ ) ९।६७।७ ( गौतमो राहूगणः । पवमानः सोम )  
पवमानास इन्द्रवः ।
- ( ९५१ ) ९।१०१।८ ( नहुषो मानवः । पवमानः सोम )  
पवमानास इन्द्रवः ।
- ( ५३३ ) ९।६५।२६ ( मृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।  
पवमानः सोमः )

- प्र.. ..... ।  
श्रीणाना अण्डु मृज्जत ।
- [ १८८ ] ९।२४।२ = ( इन्द्रः २७६ ) ८।६।३४ = ( इन्द्रः ३२८ ) ८।१३।८  
आपो न प्रवता यतीः ।
- [ " ] ९।२४।२ = ( ४४ ) ९।६।४ पुनाना इन्द्रमाशत ।
- [ १८९ ] ९।२४।३ ( असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः )  
नृभिर्यतो वि नीयसे ।
- ( ९३४ ) ९।९२।८ ( रेभसूनु काश्यपो । पवमानः सोम )
- [ १९१ ] ९।२४।५ = ( इन्द्र २४२१ ) ८।९२।२५ अरमिन्द्रस्य धाक्त्रो
- [ १९२ ] ९।२४।६ = ( अग्नि १९२० ) १।१४।३  
शुचि पावको अद्भुतः ।
- [ १९३ ] ९।२४।७ = ( १९२ ) ९।२४।६ शुचिः पावक उच्यते ।
- [ " ] ९।२४।७ ( अमित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोम )  
देवावीरघांसहा ।
- ( २१७ ) ९।२८।६ ( प्रियमेध आङ्गिरस । पवमानः सोमः )
- ( ४०६ ) ९।६१।१९ ( अमहीयुराङ्गिरस । पवमानः सोमः )
- [ १९५ ] ९।२५।२ ( दृक्हच्युत आगरस्यः । पवमानः सोमः )  
आभि योनिं कनिक्रदत् ।
- ( २६७ ) ९।३७।२ ( रहूगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )
- [ १९६ ] ९।२५।३ ( दृक्हच्युत आगरस्यः । पवमानः सोमः )  
शोभते ... योनावधि ।  
वृत्रहा देववीतमः ।
- ( २१४ ) ९।२८।३ ( प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
शुभायतेऽधि योनौ ।  
वृत्रहा देववीतमः ।
- [ १९७ ] ९।२५।४ = ७।५५।१ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वास्तोषपतिः )  
विधा रूपाण्यविशान् ।
- [ " ] ९।२५।४ ( दृक्हच्युत आगरस्यः । पवमानः सोमः )  
पुनानो याति हर्यतः ।
- ( ३०४ ) ९।४३।३ ( मेभ्यार्तिथिः काण्वः । पवमानः सोमः )  
पुनानो याति हर्यतः ।
- [ १९९ ] ९।२५।६ ( दृक्हच्युत आगरस्यः । पवमानः सोम )  
= ( ३४४ ) ९।५०।४ ( उच्यथ आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
आ पवस्व मदिन्तम पवित्र धारया कवे ।  
अकंस्य योनिमासदम् ।
- [ २०४ ] ९।२६।५ ( इभ्रवाहो दार्ढ्युतः । पवमानः सोमः )  
हरिं हिन्वन्त्यद्विभिः ।
- ( २२८ ) ९।३०।५ ( बिन्दुराङ्गिरसः पवमानः सोमः )
- ( २३७ ) ९।३१।२ ( श्यावाश्व आत्रेयः । पवमानः सोमः )

- (२७३) ९।३८।२ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)  
 (२८३) ९।३९।६ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 (३४३) ९।५०।३ (उच्यथ आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)  
 (५१५) ९।६५।८ (सृगुर्वारुणिर्जमदभिर्भार्गवो वा ।  
 पवमानः सोमः )  
 [२०५] ९।२६।६ ( इभ्रमवाहो वार्द्धच्युतः । पवमानः सोमः )  
 तं हिन्वन्ति ।  
 इन्द्रमिन्द्राय मरुतम् ।  
 (३५९) ९।५३।४ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)  
 तं हिन्वन्ति .. ।  
 इन्द्रमिन्द्राय मरुतम् ।  
 (४६४) ९।६३।१७ (निःरुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)  
 इन्द्रमिन्द्राय मरुतम् ।  
 [२०८] ९।२७।३ = (१२३) ९।१५।३ एष नृभिः (हितो) विं नीयते ।  
 [२११] ९।२७।६ ( नृमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 पुनान इन्द्रमिन्द्रमा ।  
 (५६५) ९।६६।२८ (शत वैखानसाः । पवमानः सोमः)  
 [२१२] ९।२८।१ = (१३६) ९।१६।८ अद्यो वारवि धावामि ।  
 [२१३] ९।२८।२ = (२९) ९।३९ सोमो (देवो) देवभ्यः सुतः ।  
 [२१४] ९।२८।३ = (१९६) ९।२५।३ वृत्रहा देववीतमः ।  
 [२१५] ९।२८।४ ( प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 अभि द्रोणानि धावति ।  
 (२७१) ९।३७।६ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)  
 [२१६] ९।२८।५ ( प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 पवमानो विचर्षणि ।  
 (३८४) ९।६०।१ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः )  
 पवमानं विचर्षणिम् ।  
 [२१७] ९।२८।६ = (१०४) ९।१३।२ सोमः पुनानो अर्षति ।  
 [ " ] ९।२८।६ = (१९३) ९।२४।७ देवावीरघनसहा ।  
 [२२०] ९।२९।३ (नृमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 पुनानाय प्रभूवसो ।  
 वर्धो समुद्रमुक्थम् ।  
 (२५९) ९।३५।६ ( प्रभूवसुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 पुनानस्य प्रभूवसोः ।  
 (४०२) ९।६१।१५ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 वर्धो समुद्रमुक्थम् ।  
 [२२१] ९।२९।४ = (१) ९।१।१ पवस्व सोम धारया ।  
 [२२३] ९।२९।६ ( नृमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 शुमन्तं शुष्ममा भर ।  
 (९८९) ९।१०६।४ (चक्षुर्मानवः । पवमानः सोमः)

- शुमन्तं शुष्ममा भरा स्वर्विदम् ।  
 [२२४] ९।३०।१ ( विन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 पुनानो वाचमिष्यति ।  
 (५०२) ९।६४।२५ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः )  
 पुनानो वाचमिष्यति ।  
 [२२५] ९।३०।२ ( विन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 इन्द्रुर्हियान सोतृभिः ।  
 (१०२५) ९।१०७।२६ (रातर्ष्यः पवमानः सोमः )  
 [२२६] ९।३०।३ = (१) ९।१।१ पवस्व सोम धारया ।  
 [२२७] ९।३०।४ ( विन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 पवमानो अभिष्यदन् ।  
 (३४०) ९।४९।५ ( कर्वाभीर्षवः । पवमानः सोमः )  
 [ " ] ९।३०।४ = (२१) ९।३।१ अभि द्रोणान्यामदम् ।  
 [२२८] ९।३०।५ = (२०५) ९।२६।५  
 [ " ] ( विन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 इन्द्रमिन्द्राय पीतये ।  
 (३१४) ९।४५।२ (अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 (३४५) ९।५०।५ (उच्यथ आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 (४८९) ९।६४।१२ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः )  
 [२२९] ९।३०।६ (विन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 सुनोता मधुमत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे ।  
 (३४७) ९।५१।२ (उच्यथ आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 सोममिन्द्राय वज्रिणे ।  
 सुनोता मधुमत्तमम् ।  
 (८८२ २२४२) ७।३२।८ सुनोता सोमपात्रे ।  
 सोममिन्द्राय वज्रिणे ।  
 [२३२] ९।३१।३ (गोतमो राहृगणः । पवमानः सोमः )  
 तुभ्यं तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ।  
 (४४४) ९।६२।२७ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः )  
 नृभ्येमा ।  
 तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ।  
 [२३३] ९।३१।४ = (१११६) १।९।१६  
 [२३५] ९।३१।६ (गोतमो राहृगणः । पवमानः सोमः )  
 इन्द्रो सखिन्वमुद्रमभि ।  
 (५५१) ९।६६।४ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः )  
 [२३७] ९।३१।२ = (२०४) ९।२६।५  
 [ " ] ९।३२।२ (श्यावाश्व आत्रेयः । पवमानः सोमः )  
 (२७३) ९।३८।२ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 एतं (९।३१।२ आदीं) त्रितस्य योषणो हरि  
 हिन्वन्त्यद्विभिः ।

इन्दुमिन्द्राय पीतये ।

(३०३) ९।४३।२ ( सेव्यातिथिः काण्व. । पवमानः सोमः )

इन्दु— ।

(५१५) ९।६५।८ ( भृगुवर्षाणिजमदग्निर्भार्गवो वा ।  
पवमानः सोमः )

हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।

इन्दुमिन्द्राय ।

[२३०] ९।३२।४ = (अग्निः १०७६) ६।१६।३५  
सीदन्नुत्तस्य योनिमा ।

[२४०] ९।३२।५ अभि गावो अनुषत ।

(२४६) ९।३३।५ अभि ब्रह्मानुषत ।

[२४१] ९।३३।६ = (इन्द्रः २०९८) ६।४६।९  
मघवस्यश्च मघा च ।

[२४३] ९।३३।२ (त्रित आण्यः । पवमानः सोमः )

शुक्रा ऋतस्य धारया ।

वाज गोमन्तमक्षरन् ।

(४६१) ९।६३।१४ (नि ऋचि काश्यप. । पवमानः सोमः )

[२४४] ९।३३।३ = (इन्द्रः ३२३२) ५।५१।७

(स्वरत्यात्रेयः । इन्द्रवायु )

सुता इन्द्राय वायवे ।

[ " ] ९।३३।३ = ८।४१।१ (नाभाक. काण्व । वरुणः )

वरुणाय मरुच्य ।

[२४६] ९।३३।५ = (२४०) ९।३३।५

[ " ] ९।३३।५ = (अग्निः १९२४) १।१४२।७

= (अग्निः १९६९) ५।५।६

= १।०।५।९।८ (बन्धुः श्रुतबन्धुः० । यावाप्रथिवी )

[२४७] ९।३३।६ (त्रित आण्यः । पवमानः सोमः )

गय अस्मभ्य सोम विश्वतः ।

आ पवस्व सहस्रिणः ।

(२८६) ९।४०।३ (बृहन्मतिरागिरस. । पवमानः सोमः )

रथि . अस्मभ्य ... ।

आ पवस्व सहस्रिणम् ।

(४२९) ९।६२।१२ (जमदग्निर्भार्गव । पवमानः सोमः )

आ पवस्व सहस्रिणं रथिम् ।

(४४८) ९।६३।१ (निऋचि काश्यप. । पवमानः सोमः )

आ पवस्व सहस्रिण रथिम् ।

(५२८) ९।६५।२१ ( भृगुवर्षाणिजमदग्निर्भार्गवो वा ।  
पवमानः सोमः )

अस्मभ्य सोम विश्वतः ।

आ पवस्व सहस्रिणम् ।

[२४८] ९।३४।१ (त्रित आण्य । पवमानः सोमः )

इन्दुर्हिन्वानो अर्षति ।

(५७१) ९।६७।४ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः )

[२४९] ९।३४।२ = (इन्द्रः ३२३२) ५।५१।७

( रवस्त्यात्रेय । इन्द्रवायु )

[ " ] ९।३४।२ = ८।४१।१ (नाभाक. काण्व. । वरुणः )

[२५०] ९।३४।३ सुवन्ति सोममद्रिभिः ।

(इन्द्रः १०३) ८।१।१७ सोता हि सोममद्रिभिः ।

[२५५] ९।३५।२ इन्दो समुद्रमीङ्ख्य ।

(३५३) ९।५२।४ इन्दो न दानमीङ्ख्य ।

[ " ] ९।३५।२ ( प्रभृवसुरादिरस । पवमानः सोमः )

समुद्रमीङ्ख्य पवस्व विश्वमेजय ।

(४४३) ९।६२।२६ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः )

समुद्रिया... इरयन् ।

पवस्व विश्वमेजय ।

[२५६] = ९।३५।३ (अग्नि ४०२) २।८।६ अभि ष्याम पृतन्यतः ।

[२५७] ९।३५।४ = (१००) ९।१२।६

प्र वाज ( च ) मिन्दुरिष्यति ।

[२५८] ९।३५।६ = (२२०) ९।२९।३

।२६१] ९।३६।२ = (११) ९।२।१ पवस्व देववीरति ।

[ " ] ९।३६।२ = (१८३) ९।२३।४ अभि कोशं मधुश्चुतम् ।

[२६३] ९।३६।४ ( प्रभृवसुरादिरस. । पवमानः सोमः )

शुम्भमान ऋतायुभिर्मृज्यमानो गभस्त्योः ।

पवते वारे अच्यये ।

(४८२) ९।६४।५ ( कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः )

शुम्भमानो ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः ।

पवन्ते वारे अच्यये ।

[ " ] ९।३६।४ = (१६४) ९।२०।६ मृज्यमानो गभस्त्योः ।

[२६४] ९।३६।५ ( प्रभृवसुरादिरस. । पवमानः सोमः )

सा विश्वा दाशुषे वसु सोमो दिव्यानि पार्थिवा ।

पवतामान्तरिक्ष्या ।

(४८३) ९।६४।६ ( कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः )

ते विश्वा दाशुषे वसु सोमो दिव्यानि पार्थिवा ।

पवन्तामान्तरिक्ष्या ।

[२६६] ९।३७।१ = (१३२) ९।१६।४ = (१३९) ९।१७।३

सोमः पवित्रे अर्षति ।

[२६७] ९।३७।२ ( रङ्गण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

हरिरर्षति धर्गसिः ।

अभि योनि कनिक्कटन ।

[२७७] ९।३८।६ ( रङ्गण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

हरि— ।

कन्दन योनिमभि ।

[२६७] ९।३७।२ = (१२५) ९।२५।२

[२६८] ९।३७।३ ( रङ्गण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

पवमानो वि धावति ।

(०.७३) ९।१०३।६ ( हित आण्य । पवमानः सोमः )

व्यानशिः पवमानो— ।

[२७०] ९।३७।५ ( रङ्गण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

सोमो वाजमिवासत् ।

(४३३) ९।६२।१६ ( जमदग्निर्गोत्रः । पवमानः सोमः )

[२७१] ९।३७।६ = (२१५) ९।२८।४ अभि द्रोणानि धावति ।

[२७२] ९।३८।१ = (१५९) ९।२०।१ अद्यो वारेभिरर्षति ।

[ " ] ९।३८।१ गच्छन् वाज सहस्रिणम् ।

(३७२) ९।५७।१ अन्धा वाज सहस्रिणम् ।

[२७३] ९।३८।२ = (२३७) ९।३२।२

[ " ] ९।३८।२ = (२०४) ९।२६।५

[२७४] ९।३८।३ = (१७) ९।२।७

[२७५] ९।३८।४ ( रङ्गण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

इयेनो न विक्षु सीदति ।

(३७४) ९।५७।३ (अवत्सार काश्यपः । पवमानः सोमः)

इयेनो न वंसु पीदति ।

(७६२) ९।८६।३५

( अकृष्टामाषादयस्त्रयः । पवमानः सोमः )

इयेनो न वंसु कलशेषु सीदति ।

[२८०] ९।३९।३ ( बृहन्मतिर्गाङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

सुन एति पवित्र आ ।

(३१०) ९।४४।३ ( अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

(३९५) ९।६१।८ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

[२८३] ९।३९।६ = (२०४) ९।२६।५

[ " ] ९।३९।६ = (११२) ९।१३।२

[२८६] ९।४०।३ = (२४७) ९।३३।६

[२८७] ९।४०।४ विदाः सहस्रिणीरिषः ।

(३९०) ९।६१।३ क्षरा सहस्रिणीरिष ।

[२८८] ९।४०।५ = (अग्निः २०) १।१२।११

स नः पुमान (स्तवान्) आ भर ।

[२८९] ९।४०।६ ( बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

पुनान इन्दवा भर सोम द्विबर्हस रथिम् ।

(३७५) ९।५७।४ (अवन्मारः काश्यपः । पवमानः सोमः)

पुनान इन्दवा भर ।

(५०३) ९।६४।२६ ( कश्यपो मार्गच । पवमानः सोमः )

पुनान इन्दवा भर ।

(९३६) ९।१००।२ ( रेमसुन काश्यपो । पवमानः सोमः )

[ " ] ९।४०।६ = (३७) ९।४।७

सोम द्विबर्हस रथिम् ।

[२९१] ९।४१।२ साक्षीयो दस्युमघ्नतम् ।

( इन्द्रः १०८१ ) १।७५।३ महावान दस्युमघ्नतम् ।

[२९३] ९।४१।४ ( मे यानिथिः काण्वः । पवमानः सोमः )

पवस्व सर्षामिप गोमदिन्द्रो हिरण्यवत् ।

अश्ववद्वाजवत् सुत ।

(३९०) ९।६१।३ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

गोमदिन्द्रो हिरण्यवत् । सहस्रिणीरिषः ।

(३०१) ९।४२।६ ( मे यानिथिः काण्वः । पवमानः सोमः )

गोमघ्नः सोम अश्ववद्वाजवत् सुतः ।

पवस्व बृहतीरिषः ।

[२९७] ९।४२।२ = (२०--३०) ९।३।९--१०

[२९८] ९।४२।३ = (१०६) ९।१३।३

पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रराजसः ।

[२९९] ९।४२।४ = (१४०) ९।१७।४

पवित्रे परि पिच्यते ।

[३००] ९।४२।५ ( मे यानिथिः काण्वः । पवमानः सोमः )

अभि विश्वानि वार्या ।

(५४१) ९।६६।४ ( अन्तं वैखानसा । पवमानः सोमः )

पवस्व अभि विश्वानि वार्या ।

[ " ] ९।४२।५ = (१०४) ९।१३।१

[३०१] ९।४२।६ = (२९३) ९।४१।४ अश्ववद् वाजवत् सुत ।

[ " ] ९।४२।६ = (१०७) ९।१३।४ पवस्व बृहतीरिषः ।

[३०३] ९।४३।२ = (२३७) ९।३२।२

[ " ] ९।४३।३ = (३०४) ९।२५।४

[३०५] ९।४३।४ = (१५७) ९।१९।६

[ " ] ९।४३।४ ( मे यानिथिः काण्वः । पवमानः सोमः )

पवमान विदा रथिमस्मभ्य सोम मृथियम् ।

(४५८) ९।६३।११ ( निःरुविः काश्यपः । पवमानः सोमः )

सोम दुप्रम् ।

[ " ] ९।४३।४ इन्द्रो सहस्रवर्चसम् ।

(५०२) ९।६४।२५ = (९१५) ९।९८।१ इन्द्रो सहस्रभर्गमम् ।

[३०७] ९।४३।६ = (१०६) ९।१३।३

[ " ] ९।४३।६ = (अग्नि ८५८) ५।१३।५

- (इन्द्रः २३७५) ८१८१२ = (अग्निः १२८१) ८१३१२  
 [३०८] ९१४४१ प्र ण इन्द्रो महे तन ।  
 (५५०) ९१६६१३ महे रणे ।  
 [३०९] ९१४४२ = (१०२) ९१२२८ विप्रस्य धारया कविः ।  
 [३१०] ९१४४३ = (२८०) ९३९३  
 [३१२] ९१४४५ ( अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 स नो भगाय वायवे ।  
 (३९६) ९१६१९ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)  
 [३१४] ९१४५१ = (२२८) ९३०५  
 [३१५] ९१४५२ = (इन्द्र ७) ११४४  
 देवान् (यन्ते) सविभ्य आ वरम् ।  
 [३१६] ९१४५३ ( अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 वि नो राये दुरो वृषि ।  
 (४८०) ९१६४३ ( कश्यपो मारीच । पवमानः सोमः )  
 [३१७] ९१४५४ (अग्निः १४७१) ८१०२९  
 [३१८] ९१४५५ = (४५) ९६५  
 [३१९] ९१४५६ ( अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 तथा पवस्व धारया यया ।  
 (३३७) ९१४९२ (कविर्भागव । पवमानः सोमः )  
 [३२०] ९१४६१ ( अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 असृग्न् देववीतये ।  
 (५८४) ९१६७१७ ( जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः )  
 [३२२] ९१४६३ = (इन्द्रः ८३) ११६६३ एते एमे सोमास इन्द्रव ।  
 [३२४] ९१४६५ ( अयाम्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )  
 पवस्व .. महः ।  
 अस्मभ्य सोम गानुवित् ।  
 (५२०) ९१६५१३ (सृगुर्वाङ्गिर्जमदग्निर्भागवो वा ।  
 पवमानः सोमः )  
 महीम् पवस्व ।  
 अस्मभ्यं ।  
 [३२५] ९१४६६ = (१२७) ९१५७ एतं सृजन्ति मर्त्यम् ।  
 [३३७] ९१४९२ = (३१२) ९१४५६  
 [३४०] ९१४९५ = (२२७) ९३०४  
 [३४३] ९१५०३ = (५५) ९१७६  
 [ " ] ९१५०३ = (२०४) ९१०६५  
 [ " ] ९१५०३ ( उच्यथ्य आगिरसः । पवमानः सोमः )  
 हिम्बन्ति ।  
 पवमानं मधुश्चुतम् ।  
 (५७६) ९१६७९ (गोतमो राहृगणः । पवमानः सोमः)

- [३४४] ९१५०४ = (१२९) ९१२५६  
 [३४५] ९१५०५ ( उच्यथ्य आगिरसः । पवमानः सोमः )  
 स पवस्व मदिन्तम ।  
 (९३२) ९१९९६ (रेभसून् काश्यपो । पवमानः सोमः)  
 स पुनानो मदिन्तम ।  
 [ " ] ९१५०५ = (२२८) ९३०५  
 [३४६] ९१५१२ = (१३१) ९१६३३ = ११२८९  
 (द्युनःशेष आजीगर्ति । प्रजापति हरिश्चन्द्रः  
 चर्म सोमो वा)  
 [३४७] ९१५१२ = (२२९) ९३०६  
 = (इन्द्रः २२४२) ७३२१८  
 [३४८] ९१५१३ ( उच्यथ्य आगिरसः । पवमानः सोमः )  
 पवमानस्य मरुत ।  
 (५०१) ९१६४२४ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः )  
 [३५०] ९१५१५ = (४) ९११४  
 [३५१] ९१५२१ = (४३) ९६३  
 [३५२] ९१५२२ = (५५) ९१७६  
 [३५३] ९१५२३ = (२५५) ९३५२  
 [३५४] ९१५२४ ( उच्यथ्य आगिरसः । पवमानः सोमः )  
 इन्द्रवेषां पुरुहूत जनानाम् ।  
 यो अस्मो आदिदेशति ।  
 (५०४) ९१६४२७ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः )  
 एषां पुरुहूत जनानाम् ।  
 (इन्द्रः २७८६) १०१३४१ (मान्धाता यौवनाश्वः इन्द्रः)  
 यो अस्मो आदिदेशति ।  
 [३५५] ९१५२५ ( उच्यथ्य आगिरसः । पवमानः सोमः )  
 पवस्व महयद्रथिः ।  
 (५६८) ९१६७१ (भरद्वाजो बार्हृरथ्यः । पवमानः सोमः)  
 [३५९] ९१५३४ = (४६४) ९६३१७  
 हरिं नदीषु वाजिनम् । इन्द्रुमिन्द्राय मत्सरम् ।  
 [ " ] ९१५३४ = (२०५) ९१२६६  
 [३६२] ९१५४३ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)  
 सोमो देवो न सूर्यः ।  
 (४६०) ९१६३१३ (निष्कृतिः काश्यपः । पवमानः सोमः)  
 [३६४] ९१५५१ = (३२) ९१४२ = (इन्द्र ६५८) ८७८८  
 [३६८] ९१५६१ = (१३२) ९१६४  
 [ " ] ९१५६१ = (१३९) ९१७३  
 [३७६] ९१५६४ = (९८९) ९११०६४  
 = (इन्द्रः १७८५) ८१९१३  
 [३७२] ९१५७१ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)

- प्र ते धारा भस्मश्रवो दिवो न यान्ति वृष्टयः ।  
(५६५) ९।६१।२८ ( जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः )  
प्र ते दिवो न वृष्टयो धारा यन्त्यस्मश्रतः ।  
[३७४] ९।५७।३ ( अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः )  
स ममृजान आयुभिः ।  
(५६०) ९।६६।२३ ( शत वंखानमाः । पवमानः सोमः )  
[ " ] ९।५७।३ = (२७५) ९।३८।४  
[३७५] ९।५७।४ = (२८९) ९।४०।६  
[३७६ ७९] ९।५८।१, १-४ तरत् स मन्दी धावति ।  
[३८४] ९।६०।१ = (२१६) ९।२८।५  
[३८५] ९।६०।२ अथो सहस्रभर्णसम् ।  
(५०३) ९।६४।२६ उतो सहस्रभर्णसम् ।  
[३८६] ९।६०।३ ( अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः )  
कलशाँ । इन्द्रस्य हाद्याँविशन् ।  
(७४६) ९।८६।१९, ( सिकता निवारः । पवमानः सोमः )  
कलशाँ .. इन्द्रस्य हाद्याँविशन् मर्नाभिभिः ।  
[३८८] ९।६१।१ = (इन्द्रः ९४९) १।८४।१३  
[३९०] ९।६१।३ = (२८७) ९।४०।४ = (२९३) ९।४१।४  
[३९१] ९।६१।४ ( अमहीयुराट्ठिरसः । पवमानः सोमः )  
सखिस्वमा वृणीमहे ।  
(५१६) ९।६५।९ ( मृगुवार्णिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।  
पवमानः सोमः )  
(इन्द्रः २७८३) १०।१३३।६ ( मुदाः पैजवनः । इन्द्रः )  
सखिस्वमा रभामहे ।  
[३९३] ९।६१।६ = (२८८) ९।४०।५  
= (अग्नि २०) १।१२।११ = ( इन्द्रः १७९२ ) ८।२४।३  
[३९४] ९।६१।७ = (१२८) ९।१५।८  
[३९५] ९।६१।८ = (२८०) ९।३९।३  
[३९६] ९।६१।९ = (३१२) ९।४४।५  
[३९८] ९।६१।११ एता विश्वान्यर्य आ ।  
(अग्निः १७१६) १०।१९१।१ अने विश्वान्यर्य आ ।  
[ " ] ९।६१।११ = (इन्द्रः २३४१) ८।२५।६  
[३९९] ९।६१।१२ = ८।४१।१ ( नाभाकः काण्वः । वरुणः )  
[४०१] ९।६१।१४ = (इन्द्रः ३३८८) ८।१३।१८  
= (इन्द्र २४१७) ८।७२।२१ = ८।६९।११ उत्तरार्धः  
(प्रियमेध आडिगरसः । विश्वे देवाः )  
[४०२] ९।६१।१५ = (इन्द्र ५३७) ८।५४ (वाल०६) । ७  
= (मरुत् ४८) ८।७३ ( पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः )  
[ " ] ९।६१।१५ = (२२०) ९।२९।३  
[४०५] ९।६१।१८ = (अग्निः १९८३)

- ( असितः काश्यपो देवलो वा । आप्रासूक्तं [इळ.] )  
[४०६] ९।६१।१९ = (इन्द्रः १८२४) ८।४६।८  
= (इन्द्र २४१३) ८।७२।१७  
[ " ] ९।६१।१९ = (१९३) ९।२४।७  
[४०८] ९।६१।२१ ( अमहायुराट्ठिरसः । पवमानः सोमः )  
सीदच्छयेनो न योनिमा ।  
(५२६) ९।६५।१९ ( मृगुवार्णिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।  
पवमानः सोमः )  
[४०९] ९।६१।२२ = (इन्द्र १३३८) ३।३७।५  
( विश्वामित्रो गार्थिनः । इन्द्रः )  
[४१२] ९।६१।२५ ( अमहायुराट्ठिरसः । पवमानः सोमः )  
अपन्नन् पवते मृष्टो ।  
(४७१) ९।६३।२४ ( निर्ऋति काश्यपः । पवमानः सोमः )  
अपन्नन् पवसे मृष्टः ।  
[ " ] ९।६१।२५ = (१२१) ९।१५।१  
[४१५] ९।६१।२८ = (१११) ९।१३।८  
[४१६] ९।६१।२९ ( अमहायुराट्ठिरसः । पवमानः सोमः )  
अस्य ते सख्ये वयः ।  
(५५१) ९।६६।१४ ( शत वंखानमाः । पवमानः सोमः )  
[ " ] ९।६१।२९ = (इन्द्रः ४१२) १।८।४  
= (इन्द्र ३१०७) ८।४०।७ (नाभाकः काण्वः । इन्द्राभाः)  
[४१८] ९।६२।१ = (५७४) ९।६७।७  
= (इन्द्र ३२१७) १।१३।६  
[४२०] ९।६२।३ ( जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः )  
अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।  
(५५९) ९।६६।२२ ( शतं वंखानमाः । पवमानः सोमः )  
पवमानो ... अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।  
(७२२) ९।८५।७ ( वेनो भार्गवः । पवमानः सोमः )  
पवमाना अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।  
[४२१] ९।६२।४ ( जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः )  
असाव्यंशुः ।  
इयेनो न योनिमासदत् ।  
(७०१) ९।८३।१ ( वसुभार्गिद्वाजः । पवमानः सोमः )  
असावि सोमो . ।  
इयेनो न योनि घृतवन्तमासदम् ।  
[४२५] ९।६२।८ तिम्रो रोमाण्यव्यया ।  
(५७१) ९।६७।४ = (१००९) ९।१०७.१०  
तिम्रो वाराण्यव्यया ।  
[४२६] ९।६२।९ = (इन्द्रः १७८५) ९।१३ = (९८९) ९।१०६।४  
[४२९] ९।६२।१२ = (२४७) ९।३३।६



[४२९] ९।६२।१२ = (२५१) ८।६।९ = (४५९) ९।६३।१२

[४३०] ९।६२।१३ = (३७४) ९।५७।३

[४३१] ९।६२।१४ = (इन्द्रः ४३१) ८।३४।७

[ " ] ९।६२।१४ = (४७) ९।६।७

[४३३] ९।६२।१६ = (२७०) ९।३७।५

[४३५] ९।६२।१८ हवि हिनोत वाजिनम् ।

(अग्निः १८६३) ०।१८८।१ (अयं आग्नेयः। जातवेदा अग्निः )

अथं हिनोत वाजिनम् ।

[४३६] ९।६२।१९ = (१३४) ९।१६।६

[४४०] ९।६२।२३ = (५३) ९।७।४

[४४१] ९।६२।२४ = ५।७९।८ ( सत्यश्रवा आग्नेयः । उपाः )

[४४२] ९।६२।२५ = (१८०) ९।२३।१

[४४३] ९।६२।२६ = (२५५) ९।३५।२

[४४४] ९।६२।२७ = (२३२) ९।३।३

तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ।

[४४५] ९।६२।२८ = (३७२) ९।५७।१

[४४७] ९।६२।३० = (१६५) ९।२०।७

[४४८] ९।६३।१ = (२४७) ९।३३।६

[४४९] ९।६३।२ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

इन्द्राय मत्सन्तितमः । चमृषवा नि षीदसि ।

(९३४) ९।९९।८ (रेभमून् काश्यपो । पवमानः सोमः )

इन्द्राय मत्सन्तितमश्चमृषवा नि षीदसि ।

[४५१] ९।६३।४ = (१३७) ९।१७।१

[ " ] ९।६३।४ = (२४३) ९।३३।२

[४५२] ९।६३।५ = (११२) ९।१३।९

[४५४] ९।६३।७ = (इन्द्रः २३६५) ८।९८।२

[४५५] ९।६३।८ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे ।

(५२३) ९।६५।१६ ( भृगुर्वाणिर्जमदग्निभार्गवो वा ।

पवमानः सोमः )

[४५७] ९।६३।१० = (२०५) ९।२६।६

[४५८] ९।६३।११ = (१५७) ९।१९।६

[ " ] ९।६३।११ = (३०५) ९।४३।४

[४५९] ९।६३।१२ = (इन्द्रः २५१) ८।६।९ = (४२९) ९।६२।१२

[ " ] ९।६३।१२ = (४) ९।१।४

[४६०] ९।६३।१३ = (३६२) ९।५४।३

[४६१] ९।६३।१४ = (२३७) ९।३२।२

[४६२] ९।६३।१५ = (इन्द्रः १८) १।५।५ = (१७५) ९।२२।३

= (४६२) ९।६३।१५ = (२५५) ९।२०।१।१२

= १।१३।७।२ (परुच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ)

= ५।५१।७ ( स्वस्त्याग्नेयः । विश्वे देवाः )

= (इन्द्रः २२३८) ७।३२।४

[४६३] ९।६३।१६ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

गयं अर्षं पवित्रं भा । मद्यो यो देववीतमः ।

(४८९) ९।६४।१२ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)

स नो अर्ष — ।

[४६४] ९।६३।१७ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

तमी मृजन्त्यायवः ।

(१०१६) ९।१०७।१७ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

[ " ] ९।६३।१७ = (३५९) ९।५३।४ = (२०५) ९।२६।६

[४६६] ९।६३।१९ = (९५) ९।१२।१

[४६७] ९।६३।२० = (१२७) ९।१५।७

[ " ] ९।६३।२० = (१४३) ९।१७।७

[४७०] ९।६३।२३ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

प्रियः समुद्रमा विशा ।

(५०४) ९।६४।२७ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)

[४७१] ९।६३।२४ = (४१२) ९।६१।२५

[४७२] ९।६३।२५ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

पवमाना असृक्षत ।

(१०२४) ९।१०७।२५ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

[ " ] ९।६३।२५ = (१८०) ९।२३।१

[४७५] ९।६३।२८ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

पुनानः सोम धारय ।

(१००३) ९।१०७।४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

[ " ] ९।६३।२८ = (अग्निः १०७०) ६।१६।२९

( भरद्वाजो बार्हरस्पत्यः । अग्निः )

[४७६] ९।६३।२९ (निःस्त्वः काश्यपः । पवमानः सोमः)

अभ्यर्षं कनिऋदत् ।

द्युमन्तं शुभ्रमुत्तमम् ।

(५७०) ९।६७।३ (भरद्वाजो बार्हरस्पत्यः । पवमानः सोमः)

[४७७] ९।६३।३० = (२६४) ९।३६।५

[४७९] ९।६४।२ = (इन्द्रः २१९) ८।३३।१०

[४८०] ९।६४।३ = (३१६) ९।४५।३

[४८२] ९।६४।५ = (२६३) ९।३६।४

[ " ] ९।६४।५ = (१६४) ९।२०।६

[४८३] ९।६४।६ = (२६४) ९।३६।५

[४८६] ९।६४।९ = (३९) ९।४।९

[ " ] ९।६४।९ = (३६२) ९।५४।३

[४८८] ९।६४।११ = (अग्निः १०७६) ६।१६।३५

= (२३९) ९।३२।४

- [४८९] ९।६४।१२ = (४६३) ९।६३।१६  
 [ " ] ९।६४।१२ = (२२८) ९।३०।५  
 [४९४] ९।६४।१७ (कश्यपो मार्गचः । पवमानः गोम )  
 यथा समुद्रमिन्द्रवः ।  
 भगमन्तृतस्य योनिमा ।  
 (५४९) ९।६६।१२ (अत वैखानगाः । पवमानः गोम, )  
 अच्छा समुद्र ।  
 भगमन्तृत ।  
 [४९९] ९।६४।२२ (कश्यपो मार्गचः । पवमानः गोम )  
 इन्द्रायैन्दो ... पवस्व मधुमत्तम ।  
 (१०२६) ९।१०८।१ (गोविर्वाति जातयः । पवमानः गोम, )  
 पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम ।  
 (१०४०) ९।१०८।१५ (गोविर्वाति जातयः । पवमानः गोम )  
 इन्द्राय सोम ।  
 पवस्व मधुमत्तमः ।  
 [ " ] ९।६४।२२ = (११२४) ३।६२।१३  
 (विश्वामित्रो गायिनः । गोम )  
 [५०१] ९।६४।२४ = (३४८) ९।५।३  
 [५०२] ९।६४।२५ = (१३६) ९।१६।८ = (२२४) ९।३०।१  
 [ " ] ९।६४।२५ (कश्यपो मार्गचः । पवमानः गोमः )  
 इन्दो सहस्रभर्णसम् ।  
 (९१५) ९।९८।१ (अम्बगणो वार्षागिरः, ऋजिष्वा  
 भारद्वाजश्च । पवमानः गोमः )  
 [५०३] ९।६४।२६ उतो सहस्रभर्णसम् ।  
 [ " ] ९।६४।२६ = (२८९) ९।४०।६  
 [५०४] ९।६४।२७ = (३५४) ९।५२।४ = (४७०) ९।६३।२३  
 [५०५] ९।६४।२८ = १।१३७।१  
 (पृच्छेपो देवोदागिः । मित्रावरुणौ )  
 सोमाः शुक्रा गवाशिरः ।  
 [५०६] ९।६४।२९ = (अग्नि ३१) १।२६।४  
 ( शुन श्रेप आर्जागतिः । अग्निः )  
 [५०८] ९।६५।१ (सृगुर्वारुणजमदग्निर्भागवो वा । पवमानः गोम )  
 हिन्वन्ति सुरसुखयः ।  
 (५७६) ९।६७।९ (गोतमो गृह्णणः । पवमानः गोम, )  
 [५०९] ९।६५।२ = (२९७) ९।४२।२  
 [५१३] ९।६५।६ = (१६४) ९।२०।६  
 [५१४] ९।६५।७ (सृगुर्वारुणजमदग्निर्भागवो वा । पवमानः गोम )  
 पवमानाय गायत ।  
 (७७१) ९।८६।४४ (अग्निर्भोमः । पवमानः गोमः )  
 विपश्चिते पवमानाय गायत ।  
 दे० [सोमः] १२

- [५१५] ९।६५।८ = (२०४) ९।२६।५ = (२३७) ९।३२।२  
 [५१६] ९।६५।९ = (३९१) ९।६।४  
 = (इन्द्रः ३५९) ८।१४।६  
 [५२०] ९।६५।१३ = (इन्द्रः २६५) ८।६।२३ (वल्गः, काण्वः ।  
 इन्द्रः )  
 [ " ] ९।६५।१३ (सृगुर्वारुणजमदग्निर्भागवो वा । पवमानः  
 गोमः ।  
 पवस्व विश्वदर्शतः ।  
 (९९०) ९।१०६।५ (चक्षुर्मानवः । पवमानः गोम )  
 [ " ] ९।६५।१३ = (३२४) ९।४६।५  
 [५२१] ९।६५।१४ (सृगुर्वारुणजमदग्निर्भागवो वा ।  
 पवमानः गोम )  
 आ कलशा इन्द्रो धाराभिरोजसा ।  
 (९९२) ९।१०६।७ (मनुगामवः । पवमानः गोम )  
 इन्द्रो धाराभिरोजसा ।  
 आ कलशां ।  
 [५२२] ९।६५।१५ = १।१३७।२ (पृच्छेपो देवोदागिः ।  
 मित्रावरुणा )  
 [५२३] ९।६५।१६ = (४५५) ९।६३।८  
 [५२४] ९।६५।१७ = (अग्नि २४६६) १।९३।२  
 (गोतमो गृह्णणः । अमापामा )  
 [५२५] ९।६५।१८ = (१०५) ९।१३।२  
 [५२६] ९।६५।१९ = (४०८) ९।६।२१  
 [५२७] ९।६५।२० = (इन्द्रः ३२३२) ५।५।७ (स्वत्यात्रेयः ।  
 इन्द्रवायु )  
 [ " ] ९।६५।२० = ८।४१।१ (नाभावः, काण्वः । वरुण )  
 [५२८] ९।६५।२१ = (२४७) ९।३३।६  
 [५२९] ९।६५।२२ = (इन्द्र २४३५) ८।९३।६  
 [५३१] ९।६५।२४ = (अग्निः ४३७) २।६।५  
 [ " ] ९।६५।२४ = (१०८) ९।१३।५  
 [५३२] ९।६५।२५ (सृगुर्वारुणजमदग्निर्भागवो वा । पवमानः  
 गोमः )  
 पवते ह्यथतो हरि ।  
 (९९८) ९।१०६।१३ (अग्निश्चाशुषः । पवमानः गोमः )  
 [ " ] ९।६५।२५ = ३।६२।१८ (विश्वामित्रो गायिनः, जमदग्निर्वा ।  
 मित्रावरुणौ )  
 गृणाना जमदग्निना ।  
 [५३३] ९।६५।२६ = (१८७) ९।२४।१  
 [५३५-३७] ९।६५।२८ ३० पान्तमा पुरुस्पृहम् ।  
 [५३८] ९।६६।१ = (१८०) ९।२३।१

[५३८] १।६६।१ = (आमि. २२७) १।७५।४ (गोतमो राहृगण. ।  
आमि )

[५४१] १।६६।४ = (३००) १।४७।५

[५४४] १।६६।७ = १।४०।४ (कण्वो घाँग. । ब्रह्मणस्पति )

[५४७] १।६६।१० = (७७) १।१०।१

वयानो (वने) भक्षिति. श्रवः ।

[५४८] १।६६।११ (जत वयानमाः । पवमान सोम )

अच्छा कौश मधुश्रुतम् ।

(१०११) १।१०७।१२ (सप्तर्षयः । पवमान सोम )

[५४८] १।६६।११ = (१५५) १।१४।४

[५४९] १।६६।१२ = (४९४) १।६४।७

[५५०] १।६६।१३ = (३०८) १।४४।१

प्र ण इन्द्रो महे ण (तन) ।

[ ' ] १।६६।१३ = (१४) १।२।४ (पपो अर्षन्ति सिन्धव. ।

[५५१] १।६६।१४ = (४१६) १।६१।२९

अस्य ते मरुये वयम् ।

[ ' ] १।६६।१४ = (२३५) १।३१।६ इन्द्रो साखित्वमुग्रमसि ।

[५५५] १।६६।१८ = (इन्द्र. ३१५२) ४।४१।७

[५५९] १।६६।२२ = (४२०) १।६२।३

[५६०] १।६६।२३ = (३७४) १।५७।३ स मर्त्यजान आयुभिः ।

[५६१] १।६६।२४ (जत वेखानमाः । पवमान. सोम )

कृष्णा तमांसि जङ्घनत् ।

(इन्द्र २६३४) १।०८९।२ (गुण्वैश्वामित्र । इन्द्रः )

—तमांसि त्विष्या जघान ।

[५६४] १।६६।२७ = (१६५) १।२०।७

[५६५] १।६६।२८ = (२११) १।२७।६

[५६८] १।६६।३१ = (३५५) १।५२।५

[५७०] १।६६।३३ = (४७६) १।६३।२९

[५७१] १।६६।३४ = (२४८) १।३४।१

[ ' ] १।६६।३४ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोम )

तिरो वाराण्यव्यया ।

हरिः ।

(१००९) १।१०७।१० (सप्तर्षयः । पवमान. सोम. )

[५७४] १।६६।३७ = (१८७) १।२४।१

[ ' ] १।६६।३७ = (इन्द्र ३२१७) १।१३।५६ - (४१८) १।६३।१

[५७६] १।६६।३९ = (५०८) १।६५।१

[ ' ] १।६६।३९ = (३४३) १।५०।३

[५७७ ७९] १।६६।४० - १२ आ भक्षत् कन्यासु नः ।

[५८०] १।६६।४३ = (१) १।१।१

[५८१] १।६६।४४ = (१४०) १।१७।४

[५८३] १।६६।४६ = (९५) १।११।१

[५८४] १।६६।४७ = (३२०) १।४६।१

[ ' ] १।६६।४७ = (इन्द्र. १७०) ८।३।१५

(मन्यानिधिः काण्वः । इन्द्र. )

[५८६] १।६६।४९ = (१६५) १।२०।७

[५९५] १।६६।२८ = (१११७) १।९१।१७

[५९६] १।६६।३९ (पवित्र आङ्गिरसो वा वामिष्ठो वा उभौ वा ।

पवमानः सोमः )

अगन्म विभ्रतो नमः ।

१०।६०।१ (बभ्रुः श्रुतबन्धुविप्रबन्धुगोपायना । असमाति )

[५९८] १।६६।३१ यः पावमानीमध्येत्यृषिभिः समृतं रसम् ।

(५९९) १।६६।३२ पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः— ।

[६०६] १।६६।३७ = (इन्द्र. १७६२) ५।३२।३

[६०७] १।६६।४८ (वन्मप्रिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः )

सोमं मनीषा अभ्यनृषत स्तुभ. ।

(७४४) १।६६।४७ (मिकता निवावरी । पवमानः सोम )

[६०८] १।६६।४९ (वन्मप्रिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः )

सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ।

(७३६) १।६६।४९ (अकृष्ण माषाः । पवमान सोमः )

[६०९] १।६६।१० (वन्मप्रिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः )

एवा नः सोम परिषिच्यमानो ।

अद्वेषे थावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रथिमस्से सुवीरम् ।

(८९२) १।९७।३६ (पराशरः शाकल्यः । पवमान सोमः )

एवा— ।

(आमिः १६००) १।०४।५।२ (वन्मप्रिर्भालन्दनः । आमिः )

अद्वेषे— ।

[६१७] १।६६।४८ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः )

आ नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवद् ।

(७६५) १।६६।३८ (अकृष्णमाषादयस्त्रयः । पवमान सोमः )

ग नः— ।

[ ' ] १।६६।४८ = (इन्द्रः २४३२) ८।९३।३

(गुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्र. )

[६१९] १।६६।१० = (आमिः ५७) १।३१।८

(हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । आमिः )

[६२२] १।७०।३ = (आमिः ३८८) २।२।४

(गृन्ममदः शौनकः । आमिः )

[६२३] १।७०।४ स मृज्यमानो दग्भिः सुकर्मभिः ।

(९३३) १।९९।७ स मृज्यते सुकर्मभिः ।

[६२४] १।७०।५ स मर्त्यजान इन्द्रियाय धायसे ।

(७३०) १।८६।३ सोमः पुनान इन्द्रियाय धायसे ।

- [६२७] ९।७०।८ = (१०४१) ९।१०८।१६  
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे ।
- [६२८] ९।७०।९ ( रेणुर्वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः )  
इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमा विश ।  
(१०४१) ९।१०८।१६ ( अक्तिर्वाभिष्टः । पवमानः सोमः )
- [६२९] ९।७०।१० ( रेणुर्वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः )  
हितो न नसिरभि वाजमर्ष ।  
(७३०) ९।८६।३ ( अकृष्टा मापाः । पवमानः सोमः )  
अत्यो न हियानो अभि वाजमर्ष ।
- [६३७] ९।७१।८ = ( अग्निः १८७५ ) १।९५।८  
( कुन्म आद्विरग्मः । अग्निः आँप्रमोऽग्निर्वा )
- [६३९] ९।७२।४ ( हरिमन्त आद्विरग्मः । पवमानः सोमः )  
शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते ।  
(७४०) ९।८६।३३ ( मिकता निवावरी । पवमानः सोमः )
- [६४४] ९।७२।६ = ( मरुतः ११३ ) १।६४।६  
( नोधा गांतम । मरुतः )
- [६४५] ९।७२।७ ( हरिमन्त आद्विरग्मः । पवमानः सोमः )  
नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवोऽपामूर्मो सिन्धुषु ।  
सोमो हृदे पवते चारु मरुवर ।  
(७३५) ९।८६।८ ( अकृष्टा मापाः । पवमानः सोमः )  
अपामूर्मि ... सिन्धुषु ।  
नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवः ।  
(७४८) ९।८६।२१ ( पृथिव्योऽजा । पवमानः सोमः )  
सोमो हृदे ... ।
- [६४६] ९।७२।८ ( हरिमन्त आद्विरग्मः । पवमानः सोमः )  
स त् पवस्व परि पार्थिवं रजः । रयि पिशङ्गं बहुल वसीमहि ।  
(१०२३) ९।१०७।२४ ( समर्षयः । पवमानः सोमः )  
स त् ।  
(१०२०) ९।१०७।२१ रयिं पिशङ्गं बहुल पुरुम्भुं ।
- [६५१] ९।७३।४ ( पवित्र आद्विरग्मः । पवमानः सोमः )  
दिवो नाके मधुजिह्वा असश्नतः ।  
(७२५) ९।८५।१० ( वेनो भार्गवः । पवमानः सोमः )
- [६५७] ९।७४।१ = ( ५३ ) ९।७।४
- [६६१] ९।७४।५ = १।९२।१३ ( गोतमो राहृगण । उपा )
- [६६५] ९।७४।९ = ( १३६ ) ९।१६।८
- [ ' ' ] ९।७४।९ ( कक्षावान वैर्धतमसः । पवमानः सोमः )  
स्वदस्वेन्द्राय पवमान पीतये ।  
(९००) ९।७४।४ ( पराजग शाक्तयः । पवमानः सोमः )  
... पवमान उन्ने ।
- [६६७] ९।७५।२ = ( उन्द्र ३३०५ ) १।१५५।३

- ( वैर्धतमा औचथ्यः । उन्द्राविण्णू )
- [६६९] ९।७५।४ ( कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः )  
प्रगेचयन रोदसी मातरा जुचि ।  
(७२७) ९।८५।१२ ( वेनो भार्गवः । पवमानः सोमः )  
प्रास्वचद रोदसी मातरा जुचि ।
- [६७१] ९।७६।१ ( कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः )  
धता दिवः पवते कृत्यो रम । अत्यो न ।  
(६८०) ९।७७।५ ( कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः )  
चक्रिर्दिवः — । अत्यो न ।
- [६७५] ९।७६।५ ( कविर्भार्गवः पवमानः सोमः )  
वृषेव यूथा परि कोशमर्षसि । कनिकर ।  
स इन्द्राय पवसे मन्मरिन्तमो ।  
(८५२) ९।९६।२० ( पतर्दनो देवोऽगि । पवमानः सोमः )  
— — परि कोशमर्षन् कनिकरन् ।  
(८८८) ९।९७।३२ ( यमर्षयः । पवमानः सोमः )  
कनिकरन् ।  
— — मन्मरवान् ।
- [६७६] ९।७७।१ ( कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः )  
वाभ्रा अर्षन्ति पयमेव धेनव ।  
१०।७५।४ ( सिन्धुध्वन्प्रयमेध । नयः )
- [६८१] ९।७८।१ प्र राजा वाच जनयन्नसिष्यदन् ।  
(७६०) ९।८६।३३ = ( ९९७ ) ९।१०६।१२  
पुनानो वाच जनयन्नसिष्यदन् ।  
( ९।८६।३३ उप्यावसः )
- [ ' ' ] ९।७८।१ शुद्धो देवानामुप याति निष्कृतम् ।  
(७३४) ९।८६।७ सोमो देवानामुप ।
- [६८५] ९।७८।५ = ७।७७।४ ( वसिष्ठो मन्त्रावर्णः । उपा )
- [६८६] ९।७९।१ अर्यो नशन्त सनिपन्त नो धिय ।  
( उन्द्रः २७८० ) १०।१३३।३ अर्यो नशन्त नो धिय ।
- [६९५] ९।८०।५ ( वसर्भार्गवाजः । पवमानः सोमः )  
इन्द्र सोम मादयन् दैव्य जन ।  
(७१३) ९।८४।३ ( पञ्जपतिर्वान्यः । पवमानः सोमः )  
इन्द्र सोमो मादयन् ।
- [७०१] ९।८२।१ = ( ४२१ ) ९।६२।४
- [७१०] ९।८३।५ ( पवित्र आद्विरग्मः । पवमानः सोमः )  
नमो वसानः ।  
राजा पवित्ररथो वाजमारुहः सहस्रभृष्टिर्जयति श्रवो वृद्धन् ।  
(७६७) ९।८६।४० ( अकृष्टामापादयन्त्रयः । पवमानः सोमः )  
अपो वसानो ।  
वाजमारुहन् सहस्रभृष्टिर्जयति श्रवो वृद्धन् ।

- [ ७११ ] ९।८४।१ = (इन्द्र ३२३२) ५।५१।७ (स्वम्यात्रेयः ।  
इन्द्रवायु )  
= (२४४) ९।३३।३ = (२४९) ९।३४।२  
(त्रिन आत्स्य । पवमानः सोम )
- [ ७१२ ] ९।८४।२ = (इन्द्रः ८०८) १।५३।४ (मव्य आक्षरम् ।  
इन्द्र )
- [ ७१३ ] ९।८४।३ = (६९५) ९।८०।५
- [ ७१५ ] ९।८४।५ = (६७१) ९।७६।१
- [ ७२० ] ९।८५।५ व्यपच्ययं समया वारमर्षमि ।  
(९६२) ९।९७।५६ वि वारमव्यं समयाति याति ।
- [ ७२२ ] ९।८५।७ = (४२०) ९।६२।३
- [ ७२४ ] ९।८५।९ = (अग्नि १७७९) ६।७।७ ( भरद्वाजो  
बार्हस्पत्य । वैश्वानरोऽग्निः )
- [ " ] ९।८५।९ राजा पवित्रमत्येति रोहवत् ।  
(७३४) ९।८६।७ वृषा पवित्रमत्येति ।
- [ ७२५ ] ९।८५।१० = (६५१) ९।७३।४
- [ " ] ९।८५।१० वेना दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् ।  
(८३१) ९।९५।४ अंशुं दुहन्त्युक्षण ।
- [ ७२६ ] ९।८५।११ (वेनो मार्गवः । पवमानः सोम )  
शिशुं रिहन्ति मतयः पनिमन्तं ।  
(७५८) ९।८६।३१ (अक्रुष्टामाषादयस्त्रयः । पवमानः सोम )
- [ ७२७ ] ९।८५।१२ (वेनो मार्गवः । पवमानः सोम )  
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके भस्थाय ।  
भानुः शुक्रेण शोचिषा व्ययान् ।  
१०।१२३।७ (वेनो मार्गवः । वेनः )  
ऊर्ध्वो ।  
१०।१२३।८ (वेनो मार्गवः । वेनः )  
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकान् ।
- [ " ] ९।८५।१२ = (६६९) ९।७५।४
- [ ७३० ] ९।८६।३ = (६२९) ९।७०।१०
- [ " ] ९।८६।३ (अक्रुष्टा माषाः । पवमानः सोम )  
वृषा पवित्रे अधि सानो भव्यथे ।  
(८९६) ९।९७।४० (पराशर आत्स्य । पवमानः सोम )  
सानो भव्ये ।
- [ ७३० ] ९।८६।३ = (६२४) ९।७०।५
- [ ७३४ ] ९।८६।७ = (६८१) ९।७८।१
- [ " ] ९।८६।७ = (७२४) ९।८५।९
- [ ७३५ ] ९।८६।८ = (६४५) ९।७२।७
- [ ७३६ ] ९।८६।९ = (अग्निः १११) १।५८।१

- [ " ] ९।८६।९ = (६०८) ९।६८।९
- [ ७४० ] ९।८६।१३ = (६४२) ९।७२।४
- [ ७४४ ] ९।८६।१७ = (६०७) ९।६८।८
- [ ७४६ ] ९।८६।१९ = (३८६) ९।६०।३
- [ ७४८ ] ९।८६।२१ = (६४५) ९।७२।७
- [ ७५३ ] ९।८६।२६ = (११७) ९।१४।५
- [ ७५६ ] ९।८६।२९ ( पृथिवीऽजाः । पवमानः सोमः )  
त्वं वां च पृथिवीं चाति जग्निषे ।  
(९४३) ९।१००।९ ( रेभसन् काश्यपा । पवमानः सोम )
- [ ७५७ ] ९।८६।३० = (इन्द्रः १६१) ८।३।६
- [ ७५८ ] ९।८६।३१ = (७२६) ९।८५।११
- [ ७६० ] ९।८६।३३ ( अक्रुष्टामाषादयस्त्रयः । पवमानः सोमः )  
पुनानो वाचं जनयन्नुपावसु ।  
(९९७) ९।१०६।१२ ( अग्निश्चाक्षुष । पवमानः सोमः )  
—जनयस्मिप्यदत्त ।
- [ ७६२ ] ९।८६।३५ = (२७५) ९।३८।४
- [ " ] ९।८६।३५ ( अक्रुष्टामाषादयस्त्रयः । पवमानः सोमः )  
दिवो विष्टम्भ उपमो विचक्षणः ।  
(१०३३) ९।१०८।१६ (शक्तिर्वासिष्ठः । पवमानः सोम )  
दिवो विष्टम्भ उत्तमः ।
- [ ७६५ ] ९।८६।३८ = (६१७) ९।६९।८
- [ ७६७ ] ९।८६।४० = (७१०) ९।८३।५
- [ ७७१ ] ९।८६।४४ = (५१४) ९।६५।७
- [ ७७३ ] ९।८६।४६ = (७२६) ९।८५।११
- [ ७८४ ] ९।८७।९ = (अग्नि ९५०) ६।१।१२  
( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्नि )
- [ ७८५ ] ९।८८।१ = (इन्द्र २२१३) ७।२९।१  
( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः )
- [ ७९२ ] ९।८८।८ = (११०३) १।९१।३
- [ ७९९ ] ९।८९।७ = ४।५१।१० ( वामदेवो गौतमः । उषा )
- [ ८०२ ] ९।९०।३ = (इन्द्र १८७८) ६।१९।८  
( भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र )
- [ ८०४ ] ९।९०।५ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणः । पवमानः सोमः )  
मत्सि वरुणं मत्सि मित्रं मत्सि ।  
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि ।  
(८९८) ९।९७।४२ (पराशर आत्स्यः । पवमानः सोमः )  
मत्सि मत्सि मित्रावरुणा ।  
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि ।
- [ ८०६ ] ९।९१।१ दश स्वयारो अधि सानो भव्ये ।  
(८१५) ९।९२।४ दश स्वधाभिरधि सानो भव्ये ।

[ ८१५ ] १।१२।४ = ८।५७ (बाल०९)२ (मेध्यः काण्वः । अध्विनोः)

[ " ] १।१२।४ = (८०६) १।१२।१

[ ८१७ ] १।१२।६ परि सद्योव पशुमान्ति होता ।

(८५७) १।१७।१ मितेव सद्य पशुमान्ति होता ।

[ ८२९ ] १।१५।२ = २।४२।१ ( गृह्यमन्तः शौनकः । शकृन्तः )

[ ८३१ ] १।१५।४ = (७२५) १।८५।१०

[ ८३२ ] १।१५।५ = ४।५१।१० ( वामदेवो गौतमः । उपा )

[ ८३५ ] १।१६।३ ( प्रतर्दनो देवोदाभिः । पवमानः सोमः )

ग नो देव देवताने पवस्व महे सोम पवरस्य इन्द्रपानः ।

पुनानः ।

( ८३३ ) १।१७।२७ ( गृह्यका वासिष्ठाः । पवमानः सोमः )

पवा देव देवताने पवस्व महे सोम पवरसे देवपानः ।

... पुनानः ।

[ ८३७ ] १।१६।५ = ( इन्द्रः १७७२ ) ८।३६।४

( इयावाश्च आत्रियः । इन्द्रः )

[ ८३८, ८४९ ] १।१६।६, १७ सोमः पवित्रमस्येति रेभन् ।

[ ८४१ ] १।१६।९ ( प्रतर्दनो देवोदाभिः । पवमानः सोमः )

सहस्रधारः शतवाज इन्दुः ।

( १०७३ ) १।११०।१० ( त्र्यम्बकत्राणः त्रगदस्युः पौरु-  
कुन्ध्यः । पवमानः सोमः )

[ ८४८ ] १।१६।१६ = ( इन्द्रः ८६० ) १।६।५

[ ८४९ ] १।१६।१७ ( प्रतर्दनो देवोदाभिः । पवमानः सोमः )

शिष्टुः जजानं ह्येतं सृजन्ति ।

( १०७५ ) १।१०९।१० ( अमर्यो धिष्ण्या णेश्वराः ।  
पवमानः सोमः )

—जजानं हरिः सृजन्ति ।

[ ८५२ ] १।१६।२० = ( ६७५ ) १।७६।५

[ ८५५ ] १।१६।२३ = ( ६०८ ) १।६८।९

[ ८५७ ] १।१७।१ = ( ८१७ ) १।१२।६

[ ८६१ ] १।१७।५ = ४।३३।२ ( वामदेवो गौतमः । ऋभवः )

[ " ] १।१७।५ सहस्रधारः पवते मदाय ।

( ९४९ ) १।१०१।६ सहस्रधारः पवते ।

[ ८६७ ] १।१७।११ = ( ११३६ ) ८।४८।२

[ ८७२, ८७५ ] १।१७।१६, १९

अधि ( ११९ परि ) षणुना धन्वः सानो भवे ।

[ ८८० ] १।१७।२४ = ( अग्निः १२२ ) १।६०।४

( नोधा गौतमः । अग्निः )

[ ८८३ ] १।१७।२७ = ( ८३५ ) १।१६।३

[ ८८६ ] १।१७।३० = ( अग्निः १६२ ) १।६८।९

( पराशरः शाक्यः । अग्निः )

[ ८८८ ] १।१७।३२ = ( ६७५ ) १।७६।५

[ ८९२ ] १।१७।३६ = ( ६०९ ) १।६८।१०

[ ८९५ ] १।१७।३९ = ( इन्द्रः ८७३ ) १।६२।२

( नोधा गौतमः । इन्द्रः )

[ ८९६ ] १।१७।४० = ( ७३० ) १।८६।३

[ ८९८, ९०५ ] १।१७।४२, ४९ मन्त्रि ( १।१७।४९ अग्निः )

मित्रावरुणा पूषमानः ।

[ ८९८ ] १।१७।४२ = ( ८०४ ) १।१७।५

[ ९०० ] १।१७।४४ = ( ६६५ ) १।७४।९

[ ९०२ ] १।१७।४६ = १।१९०।२

( अगम्यो मैत्रावरुणिः । बृहस्पतिः )

[ ९०४ ] १।१७।४८ = ( अग्निः २०६ ) १।७३।२

( पराशरः शाक्यः । अग्निः )

[ ९०५ ] १।१७।४९ = ( इन्द्रः २१८५ ) ७।२३।६

( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः )

[ ९१२ ] १।१७।५६ = ( इन्द्रः १४१० ) ३।४६।२

( विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः )

[ " ] १।१७।५६ = ( ७२० ) १।८५।५

[ ९१५ ] १।१८।१ = ( ५०२ ) १।६४।२५

[ ९१८ ] १।१८।४ = ( इन्द्रः ९४३ ) १।८४।७

( गौतमो राष्ट्रगणः । इन्द्रः )

[ ९२० ] १।१८।६ = १।१८।६ ( मेधातिथिः काण्वः । सदसस्पतिः )

[ ९२४ ] १।१८।१० = ( ९३ ) १।११।८

[ ९३२ ] १।१९।६ = ( ३४५ ) १।५०।५

[ " ] १।१९।६ = ( १६४ ) १।२०।६

[ ९३३ ] १।१९।७ = ( ६२३ ) १।७०।४

[ " ] १।१९।७ = ( २९ ) १।३।९

[ " ] १।१९।७ = ( ५१ ) १।७।२

[ ९३४ ] १।१९।८ = ( १८९ ) १।२४।३

[ " ] १।१९।८ = ( ४४९ ) १।६३।२

[ ९३५ ] १।१००।१ = १।१८।६ ( मेधातिथिः काण्वः । सदसस्पतिः )

[ ९३६ ] १।१००।२ = ( २८९ ) १।४०।६

[ " ] १।१००।२ = ( ३७ ) १।४।७

[ " ९४२ ] १।१००।२, ८ विश्वानि दाशुषो गृहे ।

[ ९४५ ] १।१००।५ = ( १ ) १।१।१

[ " ] १।१००।५ ( रेभसनः काश्यपाः । पवमानः सोमः )

मित्राय वरुणाय च ।

१।०।८५।१७ ( सूर्यः सावित्री ऋषिका । देवाः )

[ ९४० ] १।१००।६ = ( १०६ ) १।१३।३

[ " ] १।१००।६ = ( ९९१ ) १।१०६।६ देवेभ्यो गधुमन्तमः ।

[ ९४१ ] ९।१००।७ = (इन्द्रः २०८७) ६।४५।२८  
( जंयुर्बाह्मिण्यत्यः । इन्द्रः )

[ " ] ९।१००।७ = (३९) ९।४।९

[ ९४२ ] ९।१००।८ = (३१) ९।४।१

[ " ] ९।१००।८ = (अग्निः १३३२) ८।४३।२३

[ ९४३ ] ९।१००।९ = (७५६) ९।८६।२०

[ ९४४ ] ९।१०१।६ = (८६१) ९।९७।५

[ ९५० ] ९।१०१।७ = ८।३१।११ (मनुर्वेवस्वत । दम्पत्याशिषः)

[ " ] ९।१०१।७ = (१०४) ९।१३।१

[ ९५१ ] ९।१०१।८ = (१८७) ९।२४।१

[ ९५२ ] ९।१०१।९ = (इन्द्रः ३०४१) ५।८६।२

( अत्रिभौमः । इन्द्राग्नी )

[ ९५३ ] ९।१०१।१० ( मनुः सावरणः । पवमानः सोमः )

अस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।

( ९९१ ) ९।१०६।६ ( चक्षुर्मानवः । पवमानः सोमः )

अस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।

[ ९५५ ] ९।१०१।१२ = (१७५) ९।२२।३

[ " ] ९।१०१।१२ = (इन्द्रः १८) १।५।५

[ ९५८ ] ९।१०१।१५ = ७।८६।१ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वरुण )

[ ९५९ ] ९।१०१।१६ ( प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा ।

पवमानः सोमः )

अव्यो वारेभिः पवते ।

( १०३० ) ९।१०८।५ ( ऊरुगङ्गिरम । पवमान सोम )

[ " ] ९।१०१।१६ = (१६) ९।२।६

[ ९६४ ] ९।१०२।५ = (अग्नि २४४०) १।१९।३

( मेधातिथि काण्वः । अभिर्मरुतश्च )

[ ९६६ ] ९।१०२।७ = (अग्निः १९२४) १।१४।७

( दार्घतमा आचथ्यः । आप्रीसृक्तं [उष्णसानका] )

[ ९६९ ] ९।१०३।२ = (५७१) ९।६७।४

[ " ] ९।१०३।२ ( द्विन आप्त्य । पवमान सोमः )

वागण्यव्यया गोभिरञ्जानो अर्षति ।

( १०२१ ) ९।१०७।२२ ( सप्तर्षयः । पवमानः सोम )

वारे . अव्यये ।

गोभिरञ्जानो अर्षति ।

[ ९७० ] ९।१०३।३ = (१८३) ९।२३।४

[ ९७३ ] ९।१०३।६ = (२९) ९।३।९

[ " ] ९।१०३।६ = (२६८) ९।३७।३

[ ९७४ ] ९।१०४।१ = १।२२।८ (मेधातिथिः काण्वः । सविता)

[ ९७५ ] ९।१०४।२ ( पर्वतनारदा काण्वौ, शिखण्डिन्याप्सरसौ

कादयपौ वा । पवमानः सोम )

समी वामं न मातृभिः ।

देवाव्यं न मदम् ।

( ९८१ ) ९।१०५।२ ( पर्वतनारदा काण्वौ । पवमानः सोम )

मं वरस इव मातृभिः ।

देवावीमदो ।

[ ९७६ ] ९।१०४।३ = १।२३।४

( परुच्छेपो देवोदामिः । मित्रावरुणा )

[ ९७९ ] ९।१०४।६ रक्षमं कं चिदग्निम् ।

( ९८५ ) ९।१०५।६ अदेवं कं ।

[ ९८१ ] ९।१०५।२ = (९७५) ९।१०४।२

[ ९८७ ] ९।१०६।२ = (४७) ९।६।७

[ ९८८ ] ९।१०६।३ = (७७) ९।१०।१

[ ९८९ ] ९।१०६।४ = (इन्द्रः १७८५) ८।९।३

( अपाला आत्रेयी । इन्द्र )

[ " ] ९।१०६।४ = (२२३) ९।२९।६

[ ९९० ] ९।१०६।५ = (५२०) ९।६५।१३

[ ९९१ ] ९।१०६।६ = (९५३) ९।२०।१०

[ " ] ९।१०६।६ = (९४०) ९।१००।६

[ ९९२ ] ९।१०६।७ = (५२१) ०।६५।१४

[ ९९५ ] ९।१०६।१० = (१३६) ९।१६।८

[ " ] ९।१०६।१० = (२७) ९।३।७

[ ९९६ ] ९।१०६।११ = (४५) ९।६।५

[ ९९७ ] ९।१०६।१२ ( अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोम )

मीळहे ससिर्न वाजयुः ।

( १०१० ) ९।१०७।११ ( सप्तर्षयः । पवमानः सोमः )

[ ९९७ ] ९।१०६।१२ = (७६०) ९।८६।३३

[ ९९८ ] ९।१०६।१३ = (५३२) ९।६५।२५

[ १००० ] ९।१०७।१ = ४।४५।५ ( वामदेवो गौतमः । अश्विनौ )

[ १००३ ] ९।१०७।४ = (४७५) ९।६३।२८

[ " ] ९।१०७।४ = (इन्द्रः ५५३) ८।६।६

( भर्गः प्रागाथः । इन्द्र )

[ १००५ ] ९।१०७।६ = (५५) ९।७।६

[ १००६ ] ९।१०७।७ = (इन्द्रः ३०) १।७।३

( मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः )

[ १००९ ] ९।१०७।१० = (५७१) ९।६७।४

[ १०२० ] ९।१०७।११ = (९७७) ९।१०६।१२

[ १०२१ ] ९।१०७।१२ = (५४८) ९।६६।११

[ १०२३ ] ९।१०७।१४ = (१८३) ९।२३।४

[ " ] ९।१०७।१४ = (इन्द्रः ४३७) ८।३४।१३

( नीपातिथिः काण्वः । इन्द्र )

- [१०१३] १।१०७।१४ = (१६६) १।११।१  
 [१०१४] १।१०७।१५ (सप्तर्षयः । पवमानः गोमः)  
 राजा देव ऋतं ब्रूहत् ।  
 (१०३३) १।१०८।८ (ऊर्ध्वमज्ञा आङ्गिरस । पवमानः गोम )  
 [१०१६] १।१०७।१७ = (४७) १।६।७  
 [ " ] १।१०७।१७ = (४६४) १।६३।१७  
 [१०२०] १।१०७।२१ = (६४६) १।७२।८  
 [१०२१] १।१०७।२२ = (५२) १।७।३  
 [ " ] १।१०७।२२ = (६६९) १।१०३।२  
 [१०२२] १।१०७।२३ = (१०६) १।१३।३  
 [१०२३] १।१०७।२४ = (६४६) १।७२।८  
 [१०२४] १।१०७।२५ = (४७२) १।६३।२५  
 [१०२५] १।१०७।२६ = (२२५) १।३०।२  
 [ " ] १।१०७।२६ = (११७) १।१४।५  
 [१०२६] १।१०८।१ = (४९९) १।६४।२२  
 [१०३०] १।१०८।५ = (९५९) १।१०१।१६  
 [१०३१] १।१०८।६ = ८।७३।१८  
 (गोपवन आत्रेयः सप्तर्षिर्वा । अश्विनो )  
 [१०३३] १।१०८।८ = (१०१४) १।१०७।१५  
 [१०४०] १।१०८।१५ = (९३) ९.११।८  
 [ " ] १।१०८।१५ = (४९९) १।६४।२२

- [१०४१] १।१०८।१६ = (६२८) १।७०।९  
 [ " ] १।१०८।१६ = (८८७) ८।६।३५  
 ( वत्सः काण्वः । इन्द्रः )  
 [ " ] १।१०८।१६ = (६२७) १।७०।८  
 [ " ] १।१०८।१६ = (७६२) १।८६।३५  
 [१०५३] १।१०९।१२ = (८४९) १।९६।१७  
 [१०६३] १।१०९।२२ = (८८१) ८।३२।२  
 ( मध्वानिधिः काण्वः । इन्द्रः )  
 [१०७२] १।११०।९ = (इन्द्रः ११८४) १।१७।४  
 ( गृन्गमदः शौनकः । इन्द्रः )  
 [१०७३] १।११०।१० = (८४१) १।९६।९  
 [१०७८] १।१११।३ = ८।१५।३३  
 [१०७९-८२] १।११२।१-४ = (१०८३-९३) १।१२३।१-११ =  
 (१०९४-९८) १।११४।१-४ इन्द्रायेन्दो पणि ख्व ।  
 [१०९०-९३] १।११३।८ ११ तत्र माममृतं कधि ।  
 [१०९७] १।११४।४ ( कश्यपो माराचः । पवमान गोमः )  
 मो च नः कि चनाममद् ।  
 १।५९।८-९ ( बन्धु श्रुतबन्धु० । यावापृथिवी )  
 मो पु ते कि चनाममत् ।  
 (इन्द्रः ३३५५) १।५९।१० ( बन्धु श्रुतबन्धुविप्रबन्धु-  
 गौपायनाः । इन्द्रयावापृथिव्यः ।



## दैवत-संहितान्तर्गत

# सोमदेवता-मंत्राणां उपमासूची ।

( अस्यां सूच्यां मंत्रक्रमाद् १०९७ पर्यन्त ऋग्वेदस्य नवमं मण्डलं वर्तते । तस्य निर्देशः कृतो नास्ति । )

अग्निः न वने ८८,५, ७८९ आसृज्यमान. पाजांसि ।  
 अग्निं न मथितम् ८,४८,६, ११४० सं त्रिदीपः ।  
 अग्ने. इव २२,२, १७४ अमाः वृथा ।  
 अत्कं न निक्तम् ६९,४; ६१३ परि सोम. अव्यत ।  
 अस्याः हियानाः न १३,६, १०९ असृष्टं वाजमातये ।  
 अत्यः न ३२,३; २३८ गोभिः अज्यते ।  
 अत्यः इव ४३,१; ३०२ सृज्यते ।  
 अत्यः न वाजसृत् ४३,५; ३०३ हन्तु कनिक्रन्ति ।  
 अत्यः न सखभिः ७६,१; ६७१ वृथा पाजांसि कृणुते ।  
 अत्यः न यूथे ७७,५; ६८० वृषयु. कनिक्रदत् ।  
 अत्यः न ८१,२; ६९७ वोळ्हा वृषा ।  
 अत्यः न ८२,२, ७०२ सृष्टः ।  
 अत्यः न ८५,५ ७२० सानसिः ।  
 अत्यः न हियानः ८६,३, ७३० अभि वाजम् अर्प ।  
 अत्यः न ८६,२६; ७५३ क्रीळन् परिवार अर्षति ।  
 अत्यः न ८६,४४; ७७१ क्रीळन् हरिः असरत् ।  
 अत्यः न ९३,१, ८१८ वाजी द्रोणे ननक्षे ।  
 अत्यः न वाजी ९६,१५, ८४७ अराती. तरतीत ।  
 अत्यः न ९६,२०; ८५२ सखा ।  
 अत्यः न ९७,१८; ८७४ ऋद ।  
 अत्यः न ९७,४५, ९०१ हित्वा ।  
 अत्यासः न ससृजानासः ९७,२०; ८७६ शुक्रास धन्वन्ति ।  
 अत्यम् इव वाजिनम् ६,५, ४५ सृजन्ति योषणः दश ।  
 अन्धसं यथा ते जातम् ५५,२ ३६५ नि बहिषि सद ।  
 अपसः यथा रथम् १०७,१३; १०१२ तम् ईम् नदीषु ।  
 अपां न ऊर्मयः ३३,१, २४२ सोमासः प्रयन्ति ।  
 अपाम् इव ऊर्मय ९५,३, ८३० तर्तराणाः मनीषा ।  
 अभा इव विद्युत् ७६,३, ६७३ रोदसी प्र पिन्व ।  
 अरिता इव नावम् ९५,२ ८२९ पथ्यां वाचम् ह्यति ।  
 अरुपः न ७२,१; ६३९ युज्यते ।  
 अर्यमा इव ८८,८, ७२२ दक्षाद्यः ।  
 अर्यमा इव १,९१,३. ११०३ दक्षाद्यः ।  
 अर्वांन् इव ९७,२५; ८८१ अरवसे सातिम् अच्छा ।  
 अर्वन्त न १०,१; ७७ अरवस्यवः ।

अर्वन्तः न अरवस्यवः ६६,१०, ५४७ सर्गाः असृक्षत ।  
 अर्वताम् इव वाजेषु ४७,५; ३३० भरेषु जिग्थुषाम् असि ।  
 अर्वताम् इव सर्गासः १०,२५,४, ११६३ समु प्रयन्ति ।  
 अश्व. न ६४,३; ४८० चक्रद्. वृषा ।  
 अश्वः न ७१,६; ६३५ यज्ञिय. देवान् अप्रेति ।  
 अश्व न ९७,२८, ८८४ ऋदः ।  
 अश्व. न १०१,२. ९४५ कृष्य. ।  
 अश्व न १०९,१०, १०५१ निक्तः सोमः ।  
 अश्व न हतार. ६२,६, ४२३ अमृताय ईम् आशुशुभम् ।  
 अश्वं न ८७,१; ७७६ वाजिनं मर्जयन्त. ।  
 अश्व न १०८,७; १०३२ अप्तुरम् रजस्तुरम् ।  
 अश्वया इव १०७,८; १००७ हरिता याति धारया ।  
 अहानि इव सूर्यः वासराणि ८,४८,७; ११४१ न आसूंषि ।  
 अहि न ८६,४४, ७७१ जर्णाम् अति सर्पति त्वचम् ।  
 अह्यः न ईक्षेण्यास ७७,३; ६७८ चारवः ।  
 आजिम् यथा ३२,६, २४० एवं हितम् अगन् ।  
 आपः न प्रवताः ६,४; ४४ इन्द्व. अन्वसरन् ।  
 आपः न प्रवताः २४,२; १८८ अभि गावः अधन्विषुः ।  
 आपः न ८८,७, ७९१ सुमतिः भव ।  
 इन्द्रः न ८८,४, ७८८ महा कर्माणि चक्रिः ।  
 इन्द्रस्य इव आजौ ९७,१३, ८६९ वगुः आ शृण्वे ।  
 इषुः न धन्वन् ६९,१; ६१० मतिः प्रति धीयते ।  
 उक्षा इव यूथा ७१,९; ६३८ परियन् अरावीत् ।  
 उत्स न कंचित् जनपानम् ११०,५, १०६८ अभि अभि हि ।  
 उपवक्ता इव होतुः ९५,५; ८३२ वाचम् ह्ययन् ।  
 उरु इव ९६,१५, ८४७ गातुः ।  
 उशाना इव काव्यम् ९७,७. ८६३ देवः देवानां जनिमा ।  
 उषसः न सूर्यः ८४,२; ७१२ इन्दु सिषक्ति ।  
 उषाः सूर्यः न रश्मिभिः ४१,५; २९४ मही रोदसी आपृण ।  
 ऊर्मिः इव अपाम् १०८,५; १०३० क्रीळन् पवते ।  
 ऊर्मि न सिन्धुः ९६,७; ८३९ सोमः गिरः आवीविपत् ।  
 ऊर्मै. इव सिन्धोः ५०,१, ३४१ ते स्वन उदीरते ।  
 ऊशुः न रश्मं नवम् २१,६, १७१ दधाता केतम् आदिषी ।

कवयः न गृध्राः ९७, ५७; ९१३ अदब्धाः पवे रेभन्ति ।  
 काम न ९७, ४६; ९०२ य देवयतां असर्जि ।  
 कारिणे न ९७, ३८, ८२४ धनं प्र यंसत् ।  
 कारिणाम् इव भरासः १०, २, ७८ गभरूप्योः दधन्विरे ।  
 कृष्या इव अत्यासः ४६, १; ३२० देववीतये अमृग्रन् ।  
 कृष्टिहा इव ७१, २, ६३१ शूषः रोरुवत् प्र ण्ति ।  
 गावः न ४१, १; २९० भूर्णयः ।  
 गावः यन्ति गोपतिम् ९७, ३४, ८९० पृच्छमानाः सोम ।  
 गावः अस्त न धेनव ६६, १२; ५४९ इन्दव. समुद्रम् ।  
 गावः न धेनवः ६८, १, ६०० इन्दवः प्र असिष्यदन्त ।  
 गावः न यवसेषु १, ९१, १३; १११३ नः हृदि रारन्धि ।  
 गावः न यवसे १०, २५, १, ११६० ते सख्ये वय रणन् ।  
 गावः वत्सं न मातरः १२, २; ९६ इन्द्र विप्राः अभ्यनूषत् ।  
 गाः इव ११२, ३; १०८१ नानाधियः अनुवस्थिम ।  
 ग्रन्थिम् न ९७, १८, ८७४ ग्रथित माम् वि व्य ।  
 घना इव ९७, १६, ८७२ विवक् दुरितानि विघ्नन् ।  
 घृतं न पवते मधु ६७, ११, ५७८ अयं सोमः कपर्दिने ।  
 घृत न पवते शुचि ६७, १२, ५७९ अयं ते आघृणे सुतः ।  
 चमसाम् इव १०, २५, ४; ११६३ त्वम् विवक्षसे ।  
 चरुः न ५२, ३; ३५३ तम् ईङ्क्ष्य ।  
 चित्रम् न दिवः ६१, १६; ४०३ ज्योतिः बृहत् ।  
 जनः न पुरि १०७, १०, १००९ हरि. चम्त्रोः सदः विशत् ।  
 जन न युष्वा ८८, ५; ७८९ महत् उपविद्मः ।  
 जमदग्निवत् ९७, ५१, ९०७ नः आर्षेयं द्रविणं अभ्यश्रवाम ।  
 जाया इव पत्यौ ८२, ४, ७०४ अधिशेव महसे ।  
 जारः न योषितम् ३८, ४; २७५ मानुषीषु आ सीदति ।  
 जारः न योषणाम् १०१, १४, ९५७ सरत् योनिम् आसदत् ।  
 जारम् इव योषा प्रियम् ३२, ५; २४० प्रिय त्वा गावः ।  
 जारम् न कन्या ५६, ३, ३७० दश योषणः त्वा अभ्यनूषत् ।  
 दिवः न विद्युत् ८७, ८, ७८३ सोमस्य धारा पवते ।  
 दिवः न वृष्टिः ८९, १; ७९३ पवमान अक्षाः ।  
 दिवः न वृष्टय ५७, १, ३७२ ते धाराः प्रयन्ति ।  
 दिवः न वृष्टय. ६२, २८, ४४५ असश्रवतः ते धाराः प्रयन्ति ।  
 दिवः न सर्गाः ९७, ३०; ८८६ अससृग्रम् अह्वाम् ।  
 दिवः न सानु १६, ७; १३५ धारा पवित्रे वृथा अर्षति ।  
 दिवः न सानु ८६, ९, ७३६ स्तनयन् अचिक्रदत् ।  
 दिव्याः न कौशासः ८८, ६; ७९० सोमासः अभ्रवर्षाः ।  
 दिव्या विट् यथा ८८, ७; ७९१ अनभिशास्ता तथा ।  
 हूतम् न ९९, ५; ९३१ पूर्वचित्तय. तम् आशासते ।

द्वै० [सोमः] १३

देवः न सूर्य. ५४, ३; ३६२ सोम भुवनोपरि तिष्ठति ।  
 देवः न सूर्यः ६४, ९, ४८६ अक्रान् ।  
 देवः न ६३, १३; ४६० सूर्यः ।  
 देवः न ९७, ४८. ९०४ सविता सत्यमन्मा ।  
 द्रविणोदाः इव ८८, ३; ७८७ त्मन् विश्ववारः ।  
 धन्वन् न तृष्णा ७९, ३; ६८८ समरीत तान् अभि ।  
 धारा इव उरु हुहे ६९, १, ६१० मतिः अस्य अग्रे आयती ।  
 धुर वाजी न यामनि ४५, ४, ३१७ पवित्र अत्यक्रमीत् ।  
 धेनुः न वत्सम् ८६, २; ७२९ पयसाभि वज्रिणम् इन्दव ।  
 नदी फेनम् इव अथ० १, ८, १, १२४० हविः यातुधानान् ।  
 नावा न सिन्धुम् ७०, १०, ६२९ वि अति पर्षि विद्वान् ।  
 नासत्या इव ८८, ३, ७८७ हवे आ शंभविष्ट ।  
 निम्न इव सिन्धवः १७, १; १३७ प्रतः वृत्राणि भूर्णयः ।  
 पय न ९६, १५; ८४७ दुग्धम् ।  
 पयसा इव धेनवः ७७, १, ६७६ वाप्राः अभि अर्षन्ति ।  
 परावतः न साम १११, २; १०७७ धीतय यत्र भारणन्ति ।  
 पर्जन्यः वृष्टिमान् इव २, ९; १९ मध्वा धारया पवस्व ।  
 पर्जन्यस्य इव २२, २, १७४ वृष्टय ।  
 पर्णवीः इव ४३, १, २१ षषः दीयति ।  
 पशौ न रेतः ९९, ६; ८३२ सोमः चमृषु सीदति ।  
 पिता इव सूनवे १०, २५, ३; ११६२ न मृळ ।  
 पिता इव सूनवे ८, ४८, ४, ११३८ सुशेव नः शं भव ।  
 पितु न पुत्र ९७, ३०; ८८६ क्रतुभि यतानः त्वम् ।  
 पिश्यस्य इव रायः ८, ४८, ७; ११४१ सुतस्य ते भक्षीमहि ।  
 पूषा इव ८८, ३, ७८७ धीजवनः ।  
 पृतनाषाट् न ८८, ७, ७९१ त्वं यज्ञः ।  
 पैद्व न ८८, ४, ७८८ त्वं अहि हन्ता ।  
 प्रघ्नताम् इव सतनिः ६९, २; ६११ पवमानः परिवारम् अर्षति ।  
 प्रिय. न मित्र ८८, ८, ७९२ शुचिः त्वम् असि ।  
 प्रियः न मित्रः १, ९१, ३; ११०३ शुचिः ।  
 प्रियाम् न जारः ९६, २३, ८५५ शश्रून् अपघ्नन् षषि ।  
 भुजे न पुत्रः ओण्यो १०१, १४, ९५७ जामिः अत्के अव्यत ।  
 भृतिम् न १०३, १, ९६८ उद्यतं वचः आभर ।  
 मख. न २०, ७, १६५ क्रीकृः मंहयुः ।  
 मखम् न भृगव १०१, १३, ९५६ अराधस श्वानम् अपहत ।  
 मनवे यथा आपवथाः वयोधाः ९६, १२, ८४४ एवा पवस्व ।  
 मरुताम् इव स्वनः ७०, ६; ६२५ नानदत् ण्ति ।  
 मर्य इव स्व ओक्ये १, ९१, १३; १११३ नः हृदि रारन्धि ।  
 मर्यः न योषाम् ९३, २; ८१९ अभि निष्कृतं यन् ।

मर्यः न शुभ्र ९६,२०, ८५२ तन्व मृजानः ।  
 महिष. न ६९,३; ६१२ नृष्ण. शिक्षान शोभने ।  
 महिष. न शृङ्ग ८७,७, ७८२ तिग्मे शिक्षानः अद्धावत् ।  
 महिषाः इव वनानि ३३,१. २४२ सोमास प्र यन्ति ।  
 मर्मृजान महिष न ९५,४, ८३१ मानौ अशु दुहन्ति ।  
 मही इव घौ । अथ०६,६,३, ११८६ वधम्मना तस्य बल ।  
 मही न धारा ८६,४४, ७७१ अति अन्ध अर्षति ।  
 मातरा इव १८,५; १४९ मही रोदसी स दोहते ।  
 मातरा न ददशान ७०,६, ६२५ उस्त्रियः नानदत् पृति ।  
 मातृभि न शिशु. ९३,२. ८१९ वावशान. ।  
 मिना इव सन्न ९७,१; ८५७ सुनः पवित्र पर्येति रेभन् ।  
 मित्र' न २,६. १६ दर्शत ।  
 मृग न ३२,४, २३९ तक्त ।  
 मृग न महिष. ९२,६ ८१७ वनेषु मीदन् अयाम्नात् ।  
 मृज न रुस धातृभि १०,३ ७९ सोमास गोभि अञ्जते ।  
 म्यूये न निष्ठा वृषभ. ११०,९, १०७२ विश्वा भुवना वितिष्ठसे  
 योपा इव पित्र्यावती ४६,२, ३२१ वायुम् असृक्षत ।  
 योपा इव सुदुवा ९६,२४, ८५६ सुधाराः आ यन्ति ।  
 रघुजा इव ८६,१. ७०८ र्मना मदा' अर्षन्ति ।  
 रथ. न ८८,२, ७८६ मूरिपाट् ।  
 रथः न ९०,१; ८०० वाजं सनिपन् अयासीत् ।  
 रथः न ९२,१, ८१२ मर्जि सनये हियानः ।  
 रथाः इव १०,१; ७७ प्रखानास अक्रमुः ।  
 रथाः इव १०,२, ७८ हिन्वानासः दधन्विरे ।  
 रथा इव प्र वाजिन २२,१; १७३ सर्गाः सृष्टाः अहेयत ।  
 रथाः इव वाज्यन्त ६७,१७; ५८४ असृग्रन् देववीतये ।  
 रथाः इव सातिम् अच्छ ६९,९, ६१८ सोमाः इन्द्रं प्र ययुः ।  
 रथम् न ७१,५, ६३४ भुरिजोः सम् ई अहेयत ।  
 रथ न गाव समनाह ८,४८,५, ११३९ सोमाः मां पर्वसु ।  
 रथे न वर्म ९८,२. ९१६ सुवानः अव्ययम् अव्यत ।  
 रथाः इव अश्व ६४,१०; ४८७ इन्दु. पविष्ट सृजत् ।  
 रथ्यः यथा ३६,१; २६० सुतः पवित्रे असर्जि ।  
 रथ्ये आजौ यथा ९१,१; ८०६ धिया सचेताः असर्जि ।  
 रथ्यासः यथा ८६,१, ७२९ एवा ते प्रमदासः पृथक् आशवः ।  
 रसा इव विष्टपम् ४१,६, २९५ सोम विश्वतः परिसर ।  
 राजा इव विश ७,५; ५४ पवमानः रष्टध. अधि सीदति ।  
 राजा इव २०,५; १६३ सुव्रतः ।  
 राजा इव इभः ५७,३; ३७४ सुव्रतः ।  
 राजा इव ८२,१, ७०१ दस्स ।  
 राजा इव ९०,६, ८०४ क्रतुमान् ।

राजा न ९७,३०; ८८६ मित्रम् ।  
 राजा न ९२,६; ८१७ समिती. हयान ।  
 राजान न प्रशस्तिभि. १०,३, ७९ सोमामः गोभिः अञ्जते ।  
 रेभ न ७१,७; ६३६ पूर्वाः उषसः विराजति ।  
 र्त्स न मातु ऊधनि ६९,१; ६१० मति उपसर्जि ।  
 र्त्स. इव मातृभि १०५,२; ९८१ इन्दु हिन्वानः समज्यते ।  
 र्त्सम् न धेनव. १३,७, ११० वाश्रा अभि अर्षन्ति ।  
 र्त्स जात न धेनवः १००,७, ९४१ मातर र्वां रिहन्ति ।  
 र्त्स न मातृभिः १०४,२, ९७५ गय साधनं ससृजत ।  
 र्त्स सशिश्वरीः इव ६१,१४, ४०१ तम् इत् गिरः ।  
 र्त्स न पूर्वे आयुनि १००,१; ९३५ जात रिहन्ति मातर ।  
 वनुषः यशा सीदन्तः ६४,२९; ५०६ वाजी अक्रमीत् ।  
 वयो न वृक्षम् अथ० ६,२,२; १२४९ आ य विशन्तीन्द्रवः ।  
 वरः न योषणाम् १०१,१४, ९५७ सरत् योनिम् आसदम् ।  
 वरुण न सिन्धून् ९०,२, १२ वना वसाना ।  
 वर्मी इव १०८,६, १०३१ पृष्णो आ रुज ।  
 वसुभिः ननिकै ९३,३; ८२० गाव. पयसा अभि ।  
 वाजम् इव ३७,५; २७० सोम. असरत् ।  
 वाजम् इव ६२,१६; ४३३ सोमः असरत् ।  
 वाज न एतशः अच्छा १०८,२; १०२८ सः इषः ।  
 वाजे न वाजयुम् ६३,१९; ४६६ अय्यः वारेषु सिञ्चत ।  
 वाजी न सप्ति. ९६,९, ८४१ समना जिगाति ।  
 वाजी इव सानसिः १००,४; ९३८ वारं रहमाण ।  
 वाजिनि इव शुभः ९४,१, ८२३ अस्मिन् धियः स्पधेन्ते ।  
 वात न ९७,५२, ९०८ जूतः ।  
 वाताः इव २२,२; १७४ उरव ।  
 वायुः न नियुत्वान् ८८,३; ७८७ इष्टयामा र्वम् ।  
 विः योना वसतौ इव ६२,१५; ४३२ इन्दुः इह धीयते ।  
 विद्रुष न यज्ञम् यजु० ६,२६; ११९६ शृणोति देवः ।  
 विरपतिः न १०८,१०, १०३५ वह्नि ।  
 वृक्षम् न पक्रम् ९७,५३, ९०९ धूनवत् वसूनि ।  
 वृषा इव यूथा ७६,५; ६७५ परि कोशम् अर्षति ।  
 वृषा इव यूथा ९६,२०; ८५२ परि कोशम् अर्षन् ।  
 वृषा अभि कनिकदत् गाः ९७,१३, ८६२ शोण नदयन् ।  
 वृष्टयः पृथिवीम् इव १७,२; १३८ इन्द्र सोमामः अक्षरन् ।  
 वृष्टि न तन्वतुः १००,३; ९३७ मनोयुजं धियम् आ सृज ।  
 वृष्टेः इव ४१,३; २९२ स्वनः शृण्वे ।  
 वेः न द्रुषद् ७२,५, ६४३ चम्ब्रोः आसदत् हरि ।  
 वेधाः न योनिम् १०१,१५; ९५८ हरिः पवित्रे अव्यतः ।  
 व्रजम् न पशुवर्धनाय ९४,१; ८१३ कनीयन् मन्म पवते ।

शकुनः न पश्वावनेषु ९६, २३; ८५५ सोम कलशेषु सत्ता ।  
 शकुना इव १०७, २०, १०१९ सूर्यम् भति पणितम् ।  
 शार्धः न मारुतम् ८८, ७, ७९१ एव पवस्व ।  
 शर्यहा इव शुरुधः ७०, ५, ६२४ दुर्मतीः आदेदिशानः ।  
 शर्याभिः न भरमाणः ११०, ५, १०६८ अभ्याभि हि श्रवसा ।  
 शिशुः न क्रीळन् ११०, १०; १०७३ पवमान अक्षाः ।  
 शिशुः न जात ७४, १, ६५७ अवचक्रदत् वने ।  
 शिशु जज्ञानम् (न) ९६, १७, ८४९ हर्यतं मृजन्ति ।  
 शिशुम् न १०४, १; ९७४ यज्ञैः परि भूषत श्रिये ।  
 शिशुम् न १०५, १; ९८० यज्ञै स्वद्यन्त गर्तिभिः ।  
 शुभ्र न १४, ५; ११७ ममृजे युवा ।  
 शूरः न ७६, २, ६७२ आयुधा धत्ते ।  
 शूरः न सत्वा गाः गव्यन् अभि ८७, ७, ७८२ अदधावत् ।  
 शूरः न १६, ६, १३४। ६२, १९, ४३६ गोषु तिष्ठति ।  
 शूर यस्त्रिव सत्वाभि ३, ४; २४ सिषासति ।  
 शूरः न युध्यन् ७०, १०, ६२९ अव न निदः स्य ।  
 शूरः न रथः ९४, ३; २५ कविः काव्या भरते ।  
 श्येन न ३८, ४; २७५ विश्वु सीदति ।  
 श्येनः न ५७, ३; ३७४ वंसु सीदति ।  
 श्येनः न ६१, २१; ४०८ योनिम् आसीद ।  
 श्येनः न ६२, ४, ४२१ योनिम् आमदत् ।  
 श्येनः न ६५, १९; ५२६ योनिम् आसीदन् ।  
 श्येन न योनिम् ७१, ६, ६३५ सदनम् पृषति ।  
 श्येनः न ८२, १, ७०१ योनि घृत्वन्त आमदम् ।  
 श्येन न वंसु ८६, ३५, ७६२ कलशेषु सीदसि ।  
 श्येनः न तक्तः ६७, १५; ५८२ ते रमः अर्षति ।  
 श्येनः वर्म वि गाहते ६७, १४, ५८१ कलशेषु आ धावति ।  
 श्रवस्यव न पृतनाज ८७, ५; ७८० पवित्रेभिः पवमानाः ।  
 श्रौष्टी इव धुरम् ८, ४८, २ ११३६ राये अनु ऋध्या ।  
 सखा इव सख्ये १०४, ५, ९७८ न गातुवित्तम भव ।  
 सखा इव सख्ये १०५, ५, ९८४ नर्यः रुचे भव ।  
 सखा इव सख्ये ८, ४८, ४, ११३८ न श भव ।  
 सखा सख्युः न ८६, १६, ७४३ प्र मिनाति सगिरम् ।  
 सख्युः न जामिम् ९६, २२; ८५४ ऋदन् एति ।  
 सघ्न इव ९२, ६; ८१७ पशुमान्ति होता ।  
 सपितः इव ९६, १६, ८४८ श्रवस्य ।  
 सपितः न १०३, ६, ९७३ वाजयुः ।

सपित न वाजयु १०६, १२, ९९७ असर्जि कलशान् अभि ।  
 सपित न वाजयुः मीळ्डे १०७, ११, १०१० तिरः जपवानि ।  
 समुद्रासः न ८०, १, ६९१ सवनानि वि विव्यच्युः ।  
 समुद्रम् न १०७, ९, १००८ सवरणानि अगमन् ।  
 समुद्रम् इव सिन्धवः १०८, १६, १०४१ धानम् आ प्रिश ।  
 सिन्धवः न नीची ८८, ६ ७९१ सुतामः कलशान् अभि ।  
 सर्गः न तक्ति १६, १; १२९ एतश ।  
 सर्गः न सृष्ट ८७, ७, ७८२ अर्वा अदधावत् ।  
 सिंह न ९७, २८; ८८४ भीम ।  
 सिन्धु न निम्नम् ९७, ४५; ९०१ अभि वाजि अक्षा ।  
 सिन्धु न १०७, १२, १०११ पिपये अर्णसा ।  
 सिन्धोः इव ऊर्मि ८०, ५, ६९५ पवमान अर्षभि ।  
 सिन्धोः इव प्रवणे ६९, ७, ६१६ वृषच्युता मदास ।  
 सुयम न ९६, १५, ८४७ वोळ्हा ।  
 सुनु न १०७, १३, १०१२ प्रियः सोमः मर्ज्य ।  
 सूपस्थाभि न धेनुभि ६१, २१; ४०८ ममिष्क अरुणः ।  
 सूरः न ६६, २२, ५५९ विश्वदर्शनः ।  
 सूरः न ८६, २४, ७११ चित्रः ।  
 सूर न स्वयुग्भि १११, १, १०७६ हरिण्या रुवा पुनानः ।  
 सूर न उप ९७, ३८, ८९४ उभे रोदसी वि अप्राः ।  
 सूर्यः इव ५४, २, ३६१ उपदृक ।  
 सूर्यः इव ५४, २; ३६१ मरांभि धावति ।  
 सूर्यास न १०१, १२; ९५५ दर्शतामः ।  
 सूर्यस्य इव न रश्मय ६४, ७, ४८४ प्र ते सर्गाः अमृक्षन् ।  
 सूर्यस्य इव रश्मय ६९, ६, ६१५ द्रावयित्तव ।  
 सूर्ये न विशः ९४, १, ८२३ अम्मिन् धिय स्पर्धन्ते ।  
 स्तवः तव यथा ५५, २, ३६५ तथा प्रिये अर्हिपि नि सद् ।  
 स्तुका इव ९७, १७, ८७३ यीता ।  
 स्वशः न ७३, ४, ६५१ नि मिपन्ति भूर्णय ।  
 स्वर न ९८, ८; ९२२ हर्यतः ।  
 स्वमरे न गावः ९४, २, ८२४ धियः पिन्वाना अभि वा श्रं ।  
 हंसः यथा ३२, ३, २३८ गणम् आर्वाविशत ।  
 हित न सति ७०, १०, ६२९ वाजम् अभि अर्ष ।  
 हिताः न सप्तयः रय २१, ४; १६९ पवमानासः चार्या आशत ।  
 हिन्वानास न सप्तय ६५, २६, ५३३ श्रीणाना, अप्सु मृत्तन्त ।  
 होता इव ९७, ४७; ९०३ याति समनेषु रेभन् ।  
 होता इव सदने ९२, २, ८१३ चमूषु सीदन् ।  
 होतारः न ९७, २६; ८८२ दिवियजः मन्द्रतमाः ।

दैवत-संहितान्तर्गत-

सोममंत्राणां वर्णानुक्रमसूची ।

अशुरशुष्टे देव	११९४	अत्यो न हियानो अभि	७३०	अपो वसानः परि	१०२५
अंशुं दुहन्ति स्तनयन्	६४४	अदब्ध इन्दो पवसे	७१८	अप्सा इन्द्राय वायवे	५२७
अक्रान्तसमुद्रः प्रथमे	८२६	अङ्गि सोम पृचानस्य	६६५	असु त्वा मधुमत्तमं	२२८
अग्न आयूषि पवस	५५६	अङ्गयस्त्वा राजा वरुणो	१२४४	अभय छावापृथिवी	१२५३
अग्नि न मा मथितं	११४०	अद्रिभि सुतः पवते	६३२	अभिक्रन्दन् कलश	७३८
अग्निर्ऋषिः पवमानः	५५७	अद्रिभि सुतः पवसे	७५०	अभि क्षिपः समगमत	११९
अग्निर्न यो वन भा	७८९	अद्रिभिः सुतो मतिभिः	६६९	अभि गव्यानि वीतये	४४०
अग्नीषोमा पुनर्वसू	१२३४	अध क्षपा परिष्कृतो	९२८	अभि गावो अधन्विषु	१८८
अग्ने पवस्व स्वपा	५५८	अध धारया मध्वा	८६७	अभि गावो अनूषत	२४०
अग्नेगो राजाप्यस्त०	७७२	अध यदिमे पवमान	१०७२	अभि ते मधुना पयो	८७
अग्ने सिन्धूनां पवमानो	७३९	अध श्वेतं कलशं	६६४	अभि त्वं गाव पयसा	७१५
अङ्गिरसो नः पितरो	१२३०	अधा हिन्वान इन्द्रियं	३३५	अभि त्वं पूर्यं मदं	४३
अचिक्रद् वृषा हरि०	१६	अधि घामस्थ्याद् वृषभो	७२४	अभि त्वं मद्यं मदम्	४२
अचोदसो न धन्व०	६८६	अधि यदस्मिन्	८२३	अभि त्रिपृष्टं वृषणं	८०१
अच्छा कोशं मधुश्चुतं	५४८	अधुक्षत मिय मधु	१३	अभि त्वा योषणो दश	३७०
अच्छा नृचक्षा असरत्	८१३	अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं	३४६	अभि त्वेन्द्र वरिमतः	१२५८
अच्छा समुद्रमिन्दवो	५४९	अनसमप्सु दुष्टरं	१३१	अभि शुम्नं वृहद् यश	१०३४
अच्छा हि सोमः कलशो	६९७	अनु द्रप्त्वास इन्दव	४४	अभि द्रोणानि बभ्रवः	२४३
अच्छिन्नस्य ते देव	१२०१	अनु प्रत्नास आयवः	१८१	अभि नो वाजसातमं	९१५
अजीजनो अमृत	१०६७	अनु हि त्वा सुतं	१०६५	अभि प्रिया दिवस्सदं(०दा) ८५, १०२	३७३
अजीजनो हि पवमान	१०६६	अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः	१००८	अभि प्रियाणि काव्या	३७३
अजीतयेऽहतये	८३६	अन्तश्च प्रागा अदितिः	११३६	अभि प्रियाणि पवते	६६६, ८६८
अज्जते व्यज्जते	७७०	अपघ्नन्तो अरावणः	११२	अभि ब्रह्मीरनूषत	२४६
अज्जन्त्येनं मध्वो	१०६१	अपघ्नन्नेषि पवमान	८५५	अभि वङ्गिरमस्यं	७३
अतस्त्वा रयिमभि	३३३	अपघ्नन्सोम रक्षसो	४७६	अभि वस्त्रा सुवसना	९०६
अति त्री सोम रोचना	१४१	अपघ्नन् पवते मृधो	४१२	अभि वायुं वीत्यर्षा	९०५
अति वारान् पवमानो	३८६	अपघ्नन् पवसे मृध.	४७१	अभि विप्रा अनूषत	९६, १४२
अति श्रितो तिरश्चता	११८	अप त्या अस्थुरनिरा	११४५	अभि विश्वानि वार्या	३००
अत्य मृजन्ति कलशे	७२२	अप द्वारा मतीनां	८२	अभि वेना अनूषत	४९८
अत्या हियाना न	१०९	अपाम सोमममृता	११३७	अभि सुवानास इन्दवो	१३८
अयू पवित्रमक्रमाद्	३१७	अपामिवेदूर्मय	८३०	अभि सोमास आयवः १८३, १०१३	९३५
अयूर्मिमेश्वरो मधः	१३९	अपां रस प्रथमजो	१२४७	अभी नवन्ते अद्रुह.	९३५

अभी नो अर्ष दिव्या	९०७	अया पवस्व धारया	४५४	असृग्रमिन्दवः पथा	५०
अभी३ममद्गया उत	९	अया पवा पवस्वैना	९०८	अस्मभ्यं गातुवित्तमो	९९१
अभीमृतस्य विष्टप	२५२	अया रुचा हरिण्या	१०७६	अस्मभ्यं स्वा वसु०	९७७
अभ्यभि हि श्रवसा	१०६८	अया वीती परि स्वव	३८८	अस्मभ्यमिन्दविन्द्र	१९
अभ्यर्षे बृहद् यशो	१६२	अया सोमः सुकृत्पया	३२६	अस्मभ्य रोदसी रथि	५८
अभ्यर्षे महानां देवानां	४	अयुक्त सूर एतश	४५५	अस्माकमायुर्वर्धय	११२६
अभ्यर्षे विचक्षण	३५०	अरममाणो अत्येति	६४१	अस्मान्समयं पवमान	७१७
अभ्यर्षे सहस्त्रिणं	४५९	अरममानो येऽरथा	८७६	अस्मे धेहि द्युमद्	२४१
अभ्यर्षे स्वायुध सोम	३७	अरावीदशु. सचमान	६६१	अस्मे वसूनि धारय	४७७
अभ्यर्षानपच्युतो	३८	अरुषो जनयन् गिरः	१९८	अस्मे सोम श्रियमधि	१०९८
अभ्यूर्णोति यज्ञमं	११५१	अरुरुचदुषसः	७०८	अस्य ते सख्ये वयं	४१६, ५५१
अभिप्रहा विचर्षणिः	९२	अर्थिनो यन्ति चेदर्थं	११५४	अस्य पीत्वा मदाना०	१८६
अमृक्तेन रुशता	६१४	अर्वा इव श्रवसे	८८१	अस्य प्रस्नामनु द्युत	३६०
अयं कक्षीवतो महो	११६९	अर्षा णः सोम श गो	४०२	अस्य प्रेषा हेमना	८५७
अयं कृन्ुरगृभीतो	११५०	अर्षा सोम द्युमत्तमो	५२६	अस्य व्रतानि नाष्टपे	३५८
अयं त आष्टुगे सुतो	५७९	अलायस्य परशुः	५९७	अस्य व्रते सजोषसो	९६४
अयं दक्षाय साधनो	९८२	अव द्युतानः कलशाँ	६६८	अस्य वो ह्यवसा पान्तो	९२२
अय दिव इयति	६०८	अव यत् स्वे सधस्ते	११५८	अस्येदिन्द्रां मदेष्वा	१०, ९८८
अयं देवेषु जागृविः	३१०	अवा कल्पेषु न.	७४	आ कलशा अनूषत	५२१
अयं नो विद्वान्	६७९	अवावशान्त धीतयो	१५५	आ कलशेषु धावति	१४०, ५८१
अयं पुनान उषसो	७४८	अविता नो अजाश्वः	५७७	आच्छद् विधानैर्गुपितो	११७४
अयं पूषा रथिर्भग	९५०	अव्ये पुनान परि	७५२	आ जागृविर्धिम	८९३
अयं भराय सानसि	९८७	अव्ये वधूयुः पवते	६१२	आ जामिरस्के अव्यत	९५७
अयं मतवाञ्छुकुनो	७४०	अव्यो वारे परि प्रियो(०य)५५, ३४३		आ त इन्द्रो मदाय	४३७
अयं मे पीत उदियति	११२९	अव्यो वारेभिः पवते	९५९	आ तू न इन्द्रो शत	६४७
अयं विचर्षणिर्हितः	४२७	अश्वो न क्रदो वृषभि	८८४	आ ते दक्ष मयोभुव	५३५
अयं विद्वच्चिप्रदृशी०	११३१	अश्वो न चक्रदो वृषा	४८०	आ ते रुच पवमानस्य	८५६
अयं विप्राय दाशुषे	११७०	अश्वो बोळ्हा सुख रथं	१०८२	आत्मन्वज्जभो दुह्यते	६६०
अयं विश्वानि तिष्ठति	३६२	अषाळहं युत्सु पृतनासु	११२१	आत्मा यज्ञस्य रद्धा	४८
अयं स यो दिवस्पति	२८१	असर्जि कलशाँ अभि	९९७	आत् सोम इन्द्रियो	३२८
अयं स यो वरिमाण	११३०	असर्जि रथ्यो यथा	२६०	आ दक्षिणा सृज्यते	६३०
अयं सूर्य इवोप	३६१	असर्जि वक्त्रा रथ्ये	८०६	आदस्य शुग्मिणो रसे	११५
अयं सोम इन्द्र तुभ्यं	७८५	असर्जि वाजी तिर	१०६०	आ दिवस्पृष्टमश्वयु.	२६५
अयं सोमः कपर्दिने	५७८	असर्जि रक्कभो द्विव	७७३	आर्दी केचित् पश्य	१०६९
अयं स्तुवान भागम	१२४१	असश्चतः शतधारा	७५४	आर्दी त्रितस्य योषणो	२३७
अयं स्वादुरिह मदिष्ठ	११२८	असावि सोमो अरुषो	७०१	आर्दीमश्व न हेतारो	४२३
अया चित्तो विपानया	५१९	असाव्यंशुमदायाप्सु	४२१	आर्दी हसो यथा गण	२३८
अया निजग्निरोजसा	३५७	असृक्षत प्र वाजिनो	४८१	आ धावता सुहस्य	३२३
अया पवस्व देवयु	९९९	असृग्रन् देववीतये	३२०, ५८४	आ न इन्द्रो मर्हामिधं	५२०

आ न इन्द्रो शतग्विन	५२४, ५७३	आ सोता परि षिञ्चता	१०३२	इन्द्रायेन्दुं पुनीतन	४४६
आ न पवस्व धारया	२५४	आ सोम सुवानो अद्रिभिः	१००९	इन्द्रायेन्द्रो मरुत्वते	४९९
आ न पवस्व वसु	६१७	आस्मिन् पिशाङ्गमिन्द्रवो	१७०	इन्द्रो न यो महा	७८८
आ न पूषा पवमान.	६९९	आ हर्यताय घृणवे	९२७	इमं यज्ञमिद वचो	१११०
आ नः शुष्म नृषाह्य	२२६	आ हर्यतो अर्जुने	१०१२	इमे मा पीता यशस	११३९
आ नः सुतास इन्द्रव.	९९४	इद यत् प्रेष्य. शिरो	११९०	इमौ देवौ जायमानौ	१२१८
आ नः सोम पवमानः	६९८	इद स्वरिदमिदास	१२१५	इयमग्ने नारी पति	१२३५
आ न. सोम सहो जुवां	५२५	इद हविर्यातुधानान्	१२४०	इषं तोकाय नो दधद०	५२८
आ नः सोम संयन्त	७४५	इन्द्रविन्द्राय बृहते	६१९	इषमूर्जमभ्य १षांश्च	८२७
आ नः सोम पवित्र आ	४३८	इन्दु रिहन्ति महिषा	९१३	इषमूर्जं च पिन्वस	४४९
आ पवमान धारय	१०३	इन्दुः पविष्ट चारु	१०५४	इषमूर्जं पवमाना	७६२
आ पवमान नो	१८२	इन्दुः पविष्ट चेतनः	४८७	इषिरेण ते मनसा	११४१
आ पवमान सुष्टुति	५१०	इन्दुः पुनानः प्रजा	१०५०	इषुर्न धन्वन् प्रति	६१०
आ पवस्व गविष्टये	५५२	इन्दु पुनानो भति	७५३	इषे पवस्व धारया	४९०
आ पवस्व दिशां	१०८४	इन्दुरस्यो न वाजसृत्	३०६	इष्यन् वाचमुपक्वेत्र	८३२
आ पवस्व मदिन्तम	१९९, ३४४	इन्दुरिन्द्राय तोशते	१०६३	ईशान इमा भुवनानि	७६४
आ पवस्व महीमिष	२९३	इन्दुरिन्द्राय पवत	९४८	जुक्षा मिमाति प्रति	६१३
आ पवस्व सहस्त्रिण	४२९, ४४८	इन्दुर्देवानामुपसख्य	८६१	उक्षेच यूथा परिय०	६३८
आ पवस्व सुवीर्यं	५१२	इन्दुर्वाजी पवते	८६६	उष्ठा ते जातमन्धसो	३९७
आ पवस्व हिरण्यवद्	४६५	इन्दुर्हिन्वानो अर्षति	५७१	उत स्या हरितो दश	४५६
आपानासो विवस्वतो	८१	इन्दुर्हियान. सोतृभि	२२५	उत त्वामरुणं वय	३१६
आप्यायस्व मदिन्तम	१११७	इन्द्रो यथा तव स्तवो	३६५	उत न एना पवया	९०९
आ प्यायस्व समेतु ते	२३३, १११६	इन्द्रो यदद्रिभिः सुतः	१९१	उत नो गोमतीरिषो	४४१
आ मन्द्रमा वरेण्यमा	५३६	इन्द्रो व्यव्यमर्षसि	५७२	उत नो गोविदश्ववित्	३६६
आ मारुक्षत् पर्णमणिः	११८०	इन्द्रो समुद्रमीङ्क्ष्य	२५५	उत नो वाजसातये	१०७
आ मित्रावरुणा भग	५७	इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर	४५२	उत प्र पिण्य ऊध०	८२०
आ यं विशन्तीन्द्रवो	१२४९	इन्द्रमच्छ सुता इमे	९८६	उत व्रतानि सोम ते	११६२
आ यद् यानि हिरण्य०	४९७	इन्द्रस्ते सोम सुतस्य	१०४३	उत स्म राशिं परि	७८४
आयमगन् पर्णमणि	११७६	इन्द्रस्य सोम पवमान	६७३	उत स्वस्या अराग्या	६८८
आ ययोश्चिश्त तना	३७९	इन्द्रस्य सोम राधसे	६१, ३८७	उताह नक्तमुत	१०१९
आ यन्तस्थां भुवना०	७१२	इन्द्रस्य हार्दि सोम	१०४१	उतो सहस्रभर्गस	५०३
आ यो गोभिः सृज्यत	७१३	इन्द्राय त्वा वसुमते	११९७	उत् ते शुष्मास ईरते	३४१
आ यानिमरुणो रुद्रद्	२८५	इन्द्राय पवते मद	१०१६	उत् ते शुष्मासो अस्थू	३५६
आ यो विश्वानि वायो	१४८	इन्द्राय वृषणं मद	९९०	उदीचीं दिक् सोमो	१२४६
आ रयिमा सुचेतुनमा	५३७	इन्द्राय सोम पवसे	१८५	उन्मध्व ऊर्मिर्वनना	७६७
आ वच्यस्व महि	१२	इन्द्राय सोम परि	६८२	उप भ्रितस्य पाष्यो	९६१
आ वच्यस्व सुदक्ष	१०३५	इन्द्राय सोम पातवे	९३, २२४, १०४०	उप भ्रिय पतिन्तं	५९६
आविवासन् परावतो	२८२	इन्द्राय सोममृत्विज.	१२४८	उपयामगृहीतोऽसि	१२०२, १२०३
आविशन् कलशं सुतो	४३६	इन्द्राय सोम सुधुत	७१६		
आशुरर्षं बृहन्मते	२७८				

उप शिक्षापतस्थुषो	१५७	एते मृष्टा भमर्था	१७६	एष पुरु धियायते	१२७
उपास्मै गायता नरः	८६	एते वाता ह्वोरव	१७४	एष प्र कोशे मधुमो	६७६
उपो मति पृच्यते	६११	एते विश्वानि वार्या	१६९	एष प्रत्नेन जन्मना	२९
उपो पु जातमन्तुरं	४००	एते सोमा भति	७९०	एष प्रत्नेन मन्मना	२९७
उभयतः पवमानस्य	७३३	एते सोमा अभि गव्या	७८०	एष प्रत्नेन वयसा	२०३
उभाभ्यां देव सवित	५९२	एते सोमा अभि प्रिय	५९	एष रुक्मिभिरियते	१२५
उभे धावापृथिवी	७००	एते सोमा असृक्षत	४३९	एष वसूनि पिङ्गना	१२६
उभे सोमावचाकशन्	२३९	एते सोमा पवमानाम	६१८	एष वाजी हितो नृभिः	२१२
उरुगव्युतिरभयानि	८०३	एते सोमास भाशवा	१७३	एष विप्रैरभिष्टुतो	२६
उरुष्या णो अभिशस्ते.	१११५	एते सोमास इन्द्रवः	३२०	एष विश्ववित् पवते	९१०
उशिक् एवं देव सोमाग्नेः	१२०८	एना विश्वान्यर्थ आ	३९८	एष विश्वानि वार्या	२४
उस्ना वेद वसूना	३७७	एन्द्रो पार्थिव रथि	२२३	एष वृषा कनिक्रदद्	२१५
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि	७२७	एन्द्रस्य कुक्षा पवते	६९३	एष वृषा वृषव्रत	४२८
ऊर्मिर्धस्ते पवित्र आ	४८८	एवा त इन्द्रो सुभ्र	६९०	एष शुष्म्यदाभ्य सोम	२१७
ऊजु पवस्व वृजिनस्य	८९९	एवा देव देवताते	८८३	एष शुष्म्यसिष्यदद्	२११
ऋत वदन्तृत्थुञ्ज	१०८६	एवा न इन्द्रो अभि	८७७	एष शृङ्गाणि दोधुव०	१२४
ऋतस्य गोपा न दभाय	६५५	एवा न. सोम परि	६०९, ८९२	एष सुवानः परि	७८२
ऋतस्य जिह्वा पवते	६६७	एवा पवस्व मदिरो	८७१	एष सूर्यमरोचयत्	२१६
ऋतस्य तन्तुर्वितत.	६५६	एवा पुनान इन्द्रयुः	४०	एष सूर्येण हासते	२१०
ऋतूदरेण सख्या	११४४	एवा पुनानो अप	८११	एष सोमो अधि त्वचि	५६६
ऋधक् सोम स्वस्तये	५०७	एवा मृताय महे	१०४४	एष स्य ते पवत	९०२
ऋभुर्न रथ्यं नव	१७१	एवा राजेव ऋतुमा	८०५	एष स्य ते मधुमा	७७९
ऋषिमना य ऋषिकृत्	८५०	एष उ स्य पुरुवतो	३०	एष स्य धारया सुतो	१०३०
ऋषिर्विप्रः पुरएता	७७८	एष उ स्य वृषा रथो	२७२	एष स्य परि विच्यते	४३०
ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमै	१०९५	एष इन्द्राय वायवे	२०७	एष स्य पीतये सुतो	२७७
एत उ रथे अवीवशन्	१७२	एष कविरभिष्टुत	२०६	एष स्य मथो रमो	२७६
एतं स्य हरितो दश	२७४	एष गव्युरच्चिक्रदत्	२०९	एष स्य मानुषीषत्रा	२७५
एत त्रितस्य योषणो	२७३	एष तुन्नो अभिष्टुतः	५८७	एष स्य सोम. पवते	७१४
एतमु स्यं दश क्षिपो	१२८, ३९४	एष ते गायत्रो भाग	११९२	एष स्य सोमो मतिभि	८४७
एतमु स्यं मदच्युतं	१०३६	एष दिव वि धावति	२७	एष हितो वि नीयते	१२३
एतं मृजन्ति मज्यं	१२७, ३२५	एष दिव व्यासरत्	२८	एषा ययौ परमा	७८३
एतानि सोम पवमानो	६८५	एष देव शुभायते	२१४	एह यातु वरुण	१२५६
एते असृग्प्रमाशवो	४५१	एष देवो भमर्थ	२१	ऋकुभन् रूप वृषभस्य	१२०७
एते असृग्प्रमिन्दवास्तिरः	४१८	एष देवो रथ्यति	२५	ऋकुह. सोम्यो रम०	५७५
एते धामान्यार्या शुक्रा	४६१	एष देवो विपन्युभिः	२३	कनिक्रदत् कलशे	७२०
एते धावन्तीन्द्रव	१६६	एष देवो विपा कृतो	२२	कनिक्रददनु पन्था०	८८८
एते पूता विपश्चित	१७५, २५५	एष धिया यात्यण्ड्या	१२१	कनिक्रन्ति हरिरा	८२८
एते पृष्ठानि रोदसो०	१७७	एष नृभिर्वि नीयते	२०८	कवि मृजन्ति मज्यं	४६७
		एष पवित्रे अक्षरत्	२१३	कविर्वेधस्या पर्येषि	७०२
		एष पुनानो मधुमा	१०७४		



कारुहं ततो	१०८१	तं सखाय पुरोरुचं	९२६	तव त्य इन्दो अन्धसो	३४८
कुविद् वृषण्यन्तभियः	१५६	तं सानावधि जामयो	२०४	तव त्ये सोम पवमान	८१५
कृण्वन्तो वरिवो गवे	४२०	त सोतारो धनस्पृत	४३५	तव त्ये सोम शक्तिभिः	११६४
कृतानीदस्य कर्वा	३२७	तं हिन्वन्ति मदच्युत	३५९	तव द्रप्सा उदप्रुत	९९३
केतु कृण्वन् दिवस्परि	४८५	तक्षद् यदी मनसो	८७८	तव प्रत्नेभिरध्वभिः	३५२
क्रवा दक्षस्य रथमपो	१३०	तं गाथया पुराण्या	९३०	तव विश्वे सजोषसो	१४७
क्रवा शुक्रेभिरक्षभि	९६७	त गावो अभ्यनूपत	२०१	तव शुक्रासो अर्चयो	५४२
क्रवे दक्षाय नः कवे	९३९	तं गीर्भिर्वाचमीङ्गय	२५८	तवाह सोम रारण	१०१८
क्राणा शिशुर्महीनां	९६०	त गोभिवृषण रस	४६	तवेमाः प्रजा दिव्यस्य	७५५
क्रीळुर्मखो न महयुः	१६५	तन्तुं तन्वानमुत्तममु	१७८	तवेमे सप्त सिन्धवः	५४३
गन्धर्व इत्या पदमस्य	७०९	त ते सोतारो रस	१०५२	ता अभि सन्तमस्तृतं	७२
गयस्कानो अमीवहा	१११२	त त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे	४३४	तस्य ते वाजिनो वयं	५१६
गिरस्त इन्द ओजसा	१७	त स्वा देवेभ्यो मधु०	६९४	ताभ्यां विश्वस्य राजसि	५३९
गिरा जात इह स्तुत	४३२	तं स्वा धर्तारमोण्योः	५१८	तिग्मायुधौ तिग्महेती	१२२६
गिरा यदी सवन्धव	११४	त स्वा नृग्णानि बिभ्रत	३३१	तिस्त्रो देवीर्महि नः	११८७
गोजिन्नः सोमो रथ०	६८४	तं स्वा मदाय घृष्वय	१८	तिस्त्रो वाच ईरयति	८९०
गोमन्न इन्दो अश्ववत्	९८३	त स्वा विप्रा वचोविदः	५००	तिस्त्रो वाच उदीरते	२४५
गोमन्नः सोम वीरवद्	३०१	त स्वा सहस्रचक्षस	३८५	तुभ्यं वाता अभिप्रियः	२३२
गोवित् पवस्व वसु०	७६६	त स्वा सुतेष्वाभुवो	५३४	तुभ्यं गावो घृतं पयो	२३४
गोषा इन्दो नृषा असि	२०	त स्वा हस्तिनो मधु०	६९५	तुभ्येमा भुवना कवे	४४४
ग्रन्थि न वि ष्य ग्रथितं	८७४	तं स्वा हिन्वन्ति वेधसः	२०५	ते अस्य सन्तु केतवो	६२२
ग्राहणा तुष्णो अभिष्टुतः	५८६	तं दुरोषमभी नरः	९४६	ते नः पूर्वास षपरास	६७८
घृतं पवस्व धारया	३३८	तन्तु सत्य पवमान	८१६	ते नः सहस्रिणं रथि	१०८
ञ्चक्रिर्दिवः पवते	६८०	त नो विश्वा अवस्युवो	३०३	ते नो वृष्टि दिवस्परि	५३१
चतस्र इं घृतदुहः	७९७	तपोष्पवित्र विततं	७०७	ते प्रत्नास व्युष्टिपु	९२५
चमूपच्छयेनः शकुनो	८५१	तममृक्षन्त वाजिनं	२००	ते विश्वा दाशुषे वसु	४८३
चरुर्न यस्तमीङ्खयेन्दो	३५३	तमस्य मर्जयामसि	९२९	ते सुतासो मदिन्तमाः	५८५
जग्निर्वृत्रममित्रिय	४०७	तममन् भुरिजोर्धिया	२०३	त्रातारो देवा अधि	११४८
जज्ञान सप्त मातरो	९६३	तमिद् वर्धन्तु नो गिरो	४०१	त्रिभिष्ट्वं देव सवितः	५९३
जनयन् रौचना दिवां	२९६	तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो	८	त्रिरस्मै सप्त धेनवो	६२०
जरतीभिरोषधीभिः	१०८०	तमीमण्वीः समर्थ	७	श्रीणि त्रितस्य धारया	९६२
जायेव पर्यावधि	७०४	तमी मृजन्त्यायवो	४६४	स्वं राजेव सुव्रतो	१६३
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः	१११	तमुक्षमाणमभ्यये	९३१	स्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु	१४६
जुष्टो मदाय देवतात	८७५	तमु स्वा वाजिनं नरो	१४३	स्वं समुद्रिया अपो	४४३
जुष्टी न इन्दो सुपथा	८७२	त मर्मृजान महिषं	८३१	स्वं समुद्रो असि	७५६
ज्योतिर्यज्ञस्य पवते	७३७	तया पवस्व धारया	३१९, ३३७	स्वं सुतो नृमादनो	५६९
तं वः सखायो मदाय	९८०	तरत् स मन्दी धावति	३७६	स्वं सुष्वाणो भद्रिभिः	५७०
तं वेधां मेधयाह्यन्	२०२	तरत् समुद्रं पवमान	१०१४	स्वं सूर्यं न आ भज	३५
		तव क्रवा तवोतिभिः	३६	स्वं सोम क्रतुभिः	११०२

स्वं सोम तनूकृद्भयो	११५२	द्विद्युतस्या रुचा	५०५	नाभा पृथिव्या धरुणो	६४५
स्वं सोम नृमादन.	१९०	दिवः पीयूषं पूष्यं	१०७१	नित्यस्तोत्रो वनस्पति	१०१
स्व सोम पणिभ्य आ	१७९	दिवः पीयूषमुत्तम	३४७	निरिणानो वि धावति	११६
स्वं सोम पवमानो	३८२	दिवस्पृथिव्या अधि	२३१	नि शत्रोः सोम वृष्ण्य	१५८
स्वं सोम पितृभि	११४७	दिवि ते नाभा परमो	६८९	नि शुष्ममिन्द्रवेषा	३५४
स्व सोम प्र चिकितो	११०१	दिवो धर्तासि शुक्रः	१०४७	नून पुनानोऽविभिः	१००१
स्व सोम महे भग	११०७	दिवो न सर्गां अमसृष्टम०	८८६	नू नव्यसे नवीयसे	७५
स्वं सोम विपाश्चित	१३६, ५०२	दिवो न सानु पिण्युपी	१३५	नू नस्त्वं रथिगे देव	९०४
स्व सोम सूर एष	५५५	दिवो न सानु स्तनय०	७३६	नू नो रथिमुप	८२२
स्वं सोमासि धारयुः	५६८	दिवो नाके मधुजिह्वा	७२५	नू नो रथि महामिन्द्रो	२८६
स्वं सोमासि सस्पतिः	११०५	दिवो नाभा विचक्षणो	९८	नृचक्ष्म त्वा वय	६७
स्व हि नस्तन्वः सोम	११४३	दिवो यः स्कम्भो धरुणः	६५८	नृधृतो अद्रिपुनो	६४२
स्वं हि सोम वर्धयन्	३४९	दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि	८८९	नृवाहुभ्यां चोदितो	६४३
स्वं ह्यङ्ग देव्या	१०२८	दिव्यान्यः सदन चक्र	१२२०	नृभिर्यमानो जजान	१०४२
स्व च सोम नो वशो	११०६	दुहान ऊर्धादिव्य	१००४	नृभिर्यमानो हर्यते	१०१५
स्व चित्ती तव दक्षैः	११५३	दुहानः प्रत्नमित् पय.	२९९	परा व्यक्तो अरुपो	६३६
स्वं त्यत् पणीनां	१०७७	देवाव्यो नः परिपिच्य	८८०	परि कोश मधुश्चुत	९७०
स्व छां च महीजत	९४३	देवीराप एष वो	१२०५	परि णः शर्मयन्त्या	२९५
स्वं धियं मनोयुज	९३७	देवेन नो मनसा देव	११२३	परि णेता मतीना	९७१
स्वं न. सोम विश्वतो	११०८, ११४९,	देवेभ्यस्त्वा मद्राय क	६३	परि णो अश्वमश्वविद्	३९०
	११६६	देवेभ्यस्त्वा नृथा	१०६२	परि णो देववीतये	३६३
स्व न. सोम सुक्रतुः	११६७	देवो देजाय धारया	४७	परि णो याह्यमयुः	४९५
स्वं नृचक्षा असि	७६५	द्यौश्च म इद पृथिवी	१२६१	परि ते जिग्युषो यथा	९३८
स्व नो वृत्रहन्तमे	११६८	द्रापश्चस्कन्द प्रथमो	१२३१	परि त्य हर्यत हारि	९२१
स्वमिन्द्रो परि स्वव	४२६	द्रापि वसानो यजतो	७४१	परि दद्य हन्द्रस्य	१२६०
स्वमिन्द्राय विष्णवे	३७१	द्विता व्यूर्ध्वज्ञमृतस्य	८२४	परि दिव्यानि मर्मशद्	१२०
स्वमिमा ओषधीः सोम	११२२	द्विर्यं पञ्च स्वयशम	९२०	परि देवीरनु स्वधा	९७२
स्वं पवित्रे रजभो	७५७	धर्ता दिवः पवते	६७१	परि शुक्ष सहसः	६३३
स्वया वय पवमानेन	९१४	धिय पूषा जिन्वतु	१०२२	परि शुक्ष सनद्रथिः	३५१
स्वया वीरेण वीरवो	२५६	धीभिर्हन्वन्ति वाजिन	९९६	परि धामानि यानि ते	५४०
स्वया हि नः पितरः	८४३	ध्वस्त्रयो. पुरुषन्थोरा	३७८	परि प्र धन्वेन्द्राय	१०४२
स्वां यज्ञैरवीवृधन्	३९	न त्वा शत चन हुतो	४१४	परि प्रथन्तं वटय	६०७
स्वां रिहन्ति मातरो	९४१	नपनीभिर्यो विवस्वत	११७	परि प्र सोम ते रसो	५८२
स्वां सोम पवमान	७५१	नमसेदुप सीदत	९१	परि प्राग्विद्यदत् कवि	११३
स्वामच्छा चरामसि	५	नमो दिवे बृहते	४२१६	परि प्रियः कलशं	८४१
स्वां मृजन्ति दश योषण.	६०६	न वा उ सोमो वृजिन	११३४	परि प्रिया दिव कवि	८६
स्वे सोम प्रथमा	१०७०	नाके सुपर्णमुप०	७२६	परि यत् कविः काव्या	८२५
स्वेवं रूप कृणुते	६३७	नानान वा उ नो धियो	१०७९	परि यत् काव्या कविः	५३
स्वोतासस्तवावसा	४११	नाभा नाभि न आ दवे	८४		

परि यो रोदसी उभे	१५०	पवमानस्य ते कवे	५४७	पवस्वेन्द्रो पवमानो	८५३
परि वाजे न वाजयु	४६६	पवमानस्य ते रसो	४०४	पवस्वेन्द्रो वृषा सुतः	४१५
परि प्राराण्यव्यया	९६९	पवमानस्य ते वयं	३९१	पवित्र ते वितत	७०६
परि विश्वानि चेतसा	१६१	पवमानस्य विश्ववित्	४८४	पवित्रवन्तः परि	६५०
परिष्कृताम इन्द्रो	३२१	पवमाना असृक्षत	४७२, १०२४	पवित्रेभिः पवमानो	८८०
परिष्कृण्वन्निकृन्तं	२७९	पवमाना दिवस्परि	४७४	पवीतारः पुनीतन	३४
परि ष्य सुवानो अक्षा	९१७	पवमानां अशयः	४७३	पशु नः सोम रक्षसि	११६५
परि ष्य सुवानो अव्यय	९१६	पवमानां इन्द्रव	५७४	पाता नो घात्रापृथिवी	१२५०
परि ऋक्षेय पशु	८१७	पवमानो अजीजनद्	४०३	पावमानी स्वस्त्ययनीः १२११, १२१४	१२१२
परि ससिर्न वाजयु	९७३	पवमानो अति स्त्रियो	५५९	पावमानीर्दधन्तु न	५९९
परि सुवानश्चक्षसे	१००२	पवमानो अभि स्पृधो	५४	पावमानीर्यो अध्ये	६५२
परि सुवानाम इन्द्रो	८०	पवमानो अभ्यर्षा	७२३	पितुर्मातुरभ्या ये	१०५६
परि सुवानो गिरिष्ठा	१४५	पवमानो अस्त्रिष्यद्	३४०	पिबन्त्यस्य विश्वे	५९४
परि सुवानो हरि	८१२	पवमानो रथीतम	५६३	पुनन्तु मां देवजनाः	१२३७
परि सोम ऋत	३६८	पवमानो व्यश्ववद्	५६४	पुनाता दक्षमाधन	९७६
परि सोम प्र वन्वा	६७०	पवस्व गोजिदश्वजिद्	३८०	पुनाति ते परिस्नुत	६
परि हि ष्मा पुरुहूतो	७८१	पवस्व जनयन्निषो	५४१	पुनान इन्द्रवा भर	२८९, ९३६
परीतो वायवे सुत	४५७	पवस्व दक्षसाधनो	१९४	पुनान इन्द्रवेपा	५०४
परीतो पित्रता सुत	१०००	पवस्व देवमादनो	७११	पुनानः कलशेषा	६४
पर्जन्यः पिता महिष्य	७०३	पवस्व देववीतय	९९२	पुनानः सोम जागृविः	१००५
पर्जन्यवृद्ध महिष	१०८५	पवस्व देववीरति	११	पुनानः सोम धारया	४७५, १००३
पर्णोऽमि तनूपानः	११८३	पवस्व देवायुषग	४६९	पुनानश्चमू जनयन्	१०१७
पर्यु पु प्र धन्व	१०६४	पवस्व मधुमत्तम	१०२६	पुनानास्त्रमूपदो	६०
पवत हर्यतो हरि	५३२, ९९८	पवस्व वाचो अग्रिय	४४३	पुनानो अक्रमीदभि	२८४
पवन्ते वाजमानयं	१०६	पवस्व वाजसातमः	९४०	पुनानो देववीतय	४९२
पवमान ऋत कवि	४४७	पवस्व वाजसातये	३०७, १०२२	पुनानो याति हर्यत	३०४
पवमान ऋत वृहच्छुक्र	५६१	पवस्व विश्वचर्षणे	५३८	पुनानो रूपे अव्यये	१३४
पवमान सुतो नृभि	४३३	पवस्व वृत्रहन्तमो	१९२	पुनानो वरिवस्कृधि	४९१
पवमान सो अद्य न	५८९	पवस्व वृष्टिमा सु नो	३३६	पुरः सद्य इत्याधिये	३८९
पवमान विया द्वितो	१९५	पवस्व सोम ऋत्वे	१०५१	पुराजिती वो अन्धसः	९४४
पवमान नि तोशसे	४७०	पवस्व सोम ऋतुविज्ञ	७७५	पूर्वापर चरतो	१२३८
पवमानमवस्यवां	१०५	पवस्व सोम दिव्येषु	७४९	पर्षामनु प्रदिश याति	१०७८
पवमान महि श्रप	७६, ९४२	पवस्व सोम देववीतये	६२८	प्र कविर्देवर्वातये	१५९
पवमान सद्यर्षो वि	७६१	पवस्व सोम शुक्ली	१०४८	प्र काव्यमुशनेव	८६३
पवमान रसस्तव	४०५	पवस्व सोम मधुमाँ	८४५	प्र कृष्टिहेव शूष	६३१
पवमान रुचारुचा	५०९	पवस्व सोम मन्दयन्	५८३	प्र गायताभ्यर्चाम	८६०
पवमान विद्या रथिम्	३०५, ४५८	पवस्व सोम महान्समुद्रः	१०४५	प्र गायत्रेण गायत	३८४
पवमान सुवीर्यं	९४	पवस्वाद्भ्यो अदाभ्य	३८१	प्रजा ह तिस्रो अत्था	११५९
पवमानस्य जङ्घनो	५६२				

प्र ण इन्द्रो महे तन	३०८	प्र सेनानी शूरो भद्रे	८३३	मन्द्रया सोम धारया	४१
प्र ण इन्द्रो महे रण	५५०	प्र सोम देववीतये	१०११	मन्द्रस्य रूप विविट्.	६०५
प्र णो धन्वन्तिवन्द्वो	६८७	प्र सोम मधुमत्तमो	४६३	मथि क्षत्र पर्णमणे	११७७
प्र त भाशवः पवमान	७२८	प्र सोम याहि धारया	५४४	मर्माणि ते वर्मणा	१२२८
प्र त आश्विनी. पवमान	७३१	प्र सोम याहीन्द्रस्य	१०५९	मर्मजानास आयवां	४९४
प्र तु द्रव परि कोश	७७६	प्र सोमस्य पत्रमानस्य	६९६	मर्यो न शुभ्रस्तन्व	८५२
प्र ते दिवो न वृष्टयो	४४५	प्र सोमाय व्यश्ववत्	५१४	महत् तत् सोमो महिप	८९७
प्र ते धारा अत्यण्वानि	७७४	प्र सोमास. स्वाध्य	२३०	महो अलि सोम ज्येष्ठ	५५३
प्र ते धारा असश्चतो	३७२	प्र सोमासो अधन्विषु.	१८७	महान्त त्वा मही	१४
प्र ते धारा मधुमती	८८७	प्र सोमासो मदच्युतः	२३६	महि पर सुकृत	६५९
प्र ते मदासो मदिरास	७२९	प्र सोमासो विपश्चितो	२४२	महीम अस्य वृषनाम	९१०
प्र ते सोतार ओण्यो	१२९	प्र सोमो अति धारया	२२७	महो नो राय आ भर	४१३
प्र त्वान्मानादध्या ये	६५३	प्र स्वानासो रथा ह्व	७७	मा न सोमपरिवाधां	१०९९
प्र त्वा नमोभिरिन्द्रवः	१३३	प्र हसासस्तृपल	८६४	मा न. सोम स वीत्रिजो	११५७
प्र दानुदो दिव्यो	८७९	प्र हिन्वानास इन्द्रवो	४९३	मा मेर्मा सत्रिक्या	११९९
प्र देवमच्छा मधुमन्त	६००	प्र हिन्वानो जनिता	८००	मित्रो न एहि सुमित्रध	११९३
प्र धन्वा सोम जागृवि.	९८९	प्रागपागुदगधराक्	१२००	मिमाति वह्निराश	४९६
प्र धारा अस्य शुष्मिणो	२२४	प्रातरग्नि प्रातरिन्द्र	१२२९	मृजन्ति त्वा दश क्षिपो	६२
प्र धारा मध्वो अग्निषो	५१	प्रावीविपट्टाच ऊर्भि	८३९	मृजन्ति त्वा समग्रुवो	५४६
प्र निम्नेनेव सिन्धवो	१३७	प्रास्य धारा अक्षरन्	२१८	मृजानो वारे पवमानो	१०२१
प्र पवमान धन्वासि	१८९	प्रास्य धारा बृहती	८५४	मृज्यमान सुहस्य	१०२०
प्र पुनानस्य चेतसा	१३२	प्रो अयासीदिन्द्रिरिन्द्रस्य	७४३	मो पु णः सोम मृत्यवे	१२३६
प्र पुनानाय वेधसे	९६८	प्रो स्य वह्निः पथ्या०	७९३	य आर्जाकेषु कृत्तसु	५३०
प्र प्यादस्व प्र स्वन्दस्व	५९१	सुभवे नु स्वतवसे	८०	य इन्द्रो पवमान	१०९४
प्रप्र क्षयाय पन्थसे	६९	विभर्ति चार्विन्द्रस्य	१०५५	य इमं रादभी मर्वा	१४९
प्र यज्ञो वाचो अग्निषो	५२	ब्रह्मा देवानां पदवी.	८३८	य उग्रभ्रश्रिजोजीया	५५४
प्र ये गावो न भूर्णय	२९०	ब्राह्मणासः पितरः	१०२७	य उत्तरतो जुहति	११८८
प्र राजा वाच जनय०	६८१	भद्र नो अपि वातय	११६०	य उस्त्रिया अप्या	१०३१
प्र रेभ एत्यति	७५८	भद्रा वस्त्रा समन्या	८५८	य ओजिष्टस्तमा भर	९५२
प्र वाचमिन्दुरिष्यति	१००	भुवत् प्रितस्य मज्यो	२५१	यः पात्रमानीरुधेति	५९८
प्र वाजमिन्दुरिष्यति	२५७	मघोन आ पवस्व नो	६५	य. सोमः कलशेणो	९९
प्र वृण्वन्तो अभियुजः	१६७	मती जुष्टो धिया हित	३०९	य. सोम सख्य तव	१११४
प्र वो धियो मन्द्रयुवो	७४४	मत्सि वायुमिष्टयं	८९८	यज्ञस्य केतु. पवते	७३४
प्र शक्रासो वयोजुवो	५३३	मत्सि सोम वरुण	८०४	यत् ते पवित्रमर्चिदग्ने	५९१
प्रसवे त उदीरते	३४२	मदच्युत् क्षेति सादने	९७	यत् ते पवित्रमर्चिदग्ने	५९०
प्र सुन्वानस्यान्धलो	९५६	मधुपृष्ठ वारमया	७९६	यत् ते राजञ्जुत	१०९७
प्र सुमेधा गानुविद्	८१४	मघोर्धारामनु क्षर	१४४	यत् ते सोम दिग्नि	११९८
प्र सुवान इन्द्रुरक्षाः	५६५	मध्वः सूद पवस्व	९००	यत् त्वा देव प्रपिबन्ति	११७५
प्र सुवानो अक्षा	१०५७	मर्नाधिभि. पवते	७४७	यत्र कामा निकामाश्च	१०९०
प्र सुवानो धारया	२४८				

यत्र ज्योतिरजस्र	१०८९	ये राजानो राजकृतः	११८२	विश्वान्यन्यो भुवना	१२२१
यत्र ब्रह्मा पवमान	१०८८	ये सोमासः परावति	५२९	विश्वा रूपाण्याविशन्	१९७
यत्र राजा वैवस्वतो	१०९०	यो अत्य इव मृज्यते	३०२	विश्वा वसूनि संजयन्	२२१
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च	१०९३	यो अद्य सेन्यो वधो	१२५९	विश्वा सोम पवमान	२८७
यत्रानुकाम चरण	१०९१	यो जिनाति न जीयते	३६७	विश्वो यस्य व्रते जनो	२५९
यत् सोम चित्रमुक्थ्यं	१५२	यो धारया पावकया	९४५	विष्टम्भो दिवो धरुणः	७९८
यत् सोमा वाजमर्षति	३६९	यो न इन्दु पितरो	११४६	वीती जनस्य दिव्यस्य	८०७
यथापवया मनवे	८४४	यो नः सोम सुशसिनो	११८५	वृथा क्रीळन्त इन्दवः	१६८
यथा पूर्वभ्य शतमा	७०५	यो नः सोमाभिदासति	११८६	वृषण धीभिरप्तुर	४६८
यदग्निः परिषिच्यसे	५१३	यो वः शुष्मो हृदयेषु	१२५७	वृषाण वृषभिर्यत	२५०
यदन्ति यच्च दूरके	५८८	रक्षा सु नो भरुवः	२२२	वृषा पवस्व धारया	५१७
य एषा वाजिजघ्न्या	६९२	रक्षोहा विश्वचर्षणि.	२	वृषा पुनान आयुपु	१५४
यं निदधुर्वनस्पतौ	११७८	रथि नश्चित्रमश्विनम्	४०	वृषा मतीना पवते	७४६
यमन्यमिव वाजिन	४५	रस ते मित्रो अर्यमा	५०१	वृषा वि जज्ञे जनय०	१०३७
यमी गर्भमृतावृधो	९६५	रसायनः पयसा	८७०	वृषा वृष्णे रोरुव०	८०८
यवयव नो अन्धमा	३६४	राजानो न प्रशस्तिभिः	७९	वृषा शोणो अभि	८६९
यशा इन्द्रो यशा अग्नि	१२५४	राजा मेधाभिरियते	५२३	वृषा सोम शुर्मो असि	४७८
यस्ते द्रप्स स्फन्दति	१२३२	राजा समुद्र नद्यो	७३५	वृषा ह्यसि भानुना	५११
यस्ते द्रप्सः स्फुत्रो	१२३३	राजा सिन्धूनामवसिष्ट	७९४	वृषेव यूथा परि	६७५
यस्ते मदो वरेण्य	४०६	राजा सिन्धूनां पवते	७६०	वृष्टि दिव परि स्रव	६६
यस्य ते ह्युमनपत्	५६७	राज्ञो नु ते वरुणस्य	७९०, ११०३	वृष्टि दिवः शतधार	८४६
यस्य ते पीत्वा वृषभो	१०२७	रायः समुद्राश्चतुरो	२४७	वृष्टि नो अर्षे दिव्यां	८७३
यस्य ते मद्य रस	५२२	रास्वेयत् सोमा भूयो	११९१	वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो	४७९
यस्य न इन्द्रः पिबाद्	१०३९	रुजा ट्ठहा चिद्	८०९	व्रेशीनां त्वा पत्नञ्जा०	११०६
यस्य वर्णं मधुश्चुत	५१५	रुवति भीमो वृषभ	६२६	ज्ञात धारा देवजाता	८८५
या ते धामानि दिवि	११०४	वृन्वञ्जवातो अभि	७९०	शत न इन्द्र ऊतिभिः	३५५
या ते धामानि हविषा	१११९	वय ते अस्य वृत्रहन्	९१९	श ते अग्नि सहस्रिः	१२४२
या ते भीमान्यायुधा	४१७	वरिवोधातमो भव	३	श नो भव हृद् आ	११३८
यास्ते धारा मधुश्चुतो	४२४	वाचो जन्तुः कवीनां	५८०	शर्यणावति सोम	१०८३
यास्ते प्रजा अमृतस्य	११००	वायुर्न यो नियुक्वो	७८७	शिशुं जज्ञान हरिं	१०५३
युव हि स्थ स्वर्पती	१५३	वावृधानाय तूर्वथे	२९८	शिशुं जज्ञान हर्यत	८४९
ये ते पवित्रमूर्मयो	३९२	वाश्रा अर्पन्तान्दवो	११०	शिशुर्न जातोऽत्र चक्रद्	६५७
ये धीवानां रथकारा	११८१	विघ्नतो दुरिता पुरु	४१९	शुक्र पवस्व देवेभ्यः	१०४६
येन देवा पवित्रेणा	१२१३	विद्द् यत् पूर्यं नष्ट०	११५५	शुचिः पावक उच्यते	१९३
येन साभ साहन्या	१२५२	विपश्चिते पवमानाय	७७१	शुचि पुनानस्तन्त्रं	६२७
येन सोमादिति पथा	१२५१	वि यो ममे यम्या	६०२	शुभ्रमन्धो देववातं	४२२
येना नवरवो दध्यद्	१०२९	विश्वस्मा हूत् स्वर्दंश	३३४	शुभ्रममान क्रतायुभिः	२६३
येनावपत् सविता	१२५५	विश्वस्य राजा पवते	६७४	शुभ्रममाना क्रतायुभिः	४८२
ये पाकशम विहरन्त	११३२	विश्वा धामानि विश्वचक्ष	७३२	शुष्मी शर्धो न मारुत	७९१

शूरग्राम सर्ववीरः	८०२	स पवस्व धनजय	३२४	समेनमहता इमा	२५३
शूरो न घत्त आयुधा	६७२	स पवस्व मदाय क	३१४	सम्यक् सम्यञ्चो महिषा	६४९
शृण्वे वृष्टेरिव स्वन.	२९२	स पवस्व मदिन्तम	३४५	सं मातृभिर्न शिशु	८१९
श्येनो न योनि सदन	६३५	स पवस्व य आविथ	४०९	समिष्ठा अरुपो भव	४०८
श्रिये जात श्रिय आ	८२६	स पवस्व विवर्षण	२९४	स रतत उरुगायस्य	८६५
श्वेत रूप कृणुते	६६३	स पवस्व सहमान	१०७५	स रोरुवदामि पूर्वा	६०१
स ई रथो न भुरि	७८६	स पवित्र विचक्षणो	२६७	स वर्धिता वर्धन.	८९५
सं वत्स इव मातृभिः	९८१	स पुनान उप सूर	८९४	स वह्निरासु दुष्टरां	१६४
सवृक्षधृष्णमुक्थ	३३२	स पुनानो मदिन्तम	९३२	स वाह्न सोम जागृमि	२६१
सखाय आ नि षीदत	९७४	स पूर्व्य. पवते य	६७७	स वां यज्ञपु मानवी	९२३
स त् पवस्व परि	६४६, १०२३	स पूर्व्यो वसुविज्जायमानो	८४२	स वाजी रोचना द्विव	२६८
सत्यमुग्रस्य बृहत	१०८७	सप्त दिशो नानासूर्या.	१०९६	स वाज्यक्षा सहस्रेता	१०५८
सत्येनोत्तमिता भूमि.	११७१	सप्त स्वसारो अग्नि	७६३	स वायुमिन्द्रमश्विना	५६
स त्रितस्याधि मानवि	२६९	सप्ति मृजन्त वधमो	२१९	स विश्वा दाशुषे वसु	२६४
स देवः कप्रिनेपितो	२७१	स प्रतवन्नव्यसं	८१०	स वीरो दक्षसाधनां	९५८
स न इन्द्राय यज्यत्रे	३९९	स मन्दना उदियति	७६८	स वृषहा वृषा सुता	२७०
स न ऊर्जे व्यय्यय	३३९	स भिक्षमाणो अमृतस्य	६२१	स शुष्मी कलशेष्वा	१५१
स नः पवस्व वाजयु	३११	स मत्सर. पृत्सु	८४०	स सप्त धीतिर्मिदिता	७१
स न पवस्व शं गवे	८८	स ममृजान आयुभि	३७४, ५६०	स सुत. पीतये वृषा	२६६
स नः पुनान आ भर	२८८, ३९३	स ममृजान इन्द्रियाय	६२४	स सुन्वे यो वसूना	१०३८
सना च सोम जेषि	३१	समस्य हरि हरयो	८३४	स सूनुर्मतरा शुधि	७०
सना ज्योतिः सना	३२	स मातरा न ददशान	६२५	स सूर्यस्य रश्मिभि.	७५९
सना दक्षमुत क्रतु	३३	स मातरा विचरन्	६०३	सहस्रणीय. शतधारां	७१९
सनेमि कृष्यस्मदा	९७९	स मामृजे तितो	१०१०	सहस्रधार पवते	९४९
सनेमि त्वमस्मदो	९८५	समिन्द्रेणात वायुना	३९५	सहस्रवार वृषभ	१०३३
स नो अध वसुत्तयं	३१३	समीचीना अनृत	२८३	सहस्रवारोऽत्र ता	६६२
स नो अर्ष पवित्र आ	४८९	समीचीनाम आसते	८३	सहस्रधारोऽव ते	६५१
स नो अर्षाभि दूत्य	३१५	समीचीने अभि त्मना	९६६	सहस्रधारं वितते	६५४
स नो ज्योतीषि पूर्व्य	२६२	समी रथ न भुरिजो	६३४	सहस्रोति शतामवां	४३१
स नो देव देवताते	८३५	समी वत्स न मातृभि	९७५	स हि त्व देव शश्वत	९१८
स नो देवेभि पवमान	८२१	समी सग्रायो अस्वरन्	३१८	स हि ष्मा जरितृभ्यः	१६०
स नो भगाय वायवे	३१२, ३९६	समु त्वा धीभिरस्वरन्	५४५	साक वदन्ति बहवो	६४०
स नो मदानां पत	९७८	समुद्रिया अप्परसो	६८३	साकमुक्षो मर्जयन्त	८१८
स नो विश्वा दिवां	३७५	समुद्रे ते हृदयमास्वन्त	१२०४, १२१०	सिन्धोरिय प्रवणे	६१६
स नो हरीणां पत	९८४	समुद्रा अप्सु मामृजे	१५	सिपासत् रयीणां	३३०
सं ते पयासि समु	१११८	समु प्र यन्ति धीतय.	११६३	सिंह नसन्त मध्वो	७९५
सं श्री पवित्रा वितता	९११	समु प्रिया अनूपत	९५१	सुत इन्द्रो पवित्र आ	९३४
सं दक्षेण मनसा	६०४	समु प्रियो मृज्यते	८५९	सुत (ता) इन्द्राय वायवे	२४४, २४९
स देवै. शोभते वृषा	१९६	स मृज्यते सुकर्मभि	९३३	सुत इन्द्राय विष्णवे	४५०
		स मृज्यमाणो दशभिः	६२३	सुत गति परि ( ना	२८०

सुता अनु स्वमा रजो	४५३	सोम यास्ते मयोभुव	११०९	सोमो वीरुधामधिपतिः	११८४
सुता इन्द्राय वज्रिणे	४६२	सोम राजन् मृळया	११४२	स्तोत्रे राये हरिरर्षा	८६२
सुतासो मधुमत्तमाः	९४७	सोम राजन् विश्वास्त्वं	११९६	स्रक्वे द्रप्सस्य धमत.	६४८
सुनोता मधुमत्तमं	२२९	सोम रारन्धि नो हृदि	१११३	स्वयं कविर्विधर्तरि	३२९
सुविज्ञानं चिकितुषे	११३३	सोमस्य धारा पवते	६९१	स्वादिष्टया मदिष्टया	१
सुवितस्य मनामहे	२९१	सोमस्य पर्णः सह	११७९	स्वादु पवस्व दिव्याय	७२१
सुवीरासो वयं धना	४१०	सोमस्य राज्ञो वरुणस्य	१२३९	स्वादुष्किलायं मधुमां	११२७
सुशेवो नो मृळयाकु	११५६	सोमा असृप्रमाशवो	१८०	स्वादोरभाक्षि वयसः	११३५
सुषहा सोम तानि ते	२२०	सोमा असृप्रमिन्दव	९५	स्वायुधः पवते देव	७७७
सुष्वाणासो व्यद्विभिः	९५४	सोमा पवन्त इन्द्रवो	९५३	स्वायुध सोतृभिः	८४८
सूर्यस्येव रश्मयो	६१५	सोमापूषणा जनना	१२१७	स्वायुधस्य ते सतो	२३५
सो अग्ने अह्ना हरिः	७६९	सोमापूषणा रजमो	१२१९	हरि सृजान. पथ्या	८२९
सो अर्षेन्द्राय पीतये	४२५	सोमारुद्रा धारयेथा०	१२२३	हरि सृजन्यरूपो न	६३९
सो अस्य विशे महि	७४२	सोमारुद्रा युवमेतानि	१२२५	हविर्हविष्मं महि सश	७१०
सोम उ षुवाण.	१००७	सोमारुद्रा वि वृहत	१२२४	हस्तच्युतेभिरद्विभिः	९०
सोमः पवते जनिता	८३७	सोमेनादित्या बलिनः	११७२	हितो न सप्तिरभि	६२९
सोमः पुनान ऊर्मिणा	९९५	सोमो अर्षति धर्णमि	१८४	हिन्वन्ति सुरमुत्तय०	५०८, ५७६
सोमः पुनानो अर्षति	१०४	सोमो अस्मभ्य द्विपदे	११२५	हिन्वानासो रथा इव	७८
सोमः पुनानो अश्वये	१०७३	सोमो जिगाति गातुविद्	११२४	हिन्वानो वाचमिष्यसि	४८६
सोमः सुतो धारयास्यो	९०१	सोमो देवो न सूर्यो	४६०	हिन्वानो देतृभिर्यत	५०६
सोम गीर्भिष्टवा वषं	११११	सोमो धेनु सोमो	११२०	हुवे सोमं सवितारं	१२४५
सोम गावो धेनवो	८९१	सोमो मीद्वान् पवते	१००६	हृदिस्पृशस्त आसते	११६१
सोमजुष्टं ब्रह्मजुष्टं	१२४३	सोमो युनक्तु बहुधा	११८९	हृदे त्वा मनसे त्वा	११९५
सोमं मन्यते पपिवान्	११७३	सोमो राजामृतं सुत	१२०९		

# दैवत-संहितान्तर्गत-सोमदेवताया गुणबोधक-पदानां सूची ।

[ सोमदेवतायाः 'सोमः' इति 'सोमासः' इति च एकानेकवचनत्वेन निर्देशकारणानुगुणबोधकपदानामपि तथाविधत्वमेव । ]  
(अस्यां सूच्यां १०९७ पर्यन्त मन्त्राः ऋग्वेदस्य नवममण्डलस्था विद्यन्ते । तेषा मण्डलक्रमाङ्क '९' इत्यत्र न निर्दिष्टः ।)

<p>अंशुः ६२, ४; ४२१ । ६८, ४, ६; ६०३, ६०५ । ७२, ६; ६४४ । ७४, २, ५; ६५८, ६६१ । ८६, ४६; ७७३ । ९१, ३; ८०८ । ९२, १; ८१२ । ९५, ४, ८३१ । वा० य० ५, ७, ११९४ अक्त गोभिः ९६, २२, ८५४ अक्तुभिः गोभि अञ्जानः ५०, ५, ३४५ अक्रान् ६९, ३; ६१२ अक्षितः २६, २; २०१ । ७८, ३; ६८३ । ७२, ६, ६४४ अगृभीतः ८, ६९, १; ११५० अग्नेः जनिता ९६, ५; ८३७ अग्रिय ७, ३; ५२ अग्रियः गोषु ८६, १२; ७३९ अग्नेगः ८६, ४५; ७७२ अघवांस २४, ७, १९३ । २८, ६, २१७ । ६१, १९, ४०६ अगिरस्तमः १०७, ६; १००५ अचोदसः ७९, १; ६८६ अजाश्वः [पूषा] ६७, १०; ५७७ अजिरशोचिः ६६, २५, ५६२ अज्यमान ९७, ३५, ८९१ अञ्जानः गोभि १०३, २; ९६९ अञ्जानः गोभि अक्तुभिः ५०, ५; ३४५ अस्यः-स्यामः-न्याः १३, ६; १०९ । ४६, १, ३२० । ६६, २३; ५६० अस्यवि १०६, ११; ९९६ अस्युभिः १७, ३; १३९ अदब्ध ७७, ५; ६८० । ८५, ३; ७१८ । ९७, १९; ८७५ । १०७, २, १००१ अदाभ्यः ३, २, २२ । २६, ४; २०३ । ७५, २; ६६७ । ८५, ६; ७२१ । १०३, ४; ९७१ । १०, २५, ७, ११६६ अदाभ्यासः अस्य केतवः ७०, ३; ६२२ अदितिः ८, ४८, २, ११३६ अदसक्रतुः ८, ७९, ७, ११५६</p>	<p>अङ्गिः सृजान १०९, १७; १०५८ अङ्गुत २०, ५, १६३ । ८५, ४; ७१९ अङ्गिदुग्धः ९७, ११; ८६७ अङ्गिवः ५३, १, ३५६ अङ्गिपुत ७२, ४, ६४२ अङ्गिसहत ९८, ६, ९२० अङ्गौ दुदुहान ९६, १०, ८४२ अधिपतिः अथ० ३, २७, ४, १२४६ अधिपतिः वीरुधाम् अथ० ५, २४, ७, ११८४ अधिगुः ९८, ५, ९१९ अध्वर्युभिः गुहाहितः १०, ९, ८५ अनपच्युतः ४, ८, ३८ अनसः १६, ३, १३१ अनभिज्ञस्ता ८८, ७; ७९१ अनवद्यः ६९, १०, ६१९ अनिन्धः ८२, ४; ७०४ अनिशितः तमोभिः ९६, २, ८३४ अनुकामकृत्, देवेभ्यः ११, ७; ९२ अनुमाद्य २४, ४, ६; १९०, १९२ । १०७, ११; १०१० अनुमाद्यः नृभिः ७६, १, ६७१ अन्तः पश्यन् ९६, ७; ८३९ अन्तरिक्षप्राः ८६, १४, ७४१ अन्ध ५१, ३, ३४८ । ६२, ५; ४२२ । १०१, १३; ९५६ अपन्नन् सृधः ६३, २४; ४७१ अपन्नन् रक्षस ६३, २९, ४७६ अपन्नन् वायुन् ९६, २३; ८५५ अपप्रोधन्त ९८, ११; ९२५ अपसेधन् दुरिता ८२, २, ७०२ अपां गन्धर्वे ८६, ३६, ७६३ अप कृण्वन् ९६, ३; ८३५</p>
---	--



अपः त्रसान् १६,२; १३० । ७८,१; ६८१ । ८६,४०;  
 ७६७ । ९६,१३; ८४५ । १०७,४,१८,२६; १००३,  
 १०१७,१०२५ । १०९,२१; १०६२  
 अप वृगान् ९४,१; ८२३  
 अपः श्रीगन् १०९,२३, १०६४  
 अपः सिपासन् ९०,४, ८०३  
 अप्तुगः ६१,१३; ४०० । ६३,५,२१; ४५२, ४६८ ।  
 १०८,७, १०३२  
 अप्रयावन् अथ० ३,५,१, २१७६  
 अप्पमा १,९१,२१, ११२१  
 अप्सु द्रास ८९,२; ७९४  
 अप्सु मृजान् ९६,१०, ८४२  
 अब्जित् ७८,४; ६८४  
 अभयानि कृण्वन् ९०,४; ८०३  
 अभिक्कन्दन् ८६,११, ७३८  
 अभिगीतः ९६,२३ ८५५  
 अभियुजः २१,२; १६७  
 अभिमातिषाहः १,९१,१८, १११८  
 अभिमातिहा ६५,१५, ५२२  
 अभिमाती. सहमानः ३,६३,१५; ११२६  
 अभिशान्तिपाः २३,५, १८४ । ९६,१०; ८४२  
 अभिश्रीणन् पयः पयसा ९७,४३, ८९९  
 अभिष्टिकृत् ४८,५, ३३५  
 अभिष्टित. २७,१, २०६ । ६७,१९-२०. ५८६-५८७  
 अभिष्टितः तिग्ने ३,६ २६  
 अभ्युन्दत पवित्रम् ६१,४, ३९१  
 अभ्रवर्षाः ८८,६; ७९०  
 अभर्त्याः-त्याः ३,१, २१ । ९,६, ७३ । २२,४, १७५ ।  
 २८,३,६, २१४,२१७ । ६८,८, ६०७ । ६९,५,  
 ६१४ । ८४,२ ७१२ । १०३,५; ९७२ । १०८,१२,  
 १०३७ । ८,४८,१२, ११४६  
 अभित्रहा ११,७; ९२ । ८६,१२, ८४४  
 अभीवहा १,९१,१२, १११२  
 अमृतः-म् ९१,२८; ८०७ । ११०,४; १०६७ । १,४३,९,  
 ११०० । ८,४८,३; ११३७ । वा०य०१९,७२, १२०९  
 अमृत्यव. अस्य केतवः ७०,३; ६२२  
 अयास. ४१,१, २९० । ८९,४; ७९६  
 अयासः मध्वः ८९,३; ७९५  
 अरममाण ७२,३, ६४१  
 अरागः अपन्नतः १३,९; ११२ । ६३,५. ४५२

अरिः ७९,३, ६८८  
 अरुणः ११,४ ८९ । ४०,२, २८५ । ४५,३, ३१६ ।  
 ७८४, ६८४  
 अरुष. ८,६, ६४ । २५,५; १९८ । ७१,७. ७३६ । ७४,१;  
 ६५७ । ८२,१, ७०१ । ८९,३, ७९५ । १११,१; १०७६  
 अरेपम. १०१,१०. ८५३  
 अपितः भुवनेषु ८६,१४; ७४१ । ८६,४५; ७७२  
 अर्थ २३,३; १८२  
 अर्वा ८७,७, ७८२  
 अवयाता हरस्य वैव्यम्य ८,४८,२, ११३६  
 अवात. ९६,८,११, ८४०,८४३ । ८,७९७, ११५६  
 अवीरहा १,९१,१९, १११९  
 अव्य. ६,१; ४१ । ९,५ ६३ । १२,४; ९८ । २८,१,  
 २१२ । ३८,१; २७२ । ५०,२-३, ३४२-३४३ ।  
 ५२,२, ३५२ । ६८,७, ६०६  
 अशान्तिहा ६२,११, ४२८ । ८७,२; ७७७  
 अश्वजित् ५९,१; ३८०  
 अश्वयुः ३६,६, २६५  
 अश्वविद् ५५,३, ३६६ । ६१,३, ३९०  
 अश्वसा २,१०, २० । ६१,२०, ४०७  
 अपाळहः युत्सु १,९१,२१; ११२१  
 अपाळह समत्सु ९०,३, ८०२  
 असमष्टकाव्यः ७६,४, ६७४  
 असश्चत. ७३,४, ६५१  
 असुरः ७३,१ ६४८ । ७४,७, ६६३  
 अस्तृत ९,५; ७२ । २७,४; २०२  
 अमृतः ३,८ २८  
 अस्मभ्य गातुवित्तम १०६,६, ९९१  
 अस्मयुः २,५. १५ । ६,१, ४१ । ६४,१८; ४९५  
 अस्मत्सरा वा० य० ८,५०, १२०८  
 आष्टिणि [ पूषा ] ६७,१२; ५७९  
 अङ्गूपाणः ९०,२, ८०१  
 आङ्गूष्यः ९७,८, ८६४  
 आत्मा इन्द्रस्य ८५,३; ७१८  
 आत्मा यज्ञस्य ६,८; ४८  
 आदधानः हस्तयोः विश्वावसु ९०,१, ८००  
 आनेता इळानाम् १०८,१३, १०३८  
 आनेता रायाम् १०८,१३; १०३८  
 आनेता वसूनाम् १०८,१३, १०३८  
 आनेता सुक्षितानाम् १०८,१३, १०३८

आपानासः विवस्वत १०,५; ८१  
 आपूर्ण ७४,२; ६५८  
 आप्यः ११०,६; १०६९  
 आप्यायमानः १,९१,१८; १११८  
 आयुः-यवः २३,२,४, १८१,१८३ । ६४,१७; ४२४ ।  
 १०७,१४, १०१३  
 आयुधा तुम्जानः ५७,२; ३७३  
 आयुधानि भिन्नत ९६,१९, ८५१  
 आयुधा सशिशानः ९०,१, ८००  
 आयुधा ते तिग्मानि ६१,३०; ४१७  
 आयुषक् २५,५, १९८  
 आविवासन् परावत. ३९,५; २८०  
 आविवासन् भर्वावतः ३९,५, २८२  
 आविशान् विश्वा रूपाणि २५,४; १९७  
 आवृत गोभि ८६,२७, ७५४  
 आशिर सृजान. ६४,१४, ४९१  
 आशुः शवः १३,६८, १०९ । १७,१, १३७ । २२,१,  
 १७३ । २३,१, १८० । ३९,१, २७८ । ५६,१, ३६८ ।  
 ६२,१,१८; ४१८,४३५ । ६३,४, ४५१ । ६४,४,१६,  
 ४८१,४९३ । ६९,६,७, ६१५,६१६ । ८६,१,२;  
 ७२८,७२२  
 आश्विनी. धीश्रुवः ते ८६,४; ७३१  
 आहित कलशेषु १२,५; ९९  
 आहितः पवित्रे अन्तः १२,५; ९९  
 आहुतीवृध् ६७,२९; ५९६  
 हन्तुः १,५; ५ । २,१,२,७,९,१०; ११-१२,१७,१९,२० ।  
 ४,१०; ४० । ६,२; ४२ । ८,७, ६५ । ९,५, ७२ ।  
 ११,१,६,९, ८६,९१,९४ । १२,५,९; ९९,१०३ ।  
 १३,४; १०७ । २३,६; १८५ । २४,५; १९१ ।  
 २६,२,६, २०१,२०५ । २७,४,६, २०९,२११ । २९,६;  
 २२३ । ३०,२,५; २२५,२२८ । ३१,२,६, २३२,२३५ ।  
 ३२,२, २३७ । ३४,१, २४८ । ३५,२,४; २५५,२५७ ।  
 ३७,६; २७१ । ३८,२,५; २७३,२७६ । ४०,३,४;  
 २८६-२८७ । ४१,४,२९३ । ४३,२,४,५; ३०३,३०५,  
 ३०६ । ४४,१; ३०८ । ४५,१,४-६, ३१४,३१७-३१९ ।  
 ५०,५, ३४५ । ५१,३, ३४८ । ५२,३-५, ३५३-३५५ ।  
 ५३,४; ३५९ । ५४,४, ३६३ । ५५,२; ३६५ ।  
 ५६,४, ३७१ । ५७,४; ३७५ । ५९,४; ३८३ । ६०,१;  
 ३८४ । ६१,१,२३,२६,२८,२९,३८८,४००,४१३,४१५,  
 ४१६ । ६२,२०,२९; ४३७,४४६ । ६३,९,१७,२८,३०;  
 ३० [ सोमः ] १५

४५६,४६४,४७५,४७७ । ६४,३, १०,१२,१३,२२,२५-  
 २७,४८०,४८७,४८९,४९०,४९९,५०२-५०४ । ६५,१,  
 ५,८,१३,१४,१७; ५०८,५१२,५१५,५२०,५२१,५२४ ।  
 ६६,१३,१४,१६,२३,२८; ५५०-५१,५५३,५६०,५६५ ।  
 ६७,४,६,८; ५७१-५७३,५७५ । ६८,९, ६०८ । ७०,  
 १०, ६२९ । ७२,४,९, ६४२,६४७ । ७६,२; ६७२ ।  
 ७७,४; ६७९ । ७९,५, ६९० । ८१,३, ६९८ । ८२,५,  
 ७०५ । ८४,२,४; ७१२,७१४ । ८५,३,४,८ । ७१८,  
 ७१९, ७२३ । ८६,१६,१८,२२-२४,२६,२८, ३७,३९,  
 ४१,४७,४८; ७४३, ७४५, ७४९, ७५०, ७५१, ७५३,  
 ७५५,७६४,७६६,७६८,७७४,७७५ । ८७,२; ७७७ ।  
 ८८,१, ७८५ । ९०,५,६; ८०४,८०५ । ९१,२,४,  
 ८०७,८०९ । ९३,३,५,८२०,८२२ । ९४,२; ८२४ । ९५,५;  
 ८३२ । ९६,८,९,२१,२३; ८४०-४१,८५३,८५५ ।  
 ९७,५,१०-१२,१६,१७, ८६१,८६६-८६८,८७२,८७३ ।  
 ९७,१९,२१,२२,२४, २८, २९, ३३, ४०, ४४, ५२, ५५-  
 ५७; ८७५,८७७,८७८,८८०,८८४,८८५,८८९,८९६,  
 ९००,९०८,९११-९१३ । ९८,१-४,९; ९१५ ९१८,  
 ९२३ । ९९,८, ९३४ । १००,२; ९३६ । १०१,५;  
 ९४८ । १०४,५; ९७८ । १०५,२,४-६, ९८१,९८३-  
 ९८५ । १०६,४,६, ९८९,९९१ । १०७,३, १००२ ।  
 १०९,९,१२,२०,२२; १०५०,१०५३,१०६१,१०६३ ।  
 ११०,१०,११; १०७३ ७४ । ११२,१-४,१०७९-१०८२ ।  
 ११३,१-१६; १०८३-१०९३ । ११४,१-४; १०९४ १०९७ ।  
 १,४७,८, १०९९ । १,९१,१; ११०१ । ८,४८,२,४,८,  
 १२,१३,१५, ११३६,११३८,११४२,११४६ ४७,११४९ ।  
 १०,२५,९, ११६८ । वा० य० ८,९, १२०३  
 हन्त्रः ६,४; ४४ । ७,१; ५० । १०,४, ७० । १२,१,  
 ९५ । १३,५,७; १०८,११० । १६,५; १३३ । २१,  
 १,३,५; १६६,१६८,१७० । २४,१; १८७ । ४६,२,३,  
 ३२१,३२२ । ६२,१, ४१८ । ६३,६,२५,२६; ४५३,  
 ४७२-७३ । ६४,१६,१७, ९९३-९९४ । ६५,२४,५३१ ।  
 ६६,१२; ५४९ । ६७,७; ५७४ । ६८,१; ६०० ।  
 ७७,३, ६७८ । ७९,१,२, ६८६ ८७ । ८५,१,७,  
 ७१६,७२२ । ८६,१,२, ७२८-२९ । १०१,२,८,१०;  
 ९४५,९५१,९५३ । १०६,१,९, ९८६,९९४ । १०७,२६,  
 १०२५ । ८,४८,५; ११३९ । अथर्व० ६,२,२. १२४९  
 हन्द्र ६,२; ४२  
 हन्द्रः इति श्रुवन् ६३,९, ४५६  
 हन्द्रं वर्धन्तः ६३,५; ४५२

इन्द्रेण दत्त अथ० ३,५,४, ११७९  
 इन्द्रस्य प्रियः ९८,६; ९२० । १०२,१; ९३५  
 इन्द्रस्य जनिता ९६,५; ८३७  
 इन्द्रस्य सखा ९६,२; ८३४ । १०१,६, ९४९ । १०,२५,९, ११६८  
 इन्द्रस्य सख्य जुषाण ९७,११, ८६७ । ८,४८,२; ११३६  
 इन्द्रस्य हृदमनिः ६१,१४, ४०१  
 इन्द्रपातम. ९९,३; ९२९  
 इन्द्रपानः ९६,३, १३; ८३५, ८४५  
 इन्द्रपीत ८,९, ६७  
 इन्द्रयुः २,९, १२ । ६,९, ४९ । ५४,४; ३६३  
 इन्द्रियः रत्न. ४७,३, ३२८ । ८६,१०; ७३७ । १०७,२५;  
 १०२४  
 इन्द्रियावान् वा० य० ८,९; १२०३  
 इभ ५७,३, ३७४  
 इयक्षन्तः पथ रजः २२,४, १७६  
 इयानः समिती. ९२,६, ८१७  
 इपः जनयन् ३,१०, ३०  
 इपः मही प्रचक्राण. १५,७; १२७  
 इपयन् गा ९६,८, ८४०  
 इपयन् देवानां सुमनम् ८४,३; ७१३  
 इषस्पतिः १४,७; ११९ । १०८,९, १०३४  
 इषित कविना ३७,६, २७१  
 इष्टयामा ८८,३, ७८७  
 इष्यन् वाचम् ९५,५, ८३२  
 इळाना आनेता १०८,१३; १०३८  
 ईढ्यः ६६,१, ५३१  
 ईरयन् अग्निः वाचः ६२,२६, ४४३  
 ईरयन् द्रव्यान् ९७,५६, ९१२  
 ईरयन् समुद्रिया अपः ६२,२६; ४४३  
 ईशान-ना १९,२; १५३ । ६१,६; ३९३ । ६२,२९;  
 ४४६ । ८६,३७; ७६४  
 ईशानः विश्वस्य १०१,५; ९४८  
 उक्थ्यः २९,२, २१२ । ४८,२, ३३२ । ८६,४८; ७६४ ।  
 १०८,१६; १०४१  
 उक्षणम् (द्वि०) ८५,१०, ७२५ । ८७,४३; ७७० । ९५,४;  
 ८३१  
 उक्षमाणः ९९,५, ९३  
 उक्षितः अपां ऊर्मौ ७२,७; ७४५  
 उग्रः ६२,२९; ४४६ । १०९,६३; १०६४ । ११३,५;  
 १०८७

उत्तमः ५१,२; ३४७ । १०८,१६; १०४१  
 उत्तम. धासिः ८५,३; ७१८  
 उत्तमं हविः १०७,१; १०००  
 उत्सः १०७,४, १००३  
 उत्सः वस्त्रः ९७,४४, ९००  
 उज्जिद् ८,७९,१; ११५०  
 उदप्रुतः १०८,७; १०३२  
 उक्तीता दध्ना ८१,१; ६९६  
 उपदृक् ५४,२, ३६१  
 उपपत्तिवान् नाके ८५,११, ७२६  
 उपम ८६,३५, ७६२  
 उपरासः ७७,३, ६७८  
 उपष्टुत् ८७,९, ७८४  
 उपारुहः ६८,२, ६०१  
 उपावसु ८४,३; ७१३  
 उराणः १०९,९; १०५०  
 उरवः २२,२, १७४  
 उरुगभ्युतिः ९०,४; ८०३  
 उरुगाय ६२,१३; ४३० । ९७,९; ८६५  
 उरु वरुथम् ८,७९,३; ११५२  
 उरुशंस ८,४८,४, ११३८  
 उरुस्यु-स्यवः ८,४८,५, ११३९  
 उशन ६८,६; ६०५ । ९५,३; ८३०  
 उशिक् वा० य० ८,५०; १२०८  
 उषसः प्रतरीता ८६,१९, ७४६  
 उषस भगं जनन्त. १०,५, ८१  
 ऊर्जं वसान ७८,३; ६८३  
 ऊर्मिः ७८,२; ६८२ । ८६,४०; ७६७ । ११०,११; १०७४  
 ऊर्मिं ते देवावी. ६४,११; ४८८  
 ऊर्मय गस्थ मध्वः ७,८, ५७  
 ऊर्मय मधुमन्तः ८६,२, ७२९  
 ऊर्मिणा सचमानः ७४,५; ६६१  
 ऊर्मौ ९८,६; ९२०  
 ऊर्गमियः ६८,६, ६०५  
 ऊर्जीषी ८,७९,४; ११५३  
 ऊर्जु ९७,४३; ८९९  
 ऊर्ज ९७,९; ८६५  
 ऊर्तः ६२,३०, ४४७ । ६६,२४, ५६१ । ७७,१; ६७६ ।  
 १०७,१५, १०१४ । १०८,१०; १०३३  
 ऊर्तः परस्मिन् धाम १,४३,९, ११००

ऋतजातः १०८,८, १०३३  
 ऋतयुञ्ज ११३,४, १०८६  
 ऋतुं वदन् ११३,४; १०८६  
 ऋतस्य गर्भः ६८,५; ६०४  
 ऋतस्य गोपाः ४८,४; ३३४ । ७३,८; ६५५  
 ऋतस्य जिह्वा ७५,२, ६६७  
 ऋतस्य तन्तुः ७३,९; ६५६  
 ऋतस्य विष्टपः ३४,५; २५२  
 ऋतावा २६,१३; ८४५ । ९७,४८; ९०४ । ११०,११ १०७४  
 ऋतावृधः ४२,५, ३०० । ६,७५,१०, १२२७  
 ऋत्विज ७२,४; ६४२  
 ऋषिः ३५,४; २५७ । १०७,७; १००६ । ८,७९,१; ११५०  
 ऋषिः [भामिः] ६६,२०; ५५७  
 ऋषिः विप्राणाम् ९६,६, ८३८  
 ऋषिकृत् ९६,१८, ८५०  
 ऋषिमना २६,१८, ८५०  
 ऋषिषाद् ७६,४; ६७४  
 ऋषिभिः संभृतः साम० १३००, १२११  
 ऋष्वः ८९,४; ७९६  
 एतथाः ६४,१९; ४९६  
 औक्थः ८६,४५, ७७२  
 भोजः देवानाम् अथ० ३,५,१; ११७६  
 भोजिष्ठ ६६,१६; ५५३ । ६७,१; ५६८ । १०१,९, ९५२  
 भोजीयान् उग्रैभ्यः चित् ६६,१७; ५५४  
 भोषधीनां पय अथ० ३,५,१, ११७६  
 ककुहः ६७,८, ५७५  
 कनिकृत् ६३,२०; ४६७  
 कनिकृदत् ३,७, २७ । १३,८; १११ । २५,२, १९५ ।  
 २८,२, २१५ । ३०,२, २२५ । ३३,४; २४५ । ३६,२;  
 २६७ । ६३,२९; ४७६ । ८५,५; ७२० । ९६,२०,२१  
 ८५२,८५३ । २७,३२; ८८८ । १०६,१०; ९९५  
 कलशम् भाविशान् ६२,१९; ४३६  
 कविः ७,४, ५३ । ९,१, ६८ । १२,४,८; ९८,१०२ ।  
 १४,१; ११३ । १८,२; १४६ । २०,१; १५९ । २५,३;  
 १९६ । ५०,४; ३४४ । ५९,३; ३८२ । २५,६; १९९ ।  
 २७,१; २०६ । ४४,२; ३०९ । ४७,४; ३२९ ।  
 ६२,१४,२७,३०, ४३१,४४४,४४७ । ६३,२, ४६७ ।  
 ६४,२४, ५०१ । ६६,३, १०; ५४०,५४७ । ६८,५;  
 ६०४ । ७१,७; ६३६ । ७२,६; ६४४ । ७४,२;  
 ६५८ । ७८,२; ६८२ । ८२,२, ७०२ । ८४,५, ७१५ ।

८५,९, ७२४ । ८६,२०, २५, २९; ७४७, ७५२, ७५६ ।  
 ९२,२; ८१३ । ९६,१७, ८४९ । ९७,२, ८५८ ।  
 १००,५; ९३९ । १०२,६, ९६५ । १०७,७, १८,  
 १००६, १०१७ । १०९, १३; १०५४ । १, ९१, १४;  
 १११४ ।  
 कविः दिवः ६४,३०; ५०७  
 कविना हृषितः ३७,६, २७१  
 कविभि सुष्टुतः १०८,१२ १०३७  
 कवीनां पदवी ९६,६, १८ ९३८, ९५०  
 कवीनां वाचः जन्तुः ६७,१३; ५८०  
 कविकृत् ९,१; ६८ । २५,५; १९८ । ६२,१३ ४३०  
 कवीयन् ९४,१, ८२३  
 काम्यः ९८,६; ९२० । १०२,१; ९३५  
 कार पुहस्पृहं विभ्रत् १४,१, ११३  
 कारिणः १६,५, १३३  
 कार्गमन् श्वेतं कलशम् ७४,८, ६६४  
 काव्येषु रन्ता विश्वेषु ९२,३, ८१४  
 कृषवन् अपः ९६,३, ८३५  
 कृषवन् अभयानि ९०,४; ८०३  
 कृषवन् केतु दिवस्पति ६४,८, ४८५  
 कृषवन् भद्रान् ९६,१, ८३३  
 कृषवन् वरिवांसि ९७,१६, ८७२  
 कृषवन् विश्वानि सुपथानि यज्यवे ८६,२६, ७५३  
 कृषवन् सचृतं विचृतं ८४,२, ७१२  
 कृषवन् सव्यानि द्रविणानि ७८,५, ६८५  
 कृषवन् साम ९६,२२, ८५४  
 कृषवन्तः वरिवः गवे ६२,३, ४२०  
 कृषवन्तः विश्व आर्यम् ६३,५; ४५२  
 कृषवानः गाः ८६,२६, ७५३ । १०७,२६, १०२५  
 कृन्तुः ८,७९,१; ११५०  
 कृत्य ७६,१, ६७१ । ७७,५ ६८० । ८४,५, ७१५  
 कृष्णां त्वच अपमन्त ४१,१, २९०  
 केतु यज्ञस्य ८६,७, ७३४  
 कोशः ६६,११; ५४८  
 क्रतुः ८६,४३; ७७० । १, ९१, ५, ११०५ । १०७,३;  
 १००२  
 क्रतुमान् ९०,६, ८०५  
 क्रतुवित् ४४,६, ३१३ । ६३,२४, ४७१ । ८६,४८, ७७५  
 क्रतुवित्तमः १०८,१, १०२६  
 क्रतुभि सुकृत् १, ९१, २, ११०२

क्रदः २७, २८, ८८४  
 क्रन्दन् ४२, ४, २९९ । ९६, २२; ८५४ । ९७, ३३, ८८९  
 क्राणा १०२, १, ९६०  
 क्राणा सिन्धूनाम् ८६, १९; ७४६  
 क्रिवि ९, ६ ७३  
 क्रीळन्-न्तः २१, ३, १६८ । ४५, ५; ३१८ । ८६, २६, ७५३  
 ९६, २१, ८५३ । ९७, ९; ८६५ । १०८, ५; १०३० ।  
 ११०, १०; १०७३ । १०, ८५, १८; १२३८  
 क्रीळन् वने ६, ५, ४५ । १०६, ११ ९९६  
 क्रीळ् २०, ७, १६५  
 क्षरन्तः ४६, १, ३२०  
 क्षिप्रधन्वा ९०, ३; ८०२  
 क्षेत्रवित्तरः १०, २५, ८, ११६७  
 क्षैत. ९७, ३, ८५९  
 गच्छन् इन्द्रम् २५, ५; १९८  
 गच्छन् वाज सहस्रिणम् ३८, १, २७२  
 गन्धर्व ८५, १२; ७२७  
 गन्धर्वः अपाम् ८६, ३६, ७६३  
 गभस्तिपूत. ८६, ३४, ७६१  
 गयसाधनः १०४, २, ९७५  
 गयस्फानः १, ९१, १२, १९, १११२, १११९  
 गर्भ १०२, ६; ९६५  
 गर्भ. पञ्चाद्याः ८२, ४; ७०४  
 गवां पतिः ७२, ४; ६४२  
 गवां शिरः ६४, २८, ५०५  
 गव्यथु ३६, ६, २६५  
 गव्यु. २७, ४, २०९ । ९७, १५; ८७१  
 गा. इपण्यन् ९६, ८; ८४०  
 गा. कृण्वान १०७, २६, १०२५  
 गावः ८, ४८, ५; ११३९  
 गातुवित् ४६, ५, ३२४ । ६, ५, १३, ५२० । ९२, ३,  
 ८१४ । ३, ६२, १३; ११२४  
 गातुवित्तमः ४४, ६, ३१३ । १०१, १०, ८५३ । १०४, ५,  
 ९७८ । १०७, ७, १००६  
 गातुवित्तमः भस्मभ्यम् १०६, ६, ९९१  
 गातुं विदत् ९६, १०, ८४२  
 गिरा जातः ६२, १५, ४३२  
 गिरावृध् २६, ६; २०५  
 गिरिष्ठाः १८, १, १४५ । ६२, ४; ४२१ । ८५, १०, ७२५ ।  
 ९५, ४ ८३१ । ९८, ९; ९२३

गिर्वणाः ६४, १४; ४२१  
 गीर्भि परिकृतः ४३, ३, ३०४  
 गुपितः विधानैः १०, ८५, ४, ११७४  
 गुहाहितः अध्वर्युभिः १०, ९, ८५  
 गुह्य [पर्णमणिः] अथ० ३, ५, ३; ११७८  
 गृणानः-ना ६२, २२; ४३९ । ९७, ४९, ९०५  
 गृणान जमदग्निना ६२, २४; ४४१ । ६५, २५, ५३२  
 गृणाना देववीतये १३, ३, १०६  
 गृत्सः १०, २५, ५; ११६४  
 गृध्राणा इयेनः ९६, ६; ८३८  
 गोभिः अक्तः ९६, २२, ८५४  
 गोभिः अज्ञानः १०३, २, ९६९  
 गोभिः श्रीणान १०२, १७; १०५८  
 गोभिः श्रीतः १०९, ११५; १०५६  
 गोजित् ५९, १; ३८० । ७८, ४, ६८४ ।  
 गोजीरयाः ११०, ३; १०६६  
 गोपति १९, २; १५३ । ९७, ३४; ८९०  
 गोपति जनस्य ३५, ५, २५८  
 गोपाः २, १०; २० । १६, २, १३०  
 गोपाः ऋतस्य ४८, ४, ३३४ । ७३, ८, ६५५  
 गोपाः तन्वः ८, ४८, ९; ११४३  
 गोपाः विश्वतः १०, २५, ७; ११६६  
 गोपा. विश्वस्य भुवनस्य २, ४०, १, १२१७  
 गोपा वृजनस्य १, ९१, २१; ११२१  
 गोमान् १०७, ९, १००८  
 गोवित् ५५, ३, ३६६ । ८६, ३९, ७६६  
 गोविन्दु ९६, १९, ८५१  
 गोषाः १६, २, १३० । ६१, २०; ४०७  
 गोषु आश्रितः ८६, १२, ७३९  
 ग्राणा तुक्तः ६७, १९; ५८६  
 घनिमत् विश्वा दुरिता ९०, ६, ८०५  
 घृतं वसानः ८२, २; ७०२  
 घृतइक्षुत्-तः ७७, १; ६७६ । साम० १३००, १२११  
 घृतस्तु ८६, ४५, ७७२  
 घृत्वय २१, १, १६६  
 घोरः ८९, ४; ७९६  
 घ्नन् क्षिधः अप २७, १; २०६  
 घ्नन्तः विश्वा द्विषः अप ६३, २६; ४७३

चक्रद वने १०७,२२; १०२१  
 चक्राणः चारुं अध्वरम् ४४,९; ३११  
 चक्रिः ७७,५; ६८०  
 चक्षाणः विश्वा काव्या ५७,२; ३७३  
 चनोहितः ७५,१; ६६६  
 चनोहितः मतिभिः ७५,४, ६६९  
 चन्द्रः ६६,२६; ५६३  
 जम्बूद ८,२; ६०। ९६,१९, ८५१  
 चमूः पुनान १०७,१८; १०१७  
 चमू सुताः ४६,३. ३२२  
 चम्बोः सुत. १०८,१०; १०३५  
 चारुः-रव. १७,८; १४४। ३०,६; २२९। ४८,१; ३३१  
 ६१,९; ३९६। ७७,३ ६७८। ८६,२१; ७४८।  
 १०२,६; ९६५। १०९,१२; १०५४  
 चिकित मनीषा प्र १,९१,१; ११०१  
 चिताना गो अधि त्वाचि १०१,११; ९५४  
 चित्तः विपानथा अया ६५,१२; ५१९  
 चेतनः ६४,१०, ४८७  
 चोदितः नृबाहुभ्याम् ७२,५; ६४३  
 जङ्घनत् कृष्णा तमांसि ६६,२४ ५६१  
 जङ्घतः (त्वष्टी) ६६,२५; ५६२  
 जज्ञानः ३,१०; ३०। २९,२; २१९। ८६,३६; ७६३।  
 ९६,१७, ८४९। १०९,८,१२; १०४९,१०५३  
 जनना दिव. [ सोमपूषणौ ] २,४०,१; १२१७  
 जनना पृथिव्याः " २,४०,१, १२१७  
 जनना रयीणाम् " २,४०,१, १२१७  
 जनयन् १०८,१२; १०३७  
 जनयन् हृषः ३,१०, ३०। ६६,४; ५४१  
 जनयन् ज्योतिः १०७,२६, १०२५  
 जनयन् मतिम् १०७,१८; १०१७  
 जनयन् रोचना दिव ४२,१; २९६  
 जनयन् वाचम् ७८,१, ६८१। १०६,१२; ९९७  
 जनयन् सूर्यम् अप्सु ४२,१; २९६  
 जनिता भग्ने ९६,५, ८३७  
 जनिता इन्द्रस्य ९६,५; ८३७  
 जनिता दिवः ९६,५; ८३७  
 जनिता देवानाम् ८६,१०, ७३७। ८७,२; ७७७  
 जनिता पृथिव्याः ९६,५; ८३७  
 जनिता मतीनाम् ९६,५; ८३७  
 जनिता रोदर्योः ९०,१; ८००

जनिता विष्णोः ९६,५; ८३७  
 जनिता सूर्यस्य ९६,५; ८३७  
 जन्तु कवीनां वाचः ६७,१३, ५८०  
 जयन् १,२१,२१; ११२१  
 जयन् अपः ८५,४; ७१९  
 जयन् क्षेत्रम् ८५,४; ७१९  
 जवीयान् मनस. ९७,२८, ८८४  
 जागृविः ३६,२; २६१। ४४,३; ३१०। ७१,१, ६३०  
 जात ९,३, ७०  
 जातः गिरा ६२,१५; ४३२  
 जात श्रिये ९४,४, ८२६  
 जातासः श्रुष्टी १०६,१; ९८६  
 जानन् ९६,७; ८३९  
 जानन् ऋत प्रथमम् ७०,६, ६२५  
 जायमानः ९६,१० ८४२  
 जायमान इन्द्रम् अभि ११०,८, १०७१  
 जिगाम्नव. १०१,१२; ९५५  
 जिग्युषः ( षष्ठी ) १०२,४; ९३८  
 जिह्वा ऋतस्य ७५,२; ६६७  
 जीरदानुः ८७,९; ७८४  
 जुवाणः इन्द्रस्य सख्यम् ९७,११; ८६७। ८,४८,२, ११३६  
 जुष्टः ९७,२२; ८७८  
 जुष्टः इन्द्राय १३,८; १११। ७०,८; ६२७  
 जुष्टः मती ४४,२; ३०९  
 जुष्टः मदाय ९७,१९, ८७५  
 जुष्टः मित्राय १०८,१६; १०४१  
 जुष्टः वरुणाय ७०,८; ६२७। १०८,१६, १०४१  
 जुष्टः वायवे ७०,८, ६२७। १०८,१६; १०४१  
 जूतः ९७,५२, ९०८  
 जूताः धिया ६४,१६, ४९३  
 जेता ९०,३, ८०२  
 जेभ्यः ८६,३६, ७६३  
 ज्येष्ठः उग्राणाम् ६६,१६; ५५३  
 ज्योतिः २९,२; २१९। ६६,२४; ५६१  
 ज्योतिः जनयन् १०७,२६, १०२५  
 ज्योतिः यज्ञस्य ८६,१०; ७३७  
 ज्योतीरथ ८६,४५, ७७२  
 ज्ञय ऊरु ६८,२; ६०१  
 तनूपानः अथ ३,५,८, ११८३  
 तन्तु ऋतस्य ७३,९, ६५६

तन्वं सृजानः ९६, २०; ८५२  
 तन्वः गोपाः ८, ४८, ९; ११४३  
 तमः ज्योतिषा प्रतपन् १०८, १२; १०३७  
 तरत् ५८, १-४; ३७६-३७९  
 तवस् (सः-षष्ठी) १०, २५, ५ ११६४  
 तवस्वान् ९७, ४६; ९०२  
 तविष्यमाण ७६, ३; ६७३  
 तिग्मदन्तिः ६, ७४, ४; १२२६  
 तिग्मश्रेण ९७, ९; ८६५  
 तिग्मायुधः ९०, ३, ८०२ । ६, ७४, ४, १२२६  
 तिरः दधानः दुहितुः वर्षासि ९७, ४७; ९०३  
 तीव्र १७, ८; १४४ । ६, ४७, १; ११२७  
 तुजानः आयुधा ५७, २; ३७३  
 तुजानः रथिम् ८७, ६, ७८१  
 तुङ्गः ६७, २०, ५८७  
 तुङ्गः प्राग्णा ६७, १९; ५८६  
 तुरः १०, २५, १०, ११६९  
 तृतीयं धाम सिषासन् ९६, १८, ८५०  
 त्रिधातुः ८६, ४६; ७७३ । १०८, १२; १०३७  
 त्रिष्टु ७१, ७; ६३६ । ९०, २; ८०१  
 त्रिवरुथं शर्म वसानः ९७, ४७; ९०३  
 त्विधिं दधान ३९, ३; २८०  
 त्वेषाः ४१, १, २९०  
 दुक्षः ६१, १८, ४०५ । ६२, ४ ४२१ । ६५, २८, ५३५ ।  
 ८५, २, ७१७ । १, ९१, १४, १११४  
 दुक्षः देवानाम् ७६, १; ६७१  
 दुक्षसाधनः २५, १, १९४ । २७, २; २०७ । १०१, १३  
 ९५६ । १०४, ३; ९७६  
 दुक्षाय साधनः ६२, २९, ४४६ । १०५, ३, ९८२  
 दुक्षायः ८८, ८; ७९२ । १, ९१, ३; ११०३  
 दुक्तः इन्द्रेण अथ० ३, ५, ४; ११७९  
 दुधत् दाशुबे रत्नानि ३, ६, २६  
 दुधत् वयः ६८, १०; ६०९  
 दुधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् २०, ७; १६५ । ६२, ३०; ४४७ ।  
 ६६, २७; ५६४ । ६७, १२; ५८६  
 दुधानः इन्द्रियं रसम् २३, ५, १८४  
 दुधानः भोजसा विश्वा ६५, १०; ५१४  
 दुधानः कलशे रसम् ६३, १३; ४६०  
 दुधानः भाक्षिति भवः ६६, ७; ५४४  
 दुधान त्विधिम् ३९, ३; २८०

दुधानः द्रविणम् ९६, १२, ८१४  
 दुधान नाम २२, २, ८१३  
 दुधानः रत्ना दमेदमे ६, ७४, १; १२२३  
 दुधा उक्तीता ८१, १; ६९६  
 दुध्याशिरः २३, ३; १७५ । ६३, १५, ४६२ । १०१, १२; ९५५  
 दुमेदमे सप्त रत्ना दुधान ६, ७४, १; १२२३  
 दुशंत-तासः २, ६; १६ । १०१, १२; ९५५  
 दुस्मः ८२, १; ७०१  
 दुस्योः हन्ता ८८, ४; ७८८  
 दाता दात्रस्य ९७, ५५; ९११  
 दात्रस्य दाता ९७, ५५; ९११  
 दानुदः ९७, २३; ८७९  
 दानुपिन्वः ९७, २३, ८७९  
 दाशुबे वसुनि करत् ६२, ११; ४२८  
 दिस्सन् राधः ६१, २७; ४१४  
 दिवः आभृतं पय ६६, ३०; ५६७  
 दिव कवि ६४, ३०; ५०७  
 दिव जननः २, ४०, १, १२१७  
 दिवः जनिता ९६, ५; ८३७  
 दिवः धरुणः २, ५, १५  
 दिवः धर्ता ७६, १; ६७१ । १०९, ६, १०४७  
 दिव पतिः ८६, ११, ३३; ७३८, ७६०  
 दिव पदम् (दिवस्पदम्) १०, ९; ८५  
 दिव प्रतरीता ८६, १९, ७४६  
 दिवः मूर्धा-धान २७, ३, २०८ । ६९, ८; ६१७  
 दिवः रोचनः ३७, ३, २६८  
 दिव विष्टम्भः ८६, ३५; ७६२ । ८७, २; ७७७ । ८९, ६,  
 ७९८ । १०८, १६; १०४१  
 दिवः शिशुः ३३, ५; २४६ । ३८, ५, २७६  
 दिवः स्कम्भः ७४, २; ६५८ । ८६, ४६, ७७३  
 दिवा हरि ९७, ९; ८६५  
 दिवियजः ९७, २६, ८८२  
 दिवि अधि श्रितः १०, ८५, १; ११७१  
 दिविस्पृक् ११, ४; ८९  
 दिवे शम् १०९, ५, १०४६  
 दिव्य-भ्याः ७१, ९, ६३८ । ८६, १; ७२८ । ३६; ७६३ ।  
 ९७, २३, ३३, ८७९, ८८९ । १०७, ५; १००४ । १०९,  
 ३, १०४४  
 दिवा पति ११३, २, १०८४  
 दुदुहानः अद्रौ ९६, १०; ८४२

बुधुहान त्रिः सप्त आशिरम् ८६, २१, ७४८  
 दुराभ्यः ७९, ३, ६८८  
 दुरिता अपसेधन् ८२, २; ७०२  
 दुरिता वनिमत् विश्वा ९०, ६; ८०५  
 दुरिता पुरु विघ्नन्तः ६२, २, ४१९  
 दुरितानि विघ्नन् ९७, १६; ८७२  
 दुरोषः १०१, ३; ९४६  
 दुर्मर्षः ९७, ८; ८६४  
 दुष्टर अप्सु २०, ६; १६४  
 दुस्तरः १६, ३, १३१  
 दुहान प्रसन्नं इत् पय ४२, ४, २९९  
 देवः-वासः ३, १, ६, ९; २१, २६, २९१ । ६, ७; ४७ । १३, ५,  
 १०८ । ३७, ६; २७१ । ४२, २, २९७ । ६३, २२;  
 ४६९ । ६४, १; ४७८ । ६५, २, २४, ५०९, ५३१ ।  
 ६७, ३०, ५९७ । ६८, २, ६०१ । ७१, ६, ६३५ ।  
 ८७, २; ७७७ । ९५, २; ८२९ । ९६, ३, १६, ८३५, ८४८ ।  
 ९७, १, ७, ११, १२, १८, २७, ४२, ४८, ५०, ८५७, ८६३,  
 ८६७-६८, ८७४, ८८३, ८९८, ९०४, ९०६ । ९८, ४, ९;  
 ९१८, ९२३ । ९९, ७; ९३३ । १०३, ६, २७३ । १०७, १५,  
 १०१४ । १०८, ९; १०३४ । १, ९, १, १४, २३, १११४,  
 ११२३ । ८, ४८, ९, ११४३ । १०, ८५, ५, ११७५ ।  
 वा०य० ५, ७; ११९४ । ७, १४; १२०१ । ८, २६, ५०,  
 १२०५, १२०८  
 देवः [सविता] ६७, २५, २६, ५९२, ५९३  
 देवतातः ९७, १९; ८७५  
 देवतातिः ९७, २७, ८८३  
 देवपानः ९७, २७, ८८३  
 देवप्सराः १०४, ५, ९७८  
 देवप्सरस्तमः १०५, ५, ९८४  
 देवमादनः ८४, १; ७११ । १०७, ३, १००२  
 देवयुः ६, १; ४१ । ११, २, ८७ । १७, ३; १३९ । ३७,  
 १; २६६ । ४३, ५; ३०६ । ५६, १; ३६८ । ९७, ४;  
 ८६० । १०६, १४; ९९९ । १०८, ९, १०३४  
 देववातः ६२, ५; ४२२ । ९६, ९, ८४१ ।  
 देववीः ३६, २, २६१  
 देववीतमः २५, ३, १९६ । २८, ३; २१४ । ४९, ३, ३३८ ।  
 ६३, १६; ४६३ । ६४, १२; ४८९ । १०७, ७; १००६ ।  
 देवश्रुतमम् ६२, २१; ४३८  
 देवान् पृच्छन् स्वप्न रसेन ९७, १२; ८६८  
 देवानाम् भोजः अथ० ३, ५, १; ११७६

देवानां जनिता ८६, १० ७३७ । ८७, २; ७७७  
 देवानां दक्षः ७६, १, ६७१  
 देवानां पिता ८६, १०, ७३७ । ८७, २; ७७७ । १०९, ४;  
 १०४५  
 देवानां ब्रह्मा ९६, ६, ८३८  
 देववीः २, १; ११ । २४, ७, १९३ । २८, ६, २१७ । ६१,  
 १९; ४०६  
 देवी [पावमानीः] साम० १३०१, १२१२  
 देवभ्यः मधुमत्तम १०६, ६, २९१  
 देवैः समाहृताः साम० १३०१, १२१२  
 युक्षः ५२, १, ३५१  
 युक्षतमः १०८, १, १०२६  
 युतानः ६४, १५; ४९२ । ७५, ३; ६६८  
 युमान् ६१, १८, ४०५ । ६४, १; ४७८ । ६५, ४; ५११ ।  
 ८०, २, ६९२  
 युमत्तम ६५, १९; ५२६ । १०८, ३, १०२८  
 युञ्जवत् पयः यस्य ६६, ३०; ५६७ ।  
 युञ्जवत्तमः २, २, १२  
 युञ्जवर्धनः ३१, २; २३१  
 युञ्जी १०९, ७; १०४८  
 युञ्जी युञ्जभिः १, २१, २; ११०२  
 द्रप्सः-प्सास ६, ४; ४४ । ६९, २; ६११ । ७३, १,  
 ६४८ । ७८, ४; ६८४ । ८५, १०; ७२९ । ९६, १९,  
 ८५१ । १०, १७, ११-१३, १२३१-३३  
 द्रप्सः भासु ८९, २; ७२४  
 द्रासान् हृरयन् ९७, ५६, ९१२  
 द्रविणं दधानः ९६, १२, ८४४  
 द्रविणानि सत्यानि कृण्वन् ७८, ५; ६८५  
 द्रविणस्वन्तः ८५, १, ७१६ ।  
 द्रविणोवित् ९७, २५, ८८१  
 द्रापिं वसान ८६, १४; ७४१  
 द्रावयित्स्वः ६९, ६; ६१५  
 द्रयाविन ८५, १; ७१६  
 द्विशवस् १०४, २; ९७५  
 धनञ्जयः ४६, ५, ३२४ । ८४, ५, ७१५  
 धनस्पृत् ६२, १८, ४३५  
 धनस्य धुर एता ९७, २९; ८८५  
 धनानि सनिता ९०, ३, ८०२  
 धमन् ७३, १; ६४८  
 धरुण ७४, २, ६५८



धरुणः दिवः २,५; १५ । ७२,७, ६५५ । ८६,८; ७३५  
 धरुणः पृथिव्याः ८७,२; ७७७ । ८९,६; ७९८  
 धर्मसिः २,२, १२ । १४,२; ११४ । २३,५; १८४ ।  
 २६,३; २०२ । ३७,३; २६८ । ३८,६; २७७ ।  
 ९९,५, ९३१  
 धर्ता २६,२, २०२ । ६५,११; ५१८  
 धर्ता दिवः ७६,१, ६७१ । १०९,६; १०४७  
 धर्मणः पतिः ३५,६, २५९  
 धर्माणि वसानः ऋतुधा ९७,१२; ८६८  
 धात्रा परिष्कृतः ११३,४; १०८६  
 धामधाः प्रथम ८६,२८, ७५५  
 धाम तव बृहत् गभीरम् १,९१,३, ११०३  
 धाराः अस्य ३०,१; २२४  
 धारा असश्चतः ५७,१; ३७२ । ६२,२८; ४४५  
 धाराः मद्विष्ठा १,१, १  
 धाराः मध्व ७,२; ५१  
 धाराः मधुश्रुत ६२,७, ४२४  
 धारा मन्द्रा ६,१, ४१  
 धाराः शतम् ५६,२; ३६९  
 धाराः शर्मयन्त्य ४१,६; २९५  
 धाराः स्वादिष्ठा १,१, १  
 धाराः शतम् अपस्त्युवः ५६,२; ३६९  
 धाराः पिन्वन् ९७,३४; ८८०  
 धाराभिः हियान ९८,२, ९१६  
 धारयुः ६७,१; ५६८  
 धासि उत्तमः ८५,३, ७१८  
 धियः पतिः ७५,२, ६६७ । ९९,६; ९३२  
 धिया मनोता ९१,१, ८०६  
 धियावसु ९३,५; ८२२  
 धियाहितः ४४,२; ३०९  
 धीजवः ८६,१, ७२८  
 धीजवनः ८८,३; ७८७  
 धीजुवः ८६,४; ७३१  
 धीनां अन्तः सबर्द्ध १२,७; १०१  
 धीरः ९२,३; ८१४ । ९३,१, ८१८ । ९७,३०,४६,  
 ८८६,९०२ । ६,४७,३, ११२९ । ८,४८,४; ११३८  
 धूतः अप्सु ६२,५; ४२२  
 धूतः नृभिः १०७,५; १००४  
 धृण्युः ४७,२; ३२७ । ९९,१; ९२६ । १०८,६; १०३१  
 ध्रुवः ८६,६; ७३३ । १०१,१२, ९५५ । १०२,४; ९६३

नक्तं ऋष्यः २,७,९; ८६५  
 नप्योः हितः ९,१; ६८  
 नभः वसानः ८३,५; ७१०  
 नर्यः १०५,५; ९८४ । १०७,१, १०००  
 नवः ८६,३६, ७६३  
 नाम दधानः ९२,२, ८१३  
 निक्तः १०९,१०, १०५१  
 नित्यस्तोत्रः १२,७, १०१  
 निधापतिः ८३,४; ७०९  
 निरिणानः १४,४, ११६  
 निर्णिक् ८६,४६, ७७३  
 निर्णिजानः ६९,५, ६१४  
 नृचक्षाः ८,९; ६७ । ४५,१, ३२५ । ७८,२; ६८२ ।  
 ८०,१; ६७१ । ८६,२३,३६,३८; ७५०,७६३,७६५ ।  
 ९२,२; ८१३ । ९७,२४; ८८० । १,९१,२; ११०२ ।  
 ८,४८,९,१५, ११४३,११४९  
 नृधूतः ७२,४; ६४२  
 नृभिः धूतः १०७,५; १००४  
 नृभिः यतः १०८,१५; १०४०  
 नृभि यमानः ७५,३, ६६८ । १०७,१६; १०१५ । १०९,  
 ८,१८; १०४९,१०५९  
 नृमादनः २४,४, १२० । ६७,२; ५६९  
 नृम्णा दधानः ओजसा १५,४, १२४  
 नृम्णानि बिभ्रत् ४८,१; ३३१  
 नृषा २,१०, २०  
 पञ्चायाः गर्भः ८२,४, ७०४  
 पति ६५,१; ५०८ । ९७,२२, ८७८  
 पतिः गवाम् ७२,४, ६४२ ।  
 पति जनीनाम् ८६,३२, ७५९  
 पतिः दिवः ८६,११,३३; ७३८,७६०  
 पतिः दिशाम् ११३,२; १०८४  
 पतिः धियः ७५,२; ६६७ । ९९,६, ९३२  
 पतिः भुवनस्य ३१,६; २३५  
 पतिः मदानाम् १०४,५; ९७८  
 पति रयीणाम् १०१,६; ९४९  
 पतिः वाचः २६,४; २०३  
 पति विश्वस्य भुवनस्य ८६,५; ७३२  
 पतिः वीरुधाम् ११४,२, १०९५  
 पतिः सिन्धूनाम् १५,५; १२५  
 पतिः हरीणाम् १०५,५; ९८४

पत्नीवान् वा० य० ८,९; १२०३  
 पत्मन् कुकूनानाम् वा० य० ८,४८; १२०६  
 पत्मन् भन्दनानाम् वा० य० ८,४८; १२०६  
 पत्मन् मदिन्तमानाम् वा य० ८,४८; १२०६  
 पत्मन् मधुन्तमानाम् वा० य० ८,४८; १२०६  
 पत्मन् श्वेतीनाम् वा० य० ८,४८, १२०६  
 पथिकृत् १०६,५; ९९०  
 पदवीः कवीनाम् ९६,६, १८, ८३८, ८५०  
 पनिमत् ६७,२९; ५९६ । ८५,११; ७२६ । ८६,३१,  
 ४६; ७५८,७७३ ।  
 पट्टचान अङ्गिः ७४,९, ६६५  
 पमिः पृतनासु १,९१,२१, ११२१  
 पयः अस्य ५४,१; ३६०  
 पयः ऋषिम् ५४,१, ३६०  
 पयः श्रुतम् ५४,१; ३६०  
 पयः श्रुतवत् ६६,३०, ५६७  
 पयः दिव आश्रुतम् ६६,३०; ५६७  
 पयः प्रत्नम् ५४,१; ३६०  
 पयः शुक्रम् ५४,१, ३६०  
 पयः सहस्रसाम् ५४,१; ३६०  
 पयः ओषधीनाम् [ पर्णमणिः ] अथ० ३,५,१, ११७६  
 पयः पयसा आभिशीणन् ९७,४३, ८९२  
 पयसा पिन्वमानः ९७,१४, ८७०  
 पयोवृध् ८४,५, ७१५  
 पयोवृध १०८,८; १०३३  
 परस्मिन् धामन् ऋतः १,४३,९; ११००  
 परायतिः ७१,७; ६३६  
 परिप्रथन् ६८,८; ६०७  
 परियन् ६८,६; ६०५ । ७१,९; ६३८  
 परिषिष्यमानः ६८,१०; ६०९ । ९७,१४,३६, ८७०, ८९२  
 परिष्कृष्वन् अनिष्कृतम् ३९,२; २७२  
 परिष्कृतः अथ क्षपा ९९,२, ९२८  
 परिष्कृतः गीर्भिः ४३,३; ३०४  
 परिष्कृतः गोभिः ६१,१३, ४००  
 परिष्कृतः धात्रा ११३,४; १०८६  
 परिष्कृतः मसिभिः १०५,२; ९८१  
 परिष्कृतः विश्वाभिः मतिभि ८६,२४, ७५१  
 परिष्कृतासः ४६,२; ३२१  
 पर्जन्य पिता ८२,३; ७०३  
 पर्जन्यवृद्धः ११३,३, १०८५

दै० [सोमः] १६

पर्ण [देवता] अथ० ३,५,४,६-८, ११७२, ११८१-  
 ११८३  
 पर्णमणि [देवता] अथ० ३,५,१,२,५; ११७६, ११७७,  
 ११८०  
 पर्णी ८२,३, ७०३  
 पर्वतावृध ४६,१; ३२०  
 पवमान ३,२,३,५,७,८, २२,२३,२५,२७,२८ । ४,१,  
 ३१ । ७,५, ५४ । ९,९; ७६ । ११,१,९, ८६,९४ ।  
 १३,२,८, १०५,१११ । १२,६, १५७ । २०,२,१६० ।  
 २३,३, १८२ । २५,२, १२५ । २६,३,६, २१३,  
 २१६ । २७,४,५; २२०,२२१ । २८,५, २१६ ।  
 ३०,४, २२७ । ३५,१, २५४ । ३६,३; २६२ ।  
 ३७,३,४; २६८,२६९ । ४०,४, २८७ । ४१,३;  
 २९२ । ४३,४; ३०५ । ४६,६, ३२५ । ४९,५,  
 ३४० । ५०,३, ३४३ । ५१,३, ३४८ । ६०,१,३;  
 ३८४,३८६ । ६१,४, १६-१८, २६, ३९१, ४०३-४०५,  
 ४१३ । ६२,२०, ११, १६, ३०, ४२७, ४२८, ४३३, ४४७ ।  
 ६३,८, २३; ४५५, ४७० । ६४,६, २, २४, ४८४, ४८६,  
 ५०१ । ६५,२-४, ७, ११, १६, ५०९-५११, ५१४, ५१८,  
 ५२३ । ६६,२, ३, १०, २२, २४-२७, ३०, ५३९, ५४०,  
 ५४७, ५५९, ५६१-५६४, ५६७ । ६७,२, २१, २२; ५७६,  
 ५८८, ५८९ । ६९,२; ६११ । ७२,९, ६४७ । ७४,२,  
 ६६५ । ७६,३, ६७३ । ७८,३, ५; ६८३, ६८५ ।  
 ७९,३, ६८८ । ८०,५, ६९५ । ८१,१, ३-५, ६९६,  
 ६९८-७०० । ८५,८; ७२३ । ८६,१, ४, ६, १२, १३,  
 १८, २४, २८-३०, ३४, ३५, ३८, ४४; ७२८, ७३१, ७३३,  
 ७३९, ७४०, ७४५, ७५१, ७५५-७५७, ७६१, ७६२, ७६५,  
 ७७१ । ८८,५; ७८९ । ८९,१; ७९३ । ९०,५;  
 ८०४ । ९१,३; ८०८ । ९२,४, ५, ८१५, ८१६ ।  
 ९३,४; ८२१ । ९४,५, ८२७ । ९६,४, ७, ८, ११,  
 २१, २३, २४; ८३६, ८३९, ८४०, ८४३, ८५३, ८५५,  
 ८५६ । ९७,८, १४, २४, ३१, ४१, ४४, ५८; ८६४, ८७०,  
 ८८०, ८८७, ८९७, ९००, ९१४ । १००, ७, ८, ९, ९४१,  
 ९४२, ९४३ । १०१, ९; ९५२ । १०३, ६, ९७३ ।  
 १०६, १०; ९९५ । १०७, ११, १५, २१, २२; १०१०,  
 १०१४, १०२०, १०२१ । १०८, ३, १०२८ । ११०, २,  
 ३, ९, १०; १०६५, १०६६, १०७२, १०७३ । ११३, ७,  
 १०८९ । ११४, १; १०९४ । ८, १०१, १४; ११५२ ।  
 पवमाना-नासः १३,९, ११२ । २१, ४; १६२ । २४, १,  
 १८७ । ३१, १, २३० । ५९, ४; ३८३ । ६३, २५-  
 २७; ४७२-४७४ । ६७, ७; ५७४ । ६९, २; ६१८ ।

८५,७; ७२२ । ८७,५, ७८० । १०१,८; ९५१ ।  
 १०७,२५; १०२४ ।  
 पवित्र. ३९,३,४; २८०,२८१  
 पवित्रम् अभि उन्दन् ६१,४; ३९१  
 पवित्रः तपोः ८३,२, ७०७  
 पवित्र रथ. ८३,५, ७१० । ८६,४०; ७६७  
 पवित्रवन्तः ७३,३, ६५० । १०१,४, ९४७  
 पवित्रे विततः ७३,९, ६५६  
 पर्यन् अन्तः ९६,७; ८३९  
 पस्त्यावान् ९७,१८, ८७४  
 पाञ्चजन्यः [ अग्नि. ] ६६,२०, ५५७  
 पान् ( पान्तम् द्वि० ) ६५,२८-३०; ५३५ ५३७  
 पावक २४,६,७, १९२, १९३ । ९७,७; ८६३  
 पावमानीः साम० १३००-१३०३, १२११-१२१४  
 पाशिनः ७३,४ ६५१  
 पिता ७३,३, ६५० । ८७,२, ७७७  
 पिता देवानाम् ८६,१०, ७३७ । ८७,२; ७७७ । १०९,४,  
 १०४५  
 पिता मतीनाम् ७६,४, ६७४  
 पिन्वन् धारा. ९७,३४; ८९०  
 पिन्वमानः पयसा ९७,१४, ८७०  
 पीयूष. १०९,३,६; १०४४,१०४७  
 पीयूषम् दिवः उत्तमम् ५१,२, ३४७  
 पुनान-ना-नासः ६,९; ४९ । ८,२,३,६; ६०,६१,  
 ६४ । ९,७, ७४ । १६,६,८; १३४,१३६ । १८,७;  
 १५१ । १९,१,३; १५२,१५४ । २०,५; १६३ ।  
 २४,२, १८८ । २५,४, १९७ । २७,१,६, २०६,  
 २११ । २८,६; २१७ । ३०,१, २२४ । ३५,५,६,  
 २५८,२५९ । ४०,१,५,६; २८४,२८८,२८९ । ४२,५;  
 ३०० । ४३,३; ३०४ । ५४,३,४; ३६२,३६३ ।  
 ५७,४, ३७५ । ६१,६,२३,२७; ३९३,४१०,४१४ ।  
 ६२,२३, ४४० । ६३,२,८; ४७५ । ६४,१४,१५,२५,  
 २६,२७, ४९१,४९२,५०२,५०३,५०४ । ६६,२८;  
 ५६५ । ६८,९; ५९७ । ८६,३,२१, २५, ३३, ४७,  
 ७३०,७४८,७५२,७५३,७६०,७७४ । ८७,१,९; ७७६,  
 ७८४ । ९१,४,६; ८०९,८११ । ९२,३,६, ८१४,  
 ८१७ । ९३,५, ८२२ । ९५,१, ८२८ । ९६,३, २३;  
 ८३५,८५५ । ९७,६, १२, १८, २५, २७, ३७, ३८, ४५,  
 ८६२, ८६८, ८७४, ८८१, ८८३, ८९३, ८९४, ९०१ ।  
 ९७,४७; ९०३ । ९९,४,६, ९३०,९३२ । १००,२;

९३६ । १०३,१,४,५; ९६८,९७१,९७२ । १०५,१;  
 ९८० । १०६,९; ९९४ । १०७,२,४,६; १००१,  
 १००३,१००५ । १०९,९; १०५० । ११०,१०,११;  
 १०७३,१०७४ । १११,१; १०७६  
 पुनानः चमूः १०७,१८, १०१७  
 पुनानः तन्व अरेपसम् ७०,८, ६२७  
 पुनान देववीतये ६४,१५, ५०२  
 पुनानः नृभि ७५,५; ६७०  
 पुनानः ब्रह्मणा ११३,५; १०८७  
 पुनानः मतिभिः ९६,१५; ८४७  
 पुनानः वारम् ८२,१, ७०१  
 पुर एता महतः धनस्य ९७,२९, ८८५  
 पुरन्धिवान् ७२,४; ६४२  
 पुरुकृत् ९१,५; ८१०  
 पुरुक्षुः ९१,५, ८१०  
 पुरुत्राः १०,२५,६; ११६५  
 पुरुमेघ. ९७,५२; ९०८  
 पुरुवारः ९३,२; ८१९ । ९६,२४; ८५६  
 पुरुव्रतः ३,१०. ३०  
 पुरुष्टुतः ७२,१; ६३९ । ७७,४, ६७२  
 पुरुस्पृहः ६५,२८-३०, ५३५-५३७ । १०२,६; ९६५  
 पुरुहूतः ५२,४; ३५४ । ८७,६; ७८१  
 पुरोरुक् ९८,१२, ९२६  
 पुरोजिती १०१,१, ९४४  
 पुरोहितः [ अग्नि ] ६६,२०; ५५७  
 पृष्टिवर्धन १,९१,१२; १११२  
 पूत-ताः २३,३, १७५ । ६७,३१, ५२८ । ९७,३१,  
 ८८७ । १०१,१२; ९५५ । १०९,८; १०४९  
 पूयमान ८७,६; ७८१ । ९२,१; ८१२ । ९६,१०,२१;  
 ८४२,८५३ । ९७,१,२,३६,३९,४२,४८-५१, ८५७,  
 ८५८,८९२,८९५,८९८,९०४-९०७ । १०६,९; ९९४  
 पूयमान धन्वा ९७,३, ८५९  
 पूयमानः सोमृभिः ९६,१६; ८४८  
 पूर्मित् ८८,४; ७८८  
 पूर्वासः ७७;३, ६७८  
 पूर्थ ३६,३; २६२ । ६७,८; ५७५ । ७७,२; ६७७ ।  
 ८६,२०; ७४७ । ९६,१०, ८४२ । १०९,७; १०४८  
 पृञ्चन् देवान् स्वेन रसेन ९७,१२; ८६८  
 पृतनासु पमि. १,९१,२१, ११२१  
 पृत्सु वन्वन् ९६,८; ८४०

पृथिव्यै शम् १०९,५; १०४६  
 पृथिव्या जनन २,४०,१; १२१७  
 पृथिव्याः जनिता ९६,५, ८३७  
 पृथिव्याः धरुणः ८७,२; ७७७ । ८९,६, ७९८  
 पृथिव्या. नाभा ७२,७, ६४५  
 पेरवः ७४,४; ६६०  
 पीता ६७,२२; ५८९  
 प्रच्युत ८०,४; ६९४  
 प्रजायै शम् १०९,५, १००६  
 प्रतपन् ज्योतिषातमः १०८,१२; १०३७  
 प्रतरण १,९१,१९; १११९  
 प्रतरीता अह्नः ८६,१९; ७४६  
 प्रतरीता उषस ८६,१९; ७४६  
 प्रतरीता दिवः ८६,१९, ७४६  
 प्रत्नः-ःनास २३,२; १८१ । ७३,३; ६५० । ९८,११,  
 ९२५  
 प्रत्नवत् ९१,५; ८१०  
 प्रथम १०७,२३, १०२२  
 प्रथमः धामधा ८६,२८; ७५५  
 प्रथमः मनीषी ९१,१; ८०६  
 प्रथमः युस्तु ८२,३; ७९५  
 प्रभुः ८३,१; ७०६ । ८६,५, ७३२  
 प्रभूवस्तुः २९,३; २२० । ३५,४; २५९  
 प्रभूवत् २९,१, २१८  
 प्रयसे हित ६६,२३, ५६०  
 प्रयस्वान् ६६,२३; ५६०  
 प्रवृण्वन्तः २१,२, १६७  
 प्रसुपः ६९,६; ६१५  
 प्रस्थिता ६९,८, ६१७  
 प्रिय ७,६; ५५ । १०,९, ८५ । २५,३; १९६ ।  
 ५०,३, ३४३ । ६३,२३, ४७० । ६४,१०,२७;  
 ४८७,५०४ । ६७,२९, ५९६ । ७९,५, ६९० । ८५,२,  
 ७१७ । ९६,९; ८४१ । ९७,३; ८५९ । १०२,२,  
 ८६१ । १०७,५,६,१३; १००४, १००५, १०१२ ।  
 १०८,८; १०३३ । १०,२५,१०, १०६९ । अथ०  
 ३,५,३-४; ११७८,११७९  
 प्रियः इन्द्रस्य ९८,६; ९२० । १०२,१; ९३५  
 प्रियस्त्रोभः १,९१,६, ११०६  
 पसरः ७४,३; ६५९

बभ्रुः ११,४; ८९ । ३१,५; २३५ । ३३,२; २४३ ।  
 ६३,४,६, ४५१,४५३ । ९८,७ ९२१ । १०७,१९-  
 २०, १०१८-१०१९ ।  
 बर्हिषि प्रिय ७२,४, ६४२ । १०७,१५; १०१४ ।  
 १०८,८; १०३३ । ११३,५, १०८७  
 बर्हिष्मान् ४४,४; ३११  
 बली [पर्णमणिः] अथ० ३,५,१, ११७६  
 बाधमान सृधः ९७,४३, ८९९  
 बार्हतै रक्षितः १०,८५,४, ११७४  
 बिभ्रत् आयुधानि ९६,१९, ८५१  
 बिभ्रत् नृम्णानि ४८,१; ३३१  
 बिभ्रत् विश्वा वसूनि १०८,११, १०३६  
 बृहत् ६६,२४, ५६१ । ७५,१, ६६६  
 बृहन्मतिः ३९,१, २७८  
 बृहस्पतिसुतः वा०य० ८,९, १२०३  
 ब्रह्मणस्पति ८२,१; ७०६  
 ब्रह्मणा पुनान. ११३,५, १०८७  
 ब्रह्मा देवानाम् ९६,६; ८३८  
 ब्राह्मणेषु हितम् साम० १३००; १२११  
 भग ९७,५५, ९११  
 भङ्गः ६१,१३; ४००  
 भद्र १,९१,५, ११०५  
 भद्रान् कृण्वन् ९६,१ ८३३  
 भरमाणः रुशन्तं वर्णम् ९७,१५; ८७१  
 भराय सानसि. १०६,२, ९८७  
 भरेषु राजा १,९१,२१, ११२१  
 मानुः ८५,१२; ७२७  
 भीमः ७०,७, ६२६ । ९७,२८, ८८४  
 भुवना विश्वा संपश्यन् १०,२५,६; ११६५  
 भुवनस्य पतिः ३१,६; २३५  
 भुवनस्य राजा ९६,१०; ८४२ । ९७,४०, ८९६  
 भुवनस्य विश्वस्य गोपा २,४०,१, १२१७  
 भुवनस्य विश्वस्य राजा ९७,५६, ९१२  
 भुवनेषु अर्पितः ८६,४५, ७७२  
 भूरिचक्षाः २६,५, २०४  
 भूरिधायाः २६,३; २०२  
 भूरिषाट् (साह्) ८८,२, ७८६  
 भूर्णयः १७,१, १३७ । ४१,१; २९०  
 भूषन् देवेषु यशः मर्ताय ९४,३, ८२५  
 अमाः २२,२; १७४

मंहना ३७, ६, २७१  
 मंहयद्भ्यः ५२, ५, ३५५ । ६७, १, ५६८  
 महयुः २०, ७; १६५  
 महीयान् भूरिदाभ्यः चित् ६६, १७, ५५४  
 महिष्ठः १, ३, ३ । १०२, ६; २६५  
 मघवा ८०, ३; ६९८  
 मघवा मघवद्भ्यः ९७, ५५, ९११  
 मघवा वीरोभिः अश्वैः ९६, ११; ८४३  
 मणि [पर्णमणिः] अयं ३, ५, ३, ८, ११७८, ११८३  
 मतवान् ८६, १३; ७४०  
 मति जनयन् १०७, १८; १०१७  
 मतिभिः परिष्कृतः १०५, २, ९८१  
 मतिभिः पुनान ९६, १५; ८४७  
 मतीनां जनिता ९६, ५, ८३७  
 मतीनां परि (ने) णेता १०३, ४; ९७१  
 मतीनां पिता ७६, ४, ६७४  
 मती जुष्टः ४४, २; ३०९  
 मत्सर-रासः १३, ८; १११ । १७, ३, १३९ । २१, १,  
 १६६ । २६, ६, २०५ । २७, ५; २१० । ३०, ६, २२९ ।  
 ३४, ४; २५१ । ४६, ४, ६, ३२३, ३२५ । ५३, ४, ३५९ ।  
 ६३, १०, १७, २४; ४५७, ४६४, ४७१ । ६५, १०, ५१७ ।  
 ६६, ७, ५४४ । ६९, ६; ६१५ । ७२, ७, ६४५ । ८६, १०,  
 २१, ७३७, ७४८ । ९६, ८, १३; ८४०, ८४५ । ९७, ११;  
 ८६७ । १०७, १४, २३, २५, १०१३, १०२२, १०२४  
 मत्सरवान् ९७, ३२; ८८८  
 मत्सरिन्तम ६३, २; ४४२ । ६७, २; ५६९ । ७६, ५;  
 ६७५ । ९९, ८, ९३४  
 मद-दा-दास १७, ३, १३२ । २३, ७; १८६ । २५, १;  
 १९४ । २७, ५, २१० । ४६, ६, ३२५ । ६१, १७,  
 १९, ४०४, ४०६ । ६२, १४; ४३१ । ६३, १६; ४६३ ।  
 ६८, ३, ६०२ । ६९, ७; ६१६ । ७८, ४; ६८४ ।  
 ७९, ५; ६९० । ८०, २, ६९२ । ८५, २; ७१७ ।  
 ८६, १-२, ३५, ७२८-७२९, ७६२ । ९७, २; ८५८ ।  
 ९९, ३; ९२९ । १०१, ४; ९४७ । १०४, २; ९७५ ।  
 १०५, २, ९८१ । १०७, १७, १०१६ । १०८, १, १०२६ ।  
 १०, २५, १०, ११६९  
 मदच्युत् १२, ३, ९७ । ३२, १; २३६ । ५३, ४, ३५९ ।  
 ७९, २; ६८७ । १०८, ११; १०३६  
 मदानां पति १०४, ५, ९७८  
 मदिन्तम १५, ८, १२८ । २५, ६; १९९ । ५०, ४, ५;

३४४, ३४५ । ६७, १८; ५८५ । ७४, ९; ६६५ । ८०, ३;  
 ६९३ । ८५, ३; ७१८ । ८६, १, १०; ७२८, ७३७ ।  
 ९६, १३; ८४५ । ९९, ६; ९३२ । १०८, ५, १५; १०३०,  
 १०४० । १, ९१, १७, १११७  
 मदिरः-रास ८५, ७; ७२२ । ८६, २, ७२९ । ९७, १५;  
 ८७१ । १०७, १२; १०११ ।  
 मदिष्ठः ६, २; ४९ । ६, ४७, २; ११२८  
 मदाः ते आहनसः विहायसः ७५, ५; ६७०  
 मदाय जुष्टः ९७, १९; ८७५  
 मदेषु सर्वेषाः १८, १-७; १४५-१५१  
 मद्यः ३८, ५, २७६ । ८६, ३५, ७६२  
 मद्वा ८६, ३५, ७६२  
 मधु ११, ५, ९० । १८, २; १४६ । ३९, १, २८२ ।  
 ५१, ३, ३४८ । ६९, २, ६०० । ७०, ८; ६२७ । ७१, ४;  
 ६३३ । ७२, २, ६४० । ७४, ३, ६५९ । ८, ४८, १; ११३५  
 मधुजिह्वाः ७३, ४; ६५९  
 मधुपृष्ठः ८९, ४, ७९६  
 मधुमान्-मन्त. ६१, ९, ३२६ । ६३, ३; ४५० । ६८, १,  
 ८; ६००, ६०७ । ६९, २; ६११ । ८०, ५; ६२५ ।  
 ८५, १०; ७२५ । ७७, १; ६७६ । ८५, ६; ७२१ ।  
 ८६, १, ७२८ । ८७, ४; ७७९ । ९६, १३; ८४५ ।  
 ९७, ४८; ९०४ । १०६, ७; ९९२ । ११०, ११, १०७४ ।  
 ६, ४७, १; ११२७  
 मधुमत्तमः-माः १२, १; ९५ । ३०, ५-६; २२८-२२९ ।  
 ५१, २; ३४७ । ६२, २१; ४३८ । ६३, १६, १९;  
 ४६३, ४६६ । ६४, २२; ४९९ । ६७, १६; ५८३ ।  
 ८०, ४; ६९४ । १००, ६; ९४० । १०१, ४, ९४७ ।  
 १०५, ३, ९८२ । १०८, १, १५; १०२६, १०४०  
 मध्व अंशुः ८९, ६; ७९८  
 मध्वः अयासः ८९, ३, ७९५  
 मध्वः रस ६२, ६, ४२३  
 मध्वः सूदः ९७, ४४; ९००  
 मधुश्चुत् ५०, ३; ३४३ । ६५, ८; ५१५ । ६६, ११, ५४८ ।  
 ६७, २, ५७६  
 मन चित् ११, ८, ९३  
 मनसः जवीयान् ९७, २८; ८८४  
 मनसस्पतिः ११, ८, ९३ । २८, १; २१२  
 मनीषी विणः ६५, २२; ५३६ । ७८, ३; ६८३ । ९६, ८;  
 ८४० । ९७, ५६; ९१२ । १०७, १४; १०१३  
 मनीषी प्रथमः ९१, १; ८०६

मनुषः ७२,४; ६४२  
मनोलाधिया २१,१, ८०६  
मन्दमानः ६५,५; ५१२  
मन्दयन् ६७,१६; ५८३  
मन्दानः ४७,१; ३२६  
मन्दी-न्दिनः ५८,१,४; ३७६,३७९ । १०१,४, ९४७ ।  
१०७,९; १००८  
मन्द्रः ६५,२९; ५३६ । ६७,१; ५६८ । ६८,६, ६०५ ।  
१०९,८; १०४९  
मन्द्रतमाः ९७,२६; ८०२  
मयोभू ६५,२८; ५३५ । ७८,४, ६८४  
मरुद्गण ६६,२६; ५६३  
मरुत्वान्-स्वन्तः १०७,२५, १०२४ । ६,४७,५, ११३१  
मउर्य १५,७, १२७ । ३४,४; २५१ । ६३,२०, ४६७ ।  
१०७,१३; १०१२  
मर्षानां राजा ९७,२४, ८००  
मर्सृजानः-नास ६४,१७, ४९४ । ७०,५; ६२४ । ९१,२;  
८०७ । ९५,४, ८३१  
मर्सृजानः भविभि. ८६,११, ७३८  
मर्सृजान आयुभिः ५७,३; ३७४ । ६६,१३, ५६०  
मर्सृजानः सिन्धुभि ८६,११; ७३८  
मर्सृज्यमानः ८५,५; ७२०  
मर्सृज्यमानः आयुभि ६२,१३; ४३०  
मर्यः २७,१८; ८७४  
मह. ७२,७; ६४५  
महाम् (द्वि०) ६५,१; ५०८  
महान् २,४,६, १४,१६ । ९,३, ७० । ६६,१६; ५५३ ।  
७७,५, ६८० । १०९,४; १०४५ । ६,४७,५; ११३७  
महान् जायमानः ५९,४, ३८३  
महागयः [भग्निः] ६६,२०, ५५७  
महामहिषतम् ४८,२; ३३२  
महि ७४,३; ६५९ । १०८,१, १०२६  
महिषतः ९७,७, ८६९ । १०२,९, २४३  
महिषः ८२,३; ७०३ । ८६,४०, ७६७ । ९६,१८,१९;  
८५०,८५१ । ९७,४१, ८९७ । १०३,५, १००४ ।  
११३,३; १०८५  
महिषः सृगाणाम् ९६,६; ८३८  
महीनां शिशुः १०२,१, ९६०  
महे (च०) ६५,७; ५१४  
मावयन् देवजनम् ८०,५; ६२५ । ८४,३; ७१३

मादयित्नुः १०१,१, ९४४  
भिक्षमाणः ७०,२; ६२१  
मित्रः-त्राः ७७,५; ६८० । १०१,१०; ९५३ । १,९१,३;  
११०३  
मित्राय जुष्टः १०८,१६; १०४१  
मीढ्वान् ६१,२३, ४१० । ७४,७, ६६३ । ८५,४, ७१९ ।  
१०७,७, १००६ । ८,७९,९; ११५८  
मूर्धा १,४३,९; ११००  
सृगाणां महिष ९६,६, ८३८  
सृजान. भग्नि १०९,१७, १०५८  
सृजानः अप्सु ९६,१०, ८४२  
सृजानः तन्वम् ९६,२०; ८५२  
सृज्यमान ३०,२; २२५ । १०७,२१, १०२०  
सृज्यमान कविभि ७४,९, ६६५  
सृज्यमानः गभस्वयोः २०,६; १६४ । ३६,४, २६३ ।  
६४,५, ४८२ । ६५,६; ५१३  
सृज्यमानः मनीषिभि ६४,१३, ४९०  
सृज्यमानः सुकर्मभिः दशभिः ७०,४, ६२३  
सृधः बाधमान ९७,४३; ८९९  
सृष्टाः २२,४; १७६  
सृळ्याकुः ८,७९,७, ११५६  
मेधिरः ६८,४, ५९२  
मेघ्यः १०७,११; १०१०  
यज्ञः १०१,३; ९४६  
यज्ञपति वा०य० ८,२५; १२०४  
यज्ञसाधनः ७२,४; ६४२  
यज्ञस्य आत्मा ६,८,४८  
यज्ञस्य केतुः ८६,७, ७३४  
यज्ञस्य ज्योतिः ८६,१०; ७३७  
यज्ञस्य पूर्व्यः अश्रमा २,१०; २०  
यज्ञियः ७१,६, ६३५ । ७७,५; ६८०  
यतः ६४,२९; ५०६  
यतः नृभिः १०८,१५; १०४०  
यत वाजिभिः ६४,१५, ४९२  
यतः वृषभि. ३४,३; २५०  
यतिः ७१,७, ६३६  
यशाः अथ० ६,५८,३; १२५४  
यशासः ८,४८,५; ११३९  
यशस्वरः ९७,३; ८५९  
यातयन् हृष जनाय ३९,२; २७९

युजानः पदं ऋक्भिः ६४, १९; ४९६  
 युजानः वृषभिः ९७, २८; ८८४  
 युजानः हरितः ८६, ३७; ७६४  
 युःसु भषाळहः १, ९१, २१; ११२१  
 युःसु प्रथमः ८९, ३; ७९५  
 युवा ९, ५, ७२। ६७, २९, ५९६  
 येमानः नृभिः ७५, ३; ६६८ । १०७, १६; १०१५ ।  
 १०९, ८, १८, १०४९, १०५९  
 बृहमाणः ११०, ३; १०६६  
 रक्षमाणः वृजनम् ८७, २, ७७७  
 रक्षांसि अपजङ्घनत् ४९, ५; ३४०  
 रक्षांसि सेधन् ११०, १२, १०७५  
 रक्षितः बार्हतैः १०, ८५ ४; ११७४  
 रक्षोहा १, २; २। ३७, ३; २६८ । ६७, २०; ५८७  
 रघुयामा ३९, ४, २८१  
 रघुवर्तनि ८१, २, ६९७  
 रजस्तुरः ४८, ४, ३३४ । १०८, ७, १०३२  
 रण्यः ९६, ९, ८४१ ।  
 रण्यजित् ५९, १, ३८०  
 रत्ना दधानः दमेदमे सप्त ६, ७४, १; १२२३  
 रत्नानि दाशुषे दधत् ३, ६, २६  
 रथः ३८, १; २७२  
 रथजित् ७८, ४; ६८४  
 रथिरः ९७, ४६, ४८, ९०२, ९०४  
 रथिर गविष्टिषु ७६, २, ६७२  
 रथीतमः ६६, २६; ५६३  
 रथ्यः १६, २; १३०  
 रन्ता विश्वेषु काव्येषु ९१, ३; ८१४  
 रथिपति २, ४०, ६; १२२२  
 रथिपतिः रथीणाम् ९७, २४; ८८०  
 रथिषाद् ६८, ८, ६०७  
 रथिं तुञ्जान ८७, ६; ७८१  
 रथीणां जननः २, ४०, १; १२१७  
 रथीणां पतिः १०१, ६; ९४९  
 रथीणां रथिपतिः ९७, २४, ८८०  
 रथीणां सिवासुतुः ४७, ५; ३३०  
 रसः ६, ६; ४६। ३८, ५, २७६। ६२, ६, ४२३। ७६, १;  
 ६७१। ७७, ५, ६८०। ७९, ५, ६९०। ८४, ५, ७१५  
 रसः इन्द्रियः ४७, ३, ३२८। ८६, १०; ७३७  
 रसः सोम्यः ६७, ८; ५७५  
 रसः संभृतः ऋक्भिः ६७, ३१, ३२; ५९८, ५९९

रसवान् ६, ४७, १, ११२७  
 रसः यस्य मघः तीव्रः ६५, १५, ५२२  
 रसाध्यः ९७, १४, ८७०  
 रसी ११३, ५; १०८७  
 राजा १०, ३; ८८। ४८, ३; ३३३। ६१, १७, ४०४।  
 ६५, १६; ५२३। ७८, १; ६८१। ८३, ५; ७१०।  
 ८५, ३, २, ७१८, ७२४। ८६, ८, ४०, ४५; ७३५, ७६७,  
 ७७२। १०७, १५, १६; १०१४, १०१५। १०८, ८;  
 १०३३। ११३, ४; १०८६। ११४, २, ४; १०९५, १०९७।  
 ८, ७२, ८, ९; ११५७, ११५८। १०, २५, ७; ११६६।  
 १, ९१, ३-५; ११०३-११०५। ६, ७५, १८; १२२८।  
 १०, १६७, ३, १२३९। अथर्व० ५, ३, ७, ११८७।  
 ६, ६८, ३, १२५५। ६, ९९, ३, १२६०। वा० य०  
 २, २६; ११९६  
 राजा देवानाम् ९७, २४; ८८०  
 राजा भुवनस्य ९६, १; ८४२। ९७, ४०; ८९६  
 राजा मर्यानाम् ९७, २४; ८८०  
 राजा विश्वस्य ७६, ४, ६७४  
 राजा विश्वस्य भुवनस्य ९७, ५६; ९१२  
 राजा वृजनस्य ९७, १०; ८६६  
 राजा वृजन्यस्य ९७, २३; ८७९  
 राजा सिन्धूनाम् ९६, ३३; ७६०। ८९, २; ७२४  
 रायाम् आनेता १०८, १३; १०३८  
 रिशादाः ६९, १०; ६१९  
 रीत्यापः १०६, ९; ९९४  
 रुजत् वि द्कहा ३४, १; २४८  
 रुक्क्षणिः शतं पुरः ४८, २; ३३२  
 रेतोधाः ८६, ३९; ७६६  
 रेभः ७, ६, ५५। ६६, ९; ५४६। ८६, ३१; ७५८  
 रेभन् ९६, ६, १७; ८३८, ८४९। ९७, १, ७, ४७; ८५७,  
 ८६३, ९०३। १०६, १४; ९९९  
 रोचना दिवः ३७, ३; २६८  
 रोचमानः १११, २; १०७७  
 रोचयन् रुचा प्रनवत् ४९, ५; ३४०  
 रोदस्योः जनिता ९०, १; ८००  
 लोककृत् ८६, २१; ७४८  
 लोककृत् २, ८; १८  
 वृक्का ७५, २; ६६७  
 वचोविद् ९१, ३; ८०८  
 वज्रः इन्द्रस्य ७२, ७; ६४५। ७७, १; ६७६

वज्रः सहस्रसा भुवत् ४७,३, ३२८  
 वरसः १९,४; १५५  
 वदन् ऋतम् ११३,४; १०८६  
 वदन् श्रद्धाम् ११३,४; १०८६  
 वदन् सत्यम् ११३,४; १०८६  
 वधस्तुः ५२,३; ३५३  
 वधूयुः ६९,३; ६१२  
 वनकक्षः १०८,७; १०३२  
 वनवत् ७७,४; ६७९  
 वनस्पति १,९१,६; ११०६  
 वना वसान ९०,२, ८०१  
 वनानां स्वधितिः ९६,६; ३८  
 वने क्रीळन् ६,५; ४५ । १०६,११; ९९६  
 वने चक्रद् १०७,२२; १०२१  
 वन्वन् पृत्सु ९६,८; ८४०  
 वपुष्टरः वपुष ७७,१, ६७६  
 वयः ८,४८,१, ११३५  
 वयस्कृत २१,२; १६७ । ६९,८, ६१७  
 वयोभुवः ६५,२६, ५३३  
 वयोधाः ८१,३; ६९८ । ९०,२; ८०१ । ९६,१२; ८४४ ।  
 ११०,११, १०७४ । ८,४८,१५; ११४९  
 वय्य ६८,८; ६०७  
 वरः ९७,२२; ८७८  
 वराहः ९७,७; ८६३  
 वरिवासि कृण्वन् ९७,१६; ८७२  
 वरिवोधातम १,३, ३  
 वरिवोविद्-दः २१,२; १६७ । ३७,५, २७० । ६१,१२;  
 ३९९ । ६२,९; ४२६ । २६,१२; ८४४ । ११०,११, १०७४  
 वरिवोवित्तरः ८,४८,१; ११३५  
 वरुणः ७३,३; ६५० । ७७,५; ६८० । ९५,४; ८३१ ।  
 १,९१,३; ११०३  
 वरुणेन सिष्टः अथ० ३,५,४; ११७९  
 वरुणाय जुष्टः १०८,१६; १०४१  
 वरुथं उरु ८,७९,३; ११५२  
 वरेणवः ६१,१९; ४०६  
 वर्णम् ६५,८; ५१५  
 वर्धनः ९७,३९; ८९५  
 वर्धन्तः हन्द्म ६३,५; ४५२  
 वर्धयन् ५१,४; ३४९  
 वर्धिता ९७,३९; ८९५

वर्षासि दुहितुः तिरोदधानः ९७,४७; ९०३  
 वर्षयन् षाम् उत इमाम् ९६,३, ८३५  
 वशी वा०य० ८,५०; १२०८  
 वसानः अपः १६,२, १३० । ७८,१; ६८१ । ८६,४०;  
 ७६७ । ९६,१३, ८४५ । १०७,४,१८,२६; १००३,  
 १०१७,१०२५ । १०९,२१, १०६२  
 वसान ऊर्जम् ८०,३; ६९३  
 वसानः गाः अपः ४१,१; २९६  
 वसानः घृतम् ८२,२; ७०२  
 वसानः द्रापिम् ८६,१४; ७४१  
 वसानः नभः ८३,५; ७१०  
 वसानः नृग्णा ७,४; ५३  
 वसान भद्रा वस्त्रा २७,२; ८५८  
 वसानः वना ९०,२; ८०१  
 वसान शर्म शिवरुथम् अप्सु ९७,४७, ९०३  
 वसुः ९८,५; ९१९  
 वसुविद् ८६,३९, ७६६ । ९६,१०; ८४२ । १०१,११;  
 २५४ । १०४,४; ९७७ । १,९१,१२; १११२  
 वसु भादधानः ९०,१; ८००  
 वसूनि विश्वा विभ्रत् १०८,११; १०३६  
 वसूनाम् आनेता १०८,१३; १०३८  
 वस्त्रा वसानः ९७,२; ८५८  
 वस्वः उरसः ९७,४४, ९००  
 वक्त्रिः २०,५,६; १६३,१६४ । ३६,२, २६१ । ६४,१९;  
 ४९६ । ६५,२८; ५३५  
 वक्त्रिः विशाम् १०८,१०; १०३५  
 वाचः पतिः २६,४; २०३  
 वाचस्पतिः १०१,५; ९४८  
 वाचम् हृष्यन् ९५,५; ८३२  
 वाचं जनयन् ७८,१; ६८१ । १०६,१२, ९९७  
 वाचं हिन्वानः ९७,३२; ८८८  
 वाजगन्धयः ९८,१२; ९२६  
 वाजपस्त्यः ९८,१२; ९२६  
 वाजयन् अपः ६८,४; ६०३  
 वाजयुः ४४,४; ३११ । ६३,१९; ४६६ । १०३,६; ९७३ ।  
 १०६,१२; ९९७ । १०७,११; १०१०  
 वाजयुः देववीतौ ९६,१४; ८४६  
 वाजसनिः ११०,११; १०७४  
 वाजसाः २,१०, ८२०  
 वाजसातमः ६६,२७; ५६४ । १०२,६; ९४०



वाजानां पति ३१, २; २३१  
वाजी-जिन १४, ७; ११९ । १५, ५, १२५ । १७, ७;  
१४३ । २१, ७; १७२ । २२, १; १७३ । २६, १, २०० ।  
२८, १; २१२ । ३६, १; २६० । ३७, ३; २६८ ।  
४५, ४, ३१७ । ५३, ४; ३५९ । ६२, २, १८, ४१९,  
४३५ । ६३, १७; ४६४ । ६४, २९; ५०६ । ६५, ११,  
५१८ । ६६, १०; ५४७ । ७४, १; ६५७ । ८०, २;  
६९२ । ८६, ११; ७३८ । ८७, १, ७७६ । ८९, ४;  
७९६ । ९७, १०, ८६६ । १०६, ११; ९९६ । १०७, ५,  
१००४ । १०९, ६, १०, १७, १९; १०४७, १०५१, १०५८,  
१०६०  
वायवे जुष्टः १०८, २६; १०४१  
वावशानः ९३, २, ४; ८१९, ८२१ । ९५, ४, ८३१ ।  
९६, १४; ८४६  
वावृधानः ८५, १०, ७२५  
विघ्नन् दुरितानि ९७, १६, ८७२  
विघ्नन्तः पुरु दुरिता ६२, २; ४१९  
विघ्नन् रक्षांसि १७, ३, १३९ । ३७, १, २६६  
विचक्षण १२, ४, ९८ । ३७, २, २६७ । ५१, ५; ३५० ।  
६६, २३, ५६० । ७०, ७, ६२६ । ७५, १; ६६६ ।  
८५, ९, ७२४ । ८६, ११, १९, २३, ३५; ७३८, ७४६,  
७५०, ७६२ । ९६, २, ८३४ । ९७, २, ८५८ । १०६, ५;  
९९० । १०७, ३, ५, ७, १६, २४, १००२, १००४, १००६,  
१०१५, १०२३  
विचक्षाण. ३९, ३, २८०  
विचरन् मातरा ६८, ४; ६०३  
विचर्षणिः ११, ७, ९२ । २८, ५, २१६ । ४०, १; २८४ ।  
४१, ५, २९४ । ४४, ३, ३१० । ४८, ५, ३३५ । ६०, १,  
४; ३९५, ३९८ । ६२, १०; ४२७ । ६७, २२, ५८९ ।  
८४, १; ७११  
विततः दिवस्पदे ८३, २; ७०७  
विततः पवित्रे ७३, ९, ६५६  
विदत् गातुम् ९६, १०; ८४२  
विदानः व्रता आयुधा ३५, ४; २५७  
विदानाः भस्य (ऋतस्य) योजनम् ७, १; ५०  
विद्वान् ७०, १०; ६२९ । ७३, ८; ६५५ । ७७, ४, ६७९  
विद्वान् देवानां उभयस्य जग्मनः ९१, २; ६९७  
विधानैः गुपितः १०, ८५, ४; ११७४  
विपश्चित्तः १२, ३; ९७ । २३, ३; १७५ । ३३, १; २४२ ।

८६, ३६, ४४, ७६३, ७७१ । ९६, २२, ८५४ । १०१, १२,  
९५५  
विप्रः १३, २; १०५ । १८, २; १४६ । ४०, १; २८४ ।  
६५, २९; ५३६ । ६६, ८; ५४५ । ८४, ५; ७१५ ।  
९७, ३७; ८९३ । १०७, ६, ७; १००५, १००६ ।  
८, ७९, १, ११५०  
विप्रवीरः ४४, ५; ३१२  
विप्राणाम् ऋषिः ९६, ६; ८३८  
विभूवसु ७२, ७; ६४५ । ८६, १०; ७३७  
विभृत्वा ९६, १९. ८५१  
विमानः अह्नाम् ८६, ४५; ७७२  
विमानः रजसः ६२, १४, ४३१  
विरोचयन् ३९, ३; २८०  
विवस्वतः आपानसः १०, ५; ८१  
विवेदिदत् इन्द्रस्य सख्यम् ८६, ९; ७३६  
विशां वह्निः १०८, १०; १०३५  
विश्वचक्षाः ८६, ५; ७३२  
विश्वचर्षणिः १, २; २ । ६६, १; ५३८  
विश्वजित् ५९, १; ३८० । ८, ७९, १; ११५०  
विश्वतो गोपाः १०, २५, ७; ११६६  
विश्वदर्शतः ६५, १३; ५२० । १०६, ५; ९९०  
विश्वदेवः ९२, ३; ८१४ । १०३, ४; ९७१  
विश्ववारः ८८, ३; ७८७ । ९१, ५; ८१०  
विश्ववित् २७, ३; २०८ । २८, १, ५; २१२, २१६ ।  
६४, ७; ४८४ । ८६, २९, ३२; ७५६, ७६६ । ९७, ५६,  
९१२  
विश्ववेदा १, ९१, २; ११०२  
विश्वस्मै साधारणः ४८, ४; ३३४  
विश्वस्य ईशानः १०१, ५; ९४८  
विश्वस्य भुवनस्य गोपा २, ४०, १, १२१७  
विश्वस्य भुवनस्य राजा ९७, ५६; ९१२  
विश्वायुः ८६, ४१, ७६८  
विष्टप ऋतस्य ३४, ५, २५२  
विष्टम्भ २, ५; १५  
विष्टम्भः दिवः ८६, ३५; ७६२ । ८७, २, ७७७ । ८९, ६;  
७९८ । १०८, १६; १०४१  
विष्णोः जनिता ९६, ५; ८३७  
विहायाः ८, ४८, ११; ११४५  
वीतिराधा. ६२, २९; ४४६  
वीतये साधनः १०५, ३; ९८२

वीरः ३५, ३; २५६ । १०१, १५, ९५८ । ११०, ७; १०७०  
 वीर [पर्णमणि] अथ० ३, ५, ८; ११८३  
 वीरयुः ३६, ६; २६५  
 वीरुधाम् अधिपतिः अथ० ५, २४, ७; ११८४  
 वीरुधां पतिः ११४, २; १०९५  
 वीर्यं वर्धन्तः (हन्द्रस्य) ८, १, ५९  
 वृकः ७९, ३; ६८८  
 वृजनं रक्षमाणः ८७, २; ७७७  
 वृजनस्य गोपाः १, ९१, २१, ११२१  
 वृजनस्य राजा ९७, १०; ८६६  
 वृजन्यस्य राजा ९७, २३, ८७९  
 वृजिनस्य हन्ता ९७, ४३, ८९९  
 वृत्रहा २५, ३; १९६ । २८, ३; २१४ । ३७, ५, २७० ।  
 ८९, ७; ७९९ । ९८, ५; ९१९ । १, ९१, ५; ११०५  
 वृत्रहन्तमः १, ३, ३ । २४, ६; १९२ । १०, २५, ९, ११६८  
 वृत्राणां हन्ता ८८, ४; ७८८  
 वृत्राणि म्रन्तः १७, १, १३७  
 वृषन्-षा २, १, २, ६, ११, १२, १६ । ६, १, ६; ४१, ४६ ।  
 ७, ३; ५२ । १०, ६; ८२ । १९, ३; १५४ । २५, ३,  
 १९६ । २७, ३, ६, २०८, २११ । २८, ४, २१५ ।  
 २९, १; २१८ । ३४, ३; २५० । ३७, १, ५; २६६, २७० ।  
 ३८, १; २७२ । ४०, २, ६; २८५, २८९ । ५१, ४; ३४९ ।  
 ६१, २८; ४१५ । ६२, ११; ४२८ । ६३, २०, २१,  
 ४६७, ४६८ । ६४, १, २, ३, ४७८, ४७९, ४८० । ६५, ४,  
 १०; ५११, ५१७ । ७०, ९; ६२८ । ८०, २, ३, ६९२,  
 ६९३ । ८१, २; ६९७ । ८२, १; ७०१ । ८६, ३, ७, ११,  
 १२, १९, ३१, ४४; ७३०, ७३४, ७३८, ७३९, ७४६, ७५८,  
 ७७१ । ८७, २४; ७७९ । ९०, २; ८०१ । ९१, ३, ८०८ ।  
 ९३, २, ८१९ । ९६, ७, ८३९ । ९७, १३, ४०, ८६९,  
 ८९६ । १०१, १६, ९५६ । १०७, २२, १०२१ ।  
 १०८, १२; १०३७ । १, ९१, २, ११०२ । २, ४०, ३,  
 १२१९  
 वृषा वृषत्वेभिः महित्वा १, ९१, २; ११०२  
 वृषभिः यतः ३४, ३, २५०  
 वृषभिः युजान २७, २८, ८८४  
 वृषभ्युताः ६९, ७; ६१६  
 वृषयुः ७७, ५, ६८०  
 वृषमतः ६२, ११; ४२८ । ६४, १; ४७८  
 वृषभः १९, ४; १५५ । ७०, ७, ६२६ । ७२, ७; ६४५ ।  
 ७६, ५; ६७५ । ८०, ५; ६९५ । ८५, २; ७२४ । ८६, ३८;  
 ३० [सोमः] १७

७६५ । १०८, ८, ११; १०३३, १०३६ । ११०, ९, १०७२ ।  
 ६, ४७, ५; ११३१  
 वृष्टयः २२, २, १७४  
 वृष्टिधावः १०६, ९, ९९४  
 वृष्टिमान् २, ९, १२  
 वेधाः २, ३; १३ । १६, ७, १३५ । २६, ३, २०२ ।  
 १०२, ४; ९६३ । १०३, १, ९६८  
 वेविजानः ७७, २; ६९७  
 व्यक्तः ७१, ७, ६३६  
 व्यभ्रवत् रश्मिभिः ६६, २७; ५६४  
 झंसन् निवचनानि ९७, २, ८५८  
 शकुनः ८५, ११; ७२६ । ९६, १९, ८५१  
 शचीवस्-वान् ८७, ९; ७८४  
 शतधारः ८५, ४; ७१९ । ८६, ११, ७३८ । ९६, १४, ८४६  
 शतवाज ९६, ९; ८४१ । ११०, १०; १०७३  
 शतामघः ६२, १४, ४३१  
 शत्रून् अपघ्नन् ९६, २३; ८५५  
 शं दिवे पृथिव्यै प्रजायै १०९, ५; १०४६  
 शम्भविष्टः ८८, ३, ७८७  
 शर्षाय साधनः १०५, ३, ९८२  
 शर्याणि तान्वा जहत् १४, ४, ११६  
 शवसस्पतिः ३६, ६, २६५  
 शिवः सखा १०, २५, ९; ११६८  
 शिशानः शृङ्गे ७०, ७; ६२६  
 शिशुः १, ९, २ । ८५, ११, ७२६ । ८६, ३१, ३६; ७५८,  
 ७६३ । ९६, १७, ८४९ । १०९, १२, १०५३ ।  
 १०, ८५, १; १२३८  
 शिशुः दिव ३३, ५, २४६ । ३८, ५; २७६  
 शिशुः महीनाम् १०२, १; ९६०  
 शिष्टः वरुणेन अथ० ३, ५, ४, ११७९  
 शुक्रः-क्राः क्रासः २१, ६; १७१ । ३३, २, २४३ । ४६, ४, ३२३ ।  
 ६३, १४, २५, ४६१, ४७२ । ६४, ४, २८, ४८१, ५०५ ।  
 ६५, २६, ५३३ । ६६, ५, २४; ५४२, ५६१ । ६७, १८,  
 ५८५ । ९७, २०, ३२; ८७६, ८८८ । १०९, ३; १०४४ ।  
 ५, ६; १०४६-४७ । वा०य० ८, ४८, ४९; १२०६ ७  
 शुचिः ९, ३; ७० । २४, ६, ७; १९२, १९३ । ७०, ८,  
 ६२७ । ७२, ४, ६४२ । ७५, ४, ६६९ । ८६, १३;  
 ७४० । ८८, ८; ७९२ । १, ९१, ३, ११०३  
 शुचिबन्धुः ९७, ७; ८६३  
 शुद्धः ७८, १, ६८१

शुभ्रः १४,५; ११७ । ६२,५, ४२२ । ६३,२६; ४७३ ।  
 ९६,२०, ८५२ । १०७,२४, १०२३  
 शुभ्रशान्तमः शुभ्रैभिः ६६,२६, ५६३  
 शुभ्रमान. क्रतायुभि ३६,४, २६३ । ६४,५; ४७२  
 शुष्म ७९,५, ६९०  
 शुष्मी १४,३. ११५ । १८,७; १५१ । २७,६, २११ ।  
 २८,६, २१७ । ३०,१; २२४ । ४१,३; २९२ । ७१,१,  
 ६३० । ८८,७, ७९१  
 शूर १५,१, १२१ । ८९,३ ७९५ । ९६,१; ८३३  
 शूरग्राम ९०,३; ८०२  
 शूरतर शूरैभ्य ६६,१७, ५६५  
 शूष ७१,२ ६३१  
 शृगाणि दोधुवत् १५,४ १२४  
 शोचन्तः ऋचा ७३,५, ६५२  
 शोण ९७,१३; ८६९  
 श्येन. ९६,१९, ८५१  
 श्येन गृध्राणाम् ९६,६; ८३८  
 श्येनज्यूतः ८९,२, ७९४  
 श्येनभृत. ८७,६, ७८१  
 श्रद्धां पदन् ११३,४ १०८६  
 श्रवस्यव १०,१, ७७  
 श्रित गौरी भधि १२,३, ९७  
 श्रित सिन्धो. ऊर्मा भधि १४,१, ११३  
 श्रितः सिन्धुषु ८६,८; ७३५  
 श्रिय. विश्वा अभि अर्पन् १६,६; १३४ । ६२,१९, ४३६  
 श्रिये जातः ९४,४; ९२६  
 श्रीणन् अप. १०९,२२; १०६३  
 श्रीणान गोभिः १०९,१७, १०५८  
 श्रीणाना अप्सु २४,१; १८७ । ६५,२६, ५३३  
 श्रुष्टी जातासः १०६,१; ९८६  
 श्लोकयन्त्रास ७३,६, ६५३  
 स्यत् ८६,४७, ७७४  
 सयतः ६९,३ ६१२  
 सवमानः २६,४; २०३  
 सविदान. पितृभिः ८,४८,१३; ११४७  
 सवृक्तष्टणु ४८,२. ३३२  
 सशिशान ९०,१; ८००  
 सक्षणि हर्म्यस्य ७८,३; ६८३  
 सखा १,९१,१५,१७, १११५,१११७,  
 सखा शिव १०,२५,९, ११६८

सखा इन्द्रस्य ९६,२, ८३४ । १०१,६; ९४९ । १०,२५,  
 ९; ११६८ ।  
 सखा सखिभ्यः ६६,१,४, ५३८,५४१  
 सख्यं जुषाण. इन्द्रस्य ९७,११, ८६७ । ८,४८,२, ११३६  
 सचमान अपाम् ऊर्म्मिम् ९६,१९, ८५१  
 सचमाण. ऊर्म्मिणा ७४,५, ६६१  
 सजग्मानः स्वस्त्ये ६४,३, ५०७  
 सजयन् विश्वा वसूनि २९,४; २२१  
 सत्ता ८६,६, ७३३  
 सत्पति १,९१,५; ११०५  
 सत्य ९२,६, ८१७  
 सत्य वदन् ११३,४, १०८६  
 सत्यानि कृण्वन् ७८,५, ६८५  
 सत्यकर्मा ११३,४, १०८६  
 सत्यमन्मा ९७,४८, ९०४  
 सत्यश्रुण्म ९७,४६; ९०२  
 सत्राजित् २७,४; २०९  
 सखा ८७,७; ७८२  
 सदावान् ९०,३; ८०२  
 सदावृध. ४४,५, ३१२  
 सदासर ११०,४; १०६७  
 सधमाद्य २३,६, १८५  
 सधस्था त्री १०३,२, ९६९  
 सन् ८६,५,६, ७३२,७३३  
 सनद्रयिः ५२,१, ३५१  
 सनिता धनानि ९०,३, ८०२  
 सन्तति ६९,२; ६११  
 सन्ददिः ९९,७; ९३३  
 सन्दहत अग्रतान् ७३,५, ६५२  
 सन्तिः २९,२, २१९  
 सवर्दुघ धीनाम् अन्तः १२,७; १०१  
 समत्सु अषाढहः ९०,३; ८०२  
 समनाः ९६,९; ८४१  
 समाहताः देवैः साम १३०१; १२१२  
 समितीः श्यान ९२,६, ८१७  
 समुद्रः २,५, १५ । ६४,८; ४८५ । ८६,२९, ७५६ ।  
 ९७,४०, ८९६ । १०१,६, ९४७ । १०९,४; १०४५  
 समुद्रिय १०७,१६, १०१५  
 समुद्रे आहितः ६४,१९; ४२६  
 संपश्यन् विश्वा भुवना १०,२५,६; ११६५

सम्भृतः ऋषिभि ६७,२९; ५९८ । साम० १३००,  
१२११

सम्मनसः अथ० ६,७३,१; १२५६

संमिश्र ६१,२१; ४०८

सयोनिः [पर्णमणिः] अथर्व० ३,५,८, ११८३

सर्गाः सृष्टाः २२,१; १७३

सर्वधा मद्देशु १८,१-७; १४५-१५१

सर्ववीरः ९०,३, ८०२

सविता ९७,४८, ९०४

ससृवांसः २२,४; १७६

सज्जिः २४,४, १९०

सहः ७१,४, ६३३

सहमानः अभिमातोः ३,६२,१५, ११२६

सहमानः घृतन्यून ११०,१२, १०७५

सहसाबन् १,९१,२३, ११२३

सहस्र-अ (स्त्रा) ऋसाः ८८,७, ७९१

सहस्र-ऊ (स्त्रो) तिः ६२,१४, ४३१ । ६५,७, ५१४

सहस्रचक्षाः ६०,१,२, ३८४,३८५

सहस्रजित् ५५,४, ३६७ । ७८,४; ६८४ । ८०,४; ६९४ ।

८४,४; ७१४

सहस्रधार १३,१; १०४ । ८०,४; ६९४ । ८६,७,

३३, ७३४,७६० । ८९,१; ७९३ । ९६,९; ८४१ ।

९७,५,१९, ८६१,८७५ । १०१,६, ९१९ । १०७,१७;

१०१६ । १०८,८,११, १०३३,१०३६ । १०९,१६,

१९; १०५७,१०६० । ११०,१०, १०७३ । साम०

१३०२, १२१३

सहस्रनी-णीतिः ७१,७; ६३६

सहस्रनी-णीथ ८५,४, ७१९ । ९६,१८, ८५०

सहस्रपाजस १३,३; १०६ । ४२,३, २९८

सहस्रमर्णस् ६०,२; ३८५

सहस्रमृष्टिः ८३,५; ७१० । ८६,४०; ७६७

सहस्रयामा १०६,५ ९९०

सहस्ररेत ९६,८; ८४० । १०९,१७ १०५८

साधनः दक्षाय ६२,२९; ४४६

साधनः दक्षाय शर्षाय वीतये १०५,३; ९८७

साधारणः विश्वस्मै ४८,४, ३३४

सानसि भराय १०६,२; ९८७

साम कृण्वन् ९६,२०; ८५४

सासहिः समस्तु ४,८; ३८

सासहान् शत्रून् ११०,१२,१०७५

साहान् २०,१; १५९ । ९०,३, ८०२ । १०५,६; ९८५

सिंहः ८९,३, ७९५

सिक्त ९७,१५; ८७१

सिन्धुमाता ६१,७, ३९४

सिन्धुषु अन्तः उक्षित. ७२,७; ६४५

सिन्धुषु श्रित ८६,८, ७३५

सिन्धूनां क्राणा ८६,१९, ७४६

सिन्धूनां राजा ८६,३३, ७६० । ८९,२, ७९४

सिषासन् अपः ९०,४; ८०३

सिषासन् तृतीय धाम ९६,३८, ८५०

सिषासितुः रयीणाम् ४७,५; ३३०

सीदन् ऋतस्य योनिम् आ ६४,११, ४८८

सीदन् योना वनेषु आ ६२,८; ४२५

सीदन् वनस्य जठरे ९५,१; ८२८

सुकनुः २,३. १३ । १२,४, ९८ । ४८,३, ३३३ । ६३,२८,

४७५ । ६५,३, ५३७ । ७०,६; ६२५ । ७२,८, ७४६ ।

७३,८, ६५५ । ७४,३; ६५९ । १०२,३; ९६२ ।

१०,२५,८, ११६७

सुकनुः क्रतुभि १,९१,२; ११०२

सुक्षिति. १,९१,२१, ११२१

सुक्षितीनाम् आनेता १०८,१३. १०३८

सुत-सुता. २,३; १३ । १०,४; ८० । १६,७, १३५ ।

२४,७, १९३ । २७,३; २०८ । २९,१, २१८ । ३२,१,

२३६ । ३३,३, २४४ । ३७,१; २६६ । ३८,६; २७७ ।

३९,३,५; २८०,२८२ । ४०,२, २८५ । ४१,४, २९३ ।

४२,२; २९७ । ४४,३, ३१० । ५१,४,५, ३४९,३५० ।

६१,८,२८, ३९५,४१५ । ६२,१९, ४३६ । ६३,३,

६,१०,१५, ४५०,४५३,४५७,४६२ । ६६,७, ५४४ ।

६७,२,१२,१८, ५६९,५७९,५८५ । ६८,७; ६०६ ।

६९,९, ६१८ । ८१,१; ६९६ । ९७,१,३५; ८५७,

८९१ । १००,४,५,६, ९३८,९३९,९४० । १०१,१,२;

९४४,९४७ । १०६,९ ९९४

सुत. अद्रिभिः २४,५, २८१ । ५१,१, ३४६ । ६३,१३;

४६० । ६८,९, ६०८ । ७१,३, ६३२ । ७५,४, ६६९ ।

८६,२३; ७५० । १०९,१८; १०५९

सुत. हस्तव्युतेभि अद्रिभि. ११,५; ९०

सुतः अद्रिभिः नृभिः ८६,३४; ७६१

सुतः ऋजीपेण वा०य० १९,७२, १२०९

सुतः ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपया ११३,२, १०८४

सुत प्रावभिः ८०,४; ६९४

सुतः धारया ३,१०; ३० । ७२,५; ६४३  
 सुत. नृभिः ६२,५,१६; ४२२,४३३ । ८६,३४, ७६१  
 सुत इन्द्राय पातवे १,१; १ । १६,३; १३१  
 सुत देवेभ्यः ३,९; २९ । २८,२, २१३ । ९९,७, ९३३ ।  
 १०३,६, ९७३  
 सुतः मरुत्वते १०७,१७, १०१६  
 सुतः भराय ६,६, ४६  
 सुत चम्बो ३६,१, २६०  
 सुताः यज्ञस्य सादने १२,१, ९५  
 सुदक्षः ८७,२, ७७७ । १०५,४, ९८३ । १०८,१०;  
 १०३५ । १,९१,२; ११०२  
 सुदुघाः साम० १३००, १२११  
 सुदृशीकः ८६,४५, ७७२  
 सुधारः १०९,७; १०४८  
 सुन्वानः १०१,१३, ९९६  
 सुपर्णः ७१,२, ६३८ । ८५,११; ७२६ । ८६,१; ७२०  
 सुपर्ण्यः ८६,३७; ७६४ । ९७,३३, ८८०  
 सुपेशाः ७९,५, ६९० । ८१,१, ६९६  
 सुभ्वः ७९,५, ६९०  
 सुमगलः ८०,३; ६९३  
 सुमतिः ८८,७, ७९१  
 सुमनाः १,९१,४, ११०४  
 सुमनस्यमानः ६,७४,४, १२२६  
 सुमित्रः १,९१,१२, १११२  
 सुमृळीकः ६९,१०, ६१९ । १,९१,११, ११११  
 सुमेधाः ९१,३ ८१४ । ९३,३, ८२० । ९७,२३, ८७९  
 सुरभिः २७,१२; ८७५  
 सुरभिन्तरः १०७,२, १००१  
 सुवानः नास ६,३, ४३ । ९,१; ६८ । १०,४; ८० ।  
 १३,५, १०८ । १७,२; १३८ । १८,१, १४५ । ३४,१,  
 २४८ । ६६,२८; ५६५ । ८७,७, ७८२ । ९२,१;  
 ८१२ । ९७,४०; ८९६ । ९८,२,३, ९१६,९१७ ।  
 १०१,१०; ९५३ ।  
 सुवानः आ ८६,४७, ७७४  
 सुवान प्र १०९,१६, १०५७  
 सुवान अद्रिभिः १०७,१०, १००९  
 सुवान चक्षसे १०७,३; १००२  
 सुवानः नहुष्येभिः ९१,२; ८०७  
 सुवान. सोतृभिः १०७,८, १००७  
 सुवितस्य दुराव्यः सेतुः ४१,२, २९१

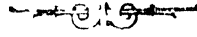
सुवीरः २३,५; १८४ । ८६,३९; ७६६ । १,९१,१९;  
 १११९  
 सुवीर्यं दधत् स्तोत्रे २०,७, १६५  
 सुवृध् ६८,६; ६०५  
 सुवत् २०,५, १६३ । ५७,३, ३७४  
 सुशेवः १,९१,१५, १११५ । ८,४८,४, ११३८ । ८,७९,७;  
 ११५६ । ६,७४,४; १२२६  
 सुश्रवाः १,९१,२१, ११२१  
 सुश्रवस्तमः १,९१,१७, १११७  
 सुम-वसद् ६८,८; ६०७  
 सुस-वखा ८,४८,९, ११४३  
 सुष्टु स्तु-तः कविभिः १०८,१२, १०३७  
 सुष्वाणः ६,८; ४८ । १३,२; १०५  
 सुष्वाणः णासः-अद्रिभिः ६७,३; ५७० । १०१,११, ९५४  
 सुष्वाणः देववीतये ६५,१८, ५२५  
 सुहस्यः १०७,२१, १०२०  
 सूद-मध्वः ९७,४४, ९००  
 सुतु ९,३; ७० । १९,४, १५५  
 सूतः-राः १०,५, ८१ । ६३,८,९; ४५५,४५६ । ६५,१;  
 ५०८ । ६६,१८, ५५५ । २१,३, ७०८  
 सूरिः ६७,२, ५६९  
 सूर्यः तव ज्योतीषि ८६,२९; ७५६  
 सूर्यस्य जनिता ९६,५, ८३७  
 सृजान ९५,१-२; ८२८-८२९  
 सृजानः कलशे ८६,२२; ७४९  
 सूवा ९६,२०; ८५२  
 सूष्टा सर्गाः २२,१; १७३  
 सेतुः दुराव्यः सुवितस्य ४१,२, २९१  
 सेतवः ७३,४; ७५१  
 सेधन् रक्षांसि ११०,१; १०७५  
 सेनानीः ९६,१, ८३३  
 सोतृभिः पूयमानः ९६,१६; ८४८  
 सोतृभिः सुवानः १०७,८, १००७  
 सोमः } अयं निर्देशः प्रायः प्रतिसूक्तं दृश्यते ।  
 सोमा-मासः }  
 सोम्यासः ६,७५,१०, १२२७ । १०,१४,६, १२३०  
 सोम्यं मधु ७४,३; ६५९  
 सोम्यः रस ६७,८; ५७५  
 स्कम्भ दिवः ८६,४६; ७७३  
 स्तनयन् १९,३, १५४ । ७२,६, ६४४ । ८६,९; ७३६

त्रवानः नृभि ९७,५; ८६१  
 त्रुतः ६२,१५; ४३२  
 त्र्याः क्षामणि ८५,११; ७२६  
 त्रः सिषासन् ७६,२; ६७२  
 त्रतवस् ११,४; ८९  
 त्रदितः मातरिश्वना ६७,३१, ५९८  
 त्रधितिः वनानाम् ९६,६; ८३८  
 त्रध्वरः ३,८, २८। ८६,७, ७३४  
 त्रवशाः ९८,६; ९२०  
 त्रवर्गाः ९०,४, ८०३  
 त्रवर्चक्षाः ९७,४६; ९०२  
 त्रवर्चस्त ८४,५, ७१५  
 त्रवर्जज्ञानः ८६,१४. ७४१  
 त्रवर्जित् २६,२, २०७। ७८,४, ६८४  
 त्रवर्हेश १३,९; ११२। ६५,११, ५१८  
 त्रवर्षति १९,२; १५३  
 त्रवर्षिद् ८,९; ६७ । २१,१, १६६ । ५९,४; ३८३ ।  
 ८४,५, ७१५ । ८६,३, ७३० । ९४,२, ८३४ ।  
 १०१,१०, ९५३ । १०६,१,९. ९८६,९२४। १०७,१४,  
 १०१३ । १०८,२; १०९७। १०९,८, १०४९। ८,४८,  
 १५; ११४९  
 त्रवर्षाः ९६,१८, ८५० । १,९१,२१, ११२१  
 त्रवस्तये संजगमानः ६४,३०, ५०७  
 त्रवस्त्ययनीः साम० १३००, १२११ । १३०३, १२१४  
 त्रवादिष्ठः ६२,९, ४२६ । ७८,४; ६८४ । ९७,४८; ९०४  
 त्रवादुः ५६,४, ३७१ । ८५,६; ७२१ । ९७,४, ८६० ।  
 १०९,१. १०४२ । ११०,११. १०७४ । ६,४७,१,२;  
 ११२७,११२८ । ८,४८,१ ११३५  
 त्रवाध्यः ३१,१; २३० । ६५,४, ५११ । १०१,१०; ९५३  
 त्रवानासः १०,१; ७७  
 त्रवायुधः ४,७; ३७ । १५,८; १२८ । ३१,६; २३५ ।  
 ६५,५; ५१२ । ८६,१२; ७३९ । ८७,२, ७७७ ।  
 ९६,१६, ८४८। १०८,१५; १०४०। ११०,१२; १०७५  
 त्रवावत. ७४,२, ६५८  
 त्रन्ता अहिनाज्ञाम् ८८,४; ७८८  
 त्रन्ता विश्वस्य दस्योः ८८,४; ७८८  
 त्रन्ता वृजिनस्य ९७,१३; ८९९  
 त्रन्ता वृत्राणाम् ८८,४, ७८८  
 त्रया १०७,२५; १०२४  
 त्ररसः (वृष्टी) १०,६; ८२

हरस्य दैन्यस्य भवयाता ८,४८,२; ११३६  
 हरिः २,६, १६ । ३,३,९; २३,२९ । ७,६; ५५ ।  
 ८,६, ६४ । १९,३; १५४ । २५,१; १९४ । २६,५;  
 २०४ । २७,६; २११ । ३०,५, २२८ । ३२,२, २३७ ।  
 ३३,४, २४५ । ३४,४; २५१ । ३६,२, २६७ । ३८,  
 २,६, २७३,२७७ । ३९,६; २८३ । ४१,१; २९६ ।  
 ५०,३, ३४३ । ५३,४ ३५९ । ५७,२; ३७३ ।  
 ६२,१८; ४३५ । ६३,१७, ४६४ । ६४,१४; ४९१ ।  
 ६५,८,१२,२५, ५१५,५१९,५३२ । ६६,२५,२६;  
 ५६२,५६३ । ६७,४, ५७१ । ६८,२. ६०१ । ६९,३,५,  
 ६१२,६१४ । ७०,८, ६२७ । ७१,१, ६३० । ७२,१,५;  
 ६३९,६४३ । ७६,१, ६७१ । ७९,१; ६८६ । ८०,३;  
 ६९३ । ८२,१; ७०१ । ८६,६,११,२५,२७,३१,३३,  
 ४२,४४,४५; ७३३,७३८,७५२,७५४,७५८,७६०,७६९,  
 ७७१,७७२ । ८९,३, ७९५ । ९२,१, ८१२ । ९३,१;  
 ८१८ । ९५,१,२, ८२८,८२९ । ९६,२,२४; ८३४,  
 ८५६ । ९७,६,१८; ८६२,८७४ । ९८,७, ९२१ ।  
 ९९,२, ९२८ । १००,७, ९४१ । १०१,१५,१६;  
 ९५८,९५९ । १०३,२,४, ९६९,९७१ । १०६,१,१३;  
 ९८६,९९८ । १०७,१०, १००९ । १०९,१२,२१;  
 १०५३,१०६२ । १११,१; १०७६ । ११३,५; १०८७  
 हरिः दिवा ९७,९; ८६५  
 हरीणां पतिः १०५,५, ९८४  
 हरितः युजानः ८६,३७; ७६४  
 हर्म्यस्य सक्षतिः ७८,३; ६८३  
 हर्यत २५,४, १९७। २६,५, २०४। ४३,१,३, ३०२,  
 ३०४। ६५,२५, ५३२। ९६,१७; ८४९ । ९८,७,८;  
 ९२१,९२२ । ९२,१, ९२७ । १०६,१३; ९९८ ।  
 १०७,१३,१६. १०१२,१०१५  
 हर्यत मद ८६,४२, ७६९  
 हविः १०,१२४,६. १२१५  
 हविः उत्तमम् १०७,१, १०००  
 हविः चारु प्रियतमम् ३४,५, २४८  
 हविः हविषु वन्ध ७,२, ५१  
 हविष्मान् ८३,५; ७१० । ९६,१२; ८४४  
 हितः ६२,१०, ४२७  
 हित ऋषिभि. मतिभिः धीतिभिः ६८,७, ६०६  
 हित. गुहा अध्वर्युभि १०,९; ८५  
 हित धिया २५,२; १९५ । ४४,२, ३०९  
 हित. धीतिभिः सप्त ९,४; ७२

हितः नृभि २८,१; २१२  
 हितः नप्योः ९,१; ६८  
 हितः प्रयसे ६६,२३; ५६०  
 हितः ब्राह्मणेषु साम० १३००; १२११  
 हिन्वन् ऋतस्य दीधितिम् १०२,१,८; ९६०,९६७  
 हिन्वानः-नास १०,२; ७८ । ३४,१; २४८ । ६४,९;  
 ४८६ । १०५,२, ९८१  
 हिन्वानः प्र ६४,१६; ४९३ । ९०,१, ८०० । १०७,  
 १५. १०१४  
 हिन्वानः अधः इन्द्रियम् ४८,५; ३३५  
 हिन्वानः आप्यं बृहत् ६२,१०; ४२७  
 हिन्वानः गोः अधि त्वचि ६५,२५; ५३२

हिन्वानः मानुषीः अपः ६३,७; ४५४  
 हिन्वानः वाचम् ९७,३२, ८८८  
 हिन्वानः वाचम् इषिराम् ८४,४; ७०३  
 हिन्वानः हेतुभिः ६४,२९; ५०६  
 हियानः सनये ९२,१; ८१२  
 हियानः सोतुभिः ३०,२; २२५  
 हिरण्यजित् ७८,४; ६८४  
 हिरण्यव. ८५,११; ७२६ । १०७,४, १००३  
 हिरण्ययुः २७,४; २०९  
 हिरण्यविद् ८६,३९; ७६६  
 हृदं सनिः इन्द्रस्य ६१,१४; ४०१  
 होता ९२,६; ८१७



## सोम-देवता-संहितान्तर्गत- निपातदेवतानां वर्णानुक्रमसूची ।

( नवममण्डलस्थ-सूक्तानि )

अदितिः ८१,५ । ९७,५८  
 अदिते गर्भः ७४,५  
 अन्तरिक्षम् ८१,५  
 अर्यमा ६४,२४ । ८१,५ । १०८,१४  
 अश्विनौ ७,७ । ८,२ । ८१,४ । [ ९७,४९ नरं धीजवम  
 रथेष्ठाम् । एक वचनम् अश्विनौ ॥ ]  
 आदित्याः ६१,७ । ११४,३ [ सप्त ] ।  
 इन्द्र १; १,९,१० । २; १,९ । ४; ४ । ६; ४,७,९ ।  
 ७, ७ । ८; १,३,९ । ९; ५ । ११; ६,८,९ । १२;  
 १,२ । १३, १,८ । १५, १ । १६; ३,५ । १७, २ ।  
 १९; २ । २१, १ । २३, ६,७ । २४, २,३,५ । २५,  
 ५ । २६; ६ । २७; २,६ । ३०; ५,६ । ३२; २ ।  
 ३३; ३ । ३४; २,४ । ३७; ६ । ३८; २ । ३९; ५ ।  
 ४०; २ । ४३; २ । ४५; १,२ । ४६; ३,६ । ५०; ५ ।  
 ५१, १,२ । ५३, ४ । ५६; २,४ । ६०, ३,४ । ६१;  
 ८,१२,१४,२२,२५ । ६२; ८,१४,१५,२२ । ६३,  
 २,३,५,६,९,१०,१५,१७,१९,२२ । ६४; १२,१५,२२ ।  
 ६५,८,१०, [ मरुत्वान् ] १४,२० । ६६, ७,१५,२८,

२९ । ६७, २,७,८,१६ । ६९; ६,९,१० । ७०; ९,१० ।  
 ७२; २,४,५ । ७३; २ । ७४, ३,९ [ वृषा अपां नेता ] ।  
 ७५, ५ । ७६; २,३,५ । ७७, १ । ७८, २ । ८०;  
 २,३,५ । ८१, १ । ८४, १,३,४ । ८५; १-५,६,७ ।  
 ८६, २,९,१३,१६,१९,२२,२३,३०,३५,४१ । ८७;  
 ४,८,९ । ८८, १ । ८९; ७ । ९०; १,५ । ९५; ५ ।  
 ९६; ३,८,९,१२,२१ । ९७; ५,६,१०,११,१४,२५,  
 ३२,३६,४१,४३,४४,४६,४९ । ९८, ६,१० । ९९,  
 ३,८ । १००, १,५,६ । १०१, ४,५,१६ । १०३, ५ ।  
 १०६, १-५,८ । १०७; १७ । १०८; १,२ [ वृषभः ]  
 १४,१५,१६ । १०९; १,२,१४,१८-२०,२२ । ११०;  
 ८,११ । १११; ३ । ११२; १४ । ११३; १-११ ।  
 ११४, १-४

उशानाः ८७,३

उषसः १०,५

ऋतावृधा ९,३ [ धावापृथिव्यौ ]

ऋषिजः सप्त ११४,३

गन्धर्वः ८३,४ [ सूर्यः ], ८५,१२ [ सूर्य ] ।

त्वष्टा ८१, ४;  
 दिव्यं जन्म ८५, ६. [ देवाः ]  
 दिशः (सप्त) ११४; ३  
 देवाः १; ४। ३, ९। ८, ५। ११; ७। २३, ६। २५;  
 १, ३। २८; १। २९; १। ३९, १। ४२; ४, ५।  
 ४४; १, ३, ५। ४५, २, ४। ४९, ४। ५१; ३। ६१;  
 १३। ६२, २०, २१। ६५; २, ३। ६८; १०। ६९;  
 १०। ७८, ४। ८५; ६ [ दिव्य जन्म ]। ८६; ३०।  
 ९०, ५। ९४, ५। ९७, १, ४-७, १२, २०, ४१, ४२।  
 ९८, १० [ सदानासद् देवः ]। १००, ६। १०१; ४।  
 १०३; ६। १०५, ३। १०६, ८, ६। १०७; १८, २२,  
 २३। १०९, ४, ५, १२, २१  
 धावापृथिव्यौ ९, ३ [ ऋतावृधा ]। ६८, १०। ६९, १०।  
 ८१, ५। ९७; ४२  
 द्यौः ९७; ५८। १०९, ५  
 ना दक्षिणावान् ९८; १०  
 पितर ९६; ११  
 पूषा ६१; ९। ८१, ४। १०९; १  
 पृथिवी ९७; ५८। १०९; ५  
 पृथिमातर ३४; ५ [ मरुत ]।  
 प्रजा १०९, ५  
 बृहस्पतिः ८१, ४। ८५; ६  
 ब्रह्मणस्पतिः ८३; १  
 भृगः ७; ८। १०; ५। ४४, ६। ६१; ९। ८१; ५।  
 १०८, १४। १०९; १।  
 मरुतः २५, १। ३३; ३। ३४, २, ५ [ पृथिमातरः ]।  
 ५१, ३। ६१; १२। ६४, २४। ६५; २०। ६६; २६  
 [ मरुत्तः ]। ७३; ७ [ रुद्रास ]। ८१, ४। ९०; ५। ९७, ४  
 [ मारुतं शर्ध ]।  
 महान् इन्द्रः ९०; ५। [ 'मस्तीन्द्रम्' द्वि० पादः; 'मत्सि  
 महामिन्द्रम्' चतुर्थः पादः ]  
 मित्र ६१; ९। ६४; २४। ७०, ८। ८१; ४। ८५,  
 ६। ९०; ५। ९७, ५८। १००; ५। १०४, ३।

१०७, १५। १०९; १  
 मित्रावरुणौ ७; ८। ९७, ४२, ४९  
 रुद्रासः ७३; ७। [ मरुत ]  
 रोदसी १८; ५, ६। ७४, २। ९७, २७  
 वरुण ३३; ३। ३४, २। ६१; ९, १२। ६४; २४।  
 ६५; २०। ७०; ८। ८१; ४। ८४, १। ८५; ६।  
 ९०; ५। ९७; ५८। १००, ५। १०४; ३। १०७;  
 १५  
 वाक् ७३, ७  
 वायुः ७; ७। ८, २। १३; १। २५, १, २। २७, २।  
 ३३, ३। ३४; २। ४४, ५। ४६; २। ६१, ८, ९।  
 ६३; ३, १०, २२। ६५, २०। ६७, १८। ७०, ८।  
 ८१; ४। ८४, १। ८५; ६। ९७, २५। ४२; ४९  
 विः ४८, ४ [ सुपर्णः ]  
 विधाता ८१, ५;  
 विश्वे देवाः १४, ३। १८, ३। ८०, ४। ८१, ५। ९२, ४।  
 ९८, ७। ९९, ४, ७। १०२, ५। १०९, २, १५  
 विष्णु ३३, ३। ३४, २। ५६, ४। ६३; ३। ६५; २०।  
 ९०, ५। १००; ६  
 वैश्वानरः ६१, १६  
 अद्वा १, ६ [ सूर्यस्य दुहिता ]।  
 सरस्वती ६७, ३२। ८१, ४  
 सविता ८१, ४। ११०, ६  
 मिन्धुः ९७, ५८  
 सुपर्णः [ वि ] ४८, ३-४  
 सूरः १०, ९  
 सूर्यः २, ६। ४, ५, ६। १७, ५। २७, ५। २८, ५। ६४, ३०।  
 ९७, ४१। ११४, ३ [ नानासूर्या ]।  
 सूर्यस्य दुहिता १, ६ [ अद्वा ]  
 सूर्यस्य रश्मयः ६१, ८  
 सूर्यात्मा ८३, ३, ४ [ गन्धर्व, पृथिः अग्रियः, उक्षा ]  
 ८५, १२ [ गन्धर्वः ]



## ऋग्वेदीय-सर्वानुक्रमण्यनुक्त-देवता-तद्विशेष-सूची ।

अग्निरक्षोहा [वृ० दे०] ७३, ७ सहस्रधारे वितते पवित्र० ।  
 अश्विनौ ९७, ४९ ( 'नर धीजवन. रथेष्ठाः= अश्विनौ )  
 अभि वायु वीत्यर्षा गृणानो३ ऽभि० ।  
 अभी नरं धीजवनं रथेष्ठामेभीन्द्रं वृषणं वज्रबाहुम् ॥  
 इन्द्रः १०, ५ आपानासो भगम् । सूर्यो वि तन्वते ॥  
 इन्द्रः ४०, २ गमदिन्द्रं वृषा सुतः ।  
 इन्द्रः ६१, २२ य आविथ इन्द्रं वृत्राय हन्तवे ।  
 इन्द्र ६६, २८ पुनान इन्दुरिन्द्रमा ।  
 इन्द्रः ६९, ६ नेन्द्रादते पवते धाम किं चन ।  
 इन्द्रः ६९, ९ एते सोमाः पवमानास इन्द्रम् ।  
 इन्द्र ७२, २ इन्द्रस्य सोमं जठरे यदादुहुः ।  
 इन्द्रः ७६, २ इन्द्रस्य शुष्ममीरयन् ।  
 इन्द्रः ७६, ३ इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणां ।  
 इन्द्रः ७६, ५ स इन्द्राय पवसे मत्सरिन्तमः ।  
 इन्द्रः ८४, ४ इन्द्रस्य हार्दि कलशेषु सीदति ।  
 इन्द्रः ८५, २ पिवेन्द्र सोममव नो मृधो जहि ।  
 इन्द्रः ८५, ३ आत्मेन्द्रस्य भवसि धासिरुत्तम ।  
 इन्द्रः ८७, ८ सोमस्य ते पवत इन्द्र धारा ।  
 इन्द्र ९७, १० इन्द्रे सोमः सह इन्वन् मदाय ।  
 इन्द्रः ९७, ११ इन्दुरिन्द्रस्य सख्य जुषाणः ।  
 इन्द्रः ९७, १२ अभि प्रियाणि पवते पुनानो० ।  
 इन्द्रः ९७, ४३ इन्द्रस्य त्वं तव वय सखायः ।  
 इन्द्रः ९७, ४१ अद्घादिन्द्रे पवमान भोजः ।  
 इन्द्रः १००, १ अभी नवन्ते अद्ग्रहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।  
 इन्द्रः १०१, ६ सखेन्द्रस्य दिवे दिवे ।  
 इन्द्रः १०९, २२ इन्दुरिन्द्राय तोशते नि तोशते ।  
 इन्द्रधाम ६९, ६ नेन्द्रादते पवते धाम किंचन ।  
 दक्षिणावान् ना ९८, १० नरे च दक्षिणावते ।  
 दिव्यं जन्म [द्विवाः] ८५, ६ स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने ।  
 देवाः ११, ७ देवेभ्यः अनुकामकृत् ।

देवाः २५, २ पवमान धिया कनिक्रदत् । धर्मणा विशा ॥  
 देवाः २५, ३ सं देवैः शोभते वृषा ।  
 देवाः २५, ६ आ पवस्व कवे । अर्कस्य... योनिमासदम् ॥  
 देवाः २८, २ सोमो देवेभ्य सुतः ।  
 देवाः ३९, १ यत्र देवा इति ब्रवन् ।  
 देवाः ४५, ४ इन्दुर्देवेषु पत्यते ।  
 देवाः ४९, ४ देवास शृणवन् हि कम् ।  
 देवा. ६५, २ देवो देवेभ्यस्परि ।  
 देवा ८६, ३० देवेभ्यः सोम पवमान पूयसे ।  
 देवाः ९७, ४१ अपां यद्ग्रहोऽवृणीत देवान् ।  
 देवा. १०९, २१ देवेभ्यस्त्वा वृथा पाजसे ।  
 देवास ७८, ४ यं देवासश्चक्रिरे पीतये मदम् ।  
 प्रजा १०९, ५ दिवे पृथिव्यै शं च प्रजायै ।  
 मरुत ५१, ३ पवमानस्य मरुतः ।  
 मित्रः ६१, ९ चारुर्मित्रं वरुणे च ।  
 वायुः १३, १ वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम् ।  
 वायुः २५, २ धर्मणा वायुमा विश ।  
 वायुः ४६, २ वायुं सोमा असृक्षत ।  
 वायु ६३, ३ मधुर्मा अस्तु वायवे ।  
 वायुः ६३, १० परीतो वायवे सुतम् ।  
 वायुः ६३, २२ वायुमा रोह धर्मणा ।  
 वायुः ६७, १८ शुक्रा वायुमसृक्षत ।  
 वायु ८४, १ अपसा इन्द्राय वरुणाय वायवे ।  
 विष्णुः ६३, ३ सुत इन्द्राय विष्णवे ।  
 विश्वं देवा. ९२, ४ तव स्ये सोम पवमान निष्ये विश्वे देवाः ।  
 सदनासद् देवः ९८, १० देवाय सदनासदे ।  
 सरस्वती ६७, ३२ तस्मै सरस्वती हुहे ।  
 सविता ११०, ६ वारं न देवः सविता ग्यूर्णुते ।  
 सूर्यः ९७, ४१ अजनयत् सूर्यं ज्योतिरिन्दुः ।  
 सूर्यः ६४, ३० पवस्व सूर्यो ह्यो ।



# दैवत-संहिता ।

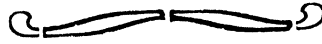
( ४ )

## मरुद्देवता ।



सम्पादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,  
स्वाध्याय-मण्डल, औंध ( जि० सातारा )



संवत् १९९९; शके १८६४; सन् १९४२

मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवलेकर, B. A.

स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, औध ( जि० सातारा )



# मरुत् देवता का परिचय ।



मरुतों के विषय में कोशोंमें (wind, an, breeze) वायु, हवा, पवन, (vital air or breath, life-wind) प्राण, (the god of wind) वायु का देवता, (a kind of plant) मरुचक, मरुत्तक, ग्रंथिपर्णी वनस्पति, (storm-gods) भांभी, प्रचंड वायु, भांभी का देवता इतने अर्थ दिये हैं ।

वैद्यक कोशों में 'मरुत्' अथवा मरुतः' का अर्थ 'घण्टापाटला, मरुचक वृक्ष, मरुत्तक वनस्पति, ग्रंथिपर्णी वनस्पति, पृक्का नामक साग (पिडिंग साग) [हिंदी भाषा में इस का नाम 'पुरी' है] इतने अर्थ मरुत् के लिखे हैं । 'मरवा' नामक सुगंध पौधा । मरुत् का यह अर्थ वैद्यकसंबंधी है ।

मरुत् का अर्थ विश्व में 'वायु' और शरीर में 'प्राण' है और ये वनस्पतियां प्राणधारण में सहायक होती है, प्राण का बल बढ़ाती हैं । इस तरह इनकी संगति होना संभव है ।

निघण्टु में 'मरुत्' शब्द का पाठ निम्नलिखित गणों में किया है—

१. 'मरुत्' शब्दका पाठ 'हिरण्य' नामोंमें (निघण्टु० १।२ में) किया है, अतः 'मरुत्' का अर्थ 'हिरण्य' अर्थात् 'सुवर्ण' है ।

२. 'मरुत्' पदका पाठ 'रूप' नामों में (निघण्टु० ३।७ में) किया है, इसलिये इस का अर्थ 'रूप' अथवा 'सुन्दरता' होता है ।

३. 'मरुत्' पद का पाठ 'ऋत्विक्' नामों में

१

(निघण्टु. ३।१८ में) किया है, इसलिये हम का अर्थ ऋत्विज् अथवा याजक होता है ।

४. 'मरुतः' पदका पाठ 'पद नामो' में (निघण्टु. ५।५) में किया है ।

निघण्टुकार 'मरुत्' के ये ही अर्थ देता है । निरुक्तकार भी यास्काचार्य मरुत् के अर्थ निम्नलिखित प्रकार करते हैं— अथातो मध्यमस्थाना देवगणा । तेषां मरुतः प्रथमगामिनो भवन्ति । मरुतो मितराविणो वा मितरोचनो वा महद् द्रवन्तीति वा ।

(निरु ११।२।१)

'मध्यम स्थान में जो देवगण हैं, उन में मरुत् पहिले आते हैं । मरुत् का अर्थ (मित-राविण) मित-भापी होता है, वे (मित-रोचनः) परिमित प्रकाश देते हैं, (महद्-द्रवन्ति) बड़ी गति से जाते हैं, अथवा बंड वेग से जलप्रवाह छोड़ देते हैं ।'

ये इस के अर्थ निरुक्तकार के दिये हैं । पर इस निरुक्त के वाक्य का इस से भिन्न पदच्छेद करने से निम्नलिखित अर्थ होता है—

मरुतोऽमितराविणो वाऽमितरोचना वा महद् रवन्तीति वा ।

(निरु० ११।२।१)

'मरुत् (अ-मित-राविण.) अपरिमित शब्द करनेवाले, (अ-मित-रोचनः) अपरिमित प्रकाश देनेवाले, (महद् रवन्ति) बड़ा शब्द करते हैं, वे मरुत् हैं ।'

पाठक यहां ये दो प्रकार के निरुक्त के एक ही वचन के परस्परविरोधी अर्थ देखेंगे, तो आश्चर्य से चकित होंगे । पर ऐसे ही टीकाकार मानते भाये हैं । इसलिये इस विषय

में हम कुछ नहीं कह सकते ।

इसी तरह और भी ' मरुत् ' पद के अर्थ किये गये हैं और हो सकते हैं-

१ मरुत् ( मा-रुद् ) = न रोनेवाले, अर्थात् युद्ध में न रोते हुए अपना कर्तव्य करनेवाले ।

२ मरुत् ( मा-रुत् ) = न बोलनेवाले, भ्रमभङ्ग न करनेवाले, बहुत न बोलनेवाले ।

३ मरुत् ( मर-उत् ) = मरनेतक उठकर खड़े हो कर युद्ध करनेवाले ।

इस तरह विविध अर्थ मरुत् शब्द के किये जाते हैं । अब इस ' मरुत् ' के अर्थ ब्राह्मणग्रंथों में कैसे किये हैं, देखिये-

मरुतो रश्मयः । ( ताण्ड्य ब्रा० १४।२।२९ )

ये ते मारुताः रश्मयस्ते । ( श० ब्रा० ९।३।१।२५ )

मरुतः . देवाः । ( श० ब्रा० ५।१।४।९, अमरकोश ३।३।५८ )

गणशो हि मरुतः । ( ताण्ड्य ब्रा० १९।१।४।२ )

मरुतो गणानां पतयः । ( तै० ब्रा० ३।१।१।४।२ )

सप्त हि मरुतो गणाः ( श० ब्रा० ५।१।३।१७ )

सप्त गणा वै मरुतः ( तै० ब्रा० १।६।२।३।२।७।२।२ )

सप्त सप्त हि मारुता गणाः । ( वा० य० १७।८०-८५; ३९।७; श० ब्रा० ९।३।१।२५ )

मारुत सप्तकपालः ( पुरोडाशः ) । ( ताण्ड्य ब्रा० २१।१।०।२३, श० ब्रा० २।५।१।१२; ५।३।१।६ )

मरुतो ह वै देवविशोऽन्तरिक्षभाजना ईश्वराः । ( कौ० ब्रा० ७।८ )

विशो वै मरुतो देवविशः । ( तां० ब्रा० २।५।१।१२ )

मरुतो वै देवानां विशः । ( ऐ० ब्रा० १।९; तां० ब्रा. ६।१०।१०; १८।१।१४ )

अहुतावो वै देवानां मरुतो विट् । ( श. ब्रा. ४।५।२।१६ )

विट् वै मरुतः ( तै. ब्रा. १।८।३।३; २।७।२।२ )

विशो मरुत् । ( श. ब्रा. २।५।२।६, २७; ४।३।३।६; ३।९।१।१७ )

मारुतो वैश्य । ( तै. ब्रा. २।७।२।२ )

कीनाशा आसन् मरुतः सुदानवः ।

( तै. ब्रा. २।४।८।७ )

पशवो वै मरुतः । ( ऐ. ब्रां. १।१९ )

अञ्जं वै मरुत । ( तै. १।७।३।५, १।७।५।२; १।७।७।३ )

प्राणा वै मारुता । ( श. ब्रा. ९।३।१७ )

मारुता वै स्रावाणा । ( तां० ब्रा. ९।९।१।४ )

मरुतो वै देवानामपराजितमायतनम् ।

( तै. ब्रा. १।४।६।२ )

अप्सु वै मरुतः श्रिताः । गो. ब्रा. उ. १।२२; कौ. ब्रा. ५।४ )

आपो वै मरुतः । ( ऐ. ब्रा. ६।३०; कौ. ब्रा. १२।८ )

मरुतो वै वर्षस्येक्षते । ( श. ब्रा. ९।१।२।५ )

इन्द्रस्य वै मरुतः । ( कौ. ब्रा. ५।४।५ )

मरुतो ह वै क्रीडिनो वृष्टं हनिष्यन्तमिन्द्रं

आगतं तमभितः परिचिक्रीडुर्महद्यन्तः ।

( श. ब्रा. २।५।३।२० )

इन्द्रस्य वै मरुतः क्रीडिनः । ( गो. ब्रा. उ. १।२३; कौ. ब्रा. ५।५ )

“ किरण मरुत् हैं, देव, समूह में रहनेवाले, सात मरुतों का एक गण है, मरुतों का पुरोडाश सात पात्रों में होता है, प्रजा ही मरुत् है, देवी प्रजा मरुत् है, वैश्य मरुतों से उत्पन्न है, उत्तम दान देनेवाले किसान मरुत् हैं, अन्न ही मरुत् हैं, प्राण मरुत् हैं, पथर मरुत् हैं। देवों का पराजयरहित स्थान मरुत हैं। मरुत् जल के आश्रय से रहते हैं, जल ही मरुत् हैं। मरुत् वृष्टि के स्वामी हैं। मरुत् इन्द्र के ( सैनिक ) हैं। जब इन्द्र वृत्र का हनन करता था, तब मरुतों ने खलते हुए उसका गौरव किया था। ”

मरुतों के सम्बन्ध में ब्राह्मणग्रंथों के वचनों का यह तात्पर्य है । ये अर्थ पाठक मरुतों के सूक्तों में देख सकते हैं ।

पाठकों की सुविधा के लिये यहां मरुतों के वर्णनों के मन्त्रोंमेंसे कुछ विशेष मंत्र उद्धृत करके रखते हैं, उन्हें पाठक देखें और महद्देवता के संघों के विज्ञान को जानें-

### मरुतों के शस्त्र ।

( कण्ठी चौरः । गायत्री । )

ये पृषतीभि ऋष्टिभिः साकं वाशीभिः अञ्जिभिः ।  
अजायन्त स्वभानवः ॥ २ ॥

इहैव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वान् ।  
नि यामञ्चित्रमृञ्जते ॥ ३ ॥ ( ऋ० १।३७ )

“ ( ये ) जो ( पृषतीभिः ) चित्रविचित्र ( ऋष्टिभिः )  
मालों के साथ ( वाशिभि अञ्जिभिः ) शकों और भूषणों  
के साथ ( स्वभानवः ) अपने ही प्रकाश से प्रकाशित  
होनेवाले मरुत् ( अजायन्त ) प्रकट हुए हैं । ( एषां  
कशा ) इनके चाबुक इनके ( हस्तेषु वदान् ) हाथों में  
आवाज करते हैं, ( य इह एव शृण्वे ) जो शब्द में  
यहीं सुनता हूँ, ( यामन् चित्रं नि ऋञ्जते ) संग्राम में  
विचित्र रीतिसे यह चाबुक मरुतोंको शोभित करता है । ”

इन मंत्रों में कहा है कि, मरुतों के पास भाले, कुल्हाड़  
कुठार, आभूषण और चाबुक हैं । इनसे ये मरुत् शोभा-  
वान् हुए हैं ।

( लोभरिः काण्वः । प्रगाथः = ककुप् + सतोवृद्धी । )  
समानमञ्ज्येषां विभ्राजन्ते रुक्मासो अधि बाहुषु ।  
द्विद्युत्सृष्टयः ॥ ११ ॥

त उग्रासो घृषण उग्रबाहवो नकिष्टन्षु येतिरे ।  
स्थिरा धन्वान्यायुधा रथेषु वोऽनीकेऽवधि  
श्रियः ॥ १२ ॥ ( ऋ० १।२० )

“ ( एषां अञ्जि समानं ) इन सबके आभूषण समान हैं ।  
इनके ( ऋष्टयः द्विद्युत्सृष्टयः ) भाले चमक रहे हैं, ( बाहुषु  
अधि रुक्मासः विभ्राजन्ते ) बाहुओं पर सोने के भूषण  
चमकते हैं । ( ते ) वे ( उग्रासः ) शूर वीर ( उग्रबाहवः )  
बड़े बाहुओंवाले ( घृषणाः ) सुख की वर्षा करनेवाले,  
( तन्षु ) अपने शरीर के विषय में ( न किः येतिरे ) कुछ  
भी यत्न नहीं करते । ( वः रथेषु ) आप के रथ पर  
( स्थिरा धन्वानि आयुधा ) स्थिर धनुष्य और शस्त्र हैं  
तथा ( अनीकेषु अधि श्रियः ) सैन्य की धरा में विजय  
निश्चित है । ”

इन मंत्रों में मरुतों के शस्त्रों और आभूषणों का वर्णन  
देखनेयोग्य है । भाले, बाहुभूषण और कण्ठी तो हैं, पर

इनके ( रथेषु स्थिरा धन्वानि आयुधा ) रथों में स्थिर  
धनुष्य और स्थिर आयुध हैं । यह वर्णन विशेष महत्त्व का  
है । स्थिर धनुष्य और चल धनुष्य ऐसे धनुष्यों के दो  
भेद हैं । चल धनुष्यों को ही धनुष्य कहते हैं, जो हाथों  
में लेकर इधर उधर वीर ले जा सकते हैं । प्रायः धनुष्यारी  
वीर इसी धनुष्य का उपयोग करते हैं । इसको हम ‘ चल  
धनुष्य, ’ ‘ धनुष्य ’ अथवा ‘ छोटा धनुष्य ’ कहेंगे ।

पर इस मंत्र में मरुतों के रथों पर ‘ स्थिर धनुष्य ’  
रहते हैं, ऐसा कहा है । रथों पर ध्वजदण्ड खड़ा रहता  
है, उस दण्ड के साथ ये धनुष्य बांधे रहते हैं, ये हिलाने  
नहीं जाते, एक ही स्थान पर पकड़े किये होते हैं । ये बड़े  
प्रचण्ड धनुष्य होते हैं और इन पर से जो बाण फेंके जाते  
हैं, वे मामूली बाणों से दूगुने तिगुने बड़े भाले जैसे होते  
हैं । ये धनुष्य भी बहुत ही बड़े होते हैं और इनकी रस्वी  
दोनों हाथों से खींची जाती है । इसलिये इनको रथ में ही  
सदा रहनेवाले ‘ स्थिर धनुष्य ’ कहा है । मरुतों के रथों  
की यह विशेषता है । रथों में ‘ चल धनुष्य ’ भी रहते  
हैं और स्थिर भी होते हैं । इसी तरह अन्यान्य आयुध  
भी रथ में स्थिर रहते हैं ।

ये रथ चार घोड़ों से खींचे जानेवाले बड़े मजबूत होत  
हैं । मरुतों के रथों को घोड़े या हरिनियाँ जोती जाती  
थीं, ऐसा मंत्रों में लिखा है और ये घोड़े या हरिनियाँ  
जिनके पीठपर श्वेत धन्वे होते हैं, ऐसी हैं, ऐसा वर्णन इन  
मंत्रों में पाठक देख सकते हैं ।

ये मरुत् ( तन्षु न किः येतिरे ) अपने शरीरों की  
बिलकुल पर्वा न करते हुए युद्ध करते हैं । यह वर्णन भी  
वहाँ इन मंत्रों में देखनेयोग्य है ।

( इयावाश्व आत्रेयः । पुर उणिः । )

ये अञ्जिषु ये वाशीषु स्वभानवः ।

स्त्रक्षु रुक्मेषु खादिषु ।

ध्याया रथेषु धन्वस्व ॥ ४ ॥

शार्धं शार्धं च एषां व्रातं व्रातं गणं गणं सुशरितभिः ।

अनुक्रामेम धीतिभिः ॥ ११ ॥ ( ऋ० ५।५३ )

“ हे मरुतो ! ( ये स्वभानवः ) जो आप के प्रकाश  
( अञ्जिषु ) अलंकारों पर, ( ये वाशीषु ) जो हथियारों  
पर, ( स्त्रक्षु ) मालाओं पर, ( रुक्मेषु ) छाती के भूषणों

पर, ( खादिषु ) पांशुओं के भूषणों पर ( रथेषु ) रथों पर और ( धन्वसु ) धनुष्यों पर ( आया ) आश्रय पाये हैं । ”

“ हे मरुतो ( वः शर्धं शर्धं ) आप के बल, ( एषां व्रात व्रात ) इनके समुदाय, ( गणं गणं ) और सघ की ( सुशस्तिभिः ) प्रशंसा के साथ और ( धीतिभिः ) कर्मों के साथ अनुसरण करते हैं । ”

अर्थात् मरुतों के हाथों में शस्त्र है, गले में मालाएं हैं, कमर में हथियार, तलवार, जबिया आदि हैं, छाती पर आभूषण है, पावों और हाथों में कटक आदि जेवर हैं, रथों में धनुष्य है । इन शस्त्रों और भूषणों से ये वीर युक्त हैं ।

आगे के मंत्र में ‘ हम ( अनुक्रामेम ) आप का अनुसरण करते हैं, ’ ऐसा कहा है । मरुतों के जो बल से होने वाले कर्म हैं, समूह से और संघ से होने वाले कर्म हैं, उन सघ का अनुसरण हम करते हैं, अर्थात् उनके समूहों के समान हम अपने संघ बनाते हैं, उनके गणों के समान हम अपने गण बनाते हैं, उनके पराक्रमों के समान हम पराक्रम करते हैं, उनकी बुद्धियों के समान हम अपनी बुद्धि के कर्म करते हैं । मरुतों जैसे हम पराक्रम करते हैं और वैसे हम स्वयं शूर वीर बनने का यत्न करते हैं ।

मरुतों के संघों का यहाँ वर्णन है और आगे भी वर्णन बहुत ही है । मरुत् देवता संघ से रहनेवाले हैं । ये भान के संघ हैं, देखिये—

○ ○ ○ ○ ○ ○ ○  
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○  
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○  
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○  
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○  
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○  
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○

यहाँ सात सैनिकों की एक पंक्ति ऐसी सात पंक्तियाँ हैं । यहाँ ये  $7 \times 7 = 49$  मरुत् होते हैं । न्यूनसे न्यून सातों की एक पंक्ति है, ऐसी सात पंक्तियों का ‘ मरुत् गण ’ अथवा ‘ मरुतों का सघ ’ होता है । इस तरह 49 मरुतों का एक संघ, अथवा सेना का छोटे से छोटा विभाग होता है ।

ऐसे 49 विभागों की मरुतों की सेना को ‘ वाहिनी ’

कहते हैं । इस वाहिनी में  $49 \times 49 = 2401$  मरुत् होंगे । इस तरह यह संख्या सातों के घात से, अथवा 49 के घात से बढ़ती है । छोटी से छोटी मरुत्वीरों की संख्या 7 होगी, उस से बढ़ कर 49 होगी, उस के बाद 2401 होगी और इस के आगे 7 अथवा 49 के घात से जितनी सेना रखनी होगी, उतनी सेना हो सकती है । इस की वर्यना पाठक कर सकते हैं ।

ये मरुत् पैदल ( पदाती ), रथी ( रथमें बैठे ), घुड़सवार ( अश्वी ) और विमानों में चढ़ कर ऐसे विभिन्न पथकों में रहते हैं । पर किसी भी पथक में क्यों न हों, इनकी संख्या 7 और 49 के प्रमाण से रहेगी । मरुतों की सेना का विचार करने के समय यह तत्त्व जानना आवश्यक है ।

( नोधा गौतमः । जगती । )

युवानो रुद्रा अजरा अभोग्नो वधक्षुरभिगावः  
पर्वता इव । दृढहा चिद्विश्वा भुवनानि पार्थिवा  
प्रच्यावयन्ति दिव्यानि मज्जना ॥ ३ ॥

चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे व्यञ्जते वक्षःसु रुक्मौ अधि  
येतिरे श्भे । अंसेष्वेषां नि मिमिक्षुर्ऋष्टयः  
साकं जश्चिरे स्वधया दिवो नरः ॥ ४ ॥

( ऋ. १।६४ )

‘ ( रुद्राः ) शत्रु को रूकानेवाले मरुत् ( युवानः ) जवान ( अजरा ) वृद्धावस्था को न प्राप्त हुए, ( अभोग्नः ) देवों को हविर्भाग न देनेवालों का वध करनेवाले, ( अभिगावः ) शत्रुप्रतिहत गतिवान् अर्थात् जिन की गति को कोई रोक नहीं सकता, ऐसे मरुत् ( पर्वता इव वधक्षुः ) पर्वतों के समान सुदृढ होकर इष्ट सुख उपासकों को देने की इच्छा करते हैं । ये ( मज्जना ) अपने सामर्थ्य से ( विश्वा पार्थिवा भुवना ) सब पार्थिव भुवनों और ( दृढहा दिव्यानि ) सुदृढ दिव्य भुवनों को भी ( प्रच्यावयन्ति ) हिला देते हैं । अर्थात् इनके विरोध में कोई टहर नहीं सकता । ’

‘ ये मरुत् ( चित्रैः अञ्जिभिः ) विचित्र भूषणों से ( वपुषे व्यञ्जते ) अपने शरीरों को भूषित करते हैं । ( श्भे ) शोभा के लिये ( रुक्मान् वक्षःसु ) सोने की मालाएं छाती पर ( अधि येतिरे ) धारण करते हैं । ( एषां अंसेषु ) इनके कंधों पर ( ऋष्टयः निमिमिक्षुः ) भाले चमक रहे

हैं । ये ( नरः ) नेता बीर मरुत् ( स्वधया साकं ) अपनी धारणशक्तिके साथ ( दिवः जज्ञिरे ) युलोकसे जन्मे हैं । ”

मरुतों की सेना में तरुण ही भरती होते हैं । वृद्धों ( अजराः ) का इन में स्थान नहीं है । सब ( युवानः ) जवान ही होते हैं । इनकी गतिको कोई रोक नहीं सकता । ये सैनिक जहां जाते हैं, वहां के प्रबल शत्रुओं को भी अपने स्थान से उखाड़ देते हैं । ये स्वयं जहां रहते हैं, वहां पर्वतों के समान स्थिर रहते हैं ।

इनके शरीरों पर सोने की मालाएँ रहती हैं, छाती पर विविध भूषण पहने होते हैं, बाहुओंपर सोनेके आभूषण रहते हैं, तीक्ष्ण भाले इन के हाथों में रहते हैं, अन्यान्य तलवार आदि तीक्ष्ण शस्त्र सदा इन के पास रहते हैं । ये दिव्य नेता लोग दिव्य और शुभ कार्य के लिये सदा तैयार रहते हैं, कभी पीछे नहीं हटते ।

अपने शरीरों की पर्वाह न करते हुए ये लड़ते हैं और जो अपना अन्न यज्ञ में नहीं अर्पण करते, उन स्वार्थी लोगों को ये यथायोग दण्ड देते हैं । इसलिये इनसे सब डरते हैं और ये अपने यज्ञमार्ग में दत्तचित्त रहते हैं ।

( गोतमो राहूगणः । प्रस्तारपंक्तिः । )

आ विद्युन्मद्भिर्मरुत स्वर्के रथेभिर्यात ऋष्टि-  
मद्भिरश्वपणैः । आ वर्षिष्ठया न इषा वयो न  
पसता सुमायाः ॥ १ ॥ ( ऋ० १।८८ )

“ हे ( सु-मायाः ) उत्तम कुशल कर्मों को करनेवाले मरुतो ! ( विद्युन्मद्भिः ) बिजली से चलनेवाले, ( स्वर्केः ) तेजस्वी ( अश्व-पणैः ) घोड़ों के समान पखवाले ( ऋष्टि-मद्भिः ) उत्तम शस्त्रों से युक्त ( रथेभिः ) रथों से ( आयातं ) आओ, ( वयो न ) पक्षियों के समान ( पासता ) उड़ते हुए आओ और साथ ( वर्षिष्ठया इषा न ) उत्तम अन्नों के साथ ( आ ) आओ । ”

यहां भी पक्षियों के समान आकाशमार्ग से उड़ते हुए मरुत् आते हैं और उन के विमानों में भरपूर अन्न, पर्याप्त शस्त्र होते हैं और गमन के लिये अश्व के समान पक्ष रहते हैं, ऐसा कहा है ।

मरुतों के ये रथ निःसन्देह विमान ही हैं । क्योंकि ये ( वयः न ) पक्षियों के समान आकाश में उड़ कर आते

हैं और ( अश्व-पणैः ) अश्वशक्तिवाले पंख इनको लगे होते हैं । ( सुमायाः ) उत्तम कारीगरी से ये बने हैं, तथा ( विद्युन्मद्भिः ) बिजली की शक्तिसे ये चलाये जाते हैं । पक्षी के समान आकाश में उड़ना, बिजली के साधन से गति मिलना, अश्वशक्ति से पक्षों का काम होना, आदि वर्णन इनका विमान होना ही निश्चित करता है ।

मरुतों के ये विमान ही हैं । मरुतों की सेना के पास घोड़े, रथ तथा विमान भी होते हैं, यह बात इस वर्णन से सिद्ध होती है । इन मरुतोंके विमानों में ( ऋष्टिमद्भिः ) पर्याप्त शस्त्र तथा पर्याप्त ( इषा ) अन्न होता है । ये वर्णन देखने से मरुतों के विमानों की कल्पना आ सकती है ।

( श्यावाश्व आश्रय । जगती । )

वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणः ।  
सुधन्वान इपुमन्तो निषगिणः ।  
स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातर  
स्वायुधा मरुतो याथना शुभम् ॥ २ ॥  
ऋष्टयो वो मरुतो असयोरधि  
सह ओजो बाहोर्वा बलं हितम् ।  
नृम्णा शीर्षस्वायुधा रथेषु वो  
विश्वा वः श्रीरधि तनूषु पिपिशे ॥ ६ ॥  
( ऋ० ५।५७ )

“ हे मरुतो ! ( वाशीमन्त ) वरचियां धारण करनेवाले, ( ऋष्टिमन्तः ) भाले बतनेवाले, ( सुधन्वानः ) उत्तम धनुष्यों से युक्त, ( निषगिणः ) तर्कम धारण करनेवाले, ( सुरथाः ) उत्तम रथ जिनके पास हैं तथा ( स्वश्वाः ) उत्तम घोड़ोंवाले, ( स्वायुधाः ) उत्तम आयुधों का उपयोग करनेवाले ( पृश्निमातरः ) मातृभूमि के उपासक आप ( मनीषिणः स्थः ) बुद्धिमान् हैं । हे मरुतो ! आप ( शुभं याथन ) सबके हित करनेवाले मार्गसे चलो । ”

“ हे मरुतो ! ( व असयोः अधि ) आप के कंधों पर ( ऋष्टयः ) भाले हैं, ( व बाहो ) आप के बाहुओं में ( सहः ओजः बलं हितं ) बल, ओज और सामर्थ्य रखा है, ( शीर्षसु नृम्णा ) सिरोंपर सुन्दर माफे हैं, ( वः रथेषु आयुधा ) आप के रथों पर आयुध हैं, ( वः तनूषु ) आप के शरीरों पर ( विश्वा श्रीः ) सब शोभा ( अधि





वीर मरुत् ।

पिपिणे ) विराजमान हुई है । ”

इन मंत्रों में मरुतों के शरीरों पर कैसे शस्त्र और कपड़े रहते हैं, यह बताया है । बरछे, भाले, धनुष्य, बाण, तर्कस, तलवार आदि शस्त्र इनके पास हैं । सिर पर साफे अथवा मुकुट हैं । इनके रथ, घोड़े आदि सब उत्तम हैं । शरीर सुडौल है । बाहुओं में प्रचण्ड बल है और ये ( पृथिव्यात् ) मातृभूमि की उपासना स्वकर्म से करते रहते हैं, मातृभूमि के लिये आत्मसमर्पण करते रहते हैं ।

( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् । )

अंसेषु मरुतः खाद्यो वो

वक्षःसु रुक्मा उपशिश्रियाणा ।

वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचाना

अनु स्वधामाय भैयच्छमानाः ॥१३॥ ( क्र० ७ । ५६ )

“ हे ( मरुतः ) मरुतो ! आप के ( अंसेषु ) कंधों पर आभूषण हैं, ( वक्षःसु रुक्मा ) छाती पर मालाएं ( उपशिश्रियाणाः ) शोभती हैं, ( वृष्टिभिः ) वृष्टि के साथ चमकती ( विद्युतः न ) बिजली के समान ( विरुचानाः ) आप चमक रहे हैं, ( आयुधैः ) और हथियारों के साथ ( स्वधां अनुयच्छमानाः ) भक्त को अनुकूलता के साथ आप देते हैं । ”

यहां भी मरुतों के हथियारों और भूषणों का वर्णन है ।

( श्यावाश्व भाष्येयः । जगती । )

अंसेषु व ऋष्टयः पत्सु खाद्यो वक्षःसु रुक्मा  
मरुतो रथे शुभः । अग्निभ्राजसो विद्युतो  
गभस्त्यो शिप्राः शीर्षसु चितता हिरण्ययीः ११  
( क्र० ५ । ५४ )

“ हे मरुतो ! ( वः अंसेषु ऋष्टयः ) आप के कंधों पर भाले हैं, ( पत्सु खाद्यः ) पारों में भूषण हैं, ( वक्षःसु रुक्मा ) छाती पर मालाएं हैं और ( रथे शुभः ) रथ में सब शुभ साधन हैं । ( अग्निभ्राजसः ) अग्नि के समान तेजस्वी ( विद्युतः गभस्त्यो ) चमकदार और किरणों से युक्त हैं और आप के ( शीर्षसु ) सिर पर ( हिरण्ययी चितता शिप्रा ) सोने के फैले हुए साके हैं ।

यहां भी मरुतों के शस्त्रों और अलंकारों का वर्णन है । इस समय तक मरुतों के शस्त्रों, अलंकारों और वस्त्रों का वर्णन आया है, इससे विदित होता है कि—

-सिर में—

( १ ) शीर्षसु नृम्णा ( क्र. ५ । ५७ । ६ ); शिप्राः  
शीर्षसु हिरण्ययीः ( क्र. ८ । ७ । २५ ), हिरण्यशिप्राः  
( क्र. २ । ३४-३ ),

सिर पर साके या मुकुट धारण किये हैं । ये सोनेके हैं, अर्थात् साके होंगे, तो कलाबत् के होंगे ।

कंधों पर—

( २ ) अंसेषु ऋष्टयः ( क्र. १-६३-४; ५-५४-११ );  
ऋष्टयो... अंसयोरधि ( क्र. ५-५७-६ ); ऋष्टिमन्तः  
( क्र. ५-५७-२ ); अंसेषु खाद्यः ( क्र. ७-५६-१३ );

अंसेषु प्रपथेषु खाद्यः ( १-१६६-५ ) ; ऋष्टिविद्युतः ( ऋ. १-१६८-५ ; ५-५२-१३ ) ; भ्राजद्-ऋष्टयः ( ऋ. १-८७-३ ) .

मरुतों के कंधों पर भाले रहते हैं, इन कंधों पर बाहु-भूषण होते हैं । ये भूषण भी बड़े चमकवाले होते हैं और भाले भी बड़े तेजस्वी और चमकनेवाले होते हैं । ऋष्टि-शस्त्र भाले जैसा लंबा होता है, भाले के फाल विविध प्रकार के होते हैं । बड़े तीक्ष्ण नोकवाले, अनेक मुख-वाले, कांटोंवाले तथा अन्यान्य छेदक नोकवाले होते हैं और इस कारण इनके नाम भी बहुत होते हैं । ' खादी ' नामक एक आभूषण है, जो पावों में तथा बाहुओं में रम्ये जाते हैं ।

### हाथों में—

( ३ ) हस्तेषु कशा घदान् ( ऋ. १।३।७।३ ) हाथों में चाबूक जो आवाज करता है । चाबूक का आवाज सिटकने से होता है, यह पाठक जान सकते हैं ।

### छाती पर—

( ४ ) वक्षःसु रुक्माँ ( ऋ. १-६४-४ ; ७-५६-१३, ५-५४ ), रुक्मासः अधि बाहुषु ( ऋ. ८-२०-११ ), तनूषु शम्ना दधिरे विरुक्मतः ( ऋ. १-८५-३ )

छाती पर और बाहुओं पर तथा शरीरों पर रुक्म नामक सुवर्ण के भूषण धारण करते हैं । रुक्म मोहरों जैसे भूषण होते हैं, जिनकी माला बना कर कण्ठ में छाती पर रखते हैं और अन्यान्य अवयवों पर उस स्थान के योग्य अलंकार किया होता है ।

इस तरह का वर्णन मंत्रों में देखनेयोग्य है ।

### बल से विजय ।

( कण्वो घौरः । सतोबृहती । )

स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळ् उत प्रतिष्कभे । युष्माकमस्तु तविधी पनीयसीमा मर्त्यस्व मायिनः ॥ २ ॥ ( ऋ. १-३९ )

“ ( वः आयुधा स्थिरा सन्तु ) आप के शस्त्र सुदृढ हों, ( पराणुदे ) शत्रु को दूर भगाने के लिये और ( प्रति-स्कभे ) शत्रु का प्रतिकार करने के लिये आप के शस्त्र ( वीळ् ) सामर्थ्यवान् अर्थात् शत्रु के शस्त्रों से अधिक प्रभावी हों ।

( युष्माकं तविधी ) आप का बल ( पनीयसी अस्तु ) प्रशसनीय रहे, वैसा ( मायिनः मर्त्यस्य मा ) आप के कपटी शत्रु का बल न हो, अर्थात् शत्रु से आप का बल अधिक रहे । ”

विजय तभी होगा, जब शत्रु से अपने साधन अधिक प्रभावी होंगे । अपने शस्त्रास्त्र शत्रु से प्रभाव में, परिणाम में, सख्या में, तथा अन्य सब प्रकारों से अधिक अच्छे रहेंगे, तभी विजय होगा, इसलिये विजय की इच्छा करनेवाले वीर अपना ऐसा उत्तम प्रबन्ध रखें ।

### जनता की सेवा ।

( नोधा गौतमः । जगती । )

रोदसी आ वदता गणश्रियो नृषाचः शूराः शवसाऽहिमन्यवः ।

आ वन्धुरेष्वमतिर्न दर्शता विद्युन्न तस्थौ मरुतो रथेषु वः ॥ ९ ॥ ( ऋ. १।६४ )

“ हे ( गणश्रियः ) समुदाय की शोभा से युक्त मरुतो ! हे ( नृ-पाचः शूराः ) मानवोंकी सेवा करनेवाले शूर, ( शवसा अ-हि-मन्यवः ) बल के कारण प्रबल कोप से युक्त मरुतो ! ( रोदसी ) सुलोक और पृथ्वी में ( आवदत ) अपनी घोषणा करो । हे मरुतो ! ( व रथेषु ) आप के रथों में ( वन्धुरेषु ) बैठकों में ( दर्शता अमति न ) दर्शनीय रूप के समान अथवा ( विद्युत् न ) बिजली के समान ( आ तस्थौ ) आप का तेजस्वी रूप ठहरा है । ”

अर्थात् आप जनता की सेवा करनेवाले स्वयंसेवक वीर जब रथों में बैठकर जाते हैं, उस समय बड़ी शोभा दीखती है ।

### साम्यवाद ।

( श्यावाश्व आत्रेयः । जगती । )

अज्येष्ठास अकनिष्ठास उद्भिदोऽमध्यमासो महसा विवावृधुः । सुजातासो जनुषा पृश्रि-मातरो दिवो मर्या आ नो अच्छा जिगातन ॥६॥

( ऋ. ५-५९ )

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास पते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय । युधा पिता स्वपा रुद्र पषां सुदुघा पृश्रिः सुदिना मरुद्भ्यः ॥ ५ ॥ ( ऋ० १-६० )

“ मरुतां मं कोई श्रष्ट नहीं और कोई कनिष्ठ नहीं और कोई मध्यम भी नहीं । ये सब समान हैं । ये अपनी शक्ति से बढ़ते हैं । ये ( सुजातासः ) कुलीन हैं और ( पृथ्विमातरः ) भूमि को माता माननेवाले हैं । ये दिव्य नरवीर हैं । ”

“ ये अपने आप को ( भ्रातरः ) भाई कहते हैं और ( सौभगाय स वावृधुः ) सौभाग्य के लिये मिलकर यत्न करते हैं । इनकी माता ( पृथ्विः सुदुघा ) मातृभूमि इनके लिये उत्तम पोषण करनेवाली है । ”

इन मंत्रों में मरुतां का साम्यवाद अच्छी तरह कहा है । ये अपने आपको भाई मानते हैं । यह भी साम्यवादियों के लिये योग्य ही है ।

ये सैनिक हैं । सेना में कोई लडका नहीं भरनी होता, कोई वृद्ध भी नहीं भरनी होता । प्रायः सब तरुण ही भरती होते हैं । इसलिये न इन में कोई बड़ा है और न छोटा है, सब समान ही रहते हैं । ये सभी मातृभूमि के लिये प्राणों का अर्पण करनेवाले होनेके कारण सब समान-तया सन्मान्य होते हैं ।

इस समय तक के वर्णन से मरुत् ये सैनिक हैं, यह बात पाठकों के ध्यान में आ चुकी होगी । सैनिकों के पास शस्त्र होते हैं, उनके शरीर सुडाल होते हैं, सब प्रायः समान ऊँचाई के होने के कारण समान होते हैं । सब के सिरों पर साँफे, मुकुट या शिरस्त्राण समान होते हैं, सब का रहनासहना समान होता है । सब भौतिक उक्त कारण अपने आप को भाई कहते हैं । सब मातृभूमि के लिये प्राणों का अर्पण करते हैं, अपने शरीरों की पर्वाह न करते हुए, देश के लिये लड़ते हैं, सब ही शत्रु को रलानेवाले होते हैं, सब सैनिक सांघिक जीवन में ही रहते हैं, संघ के बिना ये कभी रहते नहीं, कतार में चलते हैं, सब के शस्त्र समान होते हैं । यह सब वर्णन सैनिकों का है और मरुतां का भी है । अतः पाठक मरुतां को सैनिक समझे और मंत्रों का आशय जान लें ।

**मरुतां की शोभा ।**

( गीतमो राहूगणः । जगती । )

प्र ये शुभ्रमन्ते जनयो न सप्तयो  
यामन् रुद्रस्य सूनवः सुदंससः ।

रोदसी हि मरुतश्चक्रिरे वृधे  
मदन्ति वीरा विदथेषु घृष्वय ॥ १ ॥

गोमातरो यच्छुभयन्ते अंजिभिः  
तनूषु शुभ्रा दधिरे विरुक्मत ।  
बाधन्ते विश्वं अभिमातिनं अप  
वर्तमान्येषामनु रीयते घृतम् ॥ ३ ॥

वि ये भ्राजन्ते सुमखास ऋष्टिभिः  
प्रच्यावयन्तो अज्युता चिदोजसा ।  
मनोजुधो यन्मरुतो रथेषा  
वृषमातासः पृषतीरयुग्ध्वम् ॥ ४ ॥

( ऋ० १-८५ )

“ ( ये मरुतः ) जो मरुत् ( जनयः न ) स्त्रियोंके समान ( यामन् ) बाहर जाने के समय ( प्र शुभ्रमन्ते ) विशेष अलंकार धारण करते हैं । ये मरुत् ( रुद्रस्य सूनवः ) रुद्र के अर्थात् शत्रु को रलानेवाले वीर के पुत्र ( सु-दंससः ) उत्तम कर्म करनेवाले और ( सप्तयः ) शीघ्रगामी हैं । मरुतां ने ( रोदसी ) सुलोक और पृथ्वी को ( वृधे ) अपनी वृद्धि के लिये साधन ( चक्रिरे ) बनाया, ये ( घृष्वयः ) शत्रु का घर्षण करनेवाले ( वीराः ) वीर ( विदथेषु ) युद्धों में ( मदन्ति ) आनन्दित होते हैं । ”

“ ( गो-मातर ) गौको अथवा पृथ्वीको माता मानने-वाले मरुत् ( यत् ) जब ( अंजिभिः शुभ्रमन्ते ) अलंकारों से शोभित होते हैं, तब ( तनूषु ) वे अपने शरीरों पर ( शुभ्राः विरुक्मत ) तेजस्वी और चमकनेवाले शस्त्र ( दधिरे ) धारण करते हैं । वे ( विश्वं अभिमातिनं ) सब शत्रु को ( अप बाधन्ते ) पराभूत करते हैं, प्रतिबन्ध करते हैं । ( एषां वर्तमानि ) इनके गमन के मार्ग पर ( घृतं अनु रीयते ) घी आदि भोग्य पदार्थ ( अनुरीयते ) अनुकूलता के साथ मिलते हैं । ”

“ ( ये सुमखासः ) जो उत्तम यज्ञ करनेवाले मरुत् ( ऋष्टिभिः वि भ्राजन्ते ) अपने भालों से शोभते हैं । जो ( ओजसा ) अपने बल के साथ ( अज्युता ) न हिलने-वालों को भी ( प्रच्यावयन्ते चित् ) निश्चयपूर्वक हिला देते हैं । हे मरुतां ! ( यत् ) जब आप अपने ( रथेषु पृषतीः ) रथों को विचित्र रंगोंवाली हरिणों या घोड़ियों

को जोतते हैं तब ( वृष-व्राताराः ) वीर्यवान् समूह करनेवाले आप ( मनो-जुवः ) मन जैसे वेगवान् होते हैं ।”

इन मंत्रों में कहा है कि मरुत् वीर स्त्रियों के समान अलंकारोंसे सजते हैं, शत्रुका धर्षण करते हैं, युद्धों से आनंदित होते हैं, मातृभूमि को माता मानते हैं, भाले-बर्चियों को धारण करते हैं, सब शत्रुओं को स्थानभ्रष्ट करते हैं, समूहोंमें रहनेसे इनका बल बढ़ा रहता है। शत्रु पर ये समूह से ही हमला करते हैं ।

मरुत् वीर स्त्रियों के समान अपने आप को सजाते हैं। पाठक यहां सैनिकों की सजावट की ओर देखें। सैनिक अपनी वेष्टभूषा, शस्त्र, बूटसूट, साफे आदि सब जितना सुंदर रखा जा सकता है, उतना सुंदर, स्वच्छ और सुढाल रखते हैं। सैनिक जितने अच्छे सजते हैं और जितना सजावट का खयाल करते हैं, उतना कोई और नहीं करता। इस सजावट में ही इनका प्रभाव रहता है। इसलिये यह सजावट घुरी नहीं है।

यहां के ‘ गो-मातरः, पृश्नि-मातरः ’ ये शब्द मातृ-भूमि और गौ को माता मानने का भाव बताते हैं। गोरक्षा करना इस तरह मरुतों का कर्तव्य दीखता है। गोरक्षण, मातृभूमिरक्षण, स्वभाषारक्षण आदि भाव ‘ गोमातरः ’ में स्पष्ट दीखते हैं।

( भगस्यो मैत्रावरुणः । जगती । )

विश्वानि भद्रा मरुतो रथेषु वो

मिथस्पृध्यैव तविषाण्याहिता ।

अंसेषु वः प्रपथेषु ह्याद्यो-

ऽक्षो वक्षक्रा समया वि वावृते ॥ ९ ॥

( ऋ १-१६६ )

“ हे मरुतों ! ( वः रथेषु ) आप के रथों में ( विश्वानि भद्रा ) सब कल्याणकारक पदार्थ रहते हैं। ( मिथ-स्पृध्या इष ) परस्पर स्पर्धा के ( तविषाणि आहिता ) सब शस्त्र रखे हैं। ( अंसेषु ) बाहुओं में तथा ( वः प्रपथेषु ) आप के पांवों में ( ह्याद्यः ) आभूषण रहते हैं और आप के चक्र का ( वक्षः ) अक्ष ( चक्रा समया ) चक्रों के समीप साथ साथ ( वि वावृते ) रहता है ।”

मरुतों के रथों पर भरपूर अस्त्रादि पदार्थ और शस्त्र रहते हैं ।

( गोतमो राहूगण । जगती । )

शूरा इवेद् युयुधषो न जग्मयः ।

श्रवस्यथो न पृतनासु येतिरे ।

भयन्ते विश्वा भुवना मरुद्भ्यो

राजान इव त्वेषसंदृशो नर ॥ ८ ॥

( ऋ १।८५ )

“ ( शूरा इव इत् ) ये शूरों के समान ( जग्मय युयुधयः न ) शस्त्र पर दौड़नेवाले योद्धाओं के समान ( श्रवस्यथः न ) यश की इच्छा करनेवालों के समान ( पृतनासु येतिरे ) लडाइयों में युद्ध करते हैं। ( मरुद्भ्यः ) मरुतों से ( विश्वा भुवनानि ) सब भुवन ( भयन्ते ) डरते हैं। ये मरुत् ( राजानः इव ) राजाओं के समान ( त्वेष-संदृशः ) क्रोधित दीखनेवाले ( नर ) ये नेता हैं ।”

युद्ध में मरुतों को आनन्द होता है। ये ऐसा पराक्रम करते हैं कि, जिससे सब विश्व इनसे डरता है। ऐसे पराक्रमी ये वीर हैं ।

( भगस्यो मैत्रावरुण । जगती । )

को षोऽन्तर्मरुतो ऋष्टिविद्युतो

रेजति त्मना हन्वेव जिह्वया ।

धन्वच्युत इषां न यामनि

पुरुप्रैषा अहन्यो नैतशः ॥ ( ऋ. १-१६८ )

“ हे ( ऋष्टिविद्युतः ) विद्युत् का शस्त्र बर्तनेवाले मरुतो !

( व अन्तः कः ) आप के अन्दर कौन ( रेजति ) प्रेरणा करता है ? अथवा ( जिह्वया हन्वा इव ) जिह्वा से हनु को प्रेरणा मिलती है, बैसी ( त्मना ) स्वयं ही तुम प्रेरित होते हो ? अथवा तुम्हारे अन्दर रहकर कोई दूसरा तुम्हें प्रेरणा देता है ? ( इषां यामनि ) अर्कों की प्राप्ति के लिये ( धन्वच्युतः न ) अन्तरिक्ष से चूनेवाले उदक की जैसी इच्छा करते हैं अथवा ( अ-हन्यः एतशः न ) शिक्षित घोड़े के समान ( पुरु-प्रैषाः ) बहुत दान देनेवाला याजक तुम्हें बुलाता है ।”

( भगस्यो मैत्रावरुणः । गायत्री । )

आरे सा वः सुदानवो मरुत ऋञ्जनी शरुः

आरे अस्मा यमस्यथ ॥ ( ऋ. १।१२।२ )

“ हे ( सुदानवः मरुतः ) हे दानशील मरुतो ! ( वः मा ऋञ्जनी शरुः ) आप का वह तेजस्वी भाला ( आरे )

हम से दूर रहे, तथा! ( य अस्यथ ) जिस को तुम फेंकते हो, वह ( अश्मा ) पत्थर भी हमसे ( आरे ) दूर रहे । ”

अर्थात् तुम्हारा शस्त्र और तुम्हारा पत्थर शत्रु पर गिरे, हम उस से दूर रहे । यहां पत्थर भी एक मरुतों का शस्त्र कहा है । ये पत्थर हाथ से, पांव से और रस्सी से फेंके जाते हैं । हाथ से आगे, पांव से पीछे और ‘क्षेपणी’ नामक पत्थर फेंकनेवाली रस्सी से बड़ी दूरी पर फेंका जाता है । इस रस्सी का ‘गोफन’ ( क्षेपणी ) बोलते हैं, इस से आध सें वजन का पत्थर सौ गज पर ऐसे वेगसे फेंका जाता है कि, जिससे शत्रुका हाथ भी टूट जाय ।

### प्रतिबंधरहित गति !

( श्यावाश्व आत्रयः । जगती । )

न पर्वता न नद्यो वरन्त वो  
यत्राचिध्वं मरुतो गरुच्छथेदु तत् ।  
उत द्यावापृथिवी याथना परि

शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥७॥ ( ऋ. ५।५५ )

“ हे मरुतो ! ( न पर्वता ) न पर्वत और ( न नद्यः ) न नदियां ( वः वरन्त ) आप के मार्ग को प्रतिबन्ध कर सकते हैं, ( यत्र आचिध्वं ) जहां जाना चाहते हैं, ( तत् गच्छथ इत् उ ) वहां तुम पहुंचते ही हो । तुम युलोक भार पृथ्वी पर पहुंचते हो और ( शुभ यातां ) शुभ स्थान को पहुंचनेवाले आप के रथ आगे बढ़ते हैं । ”

यहां लिखा है कि, नदी और पर्वत से मरुत् वीरों को किसी तरह का प्रतिबन्ध नहीं होता है । वे जहां जहां पहुंचना चाहते हैं, पहुंचते ही हैं और वहां यश भी कमाने हैं ।

बीच में पर्वत आ जाय, नदियां आ जायँ, बीच में जलाशय हों अथवा रेतीले मैदान हों, इन सब प्रतिबंधों को ये गिनते नहीं । इन के रथ ऐसे होते हैं कि, वे जहां चाहें वहां जाते और शत्रु को घेर लेते हैं ।

जहां मरुत् जाना चाहते हैं, वहां वे पहुंचते हैं और जिस शत्रु को पराजित करना चाहते हैं, उस को पराजित कर छोड़ते हैं ।

इनकी गति को रोकनेवाला पृथ्वी, अन्तरिक्ष और युलोक में कोई नहीं है । शत्रु पर विजय प्राप्त करना हो, तो ऐसा

ही सामर्थ्य प्राप्त करना चाहिये । अपना हरएक शस्त्र शत्रुसे अधिक प्रभावी रहना चाहिये, हरएक रथ शत्रु से अधिक सामर्थ्यशाली रहना चाहिये और अपना हरएक वीर शत्रुसे शक्ति, बुद्धि और युक्ति में श्रेष्ठ रहना चाहिये । तब विजय मिलता है । यह बात मरुतोंके वर्णनमें पाठक देख सकते हैं ।

( कण्वो घौर । सतोबृहती । )

असाम्योजो विभृथा सुदानवोऽसामि धृतयः  
शवः । ऋषिद्विषे मरुतः परिमन्यव इषुं न  
सृजत द्विषम् ॥ ( ऋ. १-३९-१० )

“ हे ( सुदानव ) उत्तम दान देनेवाले मरुतो ! ( अ-सामि ओजः विभृथः ) अतुल बल आप धारण करते हैं । हे ( धृतय ) शत्रुको कंपानेवाले मरुतो ! ( असामि शवः ) अतुल सामर्थ्य आप के पास है । ( ऋषिद्विषे ) ऋषियों का द्वेष करनेवाले ( परिमन्यवे ) कोपकारी शत्रु के वध के लिये ( द्विष ) विनाशक शस्त्र ( इषुं न ) बाण के समान ( सृजत ) छोड़ दो ।

मरुतों का बल बहुत है, उस की तुलना किसी के साथ नहीं हो सकती । ज्ञानियों का द्वेष करनेवाले का नाश करने के लिये आप ऐसा शस्त्र छोड़िए कि, जिस से उस शत्रु का पूर्ण नाश हो जावे ।

### धूम्रास्त्रप्रयोग ।

( ब्रह्मा । त्रिष्टुप । )

असौ या सेना मरुतः परेषां  
अस्मानैत्योजसा स्पर्धमाना ।

तां विध्यत तमसापव्रतेन

यथैषामन्यो अन्यं न जानात् ॥६॥ ( अथर्व० ३।२ )

“ हे मरुतो ! यह जो ( परेषां ) शत्रुओंकी सेना है, जो ( अस्मान् ) हम पर स्पर्धा करती हुई, ( ओजसा एति ) वेग से आ रही है, ( तां ) उस सेना को ( अपव्रतेन तमसा ) घबराहट करनेवाले तमसास्त्र से ( विध्यत ) वेध लो ( यथा ) जिस से इन में से कोई किसी को ( न जानात् ) न जान सके । ”

यहां अंधेरा उत्पन्न करनेवाला धूम्रास्त्र का वर्णन है । इस से एक दूसरे को जान नहीं सकता ।

यहां ‘अपव्रत तम’ नामक अस्त्र का प्रयोग शत्रु की

सेना के ऊपर करने को कहा है । ' अपव्रत ' का अर्थ यह है कि, जिस से कर्तव्य और अकर्तव्य का ज्ञान नहीं होता, शत्रुसैन्य घबरा जाता है और जो नहीं करना चाहिये वही करने लगता है । इस घबराहट के कारण शत्रु की सेना का निश्चय से पराभव होता है ।

' तमस् ' नामक अस्त्र अन्धेरा उत्पन्न करनेवाला है । यह धूँवें जैसा ही होगा । आजकल इस को ' गैस ' ( Gas ) कहते हैं । धूँव का पर्दा जैसा खड़ा करते हैं और उस की ओट में रह कर शत्रु को सताते हैं ।

' तमस् ' और ' अपव्रत तमस् ' ये दो विभिन्न अस्त्र होंगे । अधिक घबराहट करनेवाला तम ही अपव्रत कहलानेयोग्य हो सकता है । यह मरुतों का अस्त्र यहाँ कहा है । पूर्वोक्त अन्यान्य आयुधों के साथ पाठक इस का भी विचार करे ।

( गुप्तमद शौनकः । जगती । )

उक्षन्ते अश्वान् अर्यां इवाजिषु  
नदस्य कर्णैस्तुरयन्त आशुभिः ।  
हिरण्यशिप्रा मरुतो दविध्वतः  
पृक्षं याय पृषतीभिः समन्यत्रः ॥३॥  
इन्धन्वभिर्धेनुभी रण्डाधुभिः  
अध्वस्मभिः पथिभिर्भ्राजष्टयः ।  
आ हंसासो न स्वसराणि गन्तन  
मधोर्मदाय मरुतः समन्यवः ॥५॥  
ते क्षोणीभिररुणेभिर्नाञ्जिभी  
रुद्रा ऋतस्य सद्नेषु वावृधुः ।  
निमेघमाना अत्येन पाजसा  
सुश्वद्रं वर्णं दधिरे सुपेशसम् ॥३॥

( ऋ २-३४ )

" हे ( हिरण्यशिप्रा ) सोने के मुकुट धारण करनेवाले (दविद्युतः) शत्रुको कंपानेवाले मरुतों ! (आजिषु) सग्राओं में (अश्वान् अश्वान्) चपल घोड़ों को (उक्षन्ते इव) जैसे स्नान कराते हैं, वैसे जो स्नान करते हैं और (नदस्य कर्णः आशुभिः) दिनदिनानेवाले घोड़ों के कानों के समान चपल घोड़ोंके साथ (तुरयन्त) दौडते हैं, आप (समन्यवः) उत्साह वाले (पृषतीभिः) बिंदुवाली हरिणियों के साथ (पृक्षं याय) हविष्यास के पास, यज्ञ के पास, जाओ । "

" हे ( भ्राजद्-ऋष्टयः ) चमकनेवाले भालों को धारण करनेवाले ( समन्यवः ) उत्साह से परिपूर्ण मरुतो ! ( इन्धन्वभिः ) प्रदीप्त, तेजस्वी ( रण्डाधुभिः ) भरपूर दुरधाशयवाली ( धेनुभिः ) धेनुओं के साथ रहते हुए ( अध्वस्मभिः पथिभिः ) अविनाशी मार्गों से ( हंसासः ) हंसों के समान ( मधो मदाय ) मधुर सोमरसपान के आनन्द के लिये ( स्वसराणि गन्तन ) यज्ञस्थानों के पास जाओ । "

" ( रुद्राः ) शत्रुको हलानेवाले मरुत् ( ऋतस्य सद्ने ) यज्ञ के मण्डप में ( क्षोणीभिः अरुणेभिः न अञ्जिभिः ) षण्ड करनेवाले, चमकनेवाले अलकारोंके समान ( वावृधुः ) बढते हैं । ( निमेघमाना ) मघके समान ( अत्येन पाजसा ) गमनशील बल से युक्त ( सुश्वद्र वर्णं सुपेशसम् ) चमकनेवाला आनन्ददायक वर्ण ( दधिरे ) धारण करते हैं । "

## विवरमार्ग ।

( श्यावाश्र आश्रेयः । अनुष्टुप् । १७ पंक्तिः । )

आपथयो विपथयोऽन्तस्पथा अनुपथाः ।  
एतेभिर्मह्यं नामभि यज्ञ विष्टार ओहते ॥१०॥  
य ऋष्वा ऋष्टिविद्युतः कवयः सन्ति वेधसः ।  
तमृषे मारुतं गणं नमस्या रमया गिरा ॥१३॥  
सप्त ते सप्ता शाकिन एकमेका शता ददुः ।  
यमनायामधि श्रुत उद्राधो गव्यं मृजे निराधो  
अद्भ्यं मृजे ॥ १७ ॥ ( ऋ, ५।५२ )

" ( आपथयः ) सीधे मार्गसे, ( विपथयः ) प्रतिकूल मार्ग से, ( अन्तस्पथा ) अन्दर के गुप्त मार्ग के, विचर के मार्ग से, ( अनुपथा ) साथवाले अनुकूल मार्ग से अर्थात् ( एतेभिः नामभिः ) इन सब प्रसिद्ध मार्गसे ( विस्तारः ) यज्ञों का विस्तार करते हुए ( यज्ञं ओहते ) यज्ञ के पास आते हैं । "

" जो ( ऋष्वा ) दर्शनीय ( ऋष्टिविद्युतः ) शस्त्रों से विशेष प्रकाशित, ( कवयः ) जानी और ( वेधसः ) वेध करनेवाले ( सन्ति ) हैं, हे ऋषे ! ( त मारुतं गणं ) उन मरुतों के गणों को ( नमस्या गिरा ) नमन करने की वाणी से ( रमया ) आनन्दित कर । "

“ ( ते शाकिनः सप्त सप्ताः ) वे समर्थ सातसातों के संघ ( एक एकां क्षाता ददुः ) एक एक सौ दान देते रहे । ( यमुनायां अभिश्रुत ) यमुना के तीर पर यह प्रसिद्ध है कि, ( गन्धं राघः उद्मृजे ) गौओं का धन दान में दिया और ( अश्व राघः निमृजे ) घोड़ोंका धन दानमें दिया । ”

इस में चार मार्गों का वर्णन है । मरुत् चारों मार्गों से यज्ञ के प्रति आते हैं, इन मार्गोंमें अन्तस्पथ अर्थात् भूमि के अन्दर का विवरमार्ग भी है । ये मरुत् गौओं और घोड़ों का दान देते हैं, इत्यादि बातें इन मंत्रों से मननीय है ।

### मरुतों का सामर्थ्य ।

( श्यावाश्व भात्रेयः । जगती । )

विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो  
वातत्विषो मरुतः पर्वतच्युतः ।  
अब्दया चिन्मुहुरा हादुनीवृतः  
स्तनयदमा रभसा उदोजसः ॥ ३ ॥

न स जीयते मरुतो न हन्यते  
न स्नेधति न व्यथते न रिष्यति ।  
नास्य राय उपदस्यन्ति नोतय  
ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ ॥ ७ ॥

नियुत्वतो ग्रामजितो यथा नरो-  
ऽर्यमणो न मरुतः कबन्धिनः ।  
पिन्वन्त्युत्सं यदिनासो अस्वरन्  
व्युन्दन्ति पृथिवी मध्वे अन्धसा ॥ ८ ॥

( ऋ. ५-५४ )

“ ये ( नरः मरुत ) नेता मरुत् ( विद्युन्महसः ) बिजुली के समान महातेजस्वी, ( अश्म-दिद्यवः ) उल्का के समान प्रकाशमान, ( वात-त्विषः ) वायु के समान वेगवान्, ( पर्वतच्युतः ) पर्वतों को भी स्थान से अष्ट करनेवाले, ( अब्दया चित् मुहुः भा ) पानी देने की अर्थात् वृष्टि की इच्छा वारवार करनेवाले, ( हादुनीवृतः ) बिजुली को प्रेरित करनेवाले, ( स्तनयद्-अमाः ) गर्जना में भी जिन की शक्ति प्रकट होती है, ऐसे ये मरुत् ( रभसा उत् उोजसः ) वेग और सामर्थ्य से युक्त हैं । ”

“हे मरुतो ! जिस (ऋषिं) ऋषिको ( वा यं राजानं वा ) अभवा जिस राजा को तुम (सुषूदथ) प्रेरित करने हो, वह

( न सः जीयते ) पराजित नहीं होता, ( न हन्यते ) न मारा जाता, ( न स्नेधति ) न पीछे हटता है, ( न व्यथते ) पीड़ित नहीं होता और ( न रिष्यति ) नाश को प्राप्त नहीं होता । ( अस्य रायः न उपदस्यन्ति ) इसके धन क्षीण नहीं होते, ( न ऊतय ) न उसकी रक्षाएं कम होती हैं । ”

“ ( यथा ग्रामजित नरः ) जैसे नगर को जीतनेवाले नेतालोग गर्व से चलते हैं, वैसे ( नियुत्वतः ) घोड़ों पर सवार हुए ये मरुत् ( अर्यमणः कबन्धिनः ) सूर्य के समान तेजस्वी होकर जल देने लगते हैं । ( इनासः ) ये स्वामी ( यत् अस्वरन् ) जब शब्द करते हुए ( उत्सं पिन्वन्ति ) हाँज को जल से भर देते हैं, तब ( मध्वः अन्धसा ) मधुर जल से ( पृथिवीं व्युन्दन्ति ) पृथ्वी को भर देते हैं । ”

मरुत् विजयी वीर हैं । सर्वत्र ( क-बन्धिनः ) ये पानी का प्रबन्ध सुरक्षित रखते हैं । ( मध्वः अन्धसा ) मधुर अन्न का प्रबन्ध भी सुरक्षित रखते हैं । अन्न और जल का प्रबन्ध सुरक्षित रखने के कारण इनका विजय होता है । सैनिकों का विजय पेट की पूर्ति से हाँता है । पाठक विजय का यह कारण अवश्य देखें और अपने सैनिकों के प्रबन्ध में ऐसी सुव्यवस्था रखें ।

( कण्वो धौरः । बृहती । )

परा ह यत् स्थिरं हथ नरो वर्तयथा गुरु ।  
वि याथन वनिनः पृथिव्याः व्याशा पर्वतानाम् ॥  
( ऋ. १।३९ )

“ हे ( नरः ) शूर नेताओ ! ( यत् स्थिरं परा हथ ) जो स्थावर पदार्थ है, उसको तुम तोड़ देते हो, और ( गुरु वर्तयथाः ) जो बड़ा भारी पदार्थ हो, उसको तुम हिलाते हो, ( पृथिव्याः वनिनः वि याथन ) पृथ्वी पर के बड़े वृक्षों को तुम उखाड़ देते हो और ( पर्वतानां आशाः वि ) पर्वतों को फाड़ते हो । ”

शूर सैनिक स्थिर पदार्थों को अपने मार्ग से हटा देते हैं, बड़े भारी पदार्थों को तोड़कर चूर्ण करते हैं, वनों में बड़े बड़े वृक्षों को तोड़कर वहाँ उत्तम मार्ग बनाते हैं और पर्वतों को भी फाड़कर बीच में से मार्ग निकालते हैं । अर्थात् शूरों को किसी का प्रतिबन्ध नहीं होता । शूरों को सब मार्ग खुले रहते हैं ।

( कण्वो घौरः । सतोवृहती । )

नहि वः शत्रुर्विविदे अधि घवि न भूम्यां  
रिशादसः । युष्माकमस्तु तविषी तनायजा  
रुद्रासो नू चिदाधृषे ॥ ४ ॥ ( ऋ. १।३९ )

“ हे ( रिशादसः ) शत्रु का नाश करनेवाले मरुतो !  
( अधि घवि ) शुलोक में ( व शत्रुः न विविदे ) आप  
के लिये कोई शत्रु नहीं है, ( न भूम्यां ) पृथ्वी पर  
भी आप के लिये कोई शत्रु नहीं है । हे ( रुद्रासः )  
शत्रु को रूकानेवाले मरुतो ! ( युष्माकं युजा ) आप की  
संघटना से ( आधृषे ) शत्रु पर आक्रमण करने के लिये  
( तना तविषी अस्तु ) विस्तृत सामर्थ्य आपके पास हो । ”

आप के सामने ठहरनेवाला कोई शत्रु नहीं है और  
आप का परस्पर आपस का संगठन ऐसा है कि, आप  
शत्रु पर हमला करते हैं और शत्रु को रूका देते हैं ।

( पुनर्वसुः काण्वः । गायत्री । )

वि वृत्रं पर्वशो ययुः वि पर्वतां अराजिनः ।  
चक्राणा वृष्णि पौंस्यम् ॥ २३ ॥

अनु त्रितस्य युध्यतः शुभ्रमावधुत क्रतुम् ।  
अम्बिन्द्रं वृत्रतूर्ये ॥ २४ ॥

विद्युद्धस्ता अभिघवः शिप्राः शीर्षन् हिरण्ययीः ।  
शुभ्रा व्यञ्जत श्रिये ॥ २५ ॥

आ नो मखस्य दावनेऽश्वे हिरण्यपाणिभिः ।  
देवास उप गन्तन ॥ २६ ॥

सहो षु णो वज्रहस्तैः कण्वासो अग्नि मरुद्भिः ।  
स्तुषे हिरण्यवाशिभिः ॥ ३२ ॥ ( ऋ. ८-७ )

“( अ-राजिनः ) राजाको न माननेवाले, अराजक ( वृष्णि  
पौंस्यं चक्राणा ) बल के साथ पराक्रम करनेवाले मरुत्  
( वृत्रं पर्वशः विययुः ) वृत्र को जोड़जोड़ में काटते रहे ॥  
( युध्यतः त्रितस्य ) युद्ध करनेवाले त्रितका ( शुभ्रं अनु  
भावन् ) बल बढ़ाया ( उत क्रतुं ) और कर्म की शक्ति भी  
बढ़ायी और ( वृत्रतूर्ये इन्द्रं अनु ) वृत्र के युद्ध में इन्द्र की  
रक्षा की ॥ ( अभिघवः विद्युत्-हस्ताः ) तेजस्वी बिजली  
जैसा शस्त्र हाथ में लेकर खड़े हुए मरुत् ( हिरण्ययीः  
शिप्राः ) सोनेके शिरच्छाण ( शीर्षन् ) सिर पर धारण करते  
हैं, ( शुभ्राः श्रिये व्यञ्जते ) जो ( शुभ्राः ) शोभासे चमकते  
हैं । हे ( देवामः ) देव मरुतो ! ( नः मखस्य दावने )

हमारे यज्ञ के प्रति तुम ( हिरण्यपाणिभिः अश्वैः ) सोने के  
आभूषणों से युक्त घोड़ों के साथ ( उप आगन्तन ) आओ ।  
( वज्र हस्तैः ) वज्र हाथ में धारण करनेवाले ( हिरण्य-  
वाशिभिः ) सोने की कुठार हाथ में लिये ( मरुद्भिः )  
मरुतों के साथ अग्नि की भी ( सहः ) बल के लिये  
( कण्वामः ) हे जानियो ! ( स्तुषे ) प्रशंसा करो । ”

इन मंत्रों में मरुतों के शस्त्र बिजुली जैसे चमकनेवाले,  
सोनेकी नकशी किये कुठार और भाले हैं । मरुतोंके सिर पर  
सोने के मुकुट हैं, श्वेत पोषाख किये हैं । और ये शक्ति के  
कामों के लिये प्रसिद्ध हैं, ऐसा वर्णन है ।

सिर पर सोने के मुकुट, अथवा जरतारी के साफे हैं,  
सोने के भूषण हाथों में धारण किये हैं, सोने की नकशी  
के कुठार हाथों में धारण किये हैं । यह वर्णन मरुतों का  
है । इन्द्र के ये सैनिक हैं ।

( सोभरिः काण्वः । सतो वृहती । )

गीर्भिर्वाणो अज्यते सोभराणां रथे कोशे  
हिरण्यये । गोबन्धवः सुजातास इषे भुजे  
महांतो नः स्परसे नु ॥ ( ऋ. ८-२०-८ )

“( हिरण्यये रथे कोशे ) सोनेके रथके बीचमें ( सोभ-  
रीणां गीर्भि ) सोभरीयों की प्रशंसा के साथ ( वाणः  
अज्यते ) वाणनामक वाद्य बजने लगा । ( गो-बन्धवः )  
गौर्भों के भाई ( सुजातासः ) उत्तम जन्मे हुए, उत्तम  
कुल में जन्म जिन का हुआ है । अतः ( महान्त ) बड़े  
मरुत् ( नः इषे भुजे ) हमारे अश्व का भोग करने के लिये  
( स्परसे नु ) शीघ्र आ जाय । ”

यहां मरुतों को गौर्भों के भाई कहा है । गौर्भों के साथ  
इन का इतना सम्बन्ध है । इन की बहिने गौर्व हैं । ये  
मरुत् अपने रथ में वाण नामक वाद्य बजाते हैं । वाण वाद्य  
१०० तारों का है और छोटे ढोल जैसा चमड़े का भी  
होता है ।

औषधी ज्ञान ।

( सोभरिः काण्वः । सतोवृहती । )

विश्वं पश्यन्तो विभृथा तनुष्वा तेना नो अधि  
वोचत । क्षमा रपो मरुत् आतुरस्य न इष्कर्ता  
विन्दुतं पुनः ॥ ( ऋ. ८।२०।२६ )

“ हे मरुतो ! ( विश्वं पश्यन्तः ) सब कुछ जाननेवाले



आप ( न तनूषु ) हमारे शरीरों के पास ( बिभृथः ) औषध ले आओ और ( तेन अधि वोचन ) उस से हमें नीरोग होने का उपदेश करो । ( नः भानुरस्य ) हमारे में जो रोगी हो, उस के पाससे ( रपः क्षमा ) दोष दूर करो और ( विन्दुत पुनः इष्कर्ता ) टूटेफूटे या जखमी को फिर निर्दोष करो । ”

मरुत् सैनिक है, पर वे औषधविद्या को जानते है, जखमियों की सेवा करना उन को मालूम है, पहिले से नीरोग रहने के लिये जो सावधानी रखनी चाहिये, वह भी उन को मालूम है । मैनिकों को दवाइयों का थोडा ज्ञान चाहिये ।

( गीतमो राङ्गणः । जगती । )

उपह्वरेषु यदचिध्वं ययि  
वय इव मरुतः केनचित् पथा ।  
श्रोतन्ति कोशा उप वो रथेषु  
घृतमक्षता मधुवर्णमर्चते ॥२॥  
प्रैषामज्मेषु विथुरेव रेजते  
भूमिर्यामेषु यद् यजुजते शुभे ।  
ते क्रीळयो धनयो भ्राजदृष्टयः  
स्वयं महिस्व पनयन्त धृतय ॥३॥ ( १८७ )

“ हे ( मरुतः ) मरुतो ! ( वय इव ) पक्षियोंके समान ( केन चित् पथा ) जिम्न चाहे उस मार्ग से ( उपह्वरेषु ) आकाश में ( यत् ) जब ( ययि अचिध्वं ) गमनमार्ग निश्चित करते हैं, तब ( वः रथेषु ) आप के रथों में ( कोशा उप आ श्रोतन्ति ) खजाने खले होते है और आप ( अर्चते ) उपासक के लिये ( मधुवर्ण घृत ) शुद्ध घी ( उक्षता ) सीचते हैं । ”

“ ( यत् ह ) जब मरुत् ( शुभे यजते ) शोभाके लिये रथ जोतते है, तब ( प्यां ) इन के ( अज्मेषु यामेषु ) घुडदौड के गमनों से ( भूमिः ) भूमि ( विथुरा इव ) पति से वियुक्त स्त्री के समान ( रेजते ) कांपती रहती है । ये मरुत् ( क्रीळयः ) खेलो में प्रवीण ( धुनयः ) हिलाने-वाले ( भ्राजत्-ऋष्टय ) चमकनेवाले भाले धारण करनेवाले ( धृतय ) चलानेवाले ( स्वय महिस्व ) अपना ही महस्व स्वयं ( पनयन्त ) व्यवहार से बताते है । ”

इन मंत्रों के वर्णन से स्पष्ट है कि, आकाश में जिस चाहे उस मार्ग से जानेवाले मरुतों के विमान पक्षियों जैसे

भ्रमण करते है । तथा इन के वाहन जब भूमि पर से घूमने लगते हैं, तब भूमि कांपने लगती है । यह वर्णन बडी गाडियों का है और निःसंदेह विमानों का है, पक्षी जैसे जो आकाश में घूमते हैं । ये निःसंदेह विमान ही हैं ।

वीरता और धन ।

( गृत्समदः शौनकः । जगती । )

तं व शर्धं मारुतं सुमन्युर्गिरा  
उपब्रुवे नमसा दैव्यं जनम् ।  
यथा रयिं सर्ववीरं नशामहा  
अपत्य-साचं श्रुत्यं दिवे दिवे ॥ ( ऋ २-३०-११ )  
“ हे मरुतो ! मैं ( सुमन्युः ) सुख की इच्छा करनेवाला उपासक ( त वः मारुतं शर्धं ) उस आप के मरुत्समूह-रूपी बल को तथा ( दैव्यं जनं ) दिव्य जनों को ( नमसा गिरा ) प्रणाम से और वाणी से ( उप ब्रुवे ) प्रशंसित करते है । हमें ( दिवे दिवे ) प्रतिदिन ( सर्ववीरं ) सब वीरों से युक्त ( अपत्यसाच ) संतानों से युक्त और ( श्रुत्यं ) यश से युक्त ( रयिं ) धन ( नशामहै ) प्राप्त हो । ”

धन ऐसा चाहिये कि, जिस के साथ हमें वीरता, संतान और यश मिले । वीरता के बिना धन मिलना असंभव है और सुरक्षित रखना भी असंभवही है ।

मरुतों के विशेषणों का विचार ।

अब मरुत्सूक्तों में जो विशेषण प्रयुक्त हुए हैं, उन का विचार करते हैं । यहां विचारार्थ थोडेसे ही विशेषण लिये हैं और इन के स्थान के निर्देश पाठक सूची में देख सकते हैं, इस लिये यहां दिये नहीं हैं—

भाई मरुत् ।

ये मरुत् आपस में समान भाई हैं, न इन में ( अउये-ष्टासः ) कोई बडा है, न इनमें कोई ( अमध्यमालः ) मध्यम है और न इनमें कोई ( अकनिष्ठासः ) कनिष्ठ है, ( अचरमा ) नीच भी इन में कोई नहीं है, तथापि गुणों से ये ( ज्येष्ठासः ) श्रेष्ठ हैं, और ( वृद्धाः ) गुणों से ये बडे भी हैं । ये ( अन्-आनताः ) किसीके सामने नमते भी नहीं, उग्र वृत्ति से रहते हैं, ये ( सु-जातासः ) कुलीन हैं और ये सब मरुत् आपसमें ( भ्रातरः ) भाई भाई हैं । ये आपस में परस्पर भाई ही अपने आप को कहते हैं ।

### जनता के सेवक ।

मरुत् ( नृ-साक्ष. ) जनता की सेवा करनेवाले है, ( नरः, वीरः ) ये नेता है, वीर हैं, जनता की ( आतार. ) रक्षा करनेवाले है । ये ( मानुषासः, विश्वकृष्टयः ) मनुष्य है, सब मानव ही मरुत् है । ये ( अद्वेषः ) किसी का द्वेष नहीं करते, ( अमवन्त ) ये बलवान् होते हैं । ये ( घोरवर्षसः ) बड़े शरीरवाले होते हैं और ( पूत-दक्षसः ) पवित्र कार्यों में अपने बल का अर्पण करनेवाले होते हैं ।

ये ( प्रक्रीडिनः ) विशेष खेलनेवाले अथवा खेलों में प्रेम रखनेवाले है, ( अदाभ्याः ) ये कभी दूषे नहीं जाते और ( अधृष्टासः ) कोई इनको डर भी नहीं बता सकता ।

ये मरुत् ( अच्युता ओजसा प्रच्याघयंतः ) स्वयं अपने स्थान से भ्रष्ट नहीं होते, पर अपनी शक्ति से सब शत्रुओं को स्थानभ्रष्ट करते हैं ।

### गोसेवा करनेवाले ।

मरुत् ( गो-मातरः, पृश्निमातरः, पृश्नेः पुत्राः ) गौ को माता माननेवाले, भूमि को माता माननेवाले, मानुषी की सेवा करनेवाले है, ( गो-बंधवः ) गौ के भाई जैसे ये बर्तते हैं ।

### घोड़े पास रखते हैं ।

मरुत् वीर ( अश्वयुजः ) घोड़ों को अपने रथों को जोतनेवाले होने है, तथा ( स्वश्वाः ) उत्तम घोड़ोंवाले, ( अरुणाश्वाः रोहितः ) लाल रंगोंवाले घोड़ों को पास रखनेवाले, ( पृषतीः ) धन्वोवाले घोड़ोंसे युक्त, ( आशवः ) खरा से दौड़नेवाले घोड़ों से युक्त, ( सुयमाः ) शिक्षित घोड़ोंवाले ऐसे मरुत् के घोड़ों का वर्णन हैं । इसलिये मरुत् को ( अनर्वाण. ) कहा है, यहां घोड़ों को अपने पास न रखनेवाले ऐसा अर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि पूर्वोक्त विशेषणों से यह अर्थ विरुद्ध है । इसलिये ( अन्-अर्वाणः ) का अर्थ हीन भावों को अपने पास न रखनेवाले, सगडालु वृत्तियों से रहित आदि अर्थ इस शब्द का करना योग्य है ।

### मरुत् का रथ ।

मरुत् का रथ ( हिरण्यरथा, हिरण्यया ) सोने का है, रथ के पहिये भी ( हिरण्यचक्राः ) सोने के हैं । ये रथ बड़े ( सुरथाः ) सुंदर है, ( सुखाः ) अन्दर बठने से सुख होता है, ( विद्युन्मन्तः ) बिजली की युक्ति इनके रथों में है । ( ऋष्टिमंतः ) शस्त्र इनके रथों पर होते हैं । ( अश्वपर्णाः ) घोड़े ही इनके रथों के पंख हैं, अर्थात् अश्वशक्ति से ही ये रथ दौड़ते हैं । इस तरह इन के रथों का वर्णन है ।

### शत्रुनाश ।

मरुत् के पास तेजस्वी शस्त्रास्त्र भरपूर है, इम के वर्णन पूर्वस्थान में आ गये हैं । इन शस्त्रों से ये ( रिशादसः ) शत्रु का नाश करते हैं और जनता की रक्षा करते हैं ।

मरुत् के विशेषणों का विचार करने से इस तरह ज्ञान होता है ।

### स्वरूप ।

मरुत् का स्वरूप अध्यात्म में ' प्राण ' है, अधिदैवत में ' वायु ' है और अधिभूत अर्थात् मानवों में ' वीर ' है । अतः मरुत् के मंत्रों में ' प्राण, वीर, और वायु ' के वर्णन हम देखते हैं ।

प्रचण्ड वायु, आंधी, बादल, मेघ, भोले, वृष्टि आदि का वर्णन मरुत् के सूक्तों में है, पर वह इस ढंग से है कि, जिससे वीरों का ही वह है, ऐसा प्रतीत होता है । अध्यात्म, अधिभूत और अधिदैवत में मिलकर सामान्यतः मरुत् का वर्णन इन सूक्तों में है, इसी लिये ' प्राण, वीर और वायु ' का वर्णन इन सूक्तों में सूक्ष्म दृष्टि से प्रतीत होता है । पाठक इस तरह इन सूक्तों का विचार करे और वीरभाव का लाभ प्राप्त करे ।

आंध, ( जि. सातारा )  
२४।५।४२

} श्री० दा० सातवलेकर,  
अध्यक्ष-स्वाध्याय-मण्डल ।



# मरुद्देवता की विषयसूची ।

विषय	पृष्ठ
१ मरुद्देवता का परिचय ।	३
२ मरुतों के शस्त्र ।	५
३ बल से विजय ।	९
४ जनता की सेवा ।	९
५ साम्यवाद ।	९
६ मरुतों की शोभा ।	१०
७ प्रतिबन्धरहित गति ।	१२
८ धूम्रास्त्र-प्रयोग ।	१२
९ विवरमार्ग ।	१३
१० मरुतों का सामर्थ्य ।	१४
११ औषधि-ज्ञान ।	१५
१२ वीरता और धन ।	१६
१३ मरुतों का रथ ।	१७
१४ स्वरूप ।	१७

## मरुद्देवता-मन्त्रों की ऋषिसूची ।

ऋषिः	मन्त्रमंख्या	पृष्ठम्
मधुच्छन्दा वैश्वामित्र ।	१-४	१
मेधातिथिः काण्व ।	५	१
कण्वो वीरः ।	६-४५	१
पुनर्वस काण्वः ।	४६-८१	३
सोभरिः काण्व ।	८२-१०७	४
नोधा गौतमः ।	१०८-१२२	६
गोतमो राहूगणः ।	१२३-१५६	७
परुच्छेपो दैवोदासिः ।	१५७	९
भगस्यो मैत्रावरुणिः ।	१५८-१९७	९
गृत्समदः शौनकः ।	१९८-२१३	१२
गाथिनो विश्वामित्रः ।	२१४-२१६	१४
श्यावाश्व आत्रेयः ।	२१७-३१७	११
एवयामरुदात्रेयः ।	३१८-३२६	२१
शंयुर्बाह्रस्पत्यः ।	३२७-३३३	२२
बाह्रस्पत्यो भरद्वाजः ।	३३४-३४४	११
मैत्रावरुणिवसिष्ठः ।	३४५-३९४	२३

विन्दुः पृतदक्षो वा		
आङ्गिरसः ।	३९५-४०६	२६
स्युमरुद्भिर्भागीवः ।	४०७-४२२	२७
विवस्वानृषिः ।	४२३-४२८	२८
श्यावाश्व आत्रेयः ।	४२९	११
ब्रह्मा ।	४३०-४३३	११
अथर्वा ।	४३४-४३६	२९
शंतातिः ।	४३७-४३९	११
सृगार ।	४४०-४४६	११
अङ्गिराः ।	४४७	३०

## मरुत्सहचारी देवगणः ।

- ( १ ) मरुद्रुद्रविष्णव । वसुध्रुत आत्रेयः । ४४८ ,,  
 ( २ ) मरुतोऽन्नामरुतौ वा । श्यावाश्व आत्रेय  
 ४४९-४५६ ,,  
 ( ३ ) सोमो मरुतः । अथर्वा । ४५७ ३१  
 ( ४ ) मरुत्पञ्चम्यौ । अथर्वा । ४५८ ,,  
 ( ५ ) मरुत आपः । अथर्वा । ४५९-४६४ ३१

## मरुद्देवता की सूचियाँ ।

१ पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।	पृ०	३२-३६
प्रथम मण्डलम् ।		३२-३३
द्वितीयं ,, ।		३३
तृतीयं ,, ।		११
पञ्चमं ,, ।		३३-३४
षष्ठं ,, ।		३४
सप्तमं ,, ।		३४-३५
अष्टमं ,, ।		३५-३६
दशमं ,, ।		३६
२ उपमासूची ।		३७-३९
३ अकारादि वर्णानुक्रमसूची ।		४०-४४
४ गुणबोधक-पदसूची ।		४४-५३
५ निपात-देवतानां सूची ।		५४
६ ,, ,, वर्णानुक्रमसूची		५५



# दैवत-संहिता ।

[ ऋग्यजुःसामाथर्वणा संहितायां सर्वान् मन्त्रान् देवतानुसारेण संगृह्य निमिता । ]

## ४ मरुद्देवता ।

॥ १ ॥ ( ऋ० १।१। ४, ६, ८, ९ )

( १-४ ) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

आदहं स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिं । दधाना नाम यज्ञिर्यम्	४
देवयन्तो यथा मतिमच्छां विदद्वंसु गिरः । महामनूपत श्रुतम्	६
अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति । गणैरिन्द्रस्य कार्म्यः	८
अतः परिज्मन्ना गहि द्विवो वा रोचनादधि । समस्मिन्नश्नते गिरः	९

॥ २ ॥ ( ऋ० १।५। २ )

( ५ ) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

मरुतः पिबन्त क्रतुना पोत्राद् यज्ञं पुनीतन । यूयं हि षा सुदानवः	२
---	---

॥ ३ ॥ ( ऋ० १।३। ७।१-१।५ )

( ६-१५ ) कण्वो घौगः । गायत्री ।

क्रीळं वः शर्धो मरुतमनुवाणं रथंशुभम् । कण्वा अभि प्र गांयत	१
ये पृषतीभिर्कृष्टिभिः साकं वाशीभिरस्त्रिभिः । अजायन्त स्वभानवः	२
इहेवं शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद् वदान् । नि यामश्चित्रमृश्नते	३
प्र वः शर्धीय घृष्वये त्वेषद्युम्नाय शुष्मिणे । देवतं ब्रह्म गायत	४
प्र शंसा गोष्वघ्न्यं क्रीळं यच्छर्धो मरुतम् । जम्भे रसस्य वावृधे	५
को वो वर्षिष्ठ आ नरो द्विवश्च र्गमश्च धूतयः । यत् सीमन्तं न धूनुथ	६
नि वो यामाय मानुषो वृध उग्राय मन्यवे । जिहीत पर्वतो गिरिः	७
येषामज्मेषु पृथिवी जुजुर्वा इव विश्पतिः । भिया यामेषु रजते	८

स्थिरं हि जानमेषां वयां मातुर्निरतवे	। यत् सीमनुं द्विता शवः	९	
उदु त्ये सूनवो गिरः काण्ठा अज्मेण्वत्त	। वाश्चा अभिज्जु यातवे	१०	१०
त्यं चिद वा कीर्धं पृथुं मिहां नपातममृधम्	। प्र च्यावयन्ति यामभिः	११	
मरुतो यद्भ्र वो बलं जनां अचुच्यवीतन	। गिरीरचुच्यवीतन	१२	
यद्भ्र यान्ति मरुतः सं हं ब्रुवतेऽध्वन्ना	। शृणोति कश्चिदेषाम्	१३	
प्र यात शीर्भमाशुभिः सन्ति कण्वेषु वो दुवः	। तत्रो पु मादयाध्वै	१४	
अस्ति हि ण्मा मदाय वः स्मसिं ण्मा वयमेषाम् । विश्वं चिदायुर्जीवसे		१५	२०

॥ ५ ॥ (क्र० १३२।१-१०)

कद्भ्र नूनं कंधप्रियः पिता पुत्रं न हस्तयोः	। दृधिध्वे वृक्तबर्हिषः	१	
कं नूनं कद वो अर्थं गन्तां द्विवो न पृथिव्याः	। कं वो गावो न रणयन्ति	२	
कं वः सुम्ना नव्यांसि मरुतः कं सुविता	। क्वोऽं विश्वानि सौभगा	३	
यद् युयं पृश्निमातरो मर्तासः स्यातन	। स्तोता वां अमृतः स्यात्	४	
मा वो मृगो न रवसे जरिता भूदजोष्यः	। पथा यमस्य गाहुषं	५	२५
मा पु णः परापरा निरुक्तिर्दुर्हणां वधीत्	। पृथीष्ट तृष्णाया सह	६	
सत्यं त्वेषा अमवन्तो धन्वश्चिदा रुद्रियासः	। मिहं कृण्वन्त्यवाताम्	७	
वाश्रेव विद्युन्मिमाति वत्सं न माता सिषक्ति	। यदेषां वृष्टिरसंजि	८	
दिवा चित् तमः कृण्वन्ति पर्जन्येनोदवाहेन	। यत् पृथिवीं व्युन्दन्ति	९	
अधं स्वनान्मरुतां विश्वमा सद्ग पार्थिवम्	। अरंजन्त प्र मानुषाः	१०	३०
मरुतो वीलुपाणिभिश्चित्रा रोधस्वतीरनुं	। यातेमखिदयामभिः	११	
स्थिरा वः सन्तु नेमयो रथा अश्वास एषाम्	। सुसंस्कृता अभीशवः	१२	
अच्छा वडा तना गिरा जरायु ब्रह्मणस्पतिम्	। अग्निं मित्रं न दर्शतम्	१३	
मिमीहि श्लोकं मास्यं पर्जन्यं इव ततनः	। गायं गायत्रमुक्थर्यम्	१४	
वन्दस्व मारुतं गणं त्वेषं पनस्युमकिणं	। अस्मे वृद्धा असन्निह	१५	३५

॥ ५ ॥ (क्र० १३२।१-१०)

( प्रगाथः=(विपमा) बृहती, ( समा) सतो बृहती ) ।

प्र यद्वित्था पंगवतः शोचिर्न मानमस्यथ ।			
कस्य क्रत्वा मरुतः कस्य वर्षसा कं याथ कं हं धूतयः		१	
स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे ।			
युष्माकमस्तु तविधी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः		२	३७

परां ह यत् स्थिरं हथ नरो वर्तयथा गुरु ।	
वि याथन वनिनः पृथिव्या व्याशाः पर्वतानाम्	३
नहि वः शत्रुर्विविदे अधि द्यवि न भूम्यां रिशादसः ।	
युष्मार्कमस्तु तविषी तना युजा रुद्रासो नू चिद्वाधुषे	४
प्र वेपयन्ति पर्वतान् वि विश्रान्ति वनस्पतीन् ।	
प्रो आरत मरुतो दुर्मदा इव देवासः सर्वया विशा	५ ४०
उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं प्रष्टिर्वहति रोहितः ।	
आ वो यामाय पृथिवी चिदश्रो—दबीभयन्त मानुषाः	६
आ वो मक्षू तनाय कं रुद्रा अवा वृणीमहे ।	
गन्ता नूनं नोऽवसा यथा पुरे—त्या कण्वाय विभ्युषे	७
युष्मेषितो मरुतो मर्त्येषित आ यो नो अभ्व ईषते ।	
वि तं युयोत शर्वसा व्योर्जसा वि युष्मार्काभिरूतिभिः	८
असामि हि प्रयज्यवः कण्वं दृद प्रचेतसः ।	
असामिभिर्मरुत आ न ऊतिभि—र्गन्ता वृष्टिं न विद्युतः	९
असाम्योजो विभृथा सुदानवो ऽसामि धूतयः शवः ।	
ऋषिद्विषे मरुतः परिमन्यव इषुं न सृजत द्विषम्	१० ४१

॥ ६ ॥ ( ऋ० ८।७।१-२६ )

( ४६-८९ ) पुनर्वन्सः काण्वः । गायत्री ।

प्र यद् वस्त्रिण्दुभमिषं मरुतो विप्रो अक्षरत	। वि पर्वतेषु राजथ	१
यदुङ्ग तविषीयवो यामं शुभ्रा अचिध्वम्	। नि पर्वता अहासत	२
उदीरयन्त वायुभि—वाश्रासः पृश्निमातरः	। धुक्षन्तं पिप्युषीमिषम्	३
वपन्ति मरुतो मिहं प्र वेपयन्ति पर्वतान्	। यद् यामं यान्ति वायुभिः	४
नि यद् यामाय वो गिरि—नि सिन्धवो विधर्मणे । महे शुष्माय येमिरे		५ ५०
युष्माँ उ नक्तमूतये युष्मान् दिवा हवामहे	। युष्मान् प्रयत्यध्वरे	६
उदु त्ये अरुणप्सव—श्चित्रा यामेभिरीरते	। वाश्रा अधि ण्णुनां द्विवः	७
सृजन्ति रश्मिमोर्जसा पन्थां सूर्याय यातवे	। त भानुभिर्वि तस्थिरे	८
इमां मे मरुतो गिरि—मिमं स्तोममृभुक्षणः	। इमं मे वनता हवम्	९
त्रीणि सरांसि पृश्नयो दुदुह्वे वज्रिणे मधु	। उत्सं कवन्धमुद्विणम्	१० ५१
मरुतो यद्वं वो द्विवः सुम्नायन्तो हवामहे	। आ तू न उप गन्तन	११ ५२

यूयं हि ष्ठा सुदानवो रुद्रा ऋभुक्षणो दमे	। उत प्रचेतसो मदे	१२	
आ नो रयिं मद्रुच्युतं पुरुक्षुं विश्वधायसम्	। इयतां मरुतो दिवः	१३	
अधीव यद् गिरीणां यामं शुभ्रा अचिध्वम्	। सुवानैर्मन्दध्व इन्दुभिः	१४	
एतावतश्चिदेषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः	। अदाभ्यस्य मन्माभिः	१५	६०
ये द्रप्सा इव रोदसी धमन्त्यनु वृष्टिभिः	। उत्सं दुहन्तो अक्षितम्	१६	
उदु स्वानेभिरीरत उद् रथैरुदु वायुभिः	। उत स्तोमैः पृश्निमातरः	१७	
येनाव तुर्वशं यदुं येन कण्वं धनस्पृतम्	। राये सु तस्य धीमहि	१८	
इमा उ वः सुदानवो घृतं न पिप्युषीरिषः	। वर्धान् काण्वस्य मन्माभिः	१९	
कं नूनं सुदानवो मदथा वृक्तवर्हिषः	। ब्रह्मा को वः सपर्यति	२०	६१
नहि ण्म यद्ध वः पुरा स्तोमेभिर्वृक्तवर्हिषः	। शर्धां ऋतस्य जिन्वथ	२१	
समु त्पे मंहतीरपः सं क्षोणी समु सूर्यम्	। सं वज्रं पर्वशो दधुः	२२	
वि वृत्रं पर्वशोययुर्वि पर्वतां अराजिनः	। चक्राणा वृष्णि पौंस्यम्	२३	
अनु त्रितस्य युध्यतः शुष्ममावच्युत क्रतुम्	। अन्विन्द्रं वृत्रतूर्यं	२४	
विद्युद्धस्ता अभिद्यवः शिपाः शीपन् हिरण्ययीः	। शुभ्रा व्यञ्जत श्रिये	२५	७०
उशना यत् परावत उक्ष्णो रन्ध्रमयातन	। द्यौर्न चक्रद् भिया	२६	
आ नो मखस्य द्वावन ऽश्वैर्हिरण्यपाणिभिः	। देवास उषं गन्तन	२७	
यदेषां पृषती रथे प्रष्टिर्वहति रोहितः	। यान्ति शुभ्रा रिणन्नपः	२८	
सुपोमे शर्यणावत्यार्जाके पस्त्यावति	। युयुर्निचक्रया नरः	२९	
कदा गच्छाथ मरुत इत्था विप्रं हवमानम्	। मर्डीकेभिर्नाधमानम्	३०	७१
कद्ध नूनं कधप्रियो यदिन्द्रमजहातन	। को वः साखित्व ओहते	३१	
सहो पु णो वज्रहस्तैः कण्वासो अग्निं मरुद्धिः	। स्तुषे हिरण्यवाशीभिः	३२	
ओ पु वृष्णः प्रयज्युना नवसे सुविताय	। ववृत्यां चित्रवाजान्	३३	
गिरयश्चिन्नि जिहते पर्शानासो मन्यमानाः	। पर्वताश्चिन्नि येमिरे	३४	
आक्षणयावानो वहन्त्यन्तरिक्षेण पततः	। धातारः स्तुवते वयः	३५	८०
अग्निर्हि जानिं पूर्वं इच्छन्वो न सूरों अचिषा	। ते भानुभिर्वि तस्थिरे	३६	८१

॥ ७ ॥ ( ऋ० ८।२०।१-२६ )

(८७-१०७) संभरिः काण्वः । प्रगाथः=(विपमा ककुप , समा सतोवृहती); १४ सतो विराट् ।

आ गन्ता मा रिषण्यत् प्रस्थावानो मापं स्थाता समन्धवः । स्थिरा चिन्नमयिष्णवः १ ८९

वीळुपविभिर्मरुत ऋभुक्षण आ रुद्रासः सुदीतिभिः ।	
इषा नो अद्या गता पुरुस्पृहो यज्ञमा सोभरीयवः	२
विद्या हि रुद्रियाणां शुष्ममुग्रं मरुतां शिमीवताम् । विष्णोरेषस्य मीळहुषाम्	३
वि द्वीपानि पापतन् तिष्ठद् दुच्छुनोभे युजन्त रोदसी ।	
प्र धन्वान्यैरत शुभ्रखाद्यो यदेजथ स्वभानवः	४ ८५
अच्युता चिद् वो अज्मन्ना नानदाति पर्वतासो वनस्पतिः । भूमिर्यामेषु रेजते	५
अमाय वो मरुतो यातवे द्यौर्जिहीत उत्तरा बृहत ।	
यत्रा नरो देदिशते तनूष्वा त्वक्षांसि बाह्वोजसः	६
स्वधामनु श्रियं नरो महि त्वेषा अमवन्तो वृषप्सवः । वहन्ते अहुतप्सवः	७
गोभिर्वाणो अज्यते सोभरीणां रथे कोशे हिरण्यये ।	
गोबन्धवः सुजातास इषे भुजे महान्तो नः स्पर्से नु	८
प्रति वो वृषदञ्जयो वृष्णे शर्धाय मारुताय भरध्वम् । हव्या वृषप्रयावणे	९ ९०
वृष्णश्वेन मरुतो वृषंसुना रथेन वृषनाभिना ।	
आ इयेनासो न पक्षिणो वृथा नरो हव्या नो वीतये गत	१०
समानमश्रयेषां वि भ्राजन्ते रुक्मासो अधि बाहुषु । दविद्युतयूष्टयः	११
त उग्रासो वृषेण उग्रबाहवो नकिष्टनूषु येतिरे ।	
स्थिरा धन्वान्यायुधा रथेषु वो ऽनीकेष्वधि श्रियः	१२
येषामर्णो न सप्रथो नाम त्वेषं शश्वतामेकमिद् भुजे । वयो न पित्र्यं सहः	१३
तान् वन्दस्व मरुतस्तां उप स्तुहि तेषां हि धुनीनाम् ।	
अराणां न चरमस्तदेषां दाना म्हा तदेषाम्	१४ ९५
सुभगः स व ऊतिष्वास पूर्वासु मरुतो व्युष्टिषु । यो वा नूनमुतासति	१५
यस्य वा यूयं प्रति वाजिनो नर आ हव्या वीतये गथ	
अभि ष द्युन्नैरुत वार्जसातिभिः सुम्ना वा धूतयो नशत्	१६
यथा रुद्रस्य सूनवो द्विवो वशन्त्यसुरस्य वेधसः । युवानस्तथेदसत्	१७
ये चाहन्ति मरुतः सुदानवः स्मन्मीळहुषश्चरन्ति ये ।	
अतश्चिदा न उप वस्यसा हदा युवान आ ववृध्वम्	१८
यून ऊषु नविष्ठया वृष्णः पावकां अभि सोभरे गिरा । गाय गा इव चक्रेषत्	१९ १००
साहा ये सन्ति मुष्टिहेव हव्यो विश्वासु पृत्सु होतृषु ।	
वृष्णश्चन्द्राज्ञ सुश्वस्तमान् गिरा वन्दस्व मरुतो अह	२० १०१



गार्वाश्रिद् घा समन्यवः सजात्येन मरुतः सबन्धवः । रिहते ककुभो मिथः	२१	
मर्तश्रिद् वो नृतवो रुक्मवक्षस उर्ष भ्रातृत्वमायति ।		
आधि नो गात मरुतः सदा हि व आपित्वमास्ति निधुवि	२२	
मरुतो मारुतस्य न आ भेषजस्य वहता सुदानवः । यूयं संखायः सप्तयः	२३	
याभिः सिन्धुमवथ याभिस्तूर्वथ याभिर्दशस्यथा क्रिविम् ।		
मयो नो भूतोतिभिर्मयोभुवः शिवाभिरसचद्विषः	२४	१०५
यत् सिन्धौ यदासिक्न्यां यत् समुद्रेषु मरुतः सुबर्हिषः । यत् पर्वतेषु भेषजम्	२५	
विश्वं पश्यन्तो विभृथा तनूष्वा तेना नो अधि वोचत ।		
क्षमा रपो मरुत आतुरस्य न इष्कर्ता विहुतं पुनः	२६	१०७

॥ ८ ॥ ( ऋ० १०४१-१०५० )

( १०८-१२० ) नोधा गौतमः । जगती, १५ त्रिष्टुप ।

वृष्णे शर्धाय सुमन्वाय वेधसे नोधः सुवृक्तिं प्र भरा मरुद्भयः ।		
अपो न धीरो मनसा सुहस्त्यो गिरः समन्त्रे विदथेष्वाभुवः	१	
ते जज्ञिरे विव ऋष्वस उक्षणा रुद्रस्य मर्या असुरा अरेपसः		
पावकासः शुचयः सूर्या इव सत्वानो न द्रप्सिनो घोरवर्षसः	२	
युवानो रुद्रा अजरा अभोग्घनां ववक्षुरधिगावः पर्वता इव ।		
दृळ्हा चिद् विश्वा भुवनानि पार्थिवा प्र च्यावयन्ति दिव्यानि मज्जना	३	११०
चित्रैरस्त्रिभिर्वपुषे व्यञ्जते वक्षःसु रुक्मा अधि येतिरे शुभे ।		
अंसेष्वेषां नि मिमृक्षुर्ऋष्टयः साकं जज्ञिरे स्वधया विवो नरः	४	
ईशानकृतो धुनयो रिशादसो वातान् विद्युतस्तविषीभिरकृत ।		
दुहन्त्यूर्ध्विद्व्यानि धूर्तयो भूमिं पिन्वन्ति पर्यसा परिञ्जयः	५	
पिन्वन्यपो मरुतः सुदानवः पयो घृतवद् विदथेष्वाभुवः ।		
अयं न मिहे वि नयन्ति वाजिनमुत्सं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितम्	६	
महिषासां मायिनश्चित्रभानवो गिरयो न स्वतवसो रघुष्यदः ।		
मृगा इव हस्तिनः खादथा वना यदारुणीषु तविषीर्युग्धवम्	७	
सिंहा इव नानवृत्ति प्रचेतसः पिशा इव सुपिशां विश्ववेदसः ।		
क्षपो जिन्वन्तः पृषतीभिर्ऋष्टिभिः समित् सबाधः शवसाहिमन्यवः	८	११५
रोदसी आ वदता गणाश्रियो नृषाचः शूराः शवसाहिमन्यवः ।		
आ वन्धुरेष्वमतिर्न दर्शिता विद्युन्न तस्थौ मरुतो रथेषु वः	९	११६

श्वेदसो रयिभिः समोकसः समिश्लासस्तविषीभिर्विरग्निः ।	
स्तार इधुं दधिरे गर्भस्त्यो—रनन्तशुष्मा वृषखादयो नरः	१०
रण्ययेभिः पविभिः पयोवृध उज्जिघ्नन्त आपथ्यांश्च न पर्वतान् ।	११
खा अयासः स्वसृतो ध्रुवच्युतो दुधुकृतो मरुतो भ्राजदृष्टयः	१२
धुं पावकं वनिनं विचर्षणिं रुद्रस्य सूनुं हवसां गृणीमसि ।	१२
जस्तुरं तवसं मारुतं गण—मृजीषिणं वृषणं सश्रुत श्रिये	१२
नू स मरुतः शर्वसा जना अति तस्थौ व ऊती मरुतो यमावत ।	१३
भर्वाद्भिर्वाजं भरते धना नृभि—गपृच्छञ्च क्रतुमा क्षेति पुष्यति	१३ १२०
वृक्त्यं मरुतः पूत्सु दुष्टरं द्युमन्तं शुष्मं मघवत्सु धत्तन ।	१४
नस्पृत्मुक्थयं विश्वचर्षणिं तोकं पुष्येम तनयं शतं हिमाः	१४
पू प्तिरं मरुतो वीरवन्त—मृतापाहं रयिमस्मासु धत्त ।	१५
पहस्रिणं शतिनं शशुवांसं प्रातमक्षू धियावसुजंगम्यात	१५ १२२

॥७॥ (क्र० ११८-११९-१२२)

(१२३-१५६) गोतमो राहगणः । जगती. ५.१२ त्रिष्टुप ।

प्र ये शुम्भन्ते जनयो न सप्तयो यामन् रुद्रस्य सूनवः सुदंससः ।	
रोदसी हि मरुतश्चक्रिरे वृधे मदन्ति वीरा विदथेषु वृष्वयः	१
त उक्षितासो महिमानमाशत विवि रुद्रासो अधि चक्रिरे सदः ।	२
अचन्तो अर्कं जनयन्त इन्द्रिय—मधि श्रियो दधिरे पृश्निमातरः	२
गोमातरो यच्छुभयन्ते अस्त्रिभि—स्तनूषु शुभ्रा दधिरे विरुक्मन्तः	३
बाधन्ते विश्वमभिमातिनमप वर्मान्येषामनु रीयते घृतम्	३ १२५
वि ये भ्राजन्ते सुमखास ऋष्टिभिः प्रच्यावयन्तो अच्युता चिदोजसा	४
मनोजुवो यन्मरुतो रथेष्वा वृषवातासः पृषतीरयुग्ध्वम्	४
प्र यद् रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं वाजे अद्रिं मरुतो रंहयन्तः ।	५
उतारुषस्य वि ष्यन्ति धारा—श्वमेवोदमिर्व्युन्दन्ति भूमं	५
आ वो वहन्तु सप्तयो रघुप्यदो रघुपत्वानः प्र जिगात बाहुभिः ।	६
सीवृता बर्हिरुरु वः सदस्कृतं मादयध्वं मरुतो मध्वो अन्धसः	६
तेऽवधन्त स्वतवसो महित्वना नाकं तस्थुरु चक्रिरे सदः ।	७
विष्णुर्यद्वावद् वृषणं मदच्युतं वयो न सीवृन्नाधि बर्हिषि प्रिये	७ १२९

शूरा इवद् युयुधयो न जग्मयः श्रवस्यवो न पृतनासु येतिरे ।	
भयन्ते विश्वा भुवना मरुद्भ्यो राजान इव त्वेषसंहशो नरः	८ १३०
त्वष्टा यद् वज्रं सुकृतं हिरण्यं सहस्रभृष्टिं स्वपा अवर्तयत् ।	
धत्त इन्द्रो नर्यपांसि कर्तवे ऽहन् वृत्रं निरपामौजदर्णवम्	९
ऊर्ध्वं नुनुद्रेऽवतं त ओजसा दाहहाणं चिद् विभिदुर्वि पर्वतम् ।	
धमन्तो वाणं मरुतः सुदानवां मदे सोमस्य रण्यानि चक्रिरे	१०
जिह्वं नुनुद्रेऽवतं तया दिशा—सिञ्चन्नुत्सं गोतमाय तूष्णजे ।	
आ गच्छन्तीमवसा चित्रभानवः कामं विप्रस्य तर्पयन्त धामभिः	११
या वः शर्म शशमानाय सन्ति त्रिधातूनि दाशुषे यच्छताधि ।	
अस्मभ्यं तानि मरुतो वि यन्त रयिं नो धत्त वृषणः सुवीरम्	१२

॥ १० ॥ (ऋ० १।८६।१-१०) गायत्री ।

मरुतो यस्य हि क्षयं पाथा दिवो विमहसः । स सुगोपातमो जनः	१ १३५
यज्ञैर्वा यज्ञवाहसो विप्रस्य वा मतीनाम् । मरुतः शृणुता हवम्	२
उत वा यस्य वाजिनो ऽनु विप्रमर्तक्षत । स गन्ता गोमति व्रजे	३
अस्य वीरस्य बर्हिषि सुतः सोमो दिविष्टिपु । उक्थं मदश्च शस्यत	४
अस्य श्रोषन्त्वा भुवो विश्वा यश्चर्षणीरभि । सूरं चित् ससुषीरिषः	५
पूर्वाभिर्हि ददाशिम शरद्भिर्मरुतो वयम् । अवोभिश्चर्षणीनाम्	६ १४०
सुभगः स प्रयज्यवो मरुतो अस्तु मर्त्यः । यस्य प्रयांसि पर्वथ	७
शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः । विदा कामस्य वेनतः	८
युयं तत् सत्यशवस आविष्कृत महित्वना । विध्यता विद्युता रक्षः	९
गूहता गुह्यं तमां वि यात विश्वमत्रिणम् । ज्योतिष्कर्ता यदुश्मसि	१०

॥ ११ ॥ (ऋ० १।८७।१-६) जगती ।

प्रत्वक्षसः प्रतवसो विरिञ्चिनो ऽनानता अविथुरा ऋजीषिणः ।	
जुष्टतमासो नृतमासो अस्त्रिभिर्व्यानजे के चिदुस्रा इव स्तृभिः	१ १४५
उपह्वरेषु यदचिध्वं ययिं वयं इव मरुतः केन चित् पथा ।	
श्रोतन्ति कोशा उप वो रथेष्वा घृतमुक्षता मधुवर्णमर्चते	२
प्रेषामज्मेषु विथुरेव रेजते भूमिर्यामेषु यद्धं युञ्जते शुभे ।	
ते क्रीळ्यो धुन्यो भ्राजदृष्टयः स्वयं महित्वं पनयन्त धृतयः	३ १४७

स हि स्वसृत् पृषदश्वो धुवां गणोऽं	ऽया ईशानस्तविषीभिरावृतः ।	
असिं सत्यं क्रणयावानेद्यो	ऽस्या धियः प्राविताथा वृषां गणः	४
पितुः प्रत्नस्य जन्मना वदामसि	सोमस्य जिह्वा प्र जिगाति चक्षसा ।	
यद्वीमिन्द्रं शम्युक्त्वाण आशता	दिन्नामानि यज्ञियानि दधिरे	५
श्रियसे कं भानुभिः सं मिमिक्षिरे	ते रश्मिभिस्त ऋक्भिः सुखादयः ।	
ते वाशीमन्त इष्मिणो अभीरवो	विद्रे प्रियस्य मारुतस्य धाम्नः	६ १५०

॥ १२ ॥ (ऋ० १।८।१-६ )

(त्रिण्डुप्. १.६ प्रस्तावपंक्तिः, ५ विगडरूपा) ।

आ विद्युन्मद्भिर्मरुतः स्वर्के	रथेभिर्यात ऋष्टिमद्भिश्चपणैः ।	
आ वर्षिष्ठया न इषा वयो न पतता	सुमायाः	१
तेऽरूणेभिर्वरमा पिशङ्गैः	शुभे कं यान्ति रथतूभिरेश्वैः ।	
रुक्मो न चित्रः स्वधितीवान्	पठ्या रथस्य जङ्घनन्त भूम	२
श्रिये कं वो अधिं तनूषु वाशीं	मेधा वना न कृणवन्त ऊर्ध्वा ।	
युष्मभ्यं कं मरुतः सुजाता	स्तुविद्युन्नासो धनयन्ते अद्रिम्	३
अहानि गृध्राः पर्या व आगुं	रिमां धियं वार्कार्यां च देवीम् ।	
ब्रह्म कृण्वन्तो गोतमासो अर्के	रुर्ध्वं नुनुद् उत्सधिं पिबध्वै	४
एतत् त्यन्न योजनमचेति	सस्वर्ह यन्मरुतो गोतमो वः ।	
पश्यन् हिरण्यचक्रानयोदंष्ट्रान्	विधावतो वराहान्	५ १५१
एषा स्या वो मरुतोऽनुभृती	प्रतिं शोभति वाघतो न वाणी ।	
अस्तोभयद् वृथासा मनु	स्वधां गभस्तयोः	६ १५६

॥ १३ ॥ (ऋ० १।१३९।८ )

(१५७) परुच्छपो देवोदासिः । अत्यष्टिः ।

मो षु वो अस्मद्वुभि तानि पौस्या	सना भूवन् द्युन्नानि मोत जारिषु	रस्मत् पुरोत जारिषुः ।
यद् वश्वित्रं युगेयुगे	नव्यं घोषादमर्त्यम् ।	
अस्मासु तन्मरुतो यच्च दुष्टरं	दिधृता यच्च दुष्टरम्	८ १५७

॥ १४ ॥ (ऋ० १।१६६।१-१५)

(१५८-१५७) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । जगती, १४-१५ त्रिण्डुप ।

तन्नू वोचाम रभसाय जन्मने	पूर्वं महित्वं वृषभस्य केतवे ।	
ऐधेव यामन् मरुतस्तुविष्वणो	युधेवं शक्रास्तविषाणि कर्तन	१ १५८
दै० [मरुत्] २		

नित्यं न सूनुं मधु विभ्रत उप क्रीळन्ति क्रीळा विदथेषु घृष्वयः ।		
नक्षन्ति रुद्रा अर्वसा नमस्विनं न मर्धन्ति स्वतवसो हविष्कृतम्	२	
यस्मा ऊमासो अमृता अरासत रायस्पोषं च हविषा ददाशुषे ।		
उक्षन्त्यस्मै मरुतो हिता इव पुरू रजांसि पर्यसा मयोभुवः	३	१६०
आ ये रजांसि तविषीभिरव्यत प्र व एवासः स्वयतासो अधजन् ।		
भयन्ते विश्वा भुवनानि हर्म्या चित्रो वो यामः प्रयतास्वृष्टिषु	४	
यत् त्वेषयामा नदयन्त पर्वतान् दिवो वा पृष्ठं नया अचुच्यवुः ।		
विश्वो वो अज्मन् भयते वनस्पती रथीयन्तीव प्र जिहीत ओषधिः	५	
यूयं न उग्रा मरुतः सुचेतुना ऽरिष्टग्रामाः सुमतिं पिपर्तन ।		
यत्रा वो दिद्युद् रदति किर्विदती रिणार्ति पश्वः सुधितेव ब्रह्णा	६	
प्र स्क्रम्भदेष्णा अनवभ्रराधसो ऽलातृणासां विदथेषु सुष्टुताः ।		
अर्चन्त्यर्कं मद्दिरस्य पीतये विदुर्वीरस्य प्रथमानि पौस्या	७	
शतभुजिभिस्तमभिहुतेरघात् पूर्भी रक्षता मरुतो यमावत ।		
जनं यमुग्रास्तवसो विरप्शिनः पाथना शंसात् तनयस्य पुष्टिषु	८	१६५
विश्वानि भद्रा मरुतो रथेषु वो मिथस्पृधेव तविषाण्याहिता ।		
अंसेष्वा वः प्रपथेषु खादयो ऽक्षो वश्रका समया वि वावृते	९	
भूरीणि भद्रा नयेषु बाहुषु वक्षःसु रुक्मा रभसासो अश्रयः ।		
अंसेष्वेताः पविषु क्षुरा अधि वयो न पक्षान् व्यनु श्रियो धिरे	१०	
महान्तो महा विश्वोऽं विभूतयो दूरहशो ये दिव्या इव स्तृभिः ।		
मन्द्राः सुजिह्वाः स्वरितार आसभिः संमिश्रा इन्द्रे मरुतः परिष्टुभः	११	
तद् वः सुजाता मरुतो महित्वनं दीर्घं वो द्वात्रमदितेरिव व्रतम् ।		
इन्द्रश्चन त्यजसा वि ह्नुणाति तज्जनाय यस्मै सुकृते अराध्वम्	१२	
तद् वो जामित्वं मरुतः परे युगे पुरू यच्छंसमृतास आवत ।		
अया धिया मनवे श्रुष्टिमाव्या साकं नरो वंसनैरा चिकित्रिरे	१३	१७०
येन दीर्घं मरुतः शूशवाम युष्माकेन परीणसा तुरासः ।		
आ यत् ततनन् वृजने जनास एभिर्यज्ञेभिस्तदुभीष्टिमश्याम्	१४	
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्द्वार्यस्य मान्यस्य कारोः ।		
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेष वृजनं जीरदानुम्	१५	१७२

॥ १५ ॥ (ऋ० १।१६।१२-११) त्रिष्टुप् : (१० पुरस्ताज्ज्योतिः) ।

आ नोऽवोभिमरुतो यान्त्वच्छा ज्येष्ठेभिर्वा बृहद्वैः सुमायाः ।	
अध यदेषां नियुतः परमाः समुद्रस्य चिद् धनयन्त पारे	२
मिम्यक्ष येषु सुधिता घृताची हिरण्यनिर्णिगुपरा न ऋष्टिः ।	
गुहा चरन्ती मनुषो न योषा सभावती विदुष्येव सं वाक्	३
परा शुभ्रा अयासो यव्या साधारण्येव मरुतो मिमिक्षुः ।	
न रोदसी अप नुदन्त घोरा जुषन्त वृधं सख्याय देवाः	४
जोषद् यदीमसुर्या सचधै विषितस्तुका रोदसी नूमणाः ।	१७५
आ सूर्येव विधुतो रथं गात् त्वेपप्रतीका नभसो नेत्या	५
आस्थापयन्त युवतिं युवानः शुभे निमिश्रं विदथेषु पञ्चाम् ।	
अर्को यद् वो मरुतो हविष्मान् गायद् गाथं सुतसोमो दुवस्यन्	६
प्र तं विवक्मि वक्म्यो य एषां मरुतां महिमा सत्यो अस्ति ।	
सचा यदीं वृषमणा अहंयुः स्थिरा चिज्जनीर्वहते सुभागाः	७
पान्ति मित्रावरुणावद्युः चरन्त ईमर्यमो अप्रशस्तान् ।	
उत चर्यवन्ते अच्युता ध्रुवाणि वावृध ईं मरुतो दातिवारः	८
नही नु वो मरुतो अन्त्यस्मे आरात्ताच्चिच्छवसो अन्तमापुः ।	
ते धृष्णुना शर्वसा शूशुवांसो ऽर्णो न द्वेषो धृषता परि ष्टुः	९
वयमद्येन्द्रस्य प्रेष्ठा वयं श्वो वोचेमहि समर्ये ।	१८०
वयं पुरा महि च नो अनु द्यून् तन्न ऋभुक्षा नरामनु प्यात	१०
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्द्वार्यस्य मान्यस्य काराः ।	
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्	११
॥ १६ ॥ (ऋ० १।१६।११-१०) जगती ८-१० त्रिष्टुप् ।	
यज्ञायज्ञा वः समना तुतुर्वणि धियं धियं वो देव्या उं दधिध्वं ।	
आ वोऽर्वाचः सुविताय रोदस्योर्महे ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः	१
वव्रासो न ये स्वजाः स्वतवस इषं स्वरभिजायन्त धृतयः ।	
सहस्रियासो अपां नोर्मय आसा गावो वन्द्यासो नोक्षणः	२
सोर्मासो न ये सुतास्तृतांशवो हृत्सु पीतासो दुवसो नासते ।	
एषामंसेषु रम्भिणीव रारभे हस्तेषु खादिश्च कृतिश्च सं दधे	३
अव स्वयुक्ता द्विव आ वृथा ययुर्मर्त्याः कशया चोदत त्मना ।	१८५
अरेणवस्तुविज्ञाता अचुच्यवुर्हृळ्हानि चिन्मरुतो भ्राजदृष्टयः	४
	१८६

को वोऽन्तर्मरुत ऋष्टिविद्युतो रेजति त्मना हन्वेव जिह्वया ।	
धन्वच्युत इषां न यामनि पुरुषैषां अहन्योऽ नैतशः	५
क्व स्विकृस्य रजसो महस्परं क्वावरं मरुतो यस्मिन्नायय ।	
यच्चयावयथ विथुरेव संहितं व्यद्रिणा पतथ त्वेषमर्णवम्	६
सातिर्न वोऽमवती स्वर्वती त्वेषा विपाका मरुतः पिपिण्वती ।	
भद्रा वो रातिः पूणतो न दक्षिणा पृथुजयी असुर्येव जञ्जती	७
प्रति शोभन्ति सिन्धवः पविभ्यो यदुभ्रियां वाचमुदीरयन्ति ।	
अव स्मयन्त विद्युतः पृथिव्यां यदी घृतं मरुतः पुष्णुवन्ति	८
असूत पृश्निर्महते रणांय त्वेषमयासां मरुतामनीकम् ।	१००
ते सप्तरासोऽजनयन्ताभ्वमादित् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन्	९
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्द्वार्यस्य मान्यस्य कारोः ।	
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्	१०

॥ १७ ॥ (क० १।१७।१-२) त्रिष्टुप् ।

प्रति व एना नमसाहमेमि सूक्तेन भिक्षे सुमतिं तुराणाम् ।	
रराणतां मरुतो वेद्याभिर्नि हेळो धत्त वि मुचध्वमश्वान्	१
एष वः स्तोमो मरुतो नमस्वान् हृदा तष्टो मनसा धायि देवाः ।	
उपेमा यात मनसा जुषाणा यूयं हि ष्टा नमस इद् वृधासः	२

॥ १८ ॥ (१।१७।१-३) गायत्री ।

चित्रो वोऽस्तु यामश्चित्र ऊती सुदानवः । मरुतो अहिभानवः	१	१९५
अरे सा वः सुदानवो मरुत ऋञ्जती शरुः । अरे अश्मा यमस्यथ	२	
तूणस्कन्दस्य नु विशः परि वृङ्क सुदानवः । ऊर्ध्वान् नः कर्त जीवसे	३	

॥ १९ ॥ (क० २।३०।११)

(१९.८-२.१३) गुन्समदः (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् भार्गवः) शौनकः । जगती ।

तं वः शर्धं मारुतं सुमनयुर्गिरोप ब्रुवे नमसा देव्यं जनम् ।	
यथा रयिं सर्ववीरं नशामहा अपत्यसाचं श्रुत्यं विवेदिवे	११

॥ २० ॥ (क० २।३४।१-१५) जगती. १५ त्रिष्टुप् ।

धारावरा मरुतो धृष्णवो जसो मृगा न भीमास्तविषीभिरर्चिनः ।		
अग्रयो न शुशुचाना ऋजीषिणो भूमिं धर्मन्तो अप गा अवृण्वत	१	१९९

द्यावो न स्तुभिश्चितयन्त खादिनो व्यभ्रिया न द्युतयन्त वृष्टयः ।		
रुद्रो यद् वो मरुतो रुक्मवक्षसो वृषाजनि पृश्न्याः शुक्र ऊर्धनि	२	२००
उक्षन्ते अश्वाँ अत्याँ इवाजिषु नदस्य कर्णैस्तुरयन्त आशुभिः ।		
हिरण्यशिप्रा मरुतो दर्विध्वतः पूक्षं याथ पृषतीभिः समन्यवः	३	
पूक्षे ता विश्वा भुवना ववाक्षिरे मित्राय वा सद्गमा जीरदानवः ।		
पृषदश्वासो अनवभ्रराधस ऋजिप्यासो न वयुनेषु धूर्षदः	४	
इन्धन्वभिर्धेनुभी रृशदूधभि रध्वस्मभिः पथिभिर्भ्राजदृष्टयः ।		
ओ हंसासो न स्वसराणि गन्तन मधोर्मदाय मरुतः समन्यवः	५	
आ नो ब्रह्माणि मरुतः समन्यवो नरां न शंसुः सर्वनानि गन्तन ।		
अश्वामिव पिप्यत धेनुमूर्धनि कर्ता धियं जरित्रे वाजपेशसम्	६	
तं नो दात मरुतो वाजिनं रथं आपानं ब्रह्म चितयद् द्विवेदिवे ।		
इषं स्तोतृभ्यो वृजनेषु कारवे सनि मेधामरिष्टं दुष्टरं सहः	७	२०१
यद् युञ्जते मरुतो रुक्मवक्षसो ऽश्वान् रथेषु भग आ सुदानवः ।		
धेनुर्न शिखे स्वसरेषु पिन्वते जनाय रातहविषे महीमिषम्	८	
यो नो मरुतो वृकताति मर्त्यो रिपुर्दधे वसवो रक्षता रिपः ।		
वर्तयत तपुषा चक्रियाभि तमव रुद्रा अशसो हन्तना वधः	९	
चित्रं तद् वो मरुतो याम् चेकिते पृश्न्या यदूधरप्यापयो दुहुः ।		
यद् वा निदे नवमानस्य रुद्रिया ख्रितं जराय जुस्तामदाभ्याः	१०	
तान् वो महो मरुत एवयात्रो विष्णोरिपस्य प्रभूथे हवामहे ।		
हिरण्यवर्णान् ककुहान् यतसुचो ब्रह्मण्यन्तः शंस्यं राध ईमहे	११	
ते दशग्वाः प्रथमा यज्ञमूर्हिरे ते नो हिन्वन्तूपसो व्युष्टिषु ।		
उषा न रामीररुणैरपोर्णुते महो ज्योतिषा शुचता गोअर्णसा	१२	२१०
ते क्षोणीभिररुणेभिर्नाञ्जिर्भा रुद्रा ऋतस्य सदानेषु वावृधुः ।		
निमेघमाना अत्येन पाजसा सुश्चन्द्रं वर्णं दधिरे सुपेशसम्	१३	
ताँ इयानो महि वरूथमूतय उप घेदेना नर्मसा गृणीमसि ।		
त्रितो न यान् पञ्च होतृनभिष्टय आववर्तदवराञ्चक्रियावसे	१४	
यया रथं पारयथात्यहो यया निदो मुश्चथ वन्दितारम् ।		
अर्वाची सा मरुतो या व ऊतिरो षु वाभेव सुमन्तिर्जिगातु	१५	२१३



॥ २१ ॥ ( ऋ० ३२६।४-६ )

(२१४-२१६) गाथिनो विश्वामित्रः । जगती ।

प्र यन्तु वाजास्तविषीभिरग्रयः शुभे संमिश्लाः पृषतीरयुक्षत ।		
बृहदुक्षो मरुतो विश्ववेदसः प्र वैपयन्ति पर्वताँ अदाभ्याः	४	
अग्निश्रियो मरुतो विश्वकृष्टय आ त्वेषमुग्रमव ईमहे वयम् ।		
ते स्वानिनो रुद्रिया वर्षनिर्णिजः सिंहा न हेषकृतवः सुदानवः	५	२१५
व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभि रग्नेर्भामं मरुतामोज ईमहे ।		
पृषदश्वासो अनवभ्रराधसो गन्तारो यज्ञं विदथेषु धीराः	६	२१६

॥ २२ ॥ (ऋ० ५।११-१७)

(२१७-२१७) श्यावाश्व आत्रेयः । अनुष्टुप . ६.१६,१७ पङ्क्तिः ।

प्र श्यावाश्व धृष्णुया ऽर्चा मरुद्धिर्क्राभिः ।		
ये अद्रोधमनुष्वधं श्रवो मदन्ति यज्ञियाः	१	
ते हि स्थिरस्य शर्वसः सखायः सन्ति धृष्णुया ।		
ते यामन्ना धृषद्विन स्तमना पान्ति शश्वतः	२	
ते स्पन्द्रासो नोक्षणो ऽति ष्कन्दन्ति शर्वरीः ।		
मरुतामधा महो दिवि क्षमा च मन्महे	३	
मरुत्सु वो दधीमहि स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।		
विश्वे ये मानुषा युगा पान्ति मर्त्यं रिषः	४	२२०
अर्हन्तो ये सुदानवो नरो असामिशवसः ।		
प्र यज्ञं यज्ञियेभ्यो द्विवो अर्चा मरुद्धयः	५	
आ रुक्मैरा युधा नरं ऋष्वा ऋष्टीरसृक्षत ।		
अन्वेनाँ अहं विद्युतो मरुतो जज्झतीरिव भानुरर्तं तमना द्विवः	६	
ये वावृधन्त पार्थिवा य उरावन्तरिक्ष आ ।		
वृजने वा नदीनां सधस्थे वा महो द्विवः	७	
शर्धो मारुतमुच्छंस सत्यशवसमृभ्वंसम् ।		
उत स्म ते शुभे नरः प्र स्पन्द्रा युजत तमना	८	
उत स्म ते परुष्ण्या मूर्णा वसत शुन्ध्यवः ।		
उत पव्या रथाना मद्रिं भिन्दुन्त्योजसा	९	२२५
आर्पथयो विपथयो ऽन्तस्पथा अनुपथाः ।		
एतेभिर्मह्यं नामभि र्यज्ञं विष्टार ओहते	१०	२२६

अधा नरो न्योहते ऽधा नियुत ओहते ।	
अधा पारावता इति चित्रा रूपाणि दर्श्या	११
छन्दुःस्तुभः कुभन्यव उत्समा कीरिणां नृतुः ।	
ते मे के चिन्न तायव ऊर्मा आसन् वृशि त्विष	१२
य ऋष्वा ऋष्टिविद्युतः कवयः सन्ति वेधसः ।	
तमृषे मारुतं गणं नमस्या रमया गिरा	१३
अच्छ ऋषे मारुतं गणं वृाना मित्रं न योषणा ।	
द्विवो वा धृष्णव ओजसा स्तुता धीभिरिषण्यत	१४ २३०
नू मन्वान एषां देवाँ अच्छा न वक्षणा ।	
वृाना संचेत सूरिभि—र्यामश्रुतेभिरस्त्रिभिः	१५
प्र ये मे बन्ध्वेषे गां वोचन्त सूरयः पृश्निं वोचन्त मातरम् ।	
अधा पितरमिष्मिणं रुद्रं वोचन्त शिक्रसः	१६
सप्त मे सप्त शाकिन एकमेका ज्ञता ददुः ।	
यमुनायामार्धे श्रुतमुद् राधो गव्यं मृजे नि राधो अश्व्यं मृजे	१७

॥ २३ ॥ ( ऋ० ५।५।३।१-१६ )

(१,५,१०-११,१५ककुप्, २ बृहती. ३ अनुष्टुप्, ४ पुरजणिक, ६,७,९,१३,१४,१६ सतो बृहती. ८,१२ गायत्री)।

को वेदु जानमेषां को वा पुरा सुन्नेष्वास मरुताम् ।	
यद् युयुजे किलास्यः	१
ऐतान् रथेषु तस्थुषः कः शुश्राव कथा ययुः ।	
कस्मै ससुः सुदासे अन्वापय इळाभिवृष्टयः सह	२ २३५
ते मे आहुर्य आययु—रुप द्युभिर्विभिर्मदे ।	
नरो मर्या अरेपस इमान् पश्यन्निति ष्टुहि	३
ये अस्त्रिषु ये वाशीषु स्वभानवः स्रक्षु रुक्मेषु स्वादिषु ।	
श्राया रथेषु धन्वसु	४
युष्माकं स्मा रथाँ अनु मुदे दधे मरुतो जीरदानवः ।	
वृष्टी द्यावो यतीरिव	५
आ यं नरः सुदानवो ददाशुषे दिवः कोशमचुच्यवुः ।	
वि पर्जन्यं सृजन्ति रोदसी अनु धन्वना यन्ति वृष्टयः	६ २३९

ततुद्वानाः सिन्धवः क्षोदसा रजः प्र संसुर्धेनवो यथा । स्यन्ना अश्वा इवाध्वनो विमोचने वि यद् वर्तन्त एन्यः आ यात मरुतो द्विव आन्तरिक्षादुमादुत । मावँ स्थात परावर्तः	७	२४०
मा वो रसानितभा कुभा कुमुर्मा वः सिन्धुर्नि रीरमत् । मा वः परि ष्ठात् सर्युः पुरीषिण्यस्मे इत् सुन्नमस्तु वः तं वः शर्धँ रथानां त्वेषं गुणं मारुतं नव्यसीनाम् । अनु प्र यन्ति वृष्टयः शर्धँशर्धँ व एषां व्रातँव्रातं गुणंगुणं सुशस्तिभिः । अनु क्रामेम धीतिभिः कस्मा अद्य सुजाताय गतहव्याय प्र ययुः । एना यामेन मरुतः येन तोकाय तनयाय धान्यं बीजं वहध्वे अक्षितम् । अस्मभ्यं तद् धत्तन् यद् व ईमहे राधो विश्वायु सौभगम् अतीयाम निदस्तिरः स्वस्तिभिर्हित्वावद्यमरातीः । वृष्टी शं योराप उस्नि भेषजं स्याम मरुतः सह सुवेवः समहासति सुवीरो नरो मरुतः स मर्त्यः । यं त्रायध्वे स्याम ते स्तुहि भोजान्स्तुवतो अस्य यामनि रणन् गावो न यवसे । यतः पूर्वा इव सखीरनु ह्वय गिरा गृणीहि कामिनः	८	९
	१०	
	११	
	१२	२४५
	१३	
	१४	
	१५	
	१६	

॥ २३ ॥ (ऋ० ५।५।३।१-१५) जगती, १४ त्रिष्टुप् ।

प्र शर्धाय मारुताय स्वभानव इमां वाचमनजा पर्वतच्युते । घर्मस्तुभे द्विव आ पृष्ठयज्वने द्युस्रश्रवसे महि नृम्णमर्चत प्र वो मरुतस्तविषा उदुन्यवो वयोवृधो अश्वयुज परिञ्जयः । सं विद्युता दधति वाशति त्रितः स्वररन्त्यापोऽवना परिञ्जयः विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो वातत्वेषो मरुतः पर्वतच्युतः । अब्दया चिन्मुहुरा हादुनीवृतः स्तनयदमा रभसा उदोजसः व्यक्तून् रुद्रा व्यहानि चिक्रसो व्यन्तरिक्षं वि रजांसि धूतयः । वि यदज्जौ अजथ नावँ ई यथा वि दुर्गाणि मरुतो नाहँ रिष्यथ	१	२५०
	२	
	३	
	४	२५३

तद् वीर्यं वो मरुतो महित्वनं	वीर्यं ततान सूर्यो न योजनम् ।	
एता न यामे अगृभीतशोचिषो	ऽनश्वदां यन्नययातना गिरिम्	५
अभ्राजि शर्षी मरुतो यदर्णसं	मोषथा वृक्षं कपनेव वेधसः ।	
अध स्मा नो अरमतिं सजोषस-	श्रक्षुरिव यन्तमनु नेषथा सुगम्	६ २५५
न स जीयते मरुतो न हन्यते	न स्नेधति न व्यथते न रिण्यति ।	
नास्य राय उप दस्यन्ति नोतय	ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ	७
नियुत्वंन्तो ग्रामजितो यथा नरो	ऽर्यमणो न मरुतः कवन्धिनः ।	
पिन्वन्त्युत्सं यद्विनासो अस्वरन्	व्युन्दन्ति पृथिवीं मध्वो अन्धसा	८
प्रवत्वंतीयं पृथिवी मरुद्भ्यः	प्रवत्वंती द्यौर्भवति प्रयद्भ्यः ।	
प्रवत्वंतीः पृथ्या अन्तरिक्ष्याः	प्रवत्वंन्तः पर्वता जीरदानवः	९
यन्मरुतः सभरसः स्वर्णरः	सूर्य उदिते मर्दथा दिवो नरः ।	
न वोऽश्वाः श्रथयन्ताह सिंघतः	सद्यो अस्याध्वनः पारमश्रुथ	१०
अंसेषु व ऋष्टयः पत्सु खादयो	वक्षःसु रुक्मा मरुतो रथे शुभः ।	
अग्निभ्राजसो विद्युतो गर्भस्त्योः	शिप्राः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः	११ २६०
तं नाकमर्यो अगृभीतशोचिषं	रुशत् पिप्पलं मरुतो वि धूनुथ ।	
समच्यन्त वृजनातिविषन्त यत्	स्वरन्ति घोषं विततमृतायवः	१२
युष्मादत्तस्य मरुतो विचेतसो	रायः स्याम रथ्योऽं वयस्वतः ।	
न यो युच्छति तिष्योऽं यथा द्विवोऽं	ऽस्मे रारन्त मरुतः सहास्रिणम्	१३
यूयं रथिं मरुतः स्पार्हवीरं	यूयमृषिमवथ सामविप्रम् ।	
यूयमर्वन्तं भरताय वाजं	यूयं धत्थ राजानं श्रुष्टिमन्तम्	१४
तद् वो यामि द्रविणं सद्यऊतयो	येना स्वर्णं ततनाम् नूरभि ।	
इदं सु मे मरुतो हर्यता वचो	यस्य तरंम तरसा शतं हिमाः	१५

॥ २५ ॥ ( ऋ० ५।५।१-१० ) जगती, १० त्रिष्टुप् ।

प्रयज्यवो मरुतो भ्राजदृष्टयो	बृहद् वयो दधिरे रुक्मवक्षसः ।	
ईयन्ते अश्वैः सुयमेभिराशुभिः	शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	१ २६५
स्वयं दधिध्वे तविषीं यथा विद	बृहन्महान्त उर्विया वि राजथ ।	
उतान्तरिक्षं ममिरे व्योजसा	शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	२
साकं जाताः सुभ्वः साकमुक्षिताः	श्रिये चिदा प्रतरं वावृधुर्नरः ।	
विरोकिणः सूर्यस्येव रश्मयः	शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	३ २६७

आभूषण्यं वो मरुतो महित्वनं दिदृक्षेण्यं सूर्यस्येव चक्षणम् । उतो अस्मौ अमृतत्वे दधातनु शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	४
उदीरयथा मरुतः समुद्रतो यूयं वृष्टिं वर्षयथा पुरीषिणः । न वो दसा उप दस्यन्ति धेनवः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	५
यदश्वान् धूर्षु पृषतीरयुग्ध्वं हिरण्ययान् प्रत्यक्कां अमुग्ध्वम् । विश्वा इत् स्पृधो मरुतो व्यस्यथ शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	६
न पर्वता न नद्यो वरन्त वो यत्राचिध्वं मरुतो गच्छथेदु तत् । उत द्यावापृथिवी याथना परि शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	७
यत् पूर्यं मरुतो यच्च नूतनं यदुद्यते वसवो यच्च शस्यते । विश्वस्य तस्य भवथा नवेदसः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	८
मूळत नो मरुतो मा वधिष्टनाऽस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्तन । अधि स्तोत्रस्य सरस्यस्य गातनु शुभं यातामनु रथा अवृत्सत	९
युयमस्मान् नयत वस्यो अच्छा निरंहतिभ्यो मरुतो गृणानाः । जुषध्वं नो हव्यदातिं यजत्रा वयं स्याम पतयो रयीणाम्	१०

॥ २६ ॥ ( ऋ० ५।१६।१-९ ) बृहती; ३, ७ सतो बृहती ।

अग्ने शर्धन्तमा गणं पिष्टं रुक्मेभिरस्त्रिभिः । विशो अद्य मरुतामव ह्वये दिवाश्चित् रोचनादधि	१	२७५
यथा चिन्मन्यसे हृदा तदिन्मे जग्मुराशसः । ये ते नेदिष्टं हवनान्यागमन् तान् वर्ध भीमसंहशः	२	
मीळहुष्मतीव पृथिवी पराहता मदन्त्येत्यस्मदा । ऋक्षो न वो मरुतः शिमीवो अमो दुधो गौरिव भीमयुः	३	
नि ये रिणन्त्योजसा वृथा गावो न दुर्धुरः । अश्मानं चित् स्वर्यं पर्वतं गिरिं प्र च्यावयन्ति यामभिः	४	
उत तिष्ठ नूनमेषां स्तोमैः समुक्षितानाम् । मरुतां पुरुतमपूर्वर्यं गवां सर्गमिव ह्वये	५	
युङ्ग्ध्वं ह्यरुपी रथे युङ्ग्ध्वं रथेषु रोहितः । युङ्ग्ध्वं हरीं अजिरा धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा धुरि वोळ्हवे	६	२८०
उत स्य वाज्यरुषस्तुविष्वणिं रिह स्म धायि दर्शतः । मा वो यामेषु मरुतश्चिरं करत् प्र तं रथेषु चोदत	७	२८१

रथं नु मारुतं वयं श्रवस्युमा हुवामहे ।  
 आ यस्मिन् तस्थौ सुरणानि विभ्रती सचा मरुत्सु रोदुसी ८  
 तं वः शर्धं रथेशुभं त्वेषं पनस्युमा हुवे ।  
 यस्मिन्त्सुजाता सुभगा महीयते सचा मरुत्सु मीळहुषी ९

॥ २७ ॥ ( ऋ० ५।१७।१-८ ) जगती, ७-८ त्रिष्टुप ।

आ रुद्रास इन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुवितार्य गन्तन ।  
 इयं वो अस्मत् प्रातिं हर्यते मतिस्तृष्णजे न विव उत्सा उदुन्यवे १  
 वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणः सुधन्वान् इषुमन्तो निषङ्गिणः ।  
 स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातरः स्वायुधा मरुतो याथना शुभ्रम् २ २८५  
 धूनुथ द्यां पर्वतान् द्वाशुषे वसु नि वो वना जिहते यामनो भिया ।  
 कोपर्यथ पृथिवीं पृश्निमातरः शुभे यदुग्राः पृषतीरयुग्धवम् ३  
 वातत्वेषो मरुतो वर्षनिर्णिजो यमा इव सुसदृशः सुपेशसः ।  
 पिशङ्गाश्वा अरुणाश्वा अरेपसः प्रत्वक्षसो महिना शौरिवोरवः ४  
 पुरुद्वप्सा अस्त्रिमन्तः सुदानवस्त्वेषसदृशो अनवभ्रराधसः ।  
 सुजातासो जनुषा रुक्मवक्षसो विवो अर्का अमृतं नाम भेजिरे ५  
 ऋष्टयो वो मरुतो अस्योरधि सह ओजो बाह्वोर्वा बलं हितम् ।  
 नृम्णा शीर्षस्वायुधा रथेषु वो विश्वा वः श्रीरधि तनूषु पिपिशे ६  
 गोमदश्वावद् रथवत् सुवीरं चन्द्रवद् राधो मरुतो ददा नः ।  
 प्रशस्ति नः कृणुत रुद्रियासो भक्षीय वोऽवसो दैव्यस्य ७ २९०  
 ह्ये नरो मरुतो मूळता नस्तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः ।  
 सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्विरयो बृहदुक्षमाणाः ८

॥ २८ ॥ ( ऋ० ५।५८।१-८ ) त्रिष्टुप ।

तमु नूनं तविधीमन्तमेषां स्तुषे गणं मारुतं नव्यसीनाम् ।  
 य आश्वश्वा अमवद् वहन्त उतेशिरे अमृतस्य स्वरजः १  
 त्वेषं गणं तवसं खादिहस्तं धुनिव्रतं मायिनं दातिवारम् ।  
 मयोभुवो ये अमिता महित्वा वन्दस्व विप्र तुविराधसो नृन् २  
 आ वो यन्तूदवाहासो अद्य वृष्टिं ये विश्वे मरुतो जुनन्ति ।  
 अयं यो अग्निमरुतः समिद्ध एतं जुषध्वं कवयो युवानः ३  
 यूयं राजानमिर्यं जनाय विभवत्ष्टं जनयथा यजत्राः ।  
 युष्मदेति मुष्टिहा बाहुजूतो युष्मत् सदश्वो मरुतः सुवीरः ४ २९५

अरा इवेदचरमा अहेव प्रप्र जायन्ते अकवा महोभिः ।	
पृश्नेः पुत्रा उपमासो रभिष्ठाः स्वया मत्या मरुतः सं मिमिक्षुः	५
यत् प्रायासिष्ट पृषतीभिरश्वैर्वीळुपविभिर्मरुतो रथेभिः ।	
क्षोदन्त आपो रिणते वना न्यवोन्नियो वृषभः क्रन्दतु द्यौः	६
प्रथिष्ट यामन् पृथिवी चिदेषां भर्तैव गर्भं स्वमिच्छवो धुः ।	
वातान् ह्यश्वान् धुर्यायुयुञ्जे वर्षं स्वेदं चक्रिरे रुद्रियांसः	७
हये नरो मरुतो मूळता नस्तुवीमघासो अमृतो ऋतज्ञाः ।	
सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्भिरयो बृहदुक्षमाणाः	८

॥ १९ ॥ ( ऋ० ५।५९।१-८ ) जगती, ८ त्रिष्टुप ।

प्र वः स्पळक्रन्त्सुविताय द्वावने ऽर्ची द्विवे प्र पृथिव्या ऋतं भरे ।	
उक्षन्ते अश्वान् तरुषन्त आ रजो ऽनु स्वं भानुं श्रथयन्ते अर्णवैः	१ ३००
अमादिषां भियसा भूमिरेजति नौर्न पूर्णा क्षरति व्यथिर्यती ।	
दूरेदृशो ये चितयन्त एमभि रन्तमहे विदथे येतिरे नरः	२
गवामिव श्रियसे शृङ्गमुत्तमं सूर्यो न चक्षु रजसो विसर्जने ।	
अत्या इव सुभ्वर्श्वारवः स्थन मर्या इव श्रियसे चेतथा नरः	३
को वो महान्ति महतामुदश्रवत् कस्काव्या मरुतः को ह पौंस्या ।	
यूयं ह भूमिं किरणं न रेजथ प्र यद् भरध्वे सुविताय द्वावने	४
अश्वा इवेदरुषासः सर्वन्धवः शूरा इव प्रयुधः प्रोत युयुधुः ।	
मर्या इव सुवृधो वावृधुर्नरः सूर्यस्य चक्षुः प्र मिनन्ति वृष्टिभिः	५
ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास उन्द्रिदो ऽर्मध्यमासो महसा वि वावृधुः ।	
सुजातासो जनुषा पृश्निमातरो द्विवो मर्या आ नो अच्छा जिगातन	६ ३०५
वयो न ये श्रेणीः प्पुतरोजसा ऽन्तान् द्विवो बृहतः सानुनस्परि ।	
अश्वास एषामुभये यथा विदुः प्र पर्वतस्य नभूर्नचुच्यवुः	७
मिमातु द्यौरदितिर्वीतये नः सं दानुचित्रा उषसो यतन्ताम् ।	
आचुच्यवुर्विव्यं कोशमेत ऋषे रुद्रस्य मरुतो गृणानाः	८

॥ ३० ॥ ऋ० ५।६१।१-४:११-१६) गायत्री, ३ निचुत्

के ष्ठा नरः श्रेष्ठतमा य एकैक आयय । परमस्याः परावतः	१
क्रु वोऽश्वाः क्वाइभीशवः कथं शोक कथा यय । पूष्टे सदा नसौर्यमः	२
जघने चोद एषां वि सक्थानि नरो यमुः । पुत्रकृथे न जनयः	३ ३१०

परा वीरास एतन् मर्यासो भद्रजानयः	। अग्निपपो यथासंध	४०	
य ई वहन्त आशुभिः पिबन्तो मकिरं मधु	। अत्र श्रवांसि दधिरे	११	
येषां श्रियाधि रोदसी विभ्राजन्ते रथेष्व	। द्विवि रुक्म इवोपरि	१२	
युवा स मारुतो गणस्त्वेषरथो अनेद्यः	। शुभंयावाप्रतिष्कृतः	१३	
को वेद नूनमेषां यत्रा मदन्ति धूतयः	। ऋतजाता अरेपसः	१४	३१५
यूयं मर्तं विपन्यवः प्रणेतारं इत्था धिया	। श्रोतारो यामहूतिषु	१५	
ते नो वसूनि काम्या पुरुश्चन्द्रा रिशादसः	। आ यज्ञियासो ववृत्तन	१६	३१७

॥ ३१ ॥ ( ऋ० ५।८७।१-९ )

( ३१८-३२६ ) एवयामरुवात्रेय । अतिजगती ।

प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत् ।		
प्र शर्धाय प्रयज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शर्वसे		१
प्र ये जाता महिना ये च नु स्वयं प्र विद्वनां ब्रुवत एवयामरुत् ।		
क्त्वा तद् वो मरुतो नाधूषे शवो वाना महा तदेषा मधृष्टासो नाद्रयः		२
प्र ये द्विवो बृहतः शृण्विरे गिरा सुशुक्रानः सुभ्व एवयामरुत् ।		
न गेषामिरी सधस्थ ईष्ट आ अग्रयो न स्वविद्युतः प्र स्पन्द्रासो धुनीनाम्		३ ३१०
स चक्रमे महतो निरुरुक्रमः समानस्मात् सदस एवयामरुत् ।		
यदायुक्त तमना स्वादधि ण्णुभिर्विष्पर्धसो विमहसो जिगति शेवृधो नृभिः		४
स्वनो न वोऽमवान् रेजयद् वृषा त्वेषो ययिस्तविष एवयामरुत् ।		
येना सहन्त ऋञ्जत स्वरोचिषः स्थारश्मानो हिरण्ययाः स्वायुधास इष्मिणः		५
अपारो वो महिमा वृन्द्रशवसस्त्वेषं शवोऽवत्वेवयामरुत् ।		
स्थातारो हि प्रसितौ संहशि स्थन ते न उरुष्यता निदः शुशुक्रासो नाग्रयः		६
ते रुद्रासः सुमखा अग्रयो यथा तुविद्युन्ना अवन्त्वेवयामरुत् ।		
धीर्षं पृथु पंपथे सन्न पार्थिवं येषामज्मेष्वा महः शर्धास्यद्भुतैनसाम्		७
अद्वेषो नो मरुतो गातुमेतन् श्रोता हवं जरितुरेवयामरुत् ।		
विष्णोर्महः समन्यवो युयोतन् स्मद् रथयोऽ न वृसना ऽप द्वेषांसि सनुतः		८ ३१५
गन्ता नो यज्ञ यज्ञियाः सुशमि श्रोता हवमरुक्ष एवयामरुत् ।		
ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि यूयं तस्य प्रचेतसः स्यातं दुर्धतवो निदः		९ ३२६



॥ ३२ ॥ ( ऋ० ६।४८।११-१५, २०-२१ )

(३२७-३३३) शंयुर्बार्हस्पत्य (तृणपाणि). [१३-१५ लिङ्गोक्ता वा] । ११ ककुप, १२ सतो बृहती, १३ पुरजग्निक्, १४ बृहती, १५ अतिजगती, २० बृहती, २१ महाबृहती यवमध्या ।

आ संखायः सवर्द्धुर्धां धेनुर्मजध्वमुप नव्यसा वचः । सूजध्वमनपस्फुराम्	११	
या शर्धीय मारुताय स्वभानवे श्रवोऽमृत्यु धुक्षत ।		
या मृळीके मरुतां तुराणां या सुन्नैरेवयावरी	१२	
भरद्वाजायाव धुक्षत द्विता । धेनुं च विश्वदोहसमिषं च विश्वभोजसम्	१३	
तं व इन्द्रं न सुक्रतुं वरुणमिव मायिनम् ।		
अर्यमणं न मन्द्रं सुप्रभोजसं विष्णुं न स्तुष आदिशे	१४	३३०
त्वेषं शर्धी न मारुतं तुविष्वर्ण्यनर्वाणं पूषणं सं यथा ज्ञता ।		
सं सहस्रा कार्षिच्चर्षणिभ्य आं आविर्गूळ्हा वसू करत सुवेदां नो वसू करत	१५	
वामी वामस्य धूतयः प्रणीतिरस्तु सूनृता ।		
देवस्य वा मरुतो मर्त्यस्य वेजानस्य प्रयज्यवः	२०	
सद्यश्चिद् यस्य चकृतिः परि द्यां देवो नैति सूर्यः ।		
त्वेषं शवो दधिरे नाम यजियं मरुतो वृत्रहं शवो ज्येष्ठं वृत्रहं शवः	२१	३३३

॥ ३३ ॥ ( ऋ० ६।६६।१-११ )

(३३४-३४४) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

वपुर्नु तच्चिकितुषे चिदस्तु समानं नाम धेनु पत्यमानम् ।		
मर्तेष्वन्यद् द्रोहसे पीपायं सकृच्छुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः	१	
ये अग्रयो न शोशुचन्निधाना द्विर्यत्र त्रिर्मरुतो वावृधन्त ।		
अरेणवो हिरण्ययास एषां साकं नृम्णैः पौंस्येभिश्च भूवन्	२	३३५
रुद्रस्य ये मीळ्हुषः सन्ति पुत्रा यांश्चो नु दाधृविर्भरधै ।		
विदे हि माता महो मही षा सेत् पृश्निः सुभ्वेऽर्गर्भमाधात्	३	
न य ईषन्ते जनुषोऽया न्वर्ऽन्तः सन्तोऽवद्यानि पुनानाः ।		
निर्यद् दुहे शुचयोऽनु जोषमनु श्रिया तन्वमक्षमाणाः	४	
मक्षू न येषु द्रोहसे चिदुया आ नाम धृष्णु मारुतं दधानाः ।		
न ये स्तौना अयासो म्हा नू चित् सुदानुर्व यासदुग्रान्	५	
त इदुग्राः शवसा धृष्णुषेणा उभे युजन्त रोदसी सुमेके ।		
अर्ध स्मैषु रोदसी स्वशोचि रामवत्सु तस्थौ न रोक्ः	६	३३९

अनेनो वो मरुतो यामो अस्त्व—नश्वाश्चिद् यमजत्यरंथीः ।		
अनवसो अनभीशू रजस्तू—र्वि रोदसी पथ्या याति साधन्	७	३४०
नास्य वर्ता न तरुता न्वस्ति मरुतो यमवथ वाजसातौ ।		
तोके वा गोषु तनये यमप्सु स व्रजं दर्ता पार्ये अध द्योः	८	
प्र चित्रमर्कं गृणते तुराय मारुताय स्वतवसे भरध्वम् ।		
ये सहांसि सहसा सहन्ते रेजते अग्रे पृथिवी मखेभ्यः	९	
त्विषीमन्तो अध्वरस्येव विद्युत् तृषुच्यवसो जुहोऽ नाग्नः ।		
अर्चत्रयो धुनयो न वीरा भ्राजज्जन्मानो मरुतो अधृष्टाः	१०	
तं वृधन्तं मारुतं भ्राजहृष्टिं रुद्रस्य सूनुं हवसा विवासे ।		
द्विवः शर्धीय शुचयो मनीषा गिरयो नाप उग्रा अस्पृधन्	११	३४४
॥ ३४ ॥ ( क्र० ७।५६।१-२५ )		
( ३४५-३९४ ) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप्, १-११ द्विपदा विराट् ।		
क ई व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या अधा स्वश्वाः	१	३४५
नकिर्हीषां जनूषि वेदु ते अङ्ग विद्रे मिथो जनित्रम्	२	
आभि स्वपूभिर्मिथो वपन्त वार्तस्वनसः श्येना अस्पृधन्	३	
एतानि धीरो निण्या चिकेत पृश्निर्यदूधो मही जभारं	४	
सा विट् सुवीरा मरुद्भिरस्तु सनात सहन्ती पुष्यन्ती नृम्णम्	५	
यामं येष्ठाः शुभा शोभिष्ठाः श्रिया संमिश्ला ओजोभिरुग्राः	६	३५०
उग्रं व ओजः स्थिरा शवांस्य—धा मरुद्भिर्गणस्तुर्विष्मान्	७	
शुभ्रो वः शुष्मः क्रुध्मी मनांसि धुनिर्मुनिरिव शर्धस्य धृष्णोः	८	
सनेभ्यस्मद् युयोतं विद्युं मा वो दुर्मतिरिह प्रणङ्गः	९	
प्रिया वो नाम हुवे तुराणा—मा यत् तृपन्मरुतो वावशानाः	१०	
स्वायुधासं इष्मिणः सुनिष्का उत स्वयं तन्वपुः शुम्भमानाः	११	३५५
शुचीं वो हव्या मरुतः शुचीनां शुचिं हिनोम्यध्वरं शुचिभ्यः ।		
ऋतेन सत्यमृतसापं आय—ञ्छुचिजन्मानः शुचयः पावकाः	१२	
अंसेष्वा मरुतः खादयो वो वक्षःसु रुक्मा उपशिश्रियाणाः ।		
वि विद्युतो न वृष्टिभीं रुचाना अनु स्वधामायुधैर्यच्छमानाः	१३	
प्र बुध्न्या व ईरते महांसि प्र नामानि प्रयज्यवस्तिरध्वम् ।		
सहस्रियं दम्यं भागमेतं गृहमेधीयं मरुतो जुषध्वम्	१४	३५८

यदि स्तुतस्य मरुतो अधीथे—त्था विप्रस्य वाजिनो हवीमन् । मक्षु रायः सुवीर्यस्य दात नू चिद् यमन्य आदभदरावा	१५	
अत्यासो न ये मरुतः स्वश्रोत्रो यक्षदृशो न शुभयन्त मर्याः । ते हर्म्येष्ठाः शिशवो न शुभ्रा वत्सासो न प्रक्रीळिनः पयोधाः	१६	३६०
दृशस्यन्तो नो मरुतो मृळन्तु वरिवस्यन्तो रोदसी सुमेके । आरे गोहा नूहा वधो वो अस्तु सुन्नेभिरस्मे वसवो नमध्वम्	१७	
आ वो होता जोहवीति सतः सत्राचीं रातिं मरुतो गृणानः । य ईर्वतो वृषणो अस्ति गोपाः सो अद्वयावी हवते व उक्थैः	१८	
इमे तुरं मरुतो रामयन्ती—मे सहः सहस्र आ नमन्ति । इमे शंसं वनुष्यतो नि पान्ति गुरु द्वेषो अररुषे दधन्ति	१९	
इमे रधं चिन्मरुतो जुनन्ति भूमिं चिद् यथा वसवो जुषन्त । अपं बाधध्वं वृषणस्तमांसि धत्त विश्वं तनयं तोकमस्मे	२०	
मा वो वृत्रान्मरुतो निरराम मा पश्चाद् दधम रथयो विभागे । आ नः स्पार्हे भजतना वसव्येऽ यदीं सुजातं वृषणो वो अस्ति	२१	३६५
सं यद्धनन्त मन्युभिर्जनांसः शूरां यद्द्विष्वोषधीषु विश्वु । अधं स्मा नो मरुतो रुद्रियास—स्त्रातारो भूत पृतनास्वर्यः	२२	
भूरिं चक्र मरुतः पित्र्याण्यु—क्थानि या वः शस्यन्ते पुरा चित् । मरुद्भिरुग्रः पृतनासु साळ्हा मरुद्भिरित् सनिता वाजमवीं	२३	
अस्मे वीरो मरुतः शुष्म्यस्तु जनानां यो असुरो विधर्ता । अपो येन सुक्षितये तरेमा—ऽध स्वमोको अभि वः स्याम	२४	
तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्नि—राप ओषधीर्वनिनो जुषन्त । शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	२५	

॥ ३५ ॥ (ऋ० ७।५।७।१-७) त्रिण्डुप् ।

मध्वो वो नाम मारुतं यजत्राः प्र यज्ञेषु शर्वसा मदन्ति । ये रेजयन्ति रोदसी चिदुवीं पिन्वन्त्युत्सं यदयासुरुग्राः	१	३७०
निचेतारो हि मरुतो गृणन्तं प्रणेतारो यजमानस्य मन्म । अस्मार्कमद्य विदथेषु बार्हि—रा वीतये सदत पिप्रियाणाः	२	
नैतावद्वन्ये मरुतो यथेमे भ्राजन्ते रुक्मैरायुधैस्तनूभिः । आ रोदसी विश्वापिशः पिशानाः संमानमश्रयश्नते शुभे कम्	३	३७१

ऋधक् सा वो मरुतो विद्युदस्तु यद् व आगः पुरुषता कराम ।  
 मा वस्तस्यामर्षि भूमा यजत्रा अस्मे वो अस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ४  
 कृते चिदत्र मरुतो रणन्ता—ऽनवद्यासः शुचयः पावकाः ।  
 प्र णोऽवत सुमतिर्भिर्यजत्राः प्र वाजेभिस्तिरत पुष्यसे नः ५  
 उत स्तुतासो मरुतो व्यन्तु विश्वेभिर्नामभिर्नरो हवीषि ।  
 ददात नो अमृतस्य प्रजार्य जिगृत रायः सूनृता मघानि ६ ३७५  
 आ स्तुतासो मरुतो विश्व ऊती अच्छा सुरीन्सर्वताता जिगात ।  
 ये नस्मना शतिनो वर्धयन्ति यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७

॥ ३६ ॥ ( ऋ० ७।५.८।१-६ )

प्र साकमुक्षे अर्चता गणाय यो दैव्यस्य धाम्नस्तुविष्मान् ।  
 उत क्षोदन्ति रोदसी महित्वा नक्षन्ते नाकं निकृतेरवंशात १  
 जनूश्चिद् वो मरुतस्त्वेप्येण भीमासस्तुविमन्यवोऽयासः ।  
 प्र ये महोभिरोजसोत सन्ति विश्वो वा यामन् भयते स्वईक् २  
 ब्रुहद् वयो मघवञ्चो दधात जुजोषन्निन्मरुतः सुष्टुतिं नः ।  
 गतो नाध्वा वि तिराति जन्तुं प्र णः स्पार्हाभिरुतिभिस्तिरेत ३  
 युष्मोतो विप्रो मरुतः शतस्वी युष्मोतो अवा सहुरिः सहसी ।  
 युष्मोतः सम्राळुत हन्ति वृत्रं प्र तद् वा अस्तु धूतयो वृष्णम ४ ३८०  
 तां आ रुद्रस्य मीळहुषो विवासे कुविन्नंसन्ते मरुतः पुनर्नः ।  
 यत् सस्वती जिहीळिरे यदावि—रव तदेन ईमहे तुराणाम ५  
 प्र सा वाचि सुष्टुतिर्मघोना—मिदं सूक्तं मरुतो जुषन्त ।  
 आराच्चिद् द्वेषो वृषणो युयोत यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

॥ ३७ ॥ ( ७।५.९।१-११ )

( प्रगाथः= ( विषमा वृहती, समा सतोवृहती ). ७-८ त्रिष्टुप . ९-११ गायत्री । )

यं त्रायध्व इदमिदं देवासो यं च नर्यथ ।  
 तस्मा अग्ने वरुण मित्रार्यमन् मरुतः शर्म यच्छत १  
 युष्माकं देवा अवसाहनि प्रिय ईजानस्तरति द्विषः ।  
 प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति २  
 नहि बश्चरमं चन वसिष्ठः परिमंसते ।  
 अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबत कामिनः ३ ३८५

दै० [मरुत्] ४

नहि व ऊतिः पृतनासु मर्धति यस्मा अराध्वं नरः ।	
अभि व आवर्त सुमतिर्नवीयसी तूर्यं यात पिपीषवः	४
ओ षु घृष्ट्विराधसो यातनान्धोसि पीतये ।	
इमा वो हव्या मरुतो रर हि कं मो ष्वान्यत्र गन्तन	५
आ च नो बर्हिः सदताविता च नः स्पार्हाणि दातवे वसु ।	
अस्रेधन्तो मरुतः सोम्ये मर्धा स्वाहेह मादयाध्वे	६
सस्वश्चिद्धि तन्वः शुम्भमाना आ हंसासो नीलपृष्ठा अपसन्न ।	
विश्वं शर्षो अभितो मा नि षेदु नरो न रणवाः सर्वेने मदन्तः	७
यो नां मरुतो अभि दुर्हणायुस्तिरश्चित्तानि वसवो जिघांसति ।	
द्रुहः पाशान् प्रति स मुचीष्ट तपिष्ठन हन्मना हन्तना तम्	८ ३९०
सान्तपना इदं हविर्मरुतस्तज्जुष्टन । युष्माकोती रिशादसः	९
गृहमधास आ गत मरुतो मार्प भूतन । युष्माकोती सुदानवः	१०
इहह वः स्वतवसः कवयः सूर्यत्वचः । यज्ञं मरुत आ वृण	११
॥ ३८ ॥ ( ऋ० ७।१०।१८ ) जगती ।	
वि तिष्ठध्वं मरुतो विक्ष्विच्छत गृभायत रक्षसः सं पिनष्टन ।	
वयो ये भूत्वी पतर्यन्ति नक्तभिर्ये वा रिपो दधिर देवं अध्वरे	१८ ३९४
॥ ३९ ॥ ( ऋ० ८।१०।१८-१९ )	
( ३९१-४०६ ) विन्दु. पृतदक्षो वा आङ्गिरसः । गायत्री ।	
गौर्धयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम् । युक्ता वह्नी रथानाम्	१ ३९५
यस्या देवा उपस्थं व्रता विश्वे धारयन्ते । सूर्यामासा हुशे कम	२
तन् सु नो विश्वं अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः । मरुतः सोमपीतये	३
अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः । उत स्वराजो अश्विना	४
पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः । त्रिषधस्थस्य जावतः	५
उतो न्वस्य जाषमो इन्द्रः सुतस्य गोमतः । प्रातर्होतिव मत्सति	६ ४००
कदत्विपन्त सूर्यस्तिर आप इव सिधः । अर्धन्ति पूतदक्षसः	७
कद्रो अद्य महानां देवानामवो वृणे । त्मना च वुस्मर्वचंसाम्	८
आ ये विश्वा पार्थिवानि पप्रथन् रोचना दिवः । मरुतः सोमपीतये	९
न्यान् नु पूतदक्षसो विवो वो मरुतो हुवे । अस्य सोमस्य पीतये	१०
न्यान् नु ये वि रोदसी तस्तभुर्मरुतो हुवं । अस्य सोमस्य पीतये	११ ४०५
त्यं नु मरुतं गणं गिरिष्ठां वृषणं हुवे । अस्य सोमस्य पीतये	१२ ४०६

॥ ४० ॥ ( ऋ० १०।७।१-८ )

(४०७-४२२) स्यमरश्मिभर्गिवः । त्रिष्टुप . ५ जगती ।

अभ्रप्रुषो न वाचा प्रुषा वसु हविष्मन्तो न यज्ञा विजानुषः	
सुमारुतं न ब्रह्माणमर्हसे गणमस्तोष्येषां न शोभसे	१
श्रिये मयीसो अर्न्तैरकृण्वत सुमारुतं न पूर्वीरति क्षपः ।	
द्विवस्पुत्रास एता न येतिर आदित्यासस्त अक्रा न वावृधुः	२
प्र ये द्विवः पृथिव्या न बर्हणा त्मना रिरिञ्जे अभ्रान्न सूर्यः ।	
पाजस्वन्तो न वीराः पनस्यवां रिशादसो न मयी अभिद्यवः	३
युष्माकं बुध्रे अपां न यामनि विधुर्यति न मही श्रथर्यति ।	
विश्वस्सुर्यज्ञो अर्वागयं सु वः प्रयस्वन्तो न सत्राच आ गत	४
यूयं धूर्षु प्रयुजो न रश्मिभिर्ज्योतिष्मन्तो न भासा व्युष्टिषु ।	
श्येनासो न स्वयंशसो रिशादसः प्रवासो न प्रसितासः परिप्रुषः	५
प्र यद् वहध्वे मरुतः पराकाद् यूयं महः संवरणस्य वस्वः ।	
विद्वानासो वसवो राध्यस्याऽऽराच्चिद् द्वेषः सनुतयुयोत	६
य उद्वचि यज्ञे अध्वरेष्ठा मरुद्भ्यां न मानुषो ददाशत ।	
रेवत् स वयो दधते सुवीरं स देवानामपि गोपीश्रे अस्तु	७
ते हि यज्ञेषु यज्ञियांस ऊमा आदित्येन नाम्ना शंभविष्ठाः ।	
ते नोऽवन्तु रथतूर्मनीषां महश्च यामन्नध्वरे चकानाः	८

॥ ४१ ॥ ( ऋ० १०।७।१-८ ) त्रिष्टुप . २।५-७ जगती ।

विप्रासो न मन्मभिः स्वाध्यो देवाव्यो न यज्ञैः स्वप्रसः ।	
राजानो न चित्राः सुसंद्दशः क्षितीनां न मयी अरेपसः	१
अग्निर्न ये भ्राजसा रुक्मवक्षसा वातासो न स्वयुजः सद्यऊतयः ।	
प्रजातारो न ज्येष्ठाः सुनीतयः सुशर्माणो न सोमा ऋतं यते	२
वातासो न ये धुनयो जिगत्तवां ऽग्नीनां न जिह्वा विरोक्तिणः ।	
वर्मण्वन्तो न योधाः शिमीवन्तः पितृणां न शंसाः सुरातयः	३
रथानां न येराः सनाभयो जिगीर्वासो न शूरा अभिद्यवः ।	
वरेयवो न मयी घृतप्रुषो ऽभिस्वतारो अर्कं न सुष्टुभः	४
अश्वसो न ये ज्येष्ठास आशवा दिधिषवो न रथ्यः सुदानवः ।	
आपो न निन्नैरुदभिर्जिगत्तवो विश्वरूपा अङ्गिरसो न सामभिः	५

ग्रावाणो न सूरयः सिन्धुमातर	आदर्विरासो अद्रयो न विश्वहा ।		
शिंशूला न क्रीळयः सुमातरौ	महाग्रामो न यामन्नुत त्विषा	६	४२०
उषसां न केतवोऽध्वरश्रियः	शुभंयवो नास्त्रिभिर्व्यश्वितन् ।		
सिन्धवो न ययियो भ्राजहृष्टयः	परावतो न योजनानि मभिरे	७	
सुभागात्रो देवाः कृणुता सुरत्वा	नस्मान्स्तोतृन् मरुतो वावृधानाः ।		
अधि स्तोत्रम्यं सख्यस्यं गात	सनाद्धि वो रत्नधेयानि सन्ति	८	४२२

॥ ४२ ॥ ( य० ३।४४ )

प्रघासिनो हवामहे मरुतश्च रिशादसः ।	करभ्भेण सजोषसः	४४	४२३
------------------------------------	----------------	----	-----

॥ ४३ ॥ ( य० ७, ३६ )

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वत एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ।			
उपयामगृहीतोऽसि मरुतां त्वौजसे		३६	४२४

॥ ४४ ॥ ( ४२५-४२७ ) ( य० १७।८४-८६ )

दृक्ष्वास एतादृक्षास ऊ षु णः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास एतेन ।			
मितासश्च सम्मितासो नो अद्य सभरसो मरुतो यज्ञे अस्मिन्		८४	४२५
स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च ।	क्रीडी च भाकी चोज्जेषी	८५	
इन्द्रं देवीर्विशो मरुतोऽनुवर्मानोऽभवन् यथेन्द्रं देवीर्विशो मरुतोऽनुवर्मानोऽभवन् ।			
एवमिमं यजमानं देवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्मानो भवन्तु		८६	४२७

॥ ४५ ॥ ( य० २५।२० )

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः	शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ।		
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो	विश्वे नो देवा अवसागमन्निह	२०	४२८

॥ ४६ ॥ ( साम० ३।५६ ) ज्यावाश्व आत्रेयः ॥ अनुष्टुप् ।

यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना रथेष्वा ।	पिबन्तो मदिरं मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते ५	४२९	
-------------------------------------	---	-----	--

॥ ४७ ॥ ( अथर्व० १।२६।३-४ )

( ४३०-४३३ ) ब्रह्मा । ३ गायत्री, ४ ण्काचसाना पादनिष्ठत् ।

यूर्यं नः प्रवतो नपा न्मरुतः सूर्यत्वचसः ।	शर्म यच्छाश्र सप्रथाः	३	४३०
सुषूदत मूडत मूडया नस्तनूभ्यो मयस्तोकेभ्यस्कृधि		४	

॥ ४८ ॥ ( अथर्व० ५।२६।५ ) छिपदार्षी उष्णिक ।

छन्वांसि यज्ञे मरुतः स्वाहा	मातेव पुत्रं पिपृतेह युक्ताः	५	४३१
-----------------------------	------------------------------	---	-----

॥ ४९ ॥ (अथर्व० १३।१।३) जगती ।

यूयमुग्रा मरुतः पृश्निमातर इन्द्रेण युजा प्र मृणीत शत्रून् ।

आ वो रोहितः शृणवत् सुदानवस्त्रिषत्तासो मरुतः स्वादुसमुदः

३ ४३३

॥ ५० ॥ (अथर्व० ३।१।२)

(४३४-४३६) अथर्वा । विराड्गर्भा भुरिक् ।

यूयमुग्रा मरुत ईदृशे स्थाभि प्रेत मृणत सहध्वम् ।

अमीमृणन् वसवो नाथिता इमे अग्निर्ह्येषां दूतः प्रत्येतु विद्वान्

२

॥ ५१ ॥ (अथर्व० ३।१।६) त्रिष्टुप् ।

असौ या सेना मरुतः परेषामस्मानैत्यभ्योर्जसा स्पर्धमाना ।

तां विध्यत तमसापव्रतेन यथेषामन्यो अन्यं न जानात्

६ ४३५

॥ ५२ ॥ (अथर्व० ५।२।४।६) चतुष्पदातिशकरी ।

मरुतः पर्वतानामधिपतयस्ते मावन्तु । अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां

प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्यामाकृत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा

६ ४३६

॥ ५३ ॥ (अथर्व० ४।१।३।४) (४३७-४३९) जंतातिः । अनुष्टुप् ।

त्रायन्तामिमं देवास्त्रायन्तां मरुतां गणाः । त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असंत ४

॥ ५४ ॥ (अथर्व० ६।२।२।२-३) २ चतुष्पदा भुरिग्जगती, ३ त्रिष्टुप् ।

पर्यस्वतीः कृणुथाप ओषधीः शिवा यदेजथा मरुतो रुक्मवक्षसः ।

ऊर्जं च तत्र सुमतिं च पिन्वत यत्रा नरो मरुतः सिञ्चथा मधु

२

उदुपुतो मरुतस्तां ईयते वृष्टिर्या विश्वा निवर्तस्पुणार्ति ।

एजाति ग्लहां कन्येवितुन्नेरुं तुन्द्वाना पत्येव जाया

३ ४३९

॥ ५५ ॥ (अथर्व० ४।२।७।१-७) (४४०-४४६) १-७ मृगारः । त्रिष्टुप् ।

मरुतां मन्वे अधि मे ब्रुवन्तु प्रेमं वाजं वाजसाते अवन्तु ।

आशूनिव सुयमानह ऊतये ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१ ४४०

उत्समाक्षितं व्यचन्ति ये सदा य आसिञ्चन्ति रसमोषधीषु ।

पुरो दधे मरुतः पृश्निमातृस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

२

पयो धेनूनां रसमोषधीनां जवमर्वतां कवयो य इन्वथ ।

शग्मा भवन्तु मरुतो नः स्योनास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

३

अपः समुद्राद् दिवमुद्ग्रहन्ति दिवस्पृथिवीमभि ये सृजन्ति ।

ये अद्भिरीशाना मरुतश्चरन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

४

ये कीलालेन तर्पयन्ति ये घृतेन ये वा वयो मेदसा संसृजन्ति ।

ये अद्भिरीशाना मरुतो वर्षयन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

५ ४४४



यदीदृिदं मरुतो मारुतेन यदि देवा देव्येनेदृगारं ।

यूयमीशिध्वे वसवस्तस्य निष्कृते स्ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

६

तिग्ममनीकं विद्वितं सहस्वन्मारुतं शर्धः पृतनासूग्रम ।

स्तौमि मरुतो नाथितो जोहवीमि ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

७

४४६

॥ ५६ ॥ ( अथर्व० ७।७७ [८२] १३ ) (४४७) अङ्गिराः । जगती ।

संवत्सरीणां मरुतः स्वर्का उरुक्षयाः सर्गणा मानुपासः ।

ते अस्मत् पाशान् प्र मुञ्चन्त्वंनसः सांतपना मत्सरा मादयिष्णवः

३

४४७

मरुत्सहचारी देवगणः ।

### (१) मरुद्रुद्रविष्णवः ।

॥ ५७ ॥ ( ऋ० ५।३।३ ) (४४८) वसुश्रुत आत्रेयः । त्रिष्टुप ।

तव श्रियं मरुतो मर्जेयन्त रुद्र यत ते जनिम चारु चित्रम् ।

पदं यद् विष्णोरुपमं निधायि तेन पामि गुह्यं नाम गोनाम

३

४४८

### (२) मरुतोऽग्रामरुतो वा ।

॥ ५८ ॥ ( ऋ० ५।६०।१-८ )

(४४९-४५६) श्यावाश्व आत्रेयः । त्रिष्टुप . ७-८ जगती ।

दृळे अग्निं स्ववसं नमोभि—रिह प्रसक्तो वि चयत् कृतं नः ।

रथैरिव प्र भेरे वाजयन्तिः प्रदक्षिणिन्मरुतां स्तोममुध्याम्

१

आ ये तस्थुः पृषतीषु श्रुतासु सुखेषु रुद्रा मरुतो रथेषु ।

वनां चिदुग्रा जिहते नि वो भिया पृथिवी चिद रेजते पर्वतश्चित्

२

४५०

पर्वतश्चिन्महिं वृद्धो विभाय विवश्चित् सानुं रेजत स्वने वः ।

यत् क्रीळथ मरुत ऋष्टिमन्त आप इव सधयश्चो धवध्वे

३

वरा इवेद् रंवतासो हिरण्यै—रभि स्वधाभिस्तन्वः पिपिशे ।

श्रिये श्रेयांसस्तवसो रथेषु सत्रा महांसि चक्रिरे तनूपु

४

अज्येष्ठासो अर्कनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय ।

युवां पिता स्वपां रुद्र एषां सुदुग्रा पृथ्विः सुदिनां मरुद्भ्यः

५

यदुत्तमे मरुतो मध्यमे वा यद् वावमे सुभगासो विवि ष्ट ।

अतो नो रुद्रा उत वा न्वस्या—ऽग्नें वित्तान्द्रविषो यद् यजाम

६

अग्निश्च यन्मरुतो विश्ववेदसो दिवो वहध्व उत्तरादधि ण्णुभिः ।

ते मन्वसाना धुनयो रिशादसो वामं धत्त यजमानाय सुन्वते

७

४५५

अग्रं मरुद्भिः शुभयद्भिर्ऋक्भिः सोमं पिब मन्दसानो गणाश्रिभिः ।  
पावकेभिर्विश्वमिन्वेभिरायुभिर्वैश्वानर प्रदिवा केतुना सजृः

८ ५५६

## (३) सोमः मरुतः ।

॥ ५९ ॥ (अथर्व० १।२०।१) अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

अदारसृद् भवतु देव सोमा—ऽस्मिन् यजे मरुतो मूडता नः ।

मा नो विददभिभा मो अशस्ति—र्मा नो विदद वृजिना द्वेष्या या

१ ४५७

## (४) मरुत्पर्जन्यो ।

॥ ६० ॥ (अथर्व० ४।१५।४) विराट् पुरस्ताद्बृहती ।

गुणास्वोपं गायन्तु मरुताः पर्जन्य घ्राषिणः पृथक् ।

सर्गा वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनुं

४ ४५८

## (५) मरुत आपः ।

॥ ६१ ॥ (४।१९-४६४) (अथर्व ४।१५।५-२०)

(१. विराट् जगती, ७ अनुष्टुप्, ६, ८ त्रिष्टुप्, ९ पथ्या पंक्तिः, १० सुरिक।)

उदीरयत मरुतः समुद्रत—स्त्वेषो अर्को नभ उत्पातयाथ ।

महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्वा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु

५

अभि क्रन्द स्तनयार्दयोद्वाधिं भूमिं पर्जन्य पर्यसा समङ्घि ।

त्वया सृष्टं बहुलमैतु वर्ष—माशरिषी कृशगुरित्वस्तम

६

४६०

सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।

मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनुं

७

आशामाशां वि द्योततां वाता वान्तु दिशोर्दिशः ।

मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः सं यन्तु पृथिवीमनुं

८

आपो विद्युदुभ्रं वर्ष सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।

मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः प्रावन्तु पृथिवीमनुं

९

अपामग्निस्तनूभिः संविद्वानो य ओषधीनामधिपा बभूव ।

स नो वर्ष वन्तुतां जातर्वेदाः प्राणं प्रजाभ्यो अमृतं दिवस्परि

१०

४६४

# मरुद्देवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः।

## ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[४] १।६।९ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । मरुतः)

दिवो वा रोचनादधि ।

१।४९।१ (प्रस्कण्व. काण्वः । उपा ।)

दिवश्चिद् रोचनादधि ।

(२७५) ५।५६।१ (श्यावाश्व आत्रेय । मरुतः ।)

८।८।७ (सन्वसः काण्वः । अश्विनो ।)

दिवश्चिद् रोचनादध्या ।

[५] १।६।५।२ (मेघतिथि काण्वः । मरुतः ।)

यूयं हि धा सुदानवः ।

६।५।१।१५ (ऋजिष्वा भारद्वाज । विश्वेदेवाः ।)

(५७) ८।७।१२ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः ।)

८।८।९ (कुमादी काण्वः । विश्वे देवाः ।)

[९] १।३७।४ (कण्वो घौरः । मरुतः ।)

प्र व .. ।

देवत्तं ब्रह्म गायत ।

(इन्द्र २०६) ८।३२।२७ (मेवातिथि काण्व । इन्द्र ।)

प्र व . . . . .

देवत्तं ब्रह्म गायत ।

[६, १०] १।३७।१, ५ क्रीक वः शर्धो (५ क्रीक यच्छधो) मारुतम् ।

[१३] १।३७।८ (कण्वो घौरः । मरुतः ।)

भिया यामेषु रेजते ।

(८६) ८।२०।५ (गोभरिः काण्वः । मरुतः ।)

भूमियामेषु रेजते ।

[१६] १।३७।११ (कण्वो घौरः । मरुतः ।)

प्र श्यावयन्ति यामभिः ।

(२७८) ५।५६।४ (श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः ।)

[१७] १।३७।१२ (कण्वो घौरः । मरुतः ।)

मारुतो यद्ध वो वलं ।

(५६) ८।७।११ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः ।)

वो दिवः ।

[२१] १।३८।१ (कण्वो घौरः । मरुतः ।)

कद्ध नूनं कधप्रियः ।

(७६) ८।७।३१ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः ।)

[४०] १।३९।५ (कण्वो घौरः मरुतः)

प्र वेपयन्ति पर्वतान् ।

प्रो आगत मरुतो दुर्मदा इव देवासः सर्वथा विशा ।

५।२६।९ (वम्युव आत्रेयाः । विश्वे देवाः)

णट मरुतो ।

देवासः सर्वथा विशा ।

(४९) ८।७।४ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)

वपन्ति मरुतो मिह प्र वेपयन्ति-पर्वतान् ।

[४१] १।३९।६ (कण्वो घौरः । मरुतः)

उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं ।

(१२७) १।८।५।५ (गोतमो राष्ट्रगण । मरुतः)

प्र यद् रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं ।

[ ] १।३९।६ (कण्वो घौरः । मरुतः)

उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं प्रष्टिर्वहति रोहितः ।

(७३) ७।७।२८ (पुनर्वत्स काण्वः । मरुतः)

यदेषा पृषती रथे प्रष्टिर्वहति रोहितः ।

[४५] १।३९।७ इन्द्रा भवो वृणीमहे ।

१।४२।५ (कण्वो घौरः । पृषा)

प्रपन्नवो वृणीमहे ।

[६११] १।६४।४ (नोधा गौतमः । मरुतः )

वक्ष सु रुक्मो अधि येतिरे शुभं ।

(२६०) ५।५४।११ (श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः)

वक्ष सु रुक्मा मरुतो रथे शुभः ।

[११३] १।६४।६ उर्यं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितम् ।

९।७२।६ (हरिमन्त आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

अंगु दुहन्ति—

[११९] (नोधा गौतमः । मरुतः )

रुद्रस्य सूनुं हवसा गृणीमसि ।

रजरनुरं तवस मारुतं ।

(३४४) ६।६६।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । मरुतः)

त वृधन्तं मारुतं प्राजदष्टि रुद्रस्य सूनुं हवसा विवासे ।

[१२०] १।६४।३३ (नोधा गौतमः । मरुतः )

तस्थौ व ऊनी मरुतो यमावत ।

(२६५) १।१६६।८ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । मरुतः)

प्रभी रक्षता मरुतो यमावत ।

[१२०] १।६४।१३ (नोधा गौतमः । मरुतः)  
मरुतो . ।  
अर्वद्विर्वाजं भरते धना नृभिः ।  
१।२६।३ (गृन्ममदः औनकः । ब्रह्मणरपतिः)  
स इज्जनेन स विशा स जन्मना स पुत्रैर्बाजं भरते धना नृभिः ।  
(इन्द्रः २८०७) १०।१४७।४ (मुवेदाः शैरीपि । इन्द्रः)  
स इन् ।

मक्ष् स वाज भरते धना नृभिः ।  
[१२४] १।८५।१ त उक्षितासो महिमानमाशत ।  
(इन्द्र ३२०३) ८।५२ (वाल० ११)।२  
(मुपर्णः काण्व. । इन्द्रावरुणौ)

• इन्द्रावरुणा महिमानमाशत ।  
[१२७] १।८५।५ प्र यद् रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं ।  
(४१) १।३९।६ (कण्वो धौरः । मरुतः)  
उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं ।  
[१३०] १।८५।८ (गौतमो राहृगणः । मरुतः)  
भयन्ते विश्वा भुवना मरुद्भ्यो ।  
(१६१) १।१६६।४ (अगरुस्यो मैत्रावरुणः । मरुतः)  
. . भुवनानि हर्म्या ।

[१३१] १।८५।९ अहन् वृत्र निरपामौब्जदर्णवम् ।  
(इन्द्रः ८०९) १।५६।५ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्र )

[१३७] १।८६।३ स गन्ता गोमति ब्रजे ।  
(इन्द्रः २२४४) ७।३१।१० गमस्य गोमति ब्रजे ।  
(इन्द्रः १८२५) ८।४६।२ (वज्रोऽरुव्यः । इन्द्र )

(इन्द्रः ५०९) ८।५१ (वाल० ३) । ५ गमेम गोमति ब्रजे  
[१३८] १।८६।४ (गौतमो राहृगणः । मरुतः)  
सुतः सोमो दिविष्टिषु ।  
उक्थं मदश्च शस्यते ।  
(इन्द्र ६३६) ८।७६।९ (कुरुमुनिः काण्व. । इन्द्र )  
सुतं सोम दिविष्टिषु ।  
(इन्द्रः ३३१७) ४।४९।१ [वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणरपतिः]  
उक्थं मदश्च शस्यते ।

[१३९] १।८६।५ [गौतमो राहृगणः । मरुतः]  
विश्वा यश्चर्षणीरभि ।  
[अभिः ६२६] ४।७।४ [वामदेवो गौतमः । अभिः]  
[अभिः ९०३] ५।२३।१ [द्युस्रो विश्वचर्षणिगत्रेयः । अभिः]

[१४८] १।८७।४ [गौतमो राहृगणः । मरुतः]  
असि सत्य ऋणयावानेद्यो ।  
२।२३।११ [गृन्ममदः औनकः । ब्रह्मणरपतिः]  
ऋणया ब्रह्मणरपत ।

[१९१] १।१६८।९ [अगरुस्यो मैत्रावरुणः । मरुतः]  
आदित् स्वधामिषिरा पर्यपश्यन् ।  
१०।१५७।५ [भुवन आप्त्यः साधनो वा सौवनः । विश्व देवा ]  
[१९२] १।१६८।१० = [इन्द्रः ३२६४] १।१६५।१५  
=[१७२] १।१६६।१५ = [१८२] १।१६७।११  
[अगरुस्यो मैत्रावरुणः । मरुत्वानिन्द्रः]  
एष व. स्तोमो . . कारोः ।  
पुषा यामीष्ट . . जीरदानुम् ॥

### ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[१९८] २।३०।११ तं वः शर्षं मास्त ।  
(२४३) ५।५३।१० तं वः शर्षं रथाना ।  
[१०९] २।३४।४ (गृन्ममद औनकः । मरुतः)

पृषदश्वासो अनवभ्रराधसः ।  
(२६६) ३।२६।६ (गाथिनो विश्वामित्रः । मरुतः )

### ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[२१६] ३।२६।६ = (२०२) २।३४।४

### ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

[२३०] ५।५१।४ [श्यावाश्र आत्रेयः । मरुतः]  
वो . . . . स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।  
[अभिः १०६३] ६।१६।२२ [भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अभिः]  
वः . . स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।  
द्वै० [मरुत्] ५

[२४३] ५।५३।१० त्वेयं गणं मास्तं नव्यसीनाम् ।  
[२९२] ५।५८।१ रतुपे गणं ।  
[२४२] ५।५३।१६ [श्यावाश्र आत्रेयः । मरुतः]  
रणन् गावो न यवसे ।

- १०।२५।१ [विमद ऐन्द्र प्राजापत्यो वा वसुकृद्धा वासुकः ।  
सोम ]  
रणन् गावो न यवसे विवक्षसे ।  
[२६०] ५।५४।११ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुत ]  
विद्युतो गभस्त्वो शिप्रा शीर्षसु वितता हिरण्ययीः ।  
[७०] ८।७।२५ [पुनर्वत्मः काण्वः । मरुत ]  
विद्यद्भस्ता ...शिप्रा शीर्षन् हिरण्ययीः ।  
[२६५-७३] ५।५५।१-९ शुभ यातामनु रथा भवृत्सत ।  
[२६७] ५।५५।३ विरेंकिण सूर्यस्येव रश्मयः ।  
(अग्निः १६५४) १०।९।१४ (अरुणो वैतहृद्यः । अग्निः)  
अरंपस सूर्यस्येव रश्मयः ।  
[२७३] ५।५५।९ [श्यावाश्व आत्रेयः मरुत ]  
अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्तन ।  
अधि स्रोत्रस्य सख्यस्य गातन ।  
६।५।५ (ऋजिश्वा भारद्वाज । विश्वे देवाः)  
अस्मभ्य शर्म बहुल वि यन्त ।  
(४२२) १०।७।८ (रयूमरश्मिर्भार्गव । मरुतः)  
अधि स्रोत्रस्य सख्यस्य गात ।  
[२७४] ५।५५।१०=४।५।६ [वामदेवो गौतमः । बृहस्पति ]  
वयं स्याम ण्वयो रयीणाम् ।  
[२७५] ५।५६।१=१।४९।१ [प्रकण्व काण्व । उषा ]  
दिवश्चिद् रोचनाःधि ।  
[२७८] ५।५६।४=[१६] १।३७।११

- प्र श्यावयन्ति यामभिः ।  
[२८०] ५।५६।६ युङ्गध्वं हारुषी रथे ।  
१।१४।१२ [मिधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः ]  
युक्त्वा हारुषी रथे ।  
[ " ] ५।५६।६ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुत ]  
रथे ।  
अजिरा धुरि वोळहवे वहिष्ठा धुरि वोळहवे ।  
१।१३।३ [परच्छेपो देवोदासिः । वायु ]  
[२९०] ५।५७।७ [श्यावाश्व आत्रेय । मरुत ]  
भक्षीय वो ऽवसो दैव्यस्य ।  
[इन्द्रः १५५३] ४।२।१० [वामदेवो गौतमः । इन्द्रः]  
भक्षीय ते ऽवसो दैव्यस्य ।  
[२९१] ५।५७।८=[२९९] ५।५८।८ [श्यावाश्व आत्रेय । मरुतः]  
हये नरो मरुतो मृळता नस्तुक्विमघासो भमृता ऋतज्ञा ।  
सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्भिरयो बृहदुक्षमाणाः ।  
[२९२] ५।५८।१=[२४३] ५।५३।१०  
[३१९] ५।८७।२ (एवयामरुदात्रेयः । मरुतः)  
दाना मङ्गा तदेषाम् ।  
(९५) ८।२०।१४ (सोमरिः काण्वः । मरुत )  
[३२२] ५।८७।५ (एवयामरुदात्रेयः । मरुतः)  
स्वायुधास इष्मिणः ।  
(३५५) ७।५६।११ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुत )  
स्वायुधास इष्मिणः सुनिष्का ।

### ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

- [३३४] ६।६६।१ (वार्हगपत्यो भरद्वाजः । मरुतः)  
शुक दुदुहे पृश्निरूध ।  
(अग्निः ६७५) ४।३।१० (वामदेवो गौतमः । अग्निः)  
[३४१] ६।६६।८ नास्य वर्ता न तरुता न्वस्ति ।  
१।४०।८ (कण्वो घौर । ब्रह्मणस्पतिः)  
नास्य वर्ता न तरुता महाधने ।  
[ ' ] ६।६६।८ मरुतो यमवथ वाजसातौ ।

- १०।३।१४ (लुसो धानाकः । विश्वे देवाः)  
य देवासोऽनथ वाजसातौ ।  
१०।६३।१४ (गय प्लात । विश्वे देवाः)  
[ " ] ६।६६।८ तोके वा गोषु तनये यमप्सु ।  
(इन्द्र १९४१) ६।२५।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)  
.... यदसु ।  
[३४४] ६।६६।११=(११९) १।६४।१२

### ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

- [३५५] ७।५६।११-(३२२) ५।८७।५  
[३६७] ७।५६।२३ इत् मनिता वाजमर्वा ।  
(इन्द्रः २०१७) ६।३३।२ (अनुहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)  
[३६९] ७।५६।२५=७।३४।२५ यूय पात स्वस्तिभिः सदा नः ।  
[ " ] ७।५६।२५ आप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।

- १०।६६।९ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वे देवाः)  
आप ओषधीर्वनिनानि यज्ञिया ।  
७।३४।२५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)  
[३७३] ७।५७।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)  
यद्वा आगः पुरुषता कराम ।  
अस्मे वो अस्तु सुमतिश्चमिष्ठा ।

- १०।१५।६ (शङ्खा यामायनः । पितरः)  
यद्... ।  
७।७०।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)  
अस्मे वामस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ।  
[३७६] ७।५७।७ आ स्तुतासो मरुतो विश्व ऊती ।  
५।४३।१० (अग्निर्भौमः । विश्वे देवाः)  
विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती ।  
[३७७] ७।५८।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)  
प्र णः स्वाह्वाभिरुतिभिस्तिरेत ।

- (इन्द्रः ३१९४) ७।८४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)  
रेतम् ।  
[३८२] ७।५८।६ आराशिद् द्वेषो वृषणो युयोत ।  
(इन्द्रः २१११) ६।४७।१३ (गर्गो भागद्वाजः । इन्द्रः )  
आराशिद् द्वेषः सानुत युयोतु ।  
[३८४] ७।५९।२ युष्माक देवा अवसाहनि ।  
१।११०।७ (कुत्स आगिरसः । ऋभवः )  
[ " ] ७।५९।२ ( वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः )  
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दासति ।  
८।२७।१६ (मनुर्वैवस्यत । विश्वे देवाः )

### ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

- [४६] ८।७।१ प्र यद् वक्षिष्टुभमिषं ।  
(इन्द्रः २३०४) ८।६९।१ (प्रियमेध आगिरसः । इन्द्रः )  
प्रम वक्षिष्टुभमिष ।  
[४७] ८।७।२ यद्भृ तविषीयवो ।  
(इन्द्रः २६८) ८।६।२६ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)  
यद्भृ तविषीयस ।  
[४७.५९] ८।७।२, १४ यामं शुभ्रा अचिध्वम् ।  
[४८] ८।७।३ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)  
धुक्षन्त पिप्युषीमिषम् ।  
(इन्द्रः ३४५) ८।१३।२५ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)  
धुक्षस्व पिप्युषीमिषमवा च न ।  
(इन्द्रः ५३७) ८।५४ (वाल० ६)।७ (मातरिश्वा काण्वः । इन्द्रः)  
धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ।  
९।६१।१५ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)  
धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ।  
[४९] ८।७।४ = (४०) १।३९।५  
प्र वेपयन्ति पर्वतान् ।  
[५३, ८१] ८।७।८, ३६ ते भानुभिर्वि तस्थिरे ।  
[५५] ८।७।१० (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)  
हुदुहे वज्रिगे मधु ।  
(इन्द्रः २३०९) ८।६९।६ (प्रियमेध आगिरसः । इन्द्रः)  
[५६] ८।७।११ = (१७) १।३७।१२  
मरुतो यद्द वो दिवः [बलं] ।  
[५७] ८।७।१२ = (५) १।१५।२  
यूयं हि ष्टा सुदानवो [०व] ।  
[५८] ८।७।१३ पुरुक्षु विश्वधायसम् ।  
८।५।१५ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)

- [६०] ८।७।१५ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः )  
एषां सुभ्र भिक्षेत मल्यैः ।  
८।१८।१ (इरिम्बिन्धिः काण्वः । आदित्याः )  
[६५] ८।७।२० (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)  
ब्रह्मा को वः सपर्यति ।  
(इन्द्रः ५९५) ८।६४।७ प्रगाथ काण्वः । इन्द्रः )  
ब्रह्मा कस्त सपर्यति ।  
[६७] ८।७।२२ (पुनर्वत्स काण्वः । मरुतः )  
सम् स क्षोणी समु सूर्यम् । सम् ।  
(इन्द्रः ५२४) ८।५२ (वाल० ४)।१०  
(आयुः काण्वः । इन्द्रः)  
सम् . सं क्षोणी समु सूर्यम् ।  
सम् सम् ।  
[६८] ८।७।२३ = (इन्द्रः २५५) ८।६।१३  
वि वृत्र पर्वशो ययु (रजनः) ।  
[७०] ८।७।२५ = २६०) ५।५४।११  
[७१] ८।७।२६ = (इन्द्रः १०१९) १।६३०।९  
उशना यत् परावतः ।  
[७३] ८।७।२८ = (४१) १।३९।६  
[७६] ८।७।३१ = (२१) १।३८।१  
[८०] ८।७।३५ (पुनर्वत्स काण्वः । मरुतः )  
वहन्यन्तरिक्षेण पतत ।  
१।२५।७ (शुनः श्रेप आजीगतिः । वरुणः )  
पदमन्तरिक्षेण पतताम् ।  
[८६] ८।२०।५ = (१३) १।३७।८  
भूमि (भिया) यामिषु रेजते ।

[ ८९ ] ८।२०।८ (सोभरिः काण्वः । मरुतः)

रथे कोशे हिरण्यये ।

८।२२।९ (सोभरिः काण्व । अश्विनौ)

रथे कोशे हिरण्यये वृषण्वस् ।

[ ९५ ] ८।२०।१४ = (३१९) ५।८७।२

[ १०७ ] ८।२०।२६ (सोभरिः काण्वः । मरुतः)

तेना नो अधि वोचत ।

८।६७।६ (मन्व्यः साम्मदः मान्यो मैत्रावरुणिः बहवो वा

मन्व्या जालनडाः । आदित्याः)

[ " ] ८।२०।२६ इष्कर्ता विदुतं पुन ।

(इन्द्रः ९८) ८।१।१२ (मेधातिथि-मेधातिथी काण्वौ ।

इन्द्र )

[ ३९७ ] ८।९४।३ तन् सु नो विश्वे अर्यं आ सदा गृणन्ति कारवः ।

६।४५।३३ (अयुर्बार्हस्पत्यः । वृषुस्तथा)

[ " ] ८।९४।३ मरुतः सोमपीतये ।

१।२३।१० (मेधातिथिः काण्वः । विश्वे देवाः)

[ ३९८ ] ८।९४।४ अस्ति सोमो अयं सुतः ।

(इन्द्रः १७६६) ५।४०।२ वषा सोमो अयं सुतः ।

[ ४०२ ] ८।९४।८ = १।३८।१०

[ ४०३ ] ८।९४।९ = १।२३।१० (मेधातिथि काण्वः । विश्वे देवाः)

[ ४०४-६ ] ८।९४।१०-१२ अस्य सोमस्य पीतये ।

= १।२२।१ (मेधातिथि काण्वः । अश्विनौ)

(इन्द्रः ३२१३) १।२३।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रवायु )

(इन्द्रः ३३२१) ४।४९।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती)

(इन्द्रः ३०५५) ६।५९।१० (बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । इन्द्राग्नी)

(इन्द्रः ६३३) ८।७६।६ (कुरुसुति काण्वः । इन्द्रः)

५।७१।३ (बाहुवृक्त अत्रेयः । मित्रावरुणौ )

## ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[ ४१२ ] १०।७७।८ = (इन्द्रः २१११) ६।४७।१३

(गणो भारद्वाज । इन्द्रः)

[ ४१६ ] १०।७७।८ ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः ।

७।३९।४ (वासष्टो मैत्रावरुणिः । विश्वे देवाः)

[ ४२२ ] १०।७८।८ = (२७३) ५।५।९



# दैवत-संहितान्तर्गत मरुद्देवता-मन्त्राणां उपमासूची ।



अमय न इयानाः ६, ६६, २; ३३५ मरुतः शोशुचन् ।  
 अमयः न २, ३४, १; १९९ शोशुचानाः ।  
 " " ५, ८७, ३; ३२० स्वविद्युत ।  
 " " ५, ८७, ६; ३२३ शुशुक्रासः ।  
 अग्नि न १०, ७८, २; ४१६ भाज्रमा रुक्मवक्षसः ।  
 अग्नीनां न जिह्वा १०, ७८, ३; ४१७ विरोकिणः ।  
 अग्निपः यथा ५, ६१, ४; ३११ [तद्वत् प्रदासा ] ।  
 अङ्गिरस न १०, ७८, ५; ४१९ सामभिः विश्वरूपाः ।  
 अत्यम् न १, ६४, ६; ११३ वाजिन मिहे वि नयन्ति ।  
 अत्यासः न ७, ५६, १६; ३६० स्वञ्जः ।  
 अत्याः इव ५, ५२, ३; ५०२ सुभ्रवः चारव ।  
 अत्यान् इव वाजिषु २, ३४, ३; २०१ अत्यान् उक्षन्ते ।  
 अदितेः इव व्रतम् १, १६६, १२; १६९ दीर्घ दात्रम् ।  
 अद्रयः न ५, ८७, २ ३१९ अधृष्टास ।  
 " " आर्ददिरासः १०, ७८, ६; ४२० विश्वहा ।  
 अध्वरस्य इव ६, ६६, १०; ३४३ मरुत दिद्यत् ।  
 अन्तम् न १, ३७, ६ ११ सीम् धूनुथ ।  
 अपः न १, ६४, १; १०८ मनसा गिर समञ्जे ।  
 आपः इव ८, ९६, ७; ४०१ सूरयः तिरः इषन्त ।  
 " " ५, ६०, ३; ४५१ सध्वञ्जः धवध्वे ।  
 " " न १०, ७८, ५; ४१९ निम्नेः उदभि जिगान्तवः ।  
 अपां न उर्मयः १, १६८, २; १८४ सहस्रियासः मरुतः ।  
 अपां न यामनि १०, ७७, ४; ४१० युष्मार्कं बुध्ने मही न ।  
 अभ्रपुषः न १०, ७७, १; ४०७ वाचा वसुपुषा ।  
 अभ्रात् न सूर्यः १०, ७७, ३; ४०९ त्मना प्र रिरिञ्जे ।  
 आञ्जियाः न २, ३४, २; २०० वृष्टय वि छुतयन्त ।  
 अमतिः न १, ६४, ९; ११६ [तेजः] रथेषु आ तस्थौ ।  
 अराः इव ५, ५८, ५; २९६ अचरमाः ।  
 अराणां न चरमः ८, २०, १४; ९५ एषां दाना मङ्गा ।  
 अर्कम् न अभिस्वतरिः १०, ७८, ४; ४१८ सुष्टुभः ।  
 अर्णः न ८, २०, १३; ९४ सप्रथ स्वेषम् ।  
 " " १, १६७, ९; १८० मरुतः द्वेषः परि प्ठुः ।  
 अर्यमणम् न ६, ४८, १४; ३३० मन्द्रम् ।  
 अर्यमणः न ५, ५४, ८ २५७ [दीसा] ।

अश्वा इव ५, ५९, ५; ३०४ [श्रीघ्नगन्तारः] ।  
 अश्वास न १०, ७८, ५; ४१९ ज्येष्ठासः आशवः ।  
 अश्वाः इव अध्वनः ५, ५३, ७; २४० क्षोदसा रजः प्र सस्यु ।  
 अश्वाम् इव ऊधनि २, ३४, ६; २०४ धेनु पिप्यत ।  
 असुर्या इव १, १६८, ७; १८२ रातिः जग्जती ।  
 अहा इव ५, ५८, ५; २९६ अचरमा ।  
 आशन् इव अथ ७, २७, १; ४४१ सुयमान् अह्म ऊतथे ।  
 इत्या न नभसः १, १६७, ६; १७६ स्वेष प्रतीका विधतः ।  
 इन्द्रम् न ६, ४८, १४; ३३० सुक्रतुं माहनं गणम् ।  
 इन्द्रम् दैवी यथा वा ०५ १७, ८६; ४२७ यजमानं विश्वाः ।  
 इषम् न १, ३९, १०; ४५ द्विषं ऋषिद्विषे सृजत ।  
 जुपरा न १, १६७, ३; १७४ ऋष्टिः ।  
 उषा न रामीः अरुणेः २, ३४, १२; २१० मदः ज्योतिषा ।  
 उपसां न केतव १०, ७८, ७; ४२१ अध्वरश्रियः ।  
 उस्ताः इव केचित् १, ८७, १; १४५ अग्निभिः वयानञ्जे ।  
 ऋक्षः न ५, ५६, ३; २७७ अमः शिमीवान् ।  
 ऋजिष्यासः न २, ३४, ४; २०३ वयुनेषु धूर्षद ।  
 ऋष्टिषु प्रयतासु १, १६६, ४; १६१ विश्वा हर्म्या भुवनानि  
 एतसः न अहन्यः १, १६८, ५; १८७ पुरुषैषा [मोत्रैः] ।  
 एताः न यामे ५, ५४, ५; २५४ योजनं दीर्घं ततान ।  
 ऐधा इव १, १६६, १; १५८ तविषाणि कर्तेना ।  
 क्रिणम् न ५, ५९, ३; ३०४ भूमिं रेजथ ।  
 क्षितीनां न मर्याः १०, ७८, १; ४१५ अरेपसः ।  
 गर्भम् इव भर्ता ५, ५८, ७; २९८ स्वमित् शवः धुः ।  
 गवां सर्गम् इव ५, ५६, ५; २७९ [मरुतां सर्गं] ह्वये ।  
 गवाम् इव शृङ्गम् ५, ५९, ३; ३०२ उत्तमं श्रियसे [धारयथ] ।  
 गावः न १०, ३८, २; २२ व क रण्यन्ति ।  
 गावः न १, १६८, २; १८४ वन्द्यास ।  
 गावः न वन्द्यास १, १६८, २; १८४ उक्षणः ।  
 गावः न यवसे ५, ५३, १६; २४० [ मरुतः ] रणन् ।  
 गावः न दुर्धुरः ५, ५६, ४; २७८ भोजसा वृषा रिणन्ति ।  
 गाः इव चर्कषत् ८, २०, १९; १०० वृष्ण गिरा अभि गाय ।  
 गिरयः न १, ६४, ७; ११४ स्वतवमः ।



गिरिवः न ६,६६,११; ३४४ अस्पृधन् ।  
 गौः इव दुध्रा भीमयु ५,५६,३; २७७ शिमीवान् अमः ।  
 ग्रामजितः नरः यथा ५,५४,८, २५७ मरुतः तथा ।  
 ग्रावाणः न सूर्य १०,७८,६, ४२० सिन्धुमातरः ।  
 घृतम् न ८,७,१९, ६४ इषः पिशुपी ।  
 घृतवत् आभुवः विदथेषु १,६४,६; ११३ मरुतः पय ।  
 चक्षुः इव ५,५४,६; २५५ सुगं यन्तं अनु नेपथ ।  
 चर्म इव १,८५,५; १२७ धारा उदभि भूम व्युन्दन्ति ।  
 जम्बती इव ५,५२,६; २२२ मरुतः विद्युतः ।  
 जनयः न १,८५,१; १२३ मरुतः प्र शुम्भन्ते ।  
 जिगीवांसः शराः १०,७८,४; ४१८ अभिद्यव ।  
 जुजुर्वान् इव विदपतिः १,३७,८, २३ पृथिवी अजमेपु ।  
 जुहः न अग्नेः ६,६६,१०; ३४३ मरुत त्विषीमन्तः ।  
 ज्योतिष्मन्तः न १०,७७,५; ४११ भासा युक्ता ।  
 तायवः न ५,५२,१२, २२८ केचित् मरुतः ।  
 तिष्यः यथा ५,५४,१३; २६२ तथा यः [राः]न युच्छति ।  
 तृष्णजे न दिव उस्ताः ५,५७,१, २८४ इयं अस्मत् मतिः ।  
 त्यत् न १,८८,५, १५५ एतन् योजनं अचेति ।  
 दिधिषवः न १०,७८,५, ४१९ रथ्यः सुदानवः ।  
 दुर्मदाः इव १,३९,५; ४० मरुतः प्रो भारत ।  
 देवः न सूर्यः ६,४८,२१; ३३३ यस्य चकृतिः छां परि ।  
 देवाद्यः न यज्ञैः १०,७८,१; ४१५ मन्मभिः स्वाध्यः ।  
 द्यौः न ८,७,२६, ७१ (पृथिवी अपि) भिया चक्रदत् ।  
 द्यौः इव ५,५७,४, २८७ उरवः मरुतः ।  
 द्यावः इव ५,५३,५, २३८ वृष्टी यती ।  
 द्यावः न स्तुभिः चितयन्तः २,३४,२, २०० खादिनः मरुतः ।  
 द्रप्सा इव ८,७,१६; ६१ रोदसी वृष्टिभिः अनु धमन्ति ।  
 धन्वव्युतः न इषां यामनि १,१६८,५; १८७ [इषां यामनि] ।  
 धुनयः न ६,६६,१०; ३०३ वीराः ।  
 धेनु न शिश्वे २,३४,८, २०६ जनाय महर्षि इषं च पिन्वते ।  
 धेनवः यथा ५,५३,७, २४० क्षोदसा रज प्र ससुः ।  
 निस्थं न सूनुम् १,१६६,२; १५९ मरुतः मधु बिभ्रतः ।  
 नरः न रणवः सवने मदन्तः ७,५७,७, ३८९ विश्वं शर्धः ।  
 नरां न शंस २,३४,६, २०४ सवनानि आ गन्त न ।  
 नौः न पूर्णा ५,५९,२, ३०१ भियसा भूमि एजते ।  
 पस्या इव जाया अथ०६,२२,३; ४३९ एजाति ग्लहा कन्येव  
 पथ्यः न १,६४,११; ११८ पर्वतान् उजिघ्नन्ते ।  
 परावतः न १०,७८,७; ४२१ योजनानि मभिरं ।  
 पर्जन्यः इव १,३८,१४; ३४ आस्ये श्लोकं ततन ।

पर्वताः इव १,६४,३; ११० दडाङ्गा ] मरुतः ।  
 पर्वतासः ज्येष्ठास ५,८७,९, ३२६ [अतिप्रवृद्धाः] ।  
 पाजस्वन्तः न वीराः १०,७७,३; ४०९ पनस्यवः मरुतः ।  
 पितृणां न शंसाः १०,७८,३; ४१७ सुरातय ।  
 पिशाः इव १,६४,८; ११५ सुपिशाः विश्ववेदसः ।  
 पुत्रं न हस्तयोः पिता १,३८,१, २१ अस्यान् कद्व दधिध्वे ।  
 पुत्रकृथे न जनयः ५,६८,३; ३१० जघने चोदः सकथानि ।  
 पुरा यथा १,३९,७, ४२ इत्या कण्वाय नूनं गन्त ।  
 पृगतः न दक्षिणा १,१६८,७; १८९ वः रातिः भद्रा ।  
 पृथिवी इव मीळहुष्मती ५,५६,३; २७७ मदन्ती अस्मत् ।  
 प्रजातार न १०,७८,२; ४१६ ज्येष्ठाः सुनीतयः ।  
 प्रयस्वन्त न १०,७७,४, ४१० सत्राचः आगता ।  
 प्रयुज न धूर्षुं १०,७७,५, ४११ परिपुषः स्थ ।  
 प्रवासः न प्रसितास १०,७७,५, ४११ परिपुषः ।  
 मतिम् यथा १,६,६,२ महाम् अच्छा अनूषत ।  
 मनुषः न योषा १,१६७,३; १७४ गुहा चरन्ती विद्युत् ।  
 मरुतः रुक्मैः यथा ७,५७,३, ३७२ एतावत् अन्ये न ।  
 मरुद्भयः न १०,७७,७, ४१३ मानुष ददाशन् ।  
 मर्याः इव ५,५९,३, ३०२ श्रियसे चेतथ ।  
 मर्याः इव ५,५९,५, ३०४ सुवृधः ।  
 महा ग्रामः न यामन् १०,७८,६; ४२० मरुतः त्विषा ।  
 माता इव पुत्रम् अथ० ५,२६,५, ४३२ विप्रत इह युक्ताः ।  
 मित्रम् न ५,५२,१४, २३० मारुतं गणं दाना अच्छा ।  
 मित्राय वा सदम् । २,३४,४, २०२ पृक्षे विश्वा भुवना ।  
 मुनिः इव ७,५६,८, ३५२ धुनि ।  
 मुष्टिहा इव हव्यः ८,२०,२०, १०१ ये सहाः सन्ति ।  
 मृगः न यवसे १,३८,५; ३५ जरिता अजोष्य मा भून् ।  
 मृगाः इव १,६४,७, ११४ हस्तिनः वना खादथ ।  
 मृगाः न २,३४,१; १९९ भीमाः ।  
 युक्षदशः न मर्याः ६,६६,१६; ३६० मरुतः शुभयन्त ।  
 यमाः इव ५,५७,४, २८७ सुमदशः ।  
 युधा इव १,१६६,१; १५८ तविषाणि कर्तन ।  
 युयुधयः न १,८५,८, १३० जग्मयः ।  
 रथैः इव ५,६०,१; ४४९ वाजयज्ञिः प्र भरे ।  
 रथानां न भराः १०,७८,४; ४१८ सनाभयः ।  
 रथीयन्ती इव १,१६६,५; १६२ ओषधिः प्र जिहीते ।  
 रथ्य न ५,८७,८; ३२५ दंसना इषांसि अप युयोत्तन ।  
 रग्भिणी इव १,१६८,३, १८५ अंसेषु [लक्ष्मीः] रारभे ।  
 राजान इव १,८५,८; १३० त्वेषसदशः ।

राजानः न चित्राः १०७८, १; ४१५ चित्राः सुसंदेशः ।  
रिशादसः न मर्याः १०, ७७, ३; ४०९ अभिद्यव ।  
रुक्मः न १, ८८, २, १५२ चित्रः मरुद्गणः ।  
रुक्मः इव उपरि द्विवि ५, ६१, १२; ३१३ मरुतः रथेषु ।  
रुक्मस्म न मातरम् १, ३८, ८; २८ विद्युत् मरुतः सिषाकि ।  
रुक्मासः न ७, ५६, १६; ३६०; प्रक्रीलिनः ।  
रुक्मा न १, ८८, ३; १५३ मेधा ऊर्ध्वो कृणवन्ते ।  
रुक्मः न १, ८५ ७, १२९ मरुतः बर्हिषि अधि सीदन् ।  
रुक्मः इव १, ८७, २; १४६ केनचित् पथा मरुतः ययि अचिध्वम् ।  
रुक्मः न १, ८८, १; १५१ न आपसन् ।  
रुक्मः न ५, ५९, ७; ३०६ मरुत श्रेणी परि पत्नुः ।  
रुक्मः न पक्षान् १, १६६, १०; १६७ मरुतः श्रिय अनु किधिरो ।  
रुक्मः न पित्र्यं सह ८, २०, १३; ९४ येषां एकमित् नाम भुजे ।  
रुक्मः इव ५, ६०, ४; ४५२ रैवतास हिरण्ये तन्वः पिपिश्रे ।  
रुक्मम् इव ६, ४८, १४; ३३० मायिनम् ।  
रुक्मयवः न मर्याः १०, ७८ ४, ४१८ घृतपुषः ।  
रुक्मवन्तः न योधा १०, ७८, ३; ४१७ शिमीवन्त ।  
रुक्मासः न १, १६८, २, १८४ मरुतः स्वजाः स्वतवसः ।  
रुक्मासः न १०, ७८, २, ४१६ स्वयुजः सद्य ऊतयः च ।  
रुक्मासः न १०, ७८, ३; ४१७ धुनयः जिगन्तवः ।  
रुक्मा इव १, ३७ ८, २८ विद्युत् मिमाति ।  
रुक्मा इव २, ३४, १५; २१३ सुमतिः आ जिगातु ।  
रुक्मरा इव १, ८७, ३ १४७ एषां अजमेषु भूमिः प्ररेजते ।  
रुक्मरा इव १, १६८, ६, १८८ संहित च्यावयथ ।  
रुक्मया इव वाक् १, १६७, ३; १७४ सभावती ।  
रुक्मत् न दर्शता १, १६६ ९; १६६ रथेषु वः (तेजः) आ तस्थौ ।  
रुक्मत् न वृष्टिभिः ७, ५६, १३; ३५७ रुचानाः ।  
रुक्मासः न १०, ७८, १; ४१५ मन्मभिः स्वाध्यः मरुतः ।  
रुक्मम् न ६, ४८, १४; ३३० सुप्रभोजमम् ।  
रुक्मि न विद्युतः १, ३९, ९; ४४ ऊतिभिः नः आ गन्त ।  
रुक्मः नरां न २, ३४, ६, २०४ नः सवनानि आ गन्तन ।  
रुक्मशवः न हर्म्येष्ठाः ७, ५६ १६; ३६० शुभ्राः ।  
रुक्मशूलाः न सुमातर १०, ७८, ६; ४२० क्रीळयः ।

शुभ्रयव न १०, ७८, ७; ४२१ अजिभिः व्यश्रितन् ।  
शूराः इव १, ८५, ८; १३० जग्मथ ।  
शूराः इव ५, ५९, ५, ३०४ प्रयुधः ।  
शोचिः न १, ३९, १, ३६ मानम् परावत प्र अस्यथ ।  
श्येनासः न पक्षिण ८, २०, १०; ९१ नः हव्यानि आ गत ।  
श्येनासः न १०, ७७, ५, ४११ स्वयशसः रिशादसः ।  
श्रवस्यवः न १, ८५, ८, १३० मरुतः पृतनासु येमिरे ।  
सक्तीन् इव पूर्वान् ५, ५३, १६; २४९ मरुतः अनु ह्य ।  
सत्वान न १, ६४, २; १०९ घोरवर्षः ।  
सातिः न १, १६८, ७; १८९ वः रातिः अमवती ।  
साधारण्या इव १, १६७, ४; १७५ यव्या परा मिमिक्षुः ।  
सिहा इव १, ६४, ८, ११५ प्रवेतसः नानदति ।  
सिहा न हेपकनवः ३, २६, ५; २१५ स्वानिनः रुद्रियाः ।  
सिन्धवः न १०, ७८, ७; ४२१ मरुतः ययिथः ।  
सुधिता इव बर्हणा १, १६६, ६, १६३ क्रिविर्दती दिद्युत् ।  
सूरः न छन्दः ८, ७, ३६, ३१ अग्निः पूर्व्यः जानि ।  
सूर्यं न योजनम् ५, ५४ ५; २५४ तद्वीर्यं दीर्घं ततान ।  
सूर्यः न ५, ५९, ३; ३०२ रजसः विसर्जने चक्षुः ।  
सूर्याः इव १, ६४, २; १०९ शुचयः ।  
सूर्याः इव १, १६७, ५; १७६ विषितस्तुका विधतः रथं ।  
सूर्यस्य इव चक्षणम् ५, ५५, ४, २६८ दिदक्षण्य वः महत्त्वम् ।  
सूर्यस्य इव रश्मयः ५, ५५, ३; २६७ विरोकिणः ।  
सोमासः न सुताः तृसांशवः १, १६८, ३; १८५ पीतासः ह्यसु ।  
सोमा न १०, ७८, २; ४१६ सुशर्माणः ।  
स्तृभिः इव दिव्याः १, १६६, ११; १६८ कृरेदशाः ।  
स्वर न ५, ५४, १५, २६४ नून अभि ततनाम ।  
हंसासः आ नीळपृष्ठाः ७, ५९, ७; ३८९ मरुतः अपसन् ।  
हंसासः न स्वसराणि २, ३४, ५, २०३ मधोः मदाय ।  
हन्वा इव जिह्वया १, १६८, ५; १८७ त्मना कः रेजति ।  
हविष्मन्तः न यज्ञाः १०, ७७, १, ४०७ मरुतः वि जानुषः ।  
हिता इव १, १६६, ३, १६० मयोभुवः ।  
हिता इव ८, ९६, ६; ४०० इन्द्रः प्रातः अस्य मत्सति ।

# दैवत-संहितान्तर्गत मरुद्देवता-मन्त्राणां सूची ।

ॐसेषु व ऋष्टय	२६०	अर्हन्तो ये सुदानवो	२२१	आ विद्युन्मग्निः	१५१
असेपत्रा मरुतः खाद्यो	३५७	अव स्वयुक्ता दिव	१८६	आ वो मक्ष्म तनाय	४२
अग्निर्न ये भ्राजसा	४१६	अश्वा इवेदरुषासः	३०४	आ वो यन्मूदवाहासो	२९४
अग्निर्हि जानि पूर्य	८१	अश्वासो न ये ज्येष्ठास	४१९	आ वो वहन्तु	१२८
अग्निश्च यन्मरुतो	४५५	असामि हि प्रयज्यवः	४४	आ वो होता जोहवीति	३६२
अग्निश्रियो मरुतो	२१५	असाम्योजो बिभृथा	४५	आशामाशां वि द्योतता	४६२
अग्ने मरुग्निः शुभ	४५६	असूत पृश्निर्महते	१९१	आ सखाय सर्बर्दुषां	३२७
अग्ने शर्धन्तमा गणं	२७५	असौ या सेना	४३५	आ स्तुतासो मरुतो	३७६
अच्छ ऋषे मारुतं	२३०	अस्ति सोमो अयं सुतः	३९८	आस्थापयन्त युवतिं	१७७
अच्छा वदा तना गिरा	३३	अस्ति हि ऽमा मदाय	२०	इन्द्रं दैवीर्विशो	४२७
अच्युता चिद् वो	८६	अस्मे वीरो मरुतः	३६८	इन्धन्वभिर्धेनुभी	२०३
अज्येष्ठासो अकनिष्ठास	४५३	अस्य वीरस्य वर्हिपि	१३८	इमा उ वः सुदानवो	६४
अतः परिजमन्ना गहि	४	अस्य श्रोषन्त्वा भुवो	१३९	इमां मे मरुतो	५४
अरीयाम निदस्तिरः	२४७	अहानि गृध्राः पर्या	१५४	इमे तुरं मरुतो	३६३
अथासो न ये मरुतः	३६०	आक्षण्यावानो वहन्ति	८०	इमे रध्र चिन्मरुतो	३६४
आदारस्यद् भवतु देव	४५७	आ गन्ता मा रिषण्यत	८२	इहेव शृण्व एषां	८
आद्रेषो नो मरुतो	३२५	आ च नो बर्हिः	३८८	इहेह वः स्वतवसः	३९३
अथ स्वनान्मरुतां	३०	आदह स्वधामनु	१	इहक्षस एतादक्षास	४२५
अथा नरो न्योहते	२२७	आ नोऽवोभिमरुतो	१७३	इंके अग्निं स्ववसं	४४९
अथीव यद् गिरीणां	५९	आ नो ब्रह्माणि	२०४	ईशानकृतो धुनयो	११२
आनवद्यैरभिद्युभिः	३	आ नो मखस्य दावने	७२	उक्षन्ते अर्था अर्था	२०१
अनु त्रितस्य युष्यतः	६९	आ नो रथिं मदच्युतं	५८	उग्रं व भोजः स्थिरा	३५१
अनेनो वो मरुतो	३४०	आपथयो त्रिपथयो	२२६	उत वा यस्य वाजिनो	१३७
अः समुद्राद् दिवं	४४३	आपो विद्युदभ्रं वर्ष	४६३	उत स्तुतासो मरुतो	३७५
अपामग्निस्तनूभिः	४६४	आभूषेण्य वो मरुतो	२६८	उत स्म ते परुष्याम्	२२५
अपारो वो महिमा	३९३	आ यं नरः सुदानवो	२३९	उत स्य वाज्यरुषः	२८१
अग्निं क्रन्द स्तनया	४६०	आ यात मरुतो	२४१	उतो न्वस्य जोषमां	४००
अग्निं स्वपूभिर्मिथो	३४७	आ ये तस्थुः पृषतीषु	४५०	उत् तिष्ठ नूनमेषां	२७९
अत्रपुषो न वाचा	४०७	आ ये रजांसि	१६१	उत्समक्षितं व्यचन्ति	४४१
अत्राजि शर्धो मरुतो	२५५	आ ये विश्वा पार्थिवानि	४०३	उदमुतो मरुतस्तौ	४३९
अत्रादेषां भियसा	३०१	आ रुक्मैरा युधु	२२२	उदीरयत मरुतः	४५९
अत्राय वो मरुतो	८७	आ रुद्रास इन्द्रवन्तः	२८४	उदीरयथा मरुतः	२६९
अत्रा इवेदचरमा	२९६	आरे सा वः सुदानवो	१९६	उदीरयन्त वायुभिः	४८

उदु स्ये अरुणसव	५२	गुप्ता नो यज्ञं यज्ञियाः	३२६	तं नो दात मरुतो	२०५
उदु स्ये सूनवो गिरः	१५	गणास्वोप गायन्तु	४५८	तशु नूनं तविषीं	२९७
उदु स्वानेभिरीरत	६२	गवामिव श्रियसे	६०२	तव श्रिये मरुतो	४४८
उपयामगृहीतोऽसि	४२४	गावश्चिद् घा समन्यवः	१०२	तनुदानाः सिन्धव	२४०
उपहोरेषु यद्विध्वं	१४६	गिरयश्चिञ्जि जिहते	७९	तां आ रुद्रस्य मीळुहो	३८१
उपो रथेषु पृषती	४१	गूहता गुह्यं तमो	१४४	तां ह्यानो महि	२१२
उशाना यत् परावत	७१	गृहमेधास आ गत	३९२	तान् वन्दस्व मरुतस्ता	९५
उषसां न केतवोऽध्वर	४२१	गोभिर्वाणो अज्यते	८९	तान् वो महो मरुत	२०९
ऊर्ध्वं नुनुवेऽवतं	१३२	गोमदश्चावद् रथवत्	२९०	तिग्ममनीक विदितं	४४६
ऋधक् सा वो मरुतो	३७३	गोमातरो यच्छुभयन्ते	१२५	तृणस्कन्दस्य नु विश	१९७
ऋष्टयो वो मरुतो	२८९	गौर्धयति मरुतां	३९५	ते अज्येष्टा अकनिष्ठाम	३०५
एतत् स्यज योजन	१५५	प्रावाणो न सूरयः	४२०	तेऽरुणेभिर्वरमा	१५२
एतानि धीरो निण्या	३४८	घृष्टं पाषकं वनिनं	११९	तेऽवधन्त स्वतवसो	१२९
एतावतश्चिदेषां	६०	चर्क्यं मरुतः पृंसु	१२१	ते क्षोणीभिररुणेभिः	२११
एष वः स्तोमो मरुत १७२, १८२, १९२		चित्रं तद् वो मरुतो	२०८	ते जज्ञिरे दिव ऋत्वाम	१०९
एष वः स्तोमो मरुतो	१९४	चित्रैरतिभिर्वपुषे	१११	ते वशग्वा प्रथमा	२१०
एषा स्या वो मरुतो	१५६	चित्रो वोऽस्तु यामश्चित्र	१९५	ते नो वसुनि काम्या	३१७
एतान् रथेषु तस्थुषः	२३५	ऋन्द-स्तुभः कुभन्यव	२२८	ते म आहुर्य	२३३
ओ षु घृष्टिवराधसो	३८७	छन्दामि यज्ञे मरुतः	४३२	ते रुद्रासः सुमखा	३०४
ओ षु वृष्णः प्रयज्युना	७८	जघने षोद गुषां	३१०	ते स्पन्द्रासो नोश्रणो	२१९
क ई व्यक्ता नरः	३४५	जनूश्चिद् वो मरुतस् वे	३७८	ते हि यज्ञेषु यज्ञियाम	४१४
कदात्विषन्त सूरयः	४०१	जिह्वा नुनुवेऽवतं	१३३	ते हि स्थिरस्य	२१८
कदा गच्छाथ मरुत	७५	जोधद् यदीमसुर्या	१७६	स्यं चिद् घा द्दीर्घं	१६
कद् नूनं कधप्रियः	२१, ७६	तं ष इन्द्रं न सुकृतं	३३०	स्यं नु मारुतं गण	४०६
कद्रो अद्य महानां	४०२	तं वः शर्धं मारुतं	१९८	स्यान् नु पूतदक्षसो	४०४
कस्मा अद्य सुजाताय	२४५	तं वः शर्धं रथानां	२४३	स्यान् नु ये वि रोदमी	४०५
कृते चिदत्र मरुतो	३७४	तं वः शर्धं रथेषुभं	२८३	प्रायन्तामिम देवा.	४३७
के ष्टा नरः श्रेष्ठतमा	३०८	तं वृधन्तं मारुतं	३४४	त्रीणि सरामि पृश्नयो	५५
को वेद जानमेषां	२३४	त ह्युमाः शवसा	३३९	त्वष्टा यद वज्र	१३१
को धद् नूनमेषां	३१५	त उक्षितासो महिमान	१२४	विषीमन्तो अध्वरस्येव	३४३
को वोऽन्तर्मरुत	१८७	त उप्रासो वृषण	९३	त्वेषं गणं तवस	२०३
को वो महान्ति महता	३०३	तत् सु नो विश्वे अर्यं	३९७	त्वेषं शर्धो न मारुत	३३१
को वो वर्षिष्ठ आ	११	तद् वः सुजाता	१६९	दशस्यन्तो नो मरुतो	३६१
कीळं वः शर्धो मारुत	६	तद वीर्यं वो मरुतो	२५४	दिवा चित तमः	२९
क नूनं कद् वो	२२	तद् वो जामिस्वं	१७०	देवयन्तो यथा मति	२
क नूनं सुदानवो	६५	तद् वो यामि द्वविण	२६४	द्यावो न सृभिश्चितयन्त	२००
क वः सुजा नद्यांसि	२३	तन्न इन्द्रो वरुणो	३६९	धारावरा मरुतो	१९९
क १वोऽथाः क्वा ३भीहावः	३०९	तं नाकमर्यो	२६१	धनुथ यां पर्वतान्	२८६
क स्त्रिवदस्य रजसो	१८८	तन्नु वोचाम रभसाय	१५८	नकिर्षोषां जन्वि	३४६

न पर्वता न नद्यो	२७१	प्रथिष्ट यामन् पृथिवी	२९८	मरुतो माहृतस्य न	१०४
न य ईषन्ते जनुषोऽया	३३७	प्र नू स मर्तः	१२०	मरुतो यद्द वो द्विवः	५६
न स जीयते मरुतो	२५६	प्र बुध्न्या व ईरते	३५८	मरुतो यद्द वो बलं	१७
नहि व ऊति. पृतनासु	३८६	प्र यजयवो मरुतो	२६५	मरुतो यस्य हि क्षये	१३५
नहि वश्रमं चन	३८५	प्र यत्रिथा परावत.	३६	मरुतो वीळुपाणिभि	३१
नहि व. शत्रुर्विदिदे	३९	प्र यद् रथेषु पृषती	१२७	मरुसु वो दधीमहि	२२०
नहि षम यद्द वः	६६	प्र यद् वस्त्रिभूमिपं	४६	मर्तेश्चिद् वो नृतवो	१०३
नहां नु वो मरुतो	१८०	प्र यद् वहध्वे मरुतः	४१२	महान्तो महः	१६८
नारय वर्ता न तरुता	३४१	प्र यन्तु वाजास्तविषी	२१४	महिषासो मायिनः	११४
निचेतारो हि मरुतो	३७१	प्र यात शीभमाशुभि	१९	मा वो दात्रान्मरुतो	३६५
नित्यं न सूनुं मधु	१५९	प्र ये जाता महिना	३१९	मा वो मृगो न यवसे	२५
नि यद् यामाय वो	५०	प्र ये दिवः पृथिव्या	४०९	मा वो रसानितभा	२४२
नियुष्वन्तां प्रामजितो	२५७	प्र ये दिवो वृद्धतः	३२०	मिमातु द्यौरदितिः	३०७
नि ये रिणन्योजसा	२७८	प्र ये मे बन्ध्वेषे	२३२	मिमिहि श्लोकमास्ये	३४
नि वो यामाय मानुषो	१२	प्र ये शुम्भन्ते जनयो	१२३	मिम्यक्ष येषु सुधिता	१७४
नृ मन्वान एषा	२३१	प्र वत्वती पृथिवी	२५८	मीळहुण्मतीव पृथिवी	२७७
नृ प्तिर मरुतो	१२२	प्र वः शर्षीय घृष्वये	९	मृळत नो मरुतो	२७३
नैतावदन्ये मरुतो	३७२	प्र व स्पळकन्सुविताय	३००	मो पु णः परापरा	२३
एयस्वती कृणुयाप	४३८	प्र वेपयन्ति पर्वतान्	४०	मो पु वो अस्सदभि	१५७
पयो धेनुनां रसं	४४२	प्र वो मरुतस्तत्रिषा	२५१	य ई वहन्त आशुभिः	३१२
परा वीराम एतन	३११	प्र वो महे मतयो	३१८	य उदचि यज्ञे अध्वरेष्ठा	४१३
परा शुभ्रा अयासो	१७५	प्र शंसा गोवध्न्यं	१०	य ऋषवा ऋष्टिविद्युतः	२२९
परा ह यत स्थिरं	३८	प्र शर्षीय मारुताय	२५०	यज्ञायज्ञा व समना	१८३
पर्वतश्चिन्महि वृद्धो	४५१	प्र श्यावाश्च घृष्णुया	२१७	यज्ञैर्वा यज्ञवाहसो	१३६
पान्ति मित्रावरुणा	१७९	प्र साकमुक्षे अचेता	३७७	यत् त्वेषयामा	१६२
पितु प्रत्नस्य	१४९	प्र सा वाचि सुष्टुतिः	३८२	यत् पूष्यं मरुतो	२७२
पिन्वन्त्यपो मरुतः	११३	प्र स्कम्भदेष्णा	१६४	यत् प्रायासिष्ट पृषती	२९७
पित्रन्ति मित्रो अर्यमा	३९९	प्रिया वो नाम हुवे	३५४	यत् सिन्धौ यदभिकन्यां	१०६
परुद्रप्सा अजिमन्त	२८८	प्रैषामजमेपु विथुरेव	१४७	यथा चिन्मन्यमे हदा	२७६
पूर्वाभिर्हि ददाशिम	१४०	बृहद् वयो मघवद्भयो	३७९	यथा रुद्रस्य सूनवो	९८
पृक्षे ता विश्वा भुवना	२०२	भरद्वाजायाव धुक्षत	३२९	यदक्ष तविषीयवो	४७
पृषदश्चा मरुतः	४२८	भूरि चक्र मरुतः	३६७	यदश्वान् धूर्षु	२७०
प्रघासिनो हवामहे	४२३	भूर्गणि भद्रा नर्येषु	१६७	यदि स्तुतस्य मरुतो	३५९
प्र चित्रमर्कं गृणते	३४२	मक्ष न येषु दोहसे	३३८	यदीदिदं मरुतो	४४५
प्र त विवक्तिम वक्त्र्यो	१७८	मध्वो वो नाम मारुतं	३७०	यदी वहन्त्याशवो	४२९
प्रति व एना	१९३	मरुतः पर्वतानाम्	४३६	यदुत्तमे मरुतो	४५४
प्रति वो वृषदग्जयो	९०	मरुतः पिबत ऋतुना	५	यदेषां पृषती रथे	७३
प्रति षोभन्ति सिन्धवः	१९०	मरुतां मन्वे अधि मे	४४०	यद् युञ्जते मरुतो	२०६
प्रवक्षस. प्रतवसो	१४५			यद् यूयं पृक्षिमातरो	२४

यद्ध यान्ति मरुतः	१८	येन दीर्घं मरुतः	१७१	वृष्णे शर्धाय सुभत्वाय	१०८
यं त्रायध्व इदमिदं	३८३	येनाव तुर्वशं यदुं	८३	व्यक्त्तु रुद्रा व्यहानि	२५३
यन्मरुतः सभरसः	२५९	ये पृषतीभिर्ऋष्टिभिः	७	व्रातव्रात गणंगण	२१६
यया रभ पारयथा	२१३	ये वावृधन्त पार्थिवा	२२३	ज्ञातभुजिभिस्तमभि	१६५
यस्मा ऊमासो अमृता	१६०	येषामज्जेषु पृथिवी	१३	शर्धशर्ध व एषां	२४४
यस्य वा यूयं प्रति	९७	येषामर्णो न सप्रथो	९४	शर्धो नारुतमुच्छंस	२२४
यस्या देवा उपस्थे	३९६	येषां श्रियाधि रोदसी	३१३	शशमानस्य वा नरः	१४०
याभिः सिन्धुमवथ	१०५	यो नो मरुतो अभि	३९०	शुवी वो हव्या मरुतः	३५६
यामं येष्ठाः शुभा	३५०	यो नो मरुतो वृकताति	२०७	शुभ्रो व शुष्मः क्रुध्मी	३५२
या वः शर्मं शशमानाय	१३४	रथ तु मारुतं वयं	२८२	शरा इवेत् युयुधयो	१३०
या शर्धाय मारुताय	३२८	रथानां न येराः	४१८	श्रियसे क भानुभिः	१५०
युद्धध्वं हारुवी रथे	२८०	रुद्रस्य ये मीळहुष	३३६	श्रिये कं वो अधि	१५३
युवानो रुद्रा अजरा	११०	रोदसी भा वदता	११६	श्रिये मयासो अङ्गी	४०८
युवा स मारुतो गण	३१४	वन्दस्व मारुतं गणं	३५	सं यद्धनन्त मन्युभि	३६६
युष्माँ उ नक्तमृतये	५१	वपान्ति मरुतो मिहं	४९	संवत्सरीणा मरुतः	४४७
युष्माकं देवा भवसा	३८४	वपुर्नु तच्चिकितुषे	३३४	स वोऽवन्तु सुदानव	४६१
युष्माकं बुध्ने अपां	४१०	वयमघेन्द्रस्य प्रेष्ठा	१८१	स चक्रमे महतो	३२१
युष्माक स्या रथो	२३८	वयो न ये श्रेणीः	३०६	सत्य त्वंपा अमवन्तो	२७
युष्मादत्तस्य मरुतो	२६२	वरा इवेद् देवतासो	४५२	सद्यश्चिद् यस्य चर्कृतिः	३३३
युष्मेषितो मरुतो	४३	ववामो न य स्वजाः	१८४	सनेस्यस्मद् युयोत	३५३
युष्मोतो द्विप्रो मरुतः	३८०	वातस्त्रिषो मरुतो	२८७	सप्त मे सप्त शाकिन	२३३
यून ऊ पु नविण्डया	१००	वातासो न ये धुनयो	४१७	समानमज्जेषां	९०
यूयं रथिं मरुतः	२६३	वामी वामस्य धृतयः	३३२	समु त्थे महतीरप	६७
यूयं राजानमिथं	२९५	वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो	२८५	सस्वाश्चिद्धि तन्पराः शुम्भमाना	३८९
यूयं हि ष्ठा सुदानवो	५७	वाश्रेव विद्युन्मिमाति	२८	स हि स्वसृत्	१४८
यूयं तत् सन्धशवस	१४३	वि तिष्ठध्व मरुतो	३९४	सहो पु णो वज्रहस्तै	७७
यूयं धूर्षु प्रयुजो	४११	विष्णा हि रुद्रियाणां	८४	साक जाताः सुभ्वः	२६७
यूयं न उम्रा मरुतः	१६३	विद्युद्धस्ता अभिद्यवः	७०	सातिर्न वोऽमवती	१८९
यूयं नः प्रवतो	४३०	विद्युन्महसो नरो	२५२	सान्तपना इदं हविः	३९१
यूयमस्मान् नयत	२७४	वि द्वीपानि पापतन्	८५	सा विट सुवीरा मरुद्	३४९
यूयमुम्रा मरुत ईदशे	४३४	विप्रासो न मन्मभि	४१५	साहा ये सन्ति	१०१
यूयमुम्रा मरुतः पृथि	४३३	वि ये भ्राजन्ते सुमखास	१२६	समाहा इव नानवति	११५
यूयं मर्तं विपन्यवः	३१६	वि वृत्रं पर्वशोययुर्वि	६८	सुदेवः समहामति	२४८
ये अन्नयो न शोशुच	३३५	विश्वं पश्यन्तो विश्वृथा	१०७	सुभगः स प्रयज्यवो	१४१
ये अग्निषु ये वाशीषु	२३७	विश्ववेदसो रथिभिः	११७	सुभगः स व ऊति	९६
ये कीलालेन तर्पयन्ति	४४४	विश्वानि भद्रा मरुतो	१६६	सुभागाज्ञो देवाः कृणुता	४२२
ये चार्हन्ति मरुतः	९९	वीळुपविभिर्मरुत	८३	सुपृद्दत मृडत	४२१
ये द्रप्सा इव रोदसी	६१	वृषणश्चैव मरुतो	९१	सुषोमे शर्यणावति	७४
येन तोकाय तनयाय	२४६			मृजन्ति रश्मिमोजमा	५३

सोमामो न ये सुता	१८५	स्थिरा वः सम्वायुधा	३७	स्वयं दधिध्वे तविषीं	२६६
स्तुहि भोजान्स्तुवतो	२४९	स्वतवांश्च प्रघासी च	४२६	स्वायुधास इष्टिमणः	३५५
स्थिरं हि जानमेषां	१४	स्वधामनु श्रियं नरो	८८	ह्वये नरो मरुतो	२९१, २९९
स्थिरा वः सन्तु नेमयो	३२	स्वनो न वोऽमवान्	३२२	हिरण्ययेभिः पविभिः	११८

## दैवत-संहितान्तर्गत-मरुदेवतायाः गुणबोधक-पदानां सूची ।

[ 'मरुतः' इति बहुवचनम्, 'मरुतां गणः' इति एकवचनम् । अतः गुणबोधकपदानि उभयवचनान्तानि संहितायां संदृश्यन्ते । ]

अकनिष्ठासः ५, ५९, ६; ३०५ । ६०, ५; ४१३  
 अकवा ५, ५८, ५; २९६  
 अक्काः १०, ७७, २; ४०८  
 अखिद्रयामानः १, ३८, ११; ३१  
 अगृभीतशोचिषः ५, ५४, ५, २५४  
 अग्निजिह्वाः वा० य० २५ २०; ४२८  
 अग्निश्रियः ३, २६, ५; २१५  
 अग्न्यः १, ३७, ५, १०  
 अचरमा. ५, ५८, ५; २९६  
 अच्युताचिन्-भोजसा प्रच्यावयन्तः १, ८५, ४, १२६  
 अजगराः अथ० ४, १५ ७, ९; ४६१, ४६३  
 अजरा १, ६४, ३, ११०  
 अज्येष्टा ५, ५९, ६; ३०५ । ६०, ५; ४१३  
 अज्जिमन्त ५, ६७, ५, २८८  
 अद्राभ्याः २, ३४, १०; २०८ । ३, २६, ४; २१४  
 अद्भुतैनसः ५, ८७, ७, ३२४  
 अद्रि रंहयन्त १, ८५, ५; १२७  
 अद्वेषः ५, ८७, ८; ३२५  
 अधिपतयः पर्वतानाम् अथ० ५, २४, ६; ४३६  
 अधृष्टा-ष्टासः ५, ८७, २, ३१२ । ६, ६६, १०, ३४३  
 अध्रिगावः १, ६४, ३, ११०  
 अध्वरश्रियः १०, ७८, ७; ४२१  
 अनन्तशुष्माः १, ६४, १०; ११७  
 अनर्वा १, ३७, १; ६ । ६, ४८, १५, ३३१  
 अनवद्याः १, ६, ८; ३ । ७, ५७, ५, ३७४

अमवभ्रराधसः १, १६६, ७; १६४ । २, ३४, ४; २०२ ।  
 ३, २६, ६, २१६ । ५, ५७, ५, २८८  
 अनानताः १, ८७, १, १४५  
 अनीकं तिग्मम् अथ० ४, २७, ७, ४४६  
 अनुपथाः ५, ५२, १०, २२६  
 अनुवर्त्मानः इन्द्रं देवी. विश. वा० य० १७, ८६; ४२७  
 अनेद्य १, ८७, ४; १४८ । ५, ६१, १३; ३१४  
 अन्तरिक्षेण पततः ८, ७, ३५, ८०  
 अन्तस्पथाः ५, ५२, १०; २२६  
 अप्रतिष्क-स्क-तः ५, ६१, १३; ३१४  
 अद्दया मुहुः ५, ५४, ३; २५२  
 अभिष्टुः-द्यवः १, ६, ८; ३ । ८, ७, २५; ७० । १०, ७७, ३;  
 ४०९ । ७, ४; ४१८  
 अभिस्वर्तारः १०, ७८, ४; ४१८  
 अभीरवः १, ८७, ६; १५०  
 अभोग्वनः १ ६४ ३; ११०  
 अमध्यमास ५, ५९, ६, ३०५  
 अमर्त्याः १, १६८, ४; १८६  
 अमवन्तः १, ३८ ७; २७ । ८, २०, ७, ८८  
 अमिताः ५, ५८, २; २९३  
 अमृता-तास. १, १६६, ३, १३; १६०, १७० । ५, ५७, ८;  
 २९१ । ५८, ८; २९९  
 अयासः १, ६४, ११; ११८ । १६७, ४; १७५ । १६८, ९;  
 १९१ । ७, ५८, २; ३७८  
 अयोदृष्टाः १, ८८, ५; १५५

भराजिनः ८,७,२३; ६८  
भरिष्टग्रामाः १,१६६,६; १६३  
अरुणापवः ८७,७; ५२  
अरुणाश्वः ५,५७,४; २८७

मरुतां अश्वाः ।

अजिरा ५,५६,६; २८०  
अरुणाः १,८०२, १५०  
अरुषः ५,५६,७; २८१  
अरुषी ५,५५,६; २७०  
आशवः २,३४,३. २०१ । ५,६१,६१ ३६०  
एनास १,१६६,४; १६१  
तुविष्वणिः ५,५६,७; २८१  
दर्शतः ५,५६,७ २८१  
नियुतः ५,५४,८, २५७  
पिशंगा १,८८,०; १५०  
पृषतीः १,३९,६; ४१ । ५,५५,६; २७० । ५७,३;  
२८६ । ५८,६; २९७  
प्रष्टिः १,८५,४५, १२६,१२७  
रथतुरः १,८८,२, १५०  
रोहितः १,३९,६; ४१ । ५,५६,६; २८०  
वहिष्ठाः ५,५६,६; २८०  
वासाः ५,५८,७; २९८  
सुयमा ५,५५,१. २६५  
स्वयतासः १,१६६,४; १६१  
हरी ५,५६,६; २८०  
अरुषासः ५,५९,५; ३०४  
अरेणवः १,१६८,४; १८६  
अरेपसः १,६४,२, १०९ । ५,५३,३; २३६ । ५७,४  
२८७ । ६१,१४; ३१९ । १०,७८,१; ४१५  
अर्काः ५,५७,५, २८८  
अर्क अर्चन्तः १,८५,२; १०४  
अर्का १,३८,१५; ३५  
अर्चप्रवः ६,६६,१०; ३४३  
अर्चिनः तविषीभिः २,३४,१; १९९  
अर्यः ५,५४,१२; २६१  
अर्हन्तः ५,५२,५; २२१  
अलातृणासः १,१६६,७; १६४  
अविधुराः १,८७,१; १४५  
अश्मदिषवः ५,५४,३; २५२  
अश्वयुजः ५,५४,२; २५१

असच्चद्विषः ८,२०,२४; १०५  
असामिशवसः ५,५२,५, २२१  
असुराः १,६४,२, १०९  
अस्तारः १,६४,१०, ११७  
अस्त्रधन्तः ७,५९,६; ३८८  
अहिभानव १,१७०,१; १९५  
अहिमन्यव शवसा १,६४,८-९. १६५,११६  
अहुतापव ८,२०,७; ८८  
आदित्यासः १०,७७,२; ४०८  
आपथयः ५,५२,१०; २२६  
आपयः ५,५३,२; २३५  
आयुषः ५,६०,८, ४५६  
आशवः १०,७८,५; ४१९ । साम० ३५६, ४२९  
आशसः ५,५६,२, २७६  
आश्वश्वः ५,५८,१; २९७  
आसभिः स्वरितारः १,१६६,११. १६८  
हुनासः ५,५४,८; २५७  
हन्द्रधन्तः ५,५७,१; २८४  
हन्दिभ्यं जनयन्तः १,८५,०; १२४  
इषुमन्तः ५,५७,२; २८५  
इषिमण १,८७,६; १५० । ५,८७,५; ३२२ । ७,५६,  
११; ३५५  
ईश्वामः वा० य० १७,८४; ४०५  
ईशानः--ना १,८७,४. १४८ । अथ० ४,२७,४-५,  
४४३,४४४  
ईशानकृतः १,६४,५ ११०  
उक्षणः १,६४,२, १०९  
उक्षमाणा तन्वम् ६,६६,४, ३३७  
उक्षितामः १,८५,२, १२४  
उक्षिता साकम् ५,५५,३; २६७  
उग्राः प्रासः ८,२०,१२; ९३ । १,१६६,६,८; १६३,१६५ ।  
५,५७,३, २८६ । ६,६६,५-६; ३३८,३३९ । ७,५७,१,  
३७० । अथ० १३,१,३; ४३३ । ३,१,२; ४३४  
उग्रं पृतनासु अथ० ४,२७,७; ४४६  
उग्रा भोजोभिः ७,५६,६; ३५०  
उग्रवाहनः ८,२०,१२; ९३  
उज्ज्वी वा० य० १७,८५; ४२६  
उन्मा अथ० ४,१५,७,९; ४६१,४६३  
उदन्यवः ५,५४,२; २५१  
उदप्रतः अथ० ६,२२,३; ४३९



उद्वाहासः ५,५८,३; २९४  
 उदोजसः ५,५४,३; २५२  
 उद्भिदः ५,५९,६; ३०५  
 उपमासः ५,५८,५; २९६  
 उपविश्रियाणाः वक्षःसु रुक्मा ७,५६,१३; ३५७  
 उरवः ५,५७,४, २८७  
 उरुक्षया अथ० ७,७७,३; ४४७  
 ऊमासः १,१६६,३; १६०  
 ऊकाणः १,८७,५; १४९ । ५,६०,८; ४५६  
 ऋजिबी-विणः १,६४,१२; ११९ । ८७,१, १४५ ।  
 २,३४,१; १९९  
 ऋजतः ५,८७,५; ३२२  
 ऋणयावा १,८७,४, १४८  
 ऋतजाताः ५,६१,१४, ३१५  
 ऋतज्ञाः ५,५७,८; २९१ । ५८,८, २९९  
 ऋता त-धव. ५,५४,१२; २६१  
 ऋभुक्षणः ८,७,९,१२; ५४,५७ । २०,२, ८३  
 ऋभ्रवसम् ५,५२,८, २२४  
 ऋष्टिमन्तः ५,५७,२; २८५ । ६०,३, ४५१  
 ऋष्टिविद्युतः १,१६८,५; १८७ । ५,५२,१३, २२९  
 ऋष्याः-पवासः १,६४,२; १०९ । ५,५२,१३, २२९  
 एताः १०,७७,२, ४०८  
 एतादक्षासः वा० य० १७,८४; ४२५  
 एवयावानः २,३४,११; २०९  
 ककुहाः २,३४,११; २०९  
 कधप्रियः १,३८,१; २१ । ८,७,३१; ७६  
 कवन्धिनः ५,५४,८; २५७  
 कवयः ५,५२,१३; २२९ । ५७,८ २९१ । ५८,३,८,  
 २९४,२९९ । ७,५,११, ३९३ । अथ० ४,२७,३, ४४२  
 कामिनः ५,५३,१६; २४९ । ७,५९,३; ३८५  
 काम्यः १,६,८; ३  
 कुभन्यवः ५,५२,१२; २२८  
 क्रीडी वा० य० १७,८५; ४२६  
 क्रीळम् [शर्धः] १,३७,१,५; ६,१०  
 क्रीलयः १,८७,३; १४७ । १०,७८,६; ४२०  
 क्षपः जिन्वन्तः १,६४,८; ११५  
 स्वादिनः २,३४,२; २००  
 स्वादिहलः ५,५८,२; २९३

गणः-णाः १,६,८ ३ । ८७,४; १४८ । ५,५६,१; २७५ ।  
 ५,५८,२, २९३ । ७,५८,१, ३७७  
 गणाः मरुताम् अथ० ४,१३,४; ४३७  
 गणाः मारुताः अथ० ४,१५,४; ४५८  
 गणः मारुतः १,३८,१५,३५ । ६४,१२; ११९ । ५,५३,१०,  
 २४३ । ५,६१,१३ ३१४ । ८,९४,१२; ४०६  
 गणश्रिय १,६४,९ ११६ । ५,६०,८, ४५६  
 गन्तारः यज्ञम् ३,२६,६; २१६  
 गिरः सूनवः १,३७,१०, १५  
 गिरिष्ठाः ८,९४,१२; ४०६  
 गृणानाः ५,५५,१०, २७४ । ५२,८; ३०७  
 गृहमेधासः ७,५९,१०; ३९२  
 गृहमेधी वा० य० १७,८५, ४२६  
 गोबन्धवः ८,२०,८; ८९  
 गोमातरः १,८५,३; १२५

### मरुतां माता ।

अनपस्फुरा ६,४८,११; ३२७  
 एवयावरी ६,४८,१२; ३२८  
 गौः ८,९४,१; ३९५  
 धेनुः ६,४८,११; ३२७  
 पृभिः ५,५२,१६, २३२  
 यस्या उपस्थं विश्वे देवा व्रतं धारयन्ते ८,९४,२; ३९६  
 युक्ता ८,९४,१; ३९५  
 वह्निः स्थानाम् ८,९४,१; ३९५  
 विश्वदोहाः ६,४८,१३; ३२९  
 विश्वभोजा ६,४८,१३; ३२९  
 श्रवस्तुः ८,९४,१, ३९५  
 सबर्हुषा ६,४८,११; ३२७  
 सुदुषा ५,६०,१, ४४२  
 सूर्यामासा दशो कम् ८,९४,२, ३९६  
 गोषु अहयम् [शर्धः] १,३७,५; १०  
 घर्मस्तुभ ५,५४,१; २५०  
 घृतप्रुषः १०,७८,४, ४१८  
 घृषु. १ ६४,१२; ११९  
 घृष्विः १,३७,४; ९ । ८५,१; १२३ । १६६,२; १५९  
 घृष्वराधसः ७,५९,५; ३८७  
 घोराः १,१६७,४; १७५  
 घोरवर्षसः १,६४,२; १०९  
 घोषिणः अथ० ४,१५,४; ४५८

चक्राणाः वृष्णि पौस्थम् ८७,२३, ६८  
 चन्द्राः ८,२० २०, १०१  
 चारवः ५,५७,३; ३०२  
 चित्रा ८,७,७, ५२  
 चित्रमानवः १,६४,७, ११४ । ८५,११; १३३  
 चित्रवाजा. ८७,३३, ७८  
 छन्दस्तुभः ५,५२,१२; २२८  
 जगमयः १,८५,८, १३०  
 जगमयः विदथेषु वा० य० २५,२०; ४२८  
 जनः दैव्यः २,३०,११, १९८  
 जाताः साकम् ५,५५,३; २६७  
 जिगत्नवः १०,७८,३,५; ४१७,४१९  
 जिवन्तः १,६४,८; ११५  
 जीरदानव २,३४,४; २०२ । ५,५३,५; २३८  
 जुषाणाः मनसा १,१७२,२; १९४  
 जुष्टतमास. १,८७,१, १४५  
 ज्यष्टाः-ष्ठासः १०,७८ २५, ४१६,४१९  
 तत्त्वदानाः ५,५३,७; २४०  
 तवसः १,६४ १२; ११९ । १६६,८; १६५ । ५,५८,२,  
 २१३ । ६०,४; ४५२  
 तविषीभिः आबुतः १,८७ ४, १४८  
 तविषीभिः [तृतीया] ३,२६,४, २१४  
 तविषीमान् ५,५८,१; २९२  
 तविषीयव ८,७,२; ४७  
 तस्थिवांसः रथेषु ५,५३,२; २३५  
 तिगमं भनीकम् अथ० ४,२७,७; ४४६  
 तुरः ६,६६,९; ३४२  
 तुरासः १,१६६,१४; १७१ । १७१,१, १९३ । ६,४८,१२;  
 ३२० । ७,५६,१०, ३५४ । ५८,५; ३८१  
 तुविजाताः १,१६८,४; १८६  
 तुविष्टुम्नाः ५,८७,७, ३२४  
 तुविमन्भवः ७,५८,२, ३७८  
 तुविराधसः ५,५८ २; २२३  
 तुविष्मान् गणः ७,५६,७, ३५१  
 तुविष्मान् दैव्यस्य धाम्नः ७,५८,१; ३७७  
 तुविष्वणिः स्वनिः ६,४८,१५; ३३१  
 तुवी-वि-मघासः ५,५७,८; २९१ । ५८,८; २९९  
 तुषुच्यवसः ६,६६,१०, ३४३  
 त्रातारः ७,५६,२२; ३६६  
 त्रिष-स-सासः अथ० १३,१,३; ४३३

त्विषीमन्तः ६,६६,१०; ३४३  
 त्वेषाः १,३८,७,१५, २७,३५ । ८,२०,७; ८८ । ६,४८,  
 १५; ३३१  
 त्वेषः ५,५३,१०; २४३ । ५८,२; २९३  
 त्वेषुष्ठाः १,३७,४; ९  
 त्वेषयामा १,१६६,५; १६२  
 त्वेषरथः ५,६१,१३, ३१४  
 त्वेषसंहसः ५,५७,५, २८८  
 तुधाना नाम यज्ञियम् १,६,४; १  
 दविध्वतः २,३४,३; २०१  
 दशग्वाः २,३४,१२; २१०  
 दशस्थन्त ७,५६,१७; ३६१  
 दस्मवर्चसः ८९४,२; ४०२  
 दस्ताः ५,५५,५, २६९  
 दातिवारः ५,५८,२; २९३  
 दिव नरः ५,५४,१०; २५९  
 दिवः पुत्रासः १०,७७,२; ४०८  
 दुधकृत १,६४,११; ११८  
 दुर्धर्तवः ५,८७,९; ३२६  
 दुर्मदा १,३९,५, ४०  
 दुहन्त. आक्षित उत्सम् ८,७,१६; ६१  
 दूरेदशः १,१६६,११; १६८ । ५,५९,२, ३०१  
 देवाः-जासः १,३९,५, ४० । ८,७,२७, ७२ । १,१७१,२;  
 १९४ । ५,५२,१५; २३१ । ७,५२,१-२; ३८३,३८४ ।  
 ८,९४,८; ४०२ । १०,७८,८, ४३२ । अथ० ४,१३,४;  
 ४३७ । २७,६; ४४५  
 दैव्यः जन. २,३०,११, १९८  
 द्युम्नभवस. ५,५४,१; २५०  
 द्रपिसनः १,९४,२; १०९  
 धूमन्त ऋमिम् २,३४,१; १९९  
 धमन्त. वाणम् १,८५,१०, १३२  
 धारावराः २,३४,१; १९९  
 धियावस्तुः १,६४,१५; १२२  
 धीरा. विदथेषु ३,२६,६, २१६  
 धुनि..नयः ८,२०,१४, ९५ । १,६४,५; ११२ । ८७,३; १४७  
 ६,६६,१०; ३४३ । १०,७८,३; ४१७ । ५,६०,७; ४५५  
 धुनिन्नतः ५,४८,२; २९३ । ८७,१, ३१८  
 धृतय १,३०,१,१०, ३६,४५ । ६४,५; ११२ । ८७,३  
 १४७ । १६८,२८; १८४ । ५,५४,४; २५३ । ६१,१४  
 ३१५ । ६,४८,२०, ३३२ । ७,५८,४; ३८०

धृतयः दिवशा गमश्च १,३७,६, ११  
 धूर्षदः २,३४,४, २०२  
 धृषद्विनः ५,५२,२, २१८  
 धृष्णुः ७,५६,८; ३५२  
 धृष्णव भोजसा ५,५२,१४, २३०  
 धृष्णुषेणाः ६,६६,६, ३३९  
 धृष्णवोजस. २,३४,१; १९९  
 ध्रुवच्युत १,६४,११ ११८  
 नमयिष्णवः ८,२०,१; ८२  
 नरः १,३९,३, ३८ । ८,२०,१०,१६, ९१, ९७ । १,६४,  
 १०; ११७ । ८६,८; १४२ । ५,५२,५,११; २२१,  
 २२७ । ५३,३,६,१५ २३६,२३९,२४८ । ५४,३;  
 २५२ । ५७,८, २९१ । ५८,२; २९३ । ५९,२-३;  
 ३०१,३०२ । ७,५६,१, ३४५ । ५७,६, ३७५ । ५९,४;  
 ३८६; अथ० ६,२२,२; ४३८  
 नवेदसः ५,५५,८, २७२  
 नव्यसी ५,५८,१, २९२  
 निचेतार. गृणन्तम् ७,५७,२, ३७१  
 निमेघमानाः अथेन पाजसा २,३४,१३; २११  
 निष्पुत्वन्त ५,५४,८; २५७  
 निरुक्कमः ५,८७,४, ३२१  
 निषङ्गिणः ५,५७,२, २८५  
 नृतमासः १,८७,१; १४५  
 नृतव ८,२०,२२, १०३  
 नृषा सा चः १,६४,९; ११६  
 एनस्युः-स्यवः १,३८,१५, ३५ । १०,४७,३; ४०९  
 पयोधाः ७,५६,१६; ३६०  
 पयोवृधः १,६४,११; ११८  
 परा १,१६७,४; १७५  
 परिज्मन् १,६,९; ४  
 परिज्मन् १,६४,५, ११२ । ५,५४,२; २५१  
 परिपुष. १०,७७,५, ४११  
 परिष्टुभ १,१६६,११; १६८  
 पर्वतानां अधिपतय. अथ० ५,२४,६; ४३६  
 पर्वतच्युत् ५,५४,१, २५०  
 पाजस्वन्त. १०,७७,३, ४०९  
 पावका-कास. ८,२०,१९; १०० । १,६४,२, १२; १०९, ११९  
 ७,५७,५, ३७४ । ५,६०,८, ४५६  
 पारावताः ५,५२,११, २२७  
 पिता रुद्र. एषाम् ५,६०,५; ४५३

पिपीषवः ७,५९,४; ३८६  
 पिप्रियाणा चीतये ७,५७,२; ३७१  
 पिबन्तः मदिंरं मधु साम० ३५६; ४२९  
 पिशाङ्गाश्वा. ५,५७,४; २८७  
 पिशानाः ७,५७,३; ३७२  
 पुनाना. अवद्यानि अंत ६,६६,४, ३३७  
 पुरीषिण. ५,५५,५, २६९  
 पुरुद्वप्साः ५,५७,५, २८८  
 पुरुश्च च-न्द्रा. ५,६१,१६, ३१७  
 पुरुस्पृह ८,२०,२ ८३  
 पूतदक्षमः ८,९४,७,१०, ४०१,४०४  
 पूषा ६,४८,१५, ३३१  
 पृथिमातर १,३८,४; २४ । ८,७,३, १७; ४८,६२ । १,८५,२;  
 १२४ । ५,५७,२-३; २८५-२८६ । ५९,६, ३०५ ।  
 वा० य० २५,२०, ४२८ । अथ० ४,२७,२; ४४१ ।  
 १३,१,३, ४३३  
 पृथे पुत्रा ५,५८,५ २९६  
 पृषदश्वा १,८७,४; १४८ । २,३४,४ २०२ । ३,२६,६;  
 २१६ । वा० य० २५,२०, ४२८  
 पृष्ठयज्वा ५,५४,१, २५०  
 प्रक्रीलिन् ७,५६,१६ ३६०  
 प्रघासी-सिन वा० य० ३,४४; ४२३ । १७,८५; ४२६  
 प्रच्यावयन्तः अच्युता १,८५,४; १२६  
 प्रचेतसः १,३९,९; ४४ । ६४,८, ११५  
 प्रणेतारः ५,६१,१५, ३१६  
 प्रणेतारः यजमानस्य मन्म ७,५७,२, २७१  
 प्रतवसः १,८७,१, १०५  
 प्रतिसदक्षासः वा० य० १७,८४; ४२५  
 प्रवक्षस १,८७,१, १०५ । ५,५७,४; २८७  
 प्रथमा २,३४,१२; २१०  
 प्रयज्युः-ज्यवः १,३९,९; ४४ । ८,७,३३; ७८ । १,८६,७;  
 १४१ । ५,५५,१, २६५ । ८७,१; ३१८ । ६,४८,२०;  
 ३३२ । ७,५४,१४; ३५८  
 प्रयन्तः ५,५४,२, २५८  
 प्रयुधः ५,५९,५, ३०४  
 प्रसत्तः नमोभिः ह्व ५,६०,१; ४४९  
 प्रसितासः १०,७७,५, ४११  
 प्रस्थावानः ८,२०,१, ८२  
 ऋहोजसः ८,२०,६; ८७  
 बिभ्रत मधु १,१६६,२; १५९

बृहद्वृक्षमाणा ५, ५७, ८; २९१ । ५८, ८; २९९  
 बृहद्विरयः ५, ५७, ८; २९१ । ५८, ८; २९९  
 ब्रह्मणस्पतिः १, ३८, १३; ३३  
 भद्रजानयः ५, ६१, ४; ३११  
 भद्रदिष्टि ५, ८७, १; ३१८  
 भीमाः० मास २, ३४, १, १९९ । ७, १८, २; ३७८  
 भीमसंहारः ५, ५६, २, २७६  
 भूमि धमन्तः २, ३४, १; १९९  
 भोजाः ५, ५३, १६; २४९  
 आजमानाः साम० ३५६; ४२९  
 आजजन्मानः ६, ६६, १०, ३१३  
 आजदृष्टयः १, ६४, ११ ११८ । ८७, ३; १४७ । १६८ ४.  
 १८६ । २, ३४, ५, २०३ । ५, ५५, १ २६५ । १०, ७८,  
 ७; ४२१  
 आतर ५, ६०, ५, ४५३  
 मूखाः १, ६४, ११; ११८  
 मघवानः ८, ९४, १; ३९५  
 मत्सराः अथ० ७, ७७, ३ ४४७  
 मधु भिभ्रतः १, १६६, २, १५९  
 मनवः वा० य० २५, २०, ४२८  
 मनीषिणः ५, ५७, २, २८५  
 मनोजुवः १, ८५, ४; १२६  
 मन्दसानाः ५, ६०, ७; ४५१  
 मन्द्राः १, १६६, ११; १६८  
 मन्द्रः [अर्थमा] ६, ४८, १४, ३३०  
 मघोभुवः ८, २०, २४; १०५ । १, १६६, ३; १६० । ५, ५८,  
 २; २९३  
 मरुतः ५, ६१, १-४, ११-१६; ३०८-३१७  
 मरुतां गणाः अथ० ४, १३, ४; ४३७  
 मरुतां सर्गः ५, ५६, ५; २७९  
 मरुत्वान् ५, ८७, १; ३१८  
 मर्याः-यांसः ५, ५३, ३, २३६ । ५२, ६, ३०५ । ६१, ४,  
 ३११ । ७, ५६, १; ३४५ । १०, ७७, २, ४०८  
 महान्तः १, ६, ६; २ । ८, २०, ८; ८९ । ५, ५५, २, २६६ ।  
 ८, ९४, ८; ४०२  
 महान्तः मङ्गा- १, १६६, ११; १६८  
 महिपालः १, ६४, ७; ११४  
 माद्विष्णवः अथ० ७, ७७, ३; ४४७  
 मानुषासः अथ० ७, ७७, ३; ४४७  
 मायी-यिनः १, ६४, ७; ११४ । ५, ५८, २, २९३  
 है० [ मरुत् ] ७

मायी [वरुणः] ६, ४८, १४; ३३०  
 मारुतम् ८, २०, ९, ९०  
 मारुतः गणः १, ३८, १५; ३५ । ६४, १२; ११९ । ५, ५२,  
 १३-१४; २२९, २३० । ५३, १०, २४३ । ५८, १;  
 २९२ । ६१, १३; ३१४ । ८, ९४, १२; ४०६  
 मारुत शर्धः १, ३७, १५, ६, १० । ८, २०, ९; ९० ।  
 २, ३०, ११; १९८ । ५, ५२, ८ २२४ । ५४, १, २५० ।  
 अथ० ४, २७, ७, ४४६  
 मित्तास वा य० १७, ८४, ४२०  
 मीळहुषः ८, २०, ३, १८, ८४, २९  
 यच्छमानाः स्वधाम् ७, ५६, १३; ३५७  
 यजत्राः ५, ५५, १०; २७४ । ५८, ४, २९५ । ७, १७, १, ४,  
 ५, ३७०, ३७३, ३७४  
 यज्ञवाहसः १, ८६, २, १३६  
 यज्ञियाः-यासः ५, ५२, १, २१७ । ६१, १३, ३१७ । ८७,  
 ९; ३२६ । १०, ७७, ८, ४१४  
 यतस्तुचः २, ३४, ११; २०९  
 ययियः १०, ७८, ७, ४२१  
 यामं येष्ठाः ७, ५६, ६ ३५०  
 युक्ताः इह अथ० ५, २६, ५, ४३२  
 युधा ५, ५२, ६, २२२  
 युवा-वान ८, २०, १७-१९; ९८-१०० । १, ६४,  
 ३; ११० । ५, ५७, ८, २९१ । ५८, ३, ८, २९४, २९९ ।  
 ६१, १३, ३१४ । १, ८७, ४, १४८  
 रहयन्तः अद्रिम्- १, ८५, ५, १२७  
 रघुपत्नानः १, ८५, ६, १२८  
 रघुण्य-स्य-दः १, ६४, ७; ११४  
 रजस्तुरः १, ६४, १२; ११९  
 रथेक्षुभ १, ३७, १; ६  
 रथेषु तस्थिवांसः ५, ५३, २; २३५  
 मरुतां रथः ।  
 अक्षपर्णा १, ८८, १, १५१  
 ऋष्टिमन्तः १, ८८, १; १५१  
 पृषत्यः ५, ६०, २, ४५०  
 त्रिष्टुन्मन्तः १, ८८, १, १५१  
 वीळुपवयः ५, ५८, ६; १९७  
 श्रवस्यवः ५, ५५, ८; २७४  
 श्रुता ५, ६०, २, ४५०  
 सुखाः ५, ६०, २, ४५०

हिरण्ययाः ५, ५७, १; २८४

यस्मिन् तस्थौ सुराणि बिभ्रती सचा मरुसु रोदसी  
५, ५६, ८, २८२

रथः १०, ७८, ५, ४१२

रभिष्ठा ४, ५८, ५, २९६

रिशादस १, ३९, ४; ३९ । ६४, ५; ११२ । ५, ६१, १६;

३१७ । ७, ५२, ९, ३९१ । १०, ७७, ३, ५; ४०९, ४११ ।

वा० य० ३, ४४. ४२३ । ऋ० ५, ६०, ७; ४५२

रुक्मवक्षसः ८, २०, २२, १०३ । २, ३४, २, ८; २००, २०६ ।

५, ५५, १; २६५ । ५७, ५; २८८ । अथ० ६, २२, २;  
४३०

रुचाना. वृष्टिभि. ७, ५६, १३, ३५७

रुद्रः पुर्यां पिता ५, ५२, १६; २३२ । ६०, ५; ४५३

रुद्रस्य पुत्रा. ५, ५९, ८, ३०७ । ६, ६६, ३; ३३६

रुद्रस्य मर्या. १, ६४, २, १०९ । ७, ६६, १; ३४५

रुद्रस्य सुनु -नवः ८, २०, १७, ९८ । १, ६६, १२; ११९ ।

८५, १, १२३ । ६, ६६, ११; ३४४

रुद्राः-द्रामः १, ३९, ४, ७, ३९, ४२ । ८, ७, १२; ५७ ।

२०, २, ८३ । १, ६४, ३, ११० । ८५, २, १२४ । १६६,

२; १५९ । २, ३४, ९; २०७ । ५, ५४, ४, २५३ । ५७,

१; २८४ । ८७, ७; ३२४ । ६०, २, ४५०

### मरुतां पिता ।

हृत्मा ५, ५२, १६; २३२

युवा ५, ६०, ५, ४५३

रुद्र ५, ५२, १६; २३२ । ६०, ५; ४५३

स्वपाः ५, ६०, ५, ४५३

रुद्रियाः-यास १, ३८, ७; २७ । ८, २०, ३, ८४ । २, ३४,

१०, २०८ । ३, २६, ५, २१५ । ५, ५७, ७; २९० ।

५८, ७, २९८ । ७, ५६, २२; ३६६

रूपाणि चित्रा दुर्या ५, ५२, ११; २२७

रैवतासः ५, ६०, ४; ४५२

रोहित. अथ० १३, १, ३; ४३३

वज्रहस्ताः ८, ७, ३२, ७७

वनी १, ६६, १२. ११९

वयोवृधः ५, ५४, २; २५१

वराहवः १, ८८, ५; १५५

वरिवस्यन्तः ७, ५६, १७; ३६१

वर्षनिर्णिज ३, २६, ५, २१५ । ५, ५७, ४, २८७

वर्षिष्ठ. १, ३७, ६; ११

ववक्षु १, ६४, ३; ११०

वसव २, ३४, ९; २०७ । ५, ५५, ८; २७२ । ७, ५६, १७;

३६१ । ५९, ८; ३९० । १०, ७७, ६, ४१२ । अथ० ३,

१, २; ४३४ । ४, २७, ६; ४४५

वाणं धमन्तः १, ८५, १०; १३२

वातविषः ५, ५४, ३; २५२ । ५७, ४; २८७

वातस्वनसः ७, ५६, ३; ३४७

वावक्षानाः ७, ५६, १०; ३५४

वावृधानाः स्तोत्रं १०, ७८, ८, ४२२

वाशीमन्त. १, ८७, ६; १५० । ५, ५७, २, २८५

वाश्राः-आसः ८, ७, ३, ७, ४८, ५२

विचयत् नः कृतम्- [अग्नि] ५, ६०, १; ४४९

विचर्षणिः १, ६४, १२; ११९

विचेतसः ५, ५४, १३; २६२

विजानुवः १०, ७७, १, ४०७

विद्वद्भु १, ६, ६, २

विदितम् अथ० ४, २७, ७, ४४६

विद्युद्धस्ताः ८, ७, २५; ७०

विद्युन्महसः ५, ५४, ३, २५२

विधावन्तः १, ८८, ५; १५५

विपथयः ५, ५२, १०; २२६

विपन्यवः ५, ६१, १६; ३१७

विमः १, ८६, ३; १३७

विभवः १, १६६, ११; १६८

विभूतयः १, १६६, ११; १६८

विमहस १, ८६, १; १३५ । ५, ८७, ४; ३२१

विराग्निः १, ६४, १०; ११७ । ८७, १; १४१ । १६६, ८;

१६५

विरोकिणः १०, ७८, ३; ४१७

विश्वे ५, ५८, ३; २९४

विश्वकृष्टयः ३, २६, ५; २१५

विश्वपिशाः ७, ५७, ३; ३७२

विश्वमिन्वाः ५, ६०, ८; ४५६

विश्ववेदसः १, ६४, ८, १०; ११५, ११७ । ३, २६, ४; २१४ ।

५, ६०, ७; ४५५

विष्टार यज्ञम् ५, ५२, १०; २२६

विष्णु ५, ८७, १; ३१८

विष्णुर्धा-स्पर्ध-स ५, ८७, ४; ३२१

वीरः-राः-रासः १, ८५, १; १२३ । ८६, ४; १३८ । ५, ६१,

४, ३११

वीळुपाणय १, ३८, ११; ३१

वृकवाहिषः १, ३८, १, ३१ । ८, ७, २०-२१; ६५-६६

वृद्धाः १, ३८, १५; ३५  
 वृद्धशवसः ५, ८७, ६, ३२३  
 वृधन् ६, ६६, ११; ३४४  
 वृधासः तमसः इत् १, १७२, २, १९४  
 वृधा-वाणः ८, ७, ३३; ७८ । २०, ९, १२, १९, २० । ९०, ९३, १००, १०१ । १, ६४, १, १२; १०८, ११९ । ७, ४, ८, १४८ । ७, ५८, ६, ३८२ । ८, ९४, १२; ४०६  
 वृषत्वादयः १, ६४, २०; ११७  
 वृषप्रयावा ८, २०, ९; ९०  
 वृषसवः ८, २०, ७, ८८  
 वृषनातासः १, ८५, ४; १२६  
 वृष्टयः २, ३४, २; २०० । ५, ५३, ६, २३९  
 वेधाः १, ६४, १; १०८ । ५, ५२, १३, २२९ । ५४, ६, २५५  
 वेधस असुरस्य ८, २०, १७; ९८  
 व्यक्ता ७, ५६, १; ३४५  
 झग्माः अथ० ४, २७, ३; ४४२  
 झम्भविष्टाः आदित्येन नाम्ना- १०, ७७, ८, ४१४  
 शर्धः १, ३७, ४, ९ । ८, २०, ९; ९० । १, ६४, १ १०८ । ५, ८७, १, ३१८ । ७, ५६, ८, ३५२  
 शर्धः मारुतम् १, ३७, १, ५, ६, १० । ८, २०, ९; ९० । २, ३०, ११; १९८ । ८ ५, ५२, २२४ । ५४, १, २५० । अथ० ४, २७, ७, ४४६  
 शर्धन् ५, ५६, १, २७५  
 शर्धमारुतः ६, ४८, १२, १५, ३२८, ३३१  
 शवस् ५, ८७, १; ३१८  
 शवसा आहिमन्यवः १, ६४, ८, ९, ११५, ११६  
 शश्वतः ५, ५२, २; २१८  
 शाकी वा० य० १७, ८५; ४२६  
 शाकिन ५, ५२, १७; २३३  
 शिकल ५, ५२, १६, २३२ । ५४, ४, २५३  
 शिमीवन्तः ८, २०, ३; ८४ । १०, ७८, ३; ४१७  
 शुचयः १, ६४, २; १०९ । ६, ६६, ४, ३३७ । ७, ५६, १२; ३५६ । ५७, ५; ३७४  
 शुचिजन्मानः ७, ५६, १२, ३५६  
 शुभं यावत् ५, ५५, १-९; २६५-२७३  
 शुभंयावा-वानः ५, ६१, १३ ३१४ । वा० य० २५, २०, ४२८  
 शुभयन्तः ५, ६०, ८; ४५६  
 शुभा शोभिष्ठाः ७, ५६, ६, ३५०  
 शुभ्रा ८, ७, २, १४, २५, २८; ४७, ५९, ७०, ७३ । १, ८५, ३, १२५ । १६७, ४, १७५ । ७, ५६, १६; ३६०

शुभ्रत्वादयः ८, २०, ४; ८५  
 शुभ्रमानाः तम्बः ७, ५६, ११; ३५५ । ५९, ७; ३८९  
 शुशुकांसः ५, ८७, ६, ३२३  
 शुशुचाना २, ३४, १, १९९  
 शुष्मी १, ३७, ४, ९  
 शूराः १, ६४, ९; ११६  
 शूशुवांस घृणुना शवसा १, १६७, ९ १८०  
 शेष ५, ८७, ४, ३२१  
 श्रायाः ५, ५३, ४; २३७  
 श्रुतः १, ६, ६, २  
 श्रेयांसः श्रिये ५, ६०, ४, ४५२  
 श्रेष्ठतमाः ५, ६१, १, ३०८  
 श्रोतार यामहृतिषु ५, ६१, १५, ३१६  
 संवत्सरीणाः अथ० ७, ७७, ३; ४४७  
 सखाय ८, २०, २३, १०४ । ६, ६६, ११, ३२७  
 सखाय स्थिरस्य शवसः - ५, ५२, २, २१८  
 सगगा अथ० ७, ७७, ३; ४४७  
 सजोषस ५, ५७, १; २८४  
 सजोषस. करम्भेण वा० य० ३, ४४, ४२३  
 सत्य १, ८७, ४; ४४८  
 सत्यशवसः १, ८६, ८, ९, १४२, १४३ । ५, ५२, ८, २२४  
 सत्यश्रुत ५, ५७, ८, २९१ । ५८, ८; २९९  
 सटश्रासः वा० य० १७, ८४; ४२५  
 सद्यजतयः १०, ७८, २; ४१६  
 सधयञ्ज ५, ६०, ३, ४५१  
 सनाभयः १०, ७८, ४, ४१८  
 सनीळा, ७, ५६, १, ३४५  
 सप्तसप्त ५, ५२, १७; २३३  
 सप्तय ८, २०, २३; १०४ । १८५, १, १२३  
 सप्रथाः अथ० १, २६, ३; ४३०  
 सप्तसरासः १, १६८, ९ १९१  
 सवन्धव ८, २०, २१; १०२ । ५, ५९, ५, ३०४  
 सबाधः १, ६४, ८, ११५  
 सभरसः ५, ५४, १०, २५९ । वा० य० १७, ८४; ४२५  
 समन्यव ८, २०, १, २१, ८२, १०२ । २, ३४, ३, ५, ६; २० । २०३, २०४ । ५, ८७, ८, ३२५  
 समुक्षिता स्तोमैः ५, ५६, ५; २७९  
 समोकसः १, ६४, १०; ११७  
 समिताम. वा० य० १७, ८४; ४२५  
 संमिष्ठा इन्द्रे १, १६६, ११; १६८

समिश्रास तविषीभि १,६४,१०; ११७  
 समिश्रा त्रिया ७,५६,६, ३५०  
 सर्गाः मरुताम् ५,५६,५, २७९  
 सर्गा वर्षस्य अथ० ४,१५,४; ४५८  
 सस्त्र ७,५९,७ ३८९  
 सहन्त ५,८७,५, ३२२  
 साकम् उक्षिताः ५,५५,३ २६७  
 साकंजाता ५,५५,३; २६७  
 सान्तपना ७,५९,९,३९ । वा० य० १७,८५,४२६ । अथ०  
 ७,७७,३, ४४७  
 मा (स) हा ८,२०,२०, १०१  
 मिन्धवः ५,५३,७, २४०  
 सिन्धुमातरः १०,७८,६, ४२०  
 सुक्रतु [इन्द्र] ६,४८,१४, ३३०  
 सुखादि ५,८७,१, ३१८  
 सुजाता -- तास ८,२०,८, ८९ । १,८८,३; १५३ ।  
 १६६,१२; १६९ । ५,५७,८, २८८ । ५९,६; ३०५  
 सुजिह्वाः १,१६६,११; १६८  
 सुदसस १,८५,१ १२३  
 सुदानव १,१५,२, ५ । ३९,१०, ४५ । ८,७,१२,१९,  
 २०, ५७,६४,६५ । ८,२०,१८,२३, ९९,१०४ ।  
 १,६४,६; ११३ । ८५,१०, १३२ । १७२,१,२,३;  
 १९५,१९६,१९७ । २,३४,८; २०६ । ३,२६,५, २१५ ।  
 ५,५२,५ २२१ । ५३,६, २३९ । ५७,५, २८८ ।  
 ७,५९,१०, ३२२ । १०,७८,५; ४१९ । अथ० १३,  
 १,३; ४३३ । ४,१५,७; ४६१  
 सुधन्वान ५,५७,२, २८५  
 सुनिष्का ७,५६,११; ३५५  
 सुनीतयः १०,७८,२, ४१६  
 सुपिशा १,६४,८; ११५  
 सुपंशस ५,५७,४; २८७  
 सुबर्हिषः ८,२०,२५, १०६  
 सुभगास ५,६०,६; ४५४  
 सुभ्रवः ५,५५,३; २६७ । ५९,३ ३०२ । ८७,३, ३२०  
 सुमस्त्र-न्वाः १,६४,१, १०८ । ८५,४; १२६ । ५,८७,७,  
 ३२४  
 सुमातर १०,७८,६, ४२०  
 सुमाया १,८८,१; १५१  
 सुमारुतः गणः १०,७७,१,२, ४०७,४०८  
 सुग्धा ५,५७,२, २८५

सुरातयः १०,७८,३; ४१७  
 सुवृधः ५,५९,५, ३०४  
 सुशर्माण १०,७८,२; ४१६  
 सुशुकानः ५,८७,३, ३२०  
 सुश्रवस्तमाः ८,२०,२०; १०१  
 सुष्टुताः विदथेषु १,१६६,७, १६४  
 सुष्टुभः १०,७८,४; ४१८  
 सुसदसाः ५,५७,४; २८७  
 सुसंज्ञा १०,७८,१, ४१५  
 सुरय ८,९४,७, ४०१ । १०,७८,६, ४२०  
 सुरचक्षस वा० य० २५,२०; ४२८  
 सुर्येवच -- चसः ७,५९,११, ३९३ । अथ० १,२६,३; ४३०  
 स्रप्रभोजा. [विष्णु] ६,४८,१४; ३३०  
 सोभरीयवः ८,२०,२, ८३  
 स्कम्भदेवणा प्र १,१६६,७; १६४  
 स्तनयवमाः ५,५४,३, २५२  
 स्तुतासः ७,५७,६,७, ३७५,३७६  
 स्थातारः ५,८७,६; ३२३  
 स्थारश्मानः ५,८७,५, ३२२  
 स्थिराः ८,२०,१, ८२  
 स्पन्द्रास ५,५२,३; २१९  
 स्पन्द्रास धुनीनाम्-५,८७,३०, ३२०  
 स्थाना अथ० ४,२७,३, ४४२  
 स्वजाः १,१६८,२, १८४  
 स्वञ्च ७,५६,१६, ३६०  
 स्वतवसः १,१६६,२, १५९ । १६८,२; १८४ । ६,६६,९;  
 ३४२ । ७,५९,११; ३९३  
 स्वतवान् वा० य० १७,८५; ४२६  
 स्वभानव १,३७,२, ७ । ८,२०,४; ८५ । ५,५३,४, २३७ ।  
 ५४,१, २५० । ६,४८,१२; ३२७  
 स्वथुक्ताः १,१६८,४; १८६  
 स्वयुज १०,७८,२; ४१६  
 स्वराजः ५,५८,१, २९७ । ८,९४,४, ३९८  
 स्वरितार भासभिः १,१६६,११, १६८  
 स्वरोचिष ५,८७,५; ३२२  
 स्वर्काः अथ० ७,७७,३; ४४७  
 स्वर्णर ५,५४,१०; २५९  
 स्ववसः [अग्नि] ५,६०,१, ४४९  
 स्वविद्युतः ५,८७,३; ३२०  
 स्वस्था ५,५७,२; २८५ । ७,५७,१; ३४५

स्वसृत्-तः १,६४,११, १११ । ८७,४; १४८  
 स्वादुसंसुदः अथ० १३,१,३; ४३३  
 स्वानिनः ३,२६,५; २६५  
 स्वायुधा.-धासः ५,५७,२; २८५ । ८७,५; ३२२  
 हृग्घोष्ठाः ७,५६,१६; ३६०  
 हस्तिन १,६४,७; ११४

हिरण्यचक्राः १,८८,५; १५५  
 हिरण्ययाः ५,८७,५; ३२२  
 हिरण्यरथाः ५,५७,१; २८४  
 हिरण्यवर्णाः २,३४,११; २०९  
 हिरण्यवाशी ८,७,३२, ७७  
 हिरण्यशिप्रा २,३४,३; २०१  
 हादुनी नि-वृत्तः ५,५४,३; २५२





## मरुदेवता-संहितान्तर्गत-निपातदेवतानां

### सूची ।

ऋषिजः । १, ६, ६ अग्नेवेद

इन्द्र । १, ६, ८

ऋतु । १, १५, २

मरुतः क्रीकित्त । १, ३७, १-१५

निक्रंतिः । १, ३८, ६

मरुस्तोता ऋषिगणः । १, ३८, १३-१५

ब्रह्मणस्पति, अग्निः, मित्रः । १, ३८, १३

वज्री [इन्द्रः] । ८, ७, १०

अग्निः । ८, ७, ३६

रुद्राः । १, ६४, ३

\* मरुदिन्द्रविष्णवः । [पित० ब्रा० १२, ७] १, ६४, ६

रुद्राः । १, ८५, २

\* ऋभवः [पित० ब्रा० २८, ४] १, ६४, ६

त्वष्टा, इन्द्रश्च । १, ८५, ९

\* इन्द्रामरुतः [पित० ब्रा० २८, २] १, ८६, १

\* अग्निमरुत्वान् [पित० ब्रा० ३२, ८] १, ८६, १

रुद्राः । १, १६६, २

रोदसी [मरुत्पत्नी, विद्युत्] १, १६७, ५

रोदसी । १, १६८, १

पृथिः । १, १६८, ९

अग्निः । ५, ५६, १

मारुतः रथः । ५, ५६, ८

मीकडुषी [= रुद्रपत्नी] ५, ५६, ९

रुद्राः । ५, ५७, १

अग्निः । ५, ५८, ३

धौः, अदितिः, उषसः । ५, ५९, ८

विष्णु मरुत्वान् । ५, ८७, १

रुद्राः । ५, ८७, ७

धेनुः । ६, ४८, ११-१३

धेनु, इन्द्र । ६, ४८, १३

इन्द्रः, वरुणः, अर्यमा, विष्णु । ६, ४८, १४

पृथिः । ६, ६६, १-३

अग्निः । ६, ६६, ९

मरुतः क्रीकित्तः । ७, ५६, १६

इन्द्रः, मित्रः, वरुणः, अग्निः,

आपः, ओषधीः, वनिनः,

मरुतः च । ७, ५६, २५

देवाः, अग्नि, वरुण, मित्रः,

अर्यमा, मरुतः च । ७, ५९, १

देवाः । ७, ५९, २

सान्तपना मरुतः । ७, ५९, ९

गृहमेधासः मरुतः । ७, ५९, १०

स्वतवसः मरुत । ७, ५९, ११

गौः [मरुतां माता] ८, ९४, १-२

मित्र, अर्यमा, वरुण । ८, ९४, ५

इन्द्रः । ८, ९४, ६

मरुतः, देवाः च । १०, ७७, ७

## मरुदेवता-संहितान्तर्गत निपात-देवतानां वर्णानुक्रमसूची ।

अग्निः ऋ० १, ३८, १३; ८, ७, ३६; ५, ५६, १; ५८, ३; ६, ६६,  
९; ७, ५६, २५; ७, ५०, १  
अदितिः ५, ५९, ८  
अथेमा ६, ४८, १४; ७, ५९, १; ८, ९४, ५  
आपः ७, ५६, २५  
इद् ६, ४८, १३  
इन्द्रः १, ६, ८; ८, ७, १०; १, ८५, ९; ६, ४८, १४. ७, ५६,  
२५; ८, ९४, ६  
वृषासः ५, ५९, ८  
ऋतुः १, १५, २  
ऋत्विजः १, ६, ६  
ऋत्विग्गणः [मरुस्तोता] १, ३८, १३--१५  
ओषधीः ७, ५६, २५  
ऋत्विजः मरुतः १, ३७, १--१५; ७, ५६, १६  
गौः ८, ९४, १-२  
गृहमेधासः मरुतः ७, ५९, १०  
त्वष्टा १, ८५, ९  
देवाः ७, ५९, १ २; १०, ७७, ७

घौः ५, ५९, ८  
धेनुः ६, ४८, ११--१३  
निर्ऋतिः १, ३८, ६  
पृथ्विः १, १६८, ९, ६, ६६, १-३  
ब्रह्मणस्पतिः १, ३८, १३  
मरुत पश्य - 'ऋत्विजः,' 'गृहमेधास,' 'सान्तपनाः,'  
'स्वतवसः'  
मित्रः १, ३८, १३; ७, ५६, २५; ७, ५९, १; ८, ९४, ५  
मीळहुषी ५, ५६, ९  
रथः मरुत ५, ५६, ८  
रुद्राः १, ६४, ३, ८५, २; १६६, २; ५, ५७, १; ५, ८७, ७  
रोदसी १, १६७, ५; १, १६८, १  
वज्री [इन्द्र] ८, ७, १०  
वनिलः ७, ५६, २५  
वरुणः ६, ४८, १४; ७, ५६, २५; ७, ५९, १; ८, ९४, ५  
विष्णुः ५, ८७, १; ६, ४८, १४  
सान्तपनाः मरुतः ७, ५९, ९  
स्वतवसः मरुतः ७, ५९, ११















